



কোরআন শরীফ

সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

হাফেজ মুনির উদ্দীন আহমদ



আল কোরআন একাডেমী লন্ডন

কোরআন শরীফ: সহজ সরল বাংলা অনবাদ হাফেজ মুনির উদ্দীন আহমদ

প্রকাশক

খাদিজা আখতার রেজায়ী ডাইরেক্টর, আল কোরআন একাডেমী লন্ডন

স্যুট ৫০১ ইন্টারন্যাশনাল হাউজ ২২৩ রিজেন্ট ষ্ট্রীট, লভন ডব্রিউ১বি ২কিউডি ফোন ও ফ্যাক্স : ০০৪৪ ০২০ ৭২৭৪ ৯১৬৪ মোবাইল: ০৭৯৫৬ ৪৬৬৯৫৫

বাংলাদেশ সেউার

১৭ এ-বি কনকর্ড রিজেন্সী, ১৯ ওয়েন্ট পান্থপথ, ধানমন্ডি, ঢাকা ফোন ও ফ্যাক্স : ০০৮৮০-২-৮১৫ ৮৫২৬, ৮১৫ ৮৯৭১

বিক্রম কেন্দ্র: ৫০৭/১ (৩৬২) ওয়্যারলেস রেল গেইট (জামে মাসজিদ দোতলা), বড় মগবাজার ঢাকা ৩৮/৩ কম্পিউটার মার্কেট (দোতলা) দোকান নং ২২৬ বাংলাবাঞ্জার, ঢাকা

ফোন ও ফ্যাব্র : ০০৮৮-০২-৯৩৩ ৯৬১৫ মোবাইল : ০১৮১৮ ৩৬৩৯৯৭

মার্চ ২০০২

२७७म मुम् জমাদিউল আউয়াল ১৪২৯, জুন ২০০৮, জ্যৈষ্ঠ ১৪১৫ বাংলা অনুবাদের স্বত্তঃ প্রকাশক

00

Quran Shareef: Simple Bengali Translation

Hafiz Munir Uddin Ahmed

Published by

Khadija Akhter Rezayee Director Al Ouran Academy London Suite 501 International House 223 Regent Street London W1B 2OD Phone & Fax: 0044 020 7274 9164 Mob: 07956 466955

Bangladesh Centre

17 A-B Concord Regency, 19 West Panthopath, Dhanmondi, Dhaka-1205 Phone & Fax: 00880-2-815 8526, 815 8971

Sales Centre: 507/1 (362) Wireless Railgate, (Masjid Complex 1st Floor) 38/3 Computer Market (1st Floor) Stall No- 226 Bangla Bazar, Dhaka Phone & Fax: 00880-2-933 9615, Mobile: 01818 363997

1st Published

2002

23th Impression

Jamadiul Awal 1429, June 2008

E-mail: info@alquranacademylondon.co.uk website: www.alquranacademylondon.co.uk ISBN-984-8490-00-6



| ক্রমিক নং | স্রার নাম | পৃষ্ঠা | নাযিঃ ক্রঃ নং | ক্ৰমিক নং | ক্রমিক নং সূরার নাম পৃষ্ঠা নাযিঃ | | |
|-------------|-------------------------|--------|---------------|-------------|----------------------------------|-----|-----|
| ١. | সূরা আল ফাতেহা | 2 | 84 | 9 0. | সূরা আর রোম | 820 | 98 |
| 2 | সূরা আল বাকারা | 2 | 97 | ٠٥٥. | সূরা লোকমান | 829 | b. |
| 9. | সূরা আলে ইমরান | 8% | ৯৭ | ૭૨. | সূরা আস সাজদা | 845 | 90 |
| 8, | সূরা আন নেসা | 99 | 300 | 99. | স্রা আল আহ্যাব | 848 | 300 |
| ¢. | সূরা আল মায়েদা | 200 | 778 | 9 8. | সূরা সাবা | 800 | 6 |
| હ . | সূরা আল আনয়াম | 28 | ৮৯ | oc. | সূরা ফাতের | 880 | b |
| ۹. | সূরা আল আ'রাফ | 389 | 49 | ৩৬. | সূরা ইয়াসিন | 886 | 4 |
| b . | সূরা আল আনফাল | 392 | 200 | ٠٩. | সূরা আছ ছাফফাত | 800 | œ |
| à . | সূরা আত তাওবা | 200 | 220 | Э ъ. | সূরা সোয়াদ | 860 | œ |
| ٥٥. | সূরা ইউনুস | २०२ | ъ8 | ৩৯. | সূরা আঝ ঝুমার | ৪৬৯ | 6 |
| 33. | সূরা হুদ | ২১৬ | 90 | 80. | সূরা আল মোমেন | 898 | 9 |
| 12. | স্রা ইউসুফ | 202 | 99 | 85. | সূরা হা-মীম আস সাজ্ঞদা | 844 | 9 |
| 20. | সূরা আর রা'দ | 280 | 90 | 82. | স্রা আশ শৃ-রা | 880 | 6 |
| \$8. | সূরা ইবরাহীম | 203 | 95 | 89. | সূরা আয যোখকক | 605 | 6 |
| ٥¢. | সূরা আল হেজ্র | 209 | 49 | 88. | সূরা আদ দোখান | 600 | • |
| 36. | সূরা আন নাহ্ল | 268 | 90 | 80. | সূরা আল জাছিয়া | 625 | ٩ |
| ۵٩. | সূরা বনী ইসরা ঈল | 298 | ৬৭ | 86. | সূরা আল আহকাফ | 678 | ы |
| ۵ ۲. | সূরা আল কাহ্ফ | 283 | ৬৯ | 89. | সূরা মোহাম্মদ | 022 | 2 |
| ۵۵. | সূরা মারইয়াম | 909 | Ф | 86. | সূরা আল ফাতাহ | ৫২৬ | 301 |
| 20. | সূরা ত্বাহা | 033 | QQ. | 8%. | সূরা আল হজুরাত | ৫৩১ | 22 |
| 23. | সূরা আল আম্বিয়া | 929 | 40 | do. | সূরা ক্বাফ | æ8 | a |
| 22. | সূরা আল হাজ্জ | 999 | 209 | es. | সূরা আয যারিয়াত | 009 | • |
| ২৩. | সূরা আল মোমেনুন | 980 | 98 | e2. | সূরা আত ত্র | 682 | 8 |
| ₹8. | সূরা আন নূর | ००२ | 306 | eo. | সূরা আন নাজম | ¢88 | × |
| 20. | সূরা আল ফোরকান | 963 | 0.10 | ¢8. | সূরা আল কামার | 489 | 8 |
| રહ. | সূরা আশ শোয়ারা | ৩৬৯ | | aa. | সূরা আর রাহমান | 203 | 8 |
| ২ 9. | সূরা আন নামল | 969 | | æ5. | সূরা আল ওয়াকে্য়া | aaa | 8 |
| રુ. | সূরা আল কাছাছ | ৩৯২ | | 49. | সূরা আল হাদীদ | a40 | * |
| ২৯. | সূরা আল আনকাবুত | 800 | | Qb. | সূরা আল মোজাদালাহ | 040 | 200 |

| ক্রমিক নং | স্রার নাম | शृष्ठी : | नायिः कः नः | ক্রমিক নং | স্রার নাম | পृष्ठी | नायिঃ कः नः |
|----------------|--------------------|----------|-------------|-------------|---------------------|-------------|-------------|
| ¢5. | স্রা আল হাশর | ৫৬৮ | 205 | b9. | সূরা আল আ'লা | ৬২৯ | 15 |
| 50. | সূরা আল মোমতাহেনা | 492 | 220 | bb. | সূরা আল গাশিয়াহ | 400 | 98 |
| ৬১. | সূরা আস সাফ | @98 | ab ab | ৮ ৯. | সূরা আল ফজর | 503 | 90 |
| હ્ય. | সূরা আল জুমুয়া | 495 | % 8 | ðo. | সূৱা আল বালাদ | ৬৩২ | 33 |
| 60 . | সূরা আল মোনাফেকুন | ¢99 | 806 | ه۵. | স্রা আশ শামস | 400 | 26 |
| 58 . | স্রা আত তাগাবুন | ¢98 | හ | 82. | সূরা আল লায়ল | 608 | 30 |
| ₩. | সূরা আত তালাক্ | Qb: | 202 | సల. | সূরা আদ দোহা | 400 | 20 |
| 66. | সূরা আত তাহুরীম | (b) | 806 | ৯8. | সূরা আল এনশেরাহ | 404 | 25 |
| 69. | সূরা আল মুলক | apri | ৬৩ | æ. | সূরা আত তীন | 404 | 20 |
| & . | সূরা আল ক্বালাম | ৫৮৯ | 76 | ৯৬. | সূরা আল আলাক্ | 509 | |
| ৬৯. | সূরা আল হাক্বাহ | 695 | 96 | ৯৭. | স্রা আল ক্দর | Sop | 38 |
| 90. | সূরা আল মায়ারেজ | and | 82 | àb. | সূরা আল বাইয়্যেনাহ | 406 | * ** |
| 93. | সূরা নূহ | 690 | 63 | 38. | সূরা আয যেলযাল | 40% | 20 |
| 92. | সূরা আল জ্বিন | 500 | · 62 | 300. | স্রা আল আদিয়াত | 98 0 | 90 |
| 90, | সূরা আল মোযযামেল | 500 | 20 | 303. | সূরা আল ক্বারিয়াহ | 58 0 | 28 |
| 98. | সূরা আল মোদ্দাসসের | 508 | 2 | 302. | স্রা আত তাকাসুর | 683 | ь |
| 90. | সূরা আল কে্য়ামাহ | 500 | ७७ | 300. | সূরা আল আসর | 983 | 757 |
| 96. | স্রা আদ দাহর | 600 | 42 | 308. | সূরা আল হুমাযাহ | 68 3 | |
| 99. | সূরা আল মোরসালাত | 623 | . 2 | 30¢. | সূরা আল ফীল | 484 | , , |
| 96. | সূরা আন নাবা | 620 | 99 | 306. | সূরা কোরায়শ | 98 3 | |
| 98. | সূরা আন নাযেয়াত | 639 | co 1 | 309. | স্রা আল মাউন | 686 | |
| bo. | সূরা আবাসা | 679 | 29 | 30b. | সূরা আল কাওসার | 480 | 0 |
| b3. | সূরা আত তাকওয়ীর | 623 | 29 | 308. | সূরা আল কাফেরন | 480 | 80 |
| 45 | সূরা আল এনফেতার | 62 | 45 | 330. | সূরা আন নাসর | 588 | 322 |
| b0. | সূরা মোতাফ্ফেফীন | 620 | ৩৭ | 333. | সূরা লাহাব | 688 | 3 4 |
| ₽8. | সূরা আল এনশেক্।ক | ७२० | 26 | 225 | সূরা আল এখলাস | 98 0 | 88 |
| be. | স্রা আল বুরুজ | 620 | 22 | 220. | সূরা আল ফালাক্ | 68 6 | 81 |
| b4. | সূরা আত তারেক্ | હ્ય | r se | 228. | সূরা আন নাস | 480 | 8 |

| 6 | |
|---|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১ আলিফ-লাম-মীম |
| সূরা আব্দ ফাতেহা মকায় অবতীর্ণ– আয়াত ৭, রুকু ১ | سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَةً إِيَانِيَّ : 4 رُكُوْعً : ١ |
| ১. রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | ا بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ২. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে- তিনি সৃষ্টিকুলের মালিক, | ٢ ٱلْحَمْلُ لِلَّهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٧ |
| ৩. তিনি পরম দয়ালু, অতি মেহেরবান, | ٣ ٱلرَّحْشِ الرَّحِيْرِ ٧ |
| ৪. তিনি বিচার দিনের মালিক। | م للكِ يَوْمِ الرِّيْنِ ا |
| ৫. (হে প্রভূ,) আমরা তোমারই বন্দেগী করি এবং তোমারই সাহায্য চাই। | ٥ إِيَّاكَ نَعْبُلُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ١ |
| ৬. তুমি আমাদের (সরল ও) অবিচল পথটি দেখিয়ে দাও- | ٦ إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْهُسْتَقِيْرَ ٧ |
| ৭. তাদের পথ | ٤ مِرَاطَ الَّذِينَ ٱنْعَمْتَ عَلَيْهِرْ لَا غَيْرٍ |
| এবং (তাদের পথও নয়) যারা পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে। | الْهَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ لا وَلا الضَّالِّيْنَ ع |
| স্রা আল বাকাুুুুরা | سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَنَانِيَّةً |
| মদীনায় অবতীর্ণ– আয়াত ২৮৬, রুকু ৪০ | أيَاسً : ٢٨٦ رُكُوعٌ : ٣٠ |
| রহ্মান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْنِي الرَّحِيْرِ |
| ১. আলিফ লা-ম মী-ম। | ا السَّ |
| ২. (এই) সেই (মহা) গ্রন্থ (আল কোরআন), তাতে (কোনো) সন্দেহ নেই, যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে (এই কিতাব কেবল) তাদের জন্যেই পথপ্রদর্শক, | الْکِتُ الْکِتْبُ |
| থ. যারা গায়বের ওপর ঈমান আনে, যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, তাদের আমি যা কিছু দান করেছি তারা তা থেকে (আমারই নিদের্শিত পথে) ব্যয় করে, | الَّذِيدَى يُوْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُونَ السَّلُوةَ وَمُقِيْمُونَ السَّلُوةَ وَمِمَّا رَزَقَنَّمُ يُنْفِقُونَ لا |
| যারা তোমার ওপর যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তার ওপর ঈমান আনে– (ঈমান আনে) তোমার আগে (অন্য | ٣ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَّ ٱنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَّا |
| নবীদের ওপর) যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তার ওপর, (সর্বোপরি) তারা পরকালের ওপরও দৃঢ় বিশ্বাস রাখে। | ٱنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ع وَبِالْأَخِرَةِ هُرْ يُوْقِنُونَ ا |
| ৫. (সত্যিকার অর্থে) এ লোকগুলোই তাদের মালিকের (দেখানো) সঠিক পথের ওপর রয়েছে এবং এরাই হচ্ছে সফলকাম, | ۵ اُولَیْكَ عَلٰی هُنَّی مِّنْ رَبِّهِدُ ق وَاُولَیْكَ هُدُ الْهُفْلِحُوْنَ |
| ৬. যারা (এ বিষয়গুলো) অস্বীকার করে, তাদের তুমি | |
| (পরকালের কথা বলে) সাবধান করো আর না করো, (কার্যত) উভয়টাই (তাদের জন্যে) সমান (কথা), এরা কখনো ঈমান আনবে না। | اً إِنَّ اللَّذِينَ تَعْرُوا سُواءَ عَلَيْهِمُ ءَاللَّ رَسُمُ |
| স্রা আল ফাতেহা স্রা আল বাঝ্বারা | মন্যিল ১ |

3য়াক্ফে লাযেম

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১ আলিফ-লাম-মীম |
|--|---|
| (হঠাৎ করে) আল্পাহ তায়ালা তাদের (কাছ থেকে) আলোটুকু ছিনিয়ে নিলেন এবং তাদের (এমন) অন্ধকারে ফেলে রাখলেন যে, তারা কিছুই দেখতে পেলো না। | فِيْ ظُلُهٰتٍ لا يُبْصِرُونَ |
| ১৮. (এদের অবস্থা হচ্ছে,) এরা (কানেও) শোনে না, (চোখেও) দেখে না, (মুখ দিয়ে) কথাও বলতে পারে না, অতএব এসব লোক (সঠিক পথের দিকে) ফিরে আসবে না। | ١٨ صُرُّ بُكُرُّ عَمَّى فَهُر ﴿ لَا يَرْجِعُونَ لا |
| ১৯. অথবা (এদের উদাহরণ হচ্ছে), আসমান থেকে নেমে আসা বৃষ্টির মতো, এর মাঝে রয়েছে (আবার) অন্ধকার, মেঘের গর্জন ও বিদ্যুতের চমক, বিদ্যুতের গর্জন ও মৃত্যুর ভয়ে এরা নিজেদের কানে নিজেদের আংগুল ঢুকিয়ে রাখে (এরা জানে না), আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের (সকল দিক থেকেই) ঘিরে রেখেছেন। | ا أَوْ كَصَيِّب مِّنَ السَّهَاءِ فِيهِ ظُلُّهُ وَرَعْنُ وَرَعْنُ وَرَعْنُ وَبَوْنَ عَيْمَ وَاللَّهُ وَرَعْنُ وَاللَّهُ مُحِيْطً فَ اللَّهُ مُحَيْطً فَا اللّهُ الل |
| ২০. মনে হয় এখনই বিদ্যুত এদের চোখকে নিষ্প্রভ করে দেবে; (এ আতংকজনক অবস্থায়) আল্লাহ তায়ালা যখন এদের জন্যে একটু আলো জ্বালিয়ে দেন তখন এরা তার মধ্যে চলতে থাকে, আবার যখন তিনি তাদের ওপর অন্ধকার চাপিয়ে দেন তখন এরা (একটু থমকে) দাঁড়ায়; অথচ আল্লাহ তায়ালা চাইলে (সহজেই) তাদের শোনার ও দেখার (ক্ষমতা) ছিনিয়ে নিতে পারতেন; নিশ্চয়ই তিনি সর্বশক্তিমান। | ٢٠ يكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُرْ ﴿ كُلَّهُ اَ اَضَاءَ لَهُر ﴿ كُلَّهُ اَ اَضَاءَ لَهُر مَّشُوا فِيهِ لَى وَإِذَا اَظْلَر عَلَيْهِر تَامُوا ﴿ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَنَ هَبَ بِسَمْعِهِر وَ اَبْصَارِهِرْ ﴿ إِنَّ اللّٰهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ عَ وَ اَبْصَارِهِرْ ﴿ إِنَّ اللّٰهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ عَ وَ اَبْصَارِهِرْ ﴿ إِنَّ اللّٰهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ عَ وَ اَبْصَارِهِرْ ﴿ إِنَّ اللّٰهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ عَ |
| ২১. হে মানুষ, তোমরা মহান আল্লাহ তায়ালার দাসত্ব (স্বীকার) করো, যিনি তোমাদের এবং তোমাদের আগে যারা ছিলো তাদের (সবাইকে) পয়দা করেছেন, আশা করা যায় (এর ফলে) তোমরা (যাবতীয় সংকট থেকে) বেঁচে থাকতে পারবে। | ٢١ يَّاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُكُو ا رَبَّكُرُ الَّذِيئَ الَّذِيئَ خَلَقَكُر وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُر لَعَلَّكُر تَتَّقُونَ لا |
| ২২. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি যমীনকে তোমাদের জন্যে শয্যা বানালেন, আসমানকে বানালেন ছাদ এবং আসমান থেকে পানি পাঠালেন, তার সাহায্যে তিনি নানা প্রকারের ফলমূল উৎপাদন করে তোমাদের জীবিকার ব্যবস্থা করলেন, অতপর তোমরা জেনে বুঝে (এ সব কাজে) আল্লাহ তায়ালার সাথে কাউকে শরীক করো না। | ۲۲ اللّذِي جَعَلَ لَكُر الْأَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَاء فِرَاشًا وَّالسَّمَاء فِي السَّمَاء مَاء فَا السَّمَاء فَا السَّمَاء فَا الشَّمَر فِي الشَّمَر فِي وَزْقًا لَّكُر عَ فَلَا تَجْعَلُوا لِللّٰهِ إَنْ الثَّمَر فَا وَّانْتُر تَعْلَمُونَ |
| ২৩. আমি আমার বান্দার ওপর যে কিতাব নাযিল করেছি, তার (সত্যতার) ব্যাপারে যদি তোমাদের কোনো সন্দেহ থাকে তাহলে যাও– তার মতো (করে) একটি সূরা তোমরাও (রচনা করে) নিয়ে এসো, এক আল্লাহ তায়ালা ছাড়া তোমাদের আর যেসব বন্ধুবান্ধব রয়েছে তাদেরও (প্রয়োজনে সহযোগিতার জন্যে) ডাকো, যদি তোমরা তোমাদের দাবীতে সত্যবাদী হও! | ٢٣ وَإِنْ كُنْتُرْ فِيْ رَيْبٍ مِّمًّا نَزَّلْنَا عَلَى عَبْرِنَا فَأَتُوا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِمٍ مِ وَادْعُوا شُهَرَ اَعْكُرْ مِّنْ دُوْكِ اللهِ إِنْ كُنْتُرْ مٰرِقِيْنَ شُهَرَ اَعْكُرْ مِّنْ دُوْكِ اللهِ إِنْ كُنْتُرْ مٰرِقِيْنَ |
| ২৪. কিন্তু তোমরা যদি তা না করতে পারো (এবং আমি জানি), তোমরা তা কখনোই করতে পারবে না, তাহলে তোমরা (দোযখের) সেই কঠিন আগুনকে ভয় করো, যার ইন্ধন হবে মানুষ ও পাথর, (আল্লাহ তায়ালাকে) যারা অস্বীকার করে তাদের জন্যেই (এটা) প্রস্তুত করে রাখা হয়েছে। | ٢٣ فَإِن لَّـر تَفْعَلُوا وَلَى تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِى وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ﴾ أعِنَّـن لِلْكُغِرِينَ |

২৫. অতপর যারা (এ কিতাবের ওপর) ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে, তাদের তুমি (হে নবী) সুসংবাদ দাও এমন এক জান্নাতের, যার নীচ দিয়ে ঝর্ণা প্রবাহিত হতে থাকবে; যখনি তাদের (এ জান্নাতের) কোনো একটি ফল দেয়া হবে তখনি তারা বলবে, এ ধরনের (ফল) তো ইতিপূর্বেও আমাদের দেয়া হয়েছিলো, তাদের (মূলত) এ ধরনের জিনিসই সেখানে দেয়া হবে: তাদের জন্যে (আরো) সেখানে থাকবে পবিত্র সহধর্মী ও সহধর্মিনী এবং তারা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে ।

٢٥ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا السَّلِحَتِ أَنَّ لَهُرْ جَنَّتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ ء كُلُّهَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَهَرَةٍ رِّزْقًا لا قَالُوْا هٰنَا الَّذِي ٛ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ لا وَٱتُوْا بِهِ مُتَشَابِهًا م وَلَهُرْ فِيْهَا ٱزْوَاجٌ مَّطَهَّرَةً لَى وَّهُرْ فِيْهَا خلاون

২৬. (সত্য প্রমাণের জন্যে) আল্লাহ তায়ালা মশা কিংবা তার চাইতে ওপরে যা কিছু আছে তার উদাহরণ দিতেও লজ্জাবোধ করেন না: যারা (আল্লাহর বাণীতে) বিশ্বাস স্থাপন করে তারা জানে, এ সত্য তাদের মালিকের পক্ষ থেকেই এসেছে, আর যারা (আগেই) সত্য অস্বীকার করেছে তারা (একে না মানার অজুহাত দিতে গিয়ে) বলে, আল্লাহ তায়ালা এ উদাহরণ দ্বারা কি বুঝাতে চানং (আসলে) একই ঘটনা দিয়ে আল্লাহ তায়ালা অনেক লোককে গোমরাহীতে নিমজ্জিত করলেও বহু লোককে তিনি (আবার) এ দিয়ে হেদায়াতের পথও দেখান, আর কতিপয় পাপাচারী ব্যক্তি ছাড়া তিনি তা দিয়ে অন্য কাউকে গোমরাহীতে নিমজ্জিত করেন না।

٢٦ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَعْمَى ۖ أَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَهَا فَوْقَهَا ء فَاَمَّا الَّذِيْنَ أُمَّنُوْا فَيَعْلَبُونَ أَنَّهُ الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِرْ } وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَا ۖ اَرَادَ اللَّهُ بِهٰنَا مَثَلًا م يُضِلُّ بِهِ كَثِيْرًا لا وَّيَهْرِى بِهِ كَثِيْرًا ﴿ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفُسِقِيْنَ لا

২৭. (এরা হচ্ছে সে সব লোক) যারা আল্লাহর ফরমান মেনে চলার প্রতিশ্রুতি দেয়ার পর তা ভংগ করে, (ব্যক্তি مِيْدُاقِهِ مَ وَيَقْطُعُونَ مَا أَمْرَ اللَّهُ بِهِ أَن अ प्रभाक कीवत्न) आल्लार जाशाना त्यत्रव त्रम्लर्क (-এत ভিত) মযবুত করতে বলেছেন তা তারা ছিনু করে, يُّوْمَلَ وَيُفْسِلُونَ فِي الْأَرْضِ ﴿ أُولَٰئِكَ هُرُ ﴿ (अर्ताभित्रे) यशीत अरह्कू विभयंश त्रृष्ठि करतः হচ্ছে (আসল) ক্ষতিগ্রস্ত।

٢٨ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللَّهِ وَكُنْتُرْ اَمْوَاتًا

فَاحْيَاكُمْ ۚ جُرُّ يُحِيْتُكُمْ ۚ ثُرُّ يُحْيِيْكُمْ ثُرُ

٢٤ الَّذِيْنَ يَنْقُضُونَ عَهْنَ اللَّهِ مِنْ بَعْنِ

২৮. তোমরা আল্লাহকে কিভাবে অস্বীকার করবে? অথচ তোমরা ছিলে মৃত, তিনিই তোমাদের জীবন দিয়েছেন, পুনরায় তিনি তোমাদের মৃত্যু দেবেন, অতপর (সর্বশেষে) তিনিই আবার তোমাদের জীবন দান করবেন এবং (এভারেই) তোমাদের একদিন তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে।

> ٢٩ هُوَ الَّذِي عَلَقَ لَكُر مًّا فِي الْأَرْضِ سَبْعَ سَهٰوٰ ١٠٠٠ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرٌ ع

২৯. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি এ পৃথিবীর সব কিছু তোমাদের (ব্যবহারের) জন্যে তৈরী করেছেন, অতপর جَوِيعًا قَ ثُرَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ فَسُوْنَهُنَ जिन आत्रभारनत फिरक भरनानिरतम कतरलन धवर छारक সাত আসমানে বিন্যস্ত করলেন, তিনি সবকিছু সম্পর্কেই সম্যক অবগত আছেন।

> ٣٠ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِّئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ غَلِيْفَةً ﴿ قَالُوْا ۖ اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِلُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الرِّمَاءَ ج وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

৩০. (হে নবী, শ্বরণ করো,) যখন তোমার মালিক (তাঁর) ফেরেশতাদের (সম্বোধন করে) বললেন, আমি পৃথিবীতে (আমার) খলীফা বানাতে চাই: তারা বললো, তুমি কি সেখানে এমন কাউকে (খলীফা) বানাতে চাও যে সেখানে (বিশৃংখলা ও) বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং (স্বার্থের জন্যে) তারা রক্তপাত করবে, আমরাই তো তোমার প্রশংসা



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১ আলিফ-লাম-মীম |
|--|--|
| সহকারে তোমার তাসবীহ পড়ছি এবং (প্রতিনিয়ত) তোমার পবিত্রতা বর্ণনা করছি; আল্লাহ তায়ালা বললেন, আমি যা জানি তোমরা তা জানো না। | بِحَبْرِكَ وَنُقَرِّسُ لَكَ ، قَالَ إِنِّيَ ٱعْلَـرُ مَا |
| जार ये जान रहारहा है। जारन ना । | لَا تَعْلَمُوْنَ |
| ৩১. আল্লাহ তায়ালা অতপর (তাঁর খলীফা) আদমকে (প্রয়োজনীয়) সব জিনিসের নাম শিথিয়ে দিলেন, পরে | ٣١ وَعَلَّمَ أَدَا الْإَشْهَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى |
| তিনি সেগুলো ফেরেশতাদের কাছে পেশ করে বললেন, | الْمَلَئِكَةِ ٧ فَقَالَ ٱثْبِئُونِي بِٱسْمَاءِ هَوُكَاءِ إِنْ |
| (তোমাদের আশংকার ব্যাপারে) তোমরা যদি সত্যবাদী | م.^ ^ ' ^ كُنتُر صلِقِينَ |
| হও (তাহলে) তোমরা আমাকে এ নামগুলো বলো তোঃ | |
| ৩২. ফেরেশতারা বললো (হে আল্লাহ তায়ালা), তুমি পবিত্র, আমাদের তো (এর বাইরে আর) কিছুই জানা নেই | ٣٢ قَالُوْا سُبُحُنكَ لا عِلْمَ لَنَا ۗ إِلَّا مَا |
| যা তুমি আমাদের শিক্ষা দিয়েছো; তুমিই একমাত্র জ্ঞানী, একমাত্র কুশলী। | عَلَّهْتَنَا م إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيْرُ الْحَكِيْرُ |
| ৩৩. আল্লাহ তায়ালা (এবার) আদমকে বললেন, তুমি তাদের কাছে তাদের নামগুলো বলে দাও, অতএব আদম | ٣٣ قَالَ يَأْدُمُ ٱثْبِئْهُرْ بِٱشْهَا فِهِرْ ء فَلَهَّا |
| (আল্লাহর নির্দেশে) তাদের (সামনে) তাদের নামগুলো যখন (সুন্দরভাবে) বলে দিলো, তখন আল্লাহ তায়ালা | أَثْبَاَهُمْ بِاَشْهَا نِمِرْ لا قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ |
| বললেন, আমি কি তোমাদের বলিনি যে, আমি আসমানসমূহ ও যমীনের যাবতীয় না দেখা বস্তু জানি | إِنِّيْ آَعْلَمُ غَيْبَ السَّمْوٰتِ وَالْأَرْضِ ٧ |
| এবং তোমরা যা কিছু প্রকাশ করো আর যা কিছু গোপন করো আমি তাও ভালোভাবে জানি। | وَ أَعْلَرُ مَا تُبْكُونَ وَمَا كُنْتُر تَكْتُمُونَ |
| ৩৪. আল্লাহ তায়ালা যখন ফেরেশতাদের বললেন, তোমরা (সম্মানের প্রতীক হিসেবে) আদমের জন্য | ٣٣ وَإِذْ تُلْنَا لِلْمَلِّئِكَةِ الْمُحَنَّوْلَ لِأَدَّا |
| সাজদা করো, অতপর তারা (আল্লাহর আদেশে) আদমের সামনে সাজদা করলো- ওধু ইবলীস ছাড়া; সে সাজদা করতে অস্বীকার করলো এবং অহংকার করলো এবং সে | فَسَجَدُوْآ إِلَّا إِبْلِيْسَ ﴿ أَبِّي وَاسْتَكْبَرَ فَى |
| না-ফরমানদের দলে শামিল থেকে গেলো। | وكَانَ مِنَ الْكُفِرِيْنَ |
| ৩৫. আমি বললাম, হে আদম, তুমি এবং তোমার স্ত্রী (পরম সুখে) এই বেহেশতে বসবাস করতে থাকো এবং | ٣٥ وَقُلْنَا يَادَأُ اللَّيْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ |
| এ (নেয়ামত) থেকে যা তোমাদের মন চায় তাই তোমরা স্বাচ্ছন্দ্যের সাথে আহার করো, তোমরা এ গাছটির | الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَلًا مَيْتُ شِئْتُهَا مِ وَلَا |
| পাশেও যেও না, তা (না) হলে তোমরা (দুজনই) সীমালংঘনকারীদের মধ্যে শামিল হয়ে যাবে। | تَقْرَبًا مٰٰنِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظُّلِمِيْنَ |
| ৩৬. (কিন্তু) শয়তান (শেষ পর্যন্ত) সেখান থেকে তাদের উভয়ের পদশ্বলন ঘটালো, তারা উভয়ে (বেহেশতের) | ٣٦ فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَى عَنْهَا فَأَغْرَجُهُمَا مِيًّا |
| যেখানে ছিলো সেখান থেকে সে তাদের বের করেই ছাড়লো, আর আমি তাদের বললাম, তোমরা একজন | كَانَا فِيْدِ مِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضِ |
| আরেক জনের দুর্শমন হিসেবে এখান থেকে নেমে পড়ো, তোমাদের (পরবর্তী) বাসস্থান (হবে) পৃথিবী, সেখানে একটি নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তোমাদের জন্যে জীবনের | عَدُوًّ ۽ وَلَكُمْ فِي الْإَرْضِ مُسْتَقَرًّ وَّمْتَاعً |
| (যাবতীয়) উপকরণ থাকবে। | اِلی حِیْنِ |
| ৩৭. অতপর আদম তার মালিকের কাছ থেকে (হেদায়াত সম্বলিত) কিছু বাণী পেলো, আল্লাহ তায়ালা তার ওপর ক্ষমাপরবর্শ হলেন, অবশ্যই তিনি বড়ো মেহেরবান ও | ٣٤ فَتَلَقَّى إِذَا مِنْ وَإِنَّهِ كَلِّمْتٍ فَتَابَ عَلَيْدٍ ا |
| क्रमानीन । | إِنَّهُ مُو التَّوَّابُ الرَّحِيْرُ |
| ৩৮. আমি (তাদের) বললাম, তোমরা সবাই (এবার) এখান থেকে নেমে যাও, তবে (যেখানে যাবে অবৃশ্যই | ٣٨ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَهِيْعًا عَ فَارِمًا يَأْتِينَّكُرُ |
| সেখানে) আমার পক্ষ থেকে তোমাদের কাছে (জীবন | مِّنِّى مُلَّى فَهَن تَبِعَ مُنَاي فَكَ خَوْنَ |

মন্যিল ১

২ সূরা আল বাক্বারা

| Catalog will a see and the see | |
|---|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১ আলিফ-লাম্-মীম |
| বিধান সম্পর্কিত) হেদায়াত আসবে, অতপর যে আমার | ا ما . // ۱۰ و مسائده د |
| (সেই) বিধান মেনে চলবে (তার কিংবা) তাদের কোনো ভয় | , |
| নেই, তাদের কোনো প্রকার উৎকণ্ঠিতও হতে হবে না। | |
| ৩৯. আর যারা (আমার বিধান) অস্বীকার করবে এবং আমার আয়াতসমূহ মিথ্যা প্রতিপন্ন (করে লাগামহীন | ٣٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَنَّابُوا بِالْيِنَّ ٱولَٰئِكَ |
| জীবন যাপন) করবে, তারা জাহানামের বাসিন্দা হবে, | |
| তারা সেখানে চিরদিন থাকবে। | أَصْحُبُ النَّارِ عَ هُرْ فِيْهَا خُلِدُونَ ع |
| Olai (214)(21 124)(21 1 | |
| ৪০. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমাদের ওপর আমি | ٣٠ يُبَنِي ٓ إِسْرَاءِيْلَ اذْكُرُوا نِعْيَتِيَ الَّتِي |
| ব্যাসব নেয়ামত দিয়েছি তোমরা সেগুলো স্বরণ করো, আমার (আনুগত্যের) প্রতিশ্রুতি তোমরা পূর্ণ করো, | |
| আমিও (এর বিনিময়ে) তোমাদের (দুনিয়া ও আখেরাতের | ٱنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَٱوْنُوا بِعَمْدِي ۗ ٱوْف |
| পুরস্কারের) প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করবো এবং তোমরা একমাত্র | بِعَهْرِكُمْ ۚ وَإِيَّا ىَ فَارْهَبُونِ |
| আমাকেই ভয় করো। | We shall be a second of the se |
| 8১. আমি (মোহাম্মদের কাছে) যা (কোরআন) নাযিল করেছি, তোমরা এর ওপর ঈমান আনো, যা তোমাদের | ٣١ وَ أَمِنُوا بِهَا ٓ أَنْزَلْتُ مُصَرِّقًا لِّهَا مَعَكُمْ وَلَا |
| কাছে যা কিছু আছে তার সত্যায়নকারী, তোমরা কিছুতেই | تَكُوْنُوْٓ اَ أَوَّلَ كَانِرٍ بِهِ م وَلَا تَشْتَرُوْا بِالْيَيْ |
| এর প্রথম অস্বীকারকারী হয়ো না এবং (বৈষয়িক স্বার্থে) | > |
| সামান্য মূল্যে আমার আয়াতসমূহকে বিক্রি করো না এবং তোমরা শুধু আমাকেই ভয় করো। | ثَهَنَّا قَلِيْلًا ﴿ وَّإِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ |
| ৪২. তোমরা মিথ্যা দিয়ে সত্যকে পোশাক পরিয়ে দিয়ো | ٣٢ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقُّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُبُوا |
| না এবং সত্যকে জেনে বুঝে লুকিয়েও রেখো না। | الْحَقَّ وَ أَنْتُر تَعْلَمُونَ |
| | |
| ৪৩. তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করো, যাকাত আদায় করো, | ٣٣ وَ اَقِيْهُوا الصَّلُوةَ وَ أَتُوا الزَّكُوةَ وَ ارْكَعُوا |
| যারা আমার সামনে অবনত হয় তাদের সাথে মিলে তোমরাও আমার আনুগত্য স্বীকার করো। | مَعَ الرُّكِعِيْنَ |
| | |
| 88. তোমরা কি মানুষদের ভালো কাজের আদেশ করো এবং নিজেদের (জীবনে তা বাস্তবায়নের) কথা ভূলে যাও, | ٣٣ أَتَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ الْكِتْبَ ﴿ اَنَفُسَوْنَ الْكِتْبَ ﴿ اَفَلَا |
| অথচ তোমরা সবাই আল্লাহর কিতাব পড়ো; কিন্তু | ا أَنْفُسَكُمْ وَ أَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكتٰبَ ﴿ أَفَلَا ا |
| (কিতাবের এ কথাটি) তোমরা কি বুঝো নাঃ | تَعْقِلُونَ |
| | |
| ৪৫. (রে ঈমানদার ব্যক্তিরা,) তোমরা সবর ও নামাযের মাধ্যমে আল্লাহর কাছে সাহায্য চাও; (যাবতীয় হক আদায় করে) | |
| নামায প্রতিষ্ঠা করা (অবশ্যই একটা) কঠিন কাজ, কিন্তু | , |
| · · | , , 7 (1 T) 1 T V A , , , , , , , , , , , , , , , , , , |
| যারা আল্লাহকে ভয় করে তাদের কথা আলাদা। | تنزيره رالا على المسررين |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের | \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) | ٣٦ النَّٰوِيْنَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلْقُوا رَبِّهِمْ |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু | ٣٦ النَّٰوِيْنَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلْقُوا رَبِّهِمْ |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু নয়)। | ٣٦ النَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُرْ مُّلْقُوا رَبِّهِرُ وَأَنَّهُرُ مُّلْقُوا رَبِّهِرُ وَأَنَّهُرُ إِلَيْهِ رَجِعُونَ ع |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু নয়)। ৪৭. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমরা আমার সেই নেয়ামতের কথা শ্বরণ করো যা আমি তোমাদের দান | ٣٦ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُرُ مُّلْقُوْا رَبِّهِرُ وَأَنَّهُرُ اللَّهِ رَجِعُوْنَ عَ ٣٤ يُبَنِي ٓ اِسْرَاَعِيْلَ اذْكُرُوا نِعْبَتِي الَّتِيَ ۗ |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু নয়)। ৪৭. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমরা আমার সেই | ٣٦ النَّذِينَ يَظُنُّوْنَ أَنَّهُرُ مُّلْقُوْا رَبِّهِرُ وَأَنَّهُرُ النَّهِ رَجِعُوْنَ عَ ٣٩ يُبَنِي ٓ اِشْرَاَعِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِي َ الَّتِيَ |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু নয়)। ৪৭. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমরা আমার সেই নেয়ামতের কথা শ্বরণ করো যা আমি তোমাদের দান করেছি (সেই নেয়ামতের মধ্যে একটি ছিলো), আমি | ٢٦ النَّانِينَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُرْ مَّلْقُوْا رَبِّهِرُ اَلَّهُ وَالْقُوْا رَبِّهِرُ اَوَانَّهُرُ اللَّهُ رَجِعُوْنَ عَ اللَّهِ رَجِعُوْنَ عَ اللَّهِ مَنْ الْأَكُرُوا نِعْمَتِي اللَّهِ آَنِينَ الْأَكُرُوا نِعْمَتِي اللَّهِيَ الْعَلَمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمُ الْعُلُولُ الْعِلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلَمُ الْعَلَمِينَ الْعِلْمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلَمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمُ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعِلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِ |
| ৪৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু নয়)। ৪৭. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমরা আমার সেই নেয়ামতের কথা শ্বরণ করো যা আমি তোমাদের দান করেছি (সেই নেয়ামতের মধ্যে একটি ছিলো), আমি তোমাদের সৃষ্টিকুলের ওপর প্রাধান্য দিয়েছিলাম। | ٣٦ النَّذِينَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُرْ مَّلْقُوْا رَبِّهِرُ وَالنَّهُ رَبِّهِرُ اللَّهُ رَبِّهِرُ اللَّهِ رَجِعُوْنَ عَ ٣٩ يٰبَنِي ٓ اِسْرَاءِيْلَ اذْكُرُوا نِعْبَتِي النِّي ٓ الْتِي ٓ اَنْعَبْتُ عَلَى الْعَلَيِينَ النِّي َ الْعَبْتُ عَلَى الْعَلَيِينَ الْعَلَيْنَ صَالَعَ الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ هَا الْعَلَيْنَ هَا الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ هَا الْعَلَيْنَ هَا الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلَيْنَ هَا الْعَلَيْنَ عَلَى الْعَلْمُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ ال |
| 8৬. যারা জানে, একদিন তাদের সবাইকে তাদের মালিকের সামনাসামনি হতে হবে এবং তাদের (সবাইকে) তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে (তার জন্যে এটা কঠিন কিছু নয়)। 8৭. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমরা আমার সেই নেয়ামতের কথা শ্বরণ করো যা আমি তোমাদের দান করেছি (সেই নেয়ামতের মধ্যে একটি ছিলো), আমি তোমাদের সৃষ্টিকুলের ওপর প্রাধান্য দিয়েছিলাম। ৪৮. (হে সমানদার ব্যক্তিরা,) তোমরা সে দিনটিকে ভয় | ٢٦ النَّنِينَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُرْ مَّلْقُوْا رَبِّهِرُ اَ وَالْهُرْ مَّلْقُوْا رَبِّهِرُ اَ وَالْهُرُ مَّلْقُوْا رَبِّهِرُ اَ وَالْهُرُ اِلَيْهِ رَجِعُوْنَ عَ الْمَنْ الْمُنْتِينَ النِّينَ الْمُنْتِينَ النِّينَ الْمُنْتِينَ الْعَلَيْنَ الْمُنْتِينَ الْمُنْتِينَ الْعَلَيْنَ الْمُنْتِينَ الْعَلَيْنَ الْمُنْتِينَ مَنْ الْمُنْتِينَ عَلَى الْعَلَيْنَ الْمُنْتِينَ الْمُنْتَالِينَ الْمُنْتَالَقُولُ اللَّهُ الْمُنْتِينَ الْمُنْتَالِينَ الْمُنْتَالِينَ الْمُنْتَالِقُولُ اللَّهُ الْمُنْتَالِقُولُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّا اللَّا |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১ আলিফ-লাম-মীম |
|--|--|
| সেদিন) কোনো সুপারিশ গ্রহণ করা হবে না, (কাউকে ছেড়ে দেয়ার জন্যে) কারো কাছ থেকে কোনো মুক্তিপণ নেয়া হবে না– না তাদের (সেদিন) কোনো রকম সাহায্য করা হবে! | مِنْهَا عَنْكُ وَ لَا هُر يُنْصَرُونَ |
| ৪৯. (শরণ করো,) যখন আমি তোমাদের ফেরাউনের লোকদের (গোলামী) থেকে মুক্তি দিয়েছিলাম, তারা নিকৃষ্ট ধরনের শাস্তি দ্বারা তোমাদের যন্তগা দিতো, তারা তোমাদের পুত্র সন্তানদের হত্যা করতো এবং তোমাদের মেয়েদের (তারা) জীবিত রেখে দিতো; তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে এতে তোমাদের জন্যে বড়ো একটা পরীক্ষা (নিহিত) ছিলো। | ٣٩ وَإِذْ نَجَّيْنُكُرْ مِّنْ أَلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُرْ مَّنَ أَلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُوْنَكُرْ سُوَّةَ الْعَنَابِ يُنَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُرْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُرْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُرْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُرْ مَلَاءً مِّنْ رَبِّكُرْ فِلْكَاءً مِّنْ رَبِّكُرْ عَظِيْرً |
| ৫০. (আরো স্বরণ করো,) যখন আমি তোমাদের জন্যে সমুদ্রকে দ্বিধাবিভক্ত করে দিয়েছিলাম, অতপর আমি তোমাদের (সমূহ মৃত্যুর হাত থেকে) বাঁচিয়ে দিয়েছিলাম এবং আমি ফেরাউন ও তার দলবলকে (সমুদ্রে) ডুবিয়ে দিয়েছিলাম, আর তোমরা তা তো (নিজেরাই) প্রত্যক্ষ করছিলে! | ٥٠ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُرُ الْبَحْرَ فَٱنْجَيْنَكُرْ وَٱغْرَقْنَا ۚ إِلَ فِرْعَوْنَ وَٱنْتُرْ تَنْظُرُوْنَ |
| ৫১. (আরো স্মরণ করো,) যখন মূসাকে আমি (বিশেষ একটি কাজের জন্যে) চল্লিশ রাত নির্ধারণ করে দিলাম, তার (যাওয়ার) পর তোমরা একটি বাছুরকে (মাবুদরূপে) গ্রহণ করে নিলে, (আসলে) তোমরা (ছিলে) ভীষণ যালেম! | ۵۱ وَإِذْ وٰعَانَنَا مُوْسَٰى ٓ أَرْبَعِیْنَ لَیْلَةً ثُرَّ الَّحْنَاتُ مُلِّیَ الْمَالَةَ ثُرَّ الْعِجْلَ مِنْ بَعْلِهِ وَ آنْتُر ظٰلِمُوْنَ |
| ৫২. অতপর আমি তোমাদের ক্ষমা করে দিয়েছি এ আশায় যে, তোমরা আমার কৃতজ্ঞতা আদায় করবে। | ۵۲ ثُرِّ عَفَوْنَا عَنْكُرْ مِّنْ بَعْنِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُرْ تَشْكُرُونَ |
| ৫৩. (সে কথাও শ্বরণ করো,) যখন আমি মূসাকে কিতাব ও ন্যায় অন্যায়ের পরখকারী- (একটি মানদণ্ড) দান করেছি, যাতে করে তোমরা হেদায়াতের পথে চলতে পারো। | ٥٣ وَإِذْ أَتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَكُوْنَ |
| ৫৪. (আরো স্মরণ করো,) মূসা যখন তার নিজ লোকদের (কাছে এসে) বললো, হে আমার জাতি, তোমরা (আমার অবর্তমানে) বাছুরকে মাবুদ হিসেবে গ্রহণ করে যে (বড়ো | ۵۴ وَإِذْ قَالَ مُوْسَٰى لِقَوْمِهٖ يَٰقَوْمِ إِنَّكُرُ ظَلَمْتُرُ ٱنْفُسَكُرُ بِاتِّخَاذِكُرُ الْعِجْلَ فَتُوبُوْآ |
| রকমের) যুলুম করেছো, তার জন্যে অবিলম্বে আল্লাহর দরবারে তাওবা করো এবং তোমরা তোমাদের নিজেদের (শেরেকে অভিশপ্ত) নফসসমূহকে হত্যা করো, এর | إِلَى بَارِئِكُرْ فَاقْتُلُوْآ اَنْفُسَكُرْ ، ذَٰلِكُرْ غَيْرٌ لَّكُرْ عِنْنَ بَارِئِكُرْ ، فَتَابَ عَلَيْكُرْ ، إِنَّهُ مُوَ |
| মাঝেই আল্লাহর কাছে তোমাদের জন্যে কল্যাণ রয়েছে; অতপর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর ক্ষমাপরবশ হবেন, (কারণ) তিনি বড়োই ক্ষমাশীল ও অনুগ্রহকারী। | التوابُ الرَّحِيرُ |
| ৫৫. তোমরা যখন বলেছিলো, হে মৃসা, আমরা আল্লাহকে প্রত্যক্ষভাবে না দেখলে কখনো তার ওপর ঈমান আনবো না, তখন (এ ধৃষ্টতার শাস্তি হিসেবে) মৃহ্তের মধ্যেই বল্প (─সম এক গযব) তোমাদের ওপর নিপতিত হলো, | ٥٥ وَإِذْ تُلْتُرْ يُبُوْسَٰى لَنْ تُّوْسِ لَكَ حَتَّى نَرَى اللهَ جَهْرَةً فَأَعَلَ تَكُمُ الصَّعِقَةُ وَأَنْتُر |
| আর তোমরা তার দিকে চেয়েই থাকলে (কিছুই করতে পারলে না)। ৫৬. অতপর (এই ধ্বংসকর) মৃত্যুর পর তোমাদের আমি | تَنْظُرُونَ تَنْظُرُونَ مَا مَنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُ |
| পুনরায় জীবন দান করলাম, যাতে করে তোমরা (আমার) কৃতজ্ঞতা আদায় করতে পারো। | ۵٦ ثُرِ بَعَثَنٰكُر مِّنَ ابَعْنِ مَوْتِكُر كَعَلَّكُر كَعَلَّكُر تَعَلَّكُر تَعَلَّكُم تَشْكُرُونَ |
| ২ সূরা আল বাক্বারা | মন্যিল ১ |

www.eelm.weebly.com

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

৫৭. আমি তোমাদের ওপর মেঘের ছায়া দান করেছিলাম, 'মানু' এবং 'সালওয়া' (নামক খাবারও) তোমাদের জন্যে পাঠিয়েছিলাম: (আমি তোমাদের বলেছিলাম.) সে সব পবিত্র খাবার খাও, যা আমি তোমাদের দিয়েছি, তা তোমরা উপভোগ করো. (নেয়ামত অবজ্ঞা করে) তারা আমার ওপর কোনো অবিচার করেনি, (বরং এর দ্বারা) তারা নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করেছে।

٥٤ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُرُ الْغَهَا } وَٱنْزَلْنَا عَلَيْكُرُ الْهَنَّ وَالسَّلُوٰى مَ كُلُوْا مِنْ طَيَّبْسِ مَا رَزَقْنُكُيرُ ، وَمَا ظَلَيُونَا وَلَكِيْ كَانُوْ ۚ إِنْفُسَهُمِ ۗ

৫৮. (স্বরণ করো.) আমি যখন তোমাদের বলেছিলাম. তোমরা এই জনপদে ঢুকে পড়ো এবং তোমরা তার যেখান থেকেই ইচ্ছা স্বাচ্ছন্দ্যে আহার করো. (দম্ভ সহকারে প্রবেশ না করে) মাথানত করে ঢোকো, তোমরা ক্ষমার কথা বলবে. আমিও তোমাদের ভুল ক্রেটিসমূহ ক্ষমা করে দেবো এবং যারা ভালো কাঞ্চ করে আমি (এভাবেই) তাদের (পাওনার অংক) বাড়িয়ে দেই।

٥٨ وَإِذْ قُلْنَا ادْغُلُوا مِنْ الْقَرْيَةَ فَكُلُواْ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُرُ رَغَٰدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّنَ ا وَّقُولُوا مِطَّةً نَّغُفِرْ لَكُيرَ غَطَيْكُيرَ ء وَسَنَزِيْنُ الْهُحُسِنِيْنَ

৫৯. (সুম্পষ্ট হেদায়াত সন্তেও) অতপর যালেমরা এমন কিছু ব্যাপার রদবদল করে ফেললো, যা না করার জন্যেই তাদের বলা হয়েছিলো, আমিও এরপর যারা যুলুম করলো তাদের ওপর আসমান থেকে গযব নাযিল করলাম. (মূলত) এটা ছিলো তাদের গুনাহর ফল।

٥٩ فَبَدَّلُ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيْلَ لَهُرْ فَٱنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَهُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّهَاءِ بِهَا كَانُوْ ا يَفْسُقُوْنَ ع

৬০. (স্বরণ করো,) যখন মুসা (আমার কাছে) তার জাতির লোকদের জন্যে পানি চাইলো, আমি (তাকে) বললাম, তোমার হাতের লাঠি দিয়ে তুমি (এই) পাথরে আঘাত করো, (আঘাত করা মাত্রই) সে পাথর থেকে عَشُوةً عَيْنًا ﴿ قَلْ عَلِم كُلُّ أَنَاسٍ مُشْرَبَهُم ﴿ वारतािष्ठ (शानित्र) नरत उरला و عَنْنًا ﴿ قَلْ عَلِم كُلُّ أَنَاسٍ مُشْرَبَهُم ﴿ عَرَاقًا وَاللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَم اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى ال গোত্রই নিজেদের (পানি পানের) ঘাট চিনে নিলো: (আমি বললাম.) আল্লাহর দেয়া রেযেক থেকে তোমরা পানাহার করো, তবে (কিছতেই আমার) যমীনে বিপর্যয় সষ্টি করে বেডিয়ো না।

١٠ وَ إِذِ اسْتَسْقَى مُوسَى لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَمَاكَ الْحَجَرَ ، فَانْفَجَرَ ... فِي الْنَتَا كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رَّزْقُ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا فِي الْكَرْضِ مُفْسِينَيَ

৬১. (স্বরণ করো.) তোমরা যখন মুসাকে বলেছিলে. হে মুসা. (প্রতিদিন) একই ধরনের খাবারের ওপর আমরা কিছুতেই (আর) ধৈর্য ধরতে পারবো না, তুমি তোমার মালিকের কাছে বলো যেন তিনি কিছু ভূমিজাত দ্রব্য-তরিতরকারি, পেয়াজ, রসুন, ভূষ্টা, ডাল উৎপাদন করেন, সে বললো, তোমরা কি (আল্লাহর পাঠানো) এ উৎকৃষ্ট وَبَصَلِهَا وَقَالَ ٱتَسْتَبْرِالُوْنَ الَّذِي هُوَ ٱدْنَى किनिराय वर्षाल (﴿ وَبَصَلِهَا وَقَالَ ٱتَسْتَبْرِالُوْنَ الَّذِي هُوَ ٱدْنَى নিতে চাওঃ (যদি তাই হয়) তাহলে তোমরা অন্য কোনো শহরে সরে পড়ো, যেখানে তোমাদের এসব জিনিস– যা তোমরা চাইবে, তা অবশ্যই পাওয়া যাবে, (আল্লাহ তায়ালার আদেশ অমান্য করার ফলে) শেষ পর্যন্ত অপমান ও দারিদ্র তাদের ওপর ছেয়ে গেলো: আল্লাহর গযব দারা তারা আক্রান্ত হয়ে গেলো, এটা এ কারণে (যে), এরা (ক্রমাগত) আল্লাহর আয়াতকে অস্বীকার করতে থাকলো এবং আল্লাহর নবীদের অন্যায়ভাবে হত্যা করতে থাকলো, আর এসব কিছু এজন্যই ছিলো যে, তারা আল্লাহর সাথে না-ফরমানী ও সীমালংঘন করছিলো!

ال وَإِذْ قُلْتُر يُهُوسى لَنْ تَصْبِرَ عَلَى طَعَا وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجُ لَنَا مِيًّا تُنْبِسُ الْأَرْضُ مِنْ اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ مَ إِهْبِطُوْا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْرُمَّا سَٱلْتُرْ ، وَضُرِبَسْ عَلَيْهِرُ النِّلَّةُ وَالْهَسْكَنَةُ ق وَبَاءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ، ذٰلِكَ بِٱلَّهُمْ كَانُوْ ا يَكْفُرُونَ بِايْتِ اللهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْر الْحَقِّ ، ذٰلِكَ بِهَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَلُوْنَ ع



৬২. নিসন্দেহে যারা ঈমান এনেছে, যারা ইহুদী হয়ে গেছে, যারা খৃষ্টান এবং 'সাবী'- এদের যে কেউই আল্লাহর ওপর যথায়থ ঈমান আনবে, ঈমান আনবে পরকালের ওপর এবং ভালো কাজ করবে, তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরস্কার রয়েছে এবং এসব লোকের (যেমন) কোনো ভয় নেই, (তেমনি) তারা চিন্তিতও হবে না।

إِنَّ الَّذِيثَىَ أَمَنُواْ وَالَّذِيثَىَ هَادُوْا وَالنَّصْرَى وَالصَّبِئِينَ مَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْ ۚ الْأَخِرِ وَعَبِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ ٱجْرُهُمْ عِنْكَ رَبِّهِمْ ﴾ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

৬৩. (স্মরণ করো,) যখন আমি তোমাদের কাছ থেকে প্রতিশ্রুতি নিয়েছিলাম (যে, তোমরা তাওরাত মেনে চলবে) এবং তুর পাহাড়কে আমি তোমাদের ওপর তুলে ধরে (বলে) ছিলাম: যে কিতাব তোমাদের আমি দান করেছি তা শক্তভাবে আঁকড়ে ধরো এবং তাতে যা কিছু আছে তা শ্বরণ রেখো, (এ উপায়ে) তোমরা হয়তো (শয়তান থেকে) নিজেদের বাঁচাতে পারবে।

٦٣ وَإِذْ إَخَلَانَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ وَ خُنُوا مَا اتَيْنَكُر بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوا مَا فيه لَعَلَّكُم ۚ تَتَّقُونَ

৬৪. অতপর তোমরা এ (ওয়াদা) থেকে ফিরে গেলে. (কিন্তু তা সত্ত্বেও) আমার অনুদান ও রহমত যদি তোমাদের ওপর না থাকতো তাহলে তোমরা অবশ্যই ধ্বংস হয়ে যেতে!

١٣ ثُرِّ تَوَلَّيْتُرْ مِّنُ بَعْلِ ذُلكَ عَلَوْ لَا فَضُلُّ الله عَلَيْكُرْ وَرَحْهَتُهُ لَكُنْتُرْ مِّنَ الْحُسِرِينَ

৬৫. তোমরা তো ভালো করেই তাদের জানো, যারা তোমাদের মধ্যে শনিবারে (আল্লাহর আদেশের সীমা) লংঘন করেছে, অতপর আমি তাদের (তথু এটুকুই) বলেছি, যাও- (এবার) তোমরা সবাই অপমানিত বানর (-এ পরিণত) হয়ে যাও।

٦٥ وَلَقَلْ عَلِهُتُرُ الَّذِينَ اعْتَلَوْا مِنْكُرْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُرْ كُوْنُوْ ا قِرَدَةً خَسِئِينَ ج

৬৬. এ (ঘটনা)-কে আমি সে সব মানুষদের- যারা তখন সেখানে (মজুদ) ছিলো- আরো যারা পরে আসবে. তাদের (সবার) জন্যে একটি দৃষ্টান্তমূলক (ঘটনা) বানিয়ে দিয়েছি, যারা আল্লাহকে ভয় করে এমন লোকদের জন্যেও এ ঘটনা (ছিলো) একটি উপদেশ।

٢٦ فَجَعَلْنُهَا نَكَارًا لِّهَا بَيْنَ يَنَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا ومَوْعظَةً لِّلْهُتَّقيْنَ

৬৭. (আরো শ্বরণ করো,) যখন মুসা তার জাতিকে একটি গাভী যবাই করার আদেশ দিচ্ছেন: তারা (এ কথা ন্তনে) বললো (হে মুসা), তুমি কি আমাদের সাথে তামাশা করছোঃ সে বললো, আমি (তামাশা করে) জাহেলদের দলে শামিল হওয়া থেকে আল্লাহ তায়ালার কাছে পানাহ চাই!

أَنْ تَنْبَحُوا بَقَرَةً ﴿ قَالُوا أَتَتَّخِنُنَا هُزُوا ﴿ قَالَ أَعُوْذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُوْنَ مِنَ الْجِهِلِيْنَ

৬৮. তারা (মৃসাকে) বললো, তুমি তোমার মালিককে বলো, আমাদের তিনি যেন সুস্পষ্টভাবে বলে দেন- তা কেমন (হবে)? সে বললো, অবশ্যই তা হবে এমন যা বৃদ্ধ হবে না, আবার (একেবারে) বাচ্চাও হবে না; (বরং তা হবে) এর মাঝামাঝি বয়সের (যাও, এখন) যা কিছু তোমাদের নির্দেশ দেয়া হচ্ছে তাই করো।

٦٨ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنُ لَّنَا مَا هِيَ ﴿ قَالَ إِنَّهُ يَقُوْلُ إِنَّهَا بَقَرَةً ۗ لَّا فَارِضٌّ وَّلَا بِكُوَّ ء عَوَانَّ ۚ بَيْنَ ذَٰلِكَ ء فَانْعَلُواْ مَا تُؤْمَرُونَ

৬৯. তারা (মৃসাকে) বললো, তুমি তোমার মালিককে জিজ্ঞেস করে নাও, তিনি আমাদের যেন বলে দেন তার রং কেমন হবেং সে বললো, তা হবে হলুদ রংয়ের, তার রং এতো আকর্ষণীয় হবে যে, যারা তাকাবে তা তাদেরই পরিতৃপ্ত করবে।

٦٩ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنَ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ﴿ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةً مَفْرَاءً لا فَاتِعْ لُّوْنُهَا تَسُرُّ النَّظِرِيْنَ

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

৭০. তারা বললো (হে মূসা), তুমি তোমার মালিককে (আবার) জিজ্ঞেস করে নাও, (আসলে) তা কি ধরনের হবে. (আমরা তো সঠিক গাভী বাছাই করতে পারছি না.) আমাদের কাছে (তো সব) গাভী দেখতে একই ধরনের মনে হয়: আল্লাহ তায়ালা চাইলে (এবার) অবশ্যই আমরা সঠিক পথে চলতে পারবো।

 4 قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِي لا إِنَّ الْبَقَرَ تَشْبَهَ عَلَيْنَا ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَهْتَلُون

৭১. সে বললো, (তাহলে শুনো, আল্লাহর ঈব্সিড) সে (গাভী) হবে এমন যে, সেটি কোনো চাষাবাদের কাজ করে না, যমীনে পানি সেচের কাজও করে না. (অর্থাৎ তা হবে) সম্পূর্ণ নিখুঁত ও ক্রটিমুক্ত, (একথা ওনে) তারা বললো, এতোক্ষণে তুমি (আমাদের সামনে) সত্য কথাটা নিয়ে এসেছো! অতপর তারা (এ ধরনের একটি গাভী) যবাই করলো, যদিও (ইতিপূর্বে) মনে হয়নি যে, তারা এ কাজটি আদৌ করতে চায়।

١ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةً ۗ لا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ عَ مُسَلَّمَةً لَّا شِيَةَ فِيْهَا ، قَالُوا الْنُنَ جِئْتَ بِالْعَقِّ ، فَنَ بَحُوْهَا وَمَا كَادُوْ ا يَفْعَلُوْنَ ع

৭২. (স্মরণ করো.) যখন তোমরা একজন লোককে হত্যা করেছিলে, অতপর সে ব্যাপারে তোমরা একে অপরের ওপর (হত্যার) অভিযোগ আরোপ করতে শুরু করলে (অথচ) আল্লাহ তায়ালা সে বিষয়ই (মানুষের সামনে) বের করে আনতে চাইলেন, যা তোমরা লুকোবার চেষ্টা করছিলে।

٤٢ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادُّرَءْتُمْ فَيْهَا ء وَ اللَّهُ مُخْرِجٌ مًّا كُنْتُرْ تَكْتُهُوْنَ ع

৭৩. (হত্যাকারীকে খোজার জন্যে) আমি তোমাদের पण. (२७)। काशात (पाष्ट्रात अत्ना) आाम (जामात्मत مَنُ لِكَ يُحَيِّمُ اللهُ عَنُ لِكَ يُحَيِّمُ اللهُ عَنْ لِكَ يُحَيِّمُ مَاللهُ عَنْ الْمَرْبُورُةُ بِبَعْضِهَا مَ كَنْ لِكَ يُحَيِّمُ مِا اللهُ اللهُ عَنْ الْمَرْبُورُةُ وَبِعَضِهَا مَ كَنْ لِكَ يُحَيِّمُ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَا عَنْ اللهُ عَلَا عَلِي عَلَا عَلَا একাংশ দিয়ে তোমরা একে (মৃদু) আঘাত করো, এভাবেই আল্লাহ তায়ালা মৃত ব্যক্তিকে জীবন দান করবেন এবং (এ ঘটনা দ্বারা) তিনি তোমাদের কাছে তাঁর (জ্ঞানের) নিদর্শনসমূহ তুলে ধরেন, আশা করা যায় তোমরা (সত্য) অনুধাবন করবে।

اللهُ الْمَوْتَى وَيُرِيْكُرُ أَيْتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ

৭৪. (কিন্তু এতো বড়ো একটি নিদর্শন সত্ত্বেও) অতপর তোমাদের মন কঠিন হয়ে গেলো, (এমন কঠিন) যেন তা (শক্ত) পাথর, (বরং মাঝে মাঝে মনে হয়) পাথরের চেয়েও (বুঝি তা) বেশী কঠিন; (কেননা) কিছু পাথর এমন আছে যা থেকে (মাঝে মাঝে) ঝর্ণাধারা নির্গত হয়, আবার কোনো কোনো সময় তা বিদীর্ণ হয়ে ফেটেও যায় এবং তা থেকে পানিও (বেরিয়ে আসে, (অবশ্য) এর মধ্য থেকে (এমন কিছু পাথর আছে) যা আল্লাহর ভয়ে ধসে পড়ে: আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কার্যকলাপ সম্পর্কে মোটেই গাফেল নন।

٤٣ ثُولَ قَسَى قُلُوبُكُورُ مِن المَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِي كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَلُّ قَسُوَةً ﴿ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهُرُ ﴿ وَإِنَّ مِنْهَا لَهَا يَشَقَّقُ فَيَخُرُجُ مِنْهُ الْهَاءُ ﴿ وَإِنَّ مِنْهَا لَهَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ، وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمًّا

৭৫. (হে ঈমানদার লোকেরা, এরপরও) তোমরা কি এই আশা পোষণ করো যে, এরা তোমাদের (সাথে তোমাদের فَرِيقٌ مِنْهُر يَسْمُعُونَ كُلُرَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ वीत्नत) जता जानत्वः এদের একাংশ তো (यूर्ग يُحَرِّفُونَهُ عَرِّفُونَهُ عَالِمَ اللَّهِ عَرِّفُونَهُ عَالِمَ اللَّهِ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُ عُلُولُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُنْهُمُ اللّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُلْمُ اللّهُ عُنْهُمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُنْ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ اللَّهُ عُنْهُمُ عُلُولُ اللَّهُ عُلْمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ اللَّالِمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ اللَّهُ عَلَيْهُ عُلَّا عُلَّا عُلْمُ عُلِمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلَّا عُلْمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِ যুগ ধরে) আল্লাহর কেতাব শুনে আসছে, অতপর তারা তাকে বিকৃত করছে, অথচ এরা ভালো করেই তা জানে।

44 أَفَتَطْهَعُونَ أَنْ يُّوْمِنُوا لَكُرْ وَقَلْ كَانَ مِنْ ا بَعْلِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَهُوْنَ

৭৬. (এদের অবস্থা হচ্ছে) এরা যখন ঈমানদারদের সাথে সাক্ষাত করে তখন বলে, আমরা ঈমান এনেছি, কিন্তু এরাই (আবার) যখন গোপনে একে অপরের সাথে মিলিত হয় তখন বলে, তোমরা কি মুসলমানদের কাছে সে সব কথা প্রকাশ করে দাও যা আল্লাহ তায়ালা (মোহামদের নবুওত সম্পর্কে আগেই তাওরাতে) তোমাদের ওপর ব্যক্ত

٢٦ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ أَمَنُوا قَالُوْآ أُمَنَّا عَهِ وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُر اللَّي بَعْضِ قَالُوْا ٱتَّحَٰلِّ ثُوْنَهُر بِهَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُر

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

করেছেন: (খবরদার, তোমরা এমনটি কখনো করো না), তাহলে তারা (একদিন) তোমাদের মালিকের সামনে এটা দিয়েই তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য উত্থাপন করবে, তোমরা কি (এটুকু কথাও) বুঝতে পারো নাঃ

رُ بِهِ عِنْنَ رَبِّكُمْ الْفَلَا تَعْقَلُونَ

৭৭. এরা কি জানে না, (আল্লাহর কেতাবের) যা কিছু এরা গোপন করে (আবার নিজেদের স্বার্থে তারা) যা প্রকাশ করে, তা (সবই) আল্লাহ তায়ালা জানেন।

٤٤ أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلَنُونَ

৭৮. এদের আরেকটি দল, যারা (একান্ত) অশিক্ষিত (নিরক্ষর), এরা (আল্লাহর) কেতাব সম্পর্কে কিছুই জানে না. (আল্লাহর কেতাব যেন এদের কাছে) একটি নিছক ধ্যান ধারণা (সর্বস্থ পুস্তক) মাত্র, এরা তথু অমূলক ধারণাই করে থাকে।

٥ > وَمِنْهُمْ } أُمِيَّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتْبَ إِلَّا اَمَانِي وَإِنْ مَرْ إِلَّا يَظُنَّوْنَ

৭৯. সে সব লোকের জন্যে ধ্বংস (অনিবার্য), যারা হাত দিয়ে কিতাব লেখে নেয়, তারপর (দুনিয়ার সামনে) বলে, এগুলো হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে (অবতীর্ণ শরীয়তের বিধান), তাদের উদ্দেশ্য হচ্ছে, যেন তা দিয়ে (দুনিয়ার) কিছু (স্বার্থ) তারা কিনে নিতে পারে: অতপর তাদের হাত যা কিছু রচনা করেছে তার জন্যে তাদের ধ্বংস ও দুর্ভোগ, যা কিছু তারা উপার্জন করেছে তার জন্যেও তাদের দর্ভোগ।

44 فَوَيْلٌ لِلَّانِيْنَ يَكْتُبُونَ الْكتٰبَ بِآيْنِيْهِ ثِي ثُمرٌ يَقُولُونَ مِنَا مِنْ عِنْكِ اللَّهِ لِيَهْتَرُوا بِهِ ثَهَنَّا قَلَيْلًا ، فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمًّا كَتَبَتْ آيْنِهُ وَوَيْلُ لَّهُمْ مِنَّا يَكْسِبُونَ

৮০. এ সব (নির্বোধ) লোকেরা বলে, জাহান্লামের আগুন কখনোই আমাদের স্পর্শ করবে না, একান্ত (ফ্রাকরেও-) তা হবে নির্দিষ্ট কয়েকটা দিনের (জন্যে) মাত্র. (হে নবী.) তুমি তাদের বলো, তোমরা কি আল্লাহর কাছ থেকে (এমন) কোনো প্রতিশ্রুতি আদায় করে নিয়েছো? আল্লাহ তায়ালা তো কখনো তাঁর প্রতিশ্রুতি ভংগ করেন না. না তোমরা জেনে বুঝেই আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে এমন সব কথা বলে বেডাচ্ছো যা তোমরা নিজেরাই জানো না।

٨٠ وَقَالُوْ النَّ تَهَسَّنَا النَّارُ اللَّ ٱيَّامًا مُّعْلُودَةً ۚ قُلْ ٱتَّخَٰنَ تُرْ عَنْنَ اللَّهِ عَهْرًا فَلَيْ يُّخْلِفَ اللَّهُ عَهْنَا ۗ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا $\tilde{\chi}$ تَعْلَمُوْنَ

৮১. হাঁ, যে কোনো ব্যক্তি পাপ কামিয়েছে এবং যাকে তার পাপ ঘিরে রেখেছে, এমন লোকেরাই হচ্ছে জাহান্লামের অধিবাসী এবং সেখানে তারা চিরদিন অবস্থান করবে।

بَلِّي مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّأَ هَاطَتُ بِهِ بُّنَّةً فَأُولَٰئِكَ أَشْعُبُ النَّارِ } هُرْ فِيْهَا

৮২. (আবার) যারাই (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনবে এবং ভালো কাজ করবে, তারা বেহেশতবাসী হবে, তারা সেখানে চিরদিন থাকবে।

٨٢ وَالَّذِيْنَ أُمُّنُواْ وَعَهِلُوا الصَّلِحُتِ أُولَئِكَ أَصْحُبُ الْجَنَّةِ عَ مُرْ فِيْهَا عَلِلُونَ عَ

৮৩. যখন আমি বনী ইসরাঈলদের কাছ থেকে (এ মর্মে) প্রতিশ্রুতি নিয়েছিলাম যে. তোমরা আল্লাহ তায়ালা ছাডা ﴿ تَعْبُنُ وَنَ ١ ۗ اللَّهُ مَن وَبِالْوَالِنَيْنِ अना कारता এवागांठ कंदरव ना এवर भाठा भिठात जारथ সদ্যবহার করবে, আত্মীয় স্বন্ধন, এতীম-মেসকীনদের সাথে ভালো ব্যবহার করবে, মানুষদের সুন্দর কথা বলবে, নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত প্রদান করবে: (কিন্তু এ সত্ত্বেও) তোমাদের মধ্যে সামান্য কিছুসংখ্যক লোক ছাড়া অধিকাংশই অতপর ফিরে গেছো, এভাবেই তোমরা (প্রতিশ্রুতি থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিলে।

٨٣ وَإِذْ أَعَٰنُنَا مِيْقَاقَ بَنِي ۚ إِسْرَآءِيْلَ إِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبِي وَالْيَتْنِي وَالْمَسْكِيْنِ وَقُوْلُوْ اللَّنَّاسِ حُسْنًا وَّأَقِيْهُوا الصَّلْوةَ وَ أَتُوا الزَّكُوةَ ﴿ ثُرَّ تُولَّيْتُمْ الَّا قَلَيْلًا مِّنْكُمْ وَ أَنْتُرُ مُّعْرِضُوْنَ

২ সুরা আল বাকাুুুরা

৮৪. তোমাদের (কাছ থেকে) আমি এ প্রতিশ্রুতিও নিয়েছিলাম যে, তোমরা কেউ কারো রক্তপাত করবে না এবং নিজেদের লোকদের তাদের ঘর বাড়ি থেকে উচ্ছেদ করবে না, অতপর তোমরা তা স্বীকার করে নিয়েছিলে, তোমরা তো নিজেরাই (এ) সাক্ষ্য দিচ্ছো!

٨٣ وَإِذْ إَخَانَنَا مِيْثَاقِكُمْ لَا تَسْفَكُوْنَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمر اَقْرَرْتُمْ وَانْتُمْ بَهْمَالُونَ

৮৫. তারপর এই তো হচ্ছো তোমরা! একে অপরকে তোমরা হত্যা করতে লাগলে, তোমাদের এক দলকে তোমরা তাদের ভিটেমাটি থেকে বিতাড়িত করে দিতে লাগলে, অন্যায় এবং যুলুম দারা যালেমদের তোমরা তাদের ওপর পৃষ্ঠপোষকতা করতে থাকলে (তথু তাই নয়), কোনো লোক (যুদ্ধ) বন্দী হয়ে তোমাদের কাছে এলে তোমরা তাদের জন্যে মুক্তিপণ দাবী করো, (অথচ) তাদের ঘরবাডি থেকে উচ্ছেদ করাটাই ছিলো তোমাদের ওপর অবৈধ কাজ (এবং আল্লাহ তায়ালাকে দেয়া প্রতিশ্রুতির সুস্পষ্ট লংঘন); তোমরা কি (তাহলে) আল্লাহর কিতাবের একাংশ বিশ্বাস করো এবং আরেক অংশ অবিশ্বাস করো? (সাবধান!) কখনো যদি কোনো (জাতি কিংবা) ব্যক্তি (দ্বীনের অংশবিশেষের ওপর ঈমান আনয়নের) এ আচরণ করে, তাদের শান্তি এ ছাড়া আর কি হবে যে, পার্থিব জীবনে তাদের লাঞ্ছনা ভোগ করতে হবে, তাদের পরকালেও কঠিনতম আযাবের দিকে নিক্ষেপ করা হবে; তোমরা (প্রতিনিয়ত) যা করছো, আল্লাহ তায়ালা সে সব কিছু থেকে মোটেও উদাসীন নন।

٨٥ ثُرُّ ٱنْتُرْ مَّؤُلَاءِ تَقْتُلُوْنَ ٱنْفُسَكُرْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيْقًا مِّنْكُرْ مِّن دِيَارِهِر ز تَظْمَرُونَ عَلَيْهِرْ بِالْإِثْرِ وَالْعُنُوانِ وَإِنْ يَّاكُوكُمْ أُسْرِي تُفْلُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّامٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ وَ أَفَتُوْمُنُونَ بِبَعْضِ الْكُتْبِ وَتَكْفُووُنَ بِبَعْضِ ۚ فَهَا جَزَّاءُ مَنْ يَقْعَلُ ذَٰلِكَ مِنْكُرْ إِلَّا خِزْيٌّ فِي الْحَيْوةِ النُّنْيَا ۽ وَيَوْمَ الْقِيهَةِ يُرَدُّونَ إِلَّى اَشَلِّ الْعَنَابِ ، وَمَا اللهُ بِغَافِلِ عَمَّا تَعْمَلُونَ

৮৬. (বস্তুত) এ লোকেরা আখেরাতের (স্থায়ী জীবনের) বিনিময়ে দুনিয়ার (অস্থায়ী) জীবন খরিদ করে নিয়েছে (এরা যেহেতু আযাব বিশ্বাসই করেনি), তাই (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) তাদের আযাব কিঞ্চিৎ পরিমাণও হালকা করা হবে না, আর না তাদের (কোনোদিক থেকে কোনো রকম) সাহায্য করা হবে!

٨٦ أُولَٰئكَ الَّذِينَ اشْتَرَوا الْحَيْوةَ النَّنْيَا بِالْإِحْرَةِ رِ فَلَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَلَابُ وَلَا مُرْ يُنْصَرُونَ ع

৮৭. আমি মুসাকে কিতাব দিয়েছি, তারপর একে একে **আমি জ্বারো** স্লনেক নবীই পাঠিয়েছি এবং (বাপ ছাড়া **সন্তান পরদা** করার মতো) সম্পষ্ট নিদর্শন দিয়ে আমি **সারহিরাম পুত্র ঈ**সাকে পাঠিয়েছি এবং (আমার বাণী ও) পবিত্র আত্মার মাধ্যমে তাকে আমি সাহায্য করেছি: (অথচ) যখনি তোমাদের কাছে আল্লাহর কোনো নবী আসতো, তোমাদের মনোপৃত না হলে তোমরা অহংকারের বশবর্তী হয়ে তাদের অস্বীকার করেছো. তাদের কাউকে তোমরা মিথ্যাবাদী বলেছো. (আবার) তাদের একদলকে তোমরা হত্যাও করেছো।

٨٤ وَلَقَنَ أَتَيْنَا مُوْسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْنِ ۗ بِالرَّسُلِ زِ وَ أَتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَوْيَرَ الْبَيِّنْسِ وَآيَّانْنُهُ بِرُوْحِ الْقُنُسِ ، أَفَكُلَّهَا جَاءَكُمْ رَسُوْلٌ بِهَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَوْتُهُ عَفَوِيْقًا كَنَّابْتُهُ وَوَوَيْقًا تَقْتُلُونَ

৮৮. তারা বলে, (হেদায়াতের জন্যে) আমাদের মন (ও তার দরজা) বন্ধ হয়ে আছে, (আসলে) আল্লাহ তায়ালাকে তাদের (ক্রমাগত) অস্বীকার করার কারণে তিনি তাদের ওপর অভিসম্পার্ত করেছেন, অতপর তাদের সামান্য পরিমাণ লোকই আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে।

٨٨ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ، بَلْ لَّعَنَّمُرُ اللَّهُ بِكُفُومِ مُ فَقَلْيُلًا مًّا يُؤْمِنُونَ

৮৯. যখনি তাদের কাছে আল্লাহর কাছ থেকে কিতাব مُوَلِيًّا مِأْءُمُرُ كِتُبُّ مِّنْ عِنْلِ اللَّهِ مُصَلِّقٌ ٨٩ নাযিল হলো যা তাদের কাছে মজুদ কিতাবের সত্যতা لَّهَا مَعْمُرُ لا وكَانُواْ مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ विष्ठतार जाता निष्ठतार وَاللَّهُ عَالُواْ مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

সেমাজের) অন্যান্য কাম্ফেরদের ওপর বিজয়ী হওয়ার জন্যে (এ কিতাব ও তার বাহকের আগমন) কামনা করছিলো, কিন্তু আজ যখন তা তাদের কাছে এলো এবং যা তারা যথাযথ চিনতেও পারলো– তাই তারা অস্বীকার করলো, যারা (আল্লাহর কিতাব) অস্বীকার করে তাদের ওপর আল্লাহর অভিসম্পাত নাযিল হোক। عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ﴿ فَلَمَّا جَاَءَهُرْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهِ ﴿ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكُفِرِيْنَ

৯০. কতো নিকৃষ্ট (বন্ধু) সেটি, যার বিনিময়ে তারা তাদের নিজেদের মন প্রাণ বিক্রয়় করে দিয়েছে, শুধু গোঁড়ামির বশবর্তী হয়েই তারা আল্লাহর নাযিল করা বিধান অস্বীকার করেছে (শুধু এ কারণে যে), আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের মধ্য থেকে যাকে চান তাকেই নবুওত দিয়ে অনুগ্রহ করেন, (তাদের এ কৃফরীর ফলে) তারা ক্রোধের ওপর ক্রোধে আক্রান্ত হলো; আর কাফেরদের জন্যে তো (এমনিই) অপমানজনক শাস্তি রয়েছে।

٩٠ بِنْسَهَا اهْتَرَوْا بِهِ آنْفُسَمُرْ آنْ يَّكْفُرُوا بِهَ آنْفُسَمُرْ آنْ يَّكْفُرُوا بِهَ آنْوُسَ آنْ يَّنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَقْفَا مِنْ عِبَادِةٍ عَ فَبَاءُوْ بِغَضْبٍ عَلَى عَضَبٍ وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى غَضَبٍ وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى غَضَبٍ عَ وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى غَضَبٍ عَ وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى غَضَبٍ عَ وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى غَضَبٍ عَلَى عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى عَنَابٌ مَعْضَبٍ عَلَى عَنَابٌ مَعْمَدٍ عَلَى عَنْ اللّهُ عَلَى عَنَابُ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّه اللّه عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَنْ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّ

৯১. যখন তাদের বলা হয়, আল্লাহ তায়ালা যা কিছু নাথিল করেছেন তার ওপর ঈমান আনো, তারা বলে, আমরা তো শুধু সেসব কিছুর ওপরই ঈমান আনি যা আমাদের (বনী ইসরাঈল জাতির) ওপর নাথিল করা হয়েছে, এর বাইরে যা- তা তারা অস্বীকার করে, (অপ্বচ) তা একান্ত সত্য, তা তাদের কাছে নাথিল করা আল্লাহর কথাগুলাকেও সত্য বলে স্বীকার করে; (হে নবী,) ভূমি বলো, তোমরা যদি বিশ্বাসীই হও তাহলে আল্লাহর নবীদের ইতিপূর্বে তোমরা কেন হত্যা করেছিলে?

9 وَإِذَا قِيْلَ لَهُرْ أَمِنُوا بِهَ آ أَنْزَلَ اللّهُ قَالُوا بُهَ آ أَنْزَلَ اللّهُ قَالُوا بُوْمَ وَيَكْفُرُونَ بِهَا وَرَآءً قَ وَهُوَ الْعَقُ مُصَرِّقًا لِّهَا مَعَهُرْ ، قُلُ فَلِيرَ تَقْتُلُونَ آثَبِياً أَ اللّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُر فُونِيْنَ

৯২. তোমাদের কাছে তো (এক সময়) সুস্পষ্ট নিদর্শন সহকারে মৃসাও (নবী হয়ে) এসেছিলো, অতপর তার (সামান্য কয়দিনের অনুপস্থিতির) পরই তোমরা একটি বাছুরকে (মাবুদ হিসেবে) গ্রহণ করে নিলে! কতো (বড়ো) যালেম ছিলে তোমরা!

٩٢ وَلَقَن جَاءَكُم مُّوسى بِالْبَيِّنْ ثُمَ الْجَفْرَة وَالْبَيِّنْ ثُم الْحَفْرَة الْعِجْلَ مِنْ بَعْنِ وَ وَانْتُم ظٰلِمُونَ الْحَفْرة وَ انْتُم ظٰلِمُونَ الْحَفْرة وَ انْتُم ظُلِمُونَ الْحَفْرة وَ الْحَفْرة وَالْحَفْرة وَ الْحَفْرة وَالْحَفْرة وَ الْحَفْرة وَالْحَفْرة وَ الْحَفْرة وَالْحَفْرة وَلَاحْدَالَ وَالْحَفْرة وَالْحِلْمِ وَالْحَفْرة وَالْحَفْرة وَالْحَفْرة وَالْحَفْرة وَالْحَامِ وَالْحَفْرة وَالْحَفْرة وَالْحَفْرة وَالْحَلْمَ وَالْحَلْمُ وَالْمُولِمُ وَالْحَلْمُ وَالْ

৯৩. (আরো দরণ করো,) যখন আমি তোমাদের কাছ থেকে একটি প্রতিশ্রুণতি আদায় করেছিলাম তোমাদের মাথার ওপর ত্র পাহাড় তুলে ধরে (আমি বলেছিলাম), যা কিছু বিধি বিধান আমি তোমাদের দিয়েছি তা শক্ত করে আঁকড়ে ধরো এবং (আমার কথাওলা) শুনো, (এর জবাবে) তারা (মুখে তো) বললো হাা, আমরা (তোমার কথা) শুনেছি, কিন্তু (বান্তব জীবনে তা অধীকার করে বললো,) আমরা তা অমান্য করলাম, (আসলে) আল্লাহ তায়ালাকে তাদের অধীকার করার কারণে সেই বাছুরকে মাবুদ বানানো (এর নেশা দ্বারা তথনো) তাদের মনকে আকৃষ্ট করে রাখা হয়েছিলো, তুমি (তাদের) বলো, যদি তোমরা সত্যিই মোমেন হও তাহলে বলতে পারো, এটা কতো খারাপ ঈমান— যা একজন ব্যক্তিকে এ ধরনের কাজের আদেশ দেয়ঃ

٩٣ وَإِذْ آَ هَنَانَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ اللَّوْرَ ، هُنُوْا مَّ الْتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْعَوْا ، للَّوْرَ مَهُنُوا مَعْنَا وَعَصَيْنَا ق وَٱشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكَفْرِهِمْ ، قُلْ بِنْسَهَا يَاْمُرُكُمْ بِهِ الْمَالُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ أَوْمِنِيْنَ الْمَالُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ أَوْمِنِيْنَ

৯৪. যদি (তোমরা মনে করো,) অন্যদের বদলে পরকালের নিবাস আল্লাহর কাছে শুধু তোমাদের জন্যেই নির্দিষ্ট- তাহলে (যাও- তা পাওয়ার জন্যে) তোমরা মৃত্যু কামনা করো, যদি তোমরা সত্যবাদী হও!

٩٣ قُلُ إِنْ كَانَتُ لَكُرُ اللَّارُ الْأَخِرَةُ عِنْلَ اللَّهِ الْأَارِ الْأَخِرَةُ عِنْلَ اللَّهِ خَالَمَ اللهِ عَالِصَةً مِّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُرُ صٰلِقِينَ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُرُ صٰلِقِينَ

| | 9 | | | | |
|-------------|-------|------|-------|----------|----------|
| কোরআন | अंदीऋ | সক্ত | ञतल | त्राश्ला | জানসাদ |
| 64013104101 | 1317 | 140 | ויאוי | 71(-11 | ~~171111 |

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

निकृष्ठ আচরণ করে) निर्फ़ार राज पिदा,) ७। (आद्वाह्त সाथि مُ مُنَ يُتَمَنُّوُهُ أَبَلًا بِهَا قَلَّمَتُ أَيْلِيْهِمُ أَيْلًا بِهَا قَلَّمَتُ أَيْلِيْهِمُ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّ অর্জন করেছে (তার পরিণাম) জানার পর এরা কখনো তা কামনা করবে না, আল্লাহ তায়ালা যালেমদের ভালো করেই জানেন।

وَ اللَّهُ عَلَيْمٌ ۖ بِالظُّلْمِينَ

৯৬. (সত্যি কথা হচ্ছে) তাদেরকেই বরং তুমি দেখতে পাবে বেঁচে থাকার ব্যাপারে বেশী লোভী, আল্লাহ ভারাপার সাথে থারা শেরেক করে - এ (বনা ইসরাঈলের) وَمِنَ النَّوْيِنَ الشَّرِيْنَ اَشْرَكُواْ غَ يَوْدُ اَحَلُهُمْ لَوْ يُعَسِِّر लाকেরা তাদের চেয়েও (এক কদম) অগ্রসর, এদের ومِنَ النَّوْيِنَ اَشْرَكُواْ غَ يَوْدُ اَحَلُهُمْ لَوْ يُعَسِّرُ প্রত্যেক ব্যক্তিই হাজার বছর জীবিত থাকতে চায়, কিন্তু যতো দীর্ঘ জীবনই এদের দেয়া হোক না কেন. তা কখনো (এদের) তাঁর (অবশ্যম্ভাবী) আযাব থেকে বাঁচাতে পারবে না; আল্লাহ তায়ালা এদের (যাবতীয়) কাজকর্ম (পুংখানুপুংখ) পর্যবেক্ষণ করেন।

٩٦ وَلَتَجِلَنَّهُمْ أَهُرُ صَ النَّاسِ عَلَى هَيُوةٍ خَ ٱلْفَ سَنَةِ ع وَمَا هُوَ بِهُزَهْزِهِمٍ مِنَ الْعَنَابِ أَنْ يُعَبِّ ءَ وَاللَّهُ بَصِيًّا بِهَا يَعْبَلُونَ عَ

৯৭. (হে নবী.) তুমি বলো. কে সে ব্যক্তি যে জিবরাঈলের শক্র হতে পারে? (অথচ) সে তো আল্লাহর আদেশে (আল্লাহর) বাণীসমূহ তোমার অন্তকরণে নাযিল করে দেয়, (তাও এমন এক বাণী) যা তাদের কাছে মজুদ বিষয়সমূহের সত্যতা স্বীকার করে, সর্বোপরি এ হচ্ছে মোমেনদের জন্যে সুসংবাদ (-বাহী গ্রন্থ)।

٩٤ قُلْ مَنْ كَانَ عَلُوا لِجِبْرِيْلَ فَالَّهُ نَزَّلَهُ عَلَٰى قَلْبِكَ بِاذْنِ اللَّهِ مُصَرِّقًا لَّهَا بَيْنَ يَنَيْدُ وَمُنَّى وَبُشَرِي لِلْمُؤْمِنِينَ

৯৮. যারা আল্লাহর শত্রু, শত্রু তাঁর (বাণীবাহক) ফেরেশতার ও নবী রসূলের- (শত্রু) জিবরাঈলের ও মীকাঈলের (তারা একদিন একথাটা বুঝতে পারবে.) স্বয়ং আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন কাফেরদের (বড়ো) শ**ক্র**। ৯৯. অবশ্যই আমি তোমার কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন পাঠিয়েছি: পাপী ব্যক্তিরা ছাডা এসব কিছু কেউই অস্বীকার করতে পারে না ।

٩٨ مَنْ كَانَ عَدُوا لِلَّهِ وَمَلَّئِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكُسَ فَإِنَّ اللَّهَ عَنُّوًّ لِّلْكُغِرِيْنَ

১০০, কিংবা যখনি তারা আল্লাহর সাথে কোনো ওয়াদা করেছে তখনই তাদের এক দল তা ভংগ করেছে:

(আসলে) তাদের অধিকাংশই ঈমানদার ছিলো না।

٩٩ وَلَقَنْ ٱنْزَلْنَا الَّيْكَ أَيْسَ بَيِّنْسِ ء وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفُسِقُوْنَ

১০১. যখনি তাদের কাছে আল্লাহর পক্ষ থেকে কোনো নবী আসে এবং যে তাদের কাছে (আগের কিতাবে) যেসব কথা মজুদ রয়েছে তার সত্যতা স্বীকার করে. তখনি সেই আগের কিতাবের ধারকদের একটি দল (পূর্ববর্তী কেতাবের) কথাগুলো এমনভাবে তাদের পেছনের দিকে ফেলে দিলো, যেন তারা এ ব্যাপারে কিছই জানে না।

١٠٠ اَوَ كُلُّهَا عُهَلُوْا عَهْلًا نَّبَلَةً فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بَلْ ٱكْثَرُهُرْ لَا يُؤْمِنُونَ

১০২. (আল্লাহর প্রতি অবজ্ঞা প্রদর্শন করেই এরা ক্ষান্ত হয়নি, যাদুমন্ত্রের) এমন কিছু জিনিসও এরা অনুসরণ করতে তরু করলো, (যা) শয়তান কর্তৃক সোলায়মান (নবী)-এর রাজত্বের সময় (সমাজে) চালু করা হয়েছিলো, (সত্যি কথা হচ্ছে) সোলায়মান কখনো (যাদুকে আল্লাহবিরোধী কাজে ব্যবহার করে) আল্লাহকে অস্বীকার করেনি, আল্লাহকে তো অস্বীকার করেছে সে সব অভিশপ্ত শয়তান, যারা মানুষকে যাদুমন্ত্র শিক্ষা দিয়েছে; وَمَا يُعَلِّينَ مِنْ أَحَلِ حَتَّى يَقُولًا إِنَّهَا نَحْنُ عَلَيْهِ (यानुभागन किছू मानुसरमत भत्नीकात উद्भर्म)

١٠١ وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْنِ اللَّهِ مُصَلِّقٌ لِّهَا مَعَمُّرُ نَبَنَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتْبَ قِ كِتْبَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُمُوْرِهِمْ كَانَّاهُمْ لَا يَعْلَهُوْنَ ز

١٠٢ وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطِيْنُ عَلَى مُلْك سُلَيْهَانَ ۚ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْهَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيْطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ق وَمَا أَنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَائِلَ هَارُوْسَ وَمَارُوْسَ ٠

২ সুরা আল বাকাুুুুরা

তায়ালা হারত মারত (নামে যে দুন্ধন) ফেরেশতাকে ব্যাবিলনে পাঠিয়েছেন, (আল্লাহর) সেই দু'জন ফেরেশতা (কাউকে) যখনই এ বিষয়ের শিক্ষা দিতো, (প্রথমেই) তারা (একথাটা) তাদের বলে দিতো, আমরা তো হচ্ছি (আল্লাহর) পরীক্ষামাত্র, অতএব (কোনো অবস্থায়ই) তুমি (এ বিদ্যা দিয়ে আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করো না, (এসন্তেও) তারা তাদের কাছ থেকে এমন কিছু বিদ্যা শিখে নিয়েছিলো, যা দিয়ে এরা স্বামী ন্ত্রীর মাঝে বিচ্ছেদের সৃষ্টি করতো, (যদিও) আল্লাহর ইচ্ছা ছাড়া কোনো দিনই কেউ কারো সামান্যতম ক্ষতিও সাধন করতে পারবে না; তারা (মূলত) এমন কিছু শিখে যা তাদের কোনো উপকার যেমন করতে পারে না. তেমনি তা তাদের কোনো ক্ষতিও করতে পারে না: তারা যদি জানতো, (শ্রম ও অর্থ দিয়ে) যা তারা কিনে নিয়েছে পরকালে তার কোনো মূল্য নেই; তারা নিজেদের জীবনের পরিবর্তে যা ক্রয় করে নিয়েছে তা সত্যিই নিকৃষ্ট, (কতা জলো হতো) যদি তারা (কথাটা) জানতো!

فِتْنَةً فَلَا تَكْفُرُ م فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ﴿ وَمَا مُرْ بِضَارِّيْنَ بِهِ مِنْ أَحَلِ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ مَ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُوُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ م وَلَقَلْ عَلِمُوْا لَهَن اهْتَرْهُ مَا لَهٌ فِي الْأَعِرَةِ مِنْ عَلَاقٍ عَدْ وَلَبِنْسَ مَا شَرَوْا بِهِ آنْفُسَمُرْ ، لَوْ كَانُوْا يَعْلَبُونَ

১০৩. তারা যদি (আল্লাহর ওপর) ঈমান আনতো এবং (তাঁকেই) ভয় করতো, তাহলে আল্লাহর পক্ষ থেকে তারা উৎকৃষ্টতম পুরস্কার পেতো; (কতো ভালো হতো) যদি তারা (এটা) অনুধাবন করতো!

١٠٣ وَلَوْ ٱنَّامُرْ أَمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْكِ اللَّهِ غَيْرٌ ، لَوْ كَانُوْ ا يَعْلَمُونَ ع

১০৪. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, (ধৃষ্টতার সাথে কখনো) বলো না (হে নবী), 'তুমি আমাদের কথা শোনো', বরং (তার দৃষ্টি আকর্ষণ করার জন্যে) বলো (হে নবী),'আমাদের প্রতি লক্ষ্য করো'। তোমরা সর্বদা তার কথা শুনবে (মনে রাখবে), যারা (তার কথা) অমান্য করে তাদের জন্যে অত্যন্ত বেদনাদায়ক শান্তি রয়েছে।

١٠٣ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَتُوْلُوا انْظُرْنَا وَاشْبَعُوْا ﴿ وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَ ابُّ ألير

১০৫. (আসলে) এই আহলে কিতাব কিংবা যারা আল্লাহর সাথে প্রকাশ্য শেরেক করে তারা কেউই এটা পছন্দ করে না যে. তোমার কাছে তোমার মালিকের পক্ষ থেকে (নবুওতের মতো) কোনো ভালো কিছু নাযিল হোক, কিন্তু (তারা জ্ঞানে না,) আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকেই তাঁর অনুগহে বিশেষভাবে বেছে নেন; আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত অনুগ্ৰহশীল।

١٠٥ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتْب وَلَا الْهُشُوكِيْنَ أَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُرْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنُ رَّبِّكُمْ ﴿ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْهَتِهِ مَنْ يَّشَاءُ ، وَاللَّهُ نُوالْفَضْلِ الْعَظِيْرِ

১০৬. আমি যখন কোনো আয়াত বাতিল করে দেই ব (বিশেষ কারণে মানুষদের) তা ভূলিয়ে দিতে চাই. তখন তার জায়গায় তার চেয়ে উৎকৃষ্ট কিংবা তারই মতো কোনো আয়াত এনে হাযির করি, তুমি কি জানো না, আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান।

١٠٦ مَا نَنْسَعْ مِنْ أَيَةٍ أَوْ نُنْسِهَا نَاْسٍ بِخَيْرٍ بِّنْهَا أَوْ مِثْلِهَا ﴿ أَلَرْ تَعْلَرْ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلَّ شَيْء قُليْر

১০৭. তুমি কি জানো না, আসমানসমূহ ও যমীনের সার্বভৌমত্ব একমাত্র আল্লাহ তায়ালার জন্যেই নির্দিষ্ট: وَ الْأَرْضِ ، وَمَا لَكُرْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَّلِيّ जिन हाफ़ा राजाता तक् तक् तक् तक् तक्ताता সাহায্যকারীও।

١٠٤ أَلَهِ ۚ تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّاءِ ولا نَصِير

১০৮. তোমরা কি তোমাদের নবীর কাছে সে ধরনের (উদ্ভট) প্রশ্ন করতে চাও- যেমনি তোমাদের আগে মৃসাকে করা হয়েছিলো; কেউ যদি ঈমানকে কুফরীর সাথে বদল করে নেয়, অবশ্যই সে ব্যক্তি সোজা পথ থেকে গোমরাহ হয়ে যাবে।

١٠٨ أَمُ تُرِيْدُونَ أَنْ تَسْئَلُوا رَسُولَكُمْ كَهَا سُئلَ مُوْسَى مِنْ قَبْلُ ﴿ وَمَنْ يَتَّبَلُّ لِ الْكُفْرَ بِالْإِيْهَانِ فَقَلْ ضَلَّ سَوّاءَ السَّبِيْلِ

মন্যিল ১

২ সূরা আল বাকাুুুরা

১৬

১০৯. আহলে কিতাবদের অনেকেই বিদ্বেষর কারণে চাইবে তোমাদের ঈমানের বদলে আবার সেই কুফরীতে ফিরিয়ে নিতে, (এমনকি) সত্য তাদের কাছে স্পষ্ট হয়ে যাওয়ার পরও (তারা এপথ থেকে বিরত হবে না), অতএব তাদের ব্যাপারে আল্লাহর সিদ্ধান্ত আসা পর্যন্ত তোমরা ক্ষমার নীতি অবলম্বন করো এবং তাদের সাথে ভালো ব্যবহার করো; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর ওপর ক্ষমতাশালী।

١٠٩ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتْبِ لَوْ يَرُدُّونَكُرْ مِّنْ اَبَعْلِ إِيْهَائِكُرْ كُفَّارًا ع حَسَلًا مِّنْ عِنْلِ اَنْفُسِهِرْ مِّنْ بَعْلِ مَا تَبَيِّنَ لَهُرُ الْحَقَّ ع فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّى يَاْتِيَ اللَّهُ بِآمَرِةٍ ا إِنَّ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَلِيْرٌ

১১০. তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করো এবং যাকাত আদায় করো; (এর মাধ্যমে) যে সব নেকী তোমরা আল্লাহর কাছে অগ্রিম পাঠাবে তাঁর কাছে (এর সবই) তোমরা (মজুদ) পাবে; তোমরা যা কিছুই করো আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই এর সব কিছু দেখতে পান।

اا وَاقِيْهُوا الصَّلُوةَ وَاٰتُوا الزَّكُوةَ ، وَمَا تُقَوِّمُ الزَّكُوةَ ، وَمَا تُقَوِّمُوا لِإِنْفُسِكُمْ مِّنْ غَيْرٍ تَجِنُونُهُ عِنْنَ اللهِ ، إِنَّ اللهِ بِهَا تَعْهَلُونَ بَصِيْرٌ

১১১. তারা বলে, ইহুদী ও খৃষ্টান ছাড়া আর কেউই বেহেশতে যাবে না, (আসলে) এটা হচ্ছে তাদের একটা মিধ্যা কল্পনা; তুমি (হে নবী,) বলো, যদি তোমরা সত্যবাদী হও (তাহলে) তোমাদের দলিল প্রমাণ নিয়ে এসো!

১১২. (তবে হাা,) যে কোনো ব্যক্তিই (আল্লাহর সামনে)
নিজের সন্তাকে সমর্পণ করে দেবে এবং সে হবে অবশ্যই
একজন নেককার মানুষ, তার জন্যে তার মালিকের কাছে
(এর) বিনিময় রয়েছে, তাদের কোনো ভয় ভীতি নেই,
আর না তারা (সেদিন) চিস্তান্বিতও হবে!

۱۱۲ بَلَى ق مَنْ أَسْلَرَ وَجْهَةً لِللهِ وَهُوَ مُحْسِيً فَلَةٌ أَجْرُةً عِنْنَ وَبِهِ م وَلَا خَوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا خَوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا خَوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا خُونَ عَلَيْهِمْ وَلَا خَوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا خَوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا خَوْنَ عَلَيْهِمْ وَلَا عَوْنَ يَحْرَنُونَ عَ

১১৩. ইছদীরা বলে, খৃষ্টানরা (সত্য জাতির) কোনো কিছুর ওপর প্রতিষ্ঠিত নয়, খৃষ্টানরা বলে ইছদীরা কোনো কিছুর ওপর প্রতিষ্ঠিত নয়, অথচ এরা (উভয়েই আল্লাহর) কিতাব পাঠ করে, আদৌ আল্লাহর কেতাবের কোনো কিছুই জানে না এমন লোকেরা (আবার এদের উভয়ের সম্পর্কে) তাদের কথার মতো একই ধরনের কথা বলে, তারা যে বিষয়ে মতবিরোধ করছে আল্লাহ তায়ালা শেষ বিচারের দিনে সে বিষয়ে তাদের মাঝে মীমাংসা করে দেবেন।

اللهُ وَقَالَسِ الْيَمُودُ لَيْسَسِ النَّصٰرِ عَلَى مَلَى هَنْ مِ وَقَالَسِ الْيَمُودُ لَيْسَسِ النَّصٰرِ الْيَمُودُ مَلَى مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ اللّهُ عَلَى الْلَهُ وَقَالَ النِّذِيْنَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِرْ عَاللّهُ يَحْكُمُ بَيْنَمُرْ يَوْا الْقِيْمَةِ فِيْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلُفُونَ مَنْ عَلْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلُفُونَ مَنْ اللّهُ يَخْتَلُفُونَ مَنْ اللّهُ لَا اللّهُ اللّهُ يَحْتَلُفُونَ مَنْ اللّهُ اللّهُ يَحْتَلُفُونَ مَنْ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

১১৪. সে ব্যক্তির চেয়ে বড়ো যালেম আর কে আছে, যে ব্যক্তি আল্লাহর (ঘর) মাসজিদে তাঁর নাম স্বরণ করতে বাধা দেয় এবং তার ধ্বংস সাধনে সচেষ্ট হয়, এ ধরনের লোকদের (বস্তুত) তাতে ঢোকার কোনো যোগ্যতাই নেই, তবে একান্ত ভীত সম্রস্তভাবে (চুকলে তা ভিনু কথা), তাদের জন্যে পৃথিবীতে যেমন অপমান লাঞ্ছ্না রয়েছে, তেমনি রয়েছে পরকালে কঠিনতম শান্তি।

الله وَمَن اَظْلَرُ مِنْ مَّنَعَ مَسْجِلَ اللهِ اَنَ يَّنْكُرُ فِيْهَا اسْهُ وَسَعٰى فِي خَرَابِهَا اللهِ اَنْ يَنْكُرُ فِيْهَا اسْهُ وَسَعٰى فِي خَرَابِهَا اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِلمُلْمُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ

১১৫. (এরা কেবলা বদলের ব্যাপারেও মতবিরোধ করেছিলো, অথচ) পূর্ব পশ্চিম সবই তো আল্লাহ

١١٥ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ قَ فَٱيْنَهَا

২ সুরা আল বাকাুুুুরা

29

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

تُوَلُّواْ فَثَرٌّ وَجُهُ اللَّهِ ﴿ إِنَّ اللَّهُ وَاسِعٌّ তায়ালার (তাছাড়া) তোমরা যে দিকেই মুখ ফেরাবে সেদিকেই তো আল্লাহ তায়ালা রয়েছেন; আল্লাহ তায়ালা সর্বব্যাপী এবং জ্ঞানী।

১১৬. (খৃস্টান) লোকেরা বলে, আল্লাহ তায়ালা (অমুককে) নিজের সন্তান (-রূপে) গ্রহণ করেছেন, পবিত্রতা একান্তভাবে তাঁর, (তিনি এসব কিছুর অনেক উর্দ্ধে): আসমানসমূহ ও যমীনের সব কিছুই তাঁর জন্যে. এর প্রতিটি বস্তই তাঁর একান্ত অনুগত।

١١٦ وَقَالُوا اتَّخَلَ اللَّهُ وَلَنَّا لا سُبْعَٰنَهُ ، بَلْ لَّهُ مَا فِي السَّبُوتِ وَالْإَرْضِ ء كُلَّ لَّهُ

১১৭. আসমানসমূহ ও যমীনের তিনিই স্রস্টা, যখন তিনি কোনো একটি বিষয়ের সিদ্ধান্ত করেন, সে ব্যাপারে শুধু (এটুকুই) বলেন 'হও', আর সাথে সাথেই তা হয়ে যায়।

١١٤ بَدِيْعُ السَّمُوٰتِ وَالْإَرْضِ ۚ وَإِذَا قَضَى أَمْرًا فَإِنَّهَا يَقُولُ لَدُّ كُنْ فَيَكُونَ

১১৮. যারা (সঠিক কথা) জানে না তারা বলে, আল্লাহ তায়ালা নিজে আমাদের সাথে কথা বলেন না কেন. অথবা এমন কোনো নিদর্শন আমাদের কাছে কেন পাঠান না (যার মাধ্যমে আমরা তাঁকে দেখতে পারবো): এদের আগের লোকেরাও এদের মতো করেই কথা বলতো: এদের সবার মন (আসলে) একই ধরনের: (আল্লাহকে) যারা (দৃঢ়ভাবে) বিশ্বাস করে আমি তাদের জন্যে আমার নিদর্শনসমূহ সুস্পষ্ট করে পেশ করে দিয়েছি।

١١٨ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَبُوْنَ لَوْ لَا يُكَلِّهُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِيْنَآ أَيَةً ۚ ۚ كَنْ لِكَ قَالَ الَّٰنِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ، تَشَابَهَ فَ تُكُوبُهُمْ . قَلْ بَيُّنَّا الْإيس لِقُوْ إِيُّوْقِنُوْنَ

১১৯. অবশ্যই আমি তোমাকে সত্য (দ্বীন)-সহ পাঠিয়েছি. পাঠিয়েছি আযাবের ভীতি প্রদর্শনকারী ও (জান্লাতের) সুসংবাদবাহী হিসেবে। (জেনে রেখো), তোমাকে জাহান্রামের অধিবাসীদের (দায় দায়িতের) ব্যাপারে কোনোরকম প্রশ্ন করা হবে না।

١١٩ إِنَّا ٱرْسَلْنُكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَٰذِيْرًا لا وَّ لا تُسْئَلُ عَنْ أَصْحُبِ الْجَحِيْرِ

১২০. ইহুদী ও খস্টানরা কখনো তোমার ওপর খুশী হবে না, হাঁ, তুমি যদি (কখনো) তাদের দলের অনুসরণ করতে শুরু করো (তখনই এরা খুশী হবে), তুমি তাদের বলে দাও, আল্লাহ তায়ালার হেদায়াতই হচ্ছে একমাত্র পথ; (সাবধান,) তোমার কাছে সঠিক জ্ঞান আসার পরও যদি তুমি তাদের ইচ্ছানুসারে চলতে থাকো, তাহলে আল্লাহ তায়ালা ছাড়া তুমি কোনো বন্ধু ও সাহায্যকারী পাবে না।

١٢٠ وَلَنْ تَوْشٰي عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَ لَا النَّصٰاي حَتَّى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُرْ ﴿ قُلْ إِنَّ هُنَّى اللَّهِ هُوَ الْهُنِّي وَلَئِن اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُر بَعْنَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ لا مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيَّ وَّلَا نَصِيْرِ ل

১২১, যাদেরকে আমি কিতাব দিয়েছি তাদের মাঝে এমন কিছু লোকও আছে যারা এ (কোরআন)-কে যেভাবে (নিষ্ঠার সাথে) পড়া দরকার সেভাবেই পড়ে: তারা তার ওপর ঈমানও আনে: যারা (একে) অস্বীকার করে তারাই হচ্ছে ক্ষতিগ্রস্ত লোক।

١٢١ ٱلَّانِينَ أَتَيْنُهُمُ الْكُتْبَ يَتْلُوْنَهُ مَقَّ تِلَاوَتِهِ مَ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ مَ وَمَنْ يَكْفُو بِهِ الله المُعْدِدُ الْخُسِرُونَ عَ الْخُسِرُونَ عَ الْخُسِرُونَ عَ الْخُسِرُونَ عَ

১২২. হে বনী ইসরাঈল (জাতি), তোমরা আমার সে নেয়ামত স্বরণ করো যা আমি তোমাদের দান করেছি. (সে নেয়ামতের অংশ হিসেবে) আমি তোমাদের দুনিয়ার অন্যান্য জাতির ওপর শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি।

١٢٢ يُبَنِي ﴿ إِسْرَآءِيلَ اذْكُرُوا نِعْهَتِي الَّتِي ۗ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنَّى فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعُلَمِينَ

১২৩. তোমরা সে দিনটিকে ভয় করো, যেদিন একজন মানুষ আরেকজনের কোনোই কাজে আসবে না, (সেদিন) वेर्के वेरके वेरक

২ সুরা আল বাকাুুুরা

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

তার কাছ থেকে কোনোরকম বিনিময়ও নেয়া হবে না, আবার (একের পক্ষে অন্যের) সুপারিশও সেদিন কোনো উপকারে আসবে না, (সেদিন) এসব লোকেরা কোনোরকম সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না।

نَّفْسِ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَنْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةً وَّلَا هُرْ يُنْصَرُونَ

১২৪. (আরো ম্বরণ করো,) যখন ইবরাহীমকে তার 'রব' কতিপয় বিষয়ে (তার আনুগত্যের) পরীক্ষা নিলেন, অতপর তা পুরোপুরি সে পুরন করলো, আল্লাহ তায়ালা বললেন, (এবার) আমি তোমাকে মানব জাতির জন্যে নেতা বানাতে চাই; সে বললো, আমার ভবিষয়ত বংশধররাও (কি নেতা হিসেবে বিবেচিত হবে)? আল্লাহ তায়ালা বললেন, আমার এ প্রতিশ্রুতি যালেমদের কাছে পৌছবে না।

۱۲۳ وَإِذِ ابْتَلَى إِبْهُمْ رَبَّهُ بِكَلِمْتٍ فَٱتَهَّى ۗ عَالَ اللَّهِ وَالْتَهَى ۚ عَالَ وَمِنُ قَالَ وَمِنُ قَالَ وَمِنْ فَرَيِّتِي ۚ عَالَ وَمِنْ ذُرِيَّتِي ۚ عَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّلِمِيْنَ

১২৫. (স্বরণ করো,) আমি যখন মানুষদের মিলনস্থল ও
নিরাপত্তার কেন্দ্র হিসেবে (এ কাবা) ঘরটি নির্মাণ
করেছিলাম; (আমি তাদের আদেশ দিয়েছিলাম,) তোমরা
ইবরাহীমের দাঁড়ানোর স্থানটিকে নামাযের স্থান হিসেবে
গ্রহণ করো; আমি ইবরাহীম ও ইসমাঈলকে আদেশ
দিয়েছিলাম যেন তারা আমার ঘর (কাবা)-কে (হজ্জ ও
ওমরার) তাওয়াফকারীদের জন্যে, আল্লাহর এবাদাতে
আত্মনিয়োগকারীদের জন্যে, (সর্বোপরি তাঁর নামে) রুকু
সাজদাকারীদের জন্যে পবিত্র করে রাখে।

١٢٥ وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْسَ مَثَابَةً لِلنَّاسِ وَامْنًا وَاتَّخِلُوا مِنْ مَّقَامً إِلْمُ مِرَ مُصَلَّى وَامْنًا وَوَاتَّخِلُوا مِنْ مَّقَامً إِلْمُ مِرَ مُصَلَّى وَعَهِلْنَا وَلَى إِلْمُ مِرَ وَاسْعِيْلَ اَنْ طَهِرًا بَيْتِي لِلطَّادِفِيْنَ وَالْعَلِفِيْنَ وَالرَّكِعِ السَّجُودِ

১২৬. ইবরাহীম যখন বলেছিলো, হে মালিক, এ শহরকে তুমি (শান্তিও) নিরাপত্তার শহর বানিয়ে দাও এবং এখানকার অধিবাসীদের মাঝে যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা এবং পরকালে বিশ্বাস করে, তুমি তাদের ফলমূল দিয়ে আহারের যোগান দাও; আল্লাহ তায়ালা বললেন (হাাঁ), যে ব্যক্তি (আমাকে) অস্বীকার করবে তাকেও আমি অল্প কয়েকদিন জীবনের উপায় উপকরণ সরবরাহ করতে থাকবো, অতপর অচিরেই আমি তাদের আগুনের আযাব ভোগ করতে বাধ্য করবো, যা সত্যিই বড়ো নিকৃষ্টতম স্থান।

الله وَإِذْ قَالَ إِبْرُهِمْ رَبِّ الْجَعَلُ هَٰذَا بَلَكًا اللهُ وَالْدَوْقُ الْمَكَ اللهُ اللهُ اللهُ وَالْذَوْقُ الْمَكَ اللهُ وَالْدَوْرَ الْأَخِرِ وَقَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَالَّذَهُمَّ اللهُ وَالْدَوْرَ الْأَخِرِ وَقَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَالَّهُمْ اللهُ وَالْدَوْرَ الْأَخِرِ وَقَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاللهُ وَالْدَوْرَ الْمُحَرِّقُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَالْمَعْرُدُ اللهُ اللهُ

১২৭. ইবরাহীম ও ইসমাঈল যখন এই ঘরের ভিত্তি উঠাচ্ছিলো (তখন তারা আল্লাহর কাছে দোয়া করলো), হে আমাদের মালিক, (আমরা যে উদ্দেশ্যে এ ঘর নির্মাণ করেছি, তা) তুমি আমাদের কাছ থেকে কবৃল করো, একমাত্র তুমিই সব কিছু জানো এবং সব কিছু শোনো।

١٣٤ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرُهِمُ الْقَوَاعِنَ مِنَ الْبَيْتِ وَاشْعِيْلُ مَ الْبَيْتِ وَإِسْمُ الْقَوَاعِنَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمُعِيْلُ مَ رَبَّنَا تَقَبَّلُ مِنَّا مَ إِنَّكَ أَنْتَ السَّيْعُ الْعَلِيمُ

১২৮. (তারা আরো কলো,) হে আমাদের মালিক, আমাদের প্রত্তিত্তয়কে তুমি তোমার (অনুগত) মুসলিম বান্দা বানাও এবং আমাদের (পরবর্তী) বংশধরদের মাঝ থেকেও তুমি টি তোমার একদল অনুগত (বান্দা) বানিয়ে দাও, (হে মালিক,) তুমি আমাদের (তোমার এবাদাতের) আনুষ্ঠানিকতাসমূহ দেখিয়ে দাও এবং তুমি আমাদের ওপর দয়াপরবশ হও, কারণ অবশ্যই তুমি তাওবা কবুলকারী ও পরম দয়ালু।

۱۲۸ رَبِّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنَ لَكَ وَمِنَ لَكَ وَمِنَ لَكَ وَمِنَ لَكَ مَا اللَّهِ لَكَ مَ وَارِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبُ عَلَيْنَا مَ إِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ وَتُبُ عَلَيْنَا مَ إِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

১২৯. হে আমাদের মালিক, তাদের (বংশের) মধ্যে তাদের নিজেদের মাঝ থেকে তুমি (এমন) একজন রসূল পাঠাও, যে তাদের কাছে তোমার আয়াতসমূহ পড়ে শোনাবে, তাদের তোমার কেতাবের জ্ঞান ও প্রজ্ঞা শিক্ষা দেবে, উপরম্ভ সে তাদের পবিত্র করে দেবে (হে আল্লাহ, তুমি আমাদের এই দোয়া কবুল করো): কারণ তুমিই মহাপরাক্রমশালী ও পরম কুশলী।

١٢٩ رَبُّنَا وَابْعَتْ فِيهِرْ رَسُولًا مِّنْهُرْ يَتْلُوْا عَلَيْهِرْ ايْتِكَ وَيُعَلِّبُهُرُ الْكِتْبَ وَالْحَكْبَةَ وَيُزَكِّيْهِرْ ﴿ إِنَّكَ آنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ عَ



১৩০. (জেনে বুঝে) যে নিজেকে মূর্খ বানিয়ে রেখেছে সে ব্যক্তি ছাড়া আর কে এমন হবে, যে ইবরাহীমের سَفِهَ نَفْسَهُ ﴿ وَلَقَلِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي النَّانَيَا وَ अीवन विधान त्थरक पूर्व किंतिरत्र त्नरवा (अथठ و النَّانيَا ع তাকে আমি দুনিয়ায় নবুওতের জন্যে) বাছাই করে নিয়েছি, শেষ বিচারের দিনেও সে (আমার) নেক লোকদের মধ্যে শামিল হবে।

١٣٠ وَمَن يَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ إِبْرُهِيْمَ إِلَّا مَنْ وَإِنَّهُ فِي الْأَخِرَةِ لَنِيَ الصَّلِحِينَ

১৩১. যখন আমি তাকে বললাম, তুমি (আমার অনুগত) भूजिनभ रुत्य यांछ, त्ज वन्नाला, आभि जृष्टिकृत्नत भानिक ্তায়ালা)-এর পূর্ণ আনুগত্য স্বীকার করে নিলাম।

١٣١ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ ۖ أَسْلِيرُ لا قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِ الْعلَمِينَ

১৩২. (যে পথ ইবরাহীম নিজের জন্যে বেছে নিলো,) সে পথে চলার জন্যে সে তার সম্ভান সম্ভতিকেও ওসিয়ত মুন্ত্র গেলো, ইয়াকুবও (তার সম্ভানদের ওসিয়ত করে يُبَنِيُّ إِلنَّ اللَّهُ اصْطَفَى لَكُرُ الرِّيْنَ فَلَا বললো): হে আমার সম্ভানরা, নিন্চয়ই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে এই দ্বীন (ইসলাম) মনোনীত করে দিয়েছেন, অতএব কোনো অবস্থায়ই এ (জীবন) বিধানের আনুগত্য স্বীকার ব্যতিরেকে তোমরা মৃত্যুবরণ করো ना ।

١٣٢ وَوَمَّى بِهَا ۗ إِبْرُهِمُ بَنِيْدِ وَيَعْقُوْر تَمُوْتُنَ إِلَّا وَٱنْتُرْ مُّسْلِمُوْنَ

১৩৩. (হে ইছদী জাতি,) তোমরা কি তখন সেখানে উপস্থিত ছিলে যখন ইয়াকুবের সামনে (তার) মৃত্যু এসে হাযির হলো এবং সে যখন তার ছেলেমেয়েদের বললো (বলো), আমার মৃত্যুর পর তোমরা কার এবাদাত করবে? তারা বললো, আমরা (অবশ্যই) তোমার মাবুদ– (তোমার পূর্বপুরুষ) ইবরাহীম, ইসমাঈল ও ইসহাকের মাবুদের এবাদাত করবো, (এ) মাবুদ হচ্ছেন একক, আমরা তাঁর আত্মসমর্পণকারী বান্দা হয়েই থাকবো।

١٣٣ أَمْ كُنْتُم شُهَلَآءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ لا إِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُلُوْنَ مِنْ ا بَعْرِي مَ قَالُوا نَعْبُكُ إِلٰهَكَ وَإِلٰهَ أَبَائِكَ رَ وَإِسْعِيْلَ وَإِسْعَقَ إِلَهًا وَّاحِدًا عَ وَنُحَنَّ لَهُ مَسْلِمُونَ

১৩৪. এরা ছিলো এক (ধরনের) জাতি, যারা (আজ) গত হয়ে গেছে, তারা যা করে গেছে তা তাদের নিজেদের জন্যে, (আবার) তোমরা যা করবে তা হবে তোমাদের নিজেদের জন্যে, তারা যা কিছু করছিলো সে ব্যাপারে তোমাদের (কিছু) জিজ্ঞেস করা হবে না।

١٣٢ تلْكَ أُمَّةً قَلْ خَلَينَ ع لَهَا مَا كُسَبَسَ وَلَكُر مَّا كَسَبْتُر ع وَلا تُسْئَلُونَ عَمَّا كَانُوا

১৩৫. এরা বলে, তোমরা ইছদী কিংবা খৃষ্টান হয়ে যাও, তাহলে তোমরা সঠিক পথে পরিচালিত হবে: (হে নবী.) قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرُهِمِ مَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ وَعَاكَانِهِمَ وَمَا كَانَ مِنَ وَكَا عَالِهِ وَمَا كَانَ مِن

২ সূরা আল বাকাুুুরা

١٣٥ وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصْرَى تَهْتَلُوا ١ মন্যিল ১

পারা ১ আলিফ লাম-মীম

একনিষ্ঠ মতাদর্শই রয়েছে; আর সে কখনো মোশরেকদের অন্তর্ভক্ত ছিলো না।

ٵڷؠؙۘۺٛۯڬؚؽؽؘ

১৩৬. তোমরা বলো, আমরা তো আল্লাহ্র ওপর ঈমান এনেছি এবং ঈমান এনেছি আল্লাহ তারালা আমাদের কাছে যা কিছু নাযিল করেছেন তার ওপর, (আমাদের আগে) ইবরাহীম, ইসমাঈল ইসহাক, ইয়াকুব ও তাদের (পরবর্তী) সন্তানদের ওপর যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তাও (আমরা মানি, তাছাড়া), মৃসা, ঈসা সহ সব নবীকে তাদের মালিকের পক্ষ থেকে যা কিছু দেয়া হয়েছে তার ওপরও আমরা ঈমান এনেছি, আমরা এদের কারো মধ্যেই কোনো তারতম্য করি না, আমরা তো হচ্ছি আল্লাহরই অনুগত (বান্দা)।

١٣٦ قُوْلُوْ أَمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا آنْزِلَ اِلْيْنَا وَمَا اَنْزِلَ اِلْيْنَا وَمَا اَنْزِلَ اِلْيْنَا وَمَا اَنْزِلَ اِلْيْنَا وَمَا اَنْزِلَ اِلْيَنَا وَمَا اَنْزِلَ اِلْيَنَا وَمَا اَنْزِلَ اِلْيَا وَمَا وَيَعْقُونَ مِنْ الْوَتِي مُوسَى وَعَيْسَى وَمَا آوْتِي النَّبِيَّوْنَ مِنْ رَبِّهِرْ لَا وَعِيْسَى وَمَا آوْتِي النَّبِيَّوْنَ مِنْ رَبِّهِرْ لَا لَا يَتُولُونَ مِنْ اللَّهِمْ لَهُ مُشْلِمُونَ لَهُ مُشْلِمُونَ لَهُ مُشْلِمُونَ لَهُ مُشْلِمُونَ

১৩৭. আর এরা যদি তোমাদের মতোই আল্লাহর ওপর ঈমান আনতো তাহলে তারাও সঠিক পথ পেতো, তারা যদি (সে পথ থেকে) ফিরে আসে তাহলে তারা অবশ্যই (উপদলীয়) অনৈক্যের মাঝে পড়ে যাবে, আল্লাহ তায়ালাই তোমার জন্যে যথেষ্ট (প্রমানিত) হবেন, তিনিই শোনেন, তিনিই জানেন।

১৩৮. (হে নবী, তাদের তুমি) বলো, আসল রং হচ্ছে আল্লাহ তায়ালারই, এমন কে আছে যার রং তাঁর রঙের চেয়ে উৎকৃষ্ট হতে পারে? (আমরা ঘোষণা করছি,) আমরা তাঁরই এবাদাত করি।

١٣٨ صِبْغَةَ اللهِ عَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللهِ مِبْغَةً رِوْنَحْنُ لَةً عٰبِنُوْنَ

১৩৯. (হে নবী,) তুমি তাদের বলো, তোমরা কি স্বরং আল্লাহ তায়ালার ব্যাপারেই আমাদের সাথে বিতর্কে লিপ্ত হতে চাও? অথচ তিনি (যেমন) আমাদের মালিক, (তেমনি) তিনি তোমাদেরও মালিক, আমাদের কাজ আমাদের জন্যে আর তোমাদের কাজ তোমাদের জন্যে, আমরা সবাই তাঁর আনুগত্যের ব্যাপারে নিষ্ঠাবান।

١٣٩ قُلْ اَتُحَاَّبُوْنَنَا فِي اللَّهِ وَمُوَ رَبَّنَا وَرَبَّكُمْ ۚ وَلَنَّا ۖ أَعْهَالُنَا وَلَكُمْ اَعْهَالُكُمْ ۚ عَ وَنَحْنُ لَدَّ مُخْلِصُوْنَ لا

১৪০. অথবা তোমরা কি একথা বলতে চাও যে, ইবরাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব ও তাদের বংশধররা সবাই ছিলো ইহুদী কিংবা খৃষ্টানঃ (হে নবী,) তুমি বলে দাও, এ ব্যাপারে তোমরা বেশী জানো না আল্লাহ তায়ালা বেশী জানেনঃ যদি কোনো ব্যক্তি তার কাছে মজুদ আল্লাহর কাছ থেকে (আগত) সাক্ষ্য প্রমাণ গোপন করে, তাহলে তার চেয়ে বড়ো যালেম আর কে হতে পারেঃ আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কাজকর্মের ব্যাপারে মোটেই গাফেল নন।

١٣٠ آ اَ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرُهِمَ وَإِسْعِيْلَ وَإِسْعِيْلَ وَإِسْعِيْلَ وَإِسْعِيْلَ وَالْسَعَاطَ كَانُوا هُوْدًا اَوْ وَالْسَعَاطَ كَانُوا هُوْدًا اَوْ نَصْرُى ، قُلْ ءَ اَنْتُمْ اَعْلَمُ اَ الله ، وَمَنْ اَظْلَمُ مِنَّى كَتَمَ شَهَادَةً عِنْلَةً مِن الله ، وَمَا الله وَمَا الله بِغَافِلِ عَبَّا تَعْمَلُونَ

১৪১. এরাও ছিলো এক (ধরনের) সম্প্রদায়, যারা (আজ) গত হয়ে গেছে, তারা যা করে গেছে তা তাদের জন্যে, আর তোমাদের কর্মফল হবে তোমাদের জন্যে, তারা যা কিছু করছিলো সে ব্যাপারে তোমাদের কিছু জিজ্ঞেস করা হবে না।

١٣١ تِلْكَ أُمَّةً قَلْ خَلَسْ عَ لَهَا مَا كَسَبَسْ
 وَلَكُر مَّا كَسَبْتُر عَ وَلَا تُسْئَلُونَ عَمَّا كَانُوا
 يَعْمَلُونَ عَ



২ সুরা আল বাকাুুুরা

১৪২. (কেবলা বদলের ব্যাপারে) মানুষদের ভেতর থেকে কিছু মুর্খ লোক অচিরেই বলতে শুরু করবে (এ কি হলো), এতোদিন যে কেবলার ওপর তারা প্রতিষ্ঠিত ছিলো, (আজ) কিসে তাদের সে দিক থেকে ফিরিয়ে দিলো? (হে নবী,) তুমি (তাদের) বলে দাও, পূর্ব পশ্চিম (সবই) আল্লাহ তায়ালার জন্যে: আল্লাহ তায়ালা যাকে ইচ্ছা তাকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

১৪৩. এভাবেই আমি তোমাদের এক মধ্যপন্থী মানব দলে পরিণত করেছি, যেন তোমরা দুনিয়ার অন্যান্য মানুষদের ওপর (হেদায়াতের) সাক্ষী হয়ে থাকতে পারো (এবং একইভাবে) রসুলও তোমাদের ওপর সাক্ষী হয়ে থাকতে পারে, যে কেবলার ওপর তোমরা (এতোদিন) প্রতিষ্ঠিত ছিলে, আমি তা এ উদ্দেশেই নির্ধারণ করেছিলাম, যাতে করে আমি এ কথাটা জেনে নিতে পারি যে, তোমাদের মধ্যে কে রসূলের অনুসরণ করে আর কে তার কথা থেকে ফিরে যায়, তাদের ওপর এটা ছিলো কঠিন (পরীক্ষা). অবশ্য আল্লাহ তায়ালা যাদের হেদায়াত দান করেছেন তাদের কথা আলাদা; আল্পাহ তায়ালা কখনো তোমাদের ঈমান বিনষ্ট করবেন না: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা মানুষদের সাথে বড়ো দয়ালু ও একান্ত মেহেরবান।

১৪৪. (কেবলা পরিবর্তনের জন্যে) তুমি আকাশের দিকে তাকিয়ে (যেভাবে আমার আদেশের অপেক্ষায়) থাকতে. তা আমি অবশ্যই দেখতে পেয়েছি, তাই আমি তোমার পছন্দমতো (দিককেই) কেবলা বানিয়ে দিচ্ছি, (এখন থেকে) তোমরা এই মর্যাদাসম্পন্ন মাসজিদের দিকে ফিরে (নামায আদায় করতে) থাকবে; তোমরা যেখানেই থাকো না কেন তোমাদের মুখমভল সে দিকেই ফিরিয়ে দেবে: এসব লোক- যাদের কাছে আগেই কেতাব নাযিল করা হয়েছিলো, তারা ভালো করেই জানে: এ ব্যাপারটা তোমার মালিকের পক্ষ থেকে আসা সম্পূর্ণ একটি সত্য (ঘটনা, এ সত্ত্বেও) তারা (এর সাথে) যে আচরণ করে যাচ্ছে আল্লাহ তায়ালা তা থেকে মোটেই অনবহিত নন।

১৪৫. যাদের ইতিপূর্বে কেতাব দেয়া হয়েছে তাদের সামনে যদি তুমি (দুনিয়ার) সব কয়টি প্রমাণও এনে হাযির করো, (তারপরও) এরা তোমার কেবলার অনুসরণ করবে না, আর (এর পর) তুমিও তাদের কেবলার অনুসরণকারী হতে পারো না. (তাছাড়া) এদের এক দলও তো আরেক দলের কেবলার অনুসরণ করে না; আমার পক্ষ থেকে এ জ্ঞান তোমাদের কাছে পৌছার পর তুমি যদি তাদের ইচ্ছা আকাংখার অনুসরণ করো, তাহলে অবশ্যই তুমি যালেমদের দলে শামিল হয়ে যাবে।

১৪৬. যাদের আমি কেতাব দান করেছি এরা তাকে এতো ভালো করে চেনে, যেমনি এরা চেনে আপন ছেলেদের: এদের একদল সত্য গোপন করার চেষ্টা করছে, অথচ এরা তো সব কিছই জানে।

١٣٢ سَيَقَوْلَ السَّغَهَاءَ مِيَّ النَّاسِ مَا وَلَّـبِهُرَ

عَنْ قِبْلَتِهِم الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا وَقُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ء يَهْدِيْ مَنْ يَشْفَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مَّسْتَقِيْر

١٣٣ وَكَنْ لِكَ جَعَلْنُكُمْ أُمَّةً وسَطًا لَّتَكُونُوْا شُهَنَاءً عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُرْ شَهِيْنًا ﴿ وَمَا جَعَلْنَا الْقَبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا ۚ إِلَّا لِنَعْلَرَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ ميَّنُ يَّنْقَلبُ عَلَى عَقبَيْه ، وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِيثِيَ مَنَى اللَّهُ ﴿ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيْعَ إِيْهَانَكُرْ ، إِنَّ اللَّهُ بِالنَّاسِ لَرَءُونَ رَّحِيْر

١٣٣ قَلْ نَرِٰى تَقَلُّبَ وَجُمِكَ فِي السَّهَاءِج فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَوْضٰعِهَا مِ فَوَلِّ وَجُهَكَ شَطْرَ الْهَسْجِدِ الْحَرَا] ، وَهَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلَّهُ ا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَةً ﴿ وَإِنَّ الَّذِينَ ٱوْتُوا الْكَتْبَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقِّ مِنْ رَّبِّهِمْ ﴿ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلِ عَبًّا يَعْمَلُوْنَ

١٣٥ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتْبَ بِكُلِّ أَيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ع وَمَا أَنْت بِتَابِعِ قِبْلَتَهُرْ ۽ وَمَا بَعْضُهُرْ بِتَابِعِ قِبْلَةَ بَعْضٍ ﴿ وَلَئِنِ النَّبَعْتَ أَهُوۤ اَءَهُرْ مِّنَّ بَعْلِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ لِإِنَّكَ إِذًا لَّيِنَ الظَّلِمِينَ مِ

لَيَكْتُبُونَ الْحَقِّ وَهُرْ يَعْلَبُونَ ل

২ সূরা আল বাকাুুুরা

২২

পারা ২ সাইয়াকৃত্

১৪৭. (হে নবী, তুমি তাদের বলো,) তোমার মালিকের পক্ষ থেকে (এ হচ্ছে) একমাত্র সত্য, সুতরাং কোনো অবস্থায়ই তোমরা সন্দেহ পোষণকারীদের দলে শামিল হয়ো না। ١٣٤ ٱلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُتَرِيْنَ ع

১৪৮. প্রত্যেক (জাতির) জন্যে (এবাদাতের) একটা দিক (নির্দিষ্ট) থাকে, যে দিকে সে (জাতি) মুখ করে (দাঁড়ায়), অতএব তোমরা (আসল) কল্যাণের দিকে অগ্রসর হবার কাজে একে অপরের সাথে প্রতিযোগিতা করো; তোমরা যেখানেই থাকো না কেন তিনি তোমাদের সবাইকে (একই স্থানে) এনে হাযির করবেন; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সবকিছুর ওপর ক্ষমতাবান।

١٣٨ وَلِكُلِّ وِجْهَةً هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰسِ، أَيْنَ مَا تَكُوْنُوا يَاْسِ بِكُرُ اللّهُ جَبِيْعًا ، إِنَّ اللّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرُ

১৪৯. তুমি যে কোনো স্থান থেকেই বেরিয়ে আসো না কেন, (নামায়ের জন্যে) মাসজিদে হারামের দিকে মুখ ফেরাও, কেননা এটাই হচ্ছে তোমার মালিকের কাছ থেকে (কেবলা সংক্রান্ত) সঠিক (সিদ্ধান্ত); আর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কার্যাবলী সম্পর্কে মোটেই উদাসীন নন।

الْهَسُجِلِ الْحَرَارِ ، وَإِنَّهُ لَلْحَقَّ مِنْ رَبِّكَ ، الْهَسُجِلِ الْحَرَارِ ، وَإِنَّهُ لَلْحَقَّ مِنْ رَبِّكَ ،

১৫০. (হে নবী,) যে দিক থেকেই তৃমি বেরিয়ে আসবে,
(নামাযের জন্যে সেখান থেকেই) মাসজিদে হারামের
দিকে মুখ ফিরিয়ে (দাঁড়িয়ে) যেও; (এ সময়) যেখানেই
তৃমি থাকো না কেন সে (কাবার) দিকে মুখ ফিরিয়ে
নেবে, তাহলে (প্রতিপক্ষের) লোকদের কাছে তোমাদের
বিরুদ্ধে দাঁড় করানোর মতো কোনো যুক্তি অবশিষ্ট থাকবে
না, তাদের মধ্য থেকে যারা বাড়াবাড়ি করে তাদের কথা
অবশ্য আলাদা, তোমরা এসব ব্যক্তিদের ভয় করো না,
তোমরা বরং ভয় করো আমাকে. যাতে করে আমি
তোমাদের ওপর আমার নেয়ামত পূর্ণ করে দিতে পারি,
এর ফলে তোমরাও সঠিক পথের সন্ধান পেতে পারো,

ا ۱۵۰ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْهَسْجِلِ الْحَرَا اِ ﴿ وَحَيْثُ مَا كُنْتُهِ فَوَلَّوْا وُجُوْهَكُرْ شَطْرَةً لا لِنَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُرْ مُجَّةً فِي إِلَّا الَّانِيْنَ ظَلَمُوا مِنْهُرْ قَ فَلَا تَخْشَوْهُمْرُ وَ اخْشَوْنِیْ ق وَلِاً تِرَّ نِعْمَتِیْ عَلَیْكُرْ وَلَعَلَّكُرْ تَهْتَلُونَ لا

১৫১. (এই সঠিক পথের সন্ধান দেরার জন্যেই) আমি এভাবে তোমাদের কাছে তোমাদের মাঝ থেকেই একজনকে রসূল করে পাঠিয়েছি, যে ব্যক্তি প্রেথমত) তোমাদের কাছে আমার 'আয়াত' পড়ে শোনাবে, (ছিতীয়ত) সে তোমাদের (জীবন) পরিশুদ্ধ করে দেবে এবং (তৃতীয়ত) সে তোমাদের আমার কেতাব ও (তার অস্তর্নিহিত) জ্ঞান শিক্ষা দেবে, (সর্বোপরি) সে তোমাদের এমন বিষয়সমূহের জ্ঞানও শেখাবে, যা তোমরা কখনো জানতে না।

اهَا كَمَا آرسَلْنا فِيكُر رَسُولًا مِّنْكُر يَتْلُوا عَلَيْكُر الْكِتْلُ
 عَلَيْكُر أَيْتِنا وَيُزَكِّيكُر وَيُعَلِّمُكُر الْكِتْلِ وَلَعَلِمْكُر الْكِتْلِ وَالْحِثْمَة وَيُعَلِّمُكُر مَّا لَر تَكُونُوا تَعْلَمُونَ اللهِ الْحَرَاد الْعَلَمُونَ اللهِ الْحَرْد اللهِ ال

১৫২. অতএব (এসব অনুগ্রহের জন্যে) তোমরা আমাকেই স্বরণ করো, (তাহলে) আমিও তোমাদের স্বরণ করবো, তোমরা আমার কৃতজ্ঞতা আদায় করো এবং কখনো তোমরা আমার অকৃতজ্ঞ হয়ো না।

۱۵۲ فَاذْكُرُوْنِيَّ أَذْكُرْكُرْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَكَا تَكْفُرُوْنِ ع

১৫৩. হে (মানুষ,) তোমরা যারা ঈমান এনেছো, (পরম) ধৈর্য ও (খালেস) নামাযের মাধ্যমে তোমরা (আমার কাছে) সাহায্য প্রার্থনা করো; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ধৈর্যশীল মানুষদের সাথে আছেন।

١٥٣ يَانَيُّهَا الَّنِيْنَ أَمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلُوةِ ، إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّبِرِيْنَ

১৫৪. যারা আল্লাহ তায়ালার পথে নিহত হয়েছে তাদের তোমরা (কখনো) মৃত বলো না; বরং তারাই হচ্ছে (আসল) জীবিত (মানুষ), কিন্তু (এ বিষয়টির) কিছুই তোমরা জানো না।

١٥٣ وَلَا تَقُوْلُوا لِمَنْ يَّقْتَلُ فِي سَبِيْلِ اللهِ أَمُواكً مَا أَمُولُونَ وَلَا يَشْعُرُونَ

মন্যিল ১

২ সুরা আল'বাকারা



পারা ২ সাইয়াকুলু

১৫৫. আমি অবশ্যই (ঈমানের দাবীতে) তোমাদের পরীক্ষা করবো, (কখনো) ভয়-ভীতি, (কখনো) ক্ষ্ধা-অনাহার, (কখনো) তোমাদের জান মাল ও ফসলাদির ক্ষতি সাধন করে (তোমাদের পরীক্ষা করা হবে। যারা ধৈর্যের সাথে এর মোকাবেলা করে); তুমি (সে) ধৈর্যশীলদের (জান্লাতের) সুসংবাদ দান করো,

١٥٥ وَلَنَبْلُوَتَّكُيرُ بِشَيْءٍ بِّنَ الْخَوْنِ وَ الْجُوْعِ وَنَقْصِ مِّيَ الْإَمْوَالِ وَالْإَنْغُسِ وَالثَّهَرُ سِ، وَبَشِّر الصَّبِرِينَ لا

১৫৬. যখনি তাদের সামনে (কোনো) পরীক্ষা এসে হাযির হয় তখনি তারা বলে, আমরা তো আল্লাহর জন্যেই, আমাদের তো (একদিন) আল্লাহর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

١٥٦ الَّٰنِينَ إِذَا آَصَابَتْهُرْ مُّصِيْبَةً ٧ قَالُوۤۤ إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَجِعُونَ ء

অপার করুণা: আর এরাই সঠিক পথপ্রাপ্ত।

وَرَحْهَةً نِن وَأُولَئِكَ مُرُ الْهُمْتَلُونَ

১৫৮. অবশ্যই 'সাফা' এবং 'মারওয়া' (পাহাড় দুটো) আল্লাহ তায়ালার নিদর্শনসমূহের অন্যতম, অতএব যদি তোমাদের মধ্যে কোনো লোক হজ্জ কিংবা ওমরা আদায় (করার এরাদা) করে, তার জন্যে এই উভয় (পাহাড়ের) মাঝে তাওয়াফ করাতে দোষের কিছু নেই; (কেননা) যদি কোনো ব্যক্তি (অন্তরের) নিষ্ঠার সাথে কোনো ভালো কাজ করে তাহলে (তারা যেন জেনে রাখে), নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা কৃতজ্ঞতাপরায়ণ ও প্রভৃত জ্ঞানের অধিকারী।

١٥٨ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَالِرِ اللَّهِ ع فَهَنْ مَجَّ الْبَيْسَ أو اعْتَهَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يُطُّونَ بِهِهَا ﴿ وَمَنْ تَطُوُّعَ خَيْرًا لا فَإِنَّ اللهُ هَاكُ عَلَيْرٌ

১৫৯. মানুষের জন্যে যেসব (বিধান) আমি আমার কেতাবে বর্ণনা করে দিয়েছি, তারপর যারা আমার নাযিল করা (সেসব) সুস্পষ্ট নিদর্শনসমূহ ও পরিষ্কার পথনির্দেশ গোপন করে, এরাই হচ্ছে সেসব লোক যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অভিসম্পাত করেন, অভিশাপ বর্ষণ করে অন্যান্য অভিশাপকারীরাও

ا اللهِ الله الْبَيِّنْ وَالْهُرِي مِنْ بَعْنِ مَا بَيَّنَّهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتْبِ لِا ٱولَٰئِكَ يَلْعَنُهُرُ اللَّهُ وَيَلْعَنَّهُمْ اللَّعِنُّونَ لا

১৬০. তবে যারা (এ কাজ থেকে) ফিরে আসবে এবং নিজেদের সংশোধন করে নেবে, খোলাখুলিভাবে তারা (সেসব সত্য) কথা প্রকাশ করবে (যা এতোদিন আহলে কেতাবরা গোপন করে আসছিলো), এরাই হবে সেসব লোক যাদের ওপর আমি দয়াপরবর্শ হবো, আমি পরম ক্ষমাকারী, দয়ালু।

الَّا الَّذِينَ تَابُوا وَاصْلَعُوا وَبَيَّنُوا وَبَيُّنُوا الَّذِينَ تَابُوا وَاسْلَعُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِم ۚ ءِ وَأَنَا التَّوَّابُ

১৬১. যারা কৃফরী করেছে এবং এই কাফের অবস্থায়ই মৃত্যু বরণ করেছে, তাদের ওপর আল্লাহর অভিশাপ, रें केंद्रिन जाएन अर्जिनान अपने عَلَيْهِ وَ لَعُنَدُ اللَّهِ وَ الْهَلَّئِكَةِ अर्जात निवास अर्जिनान (अर्जानित अर्जिनान अपने अर्जिनान अपने विकास अर्जिनान अर्जि মানবকুলের,

١٦١ إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُّوْا وَمَاتُوْا وَهُرْ كُفًّارًّ وَ النَّاسِ أَجْهَعِيْنَ لا

১৬২. (এই অভিশপ্ত অবস্থা নিয়েই) এরা সেখানে চিরদিন থাকবে, শান্তির মাত্রা এদের ওপর থেকে (বিন্দুমাত্রও) কম করা হবে না, তাদের কোনো রকম অবকাশও দেয়া হবে না।

١٦٢ عُلْدِيْنَ فِيْهَا جَ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُرُ الْعَنَابُ وَلا هُرْ يُنْظُرُونَ

১৬৩. তোমাদের মাবৃদ হচ্ছেন একজন, তিনি ছাড়া عَلَى اللَّهُ وَاحِلُّ عَلَى اللَّهُ وَاحْدَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّ عَلَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّ عَلَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَل দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই, তিনি দ্য়াল, তিনি মেহেরবান ।

الرَّحْنُ الرَّحِيْرُ ع

২ সুরা আল বাকাুুুুরা

মন্যিল :

১৬৪. নিসন্দেহে আসমান যমীনের সৃষ্টির মাঝে, রাত দিনের এই আবর্তনের মাঝে, সাগরে ভাসমান জাহাজসমূহে– যা মানুষের জন্যে কল্যাণকর দ্রব্য সামগ্রী নিয়ে ঘুরে বেড়ায়, (এর সব কয়টিতে) আল্লাহ তায়ালার নিদর্শন মজুদ রয়েছে, (আরো রয়েছে) আল্লাহ তায়ালা আকাশ থেকে (বৃষ্টি আকারে) যা কিছু নাযিল করেন (সেই বৃষ্টির) পানির মাঝে, ভূমির নির্জীব হওয়ার পর তিনি এ পানি দ্বারা তাতে নতুন জীবন দান করেন. অতপর এই ভৃখন্ডে সব ধরনের প্রাণীর তিনি আবির্ভাব ঘটান, অবশ্যই বাতাসের প্রবাহ সৃষ্টি করার মাঝে এবং সে মেঘমালা- যা আসমান যমীনের মাঝে বশীভূত করে রাখা হয়েছে, তার মাঝে সৃস্থ বিবেকবান সম্প্রদায়ের क्रत्ना निमर्गन त्रायह ।

১৬৫. মানুষদের মাঝে কিছু সংখ্যক এমনও রয়েছে, যে আল্লাহর বদলে অন্য কিছকে তাঁর সমকক্ষ মনে করে তারা তাদের তেমনি ভালোবাসে যেমনটি তথু আল্লাহ তায়ালাকেই তাদের ভালোবাসা উচিত: আর যারা (সত্যিকার অর্থে) আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনে তারা তো তাঁকেই সর্বাধিক পরিমাণে ভালোবাসবে: যারা (আল্লাহর আনুগত্য না করে) বাড়াবাড়ি করছে তারা যদি আযাব স্বচক্ষে দেখতে পেতো (তাহলে এরা বুঝতে পারতো), আসমান যমীনের সমুদয় শক্তি একমাত্র আল্লাহর জন্যেই, শান্তি দেয়ার ব্যাপারে তিনি অত্যন্ত কঠোর ।

১৬৬. (সেদিন) ভয়াবহ শান্তি দেখে (হতভাগ্য) লোকেরা (দুনিয়ায়) যাদের তারা মেনে চলতো, তাদের অনুসারীদের সাথে সম্পর্কচ্ছেদের কথা বলবে (বলবে, আমরা তো এদের চিনিই না), এদের উভয়ের মধ্যকার (ভংগুর) সব সম্পর্ক সেদিন ছিন্ন বিচ্ছিন্ন হয়ে যাবে।

১৬৭. এ (হতাশাগ্রস্ত) অনুসারীরা সেদিন বলবে, আবার যদি একবার আমাদের জন্যে (পৃথিবীতে) ফিরে যাবার (সুযোগ) থাকতো, তাহলে আজ যেমনি করে (তারা) فَنَتَبَراً مِنْهُمُ كُمَا تَبَرَّوُ أَمِنًا وَكُلُكَ يُرِيهِمُ अप्तात कार्य जन्मर्कछ्क कुर्तर्छ, आमत्रा (त्रशात عُنْ لِكَ يُرِيهِمُ المادرة مِنْهُمُ كُمَا تَبَرَّوُ أَمِنًا وَكُلُكَ يُرِيهِمُ المادرة الما গিয়ে) তাদের সাথে (যাবতীয়) সম্পর্কচ্ছেদ করে আসতাম, এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তাদের সমগ্র জীবনের وَمَا هُمْ وَمَا هُمْ اللّٰهُ اَعْمَالُهُمْ مَسَرْتِ عَلَيْهِمْ ﴿ وَمَا هُمْ الْعَالِمِ اللّٰهِ الْعَالَةُ الْعَمَالُ اللّٰهُ الْعَمَالُ اللّٰهُ الْعَمَالُ اللّٰهُ الْعَمَالُ اللّٰهِ الْعَالَمُ اللّٰهِ الْعَلَالُهُمْ عَسَرْتِ عَلَيْهِمْ ﴿ وَمَا هُمْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰلِمْ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ কর্মকান্ডগুলো তাদের সামনে একরাশ (লচ্ছা ও) আক্ষেপ হিসেবে তুলে ধরবেন: তাদের জ্বন্যে যে জাহানাম নির্ধারিত হয়ে আছে, এরা (কখনো সেই) জাহানাম থেকে বেরিয়ে আসতে পারবে না।

১৬৮. হে মানুষ, তোমরা (আল্লাহর) যমীনে যা কিছু হালাল ও পবিত্র জিনিস আছে তা খাও এবং (হালাল عَلْلًا طَيِّبًا رَبُّو ۚ لَا تَتَّبِعُو ا خُطُوسِ الشَّيْطُنِ ، शतात्मत्र त्राभात्त) अग्रजात्नत्र भमाश्क जनुअत्रव करता ना; الشَّيْطُن اللَّهُ عَلَيْكُ طَيِّبًا رَبُّو لَا تَتَّبِعُو ا خُطُوسِ الشَّيْطُن اللَّهُ عَلَيْكُ مَا اللَّهُ عَلَيْكُ مَا اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُوعِ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلِ অবশ্যই সে তোমাদের প্রকাশ্য দুশমন।

১৬৯. (শয়তানের কাজ হচ্ছে,) সে তোমাদের (সব সময়) পাপ ও অশ্লীল কাজের আদেশ দেয়, যাতে করে আল্লাহ তায়ালার নামে তোমরা এমন সব কথা বলতে ওরু করো যা সম্পর্কে তোমরা কিছুই জ্ঞানো না।

১৭০. তাদের যখন বলা হয়, আল্লাহ তায়ালা যা কিছু নাযিল করেছেন তোমরা তা মেনে চলো, তারা বলে,

২ সূরা আল বাকাুুুরা

١٦٣ إِنَّ فِي عَلْقِ السَّهٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاغْتِلاَنِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِى فِي الْبَحْرِ بِهَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّهَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَاَهْيَا بِهِ الْإَرْضَ بَعْنَ مَوْتِهَا وَبَتَّ فَيْهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ، وَتَصْرِيْفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْهُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْإَرْضِ لَايِتِ لِّقَوْمٍ يَتَعْقِلُونَ

١٦٥ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ أَنْهَادًا يُّحِبُّوْنَهُرْ كَحُبِّ اللَّهِ ﴿ وَالَّذِينَ أَمَنُوْاً آهَدُّ مُبًّا لِلَّهِ ، وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا إِذْ يَرَوْنَ الْعَنَابَ لا أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَهِيْعًا لا وْأَنَّ اللَّهُ شَنِيْلُ الْعَنَابِ

١٦٦ إِذْ تَبَرًّا الَّذِينَ اتَّبِعُوْا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَلَاابَ وَتَقَطَّعَتْ بِمِ ٳڒٛٳؘۺۑؘٳٮ

١٦٤ وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً بِخرجِيْنَ مِنَ النَّارِع

١٦٨ يَّاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ لَكُرْ عَنَّوْ مَّبِينَ

١٦٩ إِنَّهَا يَاْمُركُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَآءِ وَأَنْ تَقُوْلُوا عَلَى الله مَالَا تَعْلَبُونَ

١٤٠ وَإِذَا قِيلَ لَهُرُ اتَّبِعُوْا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ

আমরা তো ভধু সে পথেরই অনুসরণ করবো যে পথের ওপর আমরা আমাদের বাপ দাদাদের পেয়েছি: তাদের বাপ-দাদারা যদি (এ ব্যাপারে) কোনো জ্ঞান বৃদ্ধির পরিচয় নাও দিয়ে থাকে. কিংবা তারা যদি হেদায়াত নাও পেয়ে থাকে (তবুও কি তারা তাদের অনুসরণ করবে)?

قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا ۚ الْفَيْنَا عَلَيْهِ أَبِآ عَنَا ء أَوَلَوْ كَانَ أَبَآوُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يهتلون

১৭১. এভাবে যারা (হেদায়াত) অস্বীকার করে, তাদের উদাহরণ হচ্ছে এমন (জম্ভুর মতো), যে (তার পালের আরেকটি জত্তুকে) যখন ডাক দেয়, তখন (পেছনের সেই জন্তুটি তার) চীৎকার ও কান্নার আওয়ায ছাড়া আর কিছুই ভনতে পায় না; (মূলত) এরা (কানেও) শোনে না, (কথাও) বলতে পারে না, (চোখেও) দেখে না, (এ কারণে হেদায়াতের কথাও) এরা বুঝে না।

ا ٤١ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُّوْا كَمَثَلِ الَّذِينَ يَنْعِقُ بِهَا لَا يَسْهَعُ إِلَّا نُعَاءً وَّلِنَآءً ﴿ صُرًّ بُكْرٌ عَنِي فَهُرْ لَا يَعْقَلُونَ

১৭২. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, আমি যেসব পাক পবিত্র জিনিস তোমাদের দান করেছি (নিসংকোচে) তা তোমরা খাও এবং (এ নেয়ামতের জন্যে) আল্লাহ তায়ালার শোকর আদায় করো, (অবশ্য) যদি তোমরা (হালাল হারামের ব্যাপারে) একান্ডভাবে ওধু তাঁরই দাসত্ত করো।

١٤٢ يَآيَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبْتِ مَا رَزَقَنكُر وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبَنُونَ

১৭৩. অবশ্যই তিনি মৃত (জম্ভুর গোশত), সব ধরনের রক্ত ও শূকরের গোশত হারাম (ঘোষণা) করেছেন এবং (এমন সব জন্তুও হারাম করছেন) যা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারো নামে যবাই (কিংবা উৎসর্গ) করা হয়েছে, তবে (সে ব্যক্তির কথা আলাদা) যাকে (এজন্যে) বাধ্য করা হয়েছে, যদি সে ব্যক্তি এমন হয় যে, সে (আল্লাহর আইনের) সীমালংঘনকারী হয় না. অথবা (যেটুকু হলে জীবনটা বাঁচে তার চাইতে বেশী ভোগ করে) অভ্যস্ত হয়ে পড়ে না, তাহলে (এই অপারগতার সময়ে হারাম খেলে) তার ওপর কোনো গুনাহ নেই: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল, তিনি অনেক মেহেরবান।

١٤٣ إِنَّهَا حَرًّا عَلَيْكُرُ الْهَيْتَةَ وَاللَّا وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَ آمِلٌ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ع فَهَنِ اضْطُرُّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَرَ عَلَيْهِ ا انَّ اللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيمً

১৭৪. (এ সত্ত্বেও) যারা আল্লাহর নাযিল করা (তাঁর) কেতাবের অংশবিশেষ গোপন করে রাখে এবং সামান্য ((द्विश्चिक) मूला जा विकि करत प्तर, जाता विंग नित्र या الْكِتْبِ وَيَشْتَرُونَ بِمِ ثُمَنًا قَلِيلًا لا أُولئِكَ হাসিল করে এবং যা দিয়ে তারা নিজেদের পেট ভর্তি করে রাখে তা (মূলত) আগুন ছাড়া আর কিছুই নয়, يكلِّهُمُ اللَّهُ يَوْمُ الْقِيْمَةِ وَلَا يُزكِّيهِمْ عَلَى اللَّهُ يَوْمُ اللَّهُ يَوْمُ اللَّهُ يَوْمُ اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّ عَلَى اللَّهُ عَلَّ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَ বলবেন না. তিনি তাদের (সেদিন) পবিত্রও করবেন না. ভয়াবহ আযাব এদের জন্যেই নির্দিষ্ট।

١٤٣ انَّ الَّانِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ مَا يَأْكُلُوْنَ فِي بُطُوْنِهِرُ إِلَّا النَّارَ وَلَا وَلَهُمْ عَنَابِ ٱليُر

১৭৫. এরা হেদায়াতের বদলে গোমরাহীর পথ কিনে নিয়েছে, ক্ষমার বদলে তারা আযাব (বেছে) নিয়েছে, এরা ধৈর্যের সাথে (ধীরে ধীরে) জাহান্নামের আগুনের ওপর গিয়ে পডেছে।

١٤٥ أُولَيْكَ النَّانِينَ اشْتَرُوا الضَّلْلَةَ بِالْهُلِّي وَالْعَلَابَ بِالْهَغْفِرَةِ عِ فَهَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّار

১৭৬. এটা এই জন্যে, আল্লাহ তায়ালা মানব জাতির জন্যে আগে থেকেই সত্য (দ্বীন) সহকারে কেতাব নাযিল করে দিয়েছেন: যারা এই কেতাবে মতবিরোধে লিপ্ত হয়েছে, তারা সত্য ও ন্যায়ের পথ থেকে অনেক দরে নিক্ষিপ্ত হয়ে গেছে।

١٤٦ ذٰلِكَ بان الله نَوْل الْكُتْبَ بالْحَقّ ، وَإِنَّ الَّذِيْنَ اغْتَلَفُّوا فِي الْكِتٰبِ لَفِي شِقَاقِ البَعِيْدِ ع

২ সূরা আল বাক্বারা

১৭৭. তোমরা তোমাদের মুখ পূর্ব দিকে ফেরাও বা পশ্চিম দিকে ফেরাও, এতেই কিন্তু সব নেকী নিহিত নেই, তবে আসল কল্যাণ হচ্ছে একজন মানুষ ঈমান আনবে আল্লাহর ওপর, পরকালের ওপর, ফেরেশতাদের ওপর, (আল্লাহর) কেতাবের ওপর, (কেতাবের বাহক) নবী রস্লদের ওপর এবং আল্লাহর দেয়া মাল সম্পদ তাঁরই তালোবাসা পাবার মানসে আত্মীয় স্বজন, এতীম মেসকীন ও পথিক মোসাফেরের জন্যে ব্যয় করবে, সাহায্যপ্রার্থী (দুস্থ মানুষ, সর্বোপরি) মানুষদের (কয়েদ ও দাসত্ত্বের) বন্দিদশা থেকে মুক্ত করার কাজে অর্থ ব্যয় করবে, নামায প্রতিষ্ঠা করবে, (দারিদ্র বিমোচনের জন্যে) যাকাত আদায় করবে (তাছাড়াও রয়েছে সেসব পুণ্যবান মানুষ); যারা প্রতিশ্রুতি দিলে তা পালন করে, ক্ষুধা দারিদ্রের সময় ও দুর্দিনে ধৈর্য ধারণ করে, (মূলত) এরাই হচ্ছে সত্যবাদী এবং এরাই হচ্ছে প্রকৃত আল্লাহতীক্র মানুষ।

الْمَشْرِقِ وَالْمَفْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ أَمَنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَفْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ أَمَنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَفْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ أَمَنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَلْئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالْمَلْئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيِّنَ ءَ وَالْمَتْكِيْنَ وَالْمَلْئِكَةِ وَالْكِتٰبِ الْقَرْبَى وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَنْ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَسْكِيْنَ وَالْمَوْفُونَ وَالْمَالُولُولَةً ءَ وَالْمُوثُونَ وَالْمَالِيْنَ فِي الرَّعْلِقَ ءَ وَالْمُونُونَ فِي الْبَاسِ ء أُولَئِكَ وَحِيْنَ الْبَاسِ ء أُولَئِكَ وَوْنَ الْبَاسِ ء أُولَئِكَ مُلُولُولَ عَلْمَالُولُولَ وَاولَئِكَ مُلُولُولَ وَالْمَالِكَ مُلُولُولَ وَالْمِلْكِيْنَ وَلَالْكَالِكَ مُلْ الْبَاسِ ء أُولُولُكَ الْمَالِكَ عَلَى الْبَاسِ ء أُولَئِكَ الْمَالِكَ عَلَى الْبَاسِ ء أُولُولَ الْمَالِكَ مُلْكُولُولَ عَلْمَالُولُكُولُولُكَ الْمُؤْلُولُ الْمَالِكَ وَالْمَلْكِيْنَ الْمَالِكَ الْمَالْمُ الْمُؤْلُولُ الْمَالِكُولُولُ الْمُؤْلُولُ الْمَالِكُولُولَ عَلْمَالُولُولُ الْمَالُولُولُ الْمُؤْلُولُ الْمَالُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمَالُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُلْلِكُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلِولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُو

১৭৮. হে মানুষ, যারা ঈমান এনেছো, তোমাদের জন্যে নরহত্যার 'কেসাস' (তথা প্রতিশোধের নীতি) নির্ধারণ করে দেয়া হয়েছে (এবং তা এই, মৃত) স্বাধীন ব্যক্তির বদলে স্বাধীন ব্যক্তির (দভাজ্ঞা পাবে), দাসের বদলে (পাবে) দাস, নারীর বদলে নারীর ওপর (দভ প্রযোজ্য হবে), অবশ্য যে হত্যাকারীকে (–যাকে হত্যা করা হয়েছে তার পরিবারের লোকেরা কিংবা) তার ভাইর পক্ষ থেকে ক্ষমা করে দেয়া হয়, তার ক্ষেত্রে কোনো ন্যায়ানুগ পন্থা অনুসরণ (করে তা সম্পন্ন) করতে হবে, এটা তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে দভ হ্রাস (করার উপায়)ও তার একটি অনুহাহ মাত্র; যদি কেউ এরপরও বাড়াবাড়ি করে, তাহলে তার জন্যে কঠোর শান্তি রয়েছে।

۱۷۸ يَا يَّا الَّانِينَ أَمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُرُ الْقَصَاصُ فِي الْقَتَلٰى ﴿ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وِالْقَتَلٰى ﴿ الْحُرُّ بِالْحُرُّ وِالْقَتَلٰى ﴿ الْحُرْ بِالْحُرُونِ وَالْأَنْثَى اِلْالْاَثْنَى ﴿ فَمَنَ عُنَى الْقَبْلِ وَالْأَنْثَى اِلْاَنْثَى ﴿ فَمَنَ عُنِي الْمُعْرُونِ عُفِي لَهُ مِنْ الْحَيْدِ شَيْ وَالْآتِبَاعُ اللَّهُ وَوَفِي وَالْمَانِ ﴿ ذَٰلِكَ تَحْفَيْفُ مِنْ وَاللَّهُ مُنْ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَلَكَ مَنْ اللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَلَكَ مَنْ اللَّهُ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مَنْ وَاللَّهُ مِنْ وَاللَّهُ وَلَكُ مَنْ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَّهُ وَاللَّهُ وَالْكُ وَاللَّهُ وَالْكُولُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا لَا لَا لَا لَاللَّهُولُولُ وَاللَّهُ وَاللَّالَةُ وَاللَّهُ وَاللّذِاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُولُولُولُولُولُولُولُ

১৭৯. হে বিবেকবান লোকেরা, (আল্লাহর নির্ধারিত) এই 'কেসাস'–এর মাঝেই (সত্যিকার অর্থে) তোমাদের (সমাজ ও জাতির) 'জীবন' (নিহিত) রয়েছে, আশা করা যায় (অতপর) তোমরা সতর্ক হয়ে চলবে।

ا وَلَكُمْ فِي الْقِصَاسِ حَيْوةً يَّا ولِي
 الْإَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَقُونَ

১৮০. (হে ঈমানদার লোকেরা,) তোমাদের জন্যে এই আদেশ জারি করা হয়েছে যে, যদি তোমাদের মাঝে কোনো লোকের মৃত্যু এসে হাযির হয় এবং সে যদি কিছু সম্পদ রেখে যায়, (তাহলে) ন্যায়ানুগ পদ্বায় (তা বন্টনের কাজে) তার পিতামাতা ও আত্মীয় স্বজনের জন্যে ওসিয়তের ব্যবস্থা রয়েছে, এটা পরহেযগার লোকদের ওপর (একান্ত) করণীয়।

۱۸۰ كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ اَحَنَكُمُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْوَالِلَيْنِ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا " عَلَّا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِلَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْنِ عَ حَقَّا عَلَى الْمُتَّقَيْرِ،

১৮১. যারা তার (এই) ওসিয়ত শুনে নেয়ার পর (নিজেদের স্বার্থে) তা পাল্টে নিলো (তাদের জানা উচিত); এটা বদলানোর অপরাধের দায়িত্ব তাদের ওপরই বর্তাবে, আল্লাহ তায়ালা সব কিছুই শোনেন এবং সব কিছুই তাঁর জানা। ١٨١ فَهَنَّ بَلَّلَهُ بَعْلَ مَا سَهِعَهُ فَالِّهَا ۖ إِثْهَا عَلَى اللهِ سَهِيَّةُ عَلَى اللهِ سَهِيَّةً عَلَي

১৮২. (जरमा) कात्रा यिन जिमग्रज्कातीत काছ थित्क (ब إِثْهًا أَوْ إِثْهًا أَوْ إِثْهًا مَاتَ अभ्य अभिग्रज्कातीत का

পারা ২ সাইয়াকুলু

ধরনের) আশংকা থাকে যে. (সে পক্ষপাতিত করে) কারো প্রতি অবিচার করে গেছে, কিংবা (কারো সাথে এর ফলে) ना-ইনসাফী করা হয়েছে, তাহলে (যদি সদিচ্ছা নিয়ে) মূল বিষয়টির সংশোধন করে দেয়, এতে তার কোনো দোষ হবে না: আল্লাহ তায়ালা বড়োই ক্ষমাশীল. মেহেরবান।

فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَّا إِثْهِ عَلَيْهِ ﴿ إِنَّ اللَّهُ غَفُورٌ وحيرع



১৮৩. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, তোমাদের ওপর রোযা ফর্য করে দেয়া হয়েছে, যেমনি করে ফর্য করা হয়েছিলো তোমাদের পূর্ববর্তী লোকদের ওপর, যেন তোমরা (এর মাধ্যমে আল্লাহকে) ভয় করতে পারো:

١٨٣ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا كُتبَ عَلَيْكُرُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيثَنَ مِنْ قَبْلِكُرْ لَعَلَّكُمْ ثَتَّقُوْنَ لا

১৮৪. (রোযা ফরয করা হয়েছে) কয়েকটি নির্দিষ্ট দিনের مُكُرُ مُنكُر مُنكُر مُنكُر مُنكُر अता अविकार को अवि अ (नित्रकालांक) अअञ्च হয়ে যায় কিংবা কেউ যদি (তখন) সফরে থাকে, সে مَرِيْضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعَلَى ۗ وَمَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اله থেকে ফিরে এসে) আদায় করে নেবে; (এরপরও) যাদের ওপর (রোযা) একান্ত কষ্টকর হবে, তাদের জন্যে এর বিনিময়ে ফেদিয়া থাকবে (এবং তা) হচ্ছে একজন গরীব ব্যক্তিকে (তণ্ডিভরে) খাবার দেয়া: অবশ্য যদি কোনো ব্যক্তি (এর চাইতে বেশী দিয়ে) ভালো কাজ করতে চায়. তাহলে এ (অতিরিক্ত) কাজ তার জ্বন্যে হবে একাস্ত কল্যাণকর; তবে (এ সময়) তোমরা যদি রোযা রাখতে পারো তাই তোমাদের জন্যে ভালো; তোমরা যদি রোযার উপকারিতা সম্পর্কে জানতে (যে, এতে কি পরিমাণ কল্যাণ রয়েছে!)

وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيْقُونَهُ فِنْيَةٌ طَعَامٌ مِسْكِيْنِ ا فَنَىٰ تَطَوَّعَ غَيْرًا فَهُو غَيْرً لَّهُ وَ أَنْ تَصُومُوا غَيْرُ لَكُرْ إِنْ كُنْتُرْ تَعْلَبُونَ

১৮৫. রোযার মাস (এমন একটি মাস)– যাতে কোরআন নাযিল করা হয়েছে, আর এই কোরআন (হচ্ছে) মানব জাতির জন্যে পথের দিশা, সৎপথের সুস্পষ্ট নিদর্শন, (মানুষদের জন্যে হক বাতিলের) পার্থক্যকারী, অতএব তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এ মাসটি পাবে, সে এতে রোযা রাখবে; (তবে) যদি সে অসুস্থ হয়ে পড়ে কিংবা সফরে থাকে, সে পরবর্তী (কোনো সময়ে) গুনে গুনে সেই পরিমাণ দিন পূরণ করে নেবে; (এ সুযোগ দিয়ে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (জীবন) আসান করে দিতে চান. আল্লাহ তায়ালা কখনোই তোমাদের (জীবন) কঠোর করে দিতে চান না। আল্লাহর উদ্দেশ্য হচ্ছে, তোমরা যেন গুনে গুনে (রোযার) সংখ্যাগুলো পূরণ করতে পারো, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (কোরআনের মাধ্যমে জীবন যাপনের) যে পদ্ধতি শিখিয়েছেন তার জন্যে তোমরা তাঁর মাহাত্ম্য বর্ণনা করতে এবং তাঁর কৃতজ্ঞতা আদায় করতে পারো।

١٨٥ هَهُرُ رَمَضَانَ الَّذِي ١٨٥ أَنْزِلَ فِيهِ الْقُرْأَنُ مُنِّى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنْسٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْقُرْقَانِ ٤ فَهَنْ هَوِنَ مِنْكُرُ الشَّهْرَ فَلْيَصُّهُ ١ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِلَّ مِنْ أَيًّا إِ ٱخَرَ ﴿ يُرِيْدُ اللَّهُ بِكُرُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُرُ الْعُسْرَ رِ وَلِتُكْهِلُوا الْعِنَّاةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَلُ بِكُرْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُونَ

১৮৬. (হে নবী,) আমার কোনো বান্দা যখন তোমাকে আমার ব্যাপারে জিজ্ঞেস করে (তাকে তুমি বলে দিয়ো), আমি (তার একান্ত) কাছেই আছি; আমি আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া দেই যখন সে আমাকে ডাকে. তাই তাদেরও উচিত আমার আহ্বানে সাড়া দেয়া এবং (সম্পূর্ণভাবে) আমার ওপরই ঈমান আনা, আশা করা যায় এতে করে তারা সঠিক পথের সন্ধান পাবে।

١٨٦ وَإِذَا سَٱلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَانِّي قَرِيْبٌ م ٱجِيْبُ دَعْوَةَ اللَّاعِ إِذَا دَعَانِ لا فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَى وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُنُونَ

১৮৭. রোযার (মাসের) রাতের বেলায় তোমাদের স্ত্রীদের কাছে যৌন মিলনের জন্যে যাওয়া তোমাদের জন্য হালাল করে দেয়া হয়েছে; (কারণ, তোমাদের) নারীরা যেমনি

١٨٤ أُحِلَّ لَكُر لَيْلَةَ الصِّيارِ الرَّفَثُ إِلَى بِسَانِكُرْ ، هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُرْ وَأَنْتُرْ لِبَاسٌ

(সর্বমোট) পূর্ণ দশটি রোযা রাখবে, এই (সুবিধা)-টুকু তথু তাদের জন্যে, যাদের পরিবার পরিজন আল্লাহর ঘরের আশেপাশে বর্তমান নেই: তোমরা আল্লাহকেই ভয় করো, জেনে রাখো, আল্লাহ তায়ালা কঠোর আযাব প্রদানকারী বটে!

وَاتَّقُوا اللَّهُ وَاعْلَهُوْا ۖ أَنَّ اللَّهُ شَرِيْتُ الْعقَابِ ع

১৯৭. হজ্জের মাসসমূহ (একান্ত) সুপরিচিত, সে সময়গুলোর মধ্যে যে ব্যক্তি হজ্জ (আদায়) করার মনস্থ করবে (সে যেন জেনে রাখে), হজ্জের ভেতর (কোনো) যৌনসম্ভোগ নেই, নেই কোনো অশ্লীল গালিগালাজ ও ঝগডাঝাটি, আর যতো ভালো কাজ তোমরা আদায় করো আল্লাহ তায়ালা (অবশ্যই) তা জানেন; (হচ্জের নিয়ত করলে) এর জন্যে তোমরা পাথেয় যোগাড় করে নেবে, যদিও আল্লাহর ভয়টাই হচ্ছে (মানুষের) সর্বোৎকৃষ্ট পাথেয়, অতএব হে বৃদ্ধিমান মানুষরা, তোমরা আমাকেই ভয় করো।

١٩٤ ٱلْحَجُّ ٱشْهُرُّ مَّعْلُومْتُ ۽ فَهَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَىنَ وَلَا فُسُوْقَ لا وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ، وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ غَيْرٍ يَّعْلَهُمُ اللَّهُ مُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقُوٰى رَوَاتَّقُوْنِ يِأُولِي الْإَلْبَابِ

১৯৮. (হচ্ছের এ সময়গুলোতে) যদি তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহ তালাশ করতে (গিয়ে কোনো অর্থনৈতিক ফায়দা হাসিল করতে) চাও তাতে তোমাদের কোনোই দোষ নেই, অতপর তোমরা যখন আরাফাতের ময়দান থেকে ফিরে আসবে তখন (মোফালাকায়) 'মাশয়ারে হারাম'-এর কাছে এসে আল্লাহকে শ্বরণ করবে, (ঠিক) যেমনি করে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (তাঁকে ডাকার) পথ বলে দিয়েছেন, তেমনি করে তাঁকে শ্বরণ করবে, ইতিপূর্বে তোমরা (আসলেই) পথভ্রষ্টদের দলে শামিল ছিলে।

١٩٨ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُواْ فَضَلًّا مِّنْ وَبِّكُمْ مَ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفْتِ فَأَذْكُوا اللَّهَ عِنْكَ الْهَشْعَرِ الْحَرَا إِ م وَاذْكُرُوْهُ كَهَا هَلَ لِكُرْ } وَإِنْ كُنْتُرْ مِّنْ قَبْلِهِ لَيِنَ الضَّالَّيْنَ

১৯৯. তারপর তোমরা সে স্থান থেকে ফিরে এসো. যেখান থেকে অন্য (হজ্জ পালনকারী) ব্যক্তিরা ফিরে আসে, (নিজেদের ভূল ভ্রান্তির জন্যে) আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করো, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা (গুনাহ খাতা) মাফ করে দেন, তিনি বড়োই দয়ালু!

199 ثُرَّ أَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ، إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ

২০০. যখন তোমরা তোমাদের (হচ্ছের যাবতীয়) আনুষ্ঠানিকতা শেষ করে নেবে তখন (এখনে বসে জাগের দিনে) যেভাবে তোমরা তোমাদের পূর্বপুরুষদের (গৌরবের কণা) স্বরণ করতে, তেমনি করে- বরং তার চাইতে বেশী পরিমাণে (এখন) আল্লাহকে শ্বরণ করো: অতপর মানুষদের ভেতর থেকে একদল লোক বলে, হে আমাদের মালিক, (সব) ভালো জিনিস তুমি আমাদের এ দুনিয়াতেই দিয়ে দাও, বস্তুত (যারা এ ধরনের কথা বলে) তাদের জন্যে পরকা**লে আর কোনো পাওনাই (বাকী) থাকে** না।

٢٠٠ فَاذَا قَضَيْتُ ر مَّنَاسكَكُر فَاذْكُوا اللَّهَ كَنْ كُوكُورُ أَبَاءَكُورُ أَوْ أَشَلَّ ذِكْرًّا م فَيِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُولُ رَبَّناً أَتِنَا فِي النَّلْيَا وَمَا لَهُ فِي الأَخِرَةِ مِنْ خَلَاق

২০১. (আবার) এ মানুষদেরই আরেক দল বলে, হে আমাদের প্রতিপালক, এ দুনিয়ায়ও তুমি আমাদের কল্যাণ দান করো, পরকালেও তুমি আমাদের কল্যাণ দান করো; (সর্বোপরি) তুমি আমাদের আগুনের আযাব থেকে নিষ্কৃতি দাও।

٢٠١ وَمِنْهُمْ مِنْ يَقُولُ رَبِّنَا أَتِنَا فِي النَّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَلَابَ

২০২. এ ধরনের লোকদের তাদের নিজ নিজ উপার্জন মোতাবেক তাদের যথার্থ হিস্যা রয়েছে, আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী।

٢٠٢ أُولَٰنِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ، وَاللَّهُ

২০৩. হাতেগনা (হচ্জের) এ কয়টি দিনে (বেশী ٢٠٣ وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي آيًّا إِمَّعْنُ وَدْتٍ م পরিমাণে) আল্লাহকে স্বরণ করো: (হচ্জের পর) যদি কেউ

২ সুরা আল বাকাুুুুরা

62

২ সূরা আল বাকাুুুরা

২১২. যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করেছে, তাদের জন্যে তাদের এ পার্থিব জীবনটা খুব লোভনীয় করে (সাজিয়ে) রাখা হয়েছে, এরা ঈমানদার ব্যক্তিদের বিদ্রেপ করে, (অথচ) এ ঈমানদার ব্যক্তি– যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করেছে, শেষ বিচারের দিন তাদের মর্যাদা (এদের তুলনায়) অনেক বেশী হবে; আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে অপরিমিত রেযেক দান করেন।

٢١٢ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيْوةُ النَّنْيَا وَيَسْخُرُونَ مِنَ النَّذِيْنَ امْنُوْا مروَالَّذِيْنَ النَّوْيَنَ امْنُوْا مروَالَّذِيْنَ النَّوْا مروَالَّذِيْنَ النَّوْا مَوْتَمُر يَوْاَ الْقِيْمَةِ ، وَاللَّهُ يَرُزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْر حِسَابٍ

২১৩. (এক সময়) সব মানুষ একই উন্মতের অন্তর্ভুক্ত ছিলো (পরে এরা নানা দলে উপদলে বিভক্ত হয়ে তাদের স্রষ্টাকেই ভুলে গেলো)। তখন আল্লাহ তায়ালা (সঠিক পথের অনুসারীদের) সুসংবাদবাহী আর গুনাহগারদের জন্যে আযাবের সতর্ককারী হিসেবে নবীদের পাঠালেন, তিনি সত্যসহ গ্রন্থও নাযিল করলেন, যেন তা মানুষদের এমন পারস্পরিক বিরোধসমূহের চূড়ান্ত ফয়সালা করতে পারে, যে ব্যাপারে তারা মতবিরোধ করে; তাদের কাছে সুস্পষ্ট হেদায়াত পাঠানো সত্ত্বেও তারা পারস্পরিক (বিদ্রোহ ও) বিদ্বেষ সৃষ্টির জন্যে মতবিরোধ করেছে, অতপর আল্লাহ তায়ালা তাদের সবাইকে স্বীয় ইচ্ছায় সেই সঠিক পথ দেখালেন, যার ব্যাপারে ইতিপূর্বে তাদের মধ্যে মতবিরোধ সৃষ্টি হয়েছিলো; আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে সঠিক পথ দেখান।

٢١٣ كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِرَةً تَ فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُثْلَرِيْنَ م وَٱلْزَلَ مَعَمَّرُ الْكِتْبِ بِالْحَقِّ لِيَحْكُر بَيْنَ النَّاسِ مَعَمَّرُ الْكِتْبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُر بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا الْمُتَلَفَ فِيْهِ إِلَّا فِيْمَا الْمُتَلَفَ فِيْهِ إِلَّا الْنَاسِ الْنَيْنَ الْمَتَلَفَ فِيْهِ إِلَّا الْنَيْنَ الْمَتَلِيْنَ الْمَتَلِيْنَ الْمَتَلِيْنَ الْمَتَوْا لِمَا الْمُتَلَقِّوْلَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ م وَاللَّهُ الْنِيْنَ أُمَنُوا لِمَا الْمُتَلِيْنَ أُمْنُوا لِمَا الْمُتَلِيْنَ أُمْنَوْا لِمَا الْمُتَلِيْنَ أُمْنَوْا لِمَا الْمُتَلِيْنَ أُمْنَوا لِمَا الْمُتَلِيْنَ أُمْنَوا لِمَا اللَّهُ النَّذِينَ أُمْنَوا لِمَا اللَّهُ النَّذِينَ أُمْنَوا لِمَا اللَّهُ النَّذِينَ أُمْنَ اللَّهُ اللَّذِينَ أُمْنَوا لِمَا لَمُنْ اللَّهُ النَّذِينَ أُمْنَا أُولِي مِرَاطٍ مَّشَتَقِيْمِ

২১৪. তোমরা কি মনে করে নিয়েছো যে, তোমরা (এমনি এমনিই) বেহেশতে চলে যাবে? (অথচ) পূর্ববর্তী নবীদের অনুসারীদের (বিপদের) মতো কিছুই তোমাদের ওপর এখনো নাযিল হয়নি, তাদের ওপর (বহু ধরনের) বিপর্যয় ও সংকট এসেছে, কঠোর নির্যাতনে তারা নির্যাতিত হয়েছে, (কঠিন) নিপীড়নে তারা শিহরিত হয়ে ওঠেছে, এমন কি বয়ং আল্লাহর নবী ও তার সংগী সাথীরা (অত্যাচারে অতিষ্ঠ হয়ে এক পর্যায়ে) এই বলে (আর্তনাদ করে) উঠেছে, আল্লাহ তায়ালার সাহায্য কবে (আসবে, আল্লাহ তায়ালা তাঁর প্রিয়জনদের সাজ্বনা দিয়ে বললেন), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার সাহায্য অতি নিকটে।

٢١٣ أَا حَسِبْتُم أَنْ تَنْهُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاثَمُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاثَكُم مَّ الْبَكُم مَ يَاْتِكُم مَّثُهُمُ الْبَاْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى مَسَّتُهُمُ الْبَاْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ أَمَنُوا مَعَدَّ مَتَى نَصُرُ اللهِ قَرِيْبٌ

২১৫. তারা তোমার কাছে জানতে চাইবে তারা কি (কি খাতে) খরচ করবে, তুমি (তাদের) বলে দাও, যা কিছুই তোমরা তোমাদের পিতামাতার জন্যে, আত্মীয় স্বজনদের জন্যে, এতীম অসহায় মেসকীনদের জন্যে এবং মোসাফেরের জন্যে খরচ করবে (তাই আল্পাহ তায়ালা গ্রহণ করবেন); যা ভালো কাজ তোমরা করবে আল্পাহ তায়ালা তা অবশ্যই জানতে পারবেন।

٢١٥ يَسْنَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ه قُلْ مَآ الْفَقْتُرُ مِّنْ هَلْ مَآ الْفَقْتُرُ مِّنْ هَيْر مَآ الْفَقْتُر مِّنْ هَيْر فَلِلْوَالِكَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ وَالْيَتْلِ السَّبِيْلِ اللَّهَ لِهِ عَلَيْرٌ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ هَيْر فَإِنَّ اللَّهَ لِهِ عَلِيْرٌ

২১৬. (ন্যায় প্রতিষ্ঠা ও অন্যায় নির্মূল করার জন্যে) যুদ্ধ তোমাদের ওপর ফরয করে দেয়া হয়েছে, আর এটাই তোমাদের জালো লাগে না, কিছু (তোমাদের জেনে রাখা উচিত,) এমনও তো হতে পারে যা তোমাদের ভালো লাগে না, তাই তোমাদের জন্যে কল্যাণকর, আবার (একইভাবে) এমন কোনো জিনিস, যা তোমাদের খুবই ভালো লাগবে, কিছু (পরিণামে) তা হবে তোমাদের জন্যে (খুবই) ক্ষতিকর; আল্লাহ তায়ালাই সবচাইতে ভালো জানেন, তোমরা কিছুই জানো না।



২১৭. সম্মানিত মাস ও তাতে যুদ্ধ করা সম্পর্কে তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করবে, তুমি তাদের বলে দাও, এই মাসে যুদ্ধবিগ্রহ করা অনেক বড়ো গুনাহর কথা: (কিন্তু আল্লাহর কাছে এর চাইতেও বড়ো গুনাহ হচ্ছে), আল্লাহর পথ থেকে মানুষদের ফিরিয়ে রাখা, আল্লাহকে অস্বীকার করা, খানায়ে কাবার দিকে যাওয়ার পথ রোধ করা ও সেখানকার অধিবাসীদের সেখান থেকে বের করে দেয়া, আর (আল্লাহদ্রোহিতার) ফেতনা ফাসাদ হত্যাকান্ডের চাইতেও অনেক বড়ো (অন্যায়; এ কারণেই) এরা তোমাদের সাথে (এ মাসসমূহে) লড়াই বন্ধ করে দেবে বলে (তুমি) ভেবো না, তারা তো পারলে (বরং) তোমাদের সবাইকে তোমাদের (ইসলামী) জীবন বিধান থেকেও ফিরিয়ে নিতে চাইবে: যদি তোমাদের কোনো ব্যক্তি তার দ্বীন থেকে ফিরে যায়, অতপর সে মৃত্যুমুখে পতিত হয় এমন অবস্থায় যে, সে (সুস্পষ্ট) কাফের ছিলো, তাহলে তারাই হবে সে লোক যাদের যাবতীয় কর্মকান্ড দুনিয়া আখেরাতে বিফলে যাবে. আর এরাই হবে জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে।

٢١٠ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَا ِ قِتَالِ فِيْهِ ، قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ، وَمَنَّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ وَكُفْرًا بِهِ وَالْهَسْجِدِ الْحَرَا] ق وَإِخْرَاحُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْنَ اللَّهِ } وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ﴿ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمِ حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ١ وَمَنْ يَرْتُلُودُ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهِ فَيَهُ فَ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ مَبِطَتُ آعَهَالُهُمْ فِي النَّانْيَا وَالْأَخِرَةِ ٤ وَأُولَٰئِكَ أَشَعْبُ النَّارِ 5 مُرْ فيها خللون

২১৮. যারা ঈমান এনেছে, যারা হিজরত করেছে এবং আল্লাহর পথে জেহাদ করেছে, তারাই আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহ লাভের আশা করতে পারে: আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল অত্যন্ত দয়ালু!

٢١٨ إِنَّ الَّذِيثِيَ أَمَنُوا وَالَّذِيثِي هَاجَرُوا وَجَهَٰكُوْا فِي سَبِيْلِ اللَّهِ لا أُولَٰئِكَ يَرْجُوْنَ رَهْبَتَ اللهِ ﴿ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ

২১৯. (হে নবী,) এরা তোমাকে মদ ও জুয়া সম্পর্কে জিজ্ঞেস করবে: তুমি (তাদের) বলে দাও, এ দুটো জিনিসের মধ্যে অনেক বড়ো ধরনের পাপ রয়েছে. (যদিও) মানুষের জন্যে (এতে) কিছু (ব্যবসায়িক) উপকারিতাও রয়েছে; কিন্তু এ উভয়ের (ধাংসকারী) গুনাহ তার (ব্যবসায়িক) উপকারিতার চাইতে অনেক বেশী; তারা তোমাকে (এও) জিজ্ঞেস করে, তারা (নেক কাজে) কি কি খরচ করবে; তুমি তাদের বলো, (দৈনন্দিন প্রয়োজন পূরণের পর) যা অতিরিক্ত (তাই); আল্লাহ তায়ালা এভাবে তোমাদের জন্যে (তাঁর) আয়াতসমূহ খুলে খুলে বলে দেন, যাতে করে তোমরা এ নিয়ে চিন্তা ভাবনা করতে পারো,

٢١٩ يَشْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَيْرِ وَالْمَيْسِ ﴿ تُلْ فِيْهِمَا إِثْرٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ﴿ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ تَّفْعِهِهَا ﴿ وَيَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يَّنْفِقُونَ مُّ قُل الْعَفْوَ ، كَنْ لِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُرُ الْإِيتِ لَعَلَّكُمْ ۚ تَتَفَكُّونَ لا

২২০. (এ নির্দেশ তোমাদের) ইহকাল ও পরকালের (কল্যাণের) জন্যেই; তোমাকে তারা এতীমদের ব্যাপারে জিজ্ঞেস করবে; তুমি বলো, তাদের জন্যে (গৃহীত সব পছাই) উত্তম: যদি তোমরা (তোমাদের ধন সম্পদ) তাদের সাথে মিশিয়ে ফেলো (তাতে কোনো দোষ নেই, কারণ), তারা তো তোমাদেরই ভাই: আর আল্লাহ তায়ালা (এটা) ভালো করেই জানেন, (কে) ন্যায়ানুগ (পন্থায় আছে আর কে) ফাসাদী (স্বভাবের লোক), আল্লাহ তায়ালা চাইলে (এ ব্যাপারে) আরো অধিক কড়াকড়ি আরোপ করতে পারতেন: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা মহান ক্ষমতাবান কুশলী।

٢٢٠ فِي النَّانْيَا وَالْأَخِرَةِ ، وَيَشْتُلُونَكَ عَن الْيَسْمِي ، قُلْ إِمْلَاحٌ لَّهُرْ خَيْرٌ ، وَإِنْ تُخَالِطُ وْهُـرْ فَإِخْوَانُكُرْ ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِعِ ﴿ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَاعْنَتَكُو ﴿ إِنَّ اللَّهُ عَزِيْزٌ مَكِيْرٌ

২২১. তোমরা (কখনো) কোনো মোশরেক নারীকে বিয়ে করো না, যতোক্ষণ না তারা ঈমান আনে, মনে রেখো, مُؤْمِنَةً خَيْرٌ مِّنَ مَشْرِكَةً وَلُو (वेिष्ठावारी) مُؤْمِنَةً خَيْرٌ مِّنَ مَشْرِكَةً وَلُو (वेष्ठावारी)

মোশরেক নারীর চাইতে উত্তম, যদিও এ (মোশরেক) নারীটি তোমাদের বেশী ভালো লাগে, (হে মুসলিম মহিলারা), তোমরা কখনো কোনো মোশরেক পুরুষদের বিয়ে করো না যতোক্ষণ না তারা আল্লাহর ওপর ঈমান আনে: (কেননা) একজন ঈমানদার দাসও (একজন উঁচু খান্দানের) মোশরেক ব্যক্তির চাইতে ভালো, যদিও এ মোশরেক ব্যক্তিটি তোমাদের ভালো লাগে; (আসলে) এরা তোমাদের জাহান্রামের (আগুনের) দিকেই ডাকবে, আর আল্লাহ তায়ালা হামেশাই তাঁর মোমেন বান্দাদের তাঁর আদেশবলে জান্লাত ও ক্ষমার দিকেই আহ্বান জানান এবং (এ জন্যে) তিনি তাঁর আয়াতসমূহ মানুষদের কাছে স্পষ্ট করে বর্ণনা করেন, যাতে করে তারা উপদেশ গ্রহণ করতে পারে।

ٱعْجَبَتْكُرْ، وَلَا تُنْكِحُوا الْهُشْرِكِيْنَ حَتَّى يُؤْمِنُوا ، وَلَعَبْنُ مُؤْمِنَ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكَ وَلُوْ أَعْجَبَكُرْ ، أُولَّنِكَ يَنْعُوْنَ إِلَى النَّارِ عَ وَاللَّهُ يَنْعُوْآ إِلَى الْجَنَّةِ وَالْهَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ع وَيُبَيِّنُ إِيِّهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَنَكَّرُونَ ع



২২২. (হে নবী.) তারা তোমার কাছ থেকে (মহিলাদের মাসিক) ঋতুকাল (ও এ সময় তাদের সাথে দৈহিক মিলন) সম্পর্কে জানতে চাইবে: তুমি (তাদের) বলো, (আসলে মহিলাদের) এ (সময়টা) হচ্ছে একটা (অপবিত্র ও) কষ্টকর অবস্থা, কাজেই ঋতুস্রাবকালে তাদের সংগ বর্জন করবে এবং তোমরা (দৈহিক মিলনের জন্যে) তাদের কাছে যেও না, যতোক্ষণ না তারা (পুনরায়) পবিত্র হয়, অতপর তারা যখন পুরো পাক সাফ হয়ে যায় তখন তোমরা তাদের কাছে যাও- (দৈহিক মিলনের) যে পদ্ধতি আল্লাহ তায়ালা শিখিয়ে দিয়েছেন সেভাবে: আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সেসব লোকদের ভালোবাসেন যারা আল্লাহর দিকেই ফিরে আসে এবং যারা পাক পবিত্রতা অবলম্বন করে।

٢٢٢ وَيَسْنَلُوْنَكَ عَنِ الْـهَحِيْضِ ء قُلْ هُوَ أذَّى لا فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْهَجِيْضِ لا وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّى يَطْهُرْنَ عَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأَتُوهُنَّ مِنْ حَيِيثُ أَمَرَكُورُ اللَّهُ مَ إِنَّ اللَّهُ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

२२७. তোমাদের खीता হচ্ছে তোমাদের জন্যে (ऋमि مُرَمُّدُ مُوْمَ مُوَالُولُ مُرَمُّدُ كَالُولُ كَالِيَّةِ الْمُرَابُ উপাদনের) ফসল ক্ষেত্র, তোমরা তোমাদের এই ফসল مُأْتُوا مُرْتُكُمُ كَالُّهُ الْمُرَابِّةِ الْمُرَابِّةِ الْمُرَابُ ক্ষেত্রে যেভাবে ইচ্ছা সেভাবেই গমন করো, ভোমরা (সময় ধাৰুতে) নিজেদের জন্যে কিছু অগ্রিম নেক আমল পাঠিয়ে। দাও; তোমরা আল্লাহকে ভয় করো, জেনে রেখো, একদিন অবশ্যই তোমাদের সবাইকে তাঁর সামনাসামনি হতে হবে। মোমেনদের তুমি (পুরন্ধারের) সুসংবাদ দান করো।

أَتِّي شَنْتُرْ رِ وَقَلَّمُوْا لِإَنْفُسِكُرْ مِ وَاتَّقُوا الله وَاعْلَمُوْ آ اَنَّكُمْ مُّلْقُوْهُ ﴿ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

২২৪. তোমরা তোমাদের (এমন) শপথের জন্যে আল্লাহর নামকে কখনো ঢাল হিসেবে ব্যবহার করবে না. (ষার মাধ্যমে) ভালো কাজ করা, আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করা এবং মানুষদের মাঝে শান্তি শৃংখলা প্রতিষ্ঠা করার কাজ থেকে তোমরা দুরে থাকবে, কারণ আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সব কিছুই শোনেন এবং সব কথাই তিনি জানেন।

٢٢٣ وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّإِيْهَانِكُرْ أَنْ تَبَرُّواْ وَتَتَّقُواْ وَتُصْلِحُواْ بَيْنَ النَّاسِ عَ وَاللَّهُ سَهِيْعٌ عَلِيْرٌ

২২৫. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের নিরর্থক শপথের জন্যে কখনো পাকড়াও করবেন না, তবে তিনি অবশ্যই সে সব শপথের ব্যাপারে তোমাদের জিজ্ঞাসাবাদ করবেন, যা তোমরা মনের সংকল্পের সাথে সম্পন্ন করো: (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা বড়ো ক্ষমাশীল ও ধৈর্যশীল।

٢٢٥ لَا يُوَاخِنُكُرُ اللَّهُ بِاللَّّفُو فِيْ أَيْهَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّوَاخِنُكُمْ بِهَا كَسَبَتُ مُمُوْبُكُورُ مَ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلَيْرٌ

২২৬. যেসব লোক নিজ স্ত্রীদের কাছে যাবে না বলে কসম করেছে, তাদের (এ ব্যাপারে মনস্থির করার জন্যে) চার মাসের অবকাশ রয়েছে, (এ সময়ের ভেতর) যদি তারা (তাদের কসম থেকে) ফিরে আসে (তাহলে জেনে রেখো), আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও দয়াবান।

٢٢٦ لِلَّاٰنِيْنَ يُوْلُوْنَ مِنْ نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُو مَ فَإِنْ فَأَءُوْ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُوْرٌ

২ সুরা আল বাকাুুুরা

00

২২৭. (আর) তারা যদি (এ সময়ের ভেতর) তালাক দেয়ার সিদ্ধান্ত করে, তাহলে (তারা যেন জেনে রাখে) আল্লাহ তায়ালা সব শোনেন জ্ঞানেন।

٢٢٧ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَانَّ اللَّهَ سَبِيعً

২২৮. তালাকপ্রাপ্তা মহিলারা যেন তিনটি মাসিক ঋতু (অথবা ঋতু থেকে পবিত্র থাকার তিনটি মুদ্দত) পর্যন্ত নিজেদের (পুনরায় বিয়ের বন্ধন) থেকে দূরে রাখে: তাদের গর্ভাশয়ে আল্লাহ তায়ালা যা কিছু সৃষ্টি করেছেন তা গোপন করা কোনো অবস্থায়ই তাদের পক্ষে ন্যায়সংগত হবে না. যদি তারা আল্লাহর ওপর এবং পরকালের ওপর ঈমান আনে: এ সময়ের ভেতর তাদের ফিরিয়ে নেয়ার ব্যাপারে তাদের স্বামীরা অবশ্য বেশী অধিকারী, যদি তারা উভয়ে পরস্পর মিলে মিশে চলতে চায়: পুরুষদের ওপর নারীদের যেমন ন্যায়ানুগ অধিকার (পারিবারিক ভরণ পোষণের দায়িত্বের কারণে) তাদের ওপর পুরুষের মর্যাদা এক মাত্রা বেশী রয়েছে, আল্লাহ তায়ালা বিপুল ক্ষমতার মালিক, (তিনি পরম) কুশলী।

٢٢٨ وَالْهُ طَلَّقْتُ يَتَرَبُّ صَنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلْثَةَ تُرُوع م وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُنِي مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي ۚ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَخِرِ ، وَبُعُوْلَتُهُنَّ أَمَقٌ بِرَدِّهِنَّ فِي ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوْآ إِصْلَاحًا ﴿ وَلَهُنَّ مِثْلُ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةً ، وَاللَّهُ عَزِيْزٌ حَكِيْرٌ ع

২২৯. তালাক দু'বার (মাত্র উচ্চারণ করা যেতে পারে তৃতীয় বারের আগেই) হয় সন্মান মর্যাদার সাথে তাকে ফিরিয়ে আনতে হবে, অথবা সহৃদয়তার সাথে তাকে চলে যেতে দেবে; তোমাদের জন্যে এটা কোনো অবস্থায়ই ন্যায়সংগত নয় যে, (বিশ্লের আগে) যা কিছু তোমরা তাদের দিয়েছো তা তাদের থেকে ফিরিয়ে নেবে, তবে আল্লাহর নির্দিষ্ট সীমারেখার ভেতরে থেকে স্বামী স্ত্রী একত্রে জীবন কাটাতে পারবে না- এমন আশংকা যদি দেখা দেয় (তখন আলাদা হয়ে যাওয়াটাই উত্তম, এমন অবস্থায়) যদি তোমাদের ভয় হয় যে, এরা আল্লাহর বিধানের গন্ডির ভেতর থাকতে পারবে না: তাহলে স্ত্রী যদি স্বামীকে কিছ বিনিময় দেয় (এবং তা দিয়ে বিচ্ছেদ ঘটিয়ে নেয়), তাহলে তাদের উভয়ের ওপর এটা কোন দৃষণীয় (বিষয়) হবে না, (জেনে রাখো) এটা হচ্ছে আল্লাহর নির্ধারিত সীমারেখা, তা কখনো অতিক্রম করো না, আর যারা আল্লাহর দেয়া সীমারেখা লংঘন করে, তারা হচ্ছে সুস্পষ্ট যালেম।

٢٢٩ ٱلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ مِ فَامْسَاكٌ ا بِمَعْرُونَ أَوْ تَسْرِيْعٌ بِإِحْسَانِ ، وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَاْهُنُوْا مِيًّا اٰتَيْتُهُوْهُنَّ شَيْئًا إِلَّا اَنْ يَخَافَا أَلًّا يُقِيْهَا مُنُوْدَ اللَّهِ ﴿ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيْهَا مُرُوْدَ الله لا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِهَا فِيْهَا افْتَنَ تَ بهِ ، تِلْكَ مُرُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَنُ وْهَا ، وَمَنْ يَّتَعَلَّ مُرُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ مُرُ الظَّلِمُونَ

২৩০. যদি সে তাকে তালাক দিয়েই দেয়, তাহলে তারপর (এ) ব্রী তার জন্যে (আর) বৈধ হবে না. (হাঁ) যদি তাকে অপর কোনো স্বামী বিয়ে করে এবং (নিয়মমাফিক তাকে) তালাক দেয় এবং (পরবর্তী পর্যায়ে) তারা যদি (সত্যিই) মনে করে, তারা (এখন স্বামী ব্রীর অধিকার সম্পর্কে) আল্লাহর সীমারেখা মেনে চলতে পারবে, তাহলে পুনরায় (বিয়ে বন্ধনে) ফিরে আসাতে তাদের ওপর কোন দোষ নেই; এটা হচ্ছে আল্লাহর (বেঁধে দেয়া) সীমারেখা, যারা (এ সম্পর্কে) অবগত আছে আল্লাহ তায়ালা তাদের জন্যে এ নির্দেশ সুস্পষ্ট করে পেশ করেন।

٢٣٠ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَدُّ مِنْ بَعْلُ مَتَّى تَنْكِعَ زَوْجًا غَيْرَةً **ۥ فَا**ِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَ ۚ أَنْ يَّتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُّقِيْمَا مُنُوْدَ اللَّهِ ﴿ وَتِلْكَ مُنُوْدُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقُوم يَّعْلَمُونَ

২৩১. যখন তোমরা স্ত্রীদের তালাক দাও এবং তারা যখন তাদের অপেক্ষার সময় (ইদ্দত) পূর্ণ করে নেয়, তখন (হয়) মর্যাদার সাথে তাদের ফিরিয়ে আনো, নতুবা ভালোভাবে তাদের বিদায় করে দাও, তথু কষ্ট দেয়ার উদ্দেশে কখনো তাদের আটকে রেখো না, এতে তোমরা আল্লাহর নির্ধারিত সীমারেখাই লংঘন করবে, আর যে

٢٣١ وَإِذَا طَلَّقْتُرُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلُهُنَّ فَٱمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْنِ أَوْ سَرِّمُوْهُنَّ بِمَعْرُوْنِ م وَّلَا تُهْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَنُّوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ

২ সূরা আল বাকাুুুুরা

৩৬

ব্যক্তি এমন কাজ করে সে (প্রকারান্তরে) নিজের ওপরই যুলুম করে; (সাবধান) আল্লাহর নির্দেশসমূহকে কখনো হাসি তামাশার বস্তু মনে করো না, শ্বরণ করো (তোমরা ছিলে অজ্ঞ), আল্লাহ তারালা তোমাদের ওপর (হেদায়াতের বাণী পাঠিয়ে) নেয়ামত দান করেছেন, (ওধু তাই নয়) তিনি তোমাদের জন্যে জ্ঞান ও যুক্তিপূর্ণ কেতাব নাযিল করেছেন, যা তোমাদের (দৈনন্দিন জীবনের) নিয়ম (কানুন) বাতলে দেয়; (অতএব) তোমরা আল্লাহকে ভয় করো এবং জেনে রাখো, তিনি তোমাদের যাবতীয় কাজকর্ম সম্পর্কে সম্পূর্ণ ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

ذٰلِكَ فَقَنْ ظَلَرَ نَفْسَهُ ، وَلَا تَتَّخِذُوْآ أَيْسِ اللهِ هُزُوًا رَوَّاذَكُرُوْا نِعْبَسَ اللهِ عَلَيْكُرْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُرْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُرْ بِهِ ، وَاتَّقُوا اللهَ وَاعْلَمُوْآ اَنَّ اللهَ بِكُلِّ هَنْءٍ عَلِيْرً ع

২৩২. যখন তোমরা তোমাদের ব্রীদের তালাক দিয়ে দাও, অতপর (তালাকপ্রাপ্ত) ব্রীরাও তাদের নির্ধারিত অপেক্ষার সময় (ইদ্দত পালন) শেষ করে নেয়, তখন তোমরা তাদের (পছন্দমতো) স্বামীদের সাথে বিয়ের ব্যাপারে বাধা দিয়ো না, যদি তারা (বিয়ের জ্বন্যে) সম্মানজনকভাবে কোনো ঐকমত্যে পৌছে থাকে; তোমাদের ভেতর যারা আল্লাহ তায়ালা ও পরকালীন জীবনের ওপর বিশ্বাস স্থাপন করে তাদের এ আদেশই দেয়া যাচ্ছে; (মূলত) এটা তোমাদের জন্যে অধিক সম্মানের এবং অনেক পবিত্র (কর্মধারা, কারণ); আল্লাহ তায়ালা জানেন, তোমরা কিছুই জানো না।

٢٣٢ وَإِذَا طَلَّقَتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ اَخَلَهُنَّ اَخَلَهُنَّ اَخَلَهُنَّ اِذَا لَلَا تَعْضُلُوهُنَّ اَنَ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضُوا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ الْلِكَ يُوْعَقُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْرَ الْأَخِرِ الْمُرْ وَاَطْهَرُ اللَّهُ يَعْلَمُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُرُ لا تَعْلَمُونَ

২৩৩. মায়েরা পুরো দুটো বছরই (সম্ভানকে) বুকের দুধ খাওয়াবে (এ নিয়ম তার জন্যে), যে ব্যক্তি চায় (সন্তানের) দুধ খাওয়ানোটা পুরোপুরি আদায় করুক; সন্তানের পিতা (দুধ খাওয়ানোর) জন্যে মায়েদের (সন্মানজনক) ভরণ পোষণ (সুনিশ্চিত) করবে: কোনো ব্যক্তির ওপর তার সাধ্যাতীত বোঝা চাপিয়ে দেয়া যাবে না. (পিতার সংগতির কথা ভাবতে গিয়ে দেখতে হবে.) মায়েরাও যেন (আবার) নিজ সম্ভান নিয়ে (বেশী) কষ্টে না পড়ে যায় এবং পিতাকেও যেন সন্তান (জন্ম দেয়ার) কারণে (অযথা) কষ্টে পড়ে যেতে না হয়, (সেটাও খেয়াল রাখতে হবে. সম্ভানের পিতার অবর্তমানে) তার উত্তরাধিকারীদের ওপর সম্ভানের জন্যদাত্রী মায়ের অধিকার এভাবেই বহাল থাকবে, (তবে কোনো পর্যায়ে) পিতামাতা যদি পারস্পরিক সন্মতি ও পরামর্শের ভিত্তিতে আগে ভাগেই সম্ভানের দুধ ছাড়িয়ে নিতে চায় তাতেও তাদের ওপর কোনো দোষের কিছু নেই: তোমরা যদি নিজেদের বদলে অন্য কাউকে সম্ভানের দুধ খাওয়ানোর জন্যে নিয়োগ করতে চাও এবং যদি দুগ্ধদাত্রীর পাওনা যথাযথভাবে বুঝিয়ে দেয়া হয়, তাতেও কোনো গুনাহ নেই: (সর্বাবস্থায়) আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং জেনে রেখো, তোমরা যা কিছুই করো আল্লাহ তায়ালা তার সব কিছুই দেখতে পান।

٣٣٣ وَالْوَالِنْ اللهُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ مَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمِنْ اَرَادَ اَنْ يُتِيِّ الرَّضَاعَةَ ، وَعَلَى كَامِلَيْنِ لِمِنْ اَرَادَ اَنْ يُتِيِّ الرَّضَاعَةَ ، وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهُ رِزْتُهُنَّ وَكِشُوتُهُنَّ بِالْمَعْرُونِ ، لاَ لَكُلُّفُ نَفْسُ إلا وُسْعَهَا ع لا تُضَارَّ وَالِنَةً ، بِولَكِهِ ق وَعَلَى بِولَكِهِ ق وَعَلَى الْوَارِهِ مِثْلُ ذٰلِكَ ع فَانِ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ الْوَارِهِ مِثْلُ ذٰلِكَ ع فَانِ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ الْوَارِهِ مِثْلُ ذٰلِكَ ع فَانِ الرَّادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ، وَإِنْ اَرَدُتُونَ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ وَإِنْ الرَّاسِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ع فَانِ اللهُ مَا اللهُ وَاعْلَمُوا اللهُ وَاعْلَمُوا اللهُ وَاعْلَمُوا الله وَلَا الله وَاعْلَمُوا اللهُ وَاعْلَمُ اللهُ وَاعْلَمُوا الله وَاعْلَمُ اللهُ وَاعْلَمُوا الله وَاعْلَمُ وَاعْلَمُ الْمُوا اللهُ وَاعْلَمُ اللهُ وَاعْلَمُ وَاعْلَمُ الْمُؤْلِ الْمُعْلَمُ الْمُؤْلُ اللهُ اللهُ وَاعْلَمُ الْمُؤْلُ اللهُ اللهُ وَاعْلَمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الْمُؤْلُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الْ

২৩৪. তোমাদের মধ্যে যারা মৃত্যুমুখে পতিত হয় এবং তারা (যদি তাদের) স্ত্রীদের (জীবিত) রেখে যায় (সে ٢٣٣ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَنَرَوْنَ

অবস্থায় স্ত্রীরা যদি বিয়ে করতে চায় তাহলে), তারা তাদের নিজেদের চার মাস দশ দিন পর্যন্ত সময় বিয়ে থেকে বিরত রাখবে, (অপেক্ষার) এ সময়টুকু যখন তারা পূরণ করে নেবে, তখন নিজেদের বিয়ের ব্যাপারে তারা ন্যায়ানুগ পন্থায় (যা ইচ্ছা তাই) করতে পারবে এবং এ বিষয়টিতে তাদের ওপর কোনো গুনাহ নেই; (মূলত) তোমরা যে যাই করো না কেন, আল্লাহ তায়ালা (তার পুরোপুরি) খবর রাখেন।

اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْ بِاَنْفُسِمِی اَرْبَعَةَ اَشْهُر وَّعَشْرًا عَ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُی فَلَا جُنَاحً عَلَیْکُر فِیْهَا فَعَلْنَ فِی آَ اَنْفُسِهِی بِالْبَعْرُونِ ا وَالله بِهَا تَعْبَلُونَ خَبِیْرٌ

২৩৫. (এমন কি সে অপেক্ষার সময় শেষ হওয়ার আগেও) তোমরা কেউ যদি তাকে বিয়ে করার (জন্যে) পয়গাম পাঠাও, কিংবা তেমন কোনো ইচ্ছা যদি তোমরা নিজেদের মনের ভেতর লুকিয়েও রাখো, (তাতেও) তোমাদের ওপর কোনো দোষ নেই: কেননা আল্লাহ তায়ালা এটা ভালো করেই জানেন, তাদের কথা অবশ্যই তোমরা বার বার মনে করবে, কিন্তু (সাবধান আড়ালে আবডালে থেকে) গোপনে তাদের বিয়ের কোনো প্রতিশ্রুতি দিয়ো না. তাদের সাথে কখনো তোমাদের কথা বলতে হলে তা বলবে সম্মানজনক পস্থায়: তার ইন্দত (অপেক্ষার শরীয়তসন্মত সময়) শেষ হবার আগে কখনো তার সাথে বিয়ের সংকল্প করো না: জেনে রেখো, তোমাদের মনের সব (ইচ্ছা অভিসন্ধির) কথা কিন্তু আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানেন, অতএব তোমরা একমাত্র তাঁর থেকেই সতর্ক হও (এবং একথাও জেনে রেখো), আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত ধৈৰ্যশীল, মহান ক্ষমাশীল!

২৩৬. দ্রীদের (শারীরিকভাবে) স্পর্ল করা কিংবা তাদের জন্যে মোহরের কোনো অংক নির্ধারণের আগেই যদি তোমরা তাদের তালাক দাও, তাতে (শরীয়তের দৃষ্টিতে) তোমাদের ওপর কোনো গুনাহ নেই, (এ পরিস্থিতিতে মোহরের কোনো অংক নির্ধারিত না হলেও) তাদের ন্যায়ানুগ পদ্থায় কিছু পরিমাণ (অর্থ) আদায় করে দেবে, ধনী ব্যক্তির ওপর (এটা হবে তার) নিজ ক্ষমতা অনুযায়ী এবং গরীব ব্যক্তির ওপর (হবে) তার সংগতি অনুযায়ী, (এটা) নেককার লোকদের ওপর (আরোপিত) দ্রীদের একটি অধিকার বটে।

٢٣٦ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُر إِنْ طَلَّقْتُرُ النِّسَآءَ مَالَرْ تَنَسُّوْمُنَّ أَوْ تَغْرِضُوْا لَمُنَّ فَرِيْضَةً ﴿ وَمَلَى وَمَتَّعُومُنَّ ﴾ عَلَى الْمُوسِعِ قَلَرُهٌ وَعَلَى الْمُوسِعِ قَلَرُهٌ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَلَرُهٌ ﴾ عَلَى الْمُقْتِرِ قَلَرُهُ ﴿ مَتَاعًا ﴿ بِالْمَعْرُونِ ﴾ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ

২৩৭. যদি (এমন হয়,) তোমরা তাদের (শারীরিকভাবে)
স্পর্শ করোনি, কিন্তু মোহরের অংক নির্ধারিত করে
নিয়েছো, এমতাবস্থায় যদি তোমরা তাদের তালাক দাও,
তাহলে তাদের জন্যে (থাকবে) নির্ধারিত মোহরের অর্ধক
পরিমাণ, (যা) আদার করে দিতে হবে, (হাঁ) তালাকপ্রাপ্তা
ন্ত্রী নিজের থেকে যদি তোমাদের তা মাফ করে দের
কিংবা যে (স্বামীর) হাতে বিয়ের বন্ধন রয়েছে সে যদি
(ন্ত্রীকে নির্দিষ্ট পরিমাণের বেশী দিয়ে) অনুগ্রহ দেখাতে
চায় (সেটা ভিন্ন কথা)। (তবে) তোমরা যদি অনুগ্রহ
করো (তাহলে) তা হবে আল্লাহভীতির একান্ত কাছাকাছি;
কখনো একে অপরের প্রতি দয়া ও সহদয়তা দেখাতে
ভূলো না; কারণ তোমরা (কে) কি কাজ করো, তার সব
কিছুই আল্লাহ তায়ালা পর্যবেক্ষণ করছেন।

٢٣٧ وَإِنْ طَلَّقْتُهُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَلْ فَرَضْتُ مَا فَرَضْتُمْ وَقَلْ فَرَضْتُ مَا فَرَضْتُمْ وَقَلْ فَرَضْتُمْ مَا فَرَضْتُمْ اللَّهَ عَقْلَةُ النِّي بِيَلِهِ عُقْلَةً النِّكَاحِ ، وَأَنْ تَعْفُواۤ الْوَبُ لِلتَّقُوٰى ، وَلَا النِّكَاحِ ، وَأَنْ تَعْفُواۤ اقْرَبُ لِلتَّقُوٰى ، وَلَا النِّكَاحِ ، وَانْ تَعْفُواۤ اقْرَبُ لِلتَّقُوٰى ، وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ، إِنَّ اللَّهَ بِهَا تَعْهَلُونَ بَصِيْرٌ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২ সাইয়াকুলু

২৩৮. তোমরা নামাযসমূহের ওপর (গভীরভাবে) যত্নবান وَفَظُواْ عَلَى الصَّلُوسِ وَالصَّلُوةِ ٢٣٨ عَفِظُواْ عَلَى الصَّلُوسِ وَالصَّلُوةِ ٢٣٨ عَفِظُواْ عَلَى الصَّلُوسِ وَالصَّلُوةِ আল্লাহর জন্যে বিনীতভাবে দাঁডিয়ে যেও।

الْوُسُطِي ق وَقُومُوا لِلَّه قَنتينَ

२७৯. অতপর यि তোমরা ভীতিপ্রদ কোনো অবস্থার وَرُكْبَانًا عَ فَإِذَا اللَّهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ وَكُبَانًا عَ فَإِذَا اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْ ने के के के लिखा कि श्वा अध्यातीत अभत थाका مُالَدُ كُمُا عَلَّهُ كُمُ مَّالَمُ مَّالَمُ عُلْمَا عُلْم অবস্থায়, তারপর তোমরা যখন নিরাপদ হয়ে যাবে (স্বাভাবিক অবস্থা ফিরে আসবে), তখন আল্লাহ তায়ালাকে শ্বরণ করো, যেভাবে আল্লাহ তায়ালা তাঁকে স্মরণ করার (নিয়ম) শিখিয়েছেন, যার কিছুই তোমরা ইতিপর্বে জানতে না।

تَكُوْنُو التَعْلَيُونَ

২৪০. তোমাদের মধ্য থেকে যদি কেউ মৃত্যুমুখে পতিত হয় এবং সে বিধবা দ্রীদের রেখে যায়, (তার উত্তরসুরিদের জন্যে তার) ওসিয়ত থাকবে যেন তারা এক বছর পর্যন্ত তাদের ক্রীদের ব্যয়ভার বহন করে. (কোনো অবস্থায় যেন তার ভিটেমাটি থেকে) তাকে বের করে না দেয়, (এ সময় পুরণ হবার আগে) যদি তারা নিজেরাই عَلَيْكُر فِي مَا فَعَلَى فِي أَنْعُسِفِي مِن اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى أَنْعُسِفِي مِن العَالِيةِ اللهِ عَلَى اللهِعْلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى সিদ্ধান্ত করে কোনো সম্মানজনক ব্যবস্থা করে নেয়: তাহলে এ জন্যে তোমাদের ওপর কোনো দোষ পড়বে না; আল্লাহ তায়ালা (সবার ওপর) পরাক্রমশালী. তিনি বিজ্ঞ কুশলীও!

٢٣٠ وَ الَّذِينَ يُتَوَفُّونَ مِنْكُمْ وَيَنَرَوْنَ أَزْوَ اجًا ء وُّسِيَّةً لِّازْوَ اجهيرُ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِغْرَاجٍ } فَانْ غَرَجْنَ فَلَاجُنَاحَ مُّفُرُونِ ﴿ وَاللَّهُ عَزِيْزٌ مَكِيْرٌ

২৪১. (স্বামীদের ওপর) তালাকপ্রাপ্তা মহিলাদের জন্যে ন্যায়সংগত ভরণ পোষণ পাবার অধিকার থাকবে: আল্লাহ তায়ালাকে যারা ভয় করে এটা তাদের ওপর (আরোপিত) (মহিলাদের) অধিকার।

٢٣١ وَلِلْهُ طَلَّقْتِ مَتَاعٌ بِالْهَغُرُونِ مَ مَقًّا عَلَى الْهُتَّقِيْنَ

২৪২. এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তাঁর আয়াতগুলো তোমাদের জন্যে সুস্পষ্ট করে বলে দিয়েছেন, যাতে করে তোমরা বুঝতে পারো।

٢٣٢ كَنْ لِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُرْ اللَّهِ لَعَلَّكُرْ

২৪৩. তুমি কি (তাদের পরিণতি) দেখোনি যারা মৃত্যুর مَنْ دِيَارِهِمُ ১ কি (তাদের পরিণতি) দেখোনি যারা মৃত্যুর مَنْ دِيَارِهِمُ النَّذِينَ خَرَجُواْ مِنْ دِيَارِهِمُ ٢٣٣ তিয়ে নিজেদের ভিটেমাটি ছেড়ে বেরিয়ে এসেছিলো, অথচ وَهُمْ ٱلُونَ مَنَ رَ الْمَوْت مِ فَقَالَ لَهُرٌ واللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ কাপুরুষোচিত আচরণে রুষ্ট হয়ে) আল্লাহ তায়ালা তাদের বললেন, তোমরা নিপাত হয়ে যাও, (এক সময় তাদের বংশধররা সাহসিকতার সাথে যালেমের মোকাবেলা করলো)। আল্লাহ তায়ালাও এর পর তাদের (সামাজিক ও রাজনৈতিক) জীবন দান করলেন: আল্লাহ তায়ালা (এ ধরনের সাহসী) মানুষদের ওপর (সর্বদাই) অনুগ্রহশীল: কিন্তু মানুষদের অধিকাংশই (এ জন্যে) আল্লাহর কৃতজ্ঞতা আদায় করে না।

اللهُ مُوْتُوا نِن ثُر الْمَيَاهُمُ ما اللهَ لَلُهُ لَلُهُ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَهْكُونَ

২৪৪. (অতএব হে মুসলমানরা, কাপুরুষতা না দেখিয়ে) 🍙 २००. (अञ्चप तर मूननभानता, कानूकरण ना (जायता) " أَوَّ اللهِ وَ اعْلَمُوا اللهِ وَ اعْلَمُوا اللهِ وَ اعْلَمُوا أَنَّ कामता आन्नास्त প्राथ निर्णाह करता এवং (এ कथा) जाला করে জেনে রাখো, আল্লাহ তায়ালা (যেমন সব) শোনেন. (তেমনি) তিনি সব কিছু জানেনও।

اللهُ سَهِيْعٌ عَلِيْر

২ সুরা আল বাকাুুুরা



২৪৫. (তোমাদের মধ্য থেকে) কে (এমন) হবে যে আল্লাহকে উত্তম ঋণ দেবে. (যে কেউই আল্লাহকে ঋণ দেবে সে যেন জেনে রাখে), আল্লাহ তায়ালা (ঋণের সে অংক) তার জন্যে বহুগুণ বাড়িয়ে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা কাউকে ধনী আবার কাউকে গরীব করেন, (আর সব শেষে) তোমাদের (ধনী গরীব) সবাইকে তো একদিন তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

٢٣٥ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْمُنَّا حَسَنَّا فَيُضْعِفَدُ لَدُ ٱضْعَافًا كَثِيْرَةً ، وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْضُعُ مِ وَ الْيَهِ تُرْجَعُونَ

২৪৬. তুমি কি বনী ইসরাঈল দলের কতিপয় নেতা সম্পর্কে চিন্তা করোনি? যখন তারা মূসার আগমনের পর নবীর কাছে বলেছিলো, আমাদের জন্যে একজন বাদশাহ ঠিক করে দাও, যেন (তার সাথে) আমরা আল্লাহর পথে লড়াই করতে পারি; (আল্লাহর) সে নবী (তাদের) বললো, তোমাদের অবস্থা আগের লোকদের মতো এমন হবে না তো যে, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের লডাইর আদেশ দেবেন এবং তোমরা লড়াই করবে না. তারা বললো, আমরা কেন আল্লাহর পথে লড়বো না, (বিশেষ করে যখন) আমাদের নিজেদের বাড়ি ঘর থেকে আমাদের বের করে দেয়া হয়েছে, (বের করে দেয়া হয়েছে) আমাদের ছেলে মেয়েদেরও, অতপর যখন (সত্যি সত্যিই) তাদের আল্লাহর পক্ষ থেকে যুদ্ধের আদেশ দেয়া হলো তখন তাদের মধ্য থেকে কতিপয় (সাহসী) বান্দা ছাডা অধিকাংশই ময়দান ছেড়ে পালিয়ে গেছে; (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যালেমদের ভালো করেই জানেন।

٢٣٦ اَلَمرُ تَرَ إِلَى الْهَلَاِ مِنْ بَنِيَّ إِشْرَآءِيْلَ مِنْ بَعْلِ مُوْسَى مِ إِذْ قَالُوْا لِنَبِيَّ لَّهُرُّ ابْعَتْ لَنَا مَلِكًا نَّقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ، قَالَ هَلْ عَسَيْتُرْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُرُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ﴿ قَالُوا وَمَا لَنَا ۗ اللَّا لُقَاتِلَ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ وَقَلْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ أَبْنَائِنَا م فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِرُ الْقِتَالُ تَوَلُّوْ ا إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُرْ ، وَاللَّهُ عَلِيْرٌ ۚ بِالظَّلِمِينَ

২৪৭. তাদের নবী তাদের বললো, আল্লাহ তায়ালা তালুতকে তোমাদের ওপর বাদশাহ (নিযুক্ত) করে পাঠিয়েছেন; (এ কথা ভনে) তারা বললো, তার কি অধিকার আছে আমাদের ওপর রাজত্ব করার? বাদশাহীর অধিকার (বরং) তার চাইতে আমাদেরই বেশী রয়েছে. (তাছাড়া) অর্থ প্রাচুর্যও তো তার বেশী নেই: আল্লাহর নবী বললো, (শাসন ক্ষমতার জন্যে) আল্লাহ তায়ালা তাকেই বাছাই করেছেন এবং (এ কাজের জন্যে) তার শারীরিক যোগ্যতা ও জ্ঞান (প্রতিভা) আল্লাহ তায়ালা বাড়িয়ে দিয়েছেন; (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকেই তাঁর রাজক্ষমতা দান করেন: তাঁর ভান্ডার অনেক প্রশস্ত, আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকেই রাজতু দেন, আল্লাহ তায়ালা প্রাচুর্যময় ও মহাবিজ্ঞ।

٢٣٢ وَقَالَ لَهُرْ نَبِيُّهُرْ إِنَّ اللَّهَ قَلْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْسَ مَلِكًا ، قَالُوْ ٓ أَنَّى يَكُوْنُ لَهُ الْهُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَمَقُّ بِالْهُلُكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْهَالِ ﴿ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفْهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَةً بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَ الْجِسْرِ ، وَ اللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَدَّ مَنْ يَّشَّاءُ ، وَاللَّهُ وَاسعٌ عَلَيْرٌ

২৪৮. তাদের নবী তাদের (আরো) বললো, (আল্লাহ 🗸 তায়ালা যাকে পাঠাচ্ছেন) তার বাদশাহীর অবশ্যই একটা তি اللَّهُمُ نَبِيَّهُمُ إِنَّ أَيْدَ مُلْكِهِ أَن চিহ্ন থাকবে এবং তা হচ্ছে, সে তোমাদের সামনে (হারানো) সিন্দুকটি এনে হাযির করবে, এতে তোমাদের জন্যে আল্লাহর পক্ষ থেকে (সান্ত্রনা ও) প্রশান্তির বিষয় থাকবে, (তাছাড়া) এ (অমৃল্য) সিন্দুকে মৃসা ও হারূনের

يَّاتِيكُرُ التَّابُونَ فِيهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُرْ وَبَقِيَّةً مِّهَا تَرَكَ إِلَّ مُوْسَى وَالَّ مَرُونَ

পরিবার পরিজনের কিছু রেখে যাওয়া (জিনিসপত্রও) থাকবে. (আল্লাহ তায়ালার নির্দেশে) তাঁর ফেরেশতারা এ সিন্দুক তোমাদের জন্যে বহন করে আনবে, যদি তোমরা বিশ্বাস স্থাপন করো তাহলে (তোমরা দেখবে), এসব কিছুতে তোমাদের জন্যে (এক ধরনের) নিদর্শন রয়েছে।

تَحْمِلُهُ الْمَلْنِكَةُ ، إِنَّ فِي ذٰلِكَ كَاٰيَةً لَّكُمْ ان كُنْتُر مَّوْمِنِينَ ع

২৪৯. (রাজত্ব পেয়ে) তালুত যখন নিজ বাহিনী নিয়ে এগিয়ে গেলো, তখন সে (তার লোকদের) বললো. আল্লাহ তায়ালা একটি নদী (-র পানি) দিয়ে তোমাদের পরীক্ষা করবেন, যদি তোমাদের মধ্যে কেউ এর পানি পান করে তাহলে সে আর আমার দলভুক্ত থাকবে না. আর যে ব্যক্তি তা খাবে না সে অবশ্যই আমার দলভুক্ত থাকবে, তবে কেউ যদি তার হাত দিয়ে সামান্য এক আঁজলা (পানি খেয়ে) নেয় তা ভিন্ন কথা, অতপর مِّنْهُمْرُ ﴿ فَلَمًّا جَاوَزَةً هُو وَ الَّذِينَ أَمَنُوا مَعَدٌ ٧ आत ٧ مُعَدِّ ﴿ (त्रशात शिरा) राख्यान क्राजन लाक छाषा आत ٧ সবাই তৃপ্তিভরে পানি পান করে নিলো; এ কয়জন লোক– याता जांत कथाय जात आरथ क्रियान वात्निहिरला, जाता ववर أَوْ يَا الْيَوْ الْمُوالِيَةُ لَنَا الْيَوْ أَ তালুত যখন নদী পার হয়ে এগিয়ে গেলো. তখন তারা (নিজেদের দীনতা দেখে) বলে উঠলো, হে আল্লাহ, আজ জালুত এবং তার বিশাল বাহিনীর মোকাবেলা করার শক্তি আমাদের নেই: (এ সময় তাদেরই সাথী বন্ধুরা) যারা জানতো তাদের আল্লাহর সামনে হাযির হতে হবে, তারা বললো, (ইতিহাসে এমন) অনেকবারই দেখা গেছে, আল্লাহর সাহায্য নিয়ে একটি ক্ষুদ্র দলও বিশাল বাহিনীর ওপর জয়ী হয়েছে: (কেননা) আল্লাহ তায়ালা ধৈর্যশীলদের সাথেই থাকেন।

٢٣٩ فَلَمًّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُودِ لا قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرِج فَهَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْءَ وَمَنْ لَّمِ يَطْعَيْهُ فَإِنَّهُ مِنِّيْ ۚ إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ا بِيَلِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا وَجُنُودِهِ ١ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلْقُوا الله لا كَبِرْ مِّنْ فِئَةِ قَلَيْلَةِ غَلَبَسْ فِئَةً كَثَيْرَةً ۗ بِإِذْنِ اللَّهِ ، وَاللَّهُ مَعَ الصَّبِرِيْنَ

২৫০. তারপর (যখন) সে তার সৈন্য নিয়ে (মোকাবেলা করার জন্যে) দাঁড়ালো, তখন তারা (আল্লাহর কাছে সাহায্য চেয়ে) বললো, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের সবরের তাওফীক দান করো, দুশমনের মোকাবেলায় আমাদের কদম অটল রাখো এবং অবিশ্বাসী কাফেরদের মোকাবেলায় তুমি আমাদের সাহায্য করো:

٢٥٠ وَلَهَّا بَرَزُوْ الْجَالُوْسَ وَجُنُوْدِهِ قَالُوْ ا رَبُّنَا ٱنْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتُبِّتْ ٱقْنَامَنَا وَانْصُوْنَا عَلَى الْقَوْرِ الْكُفِرِيْنَ ا

২৫১. লড়াইয়ের ময়দানে তারা তাদের পর্যুদন্ত (লাঞ্ছিত) করে দিলো এবং দাউদ আল্লাহর সাহায্য নিয়ে জালুতকে হত্যা করলো, আল্লাহ তায়ালা তাকে দুনিয়ার রাজতু দান করলেন এবং তাকে (রাজক্ষমতা চালানোর) কৌশলও শিক্ষা দিলেন, আল্লাহ তায়ালা তাকে নিজ ইচ্ছামতো আরো (বহু) বিষয়ের জ্ঞান দান করেন: (আসলে) আল্লাহ بِبَعْضِ لا لَّفَسَنَ سِ الْأَرْضُ وَلَٰكِيَّ اللَّهَ ذُوْ छाग्नाना यिन (यूर्ग यूर्ग) अकमन लाकरक निरस بِبَعْضِ لا لَّفَسَنَ سِ الْأَرْضُ وَلَٰكِيَّ اللَّهَ ذُوْ আরেকদল লোককে শায়েস্তা না করতেন, তাহলে এই ভূখন্ড ফেতনা ফাসাদে ভরে যেতো, কিন্তু (আল্লাহ তায়ালা তা চাননি, কেননা) আল্লাহ তায়ালা এ সৃষ্টিকুলের ওপর বডোই অনুগ্রহশীল!

٢٥١ فَهَزَمُوْهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ عَا وَقَتَلَ دَاوَّدُ جَالُوْسَ وَأَتْهُ اللَّهُ الْهُلُكَ وَالْحَكْهَةَ وَعَلَّهَا مِمًّا يَشَاَّءُ ﴿ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ فَضْلِ عَلَى الْعَلَمِينَ

২৫২. (এ কেতাবে বর্ণিত) এসব ঘটনা হচ্ছে আল্লাহর এক একটা নিদর্শন (মাত্র), যা যথাযথভাবে আমি তোমাকে শুনিয়েছি (এর কোনো ঘটনাই তো তুমি জানতে না): তুমি অবশ্যই আমার পাঠানো (নবী) রস্লদের একজন!

٢٥٢ تلك أيس الله نَتْلُوْمَا عَلَيْكَ إِ بِالْحَقِّ ، وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ২৫৩. এই (যে) নবী রসূলরা (রয়েছে)- এদের কাউকে

কারো ওপর আমি বেশী মর্যাদা দান করেছি। এদের মধ্যে এমনও (কেউ) ছিলো যার সাথে আল্লাহ তায়ালা কথা

বলেছেন এবং (এর মাধ্যমে) কারো মর্যাদা তিনি বাডিয়ে দিয়েছেন: আমি মারইয়ামের ছেলে ঈসাকে (কতিপয়)

উজ্জ্বল নিদর্শন দিয়েছিলাম, অতপর পবিত্র রূহের মাধ্যমে

তাকে আমি সাহায্য করেছি; আল্লাহ তায়ালা চাইলে তাদের (আগমনের) পর যাদের কাছে এসব উজ্জুল

নিদর্শন এসেছে তারা কখনো মারামারিতে লিপ্ত হতো না. কিন্তু (রসূলদের পর) তারা (দলে উপদলে) বিভক্ত হয়ে

গেলো, অতপর তাদের মধ্যে কিছু লোক ঈমান আনলো আবার তাদের কিছু লোক (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর

নবীকে) অস্বীকার করলো, (অথচ) আল্লাহ পাক চাইলে

এরা কেউই যুদ্ধ বিগ্রহে লিগু হতো না, কিন্তু আল্লাহ

২৫৪. হে ঈমানদাররা, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, আমার দেয়া ধন সম্পদ থেকে (আমার পথে) ব্যয় করো-

সে দিনটি আসার আগে. যেদিন কোনো রকম বেচাকেনা. বন্ধুতু ভালোবাসা থাকবেনা- থাকবেনা কোনো রকমের

সুপারিশ। (এ দিনের) অস্বীকারকারীরাই হচ্ছে যালেম।

তায়ালা তাই করেন যা তিনি ইচ্ছা করেন।

٢٥٣ تلَكَ إلاَّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُر عَلَٰع

بَعْض مِ مِنْهُمْ مِنْ كُلِّي اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجْتِ وَ أَتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَرَ الْبَيِّنْتِ وَأَيَّانَانُهُ بِرُوْحِ الْقُنِّسِ ، وَلَوْ شَأَءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ النَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُرُ الْبَيِّنْتُ وَلٰكِن اهْتَلَفُوا نَمِنْهُرْ شَّ

أَمَنَ وَ مِنْهُرْ مِّنْ كَفَرَ ء وَ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوْا سَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْلُ ع

٢٥٣ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوٓۤا اَنْفِقُوۤا مِمَّا رَزَقَنْكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّاْتِيَ يَوْمُّ لَا بَيْعٌ فَيْد وَ لَا غُلَّةً وَّلَا شَفَاعَةً ١ وَ الْكُفُونَ هُـ

২৫৫. মহান আল্লাহ তায়ালা, তিনি ছাড়া দ্বিতীয় কোনো ইলাহ নেই, তিনি চিরঞ্জীব, তিনি অনাদি এক সন্তা, ঘুম (তো দুরের কথা, সামান্য) তন্ত্রাও তাঁকে আচ্ছনু করে না: আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তার সব কিছুরই একচ্ছত্র মালিকানা তাঁর: কে এমন আছে যে তাঁর দরবারে বিনা অনুমতিতে কিছু সুপারিশ পেশ করবে? তাদের বর্তমান ভবিষ্যতের সব কিছুই তিনি জানেন, তাঁর জানা বিষয়সমূহের কোনো কিছুই (তাঁর সৃষ্টির) কারো জ্ঞানের সীমা পরিসীমার আয়ন্তাধীন হতে পারে না, তবে কিছু জ্ঞান যদি তিনি কাউকে দান করেন (তবে তা ভিন্ন কথা), তাঁর বিশাল সামাজ্য আসমান যমীনের সব কিছই পরিবেষ্টন করে আছে. এ উভয়টির হেফাযত করার কাজ কখনো তাঁকে পরিশ্রান্ত করে না. তিনি পরাক্রমশালী ও অসীম মর্যাদাবান।

২৫৬. (আল্লাহর) দ্বীনের ব্যাপারে কোনো জোর জবরদস্তি নেই. (কারণ) সত্য (এখানে) মিথ্যা থেকে পরিষ্কার হয়ে গেছে, তোমাদের মধ্যে যদি কোনো ব্যক্তি বাতিল (মতাদর্শ)-কে অস্বীকার করে, আল্লাহর (দেয়া জীবনাদর্শের) ওপর ঈমান আনে, সে যেন এর মাধ্যমে এমন এক শক্তিশালী রশি ধরলো, যা কোনোদিনই ছিঁডে যাবার নয়; আল্লাহ তায়ালা (সব কিছুই শোনেন) এবং (সবকিছুই) জানেন।

२৫٩. याता (आन्नारत ७१त) ঈमान जात्न, आन्नार مُوْم يُخْرِجُهُم ٢٥٤ اَللَّهُ وَلِي النِّرِينَ اَمْنُواْ يُخْرِجُهُم آهَمَا المَامِينِ المُستَحِينِ المُعَامِينِ المُعَمِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَمِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَمِينِ المُعَمِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَمِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ المُعَامِينِ الم তায়ালাই হচ্ছেন তাদের সাহায্যকারী (বন্ধু), তিনি

٢٥٥ اَللَّهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا مُوَى اَلْحَىُّ الْقَيُّوا ۗ اَ ¥ تَأْغُنُهُ سَنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ، لَهُ مَا فِي السَّهٰوِ ... وَمَا فِي الْأَرْضِ ﴿ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْكَةً الَّا باذْنهِ ، يَعْلَرُ مَا بَيْنَ أَيْنِيْهِ وَمَا خَلْفَهُمْرُج وَلَا يُحِيْطُونَ بِشَيْءِ مِّنْ عِلْهِ إِلَّا بِهَا شَاءَ ع وَسِعَ كُوْسِيَّةُ السَّاوِينِ وَالْأَرْضَ ع وَلَا يَتُوْدُهُ مِفْظُهُهَا ج وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْرُ

٢٥٦ ٧ ﴿ إِكْرَاهُ فِي الرِّيْنِ نِكُ قَلْ تَّبَيَّنَ الرُّشْلُ مِنَ الْغَيِّ ۽ فَهَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَلِ اسْتَهْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقِي قِلَا انْفَصَا مَا لَهَا وَ اللَّهُ سَهِيْعٌ عَلَيْرٌ

(জাহেলিয়াতের) অন্ধকার থেকে তাদের (ঈমানের) আলোতে বের করে নিয়ে আসেন, (অপরদিকে) যারা আল্লাহকে অস্বীকার করে, বাতিল (শক্তিসমূহ)-ই হয়ে থাকে তাদের সাহায্যকারী, তা তাদের (দ্বীনের) আলোক থেকে (কুফরীর) অন্ধকারের দিকে নিয়ে যায়: এরাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে।

مِّيَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ مّْ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا أَوْلِينَهُمُ الطَّاغُوْتُ لا يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّيَ النَّوْرِ الَى الظُّلُهٰ وَ أُولَٰئِكَ أَصْحُبُ النَّارِ ع مُرْ فِيْهَا خِلْ وْنَ ع

২৫৮. তুমি কি সে ব্যক্তির অবস্থা দেখোনি যে ব্যক্তিকে আল্লাহ তায়ালা (দুনিয়ার) রাষ্ট্র ক্ষমতা দেয়ার পর সে ইবরাহীমের সাথে স্বয়ং মালিকের ব্যাপারেই বিতর্কে লিপ্ত হলো, (বিতর্কের এক পর্যায়ে) ইবরাহীম বললো, আমার মালিক তিনি, যিনি (সৃষ্টিকুলকে) জীবন দান করেন, মৃত্যু দান করেন, সে বললো, জীবন মৃত্যু তো আমিও দিয়ে থাকি, ইবরাহীম বললো, (আমার) আল্লাহ তায়ালা পূর্ব দিক থেকে (প্রতিদিন) সূর্যের উদয়ন ঘটান, (একবার) তুমি তা পশ্চিম দিক থেকে বের করে দেখাও তো! (এতে সত্য) অস্বীকারকারী ব্যক্তিটি হতভন্ন হয়ে গেলো, (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যালেম জ্বাতিকে কখনো পথের দিশা দেন না।

٢٥٨ ألَرْ تَوَ إِلَى الَّذِي هَآجَّ إِبْرُهِيْرَ فِي رَبِّهُ أَنْ أَتْمَهُ اللَّهُ الْهُلُكَ رَاذُ قَالَ إِبْرُهِمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْي وَيُبِيْتُ لا قَالَ أَنَا أُحْي وَأُمِيْتُ ءَ قَالَ إِبْرُهِمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَـاْتِي بِالهِّبْسِ مِنَ الْهَهْرِق فَأْسِ بِهَا مِنَ الْكَثْرِبِ مَبُعِتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ لَا يَمْدِى الْقُوْمَ الظُّلِبِيْنَ عَ

২৫৯. অথবা (ঘটনাটি) কি সেই ব্যক্তির মতো যে একটি বস্তির পাশ দিয়ে যাবার সময় যখন দেখলো, তা (বিধ্বস্ত হয়ে) আপন অস্তিত্বের ওপর মুখ থুবড়ে পড়ে আছে, (তখন) সে ব্যক্তি বললো, এ মৃত জনপদকে কিভাবে আলাহ তায়ালা আবার পুনজীবন দান করবেন, এক পর্যায়ে আল্লাহ তায়ালা (সত্যি সত্যিই) তাকে মৃত্যু দান করলেন এবং (এভাবেই তাকে) একশ বছর ধরে মৃত (ফেলে) রাখলেন, অতপর তাকে পুনরায় জীবিত করলেন: এবার জিজ্ঞেস করলেন, (বলতে পারো) তুমি কতোকাল (মত অবস্থায়) কাটিয়েছো? সে বললো, আমি একদিন কিংবা একদিনের কিছু অংশ (মৃত অবস্থায়) কাটিয়েছি, আল্লাহ তায়ালা বললেন, বরং এমনি অবস্থায় তুমি একশ বছর কাটিয়ে দিয়েছো, তাকিয়ে দেখো তোমার নিজম্ব খাবার ও পানীয়ের দিকে. (দেখবে) তা বিন্দুমাত্র পচেনি, তোমার গাধাটির দিকেও দেখো, (তাও একই অবস্থায় আছে, আমি এসব এ জন্যেই দেখালাম), যেন আমি তোমাকে মানুষদের জন্যে (পরকালীন জীবনের) একটি (জীবন্ত) প্রমাণ হিসেবে উপস্থাপন করতে পারি, এ (মৃত জীবের) হাড় পাঁজরগুলোর দিকে তাকিয়ে দেখো, (তুমি নিজেই দেখতে পাবে) আমি কিভাবে তা একটার সাথে আরেকটার জোড়া লাগিয়ে (নতুন জীবন) দিয়েছি, অতপর কিভাবে তাকে আমি গোশতের পোশাক পরিয়ে দিয়েছি, অতএব (এভাবে আল্লাহর দেখানো) এ বিষয়টি যখন তার কাছে পরিষ্কার হয়ে গেলো তখন সে বলে উঠলো, আমি জানি, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান।

٢٥٩ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى تَرْيَةٍ وَّمِيَ عَاوِيَةً عَلَى عُرُوهِما ، قَالَ أَنَّى يُحْي مٰنِ إِللَّهُ بَعْنَ مَوْتِهَا جَ فَأَمَاتُهُ اللَّهُ مِائَةَ عَا] ثُرٌّ بَعَثَدُ ء قَالَ كَبِرْ لَبِثْتُ وَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْ} ، قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةً عَا ۗ فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهُ } وَانْظُرْ إِلَى مِهَارِكَ مَ وَلِنَجْعَلَكَ أَيَةً لِّلنَّاس وَانْظُرْ الِّي الْعِظَامُ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُرِ ۗ نَكْسُوْهَا لَحْهًا ﴿ فَلَهَّا تَبَيَّىٰ لَهٌ لا قَالَ أَعْلَرُ أَنَّ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ

২৬০. (আরো স্বরণ করো,) যখন ইবরাহীম বললো, হে ﴿ وَإِذْ قَالَ إِبْرُ مِنْ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ ٢٢٠ মালিক, মৃতকে তুমি কিভাবে (পুনরায়) জীবন দাও তা تُحْي الْهَوْتَي ، قَالَ أَو لَير تُؤْمِنَ ، قَالَ أَو لَير تُؤْمِنَ ، قَالَ أَو لَير تُؤْمِنَ ، قَالَ أَو لَير

কেন, তুমি কি (না দেখে) বিশ্বাস করো নাঃ ইবরাহীম বললো, হাঁ (প্রভূ, আমি বিশ্বাস করি), কিন্তু (এর দ্বারা) আমার মন একটু সান্ত্বনা পাবে (এই যা); আল্লাহ তায়ালা বললেন (তুমি বরং এক কাজ করো), চারটি পাখী ধরে আনো, অতপর (আন্তে আন্তে) এই পাখীগুলোকে তোমার কাছে পোষ মানিয়ে নাও (যাতে ওদের নাম তোমার কাছে পরিচিত হয়ে যায়), তারপর (তাদের কেটে কয়েক টুকরায় ভাগ করো.) তাদের (কাটা) এক একটি টুকরো এক একটি পাহাড়ের ওপর রেখে এসো, অতপর ওদের (সবার নাম ধরে) তুমি ডাকো, (দেখবে জীবস্ত পাখীতে পরিণত হয়ে) ওরা তোমার কাছে দৌড়ে আসবে; তুমি জেনে রাখো, আল্লাহ তায়ালা মহাশক্তিশালী, বিজ্ঞ কুশলী।

بَلَٰى وَلَٰكِنْ لِّيَطْهَئِنَ ۗ قَلْبِيْ ۚ قَالَ فَخُنْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُرَّ ادْعُهُنَّ يَـاْتِيْنَكَ سَعْيًا ﴿ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهُ عَزِيْزٌ حَكِيْرُع

২৬১. যারা নিজেদের ধন সম্পদ আল্লাহ তায়ালার পথে খরচ করে তাদের উদাহরণ হচ্ছে একটি বীজের মতো. যে বীজটি বপন করার পর তা থেকে (একে একে) সাতটি শীষ বেরুলো, আবার এর প্রতিটি শীষে রয়েছে একশ শস্য দানা: (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে বহুগুণ বৃদ্ধি করে দেন; আল্লাহ তায়ালা অনেক প্রশস্ত, অনেক বিজ্ঞ।

٢٦١ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ آمُوَالَهُرْ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ كَهَثَلِ حَبَّةٍ ٱثْبَتَتَ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنُبُلَةٍ مِّائَةٌ مَبَّةٍ ﴿ وَاللَّهُ يُضْعِف لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيْرٌ

২৬২. যারা আল্লাহ তায়ালার পথে নিজেদের ধন সম্পদ ব্যয় করে এবং ব্যয় করে তা প্রচার করে বেডায় না প্রতিদান চেয়ে তাকে কষ্ট দেয় না. (এ ধরণের লোকদের জন্যে) তাদের মালিকের কাছে তাদের জন্যে পুরস্কার (সংরক্ষিত) রয়েছে, (শেষ বিচারের দিন) এদের কোনো ভয় নেই, তারা (সেদিন) দুশ্চিন্তাগ্রস্তও হবে না।

٢٦٢ ٱلَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمُوالُهُرْ فِي سَبِيل الله ثُرَّ ﴾ يُثبعُونَ مَا أَنْفَقُوْا مَنَّا وَّ ﴾ اَذِّي لا لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْكَ رَبِّهِمْ وَكَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحُونَنُونَ

২৬৩. (একটুখানি) সুন্দর কথা বলা এবং (উদারতা দেখিয়ে) ক্ষমা করে দেয়া সেই দানের চাইতে অনেক ভালো, যে দানের পরিণামে কষ্টই আসে: আল্লাহ তায়ালা কারোই মুখাপেক্ষী নন্ তিনি পরম ধৈর্যশীলও বটে।

٢٦٣ قَوْلُ مَّعْرُونَ وَمَغْفِرَةً خَيْرٌ مِّنْ مَنَ قَدٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ﴿ وَاللَّهُ غَنِيٌّ مَلِيْرٌ

২৬৪. হে ঈমানদাররা, তোমরা (উপকারের) খোঁটা দিয়ে এবং (অনুগৃহীত ব্যক্তিকৈ) কষ্ট দিয়ে তোমাদের দান সদকা বরবাদ করে দিয়ো না– ঠিক সেই (হতভাগ্য) ব্যক্তির মতো, যে ওধু লোক দেখানোর উদ্দেশেই দান করে, সে আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর বিশ্বাস করে না; তার (দানের) উদাহরণ হচ্ছে, যেন একটি মসুণ শিলাখন্ডের ওপর কিছু মাটি(-র আন্তরণ), সেখানে মুষলধারে বৃষ্টিপাত হলো, অতপর পাথর শক্ত হয়েই পড়ে থাকলো। (দান খয়রাত করেও) তারা (মূলত) এই অর্জনের ওপর থেকে কিছুই করতে পারলো না, আর যারা। আল্লাহকে বিশ্বাস করে না. আল্লাহ তায়ালা তাদের কখনো সঠিক পথ দেখান না।

٢٦٣ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا مَلَ قَتِكُمْ بِالْهَنَّ وَالْإَذَى لا كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِنَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَجْرِ مَ فَهَثَلُهُ كَهَثَلِ مَفْوَانِ عَلَيْهِ تُرَابُ فَاَصَابَهٌ وَابِلُّ فَتَرَكَهٌ صَلْدًا ﴿ لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمًّا كَسَبُوا ﴿ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمُ الْكُفِرِيْنَ

২৬৫. (অপরদিকে) যারা আল্লাহ তায়ালার সম্ভষ্টির জন্যে এবং নিজেদের মানসিক অবস্থা (আল্লাহর পথে) সুদৃঢ় بَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ ٱلْفُسِهِيرُ كَمَثَل ताथात जात्मा नाइ करत, जार्रेत وَمُنَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ ٱلْفُسِهِيرُ كَمَثَل مَارَبُهُمْ

٢٦٥ وَمَثَلُ الَّذِيثَيَ يُنْفِقُونَ اَمُوَالَهُرُ ابْتِغَاءَ

উদাহরণ হচ্ছে, যেন তা কোনো উঁচু পাহাডের উপত্যকায় একটি (সুসজ্জিত) ফসলের বাগান, যদি সেখানে প্রবল বৃষ্টিপাত হয় তাহলে ফসলের পরিমাণ দ্বিগুণ বৃদ্ধি পায়, আর প্রবল বৃষ্টিপাত না হলেও শিশির বিন্দুগুলোই (ফসলের জন্য) যথেষ্ট হয়, আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই পর্যবেক্ষণ করেন তোমরা কে কি কাজ করো।

جَنَّةٍ بِرَبُوةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌّ فَأَتَتُ ٱكُلَّهَا ضِعْفَيْنَ ۽ فَانَ لَّرْ يُصِبْهَا وَابِلٌّ فَطَلٌّ ١ وَ اللَّهُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ بَصِيْرٌ

২৬৬. তোমাদের কেউ কি চাইবে যে, তার কাছে (ফলে ফুলে সুশোভিত) একটি বাগান থাকুক, যাতে খেজুর ও আংগুরসহ বিভিন্ন ধরনের ফলমূল থাকবে, তার তলদেশ দিয়ে আবার প্রবাহমান থাকবে কতিপয় ঝর্ণাধারা, আর لَهُ فِينَهَا مِنْ كُلِّ الشَّمَرٰتِ لا وَأَمَابَدُ الْكِبَرُ अब राष्ट्र वाशात्मह वाशात्मह (طق مَا اللهُ مَرْتِ لا وَأَمَابَدُ الْكِبَرُ ভারে নুয়ে পড়বে এবং তার কিছু দুর্বল সম্ভান থাকবে. (এ وَلَدٌ ذُرِّيَّةٌ شُعَفَاءً مُن فَأَصا بَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ فَأَرَّ عِهمْ مَا अवञ्चार्रे करत) अक जाश्रतित पूर्निवाय अरम जाते मव (স্বপ্ন) জ্বালিয়ে দিয়ে যাবে: এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তাঁর فَاحْتَرَقَتُ وَ كُنْ لِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُرُ الْأَيْتِ নিদর্শনগুলো তোমাদের কাছে সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা (আল্লাহ তায়ালার এসব কথার ওপর) চিন্তা গবেষণা করতে পারো।

٢٦٦ أَيَوَدُّ أَحَلُكُمْ أَنْ تَكُوْنَ لَهُ جَنَّةً مِّنَ لَّخِيْلِ وَّاعْنَابِ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ لا لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُ وْنَ ع

২৬৭. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমরা নিজেরা যা অর্জন করেছো, সে পবিত্র (সম্পদ) এবং যা আমি যমীনের ভেতর থেকে তোমাদের জন্যে বের করে এনেছি, তার থেকে (একটি) উৎকৃষ্ট অংশ (আল্লাহর পথে) ব্যয় করো. (আল্লাহর জন্যে এমন) নিকৃষ্টতম জিনিসগুলো বেছে রেখে তার থেকে ব্যয় করো না. যা অন্যরা তোমাদের দিলে তোমরা তা গ্রহণ করবে না. অবশ্য যা কিছু তোমরা অনিচ্ছাকৃতভাবে গ্রহণ করো তা আলাদা, তোমরা জেনে রেখো, আল্লাহ তায়ালা (তোমাদের দানের) মুখাপেক্ষী নন, সব প্রশংসার মালিক তো তিনিই!

٢٦٠ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُواۤ أَنْفِقُواْ مِنْ طَيِّبْتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِهًّا ٱخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ ٱلْأَرْضِ . وَلَا تَيَهُّوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمِرْ بِاَخِنِيْدِ إِلَّا أَنْ تُغْيِضُوْا فِيْدِ ﴿ وَاعْلَهُوا أَنَّ اللهُ غَنِي مَهِيْلٌ

২৬৮. শয়তান সব সময়ই তোমাদের অভাব অনটনের ভয় দেখাবে এবং সে (নানাবিধ) অন্ত্রীল কর্মকান্ডের আদেশ দেবে, আর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের তাঁর কাছ থেকে অসীম বরকত ও ক্ষমার প্রতিশ্রুতি দিচ্ছেন (এবং সে দিকেই তিনি তোমাদের ডাকছেন), আল্লাহ তায়ালা প্রাচর্যময় ও সম্যক অবগত।

٢٦٨ أَلشَّيْطُنَّ يَعِنُّكُمرُ الْفَقْرَ وَيَـاْمُوكُمْ بِالْفَحْشَاءِ ۚ وَاللَّهُ يَعِنَّكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَنَضْلًا ﴿ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيْرٌ مِهِ لا

২৬৯. আল্পাহ তায়ালা যাকে চান তাকে (একান্ডভাবে) তাঁর পক্ষ থেকে (বিশেষ) জ্ঞান দান করেন, আর যে ব্যক্তিকে (আল্লাহ তায়ালার সেই) বিশেষ জ্ঞান দেয়া হলো (সে যেন মনে করে), তাকে (সত্যিকার অর্থেই) প্রচুর কল্যাণ দান করা হয়েছে, আর প্রজ্ঞাসম্পন্ন ব্যক্তি ছাড়া (আল্লাহর এসব কথা থেকে) অন্য কেউ কোনো শিক্ষাই গ্রহণ করতে পারে না।

٢٦٩ يُؤْتِي الْحِكْهَةَ مَنْ يَشَاءُ } وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَلْ ٱوْتِيَ غَيْرًا كَثِيْرًا ﴿ وَمَا يَنَّكُّو اللا أولُوا الْإَلْبَابِ

২৭০. তোমরা যা কিছু খরচ করো আর যা কিছু (খরচ করার জন্যে) মানত করো, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তা জানেন; যালেমদের (আসলেই) কোনো সাহায্যকারী নেই।

٢٤٠ وَمَا ٓ ا نَفَقَتُم مِن نَفَقَةٍ أَوْ نَنَ رَتُم مِن نَّانُ رَفَانَّ اللَّهَ يَعْلَهُمَّ ﴿ وَمَا لِلظَّلِهِينَ مِنْ أنصار

মন্যিল ১

২৭১. (আল্লাহ তায়ালার সন্তুষ্টির জন্যে) তোমরা যা কিছু ٢٤١ إِنْ تُبْدُوا الصَّلَقْتِ فَنِعِيًّا هِيَ ، وَإِنْ দান করো, তা যদি প্রকাশ্যভাবে (মানুষদের সামনে)

২ সূরা আল বাকাুুুুরা

করো তা ভালো কথা (তাতে কোনো দোষ নেই), তবে যদি তোমরা তা (মানুষদের কাছে) গোপন রাখো এবং (চুপে চুপে) অসহায়দের দিয়ে দাও, তা হবে তোমাদের জন্যে উত্তম; (এ দানের কারণে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের বহুবিধ গুনাহ খাতা মুছে দেবেন, আর তোমরা যাই করো না কেন, আল্লাহ তায়ালা সব কিছু সম্পর্কেই ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُرْ ، وَيُكَفِّرُ عَنْكُرْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُرْ ، وَاللَّهُ بِهَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ

২৭২. (যারা তোমার কথা শোনে না,) তাদের হেদায়াতের দায়িত্ব তোমার ওপর নয়, তবে আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকেই সঠিক পথ দেখান, তোমরা যা দান সদকা করো এটা তোমাদের জন্যেই কল্যাণকর, (কারণ) তোমরা তো এ জন্যেই খরচ করো যেনো আল্লাহর সন্তুষ্টি অর্জন করতে পারো; (তোমরা আজ) যা কিছু দান করবে (আগামীকাল) তার পুরোপুরি পুরস্কার তোমাদের আদায় করে দেয়া হবে, (সেদিন) তোমাদের ওপর কোনো রকম যুলুম করা হবে না।

٢٤٢ لَيْسَ عَلَيْكَ مُنْ مَمْرُ وَلَٰكِنَّ اللهَ يَهْرِي وَلَٰكِنَّ اللهَ يَهْرِي مَنْ يَّشَآءُ ، وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَانْفُسِكُرْ ، وَمَا تُنْفِقُوْنَ اللهَ الْبَغَآءُ وَجَهِ اللهِ ، وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَنَّ اللهِ مَا لَيْكُمْ وَالْتُمْرُنَ لَا تُطْلَمُوْنَ

২৭৩. দান সদকা তো (তোমাদের মাঝে এমন) কিছু গরীব মানুষের জন্যে, যারা আল্লাহর পথে এমনভাবে ব্যাপৃত, তারা (নিজেদের জন্যে) যমীনের বুকে চেষ্টা সাধনা করতে পারে না, আত্মস্মানবোধের কারণে কিছু চায় না বলে অজ্ঞ (মূর্খ) লোকেরা এদের মনে করে এরা (বুঝি আসলেই) সচ্ছল, কিন্তু তুমি এদের (বাহ্যিক) চেহারা দেখেই এদের (সঠিক অবস্থা) বুঝে নিতে পারো, এরা মানুষদের কাছ থেকে কাকুতি মিনতি করে ভিক্ষা করতে পারে না; তোমরা যা কিছুই খরচ করবে আল্লাহ তায়ালা তার (যথার্থ) বিনিময় দেবেন, কারণ তিনি সব কিছুই দেখেন।

٢٤٣ لِلْقُقُرَآءِ النَّذِيْنَ أَحْصِرُواْ فِي سَبِيْلِ
اللهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ رَ
يَحْسَبُهُرُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءً مِنَ التَّعَفُّفِ عَ
تَعْرِفُهُرْ بِسِيْمُهُرْ عَ لَا يَسْتَلُوْنَ النَّاسَ
الْحَافًا عَ وَمَا تُنْفِقُواْ مِنْ خَيْرٍ فَانَّ الله بِهِ
عَلِيْرٌ عَ

২৭৪. যারা দিন রাত প্রকাশ্যে ও সংগোপনে নিজেদের মাল সম্পদ ব্যয় করে, তাদের মালিকের দরবারে তাদের এ দানের প্রতিফল (সুরক্ষিত) রয়েছে, তাদের ওপর কোনো রকম ভয় ভীতি থাকবে না, তারা (সেদিন) চিন্তিতও হবে না। ۲۷۳ ٱلَّذِيْنَ يُنْفِقُونَ اَمُوالَمُّمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَمُّرْ اَجْرُمُرْ عِنْنَ رَبِّمِرْءَ وَلَا خَوْنَ عَلَيْمِرْ وَلَامُرْ يَحْزَنُونَ ن

২৭৫. যারা সৃদ খায় তারা (মাথা উঁচু করে) দাঁড়াতে পারবে না. (দাঁড়ালেও) তার দাঁড়ানো হবে সে ব্যক্তির মতো, যাকে শয়তান নিজস্ব পরশ দিয়ে (দুনিয়ার লোভ লালসায়) মোহাচ্ছর করে রেখেছে: এটা এ কারণে, যেহেতু এরা বলে, ব্যবসা বাণিজ্য তো সূদের মতোই (একটা কারবারের নাম), অথচ আল্লাহ তায়ালা ব্যবসা হালাল করেছেন এবং সূদকে হারাম করেছেন, তাই তোমাদের যার (যার) কাছে তার মালিকের পক্ষ থেকে (সৃদ সংক্রান্ত) এ উপদেশ পৌছেছে, সে অতপর সৃদের কারবার থেকে বিরত থাকবে, আগে (এ আদেশ আসা পর্যন্ত) যে সৃদ সে খেয়েছে তা তো তার জন্যে অতিবাহিত হয়েই গেছে. তার ব্যাপার একান্তই আল্লাহ তায়ালার সিদ্ধান্তের ওপর: কিন্তু (এরপর) যে ব্যক্তি (আবার সৃদী কারবারে) ফিরে আসবে, তারা অবশ্যই জাহানামের অধিবাসী হবে, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে।

٢٠٥ اَلَّانِيْنَ يَا كُلُوْنَ الرِّبُوا لَا يَقُوْمُوْنَ اللَّهُ لَكُمَا يَقُوْمُوْنَ اللَّهُ السَّيْطُ الشَّيْطُ مِنَ الْمَسِّ الْلَّهُ اللَّهُ النَّيْطُ النَّيْعُ مِثْلُ الْمَسِّ الْلِهُ اللَّهُ الْبَيْعُ وَحَرَّا الرِّبُوا اللَّهُ مَنَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللْهُ عَلَى الْمَا عَلَى الْعَلَى الْمَا عَلَى الْمَا عَلَى الْمَا عَلَى الْمَا عَلَى الْمَا

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৩ তিলকার রুসুলু

২৭৬. আল্লাহ তায়ালা সৃদ নিশ্চিহ্ন করেন, (অপর দিকে) দান সদকা (-র পবিত্র কাজ)-কে তিনি (উত্তরোত্তর) বৃদ্ধি করেন; আল্লাহ তায়ালা (তাঁর নেয়ামতের প্রতি) অকৃতজ্ঞ পাপিষ্ঠ ব্যক্তিদের কখনো পছন্দ করেন না।

٢٤٦ يَهْدَقُ اللَّهُ الرِّبُوا وَيُرْبِي الصَّافَتِ ، وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارِ ٱثِيْرِ .

২৭৭. তবে যারা (সত্যিকার অর্থে) আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে. নামায প্রতিষ্ঠা করেছে, যাকাত আদায় করেছে, তাদের ওপর কোনো ভয় থাকবে না. তারা সেদিন চিস্তিতও হবে না।

٢٤٢ إِنَّ الَّذِيْنَ أَمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحُسِ وَأَقَامُوا الصَّلوةَ وَأَتَوًا الزَّكُوةَ لَهُمْ أَجْرُهُم عِنْلَ رَبِّهِمْ جَ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُّونَ

২৭৮. হে ঈমনদার লোকেরা, তোমরা (সূদের ব্যাপারে) আল্লাহকে ভয় করো, আগের (সৃদী কারবারের) যে সব বকেয়া আছে তোমরা তা ছেড়ে দাও, যদি সত্যিই তোমরা আল্লাহর ওপর ঈমান আনো।

٢٤٨ يٰاَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرَّبُوا إِنْ كُنْتُرْ مَّؤْمِنِيْنَ

২৭৯. যদি তোমরা এমনটি না করো, তাহলে অতপর আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের পক্ষ থেকে (তোমাদের বিরুদ্ধে) যুদ্ধের (ঘোষণা থাকবে), আর যদি (এখনো) তোমরা (আল্লাহর দিকে) ফিরে আসো তাহলে তোমরা তোমাদের মূলধন ফিরে পাবার অধিকারী হবে, (সূদী কারবার দারা) অন্যের ওপর যুলুম করো না, তোমাদের ওপরও অতপর (সূদের) যুলুম করা হবে না।

٢٤٩ فَانِ لَّرْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ج وَ إِنْ تُبْتُرْ فَلَكُرْ رُءُوْسُ أَمُوالِكُمْرَ عَ لا تَظْلِبُونَ وَلا تُظْلَبُونَ

২৮০. সে (ঋণ গ্ৰহীতা) ব্যক্তি কখনো যদি <mark>অভাবগ্ৰস্ত হয়ে</mark> পড়ে তাহলে (তার ওপর চাপ দিয়ো না, বরং) তার সঙ্গলতা ফিরে আসা পর্যন্ত তাকে অবকাশ দাও: আর যদি তা মাফ করে দাও, তাহলে তা হবে তোমাদের জন্যে অতি উত্তম কাজ, যদি তোমরা (ভালোভাবে) জানো (তাহলে এটাই তোমাদের করা উচিৎ)!

٢٨٠ وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَى مَيْسَرَةٍ ط وَ أَنْ تَصَلَّقُوا هَيْدٌ لَّكُيرُ إِنْ كُنْتُرْ تَعْلَبُونَ

২৮১. সে দিনটিকে ভয় করো, যেদিন তোমাদের সবাইকে আল্লাহর দিকে ফিরিয়ে নেয়া হবে, সেদিন প্রত্যেক মানব সম্ভানকে (জীবনভর) কামাই করা পাপপুণ্যের পুরোপুরি ফলাফল দিয়ে দেয়া হবে, (কারো ওপর সেদিন) কোনো ধরনের যুলুম করা হবে না।

٢٨١ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيْهِ إِلَى اللَّهِ عَا ثُمَّ تُوَفَّى كُلَّ نَفْسِ مَّا كَسَبَتُ وَهُرْ لَا يُڟْلَهُوْنَ ع

২৮২. হে ঈমানদার বান্দারা, তোমরা যখন পরস্পরের সাথে নির্দিষ্ট একটি সময়ের জন্যে ঋণের চুক্তি করো তখন তা লিখে রাখো: তোমাদের মধ্যকার যে কোনো একজন লেখক সুবিচারের ভিত্তিতে (এ চুক্তিনামা) লিখে দেবে, যাকে আল্লাহ তায়ালা লেখা শিখিয়েছেন সে যেন কখনো লিখতে অস্বীকৃতি না জানায়, (লেখার সময়) ঋণ গ্রহীতা (লেখককে) বলে দেবে কি (কি শর্ত সেখানে) লিখতে وَلْيُهْلِلِ الَّذِي عَلَيْدِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّهِ عَلَيْدِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّهِ عَلَيْدِ الْحَقّ তায়ালাকে ভয় করা উচিত, (চুক্তিনামা লেখার সময় লক্ষ্য রাখতে হবে) তার কিছুই যেন বাদ না পড়ে; যদি সে ঋণ গ্ৰহীতা অজ্ঞ মূৰ্খ এবং (সব দিক থেকে) দুৰ্বল হয়, অথবা (চুক্তিনামার কথাবার্তা বলে দেয়ার) ক্ষমতাই তার না থাকে, তাহলে তার পক্ষ থেকে তার কোনো অভিভাবক ন্যায়ানুগ পন্থায় বলে দেবে কি কি কথা লিখতে হবে;

٢٨٢ يَآيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْۤ إِذَا تَنَايَنْتُم بِنَيْنِ إِلَى أَجَلِ شَّمَّى فَاكْتُبُوهُ ﴿ وَلَيَكْتُبُ بَّيْنَكُيرُ كَاتِبٌّ بِالْعَلْلِ مِ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَّكْتُبَ كَهَا عَلَّهَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ عِ رَبَّهُ وَلَا يَبْخُسُ مِنْهُ شَيْئًا م فَانُ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقَّ سَفِيْهًا أَوْ ضَعَيْفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ أَنْ يَبِلُّ هُوَ فَلْيُهْلِلْ وَلِيَّهُ بِالْعَنْلِ،



(তদুপরি) তোমাদের মধ্য থেকে দুই জন পুরুষকে (এ চুক্তিপত্রে) সাক্ষী বানিয়ে নিয়ো, যদি দুই জন পুরুষ (একত্রে) পাওয়া না যায় তাহলে একজন পুরুষ এবং দুজন মহিলা (সাক্ষী হবে), যাতে করে তাদের একজন ভূলে গেলে দ্বিতীয় জন তাকে স্মরণ করিয়ে দিতে পারে: এমন সব লোকদের মধ্য থেকে সাক্ষী নিতে হবে যাদেরকে উভয় পক্ষই পছন্দ করবে. (সাক্ষীদের) যখন (সাক্ষ্য প্রদানের জন্যে) ডাকা হবে তখন তারা তা অস্বীকার করবে না: (লেনদেনের সময়) পরিমাণ ছোট হোক কিংবা বড়ো হোক, তার দিন ক্ষণসহ (লিখে রাখতে) অবহেলা করো না: এটা আল্লাহর কাছে ন্যায্যতর ও সাক্ষ্যদানের ক্ষেত্রে অধিক মযবৃত ভিত্তির ওপর প্রতিষ্ঠিত এবং (পরবর্তীকালে) যাতে তোমরা সন্দিগ্ধ না হও, তার সমাধানের জন্যেও এটা নিকটতর (পন্থা), যা কিছু তোমরা নগদ (হাতে হাতে) আদান প্রদান করো তা (সব সময়) না লিখলেও তোমাদের কোনো ক্ষতি নেই. তবে ব্যবসায়িক লেনদেনের সময় অবশ্যই সাক্ষী রাখবে. (দলিলের) লেখক ও (চুক্তিনামার) সাক্ষীদের কখনো (তাদের মত বদলানোর জন্যে) কষ্ট দেয়া যাবে না: তারপরও তোমরা যদি তাদের এ ধরনের যাতনা প্রদান করো তাহলে (জেনে রেখো), তা হবে (তোমাদের জন্যে) একটি মারাত্মক গুনাহ, (এ ব্যাপারে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সবকিছুই শিখিয়ে দিচ্ছেন, (কেননা) আল্লাহ তায়ালা সবকিছুই জানেন।

وَاسْتَشْهِلُوا شَهِيْلَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ عَالِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنَ فَرَجُلٌّ وَّامْرَاتُن مِنَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَلَآءِ أَنْ تَضِلُّ إِحْدُامُهُمَا فَتُنَكِّرَ إِحْدُانِهُمَا الْأُخْرَى ﴿ وَلَا يَأْبَ الشُّمَنَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ﴿ وَلَا تَسْنَمُوا أَنْ تَكْتُبُونَ مَغِيرًا أَوْ كَبِيْرًا إِلَى أَجَلِهِ وَلٰلِكُمْ ٱقْسَماً عِنْكَ اللَّهِ وَٱقْوَاً لِلشَّهَادَةِ وَٱدْنَى ٱلَّا تَرْتَابُوْ ۗ إِلَّا أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُهِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُرْ فَلَيْسَ عَلَيْكُرْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوْهَا م وَ أَشْهِلُوْ أَ إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَ لَا يُضَاّرُّ كَاتِبُ ولا شَهِيْلُ لَا وَإِنْ تَفْعَلُواْ فَإِنَّهُ فُسُوْقٌ بكُرْ ، وَاتَّقُوا اللَّهَ ، وَ يُعَلَّمُكُرُ اللَّهُ ، وَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْرٍ

২৮৩. যদি তোমরা কখনো সফরে থাকো এবং (এ কারণে ঋণের চুক্তি লেখার মতো) কোনো লেখক না পাও. তাহলে (চুক্তি লেখার বদলে) কোনো জিনিস বন্ধক রেখে দাও, যখন তোমাদের কোনো ব্যক্তি অপর ব্যক্তিকে কোনো বন্ধকী জিনিসের ব্যাপারে বিশ্বাস করে. এমতাবস্থায় যে ব্যক্তিকে বিশ্বাস করা হয়েছে তার উচিত সেই আমানত যথাযথ ফেরত দেয়া এবং (আমানতের ব্যাপারে) আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করা. যিনি তার মালিক: তোমরা কখনো সাক্ষ্য গোপন করো না, যে ব্যক্তি তা গোপন করে সে অবশ্যই অন্তরের দিক থেকে পাপিষ্ঠ (সাব্যস্ত হয়): বস্তুত আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যাবতীয় কাজকর্মের ব্যাপারেই সম্যক অবগত রয়েছেন।

٢٨٣ وَإِنْ كُنْتُرْ عَلَى سَفَر وَّلَرْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَوهِي مُقْبُوضَةً ، فَإِنْ آمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤُدِّ الَّذِي اؤْ تُمِنَ اَمَانَتَهُ وَلَيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهً ۚ ﴿ وَلَا تَكْتُهُوا الشُّهَادَةَ ﴿ وَمَنْ يَّكْتُهُمَا فَانَّدُ أَثِر أَتُوا فَلْبُدُ وَ وَاللَّهُ بِهَا تَعْمَلُونَ عَلَيْرٌ ع

২৮৪. আসমান যমীনে যা কিছ আছে তা সবই আল্লাহ তায়ালার জন্যে, তোমরা তোমাদের মনের ভেতর যা কিছু আছে তা যদি প্রকাশ করো কিংবা তা গোপন করো. আল্লাহ তায়ালা (একদিন) তোমাদের কাছ থেকে এর (পুরোপুরিই) হিসাব গ্রহণ করবেন; (এরপর) তিনি যাকে ইচ্ছা তাকে মাফ করে দেবেন, (আবার) যাকে ইচ্ছা তাকে তিনি শান্তি দেবেন: আল্লাহ তায়ালা সবকিছুর ওপর ক্ষমতাবান।

۲۸۳ لِلَّٰدِ مَا فِي السَّهٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ، وَإِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْ ٱنْفُسِكُمْ ٱوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبُكُرْ بِهِ اللَّهُ ، فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءً بُ مَنْ يَّشَاءُ ﴿ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

২৮৫. (আল্লাহর) রসূল সে বিষয়ের ওপর ঈমান এনেছে 🔥 रण्यः. (आझारम) प्रगृण प्य ।ववस्त्रम खगम अभाग वातारक مُنَ الرَّسُولُ بِمَا ٱنْزِلَ إِلَيْهِ مِنَ الْمَالِيَّةِ ب या जात अंशत जात मानित्कत शक्क त्यारक नायिन कता أَمَنَ الرَّسُولُ بِمَا ٱنْزِلَ إِلَيْهِ مِنَ



হয়েছে, আর যারা (সে রস্লের ওপর) বিশ্বাস স্থাপন করেছে তারাও (সে একই বিষয়ের ওপর) ঈমান এনেছে; এরা সবাই ঈমান এনেছে আল্লাহর ওপর, তাঁর ফেরেশতাদের ওপর, তাঁর কেতাবসমূহের ওপর, তাঁর রস্লদের ওপর। (তারা বলে,) আমরা তাঁর (পাঠানো) নবী রস্লদের কারো মাঝে কোনো রকম পার্থক্য করি ন; আর তারা বলে, আমরা তো (আল্লাহর নির্দেশ) শুনেছি এবং (তা) মেনেও নিয়েছি, হে আমাদের মালিক, (আমরা) তোমার ক্ষমা চাই এবং (আমরা জানি,) আমাদের (একদিন) তোমার কাছেই ফিরে যেতে হবে।

رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ، كُلُّ أَمَى بِاللَّهِ وَمَلَّئِكَتِهِ وَكُتْبِهِ وَرُسُلِهِ مَن لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ آمَنٍ مِّن ُ رُكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ مَن لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ آمَنٍ مِّن رُسُلِهِ ، وَقَالُوا سَعِفْنَا وَاَطَعْنَا نَ غُفْرَ انَكَ رَبَّنَا وَإِلْيْكَ الْمُصِيْرُ

২৮৬. আল্লাহ তায়ালা কখনো কাউকেই তার শক্তি সামর্থের বাইরে কোনো কাজের দায়িত্ব চাপিয়ে দেন না: সে ব্যক্তির জন্যে ততোটুকুই বিনিময় রয়েছে যতোটুকু সে (এ দুনিয়ায়) সম্পন্ন করবে, আবার সে যতোটুকু (মন্দ দুনিয়ায়) অর্জন করেছে তার ওপর তার (ততোটুকু শাস্তিই) পতিত হবে; (অতএব, হে মোমেন ব্যক্তিরা, তোমরা এই বলে দোয়া করো.) হে আমাদের মালিক. যদি আমরা কিছু ভূলে যাই, (কোথাও) যদি আমরা কোনো ভুল করে বসি, তার জন্যে তুমি আমাদের পাকড়াও করো না, হে আমাদের মালিক, আমাদের পূর্ববর্তী (জাতিদের) ওপর যে ধরনের বোঝা তুমি চাপিয়েছিলে তা আমাদের ওপর চাপিয়ো না, হে আমাদের মালিক, যে বোঝা বইবার সামর্থ আমাদের নেই তা তুমি আমাদের ওপর চাপিয়ে দিয়ো না, তুমি আমাদের ওপর মেহেরবানী করো। তুমি আমাদের মাফ করে দাও। আমাদের ওপর তুমি দয়া করো। তুমিই আমাদের (একমাত্র আশ্রয়দাতা) বন্ধু, অতএব কাফেরদের মোকাবেলায় তুমি আমাদের সাহায্য করো।

٢٨٦ لَا يُكلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إلَّا وُسْعَهَا ، لَهَا مَا كَسَبَسْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَسْ ، رَبَّنَا لَا مَا كَسَبَسْ ، رَبَّنَا لَا لَا كَسَبَسْ ، رَبَّنَا لَا لَا أَخْوَا فَإِنْ نَا إِنْ نَسِيْنَا آوْ أَغْطَانَا ع رَبَّنَا وَلَا تَحْوِلْ عَلَيْنَا آوْ أَغْطَانَا ع رَبَّنَا وَلَا تَحْوِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا مِنْ قَبْلِنَا ع رَبَّنَا وَلَا تُحَوِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا وَلا تُحَوِّلْنَا مَا لا طَاقَةَ لَنَا وَلا تُحَوِّلْنَا مَا لا طَاقَةَ لَنَا وَارْحَمْنَاوِسَ آئِسَ مَوْلُنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْتُورِ النَّورَ النَّا وَالْحَرْبَى عَلَى الْتُورُ النَّا وَالْحَرْبَى عَلَى الْتُورُ النَّا فَانْصُرْنَا عَلَى الْتُورُ النَّا وَلا الْتُورُ النَّا فَانْصُرْنَا عَلَى الْتُورُ النَّورُ النَّا وَالْحَرْبَى عَلَى الْتُورُ النَّا وَالْحَرْبَى عَلَى الْتُورُ النَّا وَلا اللَّهُ وَالْمَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْتُورُ النَّالُونَ الْمُعْرِنِينَ عَلَى الْتُورُ النَّا وَلَا الْتُورُ الْمَافِقَةَ النَّالُونَ الْمُعْرِنِينَ عَلَى الْتُورُ الْمُعْرِنِينَ عَلَى الْتُورُ النَّوْلُ الْلُهُ وَلَى اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ الْمُسْرَدُنَا عَلَى الْعَوْلُ الْمُعْرِنِينَ عَلَى اللَّهُ وَلَا اللَّهُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْرِنِينَ عَلَى اللَّهُ الْمُعْلَى اللَّهُ وَلَا اللَّهُ الْمُعْلِلْ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْرِنِينَ عَلَى اللَّهُ الْمُلُولُ الْمُعْلِقَةَ الْمَالَةُ لَلْمُعْرِنِينَ عَلَى اللَّهُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْرِقِينَ عَلَى اللَّهُ الْمُعْرِنِينَ عَلَى الْمُعْرِنِينَ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقِينَ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلِقُ الْمُعْلِقُ الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلَى الْمُعْلِقُ الْمُعْلَى الْمُعْلِقُولُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِقُ الْمُعْلِقُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِقُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِقُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِقُ الْمُعْلِقُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِقُ الْمُعْلَالِمُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْ

সুরা আলে ইমরান

মদীনায় অবতীর্ণ– আয়াত ২০০, রুকু ২০ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– سُوْرَةُ الْ عِمْرَانَ مَنَنِيَّةً اٰيَاتٌّ: ٢٠٠ رَكُوْعٌ : ٢٠٠ بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ

১. আলিফ-লাম-মীম।

ا آلـــ لا

২. মহান আল্লাহ তায়ালা, তিনি ছাড়া কোনো মা'বুদ নেই, (তিনি) চিরঞ্জীব, (তিনি) চিরস্তায়ী।

٢ اَللَّهُ لَا إِلَّا مُوَلا الْحَيُّ القَيُّوُّا ﴿

৩. তিনি সত্য (দ্বীন) সহকারে তোমার ওপর (এই) কেতাব নাথিল করেছেন, যা তোমার আগে নাথিল করা যাবতীয় কেতাবের সত্যতা স্বীকার করে। তিনি তাওরাত ও ইনজীলও নাথিল করেছেন: ٣ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَرِّقًا لِّهَا بَيْنَ يَنَيْهِ وَٱنْزَلَ التَّوْرِٰنةَ وَالْإِنْجِيْلَ لا

8. মানব জাতিকে (সঠিক) পথ প্রদর্শনের জন্যে ইতিপূর্বে (আল্লাহ তায়ালা আরো কেতাব নাযিল করেছেন), তিনি (হক ও বাতিলের মধ্যে) ফয়সালা করার মানদন্ড (হিসেবে কোরআন) অবতীর্ণ করেছেন; (তা সত্ত্বেও) যারা আল্লাহ তায়ালার নিদর্শনসমূহকে অস্বীকার করবে, তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর শান্তি; আল্লাহ তায়ালা অসীমক্ষমতার মালিক, তিনি চরম প্রতিশোধ গ্রহণকারীও বটে!

سُن قَبْلُ مُدًى لِلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْغُرْقَانَ أَهُ إِنَّ النِّهِ لَلْعُرُوا بِالْمِي اللهِ لَمُرْ عَذَابٌ شَرِيْدٌ ، وَاللَّهُ عَزِيْرٌ فُوانَتِقَامٍ

৩ সূরা আলে ইমরান

8৯

মন্থিল ১

৫. আল্লাহ তায়ালার কাছে আকাশমালা ও ড়খভের কোনো তথ্যই গোপন নেই।

۵ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخُفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْض وَلا فِي السَّمَاءِ م

৬. তিনি তো সেই মহান সত্তা যিনি (মায়ের পেটে) শুক্রকীটে (থাকতেই) তাঁর ইচ্ছামতো তোমাদের আকৃতি গঠন করেছেন; (আসলেই) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া দ্বিতীয় কোনো মা'বুদ নেই, তিনি প্রচন্ড ক্ষমতাশালী এবং প্রবল প্রজ্ঞাময়।

٢ هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُم فِي الْأَرْهَا إِكَيْفَ يَشَاءً ﴿ لَا إِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيمُ

৭. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি তোমার ওপর এ কেতাব নাযিল করেছেন। (এই কেতাবে দু'ধরনের আয়াত রয়েছে), এর কিছু হচ্ছে (সুস্পষ্ট) দ্ব্যর্থহীন আয়াত, সেণ্ডলোই হচ্ছে কেতাবের মৌলিক অংশ, (এ ছাড়া) বাকী আয়াতগুলো হচ্ছে রূপক (বর্ণনায় বর্ণিত, মানুষের মাঝে) যাদের অন্তরে বক্রতা রয়েছে, তারা (এগুলোকে কেন্দ্র করেই নানা ধরনের) ফেতনা ফাসাদ (সৃষ্টি করে) এবং আল্লাহর কেতাবের (অপ–) ব্যাখ্যা করার উদ্দেশে এসব (রূপক) আয়াত থেকে কিছু অংশের অনুসরণ করে. (মূলত) এসব (রূপক) বিষয়ের ব্যাখ্যা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কেউই জানে না। (এ কারণেই) যাদের মধ্যে فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ أَمَنَّا بِهِ لا كُلَّ مِّنَ عِنْلِ अबात्नत अन्नेतना आरह जाता (এসব आग्नान नन्नरिक्) فِي বলে, আমরা এর ওপর ঈমান এনেছি, এগুলো সবই তো আমাদের মালিকের পক্ষ থেকে (আমাদের দেয়া হয়েছে। সত্য কথা হচ্ছে, আল্লাহর হেদায়াতে) প্রজ্ঞাসম্পন্ন লোকেরাই কেবল শিক্ষা গ্রহণ করে থাকে।

٤ هُوَ الَّذِي ٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ أَيْتُ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ ٱمُّ الْكِتٰبِ وَٱغَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ . فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِي قُلُوْبِهِم ۚ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَهَابَهُ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأُويْلِهِ ٢٠ وَمَا يَعْلَرُ تَاْوِيْلَهُ ۚ إِلَّا اللَّهُ لِوَالرَّسِخُوْنَ رَبِّنَاء وَمَا يَنْ كُو إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَاب

৮. (তারা আরো বলে,) হে আমাদের মালিক, (একবার যখন) তুমি আমাদের (সঠিক) পথের দিশা দিয়েছো. (তখন আর) তুমি আমাদের মনকে বাঁকা করে দিয়ো না. একান্ত তোমার কাছ থেকে আমাদের প্রতি দয়া করো. কেননা যাবতীয় দয়ার মালিক তো তুমিই।

 ٨ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْنَ إِذْ مَنَيْتَنَا وَمَبْ لَنَا مِنْ لَّاكُنُكَ رَحْبَةً ج إِنَّكَ أَنْسَ الْوَهَّابُ

৯. হে আমাদের মালিক, তুমি অবশ্যই সমগ্র মানব জাতিকে তোমার সামনে (হিসাব-নিকাশের জন্যে) একদিন একত্রিত করবে, এতে কোন রকম সন্দেহ নেই; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা (কখনোই) ওয়াদা ভংগ করেন

٩ رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْ ۚ ۗ ۗ ۗ رَيْبَ فِيْدِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَع

১০. যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর বিধান) অস্বীকার করেছে তাদের ধন-সম্পদ ও সম্ভান সম্ভতি আল্লাহর (আযাব) থেকে (তাদের বাঁচানোর ব্যাপারে) কোনোই উপকারে আসবে না; (প্রকারান্তরে) তারাই জাহান্লামের ইন্ধন হবে।

١٠ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُرْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ﴿ وَ أُولِئِكَ هُرُ وَقُوْدٌ النَّارِ لا

১১. (তাদের পরিণতি হবে) ফেরাউন ও তাদের পূর্ববর্তী (না-ফরমান) জাতিসমূহের মতো; তারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো, অতএব তাদের অপরাধের কারণে আল্লাহ তায়ালা তাদের (শক্ত করে) পাকড়াও করলেন; (বস্তুত) শাস্তি প্রয়োগে আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত কঠোর।

١١ كَنَ أَبِ إِلِّ فِرْعَوْنَ لا وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ا كَنَّابُوْ ا بِايْتِنَا ج فَاَخَلَهُمْرٌ اللَّهُ بِنُنُوْبِهِ وَ اللَّهُ شَرِيْلُ الْعِقَابِ

১২. (হে নবী,) যারা আল্লাহকে অস্বীকার করে সেসব

١٢ قُلْ لِلَّانِينَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ মন্যিল ১

৩ সূরা আলে ইমরান

60

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৩ তিলকার রুসুল

(বিদ্রোহী) কাফেরদের তুমি বলে দাও, অচিরেই তোমরা (এ দুনিয়ায় লাঞ্জিত) পরাজিত হবে এবং (পরকালে) তোমাদের জাহান্নামের (আগুনের) কাছে জড়ো করা হবে: (আর জাহান্নাম!) তা তো হচ্ছে অত্যন্ত নিক্ট অবস্থান!

وَتُحْشَرُونَ إِلَى جَهَنَّرَ وَبِنْسَ الْهِهَادُ

১৩. সে দল দু'টোর মধ্যে তোমাদের জন্যে (শিক্ষণীয়) কিছু নিদর্শন (মজুদ) ছিলো, যারা (বদরের) সমুখসমরে একে অপরের সামনাসামনি হয়েছিলো: (এদের মধ্যে) এক বাহিনী লড়ছিলো আল্লাহর (দ্বীনের) পথে, আর অপর বাহিনীটি ছিলো (অবিশ্বাসী) কাফেরদের, (এ সম্মুখসমরে) তারা চর্মচক্ষু দিয়ে তাদের (প্রতিপক্ষকে) তাদের দ্বিগুণ प्रथंख शाब्दिला, (छात्रभवंछ) आन्नार छांबाना यात्क ठान وَنَ فِي ذُلِكَ لَعَبْرُةُ الْعَلَى اللَّهُ اللَّهُ الْعَبْرُةُ اللَّهِ اللَّهُ اللّ তাকে সাহায্য (ও বিজয়) দান করেন: এ (সব ঘটনার) মাঝে সেসব লোকের জন্যে অনেক কিছু শেখার আছে যারা অন্তর্দৃষ্টিসম্পন্ন।

١٣ قَلْ كَانَ لَكُر أَيَّةٌ فِي فِئتَيْنِ الْتَقَتَا ء فِئَةٌ تُقَاتِلٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَٱغْرَى كَافِرَةٌ يَّرُوْنَهُرْ مِّثْلَيْهِرْ رَأَىَ الْعَيْنِ ﴿ وَاللَّهُ يُؤَيِّلُ لِّا ولِي الْإَبْصَار

১৪. নারী জাতির প্রতি ভালোবাসা, সম্ভান সম্ভতি, কাঁড়ি কাঁড়ি সোনা রূপা, পছন্দসই ঘোড়া, গৃহপালিত জম্মু ও وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ النَّمْبِ यभीत्तत कत्रन (त्रव त्रभग्रहे) भानव त्रखात्तत करान লোভনীয় করে রাখা হয়েছে; (অথচ) এ সব হচ্ছে পার্থিব জীবনের কিছু ভোগের সামগ্রী (মাত্র! স্থায়ী জীবনের) উৎকৃষ্ট আশ্রয় তো একমাত্র আল্লাহ তায়ালার কাছেই রয়েছে ।

١٢ زُيِّنَ لِلنَّاسِ مُبُّ الشَّهَوٰكِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْإَنْعَا إِ وَالْحَرْثِ ، ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيْوةِ النَّانْيَا ع وَاللَّهُ عِنْلَ أَ حُسْنُ الْمَاٰبِ

১৫. (হে নবী,) তুমি (তাদের) বলো, আমি কি তোমাদের এগুলোর চাইতে উৎকৃষ্ট কোনো বস্তুর কথা বলবো? (হাঁ) সে উৎকষ্ট বস্তু হচ্ছে তাদের জন্যে.) যারা আল্লাহকে ভয় করে এমন সব লোকদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে রয়েছে (মনোরম) জান্লাত, যার পাদদেশ দিয়ে প্রবাহমান থাকবে (অগণিত) ঝর্ণাধারা এবং তারা সেখানে অনাদিকাল থাকবে, আরো থাকবে (তাদের) পুত পবিত্র সংগী ও সংগিনীরা- (সর্বোপরি) থাকবে আল্লাহ তায়ালার (অনাবিল) সন্তুষ্টি: আল্লাহ তায়ালা নিজ বান্দাদের (কার্যকলাপের) ওপর সর্বদা সতর্ক দৃষ্টি রাখেন।

10 قُلْ أَوُّنَبِّنُكُر بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُر ْ ﴿ لِلَّانِيْنَ اتَّقَوْا عِنْكَ رَ بِّهِرْ جَنَّتْ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ عُلِينِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةً وَّرضُوانُّ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِج

১৬. যারা বলে, হে আমাদের মালিক, আমরা অবশ্যই তোমার ওপর ঈমান এনেছি, অতপর আমাদের (যা) গুনাহখাতা (আছে তা) তুমি মাফ করে দাও এবং (শৈষ বিচারের দিন) তুমি আমাদের জাহান্নামের আগুন থেকে বাঁচিয়ে দিয়ো।

١٦ ٱلَّذِينَ يَقُوْلُونَ رَبَّنَا ۚ إِنَّنَا ۚ أَمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَنَ ابَ النَّارِجِ

১৭. এরা হচ্ছে ধৈর্যশীল এবং সত্যাশ্রয়ী, (এরা) অনুগত এবং দানশীল, (সর্বোপরি) এরা হচ্ছে শেষরাতে কিংবা উষালগ্নের পূর্বে ক্ষমা প্রার্থনাকারী।

١٤ اَلصَّبِرِيْنَ وَالصَّرِقِيْنَ وَالْقَنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْهُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْإَسْحَار

১৮. আল্লাহ তায়ালা (স্বয়ং) সাক্ষ্য দিচ্ছেন, তিনি ছাড়া অন্য কোনো মা'বুদ নেই ফেরেশতারা এবং জ্ঞানবান মানুষরাও (এই একই সাক্ষ্য দিক্ষে), আল্লাহ তায়ালাই একমাত্র ন্যায় ও ইনসাফ কার্যকর করেন, তিনি ছাড়া দ্বিতীয় কোনো মা'বুদ নেই, তিনি পরাক্রমশালী, তিনি প্রজ্ঞাময়।

١٨ شَهِنَ اللَّهُ أَنَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا مُوَ لا وَالْمَلَّئِكَةُ وَٱولُوا الْعِلْرِ قَالِيًّا ' بِالْقِسْطِ عَ لَا إِلْهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ، ১৯. নিসন্দেহে (মানুষের) জীবন বিধান হিসেবে আল্লাহ তায়ালার কাছে ইসলামই একমাত্র (গ্রহণযোগ্য) ব্যবস্থা। যাদের আল্লাহর পক্ষ থেকে কেতাব দেয়া হয়েছিলো, তারা (এ জীবন বিধান থেকে বিচ্যুত হয়ে) নিজেরা একে অপরের প্রতি বিদ্বেষ ও হিংসার বশবর্তী হয়ে (বিভিন্ন দলে উপদলে বিভক্ত হয়ে) মতানৈক্যে লিপ্ত হয়ে পড়েছিলো, (তাও আবার) তাদের কাছে (আল্লাহর পক্ষথেকে) সঠিক জ্ঞান আসার পর। যে ব্যক্তি আল্লাহর বিধান অস্বীকার করবে (তার জানা উচিত), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী।

19 إِنَّ الرَّيْنَ عِنْنَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ نِنَ وَمَا الْمَثَلَامُ نِنَ وَمَا الْمُثَلَّفُ الَّذِيْنَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ نِنَ وَمَا الْمُثَلَّفِ الْمَثَلُفُ الْمُثَلِّفُ أَلَّهُ مَا جَاءُهُمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْمُثَامُمُ مَا وَمَنْ يَكْفُورُ مِنْ اللَّهُ مَرِيْعُ الْحِسَابِ بِإِيْنِ اللَّهُ مَرِيْعُ الْحِسَابِ

২০. যদি এরা তোমার সাথে (এ ব্যাপারে) কোনোরূপ বিতর্কে লিপ্ত হয়, তাহলে (তুমি তাদের) বলে দাও, আমি এবং আমার অনুসারীরা (সবাই) আল্লাহর কাছে আত্মসমর্পণ করে নিয়েছি; অতপর যাদের (আল্লাহর পক্ষ থেকে) কেতাব দেয়া হয়েছে এবং যারা (কোনো কেতাব না পেয়ে) মূর্খ (থেকে গেছে), তাদের (সবাইকেই) জিজ্ঞেস করো, তোমরা কি সবাই আল্লাহর কাছে আত্মসমর্পণ করেছো? (হাা,) তারা যদি (জীবনের সর্বক্ষেত্রে) আল্লাহর আনুগত্য মেনে নেয় তাহলে তারা তো সঠিক পথ পেয়েই গেলো, কিন্তু তারা যদি (ঈমান থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে মনে রেখা, তোমার দায়িত্ব হচ্ছে কেবল (আমার কথা) পৌছে দেয়া; আল্লাহ তায়ালা বান্দাদের (কর্মকাচ নিজেই) পর্যবেক্ষণ করছেন।

٢٠ فَانَ مَا جُوْكَ فَقُلْ اَسْلَهْتُ وَجْهِى لِللهِ وَمَنِ النَّبَعَنِ ﴿ وَقُلْ لِللَّذِيثِيَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْا مِّبِّنَ ءَاسَلَهُتُر ﴿ فَانِ اَسْلَهُوا فَقَلِ اهْتَكَوْا ع وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاللَّهُ عَلَيْكَ الْبَلْغُ ﴿ وَاللَّهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِع

২১. নিসন্দেহে যারা আল্লাহর (নাযিল করা) নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করে, যারা অন্যায়ভাবে নবীদের হত্যা করে– হত্যা করে মানব জাতিকে যারা ন্যায় ও ইনসাফ মেনে চলার আদেশ দেয় তাদেরও, এদের তুমি এক কঠোর শান্তির সুসংবাদ দাও।

اً إِنَّ النَّانِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِأَيْسِ اللَّهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرٍ مَقٍّ لا وَّيَقْتُلُوْنَ النَّانِيْنَ يَامُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ لا فَبَشِّرْمُرْ بِعَنَابِ اَلِيْمِ

২২. (এদের অবস্থা হচ্ছে,) দুনিয়া আখেরাত উভয় স্থানেই এদের কর্ম ব্যর্থ (ও নিম্ফল) হয়ে গেছে, (আর এ কারণেই) এদের কোথাও কোনো সাহায্যকারী নাই। ٢٢ أُولَّنِكَ الَّذِينَ حَبِطَتُ اَعْمَالُهُرُ فِي اللَّانَيَا وَالْأَخِرَةِ رَوْمَا لَهُرْ مِّنَ تُصِرِينَ

২৩. (হে নবী,) তুমি তাদের সম্পর্কে চিন্তা করে দেখেছো কি, যাদের আমার কেতাবের কিছু অংশ দেয়া হয়েছিলো, অতপর তাদের যখন আল্লাহর কেতাবের (সে অংশের) দিকে ডাকা হলো যা তাদের মধ্যকার অমীমাংসিত বিষয়সমূহের মীমাংসা করে দেবে, তখন তাদের একদল লোক (এ হেদায়াত থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিলো, (মূলত) এরাই হচ্ছে সেসব লোক যারা (আল্লাহর ফয়সালা থেকে) মুখ ফিরিয়ে রাখে।

٢٣ أَلَرْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ أُو تُوْا نَصِيْبًا شِيَ الْكِتٰبِ يُلْعَوْنَ إِلَى كِتٰبِ اللهِ لِيَحْكُرَ الْكِتْبِ اللهِ لِيَحْكُرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّرُ مَوْنَ فَرِيْقً مِّنْهُمْ وَهُمْ مُعْرَفُونَ مَعْرَفُونَ

২৪. এটা এ কারণে যে, এ (নির্বোধ) লোকেরা বলে, (দোযখের) আগুন আমাদের (শরীর) কখনো স্পর্শ করবে না, (আর যদি একান্ত করেও তা হবে) হাতেগনা কয়েকটি দিনের ব্যাপার মাত্র, (মূলত) তাদের নিজেদের ধর্ম বিশ্বাসের মাঝে নিজেদের মনগড়া ধারণাই তাদের প্রতারিত করে রেখেছে।

٢٣ ذٰلِكَ بِاَ نَّمُرْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّا أَنَّامًا مَّكْرُوْن مِنْ وِيُنِهِرْ مَّا كَانُوْا يَفْتُرُوْنَ مَّا كَانُوْا يَفْتُرُوْنَ مَّا لَا يَعْرُونَ مَّا لَا يَقْتُرُونَ مَا لَا يَقْتُرُونَ مَا لَا يَعْمَلُونَ مَا لَا يَعْمَلُونَ مَا لَا يَعْمَلُونَ مَا لَا يَعْمَلُونَ مَا يَعْمَلُونَ مَا لَا يَعْمَلُونَ مَا لَا يَعْمَلُونَا لَا يَعْمَلُونَ مَا يَعْمَلُونَ مَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونَ مَا يَعْمِلُونَ مَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونَا لَا يَعْمَلُونَا لَا يَعْمَلُونَا لِكُونُ لِلْكُ لِلْكُونَ لَا يَعْمِلُونَا لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمِلُونَا لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمِلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمِلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْلَى لَا يَعْمَلُونُ لَوْلُونَا لَا يَعْمَلُونُ لِكُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمُلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُلِكُ لِلْكُلُونُ لِي لَا يَعْمَلُونُ لَا يَعْمَلُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونِ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِكُونُ لَا يُعْمِلُونُ لِلْكُونُ لِلْكُلُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُمُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُمُ لِلْمُعِلَّا لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُونُ لِلْكُمُ لَا لِلْمُونُ لِلْكُونُ لِلْكُمُ لِلْمُعِلَّا لِلْمُعِلَّا لِلْمُعْلِمُ لِعِلْمُ لَعْلَمُ لِلْمُعِلَّالِكُمُ لِلْكُمُ لِلْمُعِلْمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعُلِمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعِلْمُ لِلْمُعِلْمُ لِلْمُعِلَمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعُلِمُ لِلْمُعِلِمُ لِلْمُعُلِمُ لِلْمُعُلِمُ لِلْم

২৫. অতপর (সেদিন) অবস্থাটা হবে, যেদিন আমি সমগ্র মানব সন্তানকে একত্রিত করবো, যেদিন সম্পর্কে কোনো

٢٥ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنُمُرْ لِيَوْمٍ لِّرَيْبَ فِيهِ ت

৩ সূরা আলে ইমরান

હર

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৩ তিলকার রুসুলু

দ্বিধা সন্দেহের অবকাশ নেই- সেদিন প্রত্যেক মানব সন্তানকেই তার নিজম্ব অর্জিত বিনিময় পুরোপুরি দিয়ে দেয়া হবে এবং (সেদিন) তাদের ওপর বিন্দুমাত্রও যুলুম করা হবে না।

كُلُّ نَفْس مًّا كَسَبَتُ وَهُرْ ablaيُظلُّهُون

২৬. (হে নবী), ডুমি বলো, হে রাজাধিরাজ (মহান আল্লাহ), তুমি যাকে ইচ্ছা তাকে সাম্রাজ্য দান করো, আবার যার কাছ থেকে চাও তা কেড়েও নিয়ে যাও, যাকে ইচ্ছা তুমি সম্মানিত করো, যাকে ইচ্ছা তুমি অপমানিত করো: সব রকমের কল্যাণ তো তোমার হাতেই নিবদ্ধ: নিশ্চয়ই তুমি সবকিছুর ওপর একক ক্ষমতাবান।

٢٦ قُل اللَّمُرَّ مِلِكَ الْهُلَكِ تُؤْتِي الْهُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَ تَنْزِعُ ۚ الْمُلْكَ مِثَّنْ تَشَاءُ رِ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُنِلُّ مَنْ تَشَاءُ ، بِيَٰرِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ

২৭. তুমিই রাতকে দিনের মাঝে শামিল করো, আবার দিনকে রাতের ভেতর শামিল করো; প্রাণহীন (বস্তু) থেকে তুমি (যেমন) প্রাণের আবির্ভাব ঘটাও, (আবার) প্রাণহীন (অসাড়) বস্তু বের করে আনো প্রাণসর্বস্ব (জীব) থেকে এবং যাকে ইচ্ছা ভূমি বিনা হিসেবে রেযেক দান করো ।

٢٠ تُوْ لِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ نِي الَّيْلِ ر وَتُخْرِجُ الْحَيُّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُغْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْعَيِّ ر وَتَرْزُقُ مَنْ

২৮. ঈমানদার ব্যক্তিরা কখনো ঈমানদারদের বদলে অবিশ্বাসী কাফেরদের নিজেদের বন্ধু বানাবে না, যদি তোমাদের কেউ তা করে তবে আল্লাহর সাথে তার কোনো সম্পর্কই থাকবে না, হাঁ তাদের কাছ থেকে কোনো আশংকা (থাকলে) তোমরা নিজেদের বাঁচানোর প্রয়োজন হলে তা ভিনু কথা; আল্লাহ তায়ালা তো বরং তাঁর নিজের ব্যাপারেই তোমাদের ভয় দেখাচ্ছেন (বেশী, কারণ তোমাদের) আল্লাহর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

٢٨ لَا يَتَّخِلِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكُفِرِيْنَ ٱوْلِيَّاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ع وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِيْ شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُرْ تُقْبِةً ﴿ وَ يُحَنِّرُكُرُ اللَّهُ نَفْسَهُ ﴿ وَإِلِّي اللهِ الْهَصِيْرُ

২৯. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা তোমাদের মনের ভেতর কিছু গোপন করে রাখো, কিংবা তা (সবার সামনে) প্রকাশ করে দাও, তা আল্লাহ তায়ালা (ভালোভাবে) অবগত হন: আসমান যমীন ও এর (আভ্যন্তরীণ) সবকিছুও তিনি জানেন, সর্বোপরি আল্লাহ তায়ালা (সৃষ্টিলোকের) সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান. তিনিই সকল শক্তির আধার।

٢٩ قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِيْ مُنُوْرِكُيْ أَوْ تُبْلُوهُ يَعْلَبُهُ اللَّهُ و وَيَعْلَيرُ مَا فِي السَّبوسِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ، وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

৩০. যেদিন প্রত্যেকেই তার ভালো কাজ সামনে হাযির দেখতে পাবে, যে ব্যক্তির কৃতকর্ম খারাপ থাকবে সে সেদিন কামনা করতে থাকবৈ যে, তার এবং তার (কাজের) মাঝে যদি দুস্তর একটা তফাৎ থাকতো! আল্লাহ তায়ালা তো তোমাদের তাঁর (ক্ষমতা ও শান্তি) থেকে ভয় দেখাচ্ছেন, কারণ আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের সাথে অত্যন্ত অনুগ্ৰহশীল।

٣٠ يَوْمَ تَجِنُ كُلُّ نَفْسِ مَّا عَبِلَتُ مِنْ غَيْرٍ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ ۗ أَمَّلًا ۖ بَعِيْلًا ﴿ وَيُحَلِّ رُكُرُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُونَ إِالْعِبَادِعِ

৩১. (হে নবী.) তুমি বলো, তোমরা যদি আল্লাহ তায়ালাকে ভালোবাসো, তাহলে আমার কথা মেনে চলো, بْكُرُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْ بَكُمْ ، وَاللَّهُ वामात्क ভाলোবাসলে) बाह्मार जाशालाउ जाशाला वामात्म بثكر الله ويَغْفِر لَكُمْ ذُنُوْ بَكُمْ ، وَاللَّهُ ভালোবাসবেন এবং তিনি তোমাদের গুনাহখাতা মাফ করে দেবেন: আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত ক্ষমাশীল ও দয়াবান।

٣١ قُلْ إِنْ كُنْتُرْ تُحِبُّوْنَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوْ نِيْ

৩ সুরা আলে ইমরান

মন্যিল :

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৩ তিলকার রুসুলু

৩২. তুমি (আরো) বলো, (তোমরা) আল্লাহ তায়ালা ও (তাঁর) রসূলের কথা মেনে চলো, (এ আহ্বান সন্ত্বেও) তারা যদি (এ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয় (তাহলে তুমি জেনে রেখো), আল্লাহ তায়ালা কখনো কাফেরদের পছন্দ করেন না।

٣٢ قُلْ أَطِيْعُوا اللَّهُ وَالرَّسُوْلَ ء فَانْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهُ لَا يُحِبُّ الْكُفِرِيْنَ

৩৩. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা আদম, নৃহ এবং ইবরাহীমের বংশধর ও ইমরানের বংশধরদের সৃষ্টিকুলের ওপর (নেতৃত্ব করার জন্যে) বাছাই করে নিয়েছেন।

٣٣ إِنَّ اللَّهُ اصْطَفَّى أَدَا وَتُوْمًا وَّالَ إِبْرُهِيْرَ وَالَ عِبْرُنَ عَلَى الْعُلَبِيْنَ لا

৩৪. (নেতৃত্বে সমাসীন) এদের সম্ভানরা বংশানুক্রমে পরস্পর পরস্পরের বংশধর। আল্লাহ তায়ালা (সবার কথাবার্তা) তুনতে পান এবং (সব কথা তিনি) জ্ঞানেন।

٣٢ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ﴿ وَاللَّهُ سَهِيْعٌ

৩৫. (স্বরণ করো.) যখন ইমরানের স্ত্রী বললো, হে আমার মালিক, আমার গর্ভে যা আছে তাকে আমি স্বাধীনভাবে তোমার (দ্বীনের কাজ করার) জন্যে উৎসর্গ করলাম, তুমি আমার পক্ষ থেকে এ সন্তানটিকে কবুল করে নাও, অবশ্যই তুমি (সব কথা) শোনো এবং (সব বিষয়) জানো।

٣٥ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرُنَ رَبِّ إِنِّي نَنَرْتُ لَكَ مَا فَيْ بَطْنِيْ مُحَرِّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي مَ إِنَّكَ أَنْتَ السَّبِيْعُ الْعَلِيْرُ

৩৬. অতপর (এক সময়) যখন ইমরানের স্ত্রী তাকে জন্ম দিলো, (তখন) সে বললো, হে আমার মালিক, (একি!) আমি তো (দেখছি) একটি মেয়ে সম্ভান জন্ম দিয়েছি (একটা মেয়েকে কিভাবে আমি তোমার পথে উৎসর্গ النَّكُرُ كَالْإَنْثَى عَ وَإِنِّي سُمِّيتُهَا مُرْيَمِ अतात्नत हो कि अन्न निराहर, (আসলে) ছেলে কখনো مُرْيَمُ করবো): আল্লাহ তায়ালা তো ভালোভাবেই জানতেন, মেয়ের মতো (সব কাজ আঞ্জাম দিতে সক্ষম) হয়না, (ইমরানের স্ত্রী বললো), আমি এ শিশুর নাম রাখলাম মারইয়াম এবং আমি এ শিশু ও তার (অনাগত) সম্ভানকে অভিশপ্ত শয়তানের (অনিষ্ট) থেকে রক্ষার জন্যে তোমার কাছে আশ্রয় চাই।

٣٦ فَلَهَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّيْ وَضَعْتُهَا أَنْثَى ، وَاللَّهُ اَعْلَرُ بِهَا وَضَعَتْ، وَلَيْسَ وَإِنِّي ١ أُعِيْنُ هَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطُي الرجير

৩৭. আল্লাহ তায়ালা (ইমরানের স্ত্রীর দোয়া কবুল করলেন এবং) তাকে অত্যন্ত সুন্দরভাবেই গ্রহণ করে নিলেন এবং (ধীরে ধীরে) তাকে তিনি ভালোভাবেই গড়ে তুললেন. (আর সে জন্যেই) আল্লাহ তায়ালা তাকে যাকারিয়ার তত্ত্বাবধানে রাখলেন, (বড়ো হবার পর) যখনি যাকারিয়া তার কাছে (তার নিজস্ব) এবাদাতের কক্ষে যেতো, (তখনি সে দেখতে) পেতো সেখানে কিছু খাবার (মজুদ রয়েছে, খাবার দেখে) যাকারিয়া জিজ্ঞেস করতো, হে عِنْدِ اللهِ ، إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يُشَاءُ بِغَيْرِ अवर (श्वाव) छामात्र काष्ट्र काष्ट्रांम, وعندِ اللهِ ، إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يُشَاءُ بِغَيْرِ মারইয়াম জবাব দিতো, এ সব (আসে আমার মালিক) আল্লাহর কাছ থেকে; (আর) অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে বিনা হিসেবে রেযেক দান করেন।

٣٠ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنِ وَّٱثْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا لا وَّكَفَّلَهَا زَكَدِيًّا ۚ ۚ كُلُّهَا دَخُلَ عَلَيْهَا زَكَرِيًّا الْمِحْرَابَ لا وَجَلَ عِنْكَهَا رِزْقًا ج قَالَ يُمَرْيَمُ ٱنَّى لَكِ هٰذَا ﴿ قَالَتُ هُوَ مِنْ جساب

৩৮. সেখানে (দাঁড়িয়েই) যাকারিয়া তার মালিকের কাছে بُهُ بَالِكَ دَعَا زَكُرِيًّا رَبًّ عَالَ رَبِّ هُبُ দোয়া করলো, হে আমার মালিক, তুমি তোমার কাছ لِيْ مِنْ لَّانُكَ ذُرِّيَّةً مَ إِنَّكَ سَوِيْعُ (खाक आमारक (खामात अनुश्ररित श्रिकोक शिरानात) وَيَ একটি নেক সন্তান দান করো, নিশ্চয়ই তুমি (মানুষের) ডাক শোনো।

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩ তিলকার রুসুলু |
|--|---|
| ৩৯. অতপর ফেরেশতারা তাকে ডাক দিলো এমন এক সময়ে– যখন সে এবাদাতের কক্ষে নামায আদায় | ٣٩ فَنَادَثُهُ الْمَلْئِكَةُ وَهُوَ قَائِيرٌ يُصَلِّى فِي |
| করছিলো (ফেরেশতারা বললো, হে যাকারিয়া, আল্লাহ তায়ালা তোমার ডাক শুনেছেন), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা | الْمِحْرَابِ ٧ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَى |
| তোমাকে ইয়াহইয়ার (জন্ম সম্পর্কে) সুসংবাদ দিচ্ছেন, (তোমার সে সস্তান) আল্লাহর পক্ষ থেকে তাঁর বাণীর | مُصَنِّقًا ' بِكَلِهَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّنًا وَّحَصُوْرًا |
| সত্যায়ন করবে, সে হবে (সমাজের) নেতা, (সে হবে) সচ্চরিত্রবান, (সে হবে) নবী, (সর্বোপরি সে হবে) সংকর্মশীল ব্যক্তিদের একজন। | وَّنَبِيًّا مِّنَ الصُّلِحِيْنَ |
| ৪০. (এ ক্থা খনে) যাকারিয়া বললো, হে আমার মালিক, আমার (ঘরে) ছেলে হবে কিভাবে, (একে ডো) আমি নিজে | ٣٠ قَالَ رَبِّ ٱنَّى يَكُونُ لِيْ غُلْرٌ وَّقَنَ |
| বার্ধক্যে উপনীত হয়ে গেছি, (তদুপরি) আমার স্ত্রীও বন্ধ্যা | بلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ، قَالَ كَنْ لِكَ |
| (সন্তান ধারণে সম্পূর্ণ অক্ষম); আল্লাহ তায়ালা বললেন, হাঁ এভাবেই আল্লাহ তায়ালা যা চান তা তিনি করেন। | اللهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ |
| 8১. যাকারিয়া নিবেদন করলো, হে মালিক, তুমি আমার জন্যে (এর) কিছু (পূর্ব) লক্ষণ ঠিক করে দাও; আল্লাহ তায়ালা | ٣١ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي ۚ أَيۡدً ۚ مَالَ أَيۡتُكَ |
| বললেন (হাঁ), তোমার (সে) লক্ষণ হবে এই যে, তুমি তিন দিন তিন রাত পর্যন্ত মানুষের সাথে ইশারা ইংগিত | اَلَّا تُكَلِّرَ النَّاسَ ثَلْثَةَ إَيَّا } إِلَّا رَمْزًا، |
| ছাড়া কথাবার্তা বলবে না; (এ অবস্থায়) তুমি তোমার মালিককে বেশী বেশী শ্বরণ করবে এবং সকাল সন্ধ্যায় | وَاذْكُرْ رَّبُّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحُ بِالْعَشِيِّ |
| (তাঁর পবিত্র নামসমূহের) তাসবীহ পাঠ করতে থাকবে। | وَالْإِبْكَارِع |
| ৪২. (অতপর মারইয়াম বয়োপাপ্ত হলে) আল্লাহর ফেরেশতারা যখন বললো, হে মারইয়াম, আল্লাহ তায়ালা | ٣٢ وَإِذْ قَالَسِ الْمَلَّئِكَةُ يُمَرِّيَمُ إِنَّ اللَّهَ |
| নিসন্দেহে তোমাকে (একটি বিশেষ কাজের জ্বন্যে) বাছাই করেছেন এবং (সে জন্যে) তোমাকে তিনি পবিত্র | اصْطَغْدت وَطَهَّرك وَاصْطَغْدت عَلَى نِسَاء |
| করেছেন এবং বিশ্বের নারীকুলের ওপর তিনি তোমাকে বাছাই করেছেন। | الْعُلَوِيْنَ |
| ৪৩. হে মারইয়াম, (এর যোগ্য হওয়ার জন্যে) তুমি সর্বদা তোমার মালিকের অনুগত হও, তারু কাছে (আনুগত্যের) | ٣٣ يُمَرْيَرُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَاسْجُلِي |
| মাথা নত করো এবং এবাদাতকারীদের সাথে তুমিও (তার) এবাদাত করো। | وَارْكَعِيْ مَعَ الرِّكِعِيْنَ |
| 88. (হে নবী,) এ সবই তো (ছিলো তোমার জন্যে) অদৃশ্যলোকের সংবাদ, আমিই এগুলো তোমাকে ওহীর | ٣٣ ذٰلِكَ مِنْ أَثْبَاءِ الْغَيْبِ تُوْمِيْدِ اِلَيْكَ ، |
| মাধ্যমে জানিয়েছি; (নতুবা) তুমি তো সেখানে তাদের পাশে হাযির ছিলে না- (বিশেষ করে) যখন (এবাদাতখানার | وَمَا كُنْسَ لَنَ يُهِر إِذْ يُلْقُونَ ٱقْلَامَهُرْ أَيُّهُرْ |
| পুরোহিতরা) মারইয়ামের পৃষ্ঠপোষক কে হবে এটা নির্বাচনের জন্যে কলম নিক্ষেপ (করে নিজেদের ভাগ্য | يَكْفُلُ مُرْيَرَى وَمَا كُنْتَ لَنَ يَهِرُ إِذْ |
| পরীক্ষা) করছিলো, আর তুমি তাদের ওখানেও উপস্থিত ছিলে না যখন তারা (এনিয়ে) বিতর্ক করছিলো! | يَخْتَصِبُونَ |
| ৪৫. অতপর ফেরেশতারা বললো, হে মারইয়াম, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাকে (একটি পুত্র সম্ভানের জন্ম | ٣٥ إِذْ قَالَتِ الْمَلَّئِكَةُ يُمُرْيَرُ إِنَّ اللَّهَ |
| সংক্রান্ত) নিজস্ব এক বাণীর দ্বারা সুসংবাদ দিচ্ছেন, তার | يُبَشِّرُكِ بِكَلِهَ مِّنْهُ قِ اشْهُ الْهَسِيْحُ عِيْسَى |
| নাম মাসীহ- (সে পরিচিত হবে) মারইয়ামের পুত্র ঈসা, দুনিয়া আখেরাতের উভয় স্থানেই সে সম্মানিত হবে, সে | ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي النَّنْيَا وَالْأَخِرَةِ وَمِنَ |
| হবে (আল্লাহর) সান্নিধ্যপ্রাপ্ত ব্যক্তিদের অন্যতম। | الْهُقُرَّ بِيْنَ و |
| ৪৬. সে দোলনায় থাকা অবস্থায় (যেমন) মানুষের সাথে কথা বলতে পারবে, পরিণত বয়সেও (তেমনিভাবে | ٣٦ وَيُكَلِّرُ النَّاسَ فِي الْهَمْلِ وَكَهْلًا وَّمِنَ |
| তাদের সাথে) কথা বলবে, (বস্তুত) সে হবে নেককার মানুষদের একজন। | الصُّلِحِينَ |
| | |

মন্যিল ১

৩ সূরা আলে ইমরান

পারা ৩ তিলকার রুসল

৪৭. মারইয়াম বললো, হে আমার মালিক, আমার (গর্ভে) ٣٠ قَالَتْ رَبِّ ٱنَّى يَكُوْنُ لِيْ وَلَلَّ وَّلَرُ সন্তান আসবে কোখেকে? আমাকে তো কখনো কোনো মানব সন্তান স্পর্শ পর্যন্ত করেনি: আল্লাহ তায়ালা বললেন. এভাবেই- আল্লাহ তায়ালা যাকে চান (চিরাচরিত নিয়ম ছাডাই) তাকে পয়দা করেন: তিনি যখন কোনো কাজ করার সিদ্ধান্ত নেন তখন শুধু তাকে বলেন, 'হও', অতপর (সাথে সাথে) তা (সংঘটিত) হয়ে যায়।

يَهُسَسْنِي بَشَرٌّ وَقَالَ كَنْ لِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ، إِذَا قَضَى آمَرًا فَإِنَّهَا يَقُولُ لَدَّ كُنْ

৪৮. (ফেরেশতারা মারইয়ামকে বললো.) তোমার সন্তানকে আল্লাহ তায়ালা তাঁর কেতাব ও প্রজ্ঞার বিষয়গুলো শেখাবেন, (সাথে সাথে তিনি তাকে) তাওরাত এবং ইনজীলও শিক্ষা দেবেন।

٣٨ وَيُعَلِّهُ الْكِتْبَ وَالْحِكْهَةَ وَالتَّوْرْبَةَ وَالْإِنْجِيْلَ عَ

৪৯. (আল্লাহ তায়ালা তাকে) বনী ইসরাঈলদের কাছে রসূল করে পাঠালেন (অতপর সে আল্লাহর রসূল হয়ে তাদের কাছে এসে বললো), আমি নিসন্দেহে তোমাদের মালিকের কাছ থেকে (নবুওতের কিছু) নিদর্শন নিয়ে এসেছি (এবং সে নিদর্শনগুলো হচ্ছে), আমি তোমাদের জন্যে মাটি দ্বারা পাখীর মতো করে একটি আকৃতি طَيْرًا ' بِاذْنِ اللَّهِ ع وَٱبْرِئُ الْأَكْمَة वानार्ता बवर शद्ध छाएँ फ़र्ता, अछश्व (छामब्रा مُعَيرًا ' بِاذْنِ اللَّهِ ع وَٱبْرِئُ الْأَكْمَة कांटा يُعْرَدُ اللَّهِ عَ وَٱبْرِئُ الْأَكْمَةُ وَقَالَمَ اللَّهِ عَالَمُ اللَّهِ عَالَمُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَل দেখবে এই) আকতিটি আল্লাহর ইচ্ছায় (জীবস্ত) পাখী হয়ে যাবে, আর জন্মান্ধ এবং কুষ্ঠ রোগীকেও সৃস্থ করে দেবো. (আল্লাহর ইচ্ছায় এভাবে) আমি মৃতকেও জীবিত করে দেবো, আমি তোমাদের আরো বলে দেবো, তোমরা তোমাদের ঘরে কি কি জিনিস খাও, আবার কি জিনিস (না খেয়ে) জমা করে রাখো; (মূলত) তোমরা যদি আল্লাহর ওপর ঈমান আনো তাহলে (নিসন্দেহে) এতে তোমাদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

٣٩ وَرَسُولًا إِلَى بَنِي ٓ إِشْرَآلِيْلَ ٱبِّي قَلْ جِئْتُكُرْ بِأَيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُرْ لا أَنِّيْ ٓ أَخْلُقُ لَكُرْ مِّنَ الطِّيْنِ كَمَيْئَةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيهِ فَيَكُوْنُ وَالْإَبْرَسَ وَأَهْى الْمَوْتَى بِإِذْسِ اللَّهِ ع وَٱنَبِّنَكُمْرُ بِهَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَلَّخِرُونَ لافِي بُيُوْتِكُرْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَإِيَّةً لَّكُرْ إِنْ كُنْتُر مۇمنيىن ج

৫০. (মাসীহ ঈসা ইবনে মারইয়াম আরও বলবে.) তাওরাতের যে বাণী আমার কাছে রয়েছে আমি তার সত্যায়নকারী. (ডাছাড়া) তোমাদের ওপর হারাম করে রাখা হয়েছে এমন কতিপয় জিনিসও আমি তোমাদের জন্যে হালাল করে দেবো এবং আমি তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে (এই) নিদর্শন নিয়েই এসেছি, অতএব তোমরা আল্লাহকেই ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো।

٥٠ وَمُصَرَّقًا لِّهَا بَيْنَ يَلَى مِنَ التَّوْرِيةِ وَ لِأُحِلُّ لَكُرْ بَعْضَ الَّذِي حُرَّاً عَلَيْكُرْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةَ مِّيْ رِّبْكُرْتِ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَ اَطِيْعُوْنِ

৫১. নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা আমার মালিক, তোমাদেরও মালিক, অতএব তোমরা তাঁরই এবাদাত করো: (আর) এটাই হচ্ছে একমাত্র সঠিক ও সোজা পথ।

٥١ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُكُو ۚ * فَأَنَا صِرَاطٌ مُسْتَقَيْرٌ

৫২, অতপর ঈসা যখন তাদের থেকে কুফরী আঁচ করতে পারলো, তখন সে (সাথীদের ডেকে) বললো, কে (আছো তোমরা) আল্লাহ তায়ালার (পথের) দিকে (চলার সময়) আমার সাহায্যকারী হবে! হাওয়ারীরা বললো, (হাঁ) আমরাই (হবো) আল্লাহর সাহায্যকারী: আমরা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছি (হে ঈসা), তুমি সাক্ষী থাকো, আমরা সবাই আল্লাহর এক একজন অনুগত বান্দা।

٥٢ فَلَهَّا ۚ إَحَسٌّ عِيْسٰي مِنْهُرٌ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِيْ ۚ إِلَى اللَّهِ ﴿ قَالَ الْعَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ عَ أَمَنَّا بِاللَّهِ عَ وَاشْهَنَّ بِأَنَّا

৫৩. (হাওয়ারীরা বললো,) হে আল্লাহ, তুমি যা কিছু مُرَبِّنَا أَمَنَّا بِهَا ٱلْزَلْتَ وَاتَّبَعْنِا الرَّوْلُ مَعْدَ الْمَعْلِي الرَّوْلُ مُعَالِيةً الرَّوْلُ مُعَالِيةً الرَّوْلُ مُعَالِيةً الرَّوْلُ مُعَالِيةً الْمَعْلِيةِ الرَّوْلُ مُعَالِيةً الرَّوْلُ مُعَالِيةً الرَّوْلُ مُعَالِيةً الرَّوْلُ مُعَالِيةً المُعْلِيقِ المُعْلِيقِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعِلِيقِ المُعْلِيقِ الْعِلْمِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُعْلِيقِ المُع

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩ তিলকার রুসুলু |
|---|--|
| আমরা রস্লের কথাও মেনে নিয়েছি, সুতরাং তুমি (সত্যের পক্ষে) সাক্ষ্যদাতাদের সাথে আমাদের (নাম) লিখে দাও। | فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّهِرِيْنَ |
| ৫৪. বনী ইসরাঈলের লোকেরা (আল্লাহর নবীর বিরুদ্ধে দারুণ) শঠতা করলো, তাই আল্লাহও কৌশলের পদ্খ | ٥٣ وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ ١ وَاللَّهُ عَيْرُ |
| গ্রহণ করলেন; (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সর্বোত্তম কৌশলী! | الْمُكِرِيْنَ ع |
| ৫৫. যখন আল্লাহ তায়ালা বললেন, হে ঈসা, আমি তোমার এ দুনিয়ার (জীবন কাটানোর) কাল শেষ করতে | ٥٥ إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيْسَى إِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ |
| যাচ্ছি এবং (অচিরেই) আমি তোমাকে আমার কাছে তুলে আনবো, যারা (তোমাকে মেনে নিতে) অস্বীকার করছে | وَرَافِعُكَ إِلَى ۗ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ النَّٰنِينَ كَفَرُوْا |
| তাদের (যাবতীয় পাপ) থেকেও আমি তোমাকে পবিত্র করে নেবো, আর যারা তোমাকে অনুসরণ করছে তাদের | وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ |
| আমি কেয়ামত পর্যন্ত এই অস্বীকারকারীদের ওপর (বিজয়ী করে) রাখবো, অতপর তোমাদের স্বাইকে | كَفَرُوْ آ إِلَى يَوْ اِ الْقِيْمَةِ عَ ثُرَّ إِلَىَّ مَرْهِعُكُر |
| আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে, সেদিন (ঈসা সম্পর্কিত) যেসব বিষয়ে তোমরা মতবিরোধে লিপ্ত ছিলে তার সব কয়টি বিষয়ই আমি তোমাদের মাঝে মীমাংসা করে দেবো। | فَاَهْكُرُ بَيْنَكُرْ فِيْهَا كُنْتُرْ فِيْهِ تَحْتَلِفُونَ |
| ৫৬. যারা (আমার বিধান) অস্বীকার করেছে আমি তাদের | ٥٦ فَامًّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاعَنِّ بُهُمْ عَنَابًا |
| এ দুনিয়ায় (অপমান) ও আখেরাতে (আগুনে দগ্ধ হওয়ার) কঠোরতর শাস্তি দেবো, (এ থেকে বাঁচানোর মতো | شَرِيْدًا فِي اللَّ نَيَا وَالْإَغِرَةِ ﴿ وَمَا لَهُمْ مِّنْ |
| সেদিন) তাদের কোনো সাহায্যকারী থাকবে না। | نُصْرِين |
| ৫৭. অপরদিকে যারা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, অতপর আল্লাহ তাদের (সবাই)-কে | ا حدواها الريق المنوا وعصوا الصنحي |
| তাদের পাওনা পুরোপুরিই আদায় করে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা যালেমদের কখনো ভালোবাসেন না। | فَيُوفِيْهِمْ أَجُوْرُهُمْ ﴿ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ |
| ৫৮. এই (কেতাব) যা আমি তোমাকে পড়ে শোনাচ্ছি, তা হচ্ছে আল্লাহর নিদর্শন ও জ্ঞানপূর্ণ উপদেশ বিশেষ। | |
| ৫৯. আল্লাহ তায়ালার কাছে ঈসার উদাহরণ হচ্ছে (প্রথম মানুষ) আদমের মতো; তাকেও আল্লাহ তায়ালা | ٥٩ إِنَّ مَثَلَ عِيْسَى عِنْنَ اللَّهِ كَمَثَلِ أَدًّا ١ |
| (মাতা-পিতা ছাড়া সরাসরি) মাটি থেকে পয়দা করেছেন, তারপর তাকে বললেন, (এবার তুমি) হয়ে যাও, সাথে সাথে তা (মানুষে পরিণত) হয়ে গেলো। | خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُرَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ |
| ৬০. (এ হচ্ছে) তোমার মালিক (আল্লাহ)-এর পক্ষ থেবে (আসা) সত্য (প্রতিবেদন), অতপর তোমরা কখনো | ١ الكفي مِن رَبِك فند لدن مِن |
| সেসব দলে শামিল হয়ো না যারা (ঈসার ব্যাপারে নানারকম) সন্দেহ পোষণ করে। | الْهُمْتَوِيْنَ |
| ৬১. এ বিষয়ে আল্লাহর কাছ থেকে (সঠিক) জ্ঞান আসার পরও যদি কেউ তোমার সাথে (খামাখা) ঝগড়া-বিবাদ ও | ١١ فين هاجك فِيهُ مِنْ بَعْلِ مَا جَاءَكَ مِن |
| তর্ক করতে চায় তাহলে তুমি তাদের বলে দাও, এসে (আমরা সবাই এ ব্যাপারে একমত হই), আমরা আমাদের | العِلْرِ فَعَلَ تَعَالُوا نَنْ عَ ابْنَاءُنَا وَابْنَاءُكُمْ |
| ছেলেদের ডাকবো এবং তোমাদের ছেলেদেরও ডাকবো, (একইভাবে আমরা ডাকবো) আমাদের নারীদের এবং | وَ نِسَاءَنَا وَ نِسَاءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ عَ ثُمُّ |
| ৩ সুরা আলে ইমরান ৫৭ | মন্যিল ১ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩ তিলকার রুসুলু |
|--|---|
| তোমাদের নারীদেরও, (সাথে সাথে) আমরা আমাদের নিজেদের এবং তোমাদেরও (এক সাথে জড়ো হওয়ার জন্যে) ডাক দেবো, অতপর (সবাই এক জায়গায় জড়ো হলে) আমরা বিনীতভাবে দোয়া করবো, (আমাদের মধ্যে) যে মিথ্যাবাদী তার ওপর আল্লাহর অভিশাপ বর্ষিত হোক। | نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَٰهِ عَلَى الْكَٰهِيْنَ |
| ৬২. এ হচ্ছে সঠিক (ও নির্ভুল) ঘটনা। আল্লাহ তায়ালা ছাড়া দ্বিতীয় কোনো মা'বুদ নেই; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা পরম শক্তিশালী ও প্রজ্ঞাময়। | ٢٢ إِنَّ مَٰذَا لَمُو الْقَصَصُ الْحَقَّ ع وَمَا مِن الْدِ إِلَّا الله ع وَإِنَّ الله لَمُو الْعَزِيْرُ الْحَكِيْرُ |
| ৬৩. অতপর তারা যদি (এ চ্যালেঞ্জ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয়, তাহলে (তারা যেন জেনে রাখে,) আল্লাহ তায়ালা কলহ সৃষ্টিকারীদের (ভালো করেই) জানেন। | ٣٣ فَإِنْ تَوَ لُّواْ فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيْرٌّ بِالْهُفْسِ بِيْنَ ع |
| ৬৪. (হে নবী,) তুমি বলো, হে কেতাবধারীরা, এসো আমরা এমন এক কথায় (উভয়ে একমত হই) যা | ٣٢ قُلْ يَآمُلَ الْكِتْبِ تَعَالُوا إِلَى كَلِمَةٍ |
| আমাদের কাছে এক (ও অভিনু এবং সে কথাটি হচ্ছে), আমরা উভয়েই আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারো | سَوَآءٍ ' بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ٱلَّا نَعْبُلُ إِلَّا اللَّهَ |
| এবাদাত করবো না এবং তাঁর সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবো না, (সর্বোপরি) এক আল্লাহ তায়ালা | وَلا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَّلا يَتَّخِلَ بَعْضًا بَعْضًا |
| ছাড়া আমরা আমাদের মাঝেও একে অপরকে প্রভু বলে মেনে নেবো না; অতপর তারা যদি (এ থেকে) মুখ | أَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ ، فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا |
| ফিরিয়ে নেয় তাহলে তাদের তুমি বলে দাও, তোমরা সাক্ষী থেকো, আমরা আল্লাহর সামনে আনুগত্যের মাথা নত করে দিয়েছি। | اهْهَدُوْ ا بِأَنَّا مُسْلِبُونَ |
| ৬৫. (তুমি আরো বলো,) হে কেতাবধারীরা, তোমরা ইবরাহীম সম্পর্কে (আমাদের সাথে অযথা) কেন তর্ক | ٢٥ يَأَمْلَ الْكِتْبِ لِيرَ تُحَامُونَ فِي إِبْرُهِيْرَ |
| করো, অথচ (তোমরা জানো) তাওরাত ও ইনজীল তার | وَمَا النَّوْلَتِ التَّوْرُانةُ وَالْإِنْجِيْلُ إِلَّا مِنْ |
| (অনেক) পরে নাযিল করা হয়েছে; তোমরা কি (এ কথা) বুঝতে পারছো নাঃ | بَعْنِ ۗ ا أَفَلَا تَعْقِلُونَ |
| ৬৬. হাাঁ, এর কয়েকটি বিষয়ে তোমাদের (হয়তো) কিছু কিছু জানাশোনা ছিলো এবং সে বিষয়ে তো তোমরা তর্ক | ٢٦ مَّٱنْتُرْ مَّؤُكَاءِ مَاجَجْتُرْ فِيْهَا لَكُرْ بِم |
| বিতর্কও করলে, কিন্তু যেসব বিষয়ে তোমাদের কোনো জ্ঞানই নেই সেসব বিষয়ে তোমরা বিতর্কে লিপ্ত হচ্ছো | عِلْرٌ فَلِرَ تُحَاجُّونَ فِيْهَا لَيْسَ لَكُرْ بِهِ عِلْرٌ ، |
| কেন? আল্লাহ তায়ালাই (সব কিছু) জ্ঞানেন, তোমরা কিছুই জানো না, | وَ اللَّهُ يَعْلَمُ وَ أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ |
| ৬৭. (সঠিক ঘটনা হচ্ছে,) ইবরাহীম না ছিলো ইহুদী-না | ٦٤ مَا كَانَ إِبْرُهِيْرُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَ انِيًّا وَّلْكِنْ |
| ছিলো খৃষ্টান; বরং সে ছিলো একজন একনিষ্ঠ মুসলিম; সে কখনো মোশরেকদের দলভুক্ত ছিলো না। | كَانَ حَنِيْفًا مُّشَلِهًا وَمَا كَانَ مِنَ الْهُشْرِكِيْنَ |
| ৬৮. মানুষদের ভেতর ইবরাহীমের সাথে (ঘনিষ্ঠতম) সম্পর্কের বেশী অধিকার তো আছে সেসব লোকের, যারা | ٨٨ إِنَّ أَوْ لَى النَّاسِ بِالْبُرْهِيْرَ لَلَّذِيْنَ |
| তার অনুসরণ করেছে, এ নবী ও (তার ওপর) ঈমান আনয়নকারীরাই (হচ্ছে) ইবরাহীমের ঘনিষ্ঠতম ব্যক্তি; | اتَّبَعُونَهُ وَمٰنَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ أَمَنُوا ﴿ وَاللَّهُ |
| আনরনকারার (২০ছে) হ্বরাহানের বান্চত্ম ব্যাক্ত; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা একমাত্র তাদেরই সাহায্যকারী (পৃষ্ঠপোষক) যারা তাঁর ওপর ঈমান আনে। | وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ |
| ৬৯. এ কেতাবধারীদের একটি দল (বিদ্রান্তি সৃষ্টি করে) তোমাদের কোনো না কোনোভাবে পথম্রষ্ট করে দিতে | ٦٩ وَدَّتْ ظَّآنِفَةً مِّنْ اَهْلِ الْكِتْبِ لَوْ |
| চায়; যদিও তাদের এ বোধটুকু নেই যে, (তাদের এসব কর্মপন্থা) তাদের নিজেদের ছাড়া অন্য কোনো ব্যক্তিকেই | يُضِلُّوْنَكُرْ، وَمَا يُضِلُّوْنَ إِلَّا آنْفُسَهُرْ وَمَا |
| পথভ্ৰষ্ট করতে পারবে না। | يشْعُرُونَ |

মন্যিল ১

৩ সূরা আলে ইমরান

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩ তিলকার রুসুণ |
|---------------------------------|---------------------|

৭০. হে কেতাবধারীরা, তোমরা (জ্বেনে বুঝে) কেন আল্লাহর আয়াত (ও তাঁর বিধান) অস্বীকার করছো, অথচ (এই ঘটনাসমূহের সত্যতার) সাক্ষ্য তো তোমরা নিজেরাই বহন করছো।

٤٠ يَآهُلَ الْكِتٰبِ لِمرَ تَكْفُرُونَ بِإِيْتِ اللّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَلُونَ

৭১. হে কেতাবধারীরা, কেন তোমরা 'হক'-কে বাতিলের সাথে মিশিয়ে দিচ্ছো. (এতে করে) তোমরা তো সত্যকেই গোপন করে দিচ্ছো, অথচ (এটা যে সত্যের একান্ত পরিপন্থী) তা তোমরা ভালো করেই জানো।

ا 4 يَاهُلَ الْكتٰبِ لِي تَلْبِسُوْنَ الْحَقِّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقِّ وَٱنْتُرْ تَعْلَمُونَ ع

৭২. আহলে কেতাবদের (মধ্য থেকে) একদল (নির্বোধ) তাদের নিজেদের লোকদের বলে, মুসলমানদের ওপর যা কিছু অবতীর্ণ হয়েছে তোমরা সকাল বেলায় তার ওপর ঈমান আনো এবং বিকেল বেলায় (গিয়ে) তা অস্বীকার করো, (এর ফলে) তারা সম্ভবত (ঈমান খেকে) ফিরে আসবে।

٤٢ وَقَالَتُ طَّآلِفَةٌ مِّنْ آهُلِ الْكِتْبِ الْمِنُوْا بِالَّذِي ٱنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ أَمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا أَخِرَةً لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ عَمِهِ

৭৩. যারা তোমাদের জীবন বিধানের অনুসরণ করে, এমন সব লোকজন ছাড়া অন্য কারো কথাই তোমরা মেনে নিয়ো না: (হে নবী.) তুমি বলে দাও, একমাত্র হেদায়াত হচ্ছে আল্লাহর হেদায়াত (তোমরা একথা মনে করো না যে), তোমাদের যে ধরনের (ব্যবস্থা) দেয়া হয়েছে তেমন ধরনের কিছু অন্য কাউকেও দেয়া হবে এবং (সে সূত্র ধরে) অন্য লোকেরা তোমাদের মালিকের দরবারে তোমাদের বিরুদ্ধে কোনো রকম যুক্তিতর্ক খাড়া করবে, (হে নবী); তুমি তাদের বলে দাও, (হেদায়াতের এ) অনুগ্রহ অবশ্যই আল্লাহর হাতে, তিনি যাকে ইচ্ছা তাকেই তা দান করেন; আল্লাহ তায়ালা বিশাল, প্রজ্ঞাসম্পন্ন।

٣٠ وَلَا تُؤْمِنُوْ ٓ إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُرْ ، قُلْ إِنَّ الْهُدَٰى مُدَى اللَّهِ لا أَنْ يُّؤْتَى اَحَلَّ مِّثْلُ مَا أُوْ تِيْتُرْ أَوْ يُحَاجُّوْكُرْ عِنْلُ رَبِّكُرْ م قُلُ أَنَّ الْفَضْلَ بِيَنِ اللَّهِ جَيُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَأَّءُ ء وَاللَّهُ وَاسِعَ عَلِيْر

৭৪. নিজের দয়া দিয়ে তিনি যাকে ইচ্ছা তাকেই (হেদায়াতের জন্যে) খাস করে নেন; (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন অসীম দয়া ও অনুগ্রহের মালিক।

٤٣ يَخْتَصُّ بِرَحْبَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ، وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْم

৭৫. আহলে কেতাবদের মধ্যে এমন লোকও আছে. তুমি যদি তার কাছে ধন সম্পদের এক স্তপও আমানত রাখো. সে (চাওয়ামাত্রই) তা তোমাকে ফেরত দেবে, আবার এদের মধ্যে এমন কিছু (লোকও) আছে যার কাছে যদি একটি দীনারও তুমি রাখো, সে তা তোমাকে ফিরিয়ে عَلَيْهُ مَا دُمْتَ عَلَيْهُ وَهِا إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ দেবে না. হ্যাঁ, যদি (এ জন্যে) তুমি তার ওপর চেপে বসতে পারো তাহলে (সেটা ভিন্ন), এটা এই কারণে যে, এরা বলে, এই (অ-ইহুদী) অশিক্ষিত লোকদের ব্যাপারে আমাদের ওপর কোনো বাধ্যবাধকতা নেই. (এভাবেই) এরা বুঝে তনে আল্লাহর ওপর মিধ্যা কথা বলে।

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتْبِ مَنْ انْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارِ يَّوَدِهِ إِلَيْكَ } وَمِنْهُرْ مَّنْ إِنْ تَأْمَنْهُ قَائِمًا وَذَٰلِكَ بِٱنَّهُرْ قَالُوْ الَّيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيْلٌ } وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللَّهِ الْكَانِبَ وَهُرْ يَعْلَمُونَ

৭৬. অবশ্য যে ব্যক্তি (আল্লাহর সাথে সম্পাদিত) প্রতিশ্রুতি রক্ষা করে চলে এবং (সে ব্যাপারে) সাবধানতা অবলম্বন করে, (তাদের জন্যে সুখবর হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালা সাবধানী লোকদের খুব ভালোবাসেন।

٢٦ بَلَى مَنْ أَوْنَى بِعَهْنِهِ وَاتَّقَٰى فَانَّ اللَّهَ يُحبُّ الْهُتَّقيْنَ

৭৭. (যারা নিজেদের আল্লাহর সাথে সম্পাদিত) প্রতিশ্রুতি ও শপথসমূহ সামান্য (বৈষয়িক) মূল্যে বিক্রি করে দেয়, وَ أَيْمَانِهِمْ ثَنَّنَّا قَلْيُلًّا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقً لَهُمْ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّ অংশই থাকবে না. সেদিন এদের সাথে আল্লাহ তায়ালা जश्म शाक्त ना, সোদন এদের সাথে আল্লাহ ভারাল। هنا الله و كا يَخْطُونُ الله و كَا يُكُلِّمُهُمُ اللهُ و كَا يَخْطُ

তায়ালা তাদের দিকে তাকিয়েও দেখবেন না এবং আল্লাহ তায়ালা তাদের পাক পবিত্রও করবেন না. (সত্যিই)

إِلَيْهِيرْ يَوْاً الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِيرْ مِ وَلَهُـرْ عَنَابٌ ٱلِيُرُ এদের জন্যে রয়েছে কঠোর পীড়াদায়ক আযাব। ৭৮. এদের মধ্যে এমন কিছ লোকও আছে, যারা

কেতাবের কোনো অংশ যখন পড়ে তখন নিজেদের জিহ্বাকে এমনভাবে এদিক-সেদিক করে নেয়, যাতে করতে পারো যে, সত্যি বুঝি তা কেতাবের কোনো অংশ, কিছু (আসলে) তা কেতাবের وَمَنْ عِنْكِ اللَّهِ وَمَا هُوَ بِكَاتِبِعِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْكِ اللَّهِ وَمَا هُوَ কোনো অংশই নয়, তারা আরো বলে, এটা আল্লাহর কাছ থেকেই এসেছে, কিন্তু তা আল্লাহর কাছ থেকে আসা কিছু নয়, এরা জেনে তনে আল্লাহর ওপর মিথ্যা কথা বলে চলেছে।

٨ وَإِنَّ مِنْهُرْ لَفَرِيْقًا يَّلُوَّنَ ٱلْسِنَتَهُرْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ جِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَنِبَ وهر يعلُّون

৭৯. কোনো মানব সম্ভানের পক্ষেই এটা (সম্ভব) নয় যে. আল্লাহ তায়ালা তাকে তাঁর কেতাব, প্রজ্ঞা ও নবওত দান করবেন, অতপর সে লোকদের (ডেকে) বলবে, তোমরা আল্লাহকে ছেড়ে (এখন) সবাই আমার বান্দা হয়ে যাও. বরং সে (তো নবুওতপ্রাপ্তির পর এ কথাই) বলবে, তোমরা সবাই তোমাদের মালিকের বান্দা হয়ে যাও. এটা এই কারণে যে, তোমরাই মানুষদের (এই) কেতাব শেখাচ্ছিলে এবং তোমরা নিজেরাও (তাই) অধ্যয়ন করছিলে।

44 مَا كَانَ لِبَشَرِ أَنْ يُّؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتُبَ وَالْكُكْمِ وَالنَّابُوَّةَ ثُرَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْ إ عِبَادًا لِّي مِن دُوْنِ اللَّهِ وَلَٰكِن كُوْنُوْا رَبَّانِيِّنَ بِهَا كُنْتُرْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِهَا كُنْتُم أَتُنْ رُسُونَ لا

৮০. আল্লাহর ফেরেশতা ও তাঁর নবীদের প্রতিপালকরূপে স্বীকার করে নিতে এ ব্যক্তি তোমাদের কখনো আদেশ দেবে না: একবার আল্লাহর অনুগত মুসলমান হবার পর সে কিভাবে তোমাদের পুনরায় কৃষ্বীর আদেশ দিতে পারে?

٨٠ وَلَا يَأْمُ كُو أَنْ تَتَّخْلُوا الْمَلَّنْكَةَ وَ النَّبِيِّيَ ٱرْبَابًا ﴿ آيُامُوكُمْ بِالْكُفُو بَعْنَ إِذْ أَنْتُرْ مُسْلِمُونَ ع

৮১. আল্লাহ তায়ালা যখন তাঁর নবীদের কাছ থেকে প্রতিশ্রুতি নিয়েছিলেন (তখন তিনি বলেছিলেন, এ হচ্ছে) কেতাব ও (তার ব্যবহারিক) জ্ঞান কৌশল, যা আমি তোমাদের দান করলাম, অতপর তোমাদের কাছে যখন (আমার কোনো) রসুল আসবে, যে তোমাদের কাছে রক্ষিত (আগের) কেতাবের সত্যায়ন করবে, তখন তোমরা অবশ্যই তার (আনীত বিধানের) ওপর ঈমান আনবে এবং তাকে সাহায্য করবে: আল্লাহ তায়ালা জিজ্যে করলেন, তোমরা কি এ (কথার) ওপর এ অংগীকার গ্রহণ করছো? তারা বললো, হ্যা আমরা (মেনে চলার) অংগীকার করছি: আল্লাহ তায়ালা বললেন, তাহলে তোমরা সাক্ষী থেকো এবং আমিও তোমাদের সাথে (এ অংগীকারে) সাক্ষী হয়ে রইলাম।

٨١ وَإِذْ أَغَلَ اللَّهُ مِيْثَاقَ النَّبِيِّيَ لَهَا اتَيْتُكُرْ مِّنْ كِتْبِ وَحِكْمَةٍ ثُرَّ جَاءَكُرْ رَسُولُ مُصَلَّقُ لِهَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُونَهُ عَ قَالَ ءَ ٱقْرَرْتُرْ وَ آخَنْ تُرْ عَلَى ذٰلِكُرْ إِصْرِى مَ قَالُوْ ۚ الْقَرَرْنَا ء قَالَ فَاشْهَلُوْ ۚ ا وَ أَنَا مَعَكُيرُ مِّيَ الشهرير

৮২. অতপর যারা তা ভংগ করে (এ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেবে, তারা অবশাই বিদ্রোহী (বলে পরিগণিত) হবে।

٨٢ فَهَنْ تَوَلَّى بَعْنَ ذٰلِكَ فَأُولِّئِكَ هُرُ الفسقون

৮৩. তারা কি আল্লাহর (দেয়া জীবন) ব্যবস্থার বদলে অন্য কোনো বিধানের সন্ধান করছে? অথচ আসমান فِي السَّوْتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكُرْهًا وَّإِلَيْهِ ,यभीत या किছू আছে डेल्हांग्न रहांक किश्वा अनिल्हांग्न रहांक আল্লাহ তায়ালার (বিধানের) সামনে আত্মসমর্পণ করে আছে এবং প্রত্যেককে তো তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

٨٣ اَفَغَيْرَ دِيْنَ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهَّ اَسْلَمَ مَنْ يرجعون

৩ সরা আলে ইমরান

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩ তিলকার রুসুলু |
|---|---|
| ৮৪. (হে নবী,) তুমি বলো, আমরা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছি, ঈমান এনেছি আমাদের ওপর যা নাযিল করা হয়েছে তার ওপর, ইবরাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব ও তাদের অন্যান্য বংশধরদের প্রতি যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তার ওপরও (আমরা ঈমান এনেছি), আমরা আরো ঈমান এনেছি, মৃসা, ঈসা এবং অন্যান্যীদের তাদের মালিকের পক্ষ থেকে যা কিছু দেয়া হয়েছে তার ওপরও, (আল্লাহর) এ নবীদের কারো মাঝেই আমরা কোনো ধরনের তারতম্য করি না, (মূলত) আমরা সবাই হচ্ছি আল্লাহর কাছে আত্মসমর্পণকারী (মুসলমান)। | مُ اللهِ وَمَ الْوَلْ عَلَيْنَا وَمَ الْوَلِ عَلَى الْمُولِي وَالْمُعِيْلَ وَالسَّحَٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَ الْوَتِي مُوسَى وَعِيْشَى وَالنَّبِيَّوْنَ مِنْ رَبِّهِيْرْ مِ لَا نُفَرِّقُ وَعَيْشَى اللهُ مُسْلِمُونَ اللهُ مُسْلِمُونَ اللهُ مُسْلِمُونَ اللهُ مُسْلِمُونَ |
| ৮৫. যদি কেউ ইসলাম ছাড়া (নিজের জন্যে) অন্য কোনো জীবন বিধান অনুসন্ধান করে তবে তার কাছ থেকে সে (উদ্ভাবিত) ব্যবস্থা কখনো গ্রহণ করা হবে না, পরকালে সে চরম ব্যর্থ হবে। | ٨٥ وَمَن يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَا إِدِيْنًا فَلَنَ يُقْبَلَ مِنْدُ عَ وَهُوَ فِي الْأَخِرَةِ مِنَ الْخُسِرِيْنَ |
| ৮৬. (বলো,) যারা ঈমানের (আলো পাওয়ার) পর কৃফরী করেছে, আল্পাহ তায়ালা তাদের কিভাবে (আবার আলোর) পথ প্রদর্শন করবেন, অথচ (এর আগে) এরাই সাক্ষ্য দিয়েছিলো যে, আল্পাহর রসূল সত্য এবং (এ রসূলের মাধ্যমেই) এদের কাছে উচ্ছ্রল নিদর্শনসমূহ এসেছিলো; (আসলে) আল্পাহ তায়ালা কখনো সীমালংঘনকারী ব্যক্তিদের সঠিক পথ প্রদর্শন করেন না। | ٨٦ كَيْفَ يَهْرِى الله تَوْمًا كَفَرُوا بَعْنَ الله تَوْمًا كَفَرُوا بَعْنَ الْمُهَانِهِرُ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ مَقَّ وَجَاءَهُرُ الْبَيِّنْ فَ وَالله لا يَهْرِى الْقَوْمَ الظَّلِمِينَ |
| ৮৭. এসব (সীমালংঘনজনিত) কার্যকলাপের একমাত্র প্রতিদান হিসেবে তাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা, তাঁর ফেরেশতা ও অন্য সব মানুষের অভিশাপ (বর্ষিত হবে)। | ٨ أُولَنْكَ جَزَاؤُهُرْ. أَنَّ عَلَيْهِرْ لَعْنَةَ اللهِ وَالْهَلِيْكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ٧ |
| ৮৮. (সে অভিশপ্ত স্থান হচ্ছে জাহান্নাম,) সেখানে তারা অনাদিকাল ধরে পড়ে থাকবে, (এক মুহূর্তের জন্যেও) তাদের ওপর শাস্তির মাত্রা কমানো হবে না, না আযাব থেকে তাদের (একটুখানি) বিরাম দেয়া হবে! | ٨٨ عٰلِرِيْنَ فِيْهَا ج لَا يُخَفَّفُ عَنْهُرُ الْعَنَابُ وَلَا هُر يُنْظَرُونَ ٧ |
| ৮৯. (তবে) তাদের কথা আলাদা, যারা (এসব কিছুর পর) তাওবা করেছে এবং (তারপর) নিজেদের সংশোধন | ٨٩ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ |

করে নিয়েছে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই ক্ষমাশীল ও পরম

দয়ালু। ٥٥. কিছু যারা একবার ঈমান আনার পর কুফরীর (পথ) النَّذِينَ كَفُرُوا بَعْنَ إِيمَانِهِر ثُرَّ اللَّذِينَ كَفُرُوا بَعْنَ إِيمَانِهِر ثُرَّ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّه অবলম্বন করেছে, অতপর তারা এই বেঈমানী

ه). (طان प्रिनिफ्ठ,) यात्रा आल्लार ठाग्नालाक अश्वीकात مُنْ كُفَّارٌ فَكُنْ وَا وَمُرْ كُفَّارٌ فَكُنْ وَا وَمُر كُفَّارٌ فَكُنْ وَا وَمُر كُفَّارٌ فَكُنْ وَا وَمُر كُفّارٌ فَكَنْ وَا الَّذِينَ كَفَرُوا وَمُر كُفّارٌ فَكَنْ وَا اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلْمِ عَلَيْهِ عَلَيْ যদি নিজেদের (আল্লাহর আযাব থেকে) বাঁচানোর জন্যে এক পৃথিবীপূর্ণ স্বর্ণও মুক্তিপণ হিসেবে খরচ করে, তবু وَلُوافْتَنَى بِهِ وَ أُولَٰنِكَ لَمُرْ عَنَ ابُّ أَلِيرٌ अवाই হচ্ছে সে সব (হতভাগ্য) ব্যক্তি যাদের জন্যে وَلَوافْتَنَى بِهِ وَ أُولَٰنِكَ لَمُرْ عَنَ ابُّ أَلِيرٌ রয়েছে মর্মস্তুদ আযাব, আর সেদিন তাদের কোনো সাহায্যকারীও থাকবে না।

দরবারে) তাদের তাওবা কখনো কবুল হবে না, কারণ এ

ধরনের লোকেরাই হচ্ছে পথভ্রষ্ট।

৩ সূরা আলে ইমরান

وَ ٱصْلَحُوا تِنْ فَانِ اللَّهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْرٌ

ازْدَادُوْا كُفُرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُرْ ء وَأُولَئِكَ कार्यकलाभ) िमन िमन वाफ़ार्ए (बाक्साहत وَأُولَئِكَ هُرُ الضَّالُّوْنَ

> يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْأَرْضِ نَفَبًا وَمَا لَهُمْ مِنْ نَصِرِيْنُ عَ

> > মন্যিল :



৯২. তোমরা কখনো (যথার্থ) নেকী অর্জন করতে পারবে না, যতোক্ষণ না তোমরা তোমাদের ভালোবাসার জিনিস আল্লাহর পথে ব্যয় করবে; (মূলত) তোমরা যা কিছুই ব্যয় করো, আল্লাহ তায়ালা তা জানেন।

نَ تَنَالُوا الْبِرِ حَدَّى تُنْفَقُوا مِيَّ

تُحِبُّونَ مُ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْء فَانَّ اللَّهُ بِهِ

৯৩. (আজ তোমাদের জন্যে যে) সব খাবার (হালাল করা হয়েছে তা এক সময়) বনী ইসরাঈলদের জন্যেও হালাল ছিলো. (অবশ্য) এমন (দু'একটা) জিনিস বাদে, যা তাওরাত নাযিল হওয়ার আগেই ইসরাঈল তার নিজের ওপর হারাম করে রেখেছিলো: তুমি বলো (সন্দেহ থাকলে যাও), তোমরা গিয়ে তাওরাত নিয়ে এসো এবং তা পড়ে শোনাও, যদি (তোমরা তোমাদের দাবীর ব্যাপারে) সত্যবাদী হও!

٩٣ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلَّا لِّبَنِي ٓ إِسْرَاءَيْلَ إِلَّا مَا حَرًّا إِسْرَاءِيْلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلُ التَّوْرِيةُ ، قُلْ فَأَتُوا بِالتَّوْرِيةِ فَاتْلُوْهَا إِنْ كُنْتُمْ مِنْ قِيْنَ

৯৪. যারা এরপরও আল্লাহর ওপর মিথ্যা আরোপ করে. নিসন্দেহে তারা (বড়ো) যালেম।

٩٣ فَمَنِ افْتَرْى عَلَى اللَّهِ الْكَوْبَ مِنْ ا بَعْن ذلكَ فَأُولَئكَ مُر الظُّلُمُونَ

مد. प्राम परणा, आद्वार शाबा अश्व कथा वरलहिन, مِلَّةَ إِبْرِهِيمُ अञ्चव राज्या अवार्ड निष्ठांत आंख रवतारीत्मव عَلَ مَن قَ اللَّهُ مَن فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرِهِيمَر अञ्चव राज्या अवार्ड निष्ठांत आंख रवतारीत्मव من الله من فَاتَّبِعُوا مِلَّةً إِبْرِهِيمَر अव्य ৯৫. তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালা সত্য কথা বলেছেন, অনুসরণ করো, আর ইবরাহীম কখনো (আল্লাহর সাথে) মোশরেকদের (দলে) শামিল ছিলো না।

حَنِيْفًا ﴿ وَمَا كَانَ مِنَ الْهُشُوكِيْنَ

৯৬. নিক্যুই গোটা মানব জাতির জন্যে সর্বপ্রথম যে पति वानिए त्रांचा नानप जारिक जरने जनस्यम प्य के पूर्वी पानिए वानिए नानिए नान মকা নগরীতে,) এ ঘরকে কল্যাণ মঙ্গলময় এবং (মানবকুলের) দিশারীটি বানানো হয়েছিলো।

بِبَكَّةَ مُبرَكًا وَمُلِّي لِّلْعَلَمِيْنَ ،

এখানে রয়েছে (আল্লাহ তায়ালার) সুস্পষ্ট ইবরাহীমের দাঁড়ানোর স্থান (এই ঘরের বিশেষ মর্যাদা হচ্ছে) যে এখানে প্রবেশ করবে সে (দুনিয়া আখেরাত উভয় স্থানেই) নিরাপদ (হয়ে যাবে; দ্বিতীয় মর্যাদা হচ্ছে) মানব জাতির ওপর আল্লাহর জন্যে এই দায়িত দেয়া হয়েছে যে, যে ব্যক্তিরই এ ঘর পর্যন্ত পৌছার সামর্থ থাকবে, সে যেন এই ঘরের হজ্জ আদায় করে, আর যদি কেউ (এ বিধান) অস্বীকার করে (তার জেনে রাখা উচিত), আল্লাহ তায়ালা সৃষ্টিকুলের মোটেই মুখাপেক্ষী নন।

دَهَلَهُ كَانَ أَمِنَّا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ مِجَّ الْبَيْتِ مَن اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيْلاً، وَمَنْ كَفَرَ فَانَّ اللَّهُ غَنيٌّ عَنِ الْعُلَمِينَ

৯৮. (হে নবী!) তুমি বলো, হে আহলে কেতাবরা, তামরা কেন (জেনে রুঝে) আল্লাহর আয়াত অস্বীকার بِالْيُسِ لِمَ تَكُفُرُونَ بِالْيُسِ ٩٨ قُلْ يَاهُلَ الْكِتْبِ لِمَ تَكُفُرُونَ بِالْيُسِ ٩٨ করো, অথচ তোমরা যা কিছু করো আল্লাহ তায়ালাই তার ওপর সাক্ষী।

اللَّهِ فَ وَاللَّهُ شَهِيْنٌ عَلَى مَا تَعْمَلُونَ

৯৯. তুমি (আরো) বলো, হে আহলে কেতাবরা, যারা ঈমান এনেছে তোমরা কেন তাদের আল্লাহর পথ থেকে ফেরাতে চেষ্টা করছো (এভাবেই) তোমরা (আল্লাহর) পথকে বাঁকা করতে চাও, অথচ (এই লোকদের সত্যপন্থী হবার ব্যাপারে) তোমরাই তো সাক্ষী; আল্লাহ তায়ালা তোমাদের এই সব (বিদ্রোহমূলক) আচরণ সম্পর্কে মোটেই উদাসীন নন।

٩٩ قُلْ يَآهُلَ الْكِتْبِ لِمِرَ تَصُلُّونَ عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ مَنْ أَمَىَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّٱنْتُم شُهَنَ أُواء وَمَا اللَّهُ بِغَافِل عَمَّا تَعْمَلُونَ

১০০. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো– (আগে) যাদের কেতাব দেয়া হয়েছে তোমরা যদি তাদের কোনো একটি দলের কথা মেনে চলো, তাহলে (মনে রেখো), এরা ঈমান আনার পরও (ধীরে ধীরে) তোমাদের কাফের বানিয়ে দেবে।

١٠٠ يٰأَيُّهَا الَّٰنِينَ أَمَنُوا انْ تُطِيْعُوا فَرِيْقًا مِّنَ الْأَبْنَ أُوْتُوا الْكِتْبَ يَرُدُّوْكُ

মন্যিল ১

৩ সুরা আলে ইমরান

১০১. আর তোমরা কিভাবে কুফরী করবে, যখন তোমাদের সামনে (বার বার) আল্লাহর আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হচ্ছে, তাছাড়া (এ আয়াতের বাহক রয়ং) আল্লাহর রসূল যখন তোমাদের মাঝেই মজুদ রয়েছে, যে ব্যক্তিই আল্লাহ (ও তার বিধান)-কে শক্ত করে আঁকড়ে ধরবে, সে অবশ্যই সোজা পথে পরিচালিত হবে।

اوكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُرْ تَتْلَى عَلَيْكُرْ أَنْتُل عَلَيْكُرْ أَنْتُل عَلَيْكُر أَلْتُ وَمَن يَّعْتَصِر أَلْك وَمَن يَّعْتَصِر بِاللهِ فَقَلْ هُلِى إلى صِرَاطٍ مَّسْتَقِيْرٍ ع

১০২. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, আল্লাহকে ভয় করো, ঠিক যতোটুকু ভয় তাঁকে করা উচিত, (আল্লাহর কাছে সম্পূর্ণ) আত্মসমর্পণকারী না হয়ে তোমরা কখনো মৃত্যু বরণ করো না।

١٠٢ يَا يَا يُهُا الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهُ مَقَّ تُعْتِم وَلَا تَمُوْتُنَّ إِلَّا وَاَنْتُرْ مُّسْلِمُونَ

১০৩. তোমরা সবাই মিলে আল্লাহর রশিকে শক্ত করে আঁকড়ে ধরো এবং কখনো পরস্পর বিচ্ছিন্ন হয়ো না, তোমরা তোমাদের ওপর আল্লাহর (সেই) নেরামতের কথা স্বরণ করো, যখন তোমরা একে অপরের দুশমন ছিলে, অতপর আল্লাহ তায়ালা (তাঁর দ্বীনের বন্ধন দিয়ে) তোমাদের একের জন্যে অপরের মনে ভালোবাসার সঞ্চার করে দিলেন, অতপর (যুগ যুগান্তরের শক্রতা ভূলে) তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহে একে অপরের 'ভাই' হয়ে গেলে, অথচ তোমরা ছিলে (হানাহানির) অগ্লিকুন্ডের প্রান্তসীমায়, অতপর সেখান থেকে আল্লাহ তায়ালা (তাঁর রহমত দিয়ে) তোমাদের উদ্ধার করলেন; আল্লাহ তায়ালা এভাবেই তাঁর নিদর্শনসমূহ তোমাদের কাছে স্পষ্ট করে বর্ণনা করেন, যাতে করে তোমরা সঠিক পথের সন্ধান পেতে পারো।

১০৪. তোমাদের মধ্য থেকে এমন একটি দল থাকা উচিত, যারা (মানুষদের কল্যাণের দিকে ডাকবে, সত্য ও) ন্যায়ের আদেশ দেবে, আর (অসত্য ও) অন্যায় কাজ থেকে (তাদের) বিরত রাখবে; (সত্যিকার অর্থে) এরাই হচ্ছে সাফল্যমন্ডিত।

১০৫. তোমরা (কখনো) তাদের মতো হয়ে যেয়ো না, যাদের কাছে আল্লাহর পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট নিদর্শন আসার পরও তারা বিভিন্ন দলে উপদলে বিভক্ত হয়ে পড়েছে এবং (নিজেদের মধ্যে) নানা ধরনের মতানৈক্য সৃষ্টি করেছে; এরাই হচ্ছে সে সব মানুষ যাদের জন্যে কঠোর শান্তি রয়েছে।

ا وَلا تَكُوْلُوا كَالَّالِيْنَ تَفَوَّقُوا وَاهْتَلَقُوا مِنْ بَعْلِ مَا جَاءَمُرُ الْبَيِّنْتُ وَالوَلْئِكَ لَهُر عَلَى الْبَيِّنْتُ وَالْئِكَ لَهُر عَلَى الْبَيِّنْتُ وَالْئِكَ لَهُر عَلَى اللهُر عَظِيرٌ لا

১০৬. সে (কেয়ামতের) দিন (নিজেদের নেক আমল দেখে) কিছু সংখ্যক চেহারা শুল্র সমুজ্জ্বল হয়ে যাবে, (আবার) কিছু সংখ্যক মানুষের চেহারা (ব্যর্থতার নিথপত্র দেখার পর) কালো (ও বিশ্রী) হয়ে পড়বে, (হাঁ) যাদের মুখ (সেদিন) কালো হয়ে যাবে (জাহান্নামের প্রহরীরা তাদের জিজ্ঞেস করবে), ঈমানের (নেয়ামত পাওয়ার) পরও কি তোমরা কৃফরীর পথ অবলম্বন করেছিলে? অতপর তোমরা নিজেদের কৃফরীর প্রতিফল (হিসেবে) এ আযাব উপভোগ করতে খাকো!

١٠٦ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وَجُوهٌ وَّتَسُودٌ وَجُوهٌ ج فَامًّا النَّالِيْنَ السُودِّتِ وَجُوهُم بَعْنَ النَّالِيْنَ السُودِّتِ وَجُوهُم رَنَّ اكْفَرْتُم بَعْنَ النِّيْنَ السُودِّتِ وَجُوهُم رَنْ اكْفَرْتُم بَعْنَ الْمَانِكُم فَنُ وَتُوا الْعَنَابَ بِهَا كُنْتُم تَكُفُرُونَ تَكْفُرُونَ

১০৭. আর যাদের চেহারা আলোকোজ্জ্বল হবে, তারা (সেদিন) আল্লাহ তায়ালার (অফুরন্ত) দয়ার আশ্রয়ে থাকবে, তারা সেখানে থাকবে চিরদিন।

ا وَأَمَّا الَّانِينَ ابْيَضَّتُ وُجُوْهُمُرْ فَغِي رَحْهَةِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اله

৩ সূরা আলে ইমরান

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৪ লান্তানালু

১০৮. এর সব কিছুই হচ্ছে আল্লাহর নিদর্শন, যথাযথভাবে আমি সেগুলো তোমাকে পড়ে শোনাচ্ছি; কেননা আল্লাহ তারালা (তাঁর আয়াতসমূহ গোপন রেখে এবং পরে সে জন্যে শান্তির বিধান করে) সৃষ্টিকুলের ওপর কোনো যুলুম করতে চান না।

الله يُرِينُ طُلْمًا لِللهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ،
 وَمَا الله يُرِينُ طُلْمًا لِللهَالِينَ

১০৯. (মূলত) আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহর জন্যে; সব কিছুকে একদিন আল্লাহর দিকেই ফিরিয়ে দেয়া হবে।

١٠٩ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّاوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْاَمُورُع

১১০. তোমরাই (হচ্ছো দুনিয়ার) সর্বোত্তম জাতি, সমগ্র
মানব জাতির (কল্যাণের) জন্যেই তোমাদের বের করে
আনা হয়েছে, (তোমাদের দায়িত্ব হচ্ছে) তোমরা দুনিয়ার
মানুষদের সৎ কাজের আদেশ দেবে এবং অসৎ কাজ
থেকে বিরত রাখবে, আর তোমরা নিজেরাও আল্লাহর
ওপর (পুরোপুরি) ঈমান আনবে, আহলে কেতাবরা যদি
(সত্যি সত্যিই) ঈমান আনতো তাহলে এটা তাদের জন্যে
কতোই না ভালো হতো; তাদের মধ্যে কিছু কিছু
ঈমানদার ব্যক্তিও রয়েছে, তবে তাদের অধিকাংশই হচ্ছে
সত্যত্যাগী লোক।

١١٠ كُنْتُرْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَامُرُوْنَ فِي الْمُنْكَرِ تَامُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتَوْمَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُوْمِنُوْنَ أَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُرْ ﴿ مِنْهُرُ الْمُؤْمِنُونَ وَاكْثَرُهُرُ الْمُؤْمِنُونَ وَاكْثَرُهُرُ الْفُسِقُونَ

১১১. সামান্য কিছু দুঃখ কষ্ট দেয়া ছাড়া তারা তোমাদের কখনো কোনো ক্ষতি করতে পারবে না, তারা যদি কোনো সময় তোমাদের সাথে সমুখসমরে লিপ্ত হয়, তাহলে তারা পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে, অতপর তাদের কোনো রকম সাহায্য করা হবে না। ١١١ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ إِلَّا اَدًى ۚ وَإِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْإَدْبَارَ ع ثُمَّ لَا يُنْصَرُّونَ

১১২. যেখানেই এদের পাওয়া যাবে সেখানেই এদের অপমানিত ও লাঞ্ছিত করে রাখা হবে, তবে আল্লাহ তায়ালার নিজের প্রতিশ্রুতি ও মানুষের প্রতিশ্রুতি (-র মাধ্যমে কিছুটা নিরাপত্তা পাওয়া গেলে সেটা) ভিন্ন, এরা (আল্লাহর ক্রোধ ও) গযবের পাত্র হয়েছে, এদের ওপর দারিদ্র ও লাঞ্ছনা চাপিয়ে দেয়া হয়েছে। এর কারণ ছিলো, এরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর বিধানকে অস্বীকার করেছে, (আল্লাহর) নবীদের এরা অন্যায়ভাবে হত্যা করেছে; (মূলত) এ হচ্ছে তাদের বিদ্রোহ ও সীমালংঘনের ফল।

ال ضُرِبَتُ عَلَيْهِرُ النِّلَّةُ آيْنَ مَا ثُقِفُوْآ إِلَّا بِحَبْلِ مِّنَ النَّاسِ وَبَاءُوْ بِحَبْلِ مِّنَ النَّاسِ وَبَاءُوْ بِغَضَبِ مِّنَ اللَّهِ وَضُرِبَتُ علَيْهِرُ الْمَسْكَنَةُ ، بِغَضَبِ مِّنَ اللَّهِ وَضُرِبَتُ علَيْهِرُ الْمَسْكَنَةُ ، ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ كَانُوْا يَكْفُرُونَ بِأَيْسِ اللَّهِ وَيَقْتَلُونَ بَايْسِ اللهِ وَيَقْتَلُونَ الْاَثْمِينَاءُ بِغَيْرٍ مَقِيِّ، ذَٰلِكَ بِهَا عَصُوْا وَكَانُوا يَعْتَلُونَ ق

১১৩. তারা (আহলে কেতাব) আবার সবাই এক রকম নয়, তাদের মধ্যে এমন কিছু লোকও আছে; যারা (সত্য ও ন্যায়ের ওপর অবিচল হয়ে) দাঁড়িয়ে আছে, যারা সারা রাত আল্লাহর কেতাব পাঠ করে এবং নামায পডে।

١١٣ لَيْسُوْا سَوَآءً ، مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ أَسَّةً قَانِهَةً يَّتُلُوْنَ أَيْسِ اللهِ أَنَّاءَ الَّيْلِ وَهُرْ يَشْجُلُوْنَ

১১৪. তারা আল্লাহ তায়ালা ও শেষ বিচার দিনের ওপর ঈমান রাখে এবং (মানুষদের) তারা ন্যায় কাজের আদেশ দেয় ও অন্যায় কাজ থেকে নিষেধ করে, সংকাজে এরা প্রতিযোগিতা করে, এ (ধরনের) মানুষরাই হচ্ছে (মূলত) নেক লোকদের অন্তর্ভুক্ত।

١١٣ يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالْيَوْاِ الْأَخِرِ وَيَأْمُرُونَ
 بِالْمَغْرُونِ وَيَنْمَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ
 فِي الْخَيْرُتِ ، وَأُولَٰئِكَ مِنَ السَّلِحِيْنَ

১১৫. তারা যা কিছু ভালো কাজ করবে (প্রতিদান দেয়ার সময়) তা কখনো অস্বীকার করা হবে না; (কারণ) আল্লাহ তায়ালা পরহেযগার লোকদের ভালো করেই জানেন। ١١٥ وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يَّكْفَرُوهُ ٠ وَاللَّهُ عَلِيْرٍ ۚ بِالْهُتَّقِيْنَ

৩ সূরা আলে ইমরান

১১৬. (একথা) সুনিশ্চিত, যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে, তাদের ধন সম্পদ, সন্তান সন্ততি আল্লাহ ोें وَكُو الْهُمْرُ وَكُمْ اَوْكُودُهُمْرُ مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ، তाद्यालात स्पाकात्वलाय তात्मत काताहे छे अकात्त आजत्त না; বরং তারা হবে (নিশ্চিত) জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে অনন্তকাল তারা পড়ে থাকবে।

১১৭. এ (ধরনের) লোকেরা এ দুনিয়ার জীবনে যা খরচ করে, তার উদাহরণ হচ্ছে, যারা নিজেদের ওপর অবিচার করেছে সেই দলের শস্যক্ষেত্রের ওপর দিয়ে প্রবাহমান হীমশীতল (তীব্র) বাতাসের মতো, যা (তাদের শস্যক্ষেত) বরবাদ করে দিয়ে গেলো; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর কোনোই অবিচার করেননি: বরং (কুফরীর পন্থা অবলম্বন করে) এরা নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করেছে।

১১৮. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা কখনো নিজেদের (দলভুক্ত) লোকজন ছাড়া অন্য কাউকে নিজেদের (অন্তরংগ) বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করো না, কেননা এরা তোমাদের অনিষ্ট সাধনের কোনো পথই অনুসরণ করতে দ্বিধা করবে না. তারা তো তোমাদের ক্ষতি (ও ধ্বংস)-ই बामना करत, তाप्तत (अधना) প্রতিহিংসা ও (বিषেষ) है مِن أَفُو أَهِمِرُ عَ تَنْ بَنَ سِ الْبَغْضَاءُ مِن أَفُو أَهِمِرُ عَ তাদের মুখ থেকেই (এখন) প্রকাশ পেতে শুরু করেছে. অবশ্য তাদের অন্তরে লুকানো হিংসা (ও বিদ্বেষ) বাইরের অবস্তার চাইতেও মারাত্মক, আমি সব ধরনের নিদর্শনই তোমাদের সামনে খোলাখুলি বলে দিচ্ছি, তোমাদের যদি সত্যিই জ্ঞানবৃদ্ধি থাকে (তাহলে তোমরা এ সম্পর্কে সতর্ক হতে পারবে) :

১১৯, এরা হচ্ছে সেসব মানুষ, যাদের তোমরা ভালোবাসো; কিন্তু তারা তোমাদের (মোটেই) ভালোবাসে না, তোমরা তো (তোমাদের আগে আমার নাযিল করা) সব কয়টি কেতাবের ওপরও ঈমান আনো (আর তারা তো তোমাদের কেতাবকে বিশ্বাসই করে না), এ (মোনাফেক) লোকগুলো যখন তোমাদের সাথে সাক্ষাত করে তখন বলে, হ্যা, আমরা (তোমাদের কেতাবকৈ) মানি, আবার যখন এরা একান্তে (নিজেদের লোকদের কাছে) চলে যায়, তখন নিজেদের ক্রোধের বশবর্তী হয়ে এরা তোমাদের (সাফল্যের) ওপর (নিজেদের) আংগুল কামড়াতে গুরু করে; তুমি (তাদের) বলো, যাও, নিজেদের ক্রোধের (আগুনে) নিজেরাই (পুড়ে) মরো. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (এ মোনাফেকদের) মনের ভেতর লুকিয়ে থাকা যাবতীয় (চক্রান্তমূলক) বিষয় সম্পর্কে সম্যক অবগত আছেন।

১২০. (তাদের অবস্থা হচ্ছে,) তোমাদের কোনো কল্যাণ হলে (তার কারণে) তাদের খারাপ লাগে, আবার তোমাদের কোনো অকল্যাণ দেখলে তারা আনন্দে ফেটে পড়ে: (এ প্রতিকৃল অবস্থায়) যদি তোমরা ধৈর্য ধারণ করতে পারো এবং নিজেরা সাবধান হয়ে চলতে পারো, তাহলে তাদের চক্রান্ত (ও ষড়যন্ত্র) তোমাদের কিছুই ক্ষতি করতে পারবে না: নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা তাদের যাবতীয় কর্মকান্ড পরিবেষ্টন করে আছেন।

১২১. (হে নবী, স্বরণ করো,) যখন তুমি (খুব) ভোরবেলায় তোমার আপনজনের কাছ থেকে বিদায় নিয়ে

৩ সুরা আলে ইমরান

١١٦ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُم وَأُولَٰئِكَ أَسْحُٰبُ النَّارِجِ مُرْفِيْهَا خُلِرُوْنَ ١١٤ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ مٰٰنِهِ الْحَيٰوةِ النُّّنْيَا كَهَثَلِ رِيْعٍ فِيْهَا مِرٍّ أَمَابَتْ مَرْثَ قَوْمَ ظَلَهُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْكُ م وَمَا ظَلَهُمْ

١١٨ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا لَا تَتَّخِلُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنكُرْ لَا يَٱلُوْنَكُرْ خَبَالًا ﴿ وَدُّوْا مَا وَمَا تُخْفِي مُنُ وُرُهُمْ أَكْبَرُ اللَّهِ لَكُمُ لَكُمُ اللَّهُ الأيب إنْ كُنْتُرْ تَعْقلُوْنَ

اللهُ وَلَكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلُمُوْنَ

١١٩ مَانْتُرْ ٱولَاءِ تُحِبُّوْنَهُرْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُرْ وَتُوْمِنُوْنَ بِالْكِتْبِ كُلَّهِ جِ وَإِذَا لَقُوْكُرْ قَالُوْ ۚ أُمَنَّا ۚ ﴿ وَإِذَا خَلُوا عَضُّوا عَلَيْكُمْ الْإَنَامِلَ مِنَ الْفَيْظِ مِ قُلْ مُوْتُوا بِغَيْظِكُم م إِنَّ اللَّهَ عَلِيْرٌ بِنَ اسِ الصُّهُ وْر

١٢٠ ان تَهْسَكُرْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُرْ زِ وَانَ تُصِبْكُمْ سَيِّنَةً يَّفْرَحُوا بِهَا ١ وَإِنْ تَصْبِرُوْا و تَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُرْ كَيْنُ هُرْ شَيْئًا ١ أَنَّ اللَّهُ بِهَا يَعْهَلُوْنَ مُحَيْطً ع

ا ١٢ وَ إِذْ غَلَ وْسَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৪ লান্তানালু |
|--|---|
| মোমেনদের যুদ্ধের ঘাটিসমূহে মোতায়েন করছিলে (তখন তুমি জানতে), আল্লাহ তায়ালা সব কিছু শোনেন এবং (তাঁর বান্দাদের) তিনি ভালো করেই জানেন। | مَقَاعِنَ لِلْقِتَالِ ﴿ وَ اللَّهُ سَمِيْعٌ عَلِيْرٌ لا |
| ১২২. (বিশেষ করে সেই নাযুক পরিস্থিতিতে) যখন তোমাদের দু'টো দল মনোবল হারিয়ে ফেলার উপক্রম করে ফেলেছিলো, (তখন) আল্লাহ তায়ালাই তাদের উভয় দলের (সেই ভগ্ন মনোবল জোড়া লাগাবার কাজে) অভিভাবক হিসেবে মজুদ ছিলেন, আর আল্লাহর ওপর যারা ঈমান আনে তাদের তো (সর্বাবস্থায়) তাঁর ওপরই ভরসা করা উচিত। | الله وَلَيَّهُمَا ﴿ وَعَلَى اللهِ فَلْيَتُوكُلِ وَاللهُ فَلْيَتُوكُّلِ وَاللهُ وَلَيْتُوكُّلِ اللهِ فَلْيَتُوكُّلِ اللهِ فَلْيَتُوكُّلِ الْهُوْمِنُوْنَ |
| ১২৩. (এই ভরসা করার কারণেই) বদরের (যুদ্ধে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের বিজয় ও সাহায্য দান করেছিলেন, অথচ (তোমরা জানো) তোমরা কতো দুর্বল ছিলে; অতএব আল্লাহকে ভয় করো, আশা করা যায় তোমরা (আল্লাহর) কৃতজ্ঞতা আদায় করতে সক্ষম হবে। | ١٢٣ وَلَقَنْ نَصَرَكُمُ اللّهُ بِبَنْ رِوْ آَنْتُمْ أَذِلَّةً عَ فَاتَّقُوا اللّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ |
| ১২৪. (সে মুহূর্তের কথাও শ্বরণ করো,) যখন তুমি মোমেনদের বলছিলে, (যুদ্ধে বিজয় লাভ করার জন্যে) তোমাদের মালিক যদি আসমান থেকে তিন হাজার ফেরেশতা পাঠিয়ে তোমাদের সাহায্য করেন, তাহলে তোমাদের (বিজয়ের জন্যে তা কি) যথেষ্ট হবে নাঃ | ۱۲۳ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيكُمْ اَنْ يَّكْفِيكُمْ اَنْ يَّكْفِيكُمْ اَنْ يَّكِفِيكُمْ اَنْ يَّكِفِيكُمْ الْمُلَّئِكَةِ يَّنِ الْمُلَّئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ الْمُلَّئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ الْمُلَّئِكَةِ |
| ১২৫. অবশ্যই তোমরা যদি ধৈর্য ধারণ করো এবং (শয়তানের চক্রান্ত থেকে) বেঁচে থাকতে পারো, এ অবস্থায় তারা (শক্রবাহিনী) যদি তোমাদের ওপর দ্রুত গতিতে আক্রমণ করে বসে তাহলে তোমাদের মালিক (প্রয়োজনে) পাঁচ হাজার চিহ্নিত ফেরেশতা দিয়েও তোমাদের সাহায্য করবেন। | ۱۲۵ بَلِّى لا إِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاتُوْكُرْ مِّنْ فَوْرِهِرْ هٰنَا يُمْنِدْكُرْ رَبَّكُرْ بِخَبْسَةِ الْفِ مِّنَ الْمَلْئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ |
| ১২৬. (আসলে) এ সংখ্যাটা (বলে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে একটি সুসংবাদ দিয়েছেন, (নতুবা বিজয়ের জন্যে তো তিনি একাই যথেষ্ট, আল্লাহ তায়ালা চেয়েছেন) যেন এর ফলে তোমাদের মন (কিছুটা) প্রশাম্ভ (ও আশ্বস্ত) হতে পারে, আর সাহায্য ও বিজয়! তা তো পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময় আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকেই আসে, তিনিই সর্বজ্ঞ। | الله الله الله الله الله الله الله الله |
| ১২৭. আল্লাহ তায়ালা এর দ্বারা কাম্পেরদের এক দলকে নিশ্চিহ্ন করে দিতে চান, অথবা তাদের একাংশকে তিনি এর মাধ্যমে লাঞ্ছিত করে দিতে চান, যেন তারা ব্যর্থ হয়ে (যুদ্ধের ময়দান থেকে) ফিরে যায়। | ۱۲۷ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيثَنَ كَفَرُوْآ اَوْ يَكْبِتَهُرْ فَيَنْقَلِبُوْا خَالِبِيْنَ |
| ১২৮. (হে নবী), এ ব্যাপারে তোমার কিছুই করার নেই, আল্লাহ তায়ালা চাইলে তাদের ওপর দয়াপরবশ হবেন কিংবা তিনি চাইলে তাদের কঠোর শাস্তি দেবেন, কেননা এরা ছিলো (স্পষ্টত) যালেম। | ١٢٨ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِرْ أَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِرْ أَوْ يُعَنِّ بَهُرْ فَإِنَّهُرْ ظَلِبُوْنَ |
| ১২৯. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তার সব হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার, তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে দেবেন, যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেবেন; আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত | المَّا وَلِلَّهِ مَا فِي السَّاوِٰ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَا وَيُعَالِّبُ مَنْ يَّشَاءُ وَاللَّهُ |

১৩০. হে মানুষ, তোমরা যারা (ইসলামকে একটি পূর্ণাংগ آمُنُوا الرِّبوا الرِبوا الرَبوا الرّبوا الرّبوا الرّبولو الرّ

ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

৩ সূরা আলে ইমরান

| | - |
|---|---|
| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৪ লান্তানালু |
| খেয়ো না এবং তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, | أَضْعَافًا مُّضْعَفَةً م وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ |
| আশা করা যায় তোমরা সফল হতে পারবে। | تُفْلِحُونَ ج |
| | |
| ১৩১. (জাহানামের) আগুনকে তোমরা ভয় করো, যা | ١٣١ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيَّ ٱعِنَّتْ لِلْكُفِرِيْنَ ، |
| তৈরী করে রাখা হয়েছে তাদের জন্যে– যারা (একে) | |
| অস্বীকার করেছে, | |
| ১৩২. তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও (তাঁর) রসূলের কথা মেনে চলো, আশা করা যায় তোমাদের ওপর দয়া করা | ١٣٢ وَأَطِيْعُوا اللَّهُ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ |
| रहर । | تُرْحَمُونَ عَ |
| ১৩৩. তোমরা তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে ক্ষমা | |
| পাওয়ার কাজে প্রতিযোগিতা করো, আর সেই জান্নাতের | ١٣٣ وَسَارِعُواۤ إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِكُمْ وَجَنَّةٍ |
| জন্যেও (প্রতিযোগিতা করো) যার প্রশস্ততা আকাশ ও পৃথিবী সমান, আর এই (বিশাল) জান্নাত প্রস্তুত করে | عَرْضُهَا السَّمٰوٰ اللهِ وَالْإَرْضُ لا أُعِنَّا اللهِ |
| রাখা হয়েছে সে সব (ভাগ্যবান) লোকদের জন্যে, যারা | |
| আল্লাহকে ভয় করে, | لِلْمُتَّقِيْنَ ٧ |
| ১৩৪. সচ্ছল হোক কিংবা অসচ্ছল– সর্বাবস্থায় যারা | ١٣٢ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّوَّاءِ وَالضَّرَّاءِ |
| (আল্লাহর পথে) নিজেদের ধন-সম্পদ ব্যয় করে, যারা নিজেদের ক্রোধ সংবরণ করে এবং মানুষের অপরাধসমূহ | |
| যারা ক্ষমা করে দেয়; (আসলে) ভালো মানুষদের আল্লাহ | وَالْكُظِهِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ا |
| তায়ালা (হামেশাই) ভালোবাসেন। | وَ اللَّهُ يُحِبُّ الْهُحُسِنِينَ عَ |
| ১৩৫. (ভালো মানুষ হচ্ছে তারা,) যারা- যখন কোনো | ١٣٥ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوْآ |
| অশ্লীল কাজ করে ফেলে কিংবা (এর দ্বারা) নিজেদের ওপর নিজেরা যুলুম করে ফেলে (সাথে সাথেই) তারা | |
| আল্লাহকে শ্বরণ করে এবং গুনাহের জন্যে (আল্লাহর) | ٱنْفُسَمُرْ ذَكَرُوا اللهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِنُكُوبِهِرْ عَيْ |
| ক্ষমা প্রার্থনা করে। কেননা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কে আছে যে তাদের গুনাহ মাফ করে দিতে পারে? (তদুপরি) | وَمَن يَّغْفِرُ النَّانُوْبَ إِلَّا اللهُ م وَلَمِ |
| এরা জেনে বুঝে নিজেদের গুনাহের ওপর অটল হয়েও | |
| বসে থাকে না । | يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوْا وَهُرْ يَعْلَمُوْنَ |
| ১৩৬, এই (সে বৈশিষ্ট্যমন্ডিত) মানুষগুলো! মালিকের পক্ষ থেকে তাদের প্রতিদান হবে, আল্লাহ তায়ালা তাদের ক্ষমা | ١٣٦ أُولَئِكَ جَزَاوُهُمْ مَّغْفِرةً مِنْ رَبِهِمْ |
| করে দেবেন, আর (তাদের) এমন এক জানাত (দেবেন) | |
| যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা বইতে থাকবে, সেখার্নে | وَجَنَّتُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ خُلِدِيْنَ |
| (নেককার) লোকেরা অনস্তকাল ধরে অবস্থান করবে। (সৎ) কর্মশীল ব্যক্তিদের জন্যে (আল্লাহর পক্ষ থেকে) | فِيْهَا وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَيِلِيْنَ ا |
| কতো সুন্দর প্রতিদানের ব্যবস্থা রাখা হয়েছে! | ريه رر هر۱۰۰ وريق |
| ১৩৭. তোমাদের আগেুও (বহু জাতির) বহু উদাহরণ | ١٣٤ قَلَ خَلَتُ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنَ لا فَسِيْرُوْا |
| (ছিলো- যা এখন) অতীত হয়ে গেছে, সুতরাং (এদের পরিণতি দেখার জন্যে) তোমরা পৃথিবীতে ঘুরে বেড়াও | |
| এবং দেখো, (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর বিধান) মিথ্যা | |
| প্রতিপন্নকারীদের পরিণতি কি হয়েছিলো! | المكليبين |
| ১৩৮. (বস্তুত) এটি হচ্ছে মানব জাতির জন্যে একটি (সুস্পষ্ট) ব্যাখ্যা এবং আল্লাহ তায়ালাকে যারা ভয় করে | ١٣٨ هٰذَا بَيَانً لِلنَّاسِ وَهُدِّي وَّمُوعِظَةً |
| এটি তাদের জন্যে একটি সুস্পষ্ট পথনির্দেশ ও সদুপদেশ | . А Шеаш |
| (বৈ কিছুই নয়)। | لِلْهَتْقِينَ |
| ১৩৯. তোমরা হতোদ্যম হয়ো না, চিন্তিত হয়ো না, | ''' '' '' '' '' ''' ''' ''' ''' '''' '''' |
| তোমরা যদি (সত্যিকার অর্থে) ঈমানদার হও তাহলে তোমরাই বিজয়ী হবে। | |
| | الْأَعْلُوْنَ إِنْ كُنْتُرْ مَّوْمِنِيْنَ |
| ৩ সূরা আলে ইমরান ৬৭ | মন্যিল ১ |

১৪০. তোমাদের ওপর যদি (কোনো সাময়িক) আঘাত আসে (এতে মনোক্ষ্ণ হবার কি আছে), এ ধরনের আঘাত তো (সে) দলের ওপরও এসেছে, আর (এভাবেই) আমি মানুষের মাঝে (তাদের উত্থান পতনের) দিনগুলোকে পালাক্রমে অদল-বদল করাতে থাকি, যাতে করে আল্লাহ তায়ালা (এ কথাটা) জেনে নিতে পারেন যে, কে (সত্যিকার অর্থে) আল্লাহর ওপর ঈমান রাখে এবং (এর মাধ্যমে) তোমাদের মাঝখান থেকে কিছু 'শহীদ'ও আল্লাহ তায়ালা তুলে নিতে চান, (মূলত) আল্লাহ তায়ালা কখনো যালেমদের পছন্দ করেন না।

١٣٠ إِنْ يَبْهَسَكُرْ قَرْحٌ فَقَلْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّ الْكَدُ مَ وَتِلْكَ الْأَيْامُ نُلَا وِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ عَ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِيْنَ الْمَنُوا وَيَتَّخِنَ مِنْكُرْ شُهَلَآء مَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّلِمِيْنَ لا يُحِبُّ الظَّلِمِيْنَ لا

১৪১. (এর মাধ্যমে তিনি মূলত) ঈমানদার বান্দাদের পরিশুদ্ধ করে কাফেরদের নাস্তানাবুদ করে দিতে চান। ١٣١ وَلِيُهَجِّسَ اللَّهُ الَّانِيْنَ أَمَنُوْا وَيَهُحَقَ الْكُفِرِيْنَ

১৪২. তোমরা কি মনে করো তোমরা (এমনি এমনি) বেহেশতে প্রবেশ করে যাবে, অথচ আল্লাহ তায়ালা (পরীক্ষার মাধ্যমে) এ কথা জেনে নেবেন না যে, কে (তাঁর পথে) জেহাদ করতে প্রস্তুত হয়েছে এবং কে (বিপদে) কঠোর ধৈর্য ধারণ করতে পেরেছে!

١٣٢ أَا مَسِبْتُمْ أَنْ تَنْهُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمُ الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمُ اللهُ الَّذِينَ جَهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّبِرِيْنَ

১৪৩. তোমরা মৃত্যুর মুখোমুখি হওয়ার আগে থেকেই তা কামনা করছিলে, আর (এখন) তো তা দেখতেই পাচ্ছো, দেখতে পাচ্ছো তোমরা নিজেদের (চর্ম) চোখে।

١٣٣ وَلَقَلْ كُنْتُر ۚ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ مِ فَقَلْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُر ۚ تَنْظُرُونَ ع

১৪৪. মোহাম্মদ একজন রসূল ছাড়া (অতিরিক্ত) কিছুই নয়, তার আগেও বহু রসূল গত হয়ে গেছে (এবং তারা সবাই মৃত্যুমুখে পতিত হয়েছে); তাই সে যদি (আজ) মরে যায় অথবা তাকে যদি কেউ মেরে ফেলে, তাহলে তোমরা কি (তার আনীত হেদায়াত থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেবে? আর যে ব্যক্তিই (এ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয়, সেকখনো আল্লাহর (ম্বীনের) কোনোরকম ক্ষতি সাধন করতে পারবে না, আল্লাহ তায়ালা অচিরেই কৃতক্ত বান্দাদের প্রতিফল দান করবেন।

٣٣ وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ عَنَ غَلَتَ مِنَ الْعَلَتَ مِنَ الْعَلَتَ مِنَ قَبْلِهِ الرَّسُلُ الْقَلَبْتُرُ عَلَى الْقَلَبْتُرُ عَلَى الْقَلَبْتُرُ عَلَى عَقِبَيْهِ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَى أَنْقَلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَى أَنْقَلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَى أَنْقَلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَى أَنْقَلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَى أَنْقَلْ اللهَ وَسَيَجُزِى اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ

১৪৫. কোনো প্রাণীই আল্লাহর (সিদ্ধান্ত ও) অনুমতি ছাড়া মরবে না, (আল্লাহ তায়ালার কাছে প্রত্যেকটি প্রাণীরই মৃত্যুর) দিনক্ষণ সুনির্দিষ্ট (হয়ে আছে,) যে ব্যক্তি পার্থিব পুরস্কারের প্রত্যাশা করে আমি তাকে (এ দুনিয়াতেই) তার কিছু অংশ দান করবো, আর যে ব্যক্তি আখেরাতের পুরস্কারের ইচ্ছা পোষণ করবে আমি তাকে সে (চিরন্তন পাওনা) থেকেই এর প্রতিফল দান করবো এবং অচিরেই আমি (আমার প্রতি) কৃতজ্ঞদের (যথার্থ) প্রতিফল দান করবো।

۵۲۱ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوْتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتْبًا مُّؤَجَّلًا وَمَن يُرِدْ ثَوَابَ النَّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا عَ وَمَن يُرِدْ ثَوَابَ الْأَخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا عَ وَمَن يُرِدْ ثَوَابَ الْأَخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ء وَسَنَجْزِى الشَّكِرِيْنَ

১৪৬. (আল্লাহর) আরো অনেক নবীই (এখানে এসে) ছিলো, সে নবী (আল্লাহর পথে) যুদ্ধ করেছে, তার সাথে (আরো যুদ্ধ করেছে) অনেক সাধক (ও জ্ঞানবান) ব্যক্তি, আল্লাহর পথে তাদের ওপর যতো বিপদ-মসিবতই এসেছে তাতে (কোনোদিনই) তারা হতাশ হয়ে পড়েনি, তারা দুর্বলও হয়নি, (বাতিলের সামনে তারা) মাথাও নত করেনি, (এ ধরনের) ধৈর্যশীল ব্যক্তিদেরই আল্লাহ তায়ালা ভালোবাসেন।

١٣٦ وَكَأَيِّنْ مِّنْ نَّبِي قَتْلَ لا مَعَدَّ رِبِّيُّوْنَ كَثِيرٌ عَنَالَ لا مَعَدَّ رِبِّيُّوْنَ كَثِيرٌ عَنَا وَمَنُوْا لِمَّا أَمَابَهُر فِي سَبِيْلِ اللهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا وَالله يُحِبُّ الصِّبِرِيْنَ

৩ সরা আলে ইমরান

4

১৪৭, তাদের (মুখে) এছাডা অন্য কথা ছিলো না যে, তারা বলছিলো, হে আমাদের মালিক, তমি আমাদের যাবতীয় গুনাহখাতা মাফ করে দাও, আমাদের কাজকর্মের সব বাডাবাডি তুমি ক্ষমা করে দাও এবং (বাতিলের মোকাবেলায়) তুমি আমাদের কদমগুলোকে মযবুত রাখো, হক ও বাতিলের (সম্মুখসমরে) কাফেরদের ওপর তুমি আমাদের বিজয় দাও।

١٣٤ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوْا رَبُّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي ٓ أَمْرِنَا وَتُبِّتْ أَتْنَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْرِ الكفويي

১৪৮. অতপর আল্লাহ তায়ালা এই (নেক) বান্দাদের দুনিয়ার জীবনেও (ভালো) প্রতিফল দিয়েছেন এবং প্রকালীন জীবনেও তিনি তাদের উত্তম পুরস্কার দিয়েছেন: আল্লাহ তায়ালা নেককার বান্দাদের ভালোবাসেন।

١٣٨ فَالنَّهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ النُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْأَخِرَةِ ، وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ع

১৪৯. হে মানুষ, তোমরা যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান এনেছো, তোমরা যদি (কথায় কথায়) এ কাফেরদের অনুসরণ করতে ওক করো, তাহলে এরা তোমাদের (ঈমান) পূর্ববর্তী (জাহেলিয়াতের) অবস্থায় ফিরিয়ে নিয়ে যাবে, ফলে তোমরা নিদারুণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে পডবে।

١٣٩ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْ ٓ إِنْ تُطِيْعُوا الَّذِينَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا

১৫০. আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন তোমাদের একমাত্র (রক্ষক ও) অভিভাবক এবং তিনিই হচ্ছেন তোমাদের উত্তম সাহায্যকারী ।

١٥٠ بَلِ اللَّهُ مَوْلُنكُرْج وَهُوَ غَيْرٌ النَّصِرِيْنَ

১৫১, অচিরেই আমি এ কাফেরদের অন্তরে ভীতি সঞ্চার করে দেবো, কারণ তারা আল্লাহর সাথে অন্যদের শরীক (বানিয়ে তাদের অনুসরণ) করেছে, অথচ তাদের এ কাজের সপক্ষে আল্লাহ তায়ালা কোনো দলীল-প্রমাণ (তাদের কাছে) পাঠাননি, এদের শেষ গন্তব্যস্তল হচ্ছে (জাহান্নামের) আগুন: যালেমদের বাসস্থান (এই) জাহানাম কতো নিকষ্ট!

١٥١ سَنُلْقِي فِي تُلُوْبِ النَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِهَا ٓ اَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلُ بِهِ سُلْطَنًا ج وَمَاْوْنِهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى

১৫২. (ওহুদের ময়দানে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে (সাহায্য দেয়ার) প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন, তা তিনি পালন করেছেন, (যুদ্ধের প্রথম দিকে) তোমরা আল্লাহর অনুমতি (ও সাহায্য) নিয়ে তাদের নির্মল করে যাচ্ছিলে! পরে যখন তোমরা সাহস (ও মনোবল) হারিয়ে ফেললে এবং (আল্লাহর রসলের বিশেষ একটি) আদেশ পালনের ব্যাপারে মতপার্থক্য শুরু করে দিলে, এমনকি আল্লাহর রসল যখন তোমাদের ভালোবাসার সেই জিনিস (তথা আসনু বিজয়) দেখিয়ে দিলেন, তারপরও তোমরা তার কথা অমান্য করে (তার বলে দেয়া স্থান ছেড়ে) চলে গেলে. তোমাদের কিছু লোক (ঠিক তখন) বৈষয়িক ফায়দা হাসিলে ব্যস্ত হয়ে পড়লো. (অপর দিকে) তখনও তোমাদের কিছু লোক পরকালের কল্যাণই চাইতে থাকলো, অতপর আল্লাহ তায়ালা (এর দ্বারা তোমাদের ঈমানের) পরীক্ষা নিতে চাইলেন এবং তা থেকে তোমাদের অন্য দিকে ফিরিয়ে দিলেন, অতপর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মাফ করে দিলেন, আল্লাহ তায়ালা (হামেশাই) ঈমানদারদের ওপর দয়াবান।

١٥٢ وَلَقَلْ صَلَقَكُم اللَّهُ وَعَلَه الْمُ تَحُسُّوْنَهُمْ بِإِذْنِهِ } حَتَّى إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُر فِي الْإَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّن الْبَعْلِ مَا أَرْبكُرْ مَّا تُحِبُّونَ ﴿ مِنْكُرْ مَّنْ يُرِيْكُ اللَّهُ مَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِينُ الْإِخِرَةَ جَ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيكُمْ عَ وَلَقَلْ عَفَا عَنْكُمْ ﴿ وَاللَّهُ ذُوْ فَضْ عَلَى الْهُؤْمنيْنَ

رد (তহদের সমুখসমরে াবপয়র দেখে) তোমরা যখন الله عَلَى أَحَلِ عَلَى أَحَلِ عَلَى أَحَلِ (ময়দান ছেড়ে পাহাড়ের) ওপরের দিকে ওঠে যাচ্ছিলে عَلَى أَحَلِ عَلَى أَحَلِ المُعَامِّة المُعَامِ المُعَامِّة المُعَمِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِقُومُ المُعَامِّة المُعَمِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِ المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة المُعَامِّة ال এবং তোমরা তোমাদের কোনো লোকের প্রতি লক্ষ্য न्यार प्रधानन्ना प्रधानापत्र काप्ता (लाएकत প्राठ लक्षा) مُرْدِكُم فَأَثَا بَكُم (क्षान्ता) क्षा हुत त्रम्ल कामा हुन क्षाचारत (ठथनए) أَعْرِيكُم فَأَثَا بَكُم (ठथनप्ता) क्षा का क्षाचारत त्रम्ल कामापत (ठथनए) أَعْرِيكُم فَأَثَا بَكُم أَنْ فَاسَانِهُ مِنْ الْعَرِيكُم فَأَثَا بَكُم أَنْ فَاسَانِهُ مِنْ أَعْرِيكُم فَأَثَا بَكُم أَنْ فَاسَانِهُ مِنْ فَاسْتُنْ فَاسْتُوا مِنْ فَالْعَالَمُ مِنْ فَاسْتُوا مِنْ فَاسْتُ فِي فَاسْتُوا مِنْ فَاسْتُ

পেছন থেকে ডাকছিলো (কিন্তু তোমরা শুনলে না), তাই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের দুঃখের পর দুঃখ দিলেন, যেন তোমাদের কাছ থেকে যা হারিয়ে গেছে এবং যা কিছু বিপদ তোমাদের ওপর পতিত হয়েছে এর (কোনোটার) ব্যাপারে তোমরা উদ্বিপ্ন (ও মর্মাহত) না হও, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সব ধরনের কর্মকান্ড সম্পর্কেই ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

غَمًّا ' بِغَرِّ لِّكَيْلاَ تَحْزَنُوْا عَلَى مَا فَاتَكُرْ وَلَا مَّ آَصَابَكُرْ ، وَاللَّهُ غَبِيْرًا بِهَا تَعْبَلُونَ

১৫৪. এর পর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর এমন সম্ভোষ (-জনক পরিস্থিতি) নাযিল করে দিলেন যে, তা তোমাদের একদল লোককে তন্ত্রাচ্ছনু করে দেয়, আর আরেক দল, যারা নিজেরাই নিজেদের উদ্বিগ্ন করে রেখেছিলো, তারা তাদের জাহেলী (যুগের) ধারণ অনুযায়ী আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে অন্যায় ধারণা করতে থাকে, (এক পর্যায়ে) তারা এও বলতে শুরু করে, (যুদ্ধ পরিচালনার) এ কাজে কি আমাদের কোনো ভূমিকা আছে৷ (হে নবী.) তুমি (তাদের) বলো. (এ ব্যাপারে আমারও কোনো ভূমিকা নেই, ক্ষমতা ও) কর্তৃত্বের সবটুকুই আল্লাহর হাতে, (এই দলের) লোকেরাতাদের মনের ভেতর যেসব কথাবার্তা গোপন করে রেখেছে তা তোমার সামনে (খোলাখুলি) প্রকশ করে না: তারা বলে. এ (যুদ্ধ পরিচালনার) কাজে যদি আমাদের কোনো ভূমিকা থাকতো, তাহলে আজ আমরা এখানে নিহত হতাম না: তুমি তাদের বলে দাও, যদি আজ তোমরা সবাই ঘরের ভেতরেও থাকতে তবুও নিহত হওয়া যাদের অবধারিত ছিলো তারা (তাদের মরণের) বিছানার দিকে বের হয়ে আসতো, আর এভাবেই তোমাদের মনের (ভেতর লুকিয়ে রাখা) বিষয়সমূহের ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের পরীক্ষা করেন এবং এ (ঘটনার মাঝ) দিয়ে তিনি তোমাদের অন্তরে যা কিছু আছে তাও পরিওদ্ধ করে দেন, তোমাদের মনের কথা সম্পর্কে আল্লাহ তায়ালা সম্যক ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

100 ثُرَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُرْ مِّنْ اَبْعْلِ الْغَرِّ آمَنَةً تَعْاسًا يَّغْشَى طَآئِفَةً مِّنْكُرْ لا وَطَآئِفَةٌ قَنْ أَفَسُّمُرْ اَنْفُسُمُرْ يَظُنُّوْنَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ، يَقُولُونَ مَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءً ، قُلْ إِنَّ الْإَمْرِ مُلَّلَةً لِلَّهِ ، يُخْفُونَ مِنْ الْكَ ، يُخْفُونَ مِنْ الْكَ ، يَقُولُونَ لَوْ مِنْ الْكَ ، يَقُولُونَ لَوْ مِنْ الْكَ مَنْ الْكَ مَنْ الْكَ مَنْ الْكَ مَنْ الْكَ مُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءً مَّا فَتِلْنَا هُمُنَا، قُلْ لَوْ كُنْتُرْ فِي اللَّهُ مِنْ الْكَ مَنْ الْمِهِمِرْ عَ وَلِيَبْتَلِي الله مَنْ أَوْلِكُرْ وَلِيبَحِسَ مَا فِي اللَّهُ عَلَيْرًا إِللَّهُ عَلَيْرًا إِلَى مَضَاجِعِمِرْ عَ وَلِيبْتَلِي لَا لَكُ مَنْ مُنْ وَرِكُرْ وَلِيبَحِسَ مَا فِي قَلُولُونَ لَوْ قُلُولُونَ لَوْ اللَّهُ عَلَيْرًا إِلَى مَضَاجِعِمِرْ عَ وَلِيبَتَلِي اللهُ مَا فِي صُلُورِكُرْ وَلِيبَحِسَ مَا فِي اللَّهُ عَلَيْرًا إِلَى السَّالُولِ اللهُ عَلَيْرًا إِلَى الله السَّلُورِ اللَّهُ عَلَيْرًا إِلَى اللهُ الله عَلَيْرًا إِلَى اللهُ السَّ السَّلُورِ قَلْ اللهُ عَلَيْرًا إِلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ عَلَيْرًا إِلَيْ السَالُولُونَ اللّهُ عَلَيْرًا إِلَالُهُ عَلَيْرًا إِلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْرًا إِلَيْ السِ السَّلُورِ اللّهُ عَلَيْرًا إِلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْرًا إِلَيْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْرًا إِلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

১৫৫. দু'টি বাহিনী যেদিন (সমুখসমরে) একে অপরের মুখোমুখি হয়েছিলো, সেদিন যারা (ময়দান থেকে) পালিয়ে গিয়েছিলো তাদের একাংশের অর্জিত কাজের জন্যে শয়তানই তাদের পদশ্বলন ঘটিয়ে দিয়েছিলো, অতপর (তারা অনুতপ্ত হলে) আল্লাহ তায়ালা তাদের ক্ষমা করে দিলেন; আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত ক্ষমাশীল ও পরম ধৈর্যশীল।

100 إِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُرْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَهْعُي لِ النَّهَ الْسَتَوَلَّهُمُ الشَّيْطُى بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ء وَلَقَلْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْرُ اللَّهَ اللَّهَ عَنْهُمْرُ اللَّهَ اللَّهَ عَنْهُمْرُ اللَّهُ عَنْهُمْرُ اللَّهُ عَنْهُمْرُ اللَّهُ عَنْهُمْرُ اللَّهُ عَنْهُمُرُ اللَّهُ عَنْهُمُ اللَّهُ عَنْهُمُرُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْهُمُ اللَّهُ عَنْهُمُ اللَّهُ عَنْهُمُ اللَّهُ عَنْهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْهُمُ اللَّهُ الْمُؤْمُونُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُونُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمُ اللّهُ الللْمُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الل

১৫৬. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা কাফেরদের মতো হয়ো না (তাদের অবস্থা ছিলো এমন), এ কাফেরদের কোনো ভাই (বন্ধু) যখন বিদেশ (বিভূইয়ে) মারা যেতো, কিংবা কোনো যুদ্ধে লিপ্ত হতো, তখন এরা (তাদের সম্পর্কে) বলতো, এরা যদি (বাইরে না গিয়ে) আমাদের কাছে থাকতো, তাহলে এরা কিছুতেই মরতো না এবং এরা নিহতও হতো না, এভাবেই এ (মানসিকতা)-কে আল্লাহ তায়ালা তাদের মনের আক্ষেপে পরিণত করে দেন, (আসলে) আল্লাহই মানুষের মৃত্যু ঘটান এবং তোমরা (এই দুনিয়ায়) যা করে যাছো আল্লাহ তায়ালা তার সব কিছুই দেখেন।

107 يَآيَّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا خَرَبُوْا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوْا خُزَّى لَّوْ كَانُوْا غِنْنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْاء لِيَجْعَلَ اللّهُ ذٰلِكَ مَشْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ، وَاللّهُ يُحْي وَيُهِيْنَ ، وَاللّهُ بِهَا تَعْمَلُونَ بَصِيْرٌ

৩ সূরা আলে ইমরান

১৫৭. তোমরা যদি আল্লাহর পথে নিহত হও অথবা (সে পথে থেকেই) তোমরা মৃত্যুবরণ করো, তাহলে আল্লাহর পক্ষ থেকে (যে) রহমত ও ক্ষমা (লাভ করবে), তা হবে مَنْ مُنْ مُنْ مُنْ اللّٰهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ مِنْ اللّٰهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ وَاللّٰهُ وَاللّٰهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَرَحْمَةً خَلَالِهُ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ وَاللّٰهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهِ وَاللّٰهُ وَالْمُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَلَّا لَمْ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَالّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَلَّا لَاللّٰهُ وَل (কাফেরদের) সঞ্চিত অর্থ সামগ্রীর চাইতে অনেক বেশী উত্তম!

١٥٤ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ أَوْ مُتَّ

১৫৮. (আল্লাহর পথে) যদি তোমরা জীবন বিলিয়ে দাও. অথবা (তাঁরই পথে) তোমাদের মৃত্যু হয়, (তাহলেই তোমাদের কি করার থাকবে? কারণ,) তোমাদের তো একদিন আল্লাহ তায়ালার সমীপে (এমনিই) একত্রিত করা হবে।

١٥٨ وَلَئِنَ مُّتُّر أَوْ قُتِلْتُر كَا إِلَى اللَّهِ تُحۡشُرُون

১৫৯. এটা আল্লাহর এক (অসীম) দয়া যে, তুমি এদের সাথে ছিলে কোমল প্রকতির (মানুষ, এর বিপরীতে) যদি তুমি নিষ্ঠুর ও পাষাণ হৃদয়ের (মানুষ) হতে, তাহলে এসব লোক তোমার আশপাশ থেকে সরে যেতো, অতএব তুমি এদের (অপরাধসমূহ) মাফ করে দাও, এদের জন্যে (আল্লাহর কাছে) ক্ষমা প্রার্থনা করো এবং কাজকর্মের ব্যাপারে এদের সাথে পরামর্শ করো, অতপর (সে পরামর্শের ভিত্তিতে) সংকল্প একবার যখন তুমি করে নেবে তখন (তার সফলতার জন্যে) আল্লাহর ওপর ভরসা করো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (তাঁর ওপর) নির্ভরশীল মানুষদের ভালোবাসেন।

١٥٩ فَبِهَا رَحْهَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُرْ } وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ مَوْلِكَ مَ فَاعْفُ عَنْهُرْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُرْ وَشَاوِرْهُرْ فِي الْإَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى الله وَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلَيْنَ

১৬০, যদি আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সাহায্য করেন তাহলে কোনো শক্তিই তোমাদের পরাজিত করতে পারবে না, আর তিনিই যদি তোমাদের পরিত্যাগ করেন তাহলে (এখানে) এমন কোন শক্তি আছে যে অতপর তোমাদের কোনোরকম সাহায্য করতে পারে! কাজেই আল্লাহর ওপর যারা ঈমান আনে তাদের আল্লাহর ওপরই ভরসা করা উচিত।

١٦٠ إِنْ يَّنْصُرْكُرُ اللَّهُ فَلاَ غَالِبَ لَكُرْعَ وَانْ يَّخُنُ لُكُرْ فَهَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُرْ مِّن بَعْنِ إِهَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتُوكُّلِ الْمُؤْمِنُونَ

১৬১. (কোনো) নবীর পক্ষেই (কোনো বস্তুর) খেয়ানত করা সম্ভব নয়; (হাঁ মানুষের মধ্যে) কেউ যদি কিছু খেয়ানত করে তাহলে কেয়ামতের দিন সে ব্যক্তিকে তার (খেয়ানতের) সে বস্তুসহ (আল্লাহর দরবারে) হাযির হতে হবে, অতপর প্রত্যেককেই তার অর্জিত (ভালো মন্দের) পাওনা সঠিকভাবে আদায় করে দেয়া হবে. (সেদিন) তাদের কারো ওপর অবিচার করা হবে না।

١٦١ وَمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يَّغُلُّ ۚ ﴿ وَمَنْ يَّغُلُلْ يَاْتِ بِهَا غَلَّ يَوْمَ الْقَيٰهَةِ جَ ثُرٍّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْس مًّا كُسَبَتُ وَهُرْ لَا يُظْلَبُونَ

১৬২. যে ব্যক্তি আল্লাহর সন্তুষ্টির পথ অনুসরণ করে, তার সাথে কিভাবে সে ব্যক্তির তুলনা করা যায়, যে আল্লাহর বিরোধী পথে চলে শুধু তাঁর ক্রোধই অর্জন করেছে, তার (এমন ব্যক্তির) জন্যে জাহান্নামের আগুন হবে একমাত্র বাসস্থান: আর তা (হরে সভিাই) একটি নিক্ট আশ্রয়স্থল!

١٦٢ أَفَهَنِ اتَّبَعَ رِضُوَانَ اللَّهِ كَهَنَّ ۖ بَاءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَاْوٰلهُ جَهَنَّرُه وَبِئَ

১৬৩, এরা নিজ নিজ আমল অনুযায়ী আল্লাহর কাছে বিভিন্ন স্তরে (বিভক্ত) হবে, আল্লাহ তায়ালা এদের সব ধরনের কার্যকলাপের ওপর সজাগ দৃষ্টি রাখেন।

رْ دَرَجْتُ عِنْلَ اللهِ ﴿ وَاللَّهُ بَصِيراً بِهَا

১৬৪, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাঁর ঈমানদার বান্দাদের ওপর অনুগ্রহ করেছেন যে, তিনি তাদের মাঝ থেকে ر رُسُولًا مِّن ٱنْفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ ايته विकान वाकित مِرْسُولًا مِّن ٱنْفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ ايته কাছে আল্লাহর কেতাবের আয়াতসমূহ পড়ে শোনায় এবং (সে অনুযায়ী) সে তাদের জীবনকে পরিগুদ্ধ করে.

١٦٢ لَقَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ بَعَثَ وَيُزَكِّيْهِرْ وَيُعَلِّمُهُرَّ الْكِتبَ وَالْحِكْمَةَ عَ وَإِنْ

এলো তখনি তোমরা বলতে শুরু করলে, (পরাজয়ের) এ বিপদ কিভাবে এলো (কার দোষে এলো)? অথচ (বদরের যুদ্ধে) এর চাইতে দ্বিগুণ (পরাজয়ের) বিপদ তো তোমরাই তাদের ঘটিয়েছিলে: (হে নবী.) তুমি বলো. এটা এসেছে তোমাদের নিজেদের কারণেই: আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ের ওপর (অসীম ক্ষমতায়) ক্ষমতাবান।

তেত. (তহলের মরপাণে) পু দলের সমুখ লড়াইয়ের দিনে الْجَمْعُنِي विश्वर्ये । وَمَا أَصَابَكُرُ يَوْمُ الْتَقَى الْجَمْعُنِي الْجَمْعُنِي الْجَمْعُنِي الْجَمْعُنِي الْجَمْعُنِي الْجَمْعُنِي الْجَمْعُنِي (الالاله) (الالاله) (الالاله) المتعادمة المتعا (এসেছে) আল্লাহর ইচ্ছায়, এ (বিপর্যয়) দিয়ে আল্লাহ তায়ালা (এ কথাটা) জেনে নিতে চান, কারা তাঁর ওপর (সঠিক **অর্থে) ঈমান এনেছে**।

১৬৭. (এর মাধ্যমে) তাদের (পরিচয়ও) তিনি জেনে নেবেন, যারা (এই চরম মুহূর্তে) মোনাফেকী) করেছে, এ মোনাফেকদের যখন বলা হয়েছিলো যে. (সবাই এক সাথে) আল্লাহর পথে লড়াই করো, অথবা (কমপক্ষে নিজেদের শহরের) প্রতিরক্ষাটুকু তোমরা করো, তখন তারা বললো, যদি আমরা জানতাম আজ (সত্যি সত্যিই) যুদ্ধ হবে, তাহলে অবশ্যই আমরা তোমাদের অনুসরণ করতাম, (এ সময়) তারা ঈমানের চাইতে কুফরীরই বেশী কাছাকাছি অবস্থান করছিলো, এরা মুখে এমন সব কথা বলে যা তাদের অন্তরে নেই; আর এরা যা কিছু গোপন করে আল্লাহ তায়ালা তা সম্যক অবগত আছেন।

১৬৮. (এরা হচ্ছে সেসব মোনাফেক), যারা (যুদ্ধে শরীক না হয়ে ঘরে) বসে থাকলো (এবং) ভাইদের সম্পর্কে বললো, তারা যদি (তাদের মতো ঘরে বসে থাকতো এবং) তাদের কথা তনতো, তাহলে তারা (আজ এভাবে) মারা পড়তো না; (হে নবী,) তুমি (এ মোনাফেকদের) বলো, যদি তোমরা সত্যবাদী হও তাহলে তোমাদের থেকে মৃত্যু সরিয়ে দাও।

১৬৯. যারা আল্লাহর পথে নিহত হয়েছে তাদের তোমরা কোনো অবস্থাতেই 'মৃত' বলো না, তারা তো জীবিত, তাদের মালিকের পক্ষ থৈকে (জীবিত লোকদের মতোই) তাদের রেযেক দেয়া হচ্ছে।

১৭০, আল্লাহ তায়ালা নিজ অনুগ্রহ দিয়ে তাদের যা কিছু দান করেছেন তাতেই তারা পরিত্প্ত এবং যারা এখনো তাদের পেছনে রয়ে গেছে, যারা এখনো তাদের সাথে কেননা এমন ধরনের লোকদের জন্যে (এখানে) কোনো ভয় নেই এবং তারা (সে দিন কোনোরকম) চিন্তাও করবে

১৭১. এ (ভাগ্যবান) মানুষরা আল্লাহর পক্ষ থেকে অফুরম্ভ নেয়ামত ও অনুগ্রহে উৎফুল্ল আনন্দিত হয়. (কারণ) আল্লাহ তায়ালা ঈমানদার বান্দাদের পাওনা কখনো বিনষ্ট করেন না।

১৬৫. यथिन তোমাদের ওপর (ওহুদ যুদ্ধের) विभम निया مُرْبَدُ مُرْبَيْةً قَلْ أَصَبْتُرُ مُصِيبَةً قَلْ أَصَبْتُر مُصِيبَةً قَلْ أَصَابُتُكُمْ مُعْلَمُ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ ا مَّثْلَيْهَا لا قُلْتُر آنَّى هَنَا اللهُ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ﴿ اِنَّ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْء قَن يُجُّ

فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمُ الْمُؤْمِنِيْنَ لا

١٦٤ وَلَيَعْلَرَ الَّانِيْنَ نَافَقُوا ۗ وَقِيلَ لَهُرْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِي سَبِيلِ اللهِ أوادْفَعُوْا ء قَالُوْا لَوْ نَعْلَرُ قِتَالًا لاا البَعْنَكُرْ ﴿ هُرْ لِلْكُفْ يَوْمَنِنِ ٱقْرَبُ مِنْهُرُ لِلْإِيْهَانِ ۽ يَقُوْلُوْنَ بِٱنْوَاهِمِرْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ وَاللَّهُ اَعْلَمُ بِهَا يَكْتُمُوْنَ ج

١٦٨ ٱلَّذِيْنَ قَالُوْا لِإِنْمُوَانِهِمْ وَقَعَنُّوْا لَوْ اَطَاعُونَا مَا قُتلُوا ، قُلْ فَادْرَءُ وْا عَنْ أَنْفُسكُرْ الْهَوْسَ إِنْ كُنْتُرْ صَالِقِينَ

١٦٩ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوْا فِي سَبِيْلِ الله أَمُواتًا و بَلْ أَحْيَاءً عِنْنَ رَبِّهِمْ يُوْزَقُونَ لا

١٤٠ فَرِحِيْنَ بِهَا ۚ أَتْنَهُرُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ لا خَلْفِهِرُ لا أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِرْ وَلَا هُرْ يَحْزَنُونَ م

١٤١ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْهَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لا وان الله لا يُضِيعُ آجُو الْهُؤْمنينَ عج

৩ সুরা আলে ইমরান

১৭২. (ওহুদের এতো বড়ো) আঘাত আসার পরও যারা (আবার) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ডাকে সাড়া দিয়েছে এবং তাদের মধ্যে আরো যারা নেক কাজ করেছে. (সর্বোপরি) সর্বদা যারা আল্লাহকে ভয় করে চলেছে, এদের সবার জন্যে রয়েছে মহাপুরস্কার।

١٤٢ أَلَّنْ يْنَ اسْتَجَابُوْا لِلَّهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْ بَعْنِ مَا ۖ أَمَا بَهُرُ الْقَرْحُ ﴿ لِلَّذِينَ آَحْسَنُوْا منْهُرْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيْرٌ ج

১৭৩. যাদের- মানুষরা যখন বললো, তোমাদের বিরুদ্ধে (कारफরদের) এক বিশাল বাহিনী জমায়েত হয়েছে. অতএব তোমরা তাদের ভয় করো, (এ বিষয়টাই যারা যথার্থ ঈমানদার) তাদের ঈমানকে আরো বাড়িয়ে দিলো. তারা বললো, আল্লাহ তায়ালাই আমাদের জন্যে যথেষ্ট এবং তিনিই হলেন উত্তম কর্মবিধায়ক।

١٤٣ أَلَّنْ يْنَ قَالَ لَهُرُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَلْ جَمَعُوْا لَكُرْ فَاخْشُوْهُرْ فَزَادَهُرْ إِيْمَانًا تَى وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْرَ الْوَكِيْلُ

১৭৪. অতপর আল্লাহর নেয়ামত ও অনুগ্রহ নিয়ে এরা (এমনভাবে) ফিরে এলো যে, কোনো প্রকার অনিষ্টই তাদের স্পর্শ করতে পারলো না, এরা আল্লাহর সন্তুষ্টির لله وَاتَّبَعُوا رِضُوانَ اللَّهِ । পথ্ট অনুস্বর্ণ করতে পারলো না, এরা আল্লাহর সন্তুষ্টির পথই অনুসরণ করলো: (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা মহা অনুগ্ৰহশীল।

١٤٣ فَانْقَلَبُوْ إِبِنْعَهَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ وَاللَّهُ ذُوْ فَضْلِ عَظِيْمِ

১৭৫. এই হচ্ছে তোমাদের (প্ররোচনাদানকারী) শয়তান. তারা (শত্রুপক্ষের অতিরঞ্জিত শক্তির কথা বলে) তাদের আপনজনদের ভয় দেখাচ্ছিলো, তোমরা কোনো অবস্থায়ই তাদের (এ হুমকিকে) ভয় করবে না, বরং আমাকেই ভয় করো, যদি তোমরা (সত্যিকার অর্থে) ঈমানদার হও!

١٤٥ إِنَّهَا ذٰلِكُرُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّنُ ٱوْلِيَاءَةً م فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مَّوْمَنيْنَ

১৭৬. (হে নবী.) যারা দ্রুতগতিতে কৃষ্ণরীর পথে এগিয়ে যাচ্ছে তাদের কর্মকান্ড যেন তোমাকে চিন্তান্তিত না করে, তারা কখনো আল্লাহর বিন্দুমাত্র কোনো ক্ষতি সাধন করতে পারবে না: (মূলত) আল্লাহ তায়ালা এদের জন্যে পরকালে (পুরস্কারের) কোনো অংশই রাখতে চান না. তাদের জন্যে অবশ্যই কঠিন আযাব রয়েছে।

١٤٦ وَ لَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ } إِنَّهُمْ لَنَ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ، يُرِيْنُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُرْ مَظًّا فِي الْأَخِرَةِ عَ وَلَهُرْ عَنَ ابِ عَظِيْر

১৭৭. यात्रा ঈমানের বদলে कृष्टती चित्रिम करत निराहि, তারা আল্লাহর (কোনোই) ক্ষতি করতে পারবে না. এদের জন্যে মর্মান্তিক শান্তির বিধান রয়েছে।

١٤٤ إِنَّ الَّذِيْنَ اهْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا الله شَيْئًا ع وَلَهُرْ عَنَ ابٍ أَلِيْرٍ

١٤٨ وَلَا يَحْسَبَنَ اللَّهِ يَنْ كَفُرُوا النَّمَا نُمْلِي ٢٥٠. ما وَلَا يَحْسَبَنَّ اللَّهِ يَنْ كَفُرُوا النَّمَا نُمْلِي তাদের ঢিল দিয়ে রেখেছি এটা তাদের জন্যে কল্যাণকর হবে. (আসলে) আমি তো তাদের অবকাশ দিচ্ছি যেন. তারা তাদের গুনাহ (-এর বোঝা) আরো বাড়িয়ে নিতে পারে, আর (তোমাদের মধ্যে) তাদের জন্যেই (প্রস্তুত) রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক আযাব।

لَهُرْ غَيْرٌ لِآنْفُسهِرْ وَ انَّهَا نُهُلَى لَهُرْ ليَزْدَادُوا اثْمًا ع وَلَهُ عَنَابٍ مُّهَيْرٍ،

১৭৯. আল্লাহ তায়ালা কখনো তাঁর ঈমানদার বান্দাদের-তোমরা বর্তমানে যে (ভালো মন্দে মিশানো) অবস্থার ওপর আছো এর ওপর ছেড়ে দিতে চান না, যতোক্ষণ না তিনি সংলোকদের অসং লোকদের থেকে আলাদা করে দেবেন: (একইভাবে) এটা আল্লাহ তায়ালার কাজ নয় যে. তিনি তোমাদের অদৃশ্য জগতের (খোঁজ খবরের ওপর) কিছু অবহিত করবেন, তবে আল্লাহ তায়ালা তাঁর রসূলদের মাঝ থেকে যাকে চান তাকে (বিশেষ কোনো

١٤٩ مَا كَانَ اللَّهُ لِيَنَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى مَا أَنْتُرْ عَلَيْهِ مَتَّى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطُّيِّبِ م وَمَا كَانَ اللَّهُ ليُطْلِعَكُمِ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِمٍ مَنْ

কাজের জন্যে) বাছাই করে নেন, অতপর তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলদের ওপর বিশ্বাস স্থাপন করো, তোমরা যদি আল্লাহর ওপর যথাযথভাবে ঈমান আনো এবং নিজেরা সাবধান হয়ে চলতে পারো, তাহলে তোমাদের জন্যে মহা পুরস্কার রয়েছে। يَشَاءُ لَا فَامِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ } وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْرٌ

১৮০. আল্লাহ তায়ালা নিজের অনুগ্রহ দিয়ে তাদের যে প্রাচুর্য দিয়েছেন যারা তা আল্লাহর পথে ব্যয় করতে কার্পণ্য করে– তারা যেন কখনো এটা মনে না করে, এটা তাদের জন্যে কোনো কল্যাণকর কিছু হবে; না, এ কৃপণতা (আসলে) তাদের জন্যে খুবই অকল্যাণকর। কার্পণ্য করে তারা যা জমা করেছে, অচিরেই কেয়ামতের দিন তা দিয়ে তাদের গলায় বেড়ি পরিয়ে দেয়া হবে, আসমানসমূহ ও যমীনের উত্তরাধিকার তো আল্লাহ তায়ালার জন্যেই, আর তোমাদের প্রতিটি কার্যকলাপ সম্পর্কে আল্লাহ তায়ালা বিশেষভাবে অবগত রয়েছেন।

الله وَلا يَحْسَبَى النَّويْنَ يَبْخَلُونَ بِهَ الْعَلَوْنَ بِهَ الْعَلَوْنَ بِهَ الْعَلَوْنَ بِهَ اللّهُ مُن فَضْلِهِ هُو خَيْرًا لّهُمْ اللّهُ مُن مَضْلِهِ هُو خَيْرًا لّهُمْ اللّهُ مُنَّ اللّهُ مُنَّ اللّهُ مَيْرَاتُ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ ا وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ

১৮১. আল্লাহ তায়ালা সেই (ইছ্দী) লোকদের কথা (ভালো করেই) শুনেছেন, যখন তারা (বিদ্রূপ করে) বলেছিলো (হাঁা), আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই গরীব, আর আমরা হক্ষি ধনী, তারা যা কিছু বলে তা আমি (তাদের হিসেবের খাতায়) লিখে রাখবো, (আমি আরো লিখে রাখবো) অন্যায়ভাবে তাদের নবীদের হত্যা করার বিষয়টিও, (সেদিন) আমি তাদের বলবো, এবার এই জাহান্লামের স্বাদ উপভোগ করো।

ا ١٨ لَقَنْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ النَّهِيْنَ قَالُوْ آ إِنَّ اللّٰهُ فَقَوْلَ النَّهِيْنَ قَالُوْ آ إِنَّ اللّٰهُ فَقِيْرٌ مَنْكُتُبُ مَا قَالُوْ اللّٰهَ فَقِيْرٌ مَقٍ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْ الْفَوْدُ الْحَرِيْقِ

১৮২. এ (আযাব) হচ্ছে তোমাদের নিজেদেরই হাতের কামাই, যা তোমরা (আগেই এখানে) পাঠিয়েছো, আল্লাহ তায়ালা কখনো তাঁর নিজ বান্দাদের প্রতি অবিচারক নন।

١٨٢ ذٰلِكَ بِهَا قَنَّمْتُ آيْدِيْكُمْ وَآنَّ اللهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْقَبِيْدِ ع

১৮৩. যারা বলে, (স্বয়ং) আল্লাহ তায়ালাই তো আমাদের আদেশ দিয়েছেন যেন আমরা কোনো রস্লের ওপর ঈমান না আনি, যতোক্ষণ না সে আমাদের কাছে এমন একটা কোরবানী এনে হাযির করবে, যাকে (গায়ব থেকে এক) আগুন এসে খেয়ে ফেলবে; (হে মোহাম্মদ,) তুমি (তাদের বলো, হাঁয় আমার আগেও তোমাদের কাছে বহু নবী রস্ল এসেছে, তারা সবাই উজ্জ্বল নিদর্শন নিয়েই এসেছিলো, তোমরা (আজ) যে কথা বলছো তা সহই তো তারা এসেছিলো, তা সত্ত্বেও তোমরা তাদের হত্যা করলে কনা আজ যদি তোমরা এতোই সত্যবাদী হও (তাহলে কেন এসব আচরণ করলো?)

۱۸۳ اَلَّنِيْنَ قَالُوْ آ إِنَّ اللَّهَ عَهِنَ إِلَيْنَا آلَّا اللَّهَ عَهِنَ إِلَيْنَا الَّا اللَّهَ عَهِنَ إِلَيْنَا اللَّهُ الْوُمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتَّى يَاْتِينَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ، قُلْ قَلْ جَاءُكُرْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِي قَبْلِي إِللَّهِ مِنْ قَلْدَرُ فَلِرَ قَتَلْتُمُوْهُرْ إِللَّانِي قَلْتُرْ فَلِرَ قَتَلْتُمُوْهُرْ إِللَّانِي قَلْتُرْ فَلِرَ قَتَلْتُمُوْهُرْ إِلْنَاكُمُوهُرْ إِلْنَاكُمُ وَهُرُ اللَّهُ الْمُؤْمِلُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُولَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُؤْمِ اللَّهُ

১৮৪. (হে মোহাম্মদ,) এরা যদি তোমাকে অস্বীকার করে (তাহলে এ নিয়ে তুমি উদ্বিগ্ন হয়ো না, কারণ), তোমার আগেও এমন বহু নবী রসূল (নবুওতের) সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ ও আল্লাহর কাছ থেকে নাযিল করা হেদায়াতের দীপ্তিমান গ্রন্থালা নিয়ে এসেছিলো, তাদেরও (এমনিভাবেই) অস্বীকার করা হয়েছিলো।

١٨٣ فَإِنْ كَنَّ بُوْكَ فَقَنْ كُنِّبَ رُسُلٌّ مِّنْ قَبْلُكُ مِنْ قَبْلُكُ مِنْ قَبْلُكُ مِنْ قَبْلُكُ مِنْ فَلْكِتْبِ وَالزَّبُو وَالْكِتْبِ الْمُنِيْرِ الْمُنِيْرِ

১৮৫. প্রত্যেক প্রাণীই মরণের স্বাদ ভোগ করবে; (অতপর) তোমাদের (জীবনভর) কামাইর প্রতিফল কেয়ামতের দিন আদায় করে দেয়া হবে, যাকে (জাহান্নামের) আগুন থেকে বাঁচিয়ে দেয়া হবে এবং জান্নাতে প্রবেশ করানো হবে; সেই হবে সফল ব্যক্তি।

100 كُلُّ نَفْسِ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ﴿ وَإِنَّمَا تُوَنَّوْنَ الْمَوْتِ ﴿ وَإِنَّمَا تُوَنَّوْنَ الْمُوْتِ مَنَ زُمْزِحَ عَنِ النَّارِ وَٱدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَلْ فَازَ ﴿ وَمَا الْحَيْوةُ النَّارِ وَٱدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَلْ فَازَ ﴿ وَمَا الْحَيْوةُ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৪ লান্তানালু

(মনে রেখো,) এই পার্থিব জীবন কিছু বাহ্যিক ছলনার মাল সামানা ছাডা আর কিছই নয়। النَّانْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ

১৮৬. (হে ঈমানদার ব্যক্তিরা,) নিশ্চরই জান মালের (ক্ষতি সাধনের) মাধ্যমে তোমাদের পরীক্ষা নেয়া হবে। (এ পরীক্ষা দিতে গিয়ে) তোমরা অবশ্যই তোমাদের পূর্ববর্তী সম্প্রদায় যাদের কাছে আল্লাহর কেতাব নাথিল হয়েছিলো এবং যারা আল্লাহর সাথে অন্যদের শরীক করেছে, তাদের (উভয়ের) কাছ থেকে অনেক (কষ্টদায়ক) কথাবার্তা ভনবে; এ অবস্থায় তোমরা যদি ধৈর্য ধারণ করো এবং আল্লাহকে ভয় করে চলো, তাহলে তা হবে অত্যন্ত বড়ো ধরনের এক সাহসিকতার ব্যাপার।

1۸٦ لَتُبْلُون فِي آمُوالِكُر وَاَنْفُسِكُرْ فَ وَلَتَسْكُرْ فَ وَلَتَسْمُعُن مِن النَّانِينَ اوْتُوا الْكِتٰبَ مِن قَبْلِكُر وَمِن النَّانِينَ اَشْرَكُوْآ اَذًى كَثِيْرًا اللَّهُ وَإِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَان ذَٰلِكَ مِنْ عَنْ إِلَا الْأَمُور

১৮৭. (শ্বরণ করো,) যখন আল্লাহ তায়ালা এই কেতাবধারী ব্যক্তিদের কাছ থেকে প্রতিশ্রুনতি গ্রহণ করেছিলেন, (তিনি তাদের বলেছিলেন) তোমরা একে মানুষদের কাছে বর্ণনা করবে এবং একে তোমরা গোপন করবে না, কিন্তু তারা এ প্রতিশ্রুতি নিজেদের পেছনে ফেলে রাখলো এবং অত্যন্ত অল্প মূল্যে তা বিক্রি করে দিলো; বড়োই নিকৃষ্ট ছিলো (যেভাবে) তারা সে বেচাকেনার কাজটি করলো!

١٨٤ وَإِذْ آخَلَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتْبَ لَتُبَيِّبُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ رَ فَنَبَنُوْهُ وَرَآء ظُمُوْرِمِمْ وَاهْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا مَنِيْسَ مَا يَهْتَرُوْنَ

১৮৮. এমন সব লোকদের ব্যাপারে তুমি কখনো ভেবো না যারা নিজেরা যা করে তাতে আনন্দ প্রকাশ করে, আবার নিজেরা যা কখনো করেনি তার জন্যেও প্রশংসিত হতে ভালোবাসে, তুমি কখনো ভেবো না যে, এরা (বৃঝি) আল্লাহর আযাব থেকে অব্যাহতি পেয়ে গেছে, (মৃলত) এদের জন্যে আল্লাহর পক্ষ থেকে যন্ত্রণাদায়ক শান্তির ব্যবস্থা নির্ধারণ করে রাখা হয়েছে।

١٨٨ لَا تَحْسَبَى الَّانِيْنَ يَفْرَمُوْنَ بِمَا اَتُوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَلُوْا بِمَا لَرْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّمُرْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَنَابِ ۽ وَلَمُرْ عَنَابٌ الِيْرِ

১৮৯. আসমানসমূহ ও যমীনের সার্বভৌমত্ব এককভাবে আল্লাহর জন্যে; আল্লাহ তায়ালাই সবকিছুর ওপর একক ক্ষমতাবান। ١٨٩ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّهٰوٰسِ وَالْاَرْضِ ﴿ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَىْءٍ قَرِيثً ع

১৯০. নিসন্দেহে আসমানসমূহ ও যমীনের (নির্মৃত) সৃষ্টি এবং দিবা রাত্রির আবর্তনের মধ্যে জ্ঞানবান লোকদের জন্যে অনেক নিদর্শন রয়েছে। ۱۹۰ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّهٰوْسِ وَالْأَرْضِ وَاغْتِلَانِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَأَيْسٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ عَل

১৯১. (এই জ্ঞানবান লোক হচ্ছে তারা) যারা দাঁড়িয়ে, বসে এবং শুয়ে সর্বাবস্থায় আল্লাহ তায়ালাকে স্বরণ করে এবং আসমানসমূহ ও যমীনের এই সৃষ্টি (নৈপুণ্য) সম্পর্কে চিন্তা গবেষণা করে (এবং স্বতক্ষুর্তভাবে তারা বলে ওঠে), হে আমাদের মালিক, (সৃষ্টি জগত)-এর কোনো কিছুই তুমি অযথা বানিয়ে রাখোনি, তোমার স্থা অনেক পবিত্র, অতএব তুমি আমাদের জাহান্নামের কঠিন আযাব থেকে নিষ্কৃতি দাও।

ا١٩ النَّهِ اللَّهُ قَيَامًا وَقُعُودًا وَعَلٰى جُنُوبِهِ وَيَتَفَكَّرُونَ فِى خَلْقِ وَعَلٰى جُنُوبِهِ وَيَتَفَكَّرُونَ فِى خَلْقِ السَّهٰوٰ فِي وَالْإَرْضِ عَ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ فَنَا السَّهٰوٰ فِي وَالْإَرْضِ عَ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ فَنَا السَّاوِ فَي اللَّهُ وَقَيْنَا عَنَابَ النَّارِ اللَّهُ اللّلَهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ الللَّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللّه

১৯২. হে আমাদের মালিক, যাকেই তুমি জাহান্নামের আগুনে প্রবেশ করাবে, অবশ্যই তাকে তুমি অপমানিত করবে, (আর সেই অপমানের দিনে) যালেমদের জন্যে কোনোরকম সাহায্যকারীই থাকবে না।

19٢ رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ مَنْ تُنْغِلِ النَّارَ فَقَنَ الْمُولِ النَّارَ فَقَنَ الْمُؤْيَثَةُ ﴿ وَمَا لِلظَّلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارِ

৩ সুরা আলে ইমরান

90

১৯৩, হে আমাদের মালিক, আমরা শুনতে পেয়েছি একজন আহ্বানকারী (নবী মানুষদের) ঈমানের দিকে ডাকছে (সে বলছিলো, হে মানুষরা), তোমরা তোমাদের মালিক আল্লাহর ওপর ঈমান আনো, (হে মালিক, সেই আহ্বানকারীর কথায়) অতপর আমরা ঈমান এনেছি. হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের অপরাধসমূহ ক্ষমা করে দাও, (হিসাবের খাতা থেকে) আমাদের দোষক্রটি ও গুনাহসমূহ মুছে দাও, (সর্বশেষে তোমার) নেক লোকদের সাথে তুমি আমাদের মৃত্যু দাও।

١٩٣ رَبُّنَا ۚ إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًّا يُّنَادِي لِلْاِيْهَانِ أَنْ أَمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَأَمَنَّا لَيْ رَبَّنَا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيًّا تِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ع

১৯৪. হে আমাদের মালিক, তুমি তোমার নবী রস্লদের মাধ্যমে যেসব (পুরস্কারের) প্রতিশ্রুতি দিয়েছো তা تُخْرُنَا يَوْمُ الْقِيمَةِ ﴿ إِنَّكَ ﴾ تُخُلُفُ अाभारमत العام العادية (अश्रकारप्तत القيمَةِ ﴿ إِنَّاكَ ﴾ تُخُونَا يَوْمُ الْقِيمَةِ ﴿ اللَّهِ اللَّهُ الل অপমানিত করো না: নিক্যুই তমি কখনো ওয়াদার বরুখেলাপ করো না :

١٩٣ رَبُّنَا وَأَتِنَا مَا وَعَلْ أَتَّنَا عَلَى رُسُلِكَ وَ لَا

১৯৫. অতএব তাদের মালিক (এই বলে) তাদের আহ্বানে সাডা দিলেন যে, আমি নর-নারী নির্বিশেষে তোমাদের কোনো কাজ কখনো বিনষ্ট করবো না. (আমি সবার কান্ধের বিনিময়ই দেবো) এবং তোমরা তো একে অপরেরই অংশ, অতএব (তোমাদের মাঝে) যারা (নিজেদের ভিটেমাটি ছেড়ে) হিজরত করেছে এবং যারা নিজেদের জন্মভূমি থেকে বিতাড়িত হয়েছে, আমারই পথে যারা নির্যাতিত হয়েছে, (সর্বোপরি) যারা (আমার জন্যে) লড়াই করেছে এবং (আমারই জন্যে) জীবন দিয়েছে, আমি তাদের গুনাহসমূহ মাফ করে দেবো. অবশ্যই আমি এদের (এমন) জান্লাতে প্রবেশ করাবো. যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা বইতে থাকবে, এ হচ্ছে (তাদের জন্যে) আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে পুরস্কার আর উত্তম পুরস্কার তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই রয়েছে।

190 فَاسْتَجَابَ لَهُرْ رَبُّهُرْ أَنِّي ۚ كَ ۗ أُضِيعُ عَهَلَ عَامِلٍ مِّنْكُرْ مِنْ ذَكَرِ أَوْ ٱنْثَى ج بَعْضُكُرْ مِنْ بَعْضٍ } فَالَّذِينَ هَاجَرُوْا وَٱخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوْدُوْا فِي سَبِيْلِي وَتَتَلُوْا وَقُتلُوا لَاكُفِّ نَّ عَنْهُمْ سَيّاً تِهِمْ وَلَادْعَلَنَّهُمْ جَنُّتِ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُ ۚ عَ ثَوَابًا مِّنْ عِنْلِ اللَّهِ ، وَاللَّهُ عِنْلَةٌ مُشَى النَّهَ ال

১৯৬. (হে মোহাম্মদ.) জনপদসমূহে যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করেছে, তাদের (দাম্ভিক) পদচারণা যেন কোনোভাবেই তোমাকে বিভ্রান্ত করতে না পারে ৷

١٩٦ لَا يَفُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي البِلَادِ

১৯৭. (কেননা এসব কিছু হচ্ছে) সামান্য (কয়দিনের) সামগ্রী মাত্র, অতপর তাদের (সবারই অনস্ত) নিবাস (হবে) জাহানাম: আর জাহানাম হচ্ছে নিক্টতম আবাসস্থল!

١٩٤ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ نِن ثُرٌّ مَٱوْلِهُرْ وَبِئْسَ الْبِهَادُ ا

১৯৮. তবে যারা নিজেদের মালিককে ভয় করে চলে. তাদের জন্যে নির্দিষ্ট হয়ে আছে (সুরম্য) উদ্যানমালা, যার নীচ দিয়ে প্রবাহিত হবে ঝর্ণাধারা, সেখানে তারা অনাদিকাল থাকবে, এ হবে আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে (তাদের জন্যে) আতিথেয়তা, আর আল্লাহ তায়ালার কাছে যা (পুরস্কার সংরক্ষিত) আছে, তা অবশ্যই নেককার লোকদের জন্যে অতি উত্তম জিনিস!

١٩٨ لُكِنِ النَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُرْ لَهُرْ جَنَّه تَجْرِئَ مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًّا مِّيْ عَنْ الله ، وَمَا عَنْ الله غَيْرُ لِللهِ عَيْرُ لِلْأَبْرَ ار

১৯৯. (ইতিপূর্বে) আমি যাদের কাছে কেতাব পাঠিয়েছি. সেসব কেতাবধারী লোকদের মাঝে এমন লোক অবশাই আছে. যারা আল্লাহকে বিশ্বাস করে, তোমাদের এই কেতাবের ওপর তারা (যেমনি) বিশ্বাস করে (তেমনি)

١٩٩ وَإِنَّ مِنْ ٱهْلِ الْكِتْبِ لَهَنْ يُّؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَّا ٱنْوَلَ إِلَيْكُرُ وَمَّا ٱنْوَلَ إِلَيْهِرْ خُشِعِيْنَ তারা বিশ্বাস করে তাদের ওপর প্রেরিড কেতাবের ওপরও, এরা আল্লাহর জন্যে ভীত সম্ভস্ত ও বিনয়ী বান্দা, এরা আল্লাহর আয়াতকে (স্বার্থের বিনিময়ে) সামান্য মূল্যে বিক্রি করে না. এরাই হচ্ছে সেসব ব্যক্তি, যাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছ থেকে অগাধ পুরস্কার রয়েছে, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন দুণ্ত হিসাব সম্পন্নকারী।

لله ٧ ٧ يَهْتَهُونَ بأين الله ثَهَنًا قَليْلًا ع أُولَٰئِكَ لَهُمْ آجُرُهُمْ عِنْلَ رَبِّهِمْ ﴿ إِنَّ اللَّهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

২০০. হে মোমেনরা, তোমরা ধৈর্য ধারণ করো, (ধৈয্যের এ কাজে) একে অপরের সাথে প্রতিযোগিতা করো. (শত্রুর মোকাবেলায়) সুদৃঢ় থেকো, একমাত্র আল্লাহকেই ভয় করো, (এভাবেই) আশা করা যায় তোমরা সফলকাম হতে পারবে!

٢٠٠ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا سَ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ يُفْلَحُونَ ع

সুরা আনু নেসা

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১৭৬, রুকু ২৪ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةُ النّسَاء مَلَ نيتًا أَيَاتٍ : ١٤٦ رُكُوعٌ : ٢٣ بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ

১. হে মানুষ, তোমরা তোমাদের মালিককে ভয় করো, مُكْلُونُ الَّذِي عَلَقَكُمُ النَّاسُ التَّقُوا رَبُّكُمُ الَّذِي عَلَقَكُمُ ﴿ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ النَّاسُ التَّقُوا رَبُّكُمُ الَّذِي عَلَى اللَّهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّالَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا ا যিনি তোমাদের একটি (মাত্র) ব্যক্তিসন্তা থেকে সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি তা থেকে (তার) জুড়ি পয়দা করেছেন, (এরপর) তিনি তাদের (এই আদি জুড়ি) থেকে বহু সংখ্যক নর-নারী (দুনিয়ায় চারদিকে) ছড়িয়ে দিয়েছেন (হে মানুষ), তোমরা ভয় করো আল্লাহ তায়ালাকে, যাঁর (পবিত্র) নামে তোমরা একে অপরের কাছে অধিকার (ও পাওনা) দাবী করো এবং সন্মান করো গর্ভ (ধারিণী মা)-কে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর তীক্ষ্ণ দৃষ্টি রেখে চলেছেন।

مِّنْ نَّفْسِ وَّاحِلَةِ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَتَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاءً } وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُوْنَ بِهِ وَالْأَرْمَا مَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُر ﴿ رَقِيْبًا

২. এতীমদের ধন-সম্পদ তাদের কাছে দিয়ে দাও, (তাদের) ভালো জিনিসের সাথে (নিজেদের) খারাপ জিনিসের বদল করো না, তাদের সম্পদসমূহ কখনো নিজেদের মালের সাথে মিলিয়ে হযম করে নিয়ো না. এটা (আসলেই) একটা জঘন্য পাপ।

٢ وَاٰتُوا الْيَتْمَى آمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَلَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ مِ وَلَا تَأْكُلُوا ۗ أَمُوالَهُمْ إِلَى آمُوَ الكُمْ وَ إِنَّهُ كَانَ مُوْبًا كَبِيْرًا

৩. আর যদি তোমাদের এ আশংকা থাকে যে, তোমরা এতীম (মহিলা)-দের মাঝে ন্যায়বিচার করতে পারবে না. তাহলে (সাধারণ) নারীদের মাঝে থেকে তোমাদের যাদের ভালো লাগে তাদের দুই জন, তিন জন কিংবা চার জনকে বিয়ে করে নাও, কিন্তু যদি তোমাদের এই ভয় হয় যে, তোমরা (একের অধিক হলে তাদের মাঝে) ইনসাফ করতে পারবে না, তাহলে (তোমাদের জন্যে) একজনই (যথেষ্ট), কিংবা যে তোমাদের অধিকারভক্ত: (তাদেরই যথেষ্ট মনে করে নাও। মনে রেখো, সব ধরনের) সীমালংঘন থেকে বেঁচে থাকার জন্যে এটাই হচ্ছে (উত্তম ও) সহজতর (পন্থা)।

٣ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتْلَى فَانْكِحُوْ ا مَا طَابَ لَكُر مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَى وَثُلْتُ وَرُبْعَ ءَ فَإِنْ خِفْتُمْ اللَّا تَعْرِلُوْ ا فَوَاحِنَةً أَوْ مَا مَلَكَتِي أَيْهَا نُكُرٍ ﴿ ذَٰلِكَ أَدْنَى اَلَّا تَعُوْلُوا ا

তাদের (মালিকানায়) দিয়ে দাও; অতপর তারা যদি وَأَتُوا النِّسَاءَ صَلُقْتِهِي نِحْلَةً ﴿ فَإِنْ طِبْنَ الْم قَالُهُ عِنْ نِحْلَةً ﴿ فَإِنْ طِبْنَ اللَّهِ اللَّهُ اللّ

৪ সুরা আন নেসা

নিজেদের মনের খুশীতে এর কিছু অংশ তোমাদের (ছেড়ে) দেয়, তাহলে তোমরা তা খুশী মনে ভোগ করতে পারো। لَكُرْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهٌ مَنِيْنًا مَرِينًا

৫. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে সম্পদকে (দুনিয়ায়) তোমাদের প্রতিষ্ঠা লাভের উপকরণ হিসেবে বানিয়ে দিয়েছেন, তা এই নির্বোধ লোকদের হাতে ছেড়ে দিয়ো না, (অবশ্যই এ থেকে) তাদের খাওয়ার ব্যবস্থা করবে, তাদের পোশাক সরবরাহ করবে, (সর্বোপরি) তাদের সাথে ভালো কথা বলবে।

٥ وَلَا تُؤْتُوا السُّغَهَاءَ آمُوالكُرُ الَّتِي جَعَلَ
 الله لَكُر قِيلًا وَّارْزُقُومُر فِيْهَا وَاكْسُومُر وَتُولُوا لَهُر قَوْلًا تَعْرُونًا

৬. এতীমদের প্রতি লক্ষ্য রাখতে থাকবে যতোক্ষণ না তারা বিয়ের বয়স পর্যন্ত পৌছে, অতপর যদি তোমরা তাদের মধ্যে (সম্পদ পরিচালনার) যোগ্যতা অনুভব করতে পারো, তাহলে তাদের ধন-সম্পদ তাদের হাতেই তুলে দেবে এবং তাদের বড়ো হবার আগেই (তাড়াহুড়ো করে) তা হযম করে ফেলো না, (এতীমদের পৃষ্ঠপোষক) যদি সম্পদশালী হয় তাহলে সে যেন (এই বাড়াবাড়ি থেকে) বেঁচে থাকে (তবে হাা), যদি সে (পৃষ্ঠপোষক) গরীব হয় তাহলে (সমাজের) প্রচলিত নিয়ম অনুযায়ী সে যেন তা থেকে (নিজের পারিশ্রমিক) গ্রহণ করে, যখন তোমরা তাদের ধন-সম্পদ তাদের ফিরিয়ে দেবে, তখন তাদের ওপর সাক্ষী রেখা, (যদিও) হিসাব গ্রহণের জন্যে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট!

آ وَابْتَلُوا الْيَتَهٰى مَتَّى إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ عَ فَإِنْ أَنَسْتُمْ رُشْنًا فَادْفَعُوْآ النِّكَاحَ عَ فَإِنْ أَنَسْتُمْ رُشْنًا وَادْفَعُوْآ النَّهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا آ اِسْرَافًا وَلِيهَارًا أَنْ يَكْبُرُوا وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ عَ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ فِلْيَسْتَعْفِفْ عَ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ فِلْيَسْتَعْفِفْ عَ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ فِلْيَسْتُمُوفُونِ وَفَاذَا دَفَعْتُمْ النَّهِمِ آمُوالمُمْ فَاشْهِدُوا عَلَيْهِمْ أَمُوالمُمْ فَاشْهِدُوا عَلَيْهِمْ وَكَفَى بِاللَّهِ مَسِيْبًا

৭. তাদের পিতামাতা ও আত্মীয়-স্বজনদের রেখে যাওয়া ধন-সম্পদে পুরুষদের (যেমন) নির্দিষ্ট অংশ রয়েছে, (একইভাবে) নারীদের জন্যেও (সে সম্পদে) নির্দিষ্ট অংশ রয়েছে, যা তাদের পিতা-মাতা ও আত্মীয় স্বজনরা রেখে গেছে, (পরিমাণ) অল্প হোক কিংবা বেশী; (উভয়ের জন্যে এর) অংশ নির্দিষ্ট করে দেয়া হয়েছে।

৮. (মৃত ব্যক্তির সম্পদ) বন্টনের সময় যখন (তার) আপনজন, এতীম ও মেসকীনরা (সেখানে) এসে হাযির হয়, তখন তা থেকে তাদেরও কিছু দেবে এবং তাদের সাথে সুন্দরভাবে কথা বলবে।

مُ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبٰى
 وَالْيَتٰنٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْمُرْ مِّنْهُ وَتُولُوا
 لَهُرْ قَوْلًا مَّقْرُوفًا

৯. (এতীমদের ব্যাপারে) মানুষের (এটুকু) ভয় করা উচিত, যদি তারা নিজেরা (মৃত্যুর সময় এমনি) দুর্বল সম্ভানদের পছনে রেখে চলে আসতো, তাহলে (তাদের ব্যাপারে) তারা (এভাবেই) ভীত শংকিত থাকতো, অতএব তাদের (ব্যাপারে) আল্লাহকে ভয় করে চলা এবং এদের সাথে (হামেশাই) ন্যায়-ইনসাফের কথাবার্তা বলা উচিত।

9 وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ هَلْفِمِرْ ذُرِّيَّةً ضِعْفًا هَانُوْا عَلَيْمِرْ مَ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَهِيْدًا

১০. যারা অন্যায়ভাবে এতীমদের মাল-সম্পদ ভক্ষণ করে, তারা যেন আগুন দিয়েই নিজেদের পেট ভর্তি করে, অচিরেই এ লোকগুলো জাহান্নামের আগুনে জ্বলতে থাকবে।

اِنَّ الَّذِينَ يَا كُلُونَ اَمُوالَ الْيَتٰيٰ ظُلْبًا اِنَّ الْكَتٰيٰ ظُلْبًا اِنَّهَ كُلُونَ فِي اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّهُ الللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّلَّا اللَّالِمُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّالَّةُ

১১. আল্লাহ তায়ালা (তোমাদের উত্তরাধিকারে) সন্তানদের সম্পর্কে (এ মর্মে) তোমাদের জন্যে বিধান জারি করছেন যে, এক ছেলের অংশ হবে দুই কন্যা সম্ভানের মতো, কিন্তু (উত্তরাধিকারী) কন্যারা যদি দু'য়ের বেশী হয় তাহলে তাদের জন্যে (থাকবে) রেখে যাওয়া সম্পত্তির দুই তৃতীয়াংশ, আর (সে) কন্যা সম্ভান যদি একজন হয়. তাহলে তার (অংশ) হবে (পরিত্যক্ত সম্পত্তির) অর্ধেক; মৃত ব্যক্তির সম্ভান থাকলে তার পিতামাতা প্রত্যেকের জন্যে থাকবে (সে সম্পদের) ছয় ভাগের এক ভাগ, (অপর দিকে) মৃত ব্যক্তির যদি কোনো সম্ভান না থাকে এবং পিতামাতাই যদি হয় (তার একমাত্র) উত্তরাধিকারী, তাহলে তার মায়ের (অংশ) হবে তিন ভাগের এক ভাগ, যদি মত ব্যক্তির কোনো ভাই বোন (বেঁচে) থাকে তাহলে তার মায়ের (অংশ) হবে ছয় ভাগের এক ভাগ, (মৃত্যুর) আগে সে যে ওসিয়ত করে গেছে এবং তার (রেখে যাওয়া) ঋণ আদায় করে দেয়ার পরই (কিন্তু এ সব ভাগ-বাটোয়ারা করতে হবে): তোমরা জানো না তোমাদের পিতামাতা ও তোমাদের সম্ভান-সম্ভতির মধ্যে কে তোমাদের জন্যে উপকারের দিক থেকে বেশী নিকটবর্তী: (অতএব) এ হচ্ছে আল্লাহর বিধান, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সকল কিছু সম্পর্কে ওয়াকেফহাল এবং তিনিই হচ্ছেন বিজ্ঞ, পরম কুশলী।

اا يُوْصِيْكُرُ اللّهُ فِي آوُلَادِكُرْ ق لِللَّكِ مِثْلُ مَقَا الْاَنْتَيْنِ اللّهُ فِي آوَلَادِكُرْ ق لِللَّكِ مِثْلُ مَقًا الْاَنْتَيْنِ اللّهُ عَالِنَ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُقا مَا تَرَكَ ع وَإِنْ كَانَتُ وَاحِلِ مِّنْهُمَا فَلَهَا النِّصْفُ وَلِاَبُويْدِ لِكُلِّ وَاحِلٍ مِّنْهُمَا النَّصْفُ وَلِاَبُويْدِ لِكُلِّ وَاحِلٍ مِّنْهُمَا النَّصْفُ وَلِا بَوْيَدِ لِكُلِّ وَاحِلٍ مِّنْهُمَا النَّسُ مِنَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَدٌ وَلَلَّ عَنَانَ اللّهُ وَلَلَّ عَنَانَ اللّهُ وَلَلَّ عَنَانَ كَانَ لَدٌ إِنْوَقَ قَلْكِمِدِ السَّلُسُ التَّكْمُ الْوَدِيْ وَالْمِدِ السَّلُسُ اللّهُ عَنَانَ كَانَ لَدٌ إِنْوَدَةً فَلِكِمِدِ السَّلُسُ اللّهُ عَنَانَ كَانَ كَانَ لَدٌ إِنْوَدَةً فَلِكِمِدِ السَّلُسُ وَصِيّدٍ يُوْمِي بِهَا أَوْ دَيْنِ وَ أَبَاوُكُكُمْ مِنَا اللّهِ وَاللّهُ كَانَ عَلَيْمًا وَاللّهُ كَانَ عَلَيْمًا وَوَلِيَدَةً مِّنَ اللّهِ وَاللّهُ كَانَ عَلَيْمًا وَوَلِيَاللّهُ كَانَ عَلَيْمًا عَلَيْمًا وَقُولُكُمْ لَا تَدَرُونَ اللّهِ وَاللّهُ كَانَ عَلَيْمًا عَلَيْمًا وَقِيْمًا وَقُولَةً مِّنَ اللّهِ وَاللّهُ وَاللّهُ كَانَ عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا اللّهُ كَانَ عَلَيْمًا عَلَى اللّهُ عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلْمَا عَلَيْمًا عَلَيْمُ اللّهُ عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَى اللّهُ عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمًا عَلَيْمُ عَلَيْمًا عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَل

১২. তোমাদের স্ত্রীদের রেখে যাওয়া সম্পত্তিতে তোমাদের অংশ হচ্ছে অর্ধেক, যদি তাদের কোনো সন্তানাদি না থাকে, আর যদি তাদের সম্ভান থাকে তাহলে (সে সম্পত্তিতে) তোমাদের অংশ হবে চার ভাগের এক ভাগ, তারা যে ওসিয়ত করে গেছে কিংবা (তাদের) ঋণ পরিশোধ করার পরই (কিন্তু তোমরা এই অংশ পাবে); তোমাদের স্ত্রীদের জন্যে (থাকবে) তোমাদের রেখে যাওয়া সম্পত্তির এক চতুর্থাংশ, যদি তোমাদের কোনো সম্ভান না থাকে, যদি তোমাদের সম্ভান থাকে, তাহলে তারা পাবে রেখে যাওয়া সম্পদের আট ভাগের এক ভাগ, (মৃত্যুর আগে) তোমরা যা ওসিয়ত করে যাবে কিংবা যে ঋণ তোমরা রেখে যাবে তা পরিশোধ করে দেয়ার পরই (এই অংশ তারা পাবে): যদি কোনো পুরুষ কিংবা নারী এমন হয় যে, তার কোনো সম্ভানও নেই. পিতা মাতাও নেই (৩ধ) আছে তার এক ভাই ও এক বোন, তাহলে তাদের স্বার জন্যে থাকবে ছয় ভাগের এক ভাগ, (ভাই বোন মিলে) তারা যদি এর চাইতে বেশী হয় তবে (মৃত ব্যক্তির রেখে যাওয়া সম্পদের) এক-তৃতীয়াংশে তারা সবাই (সমান) অংশীদার হবে, অবশ্য (এ সম্পত্তির ওপর) মৃত ব্যক্তির যা অসিয়ত করা আছে কিংবা কোনো ঋণ (পরিশোধ)-এর পরই (এ ভাগাভাগি করা যাবে), তবে (খেয়াল রাখতে হবে), কখনো উত্তারাধিকারীদের অধিকার পাওয়ার পথে তা যেন ক্ষতিকর হয়ে না দাঁডায়. কেননা এ হচ্ছে আল্লাহর নির্দেশ: আর আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞানী ও পরম ধৈর্যশীল।

১৩. এগুলো হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার সীমারেখা; যে ব্যক্তি (এর ভেতরে থেকে) তাঁর ও তাঁর রস্লের আনুগত্য করবে, আল্লাহ তায়ালা তাকে এমন এক জানাতে প্রবেশ করাবেন যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, সেখানে সে অনস্তকাল ধরে অবস্থান করবে; (মূলত) এ হবে এক মহাসাফল্য।

ا تِلْكَ مُرُودُ اللهِ ، وَمَن يُطِعِ اللهَ وَرَن يُطِعِ اللهَ وَرَسُولَة يُرْعِلُهُ مَنْتِ تَجْرِئ مِن تَحْتِهَا الْإَنْهُ عَلْمِينَ فِيْهَا ، وَذَٰلِكَ الْغَوْزُ الْعَظِيْمُ الْإَنْهُ عَلْمِينَ فِيْهَا ، وَذَٰلِكَ الْغَوْزُ الْعَظِيْمُ الْمَا الْعَوْزُ الْعَظِيْمُ اللهَ الْعَوْزُ الْعَظِيْمُ اللهَ الْعَوْزُ الْعَظِيْمُ اللهَ اللهُ اللهَ اللهُ اللهِ اللهَ اللهُ اللهِ اللهَ اللهُ اللهِ اللهَ اللهُ الل

১৪. (অপরদিকে) যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের না-ফরমানী করবে এবং তাঁর (নির্ধারিত) সীমারেখা লংঘন করবে, আল্লাহ তায়ালা তাকে (জ্বলম্ভ) আগুনে প্রবেশ করাবেন, সেখানে সে অনম্ভকাল ধরে থাকবে, তার জন্যে (রয়েছে) অপমানকর শান্তি।

ا وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهٌ وَيَتَعَنَّ مُنُودَةٌ يَنَعَلَّ مُنُودَةً يُلْمِعُلُهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى الله

১৫. তোমাদের নারীদের মধ্যে যারা (ব্যভিচারের) দৃক্রম مَانِكُرُ নিয়ে আসবে তাদের (বিচারের) ওপর তোমরা নিজেদের মধ্যে থেকে চার জন সাক্ষী যোগাড় করবে, অতপর সে فَانَ تَالَّمُ চার জন লোক যদি (ইতিবাচক) সাক্ষ্য প্রদান করে তাহলে সে নারীদের তোমরা ঘরের ভেতর অবরুদ্ধ করে রাখবে, যতোদিন না মৃত্যু এসে তাদের সমাপ্তি ঘটিয়ে

10 وَالَّتِي يَاْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُرْ فَاسْتَشْهِلُوا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُرْ عَ فَانَ شَمِكُوا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُرْ عَ فَانَ شَهِدُوا فَامَسْكُوهُنَّ فِي الْبُيُونِ مَتَّى يَتَوَفَّدُهُنَّ الْمُونِ الْمُونِ الْمُقَلِّ اللَّهُ لَهُنَّ يَتَوَفِّدُهُنَّ اللَّهُ لَهُنَّ مَبْكِلًا

১৬. আর তোমাদের মধ্যে যে দুজন (নর-নারী) এ (ব্যভিচারের) কাজ করবে, তাদের দুজনকেই তোমরা শান্তি দেবে, (হাঁ) তারা যদি তাওবা করে এবং নিজেদের সংশোধন করে নেয়, তাহলে তাদের (শান্তি দেয়া) থেকে তোমরা সরে দাঁড়াও, অবশাই আল্লাহ তায়ালা তাওবা কবুলকারী এবং পরম দয়ালু।

দেয়, অথবা আল্লাহ তায়ালা তাদের জন্যে অন্য কোনো

ব্যবস্থা না করেন।

ا وَالَّانُ فِي يَأْتِينِهَا مِنْكُر فَانُوْفَهَا ع فَانَ الله كَانَ
 تَابَا وَاَصْلَحَا فَاعْرِضُوْا عَنْهُهَا ، إِنَّ الله كَانَ
 تَوَّابًا رَّحِيْهًا

১৭. আল্লাহ তায়ালার ওপর শুধু তাদের তাওবাই (কবুলযোগ্য) হবে, যারা ভুলবশত গুনাহের কাজ করে, অতপর (জানামাত্রই) তারা দ্রুত (তা থেকে) ফিরে আসে, (মূলত) এরাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা দয়াপরবশ হন; আর আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সর্ববিষয়ে জ্ঞানী, কুশলী।

১৮. আর তাদের জন্যে তাওবা (করার কোনো অবকাশই)
নেই, যারা (আজীবন) ওধু গুনাহের কাজই করে,
এভাবেই (গুনাহের কাজ করতে করতে) একদিন তাদের
কারো (দুয়ারে) যখন মৃত্যু এসে হাযির হয়, তখন সে
বলে (হে আল্লাহ), আমি এখন তাওবা করলাম,
(আসলে) তাদের জন্যেও (কোনো তাওবা) নয় যারা
কাফের অবস্থায় ইহলীলা সাংগ করলো; এরা হচ্ছে সেসব
লোক, যাদের জন্যে আমি কঠিন যন্ত্রণাদায়ক আযাবের
ব্যবস্থা করে রেখেছি।

١٨ وَلَيْسَسِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّاٰسِ عَمَّلُونَ السَّيِّاٰسِ عَمَّتَى إِذَا مَضَرَ اَمَنَهُمُ الْمَوْسُ السَّيِّاٰسِ عَمَّتَى إِذَا مَضَرَ اَمَنَهُمُ الْمَوْسُ قَالَ إِنِّى تَبُوتُونَ الْفَى وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارً * أُولَٰئِكَ اَعْتَلْنَا لَهُمْ عَنَابًا الْمِيْمَ عَنَابًا الْمِيْمَ عَنَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمُيْمَ عَلَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمُيْمَ عَلَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمِيْمَ عَلَابًا الْمُيْمَ عَلَابًا الْمُيْمَ عَلَابًا اللّٰهِيمَ الْمُيْمَ عَلَابًا اللّٰهِيمَ الْمُيْمَ عَلَى اللّٰهِمَ اللّٰهُمْ عَلَى اللّٰمَ وَلَا اللّٰهَا اللّٰهُمُ عَلَى اللّٰمَ اللّٰمَ اللّٰهَا اللّٰهَالَ اللّٰهَا اللّٰهَالَ اللّٰهَا اللّٰهَالَ اللّٰهَا اللّٰهَالَٰ اللّٰهَا اللّٰهَالَٰ اللّٰهَا اللّٰهَالَٰ اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰمَ اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَالِمُلْمَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَا اللّٰهَاللّٰهَا اللّٰهَا اللّ

১৯. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো তোমাদের জন্যে কখনো জোর করে বিধবা নারীদের উত্তরাধিকারের পণ্য বানানো বৈধ নয়, (বিয়ের সময় মোহর হিসেবে) যা তোমরা তাদের দিয়েছো তার কোনো অংশ তাদের কাছ

19 يَايَّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا لاَ يَحِلُّ لَكُرْ اَنْ اَرِيُوا النِّسَاءَ كَرْمًا م وَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ لِتَنْهَبُوا

৪ সূরা আন্ নেসা

bo

থেকে নিয়ে নেয়ার জন্যে তোমরা তাদের আটক করে রেখো না যতোক্ষণ পর্যন্ত তারা প্রকাশ্য কোনো ব্যভিচারের কাজে লিগু না হয়, তাদের সাথে সদ্ভাবে জীবন যাপন করো, এমনকি তোমরা যদি তাদের পছন্দ নাও করো, এমনও তো হতে পারে, যা কিছু তোমরা পছন্দ করো না তার মধ্যেই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে অফুরম্ভ কল্যাণ নিহিত রেখে দিয়েছেন।

بِبَعْضِ مَا ۗ اٰتَيْتُهُوْهُنَّ اِلَّا اَن يَّاتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ بَيِّنَةٍ ج وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُونِ ج فَإِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللهُ فيه خَيْرًا كَثِيرًا

২০. আর যদি তোমরা এক স্ত্রীকে আরেকজন স্ত্রী দ্বারা বদল করার সংকল্প করেই নাও, তাহলে (মোহর হিসেবে) বিপুল পরিমাণ সোনাদানা দিলেও তার কোনো অংশ তোমরা তার কাছ থেকে ফেরত নিয়ো না; তোমরা কি (তাদের ওপর মিথ্যা) অপবাদ দিয়ে ও সুস্পষ্ট পাপাচার করে তা ফেরত নিতে চাচ্ছো?

٢٠ وَإِنْ أَرَدْتُرُ اسْتِبْلَ اللهَ زَوْجِ مَّكَانَ زَوْجٍ ٧ وَّ أَتَيْتُمْ إِمْنُهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُنُوا مِنْهُ شَيْئًا ﴿ أَتَأْخُلُونَهُ لَهُ الْمُتَانًا وَ أَثْمًا مُّبِينًا

२১. তোমরা (মোহরানার) সে অংশটুকু ফেরত নেবেই বা مُعْشُكُرُ أَفْضَى بَعْضُكُرُ ٢١ وَكَيْفَ تَأَخُلُونَدً وَقَلَ أَفْضَى بَعْضُكُرُ اللهِ المَاكِمَةِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ الل কি করে? অথচ (বিভিন্নভাবে) তোমরা তো একে অপরের স্বাদ গ্রহণ করেছো, (তাছাড়া এর মাধ্যমে) তারা তোমাদের কাছ থেকে (বিয়ে বন্ধনের) পাকাপাকি একটা প্রতিশ্রুতিও আদায় করে নিয়েছিলো (যা তোমরা ভেংগে দিয়েছো)।

إِلَى بَعْضِ وا آَغَنَانَ مِنْكُر مِيْثَاقًا غَلَيْظًا

২২. নারীদের মধ্য থেকে যাদের তোমাদের পিতা (পিতামহ)-রা বিয়ে করেছে তাদের তোমরা কখনো বিয়ে করো না, (হাা, এ নির্দেশ আসার) আগে যা হয়ে গেছে ، وَمُقَتًا وَمُقَتًا مِنْ سَلَفَ اللَّهِ كَانَ فَاحِشَةً وَمُقَتًا باللهِ مَا قَلْ سَلَفَ اللهِ اللَّهِ كَانَ فَاحِشَةً وَمُقَتًا باللهِ اللهِ اللهُ اللهِ তা তো হয়েই গেছে. এটি (আসলেই) ছিলো এক অশ্লীল (নির্লজ্জ) কাজ এবং খুবই ঘৃণ্য ও নিকৃষ্ট আচরণ।

٢٢ وَلَا تَنْكِعُواْ مَا نَكَعَ أَبَأَوُّكُمْ مِّنَ النِّسَاءِ وَسَاءُ سَبِيْلاً ع

২৩. (বিয়ের জন্যে) তোমাদের ওপর হারাম করে দেয়া হয়েছে তোমাদের মা. তোমাদের মেয়ে. তোমাদের বোন. তোমাদের ফুফু, তোমাদের খালা, ভাইদের মেয়ে, বোনদের মেয়ে. (আরো হারাম করা হয়েছে) সেসব মা-যারা তোমাদের বুকের দুধ খাইয়েছে, তোমাদের দুধ (খাওয়ার সাথী) বোন, তোমাদের স্ত্রীদের মা, তোমাদের ন্ত্রীদের মাঝে যাদের সাথে তোমরা সহবাস করেছো তাদের আগের স্বামীর ঔরসজাত মেয়েরা, যারা তোমাদের অভিভাবকত্বে রয়েছে, (অবশ্য) যদি তাদের সাথে তোমাদের (শুধু বিয়ে হয়ে থাকে কিন্তু) তোমরা কখনো তাদের সাথে সহবাস করোনি, তাহলে (তাদের আগের স্বামীর মেয়েদের বিয়ে করায়) তোমাদের জন্যে কোনো দোষ নেই, (তোমাদের জন্যে) তোমাদের নিজেদের ঔরসজাত ছেলেদের স্ত্রীদের হারাম করা বোনকে একত্র করাও (হারাম করা হয়েছে), তবে যা কিছু (এর) আগে সংঘটিত হয়ে গেছে (তা তো হয়েই গেছে. সে ব্যাপারে) অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা বডোই ক্ষমাশীল ও একান্ত দয়াবান।

٢٣ حُرِّمَتُ عَلَيْكُسُ أَمَّاتُكُسُ وَبَنْتُكُم وَ أَخُوتُكُرْ وَعَيَّتُكُرْ وَخَلْتُكُرْ وَبَنْتُ الْأَحْ وَبَنْتُ الْأَغْتِ وَأُمَّهُتُكُرُ الَّتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَٱخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَٱمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَانِبُكُرُ الَّتِي فِي مُجُورِكُر مِّن يِّسَائِكُم الَّتِي دَغَلْتُر بِهِنَّ زِفَانَ لَّرْ تَكُونُوا دَغَلْتُر بهي فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ (وَحَلَائِلُ ٱبْنَائِكُمُ الْأَهْتَيْنِ إِلَّا مَا قَلْ سَلَفَ ، إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا لا ২৪. নারীদের মাঝে বিয়ের দূর্গে অবস্থানকারীদেরও (তোমাদের জন্যে হারাম করা হয়েছে), তবে যেসব নারী (যদ্ধবন্দী হয়ে) তোমাদের অধিকারে এসে পডেছে তারা বাতীত, এ হচ্ছে (বিয়ের ব্যাপারে) তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার বিধান, এর বাইরে যে সব (নারী) রয়েছে, তাদের তোমাদের জন্যে (এ শর্তে) হালাল করা হয়েছে যে, তোমরা (বিয়ের জন্যে) একটি নির্দিষ্ট পরিমাণ (মোহর) বিনিময় আদায় করে দেবে এবং তোমরা (বিয়ের) সংরক্ষিত দূর্গে অবস্থান করবে, তোমরা অবাধ যৌনস্পহা পুরণে (নিয়োজিত) হবে না: অতপর তাদের মধ্যে যাদের তোমরা এর মাধ্যমে উপভোগ করবে তাদের (মোহরের) বিনিময় ফর্য হিসেবে আদায় করে দাও, (অবশ্য একবার) এ মোহর নির্ধারিত হয়ে যাওয়ার পর যে (পরিমাণের) ওপর তোমরা উভয়ে একমত হও. তাতে কোনো দোষের কিছু নেই, নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ, কুশলী,

٢٣ وَّالْهَكْمُنْتُ مِنَ النِّسَّاءِ إِنَّا مَا مَلَكَتْ

آيْهَا نُكُرْ عَلَٰ كِلَّا اللهِ عَلَيْكُرْ عَ وَالْحِلَّ لَكُرْ مَّ اللهِ عَلَيْكُرْ عَ وَالْحِلَّ لَكُرْ مَّ وَرَاءَ ذَلِكُرْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُرْ مَّحْمِنِيْنَ عَيْرَ مُسْفِحِيْنَ ءَ فَهَا اسْتَهْتَعْتُرْ بِهِ مِنْ عَلَى فَا تُومُنَّ أَجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ء وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُرْ فِيْهَا تَرَاضَيْتُرْ بِهِ مِنْ بَعْلِ الْفَرِيْضَةِ عَلَيْكُرْ فِيْهَا تَرَاضَيْتُرْ بِهِ مِنْ بَعْلِ الْفَرِيْضَةِ عَلَيْكُمْ الله كَانَ عَلِيْهًا حَكِيْمًا

২৫. আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তির স্বাধীন ও সম্ভান্ত কোনো ঈমানদার নারীকে বিয়ে করার (আর্থিক ও সামাজিক) সামর্থ না থাকে, তাহলে সে যেন তোমাদের অধিকার্ড্রক্ত কোনো ঈমানদার নারীকে বিয়ে করে নেয়: তোমাদের ঈমান সম্পর্কে তো আল্লাহ তায়ালা সম্যক অবগত আছেন: (ঈমানের মাপকাঠিতে) তোমরা তো একই রকম, অতপর তোমরা তাদের (অধিকারভুক্তদের) অভিভাবকদের অনুমতি নিয়ে বিয়ে করো এবং ন্যায়-ইনসাফভিত্তিক তাদের যথার্থ মোহরানা দিয়ে দাও (এর উদ্দেশ্য হচ্ছে), তারা যেন বিয়ের দূর্গে সুরক্ষিত হয়ে যায়-(স্বেচ্ছাচারিণী হয়ে) পরপুরুষকে আনন্দদানের কাজে নিয়োজিত না থাকে. অতপর যখন তাদের বিয়ের দূর্গে অবস্থান করে দেয়া হলো. তখন যদি তারা ব্যভিচারে লিপ্ত হয়. (তখন) তাদের ওপর আরোপিত শান্তির পরিমাণ কিন্তু (বিয়ের) দুর্গে অবস্থানকারিণী স্বাধীন (সম্ভ্রান্ত) নারীদের ওপর (আরোপিত শান্তির) অর্ধেক: তোমাদের মধ্যে যাদের ব্যভিচারে লিপ্ত হবার আশংকা থাকবে. (তথু) তাদের জন্যেই এ (রেয়াত)-টুকু (দেয়া হয়েছে); কিন্তু তোমরা যদি ধৈর্য ধারণ করতে পারো, অবশ্যই তা তোমাদের জন্যে কল্যাণকর এবং আল্লাহ তায়ালা একান্ত ক্ষমাপরায়ণ ও পরম দয়াল।

٢٥ وَمَنْ لَرْ يَسْتَطِعْ مِنْكُرْ طَوْلًا أَنْ يَنْكَعُ الْمُحْمَنْسِ الْمُؤْمِنْسِ فَهِنْ مَّا مَلَكَسْ الْمُحْمَنْسِ الْمُؤْمِنْسِ فَهِنْ مَّا مَلَكَسْ الْمُؤْمِنْسِ وَ وَاللَّهُ الْمُؤْمِنْسِ وَ وَاللَّهُ الْمُؤْمِنْسِ وَ وَاللَّهُ الْمُؤْمِنْسِ وَ الْمُؤْمِنُ عِنْ الْمُحُومُنُ بِيهِ الْمُؤْمُنُ الْمُؤْمِنُ وَالْتُوهُنَّ الْمُؤْرَهُنَّ الْمُؤْرَهُنَّ الْمُؤْرَهُنَّ الْمُؤْرَهُنَّ الْمُؤْمُنَّ بِالْمَعْرُ وَنِ مُحْمَنْسِ غَيْرَ مُسْفِحْسٍ ولا الله عَلَى الْمُحْمَنْسِ مِنَا الْمُحْمَنْسِ الْمُلَانِ عَ فَاذَا الْمُصَنَّ فَا عَلَى الْمُحْمَنْسِ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْمَنْسِ مِنَ الْعَنْسَ الْعَنْسَ عَيْرَ لُكُرْ وَالله غَفُورٌ مِنْ عَشِي الْعَنْسَ مِنْ الْعَنْسَ الْعَنْسَ الْعَنْسَ وَلَكُ لَمْنَ عَشِي الْعَنْسَ مِنْ الْعَنْسَ الْعَنْسَ وَاللّهُ غَفُورٌ وَاللّهُ غَفُورٌ الْمَرْءُ وَاللّهُ غَفُورٌ الْمَدْرُو الْمُدُورُ الْمُذَا لَكُمْ وَاللّهُ غَفُورٌ اللّهُ عَفُورٌ اللّهُ عَنْدُورٌ اللّهُ عَنْورُ اللّهُ اللّهُ عَنُورٌ اللّهُ عَنْورُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَنْورٌ اللّهُ الْمُؤْورُ اللّهُ الْمُؤْلِقُولُ اللّهُ الْمُؤْلِدُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ اللّهُ اللّهُ الْعَلْمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الْمُؤْلِدُ اللّهُ الْمُؤْلِدُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الْمُؤْلِدُ اللّهُ الْعَلَى الْمُؤْلِدُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ المُؤْلِدُ اللّهُ اللّ

২৬. আল্লাহ তায়ালা (তাঁর বাণীসমূহ) তোমাদের কাছে
খুলে খুলে বলে দিতে চান এবং তিনি তোমাদের—
তোমাদের পূর্ববর্তী (পুণ্যবান) মানুষদের পথে পরিচালিত
করতে চান, আর (এর মাধ্যমে) আল্লাহ তায়ালা
তোমাদের ক্ষমা (অনুগ্রহ) করতে চান, আল্লাহ তায়ালা
সর্বজ্ঞ, কুশলী।

٢٦ يُرِيْلُ اللهُ لِيَبَيِّنَ لَكُرْ وَيَهْلِيَكُرْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُرْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُرْ ﴿ وَاللّٰهُ عَلَيْرٌ حَكِيْرٌ

২৭. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর ক্ষমাপরবশ হতে চান, (অপরদিকে) যারা নিজেদের (পাশবিক) লালসার অনুসরণ করে, তারা চায় তোমরা, সে ক্ষমার পথ থেকে, বহুদূরে (নিক্ষিপ্ত হয়ে গোমরাহ) থেকে যাও।

٣٤ وَاللَّهُ يُوِيْنُ أَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُرْ تَ وَيُوِيْنُ النِّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ أَنْ تَهِيْلُوْا مَيْلًا عَظَيْمًا

২৮. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর থেকে বিধি নিষেধের বোঝা লঘু করে (তোমাদের জীবন সহজ করে)

٢٨ يُرِيْلُ اللَّهُ أَنْ يَّخَفِّفَ عَنْكُرْ ۚ ۚ وَخُلِقَ

৪ সূরা আন্ নেসা



وحيمرع

দিতে চান, (কেননা) মানুষকে দুর্বল করে পয়দা করা হয়েছে।

الْإِنْسَانُ ضَعَيْفًا

২৯. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, (কখনো) তোমরা একে অপরের ধন-সম্পত্তি অন্যায়ভাবে গ্রাস করে৷ না. (হ্যা.) ব্যবসা-বাণিজ্য যা করবে তা পারস্পরিক সম্মতির ভিত্তিতেই করবে এবং কখনো (স্বার্থের কারণে) একে অপরকে হত্যা করো না. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের প্রতি মেহেরবান।

٢٩ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا لَا تَأْكُلُوْا آمُوَالَكُمْ بَيْنَكُرْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَيْ تَوَاضِ مِّنْكُورُ مِن وَكَلِ تَقْتُلُوا اَنْفُسَكُورُ ١ انَّ اللَّهُ كَانَ بِكُرْ رُحِيْهًا

৩০. যে কেউই বাড়াবাড়ি ও যুলুম করতে গিয়ে এই (হত্যার) কাজ করে, অচিরেই আমি তাকে আগুনে পুড়িয়ে দেবো. (আর) আল্লাহর পক্ষে এ কাজ একেবারেই সহজ (মোটেই কঠিন কিছু নয়)।

٣٠ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذَٰلِكَ عُنُواانًا وَّظُلْمًا فَسَوْنَ نُصْلَيْهِ نَارًا ، وكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسَيُّرًا

৩১. যদি তোমরা সে সমস্ত বড়ো বড়ো গুনাহ থেকে বেঁচে থাকো, যা থেকে তোমাদের নিষেধ করা হয়েছে, তাহলে তোমাদের (ছোটোখাটো) গুনাহ আমি (এমনিই) তোমাদের (হিসাব) থেকে মুছে দেবো এবং অত্যন্ত সম্মানজনক স্থানে আমি তোমাদের প্রবেশ করাবো।

٣١ إِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُرْ سَيِّاٰ تِكُرْ وَنُنْ عِلْكُرْ مُّنْ عَلَّا كَوِيْهًا

৩২. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের একজনের ওপর আরেকজনকে যা (কিছু বেশী) দান করেছেন, তোমরা (তা পাওয়ার) লালসা করো না. যা কিছু পুরুষরা উপার্জন করলো তা তাদেরই অংশ হবে: আবার নারীরা যা কিছু অর্জন করলো তাও (হবে) তাদেরই অংশ: তোমরা আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে তাঁর অনুগ্রহ (পাওয়ার জন্যে) প্রার্থনা করো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা প্রতিটি বিষয় সম্পর্কে সম্যক ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

٣٢ وَلَا تَتَهَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ ، لِلرَّجَالِ نَصِيْبٌ مِّها اكْتَسَبُوا ، وَلِلنِّسَاءِ نَصِيْبٌ مِّمًّا اكْتَسَبْنَ ﴿ وَسُنَكُوا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ﴿ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْهًا

৩৩. পিতামাতা ও আত্মীয়-স্বজনের রেখে যাওয়া সম্পত্তিতে আমি সবার জন্যেই অভিভাবক বানিয়ে রেখেছি: যাদের সাথে তোমাদের কোনো চুক্তি কিংবা অংগীকার রয়েছে তাদের পাওনা (পুরোপুরিই) আদায় করে দেবে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই প্রতিটি বিষয়ের ওপর সাক্ষী হয়ে আছেন।

٣٣ وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَوَكَ الْوَالِدُنْ وَالْأَقْرَبُوْنَ ﴿ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتُ أَيْهَا نُكُرْ فَا تُوْهُرْ نَصِيْبَهُرْ ، إِنَّ اللَّهُ كَانَ عَلَٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ع

৩৪. পুরুষরা হচ্ছে নারীদের (কাজকর্মের) ওপর প্রহরী, কারণ আল্লাহ তায়ালা এদের একজনকে আরেকজনের ওপর (কিছু বিশেষ) মর্যাদা প্রদান করেছেন, (পুরুষের এই মর্যাদার) একটি (বিশেষ) কারণ হচ্ছে, (প্রধানত) তারাই (দাম্পত্য জীবনের জন্যে) নিজেদের অর্থ সম্পদ वारा करतः अञ्चय मञी-मांसी नाती शर (এकान्त) موقطت (अवान्त) المؤلوم و فالصلحت قنيت مفقطت (अवान्त) المؤلوم و فالصلحت المناسبة المن অনুগত, (পুরুষদের) অনুপস্থিতিতে তারা (স্বয়ং) আল্লাহর তত্ত্বাবধানে (থেকে) নিজেদের (ইযযত-আবরু ও অন্যান্য) সব অদেখা কিছুর রক্ষণাবেক্ষণ করবে: আর যখন কোনো নারীর অবাধ্যতার (ঔদ্ধত্যের) ব্যাপারে তোমরা আশংকা করো, তখন তোমরা তাদের (ভালো কথার) উপদেশ দাও, (তা কার্যকর না হলে) তাদের সাথে একই বিছানায় থাকা ছেড়ে দাও. (তাতেও যদি

٣٣ اَلرِّجَالُ قَوَّمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِهَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضِ وَّبِهَا أَنْفَقُوا مِنْ لِّلْغَيْبِ بِهَا حَفظَ اللَّهُ ء وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْهَضَاجِع وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ عَانَ ٱطَعْنَكُمْ فَلَا



কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৫ ওয়াল্মুহ্ছানাত

তারা সংশোধিত না হয় তাহলে চূড়ান্ত ব্যবস্থা হিসেবে)
তাদের (মৃদু) প্রহার করো, তবে যদি তারা (এমনিই)
অনুগত হয়ে যায়, তাহলে তাদের (খামাখা কষ্ট দেয়ার)
ওপর অজুহাত খুঁজে বেড়িয়ো না; অবশ্যই আল্লাহ
তায়ালা সর্বশ্রেষ্ঠ ও সবার চাইতে মহান!

تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ﴿ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا

৩৫. আর যদি তাদের (স্বামী-ন্ত্রী এ) দুজনের মাঝে বিচ্ছেদের আশংকা দেখা দেয়, তাহলে তার পক্ষ থেকে একজন সালিস এবং তার (ব্রীর) পক্ষ থেকে একজন সালিস নিযুক্ত করো, (আসলে) উভয়ে যদি নিজেদের নিম্পত্তি চায়, তাহলে আল্লাহ তায়ালা তাদের (পুনরায় মীমাংসায় পৌছার) তাওফীক দেবেন, আল্লাহ তায়ালা নিশ্চরই সম্যক জ্ঞানী, সর্ববিষয়ে ওয়াকেফহাল।

٣٥ وَإِنْ خِفْتُرْ هِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا مَكَمًّا مِّنْ آهُلِهَا ءَ إِنْ يُّرِيْنَ آ مِّنْ آهُلِهَا ءَ إِنْ يُّرِيْنَ آ اِصْلَامًا يُّوفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ءَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا

৩৬. তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করো, কোনো কিছুকেই তাঁর সাথে অংশীদার বানিয়ো না এবং পিতামাতার সাথে ভালো ব্যবহার করো, (আরো) যারা (তোমাদের) ঘনিষ্ঠ আত্মীয়, এতীম, মেসকীন, আত্মীয় প্রতিবেশী, অনাত্মীয় প্রতিবেশী, (তোমার) পথচারী সংগী ও তোমার অধিকারভুক্ত (দাস দাসী, তাদের সবার সাথেও ভালো ব্যাবহার করো), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা এমন মানুষকে কখনো পছন্দ করেন না, যে অহংকারী ও দাঞ্জিক।

٣٦ وَاعْبُدُوا الله وَلا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَّبِالْوَ الِدِي الْقُرْبَى الْقُرْبَى الْقُرْبَى الْقُرْبَى وَالْيَتْمِي وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْيَتْمِي وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجَنْبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَالْمَاكِينِ السَّيْلِ لِاوَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالْ الله لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُحْتَالًا فَحُوْرًا لا لله لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُحْتَالًا فَحُوْرًا لا

৩৭. (আল্লাহ তায়ালা এমন ধরনের লোকদেরও ভালোবাসেন না) যারা নিজেরা (যেমন) কার্পণ্য করে, (তেমনি) অন্যদেরও কার্পণ্য করার আদেশ করে, (তাছাড়া) আল্লাহ তায়ালা তাদের যা কিছু (ধন-সম্পদের) অনুগ্রহ দান করেছেন তারা তা শুকিয়ে রাখে; আমি কাফেরদের জন্যে এক লাঞ্ছনাদায়ক শান্তির ব্যবস্থা করে রেখেছি।

٣٤ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُبُوْنَ مَا اللَّهُرُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ﴿ وَاَعْتَنْنَا لِلْكُغِرِيْنَ عَلَاابًا مَّهِيْنًا ۚ

৩৮. (আল্লাহ তায়ালা তাদেরও পছন্দ করেন না) যারা লোক দেখানোর উদ্দেশে নিজেদের ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তারা আল্লাহ তায়ালা এবং শেষ বিচারের দিনকেও বিশ্বাস করে না; (আর) শয়তান যদি কোনো ব্যক্তির সাধী হয় তাহলে (বুঝতে হবে) সে বড়োই খারাপ সাধী (পেলো)!

٣٨ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُونَ آمُوالَهُمْ رِنَّاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْ اِلْاَخِرِ ، وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطُيُ لَهُ قَرِيْنًا فَسَاءَ قَرِيْنًا

৩৯. কি (দুর্যোগ) তাদের ওপর দিয়ে বয়ে যেতো যদি তারা (শয়য়তানকে সাথী বানানার বদলে) আল্পাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনতো এবং ঈমান আনতো পরকাল দিবসের ওপর, সর্বোপরি আল্পাহ তায়ালা তাদের যা কিছু দান করেছেন তা থেকে তারা খয়চ করতো; (বয়ৢত) আল্পাহ তায়ালা তাদের কাজকর্ম সম্পর্কে ভালোভাবেই ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

٣٩ وَمَا ذَا عَلَيْهِرْ لَوْ أَمَنُواْ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَخِرِ وَٱنْفَقُواْ مِمَّا رَزَقَهُرُ اللَّهُ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ بِهِرْ عَلِيْهًا

৪০. আল্লাহ তায়ালা কারো ওপর এক বিন্দু পরিমাণও যুলুম করেন না, (বরং তিনি তো এতো দয়ালু যে,) নেকীর কাজ যদি একটি হয় তবে তিনি তার পরিমাণ দ্বিগুণ করে দেন এবং (এর সাথে) তিনি নিজ থেকেও বড়ো কিছু পুরস্কার যোগ করেন।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِرُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ع وَإِنْ تَكُ مَسَنَةً يَّضِعِفْهَا وَيُؤْسِ مِنْ لَّكُنْهُ أَجْرًا عَظِيْمًا

8১. সেদিন (তাদের অবস্থাটা) কেমন হবে যখন আমি প্রত্যেক উন্মতের (কাজে) সাক্ষী (হিসেবে তাদের নবীকে) এনে হাযির করবো এবং (হে মোহাম্মদ,) এদের সবার কাছে সাক্ষী হিসেবে আমি (সেদিন) তোমাকে নিয়ে আসবো।

٣١ فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ ٱلَّةٍ ' بِشَهِيْرٍ وََّجِئْنَا بِكَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّ

৪২. সেদিন যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করেছে এবং (তাঁর) রসূলের বিরুদ্ধাচরণ করেছে, তারা কামনা করবে, মাটি যদি তাদের নিজেদের সাথে মিশে একাকার হয়ে যেতাে! (কারণ সেদিন) কোনাে মানুষ কোনাে কথাই (মহাবিচারক) আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে গােপন করতে পারবে না।

٣٢ يَوْمَئِنِ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوِّى بِهِرُ الْأَرْضُ ﴿ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَلِيثًا ع

৪৩. হে ঈমানদাররা, তোমরা কখনো নেশাগ্রস্ত অবস্থায় নামাযের কাছে যেও না. যতোক্ষণ পর্যন্ত (তোমরা এতোটুকু নিশ্চিত না হবে যে,) তোমরা যা কিছু বলছো তা তোমরা (ঠিক ঠিক) জানতে (ও বুঝতে) পারছো, (আবার) অপবিত্র অবস্থায়ও (নামাযের কাছে যেও) না. যতোক্ষণ না তোমরা (পুরোপুরিভাবে) গোসল সেরে নেবে. তবে পথচারী অবস্থায় থাকলে তা ভিন্ন কথা. (আর) যদি তোমরা অসুস্থ হয়ে পড়ো অথবা প্রবাসে থাকো, কিংবা তোমাদের কেউ যদি পায়খানা থেকে (ফিরে) আসো অথবা তোমরা যদি (দৈহিক মিলনের সাথে) নারী স্পর্শ করো (তাহলে পানি দিয়ে নিজেদের পরিষ্কার করে নেবে), তবে যদি (এসব অবস্থায়) পানি না-ই পাও, তাহলে পবিত্র মাটি দিয়ে তায়াম্মুম করে নেবে (এবং তার পদ্ধতি হচ্ছে), তা দিয়ে তোমাদের মুখমন্ডল ও তোমাদের হাত মাসেহ করে নেবে. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা গুনাহ মার্জনাকারী, পরম ক্ষমাশীল।

٣٣ يَآيَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تَقْرَبُوا السَّلُوةَ وَلَا وَآنَتُرْ سُكُرِى حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنْبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّى تَغْتَسِلُوا الْ وَإِنْ كُنْتُرْ مَرْضَى اَوْعَلَى سَفَرٍ اَوْجَاءَ اَحَلَّ وَإِنْ كُنْتُرْ مِّنَ الْغَانِطِ اَوْ لَهَسْتُرُ النِّسَاءَ فَلَرْ يَنْ الْغَانِطِ اَوْ لَهَسْتُرُ النِّسَاءَ فَلَرْ تَحِدُوا مَعْيُنُ النِّسَاءَ فَلَرْ يُوجُوفِكُمْ وَ اَيْدِيكُمُ مَ إِنَّ اللَّه كَانَ عَفُوا غَفُوا الله كَانَ عَفُوا غَفُورًا

88. (হে নবী,) তুমি কি তাদের (অবস্থা) দেখোনি, যাদের (আসমানী) গ্রন্থের (সামান্য) একটা অংশ দেয়া হয়েছিলো, কিন্তু তারা গোমরাহীর পথই কিনে নিচ্ছে, তারা তো চায় তোমরা যেন পথভ্রম্ভ হয়ে যাও।

٣٣ أَلَر تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ أُوتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتْبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلْلَةَ وَيُرِيْدُنُوْنَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ

৪৫. তোমাদের দুশমনদের আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানেন; অভিভাবক হিসেবে (যেমন) আল্লাহ তায়ালা যথেষ্ট, তেমনি সাহায্যকারী হিসেবেও আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট।

60 وَاللّٰهُ اَعْلَرُ بِاَعْنَ آئِكُرْ ، وَكَفَى بِاللّٰهِ وَلَيْا فَ وَكَفَى بِاللّٰهِ وَلِيًّا فَ وَلَيًّا فَ وَكَفَى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا

৪৬. ইহুদী জাতির মধ্যে কিছু লোক এমন আছে যারা (রস্লের) কথাগুলো মূল (অর্থের) স্থান থেকে সরিয়ে (বিকৃত করে) দেয় এবং তারা বলে, আমরা তনলাম এবং (সাথে সাথে) অমান্যও করলাম, (আবার বলে) আমাদের কথা তন্ন, (আসলে ইসলামী) জীবন বিধানে অপবাদদানের উদ্দেশ্যে নিজেদের জিহ্বাকে কুঞ্চিত করে এরা বলে (হে নবী), আপনি তন্ন (সাথে সাথেই বলে), আপনার শ্রবণশক্তি রহিত হয়ে যাক, (অথচ এসব কথা না বলে) তারা যদি বলতো (হে নবী), আমরা (আপনার কথা) তনলাম এবং (তা) মেনে নিলাম এবং আপনি

٣٦ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِيرَ عَنْ مُّوَافِعِهِ وَيَقُولُوْنَ سَبِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاشْبَعْ غَيْرَ مُسْبَعِ وَّرَاعِنَا لَيَّا الْمِالْسِنَتِهِيرْ وَطَعْنَا فِي السِّيْنِ وَ وَلَوْ اللَّهُيْنَا وَ الْطَعْنَا وَ الْطَعْنَا وَ الْطَعْنَا وَ الْمُثَنَا فَي اللَّهُيْنَ وَ الْمُعْنَا وَ الْمُعْرَا لَعْمَا وَ الْمُعْنَا وَ الْمُعْنَا وَ الْمُعْمَا وَ الْمُعْنَا وَ الْمُعْنِا وَ الْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْنَا وَالْمُعْمِعْمَا وَالْمُعْمِعْمَا وَالْمُعْمِعْمِ وَالْمُعْمَاعِلَامِ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعْمُ الْمُعْمِعُ الْمُعْمِعُ فَاعْمُ أَع

আমাদের কথা শুনুন, আমাদের প্রতি লক্ষ্য করুন, তাহলে এ বিষয়টা তাদের জন্যে কতোই না ভালো হতো, তাই হতো (বরং) তাদের জন্যে সংগত, কিন্তু সত্য অস্বীকার করার কারণে তাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অভিশাপ দিয়েছেন, অতপর (তাদের) সামান্য কিছ লোকই মাত্র ঈমান এনে থাকে :

وَلَٰكِنْ لَّعَنَهُرُ اللَّهُ بِكُفْرِمِرْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إلَّا قَليْلًا

৪৭. হে মানুষেরা, যাদের কেতাব দেয়া হয়েছে, তোমরা সেই গ্রন্থের ওপর ঈমান আনো, যা আমি (মোহামদের ওপর) নাযিল করেছি (এ হচ্ছে এমন এক কেতাব), যা তোমাদের কাছে মজুদ (পর্ববর্তী) কেতাবের সত্যতা স্বীকার করে (ঈমান জানো) সে সময় আসার আগে যখন আমি (পাপিষ্ঠদের) চেহারাসমূহ বিকৃত করে তাকে উল্টো দিকে ঘুরিয়ে দেবো, অথবা (ইহুদীদের পবিত্র দিন) العَنا اَصحب السَّبْسِ ﴿ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ अिनादित अवभाननाकांतीति अिं आिं (एकाट्न اللَّهُ عَالَم اللَّهُ অভিশাপ নাযিল করেছি (তেমনি কোনো বড়ো বিপর্যয় আসার আগেই ঈমান আনো), আর আল্লাহ তায়ালার হুকম, সে তো অবধারিত!

٣٠ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أُوْتُوا الْكتٰبَ أَمنُوْا بِهَا نَوْ لَنَا مُصَلَّقًا لَّهَا مَعَكُم مَن قَبْل أَن تَطْهس وُجُوْمًا فَنَرُدَّهَا عَلَى آدْبَارِهَا ۖ أَوْ نَلْعَنَهُرْ كَهَا مَفْعُولًا

৪৮. নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা কখনো (সে গুনাহ) মাফ করবেন না (যেখানে) তাঁর সাথে কাউকে শরীক করা হয়. এ ছাড়া অন্য সব গুনাহ তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে দেন, যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে কাউকে অংশীদার বানালো সে সত্যিই (আল্লাহর ওপর) মিথ্যা আরোপ করলো এবং একটা মহাপাপে (নিজেকে) জডালো!

٣٨ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ ج وَمَنْ يُشْرِكُ بِاللَّهِ فَقَلِ افْتَرَّى إِثْمًا عَظِيْمًا

৪৯. (হে নবী,) তুমি কি তাদের অবস্থা দেখোনি যারা নিজেদের খুব পবিত্র মনে করে, অথচ আল্লাহ তায়ালা যাকে ইচ্ছা তাকেই পবিত্র করেন এবং (সেদিন) তাদের ওপর এক বিন্দু পরিমাণও যুলুম করা হবে না।

٣٩ ٱلَمِ تَوَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ ٱنْفُسَهُرْ ، بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ يُّشَآَّءُ وَكَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا

৫০. (এদের প্রতি) তাকিয়ে দেখো কিভাবে এরা আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করছে, প্রকাশ্য গুনাহ হিসেবে এটাই তো (এদের জন্যে) যথেষ্ট!

٥٠ أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَانِ -ا العربيت يسرر

৫১. তুমি কি তাদের (অবস্থা) দেখোনি, যাদের (আল্লাহ তায়ালার) কেতাবের কিছু অংশ দান করা হয়েছিলো, (তারা আন্তে আন্তে) নানা ধরনের ভিত্তিহীন অমূলক যাদুমন্ত্র জাতীয় জিনিস ও (বহুতরো) মিথ্যা মাবুদের ওপর ঈমান আনতে শুরু করলো এবং এ কাফেরদের সম্পর্কে তারা বলতে লাগলো. ঈমানদারদের তুলনায় এরাই তো সঠিক পথের ওপর রয়েছে!

٥١ ٱلَمِ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ ٱوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتبِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْسِ وَالطَّاغُوْسِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُوُّكَاءِ أَهُلَى مِنَ الَّذِيْنَ أَمَنُوْا سَبِيْلًا

৫২. এরাই হচ্ছে সেই (হতভাগ্য) মানুষগুলো, যাদের ১ --उत्त जाहार राज्य (२००१) भानुवछरणा, यार्पत مُرَن الله وَمَن विभूत आल्लार करतरहन, आत आल्लार وَمَن ٥٢٥ أُولَئِكَ النَّانِينَ لَعَنَهُرُ الله وَمَن ٥٩٨ صارحة المالية ال তায়ালা যার ওপর অভিশাপ পাঠান তার জন্যে তমি কখনো কোনো সাহায্যকারী পাবে না।

يَّلْعَى اللَّهُ فَلَنْ تَجِنَ لَهٌ نَصِيْرًا

প্রাচুর্য সংক্রোম্ভ কিছু বরাদ্দ করা) আছে ? (যদি সত্যি সত্যিই তেমন কিছু এদের দেয়া হতো) তাহলে এরা তো খেজর পাতার একটি ঝিল্লিও কাউকে দিতে চাইতো না

يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا لا

৫৪. অথবা এরা কি অন্যান্য মানব সম্ভানদের ব্যাপারে 🥕 হিংসা (বিদ্বেষ) পোষণ করে, যাদের আল্লাহ তায়ালা

٥٣ أَمْ يَحْسُلُونَ النَّاسَ عَلَى مَا أَتُهُرُ

৪ সুরা আনু নেসা

by

নিজম্ব ভাভার থেকে (জ্ঞান, কৌশল ও রাজনৈতিক ক্ষমতা) দান করেছেন, (অথচ) আমি তো ইবরাহীমের বংশধরদেরও (আমার) গ্রন্থ (ও সেই গ্রন্থলব্ধ) জ্ঞান-বিজ্ঞান দান করেছিলাম, (এর সাথে) আমি তাদের (এক বিশাল পরিমাণ) রাজত্বও দান করেছিলাম। الله مِنْ فَضْلِهِ ، فَقَلْ أَتَيْنَا ۚ أَلَ إِبْرُهِيْمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ، فَقَلْ أَتَيْنَا اللهِ عَلَيْما الْكِتْبَ وَالْحِكْمةَ وَأَتَيْنَاهُمْ مُثَلًا عَظِيْها

৫৫. অতপর তাদের মধ্যে অল্প কিছু লোকই তার ওপর ঈমান এনেছে, আবার কেউ কেউ তার থেকে মুখ ফিরিয়ে নিয়েছে; এদের (পুড়িয়ে দেয়ার) জন্যে জাহান্নামই যথেষ্ট! ۵۵ فَهِنْهُرْ مِّنْ أَمَنَ بِهِ وَمِنْهُرْ مِّنْ صَلَّ عَنْهُ وَ وَكَفَى بِجَهَنَّرَ سَعِيْرًا

৫৬. যারা আমার আয়াতসমূহ অস্বীকার করেছে তাদের আমি অচিরেই জাহান্নামের আগুনে পুড়িয়ে দেবো, অতপর (পুড়ে যখন) তাদের দেহের চামড়া গলে যাবে তখন আমি তার বদলে নতুন চামড়া বানিয়ে দেবো, যাতে করে তারা আযাব ভোগ করতে পারে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা মহাপরাক্রমশালী, বিজ্ঞ কুশলী।

۵٦ إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُواْ بِالْتِنَا سَوْنَ نُصْلِيْهِرْ نَارًا وَكُلَّهَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَنَّ لَنْهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَنُوثُولُوا الْعَنَابَ وَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا

৫৭. যারা (আমার) আয়াতসমূহ বিশ্বাস করেছে এবং তালো কাজ করেছে, তাদের অচিরেই আমি এমন এক জানাতে প্রবেশ করাবো, যার পাদদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, সেখানে তারা (থাকবে) চিরকাল, তাদের জন্যে থাকবে পূতপবিত্র (সংগী) ও সংগিনীরা, (সর্বোপরি) আমি তাদের এক চির স্লিগ্ধ ছায়ায় প্রবেশ করিয়ে দেবো।

۵۵ وَالَّذِيْنَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ

سَنُنْ عِلْمُرْ جَنْتِ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ

عُلْدِيْنَ فِيْهَا آبَنَا اللَّهُ فَيْهَا آزُوَاجٌ مُّطَهَّرةً وَالْمُولُولُهُمْ الْوَالُمُ اللَّهُ الْمُعَلِّرةً وَالْمُعَلِّمُ اللَّهُ الْمُعْلِلَةُ وَالْمُعْلَمُ اللَّهُ اللْلِهُ اللَّهُ اللْعُلِمُ اللْمُلْمِلْمُ اللْمُلْعِلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُولُولُولُولُولُول

৫৮. (রে ঈমানদার ব্যক্তিরা,) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের নির্দেশ দিচ্ছেন, তোমরা আমানতসমূহ তাদের (যথার্থ) মালিকের কাছে সোপর্দ করে দেবে, আর যখন মানুষের মাঝে (কোনো কিছুর) ব্যাপারে তোমরা বিচার ফয়সালা করো তখন তা ন্যায় ও ইনসাফের ভিত্তিতে করবে; আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যা কিছু উপদেশ দেন তা সত্যিই সুন্দর! আল্লাহ তায়ালা সবকিছু দেখেন এবং শোনেন।

٥٨ إِنَّ اللَّهَ يَاْمُرُكُر ۚ أَن تُوَدُّوا الْأَمَنْ فِي اللَّهِ عَامُرُكُم ۚ أَن تُوَدُّوا الْأَمَنْ فِي إِلَى اَهْلِهَا لا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ اَن تَحْكُمُوا بِالْعَلْ لِهِ اللَّهَ نِعِمًّا يَعِظُكُم بِهِ اللَّهَ نِعِمًّا يَعِظُكُم بِهِ اللَّهَ كَانَ سَهِيْعًا اللَّهَ نِعِمًّا
 إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَهِيْعًا اللَّهَ بَصِيرًا

৫৯. হে ঈমানদার মানুষেরা, তোমরা আল্লাহর আনুগত্য করো, আনুগত্য করো (তাঁর) রসূলের এবং সেসব লোকদের, যারা তোমাদের মাঝে দায়িত্বপ্রাপ্ত, অতপর কোনো ব্যাপারে তোমরা যদি একে অপরের সাথে মতবিরোধ করো, তাহলে সে বিষয়টি (ফয়সালার জন্যে) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের দিকে ফিরিয়ে নিয়ে যাও, যদি তোমরা (সত্যিকার অর্থে) আল্লাহর ওপর এবং শেষ বিচার দিনের ওপর ঈমান এনে থাকো! (তাহলে) এই পদ্ধতিই হবে (তোমাদের বিরোধ মীমাংসার) সর্বোৎকৃষ্ট উপায় এবং বিরোধপূর্ণ বিষয়সমূহের ব্যাখ্যার দিক থেকেও (এটি) হচ্ছে উত্তম পত্থা।

٥٩ يَآيَّهَا الَّذِيثَى امْنُوْآ اَطِيْعُوا الله وَالْطِيْعُوا الله وَاطِيْعُوا الرَّسُوْل وَالولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ عَلَاثَ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدَّوْهٌ إِلَى اللهِ وَالرَّسُوْلِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْا اللهِ وَالْيَوْا اللهِ وَالْيَوْا اللهِ وَالْيَوْا اللهِ وَالْيَوْا لِيْ فَيْرَدُ وَالْمَصْ تَاْوِيْلًا عَلَيْ اللهِ وَالْمَوْا لِيْ اللهِ وَالْمَوْا لِيْ اللهِ وَالْمَوْا لِيْ اللهِ وَالْمَوْا لِيْ اللهِ وَالْمَوْا لَيْ اللهِ وَالْمَوْا لَيْ اللهِ وَالْمَوْا لَيْ اللهِ وَالْمَوْا لَهُ اللهِ وَالْمَوْا لَا اللهِ وَالْمَوْا لَيْ اللهِ وَالْمَوْا لَيْ اللهِ وَالْمَوْا لَهُ اللهِ وَالْمَوْا لَهُ اللهِ وَالْمَوْا لَهُ اللهِ اللهِ وَالْمَوْا لَهُ اللهِ اللهِ اللهِ وَالْمَوْا لِيَّالِهُ وَالْمَوْلُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ

৬০. (হে নবী,) তুমি কি তাদের (অবস্থা) দেখোনি যারা মনে করে, তারা সে বিষয়ের ওপর ঈমান এনেছে যা তোমার কাছে পাঠানো হয়েছে এবং সে (কেতাবের) ওপরও ঈমান এনেছে, যা তোমার আগে নাযিল করা হয়েছে, কিন্তু (ফয়সালার সময় আমার কেতাবের বদলে) এরা মিথ্যা মাবুদদের কাছ থেকেই ফয়সালা পেতে চায়,

ألَر تَرَ إلَى الَّذِينَ يَزْعُبُونَ أَنَّهُرْ أَمَنُوا بِهَا أَنْوِلَ مِنْ قَبْلِكَ بِهَا أَنْوِلَ مِنْ قَبْلِكَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُونَ أَنْ إلَى الطَّاغُوسِ يُرِيْدُونَ أَنْ يَّتَحَامُهُوْ آ إلَى الطَّاغُوسِ

৪ সুরা আনু নেসা

49

পারা ৫ ওয়াল্মুহছানাত

অথচ এদের নির্দেশ দেয়া হয়েছিলো তারা এসব (মিথ্যা মাবুদদের) অস্বীকার করবে: (আসল কথা হচ্ছে) শয়তান এদের সত্য থেকে অনেক দূরে সরিয়ে নিয়ে যেতে চায়।

وَقَنْ ٱبِرُوْا آنْ يَكْفُرُوا بِهِ ﴿ وَيُرِيْنُ الشَّيْطَى أَنْ يُضْلُّهُمْ شَلِلًا بَعِيْلًا

৬১. এদের যখন বলা হয়, আল্লাহ তায়ালা তাঁর রসূলের ওপর যা কিছু নাযিল করেছেন তোমরা তার দিকে الله وَالَى الرُّسُولِ رَأَيْتُ الْمُنْفِقِينَ الْمُنْفِقِينَ (कित्र) अरु। ज्यन क्रि এই মোনাফেকদের দেখবে, এরা তোমার কাছ থেকে (একে একে) মুখ ফিরিয়ে দূরে সরে যাচ্ছে।

١٦ وَإِذَا قِيْلَ لَهُرْ تَعَالُوا إِلَى مَا آنُولَ يَصُلُّونَ عَنْكَ صُلُودًا ج

৬২. অতপর তাদের কৃতকর্মের কারণে যখন তাদের ওপর কোনো বিপদ-মসিবত এসে পড়ে, তখন এদের অবস্থাটা কি হয়া তারা তখন সবাই তোমার কাছে (ছুটে) আসে এবং আল্লাহর নামের কসম করে তোমাকে বলে, আমরা তো কল্যাণ ও সম্প্রীতি ছাড়া আর কিছুই চাইনি।

٢٢ فَكَيْفَ إِذَا أَمَا بَتْهُرْ مُصِيْبَةً اللَّهُ عَلَّمَتُ أَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَأَّوُكَ يَحْلِفُوْنَ كُلِّهِ إِللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِهْسَانًا وَّتُوْفِيْقًا

७७. এদের মনের ভেতরে कि (অভিসিদ্ধি শুকিয়ে) আছে مُن يَعْلَرُ اللَّهُ مَا في ٦٣ أُولَئِكَ الَّذِينَ يَعْلَرُ اللّهُ مَا في তা আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানেন, তাই তুমি قُلُوْبِهِرْ قَ فَأَعْرِضْ عَنْهُرْ وَعَلْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ عَنْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ الْمَا اللهِ اللهِ اللهِ এমন সব কথায়, যা তাদের (অন্তর) ছুঁয়ে যায়।

فِي ٱنْفُسِمِرْ قَوْلًا ' بَلِيْغًا

৬৪. (তুমি আরো বলো,) আমি যখনই কোনো (জনপদে) কোনো রসূল পাঠিয়েছি, তাকে এ জন্যেই পাঠিয়েছি যে, আল্লাহর নির্দেশ অনুযায়ী তার (শর্তহীন) আনুগত্য করা হবে: যখনি তারা নিজেদের ওপর কোনো যুদ্রম করবে. তখনি তারা তোমার কাছে (ছুটে) আসবে এবং নিজেদের কৃতকর্মের জন্যে আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করবে, আল্লাহর রস্পও (তাদের জন্যে) ক্ষমা চাইবে, এমতাবস্থায় তারা অবশ্যই আল্লাহকে পরম ক্ষমাশীল ও অতীব দয়ালু হিসেবে (দেখতে) পাবে!

٦٣ وَمَا آرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللهِ ، وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَهُوۤ ۚ أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللهُ وَاسْتَغْفَرَ لَهُرُ الرَّسُولُ لَوَجَنُوا اللَّهُ تَوَّابًا رَّحَيْهًا

৬৫. না, আমি তোমার মালিকের শপথ, এরা কিছুতেই ঈমানদার হতে পারবে না. যতোক্ষণ না তারা তাদের মতবিরোধের ফয়সালায় তোমাকে (শর্তহীনভাবে) বিচারক মেনে নেবে, অতপর তুমি যা ফয়সালা করবে সে ব্যাপারে তাদের মনে আর কোনো দ্বিধাদ্বন্দু থাকবে না. বরং তোমার সিদ্ধান্ত তারা সর্বান্তকরণে মেনে নেবে।

٦٥ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فَيْهَا شَجَرَ بَيْنَهُرْ ثُرٌّ لَا يَجِلُوْا في ۖ أَنْفُسهِرْ حَرَّجًا مَّهَا قَضَيْتَ وَ يُسَلَّمُوا تَسُلَيْهَا

৬৬. আমি যদি তাদের ওপর এ আদেশ জারি করতাম যে, তোমরা নিজেদের জীবন বিসর্জন দাও অথবা তোমরা নিজেদের ভিটেমাটি ছেড়ে (অন্যত্র চলে) যাও, (তাহলে) তাদের মধ্যে সামান্য সংখ্যক মানুষই তা করতো, যেসব উপদেশ তাদের দেয়া হয়েছে তা যদি তারা মেনে চলতো, তবে তা তাদের জন্যে খুবই কল্যাণকর হতো এবং (তাদের) মানসিক স্থিরতাও (এতে করে) মযবুত হতো!

٦٢ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمِ أَنِ اقْتُلُوْا اَنْفُسَكُمْ أَوِ اغْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُرْ ، وَلَوْ أَنَّهُرْ فَعَلُواْ مَا يُوْعَظُوْنَ بِهِ لَكَانَ غَيْرًا لَّهُرْ وَاَشَنَّ تَثْبِيْتًا لا

৬৭. তাহলে আমিও আমার পক্ষ থেকে (এ জন্যে) তাদের বড়ো ধরনের পুরস্কার দিতাম,

٢٢ واذًا لا تَيْنَهُ مِنْ لَاناً اَجْرًا عَظَيْهًا ٧

৬৮. (উপরস্তু) আমি তাদের সরল পথও দেখিয়ে দিতাম!

٦٨ وَّلَهَنَيْنُهُ رُ مِرَ اطًّا مَّسْتَقَيْمًا

৪ সুরা আনু নেসা

৬৯. যারা আল্লাহ তায়ালা ও (তাঁর) রসূলের আনুগত্য করে, তারা (শেষ বিচারের দিন সেসব) পুণ্যবান মানুষদের সাথে থাকবে, যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা প্রচুর নেয়ামত বর্ষণ করেছেন, এরা (হচ্ছে) নবী-রসূল, وَالصِّرِّيْقِيْنَ وَالشُّهَنَ أَءِ وَالصِّلِحِيْنَ कि पाता (रुनाशार्ण्य) अणुण श्रीकात करतर्रह, (आल्लार्वत ह وَالصِّرِّيْقِيْنَ وَالشُّهَنَ أَءِ وَالصِّلِحِيْنَ পথে জীবন উৎসর্গকারী) শহীদ ও অন্যান্য নেককার মানুষ, সাথী হিসেবে এরা সত্যিই উত্তম!

٦٩ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُوْلَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ ٱنْعَرَ اللَّهُ عَلَيْهِرْ مِّنَ النَّبِيِّنَ وَحَسَى أُولِئكَ رَفِيْقًا م

৭০. এ হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে বিরাট এক ٤٠ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ﴿ وَكَفَى بِاللَّهِ অনুগ্রহ, (মূলত কোনো কিছু) জানার জন্যে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট!

৭১. হে ঈমানদাররা, (শত্রুর মোকাবেলায়) তোমরা (সর্বদা) তোমাদের সতর্কতা গ্রহণ করো, অতপর হয় দলে দলে বিভক্ত হয়ে, কিংবা সবাই একসংগে (শক্রুর মোকাবেলা) করো।

ا 4 يَايَّهَا الَّذِينَ امَنُوْا خُنُوْا حِذُرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ أَوِانْفِرُوْا جَمِيْعًا

৭২. তোমাদের মধ্যে অবশ্যই এমন (মোনাফেক) লোক থাকবে, যে (যুদ্ধের ব্যাপারে) গড়িমসি করবে, তোমাদের ওপর কোনো বিপদ-মসিবত এলে সে বলবে, আল্লাহ তায়ালা সত্যিই আমার ওপর বড়ো অনুগ্রহ করেছেন, (কেননা) আমি সে সময় তাদের সাথে ছিলাম না।

٤٢ وَإِنَّ مِنْكُمِرُ لَهَنَ لَّيُبَطِّئَنَّ ج فَإِن أَمَا بَتْكُمْ مُصَيْبَةً قَالَ قَنْ أَنْعَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى إِذْ لَرْ أَكُنْ شَعَمُرْ شَهِيْلًا

৭৩. আর যদি তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে (বিজয়ের) অনুগ্রহ আসে, তখন সে (এমনভাবে) বলে, যেন তার সাথে তোমাদের কোনো রকম বন্ধুতুই ছিলো না, সে (তখন আরো) বলে, কতোই না ভালো হতো যদি আমি তাদের সাথে থাকতাম, তাহলে (আজ) আমিও অনেক বড়ো সফলতা অর্জন করতে পারতাম!

٤٣ وَلَئِنْ أَمَا بَكُيرُ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَانَ لَّرُ تَكُنَّ بَيْنَكُرْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةً يُلَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُرُ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا

৭৪. যেসব মানুষ পরকালের বিনিময়ে এ পার্থিব জীবন ও তার সুখ-স্বাচ্ছন্য বিক্রি করে দিয়েছে, সেসব মানুষের উচিত আল্লাহ তায়ালার পথে লড়াই করা, কারণ যে আল্লাহর পথে লড়াই করবে সে এ পথে জীবন বিলিয়ে দেবে কিংবা সে বিজয় লাভ করবে, অচিরেই আমি তাকে (এ উভয় অবস্থার জন্যেই) বিরাট পুরস্কার দেবো।

٣ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ الَّذِيْنَ يَشُرُوْنَ الْعَيْوةَ النُّانْيَا بِالْأَخِرَةِ ﴿ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ فَيُقْتَلُ أَوْ يَغْلِ فَسَوْنَ نُوْتِيْهِ أَجْرًا عَظِيْمًا

৭৫. তোমাদের এ কি হয়েছে, তোমরা আল্লাহর পথে সেসব অসহায় নর-নারী ও (দৃস্থ) শিশু সম্ভানদের (বাঁচাবার) জন্যে লড়াই করো না. যারা (নির্যাতনে কাতর হয়ে) ফরিয়াদ করছে, হে আমাদের মালিক, আমাদের যালেমদের এই জনপদ থেকে বের করে (অন্য কোথাও) নিয়ে যাও, অতপর তুমি আমাদের জন্যে তোমার কাছ থেকে একজন অভিভাবক (পাঠিয়ে) দাও, তোমার কাছ থেকে আমাদের জন্যে একজন সাহায্যকারী পাঠাও!

٤٥ وَمَا لَكُرْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبُّنَا أَخُرِجْنَا مِنْ هٰنِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلُ لَّنَا مِنْ الْهُ اللَّهِ وَلِيًّا لِمْ وَاجْعَلْ النَّا مِنْ الْهُ الَّهِ نَصِيرًا ﴿

৭৬. যারা আল্লাহ তায়ালা🚾 তাঁর রস্লের ওপর ঈমান এনেছে, তারা (সর্বদা) আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে, আর যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করেছে তারা লড়াই করে মিথ্যা মাবুদদের পথে, অতএব তোমরা যুদ্ধ করো শয়তান ও তার চেলা-চামুন্ডাদের বিরুদ্ধে (তোমরা সাহস হারিয়ো না), অবশ্যই শয়তানের ষড়যন্ত্র খুবই দুর্বল।

47 ٱلَّذِينَ أَمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ج وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْ آ اَوْلِيَاءَ الشَّيْطَى ع إِنَّ كَيْنَ الشَّيْطَى كَانَ شَعَيْفًا ع



৪ সুরা আনু নেসা

মন্যিল ১

১২

৭৭. (হে নবী.) তমি কি তাদের অবস্তা দেখোনি, যাদের (প্রথম দিকে) যখন বলা হয়েছিলো, তোমরা (আপাতত লড়াই থেকে) নিজেদের হাত গুটিয়ে রাখো. (এখন) নামায প্রতিষ্ঠা করো এবং যাকাত প্রদান করো, তখন তারা জেহাদের জন্য অস্থির হয়ে পড়েছিলো, অথচ যখন (পরবর্তী সময়ে) তাদের ওপর (সত্যি সত্যিই) লড়াইর ছকুম নাযিল করা হলো (তখন)! এদের একদল লোক তো (প্রতিপক্ষের) মানুষদের এমনভাবে ভয় করতে ভরু করলো, যেমনি ভয় ওধু আল্লাহ তায়ালাকেই করা উচিত: অথবা তার চাইতেও বেশী ভয়! তারা আরো বলতে শুরু করলো, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের ওপর যুদ্ধের এ হুকুম (এতো তাড়াতাড়ি) জারি করতে গেলে কেন? কতো ভালো হতো যদি তুমি আমাদের সামান্য কিছুটা অবকাশ দিতে? (হে নবী,) তুমি বলো, দুনিয়ার এ ভোগ সামগ্রী অত্যন্ত সামান্য: যে ব্যক্তি (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে, তার জন্যে পরকাল অনেক উত্তম। আর (সেই পরকালে) তোমাদের ওপর কণামাত্রও কিন্তু অবিচার করা হবে না।

৭৮. তোমরা যেখানেই থাকো না কেন মৃত্যু তোমাদের নাগাল পাবেই, এমনকি তোমরা যদি (কোনো) মযবুত দুর্গেও থাকো (সেখানেও মৃত্যু এসে হাযির হবে। এদের অবস্থা হচ্ছে), যখন কোনো কল্যাণ তাদের স্পর্শ করে তখন তারা বলে, (হাাঁ) এ তো আল্লাহর পক্ষ থেকেই এসেছে, অপরদিকে যখন কোনো ক্ষতি (ও অকল্যাণ) তাদের স্পর্শ করে তখন তারা বলে, এ (সব) তো এসেছে তোমার কাছ থেকে, তুমি (তাদের) বলে দাও, (কল্যাণ-অকল্যাণ) সব কিছুই তো আসে আল্লাহর পক্ষ থেকে; এ জাতির হয়েছে কি, এরা মনে হয় কথাটি বুঝতেই চায় না।

৭৯. যে কল্যাণই তুমি লাভ করো (না কেন, মনে রেখো), তা আল্লাহর পক্ষ থেকেই আসে, আর যেটুকু অকল্যাণ তোমার ওপর আসে তা আসে তোমার নিজের কাছ থেকে; আমি তোমাকে মানুষদের জন্যে রসূল বানিয়ে পাঠিয়েছি; আর সাক্ষী হিসেবে তো আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট।

৮০. যে ব্যক্তি রস্লের আনুগত্য করে সে (যেন) আল্লাহরই আনুগত্য করে, আর যে ব্যক্তি (তার আনুগত্য থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয়, (মনে রেখো) তাদের ওপর আমি তোমাকে প্রহরী বানিয়ে পাঠাইনি।

٥٠ مَن شَطِعِ الرَّسُولَ فَقَن اَطَاعَ اللَّه عَ وَمَن تَوَلَّى فَمَ اَرْسَلْناكَ عَلَيْهِر حَفِيْظًا ما

৮১. তারা (মুখে মুখে) বলে, (আমরা তোমার) আনুগত্য (স্বীকার করি); কিন্তু তারা যখন তোমার কাছ থেকে দ্রে সরে যায়, তখন তাদের একদল লোক রাতের (অন্ধকার) সময়ে একত্রিত হয়ে ঠিক তুমি যা বলো তার বিরুদ্ধেই সলাপরামর্শ করে বেড়ায়; তারা রাতের বেলায় যা কিছু করে আল্লাহ তায়ালা সেসব কর্মকান্ডগুলো (ঠিকমতোই) লিখে রাখছেন, অতএব তুমি এদের উপেক্ষা করে চলো এবং সর্ববিষয়ে গুধু আল্লাহ তায়ালার ওপরই ভরসা রাখো, অভিভাবক হিসেবে তো আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট!

١٨ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ رَفَاذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيْدَ طَافَةٌ رَفَاذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيْت طَآئِفَةٌ مِّنْهُ مُنْهُ عَنْدُر الله عَنْهُ وَالله يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ عَ فَاقْرِضْ عَنْهُ وَ وَتَوَكَّلْ عَلَى الله و وكفى بالله وكيْدًلا

৮২. এরা কি কোরআন (ও তার আগমন সূত্র নিয়ে চিন্তা) গবেষণা করে না? এ (গ্রন্থ)-টা যদি আল্লাহ তায়ালা ছাড়া

٨٢ أَنَلَا بَتَنَبَّرُوْنَ الْقُرْأَنَ ﴿ وَلَوْ كَانَ مِنْ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৫ ওয়াল্মুহ্ছানাত

অন্য কারো কাছ থেকে আসতো তাহলে তাতে অবশ্যই তারা অনেক গরমিল (দেখতে) পেতো।

عِنْ غَيْرِ اللهِ لَوَجَلُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا

৮৩. এদের কাছে যখনি নিরাপত্তা কিংবা ভয়ের কোনো খবর আসে, তখন (সত্য মিথ্যা না জেনেই) এরা তা প্রচার করে বেড়ায়, অথচ তারা যদি এ (জাতীয়) খবর আল্লাহর রসূল এবং তাদের দায়িত্বপ্রাপ্ত ব্যক্তিকে জানিয়ে দিতো, তাহলে এমন সব লোকেরা তা জানতে পারতো, যারা তাদের মধ্যে থেকে সেই খবরের যথার্থতা যাচাই করতে পারতো: যদি তোমাদের ওপর আল্লাহর অনুগ্রহ না থাকতো, তাহলে (এ প্রচারণার ফলে) হাতেগোনা কিছু লোক ছাডা তোমাদের অধিকাংশ লোকই শয়তানের অনুসারী হয়ে যেতো।

٨٣ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوْا بِهِ ﴿ وَلَوْ رَدُّوهُ ۗ إِلَى الرَّسُوْلِ وَإِلَى ٱولِي الْأَمْرِ مِنْهُرْ لَعَلِمَهُ الَّانِيْنَ يَسْتَنْبِطُوْنَهُ مِنْهُرْ ، وَلَوْلَا فَضْلُ الله عَلَيْكُرْ وَرَهْبُتُهُ ۚ لَا تَّبَعْتُمُ ۖ الشَّيْطِنَ الَّا قَلْيُلًا

৮৪. অতএব (হে নবী), তুমি আল্লাহর পথে লড়াই করো, (কেননা) তোমাকে তথু তোমার কাজকর্মের জন্যেই দায়ী (همرض الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ कर्ता टरव এवং जूमि (राजात त्रार्थी) सास्मनरमत्र (जान्नार أَفَسَكَ وَحَرَّض الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ أَنْ তায়ালার পথে লড়াই করতে) উদুদ্ধ করতে থাকো. আল্লাহ তায়ালা হয়তো অচিরেই এ কাফেরদের শক্তি চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেবেন; (কারণ) আল্লাহ তায়ালা শক্তিতে প্রবলতর, (আবার) শাস্তিদানেও তিনি কঠোরতর।

٨٣ فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ جَ لَا تُكَلَّفُ الَّا يِّكُفَّ بَأْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُّوْا ، وَاللَّهُ اَشَنَّ بَأَسًا وْاَشَّ تَنْكِيْلًا

৮৫. যদি তার জন্যে কোনো ব্যক্তি কোনো ভালো কাজের সুপারিশ করে, তাহলে তাতে অবশ্যই তার অংশ থাকবে. আবার যে ব্যক্তি কোনো অন্যায় কাজের ব্যাপারে সুপারিশ করবে তাহলে (তার সৃষ্ট অকল্যাণেও) তার (সমপরিমাণ) অংশ থাকবে, আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন (তোমাদের) সব ধরনের কাজের একক নিয়ন্ত্রণকারী।

٨٥ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُيْ لَّهُ نَصِيْبً مِّنْهَا ج وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّنَةً يَكُنْ لَّهٌ كَفْلُ مِّنْهَا م وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مَّقِيْتًا

৮৬. যখন তোমাদের (সালাম বা অন্য কিছু দ্বারা) অভিবাদন জানানো হয়, তখন তোমরা তার চাইতেও উত্তম পদ্বায় তার জবাব দাও. (উত্তমভাবে না হলেও) কমপক্ষে (যতোটুকু সে দিয়েছে) ততোটুকুই ফেরত দাও, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর (পুংখানুপুংখ) হিসাব রাখেন।

٨٦ وَإِذَا مُتِيْتُرْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَى مِنْهَا أَوْ رُدُّوْهَا ءَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

৮৭. আল্লাহ তায়ালা (এক মহান সত্তা)- তিনি ছাড়া (দ্বিতীয়) কোনো মাবুদ নেই: অবশ্যই তিনি তোমাদের কেয়ামতের দিন এক জায়গায় জড়ো করবেন, তাতে কোনো রকম সন্দেহ নেই: আর এমন কে আছে যে আল্লাহ তায়ালার চাইতে বেশী সত্য কথা বলতে পারে?

٨٠ اَللَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا مُوَ ، لَيَجْهَعَنَّكُرْ إِلٰم يَوْ ۚ الْقِيْمَةِ لَارَيْبَ فِيْهِ ﴿ وَمَنْ أَصْلَقٌ مِنَ الله حَديثًا ع

৮৮. এ কি হলো তোমাদের! তোমরা মোনাফেকদের ব্যাপারে দু'দল হয়ে গেলে? (বিশেষ করে) যখন স্বয়ং আল্লাহ তায়ালাই তাদের কৃতকর্মের জন্যে তাদের ওপর অভিশাপ নাযিল করেছেন; আল্লাহ তায়ালা স্বয়ং যাদের পথভ্রষ্ট করে দিয়েছেন তোমরা কি তাদের সঠিক পথে আনতে চাওঃ (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা যাকে পথভ্ৰষ্ট করেন তার (হেদায়াতের) জন্যে তুমি কোনো পথই (খুঁজে) পাবে না।

٨٨ فَهَا لَكُمْ فِي الْمُنْفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَمُرْ بِهَا كَسَبُوا ﴿ أَتُرِيْكُونَ أَنْ تَهْدُوْا مَيْ أَضَلَّ اللَّهُ ، وَمَنْ يُّضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِلَ

৮৯. তারা তো এটাই কামনা করে যে, তারা যেভাবে কুফরী করেছে তোমরাও তেমনি কুফরী করো, তাহলে شَوَاءً قَلَلَ تَتَّخِذُواْ مِنْهُمْ ٱوْلِيَاءَ حَتَّى তোমরা উভয়ে একই রকম হয়ে যেতে পারো, কাজেই حَتَّى عَتَّى

٨٩ وَدُّوا لَوْ تَكُفُرُونَ كَهَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُونَ

৪ সুরা আনু নেসা

তমি তাদের মধ্য থেকে কাউকেও নিজের বন্ধুরূপে গ্রহণ يُهَاجِرُواْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ﴿ فَإِنْ تَوَلُّواْ करता ना, राज्यक्त ना जाता जाबार जायानात अरथ أي নিজেদের ভিটেমাটি ছেড়ে (ঈমানের প্রমাণ) না দেবে, আর যদি তারা (হিজরতের) এ কাজটি না করে তাহলে তোমরা তাদের যেখানেই পাবে গ্রেফতার করবে এবং (যুদ্ধরত শক্রদের সহযোগিতা করার জন্যে) তাদের হত্যা করবে, আর কোন অবস্থায়ই তাদের মধ্য থেকে কাউকে তোমরা বন্ধু ও সাহায্যকারী হিসেবে গ্রহণ করো না।

فَخُنُ وْهُرْ وَ اقْتُلُوْهُرْ حَيْثُ وَجَنْ تَّهُوْهُر وَلَا تَتَّخِنُوْا مِنْهُرْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيرًا لا

৯০. অবশ্য তাদের কথা আলাদা যারা তোমাদের সাথে চুক্তিবদ্ধ কোনো একটি সম্প্রদায়ের সাথে এসে মিলিত হবে, আবার (ভাদের ব্যাপারও নয়-) যারা তোমাদের সামনে এমন (মানসিক) অবস্থা নিয়ে আসে যে. (মূলত) তাদের অন্তর তোমাদের সাথে (যেমনি) লড়াই করতে বাধা দেয়, (তেমনি) নিজেদের জাতির বিরুদ্ধেও তাদের লডাই করতে বাধা দেয়: (অপরদিকে) আল্লাহ তায়ালা যদি চাইতেন তিনি তোমাদের ওপর এদের ক্ষমতাবান করে দিতে পারতেন, তেমন অবস্থায় তারা অবশ্যই তোমাদের সাথে লড়াই করতো, অতএব এরা যদি তোমাদের কাছ থেকে আলাদা হয়ে যায়. (ময়দানের) লড়াই থেকে বিরত থাকে এবং তোমাদের কাছে শান্তি ও সন্ধির প্রস্তাব পাঠায়, তাহলে তাদের বিরুদ্ধে অভিযানের কোনো পম্ভাই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে (উন্মুক্ত) রাখবেন না ৷

٩٠ إِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ إِلَى قَوْمٍ ' بَيْنَكُمْرُ وَبَيْنَهُمْ فِيثَاقُ أَوْ جَاءُوْكُمْ حَصِرَتُ صُ ورُهُر أَن يَّقَاتِلُوكُر أَوْ يُقَاتِلُوا تَوْمَهُرْ طَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُم ۚ عَلَيْكُم ۚ فَلَقٰتَلُوكُم ۚ ج فَإِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَٱلْقَوْا الَيْكُمُ السَّلَمَ لا فَهَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ

৯১. (এই মোনাফেকদের মাঝে) তোমরা (এমন) আরেক দল পাবে, যারা তোমাদের দিক থেকে (যেমন) শান্তি ও নিরাপত্তা পেতে চায়: (তেমনি) তারা তাদের নিজেদের জাতির কাছ থেকেও নিরাপত্তা (ও নিশ্চয়তা) পেতে চায়. কিন্তু এদের যখনি কোনো বিপর্যয় সষ্টির কাজের দিকে ডাক দেয়া হবে, তখন সাথে সাথেই এরা তোমাদের বিরুদ্ধে ঝাঁপিয়ে পড়বে, এরা যদি সত্যিই তোমাদের (সাথে যুদ্ধ করা) থেকে সরে না দাঁডায় এবং কোনো শান্তি ও সন্ধি প্রস্তাব তোমাদের কাছে পেশ না করে এবং নিজেদের অন্ত্র সংবরণ না করে, তাহলে তাদের তোমরা যেখানেই পাবে গ্রেফতার করবে এবং (চরম বিদ্রোহের জন্যে) তাদের তোমরা হত্যা করবে: (মূলত) এরাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের ওপর আমি তোমাদের সুস্পষ্ট ক্ষমতা দান করেছি।

٩١ سَتَجِدُونَ أَخَرِيْنَ يُرِيْدُونَ أَنْ يَّامَنُوكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ مَ كُلَّهَا رُدُّوْ ٓ إِلَى الْفِتْنَةِ ٱرْكِسُوْا فِيهَا ء فَانَ لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوْا الَيْكُرُ السَّلَيَ وَيَكُفُّوا أَيْنِيَهُرْ فَخُنُّوهُمْ وَ اقْتُلُوْهُمْ مَيْتُ ثَقِفْتُهُوْهُمْ ١ وَ أُولَٰئِكُم جَعَلْنَا لَكُرْ عَلَيْهِمْ سُلْطُنًا مُّبِينًا ع

৯২, এটা কোনো ঈমানদার ব্যক্তির কাজ নয় যে, সে আরেকজন ঈমানদার ব্যক্তিকে হত্যা করবে, অবশ্য ভূলবশত করে ফেললে (তা সম্পূর্ণ ভিনু কথা) যদি কোনো (ঈমানদার) ব্যক্তি আরেকজন ঈমানদার ব্যক্তিকে ভুল করে হত্যা করে, তাহলে (তার বিনিময় হচ্ছে) সে একজন দাস মুক্ত করে দেবে এবং (তার সাথে) নিহত ব্যক্তির পরিবার-পরিজনকে (তার) রক্তের (ন্যায়সংগত) মূল্য পরিশোধ করে দেবে, তবে (নিহত ব্যক্তির পরিবারের) লোকেরা যদি (রক্তমূল্য) মাফ করে দেয় (তবে তা স্বতন্ত্র কথা): এ (নিহত) ঈমানদার ব্যক্তি যদি এমন কোনো জাতির (বা গোত্রের) লোক হয় যারা তোমাদের শত্রু এবং সে (নিহত ব্যক্তি) মোমেন হয় তাহলে (তার বিনিময় হবে) একজন মোমেন দাসের মুক্তি; অপরদিকে (নিহত) ব্যক্তি যদি এমন এক সম্প্রদায়ের কেউ হয়ে থাকে, যাদের সাথে তোমাদের

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنِ أَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا $\sqrt{2}$ خَطَئًا ج وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَئًا فَتَحُرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّوْمِنَةٍ وَّدِيَةً مُّسَلَّمَةً إِلَّى اَهْلِهِ إِلَّا اَنْ يُّصَّا تُواْ ا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْ إِ عَكُوَّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنَّ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ﴿ وَإِنْ كَانَ مِنْ قُوْ ۚ ' بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَرِيَةٌ مَّسَلَّهَ ۗ إِلَى اَهْلِهِ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ 5 فَمَنْ لَّمْ



কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৫ ওয়ালমুহছানাত

কোনো সন্ধি চুক্তি বলবত আছে, তবে তার রক্তের মূল্য আদায় করা ও একজন ঈমানদার দাসের মুক্তিও (অপরিহার্য), যে ব্যক্তি (মুক্ত করার জন্যে কোনো দাস) পাবে না, (তার বিধান হচ্ছে ক্রমাগত দুই মাসের রোযা রাখা, এ হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে (মানুষের) তাওবা (কবুল করানোর ব্যবস্থামাত্র, বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ, কশলী।

يَجِنْ فَصِيَامٌ شَهْرَيْنِ مُتَنَابِعَيْنِ زِ تَوْبَةً مِّنَ اللهِ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيْهًا حَكِيْهًا

৯৩. যে ব্যক্তি ইচ্ছাকৃতভাবে কোনো ঈমানদার ব্যক্তিকে হত্যা করবে, তার শান্তি হচ্ছে জাহান্নাম, সেখানে সে অনন্তকাল ধরে পড়ে থাকবে, আল্লাহ তায়ালা তার ওপর ভয়ানকভাবে রুষ্ট, তাকে তিনি লানত দেন, আল্লাহ তায়ালা তার জন্যে যন্ত্রণাদায়ক আযাব প্রস্তুত করে রেখেছেন। 9° وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مَّتَعَبِّنًا فَجَزَاَوُّهُ جَهَنَّرُ خُلِنًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَاَعَنَّ لَهُ عَنَابًا عَظِيْهًا

৯৪. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা যখন আল্লাহ তায়ালার পথে (জেহাদের) রাস্তায় বের হবে, তখন বিচারবৃদ্ধি প্রয়োগ করবে, কোনো ব্যক্তি (কিংবা সম্প্রদায়) যখন তোমাদের সামনে (শান্তি ও) সন্ধির প্রস্তাব পেশ করে, তখন কিছু বৈষয়িক ধন-সম্পদের প্রত্যাশায় তাকে তোমরা বলো না যে, না, তুমি ঈমানদার নও, (আসলে) আল্লাহ তায়ালার কাছে অনায়াসলত্য সম্পদ প্রচুর রয়েছে, আগে তোমরাও এমনি ছিলে, অতপর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর অনুগ্রহ করেছেন, কাজেই তোমরা (বিষয়টি) যাছাই বাছাই করে নিয়ো; তোমরা যা কিছুই করো আল্লাহ তায়ালা সে ব্যাপারে সম্যক অবগত আছেন।

٩٣ يَآيَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْآ اِذَا ضَرَبْتُرْ فِي ٩٣ يَآيَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْآ اِذَا ضَرَبْتُرْ فِي سَبِيْلِ اللهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلاَ تَقُوْلُوْا لِمَنْ آلْقَى النَّكُرُ السَّلْرَ لَسْتَ مُؤْمِنًا جَ تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ النَّنْيَا رَفَعِنْنَ اللهِ مَغَانِرُ كَثِيْرَةً ﴿ الْحَيٰوةِ النَّنْيَا رَفَعِنْنَ اللهِ مَغَانِرُ كَثِيْرَةً ﴿ كَنْ لِكَ كُنْتُرْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَ اللهِ عَلَيْكُرُ كَنْ لِكَ عَلَيْكُرُ فَنَنَ اللهِ عَمْلُونَ خَبِيْرًا فَتَبَيَّنُوْا ﴿ إِنَّ اللهَ كَانَ بِهَا تَعْمَلُونَ خَبِيْرًا

৯৫. মোমেনদের মাঝে যারা কোনো রকম (শারীরিক পংগুত্ব ও) অক্ষমতা না থাকা সত্ত্বেও বসে থেকেছে, আর যারা নিজেদের জান ও মাল দিয়ে আল্লাহ তায়ালার পথে জেহাদে অবতীর্ণ হয়েছে— এরা উভয়ে কখনো সমান নয়; (ঘরে) বসে থাকা লোকদের তুলনায় (ময়দানের) মোজোহেদদের— যারা নিজেদের জান মাল দিয়ে (আল্লাহ তায়ালার পথে) জেহাদ করেছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের উঁচু মর্যাদা দান করেছেন, (জেহাদ তখনো ফরম ঘোষিত না হওয়ায়) এদের সবার জন্যে আল্লাহ তায়ালা উত্তম পুরস্কারের ওয়াদা করেছেন; (কিন্তু এটা ঠিক য়ে,) আল্লাহ তায়ালা (ঘরে) বসে থাকা লোকদের ওপর (সংগ্রামরত ময়দানের) মোজাহেদদের অনেক শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছেন।

৯৬. এই মর্যাদা দেয়া হয়েছে স্বয়ং আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকেই, এর সাথে রয়েছে তাঁর ক্ষমা ও দয়া, (মূলত) আল্লাহ তায়ালা বড়ো ক্ষমাশীল ও অতীব দয়ালু।

٩٦ دَرَجْتِ شِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ﴿ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيْمًا ع

৯৭. যারা নিজেদের ওপর যুলুম করেছে তাদের প্রাণ কেড়ে নেয়ার সময় (মওতের) ফেরেশতারা যখন তাদের জিজ্ঞেস করবে, (বলো তো! এর আগে) সেখানে তোমরা কিভাবে ছিলে? তারা বলবে, আমরা দুনিয়ায় দুর্বল (ও অক্ষম) ছিলাম; ফেরেশতারা বলবে, কেন, (তোমাদের জন্যে) আল্লাহর এ যমীন কি প্রশস্ত ছিলো না? তোমরা ইচ্ছা করলে যেখানে চলে যেতে পারতে, (আসলে) এরা

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّدِهُرُ الْمَلَّذِكَةُ ظَالِمِيَ
 أَنْفُسِهِرُ قَالُوْا فِيْرَ كُنْتُرْ ، قَالُوْا كُنَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْأَرْضِ ، قَالُوْا اللهِ وَاسِعَةً فَتُهَا هِرُوْا فِيْهَا ، فَالُولَاكَ .
 أَرْضُ اللهِ وَاسِعَةً فَتُهَا هِرُوْا فِيْهَا ، فَالُولَاكَ .



হচ্ছে সেসব লোক যাদের (আবাসস্থল) জাহান্নাম; আর তা কতো নিকৃষ্টতম আবাস!

مَا وْنَهُمْ جَهَنَّرُ ا وَسَاءَتُ مَصِيرًا ٧

৯৮. তবে সেসব নারী-পুরুষ ও শিশু সন্তান, যাদের (হিজরত করার মতো শারীরিক) শক্তি ছিলো না, কোথাও যাওয়ার কোনো উপকরণ ছিলো না, তাদের কথা আলাদা।

٩٩ إلا الْهُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
 وَالْوِلْنَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا
 يَهْتَنُوْنَ سَبِيْلًا

৯৯. এরা হচ্ছে সেসব মানুষ- আল্লাহ তায়ালা সম্ভবত যাদের কাছ থেকে (গোনাহসমূহ) মাফ করে দেবেন, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা গুনাহ মোচনকারী ও পরম ক্ষমাশীল। 99 فَالُولَٰنِكَ عَسَى اللهُ أَن يَعْفُو عَنْمُر .
 وَكَانَ اللهُ عَفُواً غَفُورًا

১০০. আর যে কেউই আল্লাহ তারালার পথে হিজরত করবে সে (অচিরেই আল্লাহ তারালার) যমীনে প্রশস্ত জায়গা ও অগণিত ধন-সম্পদ পেয়ে যাবে; যখন কোনো ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের উদ্দেশে হিজরত করার জন্যে নিজ বাড়ী থেকে বের হয় এবং এমতাবস্থায় মৃত্যু এসে তাকে গ্রাস করে নেয়, তাহলে তার (সে অপূর্ণ হিজরতের) পুরস্কার দেয়ার দায়িত্ব আল্লাহ তায়ালার ওপর; আল্লাহ তায়ালা বড়ো ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١٠٠ وَمَن يَّهَا هِرْ فِي سَبِيْلِ اللهِ يَجِن فِي الْاَرْضِ مُرْغَمًّا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ﴿ وَمَن يَّخُرُجُ مِن الْاَرْضِ مُرْغَمًّا كَثِيْرًا وَسَعَةً ﴿ وَمَن يَّخُرُجُ مِنْ اللهِ وَرَسُولِهِ ثُرَّ مِنْ اللهِ وَرَسُولِهِ ثُرَّ يَكْرِكُهُ الْمَوْدَ اللهِ ﴿ وَكَانَ اللهِ ﴿ وَكَانَ اللهِ غَفُورًا رَّحِيْمًا عَ

১০১. তোমরা যখন সফরে বের হবে, তখন তোমাদের যদি এ আশংকা থাকে যে, কাফেররা (নামাযের সময় আক্রমণ করে) তোমাদের বিপদগ্রস্ত করে ফেলবে, তাহলে সে অবস্থায় তোমরা যদি তোমাদের নামায সংক্ষিপ্ত করে নাও তাতে তোমাদের কোনোই দোষ নেই; নিসন্দেহে কাফেররা হচ্ছে তোমাদের প্রকাশ্যতম দুশমন। ا ا وَإِذَا ضَرَبْتُر فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُرُ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلُوةِ لَيُ إِنْ خِفْتُرُ اَنْ يَّفْتِنَكُرُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مَ إِنَّ الْكُفِرِيْنَ كَانُواْ لَكُرْعَكُواْ شَيِئًا

১০২. (হে নবী.) তুমি যখন মুসলমানদের মাঝে অবস্থান করবে এবং (যুদ্ধাবস্থায়) যখন তুমি তাদের (ইমামতির) জন্যে (নামাযে) দাঁড়াবে, তখন যেন তাদের একদল লোক তোমার সাথে (নামাযে) দাঁড়ায় এবং তারা যেন তাদের অস্ত্র সাথে নিয়ে সতর্ক থাকে: অতপর তারা যখন (নামাযের) সাজদা সম্পন্ন করে নেবে তখন তারা তোমাদের পেছনে থাকবে, দ্বিতীয় দল- যারা নামায (তখনো) পড়েনি তারা তোমার সাথে এসে নামায আদায় করবে. (কিন্তু সর্বাবস্থায়ই) তারা যেন সতর্কতা অবলম্বন করে এবং সশস্ত্র (অবস্থায়) থাকে, (কারণ,) কাফেররা তো এ (সুযোগটুকুই) চায় যে, যদি তোমরা তোমাদের মালসামানা ও অন্ত্রশন্ত্র সম্পর্কে একটু অসাবধান হয়ে যাও, যাতে তারা তোমাদের ওপর (আকস্মিকভাবে) ঝাঁপিয়ে পড়তে পারে: অবশ্য (অতিরিক্ত) বৃষ্টি বাদলের জন্যে যদি তোমাদের কষ্ট হয় কিংবা শারীরিকভাবে তোমরা যদি অসুস্থ হও, তাহলে (কিছুক্ষণের জন্যে) তোমরা অস্ত্র রেখে দিতে পারো; কিন্তু (অন্তর রেখে দিলেও) তোমরা কিন্তু নিজেদের সাবধানতা বজায় রাখবে: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের জন্যে এক অপমানকর আযাব নির্দিষ্ট করে রেখেছেন।

الله الله المورد والمالية المراكبة المركبة المركبة

১০৩. অতপর তোমরা যখন নামায শেষ করে নেবে. তখন দাঁডিয়ে, বসে এবং শুয়ে (তথা সর্বাবস্থায়) আল্লাহ তায়ালাকে শ্বরণ করতে থাকবে. এরপর যখন তোমরা পুরোপুরি স্বস্তি বোধ করবে তখন (যথারীতি) নামায عَاقِيمُوا الصَّلُوةَ ع إِنَّ الصَّلُوةَ كَانَتُ عَلَى अभाग्न अत्रत्, अवनार्ह नाभाय क्रेमानमतात्मत उभन्न كأقِيمُوا الصَّلُوةَ ع إِنَّ الصَّلُوةَ كَانَتُ عَلَى সুনির্দিষ্ট সময়ের সাথেই ফর্য করা হয়েছে।

١٠٣ فَاذَا قَضَيْتُمُ الصَّلُوةَ فَاذْكُووا اللَّهَ قيلًّا وَّتُعُودًا وَّعَلَى جُنُوبِكُم ۚ جِ فَاذَا اطْهَاْنَنْتُر الْهُؤْمِنِيْنَ كِتْبًا مُّوْقُوْتًا

১০৪. কোনো (শত্রু) দলের পেছনে ধাওয়া করার সময় তোমরা বিন্দুমাত্রও মনোবল হারিয়ো না: তোমরা যদি কষ্ট পেয়ে থাকো (তাহলে জেনে রেখো), তারাও তো তোমাদের মতো কষ্ট পাচ্ছে, ঠিক যেমনিভাবে ভোমরা কষ্ট পাচ্ছো। কিন্তু তোমরা আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে। যে (জান্নাত) আশা করো, তারা তো তা করে না: নিকয়ই আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ, কুশলী।

١٠٣ وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْرِ م إِنْ تَكُونُو ا تَأْلُهُونَ فَانَّهُمْ يَأْلُهُونَ كَمَا تَأْلُهُونَ ج وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللَّهِ مَا لاَ يَرْجُوْنَ م وَكَانَ اللَّهُ عَلَيْهًا حَكَيْهًا ع

১০৫. অবশ্যই আমি সত্য (দ্বীনের) সাথে তোমার ওপর এ গ্রন্থ নাথিল করেছি, যাতে করে আল্লাহ তায়ালা তোমাকে যা (জ্ঞানের আলো) দেখিয়েছেন তার আলোকে তুমি মানুষদের বিচার মীমাংসা করতে পারো: (তবে বিচার ফয়সালার সময়) তুমি কখনো বিশ্বাসঘাতকদের পক্ষে তর্ক করো না।

١٠٥ إِنَّا ٱنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقّ لِتَعْكُرَ بَيْنَ النَّاسِ بِهَا ۖ أَرْبِكَ اللَّهُ ﴿ وَلَا تَكُنْ لِلْخَالِّنِيْنَ خَصِيْهًا لا

১০৬. তুমি আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা বড়ো ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١٠٦ وَّاسْتَغْفِر اللَّهَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا

১০৭. যারা নিজেদের সাথে বিশ্বাসঘাতকতা করে, তমি কখনো এমন সব লোকের পক্ষে কথা বলো না. (কেননা) আল্লাহ তায়ালা এই পাপিষ্ঠ বিশ্বাসঘাতকদের কখনো পছন্দ করেন না।

١٠٤ وَلَا تُجَادِلُ عَى الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ ٱنْفُسَهُرْ ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ غَوَّانًا

১০৮. এরা মানুষদের কাছ থেকে (নিজেদের কর্ম) লুকিয়ে রাখতে চায়, কিন্তু আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে তারা কিছুই লুকাতে পারবে না; আল্লাহ তায়ালা (তো হচ্ছেন সেই মহান সন্তা) যিনি রাতের অন্ধকারে– তিনি যেসব কথা (বা কাজ) পছন্দ করেন না, এমন সব বিষয়ে যখন এরা সলাপরামর্শ করে, তখনও তিনি তাদের সাথেই থাকেন: এরা যা কিছু করে তা সম্পূর্ণ আল্লাহ তায়ালার জ্ঞানের পরিধির আওতাধীন।

١٠٨ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى مِنَ الْقَوْلِ مِ وَكَانَ اللَّهُ بِهَا يَعْهَلُوْنَ مُحِيْطًا

১০৯. হ্যা, এরাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের (সঠিক ঘটনা না জানার কারণে) দুনিয়ার জীবনে তোমরা যাদের পক্ষে কথা বলেছো, কিন্তু কেয়ামতের দিনে আল্লাহ তায়ালার সামনে কে তাদের পক্ষে কথা বলবে. কিংবা কে তাদের ওপর (সেদিন) অভিভাবক হবে?

١٠٩ مَّانْتُرْ هَوُ كَاءِ جِلْ لَتُرْ عَنْهُرْ فِي الْحَيْوةِ النَّنْيَا مَا فَهَنْ يُّجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُرْ يَوْمَ الْقيٰهَة أَ أُمَّن يَّكُونُ عَلَيْهِمْ وَكَيْلًا

১১০. যে ব্যক্তি গুনাহের কাজ করে অথবা (গুনাহ করে) নিজের ওপর অবিচার করে, অতপর (এ জন্যে যখন) সে আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করে, (তখন) সে অবশ্যই আল্লাহ তায়ালাকে পরম ক্ষমাশীল ও অতীব দয়ালু হিসেবে পাবে।

١١٠ وَمَنْ يَعْمَلُ سُوَّءًا أَوْ يَظْلِمِ نَفْسَدَّ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِنِ اللَّهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

১১১. যে ব্যক্তি কোনো গুনাহের কাজ করলো, সে কিন্তু يُ إثْهًا فَانَّهَا يَكْسِبُهُ عَلَى

৪ সুরা আনু নেসা

30

अप्रक्टि नात्यभ

মন্যিল ১

হৃদয়ে নানা প্রকারের মিথ্যা কামনা (বাসনা) জাগিয়ে

৪ সুরা আনু নেসা

فَلَيُبَتِّكُنَّ أَذَانَ الْأَنْعَا مِ وَلَامُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ

পারা ৫ ওয়াল্মুহ্ছানাত

তলবো এবং আমি তাদের নির্দেশ দেবো যেন তারা (কুসংস্কারে লিপ্ত হয়ে) জন্তু-জানোয়ারের কান ছিদ্র করে দেয়, আমি তাদের আরো নির্দেশ দেবো যেন তারা আল্লাহ তায়ালার সষ্টিকে বিকত করে দেয়: (মূলত) যে ব্যক্তি (এসব কাজ করে) আল্লাহ তায়ালার বদলে শয়তানকে নিজের পৃষ্ঠপোষক বানিয়ে নেবে, সে এক সুস্পষ্ট ক্ষতি ও লোকসানের সমুখীন হবে।

غَلْقَ اللَّهِ ، وَمَنْ يَتَّخِنِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ فَقَلْ خَسِرَ خُسْرَ انَّا مَّبِينًا ،

১২০, সে (অভিশপ্ত শয়তান) তাদের (নানা) প্রতিশ্রুতি দেয়, তাদের (সামনে) মিথ্যা বাসনার (মায়াজান) সষ্টি করে, আর শয়তান যা প্রতিশ্রুতি দেয় তা প্রতারণা ছাড়া আর কিছুই নয়।

১২১. এরাই হচ্ছে সেসব (হতভাগ্য) ব্যক্তি; যাদের আবাসস্থল হচ্ছে জাহানাম, যার (আযাব) থেকে মুক্তির কোনো পন্তাই তারা (খঁজে) পাবে না।

١٢١ ٱولَّئِكَ مَا وْنَمُرْ جَهَنَّرُ رَوَلَا يَجِنُونَ

১২২. অপরদিকে যারা (শয়তানের প্রতিশ্রুতি উপেক্ষা করে) আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনবে এবং ভালো কাজ করবে, তাদের আমি অচিরেই এমন এক জান্নাতে প্রবেশ করাবো, যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা বইতে থাকবে, তারা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে: আল্লাহর ওয়াদা সত্য: আর আল্লাহর চাইতে বেশী সত্য কথা কে বলতে পারে?

١٢٢ وَالَّذِينَ أَمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّلحٰتِ رُ جَنَّتٍ تَجُرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيْهَا أَبَلًا ﴿ وَعْنَ اللَّهِ حَقًّا ﴿ وَمَنْ أَشْكَقُ مِنَ اللَّهِ قِيْلًا

১২৩. (মানুষের ভালোমন্দ যেমনি) তোমাদের খেয়াল কেতাবদের খেয়ালখুশীর সাথেও সম্পৃক্ত নয় (আসল কথা হচ্ছে), যে ব্যক্তি কোনো গুনাহের কাজ করবে, তাকে তার প্রতিফল ভোগ করতে হবে, আর এ (পাপী) ব্যক্তি (সেদিন) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কাউকেই নিজেদের পৃষ্ঠপোষক ও সাহায্যকারী হিসেবে পাবে না।

ালুবের ভালোমশ থেমান) তোমাদের খেয়াল সাথে জড়িত নয়, (তেমনি তা) আহলে اکیْسَ بِاَمَانِیِّکُمْ وَ \widetilde{Y} اَمَانِیِّ اَهْلِ الْكتُبِ ء مَنْ يَعْمَلُ سُوءًا يُحِمْ بهِ ٧ وَ لَا يَجِلُ لَهُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ وَلَيًّا وَّ لَا نَصِيًّا

১২৪. (পক্ষান্তরে) যে ব্যক্তি কোনো ভালো কাজ করবে-নর কিংবা নারী, সে যদি ঈমানদার অবস্থায়ই তা (সম্পাদন্) করে, তাহলে (সে এবং তার মতো) সব লোক অবশ্যই জান্নাতে প্রবেশ করবে, (পুরস্কার দেয়ার সময়) তাদের ওপর বিন্দুমাত্রও অবিচার করা হবে না।

١٢٣ وَمَنْ يَّعْمَلُ مِنَ الصَّلِحُسِ مِنْ ذَكَرِ أَوْ أَنْثَى وَهُوَ مُؤْمِنً فَأُولِئِكَ يَنْ عُلُونَ الْجَنَّةَ وَلاَ يُظْلَبُونَ نَقَيْرًا

১২৫. তার চাইতে উত্তম জীবন বিধান আর কার হতে পারে, যে আল্লাহ তায়ালার জন্যে মাথানত করে দেয়, মূলত সে-ই হচ্ছে নিষ্ঠাবান ব্যক্তি, (তদুপরি) সে ইবরাহীমের আদর্শের অনুসরণ করে: আর আল্লাহ তায়ালা ইবরাহীমকে স্বীয় বন্ধুরূপে গ্রহণ করেছেন।

١٢٥ وَمَنْ أَحْسَىُ دِيْنًا مِّشَّى أَسْلَمَ وَجُهَدَّ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسَى وَ اتَّبَعَ مِلَّةَ ابْدِهِيْرَ وَاتَّخَلَ اللَّهُ ابْرُمِيْرَ غَلَيْلًا

১২৬, আসমান ও যমীনে যা কিছু আছে তার সব কিছুই আল্লাহ তায়ালার জন্যে, আর আল্লাহ তায়ালা (তাঁর ক্ষমতা দিয়ে) সব কিছুই পরিবেষ্টন করে আছেন।

١٢٦ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّاوٰسِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مَّحِيْطًا ع

১২৭. (হে নবী.) তারা তোমার কাছে নারীদের ব্যাপারে সিদ্ধান্ত জানতে চায়, তুমি (তাদের) বলো, আল্লাহ তায়ালা তাদের ব্যাপারে তোমাদের জানিয়ে দিচ্ছেন, আর এ কেতাব থেকে যা কিছু তোমাদের ওপর পঠিত হচ্ছে সেই এতীম নারীদের সম্পর্কিত (ব্যাপার), আল্লাহ তায়ালা

١٢٤ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَاءِ ، قُل اللَّهُ يُفْتِيكُر فِيْهِن لا وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُر فِي الْكتُبِ فِي يَتْهِي النَّسَاء الَّتِي $\hat{\chi}$

তাদের জনো যেসর অধিকার দান করেছেন যা তোমরা আদায় করতে চাও না, অথচ তোমরা তাদের বিয়ে (ঠিকই) করতে চাও। অসহায় শিশু সন্তান ও এতীমদের ব্যাপারে (তোমাদের বলা হচ্ছে,) তোমরা যেন সুবিচার काराम करता; रामता राष्ट्रक त्र कालर करता जालार विके हैं विके में विके में कि के विके में कि के विके के विके के তায়ালা তার সবকিছ সম্পর্কেই সম্যকভাবে অবহিত বয়েছেন

تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْهُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ لا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيْمًا

১২৮. যদি কোনো স্ত্রীলোক তার স্বামীর কাছ থেকে দুর্ব্যবহার কিংবা অবজ্ঞার আশংকা করে, তাহলে (সে অবস্থায়) পারম্পরিক (ভালোর জন্যে) আপস-নিষ্পত্তি করে নিলে তাদের ওপর এতে কোনো দোষ নেই; কারণ (সর্বাবস্থায়) আপস (মীমাংসার পদ্মাই) হচ্ছে উত্তম পদ্মা, (কিন্তু সমস্যা হচ্ছে) মানুষ আপসে লালসার দিকেই বেশী পরিমাণে ধাবিত হয়ে পড়ে: (কিন্তু) তোমরা যদি সততার পন্থা অবলম্বন করো এবং (শয়তানের কাছ থেকে) নিজেকে রক্ষা করো, তাহলে (সেটাই তোমাদের জন্যে ভালো, কারণ) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সব কর্মকান্ড অবলোকন করে থাকেন।

١٢٨ وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا أَوْ اعُرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِهَا ۚ أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُهَا مُلْحًا ، وَالصُّلْحُ غَيْرٌ ، وَأَحْضِرَتِ الْإَنْفُسُ الشُّحَّ ء وَ إِنْ تُحْسِنُوا وَ تَتَّقُوا فَانَّ اللَّهَ كَانَ بِهَا تَعْمَلُونَ خَبِيْرًا

১২৯, তোমরা কখনো (একাধিক) স্ত্রীদের মাঝে ইনসাফ করতে পারবে না. যদিও (মনে প্রাণে) তোমরা চাইবে, তাই তাদের একজনের দিকে তুমি (সমস্ত মনোযোগ দিয়ে) এমনভাবে ঝঁকে পড়ো না যে. (দেখে আরেকজনকে ঝুলন্ত অবস্থায় (রেখে মনে হবে) দিয়েছো): তোমরা যদি সংশোধনের (চেষ্টা করো এবং) আল্লাহ তায়ালাকেও ভয় করো, তাহলে (তুমি দেখবে,) আল্লাহ তায়ালা অতি ক্ষমাশীল ও প্রম দ্যাল।

١٢٩ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْ آ أَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَاءِ ولَوْ حَرَمْتُمْ فَلَا تَمِيلُوْ اكُلَّ الْمَيْلِ فَتَنَارُوْهَا كَالْهُعَلَّقَةِ مَ وَإِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيْمًا

১৩০. (অতপর) যদি (সত্যি সত্যিই) তারা একে অপরের কাছ থেকে বিচ্ছিন্র হয়ে যায়, তাহলে আল্লাহ তায়ালা তার ভান্ডার থেকে দান করে তাদের সবাইকে পারম্পরিক মুখাপেক্ষিতা থেকে রেহাই দেবেন, আল্লাহ তায়ালা (নিসন্দেহে) প্রাচুর্যময় ও প্রশংসাভাজন।

١٣٠ وَإِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلَّا مِّنْ سَعَتِهِ وكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا

১৩১. আসমান যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ তায়ালার জন্যে, তোমাদের আগেও যাদের কাছে কেতাব নাযিল করা হয়েছিলো, তাদের আমি এ নির্দেশ দিয়েছিলাম যেন তারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে: (আমি) তোমাদেরও নির্দেশ দিচ্ছি, আর যদি তোমরা (আল্লাহকে) অস্বীকার করো (তাহলে জেনে রেখো). चाकान-পाठाल या किছू आहर तर किছूरे एठा आन्नार ومَا فِي السَّمُونِي وَمَا فِي السَّمُونِي وَمَا فِي السَّمُونِي وَمَا فِي তায়ালার জন্যে: আল্লাহ তায়ালা বে-নিয়ায, সব প্রশংসা তাঁরই (প্রাপ্য)।

١٣١ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّيٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَ وَلَقَنْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ ٱوْتُوا الْكتٰبِ مِنْ قَبْلكُيرُ وَايَّاكُيرُ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ ﴿ وَانْ الْأَرْضِ ، وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيْلًا

১৩২. অবশ্যই আসমান-যমীনের সব কয়টি জিনিসের মালিকানা তাঁর, যাবতীয় কর্ম সম্পাদনে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট!

١٣٢ وَلِلَّهِ مَافِي السَّهٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وكفى بالله وكيلًا

১৩৩. হে মানুষ, তিনি চাইলে যে কোনো সময় (যমীনের কর্তৃত্ব থেকে) তোমাদের অপসারণ করে অন্য কোনো সম্প্রদায়কে এনে বসিয়ে দিতে পারেন, এ কাজে তিনি অবশ্যই ক্ষমতাবান ৷

١٣٣ إِنْ يَّشَأَ يُنْهِبْكُرْ أَيَّهَا النَّاسُ وَيَأْسِ بِالْعَرِيْنَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَٰلِكَ قَرِيْرًا

১৩৪. তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এ দুনিয়াতেই (তার) পুরস্কার পেতে চায় (তার জেনে রাখা উচিত), আল্লাহ

١٣٣ مَنْ كَانَ يُرِيْكُ ثَوَابَ اللَّّنْيَا فَعِنْكَ

মন্যিল ১

abr

তায়ালার কাছে তো ইহকাল পরকাল (এ উভয়কালের) পুরস্কারই রয়েছে, আল্লাহ তায়ালা সব কিছু শোনেন এবং সব কিছুই দেখেন।

اللهِ ثَوَابُ النَّنْيَا وَالْأَخِرَةِ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ سَهِيْعًا ٰ بَصِيْرًا ع

১৩৫. হে ঈমানদাররা, তোমরা (সর্বদাই) ইনসাফের ওপর (দৃঢ়ভাবে) প্রতিষ্ঠিত থেকো এবং আল্লাহ তায়ালার জন্যে সত্যের সাক্ষী হিসেবে নিজেকে পেশ করো, যদি এ (কাজ)-টি তোমার নিজের, নিজের পিতামাতার কিংবা নিজের আত্মীয় স্বজনের ওপরেও আসে (তবুও তা তোমরা মনে রাখবে), সে ব্যক্তি ধনী হোক কিংবা গরীব (এটা কখনো দেখবে না, কেননা), তাদের উভয়ের চাইতে আল্লাহ তায়ালার অধিকার অনেক বেশী, অভএব তুমি কখনো ন্যায়বিচার করতে নিজের খেয়ালখুশীর অনুসরণ করো না, যদি তোমরা পেঁচানো কথা বলো কিংবা (সাক্ষ্য দেয়া থেকে) বিরত থাকো, তাহলে (জেনে

রাখবে.) তোমরা যা কিছই করো না কেন, আল্লাহ

তায়ালা তার যথার্থ খবর রাখেন।

١٣٥ يَّا يَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا كُوْنُوا قَوْمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَنَّا لِللهِ وَلَوْ عَلَى اَنْفُسِكُمْ بِالْقِسْطِ شُهَنَّا لِللهِ وَلَوْ عَلَى اَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالْوَالِنَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ } إِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللَّهُ اَوْلَى بِهِهَا عَانَّ فَلَا تَتَبِعُوا الْهَوَى اَنْ تَعْرِلُوا } وَإِنْ تَلُوَّا اَوْ تَعْرِضُوا فَإِنَّ اللهَ كَانَ بِهَا تَعْمُلُونَ خَبِيْرًا

১৩৬. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা ঈমান আনো আল্লাহর ওপর, তাঁর রসূলের ওপর, সে কেতাবের ওপর যা আল্লাহ তায়ালা তাঁর রসূলের ওপর নাযিল করেছেন এবং সেসব কেতাবের ওপর যা (ইতিপূর্বে তিনি) নাযিল করেছেন, আর যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করলো, (অস্বীকার করলো) তাঁর ফেরেশতাদের, তাঁর (পাঠানো) কেতাবসমূহ, তাঁর নবী রসূলদের ও পরকাল দিবসকে, (বুঝতে হবে) সে ভীষণভাবে পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে!

١٣٦ يَايَّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْآ أُمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهِ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ آَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ﴿ وَمَنْ يَّاكُفُرُ بِاللهِ وَمَلَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْرَا الْأَخِرِ فَقَنْ ضَلَّ ضَلَّلًا بَعِيْدًا

১৩৭. যারা একবার ঈমান আনলো আবার কুফরী করলো, (কিছু দিন পর) আবার ঈমান আনলো, এরপর (সুযোগ বুঝে) আবার কাফের হয়ে গেলো, এরপর কুফরীর পরিমাণ তারা (দিনে দিনে) বাড়িয়ে দিলো, (ঈমান নিয়ে তামাশা করার) এ লোকদের আল্লাহ তায়ালা কখনো ক্ষমা করবেন না, না কখনো তিনি এ ব্যক্তিদের সঠিক পথ দেখাবেন!

١٣٤ إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُوا ثُرَّ كَفُرُوا ثُرَّ اَمَنُوا ثُرَّ كَفَرُوا ثُرَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّرْ يَكَنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَمُرْ وَلَا لِيَهْرِيَمُرْ سَبِيْلًا ،

১৩৮. (হে নবী,) মোনাফেক ব্যক্তিদের তুমি সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্যে ভয়াবহ আযাব রয়েছে।

١٣٨ بَشِّرِ الْمُنْفِقِينَ بِأَنَّ لَهُرْ عَنَابًا ٱلِيْمًا ٢

১৩৯. যারা (দুনিয়ার ফায়েদার জন্যে) ঈমানদারদের বদলে কাফেরদের বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করেছে, তারা (কি এর দ্বারা) এদের কাছ থেকে কোনো রকম মান-সম্মানের প্রত্যাশা করে? অথচ (সবটুকু) মান-সম্মান তো আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (নির্দিষ্ট)।

١٣٩ الَّذِيْنَ يَتَّخِنُونَ الْكُفِرِيْنَ اَوْلِيَاءً مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿ اَيَبْتُغُونَ عِنْنَمُرُ الْعِزَّةَ فَوْنَ عِنْنَمُرُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِرَّةَ لِلَّهِ جَهِيْعًا ﴿

১৪০. আল্লাহ তায়ালা (ইতিপূর্বেও) এ কেতাবের মাধ্যমে তোমাদের ওপর আদেশ নাযিল করেছিলেন যে, তোমরা যখন দেখবে (কাফেরদের কোনো বৈঠকে) আল্লাহ তায়ালার নাযিল করা কোনো আয়াত অস্বীকার করা হচ্ছে এবং তার সাথে ঠাট্টা-বিদ্রপ করা হচ্ছে, তখন তোমরা তাদের সাথে (এ ধরনের মজলিসে) বসো না, যতোক্ষণ না তারা অন্য কোনো আলোচনায় লিপ্ত হয়, (এমনটি করলে) অবশ্যই তোমরা তাদের মতো হয়ে যাবে (জেনেরেখা), আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সব কাফের ও মোনাফেকদের জাহান্নামে একত্রিত করে ছাড়বেন।

١٣٠ وَقَلْ نَزَّلَ عَلَيْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ إِذَا سَمِعْتُرْ اٰيٰسِ اللهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَا بِهَا فَلَا تَقْعُلُوا مِعَهُرْ مَتَّى يَخُوضُوا فِي مَلِيْسِ فَلَا تَقْعُلُوا مَعَهُرْ مَتَّى يَخُوضُوا فِي مَلِيْسِ غَيْرٍةٍ صَلَّى إِنَّ اللهَ مَامِعُ عَيْرٍةٍ صَلَّى اللهَ مَامِعُ اللهَ عَيْرِةٍ صَلَّى اللهَ مَامِعُ اللهَ عَيْرِةٍ صَلَّى اللهَ مَامِعُ اللهَ عَيْرَةً فِينَى وَالْكُغِرِيْنَ فِي جَمَنَّتْرَ جَمِيْعًا "

৪ সুরা আন নেসা



১৪১. যারা সব সময়ই তোমাদের (শুভ দিনের) প্রতীক্ষায় থাকে, যদি আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহে তোমাদের বিজয় আসে তখন এরা (কাছে এসে) বলবে, কেন, আমরা কি (এ যুদ্ধে) তোমাদের পক্ষে ছিলাম না? (আবার) যদি কখনো কাফেরদের (ভাগে বিজয়ের) অংশ (লেখা) হয়. তাহলে এরা (সেখানে গিয়ে) বলবে, আমরা কি তোমাদের মুসলমানদের কাছ থেকে রক্ষা করিনি? এমতাবস্থায় শেষ বিচারের দিনেই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের উভয়ের মাঝে ফয়সালা শুনিয়ে দেবেন এবং আল্লাহ তায়ালা (সেদিন) মোমেনদের বিরুদ্ধে এ কাফেরদের কোনো (অজুহাত পেশ করার) পথ অবশিষ্ট রাখবেন না ।

١٣١ الَّذِيثَيَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُيرْج فَاِنْ كَانَ لَكُيرْ فَتُحُّ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ﴿ إِنَّ كَانَ لِلْكُفِرِيْنَ نَصِيْبٌ لِا قَالُوْا ٱلَّمْ نَسْتَحُوذُ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ١ فَاللَّهُ يَحْكُرُ بَيْنَكُرْ يَوْمَ الْقِيٰهَةِ ﴿ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللَّهُ لِلْكُغِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ع

১৪২. অবশ্যই মোনাফেকরা আল্পাহ তায়ালাকে ধোকা দেয়. (মূলত এর মাধ্যমে) আল্লাহই তাদের প্রতারণায় ফেলে দিচ্ছেন, এরা যখন নামাযে দাঁড়ায় তখন একান্ত আলস্যভরেই দাঁড়ায়, আর তারাও কেবল লোকদের দেখায়, এরা আল্লাহ তায়ালাকে আসলে কমই স্বরণ করে।

١٣٢ إِنَّ الْهُنْفِقِيْنَ يُخْدِيعُوْنَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُمُر ع وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلُوةِ قَامُوا إ كُسَالَى لا يُرَاءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَنْكُرُوْنَ اللَّهَ الا قَليْلًا زلا

১৪৩. এরা (কৃফরী ও ঈমানের) এ দোটানায় দোদুল্যমান, (এরা) না এদিকে না ওদিকে; তুমি সে ব্যক্তিকে কখনো وَكَا إِلَى هُؤُكَاءٍ ﴿ وَمَنْ يَّضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ अठिक) পথ দেখাতে পারবে না, যাকে আল্লাহ তায়ালাই গোমরাহ করে দেন।

١٣٣ مَّنَ بَنَ بِينَ بَيْنَ ذَلكَ لَى اللَّهِ هُو كَا عَلَى هُو كَاء تَجِنَ لَهُ سَبِيْلُا

১৪৪. হে ঈমানদার বান্দারা, তোমরা ঈমানদার ব্যক্তিদের বাদ দিয়ে কাফেরদের নিজেদের বন্ধরূপে গ্রহণ করো না: তোমরা কি (তাদের বন্ধুরূপে গ্রহণ করে) আল্লাহ তায়ালার কাছে তোমাদের বিরুদ্ধে (কোনো) সুস্পষ্ট প্রমাণ তুলে দিতে চাওঃ

١٣٣ يَأَيُّهَا الَّانِيْنَ أَمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكُفِرِيْنَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿ اَتُّويْكُوْنَ أَنُّ تَجْعَلُوْ اللَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطُنَّا مُّبِيْنًا

১৪৫. এ মোনাফেকরা জাহান্লামের সর্বনিম্বন্তরে অবস্থান করবে, তুমি সেদিন তাদের জন্যে কোনো সাহায্যকারী খুঁজে পাবে না।

١٣٥ إِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ فِي النَّارْكِ الْإَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ع وَكَنْ تَجِنَ لَهُمْ نَصِيْرًا لا

১৪৬. তবে তাদের কথা আলাদা, যারা তাওবা করে এবং (পরবর্তী জীবনকে তাওবার আলোকে) সংশোধন করে নেয়, আল্লাহ তায়ালার রশি শক্ত করে ধরে রাখে এবং একমাত্র আল্লাহ তায়ালার উদ্দেশেই তাদের জীবন বিধানকে নিবেদিত করে নেয়, এসব লোকেরা অবশ্যই (সেদিন) বিশ্বাসী বান্দাদের সাথে (অবস্থান) করবে; আর অচিরেই আল্লাহ তায়ালা তাঁর ঈমানদার বান্দাদের বড়ো ধরনের পুরস্কার দেবেন।

١٣٦ إِلَّا الَّذِينَ تَابُواْ وَاَصْلَحُواْ وَاعْتَصَهُواْ بِاللَّهِ وَٱخْلَصُواْ دِيْنَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿ وَسَوْنَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِيْنَ أَجُرُ اعَظِيْمًا

১৪৭. (তোমরाই বলো,) আল্লাহ তায়ালা कि (খামাখা) كُرُ اُنِ شَكَرْ أُن شَكَرْ أَن شَكَرُ اللهُ بِعَنَ الِكُر إِن شَكَرْ تُر তোমাদের শাস্তি দেবেন– যদি তোমরা (তাঁর প্রতি) কৃতজ্ঞতা আদায় করো এবং তাঁর ওপর ঈমান আনো: (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন (সর্বোচ্চ) পুরস্কারদাতা, সম্যক ওয়াকেফহাল।

وَ أُمَنْتُمْ م وَكَانَ اللَّهُ شَاكًّا عَلَيْمًا

৪ সুরা আনু নেসা

200

শোনেন এবং জানেন।

১৪৮. আল্লাহ তায়ালা প্রকাশ্যভাবে মন্দ বলা (কখনো) পছন্দ করেন না, তবে যে ব্যক্তির ওপর অবিচার করা হয়েছে তার কথা আলাদা; আল্লাহ তায়ালা ভালোভাবেই

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوَّءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظُلِمَ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ سَبِيعًا

১৪৯. ভালো কাজ তোমরা প্রকাশ্যে করো কিংবা তা গোপনে করো, অথবা কোন মন্দ কাজের জন্যে যদি তোমরা ক্ষমা করে দাও, তাহলে (তোমরাও দেখতে পাবে.) আল্লাহ তায়ালা অতি ক্ষমাশীল ও প্রবল শক্তিমান।

١٣٩ إِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوْهُ أَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوءَ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوا قَرِيرًا

১৫০. যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলদের অবিশ্বাস করে এবং আল্লাহ তায়ালা ও রসুলদের মাঝে (এই বলে) একটা পার্থক্য করতে চায় যে, আমরা (রসুলদের) কয়েকজনকে স্বীকার করি আবার কয়েকজনকে অস্বীকার করি, এর দারা (আসলে) এরা (নিজেদের জন্যে) একটা মাঝামাঝি রাস্তা বের করে নিতে চায়।

١٥٠ إِنَّ الَّذِيثَيَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيْكُونَ أَنْ يُغَرِّتُوا بَيْنَ اللهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُوْلُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ لا وْيُرِيْكُوْنَ أَن يَتَّخِلُوْا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيْلًا لا

১৫১. এরাই হচ্ছে সত্যিকারের কাফের, আর আমি এ কাফেরদের জন্যেই নির্দিষ্ট করে রেখেছি এক চরম লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি ।

١٥١ أُولَٰئِكَ مُر الْكُفِرُونَ مَقًّا ع وَاعْتَلْنَا لِلْكُفِرِيْنَ عَنَ إِبًّا مَّهِيْنًا

১৫২. (অপরদিকে) যারা আল্পাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ওপর ঈমান আনে এবং তাদের একজনের সাথে আরেকজনের কোনো রকম পার্থক্য করে না, এরাই হচ্ছে সেসব লোক যাদের তিনি অচিরেই অনেক পুরস্কার দান করবেন, প্রকৃতপক্ষে আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত ক্ষমাশীল ও মহাদয়ালু।

١٥٢ وَالَّذِينَ أَمَنُوْا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمُ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَلٍ مِّنْهُرْ أُولَٰئِكَ سَوْنَ يُؤْتِيهِمْ ٱجُوْرَهُمْ وكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ع

১৫৩. আহলে কেতাবের লোকেরা তোমার কাছে চায়. তুমি যেন আসমান থেকে তাদের জন্যে কোনো কেতাব নাযিল করো! এরা তো মৃসার কাছে এর চাইতেও বড়ো রকমের দাবী পেশ করেছিলো, তারা বলেছিলো (হে মৃসা), তুমি স্বয়ং আল্লাহ তায়ালাকেই আমাদের প্রকাশ্যভাবে দেখিয়ে দাও, অতপর তাদের এই বাড়াবাড়ির জন্যে তাদের ওপর প্রচন্ড বজ্রপাত এসে নিপতিত হয়েছে এবং (এ সম্পর্কিত) সুস্পষ্ট প্রমাণসমূহ তাদের কাছে আসার পরও তারা গো-বাছুরকে উপাস্য হিসেবে গ্রহণ করেছে, অতপর আমি তাদের এ অপরাধ ক্ষমা করে দিলাম এবং আমি মুসাকে স্পষ্ট প্রমাণ (-সহ কেতাব) দান করলাম।

١٥٣ يَشْئَلُكَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتْبًا مِّنَ السُّمَاءِ فَقَلْ سَٱلُوا مُوْسَى ٱكْبَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَقَالُوْ ۗ أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَٱخَلَ تُهُمُّ الصِّعَةُ بِظُلْبِهِرْء ثُرَّ اتَّخَنُّوا الْعِجْلَ مِنَّ بَعْلِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنْتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَٰلِكَ وَ اتَيْنَا مُوْسَى سُلْطِنًا مُّبِينًا

১৫৪. এদের ওপর তূর পাহাড়কে উঠিয়ে উঁচু করে ধরে আমি এদের কাছ থেকে (আনুগত্যের) প্রতিশ্রুতি আদায় করেছিলাম, আমি তাদের বলেছিলাম, নগরের দ্বারপ্রান্ত দিয়ে ভেতরে প্রবেশ করার সময় তোমরা একান্ত অনুগত হয়ে ঢুকবে, আমি তাদের (আরো) বলেছিলাম, তোমরা শনিবারে (মাছ ধরে আমার বিধানের) সীমালংঘন করো না. (এ ব্যাপারে) আমি তাদের কাছ থেকে শব্জ প্রতিশ্রুতি আদায় করে নিয়েছিলাম।

١٥٣ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُرُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِرْ وَقُلْنَا لَهُرُ ادْغُلُوا الْبَابَ سُجَّّلًا وَّقُلْنَا لَهُرْ لَا تَعْلُواْ فِي السَّبْتِ وَأَخَلْنَا مِنْهُرْ مِّيثَاقًا

করা, আল্লাহর আয়াতসমূহকে তাঁদের অস্বীকার করা এবং بايس করা, আল্লাহর আয়াতসমূহকে তাঁদের অস্বীকার করা এবং

অন্যায়ভাবে আল্লাহ তায়ালার নবীদের তাদের হত্যা করা. (তদুপরি) তাদের (একথা) বলা, আমাদের হৃদয় (বাতিল চিন্তাধারায়) আচ্ছাদিত (হয়ে আছে), প্রকৃতপক্ষে তাদের (ক্রমাগত) অস্বীকার করার কারণে আল্লাহ তায়ালা স্বয়ং তাদের দিলের ওপর মোহর মেরে দিয়েছেন, তাই এদের কম সংখ্যক লোকই ঈমান আনে।

الله وَقَتْلِهِرُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرٍ حَقٍّ وَّقَوْ قُلُوْبُنَا غُلُفٌ ۚ ﴿ بَلَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ع

১৫৬. যেহেতু এরা (আল্লাহকে) অস্বীকার করতেই থাকলো, এরা (পুণ্যবতী) মারইয়ামের ওপরও জঘন্য অপবাদ আনলো।

১৫৭. তাদের (এ মিথ্যা) উক্তি যে, আমরা অবশ্যই মারইয়ামের পত্র ঈসাকে হত্যা করেছি, যিনি ছিলেন আল্লাহর রস্ল (যদিও আসল ঘটনা হচ্ছে) তারা কখনোই তাকে হত্যা করেনি, তারা তাকে শুলবিদ্ধও করেনি, (মূলত) তাদের কাছে (ধাঁধার কারণে) এমনি একটা কিছু মনে হয়েছিলো: (তাদের মাঝে) যারা (সঠিক ঘটনা না জানার কারণে) তার ব্যাপারে মতবিরোধ করেছিলো, তারাও (এতে করে) সন্দেহে পড়ে গেলো, এ ব্যাপারে তাদের অনুমানের অনুসরণ করা ছাড়া সঠিক কোনো জ্ঞানই ছিলো না. (তবে) এটুকু নিশ্চিত, তারা তাকে হত্যা করেনি।

١٥٠ وَّقَوْلِمِرْ إِنَّا قَتَلْنَا الْهَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ _ رَسُوْلَ اللَّه ج وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُرْ ﴿ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوْا اتِّبَاعَ الظَّنَّ ج وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِينًا ١٧

১৫৮. বরং (আসল ঘটনা ছিলো.) আল্লাহ তায়ালা তাকে তার নিজের কাছে তুলে নিয়েছেন: আল্লাহ তায়ালা মহাপরাক্রমশালী ও মহাপ্রজ্ঞাময়। (কাউকে উঠিয়ে নেয়া তার কাছে মোটেই কঠিন কিছু নয়।)

١٥٨ بَلْ رَّفَعَهُ اللَّهُ النَّهُ النَّهُ عَزِيزًا

১৫৯. (এই) আহলে কেতাবদের মাঝে এমন একজনও থাকবে না, যে ব্যক্তি তার মৃত্যুর আগে (ইসা সম্পর্কে আল্লাহ তায়ালার এই কথার) ওপর ঈমান আনবে না. কেয়ামতের দিনে সে নিজেই এদের ওপর সাক্ষী হবে।

١٥٩ وَإِنْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتْبِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ } وَيَوْمُ الْقَيْهَةِ يَكُونُ عَلَيْهِيرُ شهیل ا ع

১৬০. ইহুদীদের বাড়াবাড়ি ও সীমালংঘনমূলক আচরণের জন্যে এমন অনেক পবিত্র জিনিসও আমি তাদের জন্যে হারাম করে দিয়েছিলাম যেটা তাদের জন্যে (আগে) হালাল ছিলো, এটা এই কারণে যে, এরা বহু মানুষকে আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে বিরত রেখেছে।

١٦٠ فَبِظُلُم مِّنَ الَّذِيثَنَ هَادُواْ مَرَّمْنَا عَلَيْهِ

১৬১. (যেহেডু) এরা (লেনদেনে) সুদ গ্রহণ করে, অথচ এদের তা থেকে (সুস্পষ্টভাবে) নিষেধ করা হয়েছিলো এবং এরা অন্যের মাল-সম্পদ ধোকা প্রভারণার মাধ্যমে গ্রাস করে; তাদের মধ্যে (এ সব অপরাধে লিগু) কাফেরদের জন্যে আমি তাই কঠিন আযাব নির্দিষ্ট করে রেখেছি।

١٦١ وَّ اَغْنِهِرُ الرَّبُوا وَقَنْ نُهُوْا عَنْهُ وَ أَكْلِ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ﴿ وَأَعْتَلْنَا لِلْكُفِرِيْنَ مِنْهُرْ عَنَابًا ٱلِيْهًا

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যাদের (আবার) জ্ঞানের গভীরতা রয়েছে তারা এবং এমন সব ঈমানদার যারা তোমার ওপর যা কিছু নাযিল হয়েছে তার ওপর বিশ্বাস করে, (সাথে সাথে) তোমার পূর্ববর্তী নবী ও রসূলদের ওপর যা নাযিল হয়েছে তার ওপরও বিশ্বাস করে, নামায وَالْمَوْ تُونَ الزِّكُوةَ وَالْمَوْمَنُونَ بِاللَّهِ عَلَيْهِ अिष्ठी करत, याकाष आमाग्न करत, (अर्ताभित्र) आहार

রেখো,) এই আসমান-যমীনের সর্বত্র (যেখানে) যা কিছু আছে তার সব কিছুই আল্লাহ তায়ালার জন্যে এবং আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ, কুশলী।

وَالْأَرْضِ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيْهًا حَكِيْهًا

১৭১. হে কেতাবধারীরা, নিজেদের দ্বীনের ব্যাপারে তোমরা বাডাবাডি করো না এবং (ঈসার ঘটনা নিয়ে) আল্লাহ তায়ালার ওপর সত্য ছাড়া কোনো মিথ্যা চাপিয়ো না: (সে সত্য কথাটি হচ্ছে এই যে,) মারইয়ামের পুত্র মাসীহ ছিলো (একজন) রসল ও তার এমন এক বাণী, যা তিনি মারইয়ামের ওপর প্রেরণ করেছেন এবং সে ছিলো আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে পাঠানো এক 'রুহ', অতএব (হে আহলে কেতাবরা), তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লদের ওপর ঈমান আনো, আর (কখনো) এটা বলো না যে, (মাবদের সংখ্যা) তিন: এ (জঘন্য মিথ্যা) থেকে তোমরা বেঁচে থেকো, (এটাই) তোমাদের জন্যে উত্তম: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা: তিনি তো একক মাবুদ: আল্লাহ তায়ালা এ (মর্খতা) থেকে অনেক পবিত্র যে, তাঁর কোনো সন্তান থাকবে: এ আকাশ ও ভমন্ডলের সব কিছুর মালিকানাই তো তাঁর, আর অভিভাবক হিসেবে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট।

الحايّا مَنْ الْكِتْبِ لَا تَغْلُوا فِي دِيْنِكُمْ وَلَا تَعُولُوا فِي دِيْنِكُمْ وَلَا تَعُولُوا فِي دِيْنِكُمْ وَلَا تَعُولُوا عَلَى اللهِ إلَّا الْحَقَّ اللهِ وَكَلِمَتُهُ عَيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ وَ اللهِ وَكَلِمَتُهُ وَالْقُدِمَ اللهِ وَكَلِمَتُهُ وَالْقُدِمَ اللهِ وَكَلِمَتُهُ وَاللهِ وَكُلِمَتُهُ وَاللهِ وَكُلِمَتُهُ وَرُسُلِهِ وَ وَلا تَقُولُوا ثَلْثَةً اللهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلْثَةً اللهِ الْمُعُولُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ وَكَلَمُ اللهُ اللهِ وَكَيْلًا عَلَيْ وَكُلُلًا عَلَيْ اللهِ وَكَيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكَيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكَيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكَيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْ وَلَا اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْكُولُ وَلَا اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْ اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْ اللهِ اللهِ اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْلُهُ وَكُيْلًا عَلَيْ اللهُ وَكُيْلًا عَلَيْلِهُ وَلَا اللهِ اللهِ وَكِيْلًا عَلَيْ اللهِ اللهِ وَلَيْلُهُ وَلَيْلُولُ وَلَا اللهِ وَلَا اللهُ اللهِ وَلَيْلُولُ وَلَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ وَلَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ الل

১৭২. (ঈসা) মাসীহ কখনো (এতে) বিন্দুমাত্রও নিজেকে হেয় মনে করেনি যে, সে হবে আল্লাহ তায়ালার বান্দা, আল্লাহ তায়ালার একান্ত ঘনিষ্ঠ ফেরেশতারাও (একে লজ্জাকর মনে করেনি); কোনো ব্যক্তি যদি আল্লাহ তায়ালার বন্দেগী করা সত্যিই লজ্জাকর বিষয় মনে করে (এবং এটা ভেবে) সে অহংকার করে (তার জ্ঞানা উচিত), অচিরেই আল্লাহ তায়ালা এদের সকলকে তাঁর সামনে একত্রিত (করে দন্ডাজ্ঞা দান) করবেন।

الَّ الْمُ الْمُتَنْكِفَ الْهَسِيْعُ اَنْ الْكُوْنَ عَبْلًا اللهِ وَلَا الْمُلَّنِكَةُ الْهُقَرِّ بُوْنَ الْوَمَنْ الْسُتَنْكِفْ عَنْ عَبَدَدَتِهِ وَيَسْتَكُبِرْ فَسَيَحْشُرُهُرْ اللهِ جَمِيْعًا

১৭৩. যেসব মানুষ আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, (সেদিন) তিনি তাদের এর জন্যে পুরোপুরি পুরস্কার দেবেন, আল্লাহ তায়ালা তাঁর একান্ত অনুগ্রহ থেকে তাদের (পাওনা) আরো বাড়িয়ে দেবেন, অপরদিকে যারা আল্লাহ তায়ালার বিধান মেনে নেয়া লজ্জাজনক কিছু মনে করলো এবং অহংকার করলো, তাদের (সবাইকেই) আল্লাহ তায়ালা কঠোর শান্তি দান করবেন, (সেদিন) তারা আল্লাহ ছাড়া দ্বিতীয় কোনো অভিভাবক ও সাহায্যকারী পাবে না।

المَّا فَأَمَّا الَّذِينَ أَمَنُوْا وَعَبِلُوا الصَّلِحُتِ
فَيُوفِيْهِمْ أُمُوْرَهُمْ وَيَزِيْكُهُمْ مِّنَ فَضَلِهِ ع وَأَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَلِّبُهُمْ عَنَابًا ٱلِيْمًا لَا وَلا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنَ دُوْنِ اللهِ وَلِيَّا وَلا نَصِيْرًا

১৭৪. হে মানুষ, তোমাদের মালিকের কাছ থেকে তোমাদের কাছে একটি উজ্জ্বল প্রমাণ এসেছে এবং আমিই তোমাদের কাছে উজ্জ্বল জ্যোতি নাযিল করেছি।

١٤٣ يَآنَيُّهَا النَّاسُ قَلْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌّ مِّنْ رَبِّكُمْ وَٱنْزَلْنَاۤ إِلَيْكُمْ نُورًا مَّبِيْنًا

১৭৫. অতপর যারা (সে জ্যোতি দিয়ে) ঈমান আনলো এবং তাকে শক্ত করে আঁকড়ে থাকলো, আল্লাহ তায়ালা তাদের অচিরেই তাঁর অফুরম্ভ দয়া ও অনুথহে (জান্নাতে) প্রবেশ করাবেন এবং তাদের তিনি সঠিক পথে পরিচালিত করবেন।

١٤٥ فَاَمًّا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا بِاللَّهِ وَاعْتَصَهُوْا بِهِ فَسَيُّنْ خِلُهُرْ فِي رَهْهَ مِّنْهُ وَفَضْلٍ لا وَّيَهْرِيْهِرْ إِلَيْهِ صِرَاطًا شَّشْتَقَيْهًا ا

১৭৬. (হে নবী,) তারা তোমার কাছে (বিভিন্ন বিষয়ে) ফতোয়া জানতে চায়; তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালা সে

١٤٦ يَسْتَفْتُوْنَكَ مَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيْكُر فِي

৪ সুরা আনু নেসা

308

ব্যক্তির (উত্তরাধিকার সংক্রান্ত ব্যাপারে) তোমাদের তাঁর সিদ্ধান্ত জানাচ্ছেন: যার মাতা পিতা কেউই নেই আবার তার নিজেরও কোনো সম্ভান নেই, (এ ধরনের) কোনো ব্যক্তি যদি মারা যায় এবং সে ব্যক্তি যদি সম্ভানহীন হয় এবং তার একটি বোন থাকে, তাহলে সে বোনটি সে (মত) ব্যক্তির পরিত্যক্ত সম্পত্তির অর্ধাংশের মালিক হবে. অপরদিকে সে যদি নিসন্তান হয়, তাহলে সে তার বোনের (সম্পত্তির) উত্তরাধিকারী হবে: (আবার) যদি তারা দুজন হয়, তাহলে তারা দুই বোন সেই পরিত্যক্ত সম্পত্তির তিন ভাগের দুই ভাগ অংশের মালিক হবে: যদি সে ভাইবোনেরা কয়েকজন হয়, তাহলে মেয়েদের অংশ এক ভাগ ও পুরুষদের অংশ দুই ভাগ হবে: আল্লাহ ভায়ালা (উত্তরাধিকারের এ আইন-কানুন) অত্যন্ত সুস্পষ্টভাবে তোমাদের জন্যে বলে দিয়েছেন, যাতে করে (মানুষের উদ্ভাবিত বন্টন পদ্ধতিতে) তোমরা বিদ্রান্ত হয়ে না পড়ো: আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর ব্যাপারেই সম্যক ওয়াকেফহাল।

الْكَلْلَةِ ، إِنِ امْرُواْ الْمَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَنَّ وَلَهُ أَخْتُ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ عَ وَهُو يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَنَّ ، فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثَّلُشِ مِمَّا تَرَكَ ، وَإِنْ كَانُواْ الْحُوةُ رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلنَّكِرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ، يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا ، وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءً عَلِيْرٌ عَ

সুরা আল মায়েদা

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১২০, রুকু ১৬ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- سُوْرَةُ المَّائِنَةِ مَنَنِيَّةُ أيَاتُّ: ١٢٠ رَكُوْعٌ : ١٦ بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ

১. হে ঈমানদার বান্দারা, তোমরা যারা ঈমান এনেছো তোমরা ওয়াদাসমূহ পূরণ করো (মনে রেখো); তোমাদের জন্যে চার পা'বিশিষ্ট পোষা জড়ু হালাল করা হয়েছে, তবে সেসব জড়ু ছাড়া, যা (বিবরণসহ একটু পরেই) তোমাদের পড়ে শোনানো হচ্ছে, এহরাম (বাঁধা) অবস্থায় (কিন্তু এসব হালাল জড়ু) শিকার করা বৈধ মনে করো না; (অবশ্যই) আল্লাহ তায়ালা যা চান সে আদেশই তিনি জারি করেন।

ا يَانَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْآ اَوْقُوْا بِالْعُقُودِ الْمَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْآ اَوْقُوْا بِالْعُقُودِ الْ أَحِلَّى أَحِلَّى الْمَلْدِينَ اللَّهُ الْأَنْعَارِ اللَّهُ مَا يُتَلَى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُّاً اللَّهَ يَحْكُرُ مَا يُرِيْدُ

২. হে ঈমানদার বান্দারা, তোমরা আল্লাহ তায়ালার নিদর্শনসমূহের অসম্মান করো না, সম্মানিত মাসগুলোকেও (युक-विश्राद्य कार्ना) कथरना शामान वानिएय निएया ना. (আল্লাহর নামে) উৎসর্গীকৃত জন্তুসমূহ ও যেসব জন্তুর गेनाग्न (উৎসর্গের চিহ্ন হিসাবে) পট্টি বেঁধে দেয়া হয়েছে. যারা আল্লাহর অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি অর্জনের লক্ষ্যে আল্লাহর পবিত্র (কাবা) ঘরের দিকে রওনা দিয়েছে (তাদের তোমরা অসমান করো না), তোমরা যখন এহরামমুক্ত হবে তখন তোমরা শিকার করতে পারো. (বিশেষ) কোনো একটি সম্প্রদায়ের বিদ্বেষ- (এমন বিদ্বেষ যার কারণে) তারা তোমাদের আল্লাহ তায়ালার পবিত্র মাসজিদে আসার পথ বন্ধ করে দিয়েছিলো, যেন তোমাদের (কোনো রকম) সীমালংঘন করতে প্ররোচিত না করে. তোমরা (তথু) নেক কাজ ও তাকওয়ার ব্যাপারেই একে অপরের সহযোগিতা করো, পাপ ও বাডাবাডির কাজে (কখনো) একে অপরের সহযোগিতা করো না. সর্বাবস্থায়ই আল্পাহ তায়ালাকে ভয় করো, কেননা আল্লাহ তায়ালা (পাপের) দন্ডদানের ব্যাপারে অত্যন্ত কঠোর!

مَ يَانَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَا) وَلَا الْهَنْ يَ وَلَا الْقَلْالِينَ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَا) وَلَا الْهَنْ يَ وَلَا الْقَلَالِينَ وَلَا الْقَلَالِينَ وَلَا الْقَلَالِينَ وَلَا الْقَلَالِينَ وَلَا الْقَلَالِينَ الْجَرِمَالُكُمْ شَنَانُ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمَالُكُمْ شَنَانُ قَوْمِ انَ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمَالُكُمْ شَنَانُ قَوْمِ انَ فَاصَلَادُوا وَلَا يَجْرِمَالُكُمْ شَنَانُ قَوْمِ انَ مَنْ وَلَا يَجْرِمَالُكُمْ شَنَانُ قَوْمِ انَ فَا اللهِ تَعْمَونُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقُولِي سَوَلًا تَعْمَونُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقُولِي سَوَلًا اللهَ مَا اللهِ شَرِيْلُ الْعِقَابِ وَاتَّقُوا اللهَ وَاللهُ شَرِيْلُ الْعِقَابِ وَاتَّقُوا اللهَ وَاللّهُ شَرِيْلُ الْعِقَابِ

৩. মৃত জন্তু, রক্ত, তয়োরের গোশ্ত ও যে জন্তু আল্লাহ তিনু হিন্দু বিদ্যাত বিশ্ব কর্তিয়ালা ছাড়া অন্য কারো নামে যবাই (কিংবা উৎসর্গ) وَلَحْمُ وَالنَّا وَلَحْمُ

৫ সূরা আল মায়েদা



করা হয়েছে. (তা সবই) তোমাদের ওপর হারাম করা হয়েছে, শ্বাসরুদ্ধ হয়ে মরা, আঘাত খেয়ে মরা, ওপর থেকে পড়ে মরা, শিংয়ের আঘাতে মরা, হিংস্র জন্তুর খাওয়া জন্তুও (তোমাদের জন্যে হারাম), তবে তোমরা তা যদি (জীবিত অবস্থায় পেয়ে) যবাই করে থাকো (তাহলে তা হারাম নয়)। পূজার বেদীতে বলি দেয়া জন্তও হারাম, (লটারি কিংবা) জুয়ার তীর নিক্ষেপ করে ভাগ্য নির্ণয় করা (হারাম), এর সব কয়টাই হচ্ছে বড়ো (বড়ো) গুনাহের কাজ, আজ কাফেররা তোমাদের দ্বীন (নির্মূল করা) সম্পর্কে হতাশ হয়ে পড়েছে, সুতরাং তোমরা তাদের ভয় করো না, বরং আমাকেই ভয় করো; আজ আমি তোমাদের জন্যে তোমাদের দ্বীন পরিপূর্ণ করে দিলাম আর তোমাদের ওপর আমার (প্রতিশ্রুত) নেয়ামতও আমি পূর্ণ করে দিলাম, তোমাদের জন্যে জীবন বিধান হিসাবে আমি ইসলামকেই মনোনীত করলাম; (হারামের ব্যাপারে মনে রেখো.) যদি কোনো ব্যক্তিকে ক্ষধার তাডনায় (হারাম খেতে) বাধ্য করা হয়, কিন্তু (ইচ্ছা করে) সে কোনো পাপের দিকে ঝুঁকে পড়তে না চায় (তার ব্যাপারটা আলাদা), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

8. তারা তোমার কাছ থেকে জানতে চায় কোন কোন জিনিস তাদের জন্যে হালাল করা হয়েছে? তুমি (তাদের) বলো, সব ধরনের পাক-সাফ বস্তুই (তোমাদের জন্যে) হালাল করা হয়েছে এবং সেসব শিকারী (জল্প ও পাখীর) ধরে আনা (জন্তু এবং পাখী)-ও তোমরা খাও, যাদের তোমরা (শিকার করার নিয়ম) শিক্ষা দিয়েছো, যেভাবে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের শিক্ষা দিয়েছিলেন, (তবে) এর ওপর অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার নাম নেবে, তোমরা আল্লাহ তায়ালাকেই ভয় করো: আল্লাহ তায়ালা দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী ।

৫. আজ তোমাদের জন্যে যাবতীয় পাক জিনিস হালাল করা হলো: যাদের ওপর আল্লাহর কেতাব নাযিল করা হয়েছে তাদের খাবারও তোমাদের জন্যে হালাল, আবার তোমাদের খাদ্যদ্রব্যও তাদের জ্বন্যে হালাল, (চরিত্রের) সংরক্ষিত দুর্গে অবস্থানকারী মোমেন নারী ও তোমাদের আগে যাদের কেতাব দেয়া হয়েছিলো, যখন তোমরা (তাদের) মোহরানা আদায় করে দেবে, সেসব (আহলে কেতাব) সতী সাধ্বী নারীরাও (তখন তোমাদের জন্যে হালাল হয়ে যাবে), তোমরা (থাকবে চরিত্রের) রক্ষক হয়ে, কামনা চরিতার্থ করে কিংবা গোপন অভিসারী (উপপত্নী) বানিয়ে নয়: যে কেউই ঈমান অম্বীকার করবে, তার (জীবনের) সব কর্মই নিক্ষল হয়ে যাবে এবং শেষ বিচারের দিনে সে হবে (চরমভাবে) ক্ষতিগ্রন্তদের একজন।

৬. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা যখন নামাযের জন্যে দাঁড়াবে-তোমরা তোমাদের (পুরো) মুখমন্ডল ও কনুই পর্যস্ত তোমাদের হাত দুটো ধুয়ে নেবে, অতপর তোমাদের মাথা মাসেহ করবে এবং পা দুটো গোড়ালি পর্যন্ত (ধুয়ে নেবে,) কখনো যদি (এমন বেশী) নাপাক

الْخِنْزِيْرِ وَمَا ۗ أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَ الْهَوْقُوْذَةُ وَ الْهُتَرَدِّيَةُ وَ النَّطِيْحَةُ وَمَا أَكُلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُر ثَنَ وَمَا ذُبِعَ عَلَى النُّصُب وَ أَنْ تَسْتَقْسَهُوْا بِالْإِزْكَا مِ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌّ مَ ٱلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ ديْنكُرْ فَلَا تَخْشَوْهُرْ وَاغْشَوْنِ مَ ٱلْيَوْمَ ٱكْهَلْتُ لَكُرْ دِيْنَكُرْ وَٱتْهَهْتُ عَلَيْكُرْ نَعْهَتِه وَرَضَيْتُ لَكُيرُ الْإِسْلَامَ دِيْنًا وَفَهَى اضْطُرٌ فِي مَخْمَصَةِ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمِرِ ا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُوْرًّ

٣ يَسْئَلُوْنَكَ مَا ذَا أُحِلَّ لَمُرْه قُلْ أُحِلَّ لَكُرُ الطَّيِّبْتُ لا وَمَا عَلَّهْتُرْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلَّهُوْنَهُنَّ مِنَّا عَلَّهَكُمُ اللَّهُ زِفَكُلُوْ اللَّهُ أَمْسَكُنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اشْرَ اللَّهِ عَلَيْهِ مِن وَاتَّقُوا اللَّهُ ، إِنَّ اللَّهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

٥ ٱلْيَوْمَ ٱحِلَّ لَكُيرُ الطَّيِّبٰتُ ﴿ وَطَعَامُ الَّذِيثَ أُوْتُوا الْكتٰبَ حلُّ لَّكُيرُ مِن وَطَعَامُكُيرُ حلُّ لَّهُمْ زِ وَالْهُهُ مَنْتُ مِنَ الْهُؤْمِنْتِ وَ الْهُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ ٱوْتُوا الْكِتٰ قَبْلَكُمْ اذَا اتَّيْتُمُوْمُنَّ ٱجُّوْرَمُنَّ مُحَصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِنِينَ آغْلَانٍ ، وَمَنْ يَكْفُو بِالْإِيْهَانِ فَقَلْ مَبِطَ عَهَلُهُ رَوَهُوَ فِي الْأَخِرَةِ رير بريسور بي مِنَ الْخُسِرِيْنَ ع

٦ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْ ۚ إِذَا تُمْتُرُ إِلَى الصَّلُوةِ فَاغْسِلُوا وُجُوْهَكُرْ وَأَيْدِيكُرْ إِلَى الْمَرَافِق وَامْسَحُوا بِرَّءُوْسِكُمْ وَٱرْجُلُكُمْ

হয়ে যাও (যাতে গোসল করা ফর্য হয়ে যায়), তাইলে (গোসল করে ভালোভাবে) পবিত্র হয়ে নেবে, যদি তোমরা অসম্ভ হয়ে পড়ো কিংবা তোমরা যদি সফরে থাকো. অথবা তোমাদের কেউ যদি মলমূত্র ত্যাগ করে আসে অথবা যদি নারী সম্ভোগ করে থাকো (তাহলে পানি দিয়ে পবিত্রতা অর্জন করো), আর যদি পানি না পাও তাহলে পবিত্র মাটি দিয়ে তায়াম্মুম করে নাও, (আর তায়ামুমের নিয়ম হচ্ছে, সেই পবিত্র) মাটি দিয়ে তোমরা তোমাদের মুখমন্ডল ও হাত মাসেহ করে নেবে: (মূলত) আল্লাহ তায়ালা কখনো (পরিষ্কার পরিচ্ছনুতার ব্যাপারে) তোমাদের কষ্ট দিতে চান না, বরং তিনি চান তোমাদের পাক-সাফ করে দিতে এবং (এভাবেই) তিনি তোমাদের ওপর তাঁর নেয়ামতসমূহ পূর্ণ করে দিতে চান, যাতে করে তোমরা তাঁর কতজ্ঞতা আদায় করতে পারো।

الَى الْكَعْبَيْنِ ، وَإِنْ كُنْتُرْ جُنُبًا فَاطَّهُ وَا وَإِنْ كُنْتُرْ مُّرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرِ أَوْ جَاءَ أَحَلُّ مِّنكُر من الْغَانط أو لهَسْتُر النَّسَاء فلر تَجِلُواْ مَاءً فَتَيَهُوا صَعِيْلًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَآيَںِ يُكُمْ مِّنْهُ مَ مَا يُرِيْلُ اللهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلْكِنْ يُّرِيْنُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِيَّ نَعْمَتُهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُونَ

৭. তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার নেয়ামতসমূহ তোমরা স্বরণ করো এবং তোমাদের কাছ থেকে যে পাকা প্রতিশ্রুতি তিনি গ্রহণ করেছিলেন (সে কথাও ভলে যেয়ো না), যখন তোমরা (তাঁর সাথে অংগীকার করে) বলেছিলে (হে আমাদের মালিক), আমরা (তোমার কথা) ওনলাম এবং (তা) মেনে নিলাম, তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের অন্তরে যা কিছু আছে সে সম্পর্কে সম্যক অবগত আছেন।

ع وَاذْكُرُوا نَعْهَ الله عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُرْ بِهِ لا إِذْ قُلْتُرْ سَهِفْنَا وَاطَفْنَا ز وَاتَّقُوا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْمٌ لِإِنَّاكِ الصُّهُور

৮. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমরা আল্পাহর জন্যে (সত্য ও) নাায়ের ওপর সাক্ষী হয়ে অবিচলভাবে দাঁডিয়ে থাকো (মনে রাখবে, বিশেষ) কোনো সম্প্রদায়ের দুশমনী যেন তোমাদের এমনভাবে প্ররোচিত না করে যে. (এর ফলে) তোমরা (তাদের সাথে) ন্যায় ও ইনসাফ করবে না। عَلَى أَلَّا تَعْرِلُوا ، إَعْرِلُوا تَ مُو أَقْرَبُ (आज्ञार عَلَى اللهِ عَامِ الْوَا ، إَعْرِلُوا ، إَعْرِلُوا مَا هُو أَقْرَبُ (आज्ञार عَلَى اللهِ عَالِمَ اللهِ الله তায়ালাকে) ভয় করে চলার অধিক নিকটতর: তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কর্মকান্ড সম্পর্কে পূর্ণাংগ ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

^ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا كُوْنُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ شُهَنَاء بِالْقِسْطِ رِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَانُ قَوْمٍ للتَّقُوى رواتَّقُوا اللَّهُ م إِنَّ اللَّهُ خَبِيرًا بِمَا تَعْيَلُوْنَ

৯, যারা ঈমান আনে এবং নেক কাজ করে, আল্লাহ তায়ালা তাদের সবাইকে (এই বলে) প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন (যে), তাদের জন্যে (তাঁর কাছে বিশেষ) ক্ষমা ও মহাপুরস্কার রয়েছে।

وَعَنَ اللَّهُ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ لا لَهُمْ مُغْفِرَةً وَّ أَجْرٌ عَظِيمٌ

১০. (অপরদিকে) যারা কৃফরী করেছে এবং আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করেছে, তারা সবাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী।

١٠ وَالنَّذِي كَفُووا وَكَنَّابُوا بِاينتنا أُولَئك أشعب الجحير

১১. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমাদের ওপর আল্লাহর নেয়ামত মরণ করো, যখন একটি জনগোষ্ঠী তোমাদের বিরুদ্ধে হাত ওঠাতে উদ্যত হয়েছিলো, তখন আল্লাহ তায়ালা তাদের সে হাত তোমাদের ওপর (আক্রমণ করা) थिएक त्रश्य करत जिलन, अज्भत्र राज्या आज्ञार | वीवविष्ठ हो विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय व তায়ালাকে ভয় করো, মোমেনদের তো আল্লাহ তায়ালার ওপরই ভরসা করা উচিত।

اا يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ اذْ هَرَّ قَوْمٌ أَنْ يَّبْسُطُوا الْيُكُمْ اللَّهَ ﴿ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتُوكُّلِ الْهُؤْمِنُونَ عَ



১২. আল্লাহ তায়ালা বনী ইসরাঈলদের (কাছ থেকে আনুগত্যের) অংগীকার গ্রহণ করলেন, অতপর আমি (এ কাজের জন্যে) তাদের মধ্য থেকে বারো জন সর্দার নিযুক্ত করলাম; আল্লাহ তায়ালা তাদের বললেন, অবশ্যই আমি তোমাদের সাথে আছি, তোমরা যদি নামায প্রতিষ্ঠা করো, যাকাত আদায় করো, আমার রসূলদের ওপর ঈমান আনো এবং (দ্বীনের কাজে যদি) তোমরা তাদের সাহায্য- সহযোগিতা করো, (সর্বোপরি) আল্লাহ তায়ালাকে তোমরা যদি উত্তম ঋণ প্রদান করো, তাহলে অবশ্যই আমি তোমাদের গুনাহসমূহ মোচন করে দেবো এবং তোমাদের আমি এমন এক জানাতে প্রবেশ করাবো যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হয়, এরপর যদি কোনো ব্যক্তি (আল্লাহকে) অস্বীকার করে, তাহলে সে সরল পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে পড়বে।

১৩. (অতপর) তাদের সেই অংগীকার ভংগ করার কারণে আমি তাদের ওপর অভিশাপ নাযিল করেছি এবং তাদের হদর কঠিন করে দিয়েছি (তাদের চরিত্রই ছিলো), তারা (আল্লাহর) কালামকে তার নির্দিষ্ট অর্থ থেকে সরিয়ে নিয়ে বিকৃত করে দিতো, (হেদায়াতের) যা কিছু তাদের শিক্ষা দেয়া হয়েছিলো তার অধিকাংশ কথাই তারা ভুলে গেলো; প্রতিনিয়ত তুমি তাদের দেখতে পাবে, তাদের সামান্য একটি অংশ ছাড়া অধিকাংশ মানুষই (আল্লাহর সাথে) বিশ্বাসঘাতকতা করে চলেছে, অতএব তুমি তাদের ক্ষমা করে দাও, (যথাসম্ভব) তুমি তাদের (সংস্রব) এড়িয়ে চলো; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা কল্যাণকামী মানুষদের ভালোবাসেন।

১৪. আমি তো তাদের (কাছ থেকেও আনুগত্যের) আংগীকার গ্রহণ করেছিলাম, যারা বলে, আমরা খৃষ্টান (সম্প্রদায়ের লোক), অতপর এরাও (সে অংগীকার সম্পর্কিত) অধিকাংশ কথা ভূলে গেলো, যা তাদের স্বরণ করানো হয়েছিলো, অতপর আমিও তাদের (পরস্পরের) মধ্যে কেয়ামত পর্যন্ত (এক স্থায়ী) শক্রতা ও বিদ্বেষের বীজ বপন করে দিলাম; অচিরেই আল্লাহ তায়ালা তাদের বলে দেবেন (দুনিয়ার জীবনে) তারা যা কিছু উদ্ভাবন করতো।

১৫. হে আহলে কেতাবরা, তোমাদের কাছে আমার (পক্ষথেক) রসূল এসেছে, (আগের) কেতাবের যা কিছু তোমরা এতোদিন গোপন করে রেখেছিলে তার বহু কিছুই সে তোমাদের বলে দিচ্ছে, আবার অনেক কিছু সে এড়িয়েও যাচ্ছে; তোমাদের কাছে (এখন) তো আল্লাহর পক্ষ থেকে আলোকবর্তিকা এবং সুস্পষ্ট কেতাবও এসে হািথর হয়েছে।

১৬. যে আল্লাহর আনুগত্য করে তার সন্তুষ্টি লাভ করতে চায়, এর দ্বারা আল্লাহ তায়ালা তার শান্তি ও নিরাপত্তার পথ বাতলে দেন, অতপর তিনি তাঁর অনুমতিক্রমে তাদের (জাহেলিয়াতের) অন্ধকার থেকে (ঈমানের) আলোতে বের করে আনেন, আর (এভাবেই) তাদের তিনি সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

ا وَلَقَلْ أَخَلَ اللّهُ مِيثَاقَ بَنِي آ اِسْوَآئِيلَ عَ وَبَعَثْنَا مِنْهُرُ اثْنَى عَشَرَ نَقِيْبًا وَقَالَ اللّهُ وَبَعَثْنَا مِنْهُرُ اثْنَى عَشَرَ نَقِيْبًا وَقَالَ اللّهُ النّي مَعْكُر م لَئِي ٱقَهْتُر الصَّلُوةَ وَأَتَيْتُرُ النّي النّي وَعَزَّرْتُهُوهُر النّي النّي وَعَزَّرْتُهُوهُر وَاقْرَضْتُر اللّهَ قَرْضًا حَسَنًا اللّهَ كَفِرَ تَعْمَد أَلُو مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ اللّهَ قَرْضًا حَسَنًا اللّهَ تَجْرِي مِن مِن سَيّا تِكُر وَ لَا دُخِلَنّكُر جَنّت تَجْرِي مِن مِن تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ عَ فَمَن كَفَر بَعْنَ ذَلِكَ مِنْكُر فَكَلْ فَلَا مَنْ فَلَ اللّهِ مَنْ كَفَر بَعْنَ ذَلِكَ مِنْكُر فَلَا فَلَا مَنْ فَلَ اللّهِ مَنْ كَفَر بَعْنَ ذَلِكَ مِنْكُر فَلَا فَلَا مَنْكُر فَلَا مَنْ فَلَ اللّهِيلِ

ا فَبِهَا نَقْضِهِرْ مِّيْثَاقَهُرْ لَعَنَّهُرْ وَجَعَلْنَا قَلُوبَهُرْ فَبِهَا نَقْضِهِرْ مِّيْثَاقَهُرْ لَعَنَّهُرْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُرْ فَسِيَةً ۽ يُحَرِّفُونَ الْكَلِيرَ عَنْ مُّوَاضِعِهِ لا وَنسُوْا حَظَّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهِ ۽ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةً مِّنْهُرْ إلَّا قَلِيلًا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةً مِّنْهُرْ إلَّا قَلِيلًا مِّنْهُرْ وَاصْفَحُ أَ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْهُحُسنِيْنَ اللَّهَ يُحِبُّ الْهُ اللَّهُ يُحِبُّ الْهُحُسنِيْنَ

ال وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْ آ إِنَّا نَصْرَى اَ هَٰنَا اَ مُرَى اَ هَٰنَا اَ مَا وَمِنَ اللّهُ اللّهُ مِيْكَا قَهُمْ فَكُوُوا بِهِ سَ فَاَغُرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَنَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْا لِللّهُ بِهَا كَانُوا اللّهُ بِهَا كَانُوا اللّهُ بِهَا كَانُوا يَصْنَعُونَ وَمُنْعُونَ

10 يَاهَلُ الْكِتٰبِ قَلْ جَآعُكُرْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُرْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُرْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ لَّهْ قَلْ جَآءُكُرْ مِّنَ اللّهِ نُوْرً وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ لَّهْ قَلْ جَآءُكُرْ مِّنَ اللّهِ نُوْرً

١٦ يَّهْدِى ْ بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضُوَانَهُ سُبُلَ السَّلْرِ وَيُخْرِجُهُرْ مِّنَ الظَّلُمٰتِ إِلَى النَّوْرِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيْهِرْ إِلَى مِرَاطٍ شَّسْتَقِيْرٍ

৫ সূরা আল মায়েদা

Zob

১৭. নিশ্চয়ই তারা কৃষ্ণরী করেছে, যারা বলেছে, মারইয়ামের পুত্র মাসীহই আল্লাহ: (হে মোহাম্মদ) তুমি তাদের বলো, আল্লাহ তায়ালা যদি মারইয়াম পুত্র মাসীহ. তার মা ও গোটা বিশ্ব-চরাচরে যা কিছু আছে সব কিছুও ধাংস করে দিতে চান, এমন কে আছে যে আল্লাহ آلْهَ سِيْحَ ابْنَ عَلَاكَ الْهَاكِ الْهَاكِ الْهَاكِ الْهَاكِ الْهَاكِ তায়ালার কাছ থেকে এদের রক্ষা করতে পারে? এই আকাশমালা, ভুমন্ডল ও এর মধ্যবর্তী স্থানে যা কিছ আছে, তার সার্বভৌমত্ত (এককভাবে) আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (নির্দিষ্ট); তিনি যা ইচ্ছা তাই সৃষ্টি করেন; আল্লাহ তায়ালা সকল বিষয়ের ওপর একক ক্ষমতাবান।

١٤ لَقَلْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْ آ إِنَّ اللَّهَ مُوَ الْهَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَرَ ﴿ قُلْ فَهَنْ يَهْلِكُ مِنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا ﴿ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّهُونِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مَ يَخْلُقُ مَا يَشَأَءُ ء وَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْء قَنِيًّا

১৮. ইহুদী ও খৃষ্টানরা বলে, আমরা আল্লাহর সম্ভান এবং তাঁর প্রিয়পাত্র: তুমি (তাদের) বলো, তাহলে তিনি কেন তোমাদের গুনাহের জন্যে তোমাদের দন্ত প্রদান করবেন: (মূলত) তোমরা (সবাই হচ্ছো তাদের মধ্য থেকে কতিপয়) মানুষ, যাদের আল্লাহ তায়ালা সৃষ্টি করেছেন, আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে দেন আবার যাকে ইচ্ছা তিনি শাস্তি প্রদান করেন: আসমানসমূহ ও যমীনের মধ্যবর্তী সব কিছুর একক মালিকানা আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (নির্দিষ্ট), সবকিছুকে তাঁর দিকেই ফিরে যেতে হবে।

١٨ وَقَالَسِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصْرَى نَحْنُ ٱبْنَوُّا الله وَ أَحِبَّاوُهُ اللهِ عَلَى فَلِيرَ يُعَنَّ بُكُر بِنُ نُوبِكُر ا بَلْ أَنْتُرْ بَشَرٌ مِّشَ مِ خَلَقَ م يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَنِّبُ مَنْ يُّشَاءُ م وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّهٰوٰ سِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا رِوَالِيْهِ الْمَصِيْرُ

১৯. হে আহলে কেতাবরা, রসুলদের আগমন ধারার ওপরই আমার (পক্ষ থেকে) তোমাদের কাছে একজন রসূল এসেছে, সে তোমাদের জন্যে (আমার কথাগুলো) সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করছে, যাতে করে তোমরা (বিচারের কাঠগড়ায় দাঁড়িয়ে) একথা বলতে না পারো যে, (কই) আমাদের কাছে (জান্নাতের) সুসংবাদ বহনকারী ও (জাহান্নামের) সতর্ককারী (হিসেবে) কেউ তো আগমন করেনি, (আজ তো সত্যি সত্যিই) তোমাদের কাছে সুসংবাদবাহী ও সতর্ককারী (একজন রসুল) এসে গেছে. বস্তুত আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ে শক্তিমান[ী]।

١٩ يَاهُلَ الْكِتْبِ قَلْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَتُوَةٍ بِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا نَلْبِيْرِ رَ فَقَلْ جَاءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَزِيْرٌ ﴿ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ ع

২০. (শরণ করো.) যখন মুসা তার জাতিকে বলেছিলো. হে আমার সম্প্রদায়ের লোকেরা, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর যে নেয়ামত নাযিল করেছেন তা তোমরা স্বরণ করো, যখন তিনি তোমাদের মাঝে বহু নবী পয়দা করেছেন, তিনি তোমাদের (এ যমীনের) শাসনকর্তা বানিয়েছেন, এছাড়াও তিনি তোমাদের এমন সব নেয়ামত দান করেছেন যা (এ) সষ্টিকলে (এর আগে) তিনি আর কাউকে দান করেননি।

٢٠ وَإِذْ قَالَ مُوْسَى لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ الْأَكُرُوْ الْعِمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ ٱثْبِياءً وَجَعَلَكُمْ مُّلُوكًا قِ وَأَنْكُرُ مَّا لَيرُ يُؤْتِ أَهَلًا مِّي الْعٰلَمِينَ

২১. হে আমার জাতি, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে যে পবিত্র ভূখন্ড লিখে রেখেছেন তোমরা তাতে প্রবেশ করো এবং (এ অগ্রাভিযানে) কখনো পশ্চাদপসরণ করো না: তারপরও তোমরা যদি ফিরে আসো তাহলে ভীষণ ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

٢١ يٰقَوْ إِ ادْهُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُرْ وَلَا تَوْتَنَّوْا عَلَى آدْبَارِكُرْ فَتَنْقَلِبُوْ الْمُسِرِيْنَ

২২. তারা বললো, হে মূসা (আমরা কিভাবে সেই জনপদে প্রবেশ ক্রনো), সেখানে (তো) এক দোর্দন্ড প্রতাপশালী সম্প্রদায় রয়েছে, তারা সেখান থেকে বেরিয়ে না এলে আমরা কিছুতেই সেখানে প্রবেশ করবো না, তারা সেখান থেকে বেরিয়ে এলে আমরা (অবশ্যই) প্রবেশ করবো।

٢٢ قَالُوْا يُمُوْسَى إِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ق وَإِنَّا لَنْ نَّلْكُلُهَا مَتَّى يَخْرُجُوْا مِنْهَا } فَإِنْ يَّخُرُجُوْ إِمِنْهَا فَإِنَّا دِخِلُوْنَ

৫ সুরা আল মায়েদা

২৩, যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করছিলো, তাদের (এমন) দুজন লোক, যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অনুগ্রহ করেছিলেন, (এগিয়ে এসে) বললো, তোমরা (সদর) দরজা দিয়েই তাদের (জনপদে) প্রবেশ করো, আর (একবার) সেখানে প্রবেশ করলেই তোমরা বিজয়ী হবে. তোমরা যদি (সত্যিকার অর্থে) মোমেন হও তাহলে আল্লাহর ওপরই ভরসা করো।

٣٣ قَالَ رَجُلُنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ ٱنْعَرَ اللهُ عَلَيْهِهَا ادْهُلُوا عَلَيْهِرُ الْبَابَ عَاذَا دَغَلْتُهُوهُ فَانَّكُرْ غَلِبُونَ ه وَعَلَى اللَّهِ فَتُوكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

২৪. তারা (আরো) বললো, হে মুসা, সেই (শক্তিশালী) লোকেরা যতোক্ষণ (পর্যন্ত) সেখানে থাকবে, ততোক্ষণ আমরা কোনো অবস্থায়ই সেখানে প্রবেশ করবো না. (বরং) তুমিই যাও, তুমি ও তোমার মালিক উভয়ে মিলে যুদ্ধ করো, আমরা এখানেই বসে রইলাম।

٢٣ قَالُوْ اللَّهُ دَامُوْ ا فِيْهَا فَاذْهَبُ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا انَّا مهنا قعلون

২৫. (তাদের কথা ওনে) মুসা বললো, হে (আমার) মালিক (তুমি তো জানো), আমার নিজের এবং আমার ভাই ছাড়া আর কারো ওপর আমার আধিপত্য চলে না অতএব আমাদের মাঝে ও এই নাফরমান লোকদের মাঝে তুমি একটা মীমাংসা করে দাও।

٢٥ قَالَ رَبِّ انَّى ۚ ٧ ٓ أَمْلِكُ الَّا نَفْسى ۛ وَ أَحِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفُسقيْنَ

২৬. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (হাঁ, তাই হবে, আগামী) চল্লিশ বছর পর্যন্ত সে (জনপদ) তাদের জন্যে নিষিদ্ধ করে দেয়া হলো, (এ সময়ে) তারা উদুভ্রান্ত হয়ে পৃথিকীতে এদিক সেদিক ঘুরে বেড়াবে: সুতরাং তুমি এই না-ফরমান লোকদের ওপর কখনো দুঃখ করো না।

٢٦ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةً عَلَيْهِرُ ٱرْبَعِيْنَ سَنَةً ج يَتِيْهُونَ فِي الْأَرْضِ ، فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمُ الْفسقيْنَ ع

২৭. (হে মোহাম্মদ,) তুমি এদের কাছে আদমের দুই পুরের গল্পটি যথাযথভাবে শুনিয়ে দাও! (গল্পটি ছিলো.) যখন তারা দুই জনই (আল্লাহর নামে) কোরবানী পেশ করলো, তখন তাদের মধ্যে একজনের কাছ থেকে কোরবানী কবুল করা হলো, আরেকজনের কাছ থেকে তা কিছুতেই কবুল করা হলো না. (যার কোরবানী কবুল করা হয়নি) সে বললো, আমি অবশ্যই তোমাকে হত্যা করবো (यात कात्रवानी कवून कता रुला), भ वनला, आन्नार তায়ালা তো তথু পরহেযগার লোকদের কাছ থেকেই (কোরবানী) কবুল করেন।

٢٠ وَاثُلُ عَلَيْهِرْ نَبَاَ ابْنَيْ أَدَاً بِالْحَقِّ ر إِذْ قَرَّبَا قُوْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَلِهِا وَلَرْ يُتَقَبَّلُ مِنَ الْإِخْرِ ء قَالَ لَإَقْتُلَنَّكَ ء قَالَ إِنَّهَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْهُتَّقِيْنَ

২৮. (হিংসার বশবর্তী হয়ে) তুমি যদি আজ আমাকে হত্যা করার জন্যে আমার দিকে তোমার হাত বাডাও. তাহলে আমি (কিন্তু) তোমাকে হত্যা করার জন্যে তোমার প্রতি আমার হাত বাড়িয়ে দেবো না, কেননা আমি সৃষ্টিকুলের মালিককে ভয় করি।

٢٨ لَئِيُّ بِسَفْتِ ۚ إِلَى ۚ يَلَكَ لِتَقْتُلُنِي مَا ۖ إِنَا بِبَاسِطٍ يَّدِي إِلَيْكَ لِإَقْتُلَكَ } إِنِّيَ ٓ إَخَانُ اللهُ رَبِّ الْعَلَمِينَ

২৯. আমি (বরং) চাইবো, তুমি আমার গুনাহ ও তোমার গুনাহের (বোঝা) একাই তোমার (মাথার) ওপর উঠিয়ে নাও এবং (এভাবেই) তুমি জাহানামের অধিবাসী হয়ে পড়ো, (মূলত) এ হচ্ছে যালেমদের (যথার্থ) কর্মফল।

٢٩ إِنِّيْ أُرِيْكُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِيْ وَإِثْمِكَ مَتَكُوْنَ مِنْ أَمْعِبِ النَّارِ ، وَذٰلِكَ مَرَّوُّا الظَّلِهِينَ ،

৩০. শেষ পর্যন্ত তার কুপ্রবন্তি তাকে নিজ ভাইয়ের হত্যার কাজে উন্ধানি দিলো, অতপর সে তাকে খুন করেই ফেললো এবং (এ কাজের ফলে) সে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেলো।

٣٠ فَطُوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ آخِيْهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَسِرِيْنَ

৩১. অতপর আল্লাহ তায়ালা (সেখানে) একটি কাক পাঠালেন, কাকটি (হত্যাকারীর সামনে এসে) মাটি لِيُرِيدٌ كَيْفَ يُوارِي سَوْءَةَ أَخِيدُ ﴿ قَالَ कि जारता, हिलांग, जारक प्रभाता कि जारत स्त्र

٣١ فَبَعَنَ اللَّهُ غُرَابًا يَّبْعَثُ فِي الْأَرْضِ

৫ সূরা আল মায়েদা

770

তার ভাইয়ের লাশ লুকিয়ে রাখবে: (এটা দেখে) সে (নিজে নিজে) বলতে লাগলো, হায়! আমি তো এই কাকটির চাইতেও অক্ষম হয়ে পডেছি, আমি তো আমার ভাইয়ের লাশটাও গোপন করতে পারলাম না, অতপর সে সত্যি সত্যিই (নিজের কৃতকর্মের জন্যে) অনুতপ্ত হলো।

يُويْلَتِّي اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِيْ جِ فَأَصْبَحَ مِنَ النَّالِمِينَ غَلا

৩২. (পরবর্তীকালে) ওই (ঘটনার) কারণেই আমি বনী ইসরাঈলদের জন্যে এই বিধান জারি করলাম যে. কোনো মানুষকে হত্যা করার কিংবা পৃথিবীতে ধ্বংসাত্মক কাজ (করার শান্তি বিধান) ছাড়া (অন্য কোনো কারণে) কেউ যদি কাউকে হত্যা করে, সে যেন গোটা মানব জাতিকেই রক্ষা করে তবে সে যেন গোটা মানব জাতিকেই বাঁচিয়ে দিলো: এদের কাছে আমার রস্ত্রলরা সম্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিলো, তারপরও এদের অধিকাংশ লোক এ যমীনের বুকে সীমালংঘনকারী হিসেবেই থেকে গেলো।

٣٢ مِنْ أَجْلَ ذٰلِكَ ثُمُّ كَتَبْنَا عَلَى بَنِيَ إِسْرَائِيلَ ٱللَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا 'بِغَيْر نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَانَّهَا قَتَلَ النَّاسَ جَهِيْعًا م وَلَقَلْ جَاءَتُهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنْتِ رَثُمُّ إِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُرْ بَعْنَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ

৩৩. যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করে এবং (আল্লাহর) যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টির অপচেষ্টা করে, তাদের জন্যে নির্দিষ্ট শাস্তি হচ্ছে এই যে, তাদের হত্যা করা হবে কিংবা তাদের শূলবিদ্ধ করা হবে, অথবা বিপরীত দিক থেকে তাদের হাত-পা কেটে ফেলা হবে. কিংবা দেশ থেকে তাদের নির্বাসিত করা হবে: এই অপমানজনক শান্তি তাদের দুনিয়ার জীবনের (জন্যে, তাছাড়া) পরকালে তাদের জন্যে ভয়াবহ আযাৰ তো রয়েছেই।

٣٣ إِنَّهَا جَزَّوُّا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْإَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُّقَتَّلُوا ۚ أَوْ يُصَلِّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِـ ﴿ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَانِ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ، ذَٰلِكَ لَهُرْ مِزْيٌ فِي النُّانَيَا وَلَهُرْ فِي الْأَمْرَةِ عَنَ اب عَظيْہٌ ٧

৩৪. তবে (এটা তাদের জন্যে নয়,) যাদের ওপর তোমাদের আধিপত্য স্থাপিত হবার আগেই তারা তাওবা করেছে, তোমরা জেনে রেখো, আল্লাহ তায়ালা একান্ত ক্ষমাশীল ও পরম করুণাময়।

٣٣ إلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ جَ فَاعْلَبُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ ع

৩৫. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং তাঁর দিকে (ধাবিত হওয়ার জন্যে) উপায় খুঁজতে থাকো (তার বিশেষ একটি উপায় হচ্ছে), তোমরা আল্লাহর পথে জেহাদ করো, সম্ভবত তোমরা সফলকাম হতে পারবে।

٣٥ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوْآ إِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِنُوْ ا فِيْ سَبِيْلِهِ لَعَلَّكُمْ

৩৬. আর যারা ঈমান আনতে অস্বীকার করেছে. (কেয়ামতের দিন) পৃথিবীর সমুদয় ধন-দৌলতও যদি তাদের করায়ত্ত থাকৈ-(তার সাথে আরো) যদি সমপরিমাণ সম্পদ তাদের কাছে থাকে. (এ সম্পদ) মুক্তিপণ হিসেবে দিয়েও যদি সে কেয়ামতের দিন জাহান্নামের আযাব থেকে মুক্তি পেতে চায় (তাও সম্ভব হবে না), তার কাছ থেকে (এর কিছুই সেদিন) গ্রহণ করা হবে না, তাদের জন্যে (সেদিন) কঠোর আযাব নির্ধারিত থাকবে ৷

٣٦ إِنَّ الَّذِيثِي كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُرْمًا فِي الْأَرْضِ جَبِيْعًا وَّمِثْلَهُ مَعَدَّ لِيَفْتَدُوْ إِبِهِ مِنْ عَنَابِ يَوْمُ الْقِيْمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُرْ وَلَهُرْ عَنَابِ ٱليُم

৩৭. তারা (সেদিন) দোযখের আযাব থেকে বেরিয়ে سام يُرِيْلُونَ أَنْ يَخْرُجُواْ مِنَ النَّارِ وَمَا هُرُ المَّامِ وَالْمَامِ الْعَالِمِ اللَّهِ الْمَامِ الْمَامِ المَامِينَ النَّارِ وَمَا هُرُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِي اللَّلْمِلْمِلْمِلْ اللَّلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمُلْمِ থেকে বেরিয়ে আসতে পারবে না, তাদের জন্যে স্থায়ী আয়াব নির্দিষ্ট হয়ে আছে।

بِحْرِجِيْنَ مِنْهَا رَوَلَهُرْ عَلَاابٌ مَّقِيْرٌ

৫ সরা আল মায়েদা



৩৮. পুরুষ ও নারী – এদের যে কেউই চুরি করবে, তাদের হাত দুটো কেটে ফেলো, এটা তাদেরই কর্মফল এবং আল্লাহর পক্ষ থেকে নির্ধারিত দন্ড; আল্লাহ তায়ালা মহাশক্তিশালী ও প্রবল প্রজ্ঞাময়।

٣٨ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْ آَ اَيْدِيَهُمَا جَزَاءً اللهُ عَزِيْدُ اللهِ عَوْاللهُ عَزِيْزٌ مَكَالًا مِّي اللهِ عَوْاللهُ عَزِيْزٌ مَكَالًا مِّي اللهِ عَوْاللهُ عَزِيْزٌ مَكِيْرٌ

৩৯. (হাঁ,) যে ব্যক্তি (এ জঘন্য) যুলুম করার পর (আল্লাহ তায়ালার কাছে) তাওবা করবে এবং নিজের সংশোধন করে নেবে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তার তাওবা কবুল করবেন; আল্লাহ তায়ালা নিস্কন্দেহে বড়ো ক্ষমাশীল ও দ্যাময়। ٣٩ فَهَنْ تَابَ مِنْ اللَّهِ ظُلُومِ وَأَصْلَحَ فَانَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ . اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ

৪০. তুমি কি (একথা) জানো না, এই আকাশমভলী ও ষমীনের একক সার্বভৌমত্ব একমাত্র আল্লাহ তায়ালার জন্যে; তিনি যাকে ইচ্ছা তাকে শান্তি দেন, আবার যাকে ইচ্ছা তাকে তিনি মাফ করে দেন; (কেননা) সব কিছুর ওপর তিনিই হচ্ছেন একক ক্ষমতাবান।

٣٠ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَدَّ مُلْكُ السَّاوٰتِ
وَ الْأَرْضِ مَ يُعَنِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ

৪১. হে রস্ল, যারা দ্রুতগতিতে কৃফরীর পথে ধাবিত হচ্ছে, তারা যেন তোমাকে দঃখ না দেয়, এরা সে দলের (লোক) যারা মুখে বলে, আমরা ঈমান এনেছি, কিন্তু (সত্যিকার অর্থে) তাদের অন্তর কখনো ঈমান আনেনি. আর (তাদের ব্যাপারও নয়) যারা ইছদী– তারা মিথ্যা কথা শোনার জন্যে (সদা) কান খাড়া করে রাখে এবং (তাদের বন্ধু সম্প্রদায়ের) যেসব লোক কখনো তোমার কাছে আসেনি, এরা সেই অপর সম্প্রদায়টির জন্যেই নিজেদের কান খাড়া করে রাখে: আল্লাহর কেতাবের কথাগুলো আপন জায়গায় (বিন্যস্ত) থাকার পরেও এরা তা বিৰুত করে বেডায় এবং (অন্যদের কাছে) এরা বলে, (হাঁ) যদি এ (ধরনের কোনো) বিধান তোমাদের দেয়া হয় তাহলে তোমরা তা গ্রহণ করো, আর সে ধরনের কিছু না দেয়া হলে ভোমরা (তা থেকে) সতর্ক থেকো: (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যার পথচ্যুতি চান, তাকে আল্লাহর (পাকড়াও) থেকে বাঁচানোর জন্যে তুমি তো কিছুই করতে পারো না: এরাই হচ্ছে সেসব (হতভাগ্য) লোক, আল্লাহ তায়ালা কখনো যাদের অন্তরগুলোকে পাক-সাফ করার এরাদা পোষণ করেন না, তাদের জ্বন্যে পৃধিবীতে (যেমনি) রয়েছে অপমান (ও লাঞ্চনা), পরকালেও (তেমনি) তাদের জন্যে অপেক্ষা করছে ভয়াবহ আযাব।

اس يَايَّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ الَّذِيْنَ الَّذِيْنَ الَّذِيْنَ الَّذِيْنَ الْمَنَّا فِي الْكُفْرِ مِنَ النَّذِيْنَ قَالُوْآ أَمَنَّا بِاَفُو اهِمِرْ وَلَرْ تُوْمِنَ النَّذِيْنَ قَالُوْآ أَمَنَّا النَّذِيْنَ مَادُوْا خَ سَمْعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُوْنَ الْكَذِبِ سَمَّعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُوْنَ الْكَلِمِ لِقَوْمَ الْحَرِيْنَ لالرَيْاتُوكَ عَيْحَرِّفُونَ الْكَلِمِ مِنَّ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ يَرْدِ الله فَيْنَا عَلَى اللهِ مَنْ الله مَنْ اللهُ مَنْ

৪২. (ইহুদীদের চরিত্র হচ্ছে,) এরা (যেমন) মিথ্যা কথা গুনতে জভ্যন্ত, (তেমনি) এরা হারাম মাল খেতেও ওস্তাদ; অতএব এরা যদি কখনো (কোনো বিচার নিয়ে) তোমার কাছে আসে তাহলে তুমি (চাইলে) তাদের বিচার করতে পারো কিংবা তাদের উপেক্ষা করো, যদি তুমি তাদের ফিরিয়ে দাও তাহলে (নিচ্চিত থাকো), এরা তোমার কোনোই অনিষ্ট করতে পারবে না, তবে যদি তুমি তাদের বিচার ফয়সালা করতে চাও তাহলে অবশ্যই ন্যারবিচার করবে; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা ন্যায় বিচারকদের ভালোবাসেন।

٣٣ سَهُوْنَ لِلْكَانِ اِلْكُوْنَ لِلسَّحْسِ اَ فَانَ جَاءُوْكَ السَّحْسِ الْمَانِ السَّحْسِ الْمَانِ جَاءُوْكَ مَانُهُر َ اَوْ اَعْرِضَ عَنْهُر َ اَوْ اَعْرِضَ عَنْهُر َ اللَّهُ وَاِنْ اللَّهَ مَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ لِالْقِسُطِ الِّ اللَّهَ مَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ لِالْقِسُطِ اللَّهَ اللهَ يُحِبُّ الْهُ قَسِطِيْنَ اللهَ يُحِبُّ الْهُ قَسِطِيْنَ

৪৩. এসব লোক কিভাবে তোমার কাছে বিচারের ভার নিয়ে হাযির হবে, যখন তাদের নিজেদের কাছেই (আল্লাহর পাঠানো) তাওরাত মজুদ রয়েছে, তাতেও তো

٣٣ وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْنَمُرُ التَّوْرُنةُ فِيهَا مُكْرُ التَّوْرُنةُ فِيهَا مُكْرُ اللهِ ثُرَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْنِ ذَٰلِكَ ط

(বিচার-আচার সংক্রান্ত) আল্লাহর বিধান আছে, (তুমি যা কিছুই করো না কেন) একটু পরেই তারা তোমার কাছ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে, এরা আসলেই (আল্লাহর কেতাবের ব্যাপারে) ঈমানদার নয়।

وَمَا ۗ أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ع

88. নিসন্দেহে আমি (মৃসার কাছে) তাওরাত নাযিল করেছি, তাতে (তাদের জনে) পথনির্দেশ ও আলোকবর্তিকা বর্তমান ছিলো, আমার নবীরা— যারা আমার বিধানেরই অনুবর্তন করতো, ইহুদী জাতিকে এ (হেদায়াত) মোতাবেকই আইন-কানুন প্রদান করতো, (নবীদের পর তাদের) জ্ঞানসাধক ও ধর্মীয় পভিতরাও (এ অনুযায়ী বিচার-ফয়সালা করতো), কেননা, (নবীর পর) আল্লাহর কেতাব সংরক্ষণ করার দায়িত্ব এদেরই দেয়া হয়েছিলো, তারা (নিজেরাও) ছিলো এর (প্রত্যক্ষ) সাক্ষী, সূতরাং তোমরা মানুষদের ভয় না করে একান্তভাবে আমাকেই ভয় করো, আর আমার আয়াতসমূহ সামান্য মূল্যে বিক্রিকরে দিয়ো না; যারা আল্লাহর নাফিল করা আইন অনুযায়ী বিচার-ফয়সালা করে না, তারাই (হক্ষে) কাফের।

٣٣ إِنَّا آنْزَلْنَا التَّوْرُنةَ فِيْهَا هُنَّى وَّنُورَّ عَيَّهَا هُنَّى وَّنُورًا عَيَّكُم بِهَا النَّبِيُّوْنَ النَّهِيْنَ اَسْلُمُوْا لِلَّانِيْنَ مَانُوْا وَالرَّبْنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِهَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتْبِ اللهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَنَّاءَ عَ فَلَا تَخْشُوا النَّاسَ وَاخْشُونِ وَلَا تَشْتُرُوا بِيانِيْنَ ثَهَنًا قَلِيلًا ﴿ وَمَنْ لَّرْ يَحْكُر بِهَا آنُزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُرُ الْكُفِرُونَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُرُ الْكُفِرُونَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُرُ الْكُفِرُونَ

৪৫. (তাওরাতের) সেখানে আমি তাদের জ্বন্যে বিধান নাযিল করেছিলাম যে, (তাদের) জানের বদলে জান, চোখের বদলে চোখ, নাকের বদলে নাক, কানের বদলে কান, দাঁতের বদলে দাঁত, (শাস্তি প্রয়োগের সময় এই শারীরিক) যখমটাই কিন্তু আসল দন্ড (বলে বিবেচিত হয়); অবশ্য (বাদী পক্ষের) কেউ যদি এই দন্ড মাফ করে দিতে চায়, তাহলে তা তার নিজের (গুনাহ-খাতার) জন্যে কাফফারা (হিসেবে গণ্য) হবে; আর যারাই আল্লাহর নাযিল করা বিধান অনুযায়ী বিচার-ফয়সালা করেনা, তারাই যালেম।

٣٥ وكَتَبْنَا عَلَيْهِرْ فِيهَا آنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ لِا وَالْعَيْنِ وَالْإَنْفَ بِالنَّفْسِ وَالْإَنْفَ بِالْعَيْنِ وَالْإَنْفَ بِالْآذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّيِّ لِا وَالْجُرُوحَ قِصَاسٌ ، فَهَنْ تَصَنَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ، وَمَن لَّرْ يَحْكُرْ بِهَا آنْزَلَ اللَّهُ فَاوَلَٰئِكَ مُر الظَّلْهُونَ عَلَا لَيْهَا اللَّهُ اللَّهُ الْمَلْكِةِ مَر الظَّلْهُونَ

৪৬. এ ক্রমধারায় অতপর আমি মারইয়াম-পুত্র ঈসাকে পাঠিয়েছি, (সে সময়) আগে থেকে তাওরাতের যা কিছু (অবশিষ্ট) ছিলো, সে ছিলো তার সত্যতা স্বীকারকারী, আর আমি তাকে ইনজীল দান করেছি, তাতে ছিলো হেদায়াত ও নূর; তখন তাওরাতের যা কিছু (তার কাছে বর্তমান ছিলো– ইনজীল কেতাব) তার সত্যতাও সে স্বীকার করেছে, (তদুপরি) তাতে আল্লাহভীরু লোকদের জন্যে পথনির্দেশ ও উপদেশ (মজুদ) ছিলো।

৪৭. ইনজীলের অনুসারীদের উচিত এর ভেতর আল্লাহ তায়ালা যা কিছু নাযিল করেছেন তার ভিত্তিতে বিচার ফয়সালা করা; (কেননা) যারাই আল্লাহর নাযিল করা আইনের ভিত্তিতে বিচার করেনা তারাই ফাসেক।

٣٠ وَلْيَحْكُر أَهْلُ الْإِنْجِيْلِ بِمَا أَنْزَلَ
 الله فِيْدِ ، وَمَن لَّر يَحْكُر بِمَا أَنْزَلَ الله فَوْلَ مَا وَمَن لَّر يَحْكُر بِمَا أَنْزَلَ الله فَأُولَنِكَ مُر الْفُسِتُونَ

৪৮. (হে মোহাম্মদ,) আমি তোমার প্রতি সত্য (দ্বীন)-সহ এ কেতাব নাযিল করেছি, (আগের) কেতাবসমূহের যা কিছু (অবিকৃত অবস্থায়) তার সামনে মজুদ রয়েছে, এ কেতাব তার সত্যতা স্বীকার করে (শুধু তাই নয়), এ কেতাব (তার ওপর) হেফাযতকারীও বটে! (সুতরাং) আল্লাহ তায়ালা যেসব বিধি-বিধান নাযিল করেছেন তার ভিত্তিতেই তুমি তাদের মধ্যে বিচার-ফয়সালা করো, আর (এ বিচারের সময়) তোমার নিজের কাছে যা সত্য (দ্বীন)

٣٨ وَٱنْزَلْنَا ٓ إِلَيْكَ الْكِتٰبِ بِالْحَقِّ مُصَرِّقًا لِمَا بَيْنَ يَنَيْدِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْدِ فَاحْكُر بَيْنَهُر بِهَا آنْزَلَ الله وَلا تَتَّبِعُ الْمُوَا عَمْرُعَيًّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ولِكُلٍّ جَعَلْنَا لَيْكُلٍ جَعَلْنَا

৫ সূরা আল মায়েদা

170

মন্যিল ২

ያራ

ওয়াককে গোফরান ওয়াকফে

এসেছে, তার থেকে সরে গিয়ে তাদের খেয়াল খুশীর অনুসরণ করো না: আমি তোমাদের প্রতিটি (সম্প্রদায়ের) জন্যে শরীয়ত ও কর্মপন্তা নির্ধারণ করে দিয়েছি: আল্লাহ তায়ালা চাইলে তোমাদের সবাইকে একই উম্মত বানিয়ে দিতে পারতেন: বরং তিনি তোমাদের যা দিয়েছেন তার ভিত্তিতে তোমাদের যাচাই-বাছাই করে নিতে চেয়েছেন. অতএব ভালো কাজে তোমরা সবাই প্রতিযোগিতা করো: (কেননা) আল্লাহ তায়ালার দিকেই হবে তোমাদের সকলের প্রত্যাবর্তনস্থল, (এখানে) তোমরা যেসব বিষয় নিয়ে মতভেদ করতে. (অতপর) তিনি অবশ্যই তা তোমাদের (স্পষ্ট করে) বলে দেবেন।

৪৯. (অতএব, হে মোহাম্মদ্.) তোমার ওপর আল্লাহ তায়ালা যে আইন-কানুন নাযিল করেছেন তুমি তারই ভিত্তিতে এদের মাঝে বিচার ফয়সালা করে৷ এবং কখনো তাদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করো না এবং তাদের থেকে সতর্ক থেকো, যা কিছু আল্লাহ তায়ালা তোমার ওপর নাযিল করেছেন তার কোনো কোনো বিষয়ে যেন তারা কখনো তোমাকে ফেতনায় না ফেলতে পারে: অতপর (তোমার ফয়সালায়) যদি এরা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তাহলে জেনে রেখো, আল্লাহ তায়ালা তাদের নিজেদেরই কোনো গুনাহের জন্যে তাদের কোনোরকম মসিবতে ফেলতে চান: মানুষের মাঝে (আসলে) অধিকাংশই হচ্ছে অবাধ্য।

৫০. তবে কি তারা পুনরায় জাহেলিয়াতের বিচার ব্যবস্থা তালাশ করছে? অথচ যারা (আল্লাহতে) দৃঢ়ভাবে বিশ্বাস করে, তাদের কাছে আল্লাহ তায়ালার চাইতে উত্তম বিচারক আর কে হতে পারে?

৫১. হে ঈমানদার লোকেরা. তোমরা (কখনো) इंग्ली-च्यानित्त निर्द्धात्मत वक्क शिक्तर अश्व करता ना । (কেননা) এরা নিজেরা (সব সময়ই) একে অপরের বন্ধু; তোমাদের মধ্যে কেউ যদি (কখনো) এদের কাউকে বন্ধু বানিয়ে নেয় তাহলে সে তাদেরই দলভুক্ত হয়ে যাবে: আর আল্লাহ তায়ালা কখনো যালেম সম্প্রদায়কে হেদায়াত দান করেন না।

৫২. অতপর যাদের অন্তরে (মোনাফেকীর) ব্যাধি রয়েছে তাদের তুমি দেখবে, তারা (বিশেষ) তৎপরতার সাথে এই বলে তাদের সাথে মিলিত হচ্ছে যে, 'আমাদের আশংকা হচ্ছে, কোনো বিপর্যয় এসে আমাদের ওপর আপতিত হবে': পরে হয়তো আল্লাহ তায়ালা (তোমাদের কাছে) বিজয় নিয়ে আসবেন কিংবা তাঁর কাছ থেকে অন্য কিছু (অনুগ্রহ তিনি দান করবেন), তখন (তা দেখে এ) লোকেরা নিজেদের মনের ভেতর যে কপটতা লুকিয়ে রেখেছিলো, তার জন্যে ভীষণ অনুতপ্ত হবে।

৫৩. (তখন) ঈমানদার লোকেরা বলবে, এরাই কি ছিলো সেসব মানুষ, যারা আল্লাহ তায়ালার নামে বড়ো বড়ো শপথ করতো (যে), তারা অবশ্যই তোমাদের সঙ্গে আছে: (এই আচরণের ফলে) তাদের কার্যকলাপ বিনষ্ট হয়ে গেলো, অতপর তারা ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে পড়লো।

৫৪. হে মানুষ, তোমরা যারা আল্লাহর ওপর ঈমান ^ ^ ^ ﴿ مَنْ مِنْكُمْ عَنْ صَالِحَالَ الْمُرْمِينَ أَمْنُواْ مَنْ يُرْتُلُ مِنْكُمْ عَنْ الْمَاكِمَ مِنْكُمْ عَنْ الْمَاكِمُ مِنْكُمْ عَنْ الْمُرْعِينَ الْمُنْواْ مَنْ يُرْتُلُ مِنْكُمْ عَنْ الْمَاكِمِينَ الْمُنْواْ مَنْ يُرْتُلُ مِنْكُمْ عَنْ الْمُرْمِينَ الْمُنْواْ مِنْ يُرْتُلُ مِنْكُمْ عَنْ الْمُنْوَالِمِينَ الْمُنْواْ مِنْ يُرْتُلُ مِنْكُمْ عَنْ الْمُرْمِينَ الْمُنْواْ مِنْ يُرْتُلُ مِنْكُمْ عَنْ الْمُنْكِمْ عَنْ الْمُنْكِمْ عَنْ الْمُؤْمِنِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّ এনেছো, তোমাদের মধ্যে কোনো লোক যদি নিজের দ্বীন

مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا م وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِنَةً وَّلَكِيْ لَّيَبْلُوكُمْ فِي مَا أَتْنكُر فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرُتِ ، إِلَى اللَّهِ مَ ۚ جَعُكُم ۚ جَهِيْعًا فَيُنَبِّئُكُم ۚ بِهَا كُنْتُم ۚ فَيُه تَحْتَلِغُوْنَ ٧

٣٩ وَأَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِهَا ۖ أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُ ٱهُوَاءَهُمْ وَاحْلَرُهُمْ أَنْ يَّفْتِنُوكَ عَيْ بَعْضٍ مَا ۖ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ، فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّهَا يُرِيْنُ اللَّهُ أَنْ يُصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِرْ ﴿ وَإِنَّ كَثِيْرًا بِّيَ النَّاسِ لَفْسِقُونَ

٥٠ أَفَحُكُمْ َ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ١ وَمَنْ أَحْسَنُ ا مِنَ اللهِ حُكُمًا لِّقَوْ إِيُّوْقِنُوْنَ عَ

٥١ يَايَّهَا الَّٰنِيْنَ أَمَنُوا لَا تَتَّخِنُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصرى أَوْلِيَاءَ ثُرِّ بَعْضُهُرْ أَوْلِيَاءُ بَعْضِ ا وَمَنْ يَّتُولُّهُمْ مِّنْكُمْ فَانَّهُ مِنْهُمْ وَ انَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظُّلِمِينَ

٥٢ فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِر مَّرَضْ يَّسَارِعُوْنَ فِيْهِرْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشَى أَنْ تُصِيْبَنَا دَائِهَ ۚ اللَّهُ اللَّهُ أَن يَّأْتِيَ بِالْفَتُحِ أَوْ أَمْ مِّنْ عِنْنِ عِنْنِ فَيُصْبِحُوا عَلَى مَا أَسَرُّوا فِي أَ اَنْفُسهم نٰن مین م

٥٣ وَيَقُوْلُ الَّذِينَ أَمَنُوْا ۖ أَمُّؤُكَّاءِ الَّذِينَ ٱقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْلَ ٱيْمَانِهِيرُ لا إِنَّهُيرُ لَمَعَكُيرُهُ حَبِطَتُ أَعْهَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خُسِرِينَ

৫ সূরা আল মায়েদা

(ইসলাম) থেকে (মোরতাদ হয়ে) ফিরে আসে (তাতে আল্লাহ তায়ালার কোনো ক্ষতি নেই.) তবে আল্লাহ তায়ালা অচিরেই (এখানে) এমন এক সম্প্রদায়ের উত্থান ঘটাবেন যাদের তিনি ভালোবাসবেন, তারাও তাঁকে ভালোবাসবে, (তারা হবে) মোমেনদের প্রতি কোমল ও কাফেরদের প্রতি কঠোর, তারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করবে, কোনো নিন্দুকের নিন্দার পরোয়া তারা করবে না: (মূলত) এ (সাহসটুকু) হচ্ছে আল্লাহর একটি অনুগ্রহ. যাকে চান তাকেই তিনি তা দান করেন: আল্লাহ তায়ালা প্রাচর্যময় ও প্রজ্ঞার আধার।

دِيْنِهِ فَسَوْنَ يَٱتِى اللَّهُ بِقَوْ} يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهُ لا اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكُفْرِيْنَ زِيُجَاهِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِيرٍ ﴿ ذَٰلِكَ فَضُلُّ اللَّهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَشَاءُ م وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيْرٌ

৫৫. তোমাদের একমাত্র পৃষ্ঠপোষক হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রসূল এবং সেসব ঈমানদার লোকেরা, যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, (সর্বোপরি আল্লাহ তায়ালার সামনে যারা) সদা অবনমিত থাকে।

٥٥ إِنَّهَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ أَمَنُوا الَّذِينَ يُقِيْمُونَ الصَّلُوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوةَ وَهُمْ رَكِعُونَ

৫৬. আর যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রসূল ও ঈমানদারদের নিজের বন্ধুরূপে গ্রহণ করবে (তারা যেন জেনে রাখে), কেবলমাত্র আল্লাহ তায়ালার দলটিই বিজয়ী হবে ৷

٥٦ وَمَنُ يَّتُوَلَّ اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ وَالَّنِيْنَ أُمُّنُواْ فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ فَرُ الْغُلِّبُونَ ع

৫৭. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমাদের আগে যাদের (আল্লাহ তায়ালার) কেতাব দেয়া হয়েছিলো. তাদের মধ্যে যারা তোমাদের দ্বীনকে বিদ্রূপ ও খেল-তামাশার বস্ততে পরিণত করে রেখেছে, তাদের এবং কাফেরদের কখনো তোমরা নিজেদের বন্ধু বানিয়ো না. যদি তোমরা সত্যিকার অর্থে মোমেন হয়ে থাকো তাহলে একমাত্র আল্লাহ তায়ালাকেই (বন্ধু বানাও এবং তাঁকেই) ভয় করো।

٥٤ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَلُوا دِيْنَكُرْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ النَّذِينَ ٱوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِياءً ع وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُرْ مُّؤْمِنِيْنَ

৫৮. যখন তোমরা (মানুষদের) নামাযের জন্যে ডাকো. তখন এই ডাককে এরা হাসি-তামাশা ও খেলার বস্ত বানিয়ে দেয়: এরা হচ্ছে এমন এক সম্প্রদায়, যারা (হক-বাতিলের) কিছুই বোঝে না।

٥٨ وَإِذَا نَادَيْتُرْ إِلَى الصَّلُوةِ اتَّخَلُوْهَا مُزُوا وَّلَعِبًا وَ ذَٰلِكَ بِٱنَّامُرْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ

৫৯. (হে রস্ল.) তুমি এদের বলো. তোমরা যে আমাদের কাছ থেকে প্রতিশোধ নিচ্ছো তার কারণ এই যে, আমরা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছি এবং আমাদের ওপর আগে ও বর্তমানে যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তার ওপর বিশ্বাস স্থাপন করেছি! (আসলে) তোমাদের অধিকাংশ (মানুষই) হচ্ছে গুনাহগার।

 $\sqrt[3]{8}$ أَلُ يَا مُلَ الْكتٰبِ مَلْ تَنْقَبُونَ مِنَّا $\sqrt[3]{8}$ أَنْ أُمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أَنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أَنْزِلَ مِنْ قَبْلُ لا وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فُسِقُوْنَ

৬০. (হে রস্ল,) তুমি বলো, আমি কি তোমাদের বলে দেবো– আল্লাহর কাছ থেকে সবচাইতে নিক্ট পুরস্কার কে পাবে? সে লোক (হচ্ছে,) যার ওপর আল্লাহ তায়ালা অভিশাপ দিয়েছেন, যার ওপর আল্লাহর ক্রোধ রয়েছে এবং যাদের কিছু লোককে তিনি বানর, (কিছু লোককে) ভয়োরে পরিণত করে দিয়েছেন, যারা মিথ্যা মাবুদের আনুগত্য স্বীকার করেছে: এরাই হচ্ছে সেসব লোক. (পরকালে) যাদের অবস্থান হবে অত্যন্ত নিকৃষ্ট এবং (দুনিয়াতেও) এরা সরল পথ থেকে (বহুদুরে) বিচ্যুত হয়ে পড়েছে।

١٠ قُلْ هَلْ أَنَبِّئُكُرْ بِشَرِّ مِّنْ ذَٰلِكَ مَثُوْبَةً عنْنَ الله ، مَنْ لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضَبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُرُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَنَ الطَّاغُونِيَ ء أُولَئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَيْ سَواء السبيل

৬১. তারা যখন তোমার সামনে আসে তখন বলে, আমরা ঈমান এনেছি, (আসলে) তারা তোমার কাছে কৃফরী নিয়েই بِالْكُفُر وَمُرْقَلُ خَرَجُواْ بِهِ ، وَ اللَّهُ ٱعْلَرُ بِهَا (अदि जा निख़रे एवा मात्र काह एबर कत বেরিয়ে গেছে; (তারা মনের ভেতর) যা কিছু লুকিয়ে রাখছিলো আল্লাহ তায়ালা সে ব্যাপারে পূর্ণ ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

ال وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا الْمَنَّا وَقَلْ دَّغَلُوا كَانُوا يَكْتُبُونَ

৫ সুরা আল মায়েদা

226

৬২. তাদের অনেককেই তুমি দেখতে পাবে- গুনাহ, (আল্লাহর সাথে) বিদ্রোহ ও হারাম মাল ভোগ করার কাজে এরা একে অপরের সাথে প্রতিযোগিতা করে চলেছে; এরা যা করে (মূলত) তা বড়োই নিকৃষ্ট কাজ!

٣٢ وَتَرْى كَثِيْرًا مِّنْهُرْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْإِثْرِ وَالْعُنُوَانِ وَأَكْلِهِرُ السُّحْسَ ، لَبِنْسَ مَا كَانُوْا يَغْمَلُوْنَ

৬৩. (কতো ভালো হতো এদের) ধর্মীয় নেতা ও পন্তিত ব্যক্তিরা যদি এদের এসব পাপের কথা ও হারাম মাল ভোগ করা থেকে বিরত রাখতো! (কারণ) এরা যা কিছু (সংগ্রহ) করছে তা বডোই জঘন্য!

٣٣ لَوْلَا يَنْهٰهُرُ الرَّبْنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِمِرُ الْإِثْرَ وَاكْلِمِرُ السَّحْنَ الْبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ

৬৪. ইহুদীরা বলে, আল্লাহর (দানের) হাত বাঁধা পড়ে গেছে; (আসলে) তাদের নিজেদের হাতই বাঁধা পড়ে গেছে, আর তারা যা কিছু বলেছে সে কারণে তাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার অভিশাপ নাযিল করা হয়েছে। আল্লাহর তো (দুনিয়া আখেরাতের) উভয় হাতই মুক্ত, যেভাবে তিনি চান সেভাবেই তিনি দান করেন। (প্রকৃত ঘটনা হচ্ছে), তোমার মালিকের পক্ষ থেকে যা কিছু তোমার ওপর নাযিল করা হয়েছে, তা তাদের অনেকেরই সীমালংঘন ও কুফরীকে অবশাই বাড়িয়ে দিয়েছে; (ফলে) আমি তাদের মাঝে কেয়ামত পর্যন্ত একটা শক্রুতা ও পরস্পর বিদ্বেষ সঞ্চার করে দিয়েছি; যখনি তারা য়ুদ্ধের আগুন জ্বালিয়ে দিতে চেয়েছে, আল্লাহ তায়ালা তখনি তা নিভিয়ে দিয়েছেন, তারা (বার বার) এ যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টির প্রয়াস পেয়েছে; আসলে আল্লাহ তায়ালা বিপর্যয় সৃষ্টির প্রয়াস পেয়েছে; আলাবাসেন না।

آ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَنُ اللهِ مَغْلُولَةً ، عُلَّتُ اَيْدِيْمِرْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا مِ بَلْ يَنَهُ مَبْسُوطَتْنِ لا يُنْفَقُ كَيْفَ يَشَاءً ، وَلَيَزِيْلَنَّ مَبْسُوطَتْنِ لا يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءً ، وَلَيَزِيْلَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمُ الْعَنَا الْيَلْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفُرًا ، وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَلَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقَيْمَةِ ، كُلَّمَ اوْقَلُوا وَالْقَيْمَةِ ، كُلَّمَ اوْقَلُوا نَارًا لِلْمُحُرْبِ اَطْفَاهَا الله لا ويَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ، وَالله لا يُحِبُّ الْهُفْسِيْنَ الْاَرْضِ فَسَادًا ، وَالله لا يُحِبُّ الْهُفْسِيْنَ

৬৫. যদি আহলে কেতাবরা ঈমান আনতো এবং (আল্লাহকে) ভয় করতো, তবে অবশ্যই আমি তাদের গুনাহখাতা মুছে দিতাম এবং তাদের আমি অবশ্যই নেয়ামতে পরিপূর্ণ জান্নাতে প্রবেশ করাতাম।

٦٥ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَٰبِ أَمَنُوْا وَاتَّقُوْا
 لَكَفُّرْنَا عَنْهُر سَيِّاتِهِر وَلَادْ عَلَيْهُر جَنَّتِ
 النَّقِيْرِ

৬৬, যদি তারা তাওরাত ও ইনজ্ঞীল (তথা তার বিধান) প্রতিষ্ঠা করতো, আর যা তাদের ওপর তাদের মালিকের কাছ থেকে নাযিল করা হয়েছে তার ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকতো, তাহলে তারা রেযেক পেতো তাদের মাথার ওপরের (আসমান) থেকে ও তাদের পায়ের নীচের (যমীন) থেকে; তাদের মধ্যে অবশ্য একদল (ন্যায় ও) মধ্যপন্থী লোক রয়েছে, তবে তাদের অধিকাংশই হচ্ছে এমন, যাদের কর্মকান্ত খুবই নিকৃষ্ট!

٢٦ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَتَامُوا التَّوْرِيةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَا اللَّوْرِيةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَا النَّوْرِيةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَا النَّوْرِيةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَا النَّوْرِيةِ مَا النَّوْرِيةِ مَا يَعْمَلُونَ عَلَيْ الْمُلْعِيْرُ مَا يَعْمَلُونَ عَلَيْ الْمُلْعِيْرُ مَا يَعْمَلُونَ عَلَيْ اللَّهُ اللْمُلْحِلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ الْمُلْحُلِمُ الْمُلْمُلُولُولَ

৬৭. হে রস্ল, যা কিছু তোমার ওপর নাযিল করা হয়েছে তা তুমি (অন্যের কাছে) পৌছে দাও, যদি তুমি (তা) না করো তাহলে তুমি তো (মানুষদের কাছে) তার বার্তা পৌছে দিলে না! আল্লাহ তায়ালা তোমাকে মানুষের (অনিষ্ট) থেকে বাঁচিয়ে রাখবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা কখনো কোনো অবাধ্য জাতিকে পথ প্রদর্শন করেন না।

٢٧ يَّايَّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا ۖ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّالِّ وَلَيْكَ مِنْ رَّالِّكَ مِنْ رَّالِكَ مِنْ رَّالِكَ مِنْ رَّالِكَ مَنْ وَاللَّهُ يَعْمِهُكَ مِنَ النَّاسِ ، إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْرِينَ اللَّهَ لَا يَهْرِينَ اللَّهَ لَا يَهْرِينَ الْكَوْرِيْنَ

৬৮. তুমি (তাদের) বলো, হে আহলে কেতাবরা, যতোক্ষণ পর্যন্ত তোমরা তাওরাত, ইনজীল ও তোমাদের প্রতি তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে যা নাযিল করা হয়েছে তা প্রতিষ্ঠিত না করবে, ততোক্ষণ পর্যন্ত (মনে

٨ تَلُ يَاهُلَ الْكِتٰبِ لَسْتُرْ عَلٰى شَيْءٍ
 مَتْى تُقِيْمُوا التَّوْرٰئةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَا ٱنْزِلَ

৫ সূরা আল মায়েদা

336

করতে হবে.) তোমরা কোনো কিছর ওপরই প্রতিষ্ঠিত নেই: তোমার মালিকের কাছ থেকে যা কিছ তোমার النزل إليك مِن رَبِّك طُغْيَانًا وَّكُفُرًا عَ فَلَا عَسَالًا وَكُفُوا عَ فَلَا عَالِمَ عَلَا عَالِمَ সীমালংঘন ও কুফরী বাড়িয়ে দেবে, সুতরাং তুমি এই কাফের সম্প্রদায়ের জন্যে মোটেই আফসোস করো না ।

৬৯. নিশ্চয়ই যারা ঈমান এনেছে এবং যারা ছিলো ইহুদী. সাবেয়ী, খৃষ্টান- (এদের) যে কেউই এক আল্লাহ তায়ালা ও শেষ বিচার দিনের ওপর ঈমান আনবে এবং সংকর্ম করবে, তাদের কোনো ভয় নেই, (পরকালেও) তাদের কোনো দশ্চিন্তাগ্রস্ত হতে হবে না।

৭০. বনী ইসরাঈলের কাছ থেকে আমি (আনগত্যের) অংগীকার আদায় করে নিয়েছিলাম এবং (সে মোতাবেক) আমি তাদের কাছে রসুলদের প্রেরণ করেছিলাম: কিন্তু যখনি কোনো রসূল তাদের কাছে এমন কিছু (বিধান) নিয়ে হাযির হয়েছে, যা তাদের পছন্দসই ছিলো না, তখনি তারা (এই রস্লদের) একদলকে মিথ্যাবাদী বলেছে. আরেক দলকে তারা হত্যা করেছে।

৭১. তারা ধরে নিয়েছিলো. (এতো কিছু করা সন্ত্রেণ) তাদের জন্যে কোনো বিপর্যয় থাকবে না, তাই তারা (সত্য গ্রহণ করার ব্যাপারে) অন্ধ ও বধির হয়ে থাকলো, তারপরও আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর ক্ষমাপরবশ হলেন, অতপর তাদের অনেকেই আবার অন্ধ ও বধির হয়ে গেলো: তারা যা কিছু করছে আল্লাহ তায়ালা তা পর্যবেক্ষণ করছেন।

৭২. নিক্যুই তারা কাফের হয়ে গেছে যারা (একথা) বলেছে, আল্লাহ হচ্ছেন মারইয়ামের পুত্র মাসীহ: অথচ মাসীহ (নিজেই একথা) বলেছে যে, হে বনী ইসরাঈল, তোমরা এক আল্লাহর এবাদাত করো, যিনি আমারও মালিক, তোমাদেরও মালিক: মূলত যে কেউই আল্লাহর সাথে শরীক করবে, আল্লাহ তায়ালা তার ওপর জানাত হারাম করে দেবেন, আর তার (স্থায়ী) ঠিকানা হবে জাহান্রাম: এই যালেমদের (মেদিন) কোনো সাহায্যকারীই থাকবে না।

৭৩. তারাও কুফরী করেছে যারা বলেছে, তিন জনের মধ্যে তৃতীয় জন হচ্ছেন আল্লাহ। অথচ এক আল্লাহ تَلْفَةِ رَوْمًا مِنْ إِلَٰدٍ إِلَّا إِلْهُ وَاحِنَّ ، وَإِنْ لَّرْ विश्वार्थ (विश्वार्थ) وَمَا مِنْ إِلَٰدٍ إِلَّا إِلْهُ وَاحِنَّ ، وَإِنْ لَّرْ তাদের এসব (অলীক) কথাবার্তা থেকে ফিরে না يَنْتُهُواْ عَمَّا يَقُوْلُونَ لَيَهَسَّى ۖ الَّذِينَ كَفُووا ﴿ आरम, তবে তोদের মাঝে যারা (একথা বলে) क्रुक्रे ا করেছে, তাদের অবশ্যই কঠিন যন্ত্রণাদায়ক আযাবে পেয়ে যাবে।

৭৪. তারা কি আল্লাহর কাছে তাওবা করবে না? (কখনো কি) তারা তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করবে না? আল্লাহ তায়ালা বড়োই ক্ষমাশীল ও দয়াময়।

৭৫. মারইয়াম পুত্র মাসীহ তো রসুল ছাড়া কিছুই ছিলো না, তার আগেও (তার মতো) অনেক রসূল গত হয়েছে; তার মা ছিলো এক সত্যনিষ্ঠ মহিলা; তারা (মা ও ছেলে) غَلَتْ مَنْ قَبْلِهِ الرِّسُلُ ء وَ أُمَّةُ صِلْيَقَةً ء كَانَا উভয়ই (আর দু'দশটি মানুষের মতো করেই) খাবার يَاْكُلُنِ الطَّعَا ﴾ ﴿ الْنَظُرُ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُر (আমার) عَامُور كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُر (খতো; তুমি লক্ষ্য করে দেখো, আমি কিভাবে

ٳڷؽػؙؙؙؗۯٛ مِّنٛ رَّبِّكُمْ ۖ وَلَيَزِيْكَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَّا تَاسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكُفِرِينَ

٦٩ إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالسِّبُنُونَ وَالنَّصْرُى مَنْ أَمَى بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْنٌ عَلَيْهِرْ وَلَا هُرْ يَحُزُّنُونَ

٠٠ لَقَلُ أَخَلُلُا مِيْثَاقَ بَنِيْ ۚ إِسْرَاءِيْلَ وَ ٱرْسَلْنَا ۚ إِلَيْهِرْ رُسُلًا ﴿ كُلَّهَا جَاءَهُمْ رَسُوْلٌ بِهَا لَا تَهُوٰى اَنْفُسُهُرْ لِا فَرِيْقًا كَنَّابُوْ ا وَفَرِيْقًا

١٤ وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةً فَعَهُوا وَصَهُّوا ثُرَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِرْ ثُرَّ عَهُوا وَمَهُّوا كَثِيرٌ مَنْهُرُ وَ اللَّهُ بَصِيْ اللَّهُ مَعْمُلُونَ

٢٤ لَقَنْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوْ آ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْهَسِيْحُ ابْنُ مَوْيَمِ ، وَقَالَ الْهَسِيْحُ يٰبَنِي إِسْرَاءِيلَ اعْبُدُوا اللّهُ رَبِّي وَرَبّكُرْ ، إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكَ بِاللَّهِ فَقَلْ مَرَّا اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَا وَاللَّهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارِ

٢٢ لَقَنْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوْ آ إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ منْهُم عَنَ ابِّ اليهرِّ

٤٣ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهُ ﴿ وَاللَّهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْرٌ

40 مَا الْهَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ الَّا رَسُولٌ } قَنَ

৫ সুরা আল মায়েদা

পারা ৬ লা-ইউহিব্রুল্লাহ

আয়াতগুলো খুলে খুলে বর্ণনা করছি, তুমি দেখো, কিভাবে তারা সত্যবিমুখ হয়ে **যাচ্ছে**।

জানেন।

الْايتِ ثُرِّ انْظُرْ أَنَّى يُؤْفَكُوْنَ

৭৬. তুমি বলো, তোমরা কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে এমন কিছর এবাদাত করছো যা তোমাদের কোনো ক্ষতি কি श्वा উপकात किছूर कतात क्रमण तार्थना; (প্রকৃত্পক্ষে) وَاللَّهُ مُو اللَّهُ عُو اللَّهُ عَرْا وْ لا نَفْعًا م وَاللَّهُ مُو اللَّهُ عَرِفُهُا مَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ আল্লাহ তায়ালা (সব কিছুই) শোনেন এবং (সব কিছুই)

٢٦ قُلْ أَتَعْبُلُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا السِّيعُ الْعَلَيْرُ

৭৭. তুমি বলো, হে আহলে কেতাবরা, তোমরা কখনো নিজেদের দ্বীনের ব্যাপারে অন্যায় বাড়াবাড়ি করো না. (মাসীহের ব্যাপারে) তোমরা সেসব জাতির খেয়ালখুশীর অনুসরণ করো না. যারা তোমাদের আগেই পথভ্রষ্ট হয়ে مِنْ قَبْلُ وَ أَضَلُّوا كَثَيْرًا وَّضَلُّوا عَنْ سَواء काद काद وَأَضَلُّوا عَنْ سَواء مِنْ قَبْلُ و দিয়েছে, আর তারা নিজেরাও সহজ সরল পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে গেছে।

٤٤ قُلْ يَأَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِي دِيْنِكُم غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا اَهْوَاءَ قَوْمٍ قَنْ ضَلَّوْا السبيلء

৭৮. বনী ইসরাঈলদের আরো যারা (মাসীহের ব্যাপারে আল্লাহর এ ঘোষণা) অস্বীকার করেছে, তাদের ওপর عَلَى لِسَانِ دَاوِدَ وَعِيْسَى ابْن مَوْيَرَه ذَلِكَ माউन ও মারইয়াম পুত্র ঈসার মুখ থেকে অভিশাপ দেয়া হয়েছে: কেননা, তারা আল্লাহর বিরুদ্ধে বিদ্রোহ করেছে এবং সীমালংঘন করেছে।

٨٠ لُعِنَ الَّذِيثِيَ كَفَرُوْا مِنَّ بَنِيْ إِشْرَاءِيْلَ بِهَا عَصَوْ ا وَّكَانُوْ ا يَعْتَلُوْنَ

৭৯. তারা যেসব গর্হিত কান্ধ করতো তা থেকে তারা একে অপরকে বারণ করতো না, তারা যা করতো নিসন্দেহে তা ছিলো নিক্ষ।

49 كَانُوْ ا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مَّنْكُر فَعَلُوهُ d لَبِئْسَ مَا كَانُوْ إِيَفْعَلُوْنَ

৮০. তুমি তাদের মাঝে এমন বহু লোককে দেখতে পাবে, যারা (ঈমানদারদের বদলে) কাফেরদের সাথে বন্ধুত্ব করতেই বেশী আগ্রহী, অবশ্য তারা নিজেরা যা কিছু অর্জন করে সামনে পাঠিয়েছে তাও অতি নিকৃষ্ট, এ কারণে আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর ক্রোধানিত হয়েছেন এ লোকেরা চিরকাল আযাবেই নিমঞ্জিত থাকবে।

٨٠ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُرْ يَتَوَلَّوْنَ الَّنِيْنَ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِرْ وَفِي الْعَنَابِ مُ

٥١ وَلَوْ كَانُوا يُوْمِنُونَ بِاللّهِ وَالنَّبِيّ وَمَا ٤ अंतो वाहार जायाना, (जांत्र) नवी وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللّهِ وَالنَّبِيّ وَمَا তাঁর প্রতি যা নাযিল করা হয়েছে তার প্রতি যথায়থ ঈমান أَنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَلُوهُمُرُ أَوْلِيَاءً وَلَكِنَّ आनरा, जारल बता कारकतरनत वक् शिरारव श्रश করতো না, কিন্তু তাদের তো অধিকাংশ লোকই হচ্ছে গুনাহগার।

كَثِيرًا مِّنْهُمْ فَسَقُونَ

৮২. অবশ্যই তোমরা ঈমানদারদের সাথে শক্রতার ব্যাপারে ইহুদী ও মোশরেকদেরই বেশী কঠোর (দেখতে) পাবে, (অপর্দিকে) মোমেনদের সাথে বন্ধত্তের ব্যাপারে তোমরা সেসব লোককে (কিছুটা) নিকটতর পাবে, যারা বলেছে আমরা খৃষ্টান; এটা এই কারণে যে, (তখনো) তাদের মধ্যে ধর্মীয় পন্ডিত ব্যক্তি ও সংসারবিরাগী ফকীর-দরবেশরা মজুদ ছিলো, অবশ্যই এ ব্যক্তিরা অহংকার করে না।

٨٢ لَتَجِنَنَّ أَشَلَّ النَّاسِ عَنَ اوَةً لَّلَّانِيْنَ أُمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِينَ آشُرَكُوْا عِ وَلَتَجِنَنَّ أَمْرُكُوْا عِ وَلَتَجِنَنَّ ٱقْرَبَهُمْ مُّودَّةً لِّلَّانِيْنَ أَمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْا انَّا نَصِيء ذلكَ بِأَنَّ مِنْهُر ۚ ق وَرُهْبَانًا وْ أَنَّهُمْ لَا يَسْتَكُبُونَ

৫ সুরা আল মায়েদা

772

৮৩. রসুলের ওপর যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তা যখন এরা শোনে, তখন সত্য চেনার কারণে তুমি এদের অনেকের চোখকেই দেখতে পাবে অশ্রুসজল, (নিবেদিত হয়ে) তারা বলে ওঠে, হে আমাদের মালিক, আমরা مِيَ الْحَقِّ ءَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَمَنَّا فَاكْتَبْنَا مَعْ अयान এतिहि, जूमि जायारित (नाम) जराजुत ومن الحقق ع يَقُولُون رَبَّنَا أَمَنَّا فَاكْتَبْنَا مَعْ الْحَدَى الْمَعْلَى الْحَدَى ال সাক্ষ্যদাতাদের দলে লিখে নাও।

٨٣ وَإِذَا سَيِعُوْا مَا ٱنْزِلَ إِلَى الرَّسُوْل

تَرْى أَعْيُنَهُرْ تَغِيْضٌ مِنَ النَّامْعِ مِمَّا عَرَفُوْا

৮৪. আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে আমাদের কাছে যা কিছু সত্য এসেছে তার ওপর আমরা ঈমান আনবো না কেন্য (অথচ) আমরা এই প্রত্যাশা করি যে, আমাদের মালিক আমাদের সংকর্মশীলদের দলভুক্ত করে দেবেন.

٨٣ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَكَا مِنَ الْحَقِّ لا وَنَطْهَعُ أَنْ يَّنْ خِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْ إِ

৮৫ অতপর তারা যা বললো সেজন্যে আল্লাহ তায়ালা সন্তুষ্ট হয়ে (পরকালে) তাদের এমন এক জান্লাত দান করবেন, যার তলদেশ দিয়ে (অমীয়) ঝর্ণাধারা প্রবাহমান থাকবে, সেখানে তারা হবে চিরস্থায়ী: আর এটা হচ্ছে নেককার লোকদের (যথার্থ) পুরস্কার।

٨٥ فَاَثَابَهُرُ اللَّهُ بِهَا قَالُوْا جَنَّتِ تَجُرِي مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيْهَا ء وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْهُدُسِنِينَ

৮৬. অপরদিকে যারা কৃফরী করেছে এবং আমার আয়াতগুলো যারা মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, তারা সবাই হবে জাহানামের অধিবাসী।

٨٦ وَالَّانِيْنَ كَفُووْا وَكَنَّابُوْا بِأَيْتِنَا أُولَٰئِكَ أشعب الجعيرع

৮৭, হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে যে পবিত্র জিনিসগুলো হালাল করে দিয়েছেন. তোমরা সেগুলো (নিজেদের জন্যে) হারাম করে নিয়ো না. আর কখনো (হারামের) সীমা লংঘন করো না: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সীমালংঘনকারীদের অপছন্দ করেন।

٨٠ يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبْسِ مَّ أَحَلَّ اللَّهُ لَكُرْ وَكَا تَعْتَكُوْا مَ إِنَّ اللَّهَ كَا يُحبُّ الْهُعْتَرِيْنَ

৮৮. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে হালাল ও পবিত্র রেযেক দান করেছেন তোমরা তা খাও এবং (এ ব্যাপারে) সে আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, যাঁর ওপর তোমরা ঈমান এনেছো।

٨٨ وَكُلُوا مِيًّا رَزَقَكُمُ ۖ اللَّهُ حَلَّلُا طَيِّبًا س وَّاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي ٓ أَنْتُرْ بِهِ مُؤْمِنُونَ

৮৯. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের অর্থহীন শপথের জন্যে তোমাদের পাকড়াও করবেন না, কিন্তু যে শপথ তোমরা জেনে-বুঝে করো তার ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তোমাদের পাকড়াও করবেন, অতপর তার কাফফারা হচ্ছে দশ জন গরীব মেসকীনকে মধ্যম মানের খাবার খাওয়ানো, যা তোমরা (সচরাচর) নিজেদের পরিবার পরিজনদের খাইয়ে থাকো. কিংবা তাদের পোশাক দান করা, অথবা একজন ক্রীতদাস মুক্ত করে দেয়া: যে ব্যক্তি (এর কোনোটাই) পাবে না, তার জন্যে (কাফফারা হচ্ছে) তিন দিন রোযা (রাখা): শপথ ভাঙলে তোমাদের (শপথ ভাংগার) এ হচ্ছে কাফফারা: (অতএব) তোমরা তোমাদের শপথসমূহ রক্ষা করো; আল্লাহ তায়ালা এভাবেই তাঁর আয়াতসমূহ তোমাদের কাছে বিশদভাবে বর্ণনা করেন যাতে করে তোমরা কতজ্ঞতা জ্ঞাপন করতে পারো।

٨٩ لَا يُؤَاخِنُكُرُ اللَّهُ بِاللَّفُو فِيٓ ٱيْهَانِكُرْ وَلَٰكِنْ يَّوْ المِنُكُيرُ بِهَا عَقَّلْ تُتَّرُ الْإَيْهَانَ ج فَكُفًّا رَتُهُ إِطْعَامٌ عَشَرَة مَسْكِيْنَ مِنْ أَوْسَط مَا تُطْعِبُوْنَ آهْلِيْكُمْ آوْ كِسُوتُهُمْ آوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ﴿ فَهَنْ لَّمْ يَجِنْ فَصِيَامٌ ثَلْثَة أَيًّا ﴾ و ذُلِكَ كَفَّارَةً أَيْهَانكُرْ إِذَا حَلَفْتُرْ ﴿ وَاحْفَظُواْ أَيْهَانَكُورْ م كَنْ لِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُورُ إيله لَعَلَّكُمْ تَشْكُونَ

৯০. হে মানুষ্ তোমরা যারা ঈমান এনেছো (তোমরা জেনে রেখো), মদ, জুয়া, পূজার বেদী ও ভাগ্যনির্ণায়ক শর হচ্ছে ঘণিত শয়তানের কাজ অতএব তোমরা তা (সম্পূর্ণরূপে) বর্জন করো। আশা করা যায় তোমরা মুক্তি পেয়ে যাবে।

٩٠ يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْآ إِنَّهَا الْخَمْرُ وَالْهَيْسِرُ وَالْإَنْصَابُ وَالْإَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَهَلِ الشَّيْطِي فَاجْتَنبُوهُ لَعَلَّكُم ۚ تُفْلَكُونَ

৫ সরা আল মায়েদা

666

৯১. শয়তান এই মদ ও জুয়ার মধ্যে (ফেলে) তোমাদের মাঝে শক্রতা ও বিদ্বেষ সৃষ্টি করে দিতে চায় এবং এভাবে সে তোমাদের আল্লাহ তায়ালার স্মরণ ও নামায থেকে দুরে সরিয়ে রাখে, তোমরা কি (এ কাজ থেকে) ফিরে আসবে নাগ

٩١ إِنَّهَا يُرِبْلُ الشَّيْطَٰنُ أَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُرُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَهْرِ وَالْهَيْسِرِ وَيَصُدُّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَن الصَّلُوةِ عِ فَهَلْ أنتر منتهون

৯২. তোমরা (সর্ববিষয়ে) আল্লাহর আনুগত্য করো, আনুগত্য করো (তার) রস্লের, (মদ ও জুয়ার ধ্বংসকারীতা থেকে) সতর্ক থেকো, আর তোমরা যদি (রস্লের নির্দেশনা থেকে) মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে জেনে রাখো, আমার রসূলের দায়িত্ব হচ্ছে সুস্পষ্টভাবে (আমার কথাগুলো) পৌছে দেয়া।

٩٢ وَ أَطِيْعُوا اللَّهُ وَ أَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْنَارُوْا ء فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْا أَنَّهَا عَلَى رَسُوْلِنَا الْبَلْغُ الْمُبِيْنَ

৯৩. যারা ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে. (এ নিষেধাজ্ঞা জারির আগে) তারা যা কিছ খেয়েছে তার জন্যে তাদের ওপর কোনোই গুনাহ নেই. (হাঁ, ভবিষ্যতে) যদি তারা সাবধান থাকে. (আল্লাহর ওপর) ঈমান আনে এবং নেক আমল করে, অতপর (আল্লাহ তায়ালার নিষেধ থেকে) তারা সতর্ক থাকে. (একইভাবে যতোক্ষণ পর্যস্ত) তারা ঈমান আনবে ও নেক আমল করবে, অতপর আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করবে ও সততার নীতি অবলম্বন করতে থাকবে (আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাদের ক্ষমা করে দেবেন, কেননা): আল্লাহ তায়ালা সংকর্মশীল মানুষদের ভালোবাসেন

٩٣ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ أَمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحُسِ جُنَاحٌ فِيْهَا طَعِهُوْ آ إِذَا مَا اتَّقَوْا وَّامَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ ثُرَّ اتَّقَوْا وَّامَنُوْا ثُـرٌ اتَّـقَوْا وَّاهْسَنُوْا ء وَاللَّهُ يُحِـد الْهُحُسنيْنَ ع

৯৪. হে ঈমানদার লোকেরা, (এহরাম বাঁধা অবস্থায়) আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই এমন কিছু শিকারের বস্তু দিয়ে তোমাদের পরীক্ষা নেবেন, যেগুলো তোমরা সহজেই নিজেদের হাত ও বর্শা দ্বারা ধরতে পারো, যেন আল্লাহ المُعْلَرُ اللَّهُ مَنْ يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ عَ فَمَنِ ই وَمَنَا اللَّهُ مَنْ يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ عَ فَمَنِ কেউ সীমালংঘন করে, তার জন্যে যন্ত্রণাদায়ক আযাব রয়েছে।

٩٣ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُرُ اللَّهُ بِشَىْءٍ مِّنَ الصَّيْلِ تَنَالُهٌ ۖ آيْلِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ اعْتَىٰى بَعْنَ ذٰلِكَ فَلَدُ عَنَ ابُ ٱلْيُرِّ

৯৫. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, এহরাম (বাঁধা) অবস্থায় কখনো শিকার হত্যা করো না, যদি তোমাদের কেউ (এ অবস্থায়) জেনে-বুঝে কেউ তাকে হত্যা করে (তার জন্যে এর বিনিময় হচ্ছে), সে যে জন্তু হত্যা করেছে তার সমান পর্যায়ের একটি গৃহপালিত জম্ব কোরবানী হিসেবে কাবায় পৌছে দেবে. (যার) ফয়সালা করবে তোমাদের দু'জন ন্যায়বান বিচারক ব্যক্তি, কিংবা (তার জন্যে) কাফফারা হবে (কয়েকজন) গরীব -মেসকীনকে খাওয়ানো অথবা সমপরিমাণ রোযা রাখা, যাতে করে সে আপন কতকর্মের স্বাদ গ্রহণ করতে সক্ষম হয়, (এ নিষেধাজ্ঞা জারির আগে) যা কিছু গত হয়ে গেছে আল্লাহ তায়ালা তা মাফ করে দিয়েছেন; কিন্তু (এর পর) যদি কেউ (এর) عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّه পুনরাবৃত্তি করে, তাহলে আল্লাহ তায়ালা (অবশ্যই) তার কাছ থেকে প্রতিশোধ নেবেন; আর আল্লাহ তায়ালা পরাক্রমশালী ও প্রতিশোধ গ্রহণে প্রবল শক্তিমান।

9۵ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْنَ وَ اَنْتُرْ حُرُمٌ م وَمَنْ قَتَلَهٌ مِنْكُرْ مُّتَعَيِّدًا نَجَزَاءً مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَر يَحْكُرُ بِهِ ذَوَا عَنْ لِ مِّنْكُرْ هَنْ يًا ۖ بلغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةً ۗ طَعَامٌ مَسْكِيْنَ أَوْ عَنْالُ ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَنُوْقَ فَيَنْتَقِرُ اللَّهُ مِنْهُ ، وَاللَّهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَا]

জন্যে সমুদ্রের শিকার হালাল করা ৯৬. তোমাদের হয়েছে এবং তার খাবার হচ্ছে তোমাদের জন্যে ও

٩٦ أُمِلُّ لَكُرْ مَيْلُ الْبَحْرِ وَطَعَامُةً مَتَاعًا

৫ সুরা আল মায়েদা

130

পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ

(সমুদ্রের) পর্যটকদের জন্যে (উৎকষ্ট) সম্পদ, (মনে রাখবে), যতোক্ষণ পর্যন্ত তোমরা এহরাম (বাঁধা) অবস্থায় থাকবে, ততোক্ষণ পর্যন্ত (তথু) স্থলভাগের শিকারই তোমাদের জন্যে হারাম থাকবে: তোমরা ভয় করো আল্লাহ তায়ালাকে, যাঁর সমীপে তোমাদের সবাইকে জডো করা হবে।

لَّكُرْ وَلِلسَّيَّارَةَ ع وَحُرّاً عَلَيْكُرْ صَيْنُ الْبَرّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ﴿ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي ٓ الَّذِي تُحشَرُونَ

৯৭. আল্লাহ তায়ালা (খানায়ে) কাবাকে সম্মানিত করেছেন মানব জাতির জন্যে (তার) ভিত্তি হিসেবে (তিনি একে প্রতিষ্ঠা করেছেন), একইভাবে তিনি সম্মানিত করেছেন (হজ্জের) পবিত্র মাসগুলোকে, কোরবানীর জ্ঞুগুলোকে طعر (﴿ كَاللَّهُ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا في عَالَمُ عَالَمُ عَاللَّهُ عَلَمُ ﴿ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَمُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَمُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَى عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَّا عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمُ عَلَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَّا عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَّهُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلِيكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُمُ عَلِيكُمُ عَلِي (বিধান) এ জন্যেই (দেয়া হয়েছে) যাতে করে তোমরা (এ কথা) জেনে নিতে পারো যে, আকাশমালা ও পৃথিবীর যেখানে যা কিছু আছে আল্লাহ তায়ালা তা সবই জানেন. আর নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা সব বিষয়ে সর্বজ্ঞ।

٩٤ جَعَلَ اللَّهُ الْكَفْبَةَ الْبَيْتِ الْحَرَا } قيهًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَا) وَالْهَنَّى وَالْقَلَّائِنَ عَ السَّبُوٰسِ وَمَا فِي الْإَرْضِ وَاَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرٌ

৯৮. তোমরা জেনে রাখো, আল্লাহ তায়ালা শান্তিদানের ব্যাপারে (যেমনি) কঠোর, (তেমনি পুরস্কারের বেলায়) আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

٩٨ إِعْلَهُوْ ٓ أَنَّ اللَّهُ شَرِيْلُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللهُ غَفُورٌ رَّحِيمَ ا

৯৯. রসলের দায়িত্ব (হেদায়াতের বাণী) পৌছে দেয়া ছাড়া আর কিছুই নয়, আর তোমরা যা কিছু প্রকাশ করো, যা কিছ গোপন রাখো, আল্লাহ তায়ালা তা সবই জানেন।

٩٩ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ ﴿ وَاللَّهُ يَعْلَرُ مَا تُبْلُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ

১০০. (হে রসুল.) তুমি বলো. পাক এবং নাপাক জিনিস কখনো সমান হতে পারে না, নাপাক জিনিসের প্রাচুর্য যতোই তোমাকে চমৎকৃত কৰুক না কেন! অতএব হে জ্ঞানবান মানুষরা, তোমরা আল্লাহকে ভয় করো, (আশা করা যায়) তোমরা সফলকাম হতে পারবে।

١٠٠ قُلُ لا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَكُوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْنِ } فَاتَّقُوا اللَّهَ يَأُولِي الْإَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ع

১০১. হে ঈমানদার লোকেরা. (আল্লাহর নবীর কাছে) এমন সব বিষয় নিয়ে প্রশ্ন করো না, যার জবাব প্রকাশ করা হলে (তাতে) তোমাদের কষ্ট হবে, অবশ্য কোরআন নাযিল হবার মৃহর্তে যদি তোমরা সে প্রশ্ন করো, তাহলে তা তোমাদের কাছে প্রকাশ করা হবে: (এ বিধান জারির) আগে যা কিছু হয়ে গেছে তা আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মাফ করে দিয়েছেন: কেননা আল্লাহ তায়ালা পরম ক্ষমাশীল ও ধৈর্যশীল।

١٠١ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا لَا تَسْنَلُوْا عَيْ أَشْيَاءُ إِنْ تُبْلَ لَكُرْ تَسُؤْكُوْ عِ وَإِنْ تَسْئَلُوْ إ عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْأِنُ تُبْنَ لَكُرْ ﴿ عَفَا اللهُ عَنْهَا ء وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلَيْمِ

১০২. তোমাদের আগেও কিছু সম্প্রদায় (তাদের নবীকে এ ধরনের) প্রশ্ন করতো, কিন্তু এর পরক্ষণেই তারা তা অমান্য করতে শুরু করলো।

١٠٢ قَلْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلُكُم ثُمِّ أَصْبَدُواْ بِهَا كَفِرِيْنَ

১০৩, দেবতার উদ্দেশে প্রেরিত (কান ছেঁডা) 'বহীরা'. (দেবতার নামে উৎসর্গীকৃত) 'সায়েবা', (দেবতার উদ্দেশে ছেড়ে দেয়া নর ও মাদী বাচ্চা প্রসবকারী) 'ওয়াসীলা' ও (দেবতার উদ্দেশে ছেড়ে দেয়া দশ বাচ্চা প্রসবকারিণী উষ্ট্রী) 'হাম'– এর কোনোটাই কিন্তু আল্লাহ তায়ালা নির্দিষ্ট করে দেননি, বরং কাফেররাই (এসব কুসংশ্বার দিয়ে) আল্লাহর ওপর মিথ্যা আরোপ করে, আর এদের অধিকাংশ লোক তো (সত্য-মিথ্যার তফাৎটুকুও) উপলব্ধি করে না।

١٠٣ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ الْحِيْرَةِ وَّلَا سَأَنْبَةَ وَّلَّا وَمِيْلَةٍ وَّلَا مَا } لا وَّلْكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللَّهِ الْكَابِ وَٱكْثَرُهُمْ لَا يَعْقُلُونَ

১০৪. যখন এদের বলা হয়, আল্লাহ তায়ালা যা কিছু २०४. पपन धामत पना २४, आक्षार जायाना या किছू الله مَا اَنْزَلَ مَا اَنْزَلَ اللهُمْ تَعَالُوا إِلَى مَا اَنْزَل नायिन करतिहरू राजिमता रामिर्क धासा, (धासा जात) اَوْزَلَ اللهُمْ تَعَالُوا إِلَى مَا اَنْزَلَ

৫ সুরা আল মায়েদা

মনবিশ ২

রসলের দিকে, (তখন) তারা বলে, আমরা আমাদের বাপ-দাদাদের যে বিধানের ওপর পেয়েছি তা-ই আমাদের জন্যে যথেষ্ট: যদিও তাদের বাপ-দাদারা (সত্য-মিথ্যা সম্পর্কে) কিছুই জানতো না এবং তারা হেদায়াতের পথেও চলতোনা।

اللَّهُ وَإِلَى الرُّسُولِ قَالُواْ مَسْبُنَا مَا وَجَلْنَا عَلَبْ الْبَاءَنَا ء أَوَ لَوْ كَانَ أَبَآؤُهُو ۚ لَا يَعْلَهُوْنَ شَيْئًا و لا يَهْتَلُونَ

১০৫. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমাদের নিজেদের দায়িত্ব তোমাদের নিজেদের ওপর, অন্য (কোনো) ব্যক্তি যদি গোমরাহ হয়ে গিয়ে থাকে তাহলে সে পথভ্রষ্ট ব্যক্তি তোমাদের কোনো ক্ষতি সাধন করতে পারবে না যতোক্ষণ পর্যন্ত তোমরা নিজেরা সঠিক পথের ওপর চলতে থাকবে: তোমাদের ফেরার জায়গা (কিন্তু) আল্লাহর দিকেই, অতপর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (সেদিন) বলে দেবেন তোমরা কে কী করছিলে!

١٠٥ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمُّنُوا عَلَيْكُرْ أَنْفُسَكُرْ } لَا يَضُرُّكُمْ شَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَنَيْتُمْ ﴿ إِلَى اللَّهِ مُعُكُرْ جَهِيْعًا فَيُنَبِّكُمُ بِهَا كُنْتُرْ تَعْهَلُونَ

১০৬. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমাদের কারো যখন মৃত্যু (সময়) এসে উপনীত হয়, ওসিয়ত করার এ মৃহুর্তে তোমরা তোমাদের মধ্য থেকে দু'জন ন্যায়পরায়ণ মানুষকে সাক্ষী বানিয়ে রাখবে, আর যদি ভোমরা প্রবাসে থাকো এবং এ সময় যদি তোমাদের ওপর মৃত্যুর বিপদ এসে পড়ে, তখন বাইরের লোকদের মধ্য থেকে দু'জন ব্যক্তিকে সাক্ষী বানিয়ে নেবে; (পরে যদি এ ব্যাপারে) ভোমাদের কোনো সন্দেহ দেখা দেয় তাহলে (সাক্ষী) দু'জনকে নামাযের পর অটিকে রাখবে, অতপর তারা আল্লাহর নামে কসম করে বলবে, আমরা কোনো স্বার্থের খাতিরে এ সাক্ষ্য বিক্রি করবো না, (এর কোনো পক্ষ আমাদের) ঘনিষ্ঠ আত্মীয় হলেও (নয়), আমরা আল্লাহর (জন্যে এ) সাক্ষ্য গোপন করবো না. (কেননা) আমরা যদি তেমন কিছু করি তাহলে আমরা গুনাহগারদের দলে শামিল হয়ে যাবো।

١٠٦ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُرْ إِذَا حَضَرَ آمَن كُمرُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنَى ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ أَخَرْنِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُرْ فَوَ بَتُرْفِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُرْ مُصِيْبَةً الْهَوْنِ مَ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ المِثْلُوة فَيُقْسِمٰنِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُرْ لَا نَشْتَرَى بِهِ ثَهَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُوْبُى لِا وَلَا نَكْتُرُ شَهَادَةَ الله إِنَّا إِذًا لَّهِيَ الْأَثِهِيْنَ

১০৭. পরে যদি একথা প্রকাশ পায়, এ (বাইরের) দু'জন সাক্ষী অপরাধে লিগু ছিলো, তাহলে আগে (যাদের) স্বার্থহানি ঘটেছিলো তাদের মধ্য থেকে দু'জন সাক্ষী তাদের স্থলাভিষিক্ত হবে, তারা (এসে) আল্লাহর নামে শপথ করে বলবে, আমাদের সাক্ষ্য অবশ্যই তাদের সাক্ষ্য অপেক্ষা বেশী সত্যভিত্তিক (হবে), আমরা (সাক্ষ্যের ব্যাপারে) সীমালংঘন করিনি (আমরা যদি তেমনটি করি). তাহলে আমরা যালেমদের দলভুক্ত হয়ে পড়বো।

١٠٤ فَإِنْ عُثِرَ عَلَّى أَنَّهُهَا اسْتَحَقَّآ إِثْهًا فَأَغَرُٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِرُ الْأَوْلَيْنِ فَيُقْسِمِنِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَآ أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَنَيْنَا ﴿ إِنَّا إِذًّا

১০৮. এ (পদ্ধতি)-তে বেশী আশা করা যায় যে, তারা ঠিক ঠিক সাক্ষ্য নিয়ে আসবে অথবা তারা অন্ততপক্ষে এ ভয় করবে যে, (তাদের) কসম আবার অন্য কারো কসম দারা বাতিল করে দেয়া হবে: তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং (রসূলের কথা) শোনো; আল্লাহ তায়ালা कथरना পाপী লোকদের সৎপথে পরিচালিত করেন না।

١٠٨ ذٰلِكَ اَدْنَى اَنْ يَاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلَى وَجْهِمَا ۖ أَوْ يَخَافُوا ۖ أَنْ تُرَدُّ أَيْمَانُّ ۗ بَعْنَ أَيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهُ وَاشْهَعُوا ﴿ وَاللَّهُ لَا ﴿ ایمانِمِر النوا ، – ر یَمْنِی الْقُوْاَ الْفُسِقِیْنَ ع

১০৯. যেদিন আল্লাহ তায়ালা সকল রস্লকে একত্রিত করে জিজ্জেস করবেন, তোমাদের (দাওয়াতের প্রতি मानुषानत शक (थरक) किভाব नाषा रामहाला; أُجِبُتُهُ عَالُوا لا عَلْهُ لَنَا اللَّهَ الْكَ الْكَ الْكَ آنَى عَلَّر তারা বলবে, আমরা তো (তার) কিছুই জ্ঞানি না; যাবতীয় গায়বের বিষয়ে তুমিই পরিজ্ঞাত।

١٠٩ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا

৫ সূরা আল মায়েদা

১১০. (স্মরণ করো.) যখন আল্লাহ তায়ালা বললেন, হে মাইরয়াম-পুত্র ঈসা, আমার সেই নেয়ামতের কথা স্বরণ করো যা আমি তোমাকে ও তোমার মাকে দান করেছিলাম, যখন আমি পবিত্র আত্মা দিয়ে তোমাকে সাহায্য করেছিলাম। তুমি মানুষের সাথে (বেমনি) দোলনায় থাকতে কথা বলতে (তেমনি বলতে) পরিণত বয়সেও, আমি যখন তোমাকে কেতাব, জ্ঞান-বিজ্ঞান, তাওরাত ও ইনজীল দান করেছিলাম. যখন তুমি আমারই হুকুমে কাঁচা মাটি দিয়ে পাখি সদৃশ আকৃতি বানাতে, অতপর তাতে ফুঁ দিতে, আর আমার আদেশক্রমেই তা পাখী হয়ে যেতো, আমারই হুকুমে তুমি জন্মান্ধ ও কুষ্ঠ রোগীকে নিরাময় করে দিতে, আমারই আদেশে তুমি মৃতদের (কবর থেকে) বের করে আনতে, পরে যখন ভূমি তাদের কাছে (নবুওতের) এসব নিদর্শন নিয়ে পৌছলে. তখন তাদের মধ্যে যারা (তোমাকে) অস্বীকার করেছিলো তারা বললো, এ নিদর্শনগুলো যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়, তখন আমিই তোমার (কোনো অনিষ্ট সাধন) থেকে বনী ইসরাঈলদের নিবৃত্ত করে রেখেছিলাম।

اا إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلَى وَالِلَّاتِكَ رِ إِذْ أَيَّلَاتًكَ بِرُوحِ الْقُلْسِ فَ تُكَيِّرُ النَّاسَ فِي الْمَهْلِ وَكَهْلًا عَ وَإِذْ عَلَّهْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْهَةَ وَلَقَّوْرُنةَ وَالْإِنْجِيْلَ عَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الْمَهْلِ وَالتَّوْرُنةَ وَالْإِنْجِيْلَ عَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ اللَّهْ فِيهَا اللَّيْنِ كَمَيْنَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِيْ فَتَنْفُعُ فِيهَا اللَّيْنِ كَمَيْنَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْأَكْبَ اللَّيْنِ فَتَنْفُعُ فِيهَا وَالْإِنْمِي وَالْمَوْتُي وَالْمَوْتُي وَالْمَوْتُي وَالْمَوْتُي وَالْمَوْتُي بِإِذْنِيْ وَالْمَوْتُي الْمَوْتُي وَالْمَوْتُي بِإِذْنِيْ كَفُرُوا مِنْمُرُ وَالْمَوْتُي إِلَا لِيْنَ اللّهُ وَالْمَوْتُي اللّهُ وَالْمَوْتُي إِلْمَ الْمِيْنَ وَالْمَوْتُي اللّهُ وَلَا مِنْهُرُ وَا مِنْهُرُ وَا مِنْهُرُ وَا مِنْهُرُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَالْمَوْتُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَالْمَالَ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللللّهُ اللّهُ اللللللّهُ الللللللّهُ اللّهُ الللللللللللللللللللللللللل

১১১. (আরো শরণ করো,) যখন আমি হাওয়ারীদের (অন্তরে) এ প্রেরণা দিয়েছিলাম যে, তোমরা আমার প্রতি ও আমার রসূলের প্রতি ঈমান আনো, তারা বললো (হে মালিক), আমরা (তোমার ওপর) ঈমান আনলাম, তুমি (এ কথার) সাক্ষ্য থেকো যে, আমরা তোমার অনুগত ছিলাম।

الا وَإِذْ اَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّيَ اَنَ أَمِنُوا بِيَ وَبِرَسُولِيْ أِنَ أَمِنُوا بِيَ وَيَرَسُولِيْ عَالُوا الْمِنَّا وَاشْهَلُ بِاَتَّنَا مُسْلِبُونَ
 مُسْلِبُونَ

১১২. (অতপর) যখন এই হাওয়ারীদের দল বললো, হে মারইয়াম-পুত্র ঈসা! তোমার মালিক কি আসমান থেকে খাবার সজ্জিত একটি টেবিল আমাদের জন্যে পাঠাতে পারেন? ঈসা জবাব দিলো, (সত্যিই) যদি তোমরা মোমেন হয়ে থাকো ভাহলে (কোনো অহেতৃক দাবী পেশ করার ব্যাপারে) তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো।

اإذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يَعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
 مَلْ يَشْتَطِيْعُ رَبُّكَ أَنْ يَّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَانِنَةً
 مِّنَ السَّمَاءِ * قَالَ اتَّقُوا الله إِنْ كُنْتُرْ
 مَّوْمِنِيْنَ

১১৩. তারা বললো, আমরা (তথু এটুকুই) চাই যে, আল্লাহর পাঠানো সেই (টেবিল) থেকে (কিছু) খাবার খেতে, এতে আমাদের মন পরিতৃপ্ত হয়ে যাবে, (তাছাড়া এতে করে) আমরা এও জানতে পারবো তুমি আমাদের কাছে সঠিক কথা বলেছো, আমরা নিজেরাও এর ওপর সাক্ষী হবো।

اللهِ عَالُوا نُرِيْلُ أِنْ تَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْهَنِيَّ فَكُوْبَ عَلَيْهَا وَتَطْهَنِيَّ فَكُوْبَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّهِرِيْنَ فَلَيْهَا مِنَ الشَّهِرِيْنَ

১১৪. মারইয়াম-পুত্র ঈসা (আল্লাহর দরবারে) বললো, হে আল্লাহ, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের জন্যে আসমান থেকে খাবার সজ্জিত একটি টেবিল পাঠাও, এ হবে আমাদের জন্যে, আমাদের পূর্ববর্তী ও আমাদের পরবর্তীদের জন্যে তোমার কাছ থেকে (পাঠানো) একটি আনন্দোৎসব; (সর্বোপরি এটা) হবে তোমার (কুদরতের একটি) নিদর্শন, তুমি আমাদের রেযেক দাও, কেননা তুমিই হচ্ছো উত্তম রেযেকদাতা।

اللهُورُّ رَبَّنَا مَا لَهُ مَرْيَرَ اللهُورُّ رَبَّنَا الْهُورُّ رَبَّنَا الْمُورُّ رَبَّنَا الْمُورُّ وَبَنَا الْمُولُ عَلَيْنَا مَا لِنَا مِّنِنَا أَنِي السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيْدًا لِآوَلِنَا وَأَيْدً مِّنْكَ عَ وَارْزُقْنَا وَأَيْدً مِّنْكَ عَ وَارْزُقْنَا وَأَنْدُ مِنْكَ عَ وَارْزُقْنَا وَأَنْدُ مِنْكَ عَ وَارْزُقْنَا وَأَنْدُ مِنْكَ عَ وَارْزُقْنَا وَأَنْدُ مِنْكَ عَلَى الرِّزِقِيْنَ

১১৫. আল্লাহ তায়ালা বললেন, হাঁ, আমি তোমাদের ওপর (অচিরেই) তা পাঠাচ্ছি, তবে এরপরও যদি তোমাদের কেউ (আমার ক্ষমতা) অস্বীকার করে তাহলে তাকে আমি

110 قَالَ اللَّهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُرْ ۽ فَهَنَ يُّكْفُرُ بَعْلُ مِنْكُرْ فَاِنِّيْ ۖ أُعَنِّبُهُ عَنَابًا لَّإَ

এমন কঠিন শান্তি দেবো, যা আমি সৃষ্টিকুলের কাউকেই أُعَنَّابُهُ أَحَلًا مِّنَ الْعُلِّمِينَ ع আর দেবো না।

১১৬. যখন আল্লাহ তায়ালা বলবেন, হে মারইয়াম পুত্র ঈসা! তুমি কি কখনো (তোমার) লোকদের (একথা) বলেছিলে যে, তোমরা আল্লাহকে বাদ দিয়ে আমাকে ও আমার মাকে 'ইলাহ' বানিয়ে নাও! (এ কথার উত্তরে) সে বলবে (হে আল্লাহ), সমগ্র পবিত্রতা তোমার জন্যে, এমন কোনো কথা আমার পক্ষে শোভা পেতো না, যে কথা বলার আমার কোনো অধিকারই ছিলো না, যদি আমি তাদের এমন কোনো কথা বলতামই, তাহলে তুমি তো অবশ্যই তা জানতে; নিশ্যুই তুমি তো জানো আমার মনে যা কিছু আছে, কিন্তু আমি তো জানি না তোমার মনে কি আছে: যাবতীয় গায়ব অবশ্যই তুমি ভালো করে অবগত আছো।

১১৭, তুমি আমাকে যা কিছু বলতে হুকুম করেছো আমি তো তাদের তাছাড়া (অন্য) কিছুই বলিনি, (আর সে কথা ছিলো), তোমরা তথু আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করো, যিনি আমার মালিক, ভোমাদেরও মালিক, আমি যতোদিন তাদের মধ্যে ছিলাম ততোদিন তো আমি (নিজেই তাদের কার্যকলাপের) সাক্ষী ছিলাম, কিন্তু যখন তুমি আমাকে তুলে নিলে তখন তুমিই ছিলে তাদের ওপর একক নেগাহবান, যাবতীয় ক্রিয়াকর্মের তুমিই ছিলে একক খবরদার ।

১১৮. (আজ) তাদের অপরাধের জন্যে তুমি যদি তাদের শাস্তি দাও (দিতে পারো), কারণ তারা তো তোমারই বান্দা, আর তুমি যদি তাদের ক্ষমা করে দাও (ভাও ভোমার মৰ্জি), অবশ্যই তুমি হচ্ছো বিপুল ক্ষমতাশালী, প্ৰজ্ঞাময়।

১১৯. আল্লাহ তায়ালা বলবেন (হাঁ), এ হচ্ছে সেদিন, যেদিন সভ্যাশ্রয়ী ব্যক্তিরা তাদের সততার জন্যে (প্রচুর) কল্যাণ লাভ করবে: (আর সে কল্যাণ হচ্ছে,) তাদের জন্যে এমন সুরম্য জানাত, যার তলদেশ দিয়ে অমীয় ঝর্ণাধারা প্রবাহিত থাকবে, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সম্ভুষ্ট থাকবেন এবং তারাও আল্পাহর ওপর সম্ভুষ্ট থাকবে: (বস্তুত) এ হচ্ছে এক মহাসাফল্য।

১২০, আকাশমালা ও যমীন এবং এর মধ্যবর্তী সমগ্র স্ষ্টিলোকের ভেতর যা কিছু আছে তার সমুদয় বাদশাহী তো আল্লাহর জন্যেই এবং তিনিই সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান !

> সুরা আল আনয়াম মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ১৬৫, রুকু ২০ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

وَ الْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُبُ وَ النُّورَ لَمْ ثُرَّ अाल्लार जार्शनात करत, जाता (প্रकातास्टरत এत وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُبُ وَ النَّوْرَ لَمْ ثُرَّ عَلَى السَّالَ السَّالَ اللَّهُ اللَّالَّا اللَّاللَّالَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّالَّ অন্ধকারসমূহ ও আলো সৃষ্টি করেছেন; অতপর যারা দ্বারা অন্য কিছকেই) তাদের মালিকের সমকক্ষ হিসেবে দাঁড করায়।

١١٦ وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَٱنْتَ تُلْبَ لِلنَّاسِ اتَّخِنُ وْنِي وَٱمِّي إِلْهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ ، قَالَ سُبْحُنكَ مَا يَكُوْنُ لَيْ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي ۚ قِ بِعَقَّ ۚ إِن كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَلْ عَلَيْتَهُ ﴿ تَعْلَرُ مَا فِي نَفْسِي وَكَ آعْلَرُ مَا فِي نَفْسِكَ وَ إِنَّكَ أَنْسَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

١١٤ مَا قُلْتُ لَهُرُ إِلَّا مَا ٓ أَمَوْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُلُوا اللَّهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُوْجٍ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْنًا مَّا دُمْتُ فِيْهِرْجَ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْسَ أَنْسَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِرْ وَأَنْسَ عَلَى كُلِّ

١١٨ إِنْ تُعَنَّآبُهُرْ فَإِنَّهُرْ عِبَادُكَ ج وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُرْ فَإِنَّكَ أَنْسَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ

١١٩ قَالَ اللَّهُ مِنَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّرِقِينَ مِنْ تُهُرُهُ لَهُرْ جَنَّاتً تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُ خُلِنِينَ فِيْهَا أَبَنَّا ﴿ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمِ ۗ وَرَضُوا عَنْهُ م ذلكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

١٢٠ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوٰسِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ا وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْدٌ ع

> سُوْرَةُ الْإَنْعَامُ مَكَّيَّةً أَيَاتٍ : ١٦٥ رُكُوْعٌ : ٢٠ بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ

النَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ

৬ সুরা আল আনয়াম

1 338

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ |
|--|---|
| ২. তিনি তোমাদের মাটি থেকে সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি (প্রত্যেকের জন্যে বাঁচার একটি) মেয়াদ নির্দিষ্ট করে | ٢ هُوَ الَّذِي مَلْقَكُر مِّن طِينٍ ثُر قَضَى |
| দিয়েছেন, (তেমনি তাদের মৃত্যুর জন্যেও) তাঁর কাছে | ٱجَلَّا ﴿ وَٱجَلُّ مُّسَمَّى عِنْكَا ۚ ثُمَّ ٱنْتُر |
| একটি সুনির্দিষ্ট মেয়াদ রয়েছে, তারপরও তোমরা সন্দেহে | تَمْتَرُونَ |
| লিপ্ত আছো! | |
| ৩. আসমানসমূহের এবং যমীনের (সর্বত্র) তিনিই তো হচ্ছেন একমাত্র আল্লাহ; তিনি (যেমনি) তোমাদের গোপন ও প্রকাশ্য বিষয়সমূহ জানেন, (তেমনি) তিনি জানেন | ٣ وَهُوَ اللّهُ فِي السَّهُونِ وَفِي الْأَرْضِ الْمَارِضِ |
| তোমরা কে (পাপ-পুণ্যের) কতোটুকু উপার্জন করছো তাও। | يَعْلَرُ سِرْكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَرُ مَا تَكْسِبُونَ |
| তাদের মালিকের নিদর্শনসমূহের মধ্যে এমন একটি নিদর্শনও নেই, যা তাদের কাছে আসার পর তারা তা | مُ وَمَا تَأْتِيْهِرْ مِّنَ أَيَةٍ مِّنَ أَيْتٍ رَبِّهِرْ إِلَّا |
| পেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়নি। | كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ |
| ৫. তাদের কাছে যতোবারই (আমার পক্ষ থেকে) সত্য (দ্বীন) এসেছে; ততোবারই তারা তা অস্বীকার করেছে; | ٥ فَقَلْ كَنَّابُوْ إِ بِالْحَقِّ لَيًّا جَاءَمُرْ ﴿ فَسَوْنَ |
| অচিরেই তাদের কাছে সে খবরগুলো এসে হাযির হবে যা নিয়ে তারা হাসি-তামাশা করছিলো। | يَاْتِيْهِرْ ٱثَّبُوُّا مَا كَانُوْا بِهِ يَسْتَهْزِءُوْنَ |
| ৬. তারা কি দেখেনি, তাদের আগে আমি এমন বহু জাতিকে বিনাশ করে দিয়েছি ্যাদের আমি পৃথিবীতে | ٣ ألَر يَرُوا كَر آهَلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِر مِّنْ قَرْن |
| এমনভাবে প্রতিষ্ঠা দান করেছিলাম, যা তোমাদেরও করিনি: আকাশ থেকে তাদের ওপর আমি প্রচুর বৃষ্টি | مُكَّنَّهُمْ فِي الْإَرْضِ مَا لَيْرُ نُهَكِّنَ لَّكُيْرُ |
| বর্ষণ করেছি, আবার তাদের (মাটির) নীচ থেকে আমি | وَ ٱرْسَلْنَا السَّهَاءَ عَلَيْهِر ۚ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا |
| ঝর্ণাধারা প্রবাহিত করে দিয়েছি, অতপর পাপের কারণে আমি তাদের (চিরতরে) ধ্বংস করে দিয়েছি, আর তাদের | الْأَنْهُرَ تَجْرِئُ مِنْ تَحْتِمِرْ فَٱمْلَكُنْهُرْ |
| পর (তাদের জায়গায় আবার) আমি এক নতুন জাতির উত্থান ঘটিয়েছি। | بِنُ تُوْبِهِمْ وَ آنَهَا نَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا أَخَرِيْنَ |
| ৭. (হে নবী,) আমি যদি তোমার কাছে কাগজে লেখা | وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِي قِرْطَاسٍ |
| কোনো কেতাব নাযিল করতাম এবং তারা যদি তাদের হাত দিয়ে তা স্পর্শপ্ত করতো, তাহলেও কাফেররা | فَلَهَسُوْهُ بِآيْنِيْهِمِ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفُرُوْ آ إِنْ |
| বলতো, এটা তো সুস্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়! | فَلَهَسُوْهٌ بِأَيْدِيهِمِ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوْآ إِنْ هُنَا ۚ إِلَّا سِحْرُ مُّبِيْنً |
| ৮. তারা বলে, এ (নবী)-র প্রতি কোনো ফেরেশতা নাযিল করা হলো না কেন (যে তার সত্যতা সম্পর্কে | ^ وَقَالُوا لَوْكَ ٱنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ، وَلَوْ |
| আমাদের বলে দিতো) যদি সত্যিই আমি কোনো | ٱنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُفِيَ الْإَمْرُ ثُرُّ لَا يُنْظَرُونَ |
| ফেরেশতা পাঠিয়ে দিতাম তাহলে (তাদের) ফয়সালা (তো তখনি) হয়ে যেতো, এরপর তো আর কোনো অবকাশই তাদের দেয়া হতো না। |) · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| ৯. (তা ছাড়া) আমি যদি (সত্যিই) ফেরেশতা পাঠাতাম, | ٩ وَلَوْ جَعَلْنُهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنُهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا |
| তাকেও তো মানুষের আকৃতিতেই পাঠাতাম, তখনও তো তারা এমনিভাবে আজকের মতো সন্দেহেই নিমজ্জিত থাকতো। | عَلَيْمِرْ مَّا يَلْبِسُونَ |
| ১০. (হে রস্ল,) তোমার আগেও বহু নবী-রস্লকে | ١٠ وَلَقَارِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ |
| এভাবে ঠাট্টা-বিদ্রপ করা হয়েছিলো, (অনন্তর) তাদের | |
| মধ্যে যারা নবীর সাথে যে ঠাটা-বিদ্রুপ করেছে তাই | بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهِ |
| (তাদের আযাবের আকারে) পরিবেষ্টন করে ফেলেছে! | يَسْتَهْزِءُونَ ع |
| ১১. (হে নবী,) তুমি তাদের বলো, তোমরা এ পৃথিবীতে ঘুরে-ফিরে দেখো, দেখো যারা (নবী-রস্লদের) মিথ্যা | ١١ قُلْ سِيْرُو ا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُو ا كَيْفَ |
| | |

৬ সূরা আল আনয়াম

भनियं २

| ত্রিভেগন্ন করেছে তাদের কী (ভয়াবহ) পরিণাম হয়েছে। ১২. (বে নবী!) ভূমি তাদের জিজেন করের, আসমানসমূহ ও যমীনে যা আছে তা সব কারা ভূমি বলো. (এর সবকিছই) আহাহে তায়াগার জনো: (মানুখনের ওপর) দয়া করাটা তিনি তার নিজের ওপর করে পরি কর্তবার বলো) হির করে নিয়েছেন। কেয়ামতের দিন তিনি তোমানের অপরাই জড়ো করবেন, এতে বিন্মুয়ার সমেহ নেই; (সত্য অপরীকার করে) যারা নিজেরাই নিজেনের ক্ষতি সাধন করেছে, তারা (এমন একটি দিনের আগমনকে কখনো) বিশ্বাস করে না। ১৩. রাত ও দিনের মাঝে যা কিছু ব্রিতি লাভ করছে তার পরি করিছে বার জবেছা) দেখেন। ১৪. (বে নবী.) ভূমি বলো, আমি কিভাবে আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক আহাহ তায়াগানের বাবানানো যার না; ভূমি) বলো, আমাকে কালেন কুলিনের সবাইকে) আহার যোগান, তাঁকে কোনো করমের আহার বোগানো বার না; ভূমি) বলো, আমাকে আদেল নেরা হয়েছে, যেন সবার আগে আমির মুনলমান হয়ের যাই এবং (আরাভ এই হর্ম জারা) আনেল দেয়া হয়েছে, তুমি কবলো, আমি বিদ আমার মালিকের করার না ভানি, তাহলে আমি এক মহাদিবদের আবার প্রেমান করের না নি, তাহলে আমি এক মহাদিবদের আবার করেবেন, আর এটিই (হবে লেদিনের) সুন্সন্ত সামলা। ১৭. (ক্রে নেরান্তের) দিন বা নেকে (লাভি) থেকে কেরিনা মুরর করেনে, আর এটিই (হবে লেদিনের) সুন্সন্ত সামলা। ১৭. (জেনে রেবোন্) বিলা, ভামি আরাছ তারালা তামালে কোনো মুরর পৌন ভামানতের) দিন মার করেবেন, আর একিই (হবে লেদিনের) সুন্সন্ত সামলা। ১৭. (জেনে রেবোন্) বিলা, ভামি বিল জারা করেবেন, তার করেবেন, আর এটিই (হবে লেদিনের) সুন্সন্ত সামলা। ১৪. তেনে রেবোন্) বিলি ভামার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবিন তার নান্তির করেবেন, তার করেবিন তার নান্তির করেবেন, তার করিবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবিন তার নান্তির করেবেন, তার করেবিন তার নান্তির করেবেন, তার করেবিন তার নান্তির করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবেন, তার করেবিন তার নান্তির করেবেন, তার করেবিন তার করেবেন্ন তার নান্তির করেবিন তার নান্তির করেবেন্ন তার করেবেন্ন তার নান্তির করেবেন্ন করেবেন্ন তার নান্তির করেবেন্ন তার নান্তির করেবেন্ন তার নান্তির করেবেন্ন তার নান্তির করেবিন তার নান্তির করেবিন তার নান্তির করেবেন্ন তার নান্তির করেবিন তার নান্তির করেবিন তার নান্তির তার নান্তির করেবিন | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ |
|---|---|---|
| 22. ((द नवीः) ভूমি ভাদের জিজেস করো, আসমানসমূহ ও যমীনে যা আছে তা সব কারং ভূমি বলো, (এর সবকিছ্ই) আল্লাহ ভাষালার জন্যে; (মানুহদের ওপর) দলা করাটা তিনি তাঁর নিজের ওপর (কর্তব্য বলে) ব্রির করে নিয়েছল। কেয়ামতের দিন তিনি তোমাদের অবশাই জড়ো করবেন, এতে বিদ্বামার সমেহ নেই; (সত্য অবীকার করে) যারা নিজেরাই করে নিয়েছল। করাটা তিনি তার নিজেরাই করি প্রতি লাভ করছে তার সমেহ নেই; (সত্য অবীকার করে) যারা নিজেরাই করি তুরি ক্রান্ত নার করে। বিশ্বাস করে না ১৩. রাভ ও দিনের মানে যা কিছু ব্রিতি লাভ করছে তার সব কিছুই তাঁর জন্যে; তিনি (এদের সবার কথা) শোনেন অবং (সবার কথা) কুরি বলো, আমি কিভাবে আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক আল্লাহ ভায়ালাকে বাদ দিয়ে আনু ক্রান্ত নির্দিশ্ব করি নিরে বাংলাক, তাঁর করে। তিনি (এদের সবার কথা) শোনেন করেরে বাংলানে, তাঁর করে। তিনি (এদের সবার কথা) শোনেন করেরে আবার বোংলানে, তাঁর করেরে স্বাহিনে আহার ভায়ালাকে বাদ দিয়ে আনু কাউকে নিজের পৃষ্ঠগোষক বানিয়ে নেবো, অবচ তিনিই (স্থিটিলাকের সবাইকে) আহার হায়োনি, তাঁকে কোনো করমের আহার মোলাকের বাংলাকের বাংলাকে | | |
| शिमा (शिमा (महा अवनी) ह खालु कहारमा, वार्फ विस्तुमाय कराइ कहार कराइ) यात्रा निरक्षता कराइ हैं (स्वरुक्त करि जायन कराइ हों वार्क कराइ कराइ) यात्रा निरक्षता कराइ हों वार्क कराइ जात्र वार्क हिंदी विद्युक्त विश्व कराइ जात्र वार्क हों वार्क हें हिंदी विद्युक्त विश्व कराइ जात्र वार्क हों वार्क हें हिंदी विद्युक्त हैं के कराइ हिंदी विश्व कराइ जात्र वार्क हैं कि कराइ जात्र कराइ जात्र वार्क हैं कि कराइ जात्र कराइ जात्र कराइ जात्र वार्क हैं कि कराइ जात्र कराइ जात्र वार्क हैं कि कराइ जात्र कराइ जात्र जात् | আসমানসমূহ ও যমীনে যা আছে তা সব কার? তুমি বলো, (এর সবকিছুই) আল্লাহ তায়ালার জ্বন্যে; (মানুষদের ওপর) দয়া করাটা তিনি তাঁর নিজের ওপর | التُل لِّمَن مَّا فِي السَّبْوٰسِ وَالْأَرْضِ ، تُلْ لِّلْهِ ، كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْهَةَ ، لَيَجْهَعَنَّكُمْ |
| ब्रेश (नरांत जवश्र) (मर्थन । 38. ((द नवी,) जूमि वर्षणा, जाबि किंजारव जाजमानम्मर एवं यमीरतंत माणिक आल्लार जामाणिक वाण मिर जन्म केंग्रिय होने हो | তিনি তোমাদের অবশ্যই জড়ো করবেন, এতে বিন্দুমাত্র সন্দেহ নেই; (সত্য অস্বীকার করে) যারা নিজেরাই নিজেদের ক্ষতি সাধন করেছে, তারা (এমন একটি দিনের | خَسِرُوْ آ أَنْفُسَمُ لَ فَمُ لَا يُؤْمِنُونَ |
| काউर्क निर्क्षत পृष्ठे(भावक वानिरि (नर्दा, ज्ञषक जिन्दे (अधिलां के अवरिक) ज्ञाइत (याशान, जांक कार्ति (अधिलां के अवरिक) ज्ञाइत (याशान, जांक कार्ति कार्ति ज्ञाक वार्ति वाशाता याद्र नाः (ज्ञि विक्र) वला ज्ञात वार्ति वार्त | সব কিছুই তাঁর জন্যে; তিনি (এদের সবার কথা) শোনেন | ١٣ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ، وَهُوَ السَّبِيْعُ الْعَلِيْرُ |
| बर्क सब आशांद सांभारिना याद्य ना; (कृपि) वर्ला, आसारक आर्मण (मद्रा हरसरह, रयन नवांद्र जार्मण आप्तम (मद्रा हरसरह, रयन नवांद्र जार्मण अप्रमान स्वा हरसरह, रयन नवांद्र जार्मण अप्रमान स्वा हरसरह, क्षेत्र कंपना अप्ताह और वर्ष (बाता) आप्तम (मद्रा हरसरह, क्षित्र कंपना सांवाह कर क्षित्र ना ना लिए क्षित्र जार्मण स्वा सांवाह कर्मण ना नित्र जार्मण कराता ना नित्र जार्मण न | ও যমীনের মালিক আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে অন্য কাউকে নিজের পৃষ্ঠপোষক বানিয়ে নেবো, অথচ তিনিই | |
| ত্রু নুর্ন্ত্র বিষ্ণান্ত বিশ্ব বি | রকমের আহার যোগানো যায় না; (তুমি) বলো, আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে, যেন সবার আগে আমি মুসলমান হয়ে যাই এবং (আমাকে এই মর্মে আরো) আদেশ দেয়া হয়েছে, | قُلْ إِنِّي ٓ أُمِرْتُ أَنَّ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ |
| জনুর্থই করবেন, আর এটিই (হবে সেদিনের) সুলাট সাফলা। ১৭. (জেনে রেখা,) যদি আল্লাহ তারালা তোমাকে কোনো দুঃখ পৌছাতে চান তাহলে তিনি ছাড়া আর কেউই (তোমার থেকে) তা দূর করতে পারবে না; অপরদিকে তিনি যদি তোমার কোনো উপকার করেন তাহলে (কেউ তাতে বাধাও দিতে পারে না,) তিনি সব কিছুর ওপর একক ক্ষমতাবান! ১৮. তিনি তাঁর বান্দাদের ওপর একছত্র ক্ষমতার অধিকারী; তিনি মহাজ্ঞানী, তিনি সম্যক ওয়াকেফহাল। ১৮. তিনি তাঁর বান্দাদের ওপর একছত্র ক্ষমতার অধিকারী; তিনি মহাজ্ঞানী, তিনি সম্যক ওয়াকেফহাল। ১৯. তুমি (তাদের) বলো, সাক্ষী হিসেবে কার সাক্ষা সবচেয়ে বেলী বড়োং তুমি বলো, (হাঁ) একমাত্র আল্লাহ তায়ালার, যিনি তোমাদের এবং আমার মাঝে (সর্বোভ্যম) সাক্ষী হয়ে থাকবেন। এ কোরআন (তাঁর কাছ থেকেই) আমার কাছে নাযিল করা হয়েছে, যেন তা দিয়ে তোমাদের এবং (তোমাদের পর) যাদের কাছে এ গ্রন্থ প্রতিবে (তাদের সকলকে) আমি (আযাবের) ভয় দেখাই; তোমরা কি (সত্যিই) একথার সাক্ষ্য দিতে পারবে যে, তিনি তু বিলি ত্রি বিলি সাক্ষা দিতে পারবে যে, তিনি তু বিলি তু বিলি ত্রি বিলি সাক্ষা দিতে পারবে যে, | কথা না তনি, তাহলে আমি এক মহাদিবসের আযাব | يَوْ إِ عَظِيْرٍ |
| কোনো দুঃখ পৌছাতে চান তাহলে তিনি ছাড়া আর কেউই (তোমার থেকে) তা দ্র করতে পারবে না; অপরদিকে তিনি যদি তোমার কোনো উপকার করেন তাহলে (কেউ তাতে বাধাও দিতে পারে না,) তিনি সব কিছুর ওপর একক ক্ষমতাবান! ১৮. তিনি তাঁর বান্দাদের ওপর একছেত্র ক্ষমতার অধিকারী; তিনি মহাজ্ঞানী, তিনি সম্যক ওয়াকেফহাল। ১৯. তুমি (তাদের) বলো, সাক্ষী হিসেবে কার সাক্ষ্য সবচেয়ে বেশী বড়োং তুমি বলো, (হাঁ) একমাত্র আল্লাহ তায়ালার, যিনি তোমাদের এবং আমার মাঝে (সর্বোভ্যম) সাক্ষী হয়ে থাকবেন। এ কোরআন (তাঁর কাছ থেকেই) আমার কাছে নাযিল করা হয়েছে, যেন তা দিয়ে তোমাদের এবং (তোমাদের পর) যাদের কাছে এ গ্রন্থ পৌছবে (তাদের সকলকে) আমি (আ্যাবের) ভয় দেখাই; তোমরা কি (সত্যিই) একথার সাক্ষ্য দিতে পারবে যে, তিমিরী কি হুমিরী কি হুমিরী আমার কি (সত্যিই) একথার সাক্ষ্য দিতে পারবে যে, | রেহাই দেয়া হবে, তার ওপর (নিসন্দেহে) আল্লাহ তায়ালা অনুগ্রহ করবেন, আর এটিই (হবে সেদিনের) সুস্পষ্ট সাফল্য। | وَذٰلِكَ الْغَوْزُ الْمُبِيْنَ |
| ১৮. তিনি তাঁর বান্দাদের ওপর একছত্র ক্ষমতার অধিকারী; তিনি মহাজ্ঞানী, তিনি সম্যক ওয়াকেফহাল। 1^{2} তিন্দু নুন্দু নুদ্দু নুদ্দ | কোনো দুঃখ পৌছাতে চান তাহলে তিনি ছাড়া আর কেউই (তোমার থেকে) তা দূর করতে পারবে না; অপরদিকে তিনি যদি তোমার কোনো উপকার করেন তাহলে (কেউ তাতে বাধাও দিতে পারে না,) তিনি সব | إلا هُوَ ، وَإِنْ يَهْسَسُكَ بِخَيْرٍ فَهُو عَلَى كُلِّ |
| সবচেয়ে বেশী বড়ো? তুমি বলো, (হাঁ) একমাত্র আলাহ তায়ালার, যিনি তোমাদের এবং আমার মাঝে (সর্বোন্তম) মাক্ষী হয়ে থাকবেন। এ কোরআন (তাঁর কাছ থেকেই) আমার কাছে নামিল করা হয়েছে, যেন তা দিয়ে তোমাদের এবং (তোমাদের পর) যাদের কাছে এ গ্রন্থ কিন্ত কিন্ত তামাদের এবং (তোমাদের পর) যাদের কাছে এ গ্রন্থ কিন্ত তামাদের তাল (তামাদের সকলকে) আমি (আযাবের) ভয় দেখাই; তোমরা কি (সত্যিই) একথার সাক্ষ্য দিতে পারবে যে, | ১৮. তিনি তাঁর বান্দাদের ওপর একচ্ছত্র ক্ষমতার | ١٨ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِةٍ ، وَهُوَ الْحَكِيْرُ |
| णामात काष्ट्र नायिन कत्रा रहार्ह, यन ज निर्द्य النوالية المنوان الم | সবচেয়ে বেশী বড়ো? তুমি বলো, (হাঁ) একমাত্র আল্লাহ তায়ালার, যিনি তোমাদের এবং আমার মাঝে (সর্বোত্তম) | شَوِيْنًا بَيْنِي وَبَيْنَكُرْ وَ وَأُوْمِيَ إِلَى هٰذَا |
| ···· | আমার কাছে নাযিল করা হয়েছে, যেন তা দিয়ে তোমাদের এবং (তোমাদের পর) যাদের কাছে এ গ্রন্থ পৌছবে (তাদের সকলকে) আমি (আযাবের) ভয় দেখাই; | لَتَهُمُّهُ وَنَ أَنَّ مَعَ اللهِ أَلِهَةً أَغُرَى وَلَنْ لاَ |
| | | |

www.eelm.weebly.com

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ |
|-----------------------|--|---|
| ওয়াক্ষে লাথেম | আল্লাহর সাথে আরো কোনো ইলাহ রয়েছে ? (হে নবী,) তুমি (তাদের) জানিয়ে দাও, আমি (জেনে-বুঝে) কখনো এ ধরনের (মিথ্যা) সাক্ষ্য দিতে পারবো না, তুমি বলো, তিনি তো একক, তোমরা (আল্লাহ তারালার সাথে) যে শেরেক করে যাচ্ছো, তার থেকে আমি সম্পূর্ণ মুক্ত। | بَرِيءً مِهَا تَشْرِكُونَ ر |
| े उग्नाक्त्य नात्यत्र | ২০. (তোমার আগে) যাদের আমি কেতাব দান করেছি তারা নবীকে ঠিক সেভাবেই চেনে, যেভাবে চেনে তারা তাদের আপন ছেলেদের, কিন্তু যারা নিজেরা নিজেদের ক্ষতি সাধন করেছে তারা তো (কখনো) ঈমান আনবে না। | ٢٠ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنَهُمُ الْكِتْبَ يَعْرِفُوْنَهُ كَهَا يَعْرِفُوْنَهُ كَهَا يَعْرِفُوْنَ كَهَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ مِ الَّذِيْنَ خَسِرُوْآ اَنْفُسَهُمْ فَهُرْكَا يُؤْمِنُوْنَ ع |
| | ২১. তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে আছে, যে স্বয়ং আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে কোনো মিথ্যা কথা রচনা করে কিংবা তাঁর কোনেশ আয়াতকে অস্বীকার করে, এ (ধ্য়নের) যালেমরা কখনো সাফল্য লাভ করতে পারবে না। | ٢١ وَمَنْ أَظْلَرُ مِنْ افْتَرَى عَلَى اللهِ كَنِبًا اَوْ كَنَّبَ بِالْيَهِ ﴿ إِنَّهُ لَا يُغْلِحُ الظَّلِبُوْنَ |
| | ২২. একদিন আমি তাদের সবাইকে একত্রিত করবো, অতপর মোশরেকদের আমি বলবো, তারা সবাই আজ কোপায় যাদের তোমরা (দুনিয়ার জীবনে) আমার সাথে শরীক মনে করতে! | ٢٢ وَيَوْمَ نَحْشُرُمُرْ جَبِيْعًا ثُرٌّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْآ اَيْنَ شُرَكَاوُكُرُ الَّذِيْنَ كُنْتُرْ تَزْعُبُوْن |
| | ২৩. অতপর তাদের (সেদিন) একথা (বলা) ছাড়া কোনো যুক্তিই থাকবে না যে, আল্লাহ তায়ালার কসম, যিনি আমাদের মালিক, আমরা কখনো মোশরেক ছিলাম না। | ٣٣ ثُمرٌّ لَمرُّ تَكُنْ فِتْنَتُمُرُ إِلَّا اَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ |
| | ২৪. (হে নবী,) তুমি চেয়ে দেখো; কিভাবে (আজ) লোকগুলো (আযাব থেকে বাঁচার জন্যে) নিজেরাই নিজেদের মিথ্যা প্রতিপন্ন করছে এবং (এও দেখো,) তাদের নিজেদের রচনা করা মিথ্যা (কিভাবে আজ) নিক্ষল হয়ে যাক্ষে! | ٣٢ أَنْظُرْ كَيْفَ كَنَّبُوْا عَلَى اَنْفُسِمِرْ وَضَلَّ عَنْمُرْ مًّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ |
| | ২৫. তাদের মধ্যে এমন কিছু লোকও আছে যে (বায্যিক দৃষ্টিতে মনে হয়) তোমার কথা সে কান দিয়ে শুনছে, (কিছু আসলে) আমি তাদের মনের ওপর পর্দা ঢেলে দিয়েছি, যার কারণে তারা কিছুই উপলব্ধি করতে পারে না, আমি তাদের কানেও ছিপি এটে দিয়েছি; (মূলত) তারা যদি (আল্লাহর) সব নিদর্শন দেখেও নেয়, তবু তারা তাঁর প্রতি ঈমান আনবে না; এমনকি তারা যখন তোমার সামনে আসবে তখন তোমার সাথে বিতর্কে লিগু হবে, (কোরআনের আয়াত সম্পর্কে) কাফেররা বলবে, এতো পুরনো দিনের গল্পকথা ছাড়া আর কিছুই নয়। | ٢٥ وَمِنْهُرْ مَّنْ يَسْتَهِعُ إِلَيْكَ عَوَجَعَلْنَا عَلَى قَلُوبِ هِرْ آكِنَةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي الْذَانِهِرْ وَقَرًّا وَإِنْ يَرُوا كُلَّ أَيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ، مَثَّى إِذَا جَآءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِيْنَ كَفُرُواْ إِنْ مَٰلَا أَلَا يَنْ وَلَا الَّذِيْنَ كَفُرُواْ إِنْ مَٰلَا آ إِلَّا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ كَفُرُواْ إِنْ مَٰلَا آ إِلَّا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ |
| | ২৬. তারা (যেমন) নিজেদের তা (শোনা) থেকে বিরত রাখে, (তেমনি) অন্যদেরও তা থেকে দূরে রাখে, (মূলত এ আচরণে) তারা নিজেদেরই ধ্বংস সাধন করছে, অথচ তারা কোনো খবরই রাখে না। | ٢٦ وَمُرْ يَنْهُوْنَ عَنْهُ وَيَنْنُوْنَ عَنْهُ عَوَانَ لَا مُعَلَّمُ عَوَانَ عَنْهُ عَوَانَ لَيُمْكُونَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الهِ ا |
| | ২৭. তুমি যদি (সত্যিই তাদের) দেখতে পেতে যখন এই (হতভাগ্য) ব্যক্তিদের (জ্বলম্ভ) আগুনের পাশে এনে দাঁড় করানো হবে, তখন তারা (চীৎকার করে) বলবে, হায়! | ٢٠ وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِغُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا |
| | করানো হবে, তবদ তারা (চাব্দার করে) বলবে, হার: যদি আমাদের আবার (দুনিয়ায়) ফেরত পাঠানো হতো, তাহলে আমরা (আর কখনো) আমাদের মালিকের আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করতাম না এবং আমরা (অব্যই) ঈমানদার লোকদের দলে শামিল হয়ে যেতাম। | يلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَنِّبَ بِالْيَّ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ |
| | ৬ সূরা আল আনয়াম | मनयिन ২ |
| | | |

পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ

২৮. এর আগে যা কিছ তারা গোপন করে আসছিলো (আজ) তা তাদের সামনে উন্মুক্ত হয়ে গেলো; (আসলে) তারা তাই করে বেড়াবে যা থেকে তাদের নিষেধ করা হয়েছিলো, তারা (আসলেই) মিথ্যাবাদী।

٢٨ بَلْ بَنَ ا لَهُرْ مًّا كَانُوْ ا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ، لَكُنْ بُوْنَ

২৯. (এ) লোকগুলো আরও বলে, আমাদের এ পার্থিব জীবনই হচ্ছে একমাত্র জীবন, আমরা কখনোই পুনর্জীবিত হবো না।

٢٩ وَقَالُوْاۤ إِنْ مِيَ إِلَّاۤ حَيَاتُنَا اللُّّنْيَا وَمَا نَحِي بِهِبَعُوثِينَ

৩০. হায়! তুমি যদি সত্যিই (সে দৃশ্য) দেখতে পেতে যখন তাদেরকৈ তাদের মালিকের সামনে দাঁড করানো হবে এবং তিনি তাদের জিজ্ঞেস করবেন (আজ বলো), এ দিনটি কি সত্য নয়? তারা বলবে, হাঁ, আমাদের মালিকের শপথ (এটা সত্য): তিনি বলবেন, তাহলে (আজ্ঞ) সে (কঠিন) আযাব ভোগ করো, যাকে তোমরা সব সময় অবিশ্বাস করতে।

٣٠ وَلَوْ تَرْكَى إِذْ وُقِفُوْا عَلَى رَبِّهِـرْ ﴿ قَالَ أَلَيْسَ هٰنَا بِالْحَقِّ ، قَالُوْا بَلْي وَرَبِّنَا ، قَالَ فَنُ وْقُوا الْعَنَابِ بِهَا كُنْتُو ۚ تَكُفُو وْنَ ع

৩১. অবশ্যই তারা (ভীষণভাবে) ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে পড়েছে. যারা আল্লাহর সামনা সামনি হওয়াকে মিথ্যা বলেছে: আর একদিন যখন (সত্যি সত্যিই) কেয়ামতের ঘন্টা হঠাৎ করে তাদের সামনে এসে হাযির হবে, তখন তারা বলবে, হায় আফসোস, (দুনিয়ায়) এ দিনটিকে আমরা কতোই না অবহেলা করেছি, সেদিন তারা নিজেদের পাপের বোঝা নিজেদের পিঠেই বয়ে বেডাবে: কতো (ভারী ও) নিকষ্ট বোঝা হবে সেটি!

٣١ قَلْ خَسِرَ الَّذِينَ كَنَّابُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ١ حَتَّى إِذَا جَاءَتُهُرُ السَّاعَةُ بَفْتَةً قَالُوْا يْحَسُرْتَنَا عَلَى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَالِا وَهُرْ يَحْبِلُونَ اَوْزَارَهُمْ عَلَى ظُهُوْرِهِمْ اللهِ سَاءَ مَا يَزِرُوْنَ

৩২. আর (এ) বৈষয়িক জীবন, এ তো নিছক কিছু খেল-তামাশা ছাড়া আর কিছুই নয়: (মূলত) পরকালের বাড়িঘরই তাদের জন্যে উৎকষ্ট যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে; তোমরা কি (মোটেই) অনুধাবন করো নাঃ

٣٢ وَمَا الْحَيْوةُ النَّانْيَا ۗ الَّا لَعَبُّ وَّلَهُو مَ وَلَكُ الَّهُ الْأَجْرَةُ هَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ١ أَفَلَا

৩৩. (হে রসূল,) আমি জানি, এ লোকগুলো যেসব কথাবার্তা বলে, তা তোমাকে (বড়োই) পীড়া দেয়, কিন্তু তুমি কি জানো, এরা (এসব বলে তথু) তোমাকেই মিথ্যা সাব্যস্ত করছে না: বরং এ যালেমরা (এর মাধ্যমে) আল্লাহ তায়ালার আয়াতকেই অস্বীকার করছে।

٣٣ قَلْ نَعْلَيُ اللَّهُ لَيَحُّ اللَّهِ الَّالَى يَقُولُونَ ٢٣ فَإِنَّهُمْ لَا يُكُنَّ بُوْنَكَ وَلَكِنَّ الظُّلِمِينَ بِأَيْسِ

৩৪. তোমার আগেও (এভাবে) বহু (নবী)-রসুলকে মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করা হয়েছিলো, কিন্তু তাদের মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করা ও (নানা রক্ম) নির্যাতন চালাবার পরও তারা (কঠোর) ধৈর্য ধারণ করেছে, শেষ পর্যন্ত তাদের কাছে আমার (পক্ষ থেকে) সাহায্য এসে হাযির হয়েছে: আসলে আল্লাহর কথার রদবদলকারী কেউ নেই, তদুপরি নবীদের (এ সব) সংবাদ তো তোমার কাছে (আগেই) এসে পোঁছেছে।

٣٣ وَلَقَلُ كُنِّبَتُ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَى مَا كُنِّابُوا وَأُونُوا مَتَّى اَتْسَهُرُ نَصْرُنَاعِ وَلَا مُبَرِّلَ لِكَلِّمْتِ اللَّهِ عِ وَلَقَنَّ جَاءَكَ مِنْ نَبَائِ الْمُرْسَلِينَ

৩৫. (তারপরও) যদি তাদের এ উপেক্ষা তোমার কাছে কষ্টকর মনে হয়, তাহলে তোমার সাধ্য থাকলে তমি (পালানোর জন্যে) ভূগর্ভে কোনো সুড়ংগ কিংবা আসমানে সিঁড়ি তালাশ করো. (পারলে 'সেখানে চলে যাও) এবং (সেখান থেকে) তাদের জন্যে কোনো কিছু একটা নিদর্শন নিয়ে এসো: (আসনে) আল্লাহ তায়ালা যদি চাইতেন, তিনি তাদের সবাইকে হেদায়াতের ওপর জড়ো করে দিতে পারতেন তুমি কখনো মুর্খ লোকদের দলে শামিল হয়ো না।

٣٥ وَإِنْ كَانَ كَبُ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَان اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغَى نَفَقًا في الْإَرْضِ أَوْ سُلَّهًا في السَّهَاء فَتَأْتيَهُرْ بِأَيَّة ، وَلَوْ شَآءً اللَّهُ لَجَهَعَهُمْ عَلَى الْهُلِّي فَلَا تَكُوْنَيَّ مِنَ

৬ সুরা আল আন্য়াম

126

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ |
|---|---|
| ৩৬. যারা (এ কথাগুলো যথাযথভাবে) শোনে, তারা অবশ্যই (আল্লাহর) ডাকে সাড়া দেয় এবং যারা মরে | ٣٦ إِنَّهَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْهَعُوْنَ عُ |
| গেছে আল্লাহ তায়ালা এদের সবাইকেও কবর থেকে উঠিয়ে (জড়ো করে) নেবেন, অতপর (মহা বিচারের জন্যে) তারা সবাই তাঁর সামনে প্রত্যাবর্তিত হবে। | وَ الْمَوْتَى يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ ۚ إِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ن |
| ৩৭. এরা বলে, (নবীর) ওপর তার মালিকের পক্ষ থেকে | ٣٤ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزَّلَ عَلَيْهِ اللَّهُ مِّنَ رَّبِّهِ ١ |
| (আমাদের কথামতো) কোনো নিদর্শন নাযিল করা হয়নি | |
| কেনঃ (হে রসূল,) তুমি তাদের বলো, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (সব ধরনের) নিদর্শন পাঠানোর ক্ষমতা রাখেন, | قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرًّ عَلَى اَنْ يُّنَزِّلَ أَيَةً وَّلٰكِنَّ |
| কিছু এদের অধিকাংশ লোকই তো কিছু জানে না। | ٱكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ |
| ৩৮. যমীনের বুকে বিচরণশীল যে কোনো জস্তু কিংবা বাতাসের বুকে নিজ ডানা দুটি দিয়ে উড়ে চলা যে কোনো | ٣٨ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَنِرٍ |
| পাখীই (তোমরা দেখো না কেন) – এগুলো সবই তোমাদের মতে (আল্লাহ তায়ালার সৃষ্টি); আমি (আমার) গ্রন্থে বর্ণনা বিশ্লেষণে | يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أَمَرُ أَمْثَالُكُمْ مَا فَرَّطْنَا |
| কোনো কিছুই বাকী রাখিনি, অতপর এদের সবাইকে (একদিন) তাদের মালিকের কাছে ফিরে যেতে হবে। | فِي الْكِتْبِ مِنْ شَيْءٍ ثُرِّ إِلَى رَبِّهِمِرْ يُحْشَرُونَ |
| ৩৯. যারা আমার আয়াতকে মিথ্যা সাব্যস্ত করে, তারা (হেদায়াতের ব্যাপারে) বধির ও মৃক, তারা অন্ধকারে | ٣٩ وَالَّذِينَ كَنَّابُوْا بِأَيْتِنَا صُرٌّ وَّبُكُرٌّ فِي |
| পড়ে আছে; আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে গোমরাহ | الظُّلُهٰ وَمَنْ يَّهَا اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَّهَا |
| করে দেন; আবার যাকে চান তাকে সঠিক পথের ওপর স্থাপন করেন। | يَجْعَلْهُ عَلَى مِرَاطٍ مُّسْتَقِيْرٍ |
| ৪০. তুমি বলো, তোমরা কি ভেবে দেখেছো, যখন তোমাদের ওপর আল্লাহর পক্ষ থেকে (বড়ো ধরনের) | ٢٠ قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِن الْمَدْعَنَ اللهِ أَوْ |
| কোনোলয় ওপর আদ্বাহর পদ যেকে (মড়ো ব্যুলেয়) কোনো আযাব আসবে, কিংবা হঠাৎ করে কেয়ামত এসে | أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَنْعُونَ ءَ إِنْ |
| হাযির হবে, তখন তোমরা কি আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর | کُندُم مَن مَن مَن مَن مَن مَن مَن مَن مَن مَ |
| কাউকে ডাকবে? (বলো) যদি তোমরা সত্যবাদী হও! | |
| ৪১. বরং তোমরা (তো সেদিন) তথু তাঁকেই ডাকবে,তোমরা যে জন্যে তাঁকে ডাকবে তিনি চাইলে তা দূর করে | ٣١ بَلُ إِيَّاءُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ |
| দেবেন (এবং) যাদের তোমরা আল্লাহ তায়ালার সাথে অংশীদার বানাতে, তাদের সবাইকেই (তখন) তোমরা | اِنْ هَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ع |
| ভূলে যাবে। ৪২. তোমার আগের জাতিসমূহের কাছেও আমি আমার | -11/2 ^ W -1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
| রসূল পাঠিয়েছিলাম, তাদেরও আমি দুঃখ-কষ্ট ও বিপর্যয়ে | ٣٢ وَلَقَنْ أَرْسَلْنَا ۗ إِلَّى أُمَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ |
| (-র জালে) আটকে রেখেছিলাম, যাতে করে তারা বিনয়ের সাথে নতিশ্বীকার করে। | فَاَ هَانَ نُهُرُ بِالْبَاْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَرَّعُونَ |
| ৪৩. কিন্তু সত্যিই যখন তাদের ওপর আমার বিপর্যয় এসে আপতিত হলো, তখনও তারা কেন বিনীত হলো না, | ٣٣ مَلَوْكَ إِذْ جَاءَهُرْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ |
| অধিকন্তু তাদের অন্তর এতে আরো শব্দ হয়ে গেলো এবং | قَسَىٰ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّىٰ لَهُمُ الشَّيْطَٰى مَا كَانُوْا |
| তারা যা করে যাচ্ছিলো, শয়তান তাদের কাছে তা শোভনীয় করে তুলে ধরলো। | يَعْمَلُوْنَ |
| ৪৪. অতপর তারা সে সব কিছুই ভূলে গেলো, যা তাদের | ٣٣ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِر |
| (বার বার) শ্বরণ করানো হয়েছিলো; তারপরও আমি তাদের ওপর (সচ্ছলতার) সব কয়টি দুয়ারই খুলে | اَبُوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ﴿ حَتَّى إِذَا فَرِحُوا بِهَا |
| দিলাম; শেষ পর্যন্ত যখন তারা তাতেই মন্ত হয়ে গেলো যা | ~ |
| তাদের দেয়া হয়েছিলো, তখন আমি তাদের হঠাৎ পাকড়াও করে নিলাম, ফলে তারা নিরাশ হয়ে পড়লো। | ٱوْتُوا آَ اَهَٰنْ نُمُرْ بَغْتَةً فَإِذَا هُرْ مُّبْلِسُونَ |
| | |

৬ সূরা আল আন্য়াম

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ

৪৫. (এভাবেই) যারাই (আল্লাহ তায়ালার ব্যাপারে) যুলুম করেছে, তাদেরই মূলোচ্ছেদ করে দেয়া হয়েছে; আর সকল প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যেই, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক।

٣٥ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْرِ النَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
 وَالْحَمْنُ لِلَّهِ رَبِّ الْعُلَمِيْنَ

৪৬. (হে রসূল, তাদের) তুমি বলো, তোমরা কি একথা ভেবে দেখেছো, যদি আল্লাহ তারালা কখনো তোমাদের শোনার ও দেখার ক্ষমতা কেড়ে নেন এবং তোমাদের অস্তরসমূহের ওপর মোহর মেরে দেন, তবে আল্লাহ তারালা ছাড়া তোমাদের দ্বিতীয় কোনো ইলাহ আছে কি, যে তোমাদের এসব কিছু ফিরিয়ে দিতে পারবে; লক্ষ্য করো, কিভাবে আমার আয়াতসমূহ আমি খুলে খুলে বর্ণনা করছি, এ সম্ভেও অতপর তারা মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছে।

٢٣ قُلْ أَرَءَيْتُر إِنْ أَخَلَ اللهُ سَهْعَكُر وَاللهُ سَهْعَكُر وَاللهُ سَهْعَكُر وَاللهُ سَهْعَكُر وَاللهُ عَيْرُ وَاللهُ عَلْمُ اللهِ يَأْتِيكُمْ مِنْ اللهُ عَيْرُ اللهِ عَالَيْكُمْ بَهِ ءَ أَنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْأَيْتِ ثُمَّ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ اللهُ عَلْمُ اللهُ عَلْمُ اللهُ عَلْمُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلْمُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ الل

৪৭. তুমি বলো, তোমরা চিন্তা করে দেখেছো কি, যদি কখনো অকস্মাৎ (গোপনে) কিংবা প্রকাশ্যভাবে আক্সাহর আযাব তোমাদের ওপর আপতিত হয়, (তাতে) কডিপয় যালেম সম্প্রদায়ের লোক ব্যতীত অন্য কাইকে ধ্বংস করা হবে কিঃ

٣٠ قُلُ أَرَءَيْتَكُم إِن أَتٰعكُم عَنَابُ اللهِ
 بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً مَل يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْا الظّلِمُونَ

৪৮. আমি তো রস্লদের (জ্ঞান্নাতের) সুসংবাদবাহী ও (জাহান্নামের) সতর্ককারী ছাড়া অন্য কোনো হিসেবে পাঠাই না, অতপর যে ব্যক্তি (রস্লদের ওপর) ঈমান আনবে এবং (গাদের ক্থা মতো) নিজেকে সংশোধন করে নেবে, এমন লোকদের (পরকালে) কোনো ভয় নেই এবং তাদের (সেদিন) কোনোরকম চিস্তিতও হতে হবে না।

٣٨ وَمَا نُوْسِلُ الْمُوسَلِيْنَ إِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمَا نُوْسِلُ الْمُوسَلِيْنَ إِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمَنْنِ رِيْنَ عَلَى عِلْمَ عَلَى عَلَى

৪৯. (অপরদিকে) যারা আমার আয়াতসমূহকে মিখ্যা প্রতিপন্ন করবে, তাদের এই নাফরমানীর কারণে আমার আযাব তাদের ঘিরে ধরবে। ٣٩ وَالَّٰلِيْنَ كَنَّابُواْ بِالْيِتِنَا يَهَسُّهُمُ الْعَلَابُ بِهَا كَانُواْ يَفْسُقُونَ

৫০. (হে মোহাম্মদ,) তুমি বলো, আমি তো তোমাদের (একথা) বলি না যে, আমার কাছে আল্লাহ তায়ালার বিপুল ধনভান্ডার রয়েছে, না (একথা বলি যে,) আমি গায়বের কোনো খবর রাখি! আর একথাও বলি না যে, আমি একজন ফেরেশতা, (আসলে) আমি তো সেই ওহীরই অনুসরণ করি যা আমার ওপর নাযিল করা হয়, তুমি বলো, অন্ধ আর চক্ষুম্বান ব্যক্তি কি (কখনো) এক হতে পারে? তোমরা কি মোটেই চিন্তাভাবনা করো না?

৫১. (হে মোহাম্মদ,) তুমি সে (কিতাবের) মাধ্যমে সেসব লোককে পরকালের (আ্যাবের) ব্যাপারে সতর্ক করে দাও, যারা এ ভয় করে যে, তাদেরকে (একদিন) তাদের মালিকের সামনে একত্র করা হবে, (সেদিন) তাদের জন্যে তিনি ছাড়া কোনো সাহাত্যকারী বন্ধু কিংবা কোনো সুপারিশকারী থাকবে না, আশা করা যায় (এতে করে) তারা সাবধান হবে।

٥ وَٱنْكِرْ بِهِ الَّكِيْنَ يَخَانُونَ آنَ يَّحْشَرُوْآ
 إلى رَبِّهِرْ لَيْسَ لَهُرْ بِّنْ دُونِهِ وَلِئَّ وَّلَا شَيْعَ لَّعَلَّمُرْ يَتَّقُونَ
 شَفِيْعٌ لِّعَلَّمُرْ يَتَّقُونَ

৫২. যারা সকাল-সন্ধ্যায় তাদের মালিককেই ডাকে, তাঁরই সন্থৃষ্টি কামনা করে, তাদের তুমি (কখনো তোমার কাছ থেকে) সরিয়ে দিয়ো না, (কারণ) তাদের কাজকর্মের (জবাবদিহিতার) দায়িত্ব (যেমন) তোমার ওপর কিছুই নেই, (তেমনি) তোমার কাজকর্মের হিসাব-কিতাবের কোনো রকম দায়েত্বও তাদের ওপর নেই, (তারপরও) যদি তুমি তাদের তোমার কাছ থেকে দ্রে সরিয়ে দাও, তাহলে তুমিও বাড়াবাড়ি করা লোকদের দলে শামিল হয়ে যাবে।

۵۲ وَ لا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَنْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَاوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْنُونَ وَجُهَةً ، مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِكِي عَلَيْكِي مِنْ حِسَابِكِي عَلَيْهِمْ مِنْ حِسَابِكِي عَلَيْهِمْ مِنْ حَسَابِكِي عَلَيْهِمْ مِنْ هَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكِي عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطُرُدُمُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّلِمِيْنَ

৬ সূরা আল আনয়াম

1300

৫৩. আর আমি এভাবেই তাদের একদল দ্বারা অন্য দলের পরীক্ষা নিয়েছি, যেন তারা (একদল) একথা বলতে পারে যে এরাই কি হচ্ছে আমাদের মাঝে সে দলের লোক, যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা তাঁর অনুগ্রহ করেছেন: আল্লাহ তায়ালা কি (তাঁর) কতজ্ঞ বান্দাহদের ভালো করে জানেন না।

٥٣ وَكَنْ لِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُ ۗ بِبَعْضِ لِّيَقُولُو ۗ أَهُوُّ كُاء مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِم ۚ مِّنْ ۚ بَيْنَاءاًلَيْسِ اللهُ بِأَعْلَرَ بِالشَّكِرِيْنَ

৫৪. যারা আমার আয়াতসমূহের ওপর ঈমান এনেছে তারা যখন তোমার কাছে আসবে, তখন তুমি তাদের বলো, (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে তোমাদের ওপর) শান্তি বর্ষিত হোক- তোমাদের ওপর অনুগ্রহ করাটা তোমাদের মালিক নিজের কর্তব্য বলে স্থির করে নিয়েছেন: তবে তোমাদের মধ্যে যদি কেউ কখনো অজ্ঞতাবশত কোনো অন্যায় কাজ করে বসে এবং পরক্ষণেই তাওবা করে ও (নিজের জীবন) তথরে নেয়. তাহলে আল্লাহ তায়ালা (তাকে ক্ষমা করে দেবেন, তিনি) একান্ত ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

٥٣ وَإِذَا جَاءَكَ إِلَّانِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْيِينَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسه الْحَيْةَ لا أَنَّهُ مَنْ عَيلَ مِنْكُمْ شُوَّءًا 'بِجَهَالَة ثُرِ تَابَ مِنْ بَعْنِ وَ أَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَحِيرٍ

৫৫. আর এভাবেই আমি আমার আয়াতসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করি, যাতে অপরাধীদের পথ পরিষ্কার হয়ে যায়।

٥٥ وَكَنْ لِكَ نُفَصِّلُ الْأَيْسِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْهُجْرِمِيْنَ ع

৫৬. (হে মোহাম্মদ,) তুমি (তাদের) বলে দাও, (এক) আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে তোমরা আর যাদের গোলামী করছো, আমাকে তাদের গোলামী করতে নিষেধ করা হয়েছে: তুমি (তাদের এও) বলে দাও, আমি কখনো ें विकृ विकृति प्राण-पूर्णीत अनुमत्रन कित ना, (अमनि وَمَا اَذَا وَمَا اَذَا وَمَا اَذَا وَمَا اَذَا وَمَا الْكَافِي السَّالُونَ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّا اللَّاللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ اللَّا لَا اللَّا لَا اللّ করলে) আমি নিসন্দেহে গোমরাহ হয়ে যাবো এবং আমি আর সত্যের অনুসরণকারী দলের সাথে থাকবো না।

٥٦ قُلُ إِنِّي نُوِيْتُ أَنْ أَعْبُنَ الَّذِيْنَ تَنْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ ﴿ قُلْ لَّا آتَّبِعُ الْهُهْتَىيْنَ

৫৭. তুমি বলো, আমি অবশ্যই আমার মালিকের এক উচ্জ্বল দলীল-প্রমাণের ওপর প্রতিষ্ঠিত আছি এবং তাই তোমরা অস্বীকার করছো: (এ অস্বীকার করার পরিণাম) যা তোমরা দ্রুত (দেখতে) চাও তা (ঘটানোর ক্ষমতা) আমার কাছে নেই। (সব কিছুর) চড়ান্ত ক্ষমতা তো কেবলমাত্র আল্লাহ তায়ালার হাতেই রয়েছে: (আর এ মহা) সত্যটিই তিনি (তোমাদের কাছে) বর্ণনা করছেন. তিনিই হচ্ছেন উত্তম ফয়সালাকারী।

٥٤ قُلُ إِنِّي عَلَى بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَنَّاتُهُم به م مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ به م أن الْحُكْرُ إِلَّا لِلَّهِ ، يَقُصُّ الْحَقُّ وَهُوَ غَيْرُ الفصلين

৫৮. তুমি বলো, (আযাবের) যে বিষয়টার জন্যে তোমরা তাড়াহড়ো করছো, তা (ঘটানো) যদি আমার ক্ষমতার মধ্যে থাকতো, তাহলে তোমাদের ও আমার মধ্যকার ফয়সালা (অনেক আগেই) হয়ে যেতো! যালেমদের (সাথে কি আচরণ করা উচিত তা) আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানেন।

٥٨ قُلُ لَّوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهِ لَقُضَىَ الْإَمْ بَيْنَيْ وَبَيْنَكُرْ ﴿ وَاللَّهُ اعْلَرُ بالظّلبيْنَ

٥٥ وَعِنْنَ وَ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا ۗ إِلَّا يَعْلَمُهَا ۗ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَهِمَ সে-ই (অদৃশ্য) খবর তো তিনি ছাড়া আর কারোই জানা निरं , करन-श्रंल (यथात) या किছू आरह जा ७५ जिनिरे أَسْقُطُ निरं وَمَا تَسْقُطُ निरं وَيَعْلَرُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ، وَمَا تَسْقُطُ জানেন; (এই সৃষ্টিরাজির মধ্যে) একটি পাতা কোথাও مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَكَا مَبَّةٍ فِي ظُلُمْتِ , बात ना यात (अंवत्र) छिनि ছाफ़ा जना किउँ क्षात ना

৬ সূরা আল আনয়াম

পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ

মাটির অন্ধকারে একটি শস্যকণাও নেই- নেই কোনো তাজা সবুজ, (কিংবা ক্ষয়িঞ্) শুকনো (কিছু), যার (পূর্ণাংগ) বিবরণ একটি সুস্পষ্ট গ্রন্থে মজুদ নেই।

الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسِ إِلَّا فِي كِتْ

৬০. তিনিই মহান আল্লাহ, যিনি রাতের বেলা তোমাকে মত (মানুষের মতো) করে ফেলেন, আবার দিনের বেলায় তোমরা যা কিছু (যমীনের বুকে) করে বেড়াও, তাও তিনি (পুংখানুপুংখ) জানেন, পরিশেষে সেখানে তিনি তোমাদের (মৃতসম অবস্থা থেকে) আবার (জীবনের অবস্থায়) ফিরিয়ে আনেন, যাতে করে তোমাদের নির্দিষ্ট সময়কালটি এভাবে পূর্ণতা প্রাপ্ত হতে পারে. (আর এ মেয়াদ পুরণ করার পর) তোমাদের স্বার প্রত্যাবর্তন (একদিন) তাঁর দিকেই (সংঘটিত) হবে, অতপর তিনি তোমাদের (পুংখানপুংখ) বলে দেবেন তোমরা (দুনিয়ায়) কী কাজ করছিলে।

٦٠ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّدكُر بِالَّيْل وَيَعْلَرُ مَا جَرَحْتُرْ بِالنَّهَارِ ثُرَّ يَبْعَثُكُرْ فِيْهِ لِيُقْضَى أَجَلُّ مُّسَمَّى جَ ثُرَّ الَيْهِ مَ مُعِكُم ثُرَّ يُنْبِئُكُم بِهَا كُنْتُرْ تَعْهَلُوْنَ ع

৬১. আল্লাহ তায়ালা নিজ বান্দাদের (যাবঙীয় বিষয়ের) ওপর পূর্ণ মাত্রায় কর্তৃত্বশীল, (এ হ্রন্যেই) তিনি তোমাদের ওপর পাহারাদার (ফেরেশতা) নিযুক্ত করেন: এমনকি (দেখতে দেখতে) তোমাদের কারো যখন মৃত্যু এসে হাযির হয়, তখন প্রেরিত ফেরেশতারা তার (জীবনের) সমাপ্তি ঘটিয়ে দেয়, (দায়িত্ব পালনে ফেরেস্তারা) কখনো কোনো ভুল করে না।

١٦ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِةٍ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً * حَتَّى إِذَا جَاءَ أَحَلَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتُهُ رُسُلُنَا وَهُرْ لَا يُفَرَّطُونَ

৬২, অতপর তাদের সবাইকে বিচারের জন্যে তাদের আসল মালিকের সামনে ফিরিয়ে নেয়া হবে: হুশিয়ার (থেকো, কারণ), যাবতীয় ক্ষমতা ও কর্তত কিন্তু একা তাঁর এবং তরিৎ হিসাব গ্রহণে তিনি অত্যন্ত তৎপর

٦٢ ثُرَّ رُدُّوْ ۚ إِلَى اللهِ مَوْلُدِهُرُ الْحَقِّ الْا لَهُ الْعُكْمُ تِن وَهُوَ أَسْرَعُ الْعُسبِينَ

৬৩. তুমি (তাদের) বলো, যখন তোমরা স্থলভূমে ও সমুদ্রের অন্ধকারে (বিপদে) পড়ো, (যখন) তোমরা কাতর কর্ষ্টে এবং নীরবে তাঁকেই ডাকতে থাকো, তখন (কে) তোমাদের (সেসব থেকে) উদ্ধার করে? (কাকে তোমরা তখন) বলো (হে মালিক), আমাদের যদি তুমি এ থেকে বাঁচিয়ে দাও, তাহলে আমরা তোমার কতভ্ঞ বান্দাদের দলে শামিল হয়ে যাবো।

٣٢ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمْكِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَلْعُوْنَهُ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً } لَئِي أَنْجُٰ عِنْ مِنْ مَٰنِهِ لَنَكُوْنَى مِنَ الشَّكِدِينَ

৬৪. তুমি বলে দাও, হাঁ, আল্লাহ তায়ালাই (তখন) তোমাদের সে (অবস্থা) থেকে এবং অন্যান্য যাবতীয় বিপদ-আপদ থেকে বাঁচিয়ে দেন, তারপরও তোমরা তাঁর সাথে অন্যদের শরীক করো!

٣٢ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيْكُرْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كُرْبٍ ثُرِّ أَنْتُرْ تُشْرِكُوْنَ

৬৫. তুমি (আরো) বলো, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর তোমাদের ওপর থেকে অথবা তোমাদের পায়ের নীচ থেকে আযাব পাঠাতে সক্ষম, অথবা তিনি তোমাদের দল-উপদলে বিভক্ত করে একদলকে আরেক দলের শান্তির স্বাদ গ্রহণ করাতেও সম্পূর্ণব্রূপে সক্ষম; লক্ষ্য করো. কিভাবে আমি আমার আয়াতসমূহ (তাদের কাছে) বর্ণনা করি, যাতে করে ভারা (সভা) অনুধাবন করতে পারে।

٦٥ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَّبْعَنَ عَلَيْكُرْ عَنَابًا مِّنْ فَوْقَكُرْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلُكُرْ أَوْ يَلْبِسَكُو شِيعًا وَيُنِيْقَ بَعْضَكُو بَأْسَ بَعْضِ ء ٱنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْإِيْتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ

७७. তোমার জাতির লোকেরা এ (लाख्यान) क पश्चीकात أَلُ وَهُوَ الْحَقُّ ، قُلُ ٦٦ وَكَنَّابَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقَّ ، قُلُ করেছে, অথচ তাই একমাত্র সত্য: তুমি (ডাদের এটুকুই) বলে দাও যে, আমি তোমাদের ওপর কর্মবিধায়ক নই।

لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلِ ا

৬৭. প্রতিটি বার্তার (প্রমাণের) জন্যে একটি সুনির্দিষ্ট দিনক্ষণ মজুদ রয়েছে এবং তোমরা অচিরেই (তা) জানতে পারবে।

٦٢ لِكُلِّ نَبَا مُّشْتَقَوُّ رَوْسُوْنَ تَعْلَبُونَ

৬ সুরা আল আনয়াম

105

৬৮. তমি যখন এমন সব লোককে দেখতে পাও যারা আমার আয়াতসমূহ নিয়ে হাসি-বিদুপ করছে, তখন তুমি তাদের কাছ থেকে সরে এসো, যতোক্ষণ না তারা অন্য কথার দিকে মনোনিবেশ করে: যদি কখনো শয়তান তোমাকে ভূলিয়ে (ওখানে বসিয়ে) রাখে, তাহলে মনে পড়ার পর তুমি যালেম সম্প্রদায়ের সাথে আর বসে থেকো না ৷

٦٨ وَإِذَا رَآيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيٓ أَيْتِنَا فَآعُرِضْ عَنْهُرْ حَتَّى يَحُوْمُوا فِي حَرِيْتِ غَيْرِهِ ﴿ وَإِمَّا يُنْسِينَّكَ الشَّيْطُيُّ فَلَا تَقْعُنْ بَعْنَ النَّاكُ ٰ ي مَعَ الْقَوْمِ الظُّلْمِينَ

৬৯. তাদের (এসব) কার্যকলাপের ব্যাপারে আল্লাহ ^ তায়ালাকে যারা ভয় করে, তাদের ওপর হিসাবের কোনো দায়দায়িত্ব নেই. তবে উপদেশ তো দিয়েই যেতে হবে. হতে পারে তারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করবে।

79وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِم مِّنْ شَيْءِ وَلَٰكِنْ ذِكْلِي لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ا

৭০. সেসব লোকদের তুমি (আল্লাহর বিচারের জন্যে) ছেড়ে দাও যারা তাদের দ্বীনকে নিছক খেল-তামাশার পরিণত করে রেখেছে এবং এ পার্থিব জীবন যাদের প্রতারণার জালে আটকে রেখেছে, তুমি এ (কোরআন) দিয়ে (তাদের আমার কথা) শ্বরণ করাতে থাকো, যাতে করে কেউ নিজের অর্জিত কর্মকান্ডের ফলে ধ্বংস হয়ে যেতে না পারে. (মহাবিচারের দিন) তার জ্বন্যে আল্লাহ তায়ালা ছাড়া কোনো সাহায্যকারী বন্ধ এবং সুপারিশকারী থাকবে না। সে যদি নিজের সব কিছু দিয়েও দেয়, তবু তার কাছ থেকে (সেদিন তা) গ্রহণ করা হবে না: এরাই হচ্ছে সে (হতভাগ্য) মানুষ, যাদের নিজেদের অর্জিত গুনাহের কারণে তাদের ধ্বংস করে দেয়া হবে, আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করার কারণে তাদের জন্যে (আরো থাকবে) ফুটন্ত পানি ও মর্মন্তদ শান্তি।

٤٠ وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَلُوْا دِيْنَهُرْ لَعِبًا وَّلَهُوًّا وَّغَرَّتُهُرُ الْحَيٰوةُ النُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِهَا كَسَبَسْ فَى لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَّلا شَفِيْعٌ ع وَإِنْ تَعْدِلْ كُلٌّ عَدْلِ لَّا يُؤْخَنُ مِنْهَا م أُولِئِكَ الَّذِينَ ٱبْسُلُوا بِهَا كَسَبُوْا ۚ لَهُرْ شَرَابٌ مِّنْ حَوِيْدٍ وَّعَلَابً ٱلْيُرِّ بِهَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ع

৭১. তুমি (তাদের) বলো, আমরা কি আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে এমন কাউকে ডাকবো, যে– না আমাদের কোনো উপকার করতে পারে, না আমাদের কোনো অপকার করতে পারে, আল্লাহ তায়ালা যেখানে আমাদের (চলার জন্যে) সঠিক পথ বাতলে দিয়েছেন, সেখানে তাঁকে বাদ দিয়ে আমরা কি আবার উল্টো পথে ফিরে যাবো- ঠিক সে ব্যক্তিটির মতো, যাকে শয়তানরা যমীনের বকে পথদ্রষ্ট করে ঘারে ঘারে ঠোকর খাওয়াচ্ছে অথচ তার সংগী-সাধীরা তাকে ডাকছে, তুমি আমাদের কাছে এসো, আমাদের কাছে (মজুদ আল্লাহ তায়ালার) সহজ সরল পথের দিকে! তুমি বলে দাও, সত্যিকার অর্থে হেদায়াত তো তাই; যা আল্লাহর (পক্ষ থেকে এসেছে) এবং আমাদের এ আদেশ দেয়া হয়েছে যেন আমরা সৃষ্টিকুলের মালিকের সামনে আনুগত্যের মাথা নত করি,

1 عُلْ أَنَكُمُوا مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُورَدُّ عَلَّى أَعْقَابِنَا بَعْنَ إِذْ هَالِنَا اللَّهُ كَالَّانِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيْطِيْنُ فِي الْأَرْضِ مَيْرَانَ مِ لَهُ أَصْحُبُ يَنْ عُوْنَهُ إِلَى الْهُدَى انْتِنَا مَ قُلْ إِنَّا هُدَى اللَّهِ مُو الْهُلَىٰ وَأُمِوْنَا لِنُسْلِيرَ لَوَبِّ الْعُلَمِينَ لا

৭২. আমরা যেন নামায প্রতিষ্ঠা করি এবং আল্লাহ তায়ালাকেই ভয় করি: (কেনা) তিনিই হচ্ছেন এমন সন্তা, যাঁর সামনে (একদিন) তোমাদের সবাইকে সমবেত করা হবে।

٢٠ وَأَنْ أَقِيْهُوا الصَّلْوةَ وَاتَّقُوْهُ م وَهُوَ الَّذِي ٛ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

৭৩. তিনিই যথাবিধি আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন: যেদিন (আবার) তিনি বলবেন (সব কিছু بِالْحَقّ ، وَيَوْاَ يَقُولُ كُنْ فَيكُونَ ه قَوْلُهُ (विनीन) عَلَيْ مَا الله عَامِ (अार्थ आर्थ अार्थ अार्य হয়ে যাবে, তাঁর কথাই হচ্ছে চূড়ান্ত সত্য, যেদিন শিংগায় ফুঁ দেয়া হবে (সেদিন) যাবতীয় কর্তৃত্ব ও বাদশাহী হবে

٢٢ وَهُوَ الَّذِي ْ خَلَقَ السَّاوٰتِ وَالْاَرْضَ الْحَقُّ ، وَلَهُ الْهُلْكُ يَوْاَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ،

৬ সূরা আল আনয়াম



অকগত।

৭৪. (স্মরণ করো,) যখন ইবরাহীম তার পিতা আযরকে বললো, তুমি কি (সত্যি সত্যিই এই) মূর্তিগুলোকে মাবুদ বানিয়ে নিয়েছো? আমি তো দেখতে পাচ্ছি, তুমি ও তোমার সম্প্রদায়ের লোকেরা স্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত রয়েছো।

٤٣ وَإِذْ قَالَ إِبْرُهِيْدُ لِآبِيْدِ أَزَرَ ٱتَتَّخِلُ أَصْنَامًا الهَدِّ عِ إِنِّي أَرِيكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَل مبين

৭৫. এভাবে আমি ইবরাহীমকে আকাশসমূহ ও যমীনের যাবতীয় পরিচালন ব্যবস্থা দেখাতে চেয়েছিলাম, যেন সে নিশ্বিত বিশ্বাসীদের দলে শামিল হয়ে যেতে পারে।

٤٥ وَكَنَالِكَ نُرِئَ إِبْرُهِيْرَ مَلَكُوْتَ السَّبُوٰسِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ

৭৬. যখন তার ওপর আঁধার ছেয়ে রাত এলো, তখন সে একটি তারকা দেখতে পেলো, (তারকাটি দেখেই) সে বলে উঠলো, এ (বুঝি) আমার মালিক, অতপর যখন তারকাটি ডবে গেলো, তখন সে (কিছ্টা দ্বিধাগ্রস্ত হয়ে) বললো, যা ডুবে যায় তাকে তো আমি (আমার মালিক বলে) পছন্দ করতে পারি না!

٤٦ فَلَهًا مَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَأَ كَوْكَبًا ۽ قَالَ \dot{a} \dot{b} مَنَ ا رَبِّي \dot{y} ء فَلَمَّا اَفَلَ قَالَ \dot{Y} أُمِبُ الأفليْنَ

99. (बाब) राज्य (बाब) वर्ग (बाकाल) व्यकित (बाब) व्यक्ति क्रांचे केंद्री (آرَةً عَنَالَ هَٰنَ ا رَبِّي عَلَيْ ا مَنَا الْقَصَرَ بَازِغًا قَالَ هَٰنَ ا رَبِّي عَلَيْهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّه তখন বললো (হাঁ), এই (মনে হয়) আমার মালিক, অতপর (এক পর্যায়ে) বখন তাও ছুবে গোঁলা তখন সে বললো, وَبِّى رَبِّى رَبِّى رَبِّى رَبِّى أَلْلَهُ عَالَ لَائِنَ لَلْمِ يَهْدِنِي رَبِّى رَبِّى رَبِّى مَا اللهُ الل আমার 'রব' যদি আমাকে সঠিক পথ না দেখান, তাহলে আমি অবশ্যই গোমরাহ লোকদের দলে শামিল হয়ে যাবো।

لاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْرِ الضَّالِّينَ

٩৮. (এরপর দিনের বেলায়) সে যখন দেখলো একটি مُنَّا رَبِّي أَلْ الشَّهْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰنَ ا رَبِّي كَالَةً المَّالِ المَّهُ عَلَيًّا رَا الشَّهْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰنَ ا رَبِّي السَّالِ المَّالِي المَّالِي المَّالِي المَّالِي المَّالِي المَّالِي المُ منَ اَكْبُرُ عَ فَلَهَا اَفَلَتُ قَالَ يَقُورُ إِنِّي اللهِ العالم प्रविद्यात চाইতে বড়ো, (त्रक्षा विद्य هاه العالم عنه عنه العالم হচ্ছে) এই আমার মালিক, (কারণ এ যাবত যা দেখেছি) এটা তার গেলো, তখন ইবরাহীম (নতুন বিশ্বাসে বলীয়ান হয়ে) নিজের জাতিকে ডেকে বললো, হে আমার সম্প্রদায়ের লোকেরা, তোমরা যে সব কিছুকে আল্লাহ তায়ালার সাথে অংশীদার বানাও, আমি তা থেকে সম্পূর্ণ মুক্ত।

بَرِيءً مِّهًا تُشْرِكُونَ

৭৯. আমি নিষ্ঠার সাথে সেই মহান সার্বভৌম মালিকের দিকেই আমার মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছি, যিনি এই আসমানসমূহ ও যমীন (সহ চাঁদ-সুরুজ-গ্রহ-তারা সব কিছু) পয়দা করেছেন, আমি (এখা) আর মোশরেকদের দলভুক্ত নই।

44 إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّاوْسِ وَ الْأَرْضَ مَنِيْفًا وَّمَّا أَنَا مِنَ الْبُشْرِكِيْنَ ع

৮০. (এর পরই) তার জাতির লোকেরা তার সাথে (আল্লাহ তায়ালার ব্যাপারে) বিতর্ক শুরু করে দিলো: (জবাবে) সে বললো, তোমরা কি আমার সাথে স্বয়ং (কুল মাখলুকাতের মালিক) আল্লাহ তায়ালার ব্যাপারে তর্ক করছো, অথচ তিনিই আমাকে সঠিক পথের দিশা দিয়েছেন; আমি (এক আর) তোমাদের (মাবুদদের) ভরাই لَكْ الله وَسِعَ رَبِّي كُلُّ 🔻 দিয়েছেন) ক্রিটি ক্র না- যাদের তোমরা আল্লাহ তায়ালার (কাজে) অংশীদার (মনে) করো। অবশ্য আমার মালিক যদি অন্য কিছু চান (সেটা আলাদা কথা); আমার মালিকের জ্ঞান সব কিছুর ওপর পরিব্যাপ্ত; (এরপরও) কি তোমরা সতর্ক হবে নাঃ

٨٠ وَمَا هُمُ قَوْمُهُ ، قَالَ ٱتُعَامُونِي فِي اللَّهِ وَقَلْ مَلَّى ۚ وَكَّ آَهَاكُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ شَيْء علْهًا ، أَفَلَا تَتَنَكُّونَ

৮১. তোমরা যাকে আল্লাহ তায়ালার সাথে অংশীদার বানাও, তাকে আমি কিভাবে ভয় করবো, অথচ তোমরা আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্যদের শরীক করতে ভয় পাও না, যাদের ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালা কোনো প্রমাণপত্র

٨١ وكَيْفَ أَهَانُ مَا آَهُرَكُتُرُ وَلَا تَحَافُوْنَ ٱنَّكُرْ اَهُ كَتُرُ بِاللَّهِ مَا لَرْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ

وَوَهَبْنَا لَدَّ اِسْعَقَ وَيَعْقُوْبَ مَ كُلَّا هَنَيْنَا عِ وَنُوْمًا هَنَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّهِ دَاوْدَ وَسُلَيْمِي وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَى وَهُرُونَ ، وكَالِكَ نَجْزى الْهُحْسِنِينَ ٧

كُنْتُم ْ تَعْلَبُونَ مِ

حَكيْرٌ عَلَيْرٌ

৮৫. যাকারিয়া, ইয়াহইয়া, ঈসা এবং ইলিয়াসকেও (আমি সঠিক পথ দেখিয়েছিলাম): এরা সবাই ছিলো كُلُّ مِّنَ الصَّلِحِيْنَ لا নেককারদের দলভুক্ত।

৮৬. আমি (আরো সংপথ দেখিয়েছিলাম) ইসমাঈল, ইয়াসা, ইউনুস এবং লৃতকেও; এদের সবাইকেই আমি (নৰুণ্ড দিয়ে) সৃষ্টিকুলের ওপর বিশেষ মর্যাদা দান করেছিলাম।

মাঝে দাউদ, সোলায়মান, আইয়ুব, ইউসুফ, মুসা এবং হারনকেও (আমি হেদায়াত দান করেছি): আর এভাবেই

আমি সংকর্মশীলদের পুরস্কার দিয়ে থাকি i

٨٦ وَإِشْعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا مَ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعُلَمِينَ لا

৮৭. এদের পূর্বপুরুষ, এদের পরবর্তী বংশধর ও এদের ভাই বন্ধুদেরও আমি (নানাভাবে পুরস্কৃত করেছিলাম). আমি এদেরকে বাছাই করে নিয়েছিলাম এবং আমি এদের সবাইকে সরল পথে পরিচালিত করেছিলাম।

٨٠ وَمِنْ أَبَائِهِرْ وَذُرَّيَّتِهِرْ وَإِغُوَانِهِرْ عَ وَ اجْتَبَيْنُهُمْ وَهَلَيْنُهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمُ

৮৮. এ হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার হেদায়াত, নিজ বান্দাদের মাঝে যাকে চান তিনি তাকেই এ হেদায়াত দান করেন: (কিন্তু) তারা যদি শেরেক করতো, তাহলে তাদের যাবতীয় কর্ম অবশ্যই নিক্ষল হয়ে যেতো।

٨٨ ذٰلكَ مُنَى الله يَهْدِي بِهِ مَنْ يُشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ، وَلَوْ أَشْرَكُوْ الصَّبِطَ عَنْهُرْ مَّا كَانُوْ إِيعْمَلُوْنَ

৮৯. এরাই ছিলো সেসব লোক, যাদের আমি কেতাব, প্রজ্ঞা ও নবুওত দান করেছি. (এ সত্ত্বেও আজ্ঞ) যদি তারা وَ الْحُكْمَرَ وَ النَّبُوَّةَ مَ مَانَ يَّكُفُرُ بِهَا هُؤُ كِأَهِ وَالسَّامِ وَالنَّبُوَّةَ مَ مَانَ يَّكُفُر بِهَا هُؤُ كِأَهِ وَالسَّامِ وَالسَّامِةِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّ اللَّهُ اللّ (অতীতে) এমন এক সম্প্রদায়ের ওপর এ দায়িত্ব অর্পণ করেছিলাম, যারা কখনো (এগুলো) প্রত্যাখ্যান করেনি।

٨٩ أُولَّنْكَ النَّنِيَ النَّيْنُمُ الْكُتْم فَقَنْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْ ا بِهَا بِكُفِرِيْنَ

৯০. এরা হচ্ছে সে সব (সৌভাগ্যবান বান্দা)– আল্লাহ তায়ালা যাদের সৎপথে পরিচালিত করেছেন: অতএব (হে (भाशमान), ज्ञिष धामत পথের जनुসর्ग करता (धवर \hat{y} के \hat{y} । أَشُنُكُمْ عَلَيْهِ أَجُرًا وَانْ هُوَ الْعَالَ وَانْ مُو الْعَالْ وَانْ مُو الْعَالَ وَانْ مُو الْعَلْمُ وَانْ وَان

٩٠ أُولَٰئكَ الَّٰنِيْنَ مَنَى اللَّهُ فَبَهُنْهُمُ

৬ সুরা আল আনয়াম

কাফেরদের) বলো, আমি এর ওপর তোমাদের কাছ থেকে কোনো পারিশ্রমিক চাই না; (আসলে) এ হচ্ছে (দুনিয়ার) মানুষের জন্যে একটি শ্বরণিকা মাত্র। إلَّا ذِكْرَٰى لِلْعُلَمِيْنَ ع

৯১. তারা আল্লাহ তায়ালাকে তাঁর যথাযোগ্য মর্যাদা দান করেনি, (বিশেষ করে) যখন তারা বললো, আল্লাহ তায়ালা কোনো মানুষের ওপর (গ্রন্থের) কোনো বস্তুই নাযিল করেননি; তুমি তাদের জিজ্ঞেস করো, (যদি তাই হয় তাহলে) মৃসার আনীত কেতাব— যা মানুষের জন্যে ছিলো এক আলোকবর্তিকা ও পথনির্দেশ, যা তোমরা কাগজের (পাতায়) লিখে রাখতে, যার কিছু অংশ তোমরা মানুষের সামনে প্রকাশ করতে এবং অধিকাংশই গোপন করে রাখতে, (সর্বোপরি) সে কিতাব দ্বারা তোমাদের এমন সব জ্ঞান শিক্ষা দেয়া হতো, যার কিছুই তোমরা জানতে না এবং তোমাদের পূর্বপুক্রমরাও জ্ঞানতো না— তা কে নাযিল করেছেন। তুমি বলো (হাঁ,) আল্লাহ তায়ালাই (তা নাযিল করেছেন), (হে নবী,) তুমি তাদের (এসব) নিরর্থক আলোচনায় মন্ত্র থাকতে দাও।

৯২. এটি এক বরকতপূর্ণ গ্রন্থ, যা আমি (তোমার কাছে) পাঠিয়েছি, এটি আগের কিতাবের পুরোপুরি সত্যায়ন করে এবং যাতে এ (কিতাব) দিয়ে তুমি মক্কা ও তার পার্শ্ববর্তী জনপদসমূহের মানুষকে সাবধান করবে; যারা আখেরাতের ওপর ঈমান আনে তারা এ কিতাবের ওপরও ঈমান আনে, আর তারা তাদের নামাযের হেফাযত করে।

٩٢ وَهٰنَ الْحِتْبُ اَنْزَلْنَهُ مُبْرَكُ مُّصَرِّقُ اللَّهِ مُنْرَكُ مُّصَرِّقُ اللَّهِ مُنْرَكُ اللَّهُولِي وَمَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ وَالنِّيْنَ يُوْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ يُوْمِنُونَ بِهِ وَهُرْ عَلَى صَلَاتِهِ رَيْحَافِظُونَ

৯৩. সে ব্যক্তির চাইতে বড়ো যালেম আর কে আছে যে আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করে, অথবা বলে, আমার ওপর ওহী নাযিল হয়েছে, (যদিও) তার প্রতি কিছুই নাযিল করা হয়নি, (তার চাইতেই বা বড়ো যালেম কে,) যে বলে, আমি অচিরেই আল্লাহর নাযিল করা প্রছের মতো কিছু নাযিল করে দেখাবো! যদি (সত্যি সত্যিই) যালেমদের মৃত্যু-যন্ত্রণা (উপস্থিত) হবার সময় (তাদের অবস্থাটা) তুমি দেখতে পেতে! যখন (মৃত্যুর) ফেরেশ্তারা তাদের দিকে হাত বাড়িয়ে দিয়ে বলবে, তোমাদের প্রাণবায়ু বের করে দাও; তোমরা আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে যেসব অন্যায় কথা বলতে এবং আল্লাহর আয়াতের ব্যাপারে যে (ক্ষমাহীন) ঔদ্ধত্য প্রকাশ করতে, তার জন্যে আজ অত্যন্ত অবমাননাকর এক আযাব তোমাদের দেয়া হবে।

٩٣ وَمَن أَظْلَمُ مِنْ افْتَرَٰى عَلَى اللهِ كَنِبًا أَوْ قَالَ أُوْحِى إِلَى وَلَمْ يُوْحَ إِلَيْهِ فَكَرِبًا أَوْ قَالَ أُوحِى إِلَى وَلَمْ يُوْحَ إِلَيْهِ هَى أَ وَمَن قَالَ سَأَنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللهُ وَلَوْ تَرْى إِذِ الظّّلِمُونَ فِى غَمَرْسِ اللهُ وَلَوْ تَرْى إِذِ الظّّلِمُونَ فِى غَمَرْسِ الْمَوْسِ وَالْمَلَّئِكَةُ بَاسِطُوْ آ أَيْدِيْهِمْ عَلَى اللهِ غَيْر الْمُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللهِ غَيْرَ الْحَقِ وَكُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللهِ غَيْرَ الْحَقِ وَكُنْتُمْ عَنَ إِيْنِهِ تَسْتَكْبِرُونَ اللهِ غَيْرَ الْحَقِ وَكُنْتُمْ عَنَ إِنْتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ

৯৪. (আজ সত্যি সত্যিই) তোমরা আমার সামনে (একাকী) নিসঙ্গ অবস্থায় এলে, যেমনি নিসঙ্গ অবস্থায় আমি তোমাদের প্রথমবার সৃষ্টি করেছিলাম, অতপর তোমাদের আমি যা কিছু (বিষয় সম্পদ) দান করেছিলাম, তার সবটুকুই তোমরা পেছনে ফেলে (একান্ত ধালি হাতে এধানে) এসেছো, তোমাদের সাথে তোমাদের সুপারিশকারী ব্যক্তিদের— যাদের তোমরা মনে করতে তারা তোমাদের (কাজকর্মের) মাঝে অংশীদার, তাদের তো আজ তোমাদের মাঝে দেখতে পাক্ষি না। বস্তুত তাদের এবং তোমাদের মধ্যকার সেই (মিথ্যা) সম্পর্ক আজ ছিন্ন ভিন্ন হয়ে গেছে এবং তাদের ব্যাপারে তোমরা যা ধারণা করতে তাও আজ নিক্ষল (প্রমাণিত) হয়ে গেছে।

٩٣ وَلَقَنْ جِنْتُهُوْنَا فُرَادٰی کَهَا هَلَقَنْکُرْ اَوْلَ مَرَّةً وَّتَرَكْتُرْ الله عَوْلَنْكُرْ وَرَاءَ طُهُوْرِكُرْ وَ وَمَا تَرْی مَعَكُرْ شُفَعَاءَكُرُ اللهٰی وَمَا تَرْی مَعَكُرْ شُفَعَاءَكُرُ اللهٰی وَمَا تَرْی مَعَكُرْ شُفَعَاءَكُرُ اللهٰی وَمَا تَرْی مَعَکُرْ شُوَکَوْا الله لَقَنْ تَقَطَّعَ وَمَا تَرْی مُوکَوْا الله لَقَنْ تَقَطَّعَ بَیْنَکُرْ وَضَلَّ عَنْکُرْ الله کَنْتُرْ تَرْعُمُونَ عَ



পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ

৯৫. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা শস্যবীজ ও আঁটিগুলো অংকুরিত করেন, তিনিই নির্জীব (কিছু) থেকে জীবস্ত (কিছু) বের করে আনেন, (আবার) তিনিই জীবন্ত (কিছু) থেকে প্রাণহীন কিছু নির্গত করেন; এই (সৃষ্টি কৌশলের মালিক) হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা, (এরপরও) তোমরা কোথায় কোথায় ঠোকর খাচ্ছো (বলো)!

٩٥ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ١ يُخْرِجُ الْحَىُّ مِنَ الْمَيِّسِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّسِ مِنَ الْحَيِّ وَذَٰلِكُرُ اللَّهُ فَأَتَّى تُؤْفَكُونَ

৯৬. (ब्राख्ब खंशांब एक बदा) िनिरे छिसांब छितास घटान, िनि فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا ١٩٦٩ রাতকে তোমাদের বিশ্রামের জন্যে নির্দিষ্ট করে দিয়েছেন ও সুরুজ বানিয়েছেন, এসব কিছুই হচ্ছে মহাপরাক্রমশালী ও জ্ঞানী আল্লাহ তায়ালার নির্ধারণ করা (বিষয়)।

العزيز العليير

৯৭. তিনি তোমাদের জন্যে (অসংখ্য) তারকা বানিয়ে রেখেছেন যেন তোমরা জলে-স্থলের আঁধারে পথের দিশা পেতে পারো, যে সম্প্রদায়ের লোকেরা (এ সব কিছু) জানে, তাদের জন্যে আমি আমার নিদর্শনসমূহ খুলে খুলে বর্ণনা করেছি।

٩٤ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ النَّجُوْآ لِتَهْتَكُوا بِهَا فِي ظُلُمِتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ، قَلْ فَصَّلْنَا الْإِيْسِ لِقَوْرٍ يَعْلَمُونَ

৯৮. তিনি তোমাদের মাত্র একটি ব্যক্তিসন্তা থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি (তোমাদের) থাকার জায়গা ও মালসামান রাখার জায়গা (বানালেন), জ্ঞানী লোকদের জন্যে আমি আমার নিদর্শনগুলো (এজারেই) বিস্তারিতভাবে বর্ণনা করে থাকি।

٩٨ وَهُوَ الَّذِي ٓ أَنْشَاكُم مِنْ تَنْسُ وَّاحِلَةٍ فَهُسْتَقَوَّ وَمُسْتَوْدُعٌ م قَنْ فَصَّلْنَا الْأَيْبِ لقُومُ يَفْقَهُونَ

৯৯. তিনি আসমান থেকে পানি (-র ধারা) নাযিল করেন. অতপর সে পানি দিয়ে আমি সব রকমের উদ্ভিদ (ও গাছপালা) জন্মানোর ব্যবস্থা করি, তা থেকে সবুজ শ্যামল পাতা উদগত করি, পরে তা থেকে পরস্পর জড়ানো ঘন শস্যদানাও সৃষ্টি করি এবং (ফলের) ভারে নুয়ে পড়া খেজুরের গোছা বের করে আনি, আংগ্রের উদ্যানমালা, জলপাই ও আনার পয়দা করি, এগুলো একে অন্যের সদৃশ হয়, আবার (একটার সাথে) আরেকটার গরমিলও থাকৈ: গাছ যখন সুশোভিত হয় তখন (এক সময়) তা ফলবান হয়, আবার যখন ফলগুলো পাকতে শুরু করে. তখন তোমরা এই সৃষ্টি-নৈপুণ্যের দিকে তাকিয়ে থাকো; অবশ্যই এতে ঈমানদার লোকদের জন্যে বহু নিদর্শন রয়েছে।

٩٩ وَهُوَ الَّذِي ٓ أَنْزَلَ مِنَ السَّهَاءِ مَاءً ج فَٱغْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَٱغْرَجْنَا مِنْهُ غَفِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ، وَمِنَ النَّخُل مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنَّتِ مِّنْ أَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُونِ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهِ ، أَنْظُرُوا إلى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِم ، إِنَّ فِي دَلِكُر لَايتِ لِقَوْمٍ يَؤْمِنُونَ

১০০. তারা জ্বিনকে আল্লাহর সাথে শরীক মনে করে, অথচ আল্লাহ তায়ালাই জ্বিনদের পয়দা করেছেন. অজ্ঞতার বশবর্তী হয়ে তারা আল্লাহ তায়ালার ওপর পুত্র-কন্যা ধারণের অপবাদও আনয়ন করে, অথচ আল্লাহ তায়ালা মহিমানিত, এরা যা বলে তিনি তার চাইতে অনেক মহান ও পবিত্র।

١٠٠ وَجَعَلُوْا لِلَّهِ شُرَكَّاءَ الْحِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنْسٍ بِغَيْرِ عِلْمِ ، سُبْطنَهُ وَتَعْلَى عَبًّا يَصِفُونَ ع

১০১. তিনি আসমানসমূহ ও যমীনের (একক) উদ্ভাবক। (এদের তুমি বলো), তাঁর সম্ভান হবে কি ভাবে, তাঁর তো জীবনসংগিনীই নেই, সব কিছু তিনিই পয়দা করেছেন এবং সব কিছু সম্পর্কে তিনি পুরোপুরিই ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

١٠١ بَدِيْعُ السَّيْوٰتِ وَالْأَرْضِ ، أَتَّى يَكُوْنُ لَهُ وَلَنَّ وَّلَكُمْ تَكُنْ لَّهُ صَاحِبَةً ، وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ج وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرٌ

১০২. তিনিই আল্লাহ তায়ালা- তোমাদের মালিক, তিনি ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই, সব কিছুর (একক) স্রষ্টা

١٠٢ ذَٰلِكُم اللَّهُ رَبُّكُم عَ لَا إِلَّهَ إِلَّا هُوَ عَ

৬ সুরা আল আনয়াম

309

মন্যিল ২

٦٢

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ৭ ওয়া ইযা সামিউ তিনি, সুতরাং তোমরা তাঁরই এবাদাত করো, সব কিছুর خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُنُوهُ مَ وَهُوَ عَلَى كُلِّ ওপর তিনি চূড়ান্ত তত্তাবধায়ক বটে। شَيْءِ وَّكِيْلٌ ১০৩. কোনো (সাধারণ) দৃষ্টি তাঁকে দেখতে পায় না, ١٠٣ ٧َ تُنْرِكُهُ الْإَبْصَارُ رَ وَهُوَ يُنْرِكُهُ (অথচ) তিনি সব কিছুই দেখতে পান. তিনি সৃক্ষদর্শী. الْإَبْصَارَع وَمُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ তিনি সব কিছু সম্পর্কেই খোঁজ-খবর রাখেন। ১০৪, তোমাদের কাছে তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে ١٠٣ قَلْ جَاءَكُم بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُم عَ فَمَن أَبْصَرَ (এই) সৃন্ধ দৃষ্টিসম্পনু জ্ঞান (-এর নিদর্শন) এসেছে, অতপর যদি কোনো ব্যক্তি (এসব নিদর্শন) দেখতে পায়. فَلِنَفْسِهِ } وَمَنْ عَمِي فَعَلَيْهَا ﴿ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ তাহলে সে তা দেখবে তার নিজের (কল্যাণের) জন্যেই, بحفيظ আবার যদি কেউ (তা না দেখে) অন্ধ হয়ে থাকে, ভাহলে তার দায়িত্ব তার ওপরই (বর্তাবে। তুমি বলো); আমি তোমাদের ওপর তত্ত্বাবধায়ক নই। ১০৫. আমি এভাবেই আমার আয়াতগুলো (তোমাদের ١٠٥ وَكَنْ لِكَ نُصَرِّفُ الْأَيْتِ وَلِيَقُوْلُوْا কাছে) বিধৃত করি, যাতে করে তারা একথা বলতে পারে, তুমি (এসব কথা ভালো করেই) পড়ে এসেছো এবং যারা دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَهُونَ জ্ঞানী তাদের জন্যে যেন আমি তাকে (আরো) সুস্পষ্ট করে দিতে পারি। ১০৬. (হে মোহাম্মদ.) তুমি শুধু তারই অনুসরণ করো-١٠٦ اتَّبعْ مَا أُوْحِيَ الَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ عِلَا الْهَ যা তোমার মালিকের কাছ থেকে তোমার কাছে নাযিল করা হয়েছে, আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কোনো মাবুদ إِلَّا هُوَج وَ أَعْرِضَ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ নেই, (এরপরও) যারা শেরেকে লিঙ, তাদের তুমি (পুরোপুরিই) এড়িয়ে চলো। ১০৭. আল্লাহ তায়ালা যদি চাইতেন, তাহলে এরা কেউই ١٠٤ وَلَوْ شَاءً اللَّهُ مَا آشَرَكُوْا ، وَمَا جَعَلْنَكَ তার সাথে শেরেক করতো না; আর আমি (কিন্তু) তোমাকে তাদের ওপর পাহারাদার নিযুক্ত করে পাঠাইনি, عَلَيْهِرْ حَفَيْظًا عِ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِرْ بِوَكَيْل (সত্যি কথা হচ্ছে) তুমি তো তাদের ওপর কোনো অভিভাবকও নও। ١٠٨ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَنْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ ১০৮. তারা আল্লাহ তায়ালার বদলে যাদের ডাকে, তাদের তোমরা কখনো গালি-গালাজ করো না. নইলে শক্রতার اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَنْوًا' بِغَيْرِ عِلْمِ ﴿ كَنَالِكَ বশবর্তী হয়ে না জেনে আল্লাহ তায়ালাকেও তারা গালি দেবে: আমি প্রত্যেক জাতির কাছেই তাদের নিজেদের زَيُّنَّا لِكُلَّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ س ثُمَّ إِلَى رَبِّهِمْ (स्वाइंक्ड्रे) مِعْمَلُهُمْ س ثُمَّ إِلَى رَبِّهِم তাদের মালিকের কাছে ফিরে যেতে হবে, (তারপর) তিনি مُّرْجِعُهُرْ فَيُنَبِّنُهُرْ بِهَا كَانُوْ| يَعْهَلُوْنَ তাদের বলে দেবেন, তারা (দুনিয়ার দ্বীবনে) কি করে এসেছে। ১০৯. এরা আল্লাহর নামে কঠিন শপথ করে বলে, যদি ١٠٩ وَ أَقْسَهُوا بِاللَّهِ جَهْلَ أَيْهَانِهِمْ لَئِي তাদের কাছে কোনো নিদর্শন আসে, তাহলে অবশ্যই جَاءَتُهُمْ أَيَةً لَّيْهُ منى بهَا ﴿ قُلْ إِنَّهَا الْإِينَ তারা তার ওপর ঈমান আনবে: তুমি বলো, নিদর্শন পাঠানো (সম্পূর্ণত) আল্লাহ তায়ালার ব্যাপার, তুমি কি عِنْنَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُولَ لِا أَنَّهَا إِذَا جَاءَتُ لَا عِنْنَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُولَ لا أَنَّهَا إِذَا جَاءَتُ لَا জানো (এদের অবস্থা), নিদর্শন এলেও এরা কিন্তু কখনো ঈমান আনবে না। ১১০. আমি (অচিরেই) তাদের অন্তকরণ ও দৃষ্টিশক্তিকে ١١٠ وَنُقَلِّبُ أَفْئِلَ تَهُر وَ أَبْصَارَهُمْ كَهَا لَمْ (অন্যদিকে) ফিরিয়ে দেবো, যেমন তারা প্রথম বারেই এ (কোরআনের) ওপর ঈমান আনেনি এবং আমি (এবার) يُؤْمِنُوْ ابِهِ أَوَّلَ مَوَّةٍ وَّنَنَ رُهُرْ فِي طُغْيَانِهِرْ

তাদের অবাধ্যতার আবর্তে ঘুরপাক খাওয়ার জন্যে ছেড়ে

দেবো!

يعهون ع

১১১. (এমনকি) আমি যদি তাদের কাছে (আমার)
ফেরেশ্তাদেরও পাঠিয়ে দেই এবং (কবর থেকে) মৃত
ব্যক্তিরাও যদি (উঠে এসে) তাদের সাথে কথা বলে,
কিংবা আমি যদি (দুনিয়ার) সমুদয় বস্তুও এনে তাদের
ওপর জড়ো করে দেই, তবু এরা (কখনো) ঈমান আনবে
না, অবশ্য (এদের কারো ব্যাপারে) যদি আল্লাহ তায়ালা
(ভিন্ন কিছু) চান (তা আলাদা কথা। আসলে), এদের
অধিকাংশ ব্যক্তিই মূর্ধের আচরণ করে।

১১২. আমি এভাবেই প্রত্যেক নবীর জন্যে (যুগে যুগে কছু কিছু) দৃশমন বানিয়ে রেখেছি মানুষের মাঝ থেকে, (কিছু আবার) জ্বিনদের মাঝ থেকে, যারা প্রতারণা করার উদ্দেশে একে অন্যকে চমকপ্রদ কথা বলে, তোমার মালিক চাইলে তারা (অবশ্য এটা) করতো না, অতএব তুমি তাদের ছেড়ে দাও, তারা যা পারে মিথ্যা রচনা করে বেডাক!

১১৩. যারা শেষ বিচারের দিনের ওপর ঈমান রাখে না, তাদের মন এর ফলে শয়তানের প্রতি অনুরাগী হয়ে পড়ে, যাতে করে তারা তার ব্যাপারে সন্তুষ্ট থাকতে পারে, (সর্বোপরি) তারা যেসব কুকর্ম চালিয়ে যেতে চায়, তাও এর ফলে নির্বিঘ্নে তারা চালিয়ে যেতে পারে।

১১৪. (তুমি বলো,) আমি কি আল্লাহ তারালা ছাড়া অন্য কোনো ফয়সালাকারী সন্ধান করবো, অথচ তিনিই হচ্ছেন সেই মহান সন্তা, যিনি তোমাদের কাছে সবিস্তারে কিতাব নাযিল করেছেন; (আগ) যাদের আমি আমার কিতাব দান করেছিলাম তারা জানে, তোমার মালিকের পক্ষ থেকে সত্য বাণী নিয়েই এটা (খাল কোরখান) নাযিল করা হয়েছে, অতএব তুমি কখনো সন্দিহানদের অস্তর্ভুক্ত হয়ো না।

১১৫. ন্যায় ও ইনসাফ (-এর আলোকে) তোমার মালিকের কথাগুলোকে পরিপূর্ণ হয়ে গেছে এবং তাঁর কথা পরিবর্তন করার কেউ নেই, তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

১১৬. (বে মোহাম্মদ,) দুনিয়ার অধিকাংশ মানুষের কথা যদি তুমি মেনে চলো, তাহলে তারা তোমাকে আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে বিচ্যুত করে ছাড়বে; কেননা এরা নিছক অনুমানের ওপর ভিত্তি করেই চলে, (অধিকাংশ ব্যাপারে) এরা মিথ্যা ছাড়া অন্য কিছু বলেই না।

১১৭. তোমার মালিক নিসন্দেহে (এ কথা) ভালো করেই জানেন কে তাঁর পথ ছেড়ে বিপথগামী হচ্ছে, (আবার) কে সঠিক পথের অনুসারী– তাও তিনি সম্যক অবগত রয়েছেন।

১১৮. যদি আল্লাহ তায়ালার আয়াতের ওপর তোমরা বিশ্বাস করো, তাহলে তোমরা (শুধু) সেসব (জন্তুর গোশ্ত) খাবে, যার ওপর (যবাই করার সময়) আল্লাহ তায়ালার নাম নেয়া হয়েছে।

১১৯. তোমাদের এ কি হয়েছে! তোমরা সেসব (জন্তুর গোশ্ত) কেন খাবে না, যার ওপর (যবাইর সময়) আল্লাহ তায়ালার নাম নেয়া হয়েছে, (বিশেষ করে যখন) আল্লাহ

৬ সুরা আল আন্য়াম

الْ وَلُوْ انْنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِرُ الْهَلَّنِكَةَ وَكَلَّهُمُ الْهَلَّنِكَةَ وَكَلَّهُمُ الْهَوْتُى الْهَلَّنِكَةَ وَكُلَّهُمُ الْهَوْتُى الْهَوْتُكَةَ وَكُلَّهُما الْهُ وَلَكِنَّ كَاتُوا لِيُؤْمِنُواۤ إِلَّا اَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنَّ اَكْتُمُونَ الْكُثَرَهُمُ يَجْهَلُونَ

۱۱۲ وَكَنْ لِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَنُوَّا شَيْطِيْنَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِى بَعْضُمُرْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ﴿ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَنَارَمُهُ وَمَا يَفْتَرُونَ

١١٣ وَلِتَصْفَى إِلَيْهِ اَفْنِنَةُ الَّذِيْنَ لَا اللهِ مَنَ لَا يُونَى لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُرْ مُّقْتَرِفُونَ

١١٢ أَنَغَيْرَ اللّهِ أَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْ آَ الْرَفَّ الَّذِيْ آَنْزَلَ إِلَيْكُرُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ﴿ وَالَّذِيْنَ الْزَلَ إِلَيْكَ الْزَلَ مِنْ الْكِتٰبَ يَعْلَمُونَ اللّهُ مُنَزَّلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَى مِنَ الْمُهْتَرِيْنَ

اهُ وَتَمَّْتُ كَلِمَتُ وَبِّكَ صِنْقًا وَّعَلَٰ لَا مَ لَا اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا الْعَلِيمُ الْعِلْمُ الْعَلِيمُ الْعِلْمُ الْعَلِيمُ الْعَلِيمُ الْعِلْمُ الْعِلْم

١١٦ وَإِن تُطِع أَكْثَر مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُون يَّ الْأَرْضِ يُضِلُّون مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّون مَن قِسْمِون اللهِ م إِن يَسْمِون اللهِ الظَّنَّ وَإِن هُمْ إِلَّا يَخْرُمُونَ

ال إن ربالة مو أعلر من يضل عن سييله عومو أعلر بالهمتوين

١١٨ فَكُلُوا مِمًّا ذُكِرَ اشر اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُر بِاللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُر
 بِالْيَتِهِ مُؤْمِنِيْنَ

119 وَمَا لَكُرْ اَلَّا تَاكُلُوا مِنَّا ذُكِرَ اسْرُ اللَّهِ عَلَيْكُرْ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْكُرْ اللَّهِ عَلَيْكُرْ اللَّهِ مَا عَلَيْكُرْ اللَّهِ عَلَيْكُرْ اللَّهُ اللَّهِ عَلَيْكُرْ اللَّهِ عَلَيْكُوا اللَّهِ عَلَيْكُونُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُونُ اللَّهُ اللَّ

তায়ালা পরিষ্কার করে বলে দিয়েছেন যে, তিনি তোমাদের ওপর কোন কোন বস্তু হারাম করেছেন- সে কথা অবশ্যই पानामा यथन তোমাদের তার কাছে একাভ বাধ্য (ও बेर्ब के हैं। " وَاكْمَ مُو الْمُورُ بِغَيْرٍ عِلْمٍ وَ إِنْ رَبِّكَ هُو اَعْلَمُ السَّاسَةِ مَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الل নিজেদের খেয়াল-খুশীমতো (মানুষকে) বিপথে চালিত করে: নিসন্দেহে তোমার মালিক সীমালংঘনকারীদের ভালো করেই জানেন।

اضْفُورْتُمْ إِلَيْهِ ﴿ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُصَلُّونَ بالْهُعْتَن بِي

১২০. তোমরা প্রকাশ্য গুনাহ থেকে বেঁচে থাকো. (বেঁচে থাকো) তার গোপন অংশ থেকেও: নিসন্দেহে যারা কোনো গুনাহ অর্জন করবে, তাদের কতকর্মের যথাযথ ফল তাদের প্রদান করা হবে।

١٢٠ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْإِثْرِ وَبَاطِنَهُ ﴿ إِنَّ الَّذِيثَ يَكْسِبُوْنَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِهَا كَانُوْ ا يَقْتَوفُونَ

১২১. (যবাইর সময়) যার ওপর আল্লাহ তায়ালার নাম নেয়া হয়নি, সে (জভুর গোশৃত) তোমরা কখনো খাবে না. (কেননা) তা হচ্ছে জঘন্য গুনাহের কাজ: শয়তানের (কাজই হচ্ছে) তার সংগী-সাথীদের মনে প্ররোচনা দেয়া, যেন তারা তোমাদের সাথে (এ নিয়ে) ঝগড়া-বিবাদে লিঙ হয়, যদি তোমরা তাদের কথা মেনে চলো, তাহলে অবশ্যই তোমরা মোশরেক হয়ে পডবে।

١٢١ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَر يُنْكُر اشر اللهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ م وَإِنَّ الشَّيْطِيْنَ لَيُوْمُوْنَ إِلَّى أَوْلِينِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ج وَانَ أَطَعْتُهُوْهُمْ إِنَّكُمْ لَهُشُوكُوْنَ ع

১২২, যে ব্যক্তি (এক সময়) ছিলো মৃত, অতপর আমি তাকে জীবিত করলাম, (তদুপরি) তার জন্যে এমন এক আলোকবর্তিকাও আমি বানিয়ে দিলাম, যার আলো দিয়ে মানুষের সমাজে সে চলার (দিশা) পালে, সে কি কখনো সে ব্যক্তির মতো হতে পারে, যে এমন অন্ধকারে (পড়ে) আছে, যেখান থেকে সে (কোনোক্রমেই) বেরিয়ে আসতে পারছে না: এভাবেই কাফেরদের জন্যে তাদের কর্মকাণ্ডকে শোভনীয় (ও সুখকর) বানিয়ে রাখা হয়েছে।

١٣٢ أَوْ مَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنُهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يُنْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُّهٰ لِي لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا مَ كَلَٰ لِكَ زُيِّنَ لِلْكُفِرِيْنَ مَا كَانُوْ الْيَعْمَلُوْنَ

১২৩. এভাবে আমি প্রত্যেক জনপদে তার কিছু কিছু বড়ো অপরাধী নিযুক্ত করে রেখেছি, যেন তারা সেখানে (খন্যদের) ধোকা দিতে পারে: (আসনে) এসব কিছুর মাধ্যমে তারা তাদের নিজেদেরই প্রতারিত করছে, অথচ তারা নিজেরা এ কথাটা মোটেই উপলব্ধি করতে পারছে না।

١٢٣ وَكُنْ لِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ﴿ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِٱنْفُسِهِر وَمَا يَشْعُرُونَ

১২৪, তাদের কাছে যখনি আল্লাহর পক্ষ থেকে কোনো আয়াত আসে তখন তারা বলে উঠে, আমরা এর ওপর কখনো ঈমান আনবো না. যতোক্ষণ না আমাদেরও তাই দেয়া হয় যা আল্পাহর রসুলদের দেয়া হয়েছে। আল্পাহ তায়ালা ভালো করেই জানেন তাঁর রেসালাত তিনি কোথায় রাখবেন: যারা এ অপরাধ করেছে তারা অচিরেই আল্লাহর পক্ষ থেকে অপমান ও কঠিন আযাবের সন্মুখীন হবে কেননা তারা আল্লাহ তায়ালার সাথে প্রতারণা করছিলো।

١٢٣ وَإِذَا جَاءَتُهُمْ أَيَدُ قَالُوْا لَنَ تُؤْمِنَ مَتَّى نُؤْتَى مِثْلَ مَا ۖ أُوْتِي رُسُلُ اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهِ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ﴿ سَيُصِيْبُ الَّذِيثِيَ ٱجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْنَ اللَّهِ وَعَنَ اب شَرِيْنٌ ٰبِهَا كَانُوْ ا يَهْكُرُوْنَ

১২৫. আল্লাহ তায়ালা কাউকে সৎপথে পরিচালিত করতে চাইলে তিনি তার হৃদয়কে ইসলামের জন্যে খুলে দেন, (আবার) যাকে তিনি বিপথগামী করতে চান তার হৃদয়কে অতিশয় সংকীর্ণ করে দেন, (তার পক্ষে ইসলামের অনুসরণ করা এমন কঠিন হয়) যেন কোনো একজন ব্যক্তি আকাশে চড়তে চাইছে; আর যারা (আল্লাহর ওপর) বিশ্বাস করে না, আল্লাহ তায়ালা এভাবেই তাদের ওপর (অপমানজনক লাঞ্ছনা ও) নাপাকী ছেয়ে দেন।

١٢٥ فَهَنْ يُردِ اللَّهُ أَنْ يَهْرِيَهٌ يَشْرَحُ صَلْرَهٌ لِلْإِسْلَا] ج وَمَن يُرد أَن يُضِلَّه يَجْعَل مَنْ رَهُ ضَيِّقًا مَرَجًا كَأَنَّهَا يَصَّعَّلُ فِي السَّهَاءِ ﴿ كُلْلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا মন্যিল ১

৬ সরা আল আনয়াম

180

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৮ ওয়ালাও আন্নানা |
|---|---|
| ১২৬. (মূলত) এটিই হচ্ছে তোমার মালিকের (দেখানো) সহজ সরল পথ; আমি অবশ্যই আমার আয়াতসমূহ উপদেশ গ্রহণে আগ্রহীদের জন্যে বিশদভাবে বর্ণনা করেছি। | ١٢٦ وَهٰنَا مِرَاءُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْهًا ، قَنْ فَصَّلْنَا الْإِيْفِ مُسْتَقِيْهًا ، قَنْ فَصَّلْنَا الْإِيْف |
| ১২৭. তাদের মালিকের কাছে রয়েছে (তাদের) জন্যে শান্তির এক সুন্দর নিবাস, আল্লাহ তায়ালাই তাদের অভিভাবক, (দুনিয়ায়) তারা যা করতো এটা হচ্ছে তারই বিনিময়। | اللهُورُ دَارُ السَّلْمِ عِنْنَ رَبِّهِمِرَ عَ وَهُوَ وَهُوَ وَهُوَ وَهُوَ وَهُوَ وَهُوَ وَلَيْهُمُ بِهَا كَانُوا يَعْهَلُونَ |
| ১২৮. (শ্বরণ করো,) যেদিন আল্লাহ তায়ালা তাদের সবাইকে একত্রিত করবেন, (তখন তিনি শয়তানরূপী জ্বিনদের) বলবেন, হে জ্বিন সম্প্রদায়, তোমরা তো (বিভিন্ন সময়) অনেক মানুষকেই গোমরাহ করেছো, (এ সময়) মানুষের ভেতর থেকে (যারা) তাদের বন্ধু (তারা) বলবে, হে আমাদের মালিক, আমাদের এক একজন এক একজনকে (ব্যবহার করে) দুনিয়ার জীবনে প্রচুর লাভ কামাচ্ছিলাম, আর এভাবেই আমরা চ্ড়ান্ত সময়ে এসে হায়ির হয়েছি, যা তুমি আমাদের জন্যে নির্দিষ্ট করে রেখেছিলে; আল্লাহ তায়ালা বলবেন, (হাঁ, আজ্ল সেগোমরাহীর জন্যে) তোমাদের ঠিকানা (হবে জাহান্নামের) আগুন, সেখানে তোমরা চিরকাল থাকবে, অবশ্য আল্লাহ তায়ালা যা কিছু চাইবেন (তা আলাদা); তোমার মালিক অবশ্যই প্রজ্ঞাময় ও সম্যক অবহিত। | الله الله الله الله الله الله الله الله |
| ১২৯. আমি এভাবে একদল যালেমকে তাদেরই (অন্যায়) কার্যকলাপের দরুন আরেক দল যালেমের ওপর ক্ষমতাবান করে দেই। | ١٣٩ وَكَنَٰ لِكَ نُولِّى ٛ بَعْضَ الظَّلِيِيْنَ بَعْضًا ' بِهَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ع |
| ১৩০. (আল্লাহ তায়ালা সেদিন আরো বলবেন,) হে জ্বিন ও মানুষ সম্প্রদায় (বলো), তোমাদের কাছে কি তোমাদেরই মধ্য থেকে আমার (এমন এমন) সব রসূল আসেনি, যারা আমার আয়াতগুলো তোমাদের কাছে বর্ণনা করতো, (উপরস্থু) যারা তোমাদের ভয় দেখাতো যে, তোমাদের আজকের এ দিনের সম্মুখীন হতে হবে; (সেদিন) ওরা বলবে, হাঁ (এসেছিলো, তবে আজ) আমরা আমাদের নিজেদের বিরুদ্ধেই সাক্ষ্য দিচ্ছি, (মূলত) দুনিয়ার জীবন এদের প্রতারিত করে রেখেছিলো, তারা নিজেদের বিরুদ্ধেই একথার সাক্ষ্য দেবে যে, তারা (আসলেই) কাফের ছিলো। | الله الله المُعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ الْكُرْ يَا الْكُرْ رُسُلُّ وِّنْكُرْ لِقَاءَ يَوْمِكُرْ لَانَا ، قَالُوا شَوِلْنَا وَيُنْفِرُونَكُرْ لِقَاءَ يَوْمِكُرْ لَانَا ، قَالُوا شَوِلْنَا عَلَى الْفُسِنَا وَغَرَّتُهُمُ الْحَيَاوَةُ اللَّائيَا وَشَوِلُوا عَلَى الْفُسِمِرْ الْتَهُرْ كَالُوا كُورِيْنَ |
| ১৩১. এটা এ জন্যে, তোমার মালিক অন্যায়ভাবে এমন কোনো জনপদের মানুষকে ধ্বংস করেন না, যার অধিবাসীরা (সত্য দ্বীন সম্পর্কে) সম্পূর্ণ গাফেল থাকে। | ١٣١ ذٰلِكَ أَنْ لَرْ يَكُنْ رَبَّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْرٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ |
| ১৩২. তাদের নিজস্ব কর্ম অনুযায়ী প্রতিটি ব্যক্তির জ্বন্যেই (তার) মর্যাদা রয়েছে, তোমার মালিক তাদের কাজকর্ম সম্পর্কে মোটেই উদাসীন নন। | ١٣٢ وَلِكُلِّ دَرَجْتُ مِّهَا عَبِلُوا ، وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يُعْمَلُونَ |
| ১৩৩. তোমার মালিক কারো মুখাপেক্ষী নন, দয়া ও অনুগ্রহের মালিক তিনি; তিনি যদি চান তাহলে তোমাদের | ١٣٣ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُوالرَّحْهَةِ م إِنْ يَّشَأَ |

অন্য যাদের তিনি চান এখানে (তোমাদের জায়গায়) বসিয়েও দিতে পারেন, যেমনি করে তোমাদেরও তিনি

অন্য সম্প্রদায়ের বংশধর থেকে উত্থান ঘটিয়েছেন।

ٱنْشَاكُمْ مِنْ ذُرِيَّةٍ قَوْمٍ الْخَرِيْنَ ا

(बरें क्लिश (परक) मिंद्र निर्फ भारतन, वार कामाप्तत भरत مَا يَشَاءُ كَمَا يَسَاء بَعْنِ كُمْ وَيَسْتَخُلُفُ مِنْ بَعْنِ كُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا يَسْتَخُلُونَ مِنْ اللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلِيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلِيهُ عَلِيهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِهُ عَلِهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهُ عَلِي عَلِهُ عَلِ

283

পারা ৮ ওয়ালাও আন্নানা

১৩৪. তোমাদের কাছে যে প্রতিশ্রুতি দেয়া হচ্ছে তা অবশ্যই আসবে, আর তোমরা (আল্লাহ তারালাকে) ব্যর্থ করে দেয়ার ক্ষমতা রাখো না।

١٣٢ إِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاسٍ لا وَّمَا ٱلْتُرْ بِمُعْجِرِيْنَ

১৩৫. (তাদের তুমি বলে দাও,) হে আমার জাতি, তোমরা নিজ নিজ জায়গায় (যা যা করার) করে যাও, আমিও (আমার করণীয়) করে যাবো, অচিরেই তোমরা জানতে পারবে, কার জন্যে পরিণামের (সুন্দর) ঘরটি (নির্দিষ্ট) রয়েছে; (এও জানতে পারবে যে,) যালেমরা কখনো সাফল্য লাভ করতে পারে না। ١٣٥ قُلْ يُقَوْمِ اعْمَلُواْ عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّى عَامِلٌ ۚ ۚ فَسَوْنَ تَعْلَمُوْنَ لا مَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّلِمُوْنَ

১৩৬. স্বয়ং আল্লাহ তায়ালা যে শস্য উৎপাদন করেছেন ও গবাদিপত সৃষ্টি করেছেন, এ (মূর্খ) ব্যক্তিরা তারই এক অংশ আল্লাহর জন্যে নির্দিষ্ট করে রাখে এবং নিজেদের খেয়ালখুশীমতো (একথা) বলে, এ অংশ হচ্ছে আল্লাহর জন্যে, আর এ অংশ হচ্ছে আমাদের দেবতাদের জন্যে, অতপর যা তাদের দেবতাদের জন্যে (রাখা হয়) তা (কখনো) আল্লাহর কাছ পর্যন্ত পৌছায় না, (যদিও) আল্লাহর (নামে) যা (রাখা হয় তা শেষতক) তাদের দেবতাদের কাছে গিয়েই পৌছে; কতো নিকৃষ্ট তাদের এ বিচার!

الله وَمَعَلُوا لِلهِ مِمَّا ذَراً مِنَ الْحَرْثِ وَالْإِنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هٰذَا لِلهِ بِزَعْمِمِر وَالْإَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هٰذَا لِلهِ بِزَعْمِمِر وَهٰذَا لِشُرِكَانِمِر ، فَلَا يَصِلُ إِلَى اللهِ عَهُو يَصِلُ لِلهِ فَهُو يَصِلُ إِلَى شُركَانِمِر ، سَآءَ مَا يَحْكُبُونَ لِلهِ فَهُو يَصِلُ إِلَى شُركَانِمِر ، سَآءَ مَا يَحْكُبُونَ

১৩৭. এভাবে বহু মোশরেকের ক্ষেত্রেই তাদের শরীক (দেবতা)রা তাদের আপন সন্তানদের হত্যা করার (জঘন্য) কাজটিকেও একান্ত শোভনীয় করে রেখেছে, এর উদ্দেশ্য হচ্ছে তাদের ধ্বংস সাধন করা এবং তাদের গোটা জীবন বিধানকেই তাদের কাছে সন্দেহের বিষয়ে পরিণত করে দেয়া, অবশ্য আল্লাহ তায়ালা চাইলে তারা (কখনো) এ কাজ করতো না, অতএব তুমি তাদের হেড়ে দাও, মিথ্যা রচনা নিয়ে (তাদের তুমি কিছুদিন ব্যস্ত) থাকতে দাও।

١٣٤ وَكَنَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ أَوْمُرْ لِيُرْدُوهُر فَرَكَا وَمُر لِيُردُوهُر وَلَيْمُر الْمِيْرِدُوهُر وَلَيْمُر وَلَوْ شَاءَ الله مَا فَعَلُوهُ فَنَارَهُر وَمَا يَفْتَرُونَ

১৩৮. তারা বলে, এসব গবাদিপশু এবং এ খাদ্যশস্য নিষিদ্ধ (তালিকাভুক্ত), আমরা যাকে চাইবো সে ছাড়া অন্য কেউ তা খেতে পারবে না, এটা তাদের (মনগড়া একটা) ধারণা মাত্র (আবার তারা মনে করে), কিছু গবাদিপশু আছে যার পীঠ (আরোহণ কিংবা মাল সামান রাখার জন্যে) নিষিদ্ধ, আবার কিছু গবাদিপশু আছে যার ওপর (যবাই করার সময়) তারা আল্লাহর নাম স্মরণ করে না, আল্লাহর ওপর মিধ্যা রচনা করার উদ্দেশেই (তাদের) এসব অপচেষ্টা; অচিরেই আল্লাহ তায়ালা তাদের এ মিধ্যাচারের জন্যে তাদের (খাবুখ) প্রতিফল দান করবেন।

١٣٨ وَقَالُواْ مَٰلِهِ اَنْعَامٌ وَّمَرْتُ مِجْرٌ يَٰ لِاللّٰهِ مَلْعَهُمَا اللّٰهِ مَنْ الشّاء بِزَعْمِمِي وَاَنْعَامٌ مُورِّمَت طُهُورُهَا وَانْعَامٌ لا يَنْكُرُونَ اشْرَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ مَ سَيَجُزِيْمِي بِمَا كَانُواْ يَفْتَرُونَ

১৩৯. তারা বলে, এসব গবাদিপশুর পেটে যা কিছু আছে তা শুধু আমাদের পুরুষদের জন্যেই নির্দিষ্ট এবং আমাদের (মহিলা) সাধীদের জন্যে তা হারাম, তবে যদি এ (পব্দ পেটে) মরা কিছু থাকে তাহলে তাতে তারা (নারী-পুরুষ) উভয়েই সমান অংশীদার; আল্লাহ তায়ালা অতি শীঘ্রই তাদের এ ধরনের উল্লট কথা বলার প্রতিফল দান করবেন; নিসন্দেহে তিনি হচ্ছেন প্রবল প্রজ্ঞাময়, তিনি সর্বজ্ঞ।

السَّمَةُ لِنَّكُورِنَا وَمُحَرَّاً عَلَى اَزْوَاجِنَا عَلَى اَزُواجِنَا عَلَى اَزُواجِنَا عَ وَانَ يَكُنَ الْمُكُورِنَا وَمُحَرَّاً عَلَى اَزُواجِنَا عَ وَإِنْ يَكُنْ الْمُنَاةُ فَمُرْ فِيهِ شُرَكَاءً عَسَيَجُرِيْهِمِرْ وَصْغَهُمْ عَلِيدًا عَلَيْمَ مَعَلَيْهُمْ عَلِيدًا عَلَيْمَ اللّهِ عَلَيْمَ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ عَلَيْمَ اللّهَ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمِ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمِ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمِ اللّهُ عَلَيْمِ اللّهُ عَلَيْمَ اللّهُ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمِ اللّهُ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمُ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمُ عَلَيْمُ عَلَيْمِ عَلَيْمُ عَلَيْمِ عَلْمَ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَّ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ عَ

১৪০. অবশ্য যারা (নেহায়াত) নির্বৃদ্ধিতা ও অজ্ঞতার বশবর্তী হয়ে নিজেদের সম্ভানদের হত্যা করলো এবং আল্লাহ তায়ালা তাদের যে রেযেক দান করেছেন তা নিজেদের ওপর হারাম করে নিলো, আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে (নানা ধরনের) মিথ্যা (কথা) রচনা করলো; এসব কাজের মাধ্যমে এরা সবাই দারুণভাবে ক্ষতিশ্রস্ত হয়ে গেলো, এরা কখনো সংপথের অনুসারী ছিলো না।

١٣٠ قَلْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْا اَوْلَادَهُرْ سَفَهَا اَ اللهُ الْقِرَاءُ لِغَيْرِ عِلْمٍ وَّمُوا مَا رَزَقَهُرُ اللهُ افْتِرَاءُ عَلَى اللهِ مَقَلَ اللهِ عَلَى اللهِ مَقَلَ ضَلَّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ عَ

৬ সূরা আল আনয়াম

183

১৪১. মহান আল্লাহ তায়ালা- যিনি নানা প্রকারের উদ্যান বানিয়েছেন, কিছু লতা-গুলা, যা কোনো কান্ড ছাড়াই মাচানের ওপর তুলে রাখা (হয়েছে, আবার কিছু গাছ), যা মাচানের ওপর তুলে রাখা হয়নি (স্বীয় কান্ডের ওপর তা এমনিই দাঁড়িয়ে আছে। তিনি আরো সৃষ্টি করেছেন). খেজুর গাছ এবং বিভিন্ন (স্বাদ ও) প্রকার বিশিষ্ট খাদ্যশস্য ও আনার- (এগুলো স্বাদে গন্ধে এক রক্ষও হতে পারে). আবার তা ভিন্ন ধরনেরও হতে পারে, যখন তা ফলবান হয় তখন তোমরা তার ফল খাও, তোমরা ফসল তোলার দিনে (যে বঞ্চিত) তার হক আদায় করো, কখনো অপচয় করো না: কেননা, আল্লাহ তায়ালা অপচয়কারীদের পছন্দ করেন না ।

١٣١ وَهُوَ الَّذِي ٓ أَنْشَا جَنُّكِ مَّعُووُهُ إِلَّا وَعُيْرَ مَعْرُوْشُ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا ٱكُلَّهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَهَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَهَابِهِ • كُلُوْا مِنْ ثَهَرِهِ إِذَا ۖ أَثْهَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهُ يَوْاَ حَصَادِم ز وَلَا تُسْرِفُوْا مَ إِنَّهُ لَا يُحِم الْهُسُرِفِيْنَ لا

১৪২. গবাদিপত্তর মধ্যে (কিছু পত হচ্ছে) ভারবাহী ও কিছু হচ্ছে খাবার উপযোগী, আল্লাহ তায়ালা যা তোমাদের দান করেছেন তা তোমরা খাও এবং (এ পর্যায়ে) কখনো শয়তানের পদাংক অনুসরণ করো না: অবশ্যই সে তোমাদের প্রকাশ্য দুশমন।

١٣٢ وَمِنَ الْإَنْعَا مِ مَهُولَةً وَّفَرْهًا م كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُرُ اللَّهُ وَلا تَتَّبِعُوا خُطُوٰسِ الشَّيْطٰي ، إِنَّهُ لَكُر عَنَّوْ مَّبِينَ لا

১৪৩. (আল্লাহ তায়ালা তোমাদের দিয়েছেন এই) আট প্রকারের গৃহপালিত জম্বু, (প্রথমত) তার দুটো মেষ, (विजीय़क) जात मूटिंग हार्गम (र प्रारामन), प्रिमे (जारमत्र) إِلَي مُورًا وَاللَّهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ كُورُون مُورًا وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّاللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللّل জিজ্ঞেস করো, এর (নর দুটো কিংবা মাদি) অথবা তাদের الْأَنْكَيَيْنِ أَمَّا اشْتَهَلَتْ عَلَيْهِ أَرْمَا الْمُتَهَلِينَ عَلَيْهِ أَرْمَا اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ তায়ালা তোমাদের জন্যে) হারাম করেছেনঃ তোমরা আমাকে প্রমাণসহ বলো যদি তোমরা সত্যবাদী হও!

١٣٣ ثَمْنِيَةَ ٱزْوَاجٍ عِنَ الضَّانِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْأَنْثَيَيْنِ ﴿ نَبِّنُونِي بِعِلْرِ إِنْ كُنْتُر مُلْ قِيْنَ لا

১৪৪. (তৃতীয়ত) দুটো উট, (চতুর্থত) দুটো গরু; এর (নর দুটো কিংবা মাদী) দুটো কি আল্লাহ তায়ালা হারাম করেছেন, অথবা এদের উভয়ের মায়েরা যা কিছ পেটে রেখেছে তা (কি তিনি তোমাদের জন্যে হারাম করেছেন)? আল্লাহ তায়ালা যখন তোমাদের (হারামের) আদেশটি দিয়েছিলেন তখন তোমরা কি সেখানে উপস্থিত ছিলেং অতপর তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে হতে পারে যে মানুষকে গোমরাহ করার জন্যে অজ্ঞতাবশত আল্লাহর নামে মিথ্যা (কথা) রচনা করে; নিক্য়ই আল্লাহ তায়ালা সীমালংঘনকারী সম্প্রদায়কে সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

١٣٢ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ا قُلْ ءَالنَّكَرَيْنِ مَرًّا أَ) الْأَنْثَيَيْنِ أَمًّا اهْتَمَكَ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْتَيَيْنِ ١ أَمُ كُنْتُرْ شُهَنَاءَ إِذْ وَصَّلَّكُمُ اللَّهُ بِهِٰنَا عِ فَهَنَ أَظْلَمُ مِيَّى افْتَرٰى عَلَى اللَّهِ كَنِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرٍ عِلْمِ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يَمْدِى الْقَوْآ

১৪৫. (হে মোহাম্মদ.) তুমি (এদের) বলো, আমার কাছে যে ওহী পাঠানো হয়েছে তাতে একজন ভোজনকারী মানুষ (সাধারণত) যা খায় তার মধ্যে এমন কোনো জিনিস তো আমি পাচ্ছি না- যাকে হারাম করা হয়েছে, (হাঁ, তা যদি) মরা জম্বু, প্রবাহিত রক্ত এবং ওয়োরের গোশৃত (হয় তাহলে তা অবশ্যই হারাম), অতপর এসব হচ্ছে নাপাক, অথবা এমন (এক) অবৈধ (জন্তু) যা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারো নামে যবাই করা হয়েছে, তবে যদি কাউকে না-ফরমানী এবং সীমালংঘনজনিত অবস্থা ব্যতিরেকে (এর কোনো একটি জিনিস খেতে) বাধ্য করা হয়, তাহলে (তার ক্ষেত্রে) তোমার মালিক অবশ্যই ক্ষমাশীল ও পরম দ্য়াল।

١٣٥ قُلْ لا آَ أَجِلُ فِي مَا أَوْحِيَ إِلَى مُعَرَّمً عَلَى طَاعِرٍ يَّطْعَهُ ۗ إِلَّا أَنْ يَكُوْنَ مَيْتَةً أَوْ دَمًّا مُّشْفُوْمًا أَوْ لَحْرَ خِنْزِيْرٍ فَالَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ } فَهَى اضْطُرُّ غَيْرَ بَاغِ وَّلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبُّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْرٌ



পারা ৮ ওয়ালাও আনুনানা

১৪৬. আর আমি ইহুদীদের জন্যে নখযুক্ত সব পশুই হারাম করে দিয়েছি, গরু এবং ছাগলের চর্বিও আমি छोत्पत कात्मा शताम करतिह, जरव (अञ्चत ठिवेंत) या किছू مُوسَنَا عَلَيْهِر كُوسُنَا عَلَيْهِر وَالْغَنَرِ مَرَّمْنَا عَلَيْهِر وَالْغَنَرِ مَرَّمْنَا عَلَيْهِر وَالْغَنَرِ مَرَّمْنَا عَلَيْهِر তাদের উভয়ের পিঠ, আঁত কিংবা হাড়ের সাথে জড়ানো থাকে তা (হারাম) নয়: এভাবেই এগুলোকে (হারাম করে) আমি তাদের অবাধ্যতার শান্তি দিয়েছিলাম. নিসন্দেহে আমি সত্যবাদী।

١٣٦ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْ ا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي شُحُوْمَهُما إلَّا مَا حَمَلَتُ ظُهُوْرُهُما أو الْحَوَايَا أَوْ مَا اغْتَلَطَ بِعَظْمِ ﴿ ذَٰلِكَ جَزَيْنُهُمْ بِبَغْيِهِمْ ﴿ وَإِنَّا لَصِهِ وَوْنَ

১৪৭. (এরপরও) যদি তারা তোমাকে মিথ্যাবাদী বলে তাহলে তুমি বলো, অবশ্যই তোমাদের মালিক এক বিশাল দয়ার আধার, (তবে) অপরাধীদের ওপর থেকে তাঁর শান্তি কেউই ফেরাতে পারবে না।

١٣٤ فَإِنْ كُنْ بُوْكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُوْ رَحْهَةٍ وَّاسِعَةٍ } وَلَا يُرِدُّ بَاسُهُ عَنِ الْقَوْرِ الْهُجُرمِيْنَ

১৪৮. অচিরেই এ মোশরেক লোকগুলো বলতে শুরু করবে, যদি আল্লাহ তায়ালা চাইতেন তাহলে আমরা ও আমাদের পূর্বপুরুষরা তো শেরেক করতাম না. না (এভাবে) আমরা কোনো জিনিস (নিজেদের ওপর) হারাম করে নিতাম: (তুমি তাদের বলো, এর) আণেও অনেকে (এভাবে আল্লাহর আয়াতকে) অস্বীকার করেছে: অবশেষে তারা আমার শান্তির স্বাদ ভোগ করেছে; তুমি (তাদের) জিজ্ঞেস করো, তোমাদের কাছে কি সত্যিই (এমন) কোনো জ্ঞান (মজুদ) আছে? (থাকলে) অতপর তা বের করে আমার জন্যে নিয়ে এসো, তোমরা তো কল্পনার ওপর (নির্ভর করেই) কথা বলো এবং (হামেশাই) মিধ্যার অনুসরণ করো।

١٣٨ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَهْرَكْنَا وَلا أَبآؤُنَا وَلا مَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ع كَنْ لِكَ كَنَّابَ الَّذِيثَ مِنْ قَبْلِهِرْ حَتَّى ذَاتُّوْا بَاْسَنَا ، قُلْ هَلْ عِنْلَكُمْ مِّنْ عِلْمِ فَتُحْرِجُوْهُ لَنَا وَإِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّيُّ وَإِنْ أَنْتُكُرُ إِلَّا

১৪৯. তুমি (আরো) বলো, (সব কিছুর) চূড়ান্ত প্রমাণ তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই রয়েছে, তিনি যদি চাইতেন তাহলে তিনি তোমাদের সবাইকেই সৎপথে পরিচালিত করে দিতেন।

١٣٩ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ 5 فَلَوْ شَآءَ لَهَل دكُر أَجْهَعِينَ

১৫০. (হে মোহাম্মদ্,) তুমি বলো (যাও), তোমাদের সেসব সাক্ষী নিয়ে এসো যারা একথার সাক্ষ্য দেবে যে. আল্লাহ তায়ালাই এসব জিনিস (তোমাদের ওপর) হারাম করেছেন। (তাদের মধ্যে) কিছু সাক্ষী যদি সাক্ষ্য দেয়ও, তব তমি তাদের সাথে কোনো সাক্ষ্য দিয়ো না, যারা আমার আয়াতকে অস্বীকার করেছে, যারা পরকালের ওপর ঈমান আনেনি, আসলে তারা অন্য কিছুকে তাদের মালিকের সমকক্ষ মনে করে. (তাদেরও তুমি কখনো অনুসরণ করো না।)

١٥٠ قُلْ مَلُر ۗ شُهَلَ آءَكُرُ النَّذِينَ يَشْهَلُونَ أَنَّ اللَّهُ مَرَّا مَ فَانَ عَ فَانَ شَهِلُوْ ا فَلَا تَشْهَلْ مَعَمُرُ ء وَلَا تَتَّبِعُ آهُوَاءَ الَّذِينَ كَنَّابُوْا بِايْتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْنِلُونَ ع

১৫১. (হে মোহাম্মদ,) তুমি বলো, এসো আমিই (বরং) তোমাদের বলে দেই তোমাদের মালিক কোন কোন জিনিস তোমাদের জন্যে হারাম করেছেন (সে জিনিসগুলা হছে), তোমরা তাঁর সাথে অন্য কিছুকে শরীক করবে না. পিতা-মাতার সাথে ভালো ব্যবহার করবে, দারিদ্রের আশংকায় কখনো তোমরা তোমাদের সম্ভানদের হত্যা করবে না: কেননা আমিই তোমাদের ও তাদের উভয়েরই আহার যোগাই, প্রকাশ্যে হোক কিংবা গোপনে হোক ভোমরা অশ্লীলতার কাছেও যেয়োনা, আল্লাহ তায়ালা যে জীবনকে তোমাদের জন্যে মর্যাদাবান করেছেন তাকে কখনো যথার্থ কারণ ব্যতিরেকে হত্যা করো না এ হচ্ছে তোমাদের (জন্য ক্তিপয় নির্দেশ), আল্লাহ তায়ালা এর মাধ্যমে তোমাদের

١٥١ قُلْ تَعَالُوْ إِ أَثُلُ مَا حَرَّا مَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ألَّا تُشْرِكُوا بِهِ هَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ع وَلَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادَكُرْ مِّنْ اِمْلَاق ﴿ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ع وَلَا تَقْرَبُوا الْغَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَيَ عِ وَ لَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي مَرَّا اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ، ذٰلِكُر وَسَّكُر بِهِ



পারা ৮ ওয়ালাও আননানা

আদেশ দিয়েছেন, এগুলো যেন তোমরা মেনে চলো আশা করা যায় তোমরা (তাঁর বাণীসমূহ) অনুধাবন করতে পারবে।

لَعَلَّاكُم ^ تَعْقلُوْنَ

১৫২. তোমরা কখনো এতীমদের সম্পদের কাছেও যাবে না. তবে উদ্দেশ্য যদি নেক হয় তাহলে সে একটা নিৰ্দিষ্ট বয়সসীমায় পৌছা পর্যন্ত (কোনো পদক্ষেপ নিলে তা ভিনু কথা), পরিমাপ ও ওয়ন (করার সময়) ন্যাযাভাবেই তা করবে, আমি (কখনো) কারো ওপর তার সাধাসীমার বাইরে কোনো দায়িত চাপাই না, যখনি তোমরা কোনো ব্যাপারে কথা বলবে তখন ইনসাফ প্রতিষ্ঠা করবে, যদি তা (তোমাদের একান্ত) আপনজনের (বিরুদ্ধে)-ও হয়. তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে দেয়া সব অংগীকার পুরণ করো এ হচ্ছে তোমাদের (জন্যে আরো কতিপয় বিধান): এর মাধ্যমে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের আদেশ দিয়েছেন (তোমরা যেন এগুলো মেনে চলো), আশা করা যায় তোমরা উপদেশ গ্রহণ করতে পারবে।

١٥٢ وَلَا تَقْرَبُواْ مَالَ الْيَتِيْرِ إِلَّا بِالَّتِي هيَ أَحْسَنُ حَتَّى يَبْلُغَ أَشُلًّا ۚ ﴿ وَأُولُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ع لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۽ وَإِذَا قُلْتُرْ فَاعْنِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا تُرْبَى م وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا م ذَٰلِكُمْ وَصَّنكُو بِهِ لَعَلَّكُو تَنَكُّو وَنَ لا

১৫৩. এটা হচ্ছে আমার (দেখানো) সহজ সরল পথ. অতএব একমাত্র এরই তোমরা অনুসরণ করো, কখনো ভিন্ন পথ অবলম্বন করো না, কেননা (ভিন্ন পথ অবলম্বন করলে) তা তোমাদের তাঁর পথ থেকে বিচ্ছিন করে দেবে এ হচ্ছে তোমাদের (জন্যে আরো কয়েকটি বিধান): আল্লাহ তায়ালা (এর মাধ্যমে) তোমাদের আদেশ দিচ্ছেন (যেন তোমরা এগুলো মেনে চলো), আশা করা যায় তোমরা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করবে।

١٥٣ وَأَنَّ هٰنَا صِرَاطِي مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوهُ ع وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَوَّقَ بِكُيرُ عَنْ سَبِيْلِهِ ذٰلِكُم وَصَّلكُم بِهِ لَعَلَّكُم تَتَّقُونَ

১৫৪. অতপর আমি মৃসাকে (হেদায়াত সম্বলিত) কিতাব দান করেছিলাম,(তা ছিলো) পরিপূর্ণ এবং বিশদ হেদায়াত ও রহমত, যাতে করে (বনী ইসরাঈদ সম্প্রদায়ের) লোকেরা এ কথার ওপর বিশ্বাস স্থাপন করে যে. (একদিন) তাদের (সবাইকে) তাদের মালিকের সমীপে হাযির হতে হবে।

١٥٣ ثُمرٌ ۚ أَتَيْنَا مُوْسَى الْكِتْبَ تَهَامًا عَلَى الَّذِينَّ ٱحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ هَيْءٍ وَّهُدِّي وْرَحْهَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ع

১৫৫. এ কল্যাণময় কেতাব আমিই (তোমাদের জন্যে) নাযিল করেছি, অতএব তোমরা এর অনুসরণ করো এবং (কেতাবের শিক্ষানুযায়ী) তোমরা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করো, হয়তো তোমাদের ওপর (দয়া ও) অনুগ্রহ প্রদর্শন করা হবে।

١٥٥ وَهٰنَا كِتُبُّ أَنْزَلْنَهُ مُبْرَكً فَاتَّبِعُوهُ وَ اتَّقُوْ الْعَلَّكُمْ تُوْمَهُونَ لا

১৫৬. (এখন) তোমরা আর একথা বলতে পারবে না যে. (আল্লাহর) কিতাব তো আমাদের আগের (ইহুদী ও খৃষ্টান এ) দুটো সম্প্রদায়কেই দেয়া হয়েছিলো, (তাই) আমরা সেসব কিতাবের পাঠ সম্পর্কে অজ্ঞ ছিলাম।

١٥٦ أَنْ تَقُوْلُوْ آ إِنَّهَا ۗ أَنْزِلَ الْكِتْبُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا مِوَانْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِرْ

১৫৭, অথবা একথা বলারও কোনো অজ্বহাত পাবে না যে, যদি (ইহুদী খুকীনদের মতো) আমাদেরও কোনো কিতাব দেয়া হতো. তা হলে আমরা তো তাদের চাইতে বেশী সৎপথের অনুসারী হতে পারতাম. (আজ) তোমাদের কাছে (সত্যিই) তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট প্রমাণ, হেদায়াত ও রহমত (সর্বস্ব কিতাব) যালেম আর কে, যে আল্লাহর আয়াতসমূহকে অস্বীকার করবে এবং তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে (জেনে রেখো),

١٥٤ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّا ٱنْزِلَ عَلَيْنَا الْكَتْبُ لَكُنَّا أَهْلُى مِنْهُمْ عِ فَقَلْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةً مِنْ رَّبُكُرُ وَهُلِّي وَرَحْبَةً عَ فَيَنَ أَظْلَرُ مِينَ الَّذِينَ يَصْرِفُونَ عَنْ أَيْتِنَا سُوْءَ الْعَنَابِ

৬ সুরা আল আন্যাম

386

পারা ৮ ওয়ালাও আননানা

যারাই এভাবে আমার আয়াত থেকে মখ ফিরিয়ে নেয়, অচিরেই আমি তাদের এ জঘন্য আচরণের জন্যে এক নিকষ্ট ধরনের শাস্তি দেবো।

بِهَا كَانُوْ إِيصْ فُوْنَ

১৫৮. তারা কি (সে দিনের) প্রতীক্ষা করছে যে, তাদের কাছে (আসমান থেকে আল্লাহ তায়ালার) ফেরেশ্তা নাযিল হবে, কিংবা স্বয়ং তোমাদের মালিকই তাদের কাছে এসে (তাদের হাতে কিতাব দিয়ে) যাবেন, অথবা মালিকের পক্ষ থেকে কোনো নিদর্শনের কোনো অংশ এসে (তাদের জান্লাত-জাহান্লাম দেখিয়ে দিয়ে) যাবে. (অথচ) যেদিন সত্যিই তোমার মালিকের (পক্ষ থেকে এমন) কোনো নিদর্শন আসবে, সেদিন তো (হবে কেয়ামতের দিন, তখন) যে ব্যক্তি এর আগে ঈমান আনেনি কিংবা যে ব্যক্তি তার ঈমান দিয়ে ভালো কিছ অর্জন করেনি, তার জন্যে এ ঈমান আনাটা কোনোই কাজে আসবে না: (হে মোহাক্ষ্ম) তুমি (তাদের) বলো. (ঠিক আছে) তোমরাও প্রতীক্ষা করো, আমিও প্রতীক্ষা করছি।

١٥٨ مَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلِّنِكَةُ أَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ إِيْسٍ رَبِّكَ ، يَوْمَ يَاْتِي بَعْضُ أَيْتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْهَائُهَا لَمِ ْ تَكُنْ أَمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي ۚ إِيْهَانِهَا خَيْرًا ، قُلِ انْتَظِرُوْ ۚ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ

১৫৯. যারা নিজেদের দ্বীনকে টুকরো টুকরো করে নিজেরাই নানা দল-উপদলে বিভক্ত হয়ে গেছে, তাদের কোনো দায়িত্ই তোমার ওপর নেই; তাদের (ফরসালার) ব্যাপারটা আল্লাহ তায়ালার হাতে, (যেদিন তারা তাঁর কাছে ফিরে যাবে) তখন তিনি তাদের বিস্তারিত বলবেন তারা কে কি করছিলো।

١٥٩ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِيْنَهُرْ وَكَانُوا شِيعًا لَّشْنَ مِنْهُرْ فِيْ شَيْءِ مَا إِنَّهَا أَمْرُهُرْ إِلَى اللهِ ثُمرٌ يُنَبِّئُهُرْ بِهَا كَانُوْا يَفْعَلُونَ

১৬০, তোমাদের মাঝে কেউ যদি একটা সৎকান্ধ নিয়ে (আল্লাহ তায়ালার সামনে) আসে, তাহলে তার জন্যে দশ গুণ বিনিময়ের ব্যবস্থা থাকবে. (অপরদিকে) যদি কেউ একটা গুনাহের কাজ নিয়ে আসে, তাকে (তার) একটাই প্রতিফল দেয়া হবে. (সেদিন) তাদের কারো ওপরই যুলুম করা হবে না।

١٦٠ مَنْ جَأَءُ بِالْكَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرٌ أَمْثَالِهَا ع وَمَنْ جَاءَ بِالسِّيِّئَةِ فَلَا يُجْزِّى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَبُونَ

১৬১. (হে মোহাম্মদ,) তুমি (তাদের) বলো, অবশ্যই আমার মালিক আমাকে সঠিক পথ দেখিয়েছেন-न्थि किंछ जीवन विधान, এটाই इत्लर हैवताहीत्मत مُسْتَقِيْرِةً دِينًا قِيَمًا مِلَّةً إِبْرُهِيْرَ حَنِيْفًا ع وَمَا একনিষ্ঠ পথ, সে কখনো মোশরেকদের দলভুক্ত ছিলো না।

١٦١ قُلُ إِنَّنِي هَلَٰنِي رَبِّي ٓ إِلَى مِرَاطِ كَانَ مِنَ الْبُشْرِكِيْنَ

১৬২. তুমি (একান্ত বিনয়ের সাথে) বলো, অবশ্যই আমার নামায, আমার (আনুষ্ঠানিক) কাজকর্ম, আমার জীবন, আমার মৃত্যু- সব কিছুই সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার জন্যে।

١٦٢ قُلْ إِنَّ مَلَاتِي وَنُسُكِي وَمُعْيَاى وَمَهَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ لا

১৬৩. তাঁর শরীক (সমকক্ষ) কেউ নেই, আর একথা (বলার জন্যেই) আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে. (আত্মসমর্পণকারী) মুসলমানদের মধ্যে আমিই হচ্ছি সর্বপ্রথম ।

١٦٣ ﴾ شَرِيْكَ لَدُّ ع وَبِنْ لِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أوَّلُ الْهُسْلِمِينَ

১৬৪. তুমি (আরো) বলো. (এরপরও) আমি কি আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কোনো মালিক সন্ধান করে বেডাবো? অথচ (আমি জানি) তিনিই সব কিছুর (নিরংকুশ) মালিক: (তাঁর বিধান হচ্ছে) প্রতিটি ব্যক্তি তার কতকর্মের জন্যে এককভাবে নিজেই দায়ী হবে এবং কেয়ামতের দিন কোনো বোঝা বহনকারী ব্যক্তিই অন্য কোনো লোকের

١٦٣ قُلْ اَغَيْرَ اللَّهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ﴿ وَلَا تَكْسِبُ كُلَّ نَفْسِ إِلَّا $\sqrt{2}$ عَلَيْهَا ۽ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وَّزْرَ ٱخْرَى ء ثُمُ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৮ ওয়ালাও আন্নানা |
|--|--|
| (পাপের) বোঝা বহন করবে না, অতপর (একদিন) তোমাদের সবাইকে তোমাদের (আসল) মালিকের কাছে ফিরে যেতে হবে, সেদিন আল্লাহ তায়ালা তোমাদের | إِلَى رَبِّكُم مَّ وْجِعُكُم وْنَيُنَبِّنُكُم بِهَا كُنْتُم |
| পেরে বেভে হবে, সোদন আন্নাহ ভারালা ভোমাদের সেসব কিছুই জানিয়ে দেবেন, যা নিয়ে (দুনিয়ার জীবনে) তোমরা মতবিরোধ করতে। | فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ |
| ১৬৫. তিনিই সেই (মহান) সন্তা, যিনি তোমাদের এ যমীনে তাঁর খলিখা বানিয়েছেন এবং (এ কারণে তিনি) | ١٦٥ وَمُوَ الَّذِي مَعَلَكُر مَلَئِفَ الْأَرْضِ |
| তোমাদের একজনকে অন্য জনের ওপর (কিছু বেশী) মর্যাদা দান করেছেন, এর উদ্দেশ্য হচ্ছে, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সবাইকে যা কিছু দিয়েছেন তা দিয়েই তিনি | ورَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضِ دَرَجْتِ لِيَبْلُوكُمْ |
| তোমাদের কাছ থেকে (কৃতজ্ঞতার) পরীক্ষা নিতে চান; | فِي مَا الْعُكُرُ ، إِنَّ رَبِّكَ سَرِيعٌ الْعِقَابِ وَ |
| (জেনে রেখো,) তোমার মালিক শান্তিদানের ব্যাপারে অত্যন্ত (কঠোর ও) তৎপর, (আবার) তিনিই বড়ো ক্ষমাশীল ও পরম দয়াময়। | وَ إِنَّهُ لَغُفُورٌ رَحِيْدٌ ع |
| সূরা আল আ'রাফ | سُوْرَةُ الْأَعْرَافِ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ২০৬, রুকু ২৪ | أَيَاتٍ : ٢٠٦ رُكُوعٌ : ٢٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়াশার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. আলিফ লা-ম মী-ম ছোয়া-দ, | ا الـهُّص ع |
| ২. (হে নবী,) এ (মহা) গ্রন্থ তোমার প্রতি নাযিল করা হয়েছে যেন তুমি এর দ্বারা (কাফেরদের) ভয় দেখাতে | ٢ كِتْبُّ ٱنْزِلَ اللَّكَ فَلَا يَكُنْ فِي مَنْرِكَ |
| পারো, ঈমানদারদের জন্যে (এটি হচ্ছে) একটি স্মরণিকা, অতএব (এ ব্যাপারে) তোমার মনে যেন কোনো প্রকারের সংকীর্ণতা না থাকে। | مَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْفِرَ بِهِ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِيْنَ |
| ৩. (হে মানুষ, এ কিতাবে) তোমাদের মালিকের কাছ থেকে তোমাদের কাছে যা কিছু পাঠানো হয়েছে তোমরা তার (যথাযথ) অনুসরণ করো এবং তা বাদ দিয়ে তোমরা | ا إِتَّبِعُوا مَ آ أُنْزِلَ إِلَيْكُرْ مِّنْ رَّبِّكُرْ وَلَا |
| ভার (ববাবব) অনুসরণ করো এবং ভা বাদ দিরে ভোমরা অন্য কোনো কর্তৃপক্ষের অনুসরণ করো না; (আসলে) তোমরা খুব কমই উপদেশ মেনে চলো। | تَتَّبِعُوا مِنْ دُوْنِهِ آوْلِيا مَا قَلِيْلًا مَّا تَنَكَّرُونَ |
| ৪. এমন কতো জনপদ আমি ধাংস করে দিয়েছি তাদের তপর আমার আযাব আসতো যখন তারা রাতের বেলায় | ٣ وكَبِرْ مِّنْ قَرْيَةٍ ٱهْلَكُنْهَا فَجَآعَهَا بَٱسَّنَا |
| ঘুমিয়ে থাকতো, কিংবা (আযাব আসতো মধ্য দিনে,) যখন তারা (আহারের পর) বিশ্রাম করতো। | بَيَاتًا أَوْ مُرْقًا لِلُوْنَ |
| ৫. (আর এভাবে) যখন তাদের কাছে আমার আযাব আসতো, তখন তারা এছাড়া আর কিছুই বলতোনা যে, | ٥ فَهَا كَانَ دَعُوْهُمْ إِذْ جَآعَهُمْ بَأَسُنَا إِلَّا أَنْ |
| 'অবশ্যই আমরা ছিলাম যালেম।' | قَالُوْ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِن |
| ৬. যাদের কাছে নবী পাঠানো হয়েছিলো অবশ্যই আমি তাদের জিজ্ঞেস করবো, (একইভাবে) রসূলদেরও আমি | ٢ فَلَنَسْئَلَنَّ الَّانِيْنَ ٱرْسِلَ إِلَيْهِمْ |
| প্রশ্ন করবো (মানুষরা তাদের সাথে কি আচরণ করেছে)। | وَلَنَسْنَكُنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ٢ |
| ৭. অতপর আমি (আমার নিজস্ব) জ্ঞান দ্বারা তাদের (প্রত্যেকের) কাছে তাদের কার্যাবলী খুলে খুলে বর্ণনা করবো, (কারণ) আমি তো (সেখানে) অনুপস্থিত ছিলাম না! | ٤ فَلَنَقُصَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَالِبِيْنَ |
| ৮. সেদিন (পাপ-পুণ্যের) পরিমাপ ঠিকভাবেই করা হবে, (সেদিন) যাদের ওযনের পাল্পা ভারী হবে তারাই সফল | ^ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِلِ"الْعَقُّ ءَ فَهَنْ ثَقُلَسْ |
| रत। | مَوَازِيْنَهُ فَأُولَٰنَكَ مُرُ الْهُفُلِحُونَ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৮ ওয়ালাও আন্নানা |
|---|---|
| ৯. আর যাদের পাল্লা সেদিন হালকা হবে, তারা (হচ্ছে এমন সব লোক, যারা) নিজেরাই নিজেদের ক্ষতি সাধন | ٩ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنَهُ فَأُولَٰنِكَ الَّذِينَ |
| করেছে, কারণ এরা (দুনিয়ার জীবনে) আমার আয়াতসমূহ নিয়ে বাড়াবাড়ি করতো। | خَسِرُوْ آ أَنْفُسَهُمْ بِهَا كَانُوْ إِلَيْتِنَا يَظْلِمُوْنَ |
| ঠ০. আমিই তোমাদের (এই) যমীনের ওপর প্রতিষ্ঠিত করেছি, (এ জন্যে) আমি তাতে তোমাদের জন্যে সব | ١٠ وَلَقَلْ مَكَّنَّكُمْ فِي الْإَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ |
| ধরনের জীবিকার ব্যবস্থাও করে দিয়েছি; কিস্তু তোমরা (আমার এ নেয়ামতের) খুব কমই শোকর আদায় করে থাকো। | فِيْهَا مَعَايِشَ ، قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُونَ ع |
| ১১. আমিই তোমাদের বানিয়েছি, তারপর আমিই তোমাদের (বিভিন্ন) আকার-অবয়ব দান করেছি, অতপর | ا وَلَقَلْ خَلَقْنْكُمْ ثُرَّ صَوَّرْنْكُمْ ثُرٌّ قُلْنَا |
| আমি ফেরেশতাদের বলেছি, (সম্মানের নিদর্শন হিসেবে ভোমরা) আদমকে সাজদা করো, তখন (আমার আদেশে) সবাই | لِلْمَلَّذِكَةِ السَّجُّلُوا لِأَدَّا ثَنَّ فَسَجَلُواۤ إِلَّاۤ |
| (আদমকে) সাজদা করলো, একমাত্র ইবলীস ছাড়া, সে কিছুতেই সাজদাকারীদের মধ্যে শামিল হলো না। | إِبْلِيْسَ وَلَمْ يَكُنْ مِّنَ السَّجِنِينَ |
| ১২. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হে ইবলীস), আমি যখন (নিজেই) তোমাকে সাজদা করার আদেশ দিলাম, তখন | ١٢ قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُنَ إِذْ أَمَرْتُكَ ، |
| কোন্ জিনিস তোমাকে সাজদা করা থেকে বিরত রাখলো? ইব্লীস বুললো, (আমি কেন তাকে সাজদা করবো), আমি তো তার | قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ جَ خَلَقْتَنِي مِنْ تَّارٍ |
| চাইতে উত্তম, (কারণ) তুমি আমাকে বানিয়েছো আগুন থেকে, আর তাকে বানিয়েছো মাটি থেকে। | وْ هَلَقْتَكُ مِنْ طِيْنِ |
| ১৩. আল্লাহ তায়ালা বললেন, তুমি এক্ষুণি এখান থেকে, নেমে যাও! এখানে (বসে) অহংকার করবে, এটা তোমার | ١٣ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَهَا يَكُوْنُ لَكَ أَنْ |
| পক্ষে কখনো সাজে না– যাও, (এখান থেকে) বেরিয়ে যাও, (কেননা) তুমি অপমানিতদেরই একজন। | تَتَكَبَّرُ فِيْهَا فَاغْرُجُ إِنَّكَ مِنَ الصَّفِرِيْنَ |
| ১৪. সে বললো (হে আল্লাহ তায়ালা), তুমি আমাকে সেদিন পর্যন্ত (শয়তানী করার) অবকাশ দাও, যেদিন এ (আদম সন্তান)-দের পুনরায় (ক্বর থেকে) উঠানো হবে। | ١٣ قَالَ ٱنْظِرْنِي ٓ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ |
| ১৫. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হ্যাঁ, যাও), যাদের অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমিও তাদের একজন। | 10 قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْهُنْظَرِيْنَ |
| ১৬. সে বললো, যেহেতু তুমি (এ আদমের জন্যেই) আমাকে গোমরাহীতে নিমজ্জিত করলে, (তাই) আমিও | ١٦ قَالَ فَبِهَا ۗ أَغُويَتُنِي ۚ كَا قَعُكَن ۗ لَهُر |
| এদের (গোমরাহ করার) জন্যে অবশ্যই তোমার (প্রদর্শিত প্রতিটি) সরল পথে (-র বাঁকে বাঁকে ঔংগেডে) বসে থাকবো। | مِرَاطَكَ الْهُسْتَقِيْرَ ٧ |
| ১৭. অতপর (পথভ্রষ্ট করার জন্যে) আমি তাদের কাছে অবশ্যই আসবো, আসবো তাদের সামনের দিক থেকে, | ١٤ ثُمرٌ لَا تِيَنَّهُمْ مِّنَ بَيْنِ أَيْنِيهِمْ وَمِنْ |
| তাদের পেছন দিক থেকে, তাদের ডান দিক থেকে, তাদের বাঁ দিক থেকে, ফলে তুমি এদের অধিকাংশ | خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَّالِلِهِمْ وَكَن |
| লোককেই (তোমার) কৃতজ্ঞতা আদায়কারী (হিসেবে দেখতে) পাবে না। | تَجِلُ ٱكْثَرَهُمْ شُكِرِيْنَ |
| ১৮. আল্লাহ তায়ালা বললেন, বের হয়ে যাও তুমি এখান থেকে অপমানিত ও বিতাড়িত অবস্থায়; (আদম সম্ভানের) | ١٨ قَالَ اخْرُجُ مِنْهَا مَنْءُومًا مَّنْ مُورًا ﴿ لَهَيْ |
| যারাই তোমার অনুসরণ করবে, (তাদের এবং) তোমাদের সবাইকে দিয়ে নিচয়ই আমি জাহান্নাম পূর্ণ করে দেবো। | تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِيْنَ |
| ১৯. (আল্লাহ তায়ালা আদমকে বললেন,) তুমি এবং তোমার সাথী জান্নাতে বসবাস করতে থাকো এবং এর | الْعَنَّةَ فَكُلَا وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا الْجَنَّةَ فَكُلَا |
| যেখান থেকে যা কিছু চাও তা তোমরা খাও, কিন্তু এ | مِنْ مَيْتُ شِئْتُهَا وَلَا تَقْرَبَا هُٰنِهِ الشَّجَرَةَ |
| গাছটির কাছেও যেয়ো না, (গেলে) তোমরা উভয়েই যালেমদের মধ্যে শামিল হয়ে যাবে। | فَتَكُوْنَا مِنَ الظَّلِمِيْنَ |
| ৭ সূরা আল আ'রাফ ১৪৮ | মন্যিল ২ |

২০. অতপর শয়তান তাদের দু'জনকেই কুমন্ত্রণা দিলো যেন সে তাদের নিজেদের লজ্জাস্থানসমূহ, যা তাদের পরস্পরের কাছ থেকে গোপন করে রাখা হয়েছিলো-প্রকাশ করে দিতে পারে, সে (তাদের আরো) বললো, তোমাদের মালিক তোমাদের এ গাছটির (কাছে যাওয়া) থেকে তোমাদের যে বারণ করেছেন, তার উদ্দেশ্য এ ছাড়া আর কিছুই নয় যে, (সেখানে গেলে) তোমরা উভয়েই ফেরেশতা হয়ে যাবে, অথবা (এর ফলে) তোমরা (জান্লাতে) চিরস্থায়ী হয়ে যাবে।

٢٠ فَوَسُوسَ لَهُهَا الشَّيْطَى لِيُبْرِي لَهُهَا مَا وَرِي عَنْهُهَا مِنْ سَوْ أَتِهِهَا وَقَالَ مَا نَهٰلِكُهَا رَبُّكُهَا عَنْ هٰنِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخُلِدِيْنَ

২১. সে তাদের কাছে কসম করে বললো, আমি অবশ্যই তোমাদের উভয়ের জন্যে (ডোমাদের) হিতাকাংখীদের একজন ৷

٢١ وَقَاسَهُهُمْ ۚ إِنِّيْ لَكُمَا لَهِيَ النَّصِحِيْنَ لا

২২. এভাবে সে এদের দুজনকেই প্রতারণার জালে আটকে ফেললো, অতপর (এক সময়) যখন তারা উভয়েই সে গাছ (ও তার ফল) আস্বাদন করলো, তখন তাদের লজ্জান্থানসমূহ তাদের উভয়ের সামনে খুলে গেলো, (সাথে সাথে) তারা জানাতের কিছ লতা পাডা নিজেদের ওপর জড়িয়ে (নিজেদের গোপন স্থানসমূহ) ঢাকতে শুরু করলো: তাদের মালিক (তখন) তাদের ডাক (-র কাছে যাওয়া) থেকে নিষেধ করিনি এবং আমি কি তোমাদের একথা বলে দেইনি যে. শয়তান হচ্ছে তোমাদের উভয়ের প্রকাশ্য দুশমনঃ

٢٢ فَلَالُّهُمَا بِغُرُوْرِ ۽ فَلَمًّا ذَاقًا الشَّجَرَةَ بَلَ إِن لَهُمَا سَوْ أَتُهُمَا وَطَفقًا يَخْصفُ عَلَيْهمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَنَادُىهُمَّ رَبُّهُمَّ ٱلْمَرْ الشَّيْطِيُّ لَكُمَا عَدُوًّا مُّبِيِّنَّ

২৩. (নিজেদের ভূল বুঝতে পেরে) তারা দুজনেই বলে উঠলো, হে আমাদের মালিক, আমরা আমাদের নিজেদের ওপর যুলুম করেছি, তুমি যদি আমাদের মাফ না করো তাহলে অবশ্যই আমরা চরম ক্ষতিগ্রস্তদের দলে শামিল হয়ে যাবো।

٢٣ قَالًا رَبُّنَا ظَلَهُنَّا ۖ أَنْفُسَنَا عِد وَإِنْ لَّمِرْ تَغْفِرُلْنَا وَتَرْحَبُنَا لَنَكُونَى مِنَ الْخُسِرِينَ

২৪. আল্লাহ তায়ালা বললেন (এবার) তোমরা সবাই এখান থেকে নেমে যাও, (আজ থেকে) তোমরা (ও শয়তান চিরদিনের জন্যে) একে অপরের দুশমন, সুনির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত পৃথিবীতে থাকার উদ্দেশে তোমাদের জন্যে সেখানে বসবাসের জায়গা ও জীবন-সামগ্রীর ব্যবস্থা থাকবে।

٢٣ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُم ْ لِبَعْضِ عَنُو ۚ ع وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ إِلَى حِيْنِ

২৫. আল্লাহ তায়ালা (আরো) বললেন, তোমরা সেখানেই জীবন যাপন করবে, সেখানেই তোমরা মৃত্যুবরণ করবে এবং সেখান থেকেই তোমাদের (পুনরায়) বের করে আনা হবে।

٢٥ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَهُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُحْرَجُونَ ع

২৬. হে আদম সম্ভানরা, আমি তোমাদের ওপর পোশাক (সংক্রান্ত বিধান) পাঠিয়েছি, যাতে করে (এর দ্বারা) তোমরা তোমাদের গোপন স্থানসমূহ ঢেকে রাখতে পারো এবং (নিজেদের) সৌন্দর্যও ফুটিয়ে তুলতে পারো, (তবে আসল) পোশাক হচ্ছে (কিন্তু) তাকওয়ার (আল্লাহর ভয় জ্ঞাতকারী) পোশাক, আর এটাই হচ্ছে উন্তম (পোশাক) এবং এটা আল্লাহর নিদর্শনসমূহেরও একটি (অংশ, এর উদ্দেশ্য হচ্ছে), যাতে করে মানুষরা এর থেকে শিক্ষা গ্রহণ করতে পারে।

٢٦ يُبَنِي أَدَا قَلْ ٱلْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاتِكُرْ وَرِيْشًا ﴿ وَلِبَاسُ التَّقُوٰى لا ذَٰلِكَ خَيْرٌ مَ ذَٰلِكَ مِنْ أَيْسِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَنْكُونَ

২৭. হে আদমের সম্ভানরা, শয়তান যেভাবে তোমাদের পিতা মাতাকে জান্নাত থেকে বের করে দিয়েছে. তেমনি করে তোমাদেরও সে যেন প্রতারিত করতে না পারে. শয়তান তাদের উভয়ের দেহ থেকে তাদের পোশাক খুলে

٢٠ يُبَنِي ۚ إِذَا لَا يَفْتنَنَّكُو الشَّيْطِيُّ كَهَا أَخْرَجَ أَبُوَيْكُرْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا

৭ সুরা আল আ'রাফ

188

ফেলেছিলো, যাতে করে তাদের উভয়ের গোপন স্থানসমূহ উভয়ের কাছে উন্মুক্ত হয়ে পড়ে: (মূলত) সে নিজে এবং তার সংগী-সাথীরা তোমাদের এমন সব স্থান থেকে দেখতে পায়, যেখান থেকে তোমরা তাদের দেখতে পাও না; যারা (আমাকে) বিশ্বাস করে না তাদের জন্যে শয়তানকে আমি অভিভাবক বানিয়ে দিরেছি।

لِبَاسَهُهَا لِيُرِيَهُهَا سَوْاٰتِهِهَا ﴿ إِنَّهُ يَرُٰ بِكُنْ هُوَ وَقَبِيْلُهُ مِنْ مَيْتُ لَا تَرَوْنَهُرْ وَإِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطِيْنَ أَوْلَيَّاءَ للنَّانِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

২৮. (এদের অবস্থা হচ্ছে,) তারা যখন কোনো অন্নীল কাজ করে তখন তারা বলে, আমরা আমাদের পূর্বপুরুষদেরও এর ওপর পেয়েছি, স্বয়ং আল্লাহ তায়ালাই আমাদের এর নির্দেশ দিয়েছেন: (হে নবী.) তুমি বলো. আল্লাহ তায়ালা কখনো অল্লীল কিছুর ছকুম দেন না: তোমরা কি আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে এমন কিছু বলছো. যার ব্যাপারে তোমরা কিছুই জানো না।

٢٨ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَلْنَا عَلَيْهَا أَبَّاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ﴿ قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ﴿ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَالًا

২৯. তুমি (আরো) বলো, আমার মালিক তো ওধু न्याय-देनजारकत्रे जारम्भ पन. (जात जारम्भ द्राव्ह.) প্রতিটি এবাদাতেই তোমরা তোমাদের লক্ষ্য স্থির রাখবে: তাঁকেই তোমরা ডাকো, নিজেদের জীবন বিধানকে একান্তভাবে তাঁর জন্যে খালেস করে: যেভাবে তিনি তোমাদের (সৃষ্টির) শুরু করেছেন সেভাবেই তোমরা (আবার তার কাছে) ফিরে যাবে।

٢٩ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ عِن وَأَقِيْمُواْ وُجُوْهَكُمْ عِنْكَ كُلِّ مَسْجِنِ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ اللَّيْنَ ، كَهَا بَلَ أَكُمْ تَعُوْدُونَ ،

৩০. (অতপর) একদল লোককে তিনি সঠিক পথ مُورِيقًا مَن ي وَفَرِيقًا مَن ي وَفَرِيقًا مَن ي وَفَرِيقًا مَن ي দেখিয়েছেন আর দ্বিতীয় দলটির ওপর গোমরাহী ও বিদ্রোহ ভালোভাবেই চেপে বসেছে; এরাই (পরবর্তী পর্যায়ে) আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে শয়তানদের নিজেদের অভিভাবক বানিয়ে নিয়েছে, (এ সন্তেও) ভারা নিজেদের সঠিক পথের ওপর মনে করে।

الضَّلْلَةُ ، إِنَّهُرُ اتَّخَذُوا الشَّيطِيْنَ أَوْلِيَّاءَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ ٱللَّهُمْ مُّهْتَكُونَ

৩১. হে আদম সম্ভানরা, তোমরা প্রতিটি এবাদাতের সময়ই তোমাদের সৌন্দর্য (-মন্তিত পোশাক) গ্রহণ করো, তোমরা খাও এবং পান করো, তবে কোনো অবস্থাতেই অপচয় করো না, আল্লাহ তায়ালা কখনো অপচয়কারীদের পছন্দ করেন না।

٣١ يٰبَنِي ۚ أَدَّا خُلُوا زِيْنَتَكُرْ عِنْلَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ، إِنَّهُ لاَّ

৩২. (হে নবী,) তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালার (দেয়া) সৌন্দর্য (-মণ্ডিত পোশাক) এবং পবিত্র খাবার তোমাদের জন্যে কে হারাম করেছে? এগুলো তো আল্লাহ তায়ালা স্বয়ং নিজেই তাঁর বান্দাদের জন্যে উদ্ভাবন করে এনেছেন: তুমি বলো, এগুলো হচ্ছে যারা ঈমান এনেছে তাদের পার্থিব পাওনা, (অবশ্য) কেয়ামতের দিন ও এগুলো ঈমানদারদের জন্যেই (নির্দিষ্ট থাকবে): এভাবেই আমি জ্ঞানী সমাজের জন্যে আমার আয়াতসমূহ খুলে খুলে বর্ণনা করি।

٣٢ قُلْ مَنْ حَرًّا زِيْنَةَ اللَّهِ الَّتِيُّ ٱخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطُّيِّبُتِ مِنَ الرِّزْقِ ، قُلُ هِيَ لِلَّذِيْنَ أَمَنُواْ فِي الْحَيْوةِ النَّاثَيَا غَالِصَةً يُّوْمَ الْقِيْهَةِ ، كَنْ لِكَ نُفَصِّلُ الْأَيْتِ لِقَوْمٍ

৩৩. তুমি (এদের আরো) বলো, হাঁ, আমার মালিক যা কিছু হারাম করেছেন তা হচ্ছে যাবতীয় প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অশ্লীল কাজ, গুনাহ ও অন্যায়ভাবে বাড়াবাড়ি করা. (তিনি আরো হারাম করেছেন) আল্লাহর সাথে (অন্য কাউকে) শরীক করা, যার ব্যাপারে তিনি কখনো কোনো সনদ নাযিল করেননি এবং আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে তোমাদের এমন সব (বাজে) কথা বলা, যার ব্যাপারে তোমাদের কোনোই জ্ঞান নেই।

٣٣ قُلْ إِنَّهَا هَرًّا ۚ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَرَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطُنًا وَّأَنْ تَقُوْلُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَيُونَ

৭ সুরা আল আ'রাফ

1000

পারা ৮ ওয়ালাও আননানা

৩৪. প্রত্যেক জাতির জন্যেই (তার উত্থান-পতনের) একটি সুনির্দিষ্ট মেয়াদ রয়েছে, যখন তাদের সে মেয়াদ আসবে তখন তারা একদন্ড বিলম্বও করবে না, তেমনি তারা এক মুহূর্ত এগিয়েও আসবে না।

٣٣ وَلِكُلِّ ٱمَّةٍ ٱجَلُّ ۽ فَإِذَا جَاءَ ٱجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخُرُوْنَ سَاعَةً وَلا يَسْتَقُلُمُوْنَ

৩৫. হে আদম সম্ভানরা (শুরুতেই আমি তোমাদের বলেছিলাম), যখনি তোমাদের কাছে তোমাদের মধ্য থেকে রস্পরা আসবে, যারা তোমাদের কাছে আমার আয়াত পড়ে শোনাবে, তখন যারা (সে অনুযায়ী) আমাকে ভয় করবে এবং (নিজেদের) সংশোধন করে নেবে, তাদের কোনোই ভয় থাকবে না, তারা কখনো দুক্তিন্তাগ্রস্তও হবে না।

٣٥ يٰبَنِي ۚ أَدَا إِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌّ مِّنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ أَيْتِي لا فَهَن اتَّقَٰى وَاَصْلَعَ فَلَا غَوْنُ عَلَيْهِرْ وَلَا هُمْ يَحْزُنُونَ

৩৬. আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ত করবে এবং বড়াই করে এ (সত্য) থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে, তারাই হবে জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা চিরদিন অবস্থান করবে।

٣٦ وَالَّانِيْنَ كَنَّابُوا بِالْيِتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَسْحُبُ النَّارِ } مُرْ فِيْهَا غُلِلُوْنَ

৩৭. যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে মিথ্যা আরোপ করে কিংবা তাঁর আয়াতকে মিথ্যা সাব্যস্ত করে, তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে? এরা হল্ছে সেসব ব্যক্তি. যারা কেতাবে (বর্ণিত দুর্ভাাগ্য থেকে) তাদের নিজেদের অংশ পেতে থাকবে: এমনিভাবে (তাদের মৃত্যুর সময়) তাদের কাছে আমার ফেরেশতারা যখন এসে হাযির হবে. তখন তারা বলবে (বলো), তারা (এখন) কোথায় যাদের তোমরা আল্লাহ তায়ালার বদলে ডাকতে: তারা বলবে-আজ সবাই (আমাদের ছেড়ে) সরে গেছে, তারা (সেদিন) সবাই নিজেদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে যে, তারা সত্যিই কাফের ছিলো।

٣٠ فَهَنَّ أَظْلَرُ مِنَّ افْتَرْى عَلَى اللَّهِ كَنِبًا أَوْ كَنَّابَ بِالْيَدِ ، أُولَٰنِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتْبِ م مَتَّى إِذَا جَاءَتُهُمْ رُسُلُنَا يَتُوَفُّونَهُمْ لِا قَالُواْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَلْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ ﴿ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَهُوِيُوْا عَلَى أَنْفُسِمِرْ أَتَّهُمْ كَانُوْا كُفِرِيْنَ

৩৮. আল্লাহ তায়ালা বলবেন, ভোমাদের আগে যেসব মানুষের দল, জ্বিনের দল গত হয়ে গেছে, তাদের সাথে তোমরাও আজ সবাই জাহান্লামের আগুনে প্রবেশ করো: এমনি করে যখন এক একটি জনগোষ্ঠী (জাহান্রামে) দাখিল হতে থাকবে, তখন তারা তাদের (আদর্শগত ভাই) বোনদের ওপর লানত দিতে থাকবে, এভাবে লোনত দিতে দিতে) যখন সবাই সেখানে গিয়ে একত্র হবে, তখন তাদের শেষের দলটি পূর্ববর্তী দলের ব্যাপারে বলবে, হে আমাদের মালিক, এরাই হচ্ছে সেসব লোক যারা আমাদের গোমরাহ করেছিলো, তুমি এদের জাহান্লামের শান্তি দিগুণ করে দাও: আল্লাহ তায়ালা বলবেন, (আজ) তোমাদের প্রত্যেকের (শান্তি) হবে দ্বিগুণ, কিন্তু তোমরা তো বিষয়টি জানোই না।

٣٨ قَالَ ادْهُلُوا فِي ٓ أُمَر قَلْ غَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ ، كُلُّهَا دَعَلَس أُمَّةً لَّعَنَس أَعْتَهَا ﴿ مَتَّى إِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَهِيْعًا لا قَالَتُ أُخُرْلهُمْ لِأُولْنِهُمْ رَبَّنَا مَؤُلَّاءِ أَضَلُّونَا فَأْتِهِمْ عَنَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ هِ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٌ وَّلْكِنْ لَّا

৩৯. তাদের প্রথম দলটি তাদের শেষের দলটিকে বলবে, (হাঁ, আমরা যদি অপরাধী হয়েই থাকি, তবে) তोমাদেরও আমাদের ওপর কোনো শ্রেষ্ঠত ছিলো না (এ مُثَدَّرُ الْعَنَ ابَ إِمَا كُنْتُمْ وَالْعَالِمَ الْعَلَمُ الْعَلَ الْعَلَ الْمَ الْعَلَى الْعَلِيمُ الْعَلَى الْعَلِيمُ الْعَلَى الْعَلِيمُ الْعَلَى الْعَلِيمُ الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلِيمُ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى সময়ই আল্লাহর ঘোষণা আসবে), এখন তোমরা সবাই -নিজ নিজ কর্মফলের বিনিময়ে (জাহান্লামের) আযাবের স্বাদ গ্রহণ করতে থাকো।

٣٩ وَقَالَسْ أُوْلُنِهُمْ لِأُغْرِنْهُمْ فَهَا كَانَ لَكُمْ تَكْسِبُوْنَ ع

৪০. অবশ্যই যারা আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করেছে এবং দম্ভভরে তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নিয়েছে. তাদের জন্যে কখনো (রহমতভরা) আসমানের দুয়ার খুলে দেয়া হবে না. যতোক্ষণ পর্যন্ত একটি সুঁচের ছিদ্রপথ

٣٠ انَّ الَّذِينَ كَنَّ بُوا بِأَيْتِنَا وَاسْتَكْبَوُوا مِنْ اللَّهِ وَاسْتَكْبَوُوا عَنْهَا لا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ ولا



www.eelm.weebly.com

জাহানামের, (আবার এই জাহানামই হবে) তাদের ওপরের আচ্ছাদন, এভাবেই আমি যালেমদের প্রতিফল দিয়ে থাকি।

غَوَاشِ ، وكَنْ لِكَ نَجْزى الظُّلِمِينَ

৪২. (অপরদিকে) যারা (আমার ওপর) ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে, আমি (তাদের) কারো ওপর তাদের সাধ্যের বাইরে দায়িত্বভার অর্পণ করি না. এ (নেক) লোকেরাই হচ্ছে জান্লাতের অধিবাসী, তারা সেখানে চিরদিন থাকবে ।

٣٢ وَالَّذِينَ أَمَّنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُسِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا الَّا وُسْعَهَا زِ أُولَٰئِكَ أَصْ الْجَنَّةِ عَمْرُ فِيْهَا عَلِلَّوْنَ عَ

৪৩. তাদের মনের ভেতর (পরস্পরের বিরুদ্ধে) যে ঘুণা-বিদ্বেষ (লুকিয়ে) ছিলো তা আমি (সেদিন) বের করে ফেলে দেবো, তাদের (জ্বন্যে নির্দিষ্ট জান্রাতের) পাদদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে. (এসব দেখে) তারা বলবে, সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে. যিনি আমাদের এ (পুরক্ষারের স্থান)-টি দেখিয়েছেন। আল্লাহ তায়ালা আমাদের (হেদায়াতের) পথ না দেখালে আমরা নিজেরা কিছুতেই হেদায়াত পেতাম না, আমাদের মালিকের রস্পরা এক সত্য বিধান নিয়ে এসেছিলো। (এ माल त्कत्र त्रम्नता वक मणा विवास नित्र विकास परिनात (वि ममत्र) जात्मत करना रामिसी प्राप्ता हरत, जाक रामारात الْجَنَّةُ अभग्न) जात्मत करना रामिसी प्राप्त विवास स्वास् সে (জান্লাতের) উত্তরাধিকারী করে দেয়া হলো, (আর এটা হচ্ছে সেসব কার্যক্রমের প্রতিফল) যা তোমরা দনিয়ার জীবনে করে এসেছো।

٣٣ وَنَزَعْنَا مَا فِي مُكَوْرِهِرْ مِّنْ غِلِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِرُ الْإَنْهُرُ ء وَقَالُوا الْعَبْلُ لِلَّهِ الَّذِي مَنْ بِنَا لِمِٰنَا قِد وَمَا كُنَّا لِنَهْتَرِي لَوْ ٧ أَنْ مَنْ بِنَا اللَّهُ عِ لَقَلْ جَأَءُنِ رُسُلُ رَبِّنَا ٱوْرِثْتُهُوْمَا بِهَا كُنْتُرْ تَعْبَلُوْنَ

৪৪. (এরপর) জান্নাতের অধিবাসীরা জাহান্নামী লোকদের ডেকে বলবে, আমরা তো আমাদের মালিকের (জান্লাত সংক্রান্ত) ওয়াদা সত্য পেয়েছি, তোমরা কি তোমাদের মালিকের ওয়াদাসমূহ সঠিক পাওনিং তারা বলবে. হাঁ. অতপর তাদের মাঝে একজন ঘোষণাকারী ঘোষণা করবে, যালেমদের ওপর আল্লাহ তায়ালার লানত হোক,

٣٣ وَنَادَى اَشْعُبُ الْجَنَّةِ اَسْعُبُ النَّارِ أَنْ قَلْ وَجَلْلًا مَا وَعَلَلًا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلُ وَجَلْ تُر مَّا وَعَلَ رَبُّكُر مَقًّا ﴿ قَالُوْ ا نَعَرْ عَ فَأَذِّنَ مُؤَذِّنَّ بَيْنَهُمْ أَنْ لَّعْنَةُ اللَّهُ عَلَى،

রাখতে চাইতো এবং তাকে তথু বাঁকা করতে চাইতো. আর তারা শেষ বিচারের দিনকেও অস্বীকার করতো। ৪৬. (জান্লাত ও জাহান্লাম.) তাদের উভয়ের মাঝে একটি দেয়াল থাকবে, (এই দেয়ালের) উঁচু স্থানের ওপর থাকবে (আরেক দলের) কিছু লোক, যারা (সেখানে আনীত) প্রতিটি ব্যক্তিকে তাদের নিজ নিজ চিহ্ন অনুযায়ী চিনতে পারবে, তারা জানাতের অধিবাসীদের ডেকে বলবে.

তোমাদের ওপর শান্তি বর্ষিত হোক। এরা (যদিও) তখন পর্যন্ত জানাতে প্রবেশ করেনি, কিন্তু (প্রতি মুহূর্তে) এরা

সেখানে প্রবেশ করার আগ্রহ পোষণ করছে।

৪৫. যারা মানুষদের আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে বিরত

وَيَبْغُوْنَهَا عِوْجًا ج وَهُر بِالْأَخِرَةِ كَفِرُونَ مر ٣٦ وَبَيْنَهُمَا مِجَابٌ ع وَعَلَى الْأَعْرَان رِجَالٌ يَعْرِفُوْنَ كُلًّا ' بِسِيْدِيهُ ﴿ عَ وَنَادُوْ ا أَمْعُبُ الْجَنَّةِ أَنْ سَلْمٌ عَلَيْكُمْ تَ لَمِ يَنْ عُلُوْهَا وَهُرْ يَطْهُعُونَ

৪৭. অতপর যখন তাদের দৃষ্টি জাহান্লামের অধিবাসীদের (আযাবের) দিকে ফিরিয়ে দেয়া হবে. (তখন) তারা বলবে, হে আমাদের মালিক, (তুমি) আমাদের এ যালেম সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত করো না।

٣٤ وَإِذَا صُوفَتُ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ أَشَعْبِ النَّارِدِ قَالُوْا رَبُّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظُّلمِيْنَ ع

৭ সুরা আল আ'রাফ

1365

৪৮. অতপর (পার্থক্য নির্ণয়কারী সে দেয়ালের) উঁচু স্থানে অবস্থানকারী ব্যক্তিরা (জাহানামের) কিছু লোককে-যাদের তারা কোনো (বিশেষ) লক্ষণের ফলে চিনতে পারবে−ুডেকে বলবে (কই) তোমাদের দলবল কোনোটাই তো (আজ) কাজে এলো না, না (কাজে এলো) তোমাদের অহংকার, যা তোমরা করতে!

٣٨ وَنَادَى أَشْعُبُ الْأَعْرَانِ رِجَالًا يُّعُوفُونَهُمْ بِسِيْهُمُهُمْ قَالُوا مَا آغَنَى عَنْكُمْ جَبْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكُبُونَ

৪৯. (অপরদিকে আজ চেয়ে দেখো মোমেনদের প্রতি,) এরা কি সে সব লোক নয়, যাদের ব্যাপারে তোমরা কসম করে বলতে, আল্লাহ তায়ালা এদের তাঁর রহমতের কোনো অংশই দান করবেন না: (অথচ আজ এদেরকেই আল্লাহ তায়ালা বলেছেন) তোমরা সবাই জান্নাতে প্রবেশ করো, তোমাদের কোনোই ভয় নেই, না তোমরা দৃশ্চিন্তাগ্রস্ত হবে।

٣٩ أَمَّوْ لَا عِ الَّذِينَ ٱقْسَهْتُرْ لَا يَنَالُهُرُ اللَّهُ بِ هَهَةِ ﴿ أُدْمُلُوا الْجَنَّةَ لَا غَوْنٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ

৫০. (এবার) জাহান্নামের অধিবাসীরা জান্নাতের লোকদের ডেকে বলবে, আমাদের ওপর সামান্য কিছু পানি (অন্তত) ঢেলে দাও, অথবা আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে রেযেক দান করেছেন তার কিয়দংশ (আমাদের দাও): তারা বলবে, আল্লাহ তায়ালা (আজ্ঞ) এ দুটি জিনিস (সে সব) কাফেরদের জন্যে হারাম করেছেন.

٥٠ وَنَادَى أَشَحٰبُ النَّارِ أَشَحٰبَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيْضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْهَآءِ أَوْ مِمًّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ﴿ قَالُوْ ۗ إِنَّ اللَّهَ حَرَّمُهُمَا عَلَى الْكُغِرِيْنَ لا

৫১. याता बीनत्क त्थल-जामानाय পतिनज करत त्वर्थिहरना ولَعِبًا वीनत्क त्थल-जामानाय পतिनज करत त्वर्थिहरना ولَعِبًا এবং পার্থিব জীবন তাদের প্রতারণা (-র জালে) আটকে রেখেছিলো, তাদের আজ আমি (ঠিক) সেভাবেই ভুলে যাবো যেভাবে তারা (আমার) সামনা সামনি হওয়ার এ দিনটিকে ভূলে গেছে এবং আমার আয়াতসমূহ অস্বীকার করেছে।

وَّغَرَّتُهُرُ الْحَيٰوةُ النَّنْيَا ءِ فَالْيَوْمُ نَنْسُهُرْ كَمَا نَسُوْ القَّاءَ يَوْمِهِرُ هِنَ الرَّوَمَا كَانُوا بِالتِّنَا

৫২, আমি তাদের কাছে এমন একটি কিতাব নিয়ে এসেছিলাম, যা আমি (বিশদ) জ্ঞান দ্বারা (সমন্ধ করে) বর্ণনা করেছি, যারা (এর ওপর) ঈমান আনবে, এ কিতার্ব (হবে) তাদের জন্যে (সুস্পষ্ট) হেদায়াত ও রহমত।

٥٢ وَلَقَنْ مِثْنَاهُمْ بِكِتْبِ فَصَّلْنَاهُ عَلَى عَلْم هُنُى وَّرَحْهَةً لِقُوْمٍ يَّوْمِنُونَ

৫৩. এরা কি (চ্ড়ান্ত কোনো) পরিণামের জ্বন্যে অপেক্ষা করছে? যেদিন (সত্যি সত্যিই) সে পরিণাম তাদের কাছে আসবে, সেদিন যারা ইতিপূর্বে এ (দিনটি)–কে ভূলে গিয়েছিলো- তারা বলবে, অবশ্যই আমাদের মালিকের পক্ষ থেকে আমাদের রস্ত্রনরা (এ দিনের) সত্য (প্রতিশ্রুতি) নিয়েই এসেছিলো, আমাদের জন্যে (আজ) কোনো সুপারিশকারী কি আছে, যারা আমাদের পক্ষে شَفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا ۖ أَوْ نُرِدُ فَنَعْمَلُ غَيْرُ (आज्ञारत कार्ष्ट) किছू वलरत, जुश्ता (এमन कि शरत रय,) ﴿ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ اللَّ আমাদের পুনরায় (দুনিয়ায়) ফিরিয়ে দেয়া হবে, যাতে আমরা (সেখানে গিয়ে) আগে যা করতাম তার চাইতে ভিনু ধরনের কিছু করে আসতে পারি, (মূলত) এরাই (হচ্ছে সেসব লোক যারা) নিজেরা নিজেদের ক্ষতি সাধন করেছে এবং (আল্লাহর ওপর) যা কিছু তারা মিপ্যা আরোপ করতো, তাও তাদের কাছ থেকে (আজ) হারিয়ে গেছে।

٥٣ مَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيْلَهُ * يَوْمَ يَاْتِي تَاوِيْلُهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَنْ جَآءَ سُ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّةِ فَهَلُ لَّنَا مِنْ الَّذِي كُنَّا نَعْهَلُ ء قَلْ خَسِرُوْ ۗ ٱلْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْ إِيفَتُونَ ع

৫৪. অবশ্যই তোমাদের মালিক আল্লাহ তায়ালা, যিনি ছয় দিনে আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি 'আরশের' ওপর অধিষ্ঠিত হন। তিনি রাতের পর্দাকে الْعَرْشِ مِن يُغْشِي النَّهَارَ يَطْلُبُهُ بِمُ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ الْعَرْشِ مِن يُغْشِي النَّهَارَ يَطْلُبُهُ الْعَارِبِينِ অনুসরণ করে, (তিনিই সৃষ্টি করেছেন) সুরুজ, চাঁদ ও مَدْمِدُمًا لا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمْرَ وَالنَّجُورَ النَّجُورَ وَالنَّجُورَ وَالنَّعَالَ النَّالَ النَّامِ النَّالَ النَّامِ النَّ

৭ সরা আল আ'রাফ

٥٣ إِنَّ رَبُّكُمُ اللَّهُ الَّذِي عَلَقَ السَّهٰوٰ فِي وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ آيًّا إِثْرَّ اسْتَوٰى عَلَى



পারা ৮ ওয়ালাও আন্নানা

বিধানের অধীন করে রাখা হয়েছে: জেনে রেখো, সৃষ্টি (যেহেতু) তাঁর, (সুতরাং তার ওপর) ক্ষমতাও চলবে একমাত্র তাঁর; সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত দয়ালু ও বরকতময়।

مُسَخَّرْتِ ۚ بِأَمْرِهِ ﴿ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْإَمْرُ ﴿ تَبُكَ اللَّهُ رَبُّ الْعُلَمِينَ

৫৫. (অতএব) তোমরা (একান্ত) বিনয়ের সাথে ও চুপিসারে তথ্ তোমাদের মালিক (আল্লাহ তায়ালা)-কেই ডাকো; অবশ্যই তিনি (তাঁর রাজত্বে) যারা বাড়াবাড়ি করে তাদের পছন্দ করেন না।

٥٥ أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفَيَةً ﴿ إِنَّهُ لَا يُحبُّ الْهُعْتَلِيْنَ ج

৫৬. (আল্লাহর) যমীনে (একবার) তাঁর শান্তি স্থাপনের পর (তাতে) তোমরা বিপর্যয় সৃষ্টি করো না, তোমরা ভয় ও আশা নিয়ে একমাত্র আল্লাহ তায়ালাকেই ডাকো; অবশ্যই আল্লাহর রহমত নেক লোকদের অতি নিকটে রয়েছে।

٥٦ وَلاَ تُفْسُوا فِي الْأَرْضِ بَعْلَ إِصْلَاحِهَا وَ ادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَهَعًا ﴿ إِنَّ رَحْهَتَ اللَّهِ قَرِيْد مَّىَ الْهُحُسِنِينَ

৫৭. তিনিই মহান আল্লাহ, যিনি বাতাসকে (বৃষ্টি ও) রহমতের (আগাম) সুসংবাদবাহী হিসেবে (জনপদের দিকে) পাঠান: শেষ পর্যন্ত যখন সে বাতাস (পানির) ভারী মেঘমালা বহন করে (চলতে থাকে), তখন আমি তাকে একটি মৃত জনপদের দিকে পাঠিয়ে দেই, অতপর (সে) মেঘ থেকেই আমি পানি বর্ষণ করি, অতপর তা দিয়ে (যমীন থেকে) আমি সব ধরনের ফলমূল বের করে আনি: এভাবে আমি মৃতকেও (জীবন থেকে) বের করে আনবো, সম্ভবত (এ থেকে) তোমরা কিছু শিক্ষা গ্রহণ করতে পারবে।

٥٥ وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيْحَ بُشُرًا 'بَيْنَ يَنَىْ رَحْمَتِهِ ﴿ حَتَّى إِذَا ۗ اَتَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنُهُ لبَلَن مِّيِّت فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْهَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ، كَنْ لِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَى لَعَلَّكُم ۚ تَنَكَّرُ وَنَ

৫৮. উৎকষ্ট যমীন- (তা থেকে) তার মালিকের আদেশে তার (উৎকৃষ্ট) ফসলই উৎপন্ন হয়, আর যে যমীন বিনষ্ট হয়ে গেছে তা কঠোর পরিশ্রম ব্যতীত কিছুই উৎপন্ন করে না; এভাবেই আমি আমার নিদর্শনসমূহ স্পষ্ট করে বর্ণনা করি এমন এক জাতির জন্যে, যারা (আমার এসব নেয়ামতের) কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন করে।

٥٨ وَالْبَلَنُ الطَّيّبُ يَخُرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ } وَالَّذِي عَبُّن كَ يَخُرُجُ إِلَّا نَكِدًا ا كَنْ لَكَ نُصَرِّنُ الْإِيْتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُونَ ع

৫৯. আমি নৃহকে তার জাতির কাছে পাঠিয়েছি, অতপর সে তাদের বললো, হে আমার জাতির লোকেরা, তোমরা আল্লাহ তায়ালার দাসত্ব কবুল করো, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোনো মাবুদ নেই: আমি তোমাদের ওপর এক কঠিন দিনের আযাবের আশংকা করছি।

٥٩ لَقَلْ ٱرْسَلْنَا تُوْمًا إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ يُقَوْمُ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَّهِ غَيْرُهٌ ﴿ إِنِّي أَخَانُ عَلَيْكُرْ عَنَ ابَ يَوْ إِ عَظِيْم

৬০. তার জাতির নেতারা বললো (হে নূহ), আমরা দেখতে পাচ্ছি তুমি এক সুস্পষ্ট গোমরাহীতে (নিমজ্জিত) রয়েছো।

٦٠ قَالَ الْهَلَا مِنْ قَوْمِهِ انَّا لَنُولِكَ فِي ضَلَل مبِينٍ

৬১. সে বললো, হে আমার সম্প্রদায়ের লোকেরা, আমার সাথে কোনো গোমরাহী নেই, আমি তো হচ্ছি সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহর পক্ষ থেকে (আসা) একজন রসূল।

٦١ قَالَ يُقَوْمُ لَيْسَ بِيْ ضَلَلَةٌ وَّلَٰكِنِّي ۚ رَسُولٌ مِّنَ رَّبِّ الْعُلَوِيْنَ

৬২. (আমার কাজ হচ্ছে) আমি আমার মালিকের 🖍 বাণীসমূহ তোমাদের কাছে পৌছে দেবো এবং (সেমতে) তোমাদের ভভ কামনা করবো, (কেননা আখেরাত সম্পর্কে) আমি আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে এমন কিছ কথা জানি যা তোমরা জানো না।

٦٢ ٱبَلِّغُكُرْ رسْلُتِ رَبِّيْ وَٱنْصَعُ لَكُرْ وَ أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

৬৩. তোমরা কি এতে আশ্চর্যন্থিত হচ্ছো যে, তোমাদের مُرِّيكُم وَيُكُم وَيَّا مُنْ رَبِّكُم وَيَّا اللهِ اللهُ عَجِبْتُم أَنْ جَاءَكُم ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُم اللهِ اللهُ اللهُ عَجِبْتُم أَنْ جَاءَكُم ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُم اللهُ اللهُ

৭ সরা আল আ'রাফ

268

পারা ৮ ওয়ালাও আননানা

তায়ালার বাণী এসেছে, যাতে করে সে তোমাদের (আযাব সম্পর্কে) সতর্ক করে দিতে পারে, ফলে তোমরা (সময় থাকতে) সাবধান হবে এবং আশা করা যায় এতে করে তোমাদের ওপর দয়া করা হবে।

عَلٰى رَجُل مَّنْكُرْ لِيُنْنِ رَكُرْ وَلَتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُم

৬৪. অতপর তারা তাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, আমি তাকে এবং তার সাথে যারা নৌকায় (আরোহণ করে) ছিলো, তাদের সবাইকে (আযাব থেকে) উদ্ধার করেছি. আর যারা আমার আযাবসমূহকে মিথ্যা বলেছে তাদের আমি (পানিতে) ডুবিয়ে দিয়েছি: এরা ছিলো (আসলেই গোঁডা ও) অন্ধ।

٢٢ فَكَنَّابُوهُ فَٱنْجَيْنُهُ وَالَّذِينَ مَعَدَّ فِي الْفُلُكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَنَّابُوْا بِالْتِنَا ، إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَبِيْنَ ع

৬৫. আমি আ'দ জাতির কাছে (পাঠিয়েছিলাম) তাদেরই এক ভাই হুদকে, সে (তাদের) বললো, হে আমার জাতি, তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার দাসত্ব স্বীকার করো, তিনি ছাডা তোমাদের দ্বিতীয় কোনো ইলাহ নেই: তোমরা কি (তাঁকে) ভয় করবে নাঃ

٦٥ وَ إِلَى عَادٍ أَخَاهُرْ هُوْدًا ﴿ قَالَ يُقَوْ إِ اعْبُلُوا اللَّهَ مَّا لَكُرْ مِّنْ إِلَّهِ غَيْرُهٌ ﴿ اَفَلَا

৬৬. তার জাতির সরদাররা, যারা (তাকে) অস্বীকার করেছে, তারা বললো, আমরা তো দেখছি তুমি নির্বৃদ্ধিতায় লিপ্ত আছো এবং আমরা মনে করি তুমি মিথ্যাবাদীদেরই একজন।

٢٦ قَالَ الْمَلَا الَّذِيْنَ كَفَرُّوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَوْ لِكَ فِي سَفَاهَةٍ وَّإِنَّا لَنَظُنَّكَ مِنَ الْكُنِبِيْنَ

৬৭. সে বললো, হে আমার সম্প্রদায়ের লোকেরা, আমার সাথে কোনোরকম নির্বৃদ্ধিতা জড়িত নেই, বরং আমি (হচ্ছি) সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে (আগত) একজন রস্ল_।

٢٤ قَالَ يُقَوْ } لَيْسَ بِي شَفَامَةً وَّلَٰكِنِّي ٛ رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعُلَمِينَ

৬৮. (আমার দায়িত্ব হচ্ছে) আমি আমার মালিকের (কাছ থেকে আসা) বাণীসমূহ তোমাদের কাছে পৌছে দেবো. তোমাদের জন্যে আমি একজন বিশ্বস্ত শুভাকাংখী।

٦٨ ٱبَلِّغُكُمْ رسلت رَبِّيْ وَآنَا لَكُمْ نَاصِحُ

৬৯. তোমরা কি (এটা দেখে) বিশ্বিত হচ্ছো যে, তোমাদের কাছে তোমাদেরই (মতো) একজন মানুষের ওপর তোমাদের মালিকের কাছ থেকে তোমাদের (আযাবের) ভয় দেখানোর জন্যে (সুম্পষ্ট কিছু) বাণী এসেছে: স্মরণ করো, কিভাবে আল্লাই তায়ালা নুহের পর তোমাদের এই যমীনে খলীফা বানিয়েছেন এবং অন্যান্য সষ্টির চাইতে তিনি তোমাদের বেশী ক্ষমতা দান করেছেন, অতএব (হে আমার জাতি), তোমরা আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহগুলো শ্বরণ করো, আশা করা যায় তোমরা সাফল্য লাভ করতে পারবে।

٦٩ أَوَ عَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكُرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُل مِّنْكُرْ لِيُنْنِرَكُرْ ، وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ هُلَفَاءً مِنْ ابَعْلِ قَوْ إِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْطَةً } فَاذْكُرُوْۤ الْاَّهِ اللهِ لَعَلَّكُرْ تُفْلِحُوْنَ

৭০. তারা (হূদকে) বললো, তুমি কি আমাদের কাছে এ पo. ७। ता (१५००) वनला, जाम कि जामारात कारह व وَمَنَةُ وَنَنَرَ करनाड़े वरप्तरहा त्य, जामता कवन वक जान्नाहत ववानाज وَمَنَةُ وَنَنَرَ وَمَلَةً وَمَنَةً وَنَنَرَ وَمَا اللهَ وَمِلَةً وَنَنَرَ করবো এবং আমাদের পূর্বপুরুষরা যাদের বন্দেগী করেছে তাদের বাদ দিয়ে দেবো (এটাই যদি হয়), তাহলে নিয়ে এসো আমাদের কাছে সে (আযাবের) বিষয়টি, যার ব্যাপারে তুমি আমাদের (এতো) ভয় দেখাচ্ছো, যদি তুমি সত্যবাদী হও!

مَاكَانَ يَعْبُلُ أَبَاؤُنَا مِ فَأَتنَا بِهَا تَعِنُنَا إِنْ كُنْسَ منَ الصَّاقِينَ

৭১. সে বললো, তোমাদের ওপর তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে আযাব ও ক্রোধ তো নির্ধারিত হয়েই আছে: তোমরা কি আমার সাথে সে (মিথ্যা মাবুদদের) নামগুলোর ব্যাপারে বিতর্কে লিপ্ত হতে চাও, যা তোমরা এবং তোমাদের বাপ-দাদারা (এমনি এমনিই) রেখে দিয়েছো, যার ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালা কোনো রকম সনদ নাযিল করেননি: (অতএব) তোমরা অপেক্ষা করো, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করতে থাকবো।

ا ٤ قَالَ قَلْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌّ وَّغَضَبُّ م أَتُجَادِلُونَني في أَسْهَاء سَهْيَتُهُوهَا أَنْتُرْ وَ أَبَاوُكُرْمًا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَيٍ وَ فَانْتَظِرُوْ ۗ إِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ

وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيثِي كَنَّابُوا بِأَيْتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ع

ছিলো না। ৭৩. সামদ জাতির কাছে আমি (পাঠিয়েছিলাম) তাদেরই (এক) ভাই সালেহকে। সে (এসে) বললো, হে আমার জাতি, তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার বন্দেগী করো, তিনি ছাডা তোমাদের আর কোনো ইলাহ নেই: ভোমাদের কাছে তোমাদের মালিকের কাছ থেকে সুস্পষ্ট নিদর্শন এসে হাযির হয়েছে, (আর তোমাদের জন্যে) এ (নিদর্শনটি) হচ্ছে আল্লাহর উষ্ট্রী, একে তোমরা ছেড়ে দাও যেন তা আল্লাহ তায়ালার যমীনে (বিচরণ করে) খেতে পারে, তোমরা তাকে কোনো খারাপ মতলবে স্পর্শ করো না, তাহলে (আল্লাহর পক্ষ থেকে) কঠোর আযাব এসে তোমাদের পাকড়াও করবে।

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

৭২. অতপর (যখন আযাব এলো, তখন) আমি তাকে

এবং তার সাথে যেসব (ঈমানদার) ব্যক্তি ছিলো, তাদের

আমার রহমত দ্বারা (আঁযাব থেকে) বাঁচিয়ে দিলাম, আর যারা আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করেছে আমি

তাদের নির্মূল করে দিলাম, (কেননা) এরা ঈমানদার

৭৪. স্মরণ করো, যখন আল্লাহ তায়ালা আদ জাতির পর তোমাদের (দুনিয়ার) খলীফা বানিয়েছিলেন এবং আল্লাহ তায়ালার যমীনে তিনি তোমাদের প্রতিষ্ঠা দান করেছেন. (যার) ফলে তোমরা এর সমতল ভূমি থেকে (মাটি নিয়ে তা দিয়ে) প্রাসাদ বানাচ্ছো, আর পাহাড় কেটে কেটে নিজেদের ঘর-বাড়ি তৈরী করতে পারছো, অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালার এ সব (জ্ঞান ও প্রকৌশল সংক্রান্ত) নেয়ামত ব্মরণ করো এবং কোনো অবস্থায়ই আল্লাহ তায়ালার যমীনে বিপর্যয় ঘটিয়ো না।

৭৫. তার জাতির সেসব নেতৃস্থানীয় লোক, যারা নিজেদের গৌরবের বড়াই করতো- অপেক্ষাকৃত দুর্বল শ্রেণীর লোকদের– যারা তাদের মধ্য থেকে তার ওপর ঈমান এনেছে– বললো, তোমরা কি সত্যিই জ্ঞানো, সালেহ আল্লাহ তায়ালার পাঠানো একজন রসুল: তারা বললো (হাঁ), তার ওপর যে বাণী পাঠানো হয়েছে আমরা তা বিশ্বাস করি।

৭৬. অতপর (সে) অহংকারী লোকেরা বললো, তোমরা যা কিছতে বিশ্বাস করো আমরা তা অস্বীকার করি।

पाता) जाता जापन मानित्कत निर्पार्थ क्षा विरत्निक्ष विरत्निक्ष विर्त्तिक्ष مُعَقَّرُوا النَّاقَةُ وَعَتَوْا عَنَ اَمْرِ رَبِّهِمُ الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى الْعِلَى الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَ করলো এবং তারা বললো, হে সালেহ (আমরা তো উষ্ট্রীটিকে মেরে ফেললাম), যদি তুমি (সত্যিই) রসুল হয়ে থাকো তাহলে সে (আযাবের) বিষয়টা নিয়ে এসো, যার ওয়াদা তুমি আমাদের দিচ্ছো।

৭৮. অতপর এক প্রলয়ংকরী ভূমিকম্প তাদের গ্রাস করে ফেললো. ফলে তারা নিজেদের ঘরেই মুখ থুবড়ে পড়ে থাকলো।

4>. তারপর সে তাদের काছ থেকে अनामित्क हरन مُرَدُ لَقُوْ إِ لَقَلُ ٱ الْمُغْتَكُمُ وَقَالَ يُقُوْ إِ لَقَلُ ٱ الْمُغْتَكُمُ وَمَا اللهِ عَنْهُمُ وَقَالَ يُقُوْ إِ لَقَلُ ٱ المُغْتَكُمُ وَمِي গেলো এবং সে নিজের জাতিকে বললো, আমি আমার رسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِي لا अमिलिकत (अठर्क) तानी তোমাদের कारह (शिरह لا كُمْ وَلَكِي أَل

৭ সুরা আল আ'রাফ

٤٣ وَ إِلَى ثَبُودَ أَغَاهُرْ مُلْحًا رِ قَالَ يُقَوَّمُ اعْبُلُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَّهِ غَيْرُهُ ﴿ قَلْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةً مِّنْ رَّبِّكُمْ ﴿ هٰنِ ﴿ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ أَيَةً فَنَارُوْهَا تَأْكُلُ فِي ٓ أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَهَسُّوْهَا بِسُوْءٍ فَيَاْ هُنَ كُيْرُ عَنَ ابُّ ٱلِيْرُ

٤٣ وَ اذْكُرُوا اذْ جَعَلَكُم مُ مُلَفّاءً من البعث عاد وَّبَوَّ أَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُوْلِهَ قُصُوْرًا وَّتَنْعِتُونَ الْعِبَالَ بُيُوْتًا ع فَاذْكُرُوْا الْاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِيثِي

40 قَالَ الْهَلَدُ النَّذِينَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمه للَّانِينَ اسْتُضْعَفُوا لِمَنْ امَنَ مِنْهَم أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صلِحًا مَّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهِ ، قَالُوْ ا إِنَّا بِهَا ٱرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُوْنَ

٢٦ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوْا إِنَّا بِالَّذِي أمنتتر به كفرون

وَقَالُوا يُصلِحُ اثْتِنَا بِهَا تَعِنُنَا إِنْ كُنْسَ مِنَ

44 فَاَخَنَ تُهُرُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَكُوْا فِيْ دَارِهِم

| ı | কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৮ ওয়ালাও আন্নানা |
|---|--|--|
| | দিয়েছিলাম এবং তোমাদের জন্যে কল্যাণও কামনা করেছিলাম, কিন্তু তোমরা তো কল্যাণকামীদের পছন্দই করো না। | تُحِبُّونَ النَّصِحِينَ |
| | ৮০. (আমি) লৃতকেও (পাঠিয়েছিলাম), যখন সে তার জাতিকে বলেছিলো, তোমরা এমন এক অশ্লীলতার কাজ করছো, যা তোমাদের আগে সৃষ্টিকুলের আর কেউ | أَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ آتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُرْ بِهَا مِنْ آحَلٍ مِّنَ الْعُلَوِيْنَ |
| | কেখনো) করেনি। ৮১. তোমরা যৌন তৃপ্তির জন্যে নারীদের বাদ দিয়ে পুরুষদের কাছে যাও, তোমরা বরং হচ্ছো বরং এক | ٨١ إِنَّكُيرُ لَتَاْتُونَ الرِّجَالَ هَهُوَةً مِّنَ دُوْنِ |
| | সীমালংঘনকারী জাতি। | النِّسَاءِ ، بَلْ أَنْتُر مَوْماً مُّسْرِفُونَ |
| | ৮২. তার জাতির (তখন) এ কথা বলা ছাড়া আর কোনো জবাবই ছিলো না যে, (সবাই মিলে) তাদের তোমাদের | مَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا اَنْ قَالُوْا اَهْرِجُوْمُرْ مِّنْ قَرْيَتِكُرْ عَ إِنَّامُرْ اَنَاسًا |
| | জনপদ থেকে বের করে দাও, (কেননা) এরা হচ্ছে কতিপয় পাক পবিত্র মানুষ! | يَّتَطَهُّرُونَ |
| | ৮৩. অতপর (যখন আমার আযাব এলো, তখন) আমি তাকে এবং তার পরিবার-পরিজনকে উদ্ধার করলাম, তার ব্রীকে ছাড়া– সে (আযাব কবলিত হয়ে) পেছনের লোকদের মধ্যে শামিল থেকে গেলো। | ٨٣ فَٱنْجَيْنُهُ وَٱهْلَهُ إِلَّا امْرَاتَهُ رَكَانَتْ مِنَ الْخَيْرِيْنَ وَاهْلَهُ إِلَّا امْرَاتَهُ رَكَانَتْ مِنَ |
| 7 | ৮৪. আমি তাদের ওপর প্রচন্ত (আযাবের) বৃষ্টি বর্ষণ করলাম; (হাঁ) অতপর তুমি (ভালো করে) চেয়ে দেখো, অপরাধী ব্যক্তিদের পরিণাম (সেদিন) কী ভয়াবহ হয়েছিলো। | عَاقِبَةُ الْهُجْرِمِيْنَ ع |
| | ৮৫. আর মাদইয়ানবাসীদের কাছে (আমি পাঠিয়েছিলাম) তাদেরই ভাই শোয়ায়বকে; সে তাদের বললো, হে আমার জাতি, তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার বন্দেগী করো, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোনো ইলাহ নেই; তোমাদের কাছে তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট নিদর্শন এসে গেছে, অতপর তোমরা (সে মোতাবেক) ঠিক ঠিক মতো পরিমাপ ও ওযন করো, মানুষদের (দেয়ার সময়) কখনো (কম দিয়ে তাদের) ক্ষতিগ্রস্ত করো না, আল্লাহ তায়ালার এ যমীনে (শান্তি ও) সংক্ষার স্থাপিত হওয়ার পর তাতে তোমরা (পুনরায়) বিপর্যয় সৃষ্টি করো না; তোমরা যদি (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনো তাহলে এটাই (হবে) তোমাদের জন্যে কল্যাণকর। | ٨٥ وَالِّى مَنْ يَنَ اَهَاهُمْ شُعَيْبًا ، قَالَ يَقْوَا اعْبُدُوا اللّهُ مَا لَكُمْ مِنْ اللهِ غَيْرُةً ، قَنْ جَاءَتُكُمْ بَيِّنَةً مِنْ رَبِّكُمْ فَاوْنُوا الْكَيْلَ جَاءَتُكُمْ بَيْنَا وَلَا يَبْتُكُمُ فَاوْنُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاءُهُمْ وَلَا يُتُفْسِرُوا فِي الْأَرْضِ بَعْنَ إِصْلَاحِهَا ، وَلَا تُتُمْرُ اللّهُمْ فَيْنَ إِصْلَاحِهَا ، فَلِكُمْ خَيْرُ لِلْكُمْ أَنِي كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ ؟ |
| | ৮৬. প্রতিটি রাস্তায় তোমরা এজন্যে বসে থেকো না যে, তোমরা লোকদের ধমক (দেবে ভীত সম্ভস্ত করবে) এবং যারা ঈমান এনেছে তাদের তোমরা আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে বিরত রাখবে, আর সব সময় (অহেতুক) বক্রতা (ও দোক্ষটি) খুজতে থাকবে; শ্বরণ করে দেখো, যখন তোমরা সংখ্যায় ছিলে নিতান্ত কম, অতপর আল্লাহ তোমাদের সংখ্যা বাড়িয়ে দিলেন এবং তোমরা (পুনরায়) চেয়ে দেখো, বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণাম কেমন হয়েছিলো। | ٨٦ وَلَا تَقْعُلُواْ بِكُلِّ صِرَاطِ تُوْعِلُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ مَنْ امْنَ بِهِ وَتَمُونَهَا عِوَجًا ع وَاذْكُرُواْ اِذْ كُنْتُرْ قَلِيلًا فَكَثَّرُكُرْ س وَانْظُرُواْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْهُفْسِيْنَ |
| | ৮৭. আমাকে যে বাণী দিয়ে পাঠানো হয়েছে তার ওপর কোনো একটি জনগোষ্ঠী যদি ঈমান আনে, আর একটি দল যদি তার ওপর আদৌ ঈমান না আনে, তারপরও তোমরা ধৈর্য ধারণ করো, যতোক্ষণ না আল্লাহ তায়ালা নিজেই আমাদের মাঝে একটা ফয়সালা করে দেন, তিনিই হচ্ছেন উত্তম ফয়সালাকারী। | ٨٠ وَإِنْ كَانَ طَآنِفَةٌ مِّنْكُر الْمَنُوا بِالَّذِي مَ الْرَبِي اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهُ ا |
| | ৭ সূরা আল আ'রাফ ১৫৭ | মন্যিল ২ |

www.eelm.weebly.com

৮৮. তার সম্প্রদায়ের কিছু নেতৃস্থানীয় লোক- যারা বড়াই অহংকার করছিলো- বললো, হে শোয়ায়ব, আমরা অবশ্যই তোমাকে এবং তোমার সাথে যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে আমাদের জনপদ থেকে বের করে দেবো. অথবা তোমাদের অবশ্যই আমাদের জাতিতে ফিরে আসতে হবে: সে বললো, যদি আমরা ইচ্ছক না হই তাহলেও (কি তাই হবে) গ

৮৯. সেখান থেকে আল্লাহ তায়ালা আমাদের (একবার) মুক্তি দেয়ার পর যদি আমরা আবার তোমাদের জীবনাদর্শে ফিরে আসি, তাহলে আমরা (এর মাধ্যমে) আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করবো: আমাদের পক্ষে এটা কখনো সম্ভব নয় যে, আমরা সেখানে ফিরে যাবো. হাঁ আমাদের মালিক যদি আমাদের ব্যাপারে অন্য কিছু চান (তাহলে সেটা ভিনু কথা): অবশ্যই আমাদের মালিকের জ্ঞান সব কিছুর ওপর ছেয়ে আছে: আমরা একান্তভাবে আল্লাহ তায়ালার ওপর নির্ভর করি: (এবং আমরা বলি,) হে আমাদের মালিক, আমাদের এবং আমাদের জাতির মাঝে তুমি (সঠিক একটা) ফয়সালা করে দাও, কারণ তুমিই হচ্ছো সর্বোত্তম ফয়সালাকারী।

৯০. তার জাতির নেতৃস্থানীয় লোক- যারা (আল্লাহ তায়ালার নবীকে) অস্বীকার করেছে, তারা (সে জাতির সাধারণ মানুষদের) বললো, তোমরা যদি শোয়ায়বের অনুসরণ করো তাহলে তোমরা খুব**ই ক্ষতিগ্রন্ত** হবে।

৯১. (নবীর কথা অমান্য করার কারণে) একটা প্রচন্ত ভূকস্পন এসে তাদের (এমনভাবে) আঘাত করলো যে. অতপর দেখতে দেখতে তারা সবাই তাদের নিজ নিজ ঘরেই মুখ থুবড়ে পড়ে থাকলো।

৯২. যারা শোয়ায়বকে অমান্য করলো, তারা এমন (-জার ধ্বংস) হয়ে গেলো (দেখে মনে হয়েছে), এখানে কোনোদিন কেউ বসবাসই করেনি. (বস্তুত) তারাই সেদিন ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে যারা শোয়ায়বকে অস্বীকার করেছে।

৯৩. এরপর সে (শোয়ায়ব) তাদের কাছ থেকে চলে গেলো, (যাবার সময়) সে বললো, হে আমার জাতি, আমি তোমাদের কাছে আমার মালিকের বাণীসমূহ পৌছে দিয়েছিলাম এবং আমি (আন্তরিকভাবেই) তোমাদের কল্যাণ কামনা করেছিলাম, আমি কেন এমন সব মানুষের জন্যে (আজ) আফসোস করবো যারা আল্লাহকেই অস্বীকার করে!

৯৪. আমি কোনো জনপদে কোনো নবী পাঠিয়েছি– অথচ সেই জনপদে মানুষদের অভাব ও কষ্ট দিয়ে পাকডাও করিনি, এমনটি কখনো হয়নি, আশা (করা গিয়েছিলো), এর ফলে তারা আল্লাহ তায়ালার কাছে বিনয়াবনত হবে ৷

৯৫. অতপর আমি তাদের দুঃখ-কষ্টের জায়গাকে সচ্ছল অবস্থার দ্বারা বদলে দিয়েছি, এমনকি যখন তারা (আমার নেয়ামত দারা) প্রাচ্র্য লাভ করলো, তখন তারা (আমাকেই ভূলে বসলো এবং) বললো, সচ্ছলতা ও ৭ সুরা আল আ'রাফ

٨٨ قَالَ الْهَلَدُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِ

لَنُخُوجَنَّكَ يُشُعَيْبُ وَالَّانِينَ أَمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِي مِلَّتِنَا وَقَالَ أَوَلَوْ كُنّا كُرِمِيْنَ ت

٨٩ قَلِ افْتَوَيْنَا عَلَى اللهِ كَنْبًا إِنْ عُلْنَا في ملَّتكُر بَعْنَ إذْ نَجُّنَا اللَّهُ منْهَا ، وَمَا يَكُوْنُ لَنَا ۚ أَنْ تَعُوْدَ فِيْهَا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءُ اللَّهُ رَبُّنَا ، وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ، عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا و رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ غَيْرُ الْفُتِحِيْنَ

٩٠ وَقَالَ الْمَلَدُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا انَّكُمْ إِذًا لَّحْسُونَ

٩١ فَأَخَلَ تُمُّرُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْا فِي دَارِهِرْ جثمين ع صل

٩٢ الَّن يْنَ كُنَّابُوْ ا شُعَيْبًا كَأَنْ لِّرْ يَغْنَوْ ا فَيْهَا خَ ٱلَّٰنِيْنَ كَنَّابُواْ شُعَيْبًا كَانُوْا هُرُ الْخُسِرِيْنَ

٩٣ فَتَوَلَّى عَنْهُرْ وَقَالَ يِٰقَوْ ۚ لَقَلْ ٱبْلَغْتُكُرْ رسْلْتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُيْرَ ۚ فَكَيْفَ أَسَٰى الأكراب على عَوْم كُفِرِيْنَ عِلَيْهِ الْمُعْرِيْنَ عِلَيْهِ الْمُعْرِيْنَ عِلَيْهِ الْمُعْرِيْنَ ع

96 وَمَا ۗ ٱرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن تَّبِي ۚ إِلَّا أَخَلْنَا ۖ أَهْلَهَا بِالْبَاْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يضرعون

94 ثُرِّ بَنَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَلْ مَسَّ أَبَّاءَنَا الضَّاءُ



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৯ ব্যালাল মালাউ |
|---|--|
| অসচ্ছলতা তো আমাদের পূর্বপুরুষদের ওপরও এসেছে, অতপর আমি তাদের এমন আকস্মিকভাবে পাকড়াও | وَ السَّرَّاءَ فَا هَنْ نَهُرْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُونَ |
| করলাম যে, তারা টেরও পেলো না। | |
| ৯৬. অথচ যদি সেই জনপদের মানুষভলো (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনতো ুএবং (আল্লাহ | ٩٦ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرِّى أُمُّنُواْ وَاتَّقَوْا |
| তায়ালাকে) ভয় করতো, তাহলে আমি তাদের ওপর আসমান-যমীনের যাবতীয় বরকতের দুয়ার খুলে দিতাম, | لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكُتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ |
| কিন্তু (তা না করে) তারা (আমার নবীকেই) মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, সুতরাং তাদের কর্মকান্ডের জন্যে আমি তাদের (ভীষণভাবে) পাকড়াও করলাম। | وَلٰكِنْ كَنَّ بُو ا فَا هَٰنَ نُهُر بِهَا كَانُو ا يَكْسِبُونَ |
| ৯৭. (এ) লোকালয়ের মানুষগুলো কি এতোই নির্ভয় হয়ে গেছে (তারা মনে করে নিয়েছে), আমার আযাবু (নিঝুম) | ٩٤ أَفَامِنَ أَهْلُ الْقُرْمِي أَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَأْسُنَا |
| রাতে তাদের কাছে আসবে না, যখন তারা (গভীর) ঘুমে (বিভোর হয়ে) থাকবে! | بَيَاتًا وَّهُرُ نَائِبُونَ ا |
| ৯৮. অথবা জনপদের মানুষগুলো কি নির্ভয় হয়ে ধরে | ٩٨ أَوَ أَمِنَ آهْلُ الْقُرِّى أَنْ يَّاْتِيَهُرْ بَاْسُنَا |
| নিয়েছে যে, আমার আযাব তাদের ওপর মধ্য দিনে এসে পড়বে না– যখন তারা খেল-তামাশায় মন্ত থাকবে। | شُعَى وَهُر يَلْعَبُونَ |
| ৯৯. কিংবা তারা কি আল্লাহ তায়ালার কলা-কৌশল থেকেও নির্ভয় হয়ে গেছে, অথচ আল্লাহ তায়ালার | ٩٩ أَفَامِنُوْا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ |
| কলা-কৌশল থেকে ক্ষতিগ্রস্ত জাতি ছাড়া অন্য কেউই নিশ্চিন্ত হতে পারে না। | إِلَّا الْقَوْا الْخُسِرُونَ ع |
| ১০০. (আগের) লোকদের চলে যাওয়ার পর (তাদের জায়গায়) যারা পুরে দুনিয়ার উত্তরাধিকারী হয়েছে, | ١٠٠ اَوَ لَمْ يَهْلِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْأَرْضَ مِنْ |
| তাদের কি এ বিষয়টি কখনো হেদায়াতের পথ দেখায় না যে, আমি ইচ্ছা করলে (যে কোনো সময়ই) তাদের | بَعْلِ آهْلِهَا آنَ لُّوْ نَشَاءُ آمَبْنُهُرْ بِنُ تُوْبِهِرْ ع |
| অপরাধের জন্যে তাদের পাকড়াও করতে পারি এবং (এমনভাবে) তাদের দিলের ওপর মোহর মেরে দিতে পারি যে, তারা (সত্যের ডাক) তনতেই পাবে না। | ونَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِهِم فَهُر كَا يَسْهَعُونَ |
| ১০১. এই যে জনপদসমূহ- যাদের কিছু কিছু কাহিনী আমি তোমাকে শোনাচ্ছি, তাদের কাছে আমার সুস্পষ্ট | ١٠١ تِلْكَ الْقُرِٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَثْبَائِهَا ع |
| প্রমাণ নিয়ে রসূলরা এসেছিলো, কিন্তু তারা যে বিষয়টি | وَلَقَنْ جَاءَتُهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنْتِ مِ فَهَا كَانُوْا |
| এর আগে অস্বীকার করেছিলো, তার ওপর ঈমান আনলো না; আর এভাবেই আল্লাহ তায়ালা অবিশ্বাসী কাফেরদের | لِيُؤْمِنُوْا بِهَا كَنَّابُوْا مِنْ قَبْلُ وَكَنْ لِكَ يَطْبَعُ |
| অন্তরে মোহর মেরে দেন। | اللهُ عَلَى قُلُوبِ الْكُغِرِيْنَ |
| ১০২. আমি এদের বেশী সংখ্যক মানুষকেই (আমার সাথে সম্পাদিত) প্রতিশ্রুতির পালনকারী হিসেবে পাইনি, বরং | ١٠٢ وَمَا وَجَلْنَا لِإِكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْلِ٠ع وَإِنْ |
| এদের অধিকাংশকেই আমি (বড়ো বড়ো অপরাধে) অপরাধী পেয়েছি। | وَّجَنْنَا ۚ إَكْثَرَهُمْ لَغُسِقِيْنَ |
| ১০৩. এদের (ধ্বংসের) পর আমি মৃসাকে আমার সুস্পষ্ট নিদুর্শনসমূহ্ দিয়ে ফেরাউন ও তার পারিষদবর্গের কাছে | ١٠٣ ثُرُّ بَعَثْنَا مِنْ الْمَعْرِهِ مُّوْسَى بِالْيَتِنَا |
| পাঠিয়েছি, কিন্তু তারাও (আমার) নিদর্শনসমূহের সাথে বাড়াবাড়ি করেছে,ু (আজ) তুমি দেখে নাও, (আমার | الِي فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۽ فَانْظُرُ |
| যমীনে) বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণাম কেমন ছিলো। | كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةٌ الْمُفْسِينِيَ |
| ১০৪. মৃসা বললো, হে ফেরাউন, আমি অবশ্যই সৃষ্টিকুলের মালিকের পক্ষ থেকে পাঠানো একজন রসূল। | ا ١٠٣ وَقَالَ مُوْسَى يُفِرْعَوْنُ إِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ |
| ". | رَّبِّ الْعُلَمِيْنَ لا |

মন্যিল ২

৭ সূরা আল আ'রাফ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৯ ক্বালাল মালাউ |
|--|--|
| ১০৫. এটা নিচিত, আমি আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে সত্য | ١٠٥ مَقِيْقٌ عَلَى أَنْ لا ۖ ٱقُوْلَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا |
| ছাড়া অন্য কিছু বলবো না, আমি অবশ্যই তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছি, | الْحَقَّ ، قَنْ جِئْتُكُرْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُرْ فَأَرْسِلْ |
| অতএব তুমি বনী ইসরাঈলদের (মুক্তি দিয়ে) আমার | مَعِيَ بَنِي ٓ إِسْرَاقِيلَ ا |
| সাথে যেতে দাও! | |
| ১০৬. ফেরাউন বললো, তুমি যদি (সত্যিই তেমন) কোনো নিদর্শন এনে থাকো এবং তুমি যদি (তোমার | ١٠٦ قَالَ إِنْ كُنْتَ جِنْتَ بِأَيَّةٍ فَأْتِ بِهَا ۖ إِنْ |
| দাবীতে) সত্যবাদী হও, তাহ লে তা (সামনে) নিয়ে এসো! | كُنْتَ مِنَ الصَّاوِيْنَ |
| ১০৭. অতপর সে তার হাতের লাঠিটি মাটিতে নিক্ষেপ করলো, সাথে সাথেই তা প্রকাশ্য একটি অঞ্জগরে পরিণত হয়ে গেলো। | ١٠٠ فَٱلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنَ عَلِيهِ |
| ১০৮. অতপর সে (বগল থেকে) তার হাত বের করলো, সাথে সাথে তা (উৎসাহী) দর্শকদের জন্যে চমকাতে লাগলো। | ١٠٨ وَّنَزَعَ يَنَ ۗ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظِرِيْنَ ع |
| ১০৯. (অবস্থা দেখে) ফেরাউনের জাতির প্রধান ব্যক্তিরা বললো, এ তো (দেখছি আসলেই) একজন সুদক্ষ | ١٠٩ قَالَ الْهَلَدُ مِنْ قَوْرًا فِرْعَوْنَ إِنَّ هٰٰذَا |
| यानुकतः! | لَسْحِرٌ عَلِيْرٌ ٧ |
| ১১০. (আসলে) এ ব্যক্তি তোমাদের স্বাইকে তোমাদের | ١١٠ يُوِيْلُ أَنْ يُحْوِجِكُرْ مِّنْ أَرْضِكُمْ ، فَهَاذَا |
| (নিজেদের) দেশ থেকেই বের করে দিতে চায়, (এ পরিস্থিতিতে) তোমরা (আমাকে) কি পরামর্শ দি ছো ? | تَأْمُرُوْنَ وَنَ |
| ১১১. (অতপর) তারা ফেরাউনকে বললো, আপাতত তাকে এবং তার ভাইকে কিছু দিনের জ্বন্যে এমনিই | ااا قَالُوْ آ اَرْجِهُ وَ آخَاهُ وَ اَرْسِلْ فِي الْهَلَ آئِنِ |
| থাকতে দাও এবং (এ সুযোগে) তোমরা শহরে-বন্দরে (সরকারী) সংগ্রাহক পাঠিয়ে দাও। | حشرِين لا |
| ১১২. যেন তারা দেশের সকল দক্ষ যাদুকরদের (অবিলয়ে) তোমার কাছে নিয়ে আসে। | ١١٢ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سُحِرٍ عَلِيْرٍ |
| ১১৩. (সিদ্ধান্ত মোতাবেক) যাদুকররা যখন ফেরাউনের কাছে এলো, তখন তারা বললো, আমরা যদি (আজ | ١١٣ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْ آ إِنَّ لَنَا |
| মুসার মোকাবেশায়) বিজয়ী হই, তবে আমাদের জন্যে নিচিত পুরস্কারের ব্যবস্থা থাকবে তো! | لاَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَلِبِيْنَ |
| ১১৪. সে বললো, হাঁ (তা তো অবশ্যই) এবং তোমরাই হবে (দরবারের) ঘনিষ্ঠতম ব্যক্তিদের অন্যতম। | ١١٢ قَالَ نَعَرُ وَإِنَّكُمْ لَهِنَ الْهُقَرَّ بِيْنَ |
| ১১৫. (এবার) যাদুকররা বললো, হে মৃসা, (যাদুর বাণ) | ١١٥ قَالُوْا لِيُوْسَى إِلَّا أَنْ تُلْقِي وَإِلَّا أَنْ |
| তুমি আগে নিক্ষেপ করবে না আমরা আগে তা নিক্ষেপ করবো। | نَّكُوْنَ نَحُنُ الْهُلْقِيْنَ |
| ১১৬. সে বললো, তোমরাই (বরং) আগে নিক্ষেপ করো, অতপর তারা (তাদের বাণ) নিক্ষেপ করে মানুষদের | ا ١١٦ قَالَ ٱلْقُوْاءِ فَلَمَّ ٱلْقَوْاسَعَرُوْ آَ أَعْيُنَ |
| দৃষ্টিশক্তির ওপর যাদু করে ফেললো, (এতে করে) তারা মানুষদের ভীত-আতংকিত করে তুললো, তারা (সেদিন সত্য সত্যই) বড়ো যাদুমন্ত্র নিয়ে হাযির হয়েছিলো। | النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُرْ وَجَاءُوْا بِسِحْوٍ عَظِيْرٍ |
| ১১৭. অতপর আমি মৃসার কাছে ওহী পাঠালাম এবং তাকে বললাম, এবার তুমি (যমীনে) তোমার লাঠিটি | ١١٤ وَأَوْمَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَلْق عَصَاكَ ع |
| নিক্ষেপ করো, (নিশ্বিধ হবার সাথে সাথেই) তা যাদুকরদের অলীক বানোয়াটগুলোকে গ্রাস করে ফেললো। | فَإِذَا هِي تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ع |
| ৭ সূরা আর্ল আ'রাফ ১৬০ | মন্যিল ২ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ ১১৮. অতপর সত্য প্রতিষ্ঠিত হয়ে গেলো, আর তারা যা | পারা ৯ কালাল মালাউ । পারা ৯ কালাল মালাউ । পারা ৯ কালাল মালাউ । পারা ৯ কালাল মালাউ |
|---|--|
| কিছু বানিয়ে এনেছিলো তা মিথ্যা প্রতিপন্ন হলো। | |
| ১১৯. সেখানে তারা সবাই পরাভূত হলো এবং তারা লাঞ্ছিত হয়ে (ফিরে) গেলো। | ١١٩ مَغُلِبُوا مُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا مُغِرِيْنَ ٤ |
| ১২০. অতপর (সত্যের সামনে) যাদুকরদের অবনত করে দেয়া হলো। | ١٢٠ وَ ٱلْقِيَ السَّعَرَةُ سُجِرِيْنَ عَلَي |
| ১২১. তারা (সবাই সমস্বরে) বলে উঠলো, আমরা সৃষ্টিকুলের মালিকের ওপর ঈমান আনলাম, | ١٢١ قَالُوْ ۗ أُمَنَّا بِرَبِّ الْعُلَمِيْنَ لا |
| ১২২. (যিনি) মূসা ও হারূনের মালিক। | ١٣٢ رَبِّ مُوسَى وَهُرُونَ |
| ১২৩. (ঘটনার এই আকস্মিক মোড় পরিবর্তন দেখে) ফেরাউন বললো, (একি!) আমি তোমাদের কোনো রুকম | ١٢٣ قَالَ فِرْعَوْنُ أَمَنْتُر بِهِ قَبْلَ أَنْ أَذَنَ |
| অনুমতি দেয়ার আগেই তোমরা তার ওপর ঈমান আনলে! (আসলে আমি বৃঝতে পারলাম,) এ ছিলো তোমাদের সবার নিচিত | لَكُرْ ﴾ إِنَّ هٰذَا لَهَكُرٌّ مَّكُرْتُهُوْهُ فِي الْهَرِيْنَةِ |
| একটা ষড়যন্ত্র! (এ) নগরে (বসেই) তোমরা তা পাকিয়েছো, যাতে করে তার অধিবাসীদের তোমরা সেখান থেকে বের করে দিতে পারো, অচিরেই তোমরা (এ বিদ্রোহের পরিণাম) জানতে পারবে। | لِتُخْرِجُوْا مِنْهَا ۗ أَهْلَهَا ۚ فَسَوْنَ تَعْلَمُوْنَ |
| ১২৪. আমি অবশ্যই তোমাদের একদিকের হাত ও অন্যদিকের পাগুলো কেটে ফেলবো, এরপর আমি | ١٢٣ لَا تَطِّعَنَّ آيْدِيكُمْ وَأَرْجُلُكُمْ مِّنْ خِلَافِ |
| তোমাদের সবাইকে শৃঙ্গে চড়াবো। | ثُرَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ ٱجْهَعِيْنَ |
| ১২৫. তারা বললো, আমরা তো (একদিন) আমাদের মালিকের কাছে ফিরে যাবোই (তাই আমরা তোমার শান্তির পরোয়া করি না)। | ١٢٥ قَالُوْ ٓ إِنَّاۤ إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ ۚ |
| ১২৬. তৃমি আমাদের কাছ থেকে এ কারণেই (এই) প্রতিশোধ নিচ্ছো যে, আমাদের মালিকের নিদর্শনসমূহ, য | ١٢٦ وَمَا تَنْقِرُ مِنَّا إِلَّا أَنْ أُمِّنًا بِأَيْسِ رَبِّنَا |
| তাঁর কাছ থেকে আমাদের কাছে এসে পৌছেছে, আমরা তার ওপর ঈমান এনেছি; (আমরা আল্লাহ তায়ালার কাছে | لَمًّا جَاءَتْنَا ، رَبُّنَا ۖ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا |
| প্রার্থনা করি,) হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের ধৈর্য ধারণ করার ক্ষমতা দাও এবং (তোমার) অনুগত বান্দা হিসেবে তুমি আমাদের মৃত্যু দিয়ো। | مُسْلِوِيْنَ ع |
| ১২৭. ফেরাউনের জাতির সরদাররা তাকে বললো, তুমি কি মূসা ও তার দলবলকে এ যমীনে বিপর্যর সৃষ্টি করার | ١٢٤ وَقَالَ الْمَلَدُ مِنْ قَوْمٍ فِرْعَوْنَ أَتَلَارُ |
| জন্যে এমনিই ছেড়ে দিয়ে রাখবে এবং তারা তৌমাকে ও তোমার দেবতাদের (এভাবে) বর্জন করেই চলবেং সে | مُوسى وَقُوْمُهُ لِيَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ |
| বললো (না, তা কখনো হবে না), আমি (অচিরেই) তাদের ছেলেদের হত্যা করে ফেলবো এবং তাদের | وَيَنَارَكَ وَالْمِتَكَ ، قَالَ سَنْقَتِّلُ ٱبْنَاءُهُرْ |
| মেয়েদের আমি জীবিত রাখবো, (নিসন্দেহে) আমি তাদের ওপর বিপুল ক্ষমতায় ক্ষমতাবান। | وَنَسْتَعْى نِسَاءَهُر وَإِنَّا فَوْقَهُر قَوْنُ |
| ১২৮. মৃসা এবার ভার জাতিকে বললো, (ভোমরা) আল্লাহর কাছেই সাহায্য চাও এবং ধৈর্য ধারণ করো (মনে | ١٢٨ قَالَ مُوسى لِقَوْمِدِ اسْتَعِيْنُوا بِاللَّهِ |
| রেখো), অবশ্যই এ যমীন (হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালার, তিনি | وَاصْبِرُواْ ٤ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ لِنَّ يُوْرِثُهَا مَنْ |
| নিজ বান্দাদের মাঝে যাকে চান তাকেই এ যমীনের ক্ষমতা দান করেন; চূড়ান্ত সাফল্য তাদের জন্যেই– যারা | يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِةٍ ﴿ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ |
| আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে। | |
| ৭ সূরা আল আ'রাফ | মন্যিশ ২ |

১২৯. তারা (মূসাকে) বললো, তুমি আমাদের কাছে (নবী হয়ে) আসার আগেও আমরা নির্যাতিত হয়েছি, আর (এখন) তুমি আমাদের কাছে আসার পরও আমরা একইভাবে নির্যাতিত হচ্ছি: (এর কি কোনো শেষ হবে নাঃ) মূসা বললো (হাঁ, হবে), খুব তাড়াতাড়িই সম্ভবত তোমাদের মালিক তোমাদের শক্রকে ধ্বংস করে দেবেন এবং (এ) দুনিয়ায় তিনি তোমাদের তার স্থলাভিষিক্ত করবেন, অতপর আল্লাহ তায়ালা দেখবেন তোমরা কিভাবে (তার) কাজ করো!

١٢٩ قَالُوا أُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْلِ مَا جِئْتَنَا ء قَالَ عَسَٰى رَبُّكُمْ أَنْ يَّهْلكَ عَنُّوَّكُرْ وَيَسْتَخْلفَكُرْ في الْأَرْض فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ع

১৩০. ক্রমাগত বেশ কয়েক বছর ধরে আমি ফেরাউনের লোকজনদের দর্ভিক্ষ ও ফসলের স্বল্পতা দিয়ে আক্রান্ত করে রেখেছিলাম, (ভাবছিলাম) সম্ভবত তারা (কিছুটা হলেও) বুঝতে পারবে।

١٣٠ وَلَقَلُ أَخَلُنَا ۚ أَلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقُصٍ مِّنَ الثَّمْرِ فِ لَعَلَّهُمْ يَنَّكُّونَ

১৩১. যখন তাদের ওপর ভালো সময় আসতো তখন তারা বলতো, এ তো ছিলো আমাদের নিজেদেরই (পাওনা), আবার যখন দুঃসময় তাদের পেয়ে বসতো, তখন নিজেদের দুর্ভাগ্যের ভার তারা মূসা এবং তার সংগী-সাথীদের ওপরই আরোপ করতো; হাঁ, তাদের দুর্ভাগ্যের যাবতীয় বিষয় তো আল্লাহ তায়ালার হাতেই রয়েছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই (এ সম্পর্কে) অবহিত নয় 🕫

اسًا فَاذَا جَاءَتُهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْ الَّنَا مَٰنِهِ ع وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّنَةٌ يُطَّيَّرُوا بِمُوسَى وَمَنْ مَّعَهُ ﴿ أَلَا إِنَّهَا طُئِرُهُمْ عِنْكَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثُوَهُمْ لَا يَعْلَبُوْنَ

১৩২. তারা (মৃসাকে আরো) বললো, আমাদের ওপর যাদুর প্রভাব বিস্তার করার জন্যে তুমি যতো নিদর্শনই নিয়ে আসো না কেন, আমরা কখনো তোমার ওপর ঈমান আনবো না ৷

١٣٢ وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ أَيَةٍ لِّتَسْحَوَنَا بِهَا لا فَهَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ

১৩৩. (এ ধৃষ্টতার জন্যে) অতপর আমি তাদের ওপর ঝড়-তুফান (দিলাম), পংগপাল (পাঠালাম), উকুন (ছড়ালাম), ব্যাঙ (ছেড়ে দিলাম) ও রক্ত (-পাতজনিত বিপর্যয়) নাযিল করলাম, এর সবকয়টিই (তাদের কাছে এসেছিলো আমার এক একটা) সুস্পষ্ট নিদর্শন (হিসেবে. কিন্তু এ সত্তেও) তারা অহংকার বড়াই করতেই থাকলো. আসলেই তারা ছিলো একটি অপরাধী জাতি।

١٣٣ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّٰلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّآ أَيْتِ مَّفَصَّلْتِ قَ فَاشْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا تَوْمًا مُّجُرمِيْنَ

১৩৪. যখনি তাদের ওপর কোনো বিপর্যয় আসতো, তখন তারা বলতো হে মুসা! তোমার প্রতি প্রদত্ত তোমার মালিকের প্রতিশ্রুতিমতো তুমি আমাদের জন্যে তোমার মালিকের কাছে দোয়া করো, যদি (এবারের মতো) আমাদের ওপর থেকে এ বিপদ দূর করে দাও, তাহলে অবশ্যই আমরা তোমার ওপর ঈমান আনবো এবং বনী ইসরাঈলদেরও তোমার সাথে যেতে দেবো।

١٣٣ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِرُ الرَّجْزُ قَالُوْ الْمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِهَا عَهِنَ عِنْنَكَ جَ لَئِي كَفَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِشْرَائِيلَ ع

১৩৫. অতপর যখনি তাদের ওপর থেকে একটি নির্দিষ্ট مُرُ الرِّجْزُ الِّي اَجَلٍ هُمْ الْجِهْزُ الْحِبْزُ الْحِبْزُ الْحِبْزُ الْحِبْرُ الْحِبْزُ الْحِبْزُ الْحِبْرُ الْحِبْزُ الْحِبْزُ الْحِبْرُ الْحَبْرُ الْحِبْرُ الْحَبْرُ الْحِبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحِبْرُ الْحِبْرُ الْحِبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ الْحِبْرُ الْحَبْرُ لِلْمُ لِلْمِلْمُ الْحَبْرُ الْحَبْرُ لِلْمُعْرِ الْحَبْ সে বালা-মসিবত আমি অপসারণ করে নিতাম, তখন সাথে সাথেই তারা ওয়াদা ভংগ করে ফেলতো।

بِلِغُوْهُ إِذَا مُرْ يَنْكُثُونَ

১৩৬. অতপর আমি তাদের কাছ থেকে প্রতিশোধ নিলাম, তাদের আমি সাগরে ডুবিয়ে দিলাম, কেননা, তারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো এবং (আমার) এ (শান্তি) থেকে তারা উদাসীন হয়ে গিয়েছিলো।

١٣٦ فَانْتَقَهْنَا مِنْهُرْ فَأَغْرَقْنْهُرْ فِي الْيَرِّ بِٱلَّهُمْ كُنَّابُوا بِأَيْتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غُفِلِينَ

১৩৭. এবার আমি (সত্যি সত্যিই) তাদের ক্ষমতার আসনে বসিয়ে দিলাম, যাদের (এতোদিন) দুর্বল করে

١٣٤ وَ أَوْرَثُنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ

৭ সুরা আল আ'রাফ

রাখা হয়েছিলো, (তাদের আমি) এ রাজ্যের পূর্ব-পশ্চিম (-সহ সব কয়টি) প্রান্তের অধিকারী বানিয়ে দিলাম, যাতে আমি আমার প্রভূত কল্যাণ ছড়িয়ে দিয়েছি, (এভাবেই) বনী ইসরাঈলের ওপর প্রদন্ত তোমার মালিকের (প্রতিশ্রুতির) সেই কল্যাণবাণী সত্যে পরিণত হলো, কেননা তারা ধৈর্য ধারণ করেছিলো; ফেরাউন ও তার জাতির যাবতীয় শিল্পকর্ম ও উঁচু প্রাসাদ–যা তারা নির্মাণ করেছিলো, আমি সব কিছুই ধ্বংস করে দিলাম।

مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي ْبِرَكْنَا فِيْهَا ، وَتَمَّسَ ْبِرَكْنَا فِيْهَا ، وَتَمَّسَنَى عَلَى بَنِيَ ﴿ الْحَسْنَى عَلَى بَنِي ﴿ الْمَرَافِيلَ لَا بِهَا مَبَرُوا ، وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمَةً وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ

১৩৮. (ফেরাউনকে ডুবিয়ে মারার পর) আমি বনী ইসরাঈলদের সমুদ্র পার করিয়ে দিয়েছি, অতপর (সমুদ্রের ওপারে) তারা এমন একটি জাতির কাছে এসে পৌছলো, যারা (সব সময়) তাদের মূর্তিদের ওপর পূজার অর্ঘ দেয়ার জন্যে বসে থাকতো, (এদের দেখে বনী ইসরাঈলের) লোকেরা বললো, হে মুসা, তুমি আমাদের জন্যেও (এ ধরনের) একটি দেবতা বানিয়ে দাও, যেমন দেবতা রয়েছে এদের; (এ কথা ভনে) সে তাদের বললো, তোমরা হচ্ছো আসলেই এক মূর্খ জাতি।

١٣٨ وَجُوزْنَا بِبَنِى آ اِسْرَ الْبِيْلَ الْبَحْرَ فَاتَوْا عَلَى قَوْمٍ لِيَّعْرُ فَاتَوْا عَلَى قَوْمٍ لِيَّعْرُ فَوْنَامٍ لِمُّرْ الْمَدْ قَالُوا يُجُوسَى اجْعَلْ لَّنَا إِلْمًا كَمَا لَمُرْ الْلِمَةً ، قَالَ إِلْمُوسَى اجْعَلْ لَنَا إِلْمًا كَمَا لَمُرْ الْلِمَةً ، قَالَ إِلَّكُرْ قَوْمٌ تَجْمَلُونَ

১৩৯. এ লোকেরা যেসব কাজে লিপ্ত রয়েছে, তা (একদিন) ধ্বংস করে দেয়া হবে এবং এরা যা করছে তাও সম্পূর্ণ বাতিল (বলে গণ্য) হবে। ١٣٩ إِنَّ مَّوُّ لَاءِ مُتَبَّرٌ مًّا هُمَ فِيْهِ وَبَطِلٌ مَّا كُانُوا يَعْمَلُونَ كَانُوا يَعْمَلُونَ

১৪০. মৃসা (আরো) বললো, আমি কি তোমাদের জন্যে আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে অন্য একজন মাবুদ তালাশ করতে যাবো– অথচ এই আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের দুনিয়ার সব কিছুর ওপর শ্রেষ্ঠত্ব প্রদান করেছেন।

١٣٠ قَالَ اَغَيْرَ اللهِ اَبْغِيْكُرْ اِلْهًا وَّمُوَ فَضَّلَكُرْ عَلَى الْعُلَمِيْنَ

১৪১. (তা ছাড়া তোমাদের সে সময়ের কথা স্বরণ করা উচিত,) যখন আমি তোমাদের ফেরাউনের লোকজনদের কাছ থেকে মুক্ত করেছিলাম, তারা তোমাদের মর্মান্তিক শান্তি দিতো, তারা তোমাদের পুত্র-সন্তানদের হত্যা করতো, আর তোমাদের মেয়েদের তারা জীবিত ছেড়েদিতো; এতে তোমাদের জন্যে তোমাদের পরোয়ারদেগারের পক্ষ থেকে এক মহা পরীক্ষা নিহিত ছিলো।

آآ وَإِذْ اَنْجَيْنُكُمْ مِّنَ اللهِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُونَكُمْ سُوَءَ الْعَلَابِ عَيُقَتِّلُوْنَ اَبْنَاءَكُمْ وَيَشْتَحْيُوْنَ نِسَاءَكُمْ ، وَفِيْ ذَٰلِكُمْ بَلَاَّةً مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيْرً ع

১৪২. মৃসাকে (আমার কাছে ডাকার জন্যে) আমি তিরিশটি রাত নির্ধারণ করে দিয়েছিলাম, (পরে) তাতে আরো দশ মিলিয়ে তা পূর্ণ করেছি, এভাবেই তার জন্যে তার মালিকের নির্ধারিত সময় চল্লিশ রাতের মেয়াদ পূর্ণ হয়েছে, (যাত্রার প্রাক্তালে) মৃসা তার ডাই হারুনকে বললো, (আমার অবর্তমানে) আমার লোকদের মাঝে তুমি আমার প্রতিনিধিত্ব করবে, তাদের (প্রয়োজনীয়) সংশোধন করবে, কখনো বিশৃংখলা সৃষ্টিকারীদের কথামতো চলবে না।

۱۳۲ وَوْعَلَانَا مُوسَٰى ثَلْثِيْنَ لَيْلَةً وَّأَتْمَهَٰهَا
يِعَشْوِ فَتَرَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖ آرْبَعِيْنَ لَيْلَةً وَقَالَ
مُوسَٰى لِاَهْمِيْهِ مُرُونَ اعْلَقْنِیْ فِیْ قَوْمِیْ
وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِیْلَ الْهُفْسِرِیْنَ

১৪৩. যখন মৃসা আমার সাক্ষাতের জন্যে (নির্ধারিত স্থানে) এসে পৌছলো এবং তার মালিক তার সাথে কথা বললেন, তখন সে বললো, হে আমার মালিক, আমাকে (তোমার কুদরত) দেখাও, আমি তোমার দিকে তাকাই; তিনি বললেন (না), তুমি কখনো আমাকে দেখতে পাবেনা, তুমি বরং (অনতিদ্রের) পাহাড়টির দিকে তাকিয়ে দেখো, যদি (আমার নূর দেখার পর) পাহাড়টি স্বস্থানে স্থির হয়ে দাঁড়িয়ে থাকতে পারে, তাহলে তুমি অবশ্যই

৭ সূরা আল আ'রাফ

(সেখানে) আমায় দেখতে পাবে, অতপর যখন তার মালিক পাহাড়ের ওপর (স্বীয়) জ্যোতি নিক্ষেপ করলেন, তখন তা পাহাড়কে চ্র্ব-বিচ্র্ব করে দিলো, (সাথে সাথেই) মূসা বেহুশ হয়ে গেলো, পরে যখন সে সংজ্ঞা ফিরে পেলো তখন সে বললো, মহাপবিত্রতা তোমার (হে আল্লাহ), আমি তোমার কাছে তাওবা করছি, আর তোমার ওপর ঈমান আনয়নকারীদের মধ্যে আমিই (হতে চাই) প্রথম।

لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكَّا وَّخَرَّ مُوْسَٰى صَعِقًا جَ فَلَهَّ أَوَّلُ الْخَاقَ قَالَ الْمُؤْمِنِيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

১৪৪. আল্লাহ তায়ালা বললেন, হে মূসা, আমি মানুষের মাঝ থেকে তোমাকে আমার নবুওত ও আমার সাথে বাক্যালাপের মর্যাদা দিয়ে বাছাই করে নিয়েছি, অতএব আমি তোমাকে (হেদায়াতের) যা কিছু (বাণী) দিয়েছি তা (নিষ্ঠার সাথে) গ্রহণ করো এবং (এ জন্যে তুমি আমার) কৃতজ্ঞতা আদায় করো।

۱۳۳ قَالَ يُمُوْسَى إِنِّى اسْطَفَيْتُكَ عَلَى الْسَاسِ بِرِسْلَتِى وَبِكَلَامِى اللَّهِ فَخُلْ مَا النَّاسِ بِرِسْلَتِى وَبِكَلَامِى اللَّهِ فَخُلْ مَا التَّيْتُكَ وَكُنَّ مِنَ الشَّكِرِيْنَ

১৪৫. এই ফলকের মধ্যে আমি তার জন্যে সর্ববিষয়ের উপদেশমালা ও সব কিছুর বিস্তারিত বিবরণ লিখে দিলাম, অতএব একে (শক্ত করে) আঁকড়ে ধরো এবং তোমার জাতির লোকদের বলো, তারা যেন এর উৎকৃষ্ট অংশ গ্রহণ করে; অচিরেই আমি তোমাদের (সেসব ধ্বংসপ্রাপ্ত) পাপীদের আন্তানা দেখাবো।

١٣٥ وكَتَبْنَا لَهُ فِي الْالْوَاحِ مِنْ كُلِّ هَيْء مُّوْعِظَةٌ وَّتَفْصِيلًا لِّكُلِّ هَيْء ج فَخُنْهَا بِقُوَّة وَّامُرْ قَوْمَكَ يَاْخُنُوا بِالْمُسْنِهَا لَا سَأُورِيْكُرُ وَأَمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُنُوا بِالْمُسْنِهَا لَا سَأُورِيْكُرُ دَارَ الْفُسقِيْنَ

১৪৬. অচিরেই আমি সেসব মানুষের দৃষ্টি আমার (এসব)
নিদর্শন থেকে (ভিন্ন দিকে) ফিরিয়ে দেবো, যারা
পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে বাহাদুরী করে বেড়ায়; (আসলে)
এ লোকেরা যদি (অতীত ধ্বংসাবশেষের) সব কয়টি
চিহ্নও দেখতে পায়, তবু তারা তার ওপর ঈমান আনবে
না, যদি তারা সঠিক পথ দেখতেও পায়, তবু তারা
(পথকে) পথ বলে গ্রহণ করবে না, যদি এর কোথাও
কোনো বাঁকা পথ তারা দেখতে পায়, তাহলে তাকেই
(অনুসরণযোগ্য) পথ হিসেবে গ্রহণ করবে; এটা এ
কারণে যে, তারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা সাব্যন্ত
করেছে, এবং তারা এ (আ্যাব) থেকেও উদাসীন ছিলো।

٢٦١ سَاَصْرِفُ عَنْ أَيْتِى الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْآرِنْ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْآرِنْ بِغَيْرِ الْحَقِّ ، وَإِنْ يَّرُوْا كُلَّ أَيْدَ لَا يُوْمِنُوْا بِهَا عَ وَإِنْ يَرُوْا سَبِيْلَ الرَّهُ لِا يُوْمِنُوْا بِهَا عَ وَإِنْ يَرُوْا سَبِيْلَ الرَّهُ لِا يَتَخْلُونَا سَبِيْلًا عَوْانَ يُرَوْا سَبِيْلًا اللّهَ فِي يَتَخْفُونَا سَبِيْلًا ، ذَلِكَ بِاللّهُ مِنْ كَنَّابُوْا الْفَيِّ يَتَخْفُونَا سَبِيْلًا ، ذَلِكَ بِاللّهُ مِنْ كَنَّابُوْا بِأَيْتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غَفِلِيْنَ

১৪৭. যারা আমার আয়াতসমূহ ও পরকালে আমার সামনা সামনি হওয়ার বিষয়কে অস্বীকার করবে, তাদের সব কার্যকলাপই বিনষ্ট হয়ে যাবে; আর তারা (এ দুনিয়ায়) যা কিছু করবে তাদের তেমনিই প্রতিফল দেয়া হবে।

١٣٤ وَ الَّذِيْنَ كَنَّ بُوا بِأَيْتِنَا وَلِقَاءِ الْأَخِرَةِ مَبِطَسُ أَعْمَالُهُرْ ﴿ فَلْ يُجْزَوْنَ أَلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ع

১৪৮. মৃসার জাতির লোকেরা তার (ত্র পর্বতে গমনের) পর নিজেদের অলংকার দিয়ে একটি গো-বাছুর বানিয়ে নিলো, (তা ছিলো জীবনবিহীন) একটি দেহমাত্র— যার আওয়ায ছিলো ওধু (গরুর) হাম্বা রব; এ লোকেরা কি দেখতে পায় না যে, সে (দেহ)-টি তাদের সাথে কোনো কথা বলে না, না সেটি তাদের কোনো পথের দিশা দেয়, কিন্তু এ সত্ত্বেও তারা সেটিকে (মাবুদ বলে) গ্রহণ করলো, তারা ছিলো (আসলেই) যালেম।

١٣٨ وَاتَّخَانَ قَوْاً مُوسٰى مِنْ بَعْوِهِ مِنْ مَوْدِهِ مِنْ مَلِيهِ مِنْ مَلِيهِ مِنْ مَلِيهِ مِنْ مَلِيهِمْرُ عَجْلًا جَسَلًا لَّهُ مُوارَّ مَ المَرْ يَرَوْا اللهَ لَا يُكلِّمُهُرْ وَلَا يَهْدِيْهِرْ سَبِيْلًا مِ النَّخَلُوْةُ وَكَانُوا ظلِيْنَ

১৪৯. অতপর যখন তারা অনুতপ্ত হলো এবং (নিজেরা) এটা দেখতে পেলো যে, তারা গোমরাহ হয়ে গেছে, তখন তারা বললো, আমাদের মালিক যদি আমাদের ওপর দয়া না করেন এবং (গো-বাছুরকে মাবুদ বানানোর জন্যে) যদি তিনি আমাদের ক্ষমা না করেন, তাহলে আমরা নিশ্চিত ধ্বংস হয়ে যাবো।

١٣٩ وَلَهًا سُقِطَ فِي آَيْدِيْمِيرُ وَرَاوُ اللَّمُرُ قَنْ ضَلَّوا لا قَالُوا لَئِنْ لَيْرُ يَرْمَهُنَا رَبَّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَى مِنَ الْخُسِرِيْنَ

৭ সূরা আল আ'রাফ

198

১৫০. (কিছ দিন পর) মসা যখন ক্রেদ্ধ ও ক্ষব্ধ হয়ে নিজের লোকজনের কাছে ফিরে এলো, তখন সে (এসব কথা তনে) বললো, আমার (তুর পর্বতে যাওয়ার) পর তোমরা কি জঘন্য কাজই না করেছো! ডোমরা কি তোমাদের মালিকের কাছ থেকে (কোনো পরিষ্কার) আদেশ আসার আগেই (তোমরা আল্লাহর আদেশের ব্যাপারে) তাড়াহুড়া (শুরু) করলে! (রাগে ও ক্ষোভে) সে ফলকগুলো ফেলে দিলো এবং তার ভাইর মাথা (-র চল) ধরে তাকে নিজের দিকে টেনে আনলো: (মুসাকে লক্ষ্য করে) সে বললো, হে আমার মায়ের ছেলে (আমার সহোদর ভাই), এ জাতির লোকগুলো আমাকে দুর্বল করে দিতে চেয়েছিলো, তারা (এক পর্যায়ে) আমাকে তো মেরেই ফেলতে চেয়েছিলো, তুমি (আজ) আমার সাথে এমন কোনো আচরণ করো না যা শত্রুদের আনন্দিত করবে, আর তুমি আমাকে কখনো যালেম সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত করো না।

10 وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسَى إِلَى قَوْمِهِ غَضْبَانَ اَسِفًا لا قَالَ بِنْسَهَا خَلَفْتُمُونِیْ مِنْ بَعْلِیْ ع اَعَجِلْتُر آَوْرَ رَبِّكُر ع وَاَلْقَى الْأَلُواحَ وَاَخَلَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ عَالَ ابْنَ أَا إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِیْ وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِی الْ قَلْ تُشْمِینْ بِیَ الْأَعْلَ آءً وَلَا تَجْعَلْنِیْ مَعَ الْقَوْمِ الظّلِمِیْنَ

১৫১. সে (মৃসা) বললো, হে আমার মালিক, আমাকে ও আমার ভাইকে তুমি মাফ করে দাও এবং তুমি আমাদের তোমার রহমতের মধ্যে দাখিল করে নাও, তুমিই সবচাইতে বড়ো দয়াবান। ا اللهُ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِاَخِيْ وَأَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ﴿ وَأَنْتَ أَرْحَرُ الرَّحِيِيْنَ عَ

১৫২. (আল্লাহ তায়ালা মৃসাকে বললেন, হাঁ,) যেসব লোক গরুর বাছুরকে মাবুদ বানিয়েছে, অচিরেই তাদের ওপর তাদের মালিকের পক্ষ থেকে 'গযব' আসবে, আর দুনিয়ার জীবনেও (তাদের ওপর আসবে) অপমান এবং লাঞ্ছনা; আল্লাহ তায়ালার নামে মিথ্যা কথা রটনাকারীদের আমি এভাবেই শান্তি দিয়ে থাকি ! امَّا إِنَّ الَّذِيْنَ النَّخَنُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُمُرُ غَضَبُّ مِّنْ رَبِّهِرْ وَذِلَّةً فِي الْحَيْوةِ النَّنْيَا ، وَكَنَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ

১৫৩. যেসব লোক অন্যায় কাজ করেছে, এরপর তারা তাওবা করেছে এবং (যথাযথ) ঈমান এনেছে, নিশ্চয়ই এ (যথার্থ) তাওবার পর তোমার মালিক ক্ষমালীল ও পরম দয়ালু (হিসেবে তাদের সাথে আচরণ করবেন)। ١٥٣ وَ الَّذِيْنَ عَبِلُوا السَّيِّالَسِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْرِهَا مِنْ بَعْرِهَا مِنْ بَعْرِهَا لَعْنَوْدً رَبِّكَ مِنْ بَعْرِهَا لَعْنُورًا وَ إِنَّ رَبِّكَ مِنْ بَعْرِهَا لَعُفُورً رَجِيْرً

১৫৪. পরে যখন মৃসার ক্রোধ (কিছুটা) প্রশমিত হলো, তখন সে (তাওরাতের) ফলকগুলো তুলে নিলো, তার পাতায় হেদায়াত ও রহমত (সম্বলিত কথাবার্তা লিখিত) ছিলো এমন সব লোকের জন্যে, যারা তাদের মালিককে ভয় করে।

۱۵۳ وَلَمَّا سَكَنَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ أَخَلَ الْأَلْوَاحَ أَخُ وَفِي تُسْخَتِهَا هُلَّى وَّرَهْهَةً الْأَلْوَاحَ أَخُ وَفِي تُسْخَتِهَا هُلَّى وَّرَهْهَةً لِلَّالِيْنَ هُرْ لِرَبِّهِرْ يَوْهَبُونَ

১৫৫. মৃসা তার সম্প্রদায়ের মধ্য থেকে (এবার) সন্তর জন লোককে আমার নির্ধারিত সময়ে সমবেত হবার জন্যে বাছাই করে নিলো, যখন এক প্রচন্ড ভূকম্পন এসে তাদের আক্রমণ করলো (তখন) মৃসা বললো, হে আমার মালিক, তুমি চাইলে তাদের সবাইকে ও আমাকে আগেই ধ্বংস করে দিতে পারতে; (আজ) আমাদের মধ্যকার কয়েকটি নির্বোধ মানুষ যে আচরণ করেছে, (তার জন্যে) তুমি কি আমাদের সবাইকে ধ্বংস করে দেবে! অথচ এ ব্যাপারটা তোমার একটা পরীক্ষা ছাড়া আর কিছুই নয়; এ (পরীক্ষা) দিয়ে যাকে চাও তাকে তুমি বিপথগামী করো, আবার যাকে চাও তাকে সঠিক পথও তো দেখাও! তুমি হচ্ছো আমাদের অভিভাবক, অতএব তুমি আমাদের ক্ষমা করে দাও, আমাদের ওপর তুমি দয়া করো, কেননা তুমিই হচ্ছো সর্বশ্রেষ্ঠ ক্ষমার আধার।

100 وَاهْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِيَّهْ الرَّهْفَةُ قَالَ رَبِّ لِيَهْقَاتِنَاء فَلَهَّ اَهْنَاتُهُمُ الرَّهْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِنْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَإِيَّاىَ اللَّهْ اللَّهُ اللللللْمُ اللَّهُ اللَّهُ الللللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُولِي الللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ الللْمُ الللْمُ اللللْمُ الللْمُلْمُ اللَّلْمُ الللللْمُ اللَلْمُ اللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللْمُ الللْ

১৫৬. তুমি আমাদের জন্যে ইহকাল ও পরকালের কল্যাণ লিখে দাও, হেদায়াতের জন্যে আমরা তোমার দিকেই প্রত্যাবর্তন করছি; আল্লাহ তায়ালা বললেন (হাঁ), আমার শান্তি আমি যাকে ইচ্ছা তাকেই দেই, আর আমার দয়া তো (আসমান-যমীনের) সবকয়টি জিনিসকেই পরিবেউন করে রেখেছে; আমি অবশ্যই তা লিখে দেবো এমন লোকদের জন্যে, যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে, যারা যাকাত আদায় করে, (সর্বোপরি) যারা আমার আয়াতসমূহের ওপর ঈমান আনে।

১৫৭. যারা এই বার্তাবাহক নিরক্ষর রস্লের অনুসরণ করে চলে— যার উল্লেখ তাদের (কিতাব) তাওরাত ও ইনজীলেও তারা দেখতে পায়, যে (নবী) তাদের ভালো কাজের আদেশ দেয়, মন্দ কাজ থেকে বিরত রাখে, যে তাদের জন্যে যাবতীয় পাক জিনিসকে হালাল ও নাপাক জিনিসসমূহকে তাদের ওপর হারাম ঘোষণা করে, তাদের ঘাড় থেকে (মানুষের গোলামীর) যে বোঝা ছিলো তা সেনামিয়ে দেয় এবং (মানুষের চাপানো) যেসব বন্ধন তাদের গলার ওপর (ঝুলানো) ছিলো তা সে খুলে ফেলে; অতপর যারা তাঁর ওপর ঈমান আনে, যারা তাকে সাহায্য সহযোগিতা করে, (সর্বোপরি) তার সাথে (কোরআনের) যে আলো পাঠানো হয়েছে তার অনুসরণ করে, তারাই হচ্ছে সফলকাম।

১৫৮. (হে মোহাম্মদ,) তুমি বলো, হে মানুষ, আমি তোমাদের সবার কাছে আল্লাহ তায়ালার রস্ল (হিসেবে এসেছি), আল্লাহ তায়ালা যিনি আকাশমন্ডল ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্বের একচ্ছত্র মালিক, তিনি ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই, তিনিই জীবন দান করেন, তিনিই মৃত্যু ঘটান, অতএব তোমরা (সেই) মহান আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনো, তাঁর বার্তাবাহক নিরক্ষর রস্লের ওপরও তোমরা ঈমান আনো, যে (রস্ল নিজেও) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর বাণীতে বিশ্বাস করে এবং তোমরা তাঁকে অনুসরণ করো, আলা করা যায় তোমরা সঠিক পথের সন্ধান পাবে।

১৫৯. মৃসার জাতির মধ্যে এমন একটি সম্প্রদায়ও আছে, যারা (অন্যদের) সত্যের পথ দেখায় এবং নিজেরাও সে অনুযায়ী ইনসাফ করে।

১৬০. আমি তাদের বারোটি গোত্রে ভাগ করে তাদের বতন্ত্র দলে পরিণত করে দিয়েছি, মৃসার সম্প্রদায়ের লোকেরা যখন তার কাছে পানি চাইলো, তখন আমি মৃসার কাছে ওহী পাঠালাম, তুমি তোমার হাতের লাঠি দারা পাথরে আঘাত করো, অতপর তা থেকে বারোটি ঝর্ণাধারা উদ্ভূত হলো; প্রত্যেক দল তাদের (নিজেদের) পানি পান করার স্থান চিনে নিলো; আমি তাদের ওপর

اللهِ وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰوِهِ اللَّانَيَا مَسَنَةً وَفِي اللَّانَيَا مَسَنَةً وَفِي الْأَنْيَا مَسَنَةً وَفِي الْأَغِرَةِ إِنَّا مُنْنَآ اِلْيَكَ ، قَالَ عَنَابِيَ الْمِيْبُ بِهِ مَنْ اَشَآءُ ع وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ، فَسَاكَتُبُهَا لِلَّانِيْنَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ فَيُؤْتُونَ الزَّكُوةَ وَالَّذِيْنَ هُرْ بِالْمِتِنَا يُؤْمِنُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوةَ وَالَّذِيْنَ هُرْ بِالْمِتِنَا يُؤْمِنُونَ عَلَى اللَّهُ الْمُؤْمِنُونَ عَلَى اللَّهُ الْمُؤْمِنُونَ عَلَى الْمُؤْمِنُونَ عَلَى اللَّهُ الْمُؤْمِنُونَ عَلَى الْمُؤْمِنُونَ عَلَى الْمُؤْمِنُونَ عَلَيْ الْمُؤْمِنُونَ عَلَى الْمُؤْمِنُونَ عَلَى الْمُؤْمِنُونَ عَلَيْكُونَا الْمُؤْمِنُونَ عَلَيْكُ الْمُؤْمِنُونَ عَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَيْكُونَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَيْكُونَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤَلِّمُ اللَّهُ وَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَاللْمُؤْمِنَا وَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمَالِمُ الْمُؤْمِنَا وَلَالْمَالَامُ اللَّمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمُونَا وَلَالْمُؤْمُونَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا لِلْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِلَالْمُؤْمِنَا وَالْمُؤْمِنَالِولِمِلْمُؤْمِنَا وَلَالْمُؤْمِنَالِمُ وَلَالْمُؤْمِلُولَالُولُولِمُ لِلْمُؤْمِلُولِهُ لِلْمُؤْمِنِهِ وَلَالْمُؤْمِلِهُ وَلَالْمُؤْمِلُولُومِ وَلَالْمُؤْمِلُومِ وَلَالْمُؤْمِلُومِ وَلَالْمُؤْمِ وَلَالْمُؤْمِ وَلَالْمُؤْمِلُومِ وَلَالْمُؤْمِونَالِمُومِ وَلَالْمُؤْمِ وَلَالْمُؤْمِونَالِمِ وَلِمِلْمُؤْمِولِ وَلَالِمِلْمُؤْمِوالْمُوالِمُولِولَالِمُؤْمِولِهِ

الأُمِّى النِّي يَتْبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِي الْأُمِّى النَّبِي النَّبِي النَّبِي النَّبِي النَّورَنة وَالْإِنْجِيلُونَةً مَكْتُوبًا عِنْكُمُرُ فِي التَّوْرِنة وَالْإِنْجِيلُ وَ يَامُرُمُمْرُ بِالْهَعْرُوفِ وَيَخْلُ لَمُرُ الطَّيِّبُسِ وَيَنْهُمُ وَيُخَلِّ لَمُمُ الطَّيِّبُسِ وَيَخْلُ لَمُر الطَّيِّبُسِ وَيُخَرِّ عَنِ الْمُنْكِ وَيُحِلُّ لَمُمُ الطَّيِّبُسِ وَيُخَرِّبُ عَلَيْهِمُ الْخَبِئِثِينَ وَيَضَعُ عَنْمُمُ وَيُحَرِّا عَلَيْهِمُ الْخَبِئِثِينَ وَيَضَعُ عَنْمُمُ وَيُحَرِّمُ وَالْإَغْلُلُ التِي كَانَتُ عَلَيْهِمُ النَّورَ النَّذِينَ امْنُوا بِهِ وَعَزَّرُونَا وَنَصَرُونا وَالنَّعُوا النَّورَ النِّي أَنْوِلَ مَعَدُّ لا الوليكَ مُمُ النَّورَ النَّذِينَ الْمَنْوا بِهُ وَعَزَّرُونا مَعَدُّ لا الوليكَ مُمُ النَّورَ النَّذِينَ النَّورَ النَّذِينَ الْمَنْوا الْمَقْلِحُونَ عَلَيْكُمْ اللَّهُ الْمُعَلِّي الْمُعْلِي الْمُعْولِ النَّورَ اللَّذِينَ الْمُؤْلِقُونَ عَلَيْكُمْ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ النَّهُ الْمُؤْلِقُونَ عَلَيْكُونَا النَّونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْولِ النَّونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُ الْمُونَا عِنْ الْمُؤْلِقُونَ عَلَيْكُونَا الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُؤْلِقُونَ عَلَيْكُونَا اللَّهُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُ اللَّهُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا اللَّهُ الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا اللَّهُ الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُؤْمِنَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَا الْمُعْلِيلُونَ الْمُعْلِيلُونَ

10 مَلْ يَايَّهَا النَّاسُ إِنِّى رَسُولُ اللَّهِ النَّكُرُ مَوْيُعَا النَّاسُ إِنِّى رَسُولُ اللَّهِ الْكَكُرُ مَوْيُعَا السَّاوُسِ وَالْكَرُضِ عَلَا اللَّهِ وَلَا مُو يُحْمَى وَيُويْتُ سَ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ اللَّمِيِّ اللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِ اللَّهِ وَلَلْمُ لَهُ مَا اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنَّبِيِّ الْأُمِّيِ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنَّبِيِّ الْأُمِّي اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنَّبِيِّ الْأُمِّي الْكُمْرُ لَعَلَّكُمْرُ لَعَلَّكُمْرُ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنَّبِعُونُ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنَّبِعُونُ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنِّيعُونُ اللَّهِ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنِّيعُونُ اللَّهِ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنَّيعُ وَاللَّهِ اللَّهِ وَكَلِمْتِهِ وَالنِّيعُ وَاللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَكَلْمُ اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَكَلْمُ اللَّهِ وَاللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَاللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَاللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَاللَّهِ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهِ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا لَهُ اللَّهُ وَلَالْمُ اللَّهُ وَلَا لَهُ اللَّهِ وَلَاللَّهُ وَلَا لَهُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا لَهُ اللَّهِ وَلَا لَهُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا لَهُ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللّهِ اللّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللّهُ الْمُنْ الْمُنْ اللّهُ الْمُنْ اللّهِ اللّهُ الْمُنْ اللّهُ اللّهُ الْمُنْ اللّهُ اللّهُ الْمُنْ اللّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الْمُنْ اللّهُ اللّهُ الْمُنْ ا

۱۵۹ وَمِنْ قَوْمٍ مُوْسَى ٱمَّةً يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْرِلُوْنَ

17 وَقَطَّعْنَهُرُ اثْنَتَىْ عَشْرَةً اَسْبَاطًا أُمَهًا ﴿
وَاوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى إِذِ اسْتَسْقَٰهُ قَوْمُهُ آنِ
اضْرِبْ يِّعَمَاكَ الْحَجَرَع فَاثْبَجَسَتْ مِنْهُ
اثْرِبْ يِّعَمَاكَ الْحَجَرَع فَاثْبَجَسَتْ مِنْهُ
اثْنَتَا عَشْرَةً عَيْنًا ﴿ قَنْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ

মেঘের ছায়াও বিস্তার করে দিলাম, তাদের কাছে 'মান' ও 'সালওয়া' (নামক উৎকষ্ট খাবার) পাঠালাম: (তাদের আমি এও বললাম.) তোমাদের আমি যেসব পবিত্র জ্ঞিনিস দান করেছি তা তোমরা খাও: (আমার কৃতজ্ঞতা আদায় ना करत) जाता आभात खनत रकारना यूनूम करतिन, वतर وَرَقْنَكُمْ وَمَا ظَلَهُوْنَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ بِهُ وَمَا ظَلَهُوْنَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ بِهِ . তারা নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করেছে।

مُّهُورَهُمْ وَظُلَّلْنَا عَلَيْهِرُ الْغَهَا } وَٱنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلُوٰى وَكُلُوْا مِنْ طَيِّبْكِ مَا

১৬১. (সে সময়ের কথাও স্বরণ করো.) যখন তাদের বলা হয়েছিলো, তোমরা এই জনপদে গিয়ে বসবাস করো এবং সেখান থেকে যা কিছ চাও তোমরা আহার করো এবং বলো (হে মালিক), আমরা তোমার কাছে ক্ষমা চাই, আর (যখনি সেই) জনপদের দ্বারপথ দিয়ে ভেতরে প্রবেশ করবে, (তখন) সাজদাবনত অবস্থায় প্রবেশ করবে, আমি তোমাদের গুনাহসমূহ মাফ করে দেবো: আমি অচিরেই উত্তম লোকদের অতিরিক্ত দান করবো।

اللَّا وَإِذْ قِيْلَ لَهُرُ اسْكُنُوا هٰنِ الْقَرْيَةَ وَكُلُواْ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُرْ وَقُوْلُواْ حِطَّةً وَّادْهُلُوا الْبَابَ سُجَّلًا نَّغْفِرْ لَكُيرُ خَطِيَنُاتِكُمْ م سَنَوِيْكُ الْهُحْسِنِيْنَ

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যারা যালেম ছিলো, তারা তাদের যা (করতে) বলা হয়েছিলো তা সম্পূর্ণ বদলে দিয়ে ভিনু কথা বললো, তাই আমিও তাদের এ যুলুমের শান্তি হিসেবে তাদের ওপর আসমান থেকে আযাব পাঠালাম।

١٦٢ فَبَنَّالَ الَّذِينَ ظَلَهُوْ ا مِنْهُرْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيْلَ لَهُرْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِرْ رِجْزًا مِّنَ السُّهَاءِ بِهَا كَانُوْ ا يَظْلِمُوْنَ ع

১৬৩. তাদের কাছ থেকে সেই জনপদের কথা জিজ্ঞেস করো, যা ছিলো সাগরের পাড়ে (অবস্থিত)। যখন সেখানকার মানুষরা শনিবারে (আল্লাহ তায়ালার বেঁধে দেয়া) সীমালংঘন করতো, (আসলে) শনিবারেই (সাগরের) মাছগুলো তাদের কাছে উঁচু হয়ে পানির উপরিভাগে (ভেসে) আসতো এবং শনিবার ছাড়া অন্য কোনোদিন তা আসতো না. (বস্তুত) তাদের অবাধ্যতার কারণেই আমি তাদের অনুরূপ পরীক্ষা নিচ্ছিলাম।

١٦٣ وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَوْيَةِ الَّتِي كَانَتُ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ مِ إِذْ يَعْلُونَ فِي السَّبْسِ إِذْ تَأْتِيْهِرْ حِيْتَانُهُرْ يَوْمَ سَبْتِهِرْ هُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَشْبِتُوْنَ لا لَا تَأْتِيْهِرْ عَ كَنْ لِكَ عَ نَبْلُوهُمْرُ بِهَا كَانُوْ إِيَفْسُقُوْنَ

১৬৪. (আরো শ্বরণ করো,) যখন তাদের একদল লোক এও বলছিলো, তোমরা এমন একটি দলকে কেন উপদেশ দিতে যান্ছো, যাদের আল্লাহ তায়ালা ধ্বংস করতে, অথবা (গুনাহের জন্যে) যাদের কঠোর শাস্তি দিতে যাচ্ছেন, তারা বললো, এটা হচ্ছে তোমাদের মালিকের দরবারে (নিজেদের) একটা ওযর পেশ করা (যে, আমরা উপদেশ দিয়েছি)। হতে পারে, তারা এর ফলে সাবধান হবে।

١٦٣ وَإِذْ قَالَت أُمَّةً مِّنْهُمْ لِيرَ تَعِظُونَ قَوْمَا ١٧ الله مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَنِّبُهُمْ عَنَابًا شَرِيْنًا ، قَالُوْ ا مَعْنَرَةً اللِّي رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ

১৬৫. অতপর যা তাদের (বার বার) শ্বরণ করানো হচ্ছিলো তা তারা সম্পূর্ণ ভূলে গেলো, তখন আমি (সে দল থেকে) এমন লোকদের উদ্ধার করলাম, যারা নিজেরা গুনাহের কাজ থেকে বেঁচে থাকতো, আর কঠিন শাস্তি দিয়ে পাকড়াও করলাম তাদের- যারা যুলুম করেছে. তাদের নিজেদের গুনাহর জন্যে (আমি তাদের আযাব দিয়েছিলাম)।

١٦٥ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِمْ ٱلْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوَّءِ وَٱخَذَنَا الَّذِيْنَ ظَلَبُوْ ا بِعَنَ ابِ بَئِيْس بِهَا كَانُوْ ا يَفْسُقُونَ

১৬৬. তাদের যেসব (घृণিত) काজ থেকে निरंध कर्ता مُواْ عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ الْمُواْ عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ الْمُواْ عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ (كَاتَةُ عَلَى الْمُواْ عَنْهُ مُلْنَا لَهُمْ الْمُواْ عَنْهُ مُلْنَا لَهُمْ الْمُواْءِ عَنْهُ مُلْنَا لَهُمْ الْمُواْءِ عَنْهُ مُلْنَا لَهُمْ اللّهِ اللّهُ اللّهُمْ اللّهُ اللّهُمْ اللّهُ اللّهُمْ اللّهُ اللّهُمْ اللّهُ اللّهُمْ اللّهُ اللّهُمْ اللّهُمُ اللّهُمْ اللّهُمُ তখন আমি তাদের বললাম, এবার তোমরা সবাই লাঞ্ছিত বানর হয়ে যাও।

كُوْنُوا قُودَةً خَسئينَ

৭ সরা আল আ'রাফ



১৬৭. (শ্বরণ করো,) যখন তোমার মালিক (ইহুদীদের উদ্দেশে) ঘোষণা দিলেন, তিনি কেয়ামত পর্যন্ত এ জাতির ওপর এমন লোকদের (শক্তিধর করে) পাঠাতে থাকবেন, যারা তাদের নিকৃষ্ট ধরনের শান্তি দিতে থাকবে; (একথা) নিশ্চিত, তোমার মালিক (যেমন) সত্ত্বর শান্তি দান করেন, (তেমনি) তিনি ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١٦٧ وَإِذْ تَاَذَّنَ رَبَّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِرْ إِلَى يَوْرِ يَوْرِ الْقِيْهَةِ مَنْ يَسُوْمُهُرْ سُوْءَ الْعَنَابِ اللَّالِ رَبَّكَ لَسَوِيْعُ الْعِقَابِ ج وَإِنَّهُ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْرٌ

১৬৮. আমি তাদের দলে দলে বিভক্ত করে যমীনে ছড়িয়ে দিয়েছি, তাদের মধ্যে কিছু নেককার মানুষ (ছিলো), আবার তাদের কিছু (ছিলো) এর চাইতে ভিন্ন ধরনের, ভালো-মন্দ (উভয়) অবস্থার (সমুখীন) করে আমি তাদের পরীক্ষা নিয়েছি এ আশায় যে, হয়তো তারা (কখনো হেদায়াতের পথে) প্রত্যাবর্তন করবে।

١٦٨ وَقَطَّعْنَهُرْ فِي الْأَرْضِ أُمَّا عَ مِنْهُرُ الصَّلِحُونَ وَمِنْهُرْ دُونَ ذَٰلِكَ رَ وَبَلَوْنُهُرْ بِالْحَسَنَٰسِ وَالسَّيَّاٰسِ لَعَلَّهُرْ يَرْجِعُونَ

১৬৯. (কিন্তু) তাদের (অযোগ্য) উত্তরসুরিরা (একের পর এক) এ যমীনে উত্তরাধিকারী হলো, তারা আল্লাহ তায়ালার কেতাবেরও উত্তরাধিকারী হলো, তারা এ দুনিয়ার ধন-সম্পদ করায়ত্ত করে নেয়, (অপরদিকে মূর্থের মতো) বলতে থাকে, আমাদের (শেষ বিচারের দিন) মাক করে দেয়া হবে, কিন্তু (অর্জিত সম্পদের) অনুরূপ সম্পদ যদি তাদের কাছে এসে পড়ে, তারা সাথে সাথেই তা হস্তগত করে নেয়; (অপচ) তাদের কাছ থেকে আল্লাহ তায়ালার কেতাবের এ প্রতিশ্রুতি কি নেয়া হয়নি য়ে, তারা আল্লাহ তায়ালা সম্বন্ধে সত্য ছাড়া কিছু বলবে না! আল্লাহ তায়ালার সেই কেতাবে যা আছে তা তো তারা (নিজেরা বহুবার) অধ্যয়নও করেছে; আর পরকালীন ঘরবাড়ি! (হা) যারা (আল্লাহকে) ভয় করে তাদের জন্যে তো তাই হচ্ছে উত্তম (নিবাস), তোমরা কি (এ বিষয়টি) অনুধাবন করো না!

الْكِتْبَ يَاْ عُنُونَ عَرَضَ هَلَفٌ وَرِثُوا الْكِتْبَ يَاْ عُنُونَ عَرَضَ هَٰنَ الْأَدْنَى الْكِتْبَ يَاْ عُنُونَ عَرَضَ هَٰنَ الْآدَنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا عَ وَإِنْ يَّاْتِهِرْ عَرَضٌ مِّنْكَةً يَاْ عُنُونَ * اللّهِ يَاْ يَعْفُولُوا عَلَى اللهِ إِلّا الْحَقِّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ﴿ وَاللّّالُ الْالْحِرَةُ خَيْرٌ لِللّهِ إِلّا الْحَقِّ لِللّهِ إِلّا الْحَقِّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ﴿ وَاللَّاارُ الْا خِرَةُ خَيْرٌ لِللّهِ إِلَّا الْحَقِ لِللّهِ إِلَّا الْحَقِ لِللّهِ إِلَّا الْحَقِ لِللّهِ إِلَّا الْحَقِ لَلْهُ وَلَوْلَ عَلَى اللّهِ إِلَّا الْحَقِ لَوْنَ اللّهُ إِلَّا الْحَقِ لَلْهُ عَلَيْكُونَ عَلَى اللّهِ إِلَّا الْحَقِ لَلْهُ عَلَيْكُونَ عَلَى اللّهِ إِلَّا الْحَقِ لِللّهِ إِلَّا الْحَقِ لَا أَنْ اللّهُ إِلّهُ اللّهِ إِلَّا الْحَقِ لَا لَهُ إِلَيْنَ عَلَى اللّهِ إِلَّا الْحَقِ لَا اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ الْمُؤْمِدُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ الْمُؤْمِدُ عَلَيْ الْمُؤْمِدُ وَاللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ إِلّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

১৭০. অপরদিকে যারা আল্লাহর কেতাবকে (কঠোরভাবে) আঁকড়ে ধরে এবং নামায প্রতিষ্ঠা করে (তারা জ্ঞানে), আমি কখনো সংশোধনকারীদের বিনিময় নষ্ট করি না। ١٤٠ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتْبِ وَأَقَامُوا الصَّلُوةَ ، إِنَّا لَا تُضِيْعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ

১৭১. যখন আমি তাদের (মাধার) ওপর পাহাড়কে উঁচু করে রেখেছিলাম, মনে হচ্ছিলো তা যেন একটি ছায়া, তারা তো ধরেই নিয়েছিলো, তা বুঝি (এখনি) তাদের ওপর পড়ে যাবে (আমি তাদের বললাম,) তোমাদের আমি (হেদায়াত সম্বলিত) যে কিতাব দিয়েছি তা কঠোরভাবে আঁকড়ে ধরো এবং তাতে যা কিছু আছে তা (বার বার) ন্মরণ করো, (এর ফলে) আশা করা যায় তোমরা বেঁচে থাকতে পারবে।

ا ١٤ وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُرْ كَانَّهُ ظُلَّةً وَّظَنُّوْآ اَنَّهُ وَاقِعٌ بِمِرْ ، خُنُوْا مَّ الْتَيْنُكُرْ بِقُوْةٍ وَّاذْكُرُوا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُرْ تَتَّقُوْنَ ،

১৭২. (তোমরা স্থরণ করো,) যখন তোমাদের মাণিক আদম সন্তানের পৃষ্ঠদেশ থেকে তাদের (পরবর্তী) সন্তান-সন্ততিদের বের করে এনেছেন এবং তাদের নিজেদের ওপর (এ মর্মে আনুগত্যের) স্বীকারোক্তি আদায় করেছেন যে, আমি কি তোমাদের মাণিক নইং তারা (সবাই) বললো, হাঁ নিক্য়ই, আমরা (এর ওপর) সাক্ষ্য দিলাম, (এর উদ্দেশ্য ছিলো) যেন কেয়ামতের দিন তোমরা একথা বলতে না পারো যে, আমরা এ বিষয়ে অনবহিত ছিলাম।

ا ا وَإِذْ اَخَلَ رَبَّكَ مِنْ بَنِيَ اَدَا مِنْ مِنْ مَنِيَ اَدَا مِنْ طُهُورِهِرْ دُرِّيَّتَمُرْ وَاَهُمَلَ مُرْعَلَى اَنْفُسِهِرْ عَ اللهُ يَرَبِّكُرْ مَ قَالُوا بَلَى عَ هَمِنْ نَا عَ اَنْ تَقُولُوا يَوْا القِيْمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ مَٰنَا غَفِلِيْنَ لا

৭ সূরা আল আ'রাফ

799

পারা ৯ কালাল মালাউ

১৭৩. কিংবা (একথাও যেন না) বলো যে, আল্লাহর সাথে শেরেক তো আমাদের বাপ-দাদারা আগে করেছে- আর وكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنَ بَعْلِ مِرْعَ أَفَتُهُلِكُنَا بِمَا فَعَلَ مَعْلِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّه বাতিলপন্থীদের কার্যক্রমের জন্যে কি তুমি আমাদের ধ্বংস করবেঃ

١٤٣ أَوْ تَقُوْلُوْ ۚ إِنَّهَ ۚ أَشْرَكَ أَبَّاؤُنَا مِنْ قَبْلُ الْهُبُطِلُوْنَ

১৭৪. এভাবেই আমি (অতীতের) দৃষ্টান্তসমূহ তাদের কাছে খোলাখলি বর্ণনা করি, সম্ভবত এরা (সোজা পথে) ফিবে আসবে।

١٤٣ وَكَنْ لِكَ نُفَصِّلُ الْأَيْتِ وَلَعَلَّهُمْ يرجعون

১৭৫. (হে মোহাম্মদ.) তুমি তাদের কাছে (এমন) একটি মানুষের কাহিনী (পড়ে) শোনাও, যার কাছে আমি নেবীর মাধ্যমে) আমার আয়াতসমূহ নাথিল করেছিলাম, সে তা থেকে বিচ্যুত হয়ে পড়ে, অতপর শয়তান তার পিছু নেয় এবং সে সম্পর্ণ গোমরাহ লোকদের দলভক্ত হয়ে পডে।

١٤٥ وَاثُلُ عَلَيْهِم ْ نَبَا الَّذِيُّ الَّيْنَادُ الْمِتَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَٱتْبَعَدُ الشَّيْطِٰيُ فَكَانَ مِيَ الْغُويْنَ

১৭৬. (অথচ) আমি চাইলে তাকে এ (আয়াতসমূহ) দ্বারা উচ্চ মর্যাদা দান করতে পারতাম, কিন্তু সে তো (উর্ধ্বমুখী আসমানের বদলে) নিম্নমুখী যমীনের প্রতিই আসক্ত হয়ে আসমানের বগণে) निम्नभूषा यमानिর প্রাতহ আসক হয়ে وَاتَّبَعَ هُولِدُ عَ فَهَثَلُهُ كَهَثَلِ الْكَلْبِعِ الْكَلْبِع পড়ে এবং (পার্থিব) कामना-वाসনার অনুসরণ করে। তার وَاتَّبَعَ هُولِدُ عَ فَهَثَلُهُ كَهَثَلِ الْكَلْبِعِ الْكَلْبِ উদাহরণ হচ্ছে কুকুরের উদাহরণের মতো, যদি তুমি তাকে দৌড়াতে থাকো তবু সে (জিহ্বা বের করে) হাঁপাতে থাকে, আবার তোমরা সেটিকে ছেড়ে দিলেও সে (জিহ্বা ঝুলিয়ে) হাঁপাতে থাকে: এ হচ্ছে তাদের দৃষ্টান্ত যারা আমার আয়াতসমূহ অস্বীকার করেছে. এ কাহিনীগুলো (তাদের) তুমি পড়ে শোনাও, হয়তো বা তারা চিম্ভা-গবেষণা করবে।

١٤٦ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُ آَغُلَلَ إِلَى إِنْ تَحْمِلُ عَلَيْدِ يَلْهَمْ أَوْ تَتْرُكُهُ يَلْهَمْ ، ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْرِ الَّذِيثِي كَنَّابُوا بِأَيْتِنَا ع فَاقْصُص الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّونَ

১৭৭, যে সম্প্রদায়ের লোকেরা আমার নিদর্শনসমূহ মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে, তারা নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করে আসছে, তাদের উদাহরণ কতোই না নিকৃষ্ট !

١٤٤ سَاءً مَثَلًا ﴿ الْقَوْمُ الَّذِينَ كَنَّابُوْا بايتنا وَ إَنْفُسَهُمْ كَانُوْ ا يَظْلَبُوْنَ

১৭৮. আল্লাহ তায়ালা যাকে পথ দেখান সে (সঠিক) পথ প্রাপ্ত হবে, আবার যাকে তিনি গোমরাহ করেন তারা ভীষণ ক্ষতিগ্রস্ত (হয়ে পডে)।

١٤٨ مَنْ يَهْلِ اللَّهُ فَهُوَ الْبُهْتَلِيمُ عَ وَمَنْ يَّضْلُلُ فَأُولَئِكَ هُرُ الْخُسُونَ

১৭৯. বস্তুত বহু সংখ্যক মানুষ ও জ্বিন (আছে, যাদের) আমি জাহানামের জন্যেই পয়দা করেছি, তাদের কাছে যদিও (বুঝার মতো) দিল আছে, কিন্তু তা দিয়ে তারা চিন্তা করে না, তাদের কাছে (দেখার মতো) চোখ থাকলেও তারা তা দিয়ে (সত্য) দেখে না, আবার তাদের কাছে (শোনার মতো) কান আছে, কিন্তু তারা সে কান কৃতিপয় জন্তু-জানোয়ারের মতো, বরং (কোনো কোনো بُلُ هُو يُسْهَعُونَ بِهَا ء أُولَئِكَ كَا لَإِنْعَا كِ بِلَ هُو $\sqrt{2}$ ক্ষেত্রে) তাদের চাইতেও এরা বেশী প্রথন্তন্তু, এসব লোকেরা (দারুণ) উদাসীন।

١٤٩ وَلَقَلْ ذَرَأَنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيًّا مِّنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسُ اللَّهِ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ز وَلَهُمْ أَعْيُنَّ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا رَوَلَهُمْ أَذَاكًّ أَضَلُّ ، أُولَٰئِكَ هُر الْغُفِلُوْنَ

১৮০. আল্লাহ তায়ালার জন্যেই যাবতীয় সুন্দর নামসমূহ (নিবেদিত), অতএব তোমরা সে সব ভালো নামেই তাঁকে وَذَرُوا الَّذِيثَىَ يُلْحِرُونَ فِي ۖ أَسُمَانِهِ ، अति वाद प्राप्त कथा एहाए मांख याता छात ، وَذَرُوا الَّذِيثَى يُلْحِرُونَ فِي ۖ أَسُمَانِهِ ، নামে বিকৃতি ঘটায়; যা কিছু তারা (দুনিয়ার জীবনে) করে এসেছে, অচিরেই তার যথাযথ ফল তারা পাবে।

١٨٠ وَلِلَّهِ الْإَشْهَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا م سَيُحُزُونَ مَا كَانُوْ إِيعْمَلُونَ

৭ সূরা আল আ'রাফ

169

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ৯ কালাল মালাউ ١٨١ وَمِنَّ ۚ غَلَقْنَا ۗ أُمَّةً يَّهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ ১৮১. আমি যাদের সৃষ্টি করেছি তাদের (মানুষ ও জিনদের) মাঝে (আবার) এমন একটি দল আছে, যারা يَعْنِ لُوْنَ ع (মানুষকে) সঠিক পথের দিকে ডাকে এবং (সেমতে) নিজেরাও (নিজেদের জীবনে) ইনসাফ কায়েম করে। ١٨٢ وَ الَّذِينَ كَنَّابُوا بِالْيِنَا سَنَشْتَنْ رِجُهُمْ ১৮২. যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে. ক্রমে ক্রমে আমি তাদের এমনভাবে (ধ্বংসের দিকে مِّنَ حَيْثُ لَا يَعْلَهُونَ عَصِهِ ঠেলে) নিয়ে যাবো, তারা (তা) টেরও পাবে না : ১৮৩. আমি তাদের (বিদ্রোহের) জন্যে অবকাশ দিয়ে ١٨٣ وَٱمْلِي لَهُرْ لِا إِنَّ كَيْدِي مَتِيْنَ রাখবো এবং (এ ব্যাপারে) আমার কৌশল (কিন্তু) অত্যন্ত শক্ত। ١٨٢ أَوَلَر يَتَفَكَّرُوا ٢٠ مَا بِصَاحِبِهِر مِّنَ ১৮৪. তারা কি কখনো চিন্তা করে দেখে না! তাদের সাথী (মোহাম্মদ) কোনো পাগল নয়; সে তো হচ্ছে (আযাবের) جِنَّةِ ، إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيْرٌ مَّبِينً একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী মাত্র। ١٨٥ أَوَلَرْ يَنْظُرُواْ فِيْ مَلَكُوْتِ السَّهُوْتِ ১৮৫. তারা কি আসমানসমূহ ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্ত্বের (বিষয়টির) দিকে কখনো তাকিয়ে দেখে না এবং তাকিয়ে وَالْإَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ لا وَّأَنْ দেখে না আল্লাহ তায়ালা এখানে যা কিছু সষ্টি করেছেন (তার প্রতি- এবং এর প্রতিও যে,) তাদের (অবস্থানের) عَسٰى أَنْ يَّكُوْنَ قَنِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ عَلَامًى ۗ মেয়াদও হয়তো নিকটবর্তী হয়ে এসেছে, এর পর আর مَلِيْثِ بَعْلَةً يُؤْمِنُونَ কোন কথা আছে যা বললে এরা ঈমান আনবেং ١٨٦ مَنْ يُّضْلِل اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ مَ ১৮৬. আল্লাহ তায়ালা যাকে পথহারা করে দেন তাকে পথে আনার আর (দ্বিতীয়) কেউই নেই: আল্লাহ তায়ালা وَيَنَ رُهُمْ فِي طُغْيَا نِهِمْ يَعْمَهُونَ তো তাদের (সবাইকেই) তাদের অবাধ্যতায় উদ্ধান্তের মতো খুরে বেড়ানোর জন্যে ছেড়ে দেন। ১৮৭, তারা তোমার কাছে কেয়ামত সম্পর্কে জিজ্ঞেস ١٨٤ يَسْئَلُونَكَ عَن السَّاعَة أَيَّانَ مُوسُهَا ا করে, এ দিনটি কখন সংঘটিত হবে: তুমি (তাদের) বলো, এ জ্ঞান তো (রয়েছে) আমার মালিকের কাছে, এর قُلْ إِنَّهَا عِلْمُهَا عِنْنَ رَبِّي ۚ جَ لَا يُجَلِّيهَا সময় আসার আগে তিনি তা প্রকাশ করবেন না. (তবে) لِوَقْتِهَا ۗ إِلَّا هُوَ لِا ثَقُلُتْ فِي السَّهٰوٰتِ আকাশমন্তল ও যমীনের জনো সেদিন তা হবে একটি ভয়াবহ ঘটনা: এটি তোমাদের কাছে একান্ত وَ الْأَرْضِ ﴿ لَا تَأْتِيْكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ﴿ يَسْئَلُوْنَكَ আকন্মিকভাবেই: তারা (এ প্রশ্নুটি এমনভাবে) জিজ্ঞেস করে যে, মনে হয় তুমি বুঝি বিষয়টি সম্পর্কে সব কিছু كَانَّكَ مَفِيٌّ عَنْهَا م قُلْ إِنَّهَا عِلْهُهَا عِنْلَ اللَّه জানো: (তাদের) বলো, কেয়ামতের জ্ঞান তো একমাত্র আল্লাহ তায়ালার কাছেই রয়েছে, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَبُونَ (এ সত্যটুকু) জানে না। ১৮৮. তুমি (আরো) বলো, আমার নিজের ভালো-মন্দের ١٨٨ قُلْ ﴿ آَ أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا মালিকও তো আমি নই, তবে আল্লাহ তায়ালা যা চান তাই হয়: যদি আমি অজানা বিষয় সম্পর্কে জানতাম. الًّا مَا شَآءَ اللَّهُ م وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ তাহলে আমি (নিজের জন্যে সে জ্ঞানের জোরে) অনেক ফায়দাই হাসিল করে নিতে পারতাম এবং কোনো لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرَ ۚ فَمَا مَسَّنِيَ السُّوَّةُ خَ অকল্যাণই আমাকে স্পর্শ করতে পারতো না, আমি তো তথু (একজন নবী, জাহানামের) সতর্ককারী ও إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَّبَشِيرٌ لِّقَوْ] يُؤْمِنُونَ ع (জানাতের) সুসংবাদবাহী মাত্র, তথু সে জাতির জন্যে যারা আমার ওপর ঈমান আনে। ১৮৯. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের একটি ١٨٩ مُوَ الَّذِي عَلَقَكُر مِّن تَّفْسِ وَّاحِلَةٍ

وَّجَعَلَ مِنْهَا زُوْجَهَا لِيَسْكُنَ الْيَهَاء فَلَهَّا وَلَهْاء فَلَهَّا وَالْمَاء وَلَهُا عَلَيْها وَالْمَ

প্রাণ থেকে পয়দা করেছেন এবং (পরবর্তী পর্যায়ে) তার

কাছে (গিয়ে) সে পরম শান্তি লাভ করতে পারে, অতপর

৭ সুরা আল আ'রাফ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৯ ক্বালাল মালাউ |
|--|---|
| যখন (পুরুষ) সাথীটি (তার) মহিলা সাথীটিকে (দৈহিক প্রয়োজনের জন্যে) ঢেকে দিলো, তখন মহিলা সাথীটি | تَغَشَّهُا مَهَلَتُ مَهُلًا خَفِيقًا فَهُوْتُ بِهِ ج |
| এক লঘু গর্ভ ধারণ করলো (এবং প্রথম দিকে) সে এ নিয়েই চলাফেরা করলো; পরে যখন সে (গর্ভের কারণে | فَلَهَّا ۚ ٱثْقَلَتْ دَّعُوا اللَّهُ رَبُّهُمَا لَئِي ۚ أَتَيْتَنَا |
| ওযনে) ভারী হয়ে এলো, তখন তারা (পুরুষ-মহিলা) | مَالِحًا لَّنَكُوْنَىَّ مِنَ الشَّكِرِيْنَ |
| উভয়েই তাদের মালিককে ডেকে বললো, হে আল্লাহ তায়ালা, যদি তুমি আমাদের একটি সুস্থ ও পূর্ণাংগ সন্তান দান করো, তাহলে আমরা অবশ্যই তোমার কৃতজ্ঞতা আদায়কারীদের দলে শামিল হবো। | |
| ১৯০. পরে (সত্যিই) যখন তিনি তাদের উভয়কে একটি (নিখুত) ও তালো সম্ভান দান করলেন, তখন তারা যা | ١٩٠ فَلَهَّا ۚ إِتَّابِهُهَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرِكَّاءً فِيْهَا |
| কিছু (সন্তানের আকারে আল্লাহর পক্ষ থেকে) তাদের দেয়া হয়েছে (সে ব্যাপারেই) অন্যদের শরীক বানিয়ে নিলো, আল্লাহ তায়ালা কিন্তু তাদের এ শরীক বানানো থেকে অনেক পবিত্র। | اُتْنَهُما فَتَعْلَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ وَمِهِ |
| ১৯১. এরা কি আল্লাহ তায়ালার সাথে এমন কিছুকে শরীক (মনে) করে, যারা কিছুই সৃষ্টি করতে পারে না, বরং তাদের নিজেদেরই সৃষ্টি করা হয় ! | ١٩١ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّمُرْ يُخْلَقُوْنَ |
| ১৯২. তারা তাদের কাউকে কোনো রকম সাহায্য করতে সক্ষম নয় এবং তারা নিজেদেরও কোনো রকম সাহায্য | ١٩٢ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَا |
| করতে পারে না। | أَنْفَسَهُمْ يَنْصَرُونَ |
| ১৯৩. তোমরা যদি এ (মূর্খ) লোকদের হেদায়াতের পথের দিকে আহবান করো, তারা তোমাদের কথা ভনবে না, | ١٩٣ وَإِنْ تَنْعُوْمُرْ إِلَى الْهُنِّيكَ لِا يَتَّبِعُوْكُمْ ۚ |
| (তাই) তোমরা তাদের হেদায়াতের পথে ডাকো কিংবা | سُوَآءٌ عَلَيْكُمْ ٱدْعَوْتُمُوْهُمْ ٱلْ ٱنْتُمْ |
| চুপ করে থাকো– উভয়টাই তোমাদের জন্যে সমান কথা। | مَامِتُوْنَ |
| ১৯৪. আন্নাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে তোমরা যাদের (সাহায্যের জন্যে) ডাকো, তারা তো তোমাদের মতোই | ١٩٣ إِنَّ الَّذِيثَيَ تَنْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ عِبَادًّ |
| কতিপয় বানা, তোমরা তাদের ডেকেই দেখো না, | أَمْثَالُكُرْ فَادْعُوْهُرْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْ الْكُرْ إِنْ |
| তোমরা (তোমাদের দাবীতে) সত্যবাদী হলে তাদের উচিত তোমাদের ডাকে সাড়া দেয়া। | كُنْتُر صُلِقِينَ |
| ১৯৫. তাদের কি কোনো পা আছে যার (ওপর ভর) দিয়ে তারা চলতে পারে, অথবা তাদের কি কোনো (ক্ষমতাধর) | ١٩٥ أَلَمُر أَرْجُلُّ يَّنْشُونَ بِهَا ۚ رَأَا لَمُر أَيْنِ |
| হাত আছে যা দিয়ে তারা সব কিছু ধরতে পারে, কিংবা তাদের কি কোনো চোখ আছে যা দিয়ে তারা (সব কিছু) | يَّبْطِشُوْنَ بِهَا ﴿ أَا لَهُمْ أَعْيُنَّ يُّبْصِرُوْنَ بِهَا ﴿ |
| দেখতে পারে, কিংবা আছে তাদের কোনো কান যা দিয়ে তারা তনতে পারে! তুমি বলো, তোমরা ডাকো তোমাদের | أَمْ لَهُمْ أَذَانًا يَسْمَعُونَ بِهَا ﴿ قُلِ ادْعُوا |
| শরীকদের, এরপর তোমরা আমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করো, (বড়যন্ত্র করার সময়) আমাকে কোনো অবকাশও দিয়ো না। | هُركَآءَكُم ثُرَّ كَيْلُونِ فَلَا تُنظِرُونَ |
| ১৯৬. (তুমি তাদের বলো,) নিশ্চয়ই আমার অভিভাবক হচ্ছেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি কিতাব নাযিল করেছেন, | ١٩٦ إِنَّ وَلِيِّے اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ |
| তিনি হামেশাই ভালো লোকদের অভিভাবকত্ব করেন। | وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّلِحِيْنَ |
| ১৯৭. আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে যাদের তোমরা ডাকো, তারা তোমাদের কোনো রকম সাহায্য করতে সক্ষম নয়, (এমন কি) তারা নিজেদেরও কোনো রকম | 194 وَ الَّذِينَ تَنْ عُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ ﴿ يَسْتَطِيعُونَ |
| সাহায্য করতে পারে না । | نَصْرَكُمْ وَلَا ٱنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ |
| ১৯৮. তোমরা যদি (কখনো) তাদের হেদায়াতের পথে আসার আহ্বান জানাও, তবে তারা তনতেই পাবে না; | ١٩٨ وَإِنْ تَنْكُوهُمْ إِلَى الْهُدِي لَا |
| ৭ সূরা আল আ'রাফ ১৭১ | মন্যিল ২ |

| | | ı |
|--|--|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৯ ক্বালাল মালাউ | |
| (কথা বলার সময়) যদিও তুমি দেখছো, তারা তোমার | يَسْمَعُوا ﴿ وَتَرْبَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا | |
| দিকেই চেয়ে আছে, কিন্তু এরা (সত্য) দেখতেই পায় না। | يُبْصِرُونَ | |
| | | |
| ১৯৯. (হে মোহাম্মদ, এদের সাথে) তুমি ক্ষমার নীতি | المُعَنِّو الْعَفُو وَأَمُّرُ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ | |
| অবলম্বন করো, নেক কাজের আদেশ দাও এবং মূর্খ | الْجُهليْنَ | |
| লোকদের তুমি এড়িয়ে চলো। | انجهرين | |
| ২০০. কখনো যদি শয়তানের কুমন্ত্রণা তোমাকে প্ররোচিত | ٢٠٠ وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطِي نَزْغٌ فَاسْتَعِلْ | |
| করে, সাথে সাথেই তুমি আল্লাহ তায়ালার কাছে আশ্রয় | a . a . a . | |
| চাও; অবশ্যই তিনি (সব কিছু) শোনেন এবং (সব কিছু) জানেন। | بِاللَّهِ ١٠ إِنَّهُ سَمِيْعٌ عَلِيْرٌ | |
| ২০১. আল্লাহ তায়ালাকে যারা ভয় করে তাদের যদি | _ w s T ^ | |
| কখনো শয়তানের পক্ষ থেকে কুমন্ত্রণা স্পর্শ করে, তবে | ٢٠١ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّمُرُ طَيْفٌ مِّنَ | |
| তারা (সাথে সাথেই) আত্মসচেতন হয়ে পড়ে, তৎক্ষণাৎ | الشَّيْطٰنِ تَنَكَّرُواْ فَاذَا هُمْ مُّبْصِرُونَ ، | |
| তাদের চোখ খুলে যায়। | | |
| ২০২. তাদের (কাফের) ভাই-বন্ধুরা তাদের বিদ্রোহের পথেই টেনে নিয়ে যেতে চায়, অতপর তারা (চেষ্টার) | ٢٠٢ وَإِخْوَانُهُرْ يَهُنُّوْنَهُرْ فِي الْغَيِّ ثُرُّ لَا | |
| ारवर ८७८न । नरत ८५८७ छात्र, अख्यत्र खात्रा (८४८) त्र काला क्रिकेट करत्र ना । | ا يُقْصِرُونَ | |
| ২০৩. (আবার) যখন তুমি (কিছু দিন) তাদের কাছে | | |
| কোনো আয়াত এনে হাযির না করো, তখন তারা বলে, | ٢٠٣ وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِأَيَةٍ قَالُوا لَوْلَا | |
| ভালো হতো যদি তুমি নিজেই তেমন কিছু বেছে না | اجْتَبَيْتَهَا ﴿ قُلْ إِنَّهَا ۖ ٱتَّبِعُ مَا يُوْمِّي إِلَى ۗ | |
| নিতে! তুমি বলো, আমি তো তাই অনুসরণ করি যা আমার মালিকের কাছ থেকে আমার কাছে নাযিল হয়, | | |
| আর এ (কোরআন) হচ্ছে তোমাদের মালিকের কার্ছ | مِنْ رَبِّيْ عَ هٰنَ ا بَصَائِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُلِّي | |
| থেকে নাযিল করা (অন্তর্দৃষ্টিসম্পন্ন) নিদর্শন, যারা ঈমান | وَّرَحْمَةً لِقُومٍ يُوْمِنُونَ | |
| এনেছে (এ কিতাব) তাদের জন্যে হেদায়াত ও রহমত। | | |
| ২০৪. যখন (তোমার সামনে) কোরআন তেলাওয়াত করা হয় তখন (মনোযোগের সাথে) তা শোনো এবং নিস্কুপ | ٢٠٣ وَإِذَا تُوِئَ الْقُرْأَنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ | |
| থাকো, আশা করা যায় (এর ফলে) তোমাদের ওপর দয়া | وَ ٱنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ ثُوْمَهُوْنَ | |
| করা হবে। | | |
| ২০৫. (হে নবী,) তোমার মালিককে শ্বরণ করো মনে | ٢٠٥ وَ ا ذْكُو ۚ رَبُّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً | |
| মনে, সকাল-সন্ধ্যায় সবিনয়ে ও সশংক চিত্তে, অনুচ | وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْأَصَالِ | |
| স্বরের কথাবার্তা দিয়েও (তাঁকে তুমি শ্বরণ করো), | | |
| কখনো গাফেলদের দলে শামিল হয়ো না। | وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغَفِلِيْنَ | -10.5 6 7 6 7 6 7 6 7 6 7 6 7 6 7 6 7 6 7 6 |
| ২০৬. নিসন্দেহে যারা তোমার মালিকের একান্ত সান্নিধ্যে | ٢٠٦ إِنَّ الَّذِيْنَ عِنْنَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ | সা জ দা |
| আছে, তারা কখনো অহংকার করে তাঁর এবাদাত থেকে | | _ 3 |
| বিরত থাকে না, তারা তাঁর তাসবীহ করে এবং তাঁর জন্যে | عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُلُونَ عَ | ∫ \$€ |
| সাজদা করে। | \$0 | |
| সূরা আল আনফাল | سُوْرَةُ الْإَنْفَالِ مَنَ نِيَّةً | \sim |
| মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ৭৫, রুকু ১০ | أيَاتٍ : ٤٥ رُكُوْعٌ : ١٠ | |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | • . | |
| | بِشرِ اللهِ الرَّحْسُ ِ الرَّحِيْرِ | |
| ১. (হে মোহাম্মদ,) লোকেরা তোমার কাছে (যুদ্ধলব্ধ ও | ا يَشْنَلُوْنَكَ عَن الْإَثْفَالِ ، قُل الْإَثْفَالُ لِلَّهِ | |
| যুদ্ধে পরিত্যক্ত) অতিরিক্ত (মাল-সামান) সম্পর্কে (আল্লাহ | السيلونك عن الأنعال ومن الأنعال بنه | |
| ৮ সূরা আল আনফাল | মন্যিল ২ | |
| <u> </u> | | |

পারা ৯ কালাল মালাউ

তায়ালার হকুম) জানতে চাচ্ছে; তুমি (তাদের) বলো, (এ) অতিরিক্ত সম্পদ হচ্ছে (মূলত) আল্লাহ তায়ালার জন্যে এবং (তাঁর) রসূলের জন্যে, অতএব (এ ব্যাপারে) তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং (এ নির্দেশের আলোকে) নিজেদের মধ্যকার সম্পর্ক সংশোধন করে নাও, আল্লাহ তায়ালা এবং তাঁর রসূলের আনুগত্য করো, যদি তোমরা সত্যিকার (অর্থে) মোমেন হয়ে থাকো।

وَالرَّسُوْلِ ۽ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاَمْلِحُوْا ذَاسَ بَيْنِكُمْ م وَاطِيْعُوا اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ ۚ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنِيْنَ

২. মোমেন তো হচ্ছে সেসব লোক, (যাদের) আল্লাহ তায়ালাকে শ্বরণ করানো হলে তাদের হৃদয় কম্পিত হয়ে ওঠে এবং যখন তাদের সামনে তাঁর আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হয়, তখন তাদের ঈমান বৃদ্ধি পায় এবং তারা (সব সময়) তাদের মালিকের ওপর নির্ভর করে।

مَ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّنِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتُ تُلُوبُهُرُ وَإِذَا تُلِيَتُ عَلَيْهِرُ أَيْتُهُ زَادَتْهُرْ إِيْمَانًا وَعَلَى رَبِّهِرْ يَتَوَكَّلُونَ عَدِ

৩. যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে এবং আমি তাদের যা কিছু (অর্থ-সম্পদ) দান করেছি তা থেকে তারা (আমারই পথে) খরচ করে।

النويش يُقِيْمُونَ الصَّلُوةَ وَمِمَّا رَزَقْنُهُرْ
 يُنفِقُونَ مَ

8. (মূলত) এ (গুণসম্পন্ন) লোকগুলোই হচ্ছে সত্যিকার মোমেন, তাদের মালিকের কাছে তাদের জ্বন্যে (বিপুল) মর্যাদা, ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা (-র ব্যবস্থা) রয়েছে। ٣ أُولَيْكَ هُرُ الْهُؤْمِنُونَ حَقَّا مَ لَهُرْ دَرَجُكَ عِنْنَ رَبِّهِرْ وَمَغْفِرةً وَرِزْقُ كَرِيْرٌ ع

৫. (সেভাবেই তোমাদের বের হওয়া উচিত ছিলো) যেভাবে তোমার মালিক তোমাকে তোমার বাড়ী থেকে বের করে এনেছেন, অথচ (তখনও) মোমেনদের একদল লোক (ছিলো এ কাজের দারুন অপছন্দকারী।

۵ كَمَا ۗ أَعْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ ۖ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ مِنْ وَالْكَوِّ مِنْ وَالْكَوِّ مِنْ وَالْمُوْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ لَكْرِمُوْنَ لا

৬. সত্য (তোমার কাছে) প্রকাশিত হওয়ার পরও এরা তোমার সাথে বিতর্কে লিপ্ত হচ্ছে, (মনে হচ্ছিলো) তারা যেন দেখতে পাচ্ছিলো, ধীরে ধীরে মৃত্যুর দিকেই তাদের ঠেলে দেয়া হচ্ছে।

৭. (শ্বরণ করো,) যখন আল্লাহ তায়ালা তোমাদের প্রতিশ্রুণতি দিচ্ছিলেন- দুটি দলের মধ্যে একটি দল তোমাদের (করায়ন্ত) হবে, (অবশ্য) তোমরা (তখন) চাচ্ছিলে (দুর্বল ও) নিরম্ভ দলটিই তোমাদের (করায়ন্ত) হোক, অথচ আল্লাহ তায়ালা তাঁর 'কথা' দারা সত্য প্রতিষ্ঠিত করতে চাচ্ছিলেন এবং (এর মাঝ দিয়ে তিনি) কাফেরদের শেকড় কেটে (তাদের নির্মূল করে) দিতে চেয়েছিলেন,

وَإِذْ يَعِن كُرُ اللَّهُ إِحْنَى الطَّانِفَتَيْنِ أَنَّهَا
 لَكُر وَتَوَدَّوْنَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ
 لَكُر وَيُوِيْنُ اللَّهُ أَنْ يَّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ
 وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكُفِوِيْنَ لا

৮. (এর উদ্দেশ্য ছিলো) সত্যকে যেন (তার) সত্য দিয়ে প্রতিষ্ঠিত করা যায় এবং বাতিলকে যাতে করে (বাতিলের মতোই) নির্মূল করা যায়, যদিও পাপিষ্ঠরা (একে) পছন্দ করেনি।

^ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبُطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْهُجُرِمُوْنَ ع

৯. (খারো দরণ করো,) যখন তোমরা তোমাদের মালিকের কাছে (কাতর কঠে) ফরিয়াদ পেশ করছিলে, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ফরিয়াদ কবুল করেছিলেন এবং বলেছিলেন, হাঁ, আমি তোমাদের (এ যুদ্ধের ময়দানে) পর পর এক হাজার ফেরেশতা পাঠিয়ে সাহায্য করবো।

٩ إِذْ تَسْتَغِيثُوْنَ رَبَّكُرْ فَاسْتَجَابَ لَكُرْ أَنِّي مُونَّكُرْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَٰئِكَةِ مُوْدِفِيْنَ
 مُونَّكُرْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَٰئِكَةِ مُوْدِفِيْنَ

১০. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের শুভ সংবাদ দেয়া ও তা দিয়ে তোমাদের মনকে প্রশাস্ত করার উদ্দেশেই এটা ١٠ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ

৮ সুরা আল আনফাল

590

বলেছিলেন, (নতুবা আসল) সাহায্য তো আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই আসে; নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা পরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাবান । قُلُوْبُكُرْ عَ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ﴿ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَّ إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِنَا إِنَا إِنَّ إِنَا إِن

১১. (আরো স্মরণ করো,) যখন আল্লাহ তায়ালা তাঁর নিজের পক্ষ থেকে তোমাদের নিরাপত্তা ও স্বন্তির জন্যে তোমাদের তন্ত্রায় আচ্ছন্ন করে দিয়েছেন এবং তোমাদের ওপর তিনি আকাশ থেকে বৃষ্টির পানি নাযিল করেছেন, উদ্দেশ্য ছিলো এ (পানি) দ্বারা তিনি তোমাদের ধুয়ে পাক-সাফ করবেন, তোমাদের মন থেকে শয়তানের অপবিত্রতা দূর করবেন, তোমাদের মনে সাহস বৃদ্ধি করবেন, (সর্বোপরি যুদ্ধের ময়দানে) তিনি এর মাধ্যমে তোমাদের কদম ময়বুত করবেন।

اا إِذْ يُغَشِّيْكُرُ النَّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُرْ بِهِ عَلَيْكُرْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيعَلَقِرَكُرْ بِهِ وَيُنْهِبَ عَنْكُرْ رِجْزَ الشَّيْطٰي وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُرْ وَيُثَرِّبَ بِهِ الْأَقْلَاا) ،

১২. (তাও স্বরণ করো,) যখন তোমার মালিক ফেরেশতাদের কাছে ওহী পাঠিয়ে বললেন, আমি তোমাদের সাথেই আছি, অতএব তোমরা মোমেনদের সাহস দাও (তাদের কদম অবিচল রাখো); অচিরেই আমি কাফেরদের মনে দারুণ এক ভীতির সঞ্চার করে দেবো, অতএব তোমরা (তাদের) যাড়ের ওপর আঘাত হানো এবং তাদের (হাড়ের) প্রত্যেক জোড়ায় জোড়ায় আঘাত করো।

۱۲ إِذْ يُوْحِى رَبُّكَ إِلَى الْمَلَّئِكَةِ أَنِّى مَعَكُر فَتَبِّتُوا الَّذِينَ أَمَنُوا ﴿ سَأَلُقِى فِى مَعَكُر فَتَبِّتُوا الَّذِينَ كَفَرُوا الرَّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْإَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُر كُلَّ بَنَانٍ ﴿

১৩. এ (কাজ)-টা এ কারণে যে, এরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের বিরুদ্ধে মোকাবেলায় নেমেছে, আর যারাই এভাবে আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের বিরোধিতা করে (তাদের জানা উচিত), আল্লাহ তায়ালা আযাব দানে অত্যন্ত কঠোর।

الله وَرَسُولَه وَ وَمَن الله وَرَسُولَه وَ وَمَن الله وَرَسُولَه وَمَن الله وَرَسُولَه وَمَن يُشَاتِق الله شَرِين الله شَرين الله شَرين الله شَرين العقاب العقاب العقاب المعقاب المعقاب

১৪. (হে কাফেররা,) এ হচ্ছে তোমাদের (যথার্থ পাওনা), অতপর (ভালো করে) তোমরা এর স্বাদ গ্রহণ করতে থাকো, কাফেরদের জন্যে দোযখের (ভয়াবহ) আযাব তো রয়েছেই।

١٣ ذٰلِكُم ْ فَنُ وْقُوْهُ وَ أَنَّ لِلْكَٰفِرِيْنَ عَلَاابَ النَّارِ

১৫. হে মোমেন বান্দারা, তোমরা যখন যুদ্ধের ময়দানে কাফেরদের মুখোমুখি মোকাবেলা করবে, তখন কখনো পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে না। ১৬. (জেনে রেখো,) এ (যুদ্ধের) দিন যে ব্যক্তি তার পৃষ্ঠ
প্রদর্শন করবে, সে অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার গজব অর্জন
করবে, তবে যুদ্ধের কৌশল হিসেবে কিংবা (নিজ)
বাহিনীর সাথে মিলিত হবার উদ্দেশ্য ছাড়া (যদি কেউ
এমনটি করে তাহলে), তার জন্যে জাহান্নামই হবে একমাত্র
আশ্রয়স্থল; আর জাহান্নাম সত্যিই নিকৃষ্ট জায়গা।

١٦ وَمَن يُّولِّهِم يَوْمَنِنٍ دُبُرَةٌ إلَّا مُتَحَرِّفًا لِيَّا مُتَحَرِّفًا لِيَّالٍ أَوْ مُتَحَرِّفًا لِيَّالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إلى فِئةٍ فَقَلْ بَاءً بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَمَا وَهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
 مِّنَ اللهِ وَمَا وَهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

১৭. (যুদ্ধে যারা নিহত হয়েছে) তাদের তোমরা কেউই হত্যা করোনি, বরং আল্লাহ তায়ালাই তাদের হত্যা করেছেন, আর তুমি যখন (তাদের প্রতি) তীর নিক্ষেপ করছিলে, (মূলত) তুমি নিক্ষেপ করোনি বরং করেছেন আল্লাহ তায়ালা স্বয়ং, যেন তিনি নিজের থেকে মোমেনদের উত্তম পুরস্কার দান করে (তাদের বিজয়) দিতে পারেন, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) শোনেন এবং (সব কিছু) জানেন।

ا فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ م وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللَّهَ رَمٰى ع وَلَيْبَلِيَ اللَّهَ رَمٰى ع وَلِيبْلِيَ الْهُوْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ع إِنَّ اللَّهَ سَمِيْعٌ عَلِيمٌ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৯ ক্লোল মালাউ |
|--|---|
| ১৮. এটা হচ্ছে তোমাদের (ব্যাপারে তাঁর নীতি), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা কাম্কেরদের ষড়যন্ত্র দুর্বল করে দেন। | ١٨ ذٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوْمِنُ كَيْلِ الْكُغِرِيْنَ |
| ১৯. (হে কাফেররা,) তোমরা একটা সিদ্ধান্ত চেয়েছিলে, হাঁ, (আজ) সে সিদ্ধান্ত (-কর মুহূর্তটি) তোমাদের সামনে | ١٩ إِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَلْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ ، وَإِنْ |
| এসে গেছে, যদি এখনও তোমরা (যুদ্ধ থেকে) বিরত হতে চাও, তাহলে তা তোমাদের জন্যে কল্যাণকর হবে, | تَنْتَهُوْا فَهُوَ هَيْرٌ لَّكُرْ مِ وَإِنْ تَعُوْدُوا نَعُنْ مِ |
| তোমরা যদি (আবার যুদ্ধের জন্যে) ফিরে আসো, তাহলে আমরাও (ময়দানে) ফিরে আসবো, আর তোমাদের | وَلَنْ تُغْنِي عَنْكُر فِئَتُكُر شَيْئًا وَّلَوْ كَثُونَ ١ |
| বাহিনী সংখ্যায় যতোই বেশী হোক না কেন তা তোমাদের কোনোই উপকারে আসবে না, (কারণ) আল্লাহ তায়ালা ঈমানদারদের সাথেই রয়েছেন। | وَأَنَّ اللَّهُ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ع |
| ২০. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করো, কখনো তাঁর কাছ থেকে | ٢٠ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ |
| মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না, (বিশেষ করে) যখন তোমরা (সব কিছু) শুনতেই পাচ্ছো। | وَلا تَوَلُّوا عَنْهُ وَ اَنْتُر تَسْهَعُونَ ع لــ |
| ২১. তোমরা তাদের মতো হয়ো না যারা (মুখে) বলে, হাঁ, আমরা (নবীর কথা) শোনলাম, কিন্তু তারা আসলে কিছুই শোনে না। | ٢١ وَلَا تَكُوْنُوا كَالَّانِيْنَ قَالُوا سَبِعْنَا وَهُر لَا يَسْبَعُونَ وَهُر لَا |
| | _ |
| ২২. আল্লাহ তায়ালার কাছে (তাঁর সৃষ্টির) নিকৃষ্টতম জীব হচ্ছে সেই বধির ও মৃক (মানুষগুলো), যারা (সত্য দ্বীন | ٢٢ إِنَّ شَرَّ النَّوَابِ عِنْنَ اللَّهِ الصَّرُّ |
| সম্পর্কে) কিছু বুঝে না। | الْبُكْرُ الَّانِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ |
| ২৩. আল্লাহ তায়ালা যদি জানতেন, এদের ভেতর (সামান্য) কোনো ভালো (গুণও) অবশিষ্ট আছে, তাহলে | ٢٣ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمِرْ خَيْرًا لَّاشْهَعَهُمْ ا |
| তিনি তাদের অবশ্যই (হেদায়াতের কথা) শোনাতেন; (অবশ্য) তিনি তাদের শোনালেও তারা তাকে উপেক্ষাই করতো এবং অন্যদিকে ফিরে যেতো। | وَلَوْ اَسْبَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ شَعْرِ ضُوْنَ |
| ২৪. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ডাকে সাড়া দাও যখন তিনি তোমাদের | ٢٣ يَآيَّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلَّهِ |
| এমন কিছুর দিকে ডাকেন যা তোমাদের সত্যিকার অর্থে জীবন দান করবে, (এ কথাটা) জেনে রেখো, আল্লাহ | وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُر لِهَا يُحْيِيكُر عَ |
| তায়ালা মানুষ ও তার হৃদয়ের মাঝামাঝি স্থানে অবস্থান | وَاعْلَمُوْا ۗ أَنَّ اللَّهُ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَتَلْبِهِ |
| গ্রহণ করেন; (আবার) তোমাদের সবাইকে তাঁর কাছেই জড়ো করা হবে। | وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ |
| ২৫. তোমরা (আল্লাহদ্রোহিতার) সেই ফেতনা থেকে বেঁচে থাকো, যার ভয়াবহু শুস্তি– যারা তোমাদের মধ্যে যালেম | ٢٥ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَى الَّذِينَ طَلَهُوا |
| শুধু তাদের মধ্যেই সীমাবদ্ধ থাকবে না, আরো জেনে রাখো, আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত কঠোর শান্তি প্রদানকারী। | مِنْكُرُ غَامَاتًا وَ أَعْلَهُوا أَنَّ اللَّهَ شَرِيْكُ الْعِقَابِ |
| ২৬. শ্বরণ করো, যখন তোমরা (সংখ্যায়) ছিলে (নিতান্ত) কম, (এই) যমীনে তোমাদের মনে করা হতো তোমরা | ٢٦ وَاذْكُرُو ٓ إِذْ اَنْتُر قَلِيْلٌ مُّسْتَفْعَفُوْنَ فِي |
| অত্যন্ত দুর্বল, তোমরা সর্বদাই এ ভয়ে (আত্তিত) থাকতে যে, কখন (অন্য) মানুষরা তোমাদের ওপর চড়াও হবে, অতপর আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (একটি ভূখন্ডে এনে) | الارضِ تخافون ان يتخطفكر الناس |
| আশ্রয় দিলেন, তাঁর (একার) সাহায্য দিয়ে তিনি তোমাদের শক্তিশালী করলেনু এবং তিনি এ আশায় তোমাদের | |
| (বহুবিধ) উত্তম জিনিস দান করলেন যে, তোমরা (আল্লাহর এসব নেয়ামতের) শোকরু আদায় করবে। | الطَّيِّاٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ |
| ৮ সূরা আল আনফাল | মন্যিল ২ |

পারা ৯ কালাল মালাউ

২৭. হে ঈমানদার বান্দারা, তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও (তাঁর) রস্লের সাথে কখনো বিশ্বাসঘাতকতা করো না এবং জেনে-শুনে নিজেদের আমানতেরও খেয়ানত করো না।

٢٤ يَانَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمنُوا لاَ تَخُونُوا اللهَ وَالرَّسُولَ وَانْتُر وَاللهَ وَاللهَ وَالرَّسُولَ وَانْتُر وَالنَّمُ وَالنَّامُ وَالنَّمُ وَالنَّامُ وَالنَّمُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالنَّمُ وَالنَّامُ وَالنَامُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالْمُوالِمُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالنَّامُ وَالْمُوالِمُ وَالْمُوالِمُ وَالنَّامُ وَالْمُوالِمُ وَالْمُوالِمُ وَالْمُوالِمُ لَالْمُوالِمُ لَالْمُوالِمُ لَالْمُوالِمُ لَا اللَّهُ الْمُؤْمِولُوا اللَّهُ الْمُؤْمُ وَالْمُوالِمُوالْمُوالِمُ لَا اللَّالَامُ اللّٰذِي وَالْمُوالِمُ اللَّالَالَّامُ اللَّالَّامُ الْمُو

২৮. জেনে রেখো, তোমাদের মাল-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি হচ্ছে (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) পরীক্ষামাত্র, (যে এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হবে) তার জন্যে আল্লাহ তায়ালার কাছে মহা প্রতিদান রয়েছে। ٢٨ وَاعْلَمُوا ۗ أَتَّمَا ۗ أَمُوالُكُم وَاَوْلَادُكُمُ وَاَوْلَادُكُمُ فَانْتَةً لا وَّاَنَّ اللهِ عِنْكَةً اَجْرًا عَظِيْمً عَ

২৯. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমরা যদি আল্লাহকে ভয় করে চলো, তাহলে তিনি তোমাদের জন্যে (অন্যদের সাথে) পার্থক্য নির্ণয়কারী (কিছু স্বতন্ত্র মর্যাদা) দান করবেন, তিনি তোমাদের গুনাহসমূহ মিটিয়ে দেবেন, তিনি তোমাদের ক্ষমা করে দেবেন; আল্লাহ তায়ালার দান (আসলেই) অনেক বড়ো।

٢٩ يَّايَّهَا الَّٰنِيْنَ أَمَنُوْآ إِنْ تَتَّقُوا اللهَ يَجْعَلُ لَّكُرْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُرْ سَيِّاٰتِكُرْ وَيَغْفِرْ لَكُرْ ﴿ وَاللهُ ذُوالْفَضْلِ الْعَظِيْرِ

৩০. (শ্বরণ করো,) যখন কাফেররা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করছিলো, তারা তোমাকে বন্দী করবে অথবা তোমাকে হত্যা করবে কিংবা তোমাকে (আপন ভূমি থেকে) নির্বাসিত করে দেবে; (এ সময় একদিকে) তারা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করছিলো, (আরেক দিকে) আল্লাহ তায়ালাও (তোমার পক্ষে) কৌশল চালিয়ে যাছিলেন; আর আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সর্বোৎকৃষ্ট কুশলী।

٣٠ وَإِذْ يَهْكُو بِكَ النَّابِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ أَوْ يَقْتُلُوْكَ أَوْ يُخْرِجُوْكَ ﴿ وَيَهْكُرُوْنَ وَيَهْكُو الله ﴿ وَالله خَيْرُ الْهٰكِرِيْنَ

৩১. যখন তাদের সামনে আমার কোনো আয়াত পড়ে শোনানো হতো, তখন তারা বলতো, (হাঁ) আমরা একথা (আগেও) শুনেছি, আমরা চাইলে এ ধরনের কথা তো নিজেরাও বলতে পারি, এগুলো তো আগের লোকদের উপকথা ছাড়া আর কিছু নয়।

٣ وَإِذَا تُتَلَٰى عَلَيْهِمْ أَيْتُنَا قَالُوْا قَنْ سَهِعْنَا لَوْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ

৩২. তারা যখন বলেছিলো, হে আল্পাহ তায়ালা, (মোহাম্মদের আনীত) কেতাব যদি তোমার কাছ থেকে পাঠানো সত্য হয়, তাহলে (একে অমান্য করর করণে) তুমি আমাদের ওপর আসমান থেকে পাথর বর্ষণ করো, কিংবা তুমি আমাদের ওপর কোনো কঠিন শান্তি পাঠিয়ে দাও।

٣٢ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُرَّ إِنْ كَانَ هٰنَا هُوَ الْحَقَّ مِنَ عَنْهَا هُوَ الْحَقَّ مِنَ عِنْهِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَّاءِ أَوِ اثْتِنَا بِعَنَابٍ الِيْمِ

৩৩. আল্লাহ তায়ালা এমন নন যে, তিনি তাদের কোনো আযাব দেবেন, অথচ তুমি (সশরীরে) তাদের মধ্যে (বর্তমান) রয়েছো; আর আল্লাহ তায়ালা এমনও নন যে, কোনো (ন্ধান্তির) মানুষদের তিনি শান্তি দেবেন, অথচ তারা (কিছুলোক) তখনও আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করছে।

٣٣ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَنِّبَهُرْ وَٱنْتَ فِيْهِرْ ﴿ وَانْتَ فِيهِرْ ﴿ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَلِّبَهُرْ وَهُرْ يَشْتَغْفِرُوْنَ

৩৪. কেনই বা আল্লাহ তায়ালা (-যারা কাফের) তাদের আযাব দেবেন না- যখন তারা আল্লাহর বান্দাদের মাসজিদুল হারামে আসার পথ থেকে নিবৃত্ত করে, অথচ তারা তো (এ ঘরের) অভিভাবকও নয়; এ ঘরের (আসল) অভিভাবক হচ্ছে তারা, যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে, কিন্তু তাদের অধিকাংশ মানুষই (এ কথাটা) জানে না।

٣٣ وَمَا لَهُمْ الَّا يُعَرِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُّدُونَ عَنِ الْهَ وَهُمْ يَصُّدُونَ عَنِ الْهَ وَهُمْ يَصُّدُونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْ آ اَوْلِيَاءَةً ، إِنْ اَوْلِيَا وَهُمْ كَانُوْ آ وَلْكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ وَلْكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

৮ সরা আল আনফাল

196

পারা ৯ ক্বালাল মালাউ

٥٥. (এ घरत्रत्र পाम्) जाप्मत्र (कारंकी यूरंगत्र) नामाय أَكَانَ صَلَاتُهُرُ عِنْنَ الْبَيْسِ إِلَّا مُكَاءً ٢٥ صَالَاتُهُمْ عِنْنَ الْبَيْسِ إِلَّا مُكَاءً তো কিছু শিস দেয়া ও তালি বাজানো ছাড়া আর কিছুই وَّتَصْرِيَةً ﴿ فَنُ وَقُوا الْعَنَ ابَ بِهَا كُنْتُر ((এ कातत्वर आज्ञार जाग्नाना जात्मत वनत्वन) كُنْتُر وَتَصْرِيَةً ﴿ فَنُ وَقُوا الْعَنَ ابَ بِهَا كُنْتُر وَتَصْرِيَةً ﴿ فَالْمَا عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ এখন তোমরা তোমাদের কুফরী কার্যকলাপের জন্যে শাস্তি ভোগ করো।

تَكْفُرُوْنَ

৩৬. যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করেছে এবং যারা নিজেদের ধন-সম্পদ (এ খাতেই) ব্যয় করেছে যে, (এর पूर्वाता) मानुषरमत जान्नार जात्रानात अथ त्थरक कितिरा لِيَصُنَّوُ ا عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ ﴿ فَسَيْنَفِقُونَهَا تُرَّ রাখবে; (এদের জন্যে তুমি ভেবো না,) এরা (এ পথে) ধন-সম্পদ আরো ব্যয় করতে থাকবে, অতপর একদিন সে (ব্যয় করা)-টাই তাদের জন্যে মনস্তাপের কারণ হবে, অতপর (দুনিয়ার জীবনেও) তারা পরাভূত হবে, আর যারা কুফরী করেছে আখেরাতে তাদের সবাইকে জাহান্নামের পাশে একত্রিত করা হবে।

٣٦ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالُهُمْ تَكُوْنُ عَلَيْهِـ ٛ حَسْرَةً ثُـرٌّ يُغْلَبُوْنَ ه وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْ اللِّي جَهَنَّيرَ يُحْشَرُوْنَ لا

৩৭. (এভাবেই) আল্লাহ তায়ালা ভালোকে খারাপ থেকে পৃথক করে দেবেন এবং খারাপগুলোর একটাকে وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضِ فَيَرْكُمَهُ عَلَى بَعْضِ فَيَرْكُمَهُ عَلَى بَعْضِ فَيَرْكُمَهُ عَالَمَ जातिक हो। করবেন; (মূলত) এ লোকগুলো সেদিন (ভীষণ) ক্ষতিগ্রন্ত مُوْرِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّرَ وَ أُولَئِكَ مُرُ হবে।

٣٤ لِيَعِيْزُ اللَّهُ الْخَبِيْنَ مِنَ الطَّيِّبِ الْعُسِرُوْنَ ع

৩৮. (হে মোহাম্মদ,) যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করেছে তাদের তুমি বলো, তারা যদি এ থেকে (এখনো) ফিরে আসে, তাহলে তাদের অতীতের সব কিছুই ক্ষমা করে দেয়া হবে, তবে যদি তারা (তাদের আগের কার্যকলাপের দিকে) ফিরে যায়, তাহলে তাদের (সামনে) আগের (জাতিসমূহের ভয়াবহ) পরিণামের দৃষ্টান্ত তো (মজুদ) রয়েছেই।

٣٨ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَّنْتَهُوا يُغْفَرُ لَهُمْ مًّا قَلْ سَلَفَ ج وَإِنْ يَتَّعُوْدُوْ ا فَقَلْ مَضَ الْأُوَّلِيْنَ

৩৯. (হে ঈমানদার লোকেরা,) তোমরা কাফেরদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে থাকো, যতোক্ষণ না (আল্লাহর الرِّينَ كُلَّهُ لِلَّهِ عَ فَإِنِ انْتَهُواْ فَإِنَّ اللَّهَ بِهَا अभीत कू कतीत) रक्षा वाकी शाकरव वावर बीन الرِّينَ كُلَّهُ لِلَّهِ عَ فَإِنِ انْتَهُواْ فَإِنَّ اللَّهَ بِهَا সম্পূর্ণভাবে আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (নির্দিষ্ট) হয়ে যাবে, (হাঁ,) তারা যদি (কুফুর থেকে) নিবৃত্ত হয়, তাহলে আল্লাহ তায়ালাই হবেন তাদের কার্যকলাপের পর্যবেক্ষণকারী।

٣٩ وَقَاتِلُوْهُرْ حَتَّى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةً وَّيَكُوْنَ يَعْمَلُونَ بَصِيْرُ

৪০. (এসব কিছু সত্ত্বেও) যদি তারা সত্য থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে তোমরা জেনে রাখো, আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন তোমাদের অভিভাবক, কতো উত্তম অভিভাবক আল্লাহ তায়ালা; কতো উত্তম সাহায্যকারী (তিনি)!

٣٠ وَإِنْ تَوَلُّوا فَاعْلَهُوْآ أَنَّ اللَّهَ مَوْلُنكُرْ نِعْرَ الْمَوْلَى وَنِعْرَ النَّصِيْرُ

৮ সুরা আল আনফাল

299

মন্যিল ২

২৩

8১. (হে মোমেনরা,) তোমরা জেনে রেখো, যুদ্ধে যে সম্পদ তোমরা অর্জন করেছো, তার এক পঞ্চমাংশ আল্লাহ তায়ালার জন্যে, রস্লের জন্যে, (তাঁর) স্বজনদের জন্যে, এতীমদের জন্যে, মেসকীনদের জন্যে ও পথচারী মোসাফেরদের জন্যে, তোমরা যদি আল্লাহতে বিশ্বাস করো, (আরো) বিশ্বাস করো সে (বিজয়ঘটিত) বিষয়টির প্রতি, যা আমি হক ও বাতিলের চূড়ান্ত মীমাংসার দিন এবং একে অপরের মুখোমুখি হবার দিন আমার বান্দার ওপর নাযিল করেছিলাম; আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন সর্ববিষয়ের ওপর একক ক্ষমতাবান।

৪২. (যুদ্ধক্ষেত্রে) তোমরা ছিলে উপত্যকার নিকট প্রান্তে, তারা ছিলো দূর প্রান্তে, আর (কোরায়শ) কাফেলা ছিলো তোমাদের তুলনায় নিম্নভূমিতে; যদি তোমরা আগেই (এ ব্যাপারে) তাদের সাথে কোনো (অমিম চুক্তির) সিদ্ধান্ত করতে চাইতে, তাহলে এ সিদ্ধান্ত বান্তবায়নে তোমরা অবশ্যই মতবিরোধ করতে, কিন্তু আল্লাহ তায়ালা তাই ঘটাতে চেয়েছিলেন যা ঘটানো আল্লাহ তায়ালার মনবুর ছিলো (এ জন্যেই তিনি উভয় দলকে রণক্ষেত্রে সামনাসামনি করালেন, যাতে করে), যে দলটি ধ্বংস হবে সে যেন সত্য (মিথ্যা) স্পষ্ট হওয়ার পরই ধ্বংস হয়, আবার যে দলটি বেঁচে থাকবে সেও যেন সত্যাসত্য প্রমাণের ভিত্তিতেই বেঁচে থাকে; নিশ্রুই আল্লাহ তায়ালা সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

৪৩. (আরো শ্বরণ করো,) আল্লাহ তায়ালা তোমাকে যখন
স্বপ্নে তাদের সংখ্যা কম দেখিয়েছিলেন, (তখন) যদি
তিনি তোমাকে তাদের সংখ্যা বেশী দেখাতেন তাহলে
অবশ্যই তোমরা সাহস হারিয়ে ফেলতে এবং এ বিষয়ে
তোমরা একে অপরের সাথে বিতর্ক শুরু করে দিতে, কিন্তু
আল্লাহ তায়ালা (এটা না করে তোমাদের) নিরাপদ করে
দিয়েছেন; কেননা তিনি মানুষের অস্তরে যা কিছু (পৃকিয়ে)
থাকে সে সম্পর্কে সম্যুক ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

88. (সে সময়ের কথাও শ্বরণ করো,) যখন তোমরা (যুদ্ধের ময়দানে) তাদের সামনাসামনি হলে, তখন তোমাদের চোখে তাদের (সংখ্যা) আল্পাহ তায়ালা (নিতান্ত) কম (করে) দেখালেন এবং তাদের চোখেও তিনি তোমাদের (সংখ্যা) দেখালেন কম (এর উদ্দেশ্য ছিলো), যেন আল্পাহ তায়ালা তাই ঘটিয়ে দেখান যা কিছু তিনি (এ ঘটনার মাধ্যমে) ঘটাতে চান; (কেননা) আল্পাহ তায়ালার দিকেই সব কিছুকে ফিরে যেতে হবে।

৪৫. হে ঈমানদার লোকেরা, কোনো বাহিনীর সাথে যখন তোমরা সামনাসামনি হও, তখন ময়দানে অবিচল থাকবে এবং (বিজয়ের আসল উৎস) আল্লাহ তায়ালাকে বেশী বেশী করে শ্বরণ করতে থাকবে, আশা করা যায় তোমরা সাফল্য লাভ করতে পারবে।

৪৬. তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের আনুগত্য করো, নিজেদের মধ্যে পরম্পর ঝগড়া-বিবাদ করো না, ٦٦ وَاعْلُمُواْ انَّهَا غَنِهْتُمْ أَنْ شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ

خُهُسةً وَلِلرَّسُوْلِ وَلِنِى الْقُرْبَى وَالْيَتَهَى وَالْيَتَهَى وَالْيَتَهَى وَالْهَبَيْلِ لا إِنْ كُنْتُر وَالْهَسْكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ لا إِنْ كُنْتُر امْنْتُرْ بِاللَّهِ وَمَا آنْزَلْنَا عَلَى عَبْرِنَا يَوْا الْفُرْقَانِ يَوْاً الْتَقَى الْجَهْعَٰنِ وَ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ

٣٣ إِذْ أَنْتُرْ بِالْعُنْوَةِ النَّنْيَا وَهُرْ بِالْعُنْوَةِ النَّقُصُونُ لَا فَلْكِنْ تَوْاَعَنْ تَبْرُ لَا خَتَلَقْتُرْ فِي الْمِيْعُلِ لا وَلٰكِنْ لِيَقْضِى اللَّهُ آمُرًّا كَانَ مَفْعُولًا لا لِيَهُلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيْحَيٰى مَنْ هَى عَنْ عَنْ مَنْ هَا عَنْ عَنْ الله لَسَمِيْعٌ عَلِيْرً لا

٣٣ إِذْ يُوِيْكُمُرُ اللَّهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ، وَلَوْ اَرْدَكُمُرُ كَتَنَازَعْتُرُ فِي وَلَوْ اَرْدَكُمُرُ كَتَنَازَعْتُرُ فِي الْاَمْ مَلْرَ ، إِنَّهُ عَلِيْرٌ اللَّهَ سَلَّرَ ، إِنَّهُ عَلِيْرٌ الِنَّاسِ الشَّهُ وَر

٣٥ يَأَيَّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْآ إِذَا لَقِيْتُرْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُرْ تُفْلِحُوْنَ ء

٣٦ وَٱطِيْعُوا اللَّهَ وَرَسُوْلَهٌ وَلَا تَنَازَعُوْا

৮ সূরা আল আনফাল

396

অন্যথায় তোমরা সাহস হারিয়ে ফেলবে এবং তোমাদের প্রতিপত্তি খতম হয়ে যাবে, তোমরা ধৈর্য ধারণ করো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ধৈর্যশীলদের সাথে রয়েছেন।

فَتَفْشَلُوا وَتَنْهَبَ رِيْدُكُمْ وَاصْبِرُوا مِ إِنَّ الله مَعَ الصِّبريْنَ ع

৪৭. তোমরা (কখনো) তাদের মতো হয়ো না. যারা অহংকার ও লোকদের (নিজেদের শান-শওকত) দেখানোর জন্যে নিজেদের ঘর থেকে বেরিয়ে এসেছে এবং সাধারণ মানুষদের যারা আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে ফিরিয়ে রাখে: (মূলত) তাদের সমুদয় কার্যকলাপই আল্লাহ তায়ালা পরিবেষ্টন করে আছেন।

٣٠ وَلَا تَكُوْنُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُنُّونَ عَنْ سَبِيْلِ الله ، وَاللَّهُ بِهَا يَغْهَلُوْنَ مُحَيْطً

৪৮, যখন শয়তান তাদের কাজগুলোকে তাদের সামনে খুব চাকচিক্যময় করে পেশ করেছিলো এবং সে তাদের বলেছিলো, আজ মানুষের মধ্যে কেউই তোমাদের ওপর বিজয়ী হতে পারবে না এবং আমি তো তোমাদের পাশেই আছি, অতপর যখন উভয় দল সম্বখসমরে ঝাঁপিয়ে পড়লো, তখন সে কেটে পড়লো এবং বললো, তোমাদের সাথে আমার কোনোই সম্পর্ক নেই, আমি এমন কিছ مَا لاَ تَرَوْنَ إِنِّيَ أَغَانُ اللهُ وَ اللَّهُ شَرِيْنَ كُونَ إِنِّي مَ أَغَانُ اللَّهُ وَ اللَّهُ شَرِيْنَ আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করি এবং (আমি জানি) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন কঠোর শান্তিদাতা।

٨٧ وَإِذْ زَيِّنَ لَهُمُ الشَّيْطِي أَعْمَالُهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُرُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ إِنِّيْ جَارٌّ لَّكُمْ ۚ عَلَمَّا تَرَاءَ سِ الْفِئَدِّي نَكُسَ عَلَى عَقِبَيْدِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيْءٌ مِّنْكُرْ إِنِّيْ ٓ أَرٰى الْعقَابِ ع

৪৯. মোনাফেক ও তাদের দলবল- যাদের দিলে (গোমরাহীর) ব্যাধি রয়েছে, যখন তারা বললো, এ লোকদের (মূলত) তাদের (নতুন) দ্বীন (মারাত্মকভাবে) প্রতারিত করে রেখেছে: (সত্য কথা হচ্ছে) যে কোনো ব্যক্তিই (বিপদে-আপদে) আল্লাহ তায়ালার ওপর ভরসা করে (সে বুঝতে পারবে), আল্লাহ তায়ালা প্রবল পরাক্রান্ত ও প্রজ্ঞাময়।

٣٩ اذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي مُهُمْ مُرْضٌ غُرِ هُوْلاًء دِيْنَهُمْ وَوَمَنَ يَّتُوكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيْزٌ حَكِيْرٌ

৫০. তুমি যদি (সত্যিই) সেই (করুণ) অবস্থা দেখতে পেতে, যখন আল্রাহর ফেরেশতারা কাফেরদের রূহ বের করে নিয়ে যাচ্ছিলো, ফেরেশতারা (ডখন) তাদের মুখমন্ডল ও পষ্ঠদেশে (ক্রমাগত) আঘাত করে যাচ্ছিলো (এবং ডারা কাছিলা), তোমরা আগুনের আযাব উপভোগ করো।

الْمَلَّئِكَةُ يَضْرِبُونَ وَجُوْمَهُمْ وَٱدْبَارَهُمْ ع وَذُوْتُوا عَنَابَ الْعَرِيْق

٥٠ وَلَوْ تَرْى إِذْ يَتَوَفِّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا

৫১. (ফ্রন্ড) এটা হচ্ছে তোমাদের নিজেদেরই উভয় হাতের কামাই, যা তোমরা (আগেই এখনে) পাঠিয়েছিলো, আল্লাহ তায়ালা কখনো তাঁর বান্দার ওপর যুলুম করেন না

٥١ ذٰلِكَ بِهَا قَلَّمَتْ آيُدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّا ۗ لِّلْعَبِيْنِ لا

৫২. (এদের পরিণতি হবে.) ফেরাউনের আপনজ্ঞন ও তাদের ^ পূর্ববর্তী কাফেরদের মতোই: তারা সবাই আল্লাহ তায়ালার আয়াতকে অস্বীকার করেছে. ফলে তাদের গুনাহের দরুন আল্লাহ তায়ালা তাদের পাকড়াও করলেন: নিক্যুই আন্তাহ তায়ালা শক্তিশালী ও কঠোর শান্তিদানকারী।

٥٢ كَنَ أَبِ أَلِ فِرْعَوْنَ لا وَالَّذِيْنَ مِنْ تَبْلِهِمْ ، كَفَرُوا بِالنِّسِ اللَّهِ فَآغَنَهُمُ اللَّهُ بِنُ نُوْبِهِمْ مِ إِنَّ اللَّهُ قَوِيٌّ شَنِيْنُ الْعِقَابِ

৫৩. এটা এ কারণে যে, আল্লাহ তায়ালা যখন কোনো জাতিকে কোনো নেয়ামত দান করেন, তিনি ততাক্ষণ পর্যন্ত তাঁর সে নেয়ামত (তাদের জন্যে) বদলে দেন না. যতোক্ষণ না তারা নিজেরা নিজেদের অবস্থার পরিবর্তন করে, নিচয়ই আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) শোনেন, (সব কিছু) জ্ঞানেন,

٥٣ ذٰلكَ بأنَّ اللَّهَ لَمِ يَكُ مُغَيِّرًا نَّعْهَةً ٱنْعَبَهَا عَلَى قَوْمٍ مَتَّى يُغَيِّرُوْ مَا بِٱنْفُسِمِرُ لا وَأَنَّ اللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيْرٌ لا

৮ সুরা আল আনফাল

አዋል

৫৪. (এরাও হচ্ছে) ফেরাউন, তার স্বজন ও তাদের আগের লোকদের মতো: আল্লাহর আয়াতকে তারা (সরাসরি) মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে, ফলে আমি তাদের (কুফরীর) অপরাধের জন্যে তাদের ধ্বংস করে দিয়েছি এবং ফেরাউনের স্বজনদের আমি ডুবিয়ে দিয়েছি, (মূলত) তারা সবাই ছিলো যালেম :

٥٣ كَنَ أَبِ أَلِ فِرْعَوْنَ لِوَ النَّذِينَ مِنْ
 « كَالَ بَوْ إِلَيْكِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكُنهُمْ وَ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا بِنُ نُوْبِهِمْ وَ أَغْرَقْنَا إِلَ فِرْعَوْنَ ء وَ كُلَّ كَانُوْ إ

৫৫. নিক্যাই (আল্লাহর এ) যমীনে (বিচরণশীল) জীবের মধ্যে আল্লাহর কাছে নিকৃষ্টতম হচ্ছে তারা, যারা (স্বয়ং এ যমীনের স্রষ্টাকেই) অস্বীকার করে এবং তারা (তাঁর ওপর) ঈমান আনে না।

٥٥ إِنَّ شَرُّ النَّوَآبِ عِنْنَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمِرُ لَا يُؤْمِنُونَ صيع

৫৬. (তারাও এ নিকৃষ্ট লোকদের অন্যতম,) যাদের সাথে তুমি (বাকায়দা) সন্ধিচুক্তি স্বাক্ষর করেছো, অতপর তারা প্রতিবার সুযোগ পেয়েই সে চুক্তি ভংগ করেছে এবং (এ ব্যাপারে) তারা (কাউকেই) পরোয়া করেনি।

عَهْنَ هُرُ فِي كُلُّ مَوَّةً وَهُرُ لَا يَتَّقُونَ

এমনভাবে শান্তি দেবে, যাতে তাদের পরবর্তী বাহিনী (এ থেকে কিছু) শিক্ষা গ্রহণ করে :

مَنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْكُرُونَ

৫৮. যদি কখনো কোনো জাতির কাছ থেকে তোমার এ আশংকা হয় যে, তারা (চুক্তি ভংগ করে) বিশ্বাসঘাতকতা করবে, তাহলে তুমিও (তাদের সাথে সম্পাদিত) চুক্তি একইভাবে তাদের (মুখের) ওপর ছুঁড়ে দাও (তবে তোমরা নিজেরা তা আগে লংঘন করো না): নিকয়ই আল্লাহ তায়ালা খেয়ানতকারীদের **পছন্দ ক**রেন না।

٥٨ وَ إِمَّا تَحْافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَاثَبِنْ إِلَيْهِرْ عَلَى سُوَاءِ ﴿ إِنَّ اللَّهُ لَا يُحِب الْخَائِنِيْنَ ع

৫৯. আর কাফেররা যেন কখনোই এমন ধারণা করতে না পারে যে, ওরা (তোমাদের পেছনে ফেলে নিজেরা) এগিয়ে গেছে; (আসলে) ভারা (ভোমাদের পরাভূত করার কোনো) ক্ষমতাই রাখে না।

٥٩ وَلَا يَحْسَبَيُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا اِلنَّهُرُ لَا يُعْجِزُونَ

৬০. তাদের (সাথে যুদ্ধের) জন্যে তোমরা যথাসাধ্য সাজ-সরঞ্জাম, শক্তি ও ঘোড়া প্রস্তুত রাখবে এবং এ দিয়ে তোমরা আল্লাহর দুশমন ও তোমাদের দুশমনদের ভীত-সম্ভন্ত করে দেবে, (এ ছাড়াও কিছু লোক আছে) যাদের পরিচয় তোমরা জানো না, তথু আল্লাহ তায়ালাই তাদের চেনেন: আল্লাহ তায়ালার পথে তোমরা যা কিছুই ব্যয় করবে, তার পুরোপুরি প্রতিদান তোমাদের (পরকালে) আদায় করে দেয়া হবে এবং তোমাদের ওপর বিন্দুমাত্রও যুলুম করা হবে না।

٢٠ وَ أَعِلُّ وَا لَهُرُ مَّا اسْتَطَعْتُرُ مِّنَ قَوَّةٍ وَّمِنَ وَعَدُّوْكُمْ وَأَخَرِيْنَ مِنْ دُوْلِهِمْ تَعْلَهُوْنَهُرْ مِ ٱللَّهُ يَعْلَهُهُرْ ﴿ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ يُونِيِّ اللَّهُ مُرُواَ أَنْتُرُ لَا

৬১. (হে মোহাম্মদ.) তারা যদি সন্ধির প্রতি আগ্রহ দেখায়. তাহলে তুমিও সন্ধির দিকে ঝুঁকে যাবে এবং (সর্বদা) وَأَنْ جَنْحُواْ لِلسَّلْرِ فَاجْنَحُ لَهَا وَتَوَكَّلُ । আল্লাহর ওপরই ভরসা করবে: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) শোনেন, (সব কিছু) দেখেন।

عَلَى اللَّهِ ، إِنَّهُ مُوَ السَّهِيْعُ الْعَلِيْمِ ۗ

৬২. আর যদি কখনো তারা (সন্ধির আড়ালে) তোমাকে ধোকা দিতে চায়, তাহলে (তোমার দুচিন্তাগ্রন্থ হওয়ার কোনো কারণ নেই, কেননা) তোমার (রক্ষার) জন্যে তো আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট: (অতীতেও) তিনি তাঁর

٦٢ وَإِنْ يَرِيْنُوْا أَنْ يَخْدُعُوْكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ، مُوَ الَّذِي آيَّنَكَ بِنَصْرِهِ

৮ সুরা আল আনফাল

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১০ ওয়া'লামু

(সরাসরি) সাহায্য ও এক দল মোমেন দ্বারা তোমাকে শক্তি যগিয়েছেন

وَبِالْهُؤْمِنِيْنَ ٧

৬৩. আল্লাহ তায়ালা তাদের অন্তরসমূহের মাঝে পারম্পরিক (ভালোবাসা ও) সম্প্রীতির বন্ধনে আবদ্ধ করে দিয়েছেন; অপচ তুমি যদি দুনিয়ার যাবতীয় সম্পদও (এর পেছনে) ব্যয়় করতে, তবু তুমি এ মানুষদের দিলগুলোর মাঝে পারম্পরিক ভালোবাসার বন্ধন স্থাপন করতে পারতে না; কিন্তু আল্লাহ তায়ালা এদের মাঝে প্রীতি স্থাপন করে দিয়েছেন; অবশাই তিনি পরাক্রমশালী ও বিজ্ঞ কশলী।

٣٣ وَٱلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِرْ ﴿ لَوْ ٱنْفَقْتَ مَا فِي الْالْوَرْضِ جَوِيْعًا مَّا ٱلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِرْ وَلَٰكِنَّ اللهَ ٱلَّفَ بَيْنَهُرْ ﴿ اللهَ عَزِيْزُ حَكِيْرٌ

৬৪. হে নবী, ভোমার জন্যে এবং ভোমার অনুবর্তনকারী মোমেনদের জন্যে তো আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট।

٦٢ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْهُوْمنِيْنَ ع

৬৫. হে নবী, তুমি মোমেনদের যুদ্ধের জন্যে উদ্বুদ্ধ করো
(মনে রেখো); তোমাদের মধ্যে বিশ জন লোকও যদি
ধৈর্যশীল হতে পারে তাহলে তারা দুশ' লোকের ওপর
বিজয়ী হবে, আবার তোমাদের মাঝে (এমন লোকের
সংখ্যা) যদি একশ হয় তাহলে তারা এক হাজার লোকের
ওপর জয় লাভ করবে, এর কারণ হচ্ছে, তারা এমন
জাতি যারা (আল্লাহর শক্তি সম্পর্কে) কিছুই বোঝে না।

آيَّهَا النَّبِيُّ مَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْعَوْمِنِيْنَ عَلَى الْعَوْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ الْ إِنْ يَكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ مَغْرُوْنَ مَغْرُوْنَ مَغْرُوْنَ مَغْرُوْنَ مِنْكُمْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَّغْلِبُوْآ اللَّهُمْ قَوْأً لَّا يَغْتَمُوْنَ الْفَا بِينَ النِّيْنَ كَغَرُوْا بِالنَّمْ قَوْأً لَّا يَغْتَمُونَ

৬৬. (এ নিক্যাতা দ্বারা) এখন আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর থেকে (উদ্বেগ ও দুক্তিস্তার) বোঝা হালকা করে দিয়েছেন, (যেহেতু) তিনি (একথা) জ্ঞানেন, তোমাদের মধ্যে কিছু দুর্বলতা রয়েছে; (অতপর) তোমাদের মধ্যে যদি একশ' ধৈর্যলীল মানুষ থাকে তাহলে তারা দুশ'র ওপর বিজয়ী হবে, আবার যদি থাকে তোমাদের এক হাজার ধৈর্যলীল ব্যক্তি, তাহলে তারা আল্লাহ তায়ালার ছ্কুমে বিজয়ী হবে দু'হাজার লোকের ওপর; (জেনেরখো.) আল্লাহ তায়ালা ধৈর্যলীলদের সাথেই রয়েছেন।

٦٦ اَلْنُنَ عَفْفَ اللَّهُ عَنْكُرْ وَعَلِرَ أَنَّ فِيكُرْ ضَعْفًا ، فَإِنْ يَلْكُرْ ضِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوا مِائَتَيْنِ عَ وَإِنْ يَّكُنْ مِّنْكُرْ اَلْفَ يَّغْلِبُوا مِائَتَيْنِ عَ وَإِنْ يَّكُنْ مِّنْكُرْ اَلْفَ يَّغْلِبُوا اللهِ ، وَاللَّهُ مَعَ الصَّبِرِيْنَ

৬৭. কোনো নবীর পক্ষেই এটা শোভা পায় না যে, সে তার কাছে বন্দীদের আটকে রাখবে, যতোক্ষণ পর্যন্ত সে যমীনে রক্তপাত ঘটাবে এবং (আল্লাহর) শক্রদের নিপাত না করে দেবে; আসলে তোমরা তো দ্নিয়ার (সামান্য) স্বার্থটুকুই চাও, আর আল্লাহ তায়ালা চান (তোমাদের) আবেরাতের কল্যাণ (দান করতে); আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন পরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময় :

٢٠ مَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يَّكُونَ لَهُ آَسُرٰى مَتَّى يُشْخِنَ فِي الْأَرْضِ ، تُرِيْكُوْنَ عَرَضَ يُشْخِنَ فِي الْأَرْضِ ، تُرِيْكُوْنَ عَرَضَ اللَّهُ عَزِيْلًا اللَّهُ عَزِيْلًا عَرَيْلًا مَا يُرْبُلُ الْأَخِرَةَ ، وَاللَّهُ عَزِيْلًا مَكِيْلًا مَكِيْلًا .

৬৮. যদি (এ ব্যাপারে) আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে পূর্বের কোনো (ফরমান) লেখা না থাকতো, তাহলে (বন্দীদের কাছ থেকে মুক্তিপণ হিসেবে তোমরা) যা কিছু নিয়েছো, তার জন্যে একটা বড়ো ধরনের আযাব তোমাদের পেয়ে বসতো।

٦٨ لَوْلَا كِتْبُ مِّنَ اللهِ سَبَقَ لَهَ اللهِ مَنْقَ لَهَ اللهِ مَنْقَ لَهَ اللهِ مِنْهَا مَا اللهِ مَنْقَ لَهَ اللهِ مَنْقَ لَهَ اللهِ مَنْقَ لَهَ اللهِ مَنْقَ لَهُ اللهِ مِنْقَ لَهُ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْقَ لَهُ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْقَ لَهُ اللهِ مِنْ اللّهِ مِنْ اللّ

৬৯. অতএব যা কিছু তোমরা গনীমত হিসেবে লাভ করেছো, (নিসংকোচে) তোমরা তা খাও, (কেননা) তা সম্পূর্ণ হালাল ও পবিত্র, তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো; আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই ক্ষমাশীল ও দয়ালু।

79 فَكُلُوا مِمَّا غَنِهْتُرْ مَلْلًا طَيِّبًا رَٰـُوَّ اتَّقُوا اللَّهَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ ع

৭০. হে নবী, ভোমার হাতে যেসব বন্দী রয়েছে, তাদের

৮ সুরা আল আনফাল

٠٠ يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلُ لِّهَنَ فِيَّ اَيْرِيْكُرْ مِّنَ



পারা ১০ ওয়া'লামু

তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালা যদি তোমাদের দিলে ভালো কিছু (গ্রহণের যোগ্যতা আছে বলে) জানতে পান, তাহলে তিনি তোমাদের (ঈমানের) এমন এক কল্যাণ দান করবেন যা তোমাদের কাছ থেকে (মুক্তিপণ হিসেবে) গৃহীত সম্পদের চাইতে অনেক ভালো এবং তিনি তোমাদের (গুনাহসমূহও) মাফ করে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও দয়াবান।

الْأَشْرَى لا إِنْ يَّعْلَمِ اللَّهُ فِى قَلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّوْتِكُمْ خَيْرًا مِّنَّا آخِلَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ، وَاللَّهُ غَفُورً رَّحِيْمً

৭১. আর তারা যদি তোমার সাথে বিশ্বাস ভংগ করতে চায় (তাহলে তুমি ভেবো না), এরা তো এর আগে আল্লাহ তায়ালার সাথেও বিশ্বাসঘাতকতা করেছে এবং (এ কারণেই) তাদের মধ্য থেকে তিনি তোমাদের বিজয় (ক্ষমতা) দান করেছেন; আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন জ্ঞানবান ও কুশলী।

ا ﴾ وَإِنْ يَّرِيْكُوْا خِيَانَتَكَ فَقَلْ غَانُوا الله مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُرْ ﴿ وَاللَّهُ عَلِيْرً حَكِيْرً

৭২. নিসন্দেহে যারা ঈমান এনেছে (এবং এই ঈমানের জন্যে) হিজরত করেছে, নিজেদের জান-মাল দিয়ে আল্লাহর পথে জেহাদ করেছে এবং যারা (মাহাজেরদের) আশ্রয় দিয়েছে ও (তাদের) সাহায্য করেছে, তারা সবাই পরম্পরের বন্ধু; (অপরদিকে) যারা ঈমান এনেছে অথচ এখনো হিজরত করেনি, যতোক্ষণ পর্যন্ত তারা হিজরত লা করবে ততোক্ষণ পর্যন্ত তাদের অভিভাবকত্বের দায়িত্ব তোমাদের ওপর নেই, (তবে কখনো) যদি তারা (একাম্ভ) দ্বীনের খাতিরে তোমাদের কাছে কোনো সাহায্য চায়, তাহলে তাদের সাহায্য করা তোমাদের কর্তব্য, (তবে তা) যেন এমন কোনো সম্প্রদায়ের বিক্রছে না হয় যাদের সাথে তোমাদের (কোনো রক্ম) চুক্তি রয়েছে; (বন্ধুত) তোমরা যা কিছু করো আল্লাহ তায়ালা তা সব কিছুই দেখেন।

৭৩. যারা কুফরী করেছে তারা একে অপরের বন্ধু, তোমরা যদি (একে অপরকে সাহায্য করার) সে কান্ধটি না করো, তাহলে (আল্লাহর এ) যমীনে ফেতনা-ফাসাদ ও বড়ো ধরনের বিপর্যয় সৃষ্টি হবে।

حَوَالَّذِيثَى كَفَرُوا بَعْضُمَّرُ اَوْلِيَا مَعْض ،
 إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةً فِي الْاَرْضِ وَفَسَادً
 كَبِيْرٌ ،

৭৪. যারা ঈমান এনেছে, (এ ঈমানের জন্যে) হিজরত করেছে, নিজেদের জান-মাল দিয়ে আল্লাহর পথে জেহাদ করেছে এবং যারা (এ হিজরতকারীদের) থাকার জায়গা দিয়েছে এবং (তাদের) সাহায্য করেছে, (মূলত) এরা সবাই হচ্ছে সত্যিকারের মোমেন; এদের জন্যে (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) ক্ষমা ও উত্তম জীবিকার ব্যবস্থা রয়েছে।

٣٠ وَالَّذِيْنَ الْمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَهَٰدُوا فِي اللهِ وَالَّذِيْنَ الْوَوْا وَّنَصَرُواۤ فِي اللهِ وَالَّذِيْنَ الْوَوْا وَّنَصَرُواۤ اللهِ وَالَّذِيْنَ الْوَوْا وَّنَصَرُواۤ اللهِ وَالَّذِكَ مُرُ الْهُوْمِنُونَ مَقًّا ﴿ لَهُرُ مَّنْغِرَةً وَرِزْقٌ كَرِيْرً

৭৫. আর যারা পরে ঈমান এনেছে, হিজরত করেছে এবং তোমাদের সাথে জেহাদ করেছে, তারাও তোমাদের অন্তর্ভুক্ত; যারা আত্মীয়তার বন্ধনে একে অপরের সাথে আবদ্ধ, আল্লাহর কেতাব অনুযায়ী তারাও একে অন্যের (উত্তরাধিকারের বেশী) হকদার, নিক্যুই আল্লাহ তায়ালা সব ব্যাপার জানেন।

هَ وَالَّذِيْنَ امْنُوا مِنْ بَعْنُ وَمَاجَرُوا وَجُمْدُوا وَجُمْدُوا مَعْدُرُ وَالْخِلْوَا وَجُمْدُوا مَعْدُرُ الْحُلْمِدُ الْوَلْفِ مِنْكُرْ ، وَأُولُوا الْاَرْحَا إِبَعْضُمْرُ اَوْلَى بِبَعْضِ فِي كِتْبِ اللّهِ ، إِنَّ اللّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرٌ عَ

সুরা আত্ তাওবা

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১২৯, রুকু ১৬ (এ সূরায় বিসমিল্লাহ পড়া নিষেধ)

سُورَةُ التُّوبَةِ مَنَّنَيَّةً أَيَاسًا : ١٢٩ رُكُوعٌ : ١٦

১. (হে মুসলমানরা,) মোশরেকদের সাথে তোমরা যে اللهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ اللهِ عَلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ اللهِ عَلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ اللهِ عَلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ اللهِ عَلَى النَّهِ عَلَى النَّهِ عَلَى النَّهِ وَرَسُولِهِ اللهِ عَلَى النَّهِ عَلَى النّهِ عَلَى النَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى النَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى النَّهِ عَلْمَ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللَّهِ عَلْمَ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى তাঁর রসূলের পক্ষ থেকে তোমাদের (তা থেকে) অব্যাহতি রয়েছে।

عَهَنْ تُرْمِنَ الْمُشْرِكِيْنَ مَ

২. অতপর (হে মোশরেকরা), তোমরা (আরো) চার মাস পর্যন্ত (এ পবিত্র) ভূখণ্ডে চলাফেরা করে নাও এবং জেনে রেখো, তোমরা কখনো আল্লাহ তায়ালার ফয়সালা থেকে পালাতে পারবে না এবং আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই কাফেরদের অপমানিত করবেন।

٢ فَسِيْحُوْا فِي الْأَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْا ٱنَّكُمْ غَيْرٌ مُعْجِزِي اللَّهِ لا وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكفِريْنَ

৩. (আজ) মহান হচ্ছের (এ) দিনে দুনিয়ার মানুষের প্রতি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ঘোষণা (এই যে), আল্লাহ তায়ালা মোশরেকদের সোথে চ্জির বাধ্যবাধকতা) থেকে মুক্ত এবং (মুক্ত) তাঁর রসূলও; (হে মোশরেকরা,) যদি তোমরা (এখনো) তাওবা করো তাহলে তাই হবে তোমাদের জন্যে কল্যাণকর: আর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে জেনে রাখো, তোমরা কখনো আল্লাহ তায়ালাকে হীনবল (ও অক্ষম) করতে পারবে না: (হে নবী.) যারা কৃফরী করেছে তাদের তুমি এক কঠোর আযাবের সুসংবাদ দাও,

٣ وَأَذَانُّ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْزُ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيَّ ۚ مِّنَّ الْهُشْرِكِيْنَ لاه وَرَسُولُهُ م فَإِنْ تُبْتُر فَهُو غَيْرٌ لَّكُمْ ع وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا ٱنَّكُمْ غَيْرٌ مُعْجِزِي اللَّهِ ، وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوْا بِعَنَ ابِ ٱلِيْمِ لا

 তবে সেসৰ মোশরেকের কথা আলাদা, যাদের সাথে তোমরা চুক্তি করেছো, তারা (চুক্তি রক্ষার ব্যাপারে) এতোটুকুও ক্রটি করেনি– না তারা কখনো তোমাদের বিরুদ্ধে অন্য কাউকে সাহায্য করেছে, তাদের চুক্তি তাদের মেয়াদ (শেষ হওয়া) পর্যন্ত অবশ্যই তোমরা মেনে চলবে: আসলেই যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে তাদের অবশ্যই তিনি ভালোবাসেন।

٣ إلَّا الَّذِينَ عَهَنَ تُرْ مِّنَ الْهُشُوكِينَ ثُرَّ لَرُ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْئًا وَّلَمْ يُظَامِرُوْا عَلَيْكُمْ أَحَلًّا فَأَتِهُوا إِلَيْهِرْ عَهْنَاهُرْ إِلَى مُنَّتِهِرْ وَلِي اللَّهِ اللهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ

৫. অতপর যখন (এ) নিষিদ্ধ চার মাস অতিবাহিত হয়ে যাবে, তখন মোশরেকদের তোমরা যেখানে পাবে সেখানেই তাদের হত্যা করবে, তাদের বন্দী করবে, তাদের অবরোধ করবে এবং তাদের (ধরার) জন্যে তোমরা প্রতিটি ঘাঁটিতে ওঁৎ পেতে বসে থাকবে, তবে এরপরও তারা যদি তাওবা করে (দ্বীনের পথে ফিরে আসে) এবং নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, তাহলে তোমরা তাদের পথ ছেডে দাও: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও বড়ো দয়াময়।

٥ فَاذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُّمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ مَيْتُ وَجَلْتَّمُوْهُمْ وَخُلُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُلُوا لَهُمْ كُلَّ مَوْصَلِ عَ فَإِنْ تَابُواْ وَاقَامُوا الصَّلْوةَ وَأَتَوُا الزَّكُوةَ فَكُلُّواْ سَبِيْلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْرٌ

৬. আর মোশরেকদের মধ্য থেকে যদি কোনো ব্যক্তি তোমার কাছে আশ্রয় চায় তবে অবশ্যই তাকে তুমি আশ্রয় দেবে, যাতে করে (তোমার আশ্রয়ে থেকে) সে আল্লাহ তায়ালার বাণী শুনতে পায়, অতপর তাকে তার (কোনো) নিরাপদ জায়গায় পৌছে দেবে; (এটা) এ জন্যেই যে, এরা (আসলেই) এমন এক সম্প্রদায়ের লোক यात्रा किছूरे জात्न ना।

٢ وَإِنْ أَحَلُّ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ مَتَّى يَسْمَعَ كَلْرَ اللَّهِ ثُرَّ ٱبْلِفْهُ مَاْمَنَهُ وَذُلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لا يَعْلَهُونَ ع

৯ সুরা আত্ তাওবা

7200

চুক্তি কিভাবে (বহাল) থাকবে? তবে যাদের সাথে মাসজিদুল হারামের পালে (বসে) তোমরা চুক্তি সম্পাদন করেছিলে (তাদের কথা আলাদা), যতোক্ষণ পর্যন্ত তারা তোমাদের সাথে (সম্পাদিত এ) চুক্তির ওপর বহাল থাকে, ততোক্ষণ পর্যন্ত তোমরাও তাদের জন্যে (সম্পাদিত চুক্তিতে) বহাল থেকো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (চুক্তি ও ওয়াদার ব্যাপারে) সাবধানী ব্যক্তিদের ভালোবাসেন।

وَعِنْنَ رَسُوْلِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَمَنَ تُرْ عِنْنَ الْهَسْجِنِ الْحَرَامِ ، فَهَا اسْتَقَامُوْ الْكُرْ فَاسْتَقَيْبُواْ لَهُرْ ﴿ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْهُتَّقَيْنَ

৮. কিভাবে (তোমরা তাদের বিশ্বাস করবে?) এরা যদি কখনো তোমাদের ওপর জয়লাভ করে, তাহলে তারা (যেমনি) আত্মীয়তার বন্ধনের তোয়াকা করবে না, (তেমনি) চুক্তির মর্যাদাও দেবে না; তারা (তথু) মুখ দিয়ে তোমাদের খুশী রাখার চেষ্টা করে, কিন্তু তাদের অন্তরগুলো সেসব কথা (কিছুতেই) মেনে নেয় না. (মূলত) এদের অধিকাংশ ব্যক্তিই হচ্ছে ফাসেক.

٨ كَيْفَ وَإِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فَيْكُمِ ۚ إِلَّا وَّكَا ذَمَّةً مَا يُوْمُونَكُمِ ۚ بِأَفُوَ اهْمِرُ وَتَأْبِي قُلُوبُهُمْ عِ وَ أَكْثُومُمْ فَسَقُونَ عِ

৯. এরা আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ সামান্য (কিছু বৈষয়িক) মূল্যের বিনিময়ে বিক্রি করে দিয়েছে এবং (মানুষকে) আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে দুরে রেখেছে: নিক্যুই এটা খুব জঘন্য কাজ, যা ভারা করছে।

٩ اشْتَرُوْا بِأَيْسِ اللَّهِ ثَهَنَّا قَلَيْلًا فَصَلَّوْا عَنْ سَبِيلِهِ ١ اللَّهُمْ سَاءً مَا كَانُو إِيعْمَلُونَ

১০. (ফোনো) ঈমানদার লোকের ব্যাপারে এরা (যেমন) আত্মীয়তার ধার ধারে না. (তেমনি) কোনো অংগীকারের মর্যাদাও এরা রক্ষা করে না: (মৃলত) এরা হচ্ছে সীমালংঘনকারী।

١٠ لَا يَرْقُبُوْنَ فِي مُؤْمِنِ اللَّا وَّلَا ذِمَّةً ٠ وَأُولِئِكَ مُرِ الْمُفْتَلُونَ

১১. (এ সন্তেও) যদি তারা তাওবা করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, (তাহলে) তারা হবে فَإِخُوا النَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ الْأَيْسِ छाप्राप्त अरह मानूरषुत्र कारह আমার আয়াতসমূহ স্পষ্ট করে বর্ণনা করি, যারা (সত্য-মিথ্যার তারতম্য) বুঝতে পারে।

١١ فَإِنْ تَابُوا وَ أَقَامُوا الصَّلُوةَ وَأَتُوا الزَّكُوةَ لِقُومُ يَعْلَمُونَ

১২. তারা যদি তাদের প্রতিশ্রুতি দেয়ার পরও তাদের চুক্তি ভংগ করে এবং (ক্রমাগত) তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে বিদ্রূপ করতে থাকে, তাহলে তোমরা কাফের সরদারদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ (ঘোষণা) করো, কেননা তাদের জন্যে (তখন) আর কোনো চুক্তিই (বহাল) নেই. (এর ফলে) আশা করা যায় ভারা তাদের মন্দ কা**জগুলো থেকে** বিরও থাকবে।

١٢ وَإِنْ تُكَثُوا أَيْهَانَهُمْ مِنْ بَعْنِ عَهْنِ مِرْ وَطَعَنُوا فِي دِيْنِكُرْ فَقَاتِلُوْ ٓ أَلِيَّةَ الْكُفُرِ لا اتُّهُمْ لَا أَيْهَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ

১৩. তোমরা কি এমন একটি দলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে না, যারা (বার বার) নিজেদের অংগীকার ভংগ করেছে! যারা রস্পকে (স্বদেশ থেকে) বের করার সংকল্প করেছে এবং তারাই তো প্রথম (তোমাদের ওপর হামলা) ভরু করেছে: তোমরা কি (সত্যিই) তাদের ভয় করোঃ অথচ যদি তোমরা মোমেন হও তাহলে তোমাদের আল্লাহ তায়ালাকেই বেশী ভয় করা উচিত।

١٣ أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوْآ أَيْمَانَهُرْ وَمَنُّوْا باغْرَاج الرُّسُول وَهُرْ بَنَءُوكُرْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ١ أَتَخْشُوْلَهُمْ عَ فَاللَّهُ أَحَقَّ أَنْ تَخْشُوْهُ أَنْ مەم مۇمىيىن كنتىر مۇمىيىن

১৪. তোমরা তাদের সাথে লডাই করো, আল্লাহ তায়ালা (আসলে) তোমাদের হাত দিয়েই ওদের শান্তি দেবেন, তিনি তাদের অপমানিত করবেন, তাদের ওপর (বিজ্ঞয় দিয়ে) তিনি তোমাদের সাহায্য করবেন এবং (এভাবে) তিনি মোমেন সম্প্রদায়ের মনগুলোকেও নিরাময় করে দেবেন.

١٣ قَاتِلُوْهُمْ يُعَنَّ بْهُمُ اللَّهُ بِأَيْنِيْكُمْ وَيُخْزِمِرُ وَيَنْصُرُكُرُ عَلَيْهِرُ وَيَشْفِ صُّلُورَ قَوْمٌ مَّوْمِنِيْنَ لا

৯ সুরা আত্ তাওবা

١٥ وَيُنْهِبُ غَيْظَ قُلُوْبِهِيرٌ ﴿ وَيَتُوْبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ﴿ وَاللَّهُ عَلَيْمٍ مَكَيْمٍ

১৬. তোমরা কি (একথা) মনে করে নিয়েছো, তোমাদের (এমনি এমনিই) ছেড়ে দেয়া হবে! অথচ (এখনো) আল্লাহ তায়ালা (ভালো করে) পরখ করে নেননি যে, তোমাদের মাঝে কারা (আল্লাহর পথে) জ্বেহাদ করেছে. আর কারা আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রসূল ও মোমেনদের ছাড়া অন্য কাউকে বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করেছে, (বস্তুত) তোমরা যা কিছু করো না কেন, আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে সম্যক অবগত রয়েছেন।

١٦ أَا مُسِبْتُرُ أَنْ تُتُوكُواْ وَلَمًّا يَعْلَر اللَّهُ الَّذِينَ جُهَدُوا مِنْكُرْ وَلَرْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُوْنِ اللهِ وَلَا رَسُوْلِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ، وَاللَّهُ غَبِيْرٌ بِهَا تَعْمَلُوْنَ ع

১৭. মোশরেকরা যখন নিজেরাই নিজেদের ওপর কৃফরীর সাক্ষ্য দিক্ষে, তখন তারা আল্লাহ তায়ালার মাসজিদ اللهِ شُهِدِيثَىَ عَلَى أَنْفُسِهِرُ بِالْكُفُو ء أُولَئِكَ अावान कदार्व طلّا واللهِ شَهِدِيثَ عَلَى أَنْفُسِهِرُ بِالْكُفُو ء أُولَئِكَ সেসব লোক, যাদের যাবতীয় কর্মকান্ড বরবাদ হয়ে গেছে এবং চিরকাল এরা দোযখের আগুনেই কাটাবে।

١٤ مَا كَانَ لِلْهُشْرِكِيْنَ أَنْ يَعْهُرُوْا مَسْجِلَ مَبِطَتُ أَعْهَالُهُرُ ﴾ وَفِي النَّارِ مُرُ خُلِلُوْنَ

১৮. আল্লাহ তায়ালার (ঘর) মাসজিদ তো আবাদ করবে তারা, যারা আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর ঈমান আনে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, আর আল্লাহ তায়ালা ছাডা তারা কাউকে ভয় করে না। এদের ব্যাপারেই আশা করা যায়, এরা হেদায়াতপ্রাপ্ত মানুষের অন্তর্ভক্ত হবে।

١٨ إِنَّهَا يَعْهُرُ مَسْجِلَ اللَّهِ مَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْ ِ الْأَخِرِ وَ آَتَا ۖ الصَّّلُوةَ وَ أَتَى الزَّّكُوةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهُ مَن فَعَسَّى أُولَٰئِكَ أَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْهُهْتَدِيْنَ

১৯. তোমরা কি (হজ্জের মওসুমে) হাজীদের পানি পান করানো ও কাবা ঘরের খেদমত করাকে সে ব্যক্তির কাজের সমপর্যায়ের মনে করো, যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে, পরকালের ওপর ঈমান এনেছে এবং আল্লাহ তায়ালার রাস্তায় জেহাদ করেছে: এরা কখনো আল্লাহর কাছে সমান (মর্যাদার) নয়; আল্লাহ তায়ালা কখনো যালেমদের সঠিক পথ দেখান না।

١٩ أَجَعَلْتُرُ سِقَايَةَ الْحَآجِ وَعِهَارَةَ الْهَسْجِنِ الْحَرَا إِ كَمَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْ } الْأَخِر وَجُهَلَ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ ﴿ لَا يَسْتَوُّنَ عِنْلَ الله، وَاللَّهُ لَا يَهْدى الْقَوْمَ الظُّلمِينَ م

২০. যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে, (তাঁর সম্ভষ্টির জন্যে) হিজরত করেছে এবং আল্লাহ তায়ালার পথে তাদের জান-মাল দিয়ে জেহাদ করেছে, তাদের মর্যাদা আল্লাহ তায়ালার কাছে সবার চাইতে বড়ো এবং এ ধরনের লোকেরাই (পরিণামে) সফলকাম হবে।

٢٠ ٱلَّذِينَ أُمُّنُوا وَهَاجَرُوا وَجَهَدُوا فِهِ سَبِيْلِ اللَّهِ بِٱمْوَالِهِرْ وَٱنْفُسِهِرْ ٧ أَعْظَرُ دَرَجَةً عِنْنَ الله ، وأولئكَ مُر الْفَائِ وْنَ

২১. তাদের মালিক তাদের জন্যে নিজ তরফ থেকে দয়া. সন্তুষ্টি ও এমন এক (সুরমা) জান্নাতের সুসংবাদ দিক্ষেন, يُبَشِّرُهُمْ رَبِّهُمْ بِرَحْمَةٌ مِنْهُ وَرَضُوانِ যেখানে তাদের জন্যে চিরস্থায়ী নেয়ামতের সামগ্রীসমূহ (সাজানো) রয়েছে,

وَجَنْتِ لَهُمْ فَيْهَا نَعِيْرُ مُقَيْرٌ لِا

২২. সেখানে তারা হবে চিরস্থায়ী, নিন্চয়ই আল্রাহ 💁 🏯 তায়ালার কাছে (মামেনদের জনো) মহাপুরস্কার (সংরক্ষিত) آجُرُ اللهُ عِنْلَةُ أَجْرُ ٢٢ عَلْلِيْنَ فِيْهَا أَبْلًا وَإِللَّهُ عِنْلَةً أَجْرَ রয়েছে

২৩. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, যদি তোমাদের পিতা ও مُنَوُا لاَ تَتْخِلُواْ اَبَاءَكُمْ اللهِ اللهِ عَلَيْهَا اللهِ يَنْ اَمْنُواْ لاَ تَتْخِلُواْ اَبَاءَكُمْ প্রাইয়েরা কখনো ঈমানের ওপর কুফরীকেই বেশী

www.eelm.weebly.com

৯ সূরা আত্ তাওবা

ভালোবাসে, তাহলে তোমরা এমন লোকদের কখনো বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না: তোমাদের মধ্যে যারা এ (ধরনের) লোকদের (নিজেদের) বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করে. তারা হচ্ছে (সুস্পষ্ট) যালেম।

وَإِخْوَانَكُمْ ٱوْلِيَّاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيْمَانِ ﴿ وَمَن يَّتُولَهُمْ مِّنْكُمْ فَأُولَئِكَ هُرُ الظُّلُّونَ

২৪. (হে নবী,) বলো, যদি তোমাদের পিতা, তোমাদের ভাই, তোমাদের পরিবার পরিজন ও তোমাদের অর্জিত धन-সম্পদ এবং ব্যবসা-বাণিজ্য- या অচল হয়ে যাবে বলে তোমরা ভয় করো, তোমাদের বাড়ীঘরসমূহ, যা তোমরা (একান্ডভাবে) কামনা করো, যদি তোমরা আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রসুল ও তাঁর পথে জেহাদ করার চাইতে (এগুলোকে) বেশী ভালোবাসো, তাহলে তোমরা আল্লাহ তায়ালার (পক্ষ থেকে তাঁর আযাবের) ঘোষণা আসা পর্যন্ত অপেক্ষা করো (জেনে রেখো): আল্লাহ তায়ালা কখনো ফাসেক সম্প্রদায়কে হেদায়াত করেন না।

٢٣ قُلْ إِنْ كَانَ أَبَّاؤُكُمْ وَٱبْنَاَّؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَأَمُوالُّ اقْتَرَفْتُهُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشُوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكِنُ تَرْضُوْنَهَا ۖ أَمَبُّ إِلَيْكُمْ مِّنَ اللَّه وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيْلِهِ فَتَرَبَّصُوْا حَتَّى يَاْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِةٍ ﴿ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْآ الفسقيْنَ ع

২৫. আল্লাহ তায়ালা তো বহু জায়গায়ই তোমাদের সাহায্য করেছেন, (বিশেষ করে) হোনায়নের দিনে (যে সাহায্য করেছিলেন তা স্বরণ করো, সেদিন) যখন তোমাদের সংখ্যাধিক্য তোমাদের উৎফুল্প করে দিয়েছিলো, অথচ সংখ্যার (এ) বিপুলতা তোমাদের गिरप्राहरणा, अपर गरपात्र (ध) विगुन्छ। एशमाएनत्र कारनार्हे कारक जारनि, यभीन जात्र विगान्छ। अरखु تَغَنَ عَنْكُو شَيْئًا وَضَاقَتُ عَلَيْكُو الْأَرْضُ بِمَا (সেদিন) তোমাদের ওপর সংকৃচিত হয়ে পড়েছিলো. অতপর তোমরা (এক সময়) ময়দান ছেড়ে পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালিয়েও গেলে।

٢٥ لَقَلْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِيْ مَوَاطِيَ كَثِيْرَةٍ لا وَّيَوْمَ مُنَيْن لا إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثُورَّتُكُمْ فَلَمْ رَكْبَكُ ثُرُّ وَلَيْتُرُ شُرْبِرِيْنَ ع

২৬. অতপর আল্লাহ তায়ালা তাঁর রসূল ও (ময়দানে অটন হয়ে থাকা) মোমেনদের ওপর তাঁর প্রশান্তি নাযিল করলেন. (ময়দানে) তিনি এমন এক লশকর (বাহিনী) পাঠালেন, যাদের তোমরা দেখতে পাওনি এবং (তাদের দিয়ে) তিনি কাফেরদের (এক চরম) শান্তি দিলেন, যারা আল্লাহকে অস্বীকার করে, এ হচ্ছে তাদের (যথাযথ) পাওনা।

٢٦ ثُرَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِيْنَتَهَ عَلَى رَسُوْلِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَانْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَنَّابَ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ وَذَٰلِكَ جَزَاءً

২৭. এর পরেও আল্লাহ তায়ালা যাকে ইচ্ছা তাকে ক্ষমা করে দেন, আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল।

٢٠ ثُر يَتُوبُ اللهُ مِنْ بَعْنِ ذٰلِكَ عَلَى مَنْ يَّشَاءُ ، وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ

২৮. ওহে (মানুষ), তোমরা যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান এনেছো (জেনে রেখো), মোশরেকরা হচ্ছে (চিন্তা ও আদর্শের দিক থেকে) অপবিত্র, অতএব (এ অপবিত্রতা নিয়ে) তারা যেন এ বছরের পর আর কখনো এ পবিত্র মাসজিদের কাছে না আসে, যদি (তাদের না আসার কারণে) তোমরা (আও) দারিদ্রের আশংকা করো তাহলে (জেনে রেখো), অচিরেই আল্লাহ তায়ালা চাইলে নিজ অনুগ্রহ দিয়ে তোমাদের অভাবমুক্ত করে দিবেন: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ ও কুশলী।

٢٨ يَالَيُّهَا الَّذِيثَ أَمَنُوْ ۚ إِنَّهَا الْهُشُرِكُوْنَ نَجَسٌّ فَلَا يَقُرَبُوا الْهَسْجِنَ الْحَرَامَ بَعْلَ عَامِهِرْ هٰذَا ء وَإِنْ خِفْتُرْ عَيْلَةً نَسَوْنَ يُغْنيْكُرُ اللَّهُ مِنْ فَضْلَهِ إِنْ شَاءً م إِنَّ اللَّهَ

২৯. যাদের ইতিপূর্বে কেতাব দেয়া হয়েছে তাদের মধ্যে যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনে না, পরকালের ওপর ঈমান আনে না. আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসুল যা

٢٩ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْ الْأَخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا مَرًّا اللَّهُ

৯ সুরা আত্ তাওবা

১৮৬

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১০ ওয়া'লাম

কিছ হারাম করেছেন তা হারাম বলে স্বীকার করে না (সর্বোপরি) সত্য দ্বীনকে (নিজেদের) জীবন ব্যবস্থা الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتْبَ مَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ विस्टर्फ छामता निष्ठां الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتْبَ مَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَة চালিয়ে যাও, যে পর্যন্ত না তারা পদানত হয়ে স্বেচ্ছায় জিযিয়া (কর) দিতে শুরু করে।

وَرَسُوْلُهُ وَلَا يَدِينُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ عَيْ يَلْ وَهُرَ صَغْرُونَ عَ

৩০. ইহুদীরা বলে ওযায়র আল্লাহর পুত্র, (আবার) খুন্টানরা বলে মাসীহ আল্লাহর পুত্র: (আসলে) এ সবই হচ্ছে তাদের মুখের কথা, তাদের আগে যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করেছে. (এসব কথার মাধ্যমে) এরা তাদেরই অনুকরণ করছে মাত্র: আল্লাহ তায়ালা এদের (সবাইকে) ধ্বংস করুন, (তাকিয়ে দেখো) এদের কিভাবে (আজ দারে দারে) ঠোকর খাওয়ানো হচ্ছে!

٣٠ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرُهِ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصْرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللَّهِ وَلَكَ قَوْلُهُرْ بِأَنْوَ اهِمِرْ عِ يُضَاهِنُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ مَ قُتَلَهُمُ اللَّهُ جَ أَتَّى يُؤْفَكُونَ

৩১. এ লোকেরা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে তাদের আলেম, তাদের পীর-দরবেশদের মাবদ বানিয়ে নিয়েছে এবং মারইয়াম পুত্র মাসীহকেও (কেউ কেউ মাবুদ বানিয়ে রেখেছে), অথচ এদের এক আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারোই বন্দেগী করতে আদেশ দেয়া হয়নি, তিনি ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই: তারা যাদের আল্লাহর সাবে শরীক করে, তিনি এসব (কথাবার্তা) থেকে অনেক পবিত্র ।

٣١ إِنَّخَانُوْ آ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَوْيَرَع وَمَا أَبِرُوْاً إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلٰهًا وَّاحِدًا ع لَا إِلٰهَ الاً مُو ، سُبُطنَهُ عَمَّا يُشُرِكُونَ

৩২. এ (মুর্খ) লোকেরা তাদের মুখের (এক) ফুৎকার দিয়ে আল্লাহর (দ্বীনের) মশাল নিভিয়ে দিতে চায়, কিন্তু আল্লাহ তায়ালা তাঁর এ আলোর পূর্ণ বিকাশ ছাড়া অন্য কিছুই চান না, যদিও কাফেরদের কাছে এটা খুবই অপ্রীতিকর!

يُرِيْدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُوْرَ اللَّهِ بِٱفْوَاهِمِرْ وَيَاْبَى اللَّهُ الَّا أَنْ يُّسَرَّ نُوْرَةً وَلَوْ كُوهَ الْكَفِرُونَ

৩৩. তিনিই (মহান আল্লাহ), যিনি (তোমাদের কাছে) সুস্পষ্ট হেদায়াত ও সঠিক জীবনবিধান সহকারে তাঁর রসুলকে পাঠিয়েছেন, যেন সে এই বিধানকে (দুনিয়ার) সব করটি বিধানের ওপর বিজয়ী করে দিতে পারে. মোশরেকরা (এ বিজয়কে) যতো দুঃসহই মনে করুক না কেন!

٣٣ مُوَ الَّذِي آرسَلَ رَسُولَةً بِالْهُرَى وَدِيْن الْحَقِّ لِيُظْهِرَةً عَلَى الرِّيْنِ كُلِّهِ لا وَلَوْ كَرِهَ ٵڷؠۺۯػۅٛڽؘ

৩৪. হে ঈমানদার লোকেরা. (আহলে কেতাবদের) বহু পভিত ও ফকির-দরবেশ এমন আছে, যারা অন্যায়ভাবে সাধারণ মানুষের সম্পদ ভোগ করে, এরা (আল্লাহর বান্দাদের) আল্লাহর পথ থেকে ফিরিয়েও রাখে; (এদের মাঝে) যারা সোনা-রূপা পুঞ্জীভূত করে রাখে এবং (কখনো) তা আল্লাহর পথে ব্যয় করে না, তুমি তাদের কঠিন পীড়াদায়ক আযাবের সুসংবাদ দাও।

٣٣ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْاً إِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الأَهْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُّدُّونَ عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ ﴿ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ النَّاهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفَقُوْنَهَا فِي سَبِيْلِ اللهِ لا فَبَشَّرْهُمْ بِعَنَ ابِ اَلِيْرِ لا

৩৫. (এমন একদিন আসবে) যেদিন (পুঞ্জীভূত) সোনা-রূপা জাহান্নামের আগুনে উত্তপ্ত করা হবে, অতপর তা দিয়ে (যারা এগুলো জমা করে রেখেছিলো) তাদের কপালে, তাদের পার্শ্বে ও তাদের পিঠে চিহ্ন (এঁকে) দেয়া

٣٥ يُّوْمَ يُحُهٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فتكوى بها جباههر وجنوبهر وظهورهر

৯ সুরা আত্ তাওবা

হবে (এবং তাদের উদ্দেশ করে বলা হবে), এ হচ্ছে তোমাদের সে সম্পদ যা তোমরা নিজেদের জন্যে জমা করে রেখেছিলে, অতএব যা কিছু সেদিন তোমরা জমা করেছিলে (আজ) তার স্থাদ গ্রহণ করো। هٰٰذَا مَا كَنَزْتُر ۚ لِإَنْفُسِكُر ۚ فَلُوْقُوا مَا كُنْتُهِ تَكْنِزُوْنَ

৩৬, আসমানসমূহ ও পৃথিবী সৃষ্টির দিন থেকেই আল্লাহ তায়ালার বিধানে মাসের সংখ্যা বারোটি, এ (বারোটি)-র মধ্যে চারটি হচ্ছে (যুদ্ধ-বিপ্রহের জন্যে) নিষিদ্ধ মাস; এটা (আল্লাহর প্রণীত) নির্ভুল ব্যবস্থা, অতএব তার ভেতরে (হানাহানি করে) তোমরা নিজেদের ওপর যুলুম করো না, তোমরা (যখন) মোশরেকদের সাথে যুদ্ধ করবে, (তখন সবাই) এক সাথে মিলিত হয়ে (তাদের) মোকাবেলা করবে, যেমনিভাবে তারাও এক সাথে তোমাদের বিরুদ্ধে লড়াই করছে; জেনে রেখা, যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাদের সাথে রয়েছেন।

٣٦ إِنَّ عِنَّةَ الشَّهُوْرِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتٰبِ اللَّهِ يَوْاً عَلَقَ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا آرْبَعَةً مُراً ، ذٰلِكَ الرَّيْدَىُ الْقَيِّرُه فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْهُشْرِكِيْنَ كَافَّةً كَهَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ، وَاعْلَمُوْ اللهَ مَعَ الْهُتَّقِيْنَ

৩৭. নিষিদ্ধ মাসকে হীন স্বার্থে মুল্ডবি করা কিংবা তা আগ পাছ করা তো কৃষ্ণরীর মাত্রাই বৃদ্ধি করে, এর ফলে কাফেরদের (আরো বেশী) গোমরাহীতে নিমক্ষিত করে দেয়া হয়, এ লোকেরা এক বছর কোনো মাসকে (প্রয়োজনে) হালাল করে নেয়, আবার (পরবর্তী) কোনো বছরে সে মাসকেই তারা হারাম বানিয়ে নেয়, যেন এভাবে আল্লাহ তায়ালা যে মাসগুলো হারাম করেছেন তার সংখ্যাও পূরণ হয়ে যায়, আবার আল্লাহ তায়ালা যা হারাম করেছেন তাও (মাঝে মাঝে) হালাল হয়ে য়ায়; (বড়ত) তাদের অন্যায় কাজগুলো (এভাবেই) তাদের কাছে শোভনীয় করে দেয়া হয়েছে; আর আল্লাহ তায়ালা কখনো কাফের সম্প্রদায়কে সঠিক পথের দিশা দেন না।

৩৮. হে মানুষ, তোমরা যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর)
ঈমান এনেছো, এ কি হলো তোমাদের! যখন তোমাদের
আল্লাহ তায়ালার পথে (কোনো অভিযানে) বের হতে বলা
হয়, তখন তোমরা যমীন আঁকড়ে ধরো; তোমরা কি
আখেরাতের (সমৃদ্ধির) তুলনায় (এ) দুনিয়ার জীবনকেই
বেশী ভালোবাসো, (অথচ) পরকালে (হিসেবের
মানদন্তে) দুনিয়ার জীবনের এ ভোগের উপকরণ নিতান্তই
কম।

٣٨ يَايَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا مَا لَكُر إِذَا قِيلَ
 لَكْرُ انْفِرُوا فِي سَبِيْلِ اللهِ اثَّاقَلْتُر إِلَى
 الأَرْضِ الرَّضِيْتُر بِالْحَيْوةِ النَّنْيَا مِنَ
 الأُخِرَةِ عَ فَهَا مَتَاعُ الْحَيْوةِ النَّنْيَا فِي
 الأُخِرَةِ اللَّ قَلِيْلٌ

৩৯. তোমরা যদি (কোনো অভিযানে) বের না হও, তাহলে (এ অবাধ্যতার জ্বন্যে) তিনি তোমাদের কঠিন শান্তি দেবেন এবং তোমাদের অন্য এক জাতি ঘারা বদল করে দেবেন, তোমরা কিন্তু তাঁর কোনোই অনিষ্ট সাধন করতে পারবে না, (কারণ) তিনি সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান।

٣٩ إِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَنِّبْكُرْ عَنَابًا اَلِيْمًا لَا وَيَّا تَفُرُّوْهُ شَيْئًا ، وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَ كُرْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْئًا ، وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءً قَدِيْرٌ

৪০. (হে মোমেনরা,) তোমরা যদি তাঁকে (এ কাজে)
সাহায্য না করো তাহলে (আল্লাহ তায়ালাই তাকে সাহায্য
করবেন) আল্লাহ তায়ালা তখনো তাকে সাহায্য
করেছিলেন যখন কাফেররা তাকে তার ভিটে-বাড়ি থেকে
বের করে দিয়েছিলো– (বিশেষ করে) যখন সে (নবী)
ছিলো মাত্র দু'জনের মধ্যে একজন, (তাও আবার) তারা

" إلّا تَنْصُرُونَهُ فَقَلْ نَصَرَهُ اللّهُ إِذْ اَخْرَجَهُ اللّهُ إِذْ اَخْرَجَهُ النّبِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ مُمَا فِي الْغَارِ إِذْ مُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يُقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّهَ مَعَنَا عَ

দু'জন ছিলো (অন্ধকার এক) গুহার মধ্যে, সে (নবী) যখন তার সাধীকে বলছিলো, কোনো দুশ্চিস্তা করো না, আল্লাহ তায়ালা আমাদের সাথেই আছেন, অতপর আল্লাহ তায়ালা তার ওপর তাঁর প্রশান্তি নাযিল (করে তাকে সাহায্য) করলেন এবং এমন এক বাহিনী দ্বারা তাকে শক্তি যোগালেন যাদের তোমরা (সেদিন) দেখতে পাওনি এবং যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অমান্য করেছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের (ধৃষ্টতামূলক) বক্তব্য নীচু করে দিলেন এবং আল্লাহ তায়ালার কথাই ওপরে (থাকলো): আল্লাহ তায়ালা পরাক্রমশালী ও প্রবল প্রজ্ঞাময়।

فَٱنْزَلَ اللَّهُ سَكِيْنَتَهُ عَلَيْهِ وَٱلَّهُ بِجُنُودٍ لَّرْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِهَ ٱلَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلَى ، وَكَلِمَةُ اللَّهِ مِيَ الْعُلْيَا ، وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيْرٌ

8১. তোমরা অভিযানে বের হয়ে পড়ো– কম হোক কিংবা বেশী (রণসম্ভারে) হোক এবং জেহাদ করো আল্লাহ তায়ালার পথে নিজেদের জান দিয়ে মাল দিয়ে: এটাই তোমাদের জন্যে উত্তম. (কতো ভালো হতো) যদি তোমরা বুঝতে পারতে!

٢١ إنْفُرُوا خفَافًا وَتُقَالًا وَجُاهِلُوا بِأَمْوَ الْكُمْرُ وَ أَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ ، ذَٰلِكُمْرُ غَيْرٌ لَّكُرْ إِنْ كُنْتُرْ تَعْلَبُونَ

৪২. (হে নবী. এতে) যদি আন্ত কোনো লাভ থাকতো. হতো যদি (তাদের এ) সফর সহজ সুগম, তাহলে তারা অবশ্যই (এ অভিযানে) তোমার পেছনে পেছনে যেতো, কিন্তু তাদের জন্যে এ যাত্রাপথ অনেক দীর্ঘ (ও দুর্গম) ঠেকেছে: তারা অচিরেই আল্লাহর নামে (তোমার কাছে) কসম করে বলবে, আমরা যদি সক্ষম হতাম তাহলে معكرة يُهلُكُونَ أَنْفُسَهُرَ عَ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْكُونَ الْفُسَهُرَ عَ وَاللَّهُ يَعْلَمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ ال অজুহাতে) তারা নিজেরাই নিজেদের ধ্বংস করছে, আল্লাহ তায়ালা জানেন, এরা হচ্ছে মিথ্যাবাদী।

٣٢ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّا تَّبَعُوْكَ وَلَٰكِنْ بَعُنَ سَ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ عَ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللَّهِ لَواسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا النَّهُمْ لَكُنْ بُوْنَ ع

৪৩. (হে নবী.) আল্লাহ তায়ালা তোমাকে মাফ করুন. (ঈমানের দাবীতে) কারা সত্যবাদী আর কারা মিথ্যাবাদী-এ বিষয়টা তোমার কাছে স্পষ্ট হওয়ার আগে কেন তমি তাদের (যুদ্ধে যাওয়া থেকে) অব্যাহতি দিলে?

٣٣ عَفَا اللَّهُ عَنْكَ مَ لِم َ أَذِنْكَ لَهُمْ مَتَّى يَتَبِيِّنَ لَكَ الَّذِينَ مَنَ قُوْا وَتَعْلَمَ الْكُنْبِينَ

88. যারা আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর ঈমান এনেছে, তারা নিজেদের মাল ও জীবন দিয়ে আল্লাহর পথে জেহাদে অবতীর্ণ না হওয়ার জন্যে তোমার কাছ থেকে অব্যাহতি চাইতে আসবে না: আল্লাহ তায়ালা (অবশ্যই) সেসব লোককে জানেন যারা (তাঁকে) ভয় করে।

٣٣ لَا يَشْتَأْذِنُكَ النَّانِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَخِرِ أَنْ يُّجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَ أَنْفُسِهِمْ ﴿ وَاللَّهُ عَلَيْمٌ ۚ بِالْهُتَّقِينَ

৪৫. (যুদ্ধে না যাওয়ার জন্য) তোমার কাছে অব্যাহতি চাইতে তো আসবে তারা, যারা আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর (কোনো রকম) ঈমান রাখে না, তাদের মন সংশয়যুক্ত, আর তারা নিজেরাও সংশয়ে দ্বিধাগ্রন্ত থাকে।

٢٥ إِنَّهَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمَ الْأَخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُرْ فِي رَيْبِهِم يَتُرَدُّونَ

ठ७. वाम (आछ) धता (তোমার সাথে) বের হতে الْمُعُرُوعَ لَاَعَلُّوا لَمُ عُلُّةً काইতো, তাহলে তারা সে জন্যে (किছু ना किছু) প্রস্কৃতি لَمُ عُلُّةً المُخْرُوعَ لَاَعَلُّوا الْمُحْرُوعَ لَاَعَلُّهِا الْمُعْرُوعَ لَاَعَالُهُا الْمُعْرُوعَ لَا عَلَّا الْمُعْرَوْعَ لَا عَلَّا الْمُعْرَوْعَ لَا عَلَيْهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ عَلَّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللللللللللللللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللللّهُ اللل তো নিতো! কিন্তু ওদের যাত্রা করাটা আল্লাহ তায়ালার মনোপুত হয়নি: তাই তিনি তাদের (এ থেকে) বিরত রাখলেন, (তাদের যেন) বলে দেয়া হলো, যারা পেছনে বসে আছে তোমরাও তাদের সাথে বসে থাকো।

وَّلٰكِنْ كَوهَ اللَّهُ ائْبِعَاثَهُمِ ۚ فَثَبَّطَهُم ۗ وَقَيْل اقْعُلُوْ المَعَ الْقَعِلِينَ

৪৭. ওরা তোমাদের মাঝে বের হলে তোমাদের মাঝে বিভ্রান্তিই তথু বাড়িয়ে দিতো এবং তোমাদের সমাজে

٣٠ لَوْ خَرَجُوْا فَيْكُرْ مَّا زَادُوْكُرْ الَّا غَبَالَّا

৯ সুরা আত তাওবা

አዮ৯

রকম অশান্তি সৃষ্টির জন্যে (এদিক-সেদিক) ছুটাছুটি করতো, (তা ছাড়া) তোমাদের মধ্যেও তো তাদের কথা আগ্রহের সাথে শোনার মতো (গুপ্তচর কিংবা দুর্বল ঈমানের) লোক আছে, আল্লাহ তায়ালা (এসব) যালেমদের অবস্থা সম্পর্কে সম্যক অবগত রয়েছেন।

وَّلَا أَوْضَعُوا خِلْلَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفَتْنَةَ ع وَفِيْكُمْ سَمَّعُونَ لَهُمْ ﴿ وَاللَّهُ عَلِيْمٌ ۗ ا بِالظَّلِيِيْنَ

৪৮. এরা এর আগেও (তোমাদের মাঝে) বিশৃংখলা সৃষ্টি করতে চেয়েছিলো এবং তোমার পরিকল্পনাগুলো পালটে দেয়ার চক্রান্ত করেছিলো, শেষ পর্যন্ত ন্যায় (ও ইনসাফ তাদের কাছে) এসে হাযির হলো এবং আল্লাহ তায়ালার ফয়সালাই (চূড়ান্তভাবে) বিজয়ী হলো, যদিও তারা (হচ্ছে এ বিজয়ের) অপছন্দকারী!

٣٨ لَقَلِ ابْتَغُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْأُمُوْرَ مَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ آمْرُ الله وَمُرْكُومُونَ

৪৯. তাদের ভেতর এমন কিছু মানুষও আছে, যারা বলে, (হে নবী, এ যুদ্ধে যাওয়া থেকে তুমি) আমাকে অব্যাহতি দাও এবং আমাকে তুমি (কোনো লোভনীয় বস্তুর) মসিবতে ফেলো না: তোমরা জেনে রেখো, এরা তো (আগে থেকেই নানা) মসিবতে পড়ে আছে: আর জাহান্নাম তো কাফেরদের (চারদিকে বড়ো মসিবতের মতোই) ঘিরে রেখেছে।

تَفْتِنِّيْءُ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ء وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَهُ حَيْطَةً اللَّهُ إِلَّا لَكُفُونِيَ

৫০. তোমাকে যদি কখনো কোনো কল্যাণ স্পর্শ করে তাহলে (এতে) তাদের দুঃখ হয়, আবার তোমার কোনো مُصِيْبَةً يَقُوْلُوا قَنْ أَعَنْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ वाभता عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله المُعَلَى ا আপেই ডিন্র পথ অবলম্বন করে নিয়েছিলাম, অতপর তারা উৎফল্প চিত্তে তোমার কাছ থেকে সরে পডে।

٥٠ إِنْ تُصِبُكَ عَسَنَةً تَسُوْهُرْج وَانْ تُصَبُكَ وَيَتَوَلُّوا وَّمَرْ فَرِحُونَ

৫১. তুমি (তাদের) বলো, আসলে (কল্যাণ অকল্যাণের) কিছই আমাদের (ওপর নাযিল) হবে না- হবে ৩ধ তাই যা আল্লাহ তায়ালা আমাদের জন্যে নির্দিষ্ট করে রেখেছেন. তিনিই আমাদের একমাত্র আশ্রয়, আর যারা মোমেন তাদের তো (ভালো মন্দ সব ব্যাপারে) শুধু আল্লাহ তায়ালার ওপরই ভরসা করা উচিত।

٥١ قُلْ لَّنْ يُصِيْبَنَا ۚ إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا ع هُوَ مَوْلُننَا ج وَعَلَى اللَّه فَلْيَتُوكَّل الْهُؤْمِنُوْنَ

৫২. আমাদের (ব্যাপারে) তোমরা কি (বিজয় ও শাহাদাত এ) দুটো কল্যাণের যে কোনো একটির অপেক্ষা করছো? কিন্তু তোমাদের জ্বন্যে আমরা যা কিছুর প্রতীক্ষা করছি তা হচ্ছে, আল্লাহ ভায়ালা নিজে থেকে ভোমাদের আযাব يْبَكُرُ اللَّهُ بِعَنَابٍ مِّن عِنْدِهِ أَوْ विन اللهُ بِعَنَابٍ مِّن عِنْدِهِ أَوْ पारन, किश्वा आमारनत शां नित्त শান্তি পৌছাবেন), অতএব তোমরা অপেক্ষা করো, আমরাও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করছি।

 Δr قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَا ۚ إِلَّا إِهْنَى \tilde{V} الْحُسْنَيَيْنَ ﴿ وَنَحْنَ نَتَوَبُّصُ بِكُرْ أَنَّ بِأَيْنِينَا رِ فَتَوَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مَّتَوَبِّصُونَ

৫৩. (হে নবী,) তুমি বলো, ধন-সম্পদ আগ্রহ সহকারে খরচ করো কিংবা অনিচ্ছায় খরচ করো, কোনো অবস্তায়ই তোমাদের কাছ থেকে তা কবুল করা হবে না: কেননা তোমরা হচ্ছো একটি নাফরমান জাতি।

٥٣ قُلْ ٱنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّر مِنْكُرْ الْكُرْ كُنْتُرْ قُومًا فسقِينَ

৫৪. তাদের এ অর্থ-সম্পদ কবুল না হওয়াকে এ ছাড়া আর কোনো কিছুই বাধা দেয়নি যে, তারা (স্বয়ং সৃষ্টিকর্তা) আল্লাহ তায়ালাকে ও তাঁর (পাঠানো) রসলকে অমান্য করেছে, তারা নামাযের জন্যে আসে ঠিকই, কিন্তু الصَّلُوةَ إِنَّا وَمُرْ كُسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِنَّ السَّامِةِ وَاللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ا পথে অর্থ ব্যয় করে বটে, তবে তা করে (একান্ড) অনিচ্ছার সাথে।

٥٣ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَغَقْتُهُمْ الْآ أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ وكمر كرمون

৯ সুরা আত তাওবা

পারা ১০ ওয়া'লাম

৫৫. সতরাং (হে নবী), ওদের মাল-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি যেন তোমাকে কখনো আশ্চর্যানিত না করে. আল্লাহ তায়ালা (মূলত) এসব কিছু দিয়ে তাদের এ দুনিয়ার জীবনে (এক ধরনের) আযাবেই ফেলে রাখতে চান: আর যখন তাদের (দেহ থেকে) জান বের হয়ে যাবে তখন তারা কাফের অবস্থায়ই থাকবে।

٥٥ فَلَا تُعْجِبُكَ أَمْوَالُهُرْ وَلَا ۖ أَوْلَادُهُرْ . إِنَّهَا يُرِيْنُ اللَّهُ لِيُعَنِّبَهُرْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ النَّنيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كُفُونَ

पण وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ا وَمَا هُمْ أَهُمْ لَمِنْكُمْ ا وَمَا هُمْ مَا اللهِ اللهِ إللهِ اللهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ا وَمَا هُمْ صَالِحًا निष्ठि हों। বলছেন): এরা কখনোই তোমাদের (দলের) লোক নয়,

এরা হচ্ছে (মূলত) একটি ভীত-সম্ভক্ত জাতি।

(হলেও) বাঁচার চেষ্টা করতো।

مَّنْكُرُ وَلَكُنَّهُمْ قُوْمً يَّفُو تُوْنَ

৫৭. (এতো ভীত যে,) তারা যদি এতোটুকু আশ্রয়স্থল (কোথাও) পেয়ে যায় কিংবা পায় (যদি মাথা লুকোবার মতো) কোনো গিরিগুহা- অথবা (যমীনের ভেতর) ঢুকে পালাবার কোনো জায়গা, তাহলে অবশ্যই তারা (তোমাদের ভয়ে) এসব জায়গার দিকে দ্রুত পালিয়ে

٥٤ لَوْ يَجِلُونَ مَلْجَاً أَوْ مَغْرِٰ اَوْ مُلَّعَلًا لُّوَلُّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْهَحُونَ

৫৮. এদের মাঝে এমন লোকও আছে, যারা (বিশেষ কিছু) অনুদানের (ভাগ-বন্টনের) ব্যাপারেও তোমার ওপর فَإِنْ أَعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَرْ يُعْطَوا مِنْهَا الْمَرْ يُعْطَوا مِنْهَا وَمُوا وَإِنْ لَر يُعْطَوا مِنْهَا وَاللهِ اللهَ المُعَلَّمُ اللهُ الل হয় তাহলে তারা খুবই সম্ভুষ্ট হয়, আবার তাদের যদি তা থেকে দেয়া না হয় তাহলে তারা বিক্ষব্ধ হয়ে ওঠে।

٥٨ وَمِنْهُرْ مَّنْ يَلْهَاكُ فِي الصَّالَقُسِ ج

৫৯. যদি তারা এর ওপর সন্তুষ্ট হতো যা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসুল তাদের দিয়েছেন (তাহলে তা কতোই না ভালো হতো), সে অবস্থায় তারা বলতো, আল্পাহ তায়ালাই আমাদের জন্যে যথেষ্ট, অচিরেই আল্লাহ তায়ালা তাঁর অনন্ত ভান্ডার থেকে আমাদের অনেক দেবেন এবং তাঁর রসুলও আমাদের অনেক দান করবেন. আমরা তো আল্লাহর সম্ভুষ্টির দিকেই তাকিয়ে আছি।

٥٩ وَلَوْ أَتَّهُمْ رَضُوْا مَا أَتَّاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ٧ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُوْ تَيْنَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ لا إِنَّا إِلَى اللَّهِ رِغِبُونَ ع

৬০. (এসব) 'সাদাকা' (যাকাত) হচ্ছে ফকীর-মেসকীনদের জন্যে, এর (ব্যবস্থাপনায় কর্মরত) কর্মচারীদের জ্বন্যে, যাদের অস্তকরণ (দ্বীনের প্রতি) অনুরাগী করা প্রয়োজন তাদের জ্বন্যে, (কোনো ব্যক্তিকে) গোলামীর (বন্ধন) থেকে আযাদ করার জন্যে, ঋণগ্রস্ত ব্যক্তিদের (ঋণমুক্তির) জন্যে, আল্লাহ তায়ালার পথে (সংগ্রামী) ও মোসাফেরদের জন্যে (এ সাদাকার অর্থ ব্যয় করা যাবে): এটা আল্লাহ তায়ালার নির্ধারিত ফরয: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা (সব কিছ) জ্বানেন এবং তিনিই হচ্ছেন বিজ্ঞ, কশলী।

١٠ إِنَّهَا الصَّاكَاتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْهَسٰكِيْنِ وَ الْعُمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْهُوَ لَّفَةِ قُلُوْبُهُرْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغُرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ وَابْن السَّبِيْل ، فَرِيْضَةً مِّنَ اللهِ ، وَاللَّهُ عَلِيْرٌ

৬১. তাদের মধ্যে এমন কিছু লোকও আছে যারা আল্লাহর নবীকে কষ্ট দেয়: তারা বলে, এ ব্যক্তি কান (-কথায় বিশ্বাস করে, হে নবী), তুমি (তাদের) বলো, তার কান (তাই শোনে যা) তোমাদের জন্যে কল্যাণকর: সে আল্লাহ তায়ালাতে বিশ্বাস করে. মোমেনদের ওপর বিশ্বাস রাখে. তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে সে তাদের জন্যেও আল্লাহ তায়ালার রহমত: যারা আল্লাহর রসূলকে কষ্ট দেয় তাদের জন্যে কঠোর শাস্তির ব্যবস্থা রয়েছে।

١٦ وَمِنْهُرُ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيُّ وَيَقُولُونَ مُوَ أَذُنُّ ﴿ قُلْ أَذُنَّ غَيْرِ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْهُؤْمِنِينَ وَرَهْمَةً لِلَّذِينَ أَمُنُوْا مِنْكُيرٌ ، وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ الله لَهُرْ عَنَابُ ٱليُمُ

৬২. এরা তোমাদের খুশী করার জন্যে আল্লাহ তায়ালার নামে শপথ করে, অথচ এরা যদি (সত্যিকার অর্থে) মোমেন হতো তাহলে (এরা বুঝতো), তাদের খুশী করার জন্যে আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের অধিকার হচ্ছে (সবচাইতে) বেশী।

٦٢ يَحْلِفُوْنَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُوْضُوْكُمْ ۽ وَاللَّهُ وَرَسُولَهُ آحَقٌّ أَنْ يُرْضُونُهُ إِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ

৬৩. এ (মূর্খ) লোকেরা কি একথা জানে না, যদি কোনো ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের বিদ্রোহ করে তবে তার জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আগুন, সেখানে সে চিরকাল থাকবে: আর তা (হবে তার জ্বন্যে) চরম **लाञ्च**ना ।

٦٣ ٱلَـٰرْ يَعْلَمُوْاً ٱنَّـٰهُ مَنْ يُّحَادِدِ اللَّهَ ورَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِلًا فِيهَا ء ذلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْرُ

৬৪. (এ) মোনাফেকরা আশংকা করে, তোমাদের ওপর এমন কোনো সুরা নাযিল হয়ে পড়ে কিনা, যা তাদের মনের (ভেতরে লুকিয়ে থাকা) সব কিছু ফাস করে দেবে: (হে নবী.) তুমি (এদের) বলো, হাঁ (যদ্দর পারো তোমরা) বিদ্রূপ করে নাও, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (এমন কিছু নাযিল করবেন, যাতে তিনি সে) সব কিছু ফাস করে দেবেন, যার তোমরা আশংকা করছো :

٦٣ يَحْنَرُ الْهُنفِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمِ ۗ سُوْرَةً تُنَبِّنُهُر بِهَا فِي قُلُوْبِهِر ﴿ قُلُ اسْتَهْزِءُوْا ، إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْنَرُوْنَ

৬৫. তুমি যদি তাদের (কিছু) জিজ্ঞেস করো তারা বলবে, (না.) আমরা তো একটু অযথা কথাবার্তা ও হাসি কৌতুক وَنَلْعَبُ وَ قُلْ أَبِاللَّهِ وَأَيتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُر कर्जाहनाम मात, क्रिम (जारनत) वरना, राजभता कि जालार তায়ালা, তাঁর আয়াতসমূহ ও তাঁর রস্লকে বিদ্রূপ করছিলে?

٦٥ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّهَا كُنَّا نَضُوْسُ

৬৬. (হে কাফেররা,) তোমরা দোষ ছাড়ানোর চেষ্টা করো না, একবার ঈমান আনার পর তোমরাই পুনরায় কাফের হয়ে গিয়েছিলে: আমি যদি তোমাদের একদলকে (তাদের ঈমানের কারণে) ক্ষমা করে দিতে পারি, তাহলে আরেক দলকে (পুনরায় কৃষ্ণরীতে ফিরে যাবার জন্যে) ভয়াবহ শান্তিও দিতে পারি, কারণ এ (শেষের দলের) লোকেরা ছিলো জঘন্য অপরাধী।

٦٢ لَا تَعْتَلِورُوْا قَلْ كَفَرْتُمْ بَعْنَ إِيْمَانِكُمْ ، إِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَة مِّنْكُرْ نُعَنَّبْ طَائِفَةً بِٱللَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ع

৬৭. মোনাফেক পুরুষ ও মোনাফেক নারী, এরা (স্বভাব-চরিত্রে) একে অপরের মতোই। তারা (উভয়েই মানুষদের) অসৎ কাজের আদেশ দেয় ও সংকাজ থেকে বিরত রাখে এবং (আল্লাহ তায়ালার পথে খরচ করা থেকে) উভয়েই নিজেদের হাত বন্ধ করে রাখে; তারা (যেমনি এ দুনিয়ায়) আল্লাহ তায়ালাকে ভূলে গেছে. আল্লাহ তায়ালাও (তেমনি আখেরাতে) তাদের ভূলে যাবেন: নিসন্দেহে মোনাফেকরা সবাই পাপিষ্ঠ।

٦٤ ٱلْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَٰتُ بَعْضُهُرْ مِّنَ بَعْضٍ مِ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكُرِ وَيَنْهُونَ عَن الْمَعْرُوْنِ وَيَقْبِضُوْنَ أَيْدِيَمُرُ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ﴿ إِنَّ الْمُنفِقِينَ مُرُّ الْفَسِقُونَ

৬৮. আল্লাহ তায়ালা (এ) মোনাফেক পুরুষ ও মোনাফেক নারী এবং কাফেরদের জাহান্রামের ভয়াবহ আগুনের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন, যেখানে তারা চিরকাল (ধরে জুলতে) থাকবে: (জাহান্নামের) এ (আগুনই) হবে তাদের জন্যে যথেষ্ট, তাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার গযব (নাযিল হোক), ওদের জ্বন্যে রয়েছে এক চিরস্থায়ী আযাব।

٦٨ وَعَلَ اللَّهُ الْهُنْفَقِيْنَ وَالْهُنْفَقْرِ وَ الْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خُلِدِيْنَ فِيْهَا ﴿ مِيَ حَسْبُهُرْ ۚ وَلَعَنَهُرُ اللَّهُ ۚ وَلَهُرْ عَنَ ال

৬৯. (खामता) ठिक जाप्पतर मरजा, यात्रा जामाप्पत जारा مِنْ قَبْلِكُرْ كَانُوْ اَ أَشَلَّ مِنْكُرُ عَانُوْ اَ أَشَلُّ مِنْكُرُ عَالُوْنِينَ مِنْ قَبْلِكُرْ كَانُوْ اَ أَشَلُّ مِنْكُر عَالَى طاعات العالم العال চাইতে প্রবল, ধন-সম্পদ, সন্তান-সন্তুতি তাদের তোমাদের চাইতে ছিলো বেশী; দুনিয়ার যে ভোগ-বিলাস

قُوَّةً وَّأَكْثَرَ أَمُوالًا وَّأَوْلَادًا ﴿ فَاسْتَمْتَعُوْا

তাদের ভাগে ছিলো তা তারা ভোগ করে গেছে, অতপর তোমাদের ভাগে যা আছে তোমরাও তা ভোগ করে (একদিন) চলে যাবে, যেমনি করে তোমাদের আগের লোকেরা তাদের যে পরিমাণ ভোগ করার ছিলো তা শেষ করে (চলে) গেছে, তারা যেমন অনর্থক কাজকর্মে ডুবে থাকতো, তোমরাও তেমনি অর্থহীন কথাবার্তায় ডুবে আছো; এরা হচ্ছে সেসব লোক, দুনিয়া -আখেরাতে যাদের কর্মফল বিনষ্ট হয়ে গেছে, আর (সত্যিকার অর্থে) এরাই হচ্ছে নিদারুণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত।

بِخَلَدِقِهِرْ فَاشْتَهْتَعْتُرْ بِخَلَدَقِكُرْ كَمَا اسْتَهْتَعُ الْنِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَدَقِهِرْ وَهُضْتُرْ كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَدَقِهِرْ وَهُضْتُرْ كَالَّذِينَ هَالُهُمْ كَالَّذِينَ هَالُهُمْ فَي اللَّنْيَا وَالْأَخِرَةِ ع وَالوَلَيْكَ هُمُ الْخُرِوْنَ الْخُلِوُنَ

৭০. এদের কাছে কি আগের লোকদের খবর পৌছেনি?
নুহের জাতির, আদ জাতির, সামৃদ জাতির
(কীর্তিকলাপ?) ইবরাহীম, মাদইয়ানবাসী (নবী) ও সে
বিধ্বংস জনবসতির কথা (কি এদের কাছে কেউ বলেনি)?
এ সব (কয়টি জাতির) মানুষের কাছে তাদের রসূলরা
আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট আয়াত নিয়ে
এসেছিলো, (নবী না পাঠিয়ে কাউকে আযাব দেবেন,
এমন) অবিচার তো আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর কখনো
করতে পারেন না, বস্তুত তারা নিজেরাই নিজেদের ওপর
য়ুলুম করেছে।

4 أكر يَا تَهِر نَبَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِر قَوْا الْوَيْنَ مِنْ قَبْلِهِر قَوْا الْوَيْنَ مِنْ قَبْلِهِر قَوْا الْوَيْنَ وَاصْحُبِ مَنْ يَنْ وَالْمُؤْتَفِكُ مِنْ اللهُ لِيَظْلِمُمُر وُسُلُمُر بِالْبَيِّنْ مِنْ وَقَلْ كَانَ الله لِيَظْلِمُمُر وَلَكِنْ كَانُوْ آ انْفُسَمُر يَظْلِمُونَ

৭১. (অপরদিকে) মোমেন পুরুষ ও মোমেন নারীরা হচ্ছে একে অপরের বন্ধু। এরা (মানুষদের) ন্যায় কাজের আদেশ দেয়, অন্যায় কাজ থেকে বিরত রাখে, তারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, (জীবনের সব কাজে) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের (বিধানের) অনুসরণ করে, এরাই হচ্ছে সে সব মানুষ; যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অচিরেই দরা করবেন; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা পরাক্রমশালী, কুশলী।

ا ﴾ وَالْهُوْمِنُوْنَ وَالْهُوْمِنْتُ بَعْضُهُرْ اَوْلِيَاءُ بَعْضِ مَ يَاْمُرُوْنَ بِالْهَعْرُوْنِ وَيَنْهُوْنَ عَنِ الْهُنْكُرِ وَيُقِيْهُوْنَ الصَّلُوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللَّهَ وَرَسُولَةً ، أُولِنْكَ سَيَرْحَهُمُرُ اللَّهُ ، إِنَّ اللَّهَ عَزِيْزٌ حَكِيْرٌ

৭২. (এ ধরনের) মোমেন পুরুষ ও মোমেন নারীদের আল্লাহ তায়ালা এমন এক সুরম্য জান্নাতের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন, যার তলদেশ নিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহমান থাকবে, সেখানে তারা চিরদিন অবস্থান করবে, (চিরস্থারী) জান্নাতে তাদের জন্যে সুন্দর সুন্দর বাসস্থানের ব্যবস্থা থাকবে; (সেদিনের) সবচাইতে বড়ো (নেয়ামত) হবে (বান্দার প্রতি) আল্লাহ তায়ালার সন্তুষ্টি; এটাই হবে (সেদিনের) সবচেয়ে বড়ো সাফল্য।

47 وَعَنَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنْتِ جَنْسٍ مَنْسٍ مَنْسٍ تَجْرِئُ مِنْ مِنْسٍ تَجْرِئُ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مَنْسٍ عَلَى مَا مَنْسِ مَنْسٍ عَلَى مُو وَرِضُوانٌ مِنَ اللهِ اكْبَرُ م ذٰلِكَ مُو الْغَوْزُ الْعَظِيْرُ ع

৭৩. হে নবী, কাফের ও মোনাফেকদের বিরুদ্ধে জেহাদে অবতীর্ণ হও– ওদের প্রতি কঠোরতা অবলম্বন করো, (কেননা) এদের (চূড়াস্ত) আবাসস্থল হবে জাহান্লাম; এটি বড়োই নিকৃষ্ট স্থান।

47 يَأَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِلِ الْكُفَّارَ وَالْمُنْفِقِينَ
 وَاغْلُقاْ عَلَيْهِرْ ﴿ وَمَا وٰلِمُرْ جَهَنَّمْ ﴿ وَبِئْسَ الْهَصِيْرُ
 الْهَصِيْرُ

৭৪. এরা আল্লাহর নামে কসম করে বলে, (কুফরী শব্দ)
এরা বলেনি; (আসলে) এরা কুফরী শব্দ বলেছে এবং
তাদের ইসলাম গ্রহণের পরই তারা তা অস্বীকার করেছে,
এরা এমন এক কাজের সংকল্প করেছিলো যা তারা করতে
পারেনি, (এরপরও) তাদের প্রতিশোধ নেয়ার এ ছাড়া
আর কি কারণ থাকতে পারে, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর
রস্ল নিজ অনুগ্রহ দিয়ে তাদের ধনশালী করে
৯ সুরা আত্ তাওবা

٣٠ يَحْلِغُونَ بِاللهِ مَا قَالُوا ، ولَقَنْ قَالُوا ، وَلَقَنْ قَالُوا كَلَيْمَةُ الْكُوا كَلَيْمَةُ الْكُولِ وَكَفَرُوا بَعْنَ إِسْلَامِهِمْ وَمَنَّوْا بِهَا لَمْ يَنَالُوا ، وَمَا نَقَبُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ، فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ

↓ ২৫

দিয়েছিলেন, এখনও যদি এ লোকেরা আল্লাহ তায়ালার কাছে তাওবা করে, তাহলে এটা তাদের জন্যেই ভালো হবে, আর যদি তারা (সত্য থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে আল্লাহ তায়ালা দুনিয়া-আখেরাত উভয় স্থানেই তাদের কঠিন আযাব দেবেন এবং (উপরম্ভু এ) যমীনে তাদের কোনো বন্ধ কিংবা সাহায্যকারী থাকবে না।

৭৫. ওদের মধ্যে এমন কিছু লোকও আছে যারা আল্লাহর সাথে ওয়াদা করেছিলো, যদি আল্লাহ তায়ালা নিজ অনুগ্রহে আমাদের সম্পদ দান করেন তাহলে আমরা অবশ্যই (তার একাংশ আল্লাহর পথে) দান করবো এবং অবশ্যই আমরা নেক লোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবো।

৭৬. অতপর যখন আল্লাহ তায়ালা নিজ্ক অনুথাহ (-এর ভান্ডার) থেকে তাদের ধন-সম্পদ দান করলেন, তখন তারা (দানের বদলে) কার্পণ্য (করতে শুরু) করলো এবং (আল্লাহ তায়ালাকে দেয়া ওয়াদা থেকে) তারা (গোঁড়ামির সাথেই) ফিরে এলো।

৭৭. অতপর আল্লাহ তায়ালা তাদের অন্তরে মোনাফেকী বদ্ধমূল করে দিলেন সেদিন পর্যন্ত, যেদিন তারা আল্লাহ তায়ালার সাথে সাক্ষাত করবে। এটা এ কারণে, এরা আল্লাহ তায়ালার কাছে যে ওয়াদা করেছিলো তা ভংগ করেছে এবং এরা মিথ্যা আচরণ করেছে।

৭৮. এ লোকেরা কি একথা জানতো না, তাদের সব গোপন কথা ও সব সলাপরামর্শ সম্পর্কে আল্লাহ তায়ালা জানেন এবং অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা গায়ব সম্পর্কেও বিশেষভাবে অবহিত,

৭৯. (আল্লাহ ভায়ালা তাদের ব্যাপারেও সম্যক অবগত আছেন) যারা সেসব ঈমানদার ব্যক্তিদের দোষারোপ করে, যারা আন্তরিক নিষ্ঠা ও আগ্রহের সাথে আল্লাহ ভায়ালার পথে দান করে (এবং যারা দান করার মভো) নিজেদের পরিশ্রম (-লব্ধ সামান্য কিছু সম্পদ) ছাড়া কিছুই পায় না, এসব মোমেনের সাথে মোনাফেকদের এ (দলের) লোকেরা হাসি-ঠাট্টা করে; এ (বিদ্রুপকারী)-দের স্বয়ং আল্লাহ ভায়ালাও বিদ্রুপ করতে থাকেন, (পরকালে) ভাদের জন্যে রয়েছে কঠিন আযাব।

৮০. (হে নবী,) এমন লোকদের জন্যে তুমি (আল্লাহ তায়ালার কাছে) ক্ষমা প্রার্থনা করো আর না করো (দূটাই সমান); তুমি যদি সত্তর বারও তাদের জন্যে আল্লাহর কাছে ক্ষমা চাও, আল্লাহ তায়ালা কখনো তাদের ক্ষমা করবেন না; কেননা, এরা (জেনে-বুঝে) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলকে অস্বীকার করেছে; (আসলে) আল্লাহ তায়ালা কখনো না-ফরমান লোকদের হেদায়াত করেন না।

৮১. (যুদ্ধের বদলে) যাদের পেছনে ফেলে রাখা হলো, তারা (এভাবে) রসূলের (ইচ্ছার) বিরুদ্ধে নিজেদের ঘরে বসে থাকতে পেরে খুব খুলী হয়ে গেলো, (মূলত) তারা তাদের জান-মাল দিয়ে আল্লাহর পথে জেহাদ করাটা পছন্দ করলো না, (বরং) বললো, (এ ভীষণ) গরমে خَيْرًا لَّهُرْ } وَإِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَنِّبْهُرُ اللهُ عَنَابًا اَلِيْمًا لا فِي النَّنْيَا وَالْأَخِرَةِ } وَمَا لَهُرْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ

4a وَمِنْهُرْ مَّنْ عُهَلَ اللَّهَ لَئِنْ أَتْنَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّاْقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّلِحِيْنَ

٢٦ فَلَهَ أَتْهُرْ مِّنْ فَضْلِهِ بَحْلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا
 وَّهُرْ مُعْرِضُونَ

ُ ٤٤ فَاَعْقَبَهُرْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِرْ إِلَى يَوْمِ يَلْقُوْنَهُ بِهَا ۖ اَهْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَلُوهُ وَبِهَا كَانُوْا يَكْلِبُوْنَ

4 أَلَر يَعْلَمُوا آَنَ اللّه يَعْلَر سِرَّمُر وَنَحُونمُر وَآنَ الله عَلّامُ الْقُيُوبِ

٩٤ اَلَّذِيْنَ يَلْوِزُونَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّنَاسِ وَالَّذِيْنَ لَا يَحِدُونَ الله مِثْمَرُ فَيَشْخُرُونَ مِثْمُرْ فَيَشْخُرُونَ مِثْمُرْ فَيَشْخُرُونَ مِثْمُرْ فَيَشْخُرُونَ مِثْمُرْ فَيَشْخُرُ الله مِثْمُرْ وَلَمُرْعَنَابُ الْمِيْرُ

٩٠ إِسْتَغْفِرْ لَهُرْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُرْ الله تَسْتَغْفِرْ لَهُرْ الله تَسْتَغْفِرْ لَهُرْ الله تَسْتَغْفِرْ لَهُرْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَتْغُفِرَ الله لَهُ لَهُرْ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُرْ كَفَرُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ الله وَالله لا يَهْرِى الْقَوْمَ الْفُسِقِيْنَ عَ

٨ فَرِحَ الْهُخَلَّقُونَ بِهَقْعَوِمِرْ عِلْفَ رَسُولِ
 اللهِ وَكَرِمُواۤ اَن يُّجَامِلُوا بِاَمُوالِمِرَ
 وَانْفُسِمِرْ فِى سَبِيْلِ اللهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا

3886

পারা ১০ ওয়া'লামু

তোমরা বাইরে যেও না; (হে নবী,) তুমি তাদের বলো, জাহান্নামের আগুন তো এর চাইতেও বেশী গরম; (কতো ভাল হতো) লোকগুলো যদি (একথাটা) বুঝতে পারতো!

فِي الْحَرِّ، قُلْ نَارُ جَهَنَّرَ آهَنَّ مَرًّا ، لَوْ كَانُوْ إِيَفْقُهُوْنَ

৮২. অতএব (এ দুনিয়ায়) তাদের কম হাসা উচিত, (অন্যথায় কেয়ামতের দিন) তাদের বেশী কাঁদতে হবে, তারা যা (গুনাহ এখানে) অর্জন করেছে তাই হবে তাদের (সেদিনের) যথার্থ বিনিময়।

٨٢ فَلْيَضْحَكُواْ قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُواْ كَثِيْرًا ع جَزَاءً بِهَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ

৮৩. যদি আল্লাহ তায়ালা (এ অভিযানের পর) তোমাকে مُونَهُر مِنْهُمُ مُانِفَةً مِنْهُمُ ٨٣ مَانِنُ رَجْعَكَ اللّهُ إلى طَانِفَةً مِنْهُمُ ٨٣ এদের কোনো একটি দলের কাছে ফেরত নিয়ে আসেন এবং তারা যদি তোমার কাছে (পুনরায় কোনো যুদ্ধে যাবার) অনুমতি চায়, (তাহলে) তুমি বলো (না-) কখনো তোমরা আমার সাথে (আর কোনো অভিযানে) বের হবে না, তোমরা আমার সাধী হয়ে আর কখনো শত্রুর সাথে লড়বে না; কেননা তোমরা আগের বার (যুদ্ধের বদলে) পেছনে বসে থাকা পছন্দ করেছিলে, (আজ যাও,) যারা পেছনে থেকে গেছে তাদের সাথে তোমরাও (পেছনে) বসে থাকো।

فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ ٱبَدُّا وَّلَيْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ﴿ إِنَّكُمْ رَضِيْتَمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الخلفين

৮৪. ওদের মধ্যে কোনো লোকের মৃত্যু হলে তুমি কখনো তার (জানাযার) নামায পড়ো না, কখনো তার কবরের পাশে তুমি দাঁড়িয়ো না; কেননা এ ব্যক্তিরা নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের সাথে কুফরী করেছে, এরা না-ফরমান অবস্থায় মরেছে।

٨٣ وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُرْ مَّاتَ أَبَدُّا وَّلَا تَقُرْعَلَى قَبْرِهِ ﴿ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ ورسوله وماتوا ومر فسقون

৮৫. ওদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি যেন তোমাদের কখনো বিমুগ্ধ করতে না পারে; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা এসব কিছু দিয়ে তাদের দুনিয়ার জীবনে (নানা ধরনের) শান্তি দিতে চান এবং তাদের প্রাণ (বায়ু একদিন এমন এক অবস্থায়) বের হবে, যখন তারা (পুরোপুরিই) কাফের থাকবে।

٨٥ وَلَا تُعْجِبُكَ أَمُوالُهُرْ وَأَوْلَادُهُرْ ، إِنَّهَا يُرِيْلُ اللَّهُ أَنْ يَّعَنِّبَهُمْ بِهَا فِي النَّنْيَا وَتَوْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كُفِرُونَ

৮৬. যখনি এমন ধরনের কোনো সূরা নাযিল হয়, (যাতে বলা হয়) তোমরা আল্লাহর ওপর ঈমান আনো এবং তাঁর রসূলের সাথে মিলে (কাফেরদের বিরুদ্ধে) জেহাদ করো, তখনি তাদের বিত্তশালী ব্যক্তিরা তোমার কাছে এসে (যুদ্ধে না যাওয়ার জন্যে) অব্যাহতি চায় এবং তারা বলে (হে নবী), আমাদের ছেড়ে দাও, যারা ঘরে বসে আছে আমরাও তাদের সাথে থাকি।

٨٦ وَإِذَا آَنْزِلَتْ سُوْرَةً أَنْ أَمِنُوا بِاللّهِ وَجَاهِلُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ القعريي

৮৭. তারা (মূলত) ঘরে বসে থাকা লোকদের সাথে অবস্থান করাই পছন্দ করে নিয়েছে, তাদের অন্তরে মোহর মেরে দেয়া হয়েছে, ফলে তারা কিছুই বুঝতে পারে না।

٨٠ رَضُوْا بِأَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبِعَ عَلَى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ ۖ لَا يَفْقَهُوْنَ

৮৮. কিন্তু (আল্লাহর) রসূল এবং যারা তাঁর সাথে আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে, তারা (সবাই) নিজেদের

٨٨ لَكِنِ الرُّسُولُ وَالَّذِيْنَ امَنُوْا مَعَدَّ

৯ সুরা আত্ তাওবা

1995

মনবিল ২

পারা ১০ ওয়া লামু

জান-মাল দিয়ে আল্লাহর পথে জেহাদ করেছে; (অতএব) এদের জন্যেই যাবতীয় কল্যাণ (নির্দিষ্ট হয়ে) আছে, আর (সত্যিকার অর্থে) এরাই হচ্ছে সফ**লকাম**।

جَهَلُوْ ا بِأَمُوَ الِهِرْ وَ أَنْفُسِهِرْ ﴿ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْغَيْرِتُ رَوَاولئكَ مُرُ الْمُفْلِحُونَ

৮৯. (এর বিনিময়ে) আল্লাহ তায়ালা এদের জন্যে এমন এক (সুরম্য) জানাত প্রস্তুত করে রেখেছেন, যার পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহমান, সেখানে তারা চিরকাল থাকবে; (বস্তুত) এ হচ্ছে সর্বোত্তম সাফল্য।

٨٩ أَعَنَّ اللَّهُ لَهُرْ جَنَّتِ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهِرُ خَلِينِي فِيْهَا وَ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظَيْرِ عَ

৯০. ওযরকামী কিছু সংখ্যক আরব বেদুঈনও (তোমার কাছে) এসে হাযির হয়েছে, যেন তাদেরও এ যুদ্ধে যাওয়া থেকে অব্যাহতি দেয়া হয়, এভাবে সে লোকগুলোও ঘরে বসে থাকলো যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলকে মিথ্যা সাব্যস্থ করেছিলো: এদের মধ্যে যারা (আল্লাহ ও তাঁর রসূলকে) অস্বীকার করে (ঘরে বসে থেকেছে), অচিরেই তারা মর্মান্তিক আযাবে নিমজ্জিত হবে।

٩٠ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْأَغْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُم وَقَعَلَ، الَّذِينَ كَنَابُوا اللَّهُ وَرَسُوْلَهُ مَ يْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْهُرْ عَنَابِ ٱلِيْرِ

৯১. যারা দুর্বল (এ যুদ্ধে শরীক না হওয়ার জ্বন্যে), তাদের ওপর কোনো দোষ নেই, (দোষ নেই তাদেরও) যারা অসুস্থ কিংবা যারা (যুদ্ধে) খরচ করার মতো কোনো সম্বল পায়নি, (অবশ্য) এরা যদি আল্লাহ তায়ালার নিষ্ঠাবান বান্দা হয় (তাহলেই তারা এ অব্যাহতির আওতায় পড়বে), সংকর্মশীল মানুষদের বিরুদ্ধেও কোনো অভিযোগের কারণ নেই: আল্লাহ তায়ালা একান্ত ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু,

٩١ لَيْسَ عَلَى الضَّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْهَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ﴿ مَا عَلَى الْهُكُسِنِيْنَ مِنْ سَبِيلِ ﴿ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ لا

৯২. (তাদের ব্যাপারেও কোনো অভিযোগ নেই) যারা (যুদ্ধ শুরুর প্রাক্তালে) তোমার কাছে (যাত্রার) বাহন সরবরাহ করার জ্ঞান্যে এসেছিলো এবং তুমি (তাদের) বলেছিলে, তোমাদের জ্বন্যে আমি এমন কিছু পাঞ্চি না, যার ওপর আমি তোমাদের আরোহণ করাতে পারি, (অতপর) তারা ফিরে গেলো, তারা (এমনভাবে) ফিরলো যে, তাদের চোখ থেকে অশ্রু বয়ে যাচ্ছিলো, (যুদ্ধে যাবার) খরচ যোগাড় করতে না পারায় তারা (ভীষণভাবে) দুঃখিত হলো।

٩٢ ولا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْبِلُهُرْ قُلْسَ لَآ أَجِلُ مَا آَمْبِلُكُرْ عَلَيْهِ مِ يَجِنُوْ ا مَا يُنْفَقُونَ ،

ه٥. (अव) अिंट्यों को जिल्ला विक्राक, यात्रा وَنَوْنَكَ يَسْتَأَذِنُوْنَكَ يَسْتَأَذِنُوْنَكَ اللَّهِ السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأَذِنُوْنَكَ সামর্থবান হওয়া সত্ত্বেও তোমার কাছে অব্যাহতি চায়, যারা পেছনে পড়ে থাকলো তাদের সাথে (ঘরে বসে) থাকাই তারা পছন্দ করলো, আল্লাহ তায়ালা তাদের পন্তরে মোহর মেরে দিয়েছেন, (এ কারণেই) তারা (তা) كُوْبِمِرْ فَهُر بَاللَّهُ عَلَى قُلُوْبِمِرْ فَهُر জানতে পারছে না (কোন্টা তাদের জন্যে ভা**লো**)।

وَهُرْ أَغْنِياءً } رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ ٧َ يَعْلَمُوْنَ

৯ সুরা আত্ তাওবা

અત્રદ

৯৪. (যুদ্ধ শেষে) তোমরা যখন তাদের কাছে ফিরে আসবে: তখন এরা তোমাদের কাছে ওযর পেশ করবে. তুমি (তাদের) বলো, (আজ) তোমরা কোনো রকম ওযর-আপত্তি পেশ করো না. আমরা আর কখনো তোমাদের বিশ্বাস করবো না. আল্লাহ তায়ালা (ইতিমধ্যেই) তোমাদের (অন্তরের) সব কথা আমাদের বলে দিয়েছেন: আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসুল অবশ্যই ورسوله ثُم تُردُونَ إِلَى عَلِم الْغَيْبِ (مُعَلِم الْعَلِيم الْعَلِم الْعَلْمِ الْعَلِم الْعَلِم الْعَلْمِ الْعَلَم الْعَلَم الْعَلَم الْعَلَم الْعَلِم الْعَلْم الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلِم الْعَلِم الْعَلِم الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْم الْعَلْمِ الْعَلِم الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ মহান সন্তার কাছেই ফিরে যেতে হবে, যিনি (যেমন) জানেন তোমাদের গোপন করে রাখা সব কিছু (তেমনি) জানেন প্রকাশ্য বিষয়সমূহ, অতপর তিনি (সে আলোকে) তোমাদের বলে দেবেন (দুনিয়ার জীবনে) তোমরা কি কাজ করছিলে।

وَ الشُّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِهَا كُنْتُم تَعْهَلُوْنَ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللَّهِ لَكُرْ إِذَا اِنْقَلَبْتُـ `

يعتارون اليكم أذا رجعتم ال

قُلْ لا تَعْتَن رُوْ النَّ نَّوْسَ لَكُورُ قَلْ نَبَّانَا

اللَّهُ مِنْ أَغْبَارِكُرْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ

৯৫. যখন তোমরা তাদের কাছে ফিরে আসবে, তখন তারা আলাহ তায়ালার নামে কসম করে তোমাদের বলবে, তোমরা যেন তাদের কাছ থেকে (এ) ব্যাপারটা উপেক্ষা করো: (আসলেই) তোমরা ওদের উপেক্ষা করো. কেননা ওরা হচ্ছে (চিন্তা ও আদর্শের দিক থেকে) নাপাক. তাদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্নাম, (দুনিয়ার জীবনে) তারা যা কিছু করে এসেছে এটা হচ্ছে তার (যথার্থ) বিনিময়।

৯৬. এরা ভোমাদের কাছে এ জন্যেই কসম করে যেন তোমরা (সব কথা ভূলে আবার) ডাদের ওপর সম্ভুষ্ট হয়ে যাও, কিন্তু তোমরা যদি (শত বারও) তাদের ওপর সম্ভুষ্ট হও, আল্লাহ ভায়ালা কখনো এ ফাসেক সম্প্রদায়ের ওপর সম্ভষ্ট হবেন না।

٩٦ يَكْلُفُونَ لَكُيرُ لِتَوْضَوْا عَنْـهُـرُ ج فَانْ تَ ْشَوْا عَنْهُمْ فَانَّ اللَّهَ لَا يَوْسَى عَنِ الْقَوْمُ

৯৭. (এ) বেদুইন (আরব) লোকগুলো কুফুর ও মোনাফেকীর ব্যাপারে অত্যন্ত কঠোর (প্রকৃতির), আল্লাহ তারালা তাঁর রসূলের ওপর (স্বীয় দ্বীনের) সীমারেখার ষে বিধানসমূহ নায়িল করেছেন, সে জ্ঞান লাভ না করার ক্ষমতাই মনে হয় এদের (মধ্যে) প্রবল: (মূলত) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সুবিজ্ঞ, কুশলী।

٩٤ ٱلْأَعْرَابُ آشَنَّ كُفْرًا وَّنفَاقًا وَّاجْنَرُ ٱلَّا يَعْلَهُوْ إِ مُنُوْدَ مَا ۖ أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ

৯৮. (এ) বেদুঈন (আরব)-দের মধ্যে এমন কিছু পোকও আছে, যারা কখনো যদি (আল্লাহ তারালার পথে) কিছ ব্যয় করে, তাকে (নিজেদের ওপর) জরিমানাতৃল্য মনে করে এবং তোমাদের ব্যাপারে কালের বিবর্তন (-মলক কোনো বিপদ-মসিবত) আসুক- তারা এ অপেক্ষায় থাকে: (আসলে) কালের মন্দচক্র ডো তাদের (নিজেদের) ওপরই ছেয়ে আছে: (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা সব কিছু শোনেন, সব কিছু জানেন।

٩٨ وَمِنَ الْإَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفَقُّ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُرُ النَّوَائِرَ ، عَلَيْهِم دَانَ أَهُ السَّوْء ، وَاللَّهُ سَهِيْعٌ عَلَيْمٍ

৯৯. (আবার) এ বেদুঈন (আরব)-দের মাঝে এমন কিছু লোকও আছে, যারা আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর ঈমান রাখে. (এরা) আল্লাহর পথে যা কিছু খরচ করে তাকে আল্লাহর নৈকট্যলাভ ও রস্লের দোয়া (পাওয়ার وَصَلَوْتِ الرَّسُولِ ﴿ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةً لَّهُر ﴾ अकठा खरनप्रन) मत्न करत; प्रिका प्रकारे छा बरलप তাদের জন্যে আল্লাহর নৈকট্যলাভের (একটা) উপায়: لُهُرُ اللَّهُ في رَحْبَته و إنَّ اللَّهُ عَفُور اللَّهُ عَنُور اللَّهُ عَنْهُور اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ و করাবেন: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

٩٩ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْ] الْأَخِرِ وَيَتَّخِنُّ مَا يُنْفِقُ تُرُّبْسِ عِنْنَ اللَّهِ



৯ সুরা আত্ তাওবা

১০০. মোহাজের ও আনসারদের মাঝে যারা প্রথম (দিকে 🕒 🗛 ঈমান এনেছে) এবং পরে যারা একান্ত নিষ্ঠার সাথে তাদের অনুসরণ করেছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সম্ভষ্ট হয়েছেন এবং তারাও আল্লাহ তায়ালার ওপর সম্ভুষ্ট হয়েছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের জন্যে এমন এক (সুরম্য) جَنَّت تَجُرِى تَحْتَهَا الْإِنْمُو خُلِدِينَ فِيهَا آلَوُهُم خُلِدِينَ فِيهَا الْمَامُ فَعَلَى الله প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরকাল থাকবে; আর তাই (হবে) সর্বোক্তম সাফল্য।

١٠٠ وَالسُّبِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهْجِرِيْنَ وَالْإَنْصَارِ وَالَّانِيْنَ اتَّبَعُوْمُرْ بِإِحْسَانِ لا رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَاعَنَّ لَهُ أَبَنَّا وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْرُ

১০১. (এ) বেদুঈন (আরব)-দের যারা তোমার আশেপাশে (বাস করে), তাদের মধ্যে কিছু কিছু وَمِنْ أَهْلِ الْمَرِينَةِ بِن مَرَّدُوا عَلَى النِّفَاق من النِّفَاق من السَّفَاق من السَّفَاق من المنافق ال মধ্যেও আছে। এরা সবাই কিন্তু মোনাফেকীতে সিদ্ধহন্ত। তুমি এদের জানো না: কিন্তু আমি এদের জ্ঞানি, অচিরেই আমি এদের (অপমান ও পরাজয়ের দ্বারা) দুবার শান্তি দেবো, অতপর (ধীরে ধীরে) এদের সবাইকে এক বড়ো আযাবের দিকে ফিরিয়ে দেয়া হবে।

١٠١ وَمِيَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ، لاَ تَعْلَمُهُمْ وَ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ وَ سَنُعَنِّ بَهُمْ مَّ تَيْنِ ثُر يُرَدُونَ إِلَى عَنَابٍ عَظِيْرٍ عَ

১০২. (তোমাদের মাঝে) আরো কিছু লোক আছে, যারা (অকপটে) নিজেদের গুনাহসমূহের কথা স্বীকার করে. (শয়তানের ফেরেবে) তারা তাদের নেক কাজকে গুনাহের কাজের সাথে মিশিয়ে ফেলেছে; আশা করা যায় আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর ক্ষমাপরবশ হবেন, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল।

١٠٢ وَالْمَرُونَ اعْتَرَفُوا بِنُ نُوبِمِر عَلَطُوا عَهَلًا مَالِحًا وَّأَهُوَ سَيِّنًا ، عَسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ﴿ إِنَّ اللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيْمٌ

১০৩. তুমি তাদের ধন-সম্পদ থেকে (যাকাত ও) সাদকা গ্রহণ করো, সাদকা তাদের পাক-সাফ করে দেবে, ডা দিয়ে তমি তাদের পরিশোধিত করে দেবে, তুমি তাদের জন্যে দোয়া করবে: কেননা তোমার দোয়া তাদের জন্যে (হবে পরম) সান্ত্রনা; আল্লাহ তায়ালা সব কিছু শোনেন वर भव किছ जातन।

١٠٣ مُنْ مِنْ أَمُوَالِهِمْ صَلَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُوَكِّيْهِرْ بِهَا وَمَلِّ عَلَيْهِرْ ﴿ إِنَّ مَلُوتَكَ سَكَنَّ لَّهُرْ ، وَاللَّهُ سَبِيْعٌ عَلِيْرٌ

১০৪. তারা কি একথাটা জানে না, আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের তাওবা কবুল করেন এবং তিনি (যাকাত ও) عَنْ عَبَادِةٍ وَيَاْ عُنُ الصَّلَقْتِ وَأَنَّ اللَّهَ مُو अग्नक बहुन करतन, निक्त्यहे जाबार जायाना राज्य তাওবা গ্রহণকারী ও পরম দয়াল।

١٠٣ ألَر يَعْلَهُوا أَنَّ اللَّهَ مُو يَقْبَلُ التَّوْبَةَ

কাজ করো, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রসুল ও (सारमनता राज्यात्मत (जावराज) कर्मकाल পर्यत्वक्रम कत्रतनः जाज्यत्वे मुज्जूत अत्र राज्यात्मत्त अवाहरक व्यमन علم علم الله علم المؤمِنُونَ وَسَتُردُونَ إِلَى علم علم الله علم ال সব কিছু সম্পর্কেই সম্যক অবগৃত, অভপর ভিনি كُنْتُرُ بِهَا كُنْتُرُ وَهُمَا وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّنُكُمُ بِهَا كُنْتُر তোমাদের বলে দেবেন তোমরা (দুনিয়ার জীবনে) কোন ধরনের কাজ করছিলে.

تَعْمَلُونَ ع

১০৬. (তোমাদের মাঝে) আরো কিছু লোক রয়েছে, যাদের ব্যাপারে এখনো আল্লাহ তায়ালার সিদ্ধান্তের আশা क्रें इल्ह्, जान्नार जाराना जारनत रस नाजि मिरवन, ना क्रिकेट के कि হয় তিনি তাদের ওপর দয়া পরবশ হবেন: (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন সুবিজ্ঞ, কুশলী।

١٠٦ وَأَخُرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا

১০৭. (মোনাফেকদের-) যারা (তোমাদের ক্ষতি সাধন করার জন্যে) মাসজিদে যেরার বানিয়েছে, এর একমাত্র উদ্দেশ্য হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার বিরোধিতা করা. মুসলমানদের মধ্যে অনৈক্য সৃষ্টি করা, (সর্বোপরি) আগে যেসব লোক আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর নবীর বিরুদ্ধে যুদ্ধ করেছে, তাদের জন্যে গোপন ঘাঁটি (সরবরাহ) করা: এরা তোমাদের কাছে শক্ত কসম খেয়ে বলবে, আমরা সং উদ্দেশ্য ছাড়া অন্য কোনো উদ্দেশে (এটা) করিনি: আল্লাহ তায়ালা (নিজে) সাক্ষ্য দিক্ষেন, এরা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

১০৮. তুমি (এবাদাতের উদ্দেশে কখনো) সেখানে দাঁড়াবে না- তোমার তো দাঁডানো উচিত সেখানে, যে মাসজিদ প্রথম দিন থেকেই আল্লাহর ভয়ের ওপর প্রতিষ্ঠিত হয়েছে, সেখানে এমন কিছু মানুষ আছে, যারা (ঈমান ও আমলের ক্ষেত্রে) নিজেরা সব সময় পাক-পবিত্র হওয়া পছন্দ করে: আর আল্লাহ তায়ালা তো পাক-সাঞ্চ শোকদেরই ভালোবাসেন।

১০৯. যে ব্যক্তি তার ঘরের ভিত্তি স্থাপন করেছে আল্লাহর ভয় ও আল্লাহর সম্ভষ্টির ওপর– সে ব্যক্তি উত্তম, না যে ব্যক্তি তার ঘরের ভিত্তি দাঁড় করিয়েছে পতনোনাুখ একটি গর্তের কিনারায় এবং যা তাকে সহ (অচিরেই) জাহান্নামের আগুনে গিয়ে পড়বে; আল্লাহ তায়ালা কখনো যালেম সম্প্রদায়কে হেদায়াত দেন না।

১১০, ওরা যা বানিয়েছে তা হামেশাই তাদের অন্তরে একটি সন্দেহের বীচ্ছ হয়ে (আটকে) থাকবে, যে পর্যন্ত না ওদের অন্তরসমূহ ছিন্ন-বিশ্ছিন হয়ে যাবে (তদিন পর্বন্ত তা اللهُ عَلَيْهُ وَ وَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْ অব্যাহত থাকবে): আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ ও প্রজ্ঞাময়।

১১১, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা মোমেনদের কাছ থেকে জানাতের বিনিময়ে তাদের জান ও তাদের মাল খরিদ করে নিয়েছেন, এরা আল্লাহর পথে জেহাদ করে, অতপর (এ জেহাদে কখনো কাফেরদের) তারা হত্যা করে, (কখনো আবার শত্রুর হাতে) তারা নিজেরা নিহত হয়। তার ওপর (এ) খাঁটি ওয়াদা (এর আগে) তাওরাত এবং ইনজীলেও করা হয়েছিলো, আর (এখন তা) এ কোরআনে করা হচ্ছে, এই ওয়াদা পালন করা আল্লাহ তায়ালার নিজস্ব দায়িত্ব: আর আল্লাহর চাইতে কে বেশী ওয়াদা পুরণ করতে পারে? অতএব (হে মোমেনরা), তোমরা তাঁর সাথে যে কেনাবেচার কাজ (সম্পন্ন) করলে তাতে সুসংবাদ গ্রহণ করো (কেননা) এটিই হচ্ছে মহাসাফল্য !

১১২. (যারা আল্লাহর দরবারে) তাওবা করে. (নিষ্ঠার সাথে তাঁর) এবাদাত করে, (তাঁর) প্রশংসা করে, (তাঁর জন্যে) রোযা রাখে, (তাঁর জন্যেই) রুকু-সাজদা করে, (যারা অন্যদের) ভালো কাজের আদেশ দেয় এবং মন্দ কাজ থেকে বিরত রাখে, (সর্বোপরি যারা) আল্লাহ তায়ালার (নির্ধারিত হালাল-হারামের) সীমা রক্ষা করে চলে: (হে নবী,) তুমি (এ ধরনের সব) মোমেনদের (জান্লাতের) সুসংবাদ দাও।

١٠٤ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا ۖ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَإِرْمَادًا لَّهَنْ حَارَبَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ ء وَلَيَحُلْفُيَّ انْ أَرَدُنَا الَّا الْحُسْنَى ﴿ وَاللَّهُ يَشْهَلُ إِنَّهُمْ لَكُنِ بُوْنَ

١٠٨ لَا تَقُر مُنِه أَبَنَّا م لَهَسْجِيٌّ أُسِّسَ عَلَى التَّقُوٰى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُوْمَ فِيْدِ مَ فِيْدِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يُتَطَهَّرُوا ﴿ وَاللَّهُ يُحِبُ الْمُطَّهِرِينَ

١٠٩ أَفَهَنْ أَسُّسَ بُنْيَانَةً عَلَى تَقُوٰى مِنَ اللهِ وَرِضُوانِ غَيْرٌ أَمْ مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَةً عَلَٰى شَفَا جُرُّفِ هَارِ فَانْهَارَ بِهِ فِيْ ثَارِ جَهَنََّمْ وَاللَّهُ لَا يَهْرِى الْقَوْمَ الظُّلِمِينَ

١١٠ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُرُ الَّذِي بَنَوْا رِيْبَةً فِي ۗ

١١١ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرْى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ٱنْفُسَمُرْ وَأَمْوَالَهُرْ بِأَنَّ لَهُرُ الْجَنَّةَ ، يُقَاتِلُونَ في سَبِيْلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ فَ وَعُنَّا عَلَيْه مَقًّا في التَّوْرة وَ الْإِنْجِيل وَ الْقُوان ، وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْلِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشُوا وَ بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ﴿ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

١١٢ ٱلتَّالِبُونَ الْعَبِلُونَ الْعَبِلُونَ الْعَمِدُونَ السَّائِحُونَ الرِّكِعُونَ السَّحِدُونَ الْأَمِرُونَ بِالْهَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْهُنْكَرِ وَالْحُفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ﴿ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

৯ সূরা আত্ তাওবা



পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন

১১৩. নবী ও তার ঈমানদার (সাধীদের) জন্যে এটা মানায় না যে, তারা মোশরেকদের জন্যে কখনো মাগফেরাতের দোয়া করবে, এমনকি যদি তারা তাদের ঘনিষ্ঠ আত্মীয়ও হয়, যখন এটা পরিষ্কার হয়ে গেছে যে, তারা (আসলেই) জাহান্লামের অধিবাসী!

١١٣ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ أَمَنُوْآ أَنْ يَّشْتَغْفِرُوْا لِلْهُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْآ أُولِيْ قُرْبِي مِنْ بَعْلِ مَا تَبَيَّنَ لَهُرْ أَنَّهُرْ أَصْحُبُ

১১৪, ইবরাহীমের স্বীয় পিতার জন্যে মাগফেরাতের ব্যাপারটি একটি ওয়াদা পালন ছাডা আর কিছুই ছিলো না, যা সে তার পিতার কাছে (আগেই) করে রেখেছিলো, এ (ব্যতিক্রম)-টা ছিলো তথু তার একার জন্যেই, কিন্তু যখন এ কথা তার সামনে পরিষার হয়ে গেলো যে, সে অবশ্যই আল্লাহর দুশমন, তখন সে তার সাথে সম্পর্ক ছিনু করে ফেললো: অবশ্যই ইবরাহীম ছিলো একজন কোমল হৃদয় ও সহানুভৃতিশীল মানুষ।

١١٣ وَمَا كَانَ اسْتَغْفَارُ ابْدُمِيْمَ كَابِيْدِ اللهِ عَيْ مُوْعِنَةً وْعَلَهَا ۚ إِيَّاةً جِ فَلَمًّا تَبَيِّي لَهُ أَنَّهُ عَنُو لِلَّهِ تَبَرًّا مِنْهُ وَإِنَّ إِبْرُمِيْمَ كَوَّاهُ حَلِيْر

১১৫. আল্লাহ তায়ালা এমন নন যে, কোনো জাতিকে একবার হেদায়াভদানের পর পুনরায় তিনি তাদের গোমরাহ করে দেবেন, যতোক্ষণ না তাদের সুস্পষ্টভাবে (এ কথাটা) জানিয়ে দেয়া হয় যে, (কোন্ জিনিস থেকে) সাবধান থাকতে হবে, অবশ্যই আল্লাহ ভায়ালা সব বিষয়ের জ্ঞান রাখেন।

١١٥ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلُّ قَوْمًا ۚ بَعْنَ إِذْ مَنْ بُهُرُ مَتَّى يُبَيِّنَ لَهُرْمًا يَتَّقُونَ ، إنَّ الله بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرٌ

১১৬. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সার্বভৌম ক্ষমতা একমাত্র আল্লাহ তায়াশার হাতেই; তিনিই জীবন দেন, তিনিই মৃত্যু يعي وَيُويْسُ ا وَمَا لَكُر مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّ অভিভাবক নেই, নেই কোনো সাহায্যকারীও।

١١٦ إِنَّ اللَّهَ لَدَّ مُلْكُ السَّاوْتِ وَالْأَرْضِ ا ولِي ولا نَصِيْر

১১৭. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তাঁর নৰীর ওপর অনুগ্রহ করেছেন, অনুগ্রহ করেছেন মোহাজেরদের ওপর, وَالْهُمْجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ النَّذِينَ اتَّبَعُونَا فِي اللَّهِينَ اللَّهِينَ النَّبُعُونَا فِي اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَي অনুগমন করেছিলো তাদের (সবার) ওপর, এমনকি যখন তাদের একটি (ছোট্ট) দলের চিন্তা (একটু) বাঁকা পথে ঝুঁকে পড়ার উপক্রম হয়ে পড়েছিলো, অতপর আল্লাহ তায়ালা এদের সবার ওপর দয়া করলেন: নিশ্চয়ই ভিনি ছিলেন তাদের প্রতি দয়ালু ও অনুগ্রহশীল,

١١٤ لَعَل ثَّابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ الْبَعْنِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقَ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِم

১১৮. সে তিন ব্যক্তির ওপরও (আল্লাহ তায়ালা দয়া করলেন), বাদের (ব্যাপারে) সিদ্ধান্ত মূলতবি করে রাখা হয়েছিলো: (তাদের অবস্থা) এমন এক পর্যায়ে (এসে পৌছুলো) যে, যমীন তার বিশালতা সম্ভেও তাদের ওপর সংকৃচিত হয়ে গেলো, (এমনকি) তাদের নিজেদের জীবন নিজেদের কাছেই দুর্বিষহ হয়ে পড়লো, তারা (এ কথা) উপলব্ধি করতে সক্ষম হলো যে, (আসলেই) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া তাদের আর কোনো জ্বায়গা নেই যেখানে কোনো আশ্রয় পাওয়া যাবে; অতপর আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর অনুগ্রহ করলেন যেন তারা (তাওবা করে) পুনরায় তাঁর কাছে ফিরে আসতে পারে: অবশাই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١١٨ وعَلَى الثَّلْثَةِ الَّذِينَ عُلِّقُوا ، مَتَّى إِذَا ضَاقَسَ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِهَا رَحُبَسُ وَضَاقَتُ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظُنُّوا أَنْ لا مَلْجَا مِنَ اللَّهِ إِلَّ إِلَيْهِ ، ثُرُّ تَابَ عَلَيْهِرْ لِيَتُوْبُوا ، إِنَّ اللهُ مُوَ التوابُ الرحيرُ ع

১১৯. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং (হামেশা) সত্যবাদীদের সাথে থেকো।

١١٩ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوْا

৯ সুরা আত্ তাওবা

₹ 200

১২০. মদীনার (মৃল) অধিবাসী ও তাদের আশেপাশের বেদুঈন (আরব)-দের জন্যে এটা সংগত ছিলো না যে তারা রসলের সহগামী না হয়ে পেছনে থেকে যাবে এবং তাঁর জীবন থেকে নিজেদের জীবনকে বেশী প্রিয় মনে করবে: (আসলে) এটা এ জন্যে, আল্লাহ তায়ালার পথে তাদের যে তৃষ্ণা, ক্লান্তি ও ক্ষুধায় কষ্ট পাওয়া– (তা তাদের নেক আমলের মধ্যেই শামিল হবে, তাছাড়া) এমন কোনো স্থানে তারা যাবে, যেখানে যাওয়ায় কাফেরদের তাদের ওপর ক্রোধ আসবে এবং শক্রদের কাছ থেকেও (মোকাবেলার সময়) তারা কিছু (সম্পদ) লাভ করবে (মূলত) এর প্রতিটি কাজের বদলে তাদের জন্যে নেক আমল লেখা হবে: নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা নেক লোকদের কাজের প্রতিফল বিনষ্ট করেন না.

١٣٠ مَا كَانَ ﴿ كَفُلِ الْهَٰٰنِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُ مِّنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَّتَخَلَّفُواْ عَنْ رَّسُوْلِ اللَّهِ وَ لَا يَرْغَبُو ۚ إِ بِٱنْفُسِهِرْ عَنْ تَّفْسِهِ ﴿ ذَٰلِكَ بأَنَّهُرْ لَا يُصِيْبُهُرْ ظَهَأٌ وَّلَا نَصَد مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَلَا يَطَنُّونَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَنُّوِّ تَّيْلُا إِلَّا بَ لَهُرْ بِهِ عَمَلٌ مَالِحٌ ﴿ إِنَّ اللَّهُ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ الْهُحْسِنِيْنَ لا

১২১. (এভাবেই) তারা আল্লাহর পথে যা খরচ করে (তা পরিমাণে) কম হোক কিংবা বেশী- (তা বিনষ্ট হয় না) এবং যদি তারা আল্লাহর উদ্দেশে কোনো প্রান্তর অতিক্রম عَقَطَعُونَ وَ ادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمْ करत करल, তाও তাদের झरना निनिवक हरव, यारा करत তারা (দুনিয়ায়) যা কিছু করে এসেছে, (আখেরাতে) আল্লাহ তায়ালা তার চাইতে উত্তম পুরস্কার তাদের দিতে পারেন।

ااً وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا وَلَا يَبْوَةً وَّلَا \tilde{V} اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوْ إِيعَهَلُوْنَ

১২২. মোমেনদের কখনো (কোনো অভিযানে) সবার একত্রে বের হওয়া ঠিক নয়: (তারা) এমন কেন করলো না যে, তাদের প্রত্যেক দল থেকে কিছু কিছু লোক বের হতো এবং দ্বীন সম্পর্কে জ্ঞানানশীলন করতো, অতপর যখন তারা (অভিযান শেষে) নিজ্ঞ জ্ঞাতির কাছে ফিরে আসতো, তখন তাদের জাতিকে তারা (আযাবের) ভয় দেখাতো, আশা করা যায় এতে তারা সতর্ক হয়ে চলবে।

١٢٢ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوْ ا كَأَفَّةً ١ فَلُوْلًا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةً لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الرِّيْنِ وَلِيَّنْذِرُوْا قُوْمَهُرْ إِذَا رَجَعُوْا إِلَيْهِرْ لَعَلَّهُمْ يَحُنَّارُوْنَ ع

১২৩. হে ঈমানদার লোকেরা, কাফেরদের মধ্যে যারা তোমাদের (সীমান্তের) কাছাকাছি রয়েছে তাদের বিরুদ্ধে জেহাদ করো. (এমনভাবে জেহাদ করো) যেন তারা তোমাদের মধ্যে কঠোরতা (দেখতে) পায়: (জেনে রেখো.) আল্লাহ তায়ালা (হামেশাই) মোন্তাকী লোকদের সাথে রয়েছেন।

١٢٣ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيكُمْ غِلْظَةً. وَاعْلَهُوا أَنَّ اللَّهُ مَعَ الْهُتَّقِينَ

১২৪. যখন কোনো (নতুন) সুরা নাযিল হয় তখন এদের কিছু লোক এসে (বিদ্ধপের ভাষায়) জিজ্ঞেস করে, এ (সুরা) তোমাদের কার কার ঈমান বৃদ্ধি করেছে! (তোমরা বলো, হাঁ) যারা (সত্যি আল্লাহর ওপর) ঈমান এনেছে, এ সূরা (অবশ্যই) তাদের ঈমান বৃদ্ধি করেছে এবং (এর ফলে) তারা আনন্দিতও হয়েছে।

١٣٢ وَإِذَا مَا ۖ ٱنْزِلَتْ سُوْرَةً فَعِنْهُمْ مُنَّ يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتُهُ مَنِ الْهَانَا عِ فَأَمَّا الَّذِيثِي امَّنُوا فَزَادَتُهُر إِيْهَانُاوهُمْ يَسْتَبْهُووْنَ

১২৫. আর যাদের অন্তরে ব্যাধি রয়েছে, এ (সুরা তাদের 🕈 মধ্যে আগের জমে থাকা) নাপাকীর সাথে আরো (কিছু न्जून) नाशाकी (युक्ड करत) मिरस्र विश् जाता (व وَمَر وَمَا تُوا وَمَر وَمَا تُوا وَمَر وَمَا تُوا وَمَر اللهِ مَعْ اللهِ مَا اللهُ اللهِ مَا اللهُ اللهُ مَا اللهُ اللهُ اللهُ مَا اللهُ اللهُ اللهُ مَا اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الل নাপাকী ও) কাফের অবস্থায় মারা যাবে।

১২৬. তারা কি দেখতে পায় না, প্রতিবছর তাদের কিভাবে (বিভিন্ন পরীক্ষায় ফেলে) একবার কিংবা দুবার বিপর্যন্ত

١٢٦ أَوَ لَا يَرَوْنَ أَنَّهُرْ يُفْتَنُوْنَ فِي كُلِّ عَا إِ

৯ সুরা আত্ তাওবা

1 303

মন্যিল ২

২৬

করা হচ্ছে, এরপরও তারা তাওবা করে না এবং (এ বিপর্যয় থেকে) তারা কোনো শিক্ষাও গ্রহণ করে না।

مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُونَ وَلَاهُمْ

১২৭. আর যখনি কোনো নতুন সুরা নাযিল হয় তখন তারা পরস্পর চোখ চাওয়া-চাওয়ি করে (এবং ইশারায় একে অপরকে জিজ্ঞেস করে): 'কেউ কি তোমাদের দেখতে পাচ্ছেে' অতপর তারা (হেদায়াত থেকে) ফিরে যায়: আর আল্লাহ তায়ালা তাদের অন্তরকে এভাবেই (সত্য থেকে) ফিরিয়ে দিয়েছেন, কেননা এরা হচ্ছে এমন

١٣٤ وَإِذَا مَا ۗ ٱنْزِلَتْ سُوْرَةً نَّظُرَ بَعْضُهُرْ إِلَى بَعْضٍ عَلْ يَرْنكُرْ بِينَ أَعَدِ ثُرَّ انْصَرَفُوا ع صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قُوًّا لا يَفْقَهُونَ

১২৮. (হে মানুষ,) তোমাদের কাছে তোমাদেরই মধ্য থেকে এক রসূল এসেছে, তোমাদের কোনোরকম কষ্ট ভোগ তার কাছে দুঃসহ, সে তোমাদের একান্ত কল্যাণকামী, ঈমানদারদের প্রতি সে হচ্ছে স্নেহপরায়ণ ও পরম দয়াল ।

সম্প্রদায়ের লোক, যারা কিছু অনুধাবন করে না।

١٢٨ لَقَلُ جَاءَكُرُ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفُسِكُرُ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتَّمْ مَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ

১২৯. এরপরও যদি এরা (এমন কল্যাণকামী একজন রসূলের কাছ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয়, তাহলে তুমি (তাদের খোলাখুলি) বলে দাও, আল্লাহ তায়ালাই আমার জন্যে যথেষ্ট, তিনি ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই: (সমস্যায় সংকটে) আমি তাঁর ওপরই ভরসা করি এবং তিনিই হচ্ছেন মহান আরশের একছেত্র অধিপতি।

١٢٩ فَانْ تَوَلُّوا فَقُلْ مَسْبِيَ اللَّهُ يُزِّ لَا إِلَّهَ إِلَّا هُوَ مَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْش الْعَظِيْرِع

সুরা ইউনুস

মক্কায় অবতীর্ণ-আয়াত ১০৯, রুকু ১১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةً يُونُسَ مَكِيةً ايات : ١٠٩ رُكُوع : ١١ بِشرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ

 আলিফ-লা-ম-রা। এগুলো (হল্ছে) একটি জ্ঞানগর্ভ গ্রন্থের আয়াত।

ا الرِّ سَ تِلْكَ أَيْسُ الْكِتْبِ الْحَكِيْرِ

২. মানুষের জন্যে এটা কি (আসলেই) একটা আভর্যের বিষয় যে. আমি তাদের মধ্য থেকে (তাদেরই মতো) একজন মানুষের কাছে ওহী পাঠিয়েছি, যেন সে মানুষকে (তা দিয়ে জাহানাম সম্পর্কে) সাবধান করে দিতে পারে. আবার যারা (এ ওহীর ওপর) ঈমান আনে: তাদের (এ মর্মে) সুসংবাদও দিতে পারে যে, তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে উঁচু মর্যাদা রয়েছে, কাফেররা (এমনি আকর্যানিত হয়ে পড়লো যে, তারা) বললো, অবশ্যই এ ব্যক্তি একজন সুদক্ষ যাদুকর!

٢ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْمَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُر أَنْ أَنْدُر النَّاسَ وَبَشِّر الَّذِيثَ أَمَنُوْاً أَنَّ لَهُمْ قَلَا مَسِلْقِ عِنْلَ رَبِّهِمْ ٢ قَالَ الْكُفُرُونَ إِنَّ مِنَ السَّحِرِّ مَّبِينَّ

-. رَدَّ رَبَّكُرُ اللَّهُ الَّذِي عَلَقَ السَّمُونِ وَ اللَّهُ الَّذِي عَلَقَ السَّمُونِ اللَّهُ الَّذِي عَلَقَ السَّمُونِ اللهِ اللهِ الَّذِي عَلَقَ السَّمُونِ اللهِ ৩. (হে মানুষ,) তোমাদের মালিক হচ্ছেন আল্লাহ করেছেন, অতপর তিনি 'আরশে' সমাসীন হন, তিনি (তার) কাজ (স্বহস্তে) নিয়ন্ত্রণ করেন; কেউই তাঁর অনুমতি ছাড়া (কারো জন্যে) সুপারিশকারী হতে পারে না: এই হচ্ছেন তোমাদের মালিক আল্লাহ তায়ালা, অতএব তোমরা তাঁরই এবাদাত করো: তোমরা কি (সত্যি কথা) অনুধাবন করবে নাঃ

وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيًّا } ثُرَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَيِّرُ الْأَمْرَ ، مَا مِنْ شَفِيْعِ إلَّا مِنْ بَعْنِ إِذْنِهِ وَذِلِكُم اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُلُوهُ وَ أَفَلًا تَنَكُّونَ

১০ সুরা ইউনুস

₹ ३०३

8. (মৃত্যুর পর) তোমাদের সবার ফিরে যাবার জায়গা হবে একমাত্র তাঁর কাছে; (সেখানে গিয়ে তোমরা) আলাহ তায়ালার (সকল) প্রতিশ্রুতিই সত্য (পাবে,) তিনিই এ पृष्ठित प्रक्षित् मान करतन, (भृष्ठात भत्र) िवनिर पावात وَالْمُ يَبُنُوُا الْخَلْقَ ثُرِ يُعِيْلُهُ لِيَجْزِى তাকে (তার জীবন) ফিরিয়ে দেবেন, যাতে করে যারা (তাঁর ওপর) ঈমান আনে, ভালো কাজ করে, (যথার্থ) ইনসাফের সাথে তিনি তাদের (কাজের) বিনিময় দান وَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ مُومِيْم اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّ পারেন.) যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করে তাদের জন্যে উত্তপ্ত পানীয় ও কঠিন শান্তি রয়েছে, কেননা তারা (পরকালের এ শান্তি) অস্বীকার করতো।

٣ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَهِيْعًا ، وَعْنَ اللَّهِ حَقًّا ، الَّذِيْنَ أُمَّنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ بِالْقِسْطِ ، وَّعَنَ ابُّ ٱلِيْرُّ بِهَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ

৫. মহান আল্লাহ তায়ালা যিনি সূর্যকে (প্রখর) তেজোদীও বানিয়েছেন এবং চাঁদকে (বানিয়েছেন) জ্যোতির্ময় অতপর (আকাশে) তার জন্যে কিছু মনযিল তিনি নির্দিষ্ট করে দিয়েছেন, যাতে করে (এ নিয়ম দ্বারা) তোমরা বছরের গণনা এবং দিন-তারিখের হিসাবটা জানতে পারো; (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যে এসব কিছু পয়দা করে রেখেছেন (তার) কোনোটাই তিনি অনর্থক করেননি: যারা (সৃষ্টি রহস্য সম্পর্কে) জানতে চায় তাদের জন্যে আল্লাহ তায়ালা তাঁর নিদর্শন খুলে খুলে বর্ণনা করেন।

٥ مُو الَّذِي مَعَلَ الشَّهْسَ ضِياءً وَّالْقَهَرَ نُوْرًا وَّقَنَّارَةً مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَنَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ، مَا غَلَقَ اللَّهُ ذُلِكَ الَّا بِالْحَقِّ ءِيُفَصِّلُ الْأَيْسِ لِقَوْمٍ يَّعْلَبُونَ

७. अवभारे मिन ও রাতের পরিবর্তনে এবং আল্লাহ أَن فِي اغْتِلَافِ النَّهَارِ وَالنَّهَارِ وَمَا اللَّهَارِ وَمَا ا তায়ালা যা কিছু (এ) আসমানসমূহ ও যমীনের মাঝে পয়দা করেছেন, তার (প্রতিটি জিনিসের) মাঝে পরহেযগার লোকদের জন্যে (আল্লাহ তায়ালাকে চেনার) নিদর্শন রয়েছে।

عَلَقَ اللَّهُ فِي السَّيْوِسِ وَالْأَرْضِ لَأَيْسِ لِقُوْمٍ يُتَقُونَ

৭. (মানুষের মাঝে) যারা (মৃত্যুর পর) আমার সাথে সাক্ষাতের প্রত্যাশা করেনা, যারা এ পার্থিব জীবন নিয়েই সম্ভুষ্ট এবং (এখানকার) সবকিছু নিয়েই পরিতৃপ্ত, (সর্বোপরি) যারা আমার (সৃষ্টি বৈচিত্রের) নিদর্শনসমূহ থেকে গাফেল থাকে.

٤ إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيْوةِ النَّنْيَا وَاطْهَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ مُمْرُ عَيْ أَيْتِنَا غَفْلُوْنَ

৮. তারাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের (নিশ্চিড) ঠিকানা (১) ক্রিক্রিটিছের সেকর্মকর । كَانُوا يَكْسِبُونَ ١٠٠١ কর্মকর । ক্রিটিটিলের সেকর্মকর । ক্রিটিলের সেকর্মকর । যা তারা দুনিয়ার জীবনে অর্জন করেছে।

৯. (অপরদিকে) যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে, তাদের মালিক তাদের (এ) ঈমানের কারণেই তাদের সঠিক পথ দেখাবেন: তাদের তলদেশ দিয়ে (অসংখ্য) নেয়ামতে (পরিপূর্ণ) জান্নাতে (সুপেয়) ঝর্ণাধারা প্রবাহমান থাকবে।

٩ إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُّوْا وَعَهِلُوا الصَّلَّحِينِ يَهْلِيْهِرْ رَبَّهُرْ بِإِيْمَانِهِرْ ۽ تَجْرِي مِنْ تَحْتِمِرُ الْأَنْمَرُ فِي جَنْسِ النَّعِيْر

১০. (এ সময়) তাদের (মুখে একটি মাত্র) ধ্বনিই (প্রতিধ্বনিত) হতে থাকবে, হে আল্লাহ তায়ালা, তুমি فِيْهَا سَلْرٌ ع وَ أَخِرُ دَعُولُهُمْ أَنِ الْحَمْلُ لِلَّهِ आफ्ता (अवात्न) जापत فِيْهَا سَلْرٌ ع وَ أَخِرُ دَعُولُهُمْ أَنِ الْحَمْلُ لِلَّهِ अविवानन इरव 'त्रानाम' (এवर) जापत শেষ ডাক হবে, যাবতীয় তারীফ সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার জন্যে।

١٠ دَعُونِهُمْ فَيْهَا سُبْحِنَكَ اللَّهُرِّ وَتَحِيَّتُهُمْ رَبِّ الْعَلَمِينَ ع

অকল্যাণকে ত্বানিত করতেন, যেভাবে মানুষ নিজেদের مَّتِعْجَالَهُرُ بِالْخَيْرِ لَقُضِي الْيَهِمُ कलान पुताबि कत्रत् काय, ठाश्ल जारान प्रताबि कत्रत् काय, जारान जारान प्रताबिक के



১০ সূরা ইউনুস

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১১ ইয়া তাযিরূন

(দেয়ার এ সুযোগ কবেই) শেষ হয়ে যেতো (কিন্তু আল্লাহ তায়ালা তাদের ঢিল দিয়ে রেখেছেন); অতপর যারা আমার সাথে সাক্ষাতের আশা করে না, আমি তাদের না-ফরমানীর জন্যে তাদের উদ্ভান্তের মতো ঘুরে বেড়াতে দিই।

ٱجَلُهُمْ مَ فَنَنَارُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا في طُغْيَانِهِر يَعْبَهُونَ

১২. মানুষকে যখন কোনো দুঃখ-দৈন্য স্পর্শ করে, তখন সে বসে, ভয়ে, দাঁড়িয়ে সর্বাবস্থায় আমাকেই ডাকে, অতপর আমি যখন তার দুঃখ-কষ্ট তার কাছ থেকে সরিয়ে নিয়ে যাই, তখন সে এমনি (বেপরোয়া হয়ে) চলতে শুরু করে, তাকে যে এক সময় দুঃখ-কষ্ট স্পূর্ণ كَأُن أُرْ يَنْ عُنَا إِلَى ضُرِّ مُسَّدًّ اللَّهَ زُبِّ عَلَيْكَ رُبِّ عَلَيْكَ مُرَاكِم وَاللَّهُ عَلَيْكُ مُ কখনো ডাকেইনি: এভাবেই যারা (বার বার) সীমালংঘন করে তাদের জন্যে তাদের কাজকর্ম শোভনীয় করে দেয়া ইয়েছে।

١٢ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضَّرُّ دَعَانَا لِجَنَّبِهِ أَوْ قَاعِنًا أَوْ قَائِمًا } فَلَمًّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُوَّةً مَوَّ لِلْهُسُرِفِيْنَ مَا كَانُوْ اليَعْمَلُوْنَ

১৩. তোমাদের আগে অনেক কয়টি মানবগোষ্ঠীকে আমি ধ্বংস করে দিয়েছি, যখন তারা যুলুম করেছিলো, (অথচ) তাদের কাছে (আমার) সুস্পষ্ট নিদর্শনসহ তাদের রসুলরা এসেছিলো, (কিন্তু) তারা (কোনো রকমেই) ঈমান كَانُوا لِيَوْمِنُوا م كَنْ لِكَ نَجْزَى الْقُوا اللهُ आमि (अंशरत्र माधार्म) आमि كَانُوا لِيَوْمِنُوا م كَنْ لِكَ نَجْزَى الْقُوا اللهُ اللهُ عَالَمُ اللهُ عَلَى الْعُوا اللهُ الل না-ফরমান জাতিদের (তাদের যুলুমের) প্রতিফল দিয়ে থাকি।

١٣ وَلَقَلْ آهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَهَّا ظَلَهُوا لا وَجَاءَتْهُر رُسُلُهُر بِالْبَيِّنْتِ وَمَا

১৪. অতপর আমি এ যমীনে (তাদের জায়গায়) তোমাদের খলীফা করে পাঠিয়েছি, আমি যেন দেখতে পাই তোমরা কি ধরনের আচরণ করো।

١٣ ثُرِ ۗ جَعَلْنُكُر ۚ خَلَّنْفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْلِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ

১৫. (হে নবী,) যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ তাদের পড়ে শোনানো হয়, তখন (তাদের মধ্যে) যারা আমার সাথে (মৃত্যুর পর কোনো রকম) দেখা সাক্ষাতের আশা করে না, তারা (ঔদ্ধত্যের সাথে তোমাকে) বলে, এছাড়া অন্য কোনো কোরআন নিয়ে এসো, কিংবা একে বদলে দাও; তুমি (এদের) বলো, আমার নিজের এমন কোনো ক্ষমতাই নেই যে, আমি একে বদলে দেবো: আমি তো তাই অনুসরণ করি যা আমার ওপর ওহী আসে, আমি यि आभात भानिकात कार्ता त्रकम ना-कत्रभानी कति. তাহলে আমি একটি মহা দিবসের (কঠিন) শান্তির ভয় করি।

١٥ وَإِذَا تُتَلِّي عَلَيْهِرْ أَيَاتُنَا بَيِّنْتِ لِا قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا انْسِ بِقُرْأَنِ غَيْر مِنَ ا أَوْ بَكِّلْهُ ﴿ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَكِّلُهُ مِنْ تِلْقَانِي نَفْسِيْ ، إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْمَى إِلَى ۚ إِنِّي ٱخِافَ إِنْ عَصَيْسَ رَبِّي عَنَ ابَ يُو إعظير

১৬. (তুমি বলো.) আল্লাহ তায়ালা না চাইলে আমি তোমাদের ওপর এ (কোরআন) তো পাঠই করতাম না আমি তো এ (গ্রন্থ) সম্পর্কে তোমাদের কোনো কিছু জানাতামই না. আমি তো এর আগেও তোমাদের মাঝে অনেকগুলো বয়স কাটিয়েছি, (কখনো কি আমি এমন ধরণের কোনো গ্রন্থের কথা তোমাদের বলেছি?) তোমরা কি বুঝতে পারছো নাঃ

ا اللهُ عَلَمُ اللهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا اللهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا $ilde{V}$ أَدْرِدكُرْ بِهِ رَ فَقَلْ لَبِثْتُ فِيْكُرْ عُمُرًا مِّنَ قَبْلهِ ، أَفَلَا تَعْقَلُونَ

১৭. অতপর (বলো), তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে. যে আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করে কিংবা তাঁর আয়াত অস্বীকার করে: (এ ধরনের) না-ফরমান লোকেরা কখনোই সফলকাম হয় না।

١٤ فَهَنْ أَظْلَرُ مِنَّى افْتَرِى عَلَى اللَّهِ كَنْ بِأَ أَوْ كَنَّبَ بِأَيْتِهِ ﴿ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ

কিছুর উপাসনা করে, যা তাদের কোনো রকম ক্ষতি করতে পারে না, (আবার) তা তাদের কোনো রকম উপকারও করতে পারে না. তারা বলে, এগুলো হচ্ছে

وَلَا يَنْفَعَهَمْ وَيَقُولُونَ هُولًاء شَفَعَاوُنَا عَنْلَ

আল্লাহ তায়ালার কাছে আমাদের সুপারিশকারী: ভূমি (মোশরেকদের) বলো, তোমরা কি আল্লাহ তায়ালাকে এমন কোনো কিছুর খবর দিতে চাও, যা তিনি আসমানসমূহের মাঝে অবহিত নন এবং যমীনের মাঝেও নন: তিনি পাক পবিত্র এবং মহান, তারা যে শেরেক করে তিনি তার চাইতে অনেক উর্ধের্ব।

اللهِ ، قُلْ ٱتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِهَا لَا يَعْلَمُ فِي السُّهُوٰ وَلَا فِي الْأَرْضِ ، سُبُحُنَّهُ وَتَعٰلَى عَبًّا يُشْرِكُوْنَ

১৯. (মূলত) মানুষ ছিলো একই জাতি, অতপর তারা (তাদের মাঝে) মতবিরোধ সৃষ্টি করেছে; তোমার মালিকের পক্ষ থেকে (তাদের মৃত্যু পরবর্তি শান্তির মুহুর্তটির) ঘোষণা না থাকলে কবেই সে বিষয়ের ফয়সালা হয়ে যেতো, যে বিষয় নিয়ে তারা মতবিরোধ করে ।

١٩ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا ٱمَّةً وَّاحِلَةً فَاغْتَلَفُواْ ﴿ وَلَوْلَا كَلِهَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُرْ فِيْهَا فِيهِ يَحْتَلِفُونَ

২০. তারা (আরো) বলে, তার মালিকের কাছ থেকে তার ওপর কোনো নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না কেনঃ তুমি (তাদের) বলো, গায়ব সংক্রান্ত যাবতীয় জ্ঞান তো একমাত্র আল্লাহ তায়ালার জন্যে, অতএব (আল্লাহ তায়ালার সে গায়বী ফয়সালার জন্যে) তোমরা অপেক্ষা করো, (আর) আমিও তোমাদের সাথে (সেদিনের) প্রতীক্ষা করছি :

٢٠ وَيَقُوْلُونَ لَوْكَ ۗ أَنْزِلَ عَلَيْهِ إِيَّةً مِّنْ رَّبِّهِ ج فَقُلْ إِنَّهَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوْا ءِ إِنِّيْ مَعَكُم مِّنَ الْهُنْتَظِرِيْنَ ع

২১. মানুষকে দুঃখ-মসিবত স্পর্শ করার পর যখন আমি তাদের কিছুটা করুণার স্বাদ ভোগ করাই, তখন সাথে সাথেই তারা আমার রহমতের (নিদর্শনসমূহের) সাথে চালাকি শুরু করে দেয় (হে নবী), তুমি বলো, কলা-কৌশলে আল্লাহ তায়ালা সবার চাইতে বেশী তৎপর: অবশ্যই আমার ফেরেশতারা তোমাদের যাবতীয় কলাকৌশলের কথা (তোমাদের আমলনামায়) লিখে রাখে।

٢١ وَإِذَا ۚ أَذَقْنَا النَّاسَ رَهْمَةً مِّنْ بَعْلِ ضَرًّا عَ مَسَّتُهُمْ إِذَا لَهُمْ مَّكَّرُّ فِي آ إِيَاتِنَا م قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكُرًا وَإِنَّ رُسُلُنَا يَكْتُبُونَ مَا تَهْكُووْنَ

২২. তিনিই মহান আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের জলে-স্থলে ভ্রমণ করান: এমনকি তোমরা যখন নৌকায় আরোহণ করো এবং এ (নৌকা)-গুলো যখন তাদের নিয়ে অনুকৃল আবহাওয়ায় চলতে থাকে, তখন (নৌকার) আরোহীরা এতে (ভীষণ) আনন্দিত হয়, (হঠাৎ এক সময়) এ (নৌকা)-গুলো ঝডবাহী বাতাসের কবলে পড়ে এবং চারদিক থেকে তাদের ওপর ঢেউ আসতে থাকে এবং তারা মনে করে. (এবার সত্যিই) এ (বাতাস ও ঢেউ) দ্বারা তারা পরিবেষ্টিত হয়ে গেছে, তখন তারা একান্ত নিষ্ঠাবান বান্দা হয়ে আল্লাহ তায়ালাকে (এই বলে) ডাকতে শুরু করে (হে আল্লাহ), যদি তুমি আমাদের এ (মহাদুর্যোগ) থেকে বাঁচিয়ে দাও তাহলে অবশ্যই আমরা তোমার শোকরগোযার বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবো।

٢٢ مُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُم ٛ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ، حَتَّى إِذَا كُنْتُرْ نِي الْفُلْكِ } وَجَرَيْنَ بِهِرْ بِرِيْحِ طَيِّبَةٍ وَّنْرِحُوْا بِهَا جَاءَتُهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَاءَهُمُ الْهَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنَّوْا ٱلَّهُمْ أُحِيْفاً بِهِمْ لا دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الرِّيْنَ ۚ ۚ لَئِنْ ٱنْجَيْتَنَا مِنْ هٰنِ ۗ لَنَكُوْنَى مِنَ الشُّكِرِيْنَ

২৩, অতপর (সত্যি সত্যিই) যখন তিনি তাদের এ (বিপর্যয়) থেকে বাঁচিয়ে দেন, তখন তারা (ওয়াদার কথা ভূলে) সাথে সাথেই অন্যায়ভাবে যমীনে না-ফরমানী ওরু করে দেয়; হে মানুষ (তোমরা তনে রাখো), তোমাদের এ عَلَى أَنْفُسِكُرُ لا مَّتَاعَ الْحَيُوةِ النَّنْيَا رَثُر , प्राप्त्रनाना प्रशासनामा प्राप्ता अर्थाश अर्थाश अर्थाश अर्थाश कार्य الْحَيُوةِ النَّنْيَا رَثُر , प्राप्त्रनाना प्रशासनामा प्राप्त अर्थाश अर्थाश अर्थाश अर्थाश कार्य الْحَيُوةِ النَّنْيَا رَثُر بَالْحَيْنِ اللَّهُ اللَّالَّ اللَّا اللَّهُ ال নাফরমানী তোমাদের নিজেদের জন্যেই (ক্ষতিকারক) অতপর তোমাদের আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে. তখন আমি তোমাদের বলে দেবো, (দুনিয়ার জীবনে) তোমরা (কে) কি করতে।

٢٣ فَلَمَّا أَنْجُهُمْ إِذَا هُرْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ، يَأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهَا بَغْيُكُرْ إِلَيْنَا مَوْجِعُكُم ْ فَنُنَبِّئُكُم بِهَا كُنْتُم ْ تَعْمَلُونَ

٣٢ إِنَّهَا مَثَلُ الْحَيْوةِ النَّانَيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنُدُ अरिव कीवत्नत উদाহत्र (श्ल्ब), यमन आमि

১০ সুরা ইউনুস

আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করলাম, যা ছারা অতপর যমীনের গাছপালা ঘন সনিবিষ্ট হয়ে উদ্দাত হলো, যা থেকে মানুষ ও জম্ভ-জানোয়াররা (তাদের) আহার সংগ্রহ عَادُلُ النَّاسُ وَالْإِنْعَامُ ، حَتَّى إِذَا أَخَلُتِ कद्राला; এরপর (একদিন) यथन यभीन छात स्त्रोन्दर्यत রূপ ধারণ করলো এবং (আপন সৌন্দর্যে) সে শোভিত হয়ে উঠলো, তখন (এসব দেখে) তার (যমীনের) মালিক মনে করলো, তারা বুঝি এর (ফসল ভোগ করার) ওপর (এখন সম্পূর্ণ) क्रमणातान (হয়ে গেছে, এ সময়) হঠাৎ اَيْكُلُ اَوْ نَهَارًا كَالُمُ اَوْنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا عَلَيْهَا بِهِ করে রাতে কিংবা দিনে আমার (আযাবের) ফয়সালা তাদের ওপর আপতিত হলো, ফলে আমি তাদের এমনভাবে নির্মূল করে দিলাম যেন গতকাল (পর্যস্ত এখানে) তার কোনো অন্তিতুই ছিলো না: এভাবেই আমি আমার আয়াতসমূহ সেসব জাতির জ্বন্যে খুলে খুলে বর্ণনা করি, যারা (এ সম্পর্কে) চিম্ভা-ভাবনা করে।

مَنَ السَّهَاء فَاغْتَلُطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِيًّا الْأَرْضُ زُغْرُفَهَا وَازَّيَّنَسْ وَظَنَّ آهْلُهَا ۖ ٱنَّهُرْ فَجَعَلْنُهَا حَصِيْلًا كَأَنْ لِّرْ تَغْيَ بِالْإَشْسِ ، كَنْ لِكَ نُفُصِّلُ الْإِينِ لِقَوْ } يَّتَفَكَّدُونَ

২৫. (হে মানুষ, তোমরা এ পার্থিব জীবনের ধোকায় পড়ে আছো. অথচ) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (চিরস্থায়ী এক) শান্তির নিবাসের দিকে ডাকছেন: তিনি যাকে ইচ্ছা করেন তাকে সহজ্ব-সরল পথে পরিচালিত করেন।

٢٥ وَاللَّهُ يَنْعُوا إِلَى دَارِ السَّلْرِ ، وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إلى مِرَاطٍ مُّسْتَقِ

২৬. যারা ভালো কাজ করেছে, (যাবতীয়) কল্যাণ তো (থাকবে) তাদের জন্যে এবং (থাকবে তার চাইতেও) বেশী: সেদিন তাদের চেহারা কোনো কালিমা ও হীনতা দারা আচ্ছনু থাকবে না: তারাই হবে জান্লাতের অধিবাসী. তারা সেখানে থাকবে চিরদিন।

يَرْمَقُ وَجُوْمَهُمْ قَتَرٌّ وَّلَا ذِلَّةٌ ، أُولَئكَ أَمْحُبُ الْجَنَّةِ } مُرْ فِيْهَا عَلِكُونَ

২৭. (অপরদিকে) যারা মন্দ কান্ধ করেছে. (ভাদের) মন্দের প্রতিফল মন্দের সাথেই হবে, অপমান ভাদের আচ্ছন করে ফেলবে: সেদিন আল্লাহর (আযাব) থেকে তাদের রক্ষাকারী কেউই থাকবে না. (ভাদের চেহারা এমনি কালো হবে) যেন রাতের অন্ধকার ছিঁড়ে (তার) একটি টুক্রো তাদের মুখের ওপর ছেয়ে দেয়া হয়েছে. এরা হচ্ছে জাহান্লামের অধিবাসী, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে।

٢٠ وَ الَّذِينَ كَسَبُوا السَّيَّاٰتِ جَزَّاءُ سَيِّئَةٍ بِيثْلِهَا لا وَتَرْهَقُهُرْ ذِلَّةً ﴿ مَا لَهُرْ مِّيَ اللَّهِ مِنْ عَاصِرِ ﴾ كَأَنَّهَا أُغْشِيَتُ وُجُوْمُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِبًا ، أولئكَ أَسْحِبُ النَّارِ عِ مُر فيها خلنون

২৮. (হে নবী, তুমি তাদের সেদিনের ব্যাপারে সাবধান করো.) যেদিন আমি তাদের সবাইকে আমার সামনে একত্রিত করবো, অতপর যারা আমার সাথে শরীক করেছে তাদের আমি বলবো, তোমরা এবং যাদের তোমরা শরীক করেছো- স্ব স্থানে অবস্থান করো. এরপর আমি তাদের (এক দলকে আরেক দল থেকে) আলাদা করে দেবো এবং যাদের তারা শরীক করেছিলো তারা বলবে. না, তোমরা তো কখনো আমাদের উপাসনা করতে না।

٢٨ وَيَوْمَ نَحُشُو مُرْ جَهِيْعًا ثُرَّ نَقُولُ للَّانِينَ آهُرَكُوْ المَكَانَكُمْ آنْتُمْ وَهُرَكَّاؤُكُمْ عَنَايَّلْنَا بَيْنَهُرْ وَقَالَ هُوكَاَّؤُهُرْ مَّا كُنْتُرْ إِيَّانَا تَعْبَلُون

২৯. (আজ) আল্লাহ তায়ালাই আমাদের এবং তোমাদের মাঝে সাক্ষ্য প্রদানকারী হিসেবে যথেষ্ট হবেন, আমরা তোমাদের উপাসনার ব্যাপারে (আসদেই) গাফেল ছিলাম।

٢٩ فَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيْرًا ۚ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُر ۚ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُم (لَغْفِلِيْنَ

৩০. এভাবেই সেদিন প্রত্যেক ব্যক্তি (নিজের কর্মফল-যা সে করে এসেছে, (পুরোপুরিই) জ্ঞানতে পারবে এবং সবাইকে তাদের সত্যিকারের মালিক আল্লাহ তায়ালার কাছে ফিরিয়ে নেয়া হবে, দুনিয়ায় তারা যেসব মিপ্যা ও অলীক কথাবার্তা (খাল্লাহ ভারাদা সশর্কে) উদ্ভাবন করতো (নিমিষেই) তা তাদের কাছ থেকে হারিয়ে যাবে।

٣٠ مُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّا ٱسْلَفَسَ وَرُدُّوا ۚ إِلَى اللَّهِ مَوْلُهُرُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمُ مَّا كَانُوْ إِيَفْتُوْوْنَ عِ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন

৩১. (হে নবী,) ভূমি বলো, তিনি কে- যিনি তোমাদের ७১. (१२ नवा,) ज्राम वर्णा, ।जान कि ।यान जामारमंत ﴿ ﴿ كُونُ عَلَيْهِ مِنْ يُورُقُكُمْ مِنَ السَّاءِ وَ الْأَرْضِ अप्रमान ও यभीन त्थरक क्षीविका प्रविवहां करवन, अर्थवा ﴿ وَالْأَرْضِ السَّاءِ وَالْأَرْضِ السَّاءِ وَالْأَرْضِ (তোমাদের) শোনা ও দেখার ক্ষমতা কে নিয়ন্ত্রণ করেন? কৈ (আছে এমন) যিনি জীবিতকে মৃত থেকে, আবার মৃতকে জীবিত থেকে বের করে আনেন! কে (আছে এমন), যিনি (এসব কিছুর) পরিকল্পনা প্রণয়ন করেন; (তাদের জিজ্ঞেস করলে) তারা সাথে সাথেই বলে ওঠবে. (रंग, अवगारे) आतार, छूमि (शापत) वर्ला, (यिन छोरे وَمَنْ يُكُرِّرُ ٱلْأَمْرُ مَا فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ الْأَعْلَى وَمَنْ يُكُرِّرُ ٱلْأَمْرَ مَا فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ الْحَلَى وَمَنْ يُكُرِّرُ ٱلْأَمْرَ مَا فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ الْحَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ الْحَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ الْمُومِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهُ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ اللَّهِ عَلَيْمِ عَلَّهُ عَلَيْمِ عَلَي হয়) তাহলে (সত্য অস্বীকার করার পরিণামকে কি) তোমরা ভয় করবে নাং

أَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْإَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْعَى مِنَ الْمَيِّسِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّسَ مِنَ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ

৩২. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, তিনিই তোমাদের আসল মালিক, সত্য আসার পর (তাঁকে না মানা) গোমরাহী নয় তো আর কিং সূতরাং (তাঁকে বাদ দিয়ে বলো), কোন দিকে তোমাদের ধাবিত করা হচ্ছে

٣٢ فَنَالُكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ عَفَهَا ذَا بَعْلَ الْعَقِّ إِلَّا الضَّالَ عَانَتْ تُمْوَفُونَ

৩৩. এডাবেই যারা নাফরমানী করেছে তাদের ওপর তোমার মালিকের সে কথাই সত্য বলে প্রমাণিত হলো যে, এরা কখনো ঈমান আনবে না।

٣٣ كَنْ لِكَ مَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيثِي فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

৩৪. তুমি (তাদের আরো) বলো, তোমাদের (বানানো) এসব শরীকদের মধ্যে এমন কেউ কি আছে, যে প্রথম বার বানাতে পেরেছিলো, অতপর (মৃত্যুর পর) আবারও তা সে তৈরী করতে পারবে! তুমি বলো, আলাহ তারালাই مُرَّ يُعِيْلُهُ وَاللّٰهُ يَبْلُو الْخَلْقَ ثُمَّ عَالِياً اللّٰهُ يَبْلُو الْخَلْقَ ثُمَّ المَاسِيةِ اللّٰهِ اللّٰهُ مَالُو الْخَلْقَ ثُمَّ المَّاسِةِ اللّٰهِ اللّٰهُ مَالُو الْخَلْقَ ثُمَّ المَاسِيةِ اللّٰهُ اللّٰهُ مَالُو اللّٰهُ مَالِيةِ اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهِ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ مَالِيةً اللّٰهُ ال সৃষ্টিকে প্রথম অন্তিত্ব প্রদান করেন, অতপর দ্বিতীয়বার তিনিই তাতে জীবন দান করেন, (এরপরও) তোমাদের কেন (বার বার সভ্য থেকে) বিচ্যুত করা হচ্ছে

٣٣ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَّا لِكُرْ مِّنْ يَّبْنَوُا الْخَلْقَ يُعِيْلُهُ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ

৩৫. (তাদের আরো) বলো, তোমাদের বানানো শরীকদের মধ্যে এমন কে আছে যে মানুষকে সঠিক পথ দেখাতে পারে, (তৃমি) বলো, (হাঁ) আল্লাহ তান্নালাই সঠিক পথ দেখাতে পারেন: যিনি সঠিক পথ দেখান ডিনি অনুসরণের বেশী যোগ্য, না সে ব্যক্তি যে নিজেই কোনো পথের সন্ধান পায় না– যতোক্ষণ না তাকে (সে) পথের সন্ধান দেয়া হয়, তোমাদের এ কি হলো, কেমন ধরনের ফয়সালা করো তোমরা?

٣٥ قُلْ هَلْ مِنْ شُرِكَا لِكُمْرُ مِّنْ يَهْدِينَ إِلَى الْعَقّ ، قُل اللَّهُ يَهْدِي لِلْعَقّ ، أَفَهَنَّ يُّهُدِي ۚ إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يَتَّبَعَ أَنَّنْ لَّا يَوِلِّي ۚ إِلَّا أَنْ يَهُلَى ٢ فَهَا لَكُر ۚ تَ كُيْفَ تَحْكُبُوْنَ

৩৬. তাদের অধিকাংশ ব্যক্তিই নিজেদের আন্দায অনুমানের অনুসরণ করে, আর সত্যের পরিবর্তে আন্দায অনুমান তো কোনো কাজে আসে না: আল্লাহ ভায়ালা অবশ্যই ওদের কর্মকান্ড সম্পর্কে পূর্বাংগ ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

٣٦ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثُوهُمْ إِلَّا ظُنًّا ، إِنَّ الظَّيُّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿ إِنَّ اللَّهَ عَلِيْمِ } بهَا يَفْعَلُوْنَ

৩৭. এ কোরআন এমন (কোনো গ্রন্থ) নয় যে, আল্লাহর (ওহী) ব্যতিরেকে (কারো ইচ্ছামাফিক একে) গড়ে দেয়া যাবে, বরং এ (গ্রন্থ) সেসব গ্রন্থের সত্যবাদিতার সাক্ষ্য প্রদান করে যা এর আগে নাযিল হয়েছিলো, এতে কোনোরকম সন্দেহ নেই যে, এটা (হচ্ছে) সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার সত্য বিধানসমূহের বিশদ ব্যাখ্যা।

٣٤ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْانُ أَنْ يَتَّفْتُرِى مِنْ دُوْنِ اللَّهِ وَلَٰكِن تَصْرِيْقَ الَّذِي بَيْنَ يَنَيْدِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتْبِ لَا رَيْبَ فِيْدِ مِنْ رَّبِّ الْعُلَٰمِيْنَ عَ

৩৮. তারা কি একথা বলে, এ ব্যক্তি (মোহাম্মদ) এ (গ্রন্থ)-টি রচনা করে নিয়েছে; (হে নবী,) তুমি (এদের) مِثْلِهِ وَادْعُواْ مَن اسْتَطَعْتُر مِّن دُونِ اللهِ अरला, তোমরা তোমাদের দাবীতে यिन সভ্যবাদী হও, مِثْلَهِ وَادْعُواْ مَن اسْتَطَعْتُر مِّن دُونِ اللهِ

٣٨ أَا يَقُولُونَ افْتَرْدُ ، قُلْ فَأْتُوا بِسُورَة

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১১ ইয়া তাযিরূন |
|--|--|
| তাহলে তোমরাও এমনি ধরনের একটি সূরা বানিয়ে নিয়ে এসো এবং (এ ব্যাপারে) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর যাদের যাদের তোমরা ডাকতে চাও ডেকে (তাদেরও সাহায্য) নাও। | إِنْ كُنْتُر صُلِقِينَ |
| ৩৯. (আসল কথা হচ্ছে,) যে বিষয়টিকেই তারা তাদের জ্ঞান দিয়ে আয়ন্ত্র করতে পারলো না, কিংবা (মানবীয় | ٣٩ بَلْ كَنَّابُوا بِهَا لَمْ يُحِيْطُوا بِعِلْيِهِ وَلَهَّا |
| জ্ঞান বিজ্ঞানের সীমাবদ্ধতার কারণে) যার ব্যাখ্যা এখনো তাদের পর্যন্ত পৌছুয়নি– তারা তাকেই অস্বীকার করে | يَٱتِهِرُ تَٱوِيْلُهُ ، كَنَٰلِكَ كَنَّبَ الَّذِينَ مِن |
| বসলো; তাদের পূর্ববর্তী মানুষরাও এভাবে অস্বীকার করেছিলো, (আজ) দেখো, (এ অস্বীকারকারী) যালেমদের পরিণাম কি হয়েছে। | قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظُّلِمِيْنَ |
| ৪০. তাদের মধ্যে কিছু লোক এ (গ্রন্থের) ওপর ঈমান আনবে, আবার কিছু আছে যারা এতে ঈমান আনবে না; | ٢٠ وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لا يُؤْمِن |
| (জেনে রেখো,) তোমার মালিক (কিছু এ) বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের ভালো করেই জানেন। | بِهِ ﴿ وَرَبُّكَ آعَلَمُ بِالْهُفْسِرِيْنَ عَ |
| ৪১. (এতো বলা-কওয়া সত্ত্বেও) তারা যদি তোমাকে মিখ্যা | ٣١ وَإِنْ كَنَّابُوكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُرْ |
| প্রতিপন্ন করতেই থাকে, তাহলে তুমি (তাদের) বলে দাও (দেখো), আমার কাজকর্মের দায়িত্ব আমার ওপর, আর | عَمَلُكُمْ عَ أَنْتُمُ بَرِيَنُونَ مِنَّا أَعْمَلُ وَأَنَا |
| তোমাদের কাজকর্মের দায়িত্ব তোমাদের ওপর, আমি যা কিছু করছি তার জন্যে তোমরা দায়িত্মুক্ত, আবার | بَرِيءُ مِياً تَعْمَلُونَ |
| তোমরা যা করো তার জন্যেও আমি দায়িত্বমুক্ত। | ŕ |
| ৪২. (হে নবী,) এদের মধ্যে কিছু লোক এমন আছে, যারা তোমার দিকে কান পেতে রাখে; তুমি কি বধিরকে | ٣٢ وَمِنْهُرْ مِنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ، أَفَانْسَ |
| (আল্লাহর কালাম) শোনাবে? যদিও তারা এর কিছুই বুঝতে না পারে! | تُشْعِعُ الصُّرِّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُونَ |
| ৪৩. (আবয়) ওদের মধ্যে কেউ কেউ আছে যারা তোমার দিকে তাকিয়ে থাকে; (কয়) তুমি কি অয়কে পথ দেখাবে? যদিও তারা নিজেরা এর কিছুই দেখতে না পায়! | ٣٣ وَمِنْهُرْ مِنْ يَّنْظُرُ إِلَيْكَ ، أَفَانْتَ تَهْدِي |
| ৪৪. নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা মানুষের ওপর কোনো | ٣٣ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِرُ النَّاسَ شَيْئًا وَّلْكِنَّ |
| রকম যুদুম করেন না, (বরং আল্লাহর অবাধ্য হয়ে) মানুষেরা নিজেরাই নিজেদের ওপর যুদুম করে। | النَّاسَ ٱثْفُسَهُرْ يَظْلِبُونَ |
| ৪৫. যেদিন তিনি তাদের সবাইকে একত্রিত করবেন (সেদি ডাদের মনে হবে), যেন তারা দুনিয়ায় দিনের একটি ক্ষণমাত্র | ٢٥ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَّمْ يَلْبَثُواۤ إِلَّا |
| কাটিয়ে এসেছে, (তখন) তারা একজন আরেকজনকে | سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُرْ ﴿ قَلْ غَسِرَ |
| চিনতে পারবে; ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে তারা, যারা আল্লাহর সামনা-সামনি হওয়াকে অস্বীকার করেছিলো, (আসলে) | الَّذِينَ كَنَّابُواً بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا |
| তারা কখনোই হেদায়াতপ্রাপ্ত ছিলো না। | مهْتَابِينَ |
| ৪৬. আমি ওদের কাছে যে (বিষয়ের) ওয়াদা করেছি, তার কিছু কিছু (বিষয়) যদি আমি তোমাকে দেখিয়ে দেই, | ^ |
| অথবা (এর আগেই) যদি আমি তোমাকে (দুনিয়া থেকে) উঠিয়ে নেই, (এ উভ্য় খবস্থায়) তাদের আমার কাছেই ফিরে | نَتُوَقَّيْنَكَ فَالِيْنَا مَوْهِعُمُرْ ثُمَّ اللَّهُ هَوِيْنً |
| আসতে হবে, অতপর এরা যা কিছু (দুনিয়ায়) করতো তার ওপর আল্লাহ তায়াশাই (একক) সাক্ষী হবেন। | عَلَٰى مَا يَفْعَلُونَ |
| ৪৭. প্রত্যেক উন্মতের জন্যেই একজ্বন রসূল আছে, অতপর যখনি তাদের কাছে তাদের রসূল এসে যায়, | ٣٠ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ } فَاذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ |
| তখন (ভাদের সাথে আল্লাহ তায়ালার) সিদ্ধান্ত করার কাজটি ইনসাফের সাথে সম্পন্ন হয়ে যায়, তাদের ওপর কখনো যুলুম করা হবে না। | قُضِيَ بَيْنَهُرْ بِالْقِسْطِ وَهُرْ لَا يُظْلَهُونَ |
| ১০ সূরা ইউনুস | মন্যিল ৩ |
| | |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন |
|--|--|---|
| | ৪৮. এরা (ঔদ্ধত্য দেখিয়ে) বলে (হে মুসলমানরা), তোমরা যদি সত্যবাদী হও তাহলে বলো, কবে তোমাদের (সে) আযাবের ওয়াদা ফলবে? | ٨٣ وَيَقُوْلُونَ مَتٰى هٰنَا الْوَعْلُ إِنْ كُنْتُر مُنْ وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰنَا الْوَعْلُ إِنْ كُنْتُر مُنْ وَيْنَ |
| | ৪৯. তুমি বলো (এটা বলা আমার বিষয় নয়), আল্লাহ তায়ালা যা চান তা ব্যতিরেকে আমি তো আমার নিজস্ব ভালো-মন্দের অধিকারও রাখি না (আসল কথা হচ্ছে), প্রত্যেক জাতির জন্যে (আযাব ও ধাংসের) একটি | رَبِينَ \tilde{V} اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءً اللَّهُ ، لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلَّ ، إِذَا جَاءً |
| | দিনক্ষণ নির্দিষ্ট করা আছে; তাদের সে ক্ষণটি যখন আসবে তখন (তাদের ব্যাপারে) এক মুহূর্তকাল সময়ও দেরী করা হবে না এবং তাদের দিনক্ষণ আগেও নিয়ে আসা হবে না। | أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْلِمُونَ |
| | ৫০. তুমি (এদের খারো) বলো, তোমরা কি ভেবে দেখেছো, যদি তোমাদের ওপর (খারার) আযাব রাতে কিংবা দিনের বেলায় এসে পতিত হয়, তাহলে আর কোন বিষয় নিয়ে না-ফরমান লোকেরা তাড়াহুড়ো করবে (বলো)? | ٥٠ قُلْ أَرَءَيْتُر إِنْ أَتْكُر عَنَابُهٌ بيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْهُجْرِمُونَ |
| | ৫১. অতপর যখন (সত্যিই) একদিন এ বিষয়টি ঘটবে তখন কি তোমরা এটা বিশ্বাস করবে; তোমাদের বলা হবে (হাঁ), এখন (তো আযাব এসেই গেলো, অথচ) তোমরা এর জন্যেই তাড়াহুড়ো করছিলে। | ٥١ أَثُرَّ إِذَا مَا وَقَعَ أَمَنْتُرْ بِهِ مَ ٱلْنَيْ وَقَلْ كُنْتُرْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ |
| ওয়াক্ফুন্নবী (স.) | ৫২. অতপর যালেমদের বলা হবে, এবার চিরস্থায়ী (জাহান্নামের) আযাবের স্বাদ ভোগ করো, (দুনিয়ার জীবনে) তোমরা যা কিছু অর্জন করেছো, (এখন) তোমাদের শুধু তারই বিনিময় দেয়া হবে। | ۵۲ ثُرِ قِيْلَ لِلَّانِيْنَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَنَ ابَ الْخُلْرِةِ مَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِهَا كُنْتُر تَكْسِبُونَ |
| त्री अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । | ৫৩. (হে নবী,) এরা তোমার কাছে জ্ঞানতে চায়, (আযার সম্পর্কিত) সে কথা আসলেই কি ঠিকঃ বলো, হাঁ, আমার মালিকের শপথ, এটা আমোঘ সত্য; (জ্ঞেনো রেখো, প্রতিশোধ নেয়ার ব্যাপারে) তোমরা কোনোদিনই তাঁকে অক্ষম করে দিতে পারবে না। | ٥٣ وَيَشْتَنْبِئُوْنَكَ آمَقٌ مُوَ " قُلْ إِي ﴿ وَرَبِّي ٓ إِنْ اللَّهُ لَحَقَّ ءَوَمَاۤ آنْتُر بِهُعْجِزِيْنَ ء |
| | ৫৪. যদি প্রতিটি যালেম ব্যক্তির কাছে (সেদিন) যমীনের সমুদয় সম্পদ এসে জমা হয়, তাহলে সে তার সব কিছু মুক্তিপণ হিসাবে বয়য় (করে আযাব থেকে বাঁচার চেষ্টা) করবে; যখন এ (যালেম) মানুষরা (জাহান্নামের) আযাব দেখবে তখন তারা মনে মনে ভারী অনুতাপ করবে (কিছু | ۵۳ وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسِ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَنَتَ بِهِ وَاَسَرُّوا النَّنَامَةَ لَبًّا رَاوُا |
| | তখন তা কোনোই কাজে আসবে না), সম্পূর্ণ ইনসাফের সাথেই তাদের বিচার মীমাংসা সম্পন্ন হবে এবং তাদের ওপর বিন্দুমাত্র যুলুমও করা হবে না। | الْعَنَ ابَ ء وَقُضِى بَيْنَهُر بِالْقِسْطِ وَهُر لَا يُظْلَبُونَ |
| | ৫৫. মনে রেখো, আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা সব আল্লাহ তায়ালার জন্যেই; জেনে রেখো অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার ওয়াদা সত্য, কিন্তু অধিকাংশ লোকই তা জানে না। | ٥٥ أَكَرَ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّبُوٰتِ وَالْأَرْضِ اللَّهِ اللَّهِ مَا فِي السَّبُوٰتِ وَالْأَرْضِ اللَّهِ مَقُّ وَّلْكِنَّ ٱكْثَرَمُرْ لَا يَعْلَبُوْنَ |
| | ৫৬. তিনিই জীবন দান করেন, তিনিই মৃত্যু ঘটান এবং (মৃত্যুর পর) তোমাদের সবাইকে তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে। | ٥٦ هُوَ يُحْى وَيُعِيْتُ وَ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ |
| | ৫৭. হে মানুষ, তোমাদের কাছে তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে নসীহত (বিশিষ্ট কেতাব) এসেছে, (এটা) মানুষের অন্তরে যেসব ব্যাধি রয়েছে তার নিরাময় এবং | ۵۷ يَايَّهَا النَّاسُ قَلْ جَاءَٰتُكُرْ مُوْعِظَةً مِّنَ دُنگُرُ وَهُفَاءً لِّنَا فِي الصُّارُورِ لِا وَهُرَّامٍ، |
| | মোমেনদের জন্যে হেদায়াত ও রহমত। | وَّرْحَمُ اللَّهُ وَمِنْدَنَ |
| | ১০ স্রা ইউনুস | মন্যিল ৩ |

৫৯. তুমি (এদের) বলো, তোমরা কি কখনো (একথা) চিন্তা করে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে যে রেযেক নাযিল করেছেন তার মধ্য থেকে কিছু অংশকে তোমরা হারাম আর কিছু অংশকে হালাল করে নিয়েছো: (তুমি এদের আরো) বলো, এসব হালাল-হারামের ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালা কি তোমাদের কোনো অনুমতি দিয়েছেন. না তোমরা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করছো!

৬০. যারা আল্লাহর ওপর মিথ্যা আরোপ করে, তাদের শেষ বিচারের দিন সম্পর্কে ধারণা কি এই (এটা কখনো আসবেই না): নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা বড়ো অনুগ্রহশীল (তাই তিনি তাদের অবকাশ দিয়ে রেখেছেন), কিন্তু অধিকাংশ মানুষই (এ জন্যে) আল্লাহর শোকর আদায় করে না।

৬১. (হে নবী.) তুমি যে কাজেই থাকো না কেন এবং সে (কাজ) সম্পর্কে কোরআন থেকে যা কিছু তেলাওয়াত করো না কেন (তা আমি জানি, হে মানুষেরা), তোমরা যে কোনো কাজ করো. কোনো কাজে তোমরা যখন প্রবন্ত হও, আমি তার ব্যাপারে তোমাদের ওপর সাক্ষী হয়ে থাকি, তোমার মালিকের (দৃষ্টি) থেকে একটি অণু পরিমাণ জিনিসও গোপন থাকে না, আসমানে ও যমীনে এর চাইতে ছোট কিংবা এর চাইতে বড়ো কোনো কিছুই নেই যা এ সুস্পষ্ট গ্রন্থে লিপিবদ্ধ নেই।

৬২. জেনে রেখো, (কেয়ামতের দিন) আল্লাহ তায়ালার বন্ধদের জন্যে (কোনো) ভয় নেই, (সেদিন) তারা চিন্তিতও হবে না।

৬৩. এরা হচ্ছে সে সব লোক, যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান এনেছে এবং (তাঁকে) ভয় করেছে।

৬৪. এ (ধরনের) লোকদের জন্যে দুনিয়ার জীবনে (যেমন) সুসংবাদ রয়েছে, (তেমনি) পরকালের জীবনেও (রয়েছে সুসংবাদ); আল্লাহ তায়ালার বাণীর কোনো রদবদল হয় না: আর (সত্যিকার অর্থে) এটাই হচ্ছে সে মহাসাফল্য।

৬৫. (হে নবী,) তোমাকে তাদের কথা যেন কোনো দুঃখ না দেয়। নিক্য়ই মান-ইয়য়ত সবই আল্লাহ তায়ালার করায়ত্তে, তিনি সবকিছু শোনেন, সবকিছু জানেন।

৬৬. জেনে রেখো, যা কিছু আসমানে আছে, (আবার) যা কিছু আছে যমীনে, সবই আল্লাহর (অনুগত); যারা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া (কল্পিড) শরীকদের ডাকে তারা তো তথু (কিছু আন্দায) অনুমানেরই অনুসরণ করে মাত্র! তারা মূলত মিথ্যাবাদী ছাড়া আর কিছুই নয়।

১০ সুরা ইউনুস

٥٨ قُلْ بِفَضْلِ اللهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِنَٰ لِكَ فَلَيْفُرُ مُوا اللهُ فَيُرْ مِمَّا يَجَمَّعُونَ

٥٩ قُلْ أَرَءَيْتُهُ مَّ أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقِ فَجَعَلْتُر مِّنْهُ مَرَامًا وَّمَلْلًا ، قُلْ أَلَلَّهُ أَذِنَ لَكُرْ أَا عَلَى الله تَفْتُووْنَ

٦٠ وَمَا ظَنَّ الَّذِينَ يَفْتَهُوْنَ عَلَى اللَّه الْكَنْ ِبَ يَوْاً الْقِيمَةِ ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَنُّو ۚ فَضَلَّ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ ٱكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ع

٦١ وَمَا تَكُوْنُ فِي شَأْنِ وَّمَا تَتَلُوْا مِنْدُ مِنْ قُوْ أَنِ وَّ لَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلِ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُغِيْضُونَ فِيهِ ﴿ وَمَا يَعْزُبُ عَنَ رَّبِّكُ مِنْ مِّثْقَالِ ذُرَّةِ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي اء و لَا أَصْغُرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي

٦٢ أَلَّا إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللَّهِ لَا خَوْنٌ عَلَيْهِـ () ولا مر يحزنون عسل

٦٣ ٱلَّٰنِينَ أَمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ١

٦٢ لَمُرُ الْبُشْرِي فِي الْحَيوةِ النَّانْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ﴿ لَا تَبْدِيْلُ لَكُلُّمْتِ اللَّهِ ﴿ ذَٰلِكَ مُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْم

٦٥ وَلاَ يَحَزَّنْكَ قَوْلَهُمْرُ مِ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ نَبِيْعًا وَهُوَ السَّبِيْعُ الْعَ

دُوْنِ اللَّهِ شُرَكَاءَ مَ إِنْ يُتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّيِّ و ان هر الا يخرمون

৬৭. (হে মানুষ,) তিনিই মহান আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের জন্যে রাত বানিয়েছেন, যাতে করে তোমরা তাতে বিশ্রাম গ্রহণ করতে পারো, আর দিনকে বানিয়েছেন আলোক (-উজ্জ্বল), অবশ্যই এতে (আল্লাহ তায়ালার মহত্তের) অনেক নিদর্শন রয়েছে সে সম্প্রদায়ের জন্যে, যারা (নিষ্ঠার সাথে) শোনে।

٢٠ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ الَّيْلَ لَتَسْكُنُوْا فيه وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ﴿ إِنَّ فِي ذُلِكَ لَأَيْتِ لِّقُوْرٍ يُسْبَعُونَ

৬৮. তারা বলে, আল্লাহ তায়ালা (নিজের একটি) ছেলে গ্রহণ করেছেন, (অথচ) আল্লাহ তায়ালা মহাপবিত্র: তিনি স্বয়ংসম্পূর্ণ, অভাবমুক্ত: আকাশমন্তলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তাঁর; তোমাদের কাছে এ (দাবীর) পক্ষে কোনো দলিল-প্রমাণও নেই: তোমরা কি আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে এমন সব কথা বলে বেড়াচ্ছো, যে বিষয়ে তোমরা কিছুই জানো না।

٦٨ قَالُوا اتَّخَلَ اللَّهُ وَلَنَّا سُبْحُنَهُ م مُوَ الْغَنيُّ ، لَهُ مَا فِي السَّبُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَ إِنْ عَنْنَكُرْ مِنْ سُلْطَى بِهِنَا وَ أَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ مَا لَا تَعْلَهُوْنَ

৬৯. (হে নবী,) তুমি বলো, যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করে, তারা কখনোই সফলকাম হবে না।

٦٩ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَنْبَ لَا يُفْلَحُونَ ء

৭০. (এ মিথ্যাচার হচ্ছে) পার্থিব (জীবনের একটা) সম্পদ, পরিশেষে তাদের আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে, অতপর আমি তাদের কুফরী করার জন্যে এক কঠোর আযাবের স্বাদ গ্রহণ করাবো।

٤٠ مَتَاعٌ فِي اللَّانْيَا ثُرَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُمُر ثُرَّ نُنْ يُقُهُرُ الْعَنَ ابَ الشَّايِنَ بِهَا كَانُوا يَكُفُرُونَ ع

৭১. (হে নবী.) ওদের কাছে তুমি নৃহের কাহিনী শোনাও। যখন সে তার জাতিকে বলেছিলো, হৈ আমার জাতি, যদি يُقُورًا إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مُقَامِي وَتَنْكِيْرِي (अवाएनत अभ्यत अवाहिक के अवाहिक দারা আমার উপদেশ (প্রদান) খুব দুঃসহ মনে হয়, তবে (শোনে রাখো), আমি (সম্পূর্ণরূপে) আল্লাহর ওপর ভরসা করি, অতপর তোমরা যাদের আমার সাথে শরীক বানাচ্ছো, তাদের (সবাইকে) একত্রিত করে (আমার বিরুদ্ধে তোমাদের) পরিকল্পনা চড়ান্ত করে নাও (দেখে নাও), যেন সে পরিকল্পনা (-এর কোনো বিষয় তোমাদের দৃষ্টির) আড়ালে না থাকে, অতপর আমার সাথে (তোমাদের যা করার) তা করে ফেলো এবং আমাকে কোনো অবকাশও তোমরা দিয়ো না।

4 وَ اثلُ عَلَيْهِر نَبَا نُوْحٍ ر إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ بِأَيْتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَاجْهِعُوْآ أَمْ كُورُ وَشُرَكّا عَكُورُ ثُولًا لَا يَكُن أَمْ كُورُ عَلَيْكُورُ عُهَّةً ثُرَّ اقْضُوْآ إِلَى ۗ وَلَا تُنْظِرُون

৭২. (হাঁ,) যদি তোমরা (আমার থেকে) মুখ ফিরিয়ে নাও (তাহলে আমার ক্ষতি হবে না), আমি তো তোমাদের কাছ থেকে (এ জন্যে) কোনো পারিশ্রমিক দাবী করিনি: আমার পারিশ্রমিক- সে তো আমার আল্লাহ তায়ালার কাছে, (তাঁর পক্ষ থেকেই) আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে আমি যেন তাঁর অনুগত বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাই।

٢ فَإِنْ تَوَلَّيْتُر فَهَا سَٱلْتُكُر مِّن ٱجْو ، إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ لِا وَٱمِرْتُ أَنْ ٱكُوْنَ من الْهُسْلَمِينَ

৭৩. অতপর (এতো বলা-কণ্ডয়া সন্ত্রেণ) লোকেরা তাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, তখন আমি তাকে এবং তার সাথে যারা নৌকায় (আরোহী) ছিলো, তাদের (তৃষ্ণান থেকে) উদ্ধার করেছি এবং (যাদের বাঁচিয়ে রেখেছিলাম) আমি তাদের (পূর্ববর্তী লোকদের) প্রতিনিধি বানিয়ে দিয়েছি, (পরিশেষে) যারা আমার নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করেছে, তাদের আমি (মহাপ্লাবনে) ডুবিয়ে দিয়েছি, অতপর (হে নবী), তুমি (চেয়ে) দেখো, তাদের কী ভয়াবহ পরিণাম হয়েছে, যাদের (বার বার আল্লাহর আযাবের) ভয় দেখানো হয়েছে।

4 فَكُنَّابُوهُ فَنَجَّيْنُهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلُكِ وَجَعَلْنَهُمْ خَلِّنِفَ وَآغَرَقْنَا الَّذِينَ كَنَّابُوْ بِالْيِتِنَا عِ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُثْنَرِيْنَ

٤٣ ثُمرٌ بَعَثْنَا مِنْ بَعْلِةٍ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ ৭৪. আমি তার পর অনেক (কয়জন) রসূলকে তাদের ^ (নিজ নিজ) জাতির কাছে পাঠিয়েছি, তারা (সবাই)

১০ সুরা ইউনুস

(577)

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন |
|---|---|
| সুস্পষ্ট প্রমাণসমূহ নিয়ে নিজ জাতির কাছে এসেছে, কিন্তু | فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنْتِ فَهَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِهَا |
| এমনটি হয়নি যে, (আগের) লোকেরা ইতিপূর্বে যা | |
| অস্বীকার করেছিলো তার ওপর এরা ঈমান আনবে; | كَنَّابُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ، كَنْ لِكَ نَطْبَعُ عَلَى |
| এভাবে যারা (না-ফরমানীতে) সীমালংঘন করে, তাদের | قُلُوْبِ الْهُعْتَرِيْنَ |
| দিলে আমি মোহর মেরে দেই। | |
| ৭৫. তাদের পর আমি আমার সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে মৃসা ও হারুনকে ফেরাউন এবং তার পারিষদবর্গের কাছে | 40 ثُرَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْلِهِمْ مُّوسَى وَهُرُونَ |
| পাঠিয়েছি, কিন্তু তারা সবাই অহংকার করলো, (আসলে) | إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهِ بِالْيِتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا |
| তারা ছিলো বড়োই না-ফরমান জাতি। | وَكَانُوْا قُوْمًا مُّجْرِمِيْنَ |
| ৭৬. আমার পক্ষ থেকে সত্য যখন তাদের কাছে এলো, | |
| তখন ওরা বললো, নিশ্চয়ই এ হচ্ছে সুস্পষ্ট যাদু! | ٢٦ فلها جاءمر الحق مِن عِندِنا قالوا إن |
| | ٢ عَلَمًّا جَاءَهُرُ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْآ إِنَّ هَالُوْآ إِنَّ هَا لَهُ إِنَّ الْمَعْرُ مُّيِمُنَّ الْمَعْرُ مُّيْمِنُ الْمَعْرُ مُّيْمِنَ الْمُعْرَالِينِ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِي الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلِي الْمُعِلْمِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِقِينَ الْمُعَلِقِين |
| ৭৭. মৃসা বললো, তোমরা কি সত্য সম্পর্কে এসব (বাজে) | ٤٤ قَالَ مُوْسَى أَتَقُولُوْنَ لِلْحَقِّ لَهَّا |
| কথা বলছো, যখন তা তোমাদের কাছে (প্রমাণসহ) এসে গেছে! (তোমরা কি মনে করো) এটা আসলেই যাদুঃ | |
| অথচ যাদুকররা কখনোই সফলকাম হয় না। | جَاءَكُمْ ، اَسِحْرٌ هٰنَا ، وَلا يُفْلِحُ السَّحِرُونَ |
| ৭৮. তারা বললো, তোমরা কি এ উদ্দেশেই আমাদের কাছে এসেছো যে, যা কিছুর ওপর আমরা আমাদের | ٨٠ قَالُوْ آ أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَلْانَا عَلَيْهِ |
| বাপ-দাদাদের পেয়েছি, তা থেকে তোমরা আমাদের | أَبَّاءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُهَا الْكِبْرِيَّاءُ فِي الْإَرْضِ ا |
| বিচ্যুত করে দেবে এবং (আমাদের এ) ভূপন্তে তোমাদের দু' (ভাই)-য়ের প্রতিপত্তি (প্রতিষ্ঠিত) হয়ে যাবে (না, তা | , |
| কিছুতেই হবে না); আমরা তোমাদের দু'জনের ওপর | وَمَا نَعْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ |
| কখনো ঈমান আনবো না। ৭৯. (এবার) ফেরাউন (নিজের দলবলকে) বললো, | ۸٫۰ ۱ سید ۸ مه ۸ مه ۱ سید |
| তোমরা আমার কাছে (রাজ্যের) সব সুদক্ষ যাদুকরদের | 49 وَقَالَ فِرْعَوْنُ الْتُونِي بِكُلِّ سُحِرٍ عَلِيْرٍ |
| নিয়ে এসো। ৮০. অতপর (ফেরাউনের নির্দেশে) যাদুকররা যখন এসে | 7×4×2, 2, 2, 3, 5 |
| হাযির হলো, তখন মূসা তাদের (লক্ষ্য করে) বললো, | ٨٠ فَلَهًا جَاءَ السَّعَرَةُ قَالَ لَهُرْ مُّوسَى |
| তোমাদের যা নিক্ষেপ করার তা তোমরা নিক্ষেপ করো। | ٱلْقُوْا مَا آنْتُر مُّلْقُوْنَ |
| ৮১. তারা যখন (তাদের যাদুর বাণ) নিক্ষেপ করলো, তখন মূসা বললো, তোমরা যা নিয়ে এসেছো তা (হচ্ছে | ٨١ فَلَمَّا ٱلْقُوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُر بِهِ ١٧ |
| আসলেই) যাদু; (দেখবে) অচিরেই আল্লাহ তায়ালা তা | السِّحْرُ ، إِنَّ اللهُ سَيُبْطِلُهُ ، إِنَّ اللهُ لَا |
| ব্যর্থ করে দেবেন: আল্লাহ তায়ালা কখনো ফাসাদ | |
| সৃষ্টিকারীদের কাজকর্ম শুধরে দেন না। | يُصْلِحُ عَهَلَ الْهُفْسِرِيْنَ |
| ৮২. আল্লাহ তায়ালা স্বীয় বাণী দ্বারা সত্যকে সত্য বলে প্রতিষ্ঠিত করেন, যদিও না-ফরমান মানুষরা একে খুবই | مِ مَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقُّ بِكَلِمْتِهِ وَلَوْ كَرِهَ ﴿ |
| অপ্রীতিকর মনে করে। | را الْمُجْرِمُونَ ع الْمُجْرِمُونَ ع |
| ৮৩. ফেরাউন ও তার পারিষদবর্গের ভয়ে মুসার ওপর | ٨٣ فَمَا أَمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِيَّةً مِنْ قَوْمِهِ |
| তার জাতির কতিপয় কিশোর (যুবক) ছাড়া অন্য কোনো | A 42 AM A A A A (|
| লোক ঈমান আনেনি, (অবশ্যই) ফেরাউন ছিলো | |
| যমীনের মাঝে অহংকারী (বাদশাহ) এবং (মারাত্মক) সীমালংঘনকারী। | وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ } وَإِنَّذُ لَيِنَ |
| | الْهُسْرِفِيْنَ |
| ৮৪. মৃসা (তার ওপর যারা ঈমানু এনেছে তাদের) | 1 A A A A A A A A A A A A A A A A A A A |
| বললো, হে আমার জাতি, তোমরা যদি সত্যিই মুসলমান | |
| ১০ সূরা ইউনুস | . মন্যিল ৩ |

| ſ | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন |
|---|--|---|
| ŀ | रस्य थारका, जारल (अर्धर्य ना रुख) यिनि जामास्नत | |
| | যারে থাকো, ভারলে (অবেব না হয়ে) বিনি ভোমারে মালিক তোমরা তাঁর ওপর ভরসা করো, যদি তোমরা আল্লাহতে আত্মসমর্পণকারী হও। | بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْ ۚ إِنْ كُنْتُرْ مُّسْلِمِيْنَ |
| | ৮৫. (মৃসার কথায়) অতপর তারা বললো (হাঁ), আমরা আল্লাহর ওপরই ভরসা করি (এবং আমরা বলি), হে | ٨٥ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ، رَبَّنَا لَا |
| | আমাদের মালিক, তুমি আমাদের যালেম সম্প্রদায়ের অত্যাচারের শিকারে পরিণত করো না। | تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْرٍ الظُّلِمِيْنَ ٧ |
| | ৮৬. এবং তোমার একান্ত রহমত দ্বারা তুমি আমাদের (ম্বোটন ও তার) কাফের সম্প্রদায়ের হাত থেকে মুক্তি দাও। | ٨٦ وَنَجِّنَا بِرَهْمَتِكَ مِنَ الْقُوْرِ الْكُفِرِيْنَ |
| | ৮৭. আমি (এরপর) মৃসা ও তার ভাই (হারন)-এর কাছে ওহী পাঠালাম, তোমরা তোমাদের জাতির (লোকদের) | ٨٠ وَٱوْمَيْنَا ۚ إِلَى مُوْسَى وَٱخِيْهِ اَنْ تَبَوًّا |
| | জন্যে মিসরেই ঘরবাড়ি বানাও এবং তোমাদের ঘরগুলোকে কেবলা (মুখী করে) বানাও এবং (ডাডে) তোমরা | لِقَوْمِكُمَا بِيِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً |
| | নামায প্রতিষ্ঠা করো; (সর্বোপরি) ঈমানদারদের (মুক্তির সময় ঘনিয়ে এসেছে মর্মে তাদের) সুসংবাদ দাও। | وا وَاقِيْهُوا الصَّلُوةَ ، وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ |
| | ৮৮. মৃসা (আল্লাহ তায়ালাকে) বললো, হে আমাদের মালিক, নিসন্দেহে তুমি ফেরাউন ও তার (মন্ত্রী) | ٨٨ وَقَالَ مُوْسَى رَبَّنَا إِنَّكَ أَتَيْتَ فِرْعُونَ |
| | পরিষদকে দুনিয়ার জীবনে সৌন্দর্য (-মন্ডিত উপকরণ) এবং ধন-সম্পদ দান করে রেখেছো, (এটা কি এ জন্যে) | وَمَلَاَّهُ ۚ زِيْنَةً وَّامُوَالًّا فِي الْحَيٰوةِ السُّنْيَا لا |
| ١ | হে আমাদের মালিক, তারা (এ দিয়ে জনপদের মানুষকে) তোমার পথ থেকে গোমরাহ করে দেবে? হে আমাদের মালিক, তাদের (সমুদয়) ধন-সম্পদ বিনষ্ট করে দাও, | رَبِّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيْلِكَ عَ رَبِّنَا اطْهِسْ عَلَى |
| | তাদের অন্তরসমূহকে (আরো) শক্ত করে দাও, (মূলত) তারা একটা কঠিন আযাব (নাযিল হতে) না দেখলে | اَمْوَالِمِيرُ وَاهْلُادُ عَلَى قُلُوبِمِيرٌ فَلَا يُؤْمِنُوا |
| 1 | ঈমান আনবে না। | حَتَّى يَرَوُا الْعَلَابَ الْاَلِيْرَ |
| | ৮৯. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (হাঁ) তোমাদের উভয়ের দোয়াই কবুল করা হয়েছে, অতএব তোমরা (ধীনের | ٨٩ قَالَ قَنْ ٱجِيْبَتْ تَّمُوتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا |
| | ওপর) সুদৃঢ় হয়ে (দাঁড়িয়ে) থাকো, তোমরা দু'জন কখনো সেসব লোকের (কথার) অনুসরণ করো না, যারা কিছুই জানে না। | تَتَّبِعِيِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُونَ |
| | ৯০. অতপর (ঘটনা এমন হলো), আমি বনী ইসরাঈলদের সাগর পার করিয়ে দিলাম, এরপর ফেরাউন | ٩٠ وَجُوزُنَا بِبَنِي ٓ إِشْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَٱتْبَعَمُرُ |
| ١ | এবং তার সৈন্য-সামস্ত বিদ্বেষপরায়ণতা ও সীমালংঘন করার জন্যে তাদের পিছু নিলো; এমনকি যখন | فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَنَوًا ﴿ مَتَّى إِذَا |
| | (দলবলসহ) তাকে সাগরের অথৈ ঢেউ ডুবিয়ে দিতে লাগলো, (তখন) সে বললো, (এখন) আমি ঈমান | اَدْرَكُهُ الْغَرَقُ لا قَالَ أَمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَّهُ إِلَّهُ إِلَّا |
| | আনলাম, যে মার্দের ওপর বনী ইসরাঈল ঈমান এনেছে, তিনি ছাড়া ঘিতীয় কোনো মার্দ নেই, আমিও (তাঁর) | الذِي امنت بِهِ بنوا اِسراءِيلُ وَانَا مِنَ الْهُسُلِمِيْنَ الْمُسُلِمِيْنَ |
| ١ | অনুগতদের একজন। ৯১. (আমি বললাম,) এখন (ঈমান আনছো)। অথচ | |
| | (একটু) আগেই তুমি না-ফরমানী করছিলে এবং (যমীনে) তুমি ছিলে বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের অন্যতম (নেতা)। | الْهَفْسِرِيْنَ |
| | ৯২. আজ আমি তোমাকে (অর্থাৎ) তোমার দেহকেই বাঁচিয়ে রাখবো, যাতে করে তুমি (তোমার এ দেহ) পরবর্তী (প্রজন্মের লোকদের) জন্যে একটা নিদর্শন হয়ে | ٩٢ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَنَ نِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ غَلْفَكَ أَيَةً ، وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ |
| } | থাকতে পারো; অবশ্য অধিকাংশ মানুষই আমার (এসব) নিদর্শনসমূহ থেকে সম্পূর্ণ (অজ্ঞ ও) বেখবর। | ايتنا لَغْفُلُونَ ع |
| | ৯৩. (ফেরাউনকে ডুবিয়ে মারার পর) আমি বনী ইসরাঈলের লোকদের (বরকতপূর্ণ ও) উৎকৃষ্ট | ٩٣ وَلَقَنْ بَوَّأْنَا بَنِي آ اِسْرَآ عِيْلَ مُبَوًّا مِنْ قِ |
| | ১০ সূরা ইউনুস | |

www.eelm.weebly.com

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন

আবাসভূমিতে বসবাস করালাম এবং তাদের জন্যে উত্তম জীবনোপকরণের ব্যবস্থা করলাম, অতপর তারা (নিজেদের মধ্যে) মতবিরোধ শুরু করে দিলো, এমনকি যখন (দ্বীনের সঠিক) জ্ঞান তাদের কাছে এসে পৌছলো (তারপরও তারা মতবিরোধ থেকে ফিরে এলো না): অবশ্যই তোমার মালিক কেয়ামতের দিন তাদের সেস্ব বিষয়ের ফয়সালা করে দেবেন, যে বিষয়ে তারা (নিজেদের মাঝে) বিভেদ করতো।

وْرَوْنُهُمْ مِنَ الطَّيْبُ عِ فَهَا اغْتَلُقُوا حَتَّى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ﴿ إِنَّ رَبُّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقَيْهَة فَيْهَا كَانُوْ ا فَيْهُ يَحْتَلُفُونَ

৯৪. (হে নবী.) আমি তোমার ওপর যে কেতাব নাযিল করেছি, তাতে (বর্ণিত কোনো ঘটনার ব্যাপারে) যদি তোমার (মনে) কোনো সন্দেহ থাকে, তাহলে সেসব লোকের কাছে (এসব ঘটনা) জিজ্ঞেস করো, যারা كَتَنْ جَاءَكَ الْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَى " তোমার আগে (তাদের ওপর নাথিল করা) কেতাব পড়ে لَتَنْ جَاءَك আসছে, অবশ্যই তোমার কাছে তোমার মালিকের কাছ থেকে সত্য এসেছে, তাই তুমি কখনো সন্দেহবাদীদের (দলে) শামিল হয়ো না।

٩٣ فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكِّ مِّهَا ۖ أَنْزَلْنَا ۚ إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتْبَ مِنْ قَبْلِكَ ع مِنَ الْمَهْتَرِيْنَ لا

৯৫. আর তুমি তাদের দলেও শামিল হয়ো না যারা আল্লাহর আয়াতসমূহ মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, (এরূপ করলে) তুমি ক্ষতিগ্রন্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

٩٥ وَ لا تَكُونَى مِنَ الَّذِيثِيَ كَنَّابُوا بِأَيْسِ اللهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخُسِرِيْنَ

৯৬. (হে নবী.) অবশ্যই তাদের ব্যাপারে তোমার মালিকের কথা (সত্য) প্রমাণিত হয়ে গেছে, তারা কখনো ঈমান আনবে না।

٩٦ انَّ الَّذِينَ مَقَّتُ عَلَيْهِمْ كَلَّهَ لا يَوْمِنُونَ لا

৯৭. এমনকি তাদের কাছে আল্লাহর প্রত্যেকটি নিদর্শন এসে পৌছলেও (তারা ঈমান আনবে এমন) নয়. যতোক্ষণ না তারা কঠিন আযাব (নিজেদের চোখে) দেখতে পাবে।

٩٤ وَلَوْ جَاءَتُهُمْ كُلُّ أَيَةٍ حَتَّى يَرَوُا الْعَنَابَ الْإَلَيْمَ

৯৮. ইউনুস (নবীর) সম্প্রদায় ব্যতীত অন্য (কোনো) জনপদ এমন ছিলো না. যে (জনপদ আযাব দেখে) ঈমান এনেছে এবং তার এ ঈমান তার কোনো উপকার করতে পেরেছে; তারা যখন আল্লাহর ওপর ঈমান আনলো, তখন আমি তাদের এ পার্থিব জীবনের অপমানকর আযাব তাদের কাছ থেকে সরিয়ে নিলাম এবং তাদের আমি এক (বিশেষ) সময় পর্যন্ত জীবনের (উপায়) উপকরণও দান করলাম।

٩٨ فَلُوْلًا كَانَتْ قَوْيَةً أُمَنَتْ فَنَفَعَهَا ۗ إِيْهَانُهَا إِلَّا قَوْاً يُونُسَ ﴿ لَيَّا أَمَنُوا كَشَفْنَا عَنْمُرْ عَنَابَ الْخِزْى فِي الْعَيْوةِ النَّنْيَا وَمَتَّعْنَهُمْ إِلَى مِيْن

৯৯. (হে নবী.) তোমার মালিক চাইলে এ যমীনে যতো মানুষ আছে তারা সবাই ঈমান আনতো: (কিন্তু তিনি তা كُلُّهُ رُ جَوِيْعًا ﴿ أَفَا نُسَ تَكُوءٌ النَّاسَ حَتَّى हानि, তাছাড়া) তুমি कि মানুষদের জোরজবরদন্তি করবে كُلُّهُ رُ جَوِيْعًا ﴿ أَفَا نُسَ تَكُوءُ النَّاسَ حَتَّى যেন, তারা সবাই মোমেন হয়ে যায়!

٩٩ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَ مَنْ فِي الْإَرْضِ يَكُونُوا مُؤْمِنيْنَ

১০০. কোনো মানুষেরই এ সাধ্য নেই যে, আল্লাহর অনুমতি ব্যতিরেকে সে ঈমান আনবে: যারা (ঈমানের রহস্য) বুঝতে পারে না. আল্লাহ তায়ালা এভাবেই তাদের ওপর (কুফুর ও শেরেকের) কলুষ লাগিয়ে দেন।

١٠٠ وَمَا كَانَ لِنَفْسِ أَنْ تُؤْمِنَ اللَّا بِاذْنِ اللَّهِ ط وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন

১০১. (হে নবী.) তুমি বলো. তোমরা দেখো. আসমানসমূহ ও যমীনে কি কি জিনিস রয়েছে: কিন্তু যারা ঈমানই আনবে না তাদের জন্যে (আল্লাহর এসব) নিদর্শন ও (পরকালের) সাবধানবাণী কোনোই উপকারে আসে না ৷

١٠١ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّهٰوٰتِ وَالْإَرْضِ ء وَمَا تُغْنِي الْإِيْتُ وَالنُّنُرُوعَيْ قَوْمٍ لا يُؤْمِنُوْنَ

১০২, তারাও কি সে ধরনের কোনো দিনের অপেক্ষা করছে, যে ধরনের (অপমানকর) দিন তাদের আগের লোকদের ওপর এসেছিলো: (যদি তাই হয় তাহলে) তুমি বলো, তোমরা (সেদিনের) অপেক্ষা করো, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করতে থাকবো।

١٠٢ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ آيًّا ۗ الَّّانِينَ حَلَوْا مِنْ قَبْلِهِرْ وَقُلْ فَانْتَظِرُوْ إِلِّي مَعَكُرْ مَّى الْهُنْتَظِويْنَ

১০৩, অতপর (যখন আযাবের সময় আসে তখন) আমি আমার রসলদের এভাবেই (সে আযাব থেকে) বাঁচিয়ে দেই এবং তাদেরও (বাঁচিয়ে দেই, যারা) ঈমান আনে, আমি আমার ওপর এটা কর্তব্য করে নিয়েছি যে, আমি মোমেনদের (আযাব থেকে) উদ্ধার করবো।

١٠٣ ثُرَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ أَمَنُوا كَنْ لِكَ مَ مَّقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ع

১০৪. (হে নবী.) তুমি (লোকদের) বলো, হে মানুষরা, তোমরা যদি আমার (আনীত) দ্বীনে কোনো সন্দেহ করো (তাহলে তনে রাখো), আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য যাদের তোমরা এবাদাত করো, আমি তাদের এবাদাত করি না, তোমাদের মৃত্যু ঘটান, আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে আমি যেন মোমেনদের অন্তর্ভুক্ত থাকি।

١٠٣ قُلْ يَانُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُرْ فِي شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَّا ٱعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُونَ مِنْ وَ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمنينَ

১০৫. (আমাকে বলা হয়েছে.) তুমি আল্লাহর দ্বীনের জন্যে একনিষ্ঠভাবে নিজেকে প্রতিষ্ঠিত করো এবং কখনো তমি মোশরেকদের দলে শামিল হয়ো না।

١٠٥ وَأَنْ أَقِرْ وَجْهَكَ لِلنَّيْنِ مَنِيْفًا ۽ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْهُشْرِكِيْنَ

১০৬. (আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে,) তুমি কখনো আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে এমন কাউকে ডেকো না. যে তোমার কোনো কল্যাণ (যেমন) করতে পারে না. (তেমনি) তোমার কোনো অকল্যাণও সে করতে পারে না. (এ সত্ত্বেও) যদি তুমি অন্যথা করো. তাহলে অবশ্যই তুমি যালেমদের মধ্যে গণ্য হবে।

١٠٦ وَلَا تَنْعُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ عَفَانَ فَعَلْتَ فَانَّكَ إِذًا مِّيَ الظُّلِمِينَ

১০৭. যদি আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কোনো দুঃখ-কষ্ট দেন তাহলে তিনি ছাড়া অন্য কেউই নেই তা দুরীভূত করার, (আবার) তিনি যদি (মেহেরবানী করে) তোমার কোনো কল্যাণ চান তাহলে তাঁর সে অনুগ্রহ রদ করারও يُصِيْبُ بِهِ مَن يُشَاءً مِن عِبَادِةِ ﴿ وَهُوَ الْغَفُورُ कि ति डांत वानारमत यारक हान डारकरें কল্যাণ পৌছান: আল্লাহ তায়ালা বড়োই ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١٠٤ وَإِنْ يَتَّهْسَلُكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهَّ إِلَّا مُوَع وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرِ فَلَا رَأَدُّ لِفَضْلِهِ ،

১০৮. (হে নবী.) তুমি বলো, হে মানুষ, তোমাদের কাছে তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে সত্য (দ্বীন) এসেছে: অতএব যে হেদায়াতের পথ অবশব্বন করবে সে তো তার নিজের ভালোর জন্যেই হেদায়াতের পথে চলবে, আর যে

١٠٨ قُلْ يَانُّهَا النَّاسُ قَلْ جَاءَكُرُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْرُ ۽ فَهَن اهْتَلٰى فَإِنَّهَا يَهْتَٰدِي

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১১ ইয়া'তাযিরূন

গোমরাহ থেকে যাবে সে তো গোমরাহীর ওপর চলার কারণেই গোমরাহ হয়ে যাবে, আমি তো তোমাদের ওপর কর্মবিধায়ক নই (যে, জোর করে তোমাদের গোমরাহী থেকে বের করে আনবো)।

لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلٌّ فَإِنَّهَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكَيْلٍ ا

১০৯. (হে নবী.) ভোমার ওপর যে হেদায়াত নাযিল করা হয়েছে তুমি তার অনুসরণ করো এবং ধৈর্য ধারণ করো. যে পর্যন্ত আল্লাহ কোনো ফয়সালা না করেন, (কেননা) তিনিই হচ্ছেন সর্বোত্তম ফয়সালাকারী।

١٠٩ وَاتَّبِعْ مَا يُومَى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ مَتَّى يَحُكُرَ اللَّهُ ج وَهُوَ غَيْبُ الْحُكَمِينَ ع

সুরা হুদ

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ১২৩, রুকু ১০ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةً هُودِ مَكِيةً أَيْاً ... السلام المُوع : ١٠ بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْيٰنِ الرَّحِيْرِ

 আলিফ-লাম-রা। এ (কোরআন হচ্ছে এমন একটি) কেতাব, যার আয়াতসমূহ অত্যস্ত সুস্পষ্ট (ও সুবিন্যস্ত) করে রাখা হয়েছে, অতপর (এর বর্ণনাসমূহও এখানে) বিশদভাবে বলে দেয়া হয়েছে, (এ কেতাব) এক প্রজ্ঞাময় সর্বজ্ঞ সন্তার কাছ থেকে (তোমার কাছে এসেছে।)

ا الراس كِتَبُّ أَحْكِمَسُ أَيْتُهُ ثُرٌ فُصِّلَتُ مِنْ الْنُنْ حَكِيْر خَبِيْر

কারো গোলামী করবে না, আর আমি তো তোমাদের گُورُمِنْهُ نَانِيْ لَكُرُمِنْهُ نَانِيْ لَكُرُمِنْهُ نَانِيْ জন্যে তাঁর কাছ থেকে (আযাবের) ভয় প্রদর্শনকারী ও (জান্নাতের) সুসংবাদদানকারী মাত্র।

৩. (এর উদ্দেশ্য হচ্ছে.) তোমরা যেন তোমাদের भानित्कत (पत्रवाद তाभारान क्नाइशाठात कना) कभा المَعْفِرُوا رَبِكُمْ ثُمْ تُوبُوا إِلَيْهِ भानित्कत (पत्रवाद राजभारान कनाइशाठात कना) कभा المُعْفِرُوا رَبِكُمْ ثُمْ تُوبُوا إِلَيْهِ চাইতে পারো, অতপর (গুনাহ থেকে তাওবা করে) তাঁর দিকে ফিরে আসতে পারো, (তাহলে) তিনি তোমাদের وْيَوْسِ كُلٌّ ذِي فَضْلِ فَضْلَدً ، وَإِنْ تَوَلُّوا कि प्रिनिष्ठि अभयुत्रीमा १४ए छेखम (खीवन) आम्भ्यी وَيُؤْسِ দান করবেন এবং প্রতিটি মর্যাদাবান ব্যক্তিকে তার মর্যাদা অনুযায়ী (পাওনা আদায় করে) দেবেন: আর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তাহলে আমি অবশ্যই তোমাদের জন্যে একটি কঠিন দিনের আযাবের ভয় করছি।

يُهَتَّعْكُم مَّتَاعًا حَسَنًا الَّي أَجَل مُّسَهَّ فَالِّيْ ۚ اَخَافُ عَلَيْكُر عَنَ ابَ يَوْ ۗ كَبِيْرِ ٧

8. (কেননা, এ জীবনের শেষে) তোমাদের সবাইকে আল্লাহ তায়ালার কাছেই ফিরে যেতে হবে এবং তিনি সর্ব-বিষয়ের ওপর একক ক্ষমতাবান।

ا إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

৫. সাবধান, এ (নির্বোধ) লোকেরা (মনের কথা দিয়ে কিন্তু) নিজেদের অন্তরসমূহকে ঢেকে রাখে, যেন আল্লাহর কাছ থেকে তা লুকিয়ে রাখতে পারে: কিন্তু এরা কি জানে না, যখন তারা কোনো কাপড় দিয়ে (নিজেদের) ঢেকে يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴾ والله عَلِيْرِ إِن اس पत्र, ज्यन आन्नार जात्रा (जात إِن الله عَلَيْر أ ভেতরে) কোন বিষয় লুকিয়ে রাখছে, আর কোন বিষয় তারা প্রকাশ করছে, অবশ্যই তিনি মনের ভেতরের সব কথা জানেন।

٥ أَلَا إِنَّاهُرْ يَثَنُّونَ صُلُوْرَهُرْ لِيَسْتَخْفُوْا منْهُ ﴿ أَلَا حَيْنَ يَسْتَغْشُونَ ثَيَا بَهُرْ لِا يَعْلَرُ مَا الصَّاوُر

৬. যমীনের ওপর বিচরণশীল এমন কোনো জীব নেই. যার রেযেক (পৌছানোর দায়িত্র) আল্লাহর ওপর নেই. তিনি (যেমন) তার আবাস সম্পর্কে অবহিত, (তেমনি তার মৃত্যুর পর) তাকে যেখানে সোপর্দ করা হবে তাও তিনি জানেন: এসব (কথা) একটি সুস্পষ্ট গ্রন্থে (লিপিবদ্ধ)

" وَمَا مِنْ دَابَّة في الْأَرْضِ الَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرُّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ﴿ كُلُّ فِي

৭. আর তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি আসমানসমূহ ও যমীন ছয় দিনের মধ্যে সৃষ্টি করেছেন, (সে সময়) তাঁর 'আরশ' ছিলো পানির ওপর (এ সৃষ্টি কৌশলের লক্ষ্য), যেন তিনি এটা যাচাই করে নিতে পারেন, তোমাদের মধ্যে কে তার কাজে কর্মে উত্তম; (হে নবী,) আজ যদি তুমি এদের বলো, মৃত্যুর পর তোমাদের অবশ্যই পুনরুখিত করা হবে, তাহলে যেসব মানুষ কুফুরের রাস্তা গ্রহণ করেছে তারা সাথে সাথেই বলবে, এ (কেতাব) তো সুস্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়।

٤ وَهُوَ الَّذِي ۚ خَلَقَ السَّبُوٰسِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيًّا } وَّكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْهَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ ۚ أَحْسَنُ عَهَلاً ﴿ وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مُّهُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْسِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوْ النَّ هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مَّبِينَ

৮. আমি যদি নির্দিষ্ট একটা মেয়াদের জন্যে তাদের (এ) আযাব তাদের কাছ থেকে সরিয়ে রাখি, তাহলে (তামাশাচ্চলে) ওরা বলবে, কোন জিনিস এখন এ معن ودة اليقول ما يحبِسه الآيو كاتيمور (आयाव)- त्व आप्रत (अथह) (अथह) (अथह) (अथह) عبا المعبِسه الآيو كاتيمور তাদের ওপর এসে পতিত হবে, সেদিন এ আযাব তাদের কাছ থেকে সরাবার কেউই থাকবে না, যে (আযাব) নিয়ে তারা হাসি-বিদ্রূপ করছিলো, তা তাদের পরিবেষ্টন করে ফেলবে।

٨ وَلَئِنْ آخَّوْنَا عَنْهُرُ الْعَنَابَ إِلَّى أُمَّةٍ لَيْسَ مَصْرُونًا عَنْهُرْ وَهَاقَ بِهِرْ مَّا كَانُوْا به يستهزءون ع

৯. আমি যদি মানুষকে (একবার) আমার রহমতের স্বাদ আস্বাদন করাই এবং পরে (কোনো কারণে) যদি তা তার কাছ থেকে ছিনিয়ে নিই, তাহলে সে নিরাশ ও অকৃতজ্ঞ হয়ে পডে।

٩ وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْهَةً ثُو نَبَعْنُهَا مِنْهُ مِ اللَّهُ لَيَنُّوسَ كَفُورً

১০. আবার কোনো দুঃখ-দৈন্য তাকে স্পর্শ করার পর যদি তাকে আমি অনুগ্রহের স্বাদ ভোগ করাই, তখন সে বলতে শুরু করে (হাা), এবার আমার থেকে সব বিপদ-মসিবত কেটে গেছে, (আসলে) সে (অল্পতেই যেমন) উৎফুল্প (স্থ্র ওঠে, তেমনি সহজেই আবার) অহংকারী (হয়ে যায়),

١٠ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْماءً بَعْلَ ضُرًّاءَ مَسَّنَّهُ لَيَقُوْلَيُّ ذَهَبَ السَّيَّاسُ عَنِّي مَ إِنَّهُ لَفَرحٌ

১১. কিন্তু যারা পরম ধৈর্য ধারণ করে এবং নেক আমল করে, এরাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের জন্যে রয়েছে (আল্লাহর) ক্ষমা ও মহাপুরস্কার।

١١ إلَّا الَّذِينَ مَبَرُّوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ أُولَئِكَ لَهُرْ مُّغْفِرَةً وَّأَجُرٌ كَبِيْرُ

১২. (হে নবী, কাফেররা মনে করে,) সম্ভবত তোমার কাছে যা ওহী নাযিল হয় তার কিয়দংশ তুমি ছেডে দাও এবং এ কারণে তোমার মনোকষ্ট হবে যখন তারা বলে বসবে, এ ব্যক্তির ওপর কোনো ধন-ভান্ডার অবতীর্ণ হলো না কেন, কিংবা তার সাথে (নবুওতের সাক্ষ্য দেয়ার জন্যে) কোনো ফেরেশতা এলো না কেন (তুমি এতে মনোক্ষুণ্ন হয়ো না); তুমি তো হচ্ছো (আযাবের) ভয় প্রদর্শনকারী (একজন রসূল মাত্র); যাবতীয় কাজকর্মের (আসল) কর্মবিধায়ক তো হচ্ছেন স্বয়ং আল্লাহ তায়ালা।

١٢ فَلَعَلَّكَ تَارِكً ۚ بَعْضَ مَا يُوْمَّى إِلَيْكَ وَضَاَّئِقًا بِهِ صَارُكَ أَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَا ٱنْزِلَ عَلَيْدٍ كَنْزُ أَوْ جَاءً مَعَدُ مَلَكُ ، إِنَّهَا آنْتَ نَنْ يُو مُ وَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْء وَكِيلٌ م

সে (ব্যক্তি কোরআন) নিজে নিজে রচনা করে নিয়েছে! ردع नवी,) प्रिम (जारात) वरला, राम शह भारत करा) استطعتر من استطار من استطعتر من استطعتر

১১ সুরা হুদ

মন্যিল ৩

২৮

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ তাহলে নিয়ে এসো এর অনুরূপ (মাত্র) দশটি (তোমাদের

دُوْنِ اللَّهِ إِنْ كَنْتُرْ صَاقِينَ

পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ

স্বরচিত) সূরা এবং আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য যাদের তোমরা সাহায্যের জন্যে ডাকতে পারো তাদের ডেকে নাও, যদি তোমরা তোমাদের (দাবীতে) সত্যবাদী হও।

১৪. আর যদি তারা তোমাদের (কথায়) সাড়া না দেয়, তাহলে জেনে রেখো, এটা আল্লাহর জ্ঞান (ও কুদরত) वातार नायिन कता राहारह, छिनि वाजीज आत त्कात्ना والله وَأَن لا إِلْهَ إِلا مُوءَ فَهَل वातार नायिन कता राहारह, छिनि वाजीज आत त्कात्ना মাবুদ নেই, (বলো.) তোমরা কি মুসলমান হবে?

١٢ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَبُوْا أَنَّهَا

১৫. যদি কোনো ব্যক্তি শুধু এ পার্থিব জীবন ও তার প্রাচুর্য ভোগ করতে চায়, তাহলে আমি তাদের সবাইকে তাদের কর্মসমূহ এ (দুনিয়ার) মধ্যেই যথাযথ আদায় করে দেই এবং সেখানে তাদের (বৈষয়িক পাওনা) কম করা হবে না।

١٥ مَنْ كَانَ يُرِيْلُ الْحَيْوةَ النَّنْيَا وَزِيْنَتَهَا

১৬. (আসলে) এরাই হচ্ছে সে সব (দুর্ভাগা) লোক. যাদের জন্যে পরকালে (জাহানামের) আগুন ছাড়া আর কিছুই থাকবে না. (দুনিয়ার) জীবনে সেখানে যা কিছু তারা বানিয়েছে তা সব হবে বেকার, যা কিছু তারা (দুনিয়ায়) করে এসেছে তা সবই হবে নিরর্থক।

١٦ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَمُرْ فِي الْأَخِرَةِ إِلَّا النَّارَ زِ وَمَبِعاً مَا صَنَعَوْا فِيهَا وَبطِلَ مَا كَانُوْ إِيعَهَلُوْنَ

১৭. অতপর যে ব্যক্তি তার মালিকের পক্ষ থেকে নাযিল করা সুস্পষ্ট (কোরআনের) প্রমাণের ওপর প্রতিষ্ঠিত রয়েছে এবং তা সে তেলাওয়াত করে, (যার ওপর স্বয়ং) তাঁর পক্ষ থেকে সে (মোহাম্মদ) সাক্ষী (হিসেবে মজুদ) রয়েছে, (তদুপরি রয়েছে) তার পূর্ববর্তী মৃসার কেতাব, (যা তাদের জন্যে) পথপ্রদর্শক ও রহমত; এরা এর ওপর ঈমান আনে: (মানব) দলের মধ্যে যে অতপর একে অস্বীকার করবে তার প্রতিশ্রুত স্থান হচ্ছে (জ্বাহান্নামের) আন্তন, সুতরাং তুমি সে ব্যাপারে কোনো রকম সন্দিগ হয়ো না, এ সত্য হচ্ছে তোমার মালিকের পক্ষ থেকে नायिन कता, किन्नु अधिकाश्म प्रानुष्ठ देनेपान जातन ना।

١٤ أَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ مِنَ الْأَهْزَابِ فَالنَّارِّ مَوْعِلَّةٌ ۚ ۚ فَلَا تَكُّ فِي مِ ْيَةٍ مِّنْهُ ۚ قَ اللَّهُ الْحَقِّ مِنْ رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَوْمِنُونَ

১৮. আল্লাহ তায়ালা সম্বন্ধে যে মিথ্যা রচনা করে, তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে হতে পারে? এ লোকদের যখন কেয়ামতের দিন তাদের মালিকের সামনে হাযির করা হবে এবং তাদের (বিশন্দীয়) সাক্ষীরা যখন বলবে (হে আমাদের মালিক), এরাই হচ্ছে সে ব্যক্তি, যারা তাদের মালিকের বিরুদ্ধে মিথ্যা কথা রচনা করেছিলো, হাাঁ, আজ যালেমদের ওপর আল্লাহ তায়ালার অভিসম্পাত,

كُنِبًا ، أُولَئِكَ يَعْرَضُونَ عَلَى رَبِّهِم وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ مُؤُلَاءِ النَّابِيْنَ كَنَابُوا عَلَى رَبِّهِ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّلِمِينَ لا

১৯. (সে যালেমদের ওপরও আল্লাহর লানত) যারা (অন্য মানুষদের) আল্লাহর পথ থেকে বিরত রাখে এবং আল্লাহর পথে দোষক্রটি খুঁজে বেড়ায় (সর্বোপরি) যারা শেষ বিচারের দিনকেও অস্বীকার করে।

١٩ الَّذِيْنَ يَصَّنُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ، وَهَرْ بِالْإِخِرَةِ هُرْ كُفُرُونَ

২০. এরা এ যমীনের বুকেও (আল্লাহ তায়ালাকে) কখনো ব্যর্থ করে দিতে পারেনি, না আল্লাহর মোকাবেলায় তাদের (সেখানে) কোনো অভিভাবক ছিলো, এদের জন্যে আযাব হবে দ্বিশুণ; এরা কখনো (দ্বীন-ঈমানের কথা) ভনতে

وَمَا كَانَ لَهُرْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ م يُضْعَفُ لَهُرُ الْعَلَاابُ ، مَا كَانُوْ ا يَسْتَطِيعُوْنَ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ |
|--|---|
| সক্ষম হতো না, না এরা (সত্য দ্বীন নিজেরা) দেখতে পেতো! | السُّهُ وَمَا كَانُوْ الْيُبْصِرُونَ |
| ২১. এরাই হচ্ছে সেসব লোক, যারা নিজেদের দারুণ ক্ষতি সাধন করলো, (দুনিয়ায়) যতো মিথ্যা তারা রচনা | ٢١ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوْآ ٱنْفُسَهُرْ وَضَلَّ |
| করেছিলো, (আখেরাতে) তা সবই তাদের কাছ থেকে হারিয়ে যাবে। | عَنْهُرْ مَّا كَانُوْ إِيَفْتَرُوْنَ |
| ২২. অবশ্যই এরা হবে আখেরাতে সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত মানুষ। | ٢٢ لَا جَرَاً اَنَّهُمْ فِي الْأَخِرَةِ هُمُـ الْأَخِرَةِ هُمُـ الْأَخِرَةِ هُمُـ الْأَخْرَةِ هُمُـ الْأَخْرَةِ |
| ২৩. (পক্ষান্তরে) যারা আল্লাহর ওপর নিশ্চিত ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে, (উপরন্তু) নিজেদের | ٢٣ إنَّ الَّذِينَ أَمَنُّوا وَعَبِلُوا الصَّلِحَتِ |
| মালিকের প্রতি সদা বিনয়াবনত থেকেছে, তারা হবে জানাতের বাসিন্দা, সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান | وَأَخْبَتُوْآ إِلَى رَبِّهِمْ لا أُولَّنِكَ أَصْعُبُ |
| कदरव । | الْجَنَّةِ ع مُرْ فِيْهَا خُلِلُونَ |
| ২৪. (জাহান্নামী আর জান্নাতী এ) দুটো দলের উদাহরণ | ٢٣ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْإَعْلَىٰ وَالْإَصَرِ" |
| হচ্ছে এমন, যেমন (একদল হচ্ছে) অন্ধ ও বধির, (আরেক দল হচ্ছে) চকুমান ও শ্রবণশক্তিসম্পন্ন; এ দুটো | وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ مَ هَلْ يَسْتَوِينِ مَثَلًا مَ |
| দল কি সমানঃ তোমরা কি এখনো শিক্ষা গ্রহণ করবে নাঃ | ٱفَلَا تَنَكُّرُونَ ع |
| ২৫. আমি অবশ্যই নৃহকে তার জাতির কাছে পাঠিয়েছি (সে তাদের বললো), আমি হচ্ছি তোমাদের জন্যে | ٢٥ وَلَقَلُ أَرْسَلْنَا نُوْمًا إِلَى قَوْمِهِ رَ إِنِّي |
| একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী, | لكُر ْ نَانِيْد مُّبِينٌ ٧ |
| ২৬. (আমার দাওয়াত হচ্ছে,) যেন তোমরা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারো এবাদাত না করো, (অন্যথায়) | ٢٦ أَنْ لا تَعْبُنُوْ آ إِلَّا اللَّهُ ، إِنِّي ٓ أَهَانُ |
| আমি আশংকা করছি তোমাদের ওপর এক ভয়াবহ দিনের আযাব এসে পড়বে। | عَلَيْكُرْ عَنَابَ يَوْ ۗ إَلِيْمٍ |
| ২৭. অতপর তার জাতির নেতৃস্থানীয় লোকেরা- যারা কুফরী করছিলো, বললো, আমরা তো তোমার মধ্যে এর | ٢٠ فَقَالَ الْهَلَدُ الَّذِيْنَ كَفَرُواْ مِنْ قَوْمِهِ مَا |
| বাইরে কিছুই দেখতে পাচ্ছি না যে, তুমি আমাদের মতোই একজন মানুষ, আমরা এও দেখতে পাচ্ছি না যে, | نَرْنِكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرْنِكَ اتَّبَعَكَ |
| আমাদের মধ্যেকার কিছু নিম্নন্তরের লোক ছাড়া কেউ | إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادِلْنَا بَادِي الرَّآعِي وَمَا |
| তোমার অনুসরণ করছে এবং তারাও তা করছে (কিছু না বুঝে) তথু ভাসা ভাসা দৃষ্টি দিয়ে, (আসলে) আমরা | |
| আমাদের ওপর তোমাদের জ্বন্যে তেমন কোনো মর্যাদাই দেখতে পাচ্ছি না, (মূলত) আমরা তোমাদের মনে করি | |
| (তোমরা হচ্ছো) মিথ্যাবাদী। | |
| ২৮. সে বললো, হে আমার জাতি! তোমরা কি (একথা) ভেবে দেখেছো, আমি যদি আমার মালিকের (পাঠানো) একটি সুস্পষ্ট প্রমাণের ওপর (প্রতিষ্ঠিত) থাকি, অতপর | ارديتر إن سي على بيت |
| তিনি যদি আমাকে তাঁর (নবুওতের) বিশেষ রহমত দিয়ে (ধন্য করে) থাকেন, যাকে তোমাদের দৃষ্টির বাইরে রাখ | مِن رَبِي وَالنِّي رَحْمَهُ مِن عِنْلِهُ فَعَمِيتُ |
| ব্যেছে, তাহলে সে (বিষয়টার) ব্যাপারে আমি কি তোমাদের বাধ্য করতে পারি, অথচ তোমরা তা অপছন্দও করো। | عَلَيْكُمْ ﴿ أَتَلْزِمُكُمُوْهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كُرِهُونَ |
| ২৯. হে আমার জাতি, আমি (যা কিছু তোমাদের বলছি) | المستعمر عليه الأواق |
| এর ওপর তোমাদের কাছ থেকে কোনো অর্থ-সম্পদ চাই না, আমার বিনিময় তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই আছে | \ - \ . \ . \ . \ . \ . \ . \ . \ . \ . |
| ১১ সূরা হুদ | মন্যিল ৩ |

www.eelm.weebly.com

পারা ১২ ওয়ামা মিন দাববাহ

এবং যারাই আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে, (গরীব হওয়ার ﴿ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ م কারণে) তাদের তাড়িয়ে দেয়ার (মানুষ) আমি নই; اربكر ولكنِّي اربكر (কেননা) তাদেরও (একদিন) তাদের মালিকের সাথে সাক্ষাত করতে হবে, বরং আমি তো তোমাদেরই দেখতে পাচ্ছি তোমরা সবাই হচ্ছো এক (নিরেট) অজ্ঞ সম্প্রদায়।

قَوْمًا تَجْهَلُونَ

৩০. হে আমার জাতি, আমি যদি তোমাদের কথায় গরীবদের তাড়িয়ে দেই, তাহলে (এ জ্বন্যে) আল্লাহ তায়ালা (-র শাস্তি) থেকে আমাকে কে বাঁচিয়ে দেবে: তোমরা কি অনুধাবন করতে পাচ্ছো না?

٣٠ وَيٰقَوْ إِ مَن يَّنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طُودَتُهُم اللهُ الله

৩১. আমি তো তোমাদের (কখনো) একথা বলি না যে. আমার কাছে আল্লাহর ধন-ভান্ডার আছে, না আমি গায়ব জানি, না আমি একজন ফেরেশতা, না আমি সেসব লোকের ব্যাপারে- যাদের তোমাদের দৃষ্টি হেয় করে দেখে, এটা বলতে পারি যে, আল্লাহ তায়ালা কখনো তাদের কোনো কল্যাণ দান করবেন না; আল্লাহ তায়ালা اللهُ خَيْرًا ، اللهُ أَعْلَمُ بِهَا فِي أَنْفُسِهِمْ كَ क्विला क्वातन, जातन प्रा किছू नुकिस हैं আছে। (আমি যদি এমন কিছু বলি), তাহলে সত্যি সত্যিই আমি যালেমদের দলে শামিল হয়ে যাবো।

٣١ وَلا ٓ اَقُوْلُ لَكُمرُ عِنْدِي ْ خَزَّانِي اللهِ وَلاَ اَعْلَهُ الْغَيْبَ وَ \widetilde{V} اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌّ وَّ \widetilde{V} ٱتُوْلُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِيٓ آعْيُنُكُرْ لَنْ يُّؤْتِيَهُرُ ابِّي ۚ إِذًا لَّهِيَ الظَّلِهِيْنَ

৩২. লোকেরা বললো, হে নৃহ (এ বিষয়টা নিয়ে) তুমি আমাদের সাথে বাকবিতভা করছো এবং বিতভা তুমি একটু বেশীই করেছো, তুমি যদি সত্যবাদী হও তাইলে সে (আযাবের) জিনিসটাই আমাদের জন্যে নিয়ে এসো. যার ভয় তুমি আমাদের দেখাচ্ছো।

٣٢ قَالُوْ إِينُوْحُ قَلْ جِلَالْتَنَا فَاكْثُرْ عَ جِلَ الَّنَا فَأْتِنَا بِهَا تَعِلُنَا إِنْ كُنْسَ مِنَ الصَّرِقِينَ

৩৩. সে বললো, তা তো আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের কাছে আনবেন যদি তিনি চান, আর (তেমন কিছু হলে) তোমরা কখনো তাঁকে ব্যর্থ করে দিতে পারবে না।

٣٣ قَالَ إِنَّهَا يَأْتِيْكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءً وَمَا أنْتُر بِمَعْجِزينَ

৩৪. (আসলে) তোমাদের জন্যে আমার (এ) শুভ কামনা কোনো কাজেই আসবে না, আমি তোমাদের ভালো কামনা করলে (তাও কার্যকর হবে না) যদি আল্লাহ তায়ালা তোমাদের গোমরাহ করে দিতে চান; (কারণ) তিনিই হচ্ছেন তোমাদের মালিক এবং তাঁর কাছেই তোমাদের সবাইকে ফিরে যেতে হবে:

٣٣ وَلَا يَنْفَعُكُر نُصْحِيَّ إِنْ أَرَدْتٌ أَنْ ٱنْصَعَ لَكُر إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيْلُ أَنْ يَّغُوِيَكُرْ ﴿ هُوَ رَبُّكُمْ نَ وَإِلَيْهِ تُوْجَعُونَ ا

৩৫. (হে নবী,) এরা কি বলছে, এ (গ্রন্থ)-টা সে (ব্যক্তি নিজেই) রচনা করে নিয়েছে? তুমি বলো, যদি আমি তা রচনা করে থাকি তাহলে এ অপরাধের দায়িত্ব আমার ওপর, (তবে এ মিথ্যা অভিযোগ আরোপ করে) যে অপরাধ তোমরা করছো তা থেকে আমি সম্পূর্ণ মুক্ত।

٣٥ أَ مَ يُقُولُونَ افْتَرْكُ مَ قُلُ إِنِ افْتَرَيْتُهُ نَعَلَى ۗ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِي ۖ مِنَّا تَجْرِمُونَ ع

৩৬. নূহের ওপর ওহী পাঠানো হলো, তোমার জাতির লোকদের মধ্য থেকে যারা ঈমান এনেছে, তারা ছাড়া আর কেউই (নতুন করে) ঈমান আনবে না, সূতরাং এরা যা কিছু করছে (হে নবী), তুমি তার জন্যে দুঃখ করো না,

٣٦ وَ أُوْحِيَ إِلَى نُوْحٍ أَنَّهُ لَن يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَلْ أَمَى فَلَا تَبْتَئِسْ بِهَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ جَ سَاءِ

৩৭. তুমি আমারই তত্ত্বাবধানে আমারই ওহীর (আদেশ) দিয়ে একটি নৌকা বানাও এবং যারা যুলুম করেছে তাদের ব্যাপারে তুমি আমার কাছে (কোনো আবেদন নিয়ে) কিছু বলোনা, নিশ্চয়ই তারা নিমজ্জিত হবে।

٣٠ وَامْنَع الْقُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَهْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ج إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ

৩৮. (পরিকল্পনা মোতাবেক) সে নৌকা বানাতে শুরু করলো। যখনই তার জাতির নেতৃস্থানীয় লোকেরা তার

٣٨ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ سَ وَكُلَّهَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاًّ

১১ সূরা হুদ

220

পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ

مِّنْ قَوْمِهِ سَخِرُوْا مِنْهُ ، قَالَ إِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخُرُ مِنْكُرْ كَهَا تَسْخُرُونَ ء

৩৯. অচিরেই তোমরা জানতে পারবে, কার ওপর (এমন) আযাব আসবে যা তাকে (দুনিয়াতে) অপমানিত করবে এবং পরকালে (কঠিন ও) স্থায়ী আযাব কার জন্যে (निर्मिष्ठ)।

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পাশ দিয়ে আসা-যাওয়া করতো, তখন (নৌকা বানাতে

দেখে) তাকে নিয়ে হাসাহাসি শুরু করে দিতো: সে বললো, (আজ) তোমরা যদি আমাদের উপহাস করো

> ٣٩ فَسَوْنَ تَعْلَهُوْنَ لِا مَنْ يَّأْتَيْهُ عَنَ ابَّ يُّخْزِيْدِ وَيَحِلُّ عَلَيْدِ عَنَ ابُّ مُّقِيْرٌ

৪০. অবশেষে (তাদের কাছে আযাব সম্পর্কিত) আমার আদেশ এসে পৌছলো এবং চুলো (থেকে একদিন পানি) উথলে ওঠলো, আমি (নূহকে) বললাম, (সম্ভাব্য) প্রত্যেক জীবের (পুরুষ-স্ত্রীর) এক এক জোড়া এতে উঠিয়ে নাও, (সাথে) তোমার পরিবার-পরিজনদেরও (ওঠাও) তাদের বাদ দিয়ে, যাদের ব্যাপারে আগেই সিদ্ধান্ত (ঘোষিত) হয়েছে এবং (তাদেরও নৌকায় ওঠিয়ে নাও) যারা ঈমান এনেছে: (মূলত) তার সাথে (আল্লাহর ওপর) খুব কম সংখ্যক মানুষই ঈমান এনেছিলো।

٣٠ مَتَّى إذَا مِّاءً أَمْ نَا وَفَارَ التَّنُّورُ لا قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَٱهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ أَمَنَ ﴿ وَمَا أَمَنَ مَعَدُ الَّا قَلَيْلُ

৪১. সে (তার সাথীদের) বললো, তোমরা এতে ওঠে পড়ো, আল্লাহর নামে এর গতি ও স্থিতি (নির্ধারিত হবে): নিশ্চয়ই আমার মালিক ক্ষমাশীল ও পরম দ্য়াল।

٣١ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيْهَا بِشِرِ اللَّهِ مَجْرِبهَا وَمُوْسُهَا ﴿ إِنَّ رَبِّى لَغَفُوْرٌ رَّحِيمُ

৪২. অতপর সে (নৌকা) পাহাড়সম বড়ো বড়ো ঢেউয়ের মধ্যে তাদের বয়ে নিয়ে চলতে থাকলো। নৃহ তার ت وَنَادَى نُوحٌ " ابْنَدُ وَكَانَ فِي مَعْزِلِ - कार्श क्षर्शंश क्षांशंश्य (माफिर्सं) हिला) عَوْزِلِ (আগে থেকেই) मृतवर्णी এक क्षांशंशंश হে আমার ছেলে, আমাদের সাথে (নৌকায়) ওঠো, (আজ এমনি এক কঠিন দিনে) তুমি কাফেরদের সাথী হয়ো না।

٣٢ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِرْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ يُّبُنَىُّ ارْكَبْ مُّعَنَا وَلَا تَكُنْ مُّعَ الْكَفِرِيْنَ

৪৩. সে বললো, (পানি বেশী দেখলে) আমি কোনো ৪৩. সে বললো, (পানি বেশী দেখলে) আমি কোনো ﴿ مُنَالَ سَاوِى ۚ إِلَى جَبَلٍ يَعْصِهُنِي صَ পাহাড়ে গ্রিয়ে আশ্রয় নেবো (এবং) তা আমাকে পানি مَالَ عَبَلُو يَعْصِهُنِي مُنَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ থেকে বাঁচিয়ে দেবে; নূহ বললো, (কিন্তু) আজ তো কেউই আল্লাহর (গযবের) হুকুম থেকে (কাউকে) বাঁচাতে পারবে না, তবে যার ওপর আল্লাহ তায়ালা দয়া করবেন (সে-ই শুধু আজ রক্ষা পাবে, পিতা-পুত্র যখন কথা বলছিল তখন) হঠাৎ করে একটা (বিশাল) ঢেউ তাদের উভয়কে বিচ্ছিনু করে দিলো, (মুহুর্তের মধ্যেই) সে নিমজ্জিত লোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেলো।

الْمَاءِ وَقَالَ لَا عَاصِرَ الْيَوْمُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَّحِمرَ ع وَحَالَ بَيْنَهُهَا الْهَوْجُ فَكَانَ منَ الْمُفْرَقِينَ

৪৪. (অতপর) বলা হলো, হে যমীন, তুমি (এবার) ০০. (अण्पात) वणा शरणा, रथ यभान, ज्ञाम (এবার) مَوْقِيلَ يَارُضُ ابْلَغِي مَاءَكِ وَيَسَمَاءُ পদ তোমার পানি গিলে নাও, হে আসমান, তুমিও (পানি وَقِيلَ يَارُضُ ابْلَغِي مَاءَكِ وَيَسَمَاءُ বর্ষণ থেকে) ক্ষান্ত হও, অতএব, পানি (-র প্রচন্ডতা) প্রশমিত হলো এবং (আল্লাহর) কাজও সম্পন্ন হলো. (নূহের) নৌকা গিয়ে স্থির হলো জুদী (পাহাড়)-এর ওপর, (আল্লাহর ঘোষণা) ধ্বনিত হলো, যালেম সম্প্রদায়ের লোকেরা (নিশেষিত হয়ে) বহুদূর চলে গেছে।

أَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْهَاءُ وَقُضِيَ الْإَمْرُ وَاسْتَوَسْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بَعْدًا لِّلْقَوْرًا الظَّلِمِيْنَ

৪৫. নৃহ (তার ছেলেকে ডুবতে দেখে) তার মালিককে ডেকে বললো, হে আমার মালিক, আমার ছেলে তো مِنْ أَهْلِي ٤ وَإِنَّ وَعُن كَ الْحَقِّ وَأَنْتَ عَامَاهِ अभनजनरमत مِنْ أَهْلِي ٤ وَإِنَّ وَعُن كَ الْحَقّ وَأَنْتَ ব্যাপারে) তোমার ওয়াদা অবশ্যই সত্য, আর তুমিই হচ্ছো সর্বোচ্চ বিচারক।

٣٥ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي أَحْكَهُ ۖ الْحَكَمِيْنَ

পারা ১২ ওয়ামা মিন দাববাহ

৪৬. আল্লাহ বললেন, হে নৃহ, সে তোমার পরিবারের অন্তর্ভুক্ত নয়, সে তো হলো এক অসংকর্মপরায়ণ ব্যক্তি, অতএব তোমার যে বিষয়ের জ্ঞান নেই, সে বিষয়ে আমার কাছে তুমি কিছু চেয়ো না; আমি তোমাকে উপদেশ দিচ্ছি, নিজেকে কোনো অবস্থায় জাহেলদের দলে শামিল করো না।

٢٣ قَالَ يُنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ع إِنَّهُ عَبَلَ عَبْرُ مَالِحِ اللهِ عَلَا تَسْئَلُن مَا لَيْسَ لَكَ عَبَلَ عَيْرُ مَالِحِ اللهِ عَلَا تَسْئَلُن مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْرٌ وَإِنِّيْ اَعِظْكَ اَنْ تَكُونَ مِنَ الْجُهلِيْنَ

8 ৭. সে বললো, হে আমার মালিক, যে বিষয় সম্পর্কে আমার কোনো জ্ঞান নেই, সে ব্যাপারে কিছু চাওয়া থেকে আমি তোমার কাছে পানাহ চাই; তুমি যদি আমাকে মাফ না করো এবং আমার ওপর দয়া না করো, তাহলে আমি ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবো।

٣٠ قَالَ رَبِّ إِنِّى آَ اعْوَدُيكَ اَن اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِي إِنِّى آَعُودُ بِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمَرُ مَا وَإِلَّا تَغْفِر لِي وَتَرْمَمْنِي آَ أَكُنْ مِِّنَ الْخُسِرِيْنَ
 وَتَرْمَمْنِي آَ أَكُنْ مِّنَ الْخُسِرِيْنَ

৪৮. তাকে বলা হলো, হে নৃহ (বন্যার পানি নেমে গেছে), এবার তুমি (নৌকা থেকে) নেমে পড়ো, তোমার ওপর, তোমার সাথে যারা আছে তাদের ওপর আমার দেয়া সালাম ও বরকতের সাথে এবং (অন্য) সম্প্রদায়সমূহ! (হাঁ) আমি (আবার) তাদের জীবনের (যাবতীয়) উপকরণ প্রদান করবো, (তবে নাফরমানীর জন্যে) আমার কাছ থেকে মর্মান্তিক শান্তিও তাদের ভোগ করতে হবে।

٣٨ قِيلَ يُنُوحُ اهْبِطْ بِسَلْرٍ مِّنَّا وَبَرَكْتِ
 عَلَيْكَ وَعَلَى أُمْرٍ مِّنَّى مُعَكَ وَأُمَرُ
 سَنُهَ يَعْهُر ثُرُ يَهَسُّهُر مِنَّا عَنَ ابُّ الْمِرْ

৪৯. (হে নবী,) এগুলো হচ্ছে অদৃশ্য জগতের (কিছু)
খবর, যা আমি তোমাকে ওহীর মাধ্যমে জানিয়ে দিছি,
এর আগে না তুমি এগুলো জানতে, না তোমার জাতি
এগুলো জানতো; অতএব, তুমি ধৈর্য ধারণ করো, কারণ
(ভালো) পরিণাম ফল সব সময় পরহেষণার লোকদের
জন্যেই (নির্দিষ্ট থাকে)।

٣٩ تِلْكَ مِنْ ٱثْبَاءِ الْغَيْبِ نُوْمِيْهَا ۗ إلَيْكَ عَ الْغَيْبِ نُوْمِيْهَا ۗ إلَيْكَ عَ الْعَلَمُ مَا كُنْسَ تَعْلَمُهَا ۗ ٱنْسَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ مَا كُنْسَ تَعْلَمُهَا ۗ ٱنْسَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ مَا كُنْسَ تَعْلَمُهَا ۗ أَنْسَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ مَا لَيْتَا لِلْهَا قِيْنَ عَلَيْهِ لَا لَهُ الْعَلَيْمِ لَلْهَا قِيْنَ عَلَيْهِ لَلْهَا قِيْمَ لِلْهَا قِيْنَ عَلَيْهِ لَلْهَا قِيْمَ لِلْهَا قِيْمَ لِلْهَا قِيْمَ لِلْهَا قِيْمَ لِلْهَا قِيْمَ لِلْهَا قَالَ الْمَا قِيمَةُ لِلْهَا قَالَ الْمَا قِيمَةُ لِلْهَا قَالَ الْمَا لَهُ اللَّهُ الْعُلَّالِمُ اللَّهُ الْمُعْلَمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّه

৫০. আমি আ'দ জাতির কাছে তাদেরই (এক) ভাই হুদকে পাঠিয়েছিলাম; সে তাদের বললো, হে আমার জাতি, তোমরা এবাদাত করো একমাত্র আল্লাহ তারালার, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোনো মাবুদ নেই; (আসলে আল্লাহ তারালার ব্যাপারে) তোমরা তো মিথ্যা রচনাকারী ছাড়া আর কিছুই নও।

٥٠ وَالِّي عَادٍ أَخَامُرْ مُوْدًا ، قَالَ يُقَوْرًا اعْبُدُوا اللَّهُ مَا لَكُرْ مِّنْ اللهِ غَيْرُهُ ، إِنْ أَنْتُرْ الْا مُفْتَرُونَ

৫১. হে (আমার) জাতি, (আল্লাহর দিকে ডেকে) তার ওপর আমি তোমাদের কাছে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করছি না; আমার (যাবতীয়) পাওনা তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই, যিনি আমাকে পয়দা করেছেন; তোমরা কি বঝতে পারো নাঃ

٥١ يُقُوْمِ ﴾ آَ اَسْنُلُكُرْ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿ إِنْ اَجْرِي إِلَّا عَلَى الَّذِي ْ نَطَرَنِي ﴿ اَنَلَا تَعْقِلُونَ

৫২. হে (আমার) জাতি, তোমরা তোমাদের মালিকের কাছে গুনাহখাতা মাফ চাও, অতপর তোমরা তাঁর দিকেই ফিরে আসো, তিনি তোমাদের ওপর প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণকারী মেঘমালা পাঠাবেন এবং তোমাদের (আরো) শক্তি যুগিয়ে তোমাদের (বর্তমান) শক্তি আরো বাড়িয়ে দেবেন, অতএব তোমরা অপরাধী হয়ে (তাঁর এবাদাত থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না।

۵۲ وَيَٰقَوْا اسْتَغَفِرُوا رَبَّكُمْ ثُرَّ تُوْبُوا وَلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَّاءَ عَلَيْكُمْ بِهْزَارًا وَّيَزِدْكُمْ تُوَّةً إِلَى قُوِّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلُّوا مُجْرِمِيْنَ

৫৩. তারা বললো, হে হূদ, তুমি তো আমাদের কাছে (ধরা-ছোঁয়ার মতো) কোনো স্পষ্ট দলীল-প্রমাণ নিয়ে আসোনি, ওধু তোমার (মুখের) কথায় আমরা (কিছু) আমাদের দেবতাদের ছেড়ে দেয়ার (লোক) নই, আমরা তোমার ওপর (বিশ্বাস করে) মোমেনও হয়ে বাবো না!

٥٣ قَالُوْا يُمُوْدُ مَا جِنْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْ ۚ أَلِمَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا لَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ

৫৪. আমরা তো বরং বলি, (আসলে) আমাদের কোনো দেবতা অভভ কিছু দ্বারা তোমাকে আবিষ্ট করে ফেলেছে;

٥٣ إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرْلِكَ بَعْضُ الْمَتِنَا

১১ সূরা হুদ

३३३

بِسُوَّءَ عَالَ اِنِّيَّ ٱشْهِلُ اللَّهَ وَاشْهَلُوْاۤ اَنِّيٛ بَرِيَّءُ يَّنَّا تُشْرِكُوْنَ لا

৫৫. (যাও,) তোমরা সবাই মিলে আল্লাহ তারালাকে বাদ দিয়ে আমার বিরুদ্ধে যতো রকম ষড়যন্ত্র (করতে চাও) করো, অতপর আমাকে কোনো রকম (প্রস্তৃতির) অবকাশও দিয়ো না। ۵۵ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْلُوْنِى جَمِيْعًا ثُمَّ $ar{\chi}$ تُنْظِرُونِ

৫৬. আমি অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার ওপর ভরসা করি, (যিনি) আমার মালিক, তোমাদেরও মালিক; বিচরণশীল এমন কোনো প্রাণী নেই যার নিয়ন্ত্রণ তাঁর হাতের মুঠোয় নয়; অবশ্যই আমার মালিক সঠিক পথের ওপর রয়েছেন।

۵۲ إِنِّى تُوكَّلْتُ عَلَى اللهِ رَبِّى وَرَبِّكُيرُ ، مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ أَخِنَّ بِنَاصِيَتِهَا وَإِنَّ رَبِّى عَلَى مِرَاطٍ تُسْتَقِيْرٍ عَلَى مِرَاطٍ تُسْتَقِيْرٍ

৫৭. (এ সত্ত্বেও) যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে (জেনে রেখা), আমি যে (পয়গাম) তোমাদের কাছে পৌছে দেয়ার জন্যে প্রেরিত হয়েছিলাম, তা আমি তোমাদের কাছে পৌছে দিয়েছি; (সে অবস্থায় অচিরেই) আমার মালিক অন্য কোনো জাতিকে তোমাদের স্থলাভিষিক্ত করবেন, তোমরা তাঁর কোনোই ক্ষতি সাধন করতে পারবে না; অবশ্যই আমার মালিক প্রত্যেকটি বস্তুরই ওপর একক রক্ষক (ও অভিভাবক)।

۵۷ فَان تَوَلُّوا فَقَن اَبلَغْتُكُمْ أَ اَرْسِلْت بِهَ اَلْمَان عَلَى الْمَان عَلَى الْمَان عَلَى الله عَلْم عَلَى الله عَلَى الهُ عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى ا

৫৮. অতপর যখন আমার (আযাব সম্পর্কিত) স্থকুম এলো, তখন আমি হুদকে এবং তার সাথে যতো ঈমানদার ছিলো, তাদের আমার রহমত ধারা (আযাব থেকে) বাঁচিয়ে দিয়েছি, (এভাবেই) আমি তাদের এক কঠিন আযাব থেকে রক্ষা করেছি।

٥٨ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَيْنَا مُودًا وَّ الَّذِيثَ أَمْرُنَا مَودًا وَ الَّذِيثَ أَمْنُوا مَعَدً بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ج وَنَجَيْنُهُمْ مِّن عَنَ ابِ غَلَيْظٍ
 عَنَ ابِ غَلَيْظٍ

৫৯. এ হচ্ছে আদ জাতি (ও তাদের কাহিনী), তারা তাদের মালিকের আয়াতসমূহ অস্বীকার করেছিলো, তারা তার রসূলদের নাফরমানী করেছিলো, (সর্বোপরি) তারা প্রত্যেক উদ্ধৃত স্বৈরাচারীর নির্দেশই মেনে নিয়েছিলো। ۵۹ وَتِلْكَ عَادًّ لِنَّ جَعَلُوْ اللِّالِيْ وَبِّهِمْ وَلِّهِمْ وَتِهِمْ وَتِهِمْ وَتِهِمْ وَتِهِمْ

৬০. পরিশেষে এ দুনিয়ায় (আল্লাহর) অভিশাপ তাদের পিছু নিলো, কেয়ামতের দিনও (এ অভিশাপ তাদের পিছু নেবে); ভালো করে তনে রেখো, আদ (জ্ঞাতি) তাদের মালিককে অস্বীকার করেছিলো; এও জ্ঞেনে রেখো, ধ্বংসই ছিলো হুদের জাতি আ'দের (একমাত্র) পরিণতি।

أَتْبِعُوْا فِي مٰنِهِ النَّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْا الثَّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْا الْقِيْمَةِ اللَّ الْقَالَةِ قَوْا مُوْدِع
 لِّعَادِ قَوْا مُوْدِع

৬১. সামুদ (জাতির) কাছে (নবী) ছিলো তাদেরই (এক) ভাই সালেই। সে (তাদের) বললো, হে (আমার) জাতি, তোমরা সবাই (একাজাবে) আল্লাহর এবাদাত করো, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোনো মাবুদ নেই, তিনি তোমাদের (এ) যমীন থেকেই পরদা করেছেন এবং তাতেই তিনি তোমাদের বসবাস করিয়েছেন, অতপর (কৃতজ্ঞতাস্বরূপ) তোমরা তাঁর কাছে গুনাহের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করো, অতপর (তাওবা করে) তাঁর দিকেই ফিরে এসো, অবশ্যই আমার মালিক (প্রত্যেকের) একান্ত নিকটবর্তী এবং (প্রত্যেক ব্যক্তির) ডাকের তিনি জবাব দেন।

ا وَإِلَى تَمُوْدَ آَعَاهُرْ مُلِعًا رَ قَالَ يُقَوْرًا اعْبُورُ اللهُ عَيْرُةً ، هُوَ اعْبُورُو اللهُ مَا لَكُرْ مِّنْ إِلهِ غَيْرُةً ، هُوَ اعْبُورُ مِنْ اللهُ مَا لَكُرْ مِنْ وَاسْتَعْبُرَكُرْ فِيهَا انْشَاكُرْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْبُرَكُرْ فِيهَا فَاسْتَغْبُرُونَ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْبُرَكُرْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُونَا ثُرِيْ مَرِيْدُ إِلَيْهِ ، إِنَّ رَبِّى قَرِيْبً فَاسْتَغْفِرُونَا ثُمُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُولِ اللهُ ا

৬২. তারা বললো, হে সালেহ, এর আগে তুমি এমন (একজন মানুষ) ছিলে, (যার) ব্যাপারে আমাদের মধ্যে

١٣ قَالُوا يُصلِحُ قَلْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوا قَبْلَ

১১ সূরা হুদ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১২ ওয়ামা মিন দাববাহ |
|--|---|
| (বড়ো) আশা করা হতো, (আর এখন) কি তুমি আমাদের সে সব মাবুদের এবাদাত থেকে বিরত রাখতে চাও যাদের এবাদাত আমাদের পিতা-মাতারা (যুগ যুগ থেকে) করে আসছে, (আসলে) তুমি যে (দ্বীনের) দিকে আমাদের ডাকছো, সে ব্যাপারে আমরা সন্দেহে নিমজ্জিত আছি, (এ ব্যাপারে) আমরা খুব দ্বিধাগ্রস্তও বটে! | هٰنَ آ اَتَنْهٰنَا آنَ نَعْبُنَ مَا يَعْبُنُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَغِيْرُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَغِيْرُ مُرِيْبٍ |
| ৬৩. সে বললো, হে আমার জাতি, তোমরা কি এ বিষয়টি নিয়ে একটুও চিন্তা করে দেখোনি যে, যদি আমি আমার মালিকের পক্ষ থেকে একটি সুস্পষ্ট দলীলের ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকি এবং তিনি যদি আমাকে তাঁর অনুগ্রহ দিয়ে (ধন্য করে) থাকেন, (তা সত্ত্বেও) যদি আমি কোনো শুনাহ করি তাহলে কে এমন আছে, যে আল্লাহর মোকাবেলায় আমাকে সাহায্য করবে? (আসলে অন্যায় আবদার করে) তোমরা আমার ক্ষতি ছাড়া আর কিছুই তো বাড়াচ্ছো না? | ٣٣ قَالَ يُقُوْرًا اَرَءَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّى وَ اٰتَٰنِى مِنْهُ رَحْهَةً فَهَنْ يَّنْصُونِي ُ مِنَ اللهِ إِنْ عَصَيْتُهُ مَن فَهَا تَزِيْلُ وُنَنِي غَيْرَ تَخْسِيْرٍ |
| ৬৪. হে আমার সম্প্রদায়, এ হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার (পাঠানো) উটনী, (তোমরা যে নিদর্শন চাচ্ছিলে) এটা হচ্ছে তোমাদের জন্যে (সে) নিদর্শন। অতপর (আল্লাহর) এ (নিদর্শন)-কে ছেড়ে দাও, সে আল্লাহর যমীনে চরে খাক, তাকে কোনো রকম কষ্ট দেয়ার নিয়তে ছুঁয়ো না, (তেমনটি করলে) অতিসন্তর (বড়ো ধরনের) আযাব তোমাদের পাকড়াও করবে। | ٣٣ وَيُقَوْ إِ هَٰنِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْءٍ اللّهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْءٍ فَيَاكُنُ كُرْ عَنَ اللّهِ قَرِيْبٌ فَيَاعُنُ كُرْ عَنَ اللّهِ قَرِيْبٌ |
| ৬৫. অতপর তারা সেটিকে বধ করে ফেললো, সে তারপর (তাদের) বললো (চলে যাও), তোমরা তোমাদের নিজ নিজ ঘরে তিন দিন জীবন উপভোগ করে নাও; (আযাবের ব্যাপারে আল্লাহর) এ ওয়াদা কখনো মিথ্যা হবার নয়। | ٦٥ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَهَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُيرْ ثَلَٰثَةَ اللَّهُ وَكُورُ ثَلَٰثَةَ اللَّهُ وَعُلَّ غَيْرُ مَكْنُوْبٍ |
| ৬৬. এর পর (ওয়াদামতো যখন আমার আযাবের) নির্দেশ এলো (এবং তা তাদের ভীষণভাবে পাকড়াও করলো), তখন আমি সালেহকে এবং তার সাথে আরো যারা ঈমান এনেছিলো তাদের সবাইকে আমার রহমত দিয়ে সে দিনের অপমান (-কর আযাব) থেকে বাঁচিয়ে দিলাম; অবশ্যই (হে নবী,) তোমার মালিক শক্তিমান ও পরাক্রমশালী। | ٢٦ فَلَمًّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا طُلِحًا وَالَّذِينَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا طُلِحًا وَالَّذِينَ أَمْنُوا مَعَمَّ بِرَحْمَةٍ مِثَّا وَمِنْ خِزْي يَوْمِئِنٍ الْمَرْدُرُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْرُ |
| ৬৭. অতপর যারা (আল্লাহর দ্বীনের সাথে) যুলুম করেছে, এক মহানাদ (তাদের ওপর মরণ) আঘাত করলো, ফলে তারা তাদের ঘরসমূহে মুখ থুবড়ে পড়ে রইলো, | ٢ وَ أَخَلَ النَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِر جُثِهِينَ فِي دِيَارِهِر جُثِهِينَ |
| ৬৮. (খবশ্ব দেবে মনে হলো) যেন তারা কোনোদিন সেখানে বসবাসই করেনি। শুনে রাখো, সামুদ জাতি তাদের মালিককে অস্বীকার করেছিলো; আরো জেনে রেখো, (নির্ম) এক ধ্বংসই ছিলো সামুদ জাতির জন্যে (নিদৃষ্ট পরিণাম)! | ٢٨ كَأَنْ لَّـرْ يَغْنَوْا فِيهَا م أَلَا إِنَّ ثَسُودَا كَفَرُوْا رَبَّهُرْم أَلَا بُعْنًا لِثَمُودَع كَفَرُوْا رَبَّهُرْم أَلَا بُعْنًا لِثِمُودَع |
| ৬৯. (একদিন) আমার পাঠানো ফেরেশতারা (বিশেষ একটি) সুসংবাদ নিয়ে ইবরাহীমের কাছে এলো, তারা (তার কাছে এসে) বললো, (তোমার ওপর) শান্তি (বর্ষিত হোক); সেও (জবাবে) বললো, (তোমাদের ওপরও) | 79 وَلَقَلْ جَآءَتُ رُسُلُنَا إِبْرُهِيْرَ بِالْبُشْرِى قَالُوا سَلْمًا مَ قَالَ سَلْرٌ فَهَا لَبِينَ أَنْ جَآءَ |

হোক); সেও (জবাবে) বললো, (তোমাদের ওপরও) শান্তি (বর্ষিত হোক), অতপর সে (ডাড়াহড়ো করে এদের মেহমানদারীর জন্যে) একটি ভুনা গো-বৎস নিয়ে এলো।

দিকে হাত বাড়াচ্ছে না, তখন তাদের (এ বিষয়টি) তার (কাছে) খারাপ লাগলো এবং তাদের সম্পর্কে তার মনে

৭০. (কিন্তু) সে যখন দেখলো, তারা তার (খাবারের) مُورُ يُورُهُر প্রতি তার يُورِيُهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمُ اللهِ عَالِيَهُمُ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمُ اللهِ اللهِ عَالَى اللهُ عَالَى اللهِ عَالَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَالَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللّهُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ عَلَى اللّهُ عَلِي عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى

একটা (প্রচ্ছন্ন) ভয়ের সৃষ্টি হলো: তারা (ইবরাহীমকে) বললো, (আমাদের ব্যাপারে) তুমি কোনো রকম ভয় করো না, আমরা প্রেরিত হয়েছি লতের জাতির প্রতি:

وَٱوْجَسَ مِنْهُرْ خِيْفَةً ﴿ قَالُوْ ا لَا تَخَفُ إِنَّا أرْسِلْنَا إلى قَوْرٍ لُوْطِ ،

৭১. তার স্ত্রী- (সেখানে) দাঁডিয়ে ছিলো, (এদের কথাবার্তা শুনে) সে হাসলো, অতপর আমি তাকে (তার ছেলে) ইসহাক ও তার পরবর্তী (পৌত্র) ইয়াকুবের (জন্মের) সুসংবাদ দিলাম।

ا ﴾ وَأَمْرُ أَتُهُ قَأَلْهُ فَضَعَكُن فَبَشَّرْلُهَا باشحق لا ومن وراء اسحق يَعْقُوْر

৭২. সে (এটা ভনে) বললো, कि আন্তর্য! আমি সন্তান জন্ম দেবো, আমি তো (এখন) বৃদ্ধা (হয়ে গেছি,) আর এই (যে) আমার স্বামী, (সেও তো) বৃদ্ধ হয়ে গেছে; (এমন কিছু হলে) এটা (আসলেই হবে) একটা আন্তর্যজনক ব্যাপার।

٤٢ قَالَتْ يُويْلَتَى ءَآلِلُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَفَلَا بَعْلَىٰ شَيْخًا ﴿ إِنَّ مِٰنَ اللَّهِ عَجِيْبٍ

৭৩. তারা বললো, তুমি কি আল্লাহর কোনো কাজে বিশ্বয়বোধ করছো, (নবীর) পরিবার-পরিজন (হিসেবে) (शिमार्पत अभन्न जानावन (वित्मम) तदमा ७ जान गी। الله وَبَوَكْتُدُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْسِ ، إِنَّهُ जामार्पत अभन्न जानावन (वित्मम) तदमा ७ जान गी। অনুগ্রহ রয়েছে; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা প্রচুর প্রশংসা ও বিপুল সম্মানের মালিক।

٤٣ قَالُوْا ۚ اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللَّهِ رَهْمَتُ

48. অতপর यथन ইবরাহীমের (মন থেকে) জীতি দ্রীভূত مُنَا الرُّوعُ وَجَاءَتُهُ وَجَاءَتُهُ ﴿ ١٩٥٨ عَنْ الْرُوعُ وَجَاءَتُهُ ﴿ ١٩٥٨ عَنْ الْرُوعُ وَجَاءَتُهُ ﴿ ١٩٥٨ عَنْ الْرُوعُ وَجَاءَتُهُ ﴿ ١٩٥٨ عَنْ الْرَّوْعُ وَالْمُ عَنْ الْرُوعُ وَجَاءَتُهُ ﴿ ١٩٥٨ عَنْ اللَّهُ عَنْ الْرُوعُ وَجَاءَتُهُ ﴿ ١٩٥٨ عَنْ اللَّهُ عَنْ الْرَاقُ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْ হয়ে গেলো এবং (ইতিমধ্যে) তার কাছে (সম্ভানের ব্যাপারেও) সুসংবাদ পৌছে গেলো, তখন সে লুতের সম্প্রদায়ের (কাছে আযাব না পাঠানোর) ব্যাপারে আমার সাথে যুক্তি তর্ক করলো:

الْبُشُرِي يُجَادلُنَا فِي قَوْمَ لُوْط ا

৭৫. (আসলে স্বভাবের দিক থেকে) ইবরাহীম ছিলো (ভীষণ) সহনশীল, কোমল হ্রদয় ও আল্লাহর প্রতি নিবেদিত।

44 إِن إِبْرْفِيْرَ لَحَلِيْرُ أَوَّاهُ مَّنِيْبُ

৭৬. (আমি তাকে বললাম,) হে ইবরাহীম, এ (যুক্তিতর্ক) থেকে তুমি বিরত হও, (এদের ব্যাপারে) তোমার মালিকের সিদ্ধান্ত এসে গেছে, (এখন) এদের ওপর এমন এক ভয়ানক শান্তি আসবে, যেটা (কারো পক্ষেই) রোধ করা সম্ভব হবে না।

47 يَابِرُومِيرُ أَعُرِضْ عَنْ هٰنَا عَ إِنَّا قُلْ جَاءً أَمْ رَبِّكَ ع وَإِلَّهُمْ أَتِيْهِمْ عَلَابٌ غَيْرُ

৭৭. যখন আমার প্রেরিড ফেরেশতারা লুতের কাছে . ৭৭. যখন আমার প্রোরত ফেরেশতারা লৃতের কাছে ، وَلَمَّا جَاءَ فَ وَلَمَّا جَاءَ فَ وَلَمَّا جَاءَ فَ وَلَمَّا جَاءَ فَ وَلَمَّا عَلَيْكُمُ اللَّهِ عَلَيْكُمُ اللَّهِ عَلَيْكُمُ اللَّهِ عَلَيْكُ اللَّهِ عَلَيْكُ اللَّهِ عَلَيْكُ اللَّهِ عَلَيْكُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُوا اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُوا اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُوا اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُوا عَلَيْكُمُ عَلَيْكُ عَلَيْكُوا عَلَي তাদের কারণে তার মনও (কিছুটা) খারাপ হয়ে গেলো এবং সে (নিজে নিজে) বললো, আজকের দিন (দেখছি) সত্যিই বড়ো (কঠিন) বিপদের (দিন)।

وَضَاقَ بِهِرْ ذَرْعًا وْقَالَ هٰنَ ا يَوْ ا عَصِيْبٍ

৭৮. (এই অপরিচিত লোকদের দেখে) তার জাতির লোকেরা তার কাছে দৌড়ে আসতে লাগলো: আর তারা তো আগে থেকেই কুকর্মে লিপ্ত ছিলো; (তাদের কুমতলব বুঝতে পেরে) সে বললো, হে আমার সম্প্রদায়, এরা হচ্ছে بَنَاتِي مُنَّ أَطْهَرُ لَكُرْ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَلَا (विद्ध ७ দৈহিक नम्भाव्हं काना) اللهُ وَلَا اللهُ এরাই হচ্ছে তোমাদের জন্যে বেশী পবিত্র, সূতরাং (তোমরা) আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার (এ) মেহমানদের মধ্যে আমাকে তোমরা অপমানিত করো না: তোমাদের মধ্যে (এ কথাগুলো শোনার মতো) একজন ভালো মানুষও কি (অবশিষ্ট) নেই?

٨٨ وَجَاءَةَ قَوْمُهُ يَهْرَعُونَ إِلَيْهِ ، وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْ إِيعْمَلُوْنَ السِّيّانِ ، قَالَ يُقَوْ مَو لاء تُخْزُون فِي ضَيْفي م أَلَيْسَ مِنْكُورُ رَجُلُ

23

৭৯. তারা বললো, তুমি ভালো করেই (একথাটা) জানো, তোমার (জাতির) মেয়েদের আমাদের কোনোই প্রয়োজন নেই, তুমি জানো, আমরা সত্যিকার অর্থে কি চাই!

44 قَالُوْ اللَّقُلْ عَلِيْتَ مَا لَنَا فِي بَنْتِكَ مِنْ مَقّ ع وَإِنَّكَ لَتَعْلَرُ مَا نُويْلُ

৮০. সে (এদের অশালীন কথাবার্তা তনে) বললো, (কতো ভালো হতো) যদি আজ তোমাদের ওপর আমার কোনো ক্ষমতা চলতো, কিংবা যদি (তোমাদের মোকাবেলায়) আমি কোনো একটি শক্তিশালী স্তম্ভের আশয় গ্রহণ করতে পারতাম!

٨٠ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُرْ قُوَّةً أَوْ أُويَ إِلَى رُكْن شَرِيْنِ

৮১. (অবস্থা দেখে) তারা বললো, হে লুত (ডুমি ভেবো না), আমরা তো হচ্ছি তোমার মালিকের (পাঠানো) ফেরেশতা, (আমাদের কথা দুরে থাক) এরা তো তোমার কাছেও পৌছতে পারবে না, তুমি (বরং এক কাজ করো,) রাতের কোনো এক প্রহরে তোমার পরিবার-পরিজনসহ (ঘর থেকে) বেরিয়ে পড়ো, তবে তোমাদের কোনো ব্যক্তিই যেন (যাবার সময়) পেছনে ফিরে না তাকায়, কিন্তু তোমার স্ত্রী ব্যতীত: (কেননা) যা কিছু (আযাবের তাভব) তাদের (ওপর) ঘটবে, তা তার (ওপর)-ও ঘটবে: তাদের (ওপর আযাব আসার) ক্ষণ নির্ধারিত হয়েছে সকাল বেলা; সকাল হতে আর কতোই বা দেরী!

٨١ قَالُوْا يُلُوْهُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَىْ يُصلُوْآ إِلَيْكَ فَأَسْرُ بِأَمْلِكَ بِقِطْع مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفَسُ مِنْكُمْ أَمَلُ إلَّا أَمْ أَتَكَ ، إلَّا مُعِيْبِهَا مَا آمَا بَهُرْ ، إِنَّ مَوْعِنَ هُرُّ الصَّبْعُ ، أليس الصُّبْعُ بِقُرِيْبٍ

৮২, অতপর যখন (সত্যিই) আমার (আযাবের নির্ধারিত) ছকুম এলো, তখন আমি সেই জনপদন্তলো উল্টিয়ে দিলাম এবং তার ওপর ক্রমাণত পাকা মাটির পাথর নিক্ষেপ করতে শুরু কর্লাম

٨٢ فَلَهًّا جَاءً أَمْوُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلُهَا وَ ٱمْطَرْنَا عَلَيْهَا مِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلِ لَا مُّنْضُودِ لا

৮৩. যা (অপরাধী ব্যক্তিদের নাম-ধামসহ) তোমার মালিকের কাছে চিহ্নিত ছিলো, আর (গযবের) এ স্থান তো এ যালেমদের কাছ থেকে দূরেও নয়!

٨٢ مُّسُوَّمَةً عِنْلُ رَبِّكَ ، وَمَا هِيَ مِنَ الظُّلِينَ بِبَعِيْدٍ ع

৮৪. মাদইয়ান (বাসী)-এর কাছে (ছিলো) তাদেরই (এক) ডাই শোয়ায়ব: সে (তাদের) বলেছিলো, হে আমার জাতি, তোমরা আল্লাহর এবাদাত করো, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোনো মারুদ নেই: (আর সে মাবুদেরই নির্দেশ হচ্ছে) তোমরা মাপ ও ওয়ন কখনো কম করো না, আমি তো তোমাদের (অর্থনৈতিকভাবে খব) ভালো অবস্থায়ই দেখতে পান্ধি, (এ সত্ত্বেও এমনটি করলে) আমি কিন্তু তোমাদের জন্যে এক সর্বগ্রাসী দিনের আযাবের আশংকা করছি।

٨٣ وَ إِلَى مَنْ يَنَ أَخَافُر شُعَيْبًا وَ قَالَ يُقَوْمِ اعْبُلُوا اللَّهُ مَا لَكُرْ بِّنْ إِلَّهِ غَيْرَةً ، وَكَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ إِنِّي ٱرْمُكُرْ بِغَيْرِ وَّانِّيْ ۚ أَغَانُ عَلَيْكُرْ عَلَابً يَوْ]

৮৫. হে আমার জাতি, তোমরা মাপ ও ওয়নের কাজ ইনসাফের সাথে আঞ্জাম দেবে, লোকদের তাদের بالقسط وكر تَبْخُسُوا النَّاسَ أَشْيَاءُمُورُ وَكُمْ किनिमला (कम निरा छात्नत) कि करता ना, आत كُو أَنْفُكُ وَال यभीत विশृश्यना मृष्टि करता ना।

٨٥ وَيُقَوْ إِ أَوْنُوا الْبِكْيَالَ وَالْبِيْزَانَ تَعْتَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِينِينَ

৮৬. যদি তোমরা সঠিক অর্থে আল্লাহর ওপর ঈমান এনে থাকো, তাহলে (জেনে রেখো.) আল্লাহ তায়ালা প্রদত্ত যে সম্পদ তোমাদের কাছে অবশিষ্ট থাকবে, তাই তোমাদের জন্যে উত্তম (আমার কাজ তথ্ তোমাদের বলা)- আমি তো তোমাদের ওপর পাহারাদার নই।

٨٦ بَقِيْتُ اللهِ غَيْرٌ لَّكُرْ إِنْ كُنْتُرْ مُؤْمِنِينَ } وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِعَفَيْظ

৮৭. তারা বললো, হে শোয়ায়ব, তোমার নামায কি তোমাকে এই আদেশ দেয় যে, আমরা আমাদের

٨٤ قَالُوْ إِنْ مُعَيْبُ أَمَلُوتُكَ تَأْمُوكَ أَنْ

১১ সুরা হুদ

236

দেবতাদের এবাদাত ছেড়ে দেবো (বিশেষ করে এমন সব দেবতাদের)- যাদের এবাদাত আমাদের পিতৃপুরুষরা করতো, (তোমার নামায কি তোমাকে এ আদেশ দেয় যে.) আমরা আমাদের ধন-সম্পদ নিয়ে যা করতে চাই তা (আর) করতে পারবো নাঃ (আমরা জানি) নিক্য়ই তুমি একজন ধৈর্যশীল নেককার মানুষ!

نَّتُوكَ مَا يَعْبُكُ أَبَآؤُنَا أَوْ أَنْ نَّفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشُوًّا ﴿ إِنَّكَ كَانُتَ الْحَلِيْمُ الرهيث

৮৮. সে বললো, হে আমার জাতি, তোমরা কি কখনো (একথা) ভেবে দেখেছো, যদি আমি আমার মালিকের পাঠানো একটি সুস্পষ্ট দলীলের ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকি. অতপর তিনি যদি আমাকে তাঁর কাছ থেকে উত্তম রেযেকের ব্যবস্থা করেন: (তাহলে কি আমি তোমাদের তাঁর পথে ডাকবো না?) আমি (কখনো) এটা এরাদা করি না, যে (কথা) থেকে আমি তোমাদের বারণ করি, নিজে (তার বিরুদ্ধে চলে) তোমাদের বিরোধিতা করবো: (আসলে) আমি তো এর বাইরে আর কিছুই চাই না যে, যদ্র আমার পক্ষে সম্ভব আমি তোমাদের সংশোধন করে যাবো; আমার পক্ষে যতোটুকু কাজ আঞ্জাম দেয়া সম্ভব তা তো একান্ডভাবে আল্লাহ তায়ালার (সাহায্য) দ্বারাই (সম্বব): আমি তো সম্পূর্ণত তাঁর ওপরই নির্ভর করি এবং (সব ব্যাপারে) আমি তারই দিকে ধাবিত হই।

٨٨ قَالَ يُقَوْمِ أَرْءَيْتُر إِنْ كُنْتُ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّى وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ، وَمَا أُرِيْلُ أَنْ أَعَالِفَكُمْ إِلَى مَا آَنَهُكُمْ عَنْدُ ، إِنْ أُرِيْلُ اللَّا الْإِشْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفَيْقَيْ اللَّا بِاللَّهِ ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ الَّيْهِ أُنيْبُ

৮৯. হে আমার জাতি, আমার বিরুদ্ধে (তোমাদের) জেদ (এবং শক্রতা) যেন তোমাদের জন্যে এমন এক (আযাবজনিত) বিষয়ের কারণ না হয়ে দাঁডায় যে. তোমাদের ওপরও সে ধরনের কিছু আপতিত হবে, যেমনটি নুহ কিংবা হুদ অথবা সালেহের জাতির ওপর আপতিত হয়েছিলো; আর লতের সম্প্রদায়ের (পাথর বর্ষণের সে) স্থানটি তো তোমাদের থেকে খুব বেশী দুরেও নয়।

٩ ٨ وَيْقُومُ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيَّ أَنْ يُصِيْبَكُرْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ مُودٍ أَوْ تَوْمًا صَلِح ، وَمَا قَوْمٌ لُوطٍ مِّنْكُر بِبَعِيْدٍ

৯০. তোমরা তোমাদের মালিকের কাছে (নিজেদের গুনাহের জন্যে) ক্ষমা প্রার্থনা করো, অতপর (তাওবা করে) তাঁর দিকেই ফিরে এসো: অবশ্যই আমার মালিক পরম দয়াব্র ও স্লেহময়।

٩٠ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْا إِلَيْهِ ، إِنَّ ربى رجيمر ودود

৯১, তারা বললো, হে শোয়ায়ব, তুমি যা (ভালো ভালো কথাবার্তা) বলো তার অধিকাংশ কথাই আমাদের (ঠিকমতো) বুঝে আসে না (আসল কথা হচ্ছে), আমরা তোমাকে দেখতে পান্ধি, তুমি আমাদের মাঝে খুবই দুর্বল, (আমাদের মাঝে) তোমার (আপন) গোত্রের লোকজন না থাকলে আমরা (অবশ্যই) তোমাকে পাথর নিক্ষেপ (করে হত্যা) করতাম, (তা ছাড়া) তুমি তো আমাদের ওপর খুব শক্তিশালীও নও (যে, অতপর আমাদের কাছ থেকে প্রতিশোধ নিতে পারবে)।

٩١ قَالُوْ ا يُشْعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَإِنَّا لَنَوْ لِكَ فَيْنَا ضَعَيْفًا ۽ وَلُوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَهُنْكَ روما أَنْسَ عَلَيْنَا بِعَزِيْز

নেব. পে বলগো, হে আমার জাতি, তোমাদের কাছে ماللهِ अমার গোত্তীয় ভাই-বন্ধু কি আল্লাহ তায়ালার চাইতে قَالَ يُقُوْ إَ أَرْمُطِيْ أَعَرُّ عَلَيْكُرْ بِّنَ اللّٰهِ अमाর গোত্তীয় ভাই-বন্ধু কি আল্লাহ তায়ালার চাইতে বেশী প্রভাবশালী (যে, তোমরা ওদের দোহাই দিক্ষো)? আল্লাহ তায়ালাকে কি তোমরা তোমাদের পেছনে ফেলে রাখলে? (জেনে রেখো,) তোমরা (এখন) যা কিছু করছো, আমার মালিকের জ্ঞানের পরিধ দ্বারা তা পরিবেষ্টিত হয়ে আছে।

وَ اتَّخَذَتُهُوهُ وَرَاءَكُمْ طَهُرِيًّا ﴿ إِنَّ رَبِّي بِمَ تَعْمَلُونَ مُعِيْطً

৯৩. হে আমার সম্প্রদায়, তোমরা তোমাদের জায়গায় যা কিছু করতে চাও করে যাও; আমিও (আমার জায়গায় যা سَوْنَ تَعْلَمُونَ لا مَنْ يَأْتَيْدِ عَنَ أَبِ يَخْرِيْدِ कर्तात) करत याता: षिठिरत्रेहे राज्यता (এकथा) ज्ञानरा

٩٣ وَيُقُومُ اعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتكُر اتَّى عَامل مَ

পারবে, কার ওপর এমন আযাব আসবে যা তাকে অপমানিত করে ছাডবে, আর কে মিথ্যাবাদী (তাও তখন জানা যাবে): অতএব তোমরা (সেদিনের) প্রতীক্ষা করো. আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষা করবো।

وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ، وَارْتَقِبُوْا إِنِّيْ مَعَكُم ৯৪. পরিশেষে যখন আমার (আযাবের) সিদ্ধান্ত এলো. ٩٣ وَلَمَّا جَاءَ ٱمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِينَ

তখন আমি শোয়ায়বকে এবং তার সাথে যে কয়জন (মানুষ) ঈমান এনেছিলো তাদের সবাইকে আমার নিজস্ব রহমত দ্বারা (প্রলয়ংকরী আযাব থেকে) বাঁচিয়ে দিলাম, অতপর যারা (আল্লাহর সাথে) যুলুম করেছে, সেদিন তাদের ওপর মহানাদ আঘাত হানলো, ফলে মহর্তের মাঝেই তারা নিজেদের ঘরসমূহেই (এদিকে সেদিকে) উপুড় হয়ে পড়ে রইলো,

أَمْنُوا مَعَدُ بِرَحْمَةِ مِّنَّا وَٱعَٰنَتِ الَّذِينَ ظَلَهُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ

কোনো প্রাচুর্থই অর্জন করেনি, তনে রাখো, এ ধ্বংসই وَمُرْيَنَ الْمُرْيَنِ الْمُرْيَنِ وَمُوا لِمُرْيَنِ ছিলো মাদইয়ান (বাসী)-এর চূড়ান্ত পরিণাম, (ঠিক) যেমন (ধ্বংসকর) পরিণাম হয়েছিলো (তার পূর্ববর্তী সম্প্রদায়) সামুদের!

كُهَا بُعلَ فَ ثُهُودُ ع

৯৬. আমি মূসাকে তার জাতির কাছে আমার निमर्गनअश्र وَلَقَنُ أَرْسَلْنَا مُوْسَى بِأَيْتِنَا وَسُلْطَى ٩٦ ও (নবুওতের) সুস্পষ্ট দলীলসহ পাঠিয়েছিলাম,

৯৭. (তাকে আমি পাঠিয়েছিলাম) ফেরাউন ও তার رُمُ اللَّهِ فَاتَّبَعُوْاً أَمْر পারিষদবর্গের কাছে, (किছু) তারা (সর্বদা) ফেরাউনের أَمْر اللَّهُ فَاتَّبَعُوْاً أَمْر اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللّ কথাই মেনে চলতো, (অর্থচ) ফেরাউনের কোনো কাজ (ও কথাই তো) সঠিক ছিলো না।

فِرْعَوْنَ عَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَهْيْنِ

৯৮. কেয়ামতের দিন সে তার (দন্তপ্রাপ্ত) জাতির আগে আগে থাকবে, অতপর সে তাদের (জাহান্নামের) আগুন পর্যন্ত নেতৃত্ব দিয়ে নিয়ে যাবে; কতো নিকৃষ্ট সে জায়গা, যেখানে তাদের নেতৃত্ব দিয়ে নিয়ে যাবে!

٩٨ يَقُنُّ مُ قَوْمَةً يَوْمَ الْقَيْهَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَ وَبِنْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ

৯৯, এ দুনিয়াতে আল্লাহর অভিশাপ তাদের পেছনে ধাবিত করা হলো, আবার কেয়ামতের দিনও (তারা কঠিন আযাবে নিমজ্জিত হবে); কতো নিক্ট (এ) পুরস্কার, যা (তাদের) সেদিন দেয়া হবে।

٩٩ وَٱتْبِعُوْا فِي مِنْ قِلْهِ لَعْنَةً وِّيَوْمَ الْقَيْهَ ، بِنْسَ الرِّفْلُ الْمَرْفُودُ

১০০. (হে নবী,) এ হচ্ছে (ধ্বংসপ্রাপ্ত) কতিপয় জনপদের কাহিনী, যা আমি তোমার কাছে বর্ণনা করছি, এদের (ধ্বংসাবশেষের) কিছু তো (এখানে সেখানে এখনো) বিদামান আছে, আবার (তার অনেক কিছু কালের গর্ভে) বিলীনও (হয়ে গেছে)।

١٠٠ ذٰلِكَ مِنْ ٱثْبَآءِ الْقُرِٰى نَقُصُّا عَلَيْكَ مِنْهَا قالم وحصيل

১০১. (এ আযাব পাঠিয়ে) আমি (কিন্তু) তাদের ওপর যুলুম করিনি, যুলুম তো বরং তারা নিজেরাই নিজেদের ওপর করেছে, যখন (সত্যি সত্যিই) তোমার মালিকের আযাব তাদের ওপর নাযিল হয়েছে, তখন তাদের সে সব দেবতা তাদের কোনো কাজেই আসেনি, যাদের তারা আল্লাহর বদলে ডাকতো, বরং তারা তাদের ধ্বংস ছাড়া অন্য কিছুই বৃদ্ধি করতে পারেনি।

١٠١ وما ظَلَهْنُهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوْا آنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتُ عَنْهُمْ أَلِهَتُهُمُ الَّتِي يَنْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ هَيْءٍ لَّمَّا جَأَءَ أَمْرٌ رَبِّكَ ، وَمَا زَادُومُ عَيْرَ تَتْبِيبِ

১০২. (হে নবী.) তোমার মালিক যখন কোনো জনপদকে তাদের অধিবাসীদের যুলুমের কারণে পাকড়াও করেন,

١٠٢ وَكَنْ لِكَ أَغْنُ رَبِّكَ اذَا أَغَلَ الْقُوى

226

| ſ | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ |
|---|--|---|
| | তখন তাঁর পাকড়াও এমনিই হয়; আল্লাহ তায়ালার পাকড়াও অত্যন্ত কঠোর (অত্যন্ত ভয়ংকর)। | وَهِي ظَالِهَ ﴿ إِنَّ آخَلُهُ ٓ ٱلِيْرِ شَرِيْلٌ |
| | ১০৩. এ (কাহিনীগুলো)-র মাঝে তার জ্বন্যে (সত্য জানার প্রচুর) নিদর্শন (মজুদ) রয়েছে, যে ব্যক্তি | ١٠٣ إِنَّ فِي ذُلِكَ كَأْيَةً لِّينَ خَانَ عَنَابَ |
| ١ | পরকালের আযাবকে ভয় করে, সেদিন হবে সমস্ত মানুষদের একত্রিত করার দিন, (উপরন্তু) সেটা সবাইকে | الْأَخْرَةِ وَ ذَٰلِكَ يَوْمُ مُجْهُوْعٌ لا لَّهُ النَّاسُ |
| | উপস্থিত করার দিনও বটে। | وَذَٰلِكَ يَوْمُ مُّهُودً |
| | ১০৪. আমি সে (দিন)-টি একটি সুনির্দিষ্ট সময়ের জন্যে মুলতবি করে রেখে দিয়েছি; | ١٠٣ وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلِ مَّعْدُودٍ ١ |
| | ১০৫. সেদিন যখন (আসবে তখন) কেউ আল্পাহর অনুমতি ব্যতিরেকে কোনো কথা বলবে না, অতপর (মানুষরা দু'দলে বিভক্ত হয়ে যাবে,) তাদের মধ্যে কিছু থাকবে হতভাগ্য আর কিছু (থাকবে) ভাগ্যবান। | ١٠٥ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّرُ نَفْسٌ إِلَّا بِاِذْنِهِ عَ نَيِنْهُرْ شَقِيٌّ وْسَعِيْلُ |
| ł | ১০৬. অতপর যারা হবে হতভাগ্য পাপী, তারা থাকবে | ١٠٦ فَاَمًّا الَّذِيثَيَ شَقُواْ فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا |
| | (জাহান্নামের) আগুনে, সেখানে তাদের জন্যে থাকবে (আযাবের ভয়াবহ) চীৎকার ও (যাধার ভয়াল) আর্তনাদ, | زَفِيرٌ وَشَفِيقٌ لا |
| | ১০৭. তারা সেখানে থাকবে চিরকাল- যতোক্ষণ পর্যন্ত আসমানসমূহ ও যমীন বিদ্যমান থাকবে, তবে হাা, তাদের কথা আলাদা যাদের ব্যাপারে তোমার মালিক ভিন্ন | السَّهُوْتُ السَّهُوْتُ وَالْاَرْضُ إِلَّا مَا شَآءَ رَبَّكَ ، إِنَّ رَبَّكَ فَعَالًا |
| | কিছু চান; তোমার মালিক যখন যা চান তার বাস্তবায়নে তিনি একক ক্ষমতাবান। | لِّهَا يُرِيْنُ |
| | ১০৮. (অপরদিকে সেদিন) যাদের ভাগ্যবান বানানো হবে তারা থাকবে জানাতে, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে, যতোদিন পর্যন্ত আসমানসমূহ ও যমীন বিদ্যমান থাকবে, তবে তার কথা আলাদা যা তোমার মালিক ইচ্ছা করেন; | ١٠٨ وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِنُوْا فَفِي الْجَنَّةِ عُلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمُوٰتُ وَالْأَرْضُ |
| l | আর এ (জান্নাত) হবে এক নিরবচ্ছিনু পুরস্কার, যা কোনোদিনই শেষ হবে না। | إلاً مَا شَاءَ رَبُّكَ ، عَطَاءً غَيْرَ مَجْنُ وَدِ |
| ١ | ১০৯. সুতরাং (হে নবী), যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ছাড়া এসব কিছুর গোলামী করে, তাদের (শান্তির) ব্যাপারে | ١٠٩ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِنا يَعْبُلُ مَؤُكاءً ما |
| | তুমি কখনো সন্দিগ্ধ হয়ো না; (আসলে) ওদের পিতৃপুরুষরা আগে যাদের বন্দেগী করতো, এরাও তাদেরই বন্দেগী করে; আমি এদের (এ ছঘন্য অণরাধের) পাওনা পুরোপুরিই | يَعْبُنُونَ إِلَّا كَهَا يَعْبُنُ أَبِلَوُّهُمْ مِّنْ قَبْلُ الْ |
| | আদায় করে দেবো, বিন্দুমাত্রও কম করা হবে না। | وَإِنَّا لَهُوَفُّوهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرُ مَنْقُومٍ ع |
| | ১১০. (হে নবী,) আমি মৃসাকেও কেতাব দিয়েছিলাম, অতপর (বনী ইসরাঈলের তর্ফ থেকে) তাতেও নানা রকম | |
| I | মতবিরোধ সৃষ্টি করা হয়েছিলো; (আসনে) তোমার মালিকের পক্ষ থেকে এ (বিদ্রোহী)-দের ব্যাপারে যদি আগে থেকেই | فِيْهِ ﴿ وَلُولًا كُلِهَ ۗ سَبَقَتَ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ |
| | এ কথার ঘোষণা না করে রাখা হতো (যে, এদের বিচার পরকালেই হবে), তাহলে কবেই এদের ব্যাপারে (দুনিয়ায় গযবের) সিদ্ধান্ত এসে যেতো; (অবশ্যই) এরা এ (গ্রন্থের) ব্যাপারে বিভ্রান্তিকর সন্দেহে নিমজ্জিত আছে। | بَيْنَهُرْ ﴿ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكِّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ |
| | ১১১. আর তখন তোমার মালিক এদের (স্বাইকে) নিজেদের কর্মফলের পুরোপুরি বিনিময় আদায় করে | ااا وَإِنَّ كُلًّا لَّهَا لَيُوفِينَاتُمُرْ رَبُّكَ أَعْهَالُهُرْ ﴿ |
| | দেবেন; কেননা, এরা যা কিছু করছে তিনি তার সব কিছুই জানেন। | إِنَّهُ بِهَا يَعْمُلُونَ خَبِيْرٌ |
| | ১১২. অতএব (হে নবী), তোমাকে যেমনি করে (সত্যের ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকার) আদেশ দেয়া হয়েছে তুমি | اللهُ الله |
| | ১১ স্রা হুদ ২২৯ | মন্যিল ৩ |

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ তাতেই দঢ় থাকো, তোমার সাথে আরো যারা (কুফরী تَطْغُواْ ﴿ اللَّهُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ بَصِيًّا থেকে) ফিরে এসেছে তারাও (যেন ঈমানের ওপর দঢ় থাকে) তোমরা কখনো সীমালংঘন করো না: এরা যা কিছু করছে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তার সব কিছু দেখছেন। ১১৩. (হে মুসলমানরা.) তোমরা কখনো তাদের দিকে ١١٣ وَلا تَرْكَنُوْ آ إِلَى الَّذِينَ ظَلَهُوْ ا فَتَهَسَّكُرُ बैंक श्रेष्ठा ना याता (न्यारात्र) त्रीमानः घन करत्रह. (তেমনটি করলে অবশ্যই) অতপর জাহানামের আগুন النَّارُ لا وَمَا لَكُر مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَّاءَ তোমাদের স্পর্শ করবে (আর তেমন অবস্থায়) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া তোমাদের কোনো অভিভাবক থাকবে না, এবং (সে ثُرِّ لَا تُنْصُونَ সময়) তোমাদের কোনো রকম সাহায্যও করা হবে না। ١١٣ وَ اَقِيرِ الصَّّلُوةَ طَرَفَى النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ ১১৪. (হে নবী.) নামায প্রতিষ্ঠা করো দিনের দুপ্রান্তভাগে ও রাতের একভাগে: অবশ্যই (মানুষের) ভালো কাজসমূহ (তাদের) মন্দ কাজসমূহ মিটিয়ে দের; এটা হচেছ (এক ه السَّيَّاتِ يُنْهِبُنَ السَّيَّاتِ عَلَيْكُ الْكَا ধরনের) উপদেশ তাদের জন্যে, যারা (আল্লাহর) স্মরণ ذٰلِكَ ذِكْرِٰى لِللَّكِرِيْنَ ع করে । ১১৫. তুমি ধৈর্য ধারণ করো, অতপর নিক্যাই আল্লাহ ١١٥ وَاشْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْهُ حَسنينَ তায়ালা নেককারদের পাওনা কখনো বিনষ্ট করেন না। ١١٦ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ ১১৬, তারপর এমনটি কেন হয়নি যে, ষেসব উন্মতের লোকেরা তোমাদের আগে অতিবাহিত হয়ে গেছে. (তाদের মধ্যে) অবশিষ্ট (याता) तरा (शरह, जाता وَأُولُواْ بَقِيَّةٍ يَّنْهُوْنَ عَنِي الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ الْكَرَاثِ (মানুষকে) যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করা থেকে নিষেধ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنَ ٱلْجَيْنَا مِنْهُرَ ء وَاتَّبَعَ করতো, এদের সংখ্যা ছিলো নিতান্ত কম, আমি যাদের الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتُرفُوا فِيه وَكَانُوا আযাব থেকে বাঁচিয়ে রেখেছিলাম, আর যালেমরা তো যে (বৈষয়িক) প্রাচর্য ছিলো তার পেছনেই পড়ে থেকেছে. তারা ছিলো (আসলেই) অপরাধী। ১১৭. এটা কখনো তোমার মালিকের কাজ নয় যে. ١١٤ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرِي بِظُلْمِ কোনো জনপদকে অন্যায়ভাবে ধাংস করে দেবেন (বিশেষ করে) যখন সে জনপদের অধিবাসীরা সংশোধনে و أَمْلُهَا مُصْلِحُونَ নিয়োজিত থাকে ৷ ১১৮. (হে নবী.) তোমার মালিক চাইলে দুনিয়ার সব ١١٨ وَلَوْ شَاءً رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً মানুষকে তিনি একই উন্মত বানিয়ে দিতে পারতেন (কিন্ত আল্লাহ তায়ালা কারো ওপর তার ইচ্ছা চাপিয়ে দিতে وَّاحِنَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلَفَيْنَ لا চাননি), এ কারণে তারা হামেশাই নিজেদের মধ্যে মতবিরোধ করতে থাকবে. ১১৯, তবে তোমার মালিক যার ওপর দয়া করেন তার ١١٩ إلَّا مَنْ رَّمِرَ رَبُّكَ ء وَلَنْ لَكَ خَلَقَهُرْ ء কথা আলাদা: তাদের তো এ জন্যেই আল্লাহ তায়ালা সষ্টি وَتَهَّتُ كُلَهَةُ رَبِّكَ لَإَمْلَئَنَّ جَهَنَّرَ مِنَ করেছেন (যে, তারা সভ্য দ্বীনের ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকবে, আর তা যখন লংঘিত হবে তখন) তাদের ব্যাপারে তোমার মালিকের ওয়াদাই সত্য الْجِنَّة وَالنَّاسِ أَهْبَعَيْنَ হবে. (আর সে ওয়াদা হচ্ছে): অবশ্যই আমি জাহানামকে জ্বিন ও মানুষ দিয়ে পূর্ণ করবো। ১২০. (হে নবী,) আগের নবীদের কাহিনীগুলো আমি ١٢٠ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَآءِ الرُّسُلِ مَا তোমাকে শোনাচ্ছি, তার উদ্দেশ্য হচ্ছে, আমি এর ছারা نُثَبِّتُ بِهِ فُوْ إِدَكَ جِ وَجَاءَكَ فِي هٰنِهِ الْحَقُّ তোমার মনকে দৃঢ়তা দান করবো, এই সত্যের মাঝে যে শিক্ষা তা এখন তোমার কাছে এসে গেছে; (তা ছাড়া) ومَوْعظَةٌ وَّذِكْمِ لِلْمُؤْمِنِينَ ঈমানদারদের জন্যে কিছু শিক্ষণীয় উপদেশ ও সাবধানবাণী (এখানে দেয়া রয়েছে)।

200

১১ সূরা হুদ

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ |
|---|--|---|
| | ১২১. (এতো কিছু সত্ত্বেও) যারা ঈমান আনে না, তাদের বলো, তোমরা তোমাদের জায়গায় যা (কুফরী কাজ) করার করে যাও, আর আমরাও আমাদের কাজ করে | ١٢١ وَقُلْ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُرُ الْعَلَوُا عَلَى مَكَانَتِكُرُ النَّاعِلُونَ لا |
| | যাবো, ১২২. তোমরা (তোমাদের জাহান্নামের) অপেক্ষা করো, আমরাও (আমাদের জান্নাতের) অপেক্ষা করছি। | ١٢٢ وَانْتَظِرُوْا } إِنَّا مُنْتَظِرُونَ |
| } | ১২৩. আসমানসমূহ ও যমীনের যাবতীয় গায়ব বিষয় আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (নিবেদিত) এবং এর সব কয়টি বিষয় তাঁর দিকেই ধাবিত হবে, অতএব (হে নবী), তুমি তাঁরই এবাদাত করো এবং (বিপদে-আপদে) একান্তভাবে তাঁর ওপরই ভরসা করো; (হে মানুষ,) তোমরা যা কিছু করছো সে সম্পর্কে তোমার মালিক কিন্তু মোটেই বে-খবর নন। | ١٣٣ وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّهٰوٰسِ وَالْأَرْضِ وَالْكَهِ يُرْجَعُ الْإَثْرُ كُلَّةً فَاعْبُنْهُ وَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ ﴿ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْبَلُونَ ع |
| | সূ রা ইউসুফ ম ক্লা য় অবতীর্ণ– আয়াত ১১১, রুকু ১২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | سُوْرَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةً أيَاتٍ : ١١١ رُكُوعٌ : ١٢ بِشرِ اللهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْرِ |
| ı | আলিফ লা-ম রা। এগুলো (হচ্ছে একটি) সুস্পষ্ট গ্রন্থের আয়াত। | ١ الرُّ ع تِلْكَ أَيْتُ الْكِتْبِ الْمُبِيْنِ ع |
| | ২. নিসন্দেহে আমি একে আরবী কোরআন (হিসেবে) নাযিল করেছি, যেন তোমরা (তা) অনুধাবন করতে পারো। | ٢ إِنَّا ٓ اَنْزَلْنُهُ قُرْءُنَّا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ |
| | ৩. (হে নবী,) আমি তোমাকে এ কোরআনের মাধ্যমে একটি সুন্দর কাহিনী শোনাতে যাচ্ছি, যা আমি তোমার কাছে ওহী হিসেবে পাঠিয়েছি, অথচ তার আগ পর্যস্ত তুমি (এ কাহিনী সম্পর্কে) ছিলে সম্পূর্ণ বেশ্ববর লোকদেরই একজন। | تُحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ آحْسَنَ الْقَصَصِ بِهَ آ أَوْحَيْنَا إلَيْكَ مٰنَا الْقُرْاٰنَ الْعُولِنَ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَهِيَ الْغُفِلِيْنَ |
| | 8. (এটা হচ্ছে সে সময়ের কথা,) যখন ইউসুফ তার পিতাকে বললো, হে আমার পিতা, আমি (স্বপ্নে) দেখেছি এগারোটি তারা, চাঁদ ও সুরুজ, আমি (এদের) আমার প্রতি সাজদাবনত অবস্থায় দেখেছি। | إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِإبِيْدِ يَابَسِ إِنِّى رَاَيْتُ أَحَلَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ شَجِرِيْنَ |
| | ৫. (এ কথা শুনে তার পিতা বললো,) হে আমার স্নেহের পুত্র, তুমি তোমার (এ) স্বপ্নের কথা (কিন্তু) তোমার ভাইদের কাছে বলে দিয়ো না, তারা তোমার বিরুদ্ধে অতপর ষড়যন্ত্র আঁটতে শুরু করবে; (কেননা) শয়তান অবশ্যই মানুষের খোলাখুলি দুশমন, | ۵ قَالَ يٰبُنَى ۗ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَى الْمُهُولِيَ السَّمْطُنَ الْمُؤْتِكَ فَيَكِيْلُوا لَكَ كَيْنًا ﴿ إِنَّ الشَّمْطُنَ لِلْإِنْسَانِ عَلُولًّ مَّبِيْنً |
| | ৬. এমনি করেই তোমার মালিক তোমাকে (নর্ওতের জন্যে) মনোনীত করবেন এবং তোমাকে স্বপ্লের ব্যাখ্যা (-সহ অন্যান্য জ্ঞান) শিক্ষা দেবেন এবং তাঁর নেয়ামত তোমার ওপর ও ইয়াকুবের সন্তানদের ওপর তেমনিভাবেই পূর্ণ করে | ٢ وكَالْ لِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبَّكَ وَيُعَلِّبُكَ مِنْ تَأْوِيْلُ الْإَحَادِيْنِ وَيُتِرَّ نِعْبَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَى الْ يَعْقُوْبَ كَمَ آ أَتَهَما عَلَى أَبُويْكَ مِنْ قَبْلُ |
| } | দেবেন, যেমনিভাবে এর আগেও তিনি তোমার পূর্বপুরুষ ইবরাহীম ও ইসহাকের ওপর তা পূর্ণ করে দিয়েছিলেন; নিশ্চয়ই তোমার মালিক সর্বজ্ঞ ও প্রবল প্রজ্ঞাময়। | الِ يعقوب كها أتهها على أبويك مِن قبل إِبْرُهِيْمَ وَإِشْعُقَ مَ إِنَّ رَبِّكَ عَلِيْمٌ مَكِيْمٌ |
| | ১২ সূরা ইউসুফ | মন্যিল ৩ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ |
|--|--|
| ৭. অবশ্যই ইউসুফ ও তার ভাইদের (এ কাহিনীর) মাঝে যারা সত্যানুসন্ধিৎসু, তাদের জন্যে প্রচুর নির্দশন | لَقَلْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ أَيْتُ الله الله الله الله الله الله الله الله |
| त्रसारह। | لِّلسَّائِلِيْنَ |
| ৮. (এ কাহিনীটি শুরু হয়েছিলো ইউসুফের ভাইদের দিয়ে,) যখন তারা (একজন আরেকজনকে) বললো, আমাদের পিতার কাছে নিসন্দেহে ইউসুফ ও তার ভাই আমাদের চাইতে বেশী প্রিয়, যদিও আমরাই হচ্ছি ভারী দল; আসলেই আমাদের পিতা স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে আছেন, | ﴿ إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَ اَخُوهُ اَحَبُّ إِلَى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنَ عُصْبَةً ، إِنَّ اَبَانَا لَغِي ضَلْلٍ مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةً ، إِنَّ اَبَانَا لَغِي ضَلْلٍ مَبِينٍ على |
| ৯. (তাই শয়তান তাদের পরামর্শ দিলো,) ইউসুফকে মেরে ফেলো অথবা তাকে কোনো এক (অজানা) জায়গায় (নির্বাসনে) দিয়ে এসো, (এরপর দেখরে) তোমাদের পিতার দৃষ্টি তোমাদের দিকেই নিবিষ্ট হবে, অতপর তোমরা (আবার) সবাই ভালো মানুষ হয়ে য়য়য়। | ٩ اقْتُلُوا يُوسُفَ أو اطْرَحُوهٌ أَرْضًا يَّحْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ اَ بَعْدِةٍ قَوْمًا سلِحِيْنَ |
| ১০. (এ সময়) তাদের মধ্য থেকে একজন বললো, না, ইউসুফকে তোমরা হত্যা করো না, তোমরা যদি সত্যি সত্যিই কিছু একটা করতে চাও তাহলে তাকে হয় তো কোনো গভীর কৃপে ফেলে দিয়ে এসো, (আসা যাওয়ার পথে) কোনো যাত্রীদল তাকে উঠিয়ে নিয়ে যাবে। | ١٠ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُرْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَٱلْقُوهُ فِي غَيْبَسِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُرْ فَعِلِيْنَ |
| ১১. (সিদ্ধান্ত মোতাবেক সবাই পিতার কাছে এলো এবং) তারা বললো, হে আমাদের পিতা, এ কি হলো তোমার, তুমি কি ইউসুফের ব্যাপারে (আমাদের ওপর) ভরসা করতে পারছো না, অথচ আমরা নিসন্দেহে সবাই তার গুভাকাংখী! | اا قَالُوْا يَابَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنُصِحُوْنَ |
| ১২. আগামীকাল তাকে তুমি আমাদের সাথে (জংগলে) যেতে দাও, সে (আমাদের সাথে) ফলমূল খাবে ও খেলাধুলা করবে, আমরা নিশ্চয়ই তার রক্ষণাবেক্ষণ করবো। | ١٢ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَلَّ التَّرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَ إِنَّا لَهُ لَحْفِظُوْنَ |
| ১৩. সে বললো, এটা অবশ্যই আমাকে কষ্ট দেবে যে, তোমরা তাকে নিয়ে যাবে, (তদুপরি) আমি ভয় করছি (এমন তো হবে না যে), বাঘ তাকে এসে খেয়ে ফেলবে, অথচ তোমরা তার ব্যাপারে অমনোযোগী হয়ে পড়বে! | القَالَ إِنِّى لَيَحْزُنُنِي آن تَنْهَبُوا بِهِ وَاَخَانُ أَنْ يَاْكُلُهُ الزِّنْبُ وَ اَنْتُرْ عَنْهُ غَفِلُون |
| ১৪. তারা বললো, আমরা একটি ভারী দল (-বদ্ধ শক্তি) হওয়া সন্তেও যদি তাকে বাঘ এসে খেয়ে ফেলে, তাহলে আমরা সত্যিই (অথর্ব ও) ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে পড়বো! | ١٣ قَالُوْا لَئِنْ أَكَلَهُ النِّثْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةً إِنَّا إِذًا لَّخْسِرُوْنَ |
| ১৫. অতপর (অনেক বলে কয়ে) যখন তারা তাকে নিয়ে গেলো এবং তারা তাকে এক অন্ধ কৃপে নিক্ষেপ করার ব্যাপারে সবাই সিদ্ধান্ত নিলো (এবং তারা তাকে কৃপে নিক্ষেপ করেও ফেললো), তখন আমি তাকে ওহী পাঠিয়ে জানিয়ে দিলাম, (একদিন এমন আমরে বেদিন) তুমি অবশ্যই এসব কথা এদের (সবাইকে) বলে দেবে, এরা তো জানেই না (এ ঘটনা কার জন্যে কি পরিণাম বয়ে আনবে)। | 10 فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْهَعُوْآ اَنْ يَجْعَلُونَ فِي الْهَبِينِ الْكُبِّ عَ وَاوْحَيْنَا إلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُرُ فِي فَيْبَتِ الْكُبِّ عَ وَاوْحَيْنَا إلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُرُ بِالْمِهِرْ هٰذَا وَهُرْ لَا يَشْعُرُونَ |
| ১৬. (ইউসুফকে কুয়ায় ফেলে দিয়ে) রাতের কিছু অংশ অতিবাহিত হবার পর তারা কাঁদতে কাঁদতে তাদের পিতার কাছে এলো; | ١٦ وَجَاءُوْ آ اَبَاهُر عِشَاءً يَّبْكُونَ ١٠ |
| ১৭. (অনুযোগের স্বরে) তারা বললো, হে আমাদের পিতা, আমরা (গিয়েছিলাম জংগলে, সেখানে আমরা দৌড় খেলার) প্রতিযোগিতা দিচ্ছিলাম, আমরা | ا قَالُوا يَابَانَا إِنَّا نَمَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْنَ مَتَاعِنَا فَاكَلَهُ النِّدْبُ ع وَمَا |
| ১২ সূরা ইউসুফ | |

ইউসুফকে আমাদের মাল সামানার পাশে ছেড়ে গিয়েছিলাম, অতপর একটা নেকড়ে বাঘ এসে তাকে খেয়ে ফেলে, কিন্তু তুমি তো আমাদের কথা কিছুতেই বিশ্বাস করবে না. যতো সত্যবাদীই আমরা হই না কেন!

أَنْسَ بِمُؤْمِرٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰ قِيْنَ

১৮. তারা তার জামার ওপর মিথ্যা রক্ত (মেখে) নিয়ে এসেছিলো; (তাদের কথা শুনে) সে বললো, 'হাাঁ, তোমরা বরং (এটা বলো,) একটা কথা তোমরা মনে মনে ঠিক করে এনেছো (এবং ধরে নিয়েছো তা আমি বিশ্বাস করবো); অতপর (এ অবস্থায়) পূর্ণ ধৈর্য ধারণই (আমার জন্যে ভালো;) তোমরা ব্যে মনগড়া কথা বলছো সে ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালাই (হচ্ছেন আমার) একমাত্র সাহায্যস্তল।

١٨ وَجَاءُوا عَلَى تَعِيْصِهِ بِنَ ۚ كَنِبِ مَ قَالَ
 بَلْ سَوَّلَتُ لَكُير آنْفُسُكُر آمُرًا مَ فَصَبْرً جَعِيْلٌ مَ وَاللَّهُ الْبُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ

১৯. অতপর (ঘটনা এমন হলো,) একটি (বাণিজ্যিক) কাফেলা (সেখানে) এলো, তারপর তারা একজন পানি সংগ্রাহককে (কুয়ার কাছে) পাঠালো, সে যখন তার বালতি (কুয়ায়) নিক্ষেপ করলো, অতপর সে (যখন) বালতি টান দিলো (তখন দেখলো, একটি বালক তাতে বসা); সে তখন (চীৎকার দিয়ে) বললো, ওহে (তোমরা শোনো) সুখবর, এ তো (দেখছি) এক কিশোর বালক; (কাফেলার লোকেরা বাণিজ্যিক পণ্য মনে করে) একে লুকিয়ে নিলো; (আসলে) আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানতেন যা কিছু এরা তখন করছিলো।

19 وَجَاءَتْ سَيَّارَةً فَارْسَلُوْا وَارِدَهُرُ فَادَلٰی دَلُوَةً ﴿ قَالَ يٰبُشُرُى هٰنَا غُلْرٌ ﴿ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ﴿ وَاللَّهُ عَلِيْرًا بِهَا يَعْبَلُوْنَ

২০. তারা তাকে স্বল্প মূল্যে নির্দিষ্ট কয়েক দেরহামের বিনিময়ে বিক্রি করে দিলো, (বিনা পুঁজির পণ্য বিধায়) এ ব্যাপারে তারা বেশী প্রত্যাশীও ছিলোনা।

٢٠ وَشَرَوْهُ بِثَمَنَ بَخْسِ دَرَاهِرَ مَعْنُودَةٍ عَلَى وَكَانُوا فِيْهِ مِنَ الزَّاهِرِيْنَ عَ

২১. মিসরের যে ব্যক্তি তাকে ক্রয় করেছিলো সে (তাকে নিজ ঘরে এনে) তার স্ত্রীকে বললো, সন্মানজনকভাবে এর থাকার ব্যবস্থা করো, সম্ভবত (বড়ো হয়ে) সে (কোনোদিন) আমাদের উপকারে আসবে, অথবা (ইচ্ছা করলে) তাকে আমরা নিজেদের ছেলেও বানিয়ে নিতে পারি; এভাবেই (একদিন) আমি (মিসরের) যমীনে ইউসুফকে (সন্মানজনক) প্রতিষ্ঠা দান করলাম, যাতে করে আমি তাকে স্বপ্লের ব্যাখ্যা (-সহ অন্যান্য বিষয়-আশয়) সম্পর্কিত জ্ঞান শিক্ষা দিতে পারি; আল্লাহ তায়ালা (সব সময়ই) স্বীয় এরাদা বাস্তবায়নে ক্ষমতাবান, যদিও অধিকাংশ মানুষ (এ কথাটা) জানে না।

ا وَقَالَ الَّذِي اهْتَرْنهُ مِنْ مِّصْرَ لِإِمْرَاتِهَ الْحَوْمِي مَصْرَ لِإِمْرَاتِهَ الْكَوْمِي مَثْوَاةٌ عَسَى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِنَةً وَلَنَّا الْمُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلَنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلَلْلهُ وَلِنُعَلِّهَ مِنْ تَأْوِيلُ الْإَحَادِيْتِ ، وَاللّهُ عَلَى اَمْرِةٍ وَلَٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا عَلَيْقُونَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

২২. অতপর সে যখন পূর্ণ যৌবনে উপনীত হলো, তখন আমি তাকে নানারকম প্রজ্ঞা ও জ্ঞান দান করলাম; আর আমি এভাবেই নেককার লোকদের পুরস্কার দিয়ে থাকি।

٢٢ وَلَمَّا بَلَغَ آهُلَّهُ أَتَيْنُهُ مُكْمًا وَعِلْمًا ، وَكَلْكِ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ وَكُلْكِ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ

২৩. (একদিন এমন হলো,) সে যে মহিলার ঘরে থাকতো সে তাকে তার প্রতি (অসৎ উদ্দেশে) আকৃষ্ট করতে চাইলো এবং (এ উদ্দেশ চরিভার্থ করার ছন্যে) সে তার ঘরের দরজাসমূহ বন্ধ করে দিয়ে (তাকে) বললো, এসো (আমার কাছে, এ অগ্নীল প্রস্তার জনে) সে বললো, আমি (এ থেকে বাঁচার জন্যে) আল্লাহ তায়ালার কাছে আশ্রয় চাচ্ছি, তিনিই আমার মালিক, তিনিই আমার উৎকৃষ্ট আশ্রয়, (যে আল্লাহ তায়ালা আমাকে আশ্রয় দিয়ে এখানে থাকতে দিয়েছেন তার সাথে এ যুলুম আমি করবো কিভাবে); তিনি (অকৃতক্ত) যালেমদের কখনো সাফল্য দেন না।

٢٣ وَرَاوَدَتُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ تَقْسِهِ
وَغَلَّقَتِ الْإَبُوابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ، قَالَ
مَعَاذَ اللهِ إِنَّهُ رَبِّي آَهُسَى مَثُواى ، إِنَّهُ لَا
يُغْلِحُ الظَّلِمُونَ

২৪. সে মহিলা তার প্রতি (অসৎ কাজের) এরাদা করে ফেলেছিলো এবং সেও তার প্রতি (একই উদ্দেশে) এরাদা (প্রায়) করেই ফেলেছিলো, যদি না সে (বিশেষ রহমত হিসেবে) তার মালিকের নিদর্শন প্রত্যক্ষ না করতো, এভাবেই (আমি ইউসফকে নৈতিকতার উচ্চমানে প্রতিষ্ঠিত রাখলাম) যেন আমি তার থেকে অন্যায় ও অশ্লীলতাপূর্ণ কাজ দূরে সরিয়ে রাখতে পারি; অবশ্যই সে ছিলো আমার নিষ্ঠাবান বান্দাদের একজন :

٢٣ وَلَقَلَ هَبَّتَ بِهِ ۽ وَهَرَّ بِهَا لَوْكَمْ أَن رَّأ بُوْهَانَ رَبِّهِ م كَنْ لِكَ لِنَصْرِنَ عَنْهُ السُّوءَ وَ الْفَحْشَاءَ مَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ

২৫. অতপর তারা উভয়েই (সম্পূর্ণ ভিন্ন ভিন্ন উদ্দেশে) দরজার দিকে দৌড়ে গেলো, মহিলা (তাকে ধরতে গিয়ে) পেছন দিক থেকে তার জামা (টেনে) ছিঁড়ে ফেললো. এমতাবস্থায় তারা (উভয়েই) তার স্বামীকে দরজার পাশে (দেখতে) পেলো, তখন মহিলাটি (স্বীয় অভিসন্ধি গোপন ুর্ন করার জন্যে ইউসুফকে অভিযুক্ত করে) বললো, কি শান্তি ুর্ন করার জন্যে ইউসুফকে অভিযুক্ত করে) বললো, কি শান্তি হওয়া উচিত সে ব্যক্তির, যে ব্যক্তি তোমার স্ত্রীর সাথে অশ্রীল কাজের ইচ্ছা পোষণ করে? এ ছাড়া তার আর কি শান্তি হতে পারে যে– তাকে হয় জ্বেলে পাঠাতে হবে নতুবা অন্য কোনো কঠিন শান্তি হবে।

٢٥ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَلَّتْ قَبِيْصَةً مِنْ دُبُرٍ وَّ ٱلْفَيَا سَيِّكَ هَا الْهَا الْبَابِ ، قَالَتْ مَا جَزَّاءً عَنَابُ ٱليُرُ

২৬. সে বললো, সে (মহিলা)-ই আমাকে অশ্রীল কাজের প্রতি আকষ্ট করতে চেয়েছিলো, (এ সময়) সে মহিলার আপনজনদের মধ্য থেকে একজন এসে সাক্ষী হিসেবে (নিজের সাক্ষ্য পেশ করে) বললো (ইউসুফের জ্ঞামা তদন্ত করে দেখা যাক), যদি তার জামার সম্মুখভাগ ছেঁড়া হয়ে থাকে তাহলে (বুঝতে হবে, অভিযোগের ব্যাপারে) সে মহিলা সত্য বলেছে এবং সে (ইউসুফ) মিথ্যাবাদীদের একজন।

٢٦ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَيْ نَّفْسِيْ وَهَهِلَ شَاهِلٌّ مِّنْ أَهْلِهَا ۽ إِنْ كَانَ قَبِيْصُهُ قُلٌّ مِنْ قُبُل فَصَلَقَت وَهُوَ مِنَ الْكُنِينَ

২৭. আর যদি তার জামা পেছন দিক থেকে ছেঁডা হয়ে থাকে তাহলে (বুঝতে হবে), সে (নারী) মিথ্যা কথা বলেছে এবং সে-ই সত্যবাদীদের একজন।

٢٠ وَإِنْ كَانَ قَبِيْصُةً قُلَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَلَابَت وَهُوَ مِنَ الصَّرِقِيْنَ

২৮. অতপর (এ মূলনীতির ভিত্তিতে) সে (গৃহস্বামী) যখন দেখলো, তার জামা পেছন দিক থেকে ছেঁড়া, তখন সে (আসল ঘটনা বুঝতে পেরে নিজের দ্রীকে) বললো, কোনো সন্দেহ নেই, এটা তোমাদের (নারীদের) ছলনা, আর সত্যিই তোমাদের (মতো নারীদের) ছলনা বড়ো জঘন্য!

٢٨ فَلَهًا رَأُ قَوِيْصَدَ قُلَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْرِكُنَّ ﴿ إِنَّ كَيْلَكُنَّ عَظِيرً

২৯. হে ইউসুফ, তুমি (এ নিয়ে বাড়াবাড়ি করা) ছেড়ে দাও এবং (হে নারী,) তুমি তোমার অপরাধের জন্যে (আল্লাহর কাছে) ক্ষমা প্রার্থনা করো, কেননা তুমিই হচ্ছো (আসল) অপরাধী।

٢٩ يُوْسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰلَ المعد وَاسْتَغْفِرِيْ لِنَاثَبِكِ مِلْمِ إِنَّكِ كُنْسِ مِنَ الْخُطِئِيْنَ ع

৩০. (বিষয়টা জানাজানি হয়ে গেলে) শহরের নারীরা (নিজেদের মধ্যে) বলতে লাগলো, আযীযের স্ত্রী তার (যুবক) গোলামের প্রতি আসক্ত হয়ে পড়েছে, তাকে (জয় গোলামের) প্রেম উনাত্ত করে দিয়েছে, আমরা সত্যিই দেখতে পাচ্ছি সে সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত হয়েছে।

٣٠ وَقَالَ نِسْوَةً فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدٌ فَتَٰهِا عَنْ تَّفْسِهِ } قَلْ شَغَفَهَا حُبًّا ، إِنَّا لَنَرْهَا فِي شَلْلٍ مُّبِيْنِ

৩১. সে (মহিলা) যখন ওদের (কানাকানি ও) ষড়যন্ত্রের কথা তনলো, তখন সে ওদের (সবাইকে নিজের ঘরে) ডেকে পাঠালো এবং তাদের জন্যে একটি মাহফিলের وَاكْتُرُاتُ لَهُنَّ مُتَّكًا وَاتَتَ كُلُّ وَاحِلَةً आर्याकन करता. (द्रीि अनुराग्नी) প্রত্যেক মহিলাকে وَاكْتُرُاتُ اللهِ مُتَكَا وَاتَتَ كُلُّ وَاحِلَةً (খাবার গ্রহণের জন্যে) এক একটি ছুরি দিলো, অতপর (যখন তারা খাবার গ্রহণ করার জন্যে ছুরির ব্যবহার শুরু করলো তখন) সে (ইউসুফকে) বললো, (এবার) তুমি

٣١ فَلَهَّا سَبِعَتْ بِهَكْرِهِنَّ ٱرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَّقَالَتِ اغْرُجُ عَلَيْهِنَّ } فَلَهًّا

১২ সুরা ইউসুফ

208

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

এ তো হচ্ছে এক সমানিত ফেরেশতা!

পারা ১২ ওয়ামা মিন দাব্বাহ

এদের সামনে বেরিয়ে এসো, যখন মহিলারা তাকে দেখলো তখন তারা তার (রূপ যৌবনের) মাহাত্মে অভিভূত হয়ে গেলো (এবং নিজেদের অজান্তেই ছুরি দিয়ে খাবার গ্রহণের পরিবর্তে) নিজেদের হাত কেটে ফেললো তারা বললো, কি অদ্ভূত (সষ্টি!) এ তো কেনো মানুষ নয়:

رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْنِيهُمَّ وَقُلْنَ مَاشَ لله مَا هٰنَ ا بَشَوًا م انْ هٰنَ ا الَّا مَلَكُ كُويْرٌ

৩২. (এবার বিজয়িনীর ভংগিতে) সে (মহিলা) বললো (তোমরা দেখলে: তো?) এ হচ্ছে সে ব্যক্তি, যার ব্যাপারে তোমরা আমাকে ভর্ৎসনা তিরস্কার করছিলে, (এটা ঠিক) আমি তার কাছ থেকে অসৎ কিছ কামনা করেছিলাম. অতপর সে নিজেকে বাঁচিয়ে রেখেছে: (কিন্তু) আমি তাকে যা করতে আদেশ করি সে যদি তা না করে তাহলে অবশাই সে কারাগারে নিক্ষিপ্ত হবে এবং অপমানিত হবে ৷

٣٢ قَالَتُ فَنْ لَكُنَّ الَّذِي لَهُتُنَّني فَيْهِ عَ وَلَقَلْ رَاوَدْتُّهُ عَنْ نَّفْسِهِ فَاسْتَغْصَرَ م وَلَئِيْ لَّرْ يَفْعَلْ مَا أُمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصّغرينَ

৩৩. (মহিলার দম্ভোক্তি শুনে) সে দোয়া করলো, হে আমার মালিক, এরা আমাকে যে (পাপের) দিকে আহ্বান করছে তার চাইতে কারাগার আমার কাছে অধিক প্রিয় যদি তুমি আমাকে এদের ছলনা থেকে রক্ষা না করো তাহলে হয়তো আমি ওদের প্রতি আকষ্ট হয়ে যাবো এবং এভাবে আমিও জাহেলদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে পড়বো!

٣٣ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ آمَبُّ إِلَىَّ مِيًّا يَنْعُوْنَنِيْ ۚ إِلَيْهِ ۚ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْنَهُنَّ أَصْبُ الْيُهِيُّ وَأَكُنْ مِّنَ الْجُهليْنَ

৩৪. অতপর তার মালিক তার ডাকে সাডা দিলেন, তার কাছ থেকে তিনি মহিলাদের চক্রান্ত সরিয়ে নিলেন, নিক্যুই তিনি (মানুষের সব ডাক) শোনেন এবং (তাদের ষডযন্ত্র সম্পর্কেও) তিনি সম্যক অবগত।

٣٣ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْنَهُنَّ طُ انَّهُ هُوَ السَّيْعُ الْعَلَيْمُ

কিছু নির্দিষ্ট সময়ের জন্যে (হলেও) কারাগারে নিক্ষেপ করতে হবে, অথচ তারা ইতিমধ্যে (তার সচ্চরিত্রতার) যাবতীয় নিদর্শন (ভালো করেই) দেখে নিয়েছে।

لَيَسْجُنْنَهُ مَتَّى مِيْنٍ ع

৩৬. (ঘটনাক্রমে সে সময়) তার সাথে আরো দু'জন যুবকও (একই) কারাগারে প্রবেশ করলো, (একদিন) ওদের একজন (ইউসুফকে) বললো, অবশ্যই আমি (স্বপ্নে) দেখেছি, আমি আংগ্রুর নিংড়ে (তার) রস বের করছি, অপর জন বললো, আমি দেখেছি আমি আমার মাথায় রুটি বহন করছি এবং (কিছু) পাখী তা (খুঁটে गेंटि) चात्व (উভरारे रेडिजुरु क वनालां); श्री आभारमेत المُرْمِنْهُ مَا نَبِّنْنَا بِتَأْوِيلُهِ عَ إِنَّا نُرِيعًا এর ব্যাখ্যা বলে দাও, আমরা দেখতে পাচ্ছি তুমি (আসলেই) ভালো মানুষদের একজন।

٣٦ وَدُغَلَ مَعَدُ السِّجْنَ فَتَيٰن ، قَالَ اَ مَن مُهُمَّ إِنِّي آرني آعُمِرُ مَهْرًا ع وَقَالَ الْأُخَرُ إِنِّي ٓ أَرْنِي ٓ أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا منَ الْهُحُسِنِينَ

৩৭. সে বললো (তোমরা নিন্চিত থাকো), এ বেলা তোমাদের যে খাবার দেয়া হবে তা তোমাদের কাছে আসার পর্বেই আমি তোমাদের উভয়কে এর ব্যাখ্যা বলে দেবো (তবে জেনে রেখো); এ (যে স্বপ্নের ব্যাখ্যা তা) হচ্ছে সে জ্ঞানেরই অংশবিশেষ, যা আমার মালিক আমাকে শিক্ষা দিয়েছেন: (আমি প্রথম থেকেই) আসলে তাদের মিল্লাত বর্জন করেছি যারা আল্লাহর ওপর ঈমান আনে না, (উপরম্ভ) তারা আখেরাতেও বিশ্বাস করে না।

 $ar{\mathbb{V}}$ قَالَ $ar{\mathbf{V}}$ يَاْتَيْكُهَا طَعَامٌ تُوْزَقُنبَ $ar{\mathbb{V}}$ نَبَّاتُكُمًا بِتَأْوِيْلِهِ فَبْلَ أَنْ يَّأْتِيكُمَا وَ ذَٰلِكُمَا مِيًّا عَلَّمَنِي رَبِّي ، إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْ] لَّا يُوْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُرْ بِالْأَعْرَةِ هُرْ كُفُونَ

৩৮. আমি তো আমার পিতৃপুরুষ ইবরাহীম, ইসহাক ও ইয়াকুবের মিল্লাতেরই অনুসরণ করে আসছি: (ইবরাহীমের সন্তান ও তাঁর অনুসারী হিসেবে) এটা আমাদের শোভা পায় না যে, আমরা আল্লাহর সাথে অন্য

٣٨ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ أَبَآءِي ٓ إِبْرُهِيْمِ وَإِسْعَٰقَ وَيَعْقُوْبَ مَ مَا كَانَ لَنَا ۖ أَنْ تَّشُرِكَ بِاللَّهِ مِنْ

১২ সুরা ইউসুফ

কিছুকে শরীক করবো: (তাওহীদের) এ (উত্তরাধিকার) হচ্ছে আমাদের ওপর এবং সমস্ত মানুষের ওপর আল্লাহ তায়ালার এক (মহা) অনুগ্রহ, কিন্তু (আমাদের) অধিকাংশ মানুষই (এ জন্যে আল্লাহ তায়ালার) কৃতজ্ঞতা আদায় করে না।

شَيْء م ذٰلكَ مِنْ فَضْلِ الله عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِيَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُونَ

৩৯. হে আমার জেলের সাথীরা (তোমরাই বলো). মান্যের জন্যে ভিন্ন ভিন্ন মালিক ভালো না এক আল্লাহ তায়ালা (ভালো), যিনি মহাপরাক্রমশালী:

٣٩ يُصَاهِبَي السِّجْنِ ءَٱرْبَابٍ مُّتَفَرِّقُونَ غَيْرٌ أَ) اللَّهُ الْوَاحِنُ الْقَهَّارُ ،

৪০. তাকে ছেডে তোমরা যাদের এবাদাত করছো, তা তো কতিপয় নাম ছাড়া আর কিছুই নয়. (অজ্ঞতাবশত) যা তোমরা ও তোমাদের বাপদাদারা রেখে দিয়েছো. অথচ আল্লাহ তায়ালা এ ব্যাপারে (তাদের সাথে) কোনো দলিল প্রমাণ নাযিল করেননি. (মূলত) আইন বিধান জারি করার অধিকার একমাত্র আল্লাহ তায়ালারই: আর (এ বিধানের বলেই) তিনি আদেশ দিচ্ছেন, তোমরা আলাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারো গোলামী করবে না: (কারণ) এটাই হচ্ছে সঠিক জীবনবিধান, কিন্তু মানুষদের অধিকাংশই (এটা) জানে না।

٣٠ مَا تَعْبُلُونَ مِنْ دُوْنِهِ إِلَّا ٱسْمَاءً سَيْتُهُوْهَا آنْتُمْ وَالْاَوْكُمْ أَا آنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَى ، إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ، أَمَرَ اللَّهِ تَعْبُنُوْ اللَّا إِيَّاءُ ء ذٰلكَ الرِّيْنُ الْقَيِّمِ وَلَٰكِنَّ ٱكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ

৪১. হে আমার জেলের সাধীরা (এবার তোমরা স্বপ্লের) ব্যাখ্যা শোনো), তোমাদের একজন সম্পর্কে কথা হচ্ছে সে তার মালিককে শরাব পান করাবে, আর অপরজন, যার মাথা থেকে পাখী (খুঁটে খুঁটে) রুটি খাচ্ছিলো, তার সম্পর্কে কথা এই যে, (অচিরেই) সে শূলবিদ্ধ হবে (এটা হচ্ছে সে বিষয়টির ব্যাখ্যা), যা তোমরা উভয়ে জানতে চাচ্ছো (ইডিমধ্যেই কিন্তু) তার ফয়সালা করা হয়ে গেছে!

٢١ يُصَاحِبَى السِّجْنِ أَمَّا اَحَلُكُهَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَهْرًا ع وَأَمَّا الْإِخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّأْسِهِ ، قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيدِ

৪২, তাদের মধ্যে যার ব্যাপারে সে মনে করেছে, সে মুক্তি পেয়ে যাবে, তাকে (উদ্দেশ করে) সে বললো, (তুমি যখন মুক্তি পাবে তখন) তোমার মালিকের কাছে আমার সম্পর্কে বলো যে. (আমি স্বপ্নের ব্যাখ্যা বলতে পারি). কিন্তু (সে মৃক্তি পাওয়ার পর) শয়তান তাকে তার মালিকের কাছে (इँडेमुरफ्त क्षमःरग वनात कथा) छुनिरा पिरना, फरन কয়েক বছর সময় ধরে সে কারাগারেই পড়ে থাকলো।

٣٢ وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْنَ رَبِّكَ رِ فَآنَسْمُ الشَّيْطَيُّ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِي فِي السِّجْي بِضْعَ سِنِينَ ع

৪৩. (ঘটনা এমন হলো, একদিন) বাদশাহ (তার পারিষদদের) বললো, আমি (স্বপ্নে) দেখলাম. সাতটি পাতলা গাভী সাতটি মোটা গাভীকে খেয়ে ফেলছে. (আরো দেখলাম) সাতটি সবুজ (ফসলের) শীষ আর শেষের সাতটি (দেখলাম) শুকনো, হে (আমার দরবার) প্রধানরা, তোমরা আমাকে এ স্বপ্লের ব্যাখ্যা বলে দাও যদি তোমরা (কেউ এ) স্বপ্লের ব্যাখ্যা জানো!

٣٣ وَقَالَ الْهَلِكُ إِنِّي ٓ أَرْى سَبْعَ بَقَرْتٍ سِهَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعً عِجَانً وَّسَبْعَ سُنْبُلْتٍ خُضْ وَّ أُخَرَ يُبِسُ و يَايُّهَا الْهَلَا ٱفْتُوْنِي فِي رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ

88. তারা বললো (হে রাজন), এ তো হচ্ছে কতিপয় অর্থহীন স্বপু, আমরা (এ ধরনের) অর্থহীন স্বপ্লের ব্যাখ্যা জানি না।

٣٣ قَالُوْ ۗ أَضْغَاتُ أَهْلاً ۚ } وَمَا نَعْنُ بِتَأْوِيْلِ الْأَمْلَا إِلْعِلْمِيْنَ

৪৫. যে দু'জনের একজন (কারাগার থেকে) মুক্তি رم وقال النوى نَجَا مِنْهُمَا وَادْكُرَ بَعْلَ أُمَّةً عِلَهُمَا وَادْكُرَ بَعْلَ أُمَّةً عِلَى اللهِ المِلمُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المِلْمُ اللهِ ا হলো, সে (দরবারী লোকদের কথাবার্তা খনে) বললো, আমি এক্ষণ তোমাদের এ স্বপ্নের ব্যাখ্যা বলে দিচ্ছি, তোমরা আমাকে (কারাগারে ইউসুফের কাছে) পাঠিয়ে দাও।

أَنَا ٱنَبِّنَّكُمْ بِتَأُويْلِهِ فَٱرْسِلُوْنِ

8७. (कातांगात ि शिख त्म वनता,) व्ह देउनुक, व्ह بُسُ فُ ٱللَّهِ الصِّدِيَّةُ ٱفْتِنَا فِي سَبُعِ ٢٦ ا

२७५

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১২ ওয়ামা মিন দাববাহ

সত্যবাদী, তুমি আমাদের 'সাতটি মোটা গাভী সাতটি भाठना गांजीरक त्थरा रक्नाह बवर नांठि नवुक नाामन عجاف وسبع عجاف وسبع الماكلي سبع عجاف وسبع ফসলের শীষ অপর সাতটি শুকনো শীষ'-এ স্বপ্রটির ব্যাখ্যা বলে দাও, যাতে করে এ ব্যাখ্যা নিয়ে আমি মানুষদের কাছে ফিরে যেতে পারি. হয়তো (এর ফলে) তারা (স্বপ্নের ব্যাখ্যার সাথে তোমার মর্যাদা সম্পর্কেও) জানতে পারবে।

سُنْبُلْتٍ غُضْرٍ وَّأُخَرَ يُبِسٰتٍ لا لَّعَلِّيٓ ٱرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ

৪৭. সে বললো (এ স্বপ্নের ব্যাখ্যা ও সে সম্পর্কে তোমাদের করণীয় হচ্ছে), তোমরা ক্রমাণত সাত বছর ফসল ফলাতে থাকবে (এ সময় প্রচর ফসল হবে). অতপর ফসল তোলার সময় আসলে তোমরা যে পরিমাণ ফসল তলতে চাও তার মধ্য থেকে সামান্য অংশ তোমরা খাবারের জন্যে রাখবে, তা বাদ দিয়ে বাকি অংশ শীষ সমেত রেখে দেবে (এতে করে ফসল বিনষ্ট হবে না)।

٣٤ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَأَبًا فَهَا حَصَنْ تُتُّو فَنَرُوهُ فَيْ سُنْبُلَّهِ إِلَّا قَلَيْلًا مَّهَّا تَٱكُلُوْنَ

৪৮. এরপর আসবে সাতটি কঠিন (খরার) বছর, যা এর আগের কয় বছরের (গোটা সঞ্চয়ই) খেয়ে ফেলবে, তা ছাড়া যা তোমরা আগেই এ কয় বছরের জন্যে জমা করে يَاكُلُنَ مَا قَنَّ مُثَرُ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيْلًا مِنَّا اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ ال থাকবে, সামান্য পরিমাণ, যা তোমরা (বীজের জন্যে) রেখে দেবে।

٣٨ ثُرَّ يَأْتِي مِنْ البَعْلِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِلَ إِذَّ

৪৯. অতপর একটি বছর এমন আসবে, যখন মানুষের জন্যে প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করা হবে, তাতে তারা (প্রচুর) আংগুরের রসও বের করবে।

٣٩ ثُر آياتي مِن ابَعْلِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيدٍ يُعَادُ النَّاسُ وَنِيْدِ يَعْصِرُونَ ع

৫০. (সে ব্যক্তি যখন বাদশাহকে স্বপ্নের এ ব্যাখ্যা مُونِي بِهِ عَفَلَهَا جَاءَةُ وَقَالَ الْمَلِكُ الْتَوْنِي بِهِ عَفَلَهَا جَاءَةً مُوانِي اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَفَلَهُا جَاءَةً مُونِي اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ আমার সামনে নিয়ে এসো. যখন (শাহী) দৃত তার কাছে (এ খবর নিয়ে কারাগারে) এলো, তখন সে বললো (আমি অনুকম্পায় মৃক্তি চাই না, আমার বিরুদ্ধে আনীত অভিযোগ আগে প্রমাণিত হোক), 💩 অণ্ণশার মাজ ০াং শা, আমার পক্ষে আশাও আওবোগ আগে শ্রমাণও হোক), আ تَعْلَمُنَ أَيْدِيمُنَ أَيْدِيمُنَ الْ النِّسُوةِ الْتِي قَطْمُنَ أَيْدِيمُنَ ﴿ إِنَّ عَالَمُ عَالَى النِّسُوةِ الْتِي قَطْمُنَ أَيْدِيمُنَ ﴿ إِنَّ اللَّهِ عَالَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّ জিজ্ঞেস করো, সে নারীদের (সঠিক) ঘটনাটা কি ছিলো? যারা (প্রকাশ্য মন্ত্রলিসে) নিজেদের হাত কেটে ফেলেছিলো, যদিও আমি জানি, আমার মালিক তাদের চক্রান্ত সম্পর্কে সম্যক অবগত ছিলেন (কিন্তু আমার মুক্তির আগেই আমার নির্দোষিতার ঘোষণা একান্ত প্রয়োজন)।

الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعُ إِلَى رَبِّكَ فَشَنَلُهُ مَا رَبِّي بِكَيْرِمِيَّ عَلِيْرً

८२. (ఆরশর) বাদশাহ সে নারাদের (দরবারে তলব مُرَدُّتُ وَمُودُّتُ وَهُو مُنْكُنَّ إِذْ رَاوَدَتُنَّ يُوسُفَ عَن केतला এবং তাদের) জিজ্ঞেস করলো, (ঠিক ঠিক وَاللّهُ عَنْ مُعْلَبُكُنَّ إِذْ رَاوَدَتَّنَّ يُوسُفَ عَنْ اللّهَ عَلَى اللّهَ اللّهُ عَنْ اللّهُ اللّه আমাকে বলো তো, সেদিন) তোমাদের কী হয়েছিলো مُ عَلَيْهِ مِنَ عَلَيْهِ مَا عَلَيْهِ مَا عَلَيْهِ مِنَ عَلَيْهِ مِن اللهِ مَا عَلِيْنَا عَلَيْهِ مِن عَلَيْهِ مِن اللهِ مَا عَلَيْهِ مِن اللهِ عَلَيْهِ مِن اللهِ مَا عَلَيْهِ مِن اللهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ ধরণের কোনো অভিযোগই দেখতে পাইনি; (একথা ভনে) مَنْ تُغْسِمُ وَإِنَّهُ لَمِن الْحَقَّ رَ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَّغْسِمُ وَإِنَّهُ لَمِن اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّاللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّالَّا اللّ গেছে. (তখন আমাকেও বলতে হয়, আসলে) আমিই তার কাছে অসৎ কাজ কামনা করেছিলাম, অবশ্যই সে ছিলো সত্যবাদীদের একজন।

الصَّاقينَ

पर. (ारा ज्नाराज्य वनत उरन २७जूक वनता,) विष्ठ بُنْدُ بِالْغَيْبِ (जाप) व करना (कतरा वरनिहन्मा), खन त्र (বাদশাহ) জেনে নিতে পারে, আমি (আযীযের) অবর্তমানে (তার আমানতের) কোনো খেয়ানত করিনি, কেননা আল্লাহ তায়ালা কখনো খেয়ানতকারীদের সঠিক পথ দেখান না।

وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ

১২ সুরা ইউসুফ

(209)

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

৫৩. (তবে) আমি আমার ব্যক্তিসন্তাকেও নির্দোষ মনে করি না, কেননা (মানুষের) প্রবৃত্তি মন্দের সাথেই (ঝুকে থাকে বেশী), কিন্তু তার কথা আলাদা, যার প্রতি আমার মালিক দয়া করেন: অবশ্যই আমার মালিক ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল।

وَمَا أَبِّرَ فِي نَفْسِي مِ إِنَّ النَّفْسِ ۚ ﴿ مَّارَةً ۗ

بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِيرَ رَبِّي ۚ ﴿ إِنَّ رَبِّي غَفُوْرٌ

৫৪. বাদশাহ বললো, তাকে আমার কাছে হাযির করো, আমি তাকে একান্তভাবে আমার নিজের করে রাখবো, (ইউসুফকে আনার পর) অতপর বাদশাহ তার সাথে কথা বললো. (কথা প্রসংগে) সে বললো. আজ সত্যিই তুমি আমাদের স্বার কাছে একজন সম্মানী ও বিশ্বস্ত ব্যক্তি (বলে প্রমাণিত) হলে!

٥٣ وَقَالَ الْهَلِكُ ائْتُوْنِي بِهِ أَسْتَخْلَصْهُ لنَفْسي م فَلَمًّا كَلَّهَ قَالَ انَّكَ الْيَوْ } لَكَيْنَا مَكِينَ أَمِينَ

مد قال المعلني على خَزَائِي الْأَرْضِ विश्वखर प्रत करता তाश्ला तर्राहात এ (विश्वशा والأرض الكراض المعلنية على خَزَائِي الأرض المعادية الم ৫৫. সে (বাদশাহকে) বললো, (যদি তুমি আমাকে খাদ্য)-ভান্তারের ওপর আমাকে নিযুক্ত করো, আমি অবশ্যই একজন বিশ্বস্ত রক্ষক ও (অর্থ পরিচালনায়) অভিজ্ঞ বটে ।

انَّى مَفَيْظٌ عَلَيْهٌ

৫৬. (তাকে রাষ্ট্রীয় ভান্ডারের দায়িত্বশীল নিযুক্ত করার পর আল্লাহ তায়ালা বললেন) এবং এভাবেই আমি ইউসুফকে (মিসরের) ভূখন্ডে ক্ষমতা দান করলাম, সে দেশের যথা ইচ্ছা বসবাস করতে পারবে, আর আমি যাকে চাই তার কাছেই আমার রহমত পৌছে দিই. আমি কখনো নেককার লোকদের পাওনা বিনষ্ট করি না।

٥٦ وكَنْ لِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْأَرْضِ ع يَتَبُوا مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ء نُصِيْبُ بِحَهَتنا تَّشَاءً وَلَا تُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

৫৭, যারা আল্লাহর ওপর ঈমান আনে এবং তাঁকে ভয় করে, তাদের জন্যে তো আখেরাতের পাওনা রয়েছে, যা অনেক উত্তম।

٥٤ وَلَاَهُمُ الْأَخِرَةِ غَيْرٌ لِلَّانِيْنَ أَمَنُوْا وَكَانُوْ ا يَتَّقُوْنَ ع

৫৮. ইউসুফের ভাইয়েরা (পরিবারের রসদ কেনার জন্যে মিসরে) এলো এবং (একদিন) তার সামনেও হাযির হলো, সে তাদের (দেখে) চিনতে পারলো, (কিন্তু) তারা তার জন্যে অচেনাই থাকলো।

٥٨ وَجَاءَ إِخْوَةً يُوسُفَ فَلَ عَلَوْا عَلَيْهِ فَعُوفُهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكُونَ

৫৯. যখন সে তাদের রসদের (যাবতীয়) ব্যবস্থা (সম্পন্ন) করে দিলো, তখন সে (তাদের) বললো, এরপর (যদি আবার আসো তাহলে তোমরা) তোমাদের পিতার কাছ থেকে তোমাদের (বৈমাত্রের) ভাইটিকে নিয়ে আমার কাছে আসবে, তোমরা কি দেখতে পাও না, আমি (মাথা হিসাব করে) পূর্ণ মাত্রায় মেপে মেপে রসদ দেই, (তা ছাড়া) আমি তৌ একজন উত্তম অতিথিপরায়ণ ব্যক্তিও বটে।

٥٩ وَلَمَّا جَهَّزَهُرُ بِجَهَازِهِرْ قَالَ الْتُوْنِيْ بِأَخِ لَّكُرْ مِّنْ أَبِيكُمْرَ عَ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوْفِ الْكَيْلَ وَأَنَا غَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ

৬০. যদি তোমরা (আগামীবার) তাকে নিয়ে আমার কাছে না আসো, তাহলে আমার কাছে তোমাদের জন্যে (আর) কোনো রসদ থাকবে না. (সে অবস্থায়) তোমরা আমার কাছেও যেঁষো না ।

٦٠ فَانْ لَّرْ تَأْتُونِيْ بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُرْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ

৬১. তারা বললো, এ বিষয়ে আমরা তার পিতাকে অনুরোধ (করে সম্বত) করবো, আমরা অবশ্যই (এ চেষ্টা) করবো। ٦١ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْدُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفُعِلُونَ

৬২. সে তার (রসদ) কর্মচারীদের বললো, এ লোকদের মূলধন তাদের মালপত্রের ভেতর রেখে দাও যাতে করে ওরা তাদের আপনজনদের কাছে ফিরে গেলে তা চিনতে পারে, হতে পারে (এ লোভে) তারা (আবার) ফিরে আসবে।

٦٢ وَقَالَ لِفِتْيِنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُرْ فِي رِ مَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَا إِذَا انْقَلَبُوْا إِلَى أَهْلِهِرْ لَعَلَّهُمْ يُرْجِعُونَ

১২ সূরা ইউসুফ

20b

৬৩. যখন তারা তাদের পিতার কাছে ফিরে গেলো, তখন তারা বললো, হে আমাদের পিতা, আমাদের (ভবিষ্যতের) রসদ বন্ধ করে দেয়া হয়েছে, অতএব তুমি আমাদের ভাইকে আমাদের সাথে যেতে দাও, যাতে করে আমরা (তার ভাগসহ) ওয়ন করে রসদ আনতে পারি, অবশ্যই আমরা তার হেফাযত করবো।

٦٣ فَلَمَّا رَجَعُوْآ إِلَّى أَبِيْهِرْ قَالُوْا يَأَبَانَا مُنعَ مِنًّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَعَانَا نَكْتَلُ وَ إِنَّا لَهُ لَحُفظُوْنَ

৬৪. (জবাবে) সে বললো, আমি কি তার ব্যাপারে اللهُ كُمْ اَمِنْتُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كُمَا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَيْهِ إِلَّا كُمَا اللَّهُ اللَّاللَّا اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ اللَّا তোমাদের ওপর সেভাবেই ভরসা করবো, যেভাবে ইতিপূর্বে তার ভাইয়ের ব্যাপারে আমি তোমাদের ওপর ভরসা করেছিলাম: (হাঁ.) অতপর আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন উত্তম রক্ষক এবং তিনি সর্বশ্রেষ্ঠ দয়াল।

عَلَى آخِيهِ مِنْ قَبْلُ وَ فَاللَّهُ خَيْرٌ مُفِظًا مِ وهُوَ أَرْمَرُ الرَّحِينَ

৬৫. অতপর তারা যখন মালপত্র খুললো তখন তারা তাদের মূলধন (যা দিয়ে রসদ খরিদ করেছিলো-দেখতে) পেলো, তা তাদের (পুরোপুরিই) ফেরত দেয়া হয়েছে; (এটা দেখে) তারা বললো, হে আমাদের পিতা, এর চাইতে বেশী (মহানুভবতা) আমরা আর কি চাইতে পারি: (দেখো) আমাদের মূলধনও আমাদের ফেরত দেয়া হয়েছে: (এবার অনুমতি দাও আমরা ভাইকে নিয়ে যাই এবং) আমরা আমাদের পরিবারের জ্বন্যে রসদ নিয়ে আসি, আমরা আমাদের ভাইয়েরও হেফাযত করবো এবং (ভাইয়ের কারণে) আমরা অতিরিক্ত একটি উট (বোঝাই করে) রসদও আনতে পারবো; (এবার আমরা যা এনেছি) এটা তো (ছিলো) পরিমাণে নিতান্ত কম।

٦٥ وَلَمًّا فَتَعُوْا مَتَاعَهُرْ وَجَلُوْا بِضَاعَتُهُرْ رُدَّتْ إِلَيْهِرْ ، قَالُوْا يَأْبَانَا مَا نَبْغِيْ ، هٰنِ ه بِضَاعَتُنَا رُدِّسَ إِلَيْنَا عِ وَنَهِيْرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَغَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ﴿ ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرُّ

৬৬. সে বললো, আমি কখনোই তাকে তোমাদের সাথে পাঠাবো না– যতোক্ষণ না তোমরা আল্লাহর নামে (আমাকে) অংগীকার দেবে যে. তোমরা অবশ্যই তাকে আমার কাছে (ফিরিয়ে) আনবে, তবে হাঁ, কোথাও যদি তোমরা নিজেরাই (সমস্যায়) পরিবেষ্টিত হয়ে যাও, তাহলে তা হবে ভিনু কথা, অতপর যখন তারা তার কাছে তাদের অংগীকার নিয়ে হাযির হলো, তখন সে বললো (মনে রেখো), আমরা যা কিছু (এখানে) বললাম, আল্লাহ তায়ালাই তার ওপর চড়ান্ত কর্মবিধায়ক (হয়ে থাকনে)।

٦٦ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ مَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُرْجِ فَلَيًّا أَتُوْهُ مَوْثَقُهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلُ

৬৭. সে বললো, হে আমার ছেলেরা, তোমরা (মিসরে পৌছে কিন্তু) এক দরজা দিয়ে (নগরে) প্রবেশ করো না, বরং ভিনু ভিনু দরজা দিয়ে প্রবেশ করবে (তাহলে তোমাদের দেখে কারো মনে হিংসা সৃষ্টি হবে না. মনে রাখবে), আল্লাহর ইচ্ছার বিরুদ্ধে আমি তোমাদের কোনো কাজেই আসবো না: বিধান (জারি করার কাজ) তথু पाद्वार जारानात करनारे (निरिष्ठ); आमि (त्रर्तना) जांतरे وَعَلَيْهِ فَلْيَتُوكَّل وَ وَعَلَيْهِ فَلْيَتُوكَّل الم ওপর নির্ভর করি, (প্রতিটি মানুষ) যারা ভরসা করে তাদের উচিত শুধু আল্লাহর ওপরই ভরসা করা।

٢٠ وَقَالَ يُبَنِيُّ لَا تَلْهُلُوْا مِنْ ا بَابِ وَّاحِدٍ وَّادْهُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ١ وَمَا ٱغْنِيْ عَنْكُرْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ﴿ إِنِ الْحُكْرُ الْهُتَوَكِّلُوْنَ

৬৮. অতপর তারা মিসরে ঠিক সেভাবেই প্রবেশ করলো যেভাবে তাদের পিতা তাদের আদেশ করেছিলো: (মূলত) আল্লাহ তায়ালার ইচ্ছার সামনে এটা কেনোই কাজে আসেনি, তবে (হ্যাঁ,) এটা ছিলো ইয়াকুবের মনের একটি धातना, या तम पूर्व करत्र निराहित्ना, जनमारे तम हित्ना অত্যন্ত জ্ঞানী ব্যক্তি, কেননা তাকে আমিই জ্ঞান শিক্ষা দিয়েছিলাম, যদিও অধিকাংশ মানুষ তা জানে না।

٨٠ وَلَمَّا نَعَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُرْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضْيهَا ، وَإِنَّهُ لَنُوْ عِلْمِ لِّهَا عَلَّهٰنهُ وَلَكِيَّ أَكْثُو النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ عَ



কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ

৬৯. যখন তারা ইউসুফের কাছে হাযির হলো, তখন সে তার (নিজ) ভাইকে তার পাশে (বসার) জায়গা দিলো এবং (একান্তে) তাকে বললো (দেখো), আমি (কিন্তু) তোমার ভাই (ইউসুফ), এরা (এ যাবত তোমার আমার সাথে) যা কিছু করে আসছে তার জন্যে তুমি মনে কোনো কষ্ট নিয়ো না।

٦٩ وَلَمًّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أُوَّى إِلَيْهِ أَهَاهُ قَالَ إِنِّي آَ أَنَا أَهُوكَ فَلَا تَبْتَئِسُ بِهَا كَانُوْ إِيَعْهَلُوْنَ

৭০. অতপর সে যখন তাদের রসদপত্রের ব্যবস্থা চড়ান্ত করে দিলো, তখন (সবার অজান্তে) তার ভাইয়ের মালপত্রের মধ্যে সে একটি (রাজকীয়) পানপাত্র রেখে দিলো, (এরপর যখন তারা মালপত্র নিয়ে রওনা দিলো, তখন পেছন থেকে) একজন আহ্বানকারী ডাক দিয়ে বললো, হে কাফেলার যাত্রীদল (শাহী পানপাত্র চরি হয়ে গেছে), আর নিসন্দেহে তোমরাই হচ্ছো চোর!

٠٠ فَلَمًّا جَمَّزَهُرْ بِجَهَازِهِرْ جَعَلَ السِّقَايَةَ نِيْ رَحْلِ اَخِيْدِ ثُمَّ اَنَّنَ مُؤَذِّنَّ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ إِنَّكُمْ لَسْرِقُونَ

৭১. ওরা তাদের দিকে (একটু) এগিয়ে এলো এবং জিজ্ঞেস করলো, কি জিনিস যা তোমরা হারিয়েছো?

١٤ قَالُوْ ا وَ أَقْبَلُوْ ا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقَلُونَ

৭২, তারা বললো, আমরা রাজার পানপাত্র হারিয়েছি, যে ব্যক্তিই তা (খুঁজে) আনবে, (তার জন্যে) উট বোঝাই (রসদ দেয়ার ব্যবস্থা) থাকবে এবং আমিই তার যামিন থাকবো।

٢٢ قَالُوْا نَفْقِلُ صُوَاعَ الْهَلِكِ وَلِهَنْ جَاءً بِهِ مِبْلُ بَعِيْرِ وَّأَنَا بِهِ زَعِيْرٌ

৭৩. (একথা ওনে) তারা বললো, আল্লাহর শপথ, তোমরা ভালো করেই একথা জ্বানো, আমরা (তোমাদের) দেশে কোনো রকম বিপর্যয় সৃষ্টি করতে আসিনি, (উপরস্তু) আমরা চোরও নই!

٤٣ قَالُوْ ا تَاللَّهِ لَقَنْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِلَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سُرِقِيْنَ

৭৪. লোকেরা বললো, যদি (তল্পাশি নেয়ার পর) তোমরা মিথ্যাবাদী (প্রমাণিত) হও তাহলে (যে চুরি করেছে) তার শান্তি কি হবেং

٤٣ قَالُوا فَهَا جَزَاوُهُ إِنْ كُنْتُر كُلِيِينَ

प्यः अप्राय पर्णाणा, अप्र नााखः (হা) यात मान-সामानात وَعُونَ فِي رَحْلِهِ فَهُو كَالُواْ جَزَاوُهُ مَن وَجِنَ فِي رَحْلِهِ فَهُو كَالُواْ جَزَاوُهُ مَن وَجِنَ فِي رَحْلِهِ فَهُو كَالَةٍ اللهِ اللهِ عَالَمُ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ ال নিজের শান্তি: আমরা তো (আমাদের শরীয়তে) যালেমদের এভাবেই শান্তি দিয়ে থাকি।

جَزَّاؤُةً ، كَنْ لِكَ نَجْزَى الظُّلِمِينَ

৭৬. তারপর সে তার (নিম্ক) ভাইয়ের মালপত্রের (তল্লাশির) আগে ওদের মালপত্র দিয়েই (তল্পাশি) করতে শুরু করলো, অতপর তার ভাইয়ের মালপত্রের ভেতর থেকে সে (চরি হয়ে যাওয়া রাজকীয় পানপাত্র)-টি বের করে আনলো: এভাবেই ইউসুফের জন্যে আমি (তার ডাইকে কাছে রাখার) একটা কৌশল শিক্ষা দিয়েছিলাম; নতুবা (মিসরের) রাজার আইন অনুযায়ী সে তার ভাইকে (চাইলেই) রেখে দিতে পারতো না, হাাঁ, আল্লাহ তায়ালা যদি চান তা ভিনু কথা: আমি যাকেই চাই তার মর্যাদা বাডিয়ে দেই: প্রত্যেক জ্ঞানবান ব্যক্তির ওপরেই রয়েছেন অধিকতর জ্ঞানী সন্তা (যা বৃহত্তর জ্ঞানকেই পরিবেষ্টন করে আছে)।

٤٦ فَبَنَا إِلَوْعِيَتِهِرْ قَبْلَ وَعَاءِ ٱخِيْدِ ثُرَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ آخِيْدِ ، كَنْ لِكَ كِنْ نَا ليَوْسُفَ ء مَا كَانَ ليَأْخُلَ إَخَاهُ في ديْن الْهَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءُ اللَّهُ وَنُوْفَعُ دَرَجْتٍ مَّن تَشَاءً ، وَنَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمِ عَلِيْمَ

৭৭. (যখন বন্ধুটি পাওয়া গেলো তখন) তারা বললো, যদি সে চুরি مُ مَا وَ اَنْ يَسْرِقُ فَقَنْ سَرَقَ أَحُ لَدُ مِن ﴿ عَلَوْ اَ إِنْ يَسْرِقُ فَقَنْ سَرَقَ أَحُ لَدُ مِن ﴿ حَدِيثُ عَلَاهُ عَلَا اللهِ عَالَهُ اللهِ عَلَا اللهِ عَلَى اللهِ ع তার ভাইও তো চুরি করেছিলো, (নিজের সম্পর্কে এতো জঘন্য কথা জনেও) কিন্তু ইউসুফ প্রকৃত ব্যাপার নিজের মনে গোপন করেই রাখলো, (আসন ঘটনা যা) তা কখনো তাদের কাছে كَهُرَ عَالَ أَنْتُر شُرٌّ مَّكَانًا عَ وَاللَّهُ أَعْلَرُ بِمَا क्वरला अार्पत कार्ष (अल्बें) त्र वलाला, (आया पान वर्ष अर्क्कें) त्र वलाला, राजभारमत অবস্থা তো আরো নিক্ট, তোমরা (আমাদের সম্পর্কে) যা বলছো সে ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালাই ভালো জানেন।

قَبْلُ ء فَاسَرَّهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَرْ يُبْرِهَا تَصِفُونَ ৭৮. তারা বললো, হে আযীয, এ ব্যক্তি (যাকে তুমি ধরে রেখেছো), অবশ্যই তার পিতা (বেঁচে) আছে, সে অতিশয় বৃদ্ধ, সূতরাং এর জায়গায় তুমি আমাদের একজনকে রেখে দাও, আমরা দেখতে পাচ্ছি (আসলেই) তুমি মহানৃভব ব্যক্তিদের একজন।

4 عَالُوا يَايَّهَا الْعَزِيْرُ إِنَّ لَهُ ابًا شَيْخًا
 كَبِيْرًا نَخُلْ اَحَلَنَا مَكَانَهُ ع إِنَّا نَزْلِكَ مِنَ
 الْهُحُسِنِيْنَ

৭৯. সে বললো, আল্লাহ তায়ালা আমাকে ক্ষমা করুন, যার কাছে আমরা আমাদের (হারানো) মাল পেয়েছি, তাকে বাদ দিয়ে অন্য কাউকে রেখে দেবো কি করে? এমনটি করলে আমরা তো যালেমদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যারো! 44 قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ تَّاْعُنَ إِلَّا مَنْ وَّجَنْنَا مَتَاعَنَا عِنْلَةً لا إِنَّا إِذًا لَّظْلِمُوْنَ ع

৮০. অতপর তারা যখন তার কাছ থেকে (সম্পূর্ণ) নিরাশ হয়ে পড়লো, তখন তারা একাকী বসে নিজেদের মধ্যে সলাপরামর্শ করতে লাগলো, তাদের মধ্যে যে বয়সে বড়ো (ছিলো) সে বললো, (আচ্ছা) তোমরা কি এটা জানো না, তোমাদের (বৃদ্ধ) পিতা তোমাদের কাছ থেকে আল্লাহর নামে অংগীকার নিয়েছিলেন, তা ছাড়া এর আগে ইউসুফের ব্যাপারেও তোমরা (কতো) বড়ো অন্যায় করেছিলে! আমি তো কোনো অবস্থায়ই এদেশ থেকে নড়বো না, যতোক্ষণ না আমার পিতা আমাকে তেমন কিছু করতে অনুমতি দেন, কিংবা আল্লাহ তায়ালা আমার জন্যে (কোনো একটা) ব্যবস্থা করে না দেন, (মূলত) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সর্বোত্তম ফরুসালাকারী।

৮১. (সে তাদের আরো বললো,) তোমরা বরং তোমাদের পিতার কাছেই ফিরে যাও এবং তাকে বলো, হে আমাদের পিতা, তোমার ছেলে (বাদশাহর পানপাত্র) চুরি করেছে, আমরা তো সেটুকুই বর্ণনা করি যা আমরা জানতে পেরেছি, আমরা তো গায়বের (খবর) সংরক্ষণ করতে পারি না।

أَرْجِعُوْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّا الل

৮২. তোমার বিশ্বাস না হলে যে জ্বনপদে আমরা অবস্থান করেছি তাদের কাছে জিজ্ঞেস করো এবং সে কাফেলাকেও (জিজ্ঞেস করো), যাদের সাপে আমরা (একত্রে) এসেছি; আমরা আসলেই সত্য কথা বলছি।

مُ وَشَئلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيْرَ
 الَّتِيَّ آَقْبَلْنَا فِيْهَا وَإِنَّا لَصْرِقُونَ

৮৩. (দেশে ফিরে পিতাকে তারা এভাবেই বললো, কথাগুলো গুনে) সে বললো, (আসলে) তোমাদের মন তোমাদের (সুবিধার) জন্যে একটা কথা বানিয়ে নিয়েছে (এবং তাই তোমরা আমাকে বলছো), অতপর উত্তম সবরই হচ্ছে (একমাত্র পন্থা); আল্লাহ তারালার (অনুগ্রহ) থেকে এটা খুব দূরে নয়, তিনি হয়তো ওদের সবাইকে একত্রেই (একদিন) আমার কাছে এনে হাযির করবেন; অবশ্যই আল্লাহ তারালা সর্বজ্ঞ ও (প্রজ্ঞাময়) কুশলী।

٨٣ قَالَ بَلْ سَوَّلَىنَ لَكُرْ اَنْفُسُكُرْ اَمْرًا طَّ فَصَبُرٌ جَمِيْلٌ طَعَسَى اللَّهُ اَنْ يَّاْتِينِيْ بِهِرْ جَمِيْعًا طِالَّهُ هُوَ الْعَلِيْرُ الْحَكِيْرُ

৮৪. সে ওদের কাছ থেকে মুখ ফিরিয়ে নিলো এবং (নিজে নিজে) বললো, হায় ইউসুফ (তৃমি এখন কোখায়)! শোকের কারণে (কাঁদতে কাঁদতে) তার চোখ সাদা হয়ে গেছে, সে নিজেও ছিলো মনোকষ্টে দারুণভাবে ক্লিষ্ট!

٨٣ وَتَوَلَّى عَنْهُر وَقَالَ يَّاسَفَٰى عَلَٰى يُوسُفَ وَابْيَضَّ عَيْنَهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْرٌ

৮৫. (পিতার এ অবস্থা দেখে) তারা বললো, আল্লাহর কসম, তুমি তো দেখছি শুধু ইউসুফের কথাই মনে করে যাবে, যতোক্ষণ পর্যন্ত না তার চিন্তায় তুমি মুমূর্ব্ হয়ে পড়বে, কিংবা (তার চিন্তায়) তুমি ধ্বংস হয়ে যাবে।

 40 قَالُوا تَاللّٰهِ تَفْتَوُ ا تَنْكُرُ يُوسُفَ حَتَّر تَكُونَ حَرَمًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ

৮৬. সে (আরো) বললো, আমি তো আমার (অসহনীয়) যন্ত্রণা, আমার দুন্ডিস্তা (-জনিত অভিযোগ) আল্লাহ

٨٦ قَالَ إِنَّهَا ٓ اَشْكُوا بَثِّينَ وَمُزْلِينَ إِلَى

১২ সূরা ইউসুফ

মন্যিল ৩

62

| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৩ ওয়ামা উবার্রিউ |
|---|---|
| তায়ালার কাছেই নিবেদন করি এবং আমি নিজে আল্লাহর কাছ থেকে (তার কথাবার্তা) যতোটুকু জানি, তোমরা তা জানো না। | اللهِ واعلير مِن اللهِ ما لا تعلمون |
| ৮৭. হে আমার ছেলেরা, তোমরা (মিসরে) যাও এবং ইউসুফ ও তার ভাইকে (আরেকবার) তালাশ করো, | المعبري العبوا فللسموا بن يرسف |
| (তালাশ করার সময়) তোমরা আল্লাহ তায়ালার রহমত থেকে মোটেই নিরাশ হয়ো না; আল্লাহ তায়ালার রহমত | وَ اَخِيْدِ وَ لَا تَايْنَسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ ، إِنَّهُ لَا يَايْنَسُ مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْا الْكُفِرُوْنَ |
| থেকে তো শুধু কাফেররাই নিরাশ হতে পারে। | |
| ৮৮. তারা যখন পুনরায় তার কাছে হাযির হলো, তখন তারা বললো, হে আযীয, দুর্ভিক্ষ আমাদের পরিবার-পরিজনকে বিপন্ন করে দিয়েছে, (এবার) আমরা | - |
| সামান্য কিছু পুঁজি এনেছি, (এটা গ্রহণ করে) আমাদের | مَسَّنَا وَٱهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَةٍ |
| (পূর্ণমাত্রায়) রসদ দান করার ব্যবস্থা করুন, (মূল্য হিসেবে নয়) বরং এটা আমাদের (বিপন্ন মনে করে) দান করুন; যারা দান ধয়রাত করে আল্লাহ তায়ালা তাদের | فَأَوْنِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَرَّقْ عَلَيْنَا ﴿ إِنَّ اللَّهَ |
| পুরস্কৃত করেন। | يَجْزِي الْهُتَصَلِّقِيْنَ |
| ৮৯. (ভাইদের এ আকৃতি শুনে) সে বললো, তোমরা কি জানো, তোমরা ইউসুফ ও তার ভাইয়ের সাথে কি | ٨٩ قَالَ هَلْ عَلِيْتُمْ مًّا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ |
| আচরণ করেছিলে, কতো মূর্য ছিলে তোমরা তখন! | وَ أَخِيْهِ إِذْ أَنْتُر جُهِلُونَ |
| ৯০. তারা বলে ওঠলো, তুমিই কি ইউসুফ! সে বললো, হাঁ, আমিই ইউসুফ, আর এ হচ্ছে আমার ভাই, আল্লাহ | ٩٠ قَالُوْ آ ءَالِنَّكَ لَاَنْتَ يُوسُفُ ﴿ قَالَ أَنَا |
| তায়ালা আমাদের ওপর অনেক মেহেরবানী করেছেন, | يُوْسُفُ وَهٰنَا ۚ أَخِي ﴿ قَلْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ١ |
| (সত্যি কথা হছে,) যে কোনো ব্যক্তিই তাকওয়া ও ধৈর্যের আচরণ করে (সে যেন জেনে রাখে), আল্লাহ তায়ালা | إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرُ فَانَّ اللَّهَ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ |
| কখনোই নেককার মানুষের পাওনা বিনষ্ট করেন না। | الْهُحْسِنِينَ |
| ৯১. ওরা বললো, আল্লাহর কসম, (আজ) আল্লাহ তায়ালা নিশ্চয়ই তোমাকে আমাদের ওপর প্রাধান্য দিয়েছেন, | ٩١ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَلْ أَثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ |
| আমরা (আসলেই) অপরাধী! | كُنَّا لَخُطِئِيْنَ |
| ৯২. (ভাইদের কথা শুনে) সে বললো, আজ তোমাদের ওপর (আমার) কোনো অভিযোগ নেই; আল্লাহ তায়ালা | ٩٢ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُرُ الْيَوْمَ ﴿ يَغْفِرُ |
| তোমাদের ক্ষমা করে দিন, (কেননা) তিনি সব দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু! | اللَّهُ لَكُمْ (وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيِينَ |
| ৯৩. (এখন) তোমরা (বরং) আমার গায়ের এ জামাটি নিয়ে যাও এবং একে আমার পিতার মুখমন্ডলের ওপর | ٩٣ إِذْهَبُوْا بِقَبِيْصِيْ هٰنَا فَٱلْقُوْهُ عَلَى وَجْدِ |
| রেখো, (দেখবে) তিনি তার দৃষ্টিশক্তি ফিরে পাবেন, অতপর তোমরা তোমাদের সমস্ত পরিবার পরিজনদের নিয়ে আমার কাছে চলে এসো। | اَبِیْ یَاْتِ بَصِیْرًا ۶ وَاْتُونِیْ بِاَهْلِکُرْ اَجْبَعِیْنَ ۶ |
| ৯৪. (এদিকে) এ কাফেলা যখন (মিসর থেকে) বেরিয়ে পড়লো, তখন তাদের পিতা (আপুনজনদের উদ্দেশ করে) | ٩٣ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي |
| বলতে লাগলো, তোমরা যদি (সত্যিই) আমাকে অপ্রকৃতিস্থ মনে না করো তাহলে (আমি তোমাদের বলবো)– আমি যেন (চারদিকে) ইউসুফের গন্ধই পাল্ছি। | لَاَهِنُ رِيْعَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَيِّنُوْنِ |
| ৯৫. (ওখানে যারা হাযির ছিলো) তারা বললো, আল্লাহর | ٩٥ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلْلِكَ الْقَرِيْرِ |
| কে ে (ওবানে বারা থাবর ছেলা) তারা বললো, আল্লাহর কসম, তুমি তো (এখনো) তোমার (সে) পুরনো বিভ্রান্তিতেই পড়ে রয়েছো। | |
| কসম, তুমি তো (এখনো) তোমার (সে) পুরনো | ٩٦ فَلَيًّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيْرُ ٱلْقَٰعِهُ عَلَى وَجْهِم |

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ খবর নিয়ে) সুসংবাদবাহক তার কাছে উপস্থিত হলো مَ اللَّهُ مُ اللَّهُ اللَّاللَّ اللَّهُ খবর নিয়ে) সুসংবাদবাহক তার কাছে উপস্থিত হলো রাখলো, তখন সাথে সাথেই সে দেখার মতো অবস্থায় أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ফিরে গেলো, (উৎফুল্ল হয়ে) সে বললো, আমি কি তোমাদের একথা বলিনি, আমি আল্লাহর কাছ থেকে (এমন) কিছ জানি যা তোমরা জানো না : ৯৭. তারা বললো, হে আমাদের পিতা (আমরা অপরাধ ٩٤ قَالُوْ إِيَّا بَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَّا إِنَّا كُنَّا করেছি), তুমি (আল্লাহর কাছে) আমাদের গুনাহের ক্ষমা প্রার্থনা করো. সত্যিই আমরা বড়ো গুনাহগার! ٩٨ قَالَ سَوْنَ ٱسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۚ ﴿ إِنَّهُ هُوَ ৯৮. সে বললো, অচিরেই আমি তোমাদের (শুনাহ মার্জনার) জন্যে আমার মালিকের কাছে দোয়া করবো. الْغَفُورُ الرَّحِيْرِ অবশ্যই তিনি ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল। ৯৯. অতপর যখন তারা (সবাই) ইউস্ফের কাছে ٩٩ فَلَيًّا دَخَلُوْا عَلَى يُوسُفَ أُونَى الَيْه (মিসরে) চলে এলো, তখন সে তার পিতামাতাকে (সম্মানের সাথে) নিজের পাশে স্থান দিলো এবং (তাদের أَبُوَيْدُ وَقَالَ ادْعُلُوا مصر أَنْ شَاءُ اللَّهُ أَمنينَ ا স্বাগত জানিয়ে) সে বললো, তোমরা সবাই (এবার) আল্রাহর ইচ্ছায় নিরাপদে মিসরে প্রবেশ করো। ١٠٠ وَرَفَعَ ٱبَوَيْدِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَدَّ ১০০. (সেখানে যাওয়ার পর) সে তার পিতামাতাকে (সম্মানের) উচ্চাসনে বসালো এবং ওরা সবাই (দরবারের سُجَّاً اع وَقَالَ يَأْبَسِ مٰنَا تَأْوِيْلُ رُءْيَاى নিয়ম অনুযায়ী) তার প্রতি (সম্মানের) সাজদা করলো (এ ইউসুফ তার স্বপ্লের কথা মনে করলো.) সে বললো. হে আমার পিতা, এ হচ্ছে আমার ইতিপর্বেকার সে স্বপ্রের مِنْ قَبْلُ زِ قُلْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ء وَقَلْ أَحْسَى ব্যাখ্যা, (আজ) আমার মালিক যা সত্যে পরিণত بِيْ إِذْ أَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُرْ مِّنَ করেছেন: তিনি আমাকে জেল থেকে বের করে আমার

ওপর অনুগ্রহ করেছেন, তিনি তোমাদের মরুভূমির (আরেক প্রান্ত) থেকে (রাজদরবারে এনে) তোমাদের ওপরও মেহেরবানী করেছেন, (এমনকি) শয়তান আমার এবং আমার ভাইদের মধ্যেকার সম্পর্ক খারাপ করার (গভীর চক্রান্ত করার) পরও (তিনি দয়া করেছেন): অবশ্যই আমার মালিক যা ইচ্ছা করেন, তা (অত্যস্ত) নিপুণতার সাথে আঞ্জাম দেন: নিশ্চয়ই তিনি সর্বজ্ঞ ও প্রবল প্রজ্ঞাময় ।

ا ا رَبِّ قَلْ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيْلِ الْإَهَادِيْنِ عِ فَاطِرَ السَّوْنِ وَالْأَرْضِ تِ أَنْتَ وَلِيٌّ فِي النُّاثِيَا وَالْأَخِرَةِ ع تُوَفِّنِي مُسْلِمًا وْ ٱلْجَفْنِي بِالصَّلِحِينَ

الْبَنُو مِن أَبَعْنِ أَنْ تَّزَغَ الشَّيْطَي بَيْنِي

وَبَيْنَ اغْوَتَى مَ انَّ رَبِّي لَطِيْفٌ لَّهَا يَشَاءُ م

انَّهُ مُوَ الْعَلَيْمُ الْحَكَيْمُ

মন্যিল ৩

১০১. হে (আমার) মালিক, তুমি আমাকে (যেমনি) রাষ্ট্র ক্ষমতা দান করেছো, (তেমনি) স্বপ্লের ব্যাখ্যা (-সহ দুনিয়ার আরো বহু বিষয় আসয়) শিক্ষা দিয়েছো, হে আসমানসমূহ ও যমীনের স্রষ্টা, দুনিয়া এবং আখেরাতে তুমিই আমার একমাত্র অভিভাবক, একজন অনুগত বানা হিসেবে তুমি আমার মৃত্যু দিয়ো এবং (পরকালে) আমাকে নেককার মানুষদের দলে শামিল করো।

> ١٠٢ ذٰلِكَ مِنْ أَثْبَاء الْغَيْبِ نُوْمِيْهِ الْيُكَ ع وَمَا كُنْتَ لَنَيْهِمْ إِذْ أَجْبَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ ؠؘؠٛٛػؙۅٛڹؘ

১০২. (হে নবী.) এ (যে ইউসুফের কাহিনী- যা আমি তোমাকে শোনালাম, তা) হচ্ছে (তোমার) গায়বের ঘটনাসমূহের একটি, এটা আমি তোমাকে ওহীর মাধ্যমেই জানিয়েছি, (নতুবা) তারা (যখন ইউসুফের বিরুদ্ধে) তাদের পরিকল্পনা চড়ান্ত করছিলো এবং তারা যখন তার বিৰুদ্ধে যাবতীয় ষড়যন্ত্ৰ চালিয়ে যাচ্ছিলো, তখন তমি তো সেখানে হাযির ছিলে না!

১২ সুরা ইউসুফ

১০৩. (এ সন্তেও) অধিকাংশ মানুষের অবস্থা হচ্ছে যতোই هُوَ مُرَسُن بِمُؤْمِنِينَ ١٠٣ وَمَا ٱكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَسُت بِمُؤْمِنِينَ ١٠٣ وَمَا ٱكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَسُت بِمُؤْمِنِينَ মতো নয় । ১০৪. (অথচ) তুমি তো তাদের কাছ থেকে এ (দাওয়াত

١٠٢ وَمَا تَسْنَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ آجْرٍ ﴿ إِنْ هُوَ إِلَّا

(ক্ষমাহীন) উদাসীন থাকে।

ও তাবলীগের) জন্যে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করছো না! তা ছাড়া এ (কোরআন) দুনিয়া জাহানের (অধিবাসীদের) জন্যে একটি নসীহত ছাড়া অন্য কিছু তো নয়।

ذِكْرٌ لِّلْعُلَمِيْنَ ع

১০৫. এ আকাশমন্তলী ও যমীনে (আল্লাহর কুদরতের) কতো (বিপুল) পরিমাণ নিদর্শন রয়েছে, যার ওপর তারা (প্রতিনিয়ত) অতিবাহন করে, কিন্তু তারা তার প্রতি

١٠٥ وكَايِّنْ مِّنْ أَيَةٍ فِي السَّمُوٰسِ وَالْأَرْضِ يَهُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُرْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ

১০৬. তাদের অধিকাংশ মানুষই আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনে না, তারা তো (আল্লাহ তায়ালার সাথে) শেরেকও করতে থাকে।

١٠٦ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْرُ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْرُ مُّثْرِكُونَ

১০৭. তবে তারা কি এ বিষয়ে নির্ভয় হয়ে গেছে যে, (হঠাৎ করে একদিন) তাদের ওপর আল্পাহ তারালার (সর্বগ্রাসী) আযাবের শান্তি কিংবা আকন্মিক কেয়ামত আপতিত হবে, অথচ তারা (তা) জানতেও পারবে না!

اَفَامِنُوا اَن تَاْتِيمُر عَاشِيةً مِّن عَناابِ
 اللهِ اَوْ تَاْتِيمُرُ السَّاعَةُ بَفْتَةً وَّمُر لاَ يَشْعُرُونَ

১০৮. (হে নবী, এদের) তৃমি বলে দাও, এ হচ্ছে আমার পথ, আমি মানুষদের আল্লাহর দিকে আহ্বান করি; আমি ও আমার অনুসারীরা পূর্ণাংগ সচেতনতার সাথেই (এ পথে) আহ্বান জানাই; আল্লাহ তায়ালা মহান, পবিত্র এবং আমি কখনো মোশরেকদের অন্তর্ভক্ত নই।

أَكُنُ هٰنِ إِ سَبِيلِي آَ اَدْعُوْ آَ اِلَى اللّٰهِ عَنْ عَلٰى بَصِيْرَةً إِنَا وَمَنِ النَّبَعَنِي ﴿ وَسُبْحَى اللهِ وَمَنَ النَّبَعَنِي ﴿ وَسُبْحَى اللهِ وَمَا إَلَى اللهِ وَمَا اللهِ وَمَا إِنَّا مِنَ الْهُشْرِكِيْنَ
 اللهِ وَمَا آَانًا مِنَ الْهُشْرِكِيْنَ

১০৯. তোমার আগে বিভিন্ন জনপদে যতো নবী আমি পাঠিয়েছিলাম, তারা সবাই (তোমার মতো) মানুষই ছিলো, আমি তাদের ওপর ওহী নাযিল করতাম; এরা কি আমার যমীন পরিভ্রমণ করেনি, (করলে অবশ্যই) তারা দেখতে পেতো, এদের পূর্বেকার লোকদের কি (ভয়াবহ) পরিণাম হয়েছিলো; (সত্য কথা হচ্ছে,) আখেরাতের ঠিকানা তাদের জন্যই কল্যাণময় যারা (নবীদের পথে চলে) তাকওয়া অবলম্বন করেছে; (পূর্ববর্তী মানুষদের পরিণাম দেখেও) তোমরা কি কিছু অনুধাবন করবে নাঃ

109 وَمَا آرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا تُوْمِيْ إلَيْهِرْ مِّنْ آهْلِ الْقُرِٰى ﴿ أَفَلَرْ يَسِيْرُوا فِي الْاَيْمِرْ مِّنْ أَهْلِ الْقُرْى ﴿ أَفَلَرْ يَسِيْرُوا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِرْ ﴿ وَلَنَ الْالْخِرَةِ خَيْرٌ لِللَّذِيْنَ النَّقُولُونَ الْاَخِرَةِ خَيْرٌ لِللَّذِيْنَ النَّقُولُونَ

১১০. (আগেও মানুষ নবীদের মিধ্যা সাব্যস্ত করতো,)
এমনকি নবীরা (কখনো কখনো) নিরাশ হয়ে যেতো,
তারা মনে করতো, তাদের (বৃঝি সাহায্যের প্রতিশ্রুতিতে)
মিধ্যাবাদী সাব্যস্ত করা হবে, তখন (হঠাৎ করেই) তাদের
কাছে আমার সাহায্য এসে হাযির হলো, (তখন) আমি
যাকে চাইলাম তাকেই তথু (আযাব থেকে) নাজাত
দিলাম; আর না-ফরমান জাতির ওপর থেকে আমার
আযাব কখনোই রোধ হবে না।

١١٠ مَنَّى إِذَا اسْتَايْئَسَ الرَّسُلُ وَظَنُّوْآ
 أَنَّمُرْ قَنْ كُنِبُوْ إِمَاءَمُرْ نَصُرُنَا لا فَنُجِّى مَنْ
 نَّشَاءً عَ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْرِ الْمُجْرِمِيْنَ

১১১. অবশ্যই (অতীতের) জাতিসমূহের কাহিনীতে জ্ঞানবান মানুষদের জন্যে অনেক শিক্ষা রয়েছে; (কোরআনের) এসব কথা কোনো মনগড়া গল্প নর, বরং এ হচ্ছে তারই স্পষ্ট সমর্থন যে আসমানী কেতাব তাদের কাছে আগে থেকেই মজুদ রয়েছে, বরং (তাতে রয়েছে) প্রতিটি (মৌলিক) বিষয়ের বিস্তারিত (ও সঠিক) ব্যাখ্যা, (সর্বোপরি এতে রয়েছে) ঈমানদার মানুষদের জন্যে হেদায়াত ও রহমত।

۱۱۱ لَقَلْ كَانَ فِي قَصَصِهِر عِبْرَةً لِّكُولِي الْأَلْبَابِ ، مَا كَانَ حَرِيْهُا يَّفْتَرٰى وَلَكِن تَصْرِيْقًا يَّفْتَرٰى وَلَكِن تَصْرِيْقَ الَّذِي وَتَفْصِيْلَ كُلِّ تَصْرِيْقَ الَّذِي وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَمُنْوَنَ عَ وَرَحْهَةً لِتَقْوْ إِيَّوْمِنُونَ عَ



সুরা আরু রা'দ মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ৪৩. রুক ৬ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةُ الرَّعْنِ مَنَّنَيَّةً أَيَاتُ : ٣٣ رُكُوعُ :٢ بِسْرِ اللهِ الرَّحْسٰ الرَّحِيْر

১. আলিফ লা-ম মী-ম রা। এগুলো হচ্ছে (আল্লাহর) কেতাবের আয়াত এবং যা কিছ তোমার মালিকের পদ থেকে তোমার ওপর নাযিল করা হয়েছে তা (সবই) সত্য, যদিও অধিকাংশ মানুষই এর ওপর ঈমান আনে না।

ا المر ن تِلْكَ أيتُ الْكِتْبِ ، وَالَّذِي أَنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِيُّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

২. (তিনিই আল্লাহ তায়ালা) যিনি আসমানসমূহকে কোনোরকম স্তম্ভ ছাডাই উঁচু করে রেখেছেন, অতপর তিনি আরশে সমাসীন হলেন এবং তিনি সুরুজ ও চাঁদকে (একটি নিয়মের) অধীন করে রেখেছেন: (গ্রহ তারকার) সব কিছুই একটি সুনির্দিষ্ট সময়সীমা পর্যস্ত আবর্তন করতে থাকবে: তিনিই সব কাজের (পরিকল্পনা ও) নিয়ন্ত্রণ করেন, তিনি (তাঁর কুদরতের) সব নিদর্শন (তোমাদের কাছে) খুলে খুলে বর্ণনা করেন, যাতে করে তোমরা (কেয়ামতের দিন) তোমাদের মালিকের সাথে দেখা করার বিষয়টি নিশ্চিতভাবে মেনে নিতে পারো।

٢ أَللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّبُوٰتِ بِغَيْر عَهَدٍ تَرَوْنَهَا ثُرَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّبْسَ وَالْقَهَرَ اللَّهِ لِيَجْرِي لِإَجَلِ مُسَمَّى اللَّهُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْأَيْتِ لَعَلَّكُمْ بِلْقَاء رَبُّكُم ^ تُوْقنُونَ

৩. তিনিই (তোমাদের জন্য) এ যমীন বিস্তৃত করে দিয়েছেন এবং তাতে পাহাড় ও নদী বানিয়ে দিয়েছেন: (সেখানে) আরো রয়েছে রং বেরংয়ের ফল ফুল- তাও তিনি বানিয়েছেন (আবার) জ্বোড়ায় জ্বোড়ায়, তিনি দিনকে রাত (-এর পোশাক) দ্বারা আচ্ছাদিত করেন: অবশ্যই এসব কিছুর মাঝে তাদের জন্যে প্রচুর নিদর্শন রয়েছে যারা (সৃষ্টি প্রক্রিয়া সম্পর্কে) চিন্তা ভাবনা করে।

٣ وَهُوَ الَّذِي مَلَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهُرًّا ﴿ وَمِنْ كُلِّ الثَّهَرْتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ع انَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيٰتِ لِّقَوْمُ يَّتَفَكَّوُنَ

৪. যমীনে (আবার) রয়েছে বিভিন্ন অংশ, কোথাও (রয়েছে) আংগ্তরের বাগান, (কোথাও আবার) শস্যক্ষেত্র, কোথাও (আছে) খেজুর, তাও (কিছু হয়তো) এক শির বিশিষ্ট (একটার সাথে আরেকটা জড়ানো), আবার (কোনোটি আছে) একাধিক শির বিশিষ্ট, (অথচ এর সব কয়টিতে) একই পানি পান করানো হয়। তা সত্ত্তেও আমি স্বাদে (গদ্ধে) এক ফলকে আরেক ফলের ওপর প্রাধান্য দিয়ে থাকি, (আসলে) এসব কিছুর মধ্যে সে সম্প্রদায়ের জন্যে বহু নিদর্শন রয়েছে যারা বোধশক্তিসম্পন্ন।

٣ وَفِي الْأَرْضِ قِطَعُ مُتَجُورِتُ وَجَنْتُ مِنْ أَعْنَابِ وَّزُرُعُ وَّنْخِيْلُ مِنْوَانُ وَّغَيْرُ مِنْوَانِ يُّسْقَى بِهَاءً وَّاحِدٍ نِن وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضِ فِي الْأَكُلِ وَ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيْسِ لِّقُوْ) يَّعْقِلُوْنَ

৫. (হে নবী.) যদি (কোনো কথার ওপর) তোমার আশ্বর্যানিত হতে হয়, তাহলে আশ্বর্য (হবার মতো বিষয়) মাটিতে পরিণত হবার পরও কি আমরা আবার নতন الَّذِينَ كَفَرُواْ بِرَبِّهِمْ عَ وَأُولَئِكَ الْأَغْلُلُ अीवन नां कत्रतार धता राष्ट्र रामव राज गांत्र गांत्र মালিককে অস্বীকার করে, এরা হচ্ছে সেসব লোক যাদের গলদেশে (কেয়ামতের দিন) লৌহ শৃংখল থাকবে, এরাই হ النَّارِ হ وُاولَئِكَ أَصْعَبُ النَّارِ হ وَالْكِكَ أَصْعَبُ النَّارِ ع হচ্ছে জাহানামের অধিবাসী, সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

٥ وَانْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاذَا كُنَّا مُرْ فَيْهَا خَلِلُونَ

১৩ সুরা আর রা'দ

280

পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ

৬. এরা তোমার কাছে (হেদায়াতের) কল্যাণের আগে (আযাবের) অকল্যাণই তুরান্বিত করতে চায়, অথচ এদের আগে (আযাব নাযিলের) বহু দষ্টান্ত গত হয়ে গেছে: এতে সন্দেহ নেই, তোমার মালিক মানুষের ওপর তাদের (वहिवंश) यून्य जारवुष जारनत श्रिक क्यानीन, किषु و و و و كال वहिवंश) यून्य जारवुष जारनत श्रीक क्यानीन, किषु তোমার মালিক শান্তিদানের বেলায়ও কঠোর।

7 وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَلْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُهِمُ الْمَثُلِّتُ وَإِنَّ رَبُّكَ رَبُّكَ لَشَهِيْنُ الْعَقَابِ

নাযিল হয় নাঃ (তুমি তাদের বলো.) তুমি তো হচ্ছো (আযাবের) একজন সতর্ককারী (রস্লমাত্র)! আর প্রত্যেক জাতির জন্যেই (এমনি) একজন পথপ্রদর্শক আছে।

أَيَةً مِّنَ رَّبِّهِ ﴿ إِنَّهَا آنَتَ مُنْذِرٌّ وَّلِكُلِّ قَوْ] مَادٍع

৮. প্রতিটি গর্ভবতী নারী (তার ভেতরে) যা কিছু বহন করে চলেছে এবং (তার) জরায়ু (সম্ভানের) যা কিছু বাডায় কমায়, তার সবই আল্লাহ তায়ালা জানেন: তাঁর কাছে প্রতিটি বস্তরই একটি পরিমাণ নির্দিষ্ট করা আছে।

٨ اَللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ ٱنْثَى وَمَا تَغِيْضُ الْأَرْهَامُ وَمَا تَوْدَادُ ﴿ وَكُلَّ هَيْءٍ عِنْكَةً بِيِقْكَ ار

৯. তিনি দেখা অদেখা সব কিছই জানেন, তিনি মহান, তিনি সর্বোচ্চ মর্যাদাবান।

٩ علرُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْهُتَعَالِ

১০. তোমাদের মাঝে কোনো লোক আন্তে কথা বলক কিংবা জোরে বলুক, কেউ রাতের (অন্ধকারে) আত্মগোপন করে থাকুক কিংবা দিনে (আলোর মাঝে) বিচরণ করুক, এগুলো সবই তাঁর কাছে সমান।

١٠ سَوَاءً مِّنْكُرْ مِّنْ أَسَرٍّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ مُو مُسْتَخُفٍ ۖ بِالَّيْلِ وَسَارِبٍّ بِالنَّهَارِ

১১. (মানুষ যে অবস্থায়ই থাকুক না কেন.) তার জন্যে আগে পেছনে একের পর এক (আসা ফেরেশতার) দল নিয়োজিত থাকে, তারা আল্লাহর আদেশে তাকে হেফাযত করে: আল্লাহ তায়ালা কখনো কোনো জাতির অবস্থার পরিবর্তন করেন না. যতোক্ষণ না তারা নিজেরা নিজেদের অবস্থা পরিবর্তন করে: আল্লাহ তায়ালা যখন কোনো জাতির জন্যে কোনো দুঃসময়ের এরাদা করেন তখন তা রদ করার কেউই থাকে না– না তিনি ব্যতীত ওদের কোনো অভিভাবক থাকতে পারে!

١١ لَهُ مُعَقِّبْتُ مِنْ بَيْنِ يَنَيْدِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُوْنَهُ مِنْ آمْرِ اللَّهِ ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٌ عَتَّى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِرْ ﴿ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوَّءًا فَلَا مَرَدٌّ لَهٌ ، وَمَا لَهُرْ مِّنْ دُوْنِهِ مِنْ وَالِ

১২. তিনিই তোমাদের বিদ্যুতের (চমক) দেখান, তা (মানুষের মনে যেমন) ভয়ের (সঞ্চার করে), তেমনি বহু আশারও (সঞ্চার করে) এবং তিনিই (পানি) সঞ্চায়িনী মেঘমালা সৃষ্টি করেন।

١٢ هُوَ الَّذِي يُرِيْكُرُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَهَعًا ويُنْشِيُ السَّعَابَ الثِّقَالَ ع

১৩. আর (মেঘের নিষ্প্রাণ) গর্জন (যেমন) তাঁর সপ্রশংস মহিমা ও পবিত্রতা ঘোষণা করে, তেমনি (সপ্রাণ) ফেরেশতারাও তাঁর ভয়ে তাঁর মাহাত্ম্য ঘোষণা করে, তিনি (আকাশ থেকে) বজ্রপাত করান, অতপর যার ওপর চান তার ওপরই তিনি তা পাঠান, অথচ এ (না-ফরমান) ব্যক্তিরা (এতো কিছু সন্ত্রেও) আল্লাহ তায়ালার (অস্তিত্বের) প্রশ্নে বিতর্কে লিপ্ত হয়, তিনি তাঁর কৌশলে (ও মাহাত্ম্যে) অনেক বডো:

١٣ وَيُسَبِّعُ الرَّعْلُ بِحَمْلِةٍ وَالْمَلَّئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهِ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِيَّ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَاءُ وَهُرْ يُجَادِلُونَ في الله ع وَهُوَ شَنِيْلُ الْبِحَالِ ،

১৪. (তাই) তাঁকে ডাকাই হচ্ছে সঠিক (পম্বা); যারা তাঁকে বাদ দিয়ে অন্যদের ডাকে, তারা (জানে, তাদের

١٢ لَهُ مَعْوَةً الْحَقِّ ، وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ

মন্যিল ৩

১৩ সুরা আরু রা'দ

সাহ্বদা

دُوْنه لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُرْ بِشَيْء إلَّا كَبَاسِط كَفَّيْدِ إِلَى الْهَاءِ ليَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالغهِ ط وَمَا دُعَاءُ الْكُفِرِيْنَ إِلَّا فِي ضَلَلٍ

(এমনিভাবে) নিম্ফল (ঘুরতে থাকে)। ১৫. আসমানসমহ ও যমীনে যা কিছু আছে তারা সবাই ইচ্ছায় হোক অনিচ্ছায় হোক. আল্লাহ তায়ালাকে সাজদা করে চলেছে. (এমনকি) সকাল সন্ধ্যায় তাদের

ছায়াওলোও (তাদের মালিককে সাজদা করছে)।

ডাকে এরা) কখনোই সাডা দেবে না. (এদের উদাহরণ

10 وَلِلَّهِ يَسْجُلُ مَنْ فِي السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكُوْمًا وَّظِلْلُهُمْ بِالْغُدُو وَالْإَصَال

১৬. (হে নবী, এদের) তুমি জিজ্ঞেস করো, আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক কে? তুমি (তাদের) বলো, একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, (আরো) বলো, তোমরা কেন আল্লাহকে বাদ দিয়ে অপরকে নিজেদের অভিভাবকরপে গ্রহণ করছো, যারা নিজেদের কোনো লাভ লোকসান করতে সক্ষম নয়: তুমি (এদের) জিজ্ঞেস করো, কখনো অন্ধ ও চক্ষমান ব্যক্তি কি সমান হয়, কিংবা অন্ধকার ও আলো কি কখনো সমান হয়? অথবা এরা আল্লাহর সাথে এমন কিছকে শরীক করে নিয়েছে যে, তারা আল্লাহর সষ্টির মতো (কিছু) বানিয়ে দিয়েছে, যার কারণে সৃষ্টির ব্যাপারটি তাদের কাছে সন্দেহের বিষয়ে পরিণত হয়ে গেছে: তুমি তাদের বলো, যাবতীয় সৃষ্টির স্রষ্টা একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, তিনি একক ও মহাপরাক্রমশালী!

١٦ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰكِ وَالْأَرْضِ وَ قُل اللهُ وَقُلْ أَفَاتَّخَلْتُمْ مِّنْ دُوْنِهِ أَوْلِياءً لَا يَهْلُكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلا ضَرًّا ء قُلْ هَلْ يَسْتَوى الْأَعْلَى وَالْبَصِيْرُ لا أَأْ هَلْ تَسْتَوى الظُّلُّمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ ۚ أَٱ مَعَلُوْا لِلَّهِ شُرَكَّاءَ عَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِرْ ، قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

১৭. আল্লাহ তায়ালা আসমান থেকে পানি বর্ষণ করলেন. এরপর (নদী নালা ও তার) উপত্যকাসমূহ তাদের নিজ নিজ পরিমাণ অনুযায়ী প্রাবিত হলো, অতপর এ প্রাবন (আবর্জনার) ফেনা বহন করে (ওপরে) নিয়ে এলো: (আবার) যারা অলংকার ও যন্ত্রপাতি বানানোর জন্যে (ধাতুকে) আগুনে উত্তপ্ত করে, (তখনো) কিন্তু তাতে এক ধরনের আবর্জনা ফেনা (হয়ে) ওপরে ওঠে আসে: এভাবেই আল্লাহ তায়ালা হক ও বাতিলের উদাহরণ দিয়ে থাকেন, অতপর (আবর্জনার) ফেনা এমনিই বিফলে চলে যায় এবং (পানি-) যা মানুষের (প্রচুর) উপকারে আসে তা যমীনেই থেকে যায়: আল্লাহ তায়ালা (মানুষদের জন্যে) এভাবেই (সুন্দর) দৃষ্টান্তসমূহ পেশ করে থাকেন:

١٤ أَنْزَلَ مِنَ السَّهَاءِ مَاءً فَسَالَتُ ٱوْدِيَةً ' بِقَنَ رِهَا فَاحْتَهَلَ السَّيْلُ زَبَنًّا رَّابِيًّا ۗ وَمِيًّا يُوْقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتَغَاءَ مِلْيَةِ أَوْ مَتَاعِ زَبَنَّ مِّثْلُهُ ﴿ كَنَٰ لِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقُّ وَالْبَاطِلَ مُ فَاَمًّا الزَّابَلُ فَيَنْهَبُ جُفَاءً ، وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَهْكُثُ في الْأَرْضِ وَكُنْ لِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْإَمْثَالَ وَ

১৮, যারা তাদের মালিকের এ আহ্বানে সাডা দেয় তাদের জন্যে মহা কল্যাণ রয়েছে; আর যারা তাঁর জন্যে সাড়া দেয় না (কেয়ামতের দিন তাদের অবস্থা হবে) তাদের পৃথিবীতে যা কিছু (সম্পদ) আছে তা সমস্ত যদি তাদের নিজেদের (অধিকারে) থাকতো, তার সাথে যদি থাকতে আরো সমপরিমাণ (ধন সম্পদ), তাহলেও (আযাব থেকে বাঁচার জন্যে) তারা তা (নির্দ্বিধায়) মুক্তিপণ হিসেবে আদায় করে দিতো: এরাই হবে সেসব (হতভাগ্য) মানুষ যাদের হিসাব হবে (খুব) কঠিন, জাহান্নামই হবে ওদের নিবাস; কতো নিকৃষ্ট সে নিবাস!

١٨ لِلَّانِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِرُ الْحُسْنَى ٢٠ وَالَّذِيْنَ لَرْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُرْمًّا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَةً مَعَدٌّ لَافْتَدَوْ إِلَّهِ ا أُولَٰئِكَ لَهُرْ سُوَّءُ الْحسَابِ لَهُ وَمَاْوَهُرْ جَهَنْرُ وَبِئْسَ إِلْهِهَادُع

১৯. সে ব্যক্তি কি জানে যে, তোমার মালিকের পক্ষ থেকে যা কিছু তোমার ওপর নাযিল করা হয়েছে তা একান্তই الْحَقُّ كَنَىٰ مُو اَعْمَى مَ إِنَّهَا يَتَنَكَّرُ أُولُوا अविक् الْحَقُّ كَنَى مُو اَعْمَى مَ إِنَّهَا يَتَنَكَّرُ أُولُوا দেখেও) অন্ধ (হয়ে থাকে); একমাত্র বোধশক্তিসম্পন্ন ব্যক্তিরাই তথ উপদেশ গ্রহণ করতে পারে.

١٩ أَفَهَنْ يَعْلَمُ ٱنَّهَا ٱنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْإَلْبَابِ لا

১৩ সূরা আর্ রা'দ

289

পারা ১৩ ওয়ামা উবার্রিউ

২০. (এরা সেসব লোক) যারা আল্লাহর সাথে (আনুগত্যের) চুক্তি মেনে চলে এবং কখনো প্রতিশ্রুতি ভংগ করে না.

٢٠ الَّذِيْنَ يُوْنُوْنَ بِعَهْرِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُفُوْنَ اللَّهِ وَلَا يَنْقُفُوْنَ اللَّهِ وَلَا يَنْقُفُوْنَ الْمِيْثَاقَ لا

২১. এবং আল্লাহ তায়ালা যেসব (মানবীয়) সম্পর্ক অক্ষুণ্ন রাখতে আদেশ করেছেন যারা তা অক্ষুণ্ন রেখে চলে, যারা নিজেদের মালিককে ভয় করে, আরো যারা ভয় করে (কেয়ামতের) কঠোর হিসাবকে;

২২. যারা তাদের মালিকের সন্তুষ্টি লাভের জন্যে (বিপদ মিসবতে) ধৈর্য ধারণ করে, যথারীতি নামায কায়েম করে, আমি তাদের যে রেযেক দিয়েছি তা থেকে স্পরা (আমারই পথে) খরচ করে- গোপনে কিংবা প্রকাশ্যে, যারা (নিজেদের) ভালো (কাজ) দ্বারা মন্দ্র (কাজ) দূরীভূত করে, তাদের জন্যেই রয়েছে আখেরাতের শুভ পরিণাম,

٢٢ وَالَّذِيْنَ مَبَرُوا الْتِغَاءُ وَجْدِ رَبِّهِرُ وَالْنِيْنَ مَبَرُوا الْتِغَاءُ وَجْدِ رَبِّهِرُ وَالْقَامُوا الصَّلُوةَ وَانْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنُمُ شَرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَنْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ السَّيِّئَةَ السَّيِّئَةَ السَّيِئَةَ السَّيِّئَةَ السَّيِّئَةَ السَّيِّئَةَ السَّيِّئَةَ السَّيِئَة السَّيِّئَة السَّيْئَة السَّيْئِة السَّيْئَة السَّيْنَة السَّيْئَة السَّيْئِة السَّيْئَة السَّيْئَة السَّيْئَة السَائِقَة السَّيْئَة السَّيْئَة السَّيْئَة السَائِق السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَائِق السَائِق السَائِق السَّيْئَة السَائِق السَّلَة السَائِق السَائِق السَائِق السَائِق السَائِق السَائِق السَائ

২৩. (সে তো হচ্ছে) এক চিরস্থায়ী জান্লাড, সেখানে তারা নিজেরা (যেমনি) প্রবেশ করবে, (তেমনি) তাদের পিতামাতা, তাদের স্বামী-ব্রী ও সন্তান সন্ততিদের মধ্যে যারা নেক কাজ করেছে তারাও (গ্রবেশ করবে), জান্লাতের প্রতিটি দরজা দিয়ে (তাদের অভ্যর্থনা জানানোর জ্বন্যে) ফেরেশতারাও তাদের সাথে ভেতরে প্রবেশ করবে,

٣٣ جَنْتُ عَنْنٍ يَّنْ هُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ الْمَلَّذِيَةُ الْمَلَّذِيَةُ الْمَلَّذِيَةُ الْمَلَّذِيَةُ الْمَلَّذِيَّةً اللَّهِ مَا الْمَلَّذِيَةُ اللَّهِ مَا اللَّهُ اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللللِّ

২৪. (তারা বলবে, আজ) তোমাদের ওপর শান্তি বর্ষিত হোক, (দুনিয়ার জীবনে) তোমরা যে পরিমাণ ধৈর্য ধারণ করেছো (এটা হচ্ছে তার বিনিময়), আখেরাতের ঘরটি কতো উৎকৃষ্ট।

٣٢ سَلْرٌ عَلَيْكُرْ بِهَا مَبَوْتُرْ فَنِعْرَ عُقْبَى النَّادِ

২৫. (অপরদিকে) যারা আল্পাহর সাথে (এবাদাতের)
প্রতিশ্রুতিতে আবদ্ধ হওয়ার পর তা ভংগ করে, যেসব
সম্পর্ক আল্পাহ তায়ালা অক্ষুণ্ন রাখতে বলেছেন তা ছিন্ন
করে, (সর্বোপরি আল্পাহর) যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করে
বেড়ায়, তাদের জন্যে রয়েছে (আল্পাহ তায়ালার)
অভিশাপ এবং তাদের জন্যেই রয়েছে (আথেরাতে) নিকৃষ্ট
আবাস।

٢٥ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُونَ عَهْنَ اللَّهِ مِنَ ابَعْدِ
مِيْثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا اَمْرَ اللَّهُ بِهِ اَنْ يُّوْمَلَ
وَيُغْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ لا أُولَٰئِكَ لَهُمُرُ
اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ شُوَّ النَّالِ ا

২৬. আল্লাহ তায়ালা যার জীবনোপকরণে প্রশস্ততা দিতে চান তাই করেন, আবার যাকে তিনি চান তার রেযেক সংকীর্ণ করে দেন; আর এরা এ বৈষয়িক জীবনের ধন সম্পদের ব্যাপারেই বেশী উল্লুসিত হয়, অথচ আখেরাতের তুলনায় এ পার্থিব জীবন (কিছু ক্ষণস্থায়ী) জিনিস ছাড়া আর কিছুই হবে না।

٢٦ اَللَّهُ يَبْسُمُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْهِرُ ا وَفَرِحُوْا بِالْحَيْوةِ النَّنْيَا ، وَمَا الْحَيْوةُ النَّنْيَا فِي الْأَخِرَةِ إِلَّا مَتَاعً ع

২৭. (হে নবী,) যারা (তোমার নবুওত) অস্বীকার করে
তারা বলে, তার মালিকের কাছ থেকে তার ওপর কোনো
(অলৌকিক) নিদর্শন পাঠানো হলো না কেন; তুমি
(এদের) বলো, আল্লাহ তায়ালা যাকে ইচ্ছা তাকে বিপ্রাম্ভ করেন এবং তাঁর কাছে পৌঁছার পথ তিনি তাকেই দেখান যে (নিষ্ঠার সাথে তাঁর) অভিমুখী হয়,

لَا وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا اَنْزِلَ عَلَيْهِ اَيَدُّ مِّنْ رَّبِّهِ ، قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِئَ آلِيَهِ مَنْ اَنَابَ مِدِع

২৮. যারা আল্লাহর ওপর ঈমান আনে এবং আল্লাহর যেকেরে তাদের অন্তকরণ প্রশান্ত হয়, জেনে রেখো, আল্লাহর যেকেরই অন্তরসমূহকে প্রশান্ত করে; ٢٨ اَلَّذِيْنَ أَمَنُوا وَتَطْهَئِنَ قُلُوبُهُر بِنِكْرِ
 اللهِ اللهِ تَطْهَئِنَ الْقُلُوبُ

১৩ সূরা আর্ রা'দ

₹8₽

২৯. যারা ঈমান আনে এবং নেক কাজ করে, তাদের জন্যে রয়েছে যাবতীয় সুখবর ও শুভ পরিণাম।

٢٩ ٱلَّن يْنَ أُمُّنُوا وَعَهلُوا الصَّلَّحُسِ طُوْبِي لَهُرْ وَحُسْنُ مَأْبِ وَ

৩০. (অতীতে যেমন আমি নবী রসূল পাঠিয়েছি) তেমনি مُن الله أَرْسَلُنكَ فِي أُمَّةٍ قَلْ خَلَت مِن اللهُ اللهُ عَلَى مَن اللهُ اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى ال করে আমি তোমাকেও একটি জাতির কাছে (নবী করে) পাঠিয়েছি, এর আগে অনেক কয়টি জাতি অতিবাহিত হয়ে গেছে. (নবী পাঠিয়েছি) যাতে করে তোমরা তাদের কাছে সে (কেতাব) পড়ে শোনাতে পারো, যা আমি তোমার ওপর ওহী করে পাঠিয়েছি. (এ সন্তেও) তারা অনম্ভ করুণাময় আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে: তুমি তাদের বলো, তিনিই আমার মালিক, তিনি ছাড়া আর দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই, (সর্বাবস্থায়) আমি তাঁর ওপরই ভরসা করি, তাঁর দিকেই (আমার) প্রত্যাবর্তন।

تَبْلِهَا ۚ أُمَرُّ لِّتَتْلُوا عَلَيْهِرُ الَّذِي ۗ أَوْهَيْنَا ۗ إِلَيْكَ وَهُرْ يَكْفُرُونَ بِالرَّهُنِّي ، قُلْ هُوَ رَبِّي ٧ُ اللهُ اللهِ مُوَع عَلَيْه تَوكَّلْتُ وَالَيْه مَتَاب

৩১. যদি পাহাড়সমূহকে কোরআন (-এর অলৌকিক ক্ষমতা) দিয়ে গতিশীল করে দেয়া হতো, কিংবা যমীন বিদীর্ণ করে দেয়া হতো, অথবা তার মাধ্যমে যদি মরা মানুষকে দিয়ে কথা বলানো যেতো (তবুও এ না-ফরমান মানুষগুলো ঈমান আনতো না), কিছু আসমান যমীনের সমস্ত ক্ষমতা একমাত্র তাঁরই (হাতে): অতপর ঈমানদাররা কি (একথা জেনে) নিরাশ হয়ে পড়লো যে. আল্লাথ ভায়ালা চাহলে সমগ্র মানব সম্ভানকেই হেদায়াত مُوِينًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفُرُواْ تُصِيْبُهُمُ দিতে পারতেন; এভাবে যারা কুফুরের পথ অবলম্বন مُوِينًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفُرُواْ تُصِيْبُهُمُ করেছে তাদের কোনো না কোনো বিপর্যয় ঘটতেই থাকবে, কিংবা তাদের (নিজেদের ওপর না হলেও) আশপাশে তা আপতিত হতে থাকবে, যে পর্যন্ত না (তাদের জন্য) আল্লাহ তায়ালার চূড়ান্ত (আযাবের) ওয়াদা সমাগত হয়: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা কখনোই প্ৰতিশ্ৰুতি ভংগ করেন না।

٣١ وَلَوْ أَنَّ قُرْأَنًا سُيِّرَسْ بِهِ الْعِبَالُ أَوْ مُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّرَ بِهِ الْمَوْتَى ، بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَهِيْعًا وَ أَفَلَمْ يَايْنُسِ الَّذِينَ أَمنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَنَى النَّاسَ بِهَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِرْ مَتَّى يَأْتَىَ وَعُلُّ اللَّهِ ءَ أَنَّ اللَّهَ لَا يُخْلَفُ الْهِيْعَادَع

৩২. (६ नवी,) তোমার আগেও नवी त्रम्लाम्त श्रेषा विष्ठ عَبُلِك के गरे وَلَقَالِ اسْتُهُوٰى بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِك कर. (६ नवी,) করা হয়েছে, অতপর আমি (প্রথমে) তাদের (কিছু) অবকাশ দিয়েছি যারা কুফরী করেছে, এরপর আমি তাদের কঠোর শাস্তি দিয়েছি: কতো কঠোর ছিলো আমার আযাব!

فَأَمْلَيْسُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّرٌ أَخَانَتُهُمْ عَ فَكَيْفَ كَانَ عَقَابِ

৩৩, যিনি প্রত্যেকটি মানুষের ওপর তাঁর দট্টি প্রতিষ্ঠিত রাখেন যে, সে মানুষটি কি পরিমাণ অর্জন করেছে (তিনি কি করে অন্যদের মতো হবেন)? ওরা আল্লাহর সাথে শরীক করে রেখেছে: (হে নবী, এদের) তুমি বলো, ওদের নাম তো তোমরা বলো, অথবা তোমরা কি আল্লাহ তায়ালাকে এমন (শরীকদের) সম্পর্কে খবর দিতে চাচ্ছো. এ যমীনে যাকে তিনি জানেনই না অথবা এটা কি তাদের কোনো মুখের কথা মাত্র? (আসল কথা হচ্ছে) যারা কুফরী করেছে তাদের চোখে তাদের এই প্রতারণাকে শোভন করে দেয়া হয়েছে, আল্লাহ তায়ালার পথ (পাওয়া) থেকে তাদের অবরোধ করে রাখা হয়েছে: আল্লাহ তায়ালা যাকে গোমরাহ করেন তার জন্যে পথের দিশা দেখানোর (আসলেই) কে**উ নেই**।

٣٣ أَفَهَنْ هُوَ قَالِمٍ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ ا بِهَا كَسَبَتْ ع وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَّاءً ، قُلْ سَهُّوهُمْ ، أَا تُنَبِّنُونَهُ بِهَا لَا يَعْلَرُ فِي الْأَرْضِ أَا بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ، بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيثَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَمُنَّوْا عَنِ السَّبِيلِ ، وَمَنْ يَضْلِلِ اللَّهُ فَهَا لَهُ مِنْ هَاد

৩৪. এদের জন্যে দুনিয়ার জীবনেও অনেক শাস্তি আছে. তবে আখেরাতে যে আযাব রয়েছে তা তো নিসন্দেহে বেশী কঠোর, (মূলত) আল্লাহ (-এর ক্রোধ) থেকে তাদের বাঁচাবার মতো কেউ নেই।

٣٣ لَمُرْعَنَابٌ فِي الْحَيْوةِ النَّانْيَا وَلَعَلَابُ الْأَخِرَةِ أَشَقُّ } وَمَا لَهُرْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقِ

পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ

৩৫. পরহেযগার লোকদের সাথে যে জান্লাতের ওয়াদা করা হয়েছে তার উদাহরণ হচ্ছে (যেমন একটি বাগান), তার নীচে দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হচ্ছে: তার ফলফলারি এবং সে বাগানের (গাছসমূহের) ছায়াসমূহও চিরস্থায়ী: এসবই হচ্ছে তাদের পরিণাম, যারা (দুনিয়ায়) তাকওয়ার জীবন অতিবাহিত করেছে, কাফেরদের পরিণাম হচ্ছে (জাহান্নামের) আগুন।

٣٥ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي ۚ وُعِنَ الْمُتَّقُونَ ، تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْإِنْهُو ، أَكُلُهَا دَأَهُمْ وَّظلُّهَا ، تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا يَـٰ وَّعُقْبَى الْكَفِرِيْنَ النَّارُ

৩৬. (হে নবী.) যাদের আমি (ইতিপূর্বে) কেতাব দান করেছিলাম তারা তোমার ওপর যা কিছু নাযিল করা হয়েছে তাতে বেশী আনন্দ অনুভব করে. এই দলে কিছু লোক এমনও আছে যারা এর কিছু অংশ অস্বীকার করে: তুমি (এদের) বলো, আমাকে তো আল্লাহর এবাদাত করার আদেশ দেয়া হয়েছে, আমি (আরো) আদিষ্ট হয়েছি যেন আমি তাঁর সাথে কোনো রকম শরীক না করি: আমি তোমাদের সবাইকে তাঁর দিকেই আহবান করছি, তাঁর দিকেই (আমার) প্রত্যাবর্তন।

٣٦ وَالَّذِينَ أَتَيْنُهُمُ الْكِتْبَ يَفْرَهُونَ بِمَّآ أَنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُتَّنكِرُ بَعْضَهُ م قُلْ إِنَّهَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُلَ اللَّهُ وَلَا أَشْرِكَ بِهِ ﴿ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَاٰبِ

৩৭. (হে নবী.) আমি এভাবেই এ বিধান (তোমার ওপর) আরবী ভাষায় নাযিল করেছি (যেন তুমি সহজেই বুঝতে পারো): তোমার কাছে (আল্লাহর শব্দ থেকে) যে জ্ঞান এসেছে তা সত্ত্বেও যদি তুমি তাদের খেয়াল খুলীর অনুসরণ করো. তাহলে আল্লাহর সামনে তোমার কোনোই সাহায্যকারী থাকবে না– না থাকবে (তোমাকে) বাঁচাবার মতো কেউ!

٣٠ وكَنْ لِكَ أَنْزَلْناهُ مُكْمًا عَرَبِيًّا ، وَلَئِنِ اتَّبَعْتُ أَهْوَا عَمُرْ بَعْلَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ لا مَا لَكَ مِنَ اللهِ مِنْ وَلِيِّ وَلَا وَاقِعَ

৩৮. (হে নবী.) তোমার আগেও আমি (অনেক) রসূল পাঠিয়েছি এবং তাদের জন্যে আমি স্ত্রী এবং সম্ভান সম্ভতিও বানিয়েছিলাম; কোনো রসূলের কাজ এটা নয় যে, আল্লাহর অনুমতি ছাড়া একটি আয়াতও সে পেশ করবে: (মূলত) প্রতিটি যুগের জ্বন্যেই (ছিলো এক) একটি কেতাব।

٣٨ وَلَقَلُ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وُّذُرِّيَّةً ، وَمَا كَانَ لِرَسُولِ أَنْ يَّأْتِيَ بِأَيَةٍ إِلَّا بِاذْنِ اللَّهِ ۚ لِكُلِّ اَجَلَ كِتَابُّ

৩৯. আর (সেসব কিছুর মাঝে থেকে) আল্লাহ তায়ালা যা কিছু চান তা বাতিল করে দেন এবং যা কিছু ইচ্ছা করেন তা (পরবর্তী যুগের জন্যে) বহাল রেখে দেন, মূল গ্রন্থ তো তাঁর কাছেই (মজুদ) থাকে।

٣٩ يَهْعُوا اللَّهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ كُمْ وَعِنْكَ ۗ أمَّ الْكتب

৪০. (হে নবী.) যে (আযাবের) ওয়াদা আমি এদের সাথে করি তার কিছু অংশ যদি আমি তোমাকে দেখিয়ে দেই. কিংবা (তার আগেই) যদি আমি তোমাকে মৃত্যু দেই, তাহলে (তুমি উদ্বিগ্ন হয়ো না, কেননা,) তোমার কাজ হচ্ছে (আমার কথা) পৌছে দেয়া, আর আমার কাজ হচ্ছে (তাদের কাছ থেকে তার যথাযথ) হিসাব (বুঝে) নেয়া।

٣٠ وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِنُهُمْ أَوْ نَتُوَفِّينَّكَ فَانَّهَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا الْحسَابُ

৪১. এরা কি দেখতে পায় না যে, আমি (তাদের) যমীন চার দিক থেকে (আন্তে আন্তে) সংকৃচিত করে আনছি: আল্লাহ তায়ালা (যা চান সে) আদেশ জারি করেন, তাঁর সে আদেশ উল্টে দেয়ার কেউই নেই, তিনি হিসাব গ্রহণে খুবই তৎপর।

٣١ أَوَ لَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْإَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ ٱطْرَافِهَا ، وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ، وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

৪২. যারা এদের আগে অতিবাহিত হয়ে গেছে তারা (বড়ো বড়ো) ধোকা প্রতারণার আশ্রয় নিয়েছিলো, কিন্তু مَيِيعًا ، يَعْلَرُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسِ ، यावजीय कना-कोनन एठा आल्लार ठायानाव कत्नाई; ، مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْس

১৩ সুরা আরু রা'দ

٣٢ وَقَلْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ

(কেননা) তিনিই জানেন প্রতিটি ব্যক্তি (কখন) কি অর্জন করে: অচিরেই কাফেররা জানতে পারবে আখেরাতের (সুখ) নিবাস কাদের জন্যে (তৈরী করে রাখা হয়েছে)।

وَسَيَعْلَمُ الْكُفُّرُ لِهَيْ عُقْبَى اللَّارِ

৪৩. (হে নবী.) যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে. (তারা) বলে, তুমি নবী নও, তুমি ওদের বলে দাও, আমার এবং তোমাদের মাঝে (আমার নবুওতের সাক্ষ্যের ব্যাপারে) আল্লাহর সাক্ষ্যই যথেষ্ট, উপরস্ত যার কাছে (পূর্ববর্তী) কেতাবের জ্ঞান আছে (সেও এ ব্যাপারে সচেতন)।

٣٣ وَيَقُوْلُ الَّذِينَ كَفَرُوْا لَشَيَّ مُوْسَلًا ، تُلْ كَفَٰى بِاللَّهِ شَهِيْلًا ۚ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُرُ ٧ وَمَنْ عنْنَ عَلْمُ الْكتبع

সুরা ইবরাহীম

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ৫২, রুকু ৭ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةً إِبْرَ اهِيْسَ مَكِّيَةً اَيَاسَ : ۵۲ رُكُوْعَ بِشرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ

১. আলিফ, লা-ম, রা। (এ কোরআন) এমন এক গ্রন্থ, যা আমি তোমার ওপর নাযিল করেছি, যাতে করে তুমি (এর ঘারা) এমন মানুষদের তাদের মালিকের আদেশক্রমে (জাহেলিয়াতের) যাবতীয় অন্ধকার থেকে (ঈমানের) আলোতে বের করে আনতে পারো, তাঁর পথে, যিনি, মহাপরাক্রমশালী ও যাবতীয় প্রশংসা পাবার যোগ্য!

ا الرُّ مَا كِتُبُّ أَنْزَلْنَهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُهُ إِلَى النَّوْرِ لَا بِإِذْنِ رَبِّهِرُ إِلَى مِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ لا

২. সে আল্লাহর (পথে), যাঁর জন্যে আকাশমন্ডলী ও যমীনে যা কিছু আছে সব কিছু (নিবেদিত), যারা (এ সত্তেও আল্লাহকে) অস্বীকার করে তাদের জন্যে কঠিন শান্তি (রয়েছে)।

٢ اللهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّهُوٰ بِي وَمَا فِي الْأَرْضِ ﴿ وَوَيْلُ لِلْكَفِرِيْنَ مِنْ عَنَابِ

৩. (এ শান্তি তাদের জন্যে) যারা পার্থিব জীবনকে পরকালীন জীবনের ওপর প্রাধান্য দেয়, (মানুষদের) আল্লাহর (সহজ সরল) পথ থেকে দূরে সরিয়ে রাখতে চায়, (সর্বোপরি) এ (পথ)-টাকে (নিজেদের খেয়াল খুশীমতো) বাঁকা করতে চায়, এরাই হচ্ছে সেসব লোক যারা মারাত্মক গোমরাহীতে নিমজ্জিত রয়েছে।

٣ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيْوِةَ النَّانْيَا عَلَى الْاخِرَةِ وَيَصُرُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ وَيَبْعُوْنَهَا عِوَجًا ، أُولَٰئِكَ فِي شَلْلِ البَعِيْدِ

 আমি কোনো নবীই এমন পাঠাইনি, যে (নবী) তার জাতির (মাতৃ)-ভাষায় (আমার বাণী তাদের কাছে পৌছায়নি), যাতে করে সে তাদের কাছে (আমার إلْيَدِينَ لَهُرْ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْرِي अायाज) পরিষ্কার করে বুঝিয়ে বলতে পারে; অতপর ويَهْرِي আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে গোমরাহ করেন, আবার যাকে তিনি চান তাকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন: তিনি মহাপরাক্রমশালী ও মহাকুশলী।

٣ وَمَا ٓ أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلِ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ مَنْ يَشَاءً ، وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ

৫. আমি মৃসাকে অবশ্যই আমার নিদর্শনসমূহ দিয়ে (ভার জাত্যি কাছে) পাঠিয়েছি, তোমার জাতিকে জাহেলিয়াতের অন্ধকার থেকে (ঈমানের) আলোতে বের করে নিয়ে এসে এবং তুমি তাদের আল্লাহর (অনুগ্রহের বিশেষ) দিনগুলোর কথা স্বরণ করাও: যারা একান্ত ধৈর্যশীল ও পরম কতজ্ঞতাপরায়ণ, তাদের জন্যে এ (ঘটনার) মাঝে (অনেক) নিদর্শন রয়েছে।

4 وَلَقَلْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِالْيَتِنَا آنَ أَعْرِجُ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النَّوْرِ لَهُ وَذَكِّرْهُمْرُ بِأَيْرِ اللَّهِ ، إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَا يَتِ لِكُلِّ مَبَّارٍ

৬. মৃসা যখন তার জাতিকে বলেছিলো, তোমরা তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার নেয়ামতসমূহের কথা

٣ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْهَةَ الله

স্থরণ করো, (বিশেষ করে) যখন তিনি তোমাদের ফেরাউনের সম্প্রদায় থেকে মক্তি দিলেন, যারা তোমাদের কঠোর শাস্তি দিতো, তোমাদের ছেলেদের হত্যা করতো, তোমাদের মেয়েদের জীবিত রাখতো: তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে তোমাদের জন্যে এতে বডো ধরনের একটি পরীক্ষা নিহিত ছিলো।

عَلَيْكُرْ إِذْ إَنْجُكُرْ مِّنْ إِلِّ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُ سُوْءَ الْعَلَابِ وَيُنَابِّحُونَ أَبْنَاءَكُيرُ ويَسْتَعْيُونَ نِسَاءَكُمْ ، وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءً مِنْ

৭. (মরণ করো.) যখন তোমাদের মালিক ঘোষণা দিলেন. د وَإِذْ تَاذَنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ كَإِيْنَ تَكُمْ اللهِ अभागक त्यायणा ।भरणन, مُرَيُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ كَإِيْنَ تَكُمْ اللهِ अभा करता مَا وَإِذْ تَاذَنَّ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ كَإِيْنَ تَكُمْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ عَلَيْهُ তাহলে আমি অবশ্যই তোমাদের জ্বন্যে (এ অনুগ্রহ) আরো বাডিয়ে দেবো, আর যদি তোমরা (একে) অস্বীকার করো (তাহলে জেনে রেখো), আমার আযাব বড়োই কঠিন!

وَلَئِنْ كَفَوْتُر إِنَّ عَنَ ابِي لَشَهِينًا

৮. মুসা (তার জাতিকে আরো) বলেছিলো, তোমরা এবং পথিবীর অন্য সব মানুষ একত্রেও যদি (আল্লাহর নেয়ামত) অস্বীকার করো (তাতে আল্লাহর কিছুই ক্ষতি হবে না), কেননা আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন যাবতীয় অভাব অভিযোগ থেকে মুক্ত, প্রশংসার দাবীদার।

٨ وَقَالَ مُوْسَى إِنْ تَكْفُرُوْا ٱنْتُمْرُ وَمَنْ فِي الْأَرْض جَبِيْعًا لا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ مَبِيْلً

৯. তোমাদের কাছে কি তোমাদের আগেকার লোকদের সংবাদ এসে পৌছুয়নি- নৃহ, আদ, সামৃদ সম্প্রদায় ও তাদের পরবর্তী জাতিসমহের: যাদের (বিবরণ) আল্লাহ তায়ালা ছাডা আর কেউই জানে না: (সবার কাছেই) তাদের নবীরা আমার আয়াতসমহ নিয়ে এসেছিলো, অতপর তারা তাদের নিজেদের হাত তাদের মুখে রেখে (কথা বলতে তাদের) বাধা দিতো এবং বলতো, যা (কিছু প্রগাম) নিয়ে তুমি আমাদের কাছে প্রেরিত হয়েছোঁ, তা আমরা (স্পষ্টত) অস্বীকার করি, (তা ছাড়া) যে (দ্বীনের) দিকে তুমি আমাদের ডাকছো সে বিষয়েও আমরা সন্দেহে নিমজ্জিত আছি।

٩ أَلَيرُ يَأْتَكُم نَبَوُّ اللَّانِينَ مِنْ قَبْلُكُم قَوْمً \tilde{k} نُوْحِ وَّعَادِ وَّتُهُوْدَ لَا وَ النَّنِيَ مِنْ اَ بَعْنِ مِرْ لَا النَّامِ وَ النَّامِ وَ النَّامِ وَالنَّ يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ وَ مَاءَتُهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنْتِ فَرَدُّوا آيْلِيهُمْ فِي آفُواهِمِر وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِهَا ٱرْسِلْتُرْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكِّ مِّهًا تَنْعُوْنَنَا إِلَيْهِ مُرِيْبٍ

১০. তাদের রসুলরা (তাদের) বললো, তোমাদের কি আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে কোনো সন্দেহ রয়েছে- যিনি আসমানসমূহ ও যমীনের সৃষ্টিকর্তা; তিনি তোমাদের (তাঁর নিজের দিকে) ডাকছেন, যেন তিনি তোমাদের গুনাহসমূহ মাফ করে দিতে পারেন এবং একটি নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তোমাদের অবকাশ (দিয়ে সংশোধনের ब्रायान) मिर्फ भारतन; (এकथात अभत्र) जाता वनामा, وَيُلُونَ وَيُلُونَ وَمُثَلِّنًا وَالْمُونَ وَالْمُعَالَّمُ الْمُحَالِّ তোমরা তো হচ্ছো আমাদের মতোই (কতিপয়) মানুষ: আমাদের বাপ-দাদারা যাদের এবাদাত করতো, তোমরা কি তা থেকে আমাদের বিরত রাখতে চাওঃ (তাহলে তোমাদের দাবীর পক্ষে) অতপর আমাদের কাছে কোনো সম্পষ্ট দলীল প্রমাণ নিয়ে এসো।

١٠ قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكُّ فَاطِر السَّيْوٰتِ وَالْأَرْضِ ء يَنْعُوْكُمْ لِيَغْفِ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرِكُمْ إِلَى أَجَلِ مُسَبَّى ا أَنْ تَصُلُّونَا عَمًّا كَانَ يَعْبُلُ أَبَّاؤُنَا فَأَتُونَا بِسُلْطِي مَّبِين

১১. নবীরা তাদের বললো (এটা ঠিক), আমরা তোমাদের মতো কতিপয় মানুষ ছাড়া অন্য কিছু নই, কিন্তু আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের মধ্য থেকে যাকে চান (নবওতের দায়িত্ব দিয়ে) তার ওপর তিনি অনুগ্রহ করেন: আর আল্লাহ তায়ালার অনুমতি ব্যতিরেকে দলীল উপস্থাপনের কোনো ক্ষমতাই আমাদের নেই: আর ঈমানদারদের তো (এসব ব্যাপারে) আল্লাহর (ফ্রসালার) ওপরই নির্ভর করা উচিত।

ا قَالَتُ لَهُر رُسُلُهُمْ إِنْ نَّحْنُ الَّا بَشَرُّ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنَّ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عبَادة وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ تَّأْتِيكُرْ بِسُلْطَى اللَّا بِإِذْنِ اللهِ ، وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْهُؤْمِنُونَ

১২. (তা ছাড়া) আমরা আল্লাহ তায়ালার ওপর নির্ভর করবোই না কেনঃ তিনিই আমাদের (জাহেলিয়াতের অন্ধকার থেকে আলোর) পথসমূহ দেখিয়ে দিয়েছেন; (এ

١٢ وَمَا لَنَّا ۚ إِلَّا نَتُوكُّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَنْ مَلْنِنَا سُبُلَنَا و وَلَنَصْبِرَانٌ عَلَى مَا الْذَيْتُمُوْنَا و عَلَى

১৪ সুরা ইবরাহীম

202

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৩ ওয়ামা উবার্রিউ |
|--|--|
| আলোর পথে) তোমরা আমাদের যে কট্ট দিছো তাতে অবশ্যই আমরা ধৈর্য ধারণ করবো; (খার কারো ধপর) নির্ভর | اللَّهِ فَلَيْتَوَكَّلِ الْهُتَوَكِّلُونَ ع |
| করতে হলে সবার আল্লাহর ওপরই নির্ভর করা উচিত। ১৩. কাফেররা তাদের রস্লদের বললো, আমাদের (ধর্মীয়) গোত্রে তোমাদের ফিরে আসতেই হবে, নতুবা | ١٣ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِمِ لَنُخْوِجَنَّكُمْ |
| আমরা তোমাদের আমাদের দেশ থেকে বহিষ্কার করে দেবো; অতপর (ঘটনা চরমে পৌছুলে) তাদের মালিক তাদের কাছে (এই বলে) ওহী পাঠালেন, আমি অবশ্যই | مِّنْ أَرْضِنَا ۗ أَوْ لَتَعُودُكُ ۚ فِي مِلَّتِنَا مَ فَاَوْحَى النَّلِي لَنَهُ لِكُنَّ الظَّلِينَ لا |
| যালেমদের বিনাশ করে দেবো, | ا وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ الْبَعْنِ هِرْ الْكَ |
| ১৪. আর তাদের (নির্মৃল করে দেয়ার) পর তাদের জায়গায় আমি অবশ্যই তোমাদের প্রতিষ্ঠিত করবো; (আমার) এ (পুরস্কার) এমন প্রতিটি মানুষের জন্যে, যে ব্যক্তি আমার সামনে (জবাবদিহিতার জন্যে) দাঁড়ানোকে ভয় করে এবং (আমার) কঠোর শান্তিকেও ভয় করে। | ا ونستندر الارض مِي العراق و الله الله الله الله الله الله الله ال |
| ১৫. (এর মোকাবেলায়) ওরা (একটা চ্ডান্ত) ফয়সালা চাইলো– আর (সে ফয়সালা মোতাবেক) প্রত্যেক দুরাচার ও স্বৈরাচারী ব্যক্তিই ধ্বংস হয়ে গেলো। | ١٥ وَاسْتَفْتَحُوا وَهَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْنٍ ٧ |
| ১৬. তার একটু পেছনেই রয়েছে জাহান্নাম, (সেখানে) তাকে গলিত পুঁজ (জাতীয় পানি) পান করানো হবে, | ١٦ مِنْ ورَآنِهِ جَهَنَّرُ ويُسْقَى مِنْ مَّاءٍ صَرِيْلٍ ٧ |
| ১৭. সে অতি কটে তা গলাধকরণ করতে চাইবে, কিন্তু গলাধকরণ করা তার পক্ষে কোনোমতেই সম্ভব হবে না, (উপরন্তু) চারদিক থেকেই তার ওপর মৃত্যু আসবে, কিন্তু সে কোনোমতেই মরবে না; বরং তার পেছনে থাকবে | ا يَّتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيْفُهُ وَيَاْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ الْ وَمِنْ وَرَائِهِ |
| (আরো) কঠোর আযাব। ১৮. যারা তাদের মালিককে অস্বীকার করে তাদের | عَنَابٌ غَلِيْقًا اللهِ عَلَيْقًا اللهِ عَلَيْقًا اللهُ الله |
| (ভালো) কাজের (প্রতিফল পাওয়ার) উদাহরণ হচ্ছে ছাই ভন্মের (একটি স্কুপের) মতো, ঝড়ের দিন প্রচন্ড বাতাস এসে যা উড়িয়ে নিয়ে যায়; এভাবে (ভালো কাজের দ্বারা) | كَرَمَادِ اشْتَلَّ فَي بِهِ الرِّيْحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ا |
| যা কিছু এরা অর্জন করেছে তা দ্বারা তারা কিছুই করতে সক্ষম হবে না; আর সেটা হছে এক মারাত্মক গোমরাহী। | لَا يَقْدِرُوْنَ مِيًّا كَسَبُوْا عَلَى شَيْءٍ ﴿ ذَٰلِكَ مُّوَ الْطَقَالُ الْبَعِيْدُ |
| ১৯. (হে মানুষ,) তুমি কি দেখতে পাও না, আল্পাহ তায়ালা আসমানসমূহ ও যমীনকে যথাবিধি সৃষ্টি করেছেন, (ঢোমরা যদি এর ওপর না চলো তাহলে) তিনি ইচ্ছা করলে | 19 ألَم تُرَ أَن الله عَلَق السَّمٰوٰ سِ وَالْاَرْضَ بِالْحَق ، إِنْ يَّشَا يُذَهِبُكُم وَيَاْسٍ |
| (এ যমীন থেকে) তোমাদের অন্তিত্ব বিলুপ্ত করে নতুন (কোনো) সৃষ্টি (তোমাদের জায়গায়) আনয়ন করতে পারেন, | بِخَلْقٍ جَرِيْرٍ ٧ |
| ২০. আর এটা বিপুল ক্ষমতাবান আল্লাহর কাছে মোটেই কঠিন কিছু নয়। | ٢٠ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيْزٍ |
| ২১. (মহাবিচারের দিন) তারা সবাই আল্লাহর সামনে উপস্থিত হবে, অতপর যারা দুনিয়ায় দুর্বল ছিলো তারা (ডাদের উদ্দেশ করে) – যারা অহংকার ক্রতো, বলবে, | ا ۗ وَبَرَزُوْ اللّهِ جَيِيْعًا فَقَالَ الضَّعَفُوُ اللّهِ الشَّعَفُوُ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهِ اللهُ الله |
| (দুনিয়ায়) আমরা তো তোমাদের অনুসারীই ছিলাম, (ঝজ ক্লি) তোমরা আল্লাহর আযাব থেকে সামান্য কিছু হলেও আমাদের জন্যে কম করতে পারবে? তারা বলবে, আল্লাহ | . ^ ^ |
| তায়ালা যদি আমাদের (আজনাজাতের) কোনো পর্থ দেখিয়ে দিতেন, তাহলে আমরা তোমাদেরও (তা) দেখিয়ে দিতাম, (ফুলত) আজ আমরা ধৈর্য ধরি কিংবা ধৈর্যহারা হই, উভয়টাই আমাদের জন্যে সমান কথা, (আল্লাহর আযাব | قَالُوْ اللَّهُ مَا اللَّهُ لَهَنَ يُنكُرُ م سَوَاءً عَلَيْنَا اللَّهُ لَهَنَ يُنكُرُ م سَوَاءً عَلَيْنَا |
| থেকে আজ্র) আমাদের কোনোই নিষ্কৃতি নেই। | |
| ১৪ সূরা ইবরাহীম | <u> </u> |

२०० www.eelm.weebly.com ২২. যখন বিচার ফয়সালা হয়ে যাবে তখন শয়তান জাহানুামীদের বলবে, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সাথে (যে) ওয়াদা করেছেন তা (ছিলো) সত্য ওয়াদা, আমিও তোমাদের সাথে (একটি) ওয়াদা করেছিলাম, কিন্তু আমি তোমাদের সাথে ওয়াদার বরখেলাপ করেছি; (আসলে) তোমাদের ওপর আমার তো কোনো আধিপত্য ছিলো না. আমি তো ওধু এটুকুই করেছি, তোমাদের (আমার দিকে) ডেকেছি, অতপর আমার ডাকে তোমরা সাড়া দিয়েছো, তাই (আজ্ঞ) আমার প্রতি তোমরা (কোনো রকম) দোষারোপ করো না. বরং তোমরা তোমাদের নিজেদের ওপরই দোষারোপ করো: (আজ্ঞ) আমি (যেমন) তোমাদের উদ্ধারে (কোনো রকম) সাহায্য করতে পারবো না, (তেমনি) তোমরাও আমার উদ্ধারে কোনো সাহায্য করতে পারবে না: তোমরা যে (আগে) আমাকে আল্লাহর শরীক বানিয়েছো, আমি তাও আজ্ঞ অস্বীকার করছি (এমন সময় আল্লাহর ঘোষণা আসবে): অবশ্যই যালেমদের জ্বন্যে রয়েছে কঠিন আযাব।

٢٢ وَقَالَ الشَّيْطُيُّ لَمًّا قُضِيَ الْإَمْرُ انَّ اللَّهَ وَعَنَكُمْ وَعْنَ الْحَقِّ وَوَعَنَ تَّكُمْ فَاَخْلُفْتُكُمْ ، وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُرْ مِّنْ سُلْطَٰنِ إِلَّا اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۽ فَلَا تَلُوْمُونِيْ وَلُوْمُوْ ۗ أَنْفُسَكُمْ ، مَا آنَا بِهُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُرْ بِمُصْرِخِيٌّ ﴿ إِنِّي كَفَرْتُ بِهَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ وإِنَّ الظُّلِمِينَ لَهُرْعَلَابٌ ٱلِيْرَّ

২৩. (অপরদিকে) যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনে এবং (সে অনুযায়ী) নেক কান্ধ করে, তাদের এমন এক জানাতে প্রবেশ করানো হবে, যার পাদদেশে প্রবাহিত হবে (রং বে-রংয়ের) ঝর্ণাধারা, সেখানে তারা তাদের মালিকের অনুমতিক্রমে অনন্তকাল অবস্থান করবে: সেখানে (চারদিক থেকে) 'সালাম সালাম' বলে তাদের অভিবাদন হবে।

২৪. তুমি কি লক্ষ্য করোনি, আল্লাহ তায়ালা কালেমায়ে তাইয়েবার কি (সুন্দর) উপমা পেশ করেছেন, (এ কালেমা) যেন একটি উৎকৃষ্ট (জাতের) গাছ, যার মূল (যমীনে) সুদৃঢ়, যার শাখা প্রশাখা আসমানে (বিস্তৃত).

٢٣ اَلَمْ تَوَ كَيْفَ ضَوَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِهَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّهَاء لا

٢٣ وَأَدْخِلَ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ

جَنِّسِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُّ خُلِييْنَ

فيها باذن ربهر ، تَحيُّتُهُر فيها سَلْرَ

২৫. সেটি প্রতি মৌসুমে তার মালিকের আদেশে ফল দান করে; আল্লাহ তায়ালা মানুষদের জন্যে (এভাবেই) উপমা وَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْإِنْمُ اللَّهُ اللَّ গ্রহণ করতে পারে।

২৬. (আবার) খারাপ কালেমার তুলনা হচ্ছে একটি নিকৃষ্ট বৃক্ষের (মতো), যাকে (যমীনের) উপরিভাগ থেকেই মূলোৎপাটন করে ফেলা হয়েছে, এর কোনো রকম স্থায়িত্বও নেই।

২৭. আক্সাহ তায়ালা ঈমানদারদের তাঁর শাশ্বত কালেমা দারা মযবুত রাখেন, দুনিয়ার জীবনে এবং পরকালীন জীবনে, যালেমদের আল্লাহ তায়ালা (এমনি করেই) বিভ্রান্তিতে রাখেন, তিনি (যখন) যা চান তাই করেন।

২৮. (হে নবী.) তুমি কি তাদের অবস্থা পর্যবেক্ষণ করোনি যারা আল্লাহ তায়ালার নেয়ামত অস্বীকার করার মাধ্যমে (তাকে) বদলে দিয়েছে, পরিণামে তারা নিজেদের জাতিকে ধ্বংসের (এক চরম) স্তরে নামিয়ে এনেছে।

২৯. জাহান্নামে (-র অতলে, যেখানে) তারা সবাই প্রবেশ করবে, কতো নিকষ্ট (সেই) বাসস্থান!

ؠؘؾؘڶڴؖۅٛؽؘ ٢٦ وَمَثَلُ كَلِهَةِ غَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ غَبِيثَةٍ ٣

٢٥ تُؤْتِي ۗ أُكُلَهَا كُلَّ حِيْنِ ۖ بِإِذْنِ رَبِّهَا ء

٢٠ يُثَبِّسُ اللَّهُ الَّذِينَ أَمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِسِ فِي الْحَيْوةِ النَّانْيَا وَفِي الْأَخِرَةِ ۽ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظُّلِمِيْنَ لَكَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُع

اجْتُشُّ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارِ

٢٨ ٱلَرُ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُواْ نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَّ أَمَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ لا

٢٩ جَهَنَّرَع يَصْلُوْنَهَا ١ وَبِئْسَ الْقَرَارُ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ

৩০. এরা আল্লাহ তায়ালার জন্যে তাঁর কিছু সমকক্ষ উদ্ভাবন করে নিয়েছে, যাতে করে তারা (সাধারণ মানুষদের) তাঁর পথ থেকে বিভ্রান্ত করতে পারে: (হে নবী, এদের) তুমি বলো, (সামান্য কিছুদিনের জন্যে) তোমরা ভোগ করে নাও, অতপর (অচিরেই জাহান্লামের) আগুনের দিকে তোমাদের ফিরে যেতে হবে।

٣٠ وَجَعَلُوْا لِلَّهِ آنْكَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهِ قُلْ تَهَتَّعُواْ فَإِنَّ مَصِيْرَكُمْ إِلَى النَّارِ

৩১. (হে নবী.) আমার যে বান্দা ঈমান এনেছে তুমি তাদের বলো. তারা যেন নামায প্রতিষ্ঠা করে এবং আমি الصَّلُوةَ وَيُنْفَقُوا مِمَّا رَزْقُنُهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً जाप्तत्र त्य त्त्रत्यक मित्निष्ठ जा त्थत्क त्यन जाता (आमात्रहें পথে) ব্যয় করে, গোপনে কিংবা প্রকাশ্যে, (কেয়ামতের) সে দিনটি আসার আগে, যেদিন (মুক্তির জন্যে) কোনো तक्य (मम्भएनत) (विठारकना ठलरव ना- ना (এ **छा**ना কারো) কোনো রকমের বন্ধুত্ব (কাঞ্চে লাগবে)।

٣١ قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ أَمَنُوا يُقِيْمُوا مِّيْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِي يَوْأً لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلْلُّ

৩২. (তিনিই) মহান আল্লাহ তায়ালা, যিনি আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন এবং আসমান থেকে পানি বর্ষণ করেছেন, তা দিয়ে আবার যমীন থেকে তোমাদের জীবিকার জন্যে নানা প্রকারের ফলমূল উৎপাদন করেছেন, তিনি যাবতীয় জলযানকে তোমাদের অধীন করেছেন যেন তাঁরই ইচ্ছা অনুযায়ী তা সমূদ্রে বিচরণ করে বেড়ায় এবং (এ কাজের জন্যে) তিনি নদীনালাকেও তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন.

٣٢ اَللهُ النَّهِ عَلَقَ السَّهٰوٰ وَالْاَرْضَ وَٱنْزَلَ مِنَ السَّهَاءِ مَاءً فَٱخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّهَرُ سِ رِزْقًا لَّكُرْ ، وَسَخَّرَ لَكُرُ الْفُلْكَ لِتَجْرَىٰ فِي الْبَحْرِ بِٱمْرَةٍ ۚ وَسَخَّرَ لَكُرُ ٵٛٳؙٛۮٛڡؙؗۯؘۼ

৩৩. তিনি চন্দ্র সূর্যকেও তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন. এর উভয়টা (একই নিয়মের অধীনে) চলে আসছে আবার তোমাদের (সুবিধার) জন্যে রাতদিনকেও তিনি তোমাদের অধীন করেছেন।

٣٣ وَسَخَّوَ لَكُرُ الشُّهْسَ وَالْقَهَرَ دَانبَيْن ع وَسَخُّو لَكُرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ع

৩৪. তোমরা তাঁর কাছ থেকে (প্রয়োজনের) যতো কিছুই চেয়েছো তার সবই তিনি (তোমাদের সামনে) এনে হাযির করেছেন এবং তোমরা যদি (সত্য সত্যই) তাঁর সব নেয়ামত গণনা করতে চাও, তাহলে কখনোই তা গণনা করে শেষ করতে পারবে না; মানুষ (আসলেই) অতিমাত্রায় সীমালঘংনকারী ও (নেয়ামতের প্রতি) অকতজ্ঞ বটে।

٣٣ وَ اللَّهُ مِنْ كُلِّ مَا سَالَتُهُولًا ، وَإِنْ تَعُنَّوْا نِعْبَسَ اللَّهِ لَا تُحْصُوْهَا ﴿ إِنَّ الإنسانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ع

৩৫. (স্বরণ করো), যখন ইবরাহীম (আল্লাহর কাছে) দোয়া করলো, হে আমার মালিক, এ (মঞ্চা) শহরকে (শান্তি ও) নিরাপত্তার শহরে পরিণত করো এবং আমাকে ও আমার সন্তান সন্ততিদের মূর্তিপূজা করা থেকে দূরে রেখো।

٣٥ وَإِذْ قَالَ إِبْرُهِيْمُ رَبِّ اجْعَلُ هٰذَا الْبَلَلَ أَمِنًا وَّاجْنُبُنِيْ وَبَنِيَّ أَنْ تَعْبُلُ الْكَصْنَاكَ ء

৩৬. হে আমার মালিক, নিসন্দেহে এ (মূর্তি)-গুলো বছ مَن النَّاسِ يَعُمُوا مِن النَّهُونَ أَضْلَلُنَ كَثيرًا مِّنَ النَّاسِ ع মানুষকেই গোমরাহ করেছে, অতপর যে আমার আনুগত্য فَمَن تَبَعَني فَاللَّهُ مِنِّي عَ وَمَن عَصَانِي فَاللَّك अत्रत्व त्न आप्रात بعني فَاللَّهُ مِنِّي ع না-ফরমানী করবে (তার দায়িত্ব তোমার ওপর নয়). নিশ্চয়ই তুমি ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

১৪ সূরা ইবরাহীম

পারা ১৩ ওয়ামা উবাররিউ

৩৭. হে আমাদের মালিক, আমি আমার কিছু সম্ভানকে তোমার পবিত্র ঘরের কাছে একটি অনুর্বর উপত্যকায় এনে আবাদ করলাম, যাতে করে- হে আমাদের মালিক, এরা নামায প্রতিষ্ঠা করতে পারে, তুমি (তোমার দয়ায়) এমন ব্যবস্থা করো যেন মানুষদের অন্তর এদের দিকে অনুরাগী হয়, তুমি ফলমল দিয়ে তাদের রেযেকের ব্যবস্থা

করতে পারে। ৩৮. হে আমাদের মালিক, আমরা যা কিছু গোপন করি এবং যা কিছু প্রকাশ করি, নিশ্চয়ই তুমি তা সব জানো: আসমানসমূহে কিংবা যমীনের (যেখানে যা কিছু ঘটে এর) কোনোটাই আল্লাহর কাছে গোপন থাকে না।

করো. যাতে ওরা তোমার (নেয়ামতের) শোকর আদায়

৩৯. সব প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে, যিনি আমাকে আমার (এ) বৃদ্ধ বয়সে ইসমাঈল ও ইসহাক (তুল্য দুটো নেক সম্ভান) দান করেছেন: অবশ্যই আমার মালিক (তাঁর বান্দাদের) দোয়া শোনেন।

৪০. হে আমার মালিক, তুমি আমাকে নামায প্রতিষ্ঠাকারী ^ বানাও, আমার সন্তানদের মাঝ থেকেও (নামাযী বানা বানাও), হে আমাদের মালিক, আমার দোয়া তুমি কবুল করো।

৪১. হে আমাদের মালিক, যেদিন (চড়ান্ত) হিসাব কিতাব হবে, সেদিন তুমি আমাকে, আমার পিতা মাতাকে এবং সকল ঈমানদার মানুষদের (তোমার অনুগ্রহ দ্বারা) ক্ষমা করে দিয়ো।

৪২. (হে নবী.) তুমি কখনো মনে করো'না, এ যালেমরা যা কিছু করে যাচ্ছে তা থেকে আল্লাহ তায়ালা গাফেল الظُّلُمُونَ لَمُ انَّهَا يُؤَخِّرُ فَمِرْ لَيَوْمَ تَشْخُصُ فَيْد अदारहन: (आजर्ल) जिन जारनद्र रुमिन आजा भर्यस অবকাশ দিয়ে রাখছেন যেদিন (তাদের) চক্ষু স্থির হয়ে যাবে.

৪৩. তারা আকাশের দিকে চেয়ে ভীত সম্ভ্রন্ত অবস্থায় (দৌড়াতে) থাকবে, তাদের নিজেদের প্রতিই নিজেদের কোনো দৃষ্টি থাকবে না, (ভয়ে) তাদের অন্তর বিকল হয়ে যাবে।

88. (হে নবী,) তুমি মানুষদের একটি (ভয়াবহ) দিনের আযাব (আসা) থেকে সাবধান করে দাও (এমন দিন সত্যিই যখন এসে হাযির হবে), তখন এ যালেম লোকেরা বলবে, হে আমাদের মালিক, আমাদের তুমি কিছুটা সময়ের জন্যে অবকাশ দাও: এবার আমরা তোমার ডাকে সাড়া দেবো এবং আমরা (তোমার) রসুলদের অনুসরণ করবো (জবাবে বলা হবে); তোমরা কি (সেসব লোক)-যারা ইতিপূর্বে শপথ করে নিজেদের মধ্যে বলাবলি করতে, তোমাদের (এ জীবনের) কোনোই ক্ষয় নেই!

٣٠ رَبُّنَا ۚ إِنِّيٓ ٱسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرٍ ذِي زَرْعِ عِنْ بَيْتِكَ الْهُحَرِّ إِلا رَبَّنَا لِيُقِيْهُوا الصَّلُوةَ فَاجْعَلْ أَفْئِنَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوى ٛ إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ بِّيَ الثَّيَرُ بِ لَعَلَّهُمْ

٣٨ رَبُّنَا ۚ إِنَّكَ تَعْلَرُ مَا نُخْفِي ْ وَمَا نُعْلِيُّ ا وَمَا يَخْفَى عَلَى اللّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّهَاءِ

٣٩ ٱلْحَمْلُ لِلَّهِ الَّذِي ۚ وَمَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمُعِيْلَ وَاِسْحُقَ ﴿ إِنَّ رَبِّي لَسَ

٣٠ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيْرَ الصَّلُوةِ وَمِن ٣٠ ذُرِيِّتِي لَيْ رَبُّنَا وَتَقَبَّلُ مُعَاءِ

٣١ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِكَى ۚ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ الْعُهُ يَوْاً يَقُوا الْحِسَابُ ع

٣٢ وَلا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَبًّا يَعْهَلُ الْإَبْصَارُ لا

٣٣ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَلُّ إِلَيْهِمْ طَوْفُهُمْ وَأَفْنِنَ تُهُمْ هُوَاءً ا

٣٣ وَٱنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَٱتِيْمِرُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِينَ ظَلَهُوا رَبَّنَّ آخِرْنَا ۚ إِلَّى آجَلِ تَرِيْبٍ لا نَّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ﴿ أَوَ لَمِ تَكُوْنُوْ آ أَقْسَهْتُم مِنْ قَبْلُ مَا لَكُم مِنْ زُو ال ٧

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৩ ওয়ামা উবার্রিউ |
|--|--|
| ৪৫. অথচ তোমরা তাদের (পরিত্যক্ত) বাসভূমিতেই বাস | ٢٥ وَّسَكَنْتُر فِي مَسْكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوْآ |
| করতে, যারা (তোমাদের আগে) নিজেদের ওপর নিজেরা যুলুম করেছিলো এবং (এ কারণে) আমি তাদের প্রতি কি | ٱنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ |
| ধরনের আচরণ করেছিলাম তাও তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট | وَنَوَبُنَا لَكُرُ الْإَمْثَالَ |
| ছিলো, তোমাদের জন্যে আমি তাদের দৃষ্টান্তও উপস্থাপন করেছিলাম, | وهربت تعر الأسان |
| | |
| ৪৬. (সোজা পথে) এরা (বিভিন্ন) চক্রান্তের পন্থা অবলয়্বন করেছে, আল্লাহর কাছে তাদের সেসব চক্রান্ত লিপিবদ্ধ | ٣٦ وَقَلْ مَكُرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْلَ اللهِ مَكْرُهُمْ ١ |
| আছে; যদিও তাদের সে চক্রান্ত (দেখে মনে হচ্ছিলো তা | وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُّولَ مِنْهُ الْجِبَالُ |
| বুঝি) পাহাড় টলিয়ে দিতে পারবে! | |
| ৪৭. (য়েনী,) তুমি কখনো আল্লাহ তায়ালাকে তাঁর নবীদের দেয়া প্রতিশ্রুতি ভংগকায়ী মনে কয়ো না; অবশ্যই আল্লাহ | ٣٤ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعُلِهِ رُسُلَهً ، |
| তায়ালা মহাপরাক্রমশালী ও প্রতিশোধ গ্রহণকারী; | إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌّ ذُوانْتِقَا] ﴿ |
| ৪৮. (প্রতিশোধ হবে সেদিন) যেদিন এ পৃথিবী ভিন্ন | ٣٨ يَوْمُ تُبَرِّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْض |
| (আরেক) পৃথিবী দ্বারা পরিবর্তিত হয়ে যাবে, | , . |
| (একইভাবে) আসমানসমূহও (ভিন্ন আসমানসমূহ দারা বদলে যাবে) এবং মানুষরা সব (হিসাবের জ্বন্যে) এক | وَالسَّهٰوٰ يَ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَمَّارِ |
| মহাক্ষমতাধর মালিকের সামনে গিয়ে হাযির হবে। | |
| ৪৯. সেদিন তুমি অপরাধীদের সবাইকে শৃংখলিত | ٣٩ وَتَرَى الْهُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِنْ ٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي |
| অবস্থায় দেখতে পাবে, | الْاَصْفَادِ ع |
| ৫০. ওদের পোশাক হবে আলকাতরার (মতো বীভৎস), | |
| তাদের মুখমন্ডল আগুন আ চ্ছাদিত করে রাখবে । | ٥٠ سَرَ ابِيْلُهُرْ مِّنْ قَطِرَ انٍ وَّتَغْشَى وُجُوْهَهُرُ |
| | النَّارُ لا |
| ৫১. (এটা এ কারণে,) আল্লাহ তায়ালা যেন প্রতিটি অপরাধী ব্যক্তিকেই তার কর্মের প্রতিফল দিতে পারেন; | ٥١ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مًّا كَسَبَسْ ﴿ إِنَّ |
| অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা হিসাব গ্রহণে অত্যন্ত তৎপর। | اللَّهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ |
| ৫২. এ (কোরআন) হচ্ছে মানুষের জন্যে এক (মহা) | ٥٢ مِنْ اللَّهُ لِلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوا بِهِ |
| পয়গাম, যাতে করে এ (গ্রন্থ) দিয়ে (পরকালীন আযাবের ব্যাপারে) তাদের সতর্ক করে দেয়া যায়, তারা যেন (এর | |
| মাধ্যমে) এও জানতে পারে, তিনিই একমাত্র মাবুদ, | وَلِيَعْلَمُوْآ اَتُّهَا مُوَ اِلَّهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكُّرُ |
| (সর্বোপরি) বোধশক্তিসম্পন্ন ব্যক্তিরা যাতে করে (এর দ্বারা) উপদেশ গ্রহণ করতে পারে। | أولُوا الْأَلْبَابِ ع |
| | سُورَةُ الْحِجْرِ مَكِيَّةً |
| সূরা আপ হেজর মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৯৯, রুকু ৬ | أياتٌ : ٩٩ ۖ رُكُوعٌ :٢ |
| মঞ্চার অবতাশ— আরাত ৯৯, রুকু ও রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | |
| | بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. আলিফ লাম-রা। এগুলো হচ্ছে সেই মহান গ্রন্থ ও সুস্পষ্ট কোরআনের আয়াত। | ١ الرُّ لَ تِلْكَ أَيْتُ الْكِتْبِ وَقُرْأَانٍ مُّبِيْنٍ |
| ू ाट क्राविमाक्षात मावाचा | |

১৫ সূরা আল হেজর

২. (এমন একটি দিন অবশ্যই আসবে যেদিন) যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অম্বীকার করেছে তারা চাইবে, যদি (সত্যি সত্যিই) তারা মুসলমান হয়ে যেতো!

৩. (হে নবী,) তুমি তাদের (নিজ নিজ অবস্থার ওপর) ছেড়ে দাও, তারা খাওয়া দাওয়া করুক, ভোগ উপভোগ করতে থাকুক, (মিথ্যা) আশা তাদের মোহাচ্ছনু করে রাখুক, অচিরেই তারা জানতে পারবে (কোন প্রতারণার

٢ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَغَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِم

٣ ذُرُهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَّتَّعُوا ويلهِهِمْ الْأَمَلَ فَسُوْنَ يَعْلَبُونَ

জালে তারা আটকে পড়েছিলো)। 8. যে কেনো জনপদকেই আমি ধ্বংস করি না কেন-তার (ধ্বংসের) জন্যে একটি সুনির্দিষ্ট সময় আগে থেকেই লিপিবদ্ধ থাকে।

٣ وَمَا ۚ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابُّ

৫. কোনো জাতিই তার (ধ্বংসের) কাল (যেমন) তুরানিত করতে পারে না. (তেমনি) তারা তা বিলম্বিতও করতে পারে না।

٥ مَا تَسْبِقٌ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ

৬. তারা বলে, ওহে- যার ওপর কোরআন নাযিল করা হয়েছে- তুমি অবশ্যই একজন উন্মাদ ব্যক্তি।

٦ وَقَالُوا يَايُّهَا الَّذِي ثُزَّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ

৭. তুমি সত্যবাদী (নবী) হলে আমাদের সামনে ফেরেশতাদের নিয়ে আসো না কেন!

٤ لَوْ مَا تَأْتِيْنَا بِالْهَلَّئِكَةِ إِنْ كُنْسَ مِنَ الصاقين

৮. (হে নবী, তুমি তাদের বলো,) আমি ফেরেশতাদের (কখনো) কোনো সঠিক (কারণ) ছাড়া নাযিল করি না, (তাছাড়া একবার যদি আযাবের আদেশ নিয়ে) ফেরেশতারা এসেই যায়, তবে তো আর তাদের কোনো অবকাশই দেয়া হবে না।

 مَا نُنَزَّلُ الْمَلْئِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إذًا منظَريْنَ

৯. আমিই উপদেশ (সম্বলিত কোরআন) নাথিল করেছি এবং আমিই তার সংরক্ষণকারী।

٩ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا النَّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُوْنَ

১০. তোমার আগেও পূর্ববর্তী জাতিসমূহের মাঝে আমি রসূল পাঠিয়েছিলাম।

১১. তাদের কাছে এমন একজন রসূলও আসেনি, যার সাথে তারা ঠাট্টা বিদ্রূপ করেনি।

১২. এভাবেই আমি অপরাধীদের অন্তরে (ঠাট্টা বিদ্রূপের) এ (প্রবণতা)-কে সম্বার করে দেই.

١٢ كَنْ لِكَ نَسْلُكُمَّ فِي قُلُوْبِ الْهُجْرِمِيْنَ لا

১৩. এরা কোনো অবস্থায়ই তার ওপর ঈমান আনবে না, (আসলে) এ নিয়ম তো আগের মানুষদের থেকেই চলে এসেছে।

١٣ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَلْ خَلَسَ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ

১৪. আমি যদি এদের ওপর আসমানের দরজাও খুলে দেই, অতপর তারা যদি তাতে চড়তেও তরু করে (তারপরও এরা ঈমান আনবে না).

١٢ وَلَوْ فَتَكْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّهَاءَ فَظَلُّواْ

١٥ لَقَالُوا إِنَّهَا سُرِّرَتُ ٱبْصَارُنَا بَلْ نَحْنَ مُورَدِي الْمَارُنَا بَلْ نَحْنَ ١٥ كَقَالُوا إِنَّهَا سُرِّرَتُ ٱبْصَارُنَا بَلْ نَحْنَ কিংবা আমরা হচ্ছি এক যাদুগ্রন্ত সম্প্রদায়।

قُومٌ مسحورون ع

১৫ সূরা আল হেজর

200

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
|--|--|
| ১৬. (তাকিয়ে দেখো, কিভাবে) আমি আকাশে গস্থুজ তৈরী করে রেখেছি, অতপর তাকে দর্শকদের জ্বন্যে (তারকারাজি দ্বারা) সুসজ্জিত করে রেখেছি, | ١٦ وَلَقَن مَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُومًا وَزَيَّتُهَا لِلتَّظِرِيْنَ لا |
| ১৭. তাকে আমি প্রতিটি অভিশপ্ত শয়তান থেকে হেফাযত করে রেখেছি। | ١٤ وَمَفِظْنُهَا مِنْ كُلِّ شَيْطْنِ رَّجِيْمٍ ٧ |
| ১৮. হাঁ, যদি কেউ চুরি করে (ফেরেশতাদের) কোনো কথা শুনতে চায় তাহলে সাথে সাথেই একটি প্রদীপ্ত উদ্ধা তার পেছনে ধাওয়া করে। | ١٨ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّبْعَ فَأَتْبَعَدُ شِهَابٌ * ٩٠ مُبِين |
| ১৯. আমি যমীনকে বিস্তৃত করে (বিছিয়ে) দিয়েছি, ওতে আমি পর্বতমালাকে (পেরেকের মতো) গেড়ে দিয়েছি, (যেন তা নড়াচড়া করতে না পারে) এবং তাতে প্রতিটি জিনিস আমি সুপরিমিতভাবে উৎপাদন করেছি। | ا وَالْأَرْضَ مَنَ دُنْهَا وَالْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاثْبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مُّوْزُوْنٍ |
| ২০. ওতে আমি তোমাদের জন্যে এবং অন্য সব সৃষ্টির জন্যে জীবিকার ব্যবস্থা করেছি, তোমরা যাদের (কারোই) রেযেকদাতা নও। | ٢٠ وَجَعَلْنَا لَكُر فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّشَتُر لَدُّ بِرْزِقِيْنَ |
| ২১. কোনো জ্ঞিনিস এমন নেই যার ভান্ডার আমার হাতে নেই এবং সুনির্দিষ্ট একটি পরিমাণ ছাড়া আমি তা নাযিল করি না। | ٢١ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْكَنَا خَزَاً لِنَّهُ ﴿ وَمَا لَنُوَالِّنَهُ ﴿ وَمَا لَنُوالِنَّهُ اللَّهِ ال |
| ২২. আমিই বৃষ্টি-গর্ভ বায়ু প্রেরণ করি, তারপর আমিই আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করি, অতপর আমিই তোমাদের তা পান করাই, তোমরা নিজেরা তো তার এমন কোনো ভান্ডার জমা করে রাখোনি (যে, সেখান থেকে এসব সরবরাহ আসছে)। | السَّهَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَكُمُونَا ۚ جَ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ السَّهَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَكُمُوناً ج وَمَا أَنْتُمْ لَهُ السَّالِينَ اللَّهُ اللَّالِي اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّا اللَّ |
| ২৩. অবশ্যই আমি (তোমাদের) জীবন দান করি, (আবার) আমিই তোমাদের মৃত্যু ঘটাই, (সর্বশেষে) আমিই হবো (সব কিছুর নিরংকুশ) মালিক। | الورد و المراجعة المر |
| ২৪. তোমাদের আগে যারা (এ যমীন থেকে) গত হয়ে গেছে তাদের (যেমন) আমি জানি, তেমনি তোমাদের পরবর্তীদেরও আমি (ভালো করে) জানি। | علِمنا المستاغرين |
| ২৫. নিসন্দেহে তোমার মালিক একদিন তাদের সবাইকে একত্রিত করবেন; তিনি অবশ্যই প্রবল প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞ। | ٢٥ وَإِنَّ رَبِّكَ هُوَ يَحْشُرُهُرْ ﴿ إِنَّهُ مَكِيْرً عَلَيْرً عَلَيْرً عَلَيْرً عَلَيْرً عَلَيْرً عَلَيْرً |
| ২৬. অবশ্যই আমি মানুষকে ছাঁচে ঢালা ভকনো ঠনঠনে মাটি থেকে পয়দা করেছি, | ٢٦ وَلَقَلْ هَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ مَلْصَالٍ مِّنْ الْمَالِ مِّنْ الْمَالِ مِّنْ الْمَالِ مِّنْ الْمَالُو |
| ২৭. আর (হাঁ,) জ্বিন! তাকে আমি আগেই আগুনের উত্তপ্ত শিখা থেকে সৃষ্টি করেছি। | ٢٤ وَالْجَانَّ خَلَقْنَهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ تَارِ السَّوْرِ |
| ২৮. (শ্বরণ করো,) যখন আমি ফেরেশতাদের বলেছিলাম, আমি (অচিরেই) ছাঁচে ঢালা ঠনঠনে শুকনে মাটি থেকে মানুষ পয়দা করতে যাচ্ছি। | ٢٨ وَإِذْ قَالَ رَبَّكَ لِلْمَلِّنْكَةِ إِنِّى هَالِقَّ الْمَلَّنِكَةِ إِنِّى هَالِقَّ الْمَلَّنِكَةِ إِنِّى هَالِقً الْمَلْتُونِ |
| ১৫ সূরা আল হেজর | মন্যিল ৩ |

| ২৯. অতপর যখন আমি তাকে পুরোপুরি সুঠাম করে নেবাে এবং আমার রহ থেকে (কিছু) তাতে ফুঁকে দেবাে, তখন তোমরা সবাই তার সামনে সাজদাবনত হয়ে যাবে,। ৩০. অতপর (আল্লাহর আদেশে) ফেরেশতারা সবাই সাজদা করলাে, ৩১. একমাত্র ইবলীস ছাড়া– সে সাজদাকারীদের দলভুজ্জ হতে অধীকার করলাে। ৩২. আরাহ তারালা বললেন, তোমার কি হলাে, তুমি যে সাজদাকারীদের দলভুজ্জ হতে অধীকার করলাে। ৩৩. সে বললাে (হে আল্লাহ), আমি কখনাে এমন মানুবের জনাে সাজদা করতে পারি না— যাকে তুমি ছাতে তালা তকনাে ঠনঠনে মাটি থেকে বানিয়েছাে। ৩৪. আল্লাহ তারালা বললেন (তাই যদি বলাে) তাহলে তুমি (এক্ম্নি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা তুমি অভিলাপ। ৩৬. সে বললাে (হে মালিক, তাহলে) তুমিও আমাকে সেনিন পর্যন্ত অরাহালা বললেন (হা যাও), যাদের এ০) তকনা দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অবর্ভুজ (হলে), তচ: (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। ৩৯. নে বললাে, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথমষ্ট করে ছাড়েনা (লামি তামার লগাও করা জলসমূহ) শোভন করে তুলবাে এবং তাদের সবাইকে আমি পথমষ্ট করে ছাড়বাে, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার খাটি বাখা তাদের ক্লাজসমূহ) শোভন করে তুলবাে এবং তাদের সবাইকে আমি পথমষ্ট করে ছাড়বাে, ৪১. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার খাটি বাখা তাদের ক্লাজানাে। ৪২. (য়া যালা বললেন (আমার নালিক পর্যন্ত তামার বাখাহদের জনাে পুর্বান্ত তাদের (কালারে) এটাই হন্দে সভ্লত আমার মাল্বকের মধ্যে যারা তোমার বাধাহদের জনো মুল্তা) আমার কাছ পর্যন্ত (শৌছানাের) এটাই হন্দে সভ্লতা আমার মান্ববদের মধ্যে যারা তোমার বাধাহদের করে তারা ছাড়া অন্যরা অবলাই আমার (খ্রি) ৪২. (য়) এ গোমরাহ মান্ববদের মধ্যে যারা তোমার বাধাহাের বিলা বানাহনের করে তারা ছাড়া অন্যরা অবলাই আমার (খ্রি) বিন্তানী করিবি করিবি তামার বাবাত্বনি বাবাব্বনি করেবে করেবে তারা ছাড়া অন্যরা অবলাই আমার (খ্রি) ৪২. (য়) এ গোমরাহ মান্ববদের মধ্যে যারা তোমার বাবা্বনের করেবে তারা ছাড়া অন্যরা অবলাই আমার (খ্রি) ৪২. (য়) এ গোমরাহ মান্ববদের মধ্যে যারা তোমার বাব্বনিক করেবে করেবে তারা ছাড়া অন্যরা অবলাই আমার (খ্রি) ৪২. (য়) এ গোমরাহ মান্ববদের মধ্যে যারা তোমার বাব্বনিক করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবলাই আমার (খ্রি) | | |
|---|---|---|
| ত্তমন তোমরা সবাই তার সামনে সাজদাবনত হয়ে যাবে,। ৩০. অভপর (আল্লাহর আদেশে) ফেরেশতারা সবাই সাজদা করলো, ৩১. একমার ইবলীস ছাড়া- সে সাজদাকারীদের দলভুক্ত তে অপ্রীকার করলো। ৩২. আল্লাহ তায়ালা বললেন, তোমার কি হলো, তুমি যে সাজদাকারীদের দলে শামিল হলে না! ৩৩. সে বললো (হে আল্লাহ), আমি কখনো এমন মানুষের জন্য সাজদা করতে পারি না- যাকে তুমি ছাঁচে চালা তকনো ঠনঠনে মাটি থেকে বানিয়েছো। ৩৪. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (তাই যদি বলো) তাহলে তুমি (এক্ছানি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা তুমি অভিলাও, ৩৫. হিসাব নিকাশের দিন পর্যন্ত তোমার ওপর অভিলাও। ৩৬. সে বললো (হে মালিক, তাহলে) তুমিও আমাকে কেনিন পর্যন্ত অবকাশ দাও যেনিল তাহলে তুমি ভানাক তবা হবে। ৩৭. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তানের অল্কভুক্ত (হলে), ৩৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। তম. সে বললে, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আছা আমাকে পথমন্ত করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার পাঁটি বাদা তাদের কলা সমূহ) শোভন করে ভুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি পথমন্ত করে ছাড়বো, ৪১. আল্লাহ তারালা বললেন, (আমার নিটাবান বাশাহদের জন্যে মুগত) আমার কাছ পর্যন্ত (শেহানের) আটাই হক্তে সহল সরল পথ। ৪২. (ই), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার বাশাহদের করে হাড়বো, বাই বাই করে ছাড়বা, ৪০. আর অবশাই জাহান্নাম হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত স্বান্ধ ভানের করে তোমার কেনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
| আবে । ত০. অপপর (আল্লাহর আদেশে) ফেরেশতারা সবাই সাজদা করলো, ত১. একমাত্র ইবলীস ছাড়া– সে সাজদাকারীদের দলভুক্ত হতে অধীকার করলো। ত২. আল্লাহ তায়ালা বললেন, তোমার কি হলো, তুমি যে সাজদাকারীদের দলে শামিল হলে না! ত০. সে বললো (হে আল্লাহ), আমি কর্থনো এমন মানুবের জনো সাজদা করতে পারি না– যাকে তুমি ছাঁচে ঢালা তকনো ঠনঠনে মাটি থেকে বানিয়েছো। ত৪. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (তাই যদি বলো) তাহলে তুমি (একুনি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা তুমি অভিশাও, ত৫. হিসাব নিকালের দিন পর্যন্ত তোমার ওপর অভিশাও। ত৪. সে বললো (হে মালিক, তাহলো) তুমিও আমাকে সেনিন পর্যন্ত অবকাশ দাও যেদিন তাদের পুনরায় জীবিত করা হবে। ত৭. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) ত৭. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) তম. বে বললো, হে আমার মালিক, তুমি ঘোতাবে (আজ) আমাকে পপ্রভ্রন্ত করে ছিল্বো এবং তাদের সবাইকে আমি শংমন্ত করে ছেল্বো এবং তাদের সবাইকে আমি করেলাস্ব্রু) শোভন করে ভুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি করেলা ভার লালা। বললেন, (আমার নিটাবান বাশাহদের জন্যে মূল্ভ) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হলে স্বাছ্য অনারা অবন্যাই আমার (ক্রাট্রু) বালা, তাদের প্রর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালা, তাদের প্রকাণ নারা হলায়ের হলে তাদের সবার প্রতিশ্রুত বালা, তাদের করে তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালা, তাদের করে তামার হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালা, তাদের করে তামাই আহার ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালা, তাদের করে তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালা, তানর করি বালায় হলা ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালিক করে তামার কানের স্থার তোমার বিশ্বিত তানের না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালিক করে তামার জাহান্নাম হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালিক করে তামার কানেনা আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হলে ভানের সবার প্রতিশ্রুত বালিক করেনা নাম্বান্ন নাম্বান্ন নামন নামন করেনা করেনা নামন কর | নেবো এবং আমার ব্লহ থেকে (কিছু) তাতে ফুঁকে দেবো, | |
| ত্ত অপ্নীকার করলো। ত ম ক্রমাত্র ইবলীস ছাড়া সে সাজদাকারীদের দলছজ হতে অপ্নীকার করলো। ত ম আল্লাহ তায়ালা বললেন, তোমার কি হলো, তুমি যে সাজদাকারীদের দলে শামিল হলে না! ত ম আল্লাহ তায়ালা বললেন, তোমার কি হলো, তুমি যে সাজদাকারীদের দলে শামিল হলে না! ত ম বললো (হে আল্লাহ), আমি কথনো এমন মানুষের জনো সাজদা করতে পারি না যাকে তুমি ছাঁচে ঢালা তকনো ঠনঠনে মাটি থেকে বানিয়েছো। ত ম আল্লাহ তায়ালা বললেন, (তাই যদি বলো) তাহলে তুমি আল্লাহ তায়ালা বললেন, (তাই যদি বলো) তাহলে তুমি (এক্ছ্মি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা তুমি অভিশাও, ত মে বললো (হে মালিক, তাহলো) তুমিও আমাকে করিন পর্যন্ত অবকাশ দাও বেদিন তাদের পুনরায় জীবিত করা হবে। ত ম আল্লাহ তায়ালা বললেন (হা যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভুক্ত (হলে), ত ম বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আভ্রাম) আমার করি করে দিলে (আমিও তোমার লপথ করে বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে তাদের স্বাইকে আলিপান। ৪১. তারাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বাশাহদের জন্য মুলত) আমার কছে পর্যন্ত (শৌজনার) এটাই হল্ছে সহন্ত সরল পথ। ৪২. (য়) এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার বছিল তান্বর প্রত্ত্র্ভুক্ত (বিশ্বানার) এটাই হল্ছে সহন্ত সরল পথ। ৪২. (য়) এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার বছিলে তান্বর কাজসম্প করে তারা ছাড়া অন্যার অবশাই আমার (ক্রি) বান্দা, তাদের করে তোমার কেনা আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্না হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | याद्य, । | |
| তথ আরাহ ভায়ালা বললেন, তোমার কি হলো, ভূমি যে সাজদাকারীদের দলে শামিল হলে না! ত৩. সে বললো (হে আরাহ), আমি কখনো এমন মানুষের জন্যে সাজদা করতে পারি না— যাকে ভূমি ছাঁচে ঢালা তকনো ঠনঠনে মাটি থেকে বানিরেছে। ত৪. আরাহ ভায়ালা বললেন, (ভাই যদি বলো) ভাহলে ভূমি এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা ভূমি অভিশঙ্জ, ত৫. হিসাব নিকাশের দিন পর্যন্ত ভোমার ওপর ভিশাল। ত৬. সে বললো (হে মালিক, ভাহলে) ভূমিও আমাকে সেদিন পর্যন্ত অবকাশ দাও বেদিন ভাদের পুনরার জীবিত করা হবে। ৩৭. আরাহ ভায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের এ) অবকাশ দেয়া হয়েছে ভূমি ভাদের অন্তর্ভুক্ত (হলে), ত৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। ত৯. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথমন্ত করা হবে। ৩৯. কে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথমন্ত করে দেলা পৃথিবীতে ভাদের পালার কলা করে ভূলবো এবং ভাদের স্বাহিকে আমি পথমন্ত করে ছড়বো, ৪০. ভবে ভাদের মধ্যে যারা ভোমার বাঁটি বাবা ভাদের কলা আলাগা। ৪১. আরুয়হ ভায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বাদাহদের জন্যে খুলভ) আমার কছং পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ সরল পথ। ৪২. (য়) এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার বিশ্বভালের অনুসরণ করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশাই আমার (জীট) বাবা, ভাদের পর ভোমাই মানুষদের মধ্যে যারা তোমার শানিক চলবে না। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত স্বাহিত্বটা ভূমিন করি নিত্রটা ভূমিন করে। ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | ৩০. অতপর (আল্লাহর আদেশে) ফেরেশতারা সবাই সাজদা করলো, | ٣٠ فَسَجَلَ الْهَلِئِكَةُ كُلُّهُمْ ٱجْهَعُونَ ٧ |
| তিও. সে বললো (হে আল্লাহ), আমি কখনো এমন মানুষের জন্যে সাজদা করতে পারি না– যাকে তুমি ছাঁচে চালা তকনো ঠনঠনে মাটি থেকে বানিয়েছা। ত৪. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (তাই যদি বলো) তাহলে তুমি আলালা। ত৬. মে বললো (হে মালিক, তাহলো) তুমিও আমাকে স্বলি নাল্লাহলের জন্য স্বলি কালের ক্লাসমুহ) শৌভন করে তুলবা এবং তাদের সবাইকে আমি পথস্রই করে ছাড্বা। ত৬. মে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজা) আমাকে পথস্কই করে ছাড্বা। ত৬. মে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজা) আমাকে পথস্কই করে ছাড্বা। ত৬. মে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজা) আমাকে পথস্কই করে ছাড্বা। ত১. মে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজা) আমাকে পথস্কই করে ছাড্বা। ত১. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (আমার লাকাক্ষর করে হাড্বা। ত১. মে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজা) আমাকে পথস্কই করে ছাড্বা। ত১. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিলিবান বালাহের কলা সমুহ) শৌভন করে তুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি পথস্কই করে ছাড্বা। ত১. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিলিবান বালাহদের জন্য মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (শৌছানোর) এটাই হল্কে সহজ সরল পথ ৪২. (ই), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা অলাই আমার (খাটি) বালা, তাদের প্ল তোমার কাছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত নির্মিট নির্মিট নির্মিট নির্মিট করে তানির কালা, তানের প্ল তোমার কাছেল আমার কাছেল তাদের নান্। তান্র ক্ল তোমার কালো আধিপত্য চলবে না । ৪৩. আর অবশাই জাহান্নাম হল্লে তাদের সবার প্রতিশ্রত নির্মিট নির্মিট নির্মিট করেন নির্মিট নির্মিট করেন নির্মিট নির্মিট করেন নির্মিট করেন নির্মিট নির্মিট করেন নির্মিট করেন করেন তানার জানোনাম হলেছে তাদের সবার প্রতিশ্রত নির্মিট করেন নির্মিট নির্মিট করেন নান্য বিল্মান বিল্মান করেন নালাহেন করেন তানা আধিপত্য চলবেন না । | | |
| তালা ভকনো ঠনঠনে মাটি থেকে বানিয়েছো। ত ৪. আল্লাহ ভায়ালা বললেন, (তাই যদি বলো) তাহলে ত্মি (একুনি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা ত্মি অভিশঙ্জ, ত ৫. হিসাব নিকাশের দিন পর্যন্ত তোমার ওপর অভিশাপ। ত ৬. সে বললো (হে মালিক, তাহলে) তুমিও আমাকে সেদিন পর্যন্ত অবকাশ দাও যেদিন ভাদের পুনরায় জীবিত করা হবে। ত ৭. আল্লাহ ভায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভুক্ত (হলে), ত ৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। ত ৯. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথস্কট করে দিলে (আমিও তোমার লপও করে বলছি), আমি মানুবদের জন্যে পৃথিবীতে ভাদের পেনাহের কাজসমূহ) শোভন করে তুলবো এবং ভাদের স্বাইকে আমি পথস্কট করে ছাড়বো, ৪০. তবে ভাদের মধ্যে যারা ভোমার ৰীটি বান্দা তাদের ক্লা আলান। ৪১. আল্লাহ ভায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্যে মুলত) আমার কছে পর্যন্ত (শীছানোর) এটাই হল্পে সহজ সরল পথ। ৪২. (ই) এ গোমরাহ মানুবদের মধ্যে যারা তোমার স্বাতীত আমার কন্ধ করেবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (খাঁটি) বান্দা, ভাদের পন্ধ তোমার কেন্ধে তানার আবিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হল্পে ভাদের স্বার প্রতিশ্রুত আমার কিছ বর্তা টা কুর্মন্ত নির্মন্ত করি তোমার কেন্ধে তানার আবিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হল্পে ভাদের স্বার প্রতিশ্রুত আমার কিছি বান্দা, ভাদের পন্ধ তোমার ক্ষা তোমার বিদ্যান কর্তা তানা ভাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (খাঁটি) বান্দা, ভানের করি তোমার করে তানা আধিপত্য চলবে না। | | |
| জুমি (একুনি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা জুমি জিলাঙ্ক, ৩৫. হিসাব নিকাশের দিন পর্যন্ত তোমার ওপর অভিশাপ। ৩৬. সে বললো (হে মালিক, ভাহলে) জুমিও আমাকে সেদিন পর্যন্ত অবকাশ দাও যেদিন ভাদের পুনরায় জীবিত করা হবে। ৩৭. আরাহ ভায়ালা বললেন (হা যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেরা হয়েছে ভূমি তাদের অন্তর্ভুক্ত (হলে), ৩৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। ৩৯. সে বললো, হে আমার মালিক, ভূমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথবাষ্ট করে দিলে (আমিও তোমার শপথ করে বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে ভাদের বলাহের কাজসমূহ) শোভন করে ভূলবো এবং ভাদের সবাইকে আমি পথবাষ্ট করে ছাড়বো, ৪০. তবে ভাদের মধ্যে যারা ভোমার ৰীটি বান্দা তাদের কথা আলাদা। ৪১. আরাহ ভায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্য মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ সরল পথ। ৪২. (য়), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা ভোমার বিজ্ঞান বন্দা, ভাদের পন্ধ তোমার কোনো আধিপভ্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত মুন্তর্ভুট নিক্তর্ভুট নিক্তর্ভিল্ড নিক্তর্ভুট নিক্তর্ভিল নিক্তর্ভুট নিক্তর্ভুট নিক্তর্ভুট নিক্তর্ভুট ন | মানুষের জন্যে সাজদা করতে পারি না– যাকে তুমি ছাঁচে | ٣٣ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِّإَشْجُلَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهً مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَهَا مَّشُوْنٍ |
| তও. সে বললো (হে মালিক, তাহলে) তুমিও আমাকে সেদিন পর্যন্ত অবকাশ দাও যেদিন তাদের পুনরায় জীবিত করা হবে। ৩৭. আরাহ তারালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেরা হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভুক্ত (হলে), ত৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। ত৯. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথন্তই করে দিলে (আমিও তোমার শপথ করে বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে তাদের (ছনাহের কাজসমূহ) শোভন করে তুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি পথন্তই করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার খাটি বানা তাদের কথা আলাদা। ৪১. আরাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বানাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ সরল পথ। ৪২. (য়) এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার অবশ্যই আমার (ঝাঁটা) বানা, তাদের পন্ন তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত ১০ তানে ব্রুক্তিন নির্দ্ধির কানে আধিপত্য চলবে না। ১০ তান ব্রুক্তিন নির্দ্ধির জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | তুমি (এক্ষুণি) এখান থেকে বেরিয়ে যাও, কেননা তুমি অভিশপ্ত, | ٣٣ قَالَ فَاغْرُجُ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْرٌ لا |
| করা হবে। ৩৭. আরাহ তায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভূক্ত (হলে), ৩৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত । ৩৯. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথস্রষ্ট করে দিলে (আমিও তোমার শপথ করে বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে তাদের (জনাহের কাজসমূহ) শোভন করে তুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি পথস্রষ্ট করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার খাটি বান্দা তাদের কথা আলাদা । ৪১. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হল্ছে সহজ্ঞ সরল পথ । ৪২. (য়), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার অনুসরণ করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (য়াট) বান্দা, তাদের পন্ধ তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না । ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত স্বালী ক্রিইন্টে নির্ক্তির নির্ক্তর্থী ভালির করি বান্দা হল্পর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না । ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | অভিশাপ । | |
| ত৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। ত৯. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথন্দ্রন্ত করে দিলে (আমিও তোমার লপথ করে বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে তাদের (গুনাহের কাজসমূহ) শোভন করে তুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি পথন্দ্রন্ত করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার খাঁটি বান্দা তাদের কথা আলাদা। ৪১. আল্লাহ তারালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ সরল পথ। ৪২. (য়), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার বান্দার করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (য়াট) বান্দা, তাদের পর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত ১৯. বান্দাইকে নির্ক্তি বিশ্বিত করে তানা আধিপত্য চলবে না। ১৯. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত ১৯. তার অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | | |
| ত৯. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে (আজ) আমাকে পথদ্রষ্ট করে দিলে (আমিও তোমার লপথ করে বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে তাদের (জনাহের কাজসমূহ) লোভন করে তুলবো এবং তাদের স্বাইকে আমি পথদ্রষ্ট করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার খাঁটি বান্দা তাদের কথা আলাদা। ৪১. আরাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হল্ছে সহজ্জ সরল পথ। ৪২. (য়ৢ), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার অনুসরণ করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (ঝাটি) বান্দা, তাদের প্রর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহানুাম হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত ১০ বিক্রমির্টা কিন্ট্রিট্রটা কিন্ট্রটা কিন্ট্রটা কিন্তুত্ব লাভিক বিদ্যালয় বিশ্বান বিশ্বান বিশ্বান কর্মান কর্মান হল্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | ৩৭. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হাঁ যাও), যাদের (এ) অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভুক্ত (হলে), | - |
| বলছি), আমি মানুষদের জন্যে পৃথিবীতে তাদের (গুনাহের কাজসমূহ) শোভন করে তুলবো এবং তাদের সবাইকে আমি পথদ্রট করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার বাঁটি বান্দা তাদের কথা আলাদা। ৪১. আল্লাহ তারালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ্ঞ সরল পথ। ৪২. (য়), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার শুভি আমার বিলি) বান্দা, তাদের পর তোমার ফোলা অন্যরা অবশ্যই আমার (ঝাঁটি) বান্দা, তাদের পর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | ৩৮. (এ অবকাশ) সুনির্দিষ্ট সময় আসার দিন পর্যন্ত। | |
| আমি পথন্দ্ৰট করে ছাড়বো, ৪০. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার বাঁটি বান্দা তাদের কথা আলাদা। ৪১. আল্লাহ তারালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ্ঞ সরল পথ। ৪২. (য়ৢ), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার বান্দাহদের করেব তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (ঝাটি) বান্দা, তাদের পর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | | |
| 8১. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (আমার নিষ্ঠাবান বানাহদের জন্য মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হছে সহজ সরল পথ। ৪২. (য়ৢ), এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার আমার কাছ করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (ঝাটি) বান্দা, তাদের পর তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। ৪৩. আর অবশ্যই জাহানুম হছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত | কাজসমূহ) শোভন করে তুলবো এবং তাদের সবাইকে | , |
| বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) এটাই হচ্ছে সহজ সরল পথ। 8২. (য়ৢ৾,) এ গোমরাহ মানুষদের মধ্যে যারা তোমার الله عَلَيْهِ ﴿ سُلْطَى ۚ اللهِ الهِ ا | | ٣٠ إلَّا عِبَادَكَ مِنْهُرُ الْهُخْلَصِيْنَ |
| অনুসরণ করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (बेणि) বানা, তাদের গন্ধ তোমার কোনো আধিপত্য চলবে না। हिंदी के कि | বান্দাহদের জন্যে মূলত) আমার কাছ পর্যন্ত (পৌছানোর) | ٣١ قَالَ هٰنَ السِرَاطُّ عَلَى مُسْتَقِيْر |
| ৪৩. আর অবশ্যই জাহান্নাম হচ্ছে তাদের সবার প্রতিশ্রুত ১০০ কিন্তু নির্দ্দির তাদের সবার প্রতিশ্রুত | অনুসরণ করবে তারা ছাড়া অন্যরা অবশ্যই আমার (ᆒ | ١١٠ إِنْ عِبَادِي تَيْسَ لَكُ عَتِيهِر سَتَقَى إِلا |
| ا و ان جهم ليونس هي جيعين س د | | مَنِ النَّبَعَكَ مِنَ الْفُوِيْنَ |
| | | ٣٣ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَبَوْعِلُهُمْ ٱجْبَعِيْنَ سَهِ |
| প্রপ্ত তাতে থাকবে সাতটি (বিশালকায়) দরজা; (আবার) كُمْ بُابٍ مِّنْهُمُرُ (বিশালকায়) দরজা | , | ٣٣ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ، لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُرْ |
| এগুলোর প্রতিটি দরজা (দিয়ে প্রবেশ করা)-এর জন্যে তিন্দ্র ক্রিকরে এক একটা নির্দিষ্ট অংশ। | ` , | ده الدوم جزء مقسو ع |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
|--------------------------|--|---|
| | ৪৫. (এর বিপরীত) যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে তারা অবশ্যই (সেদিন) জান্নাত ও ঝর্ণাধারায় (বহুমুখী নেয়ামতে) অবস্থান করবে; | ٢٥ إِنَّ الْهُتَّقِينَ فِي جَنَّسٍ وَّعُيُونٍ ، |
| | ৪৬. (এই বলে তাদের অভিবাদন জানানো হবে,) তোমরা শান্তি ও নিরাপন্তার সাথে সেখানে প্রবেশ করো। | ٣٦ أَدْهُلُوْهَا بِسَلْمٍ أُمِنِيْنَ |
| | ৪৭. তাদের অন্তরে ঈর্ষা বিদ্বেষ যাই থাক আমি (সেদিন) তা দৃর করে দেবো, তারা একে অপরের ভাই হয়ে পরস্পরের মুখোমুখি সেখানে অবস্থান করবে। | ٣٠ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُّ وُرِهِرْ مِّنْ غِلِ ۗ إِخْوَانًا عَلَى سُرُر مِّنَ غِلِ ۗ إِخْوَانًا |
| | ৪৮. সেখানে তাদের কোনোরকম অবসাদ স্পর্শ করবে না, আর তাদের সেখান থেকে কোনো দিন বেরও করে দেয়া হবে না। | ٨٨ لَا يَهَسُّهُر فِيْهَا نَصَبُّ وَّمَا هُر مِّنْهَا بِهُ حُرَجِيْنَ |
| | ৪৯. (হে নবী,) তুমি আমার বান্দাদের একথা বলে দাও, আমি অবশ্যই ক্ষমাশীল ও পরম দরালু, | ٣٩ نَبِّيْ عِبَادِيْ آَنِّيْ آَنَا الْفَقُوْرُ الرِّحِيْرُ لا |
| লাথেম | ৫০. (তাদের আরো বলে দাও) নিসন্দেহে আমার আযাবও হচ্ছে অত্যম্ভ কঠোর। | ٥٠ وَاَنَّ عَنَابِي هُوَ الْعَلَابُ الْأَلِيْرُ |
| उग्राक्त्य नात | ৫১. (হে নবী,) তুমি তাদের ইবরাহীমের মেহমানের কাহিনী থেকে (কিছু কথা) শোনাও। | ٥١ وَنَبِّنْكُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرُهِيْرَ ر |
| ওয়াব | ৫২. যখন তারা তার কাছে হাযির হয়ে বললো, (তোমার ওপর) 'সালাম', তখন সে (তাদের ভাব ভংগি দেখে) বললো, আমরা অবশ্যই তোমাদের ব্যাপারে শংকিত। | ٥٢ إِذْ دَمَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلْمًا ، قَالَ إِنَّا مِنْكُرْ وَجِلُوْنَ |
| | ৫৩. ওরা বললো, না, তুমি আশংকা করো না, আমরা তোমাকে এক জ্ঞানবান সন্তানের শুভ সংবাদ দিচ্ছি। | ٥٣ قَالُوْ الاَ تَوْجَلُ إِنَّا لَبَهِّرُكَ بِغُلْمِ عَلِيْمٍ |
| | ৫৪. সে বললো, তোমরা আমার (এমন অবস্থার) ওপর (সন্তানের) সৃসংবাদ দিচ্ছো- (যখন) বার্ধক্য (-জনিত অবস্থা) আমাকে স্পর্শ করে ফেলেছে, অতপর (এ অবস্থায়) তোমরা আমাকে কিসের সুসংবাদ দেবে? | ۵۴ قَالَ أَبَشُّرْتُهُونِي عَلَّى أَنْ مُسْنِيَ الْكِبَرُ نَبِرَ تُبَشِّرُونَ |
| | ৫৫. তারা বললো, হাঁ, আমরা তোমাকে সঠিক সুসংবাদই দিচ্ছি, অতএব তুমি হতাশাগ্রস্তদের দলভুক্ত হয়ো না। | ٥٥ قَالُوْا بَشَّرْنُكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْعَنِطِيْنَ |
| | ৫৬. সে বললো, গোমরাহ ব্যক্তি ছাড়া আল্লাহর রহমত থেকে কে নিরাশ হতে পারে? | ٥٦ قَالَ وَمَنْ يَقْنَعُ مِنْ رَّهُمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ |
| | ৫৭. হে (আল্লাহর পাঠানো) ফেরেশতারা, বলো (আমাকে এ সুসংবাদ দেয়া ছাড়া) তোমাদের (সামনে) আর কি (অভিযান) রয়েছেঃ | ٥٤ قَالَ فَهَا خَطْبُكُمْ أَيَّهَا الْبُوْسَلُوْنَ |
| | ৫৮. তারা বললো (হাঁ), আমাদের এক নাফরমান জ্ঞাতির বিরুদ্ধে (অভিযানে) পাঠানো হয়েছে (যারা অচিরেই বিনাশ হয়ে যাবে)। | ٥٨ قَالُوْ ۗ إِنَّا ۗ ٱرْسِلْنَا ۚ إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ٧ |
| | ৫৯. তবে দূতের আপনজনরা বাদে; আমরা অবশ্যই (আযাবের সময়) তাদের সবাইকে উদ্ধার করবো। | ٥٩ إِلَّا أَلَ لُوطٍ ، إِنَّا لَهُنَجُّوهُمْ أَجْهَعِيْنَ ٧ |
| (8) (* *) | ৬০. কিন্তু তার স্ত্রীকে নয় (আল্লাহ তায়ালা তার ব্যাপারে বলেন), আমি এ সিদ্ধান্ত নিয়ে নিয়েছি, সে (আযাবের সময়) পশ্চাশ্বর্তী দলভূক্ত হয়ে থাকবে। | ٦٠ إِلَّا امْرَاتَهُ قَنَّارْنَا لا إِنَّهَا لَئِنَ الْغَيِرِيْنَ عَ |
| • | ৬১. যখন (সে) ফেরেশতারা লৃতের পরিবার পরিজনদের কাছে এসে হাযির হলো, | ١٦ فَلَيًّا جَاءَ إِلَ لُوْطِ ۗ الْمُرْسَلُوْنَ ٧ |
| ** | ১৫ সূরা আল হেজর | মন্যিল ৩ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
|--|--|
| ৬২. (তখন) সে বললো আপনারা তো (দেখছি) অপরিচিত ধরনের লোক। | ٢٢ قَالَ إِنَّكُورُ قَوْمٌ مُّنْكَرُّونَ |
| ৬৩. তারা বললো (না আসলে তা নয়), আমরা তো বরং তাদের কাছে সে (আযাবের) বিষয়টাই নিয়ে এসেছি, যার ব্যাপারে তারা ছিলো সন্দিশ্ধ। | ٣٣ قَالُوا بَلْ هِئْنَكَ بِهَا كَانُوا فِيْدِ يَهْتَرُونَ |
| ৬৪. আমরা (তোমার কাছে) সত্য সংবাদ নিয়ে এসেছি এবং আমরা (হচ্ছি) সত্যবাদী। | ٦٢ وَٱتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصْرِقُونَ |
| ৬৫. সুতরাং তুমি রাতের কিছু অংশ থাকতে তোমার লোকজনসহ (এ জনপদ থেকে) বেরিয়ে পড়ো এবং তুমি নিজে তাদের পেছনে পেছনে চলতে থেকো, (সাবধান!) তোমাদের মধ্যে একজনও যেন পেছনে ফিরে না তাকায়, (ঠিক) যেদিকে (যাওয়ার জন্যে) তোমাদের আদেশ করা হবে, সেদিকেই চলতে থাকবে। | ٢٥ فَا سُرِ بِا فَلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعُ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتُ مِنْكُمْ اَحَلَّ وَالْمُوا حَيْثُ مُؤْمَرُونَ حَيْثُ تُؤْمَرُونَ |
| ৬৬. (ইতিমধ্যে) আমি তার কাছে এ ফয়সালা পাঠিয়ে দিয়েছি যে, এ জনপদের মানুষগুলোকে ভোর হতেই মূলোৎপাটিত করে দেয়া হবে। | ٦٢ وَقَضَيْنَا ۚ إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ مَّؤُلَاءِ مَقْطُوعً مُّصْبِحِيْنَ |
| ৬৭. (ইতিমধ্যে) নগরের অধিবাসীরা উল্পসিত হয়ে (লৃতের কাছে এসে) হাযির হলো। | ٦٤ وَجَاءَ أَهْلُ الْهَرِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ |
| ৬৮. (এদের আসতে দেখে) সে বললো (হে আমার দেশবাসী), এরা হচ্ছে আমার মেহমান, (এদের সাথে বশালীন আচরণ করে) তোমরা আমাকে অপমান করো না। | ٨٦ قَالَ إِنْ مُؤْكَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَغْضَعُونِ ٧ |
| ৬৯. তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমাকে (এদের সামনে) হেয় করো না। | ٦٩ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ |
| ৭০. তারা বললো, আমরা কি তোমাকে সৃষ্টিকৃলের (মেহমানদারী করা) থেকে নিযেধ করিনিঃ | ٤٠ قَالُوْ آ أَوَ لَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَلَمِيْنَ |
| ৭১. (এদের উজি গুনে) সে বললো, (একান্তই) যদি তোমরা কিছু (কামনা বাসনা চরিতার্থ) করতে চাও, তবে এখানে আমার (জাতির) মেয়েরা রয়েছে (এদের বিয়ে করে তোমরা নিজেদের প্রয়োজন মেটাতে পারো); | ٤١ قَالَ مَوْ كَاءٍ بَنْتِي ٓ إِنْ كُنْتُر فَعِلِيْنَ ، |
| ৭২. (আল্লাহ তায়ালা বললেন, হে নবী,) তোমার জীবনের শপথ (করে বলছি, সেদিন) এরা নিদারুণ এক নেশায় বিভোর হয়ে পড়েছিলো (আল্লাহর গযবের কোনো কথাই এরা বিশ্বাস করলো না)। | ٢٢ لَعَبْرُكَ إِنَّهُرْ لَفِيْ سَكُرَتِهِرْ يَعْبَمُونَ |
| ৭৩. অতপর সূর্যোদয়ের সাথে সাথেই এক মহানাদ (এসে) তাদের ওপর আঘাত হানলো, | ٣٧ فَاَعَلَ تُهُرُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ٧ |
| ৭৪. তারপর আমি তাদের নগরগুলো উলটিয়ে দিলাম এবং ওদের ওপর পাকানো মাটির পাধরের বৃষ্টি বর্ষণ করলাম; | ٣٤ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ أَمْطَرْنَا عَلَيْهِرُ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ، |
| ৭৫. অবশ্যই এ (ঘটনার) মাঝে পর্যবেক্ষণসম্পন্ন মানুষদের জন্যে (শিক্ষার) বহু নিদর্শন রয়েছে। | 44 إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيْتِ لِلْمُتَوَسِّدِينَ |
| ৭৬. (ধ্বংসস্তৃপের নিদর্শন হিসেবে) তা (আজো) রাস্তার পাশে দাঁড়িয়ে (আছে)। | ٢٦ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْرٍ |
| ৭৭. অবশ্যই এর মাঝে ঈমানদারদের জন্যে (আল্লাহর) নিদর্শন (মজুদ) রয়েছে; | ٤٤ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِلْمُؤْمِنِيْنَ ١ |
| ১৫ সূরা আল হেজর | মনযিল ৩ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
|---------------|--|--|
| | ৭৮. (লূতের জাতির মতো) 'আইকা'র অধিবাসীরাও যালেম ছিলো। | ٨ و وَإِنْ كَانَ أَصْحُبُ الْإَيْكَةِ لَظْلِمِيْنَ لا |
| ফ লাযেম | ৭৯. অতপর আমি তাদের কাছ থেকেও (তাদের না-ফরমানীর) প্রতিশোধ নিলাম, আর (আজ এ) উভয় | 49 فَانْتَقَهْنَا مِنْهُرْ رَوَاِتُّهُمَا لَبِامًا إِ |
| - ভয়াক্ষে | (জনপদই আযাবের চিহ্ন বহন করে) প্রকাশ্যে রাস্তার পাশে দাঁড়িয়ে আছে; | مَرِينِ طع |
| | ৮০. (একইভাবে) 'হেজর'বাসীরাও নবীদের অস্বীকার করেছিলো, | ٨٠ وَلَقَنْ كَنَّابَ أَشْعُبُ الْعِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ٧ |
| \mathcal{C} | ৮১. আমি আমার নিদর্শনসমূহ তাদের কাছে প্রেরণ করেছিলাম, অতপর তারা তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিলো, | ٨١ وَ أَتَيْنُهُمْ أَيْتِنَا فَكَانُواْ عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ٧ |
| | ৮২. তারা পাহাড় কেটে কেটে নিজেদের জন্যে ঘর বানাতো (এ আশায় যে), তারা (সেখানে) নিশ্চিন্তে জীবন কাটাতে পারবে। | ٨٢ وكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا أُمِنِيْنَ |
| | ৮৩. অতপর (না-ফরমানীর জন্যে একদিন) প্রত্যুবে তাদের ওপর মহানাদ এসে আঘাত হানলো, | ٨٣ فَأَغَنَ تُهُرُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ٧ |
| | ৮৪. সুতরাং তারা (জীবনভর) যা কিছু কামাই করেছে, (আল্লাহর গযবের সামনে) তা কোনোই কাজে আসেনি। | ٨٣ فَهَا آغَنى عَنْهُر مَّا كَانُوْ إِيكْسِبُوْنَ ا |
| | ৮৫. (জেনে রেখো,) আকাশমালা, যমীন এবং এ দু'য়ের মাঝখানে যা কিছু আছে তার কোনোটাই আমি অযথা | ٨٥ وَمَا عَلَقْنَا السَّاوٰسِ وَالْأَرْضَ وَمَا |
| | পয়দা করিনি; অবশ্যই (সব কিছুর শেষে) একদিন কেয়ামত আসবে (এবং এ সৃষ্টিলীলা ধ্বংস হয়ে যাবে), | بَيْنَهُمَّا إِلَّا بِالْحَقِّ • وَإِنَّ السَّاعَةَ لَا تِيلَّ |
| | ত্তরামত আসবে (এবং এ স্বাচনালা ব্যংস হয়ে বাবে), অতএব হে নবী, তুমি পরম ঔদাসীন্যের সাথে (ওদের) উপেক্ষা করো। | فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَوِيْلَ |
| | ৮৬. নিকয়ই তোমার মালিক হচ্ছেন এক মহাস্রষ্টা, মহাজ্ঞানী। | ٨٦ إِنَّ رَبُّكَ مُوَ الْخَلَّقُ الْعَلِيْرُ |
| | ৮৭. অবশ্যই আমি তোমাকে সাত আয়াত (বিশিষ্ট একটি সূরা) দিয়েছি, যা (নামাযের ভেতর ও বাইরে) বার বার | ٨٤ وَلَقَنُ اتَيْنَكَ سَبْعًا مِّنَ الْهَثَانِيُ |
| | পঠিত হয়– আরো দিয়েছি (জীবন বিধান হিসাবে) মহান (গ্রন্থ) কোরআন। | وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْرَ |
| | ৮৮. আমি এ (কাফেরদের) মাঝে কিছু লোককে ভোগ বিলাসের যে উপকরণ দিয়েছি, তার প্রতি তুমি কখনো | ٨٨ ٧ تَهُنَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْنَا بِهِ |
| | তোমার দু'চোখ তুলে তাকাবে না, তাদের (অবস্থার) ওপর তুমি কোনো ক্ষোভ করবে না, (ওদের কথা বাদ দিয়ে) বরং তুমি ঈমানদারদের দিকেই ঝুঁকে থেকো। | اَزُواَجًا مِّنْهُرْ وَلَا تَعُزَنُ عَلَيْهِرْ وَاخْفِضَ جَنَاهَكَ لِلْهُوْمِنِيْنَ |
| | ৮৯. (সবাইকে) বলে দাও, আমি হচ্ছি (জাহানামের) সুস্পট সতর্ককারী মাত্র, | ٨٩ وَقُلْ إِنِّي آَنَا النَّذِيثُو الْمُبِيْنُ ء |
| | ৯০. যারা বিভিন্ন দলে বিভক্ত তাদের ওপরও আমি এভাবেই (কেতাব) নাযিল করেছিলাম, | ٩٠ كَمْ ۗ ٱنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ عَ |
| | ৯১. (এরা হচ্ছে সেসব লোক) যারা কোরআনকে টুকরো টুকরো করেছে। | ا 1 الَّذِيثَىَ جَعَلُوا الْقُرْأَنَ عِضِيْنَ |
| | ৯২. সূতরাং (হে নবী,) তোমার মালিকের শপথ, ওদের আমি অবশ্যই প্রশ্ন করবো, | ٩٢ فَورَبِّكَ لَنَسْنَلَنَّهُمْ أَجْبَعِيْنَ لا |
| | ১৫ সূরা আল হেজর | মনবিল ৩ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
|--|---|
| ৯৩. (প্রশ্ন করবো) সেসব বিষয়ে যা কিছু (আচরণ) তারা (কোরআনের সাথে) করেছে। | ٩٣ عَمًّا كَانُوْ الْ يَعْبَلُونَ |
| ৯৪. অতএব তোমাকে যে আদেশ দেয়া হয়েছে তুমি খোলাখুলি (জনসমক্ষে) তা বলে দাও এবং (এর পরও) যারা (আল্লাহর সাথে) শরীক করে তাদের তুমি উপেক্ষা করো। | ٩٣ فَاصْلَعْ بِهَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْهُشْرِكِيْنَ الْهُشْرِكِيْنَ |
| ৯৫. বিদ্রূপকারী ব্যক্তিদের মোকাবেলায় আমিই তোমার জন্যে যথেষ্ট, | 90 إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْهُسْتَهْزِءِيْنَ ٧ |
| ৯৬. যারা আল্লাহর সাথে অন্যকে মাবৃদ বানিয়ে নিয়েছে তারা অচিরেই (তাদের পরিণাম) জানতে পারবে। | ٩٦ النَّانِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الْمَا أَغَرَ عَ فَسَوْنَ يَعْلَبُونَ فَسَوْنَ يَعْلَبُونَ |
| ৯৭. (হে নবী,) আমি (একথা) ভালো করেই জ্ঞানি, ওরা যা কিছু বলে তাতে তোমার অন্তর সংকৃচিত হয়, | 94 وَلَقَلْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيْقُ مَلْأُرُكَ بِهَا يَقُوْلُونَ لا |
| ৯৮. অতএব তুমি তোমার মালিকের প্রশংসা দ্বারা তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা করো এবং তুমিও সাজদাকারীদের দলে শামিল হয়ে যাও, | ٩٨ فَسَيَّعْ بِحَبْلِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السَّجِرِيْنَ لا |
| ৯৯. (হে নবী,) যতোক্ষণ পর্যন্ত তোমার কাছে নিশ্চিত (মৃত্যুজনিত) ঘটনা না আসবে ততোক্ষণ পর্যন্ত তুমি তোমার মালিকের এবাদাত করতে থাকো। | 99 وَاعْبُنُ رَبِّكَ مَتَّى يَٱتِيكَ الْيَقِيْنُ عَ |
| | سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةً |
| স্রা আন নাহল | أَيَاتُ : ١٢٨ كُوُعٌ : ١٦ |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ১২৮, ককু ১৬ | |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. (এ বুঝি) আল্লাহ তারালার (আযাবের) আদেশ এসে গেলো! অতপর (হে কাফেররা), এর জন্যে তোমরা (মোটেই) তাড়াহুড়ো করো না; তিনি মহিমানিত, এ | ا أَتَى آمْرُ اللهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ م سُبْطُنَهُ وَتَعْلَى عَبًّا يُشْرِكُونَ |
| (যালেম) লোকেরা তাঁর সাথে (অন্যদের) যে (ভাবে) শরীক করে, তিনি তার থেকে অনেক উর্ম্বে। | |
| ২. তিনি ওহী দিয়ে তাঁর আদেশবলে তাঁর যে বান্দার ওপর চান ফেরেশতাদের পাঠান, মানুষদের সতর্ক করে | ٢ يُنَزِّلُ الْمَلَيْكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ |
| দাও, আমি ছাড়া দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই, অতএব | يُشَاءُ مِنْ عِبَادِةٍ أَنْ أَنْدِرُوا أَنَّدُ لا إِلَّا إِلَّا |
| তোমরা আমাকেই ভয় করো। | اَنَا فَاتَّقُونِ |
| তিনি আসমানসমূহ ও যমীনকে যথাবিধি তৈরী করেছেন; তারা যাদের (তাঁর সাথে) শরীক করে তিনি তার চাইতে অনেক উর্দ্ধে। | مَّ خَلَقَ السَّاوٰ فِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ، تَعْلَى عَبَّا يُشْرِكُونَ |
| ৪. তিনি (ক্ষুদ্র একটি) শুক্রকণা থেকে (যে) মানুষ তৈরী করেছেন− (আকর্যের ব্যাপার!) সে (এখানে এসে স্বয়ং তার স্রষ্টার সাথেই) প্রকাশ্য বিতর্ককারী বনে গেলো! | مُ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ تُطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْرٌ مُبِينَ مُبِين |
| ৫. তিনি চতুষ্পদ জানোয়ার পয়দা করেছেন, তোমাদের জন্যে ওতে শীত বল্লের উপকরণ (সহ) আরো অনেক | ٥ وَالْإَنْعَامُ غَلَقَهَا ءَ لَكُرْ فِيْهَا دِنْءٌ وَّمَنَافِعُ |
| ধরনের উপকার রয়েছে, (সর্বোপরি) তাদের কিছু অংশ তোমরা তো আহারও করে থাকো, | وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ب |
| ১৬ সূরা আন নাহল | মন্যিল ৩ |

৬. তোমরা যখন গোধুলিলগ্নে ওদের ঘরে ফিরিয়ে আনো, আবার প্রভাতে যখন ওদের (চারণভূমিতে) নিয়ে যাও, তখন এর মাঝে তোমাদের জন্যে (নয়নাভিরাম) সৌন্দর্য উপকরণ থাকে.

٦ وَلَكُمْ فِيْهَا جَهَالٌّ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُونَ س

৭. তোমাদের (পণ্য সামগ্রীর) বোঝাও তারা (এমন দুর দুরান্তের) শহরে (বন্দরে) নিয়ে যায়, যেখানে প্রাণান্তকর কষ্ট ব্যতিরেকে তোমরা (কোনোদিনই সেসব পণ্য নিয়ে) পৌছতে পারতে না: অবশ্যই তোমাদের মালিক তোমাদের ওপর স্নেহপরায়ণ ও পরম দয়ালু.

٤ وَتَحْبِلُ آثْقَالَكُمْ إِلَى بَلَكِ لَّرْ تَكُوْنُوْ ا بلِغِيهِ إلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُس مَ إِنَّ رَبَّكُمْ لرعوف رحيمرا

৮. (তিনি) ঘোড়া, খচ্চর ও গাধা (সৃষ্টি করেছেন), যাতে তোমরা আরোহণ করো, (এ ছাড়া তাতে) শোভা (বর্ধনের ব্যবস্থাও) রয়েছে: তিনি আরো এমন (অনেক ধরনের জন্ত জানোয়ার) পয়দা করেছেন, যার (পরিমাণ ও উপযোগিতা) সম্পর্কে তোমরা (এখনও পর্যন্ত) কিছুই জানো না।

^ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَبِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً م وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ

৯. আল্লাহ তায়ালার ওপরই (নির্ভর করে মানুষদের) সরল পথ নির্দেশ করা, (বিশেষ করে) যেখানে (অন্য পথের মধ্যে) কিছু বাঁকা পথও রয়েছে, তিনি যদি চাইতেন তাহলে তিনি তোমাদের সবাইকেই সরল পথে পরিচালিত করতে পারতেন।

٩ وَعَلَى اللَّهِ قَصْلُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ، وَلَوْ شَاءَ لَهَلُ دُكُر أَجْهَعِينَ ع

করেন, তার কিছু অংশ হচ্ছে পান করার আর (কিছু অংশ এমন, সেখানে) তা দারা গাছপালা (জন্মায়) যাতে তোমরা (জন্তু জানোয়ারদের) প্রতিপালন করো।

شَرَابٌ ومنهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ

১১. সে (পানি) দ্বারা তিনি তোমাদের জন্যে শস্য উৎপাদন করেন- যায়তুন, খেজুর ও আংগুর (সহ) সব ধরনের ফল (জন্মান), অবশ্যই এর মাঝে চিস্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে (অনেক) নিদর্শন রয়েছে।

١١ يُنْبِتُ لَكُر بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّحْيْلَ وَالْإَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّهَرِسِ ، إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكُّونَ

১২. তিনি তোমাদের (সুবিধার) জন্যে রাত, দিন ও চাঁদ সুরুজকে নিয়ন্ত্রিত করে দিয়েছেন: নক্ষত্ররাজিও তাঁর আদেশে নিয়ন্ত্রণাধীন (রয়েছে), অবশ্যই এর মাঝে তাদের জন্যে (প্রচর) নিদর্শন রয়েছে যারা বোধশক্তিসম্পন্ন.

١٢ وَسَخُّو لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لا وَالشَّهْسَ وَالْقَهَرَ ، وَالنَّجُوا مُسَحِّر عَ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَا يُسِ لِّقَوْرًا يَتَعْقِلُونَ لا

১৩. রং বে-রংয়ের আরো অনেক বস্তুও (তিনি তোমাদের নিয়ন্ত্রণাধীন করেছেন), যা পৃথিবীর বুকে তিনি তোমাদের জন্যেই সৃষ্টি করে রেখেছেন: অবশ্যই এসব (কিছুর) মাঝে সেসব জাতির জন্যে নিদর্শন রয়েছে যারা (এসব থেকে) নসীহত গ্রহণ করে।

١٣ وَمَا ذَرَا لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا ٱلْوَانَدُ م إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَا يَدُّ لِقُومٍ يَنْ كُوونَ

১৪. তিনিই সমুদ্রকে (তোমাদের) অধীনস্থ করে দিয়েছেন, যেন তার মধ্য থেকে তোমরা তাজা মাছ খেতে পারো এবং তা থেকে তো তোমরা (মণিমুক্তার) গহনাও আহরণ করো, যা তোমরা পরিধান করো, তোমরা দেখতে পাচ্ছো, কিভাবে ওর বুক চিরে জলযানগুলো এগিয়ে চলে. যেন তোমরা এর মাধ্যমে আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহ (রেযেক) সন্ধান করতে পারো, (সর্বোপরি) তোমরা যেন তাঁর (নেয়ামতের) কৃতজ্ঞতা আদায় করো।

١٣ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ج وَتَرَى الْقُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُوونَ

১৫. তিনিই যমীনের মধ্যে পাহাড়সমূহ রেখে দিয়েছেন, যাতে করে যমীন তোমাদের নিয়ে (এদিক সেদিক) ঢলে না পড়ে, তিনিই নদী ও পথঘাট বানিয়ে দিয়েছেন, যাতে করে তোমরা (সব জায়গা দিয়ে নিজেদের) গন্তব্যস্তদে পৌছতে পারো.

١٥ وَٱلْقُى فِي الْإَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَعِيْلُ بِكُرْ وَأَنْهِ ۗ ا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَلُونَ ٧

১৬ সুরা আন নাহল

366

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |] |
|--|--|----|
| ১৬. (তিনি তোমাদের জন্যে) বিভিন্ন (ধরণের) চিহ্ন সৃষ্টি করেছেন, (তা ছাড়া) নক্ষত্রের (অবস্থান) দ্বারাও তারা পথের দিশা পায়। | ١٦ وَعَلَيْتٍ و وَبِالنَّجْرِ هُرْ يَهْتَكُوْنَ | |
| ১৭. অতপর (তোমরাই বলো,) যিনি (এতো কিছু) সৃষ্টি করেন তিনি কি (করে) তার মতো (হবেন) যে কিছু সৃষ্টিই করতে পারে না; তোমরা কি (এ থেকে) কোনো উপদেশ গ্রহণ করবে নাঃ | ا أَفَهَى يَّخْلُقُ كَهَى ۚ لَا يَخْلُقُ ا أَفَلَا تَنَكَّرُونَ | |
| ১৮. তোমরা যদি (তোমাদের ওপর) আল্লাহ তায়ালার নেয়ামতগুলো গণনা করতে চাও, তাহলে কখনো তা গণনা (করে শেষ) করতে পারবে না; নিন্চয়ই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু। | ١٨ وَإِنْ تَعُلُّوْا نِعْهَ اللَّهِ لَا تُحْصُوْهَا ١٠ إِنَّ اللهِ لَا تُحْصُونُها ١٠ إِنَّ اللهِ لَا تُحْمُونُونَا ١٠ إِنَّ اللهِ لَا تُحْمُونُونَا اللهِ لَاللهِ لَا تُحْمُونُونَا ١٠ إِنَّ اللهِ لَا لَهُ لَا يَعْمَلُونَا اللهِ لَا لَا لَهُ لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا للهُ لَا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَوْلًا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَهُ لَا لَا لَا لَهُ لَا لَا لَا لَهُ لَا لَا لَا لَهُ لَا لَا لَهُ لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا | |
| ১৯. তোমরা যা কিছু গোপন রাখো আর যা কিছু প্রকাশ করো, আল্লাহ তায়ালা তা সবই জানেন। | 19 وَ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تَعْلِنُونَ | |
| ২০. আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে এরা কার্যসিদ্ধির জন্যে যাদের ডাকে, তারা তো নিজেরা কিছুই পয়দা করতে পারে না, বরং তাদেরই সৃষ্টি করা হয়; | ٢٠ وَ النَّٰ بِيْنَ يَنْ عُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ مَنْ دُوْنِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ مَ | |
| ২১. সেগুলো তো হচ্ছে (কতিপয়) মৃত (বন্ধু), জীবিত কিছু নয়, (অথচ) তাদের (এটুকুও) বোধ নেই যে, তাদের কখন আবার উঠিয়ে আনা হবে। | ٢١ أَمُوَاتُ غَيْرُ أَحْيَاءِ ع وَمَا يَشْعُرُونَ لا أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ع | (E |
| ২২. (হে মানুষ,) তোমাদের মাবুদ তো একজ্ঞন (তিনি ছাড়া দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই), অতপর যারা পরকালের ওপর ঈমান আনে না তাদের অন্তরসমূহ (এমনিই সত্য) অস্বীকারকারী হয়ে পড়ে এবং এরা নিজেরাও হয় (দারুণ) অহংকারী। | ٢٢ إِلْهُكُورُ إِلْهٌ وَّاحِلُّ مِ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ الْمُكُورُ إِلَّهٌ وَّامِرُ مَّاكِمِرُ مُنْكِرَةً وَهُو مُسْتَكْبِرُونَ | |
| ২৩. নিসন্দেহে আল্পাহ তায়ালা জানেন, এরা যা কিছু গোপন করে এবং যা কিছু প্রকাশ করে, তিনি কখনো অহংকারীদের পছন্দ করেন না। | ٣٣ لَا جَرَاً أَنَّ اللَّهَ يَعْلَيُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْرِوْنَ وَمَا يُعْلِرُونَ وَمَا يُعْلِرُونَ | |
| ২৪. যখন এদের (এ মর্মে) জিজ্ঞেস করা হয়, তোমাদের মালিক কি ধরনের জিনিস নাযিল করলেন, তখন তারা বলে, তা তো আগের কালের উপকথা (ছাড়া আর কিছুই নয়)। | ٢٣ وَإِذَا قِيْلَ لَهُرْ مَّاذَاۤ أَنْزَلَ رَبَّكُرْ ٧ قَالُوۤاۤ أَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ٧ | |
| ২৫. ফলে শেষ বিচারের দিন এরা নিজেদের (পাপের) ভার পূর্ণমাত্রায় বহন করবে, (এরা সেদিন) তাদের (পাপের) কোঝাও (বহন করবে) যাদের এরা জ্ঞান (–ভিত্তিক প্রমাণ) ছাড়া গোমরাহ করে দিয়েছিলো; (সেদিন) ওরা যা বহন করবে তা কতো নিকৃষ্ট! | ٢٥ لِيَحْمِلُوْ آ اَوْزَارَهُرْ كَامِلَةً يَّوْاً الْقِيْمَةِ ٧ وَمِنْ آوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُرْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ط آلَا سَاءً مَا يَزِرُوْنَ ع | |
| ২৬. এর আগেও (অনেক) মানুষ (দ্বীনের বিরুদ্ধে) চক্রান্ত করেছিলো, কিন্তু আল্লাহ তায়ালা তাদের (পরিকল্পনার সমগ্র) ইমারত তার ভিত্তিমূল থেকে নির্মূল করে দিয়েছিলেন, তার পর তাদের (এ চক্রান্তরূপী) ইমারতের | ٢٦ قَنْ مَكَرَ النِّهِنَ مِنْ قَبْلِهِرْ فَاتَى اللهُ بُنْيَانَهُرْ مِّنَ الْقَوَاعِلِ فَخَرَّ عَلَيْهِرُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِرْ وَٱتْهُرُ الْعَنَابُ مِنْ حَيْثُ لَا | |
| ছাদ তাদের ওপরই ধসে পড়লো এবং তাদের ওপর এমন | من موجور والعمر استاب بن سب ، | |

(বহু) দিক থেকেই আযাব এসে আপতিত হলো, যা তারা ২৬৬

কল্পনাও করতে পারেনি।

২৭, কেয়ামতের দিন আল্লাহ তায়ালা অতপর ওদের (আরো বেশী পরিমাণে) লাঞ্ছিত করবেন, তিনি (তাদের) জিজ্ঞেস করবেন, কোথায় আমার সেসব শরীক যাদের ব্যাপারে তোমরা মানুষদের সাথে বাকবিতভা করতে? गদের (সঠিক) জ্ঞান দেয়া হয়েছিলো তারা (সেদিন) أَيُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْحِرْى الْعَوْرَى الْمَاكِ । বলবে. অবশ্যই যাবতীয় অপমান লাঞ্ছনা ও অকল্যাণ (আজ) কাফেরদের ওপরই (আপতিত হবে).

٢٠ ثُرَّ يَوْاَ الْقِيْهَةِ يُخْزِيْهِرْ وَيَقُولُ آيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَي كُنْتُر تُشَاقُّونَ فِيهِرْ ﴿ قَالَ وَ السُّوَّءَ عَلَى الْكُفِرِيْنَ لا

২৮. এরা হচ্ছে তারা, ফেরেশতারা (এমন অবস্থায়) যাদের মৃত্যু ঘটায় যখন তারা নিজেদের ওপর যুলুম করতে থাকে, অতপর তারা আত্মসমর্পণ করে (এবং বলে), আমরা তো কোনো মন্দ কাজ করতাম না: (ফেরেশতারা বলবে) হাঁ, তোমরা যা কিছু করতে আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে সম্যক অবহিত রয়েছেন।

٢٨ النَّذِينَ تَتَوَفَّعُمُ الْمَلَيْكَةُ ظَالِمِيَ أَنْفُسِهِرْ مِ فَٱلْقَوا السَّلَرَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوء م بَلِّي إِنَّ اللَّهُ عَلَيْرٌ اللَّهُ عَلَيْرُ اللَّهُ عَلَيْرُ اللَّهُ عَلَيْرُ اللَّهُ عَلَيْرُ

২৯. সুতরাং (আজ) জাহান্লামের দরজাসমূহ দিয়ে তোমরা (আগুনে) প্রবেশ করো, সেখানে তোমরা চিরদিন থাকবে, অহংকারীদের আবাসস্থল কতো নিকষ্ট!

٢٩ فَادْغُلُوا أَبُوابَ جَهَنَّرَ عُلَى ثِي فَيْهَا فَلَبِئُسَ مَثُومَ الْهُتَكَبِّرِيْنَ

৩০. (অপরদিকে) পরহেযগার ব্যক্তিদের বলা হবে. তোমাদের মালিক (তোমাদের জ্বন্যে) কি নাযিল করেছেন: তারা বলবে. (হাঁ. এ তো হচ্ছে) মহাকল্যাণ: যারা নেক কাজ করে তাদের জ্বন্যে এ দুনিয়ায়ও কল্যাণ রয়েছে, আর পরকালের ঘর তো হচ্ছে (আরো) উৎকষ্ট কল্যাণ: পরহেযগার ব্যক্তিদের (এ) আবাস কতো সুন্দর!

٣٠ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَا ذَآ ٱنْزَلَ رَبُّكُمْ. قَالُوْا خَيْرًا مَ لِلَّذِينَ آحْسَنُوْا فِي هُذِهِ النَّّنْيَا حَسَنَةً ، وَلَنَارُ الْأَخِرَةِ غَيْرٌ ، وَلَنِعْرَ دَارُ الْمُتَّقِينَ لا

৩১. চিরস্থায়ী এক জান্লাত- যাতে তারা প্রবেশ করবে. যার পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে. (উপরম্ভ) সেখানে তারা যা কিছুই কামনা করবে তাই তাদের জন্যে (সরবরাহের ব্যবস্থা) থাকবে: এভাবেই আল্লাহ তায়ালা পরহেযগার ব্যক্তিদের (তাদের নেক কাজের) প্রতিফল দান করেন.

٣١ جَنْسُ عَلَنٍ يَّلْ مُلُوْنَهَا تَجْرِئُ مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ لَهُرْ فِيْهَا مَا يَشَاءُوْنَ • كَنْ لِكَ يَجُزى اللهُ الْهُتَّقِينَ لا

৩২. এরা হচ্ছে তারা, ফেরেশতারা যাদের পবিত্র অবস্থায় মৃত্যু ঘটাবে, তারা (তাদের উদ্দেশে) বলবে, তোমাদের ওপর শান্তি বর্ষিত হোক, (দুনিয়ায়) তোমরা যে আমল করতে তারই কারণে আজ তোমরা জান্রাতে প্রবেশ করো।

٣٢ الَّذِينَ تَتَوَفَّدهُرُ الْمَلَّئِكَةُ طَيِّبِينَ لا يَقُوْلُوْنَ سَلْرٌ عَلَيْكُرُ لا ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِهَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

৩৩. (হে নবী, তুমি কি মনে করো,) ওরা (শুধু এ জন্যেই) অপেক্ষা করছে যে, তাদের কাছে (একদিন) ফেরেশতা নাযিল হবে, কিংবা তোমার মালিকের পক্ষ থেকে কোনো (আযাবের) হুকুম আসবে: এদের আগে যারা এসেছিলো তারা এমনটিই করেছে: (এদের ওপর আযাব পাঠিয়ে) আল্লাহ তায়ালা কোনো যুলুম করেননি, বরং তারা নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করেছে।

٣٣ مَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُرُ الْمَلَّئِكَةُ أَوْ يَاْتِيَ أَمْهُ رَبِّكَ ء كَنْ لِكَ فَعَلَ الَّٰنِيْنَ مِيْ تَبْلِهِمْ ﴿ وَمَا ظَلَمَهُمُّ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوْا

আপতিত হলো, (এক সময়) সে আযাব তাদের بهِر وَمَاقَ بِهِر দেশ পরিবেষ্টন করে নিলো, যা নিয়ে তারা (হামেশা) ঠাটা বিদ্রূপ করে বেডাতো।

مَّا كَانُوْ إِبِهِ يَسْتَهْزُءُوْنَ ع



৩৫. মোশরেকরা বলে, যদি আল্লাহ তায়ালা চাইতেন তাহলে আমরা তো তাঁকে বাদ দিয়ে অন্য কিছর এবাদাত করতাম না– না আমরা, না আমাদের বাপ দাদারা (অন্য কারো এবাদাত করতো), আমরা (তাঁর অনুমতি ছাড়া) কোনো জিনিস হারামও করতাম না: একই ধরনের কাজ তাদের পূর্ববর্তী লোকেরাও করেছে, (আসলে) রসুলদের ওপর সুস্পষ্ট বাণী পৌছে দেয়া ছাড়া আর কোনো (অতিরিক্ত) দায়িত কি আছে?

٣٥ وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَلْنَا مِنْ دُوْنِهِ مِنْ شَيْء تَحْنُ وَلَا إَبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهِ مِنْ شَيْءِ و كَنْ لِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُهِمْ ۚ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ الَّهِ الْبَلْغُ الْهُبِيْنُ

৩৬. আমি অবশ্যই প্রত্যেক জাতির কাছে রসুল পাঠিয়েছি, যাতে করে (তাদের কাছে সে বলতে পারে.) তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করো এবং আল্লাহ তায়ালার বিরোধী শক্তিসমূহকে বর্জন করো, সে জাতির মধ্যে অতপর আল্লাহ তায়ালা কিছু লোককে হেদায়াত দান করেন, আর কতেক লোকের ওপর গোমরাহী চেপে বসে গেলো; অতএব তোমরা (আল্লাহর) যমীনে পরিভ্রমণ করো তারপর দেখো, যারা (রসলদের) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে তাদের কি (ভয়াবহ) পরিণাম হয়েছিলো!

٣٦ وَلَقَلْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُلُوا اللَّهُ وَاجْتَنِبُوا الطَّاعُوْتَ عَ فَهِنْهُرْ مِّنَ هَلَى اللهُ وَمِنْهُمْ مِنْ حَقِّتُ عَلَيْهُ الضَّلْلَةُ ، فَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَنَّبِيْنَ

৩৭. (হে নবী.) তুমি এদের হেদায়াতের ওপর যতোই আগ্রহ দেখাওনা কেন (এরা কখনো হেদায়াত পাবে না). কেননা আল্লাহ তায়ালা যাকে গোমরাহ করে দিয়েছেন তাকে তিনি সৎপথে পরিচালিত করবেন না. আর এমন লোকদের (আযাব থেকে বাঁচানোর) জন্যে কোনো সাহায্যকারীও নেই!

٣٠ انْ تَحْرِسْ عَلَى مُرْسُرْ فَانَّ اللَّهُ لَا يَهْدِي مَن يَضِلُ وَمَا لَهُر مِن تَصِرينَ

৩৮. এরা আল্লাহ তায়ালার নামে শব্দ (ধরনের) শপথ করে বলে, যে ব্যক্তির মৃত্যু হয়ে যায় তাকে আল্লাহ তायाना कथता (विठीय नांत्र) উठिय जानरान ना; (रह عُلُوْ عَلَيْ وَعُلُ اللّٰهُ مَنْ يَبُّوْ سُ وَ بِلّٰى وَعُلُ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ مَنْ يَبُّوْ سُ وَ بِلّٰى وَعُلُ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى নবী, তুমি বলো,) হাঁ, (অবশ্যই এটা) তাঁর সত্য ওয়াদা, কিন্ত অধিকাংশ মানুষই তো জানে না.

٣٨ وَ اَقْسَهُوا بِاللَّهِ جَهْلَ أَيْهَانِهِمْ لا لا لا حَقًّا وَّلَّكِنَّ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَبُونَ لا

৩৯. (এটা তিনি) এ জন্যে (করবেন), যে বিষয়ে এরা মতবিরোধ করতো, (কেয়ামতের দিন) তাদের জন্যে তিনি তা স্পষ্ট করে বলে দেবেন এবং যারা (আজ) অস্বীকার করে তারাও (এ কথাটা) জেনে নেবে, তারা সত্যি সত্যিই ছিলো মিথ্যাবাদী।

٣٩ لِيُبَيِّنَ لَهُرُ الَّذِي يَخْتَلِفُوْنَ فِيه وَلَيْعَلَمُ الَّانِينَ كَفَوُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كُنْبِينَ

৪০. আমি যখনই কোনো কিছু (ঘটাডে) চাই, তখন সে বিষয়ে আমার বলা কেবল এটুকুই হয় যে, 'হও' অতপর তা (সংঘটিত) হয়ে যায়।

٣٠ انَّهَا قَوْلُنَا لشَيْءَ اذَاۤ أَرَدُنْهُ أَن نَّقُوْلَ لَدُّ كُنْ فَيَكُوْنُ ع

৪১. (স্মরণ রেখো.) যারা আল্লাহর পথে হিজ্ঞরত করেছে (বিশেষ করে ঈমান আনার কারণে) তাদের ওপর যুলুম হওয়ার পর, আমি অবশ্যই তাদের এ পৃথিবীতেই উত্তম আশ্রয় দেবো; আর আখেরাতের পুরস্কার – তা তো (এর থেকে) অনেক বেশী শ্রেষ্ঠ। (কতো ভালো হতো) যদি তারা কথাটা জানতো!

٣١ وَ الَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ ظُلِمُوْا لَنَبَوِّنَنَّهُمْ فِي النَّنْيَا حَسَنَةً ﴿ وَلَا هُرُّ الْأَخِرَةِ أَكْبَرُ م لَوْ كَانُوْ ا يَعْلَبُونَ لا

৪২. যারা (বিপদে) ধৈর্য ধারণ করে এবং যারা আল্লাহর ওপর নির্ভর করে (তাদের জন্যে আখেরাতে অনেক পুরস্কার রয়েছে)।

٣٢ الَّذِينَ صَبَرُوْا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ

৪৩. (হে নবী,) আমি তোমার আগেও (এ) মানুষদের

٣٣ وَمَ ۗ ٱرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا تُوْحِيُّ

266

| 88. (এ সব নবীকে) আমি সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ ও الزَّبُرِ ﴿ وَٱنْزَلْنَا ۚ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّ | |
|---|------------------------------------|
| 88. (এ সব নবীকে) আমি সুম্পষ্ট দলীল প্রমাণ ও الزَّبُرِ ، وَٱنْزَلْنَا اللَّهِ اللَّهِ وَالزَّبُرِ ، وَٱنْزَلْنَا اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللِّ | . ^ _ ^ _ |
| | تَعْلَمُوْنَ |
| কাছেও কেতাব নাযিল করেছি, যাতে করে যে (শিক্ষা) مُنَّالِ لَيْهُو بَالْمُولِ الْمُعْرِقِينَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ الْمُهُو بَالْمُعَالِينَ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُولِي الللللِّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّ | _ |
| (নিজেরাও একটু) চিম্বা ভাবনা করে। | |
| 8৫. যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের বিরুদ্ধে হীন وَالسَّيِّاتِ اَنْ مَكْرُوا السَّيِّاتِ اَنْ وَالسَّيِّاتِ اَنْ وَالسَّيِّاتِ اَنْ وَالسَّيِّاتِ اَنْ اَلْهُ بِوسُ الْأَرْضَ اَوْ يَاتَيْهُمُ وَ الْمُرْمِنَ اَوْ يَاتَيْهُمُ وَ الْمُوالِمِينِ الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِقِينِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الل | _ |
| ধসিয়ে দেবেন না, কিংবা এমন কোনো দিক থেকে مَدْتُ لَا يَشْعُرُونَ لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَا لَ | • |
| ৪৬. কিংবা তাদের তিনি (এমন সময়) পাকড়াও করবেন, ুর্ট কিন্তু ইটি | ۲۳ أو بِمُ عَجِ زِيْ |
| 89. ज्ञें अर्थे (এমন হবে যে, প্রথমে) তিনি তাদের (কিছু رُعَلَى تَخَوُّنَي اللهُ وَالْ رَبَّكُمْ بِهِ اللهِ اللهُ | |
| 8৮. এরা কি আল্লাহ তায়ালা যা কিছু সৃষ্টি করেছেন তার مُن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهُ عَن اللهُ عَنْ عَلَيْ عَلَيْ عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَيْكُوا عَلَى اللهُ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلْمُ عَلَى اللهُ عَلَيْكُوا عَا | شَيْءٍ يَـ |
| 8৯. या किছু আছে আসমানসমূহে এবং এ यभीति विচরণশীল या किছু আছে, আছে যতো ফেরেশতাকুল, তারা সবাই আল্লাহকে সাজদা করে যাচ্ছে, এদের কেউই $\sqrt{\hat{a}}$ \hat{a} \hat{a} \hat{b} \hat{c} \hat | - |
| প্রিলি ৫০. (উপরস্থু) তারা ভয় করে তাদের মালিককে, যিনি তি এইছিছিত কুটিছিছিত কুটিছিছিত কুটিছিছিছ কিন্তু কিন | |
| ৫১. (হে মানুষ,) আল্লাহ তায়ালা বলছেন, তোমরা (আনুগত্যের জন্যে) দু'জন মাবুদ গ্রহণ করো না, মাবুদ তো তধু একজন, সুতরাং তোমরা আমাকেই ভয় করো। | - 4 -17 |
| ৫২. আকাশমন্তলী ও যমীনের (যেখানে) যা কিছু আছে مَا فِي السَّهٰوْتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ जा সবই তাঁর জন্যে, জীবন বিধানকে তাঁর অনুগত করে দেয়াই কর্তব্য; (এরপরও কি) তোমরা আল্লাহ তায়ালা وَاصِبًا ﴿ اَفَغَيْرُ اللَّهِ تَتَّقُونَ تَقُونَ اللَّهِ تَتَّقُونَ اللَّهِ تَتَّقُونَ اللَّهِ تَتَّقُونَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿ وَاصِبًا ﴿ اَفَغَيْرُ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴾ | |
| ৫৩. নেয়ামতের যা কিছু তোমাদের কাছে আছে তা তো اللهِ ثُورًا إِذَا আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই এসেছে। অতপর তোমাদের যদি কোনো দুঃখ দৈন্য স্পর্ল করে তখন (তা দূর করার জন্যে) অকৈই তোমরা বিনীতভাবে ডাকতে তক্ষ করো, | _ |
| | নযিল ৩ |

তখন তোমাদেরই এক দল লোক তাদের মালিকের সাথে فَرِيْقَ إِذَا كَشَفَ الضَّرِّ عَنْكُرُ إِذَا فَرِيْقَ करत দেন, وَعَالَمُ الْفَرِّ عَنْكُرُ إِذَا فَرِيْقَ कथन তোমাদেরই এক দল লোক তাদের মালিকের সাথে অন্যদের শরীক বানিয়ে নেয়.

مِّنْكُرْ بِرَبِّهِرْ يُشْرِكُونَ لا

৫৫. যাতে করে আমি তাদের যা (নেয়ামত) দান করেছি তারা তা অস্বীকার করতে পারে; সুতরাং (কিছুদিনের জন্যে এ জীবনটা) তোমরা ভোগ করে নাও, অচিরেই তোমরা (এ অকৃতজ্ঞতার পরিণাম) জানতে পারবে।

٥٥ لِيَكْفُرُوا بِمَا أَتَيْنَاهُمْ ﴿ مَ فَتَمَتَّعُوا عَ فَسَوْنَ تَعْلَبُونَ

৫৬. আমি ওদের যা কিছু রেযেক দান করেছি তার একাংশকে ওরা এমন সবার জন্যে নির্ধারণ করে নেয়: যারা (মূলত) জানেও না (রেযেকের উৎসমূল কোধার?) আল্লাহ তায়ালার শপথ, তোমরা (তার সশর্কে) যে মিথ্যা অপবাদ দিতে সে সম্পর্কে অবশ্যই তোমাদের প্রশ্ন করা হবে!

٥٦ وَيَجْعَلُونَ لِهَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيْبًا مِّهَّ رَزَقْنَهُرْ وَ تَالِلَّهِ لَتُسْئِلُنَّ عَيًّا كُنْتُرْ تَفْتُووْنَ

৫৭. এ (মোশরেক) ব্যক্তিরা কন্যা সম্ভানদের আল্লাহর জন্যে নির্ধারণ করে, (অথচ) আল্লাহ তায়ালা এসব (কিছু) থেকে অনেক পবিত্র, মহিমানিত, ওরা নিজেদের জন্যে তাই কামনা করে যা তারা পছন্দ করে।

٥٤ وَيَجْعَلُوْنَ لِلَّهِ الْبَنْسِ سُبْحَٰنَهُ لا وَلَهُرْ

৫৮. অথচ যখন এদের কাউকে কন্যা (জন্ম) হওয়ার সুখবর দেয়া হয়, তখন (দুঃখে ব্যথায়) তার মুখ কালো হয়ে যায় এবং সে অসহনীয় মনস্তাপে ক্রিষ্ট হয়

٥٨ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَلُهُمْ بِالْإِنْثَى ظَلَّ وَجُهُهُ مُسُودًا وهُوَ كَظِيْرٍ ع

৫৯. যে বিষয়ে তাকে সুসংবাদ দেয়া হয়েছিলো তার মনের কষ্টের কারণে সে (তার) জাতির লোকদের কাছ থেকে আত্মগোপন করে থাকতে চায় (ভাবতে থাকে); সে কি এ (সদ্যপ্রসূত কন্যা সম্ভান)-কে অপমানের সাথে রাখবে, না তাকে মাটিতে পুঁতে ফেলবে? ভালোভাবে খনে রাখো, (আসলে কন্যা সন্তান সম্পর্কে) ওরা যা সিদ্ধান্ত করে তা অতি নিকষ্ট!

٥٩ يَتَوَارِي مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوَّءٍ مَا بُشِّرَ بِهِ ١ أَيُّهُسِكُدٌّ عَلَى مُوْنِ أَمْ يَكُسَّدُّ فِي التَّرَابِ ا أَلَا سَاءَ مَا يَحَكُمُونَ

৬০. (বস্তুত) যারা আখেরাত দিবসের ওপর ঈমান আনে مُثَلُ عَرِفُ الْأَخِرَةِ مَثَلُ ١٠ না, তাদের জন্যে এ ধরনের নিকৃষ্ট পরিণামই রয়েছে, আর আল্লাহ তায়ালার জন্যেই সর্বশ্রেষ্ঠ পরিণাম, তিনি وَهُوَ الْعَزِيْرُ সির্বাম, তিনি السَّوْءِ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَى وَهُوَ الْعَزِيْرُ মহাপরাক্রমশালী ও প্রবল প্রজ্ঞাময়।

الْحَكِيْرُع

৬১. আল্লাহ তায়ালা মানুষদের তাদের নাফরমানীর জন্যে যদি (সাথে সাথেই) পাকড়াও করতেন, তাহলে এ (ফ্মীন্রে) বুকে কোনো (একটি কিরণশীল) জীবকেই তিনি ছেডে দিতেন না, কিন্তু আল্লাহ তায়ালা তাদের এক বিশেষ সময়সীমা পর্যন্ত অবকাশ দেন, অতপর যখন (অবকাশের) সে সময় তাদের সামনে এসে হাযির হয়, তখন তারা (যেমন) মুহূর্তকালও বিলম্ব করতে পারে না. (তেমন) তাকে তারা একটুখানি এগিয়েও আনতে পারে না।

١٦ وَلَوْ يُؤَاخِلُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْهِمِ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَّلْكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ إِلَّى أَجَلِ مُّسَهًّى ۽ فَإِذَا جَأَءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً ولا يَسْتَقْرِمُوْنَ

৬২. এরা আল্লাহ তায়ালার জন্যে সে বিষয়টি প্রস্তাব করে যা স্বয়ং তারা (নিজেদের জন্যেও) পছন্দ করে না, তাদের জিহবা তাদের জন্যে মিথ্যা কথা বলে যে, (পরকালে) তাদের জন্যেই সব কল্যাণ রয়েছে; (অথচ) তাদের জন্যে সেখানে থাকবে (জাহান্নামের) আগুন এবং তারাই (সেখানে) সবার আগে নিক্ষিপ্ত হবে।

٦٢ وَيَجْعَلُوْنَ لِلَّهِ مَا يَكُرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُرُ الْكَالِبَ أَنَّ لَهُرُ الْحُسْنَى ، لَا جَرَا أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمُ مُّفُوطُونَ

৬৩. (হে নবী,) আল্লাহর শপথ, তোমার আগেও আমি জাতিসমূহের কাছে নবী পাঠিয়েছিলাম, অতপর শয়তান ٦٣ تَاللَّهِ لَقَنْ أَرْسَلْنَا ۚ إِلَّى أُمَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ

তাদের (খারাপ) কাজসমূহ তাদের জন্যে শোভনীয় করে দিয়েছিলো, সে (শয়তান) আজো তাদের বন্ধু হিসেবেই (হাযির) আছে, তাদের (সবার) জন্যেই রয়েছে কঠোর আযাব।

فَزَيَّنَ لَهُرُ الشَّيْطٰنُ اَعْهَالَهُرْ فَهُوَ وَلِيُّهُرُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَنَابٍ ٱلْيُمْ

৬৪. (হে নবী.) আমি তোমার ওপর (এ) কেতাব এ জন্যেই নাযিল করেছি যেন তুমি তাদের সামনে সে বিষয়সমূহ সুম্পষ্ট করে পেশ করতে পারো. (যে বিষয়ের মধ্যে) তারা মতবিরোধ করেছে, বস্তুত এ (কেতাব) হচ্ছে ঈমানদার লোকদের জন্যে হেদায়াত ও (আল্লাহ তায়ালার) অনুগ্রহস্বরূপ।

١٣ وَمَا آنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتْبَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُرُ الَّذِي اغْتَلَفُوْا فِيْهِ لا وَهُدِّى وَّرُحْهَةً لِّقَوْمٍ يَّوْمِنُونَ

৬৫. আল্লাহ তায়ালা আসমান থেকে পানি বর্ষণ করেন. অতপর (একবার) মুর্দা হয়ে যাওয়ার পর সে পানি দিয়ে তিনি যমীনকে জীবিত করে তোলেন: অবশ্যই এতে (আল্লাহর কুদরতের) বহু নিদর্শন রয়েছে সে জাতির জন্যে, যারা (আল্লাহর কথা কান দিয়ে) শোনে।

٦٥ وَاللَّهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاَهْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْنَ مَوْتَهَا مِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَا يَدُّ لِّقَوْمَ

৬৬. অবশ্যই তোমাদের জন্যে গৃহপালিত জন্তু জানোয়ারের মাঝে (প্রচুর) শিক্ষার বিষয় রয়েছে, তাদের উদরস্থিত (দুর্গন্ধময়) গোবর ও (নাপাক) রক্তের মধ্য থেকে নিস্ত (পানীয়) খাঁটি দুধ আমিই তোমাদের পান করাই, পানকারীদের জন্যে (এটি) বিশুদ্ধ ও সুস্বাদু।

٦٦ وَإِنَّ لَكُرْ فِي الْإَنْعَامَ لَعَبْرَةً م نُسْقَيْكُرْ مِّهَا فِينَ بُطُونِهِ مِنْ ابَيْنِ فَرْدِهِ وَّدَ ۗ لَّبَنَّا خَالِصًا سَأَئِغًا لِّلشَّرِبِيْنَ

৬৭. খেজুর এবং আংগুর ফলের মধ্যেও (শিক্ষণীয় বিষয় রয়েছে), তা থেকে তোমরা নেশাকর (হারাম) জিনিস যেমন বের করে আনছো, তেমনি (তা থেকে হালাল এবং) উত্তম রেযেকও তোমরা লাভ করছো, নিসন্দেহে এতে (আল্লাহর কুদরতের) অনেক নিদর্শন আছে তাদের জন্যে, যারা জ্ঞানসম্পন্ন সম্প্রদায়ের **লোক**।

١٤ وَمِنْ ثَمَرْتِ النَّخِيْلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِنُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَايَةً لِّقَوْ ۚ يَّعْقِلُوْنَ

৬৮. তোমার মালিক মৌমাছিকে এ নির্দেশ দিয়েছেন. পাহাড়ের (গায়ে) গাছে (-র ডালে) এবং (অন্য কিছুর ওপর) যা তোমরা বানাও তার ওপর নিজেদের থাকার ঘর নির্মাণ করো,

١٨ وَأَوْمَٰى رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِيَ الشَّجَرِ وَمِهَّا يَعْرِشُوْنَ لا

৬৯. তারপর প্রত্যেক ফল থেকে (রস আহরণ করে তা) খেতে থাকো, অতপর তোমার মালিকের (নির্ধারিত) পথ ধরে পূর্ণ আনুগত্যের সাথে (সেদিকে) এগিয়ে চলো: (এভাবে) তার পেট থেকে রং বেরঙের পানীয় (দ্রব্য) বের হয়, যার মধ্যে মানুষদের নিরাময়ের ব্যবস্থা রয়েছে; (অবশ্য) এতেও নিদর্শন রয়েছে সে সম্প্রদায়ের জন্যে, যারা (আল্লাহর এ সৃষ্টি বৈচিত্র নিয়ে) চিন্তা করে।

٦٩ ثُرِّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّهَرٰتِ فَاشْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ﴿ يَخْرُجُ مِنْ ۖ بُطُوْنِهَا شَرَابُّ مُّخْتَلِفُّ ٱلْوَانَّهُ فِيهِ شِفَاءً لِّلنَّاسِ ، إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْرٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ

৭০. আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনিই তোমাদের মৃত্যু দেবেন। তোমাদের কোনো ব্যক্তি (এমনও হবে যে, সে) বৃদ্ধ বয়সের দুর্বলতম স্তর পর্যন্ত পৌছে যাবে. এতে করে (কৈশোরে এবং যৌবনে কোনো বিষয়ে) জানার পর সে (পুনরায়) অজ্ঞ হয়ে যাবে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সর্বজ্ঞ, (তিনিই) সর্বশক্তিমান।

٥٠ وَ اللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّكُمْ عَلَى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُهُرِ لِكَىْ لَا يَعْلَمَ بَعْنَ عِلْمِ شَيْئًا ، إِنَّ اللَّهُ عَلِيْرٌ قَلِيْرٌ عَلِيدٌ

৭১, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কাউকে কারো ওপর রেযেকের ব্যাপারে প্রাধান্য দিয়ে রেখেছেন, অতপর যাদের (এ ব্যাপারে) শ্রেষ্ঠত্ব দেয়া হয়েছে তারা (আবার) الرِّزْقِءَ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَ إِنَّدَى رِزْقِهِمْ

ا ٤ وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُر عَلَى بَعْضٍ فِي



১৬ সুরা আন নাহল

তাদের অধীনস্থ দাস দাসীদের নিজেদের সামগ্রী থেকে কিছুই দিতে চায় না, (তাদের আশংকা হচ্ছে, এমনটি করলে) এ ব্যাপারে তারা উভয়েই সমান (পর্যায়ের) হয়ে যাবে: তবে কি এরা খাল্লায়র এ নেয়ামত অস্বীকার করে? عَلَٰى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُرْ فَهُرْ فِيْهِ سَوَّاءً ۖ ا ٱفَبِنِعْهَةِ اللَّهِ يَجْعَلُونَ

৭২. আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের মধ্য থেকে তোমাদের জ্যোড় পয়দা করেছেন এবং তোমাদের এ যুগল (দম্পতি) থেকে তিনি তোমাদের পুত্র পৌত্রাদি সৃষ্টি করেছেন এবং তিনি তোমাদের উত্তম রেযেক দান করেছেন; তারপরও কি এরা বাতিলের ওপর বিশ্বাস স্থাপন করবে আর আল্লাহর নেয়ামত অবিশ্বাস করবে?

৭৩. এবং এরা কি আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে তাদের (বানানো মাবুদদের) গোলামী করবে, যাদের আকাশমন্তলী ও যমীনের (কোথাও) থেকে কোনো প্রকারের রেযেক সরবরাহ করার কোনো ক্ষমতা নেই।

٣٤ وَيَعْبُلُونَ مِن دُونِ اللهِ مَالَا يَهْلِكُ
 لَهُر رِزْقًا مِّنَ السَّهٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْئًا وَّلَا
 يَشْتَطِيْتُونَ جَ

98. সুতরাং (হে মানুষ,) তোমরা আল্পাহ তায়ালার কোন্ধে সদশ দাঁড করিয়ো না. অবশ্যই আল্পাহ তায়ালা

مَّهُ فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ مَ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَرُ وَ اَنْتُرْ لَا تَعْلَبُونَ

সেব কিছু) জানেন, তোমরা কিছুই জানো না।

৭৫. আল্লাহ তায়ালা (এখানে অপরের) অধিকারভুক্ত
একটি দাসের উদাহরণ দিচ্ছেন, যে (নিজে থেকে)

40 ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْنًا مَّهْلُوكًا لَّا يَقْنِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقَنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ عَلٰى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقَنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا * هَلْ يَسْتَوَّنَ * اَلْحَمْلُ لِلَّهِ * بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ
 لِلْهِ * بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

কোনো কিছুই করার ক্ষমতা রাখে না— (উদাহরণ দিচ্ছেন) এমন ব্যক্তির (সাথে), যাকে আমি আমার পক্ষ থেকে উত্তম রেযেক দান করেছি এবং সে তা থেকে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে চলেছে; (তোমরা কি মনে করো) এরা উভয়েই সমানঃ (না কখনো নয়,) সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে; কিন্তু এদের অধিকাংশ

৭৬. আল্লাহ তায়ালা আরো দু'জন মানুষের উদাহরণ দিচ্ছেন, তাদের একজন হচ্ছে মৃক- সে কোনো কিছুই নিজে থেকে করতে (বা বলতে) পারে না, সে (সব সময়) নিজের মনিবের ওপর বোঝা হয়ে থাকে, যেখানেই তাকে সে পাঠায় না কেন, সে কোনো ভালো কিছু নিয়ে আসতে পারে না; এ (অক্ষম) ব্যক্তিটি কি সমান হতে পারে সে ব্যক্তির, যে (নিজে মৃক তো নয় বরং) সে অন্য মানুষদের ন্যায় কাজের আদেশ দিতে সক্ষম, (সর্বোপরি) যে ব্যক্তি সহজ সরল পথের ওপর আছে!

۲۷ وَضَرَبَ اللّهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَمَنُهُما اَبْكُورُ اَمْكُهُما اَبْكَرُ لا يَقْدِرُ عَلَى شَيْء وَهُو كَلَّ عَلَى مَوْلُهُ لا اَيْنَها يُوجِهْ لا يَأْت بِخَيْرٍ وَهَلْ يَشْتُونَ هُو لا وَمَن يَامُرُ بِالْعَنْل لا وَهُو عَلَى مِرَاطٍ مَّشْتَقِيْرِ ع

৭৭. আসমানসমূহ ও যমীনের যাবতীয় গায়ব (সংক্রান্ত জ্ঞান) একমাত্র আল্লাহর জন্যেই (নির্দ্টিরয়েছে), কেয়ামতের ব্যাপারটি তো (তাঁর কাছে) চোখের পলকের চাইতে (বেশী) কিছু নয়, বরং তা তার চাইতেও নিকটবর্তী; আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সর্ববিষয়ের ওপর শক্তিমান।

4 وَلِلّهِ غَيْبُ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ ، وَمَا آَرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ،
 أَرُ اللّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَنِيْرٌ

৭৮. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মায়ের পেট থেকে (এমন এক অবস্থায়) বের করে এনেছেন যে, তোমরা (তার) কিছুই জানতে না, অতপর তিনি তোমাদের কান, চোখ ও দিল দিয়েছেন, যাতে করে তোমরা শোকর আদায় করতে পারো।

٥ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُر مِّنَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُر مِّنَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ لَا تَعْلَبُونَ شَيْئًا لا وَجْعَلَ لَكُر السَّمْعَ وَالْإَبْصَارَ وَالْإَفْئِنَةَ لا لَعَلَّكُر تَشْكُرُونَ

৭৯. এরা কি পাখীটির দিকে তাকিয়ে দেখে নাঃ যে ৢ

49 ألَر يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرِتٍ فِي

মানুষই কিছু জানে না।

আকাশের শূন্যগর্ভে (সহজে) বিচরণ করছে, আল্লাহ তায়ালা ছাড়া এমন কে আছে যিনি এদের (শুন্যের মাঝে) স্থির করে ধরে রাখেন, অবশ্যই এ (ব্যবস্থাপনার) মাঝে ঈমানদার সম্প্রদায়ের জন্যে অনেক নিদর্শন রয়েছে।

جَوِّ السَّمَاءِ مَ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ مَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَسِ لَّقُوْ } يَّوْمُنُوْنَ

৮০. আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের জন্যে তোমাদের ঘরগুলোকে (শান্তির) নীড বানিয়েছেন, তিনিই তোমাদের জন্য পশুর চামড়া দিয়ে (তাঁবুর হালকা) ঘর বানাবার ব্যবস্থা করেছেন যাতে তোমরা ভ্রমণের দিনে তা সহজভাবে (বহন) করে নিতে পারো, আবার কোথাও অবস্থান নেয়ার সময়ও (তা ব্যবহার করতে পারো) ওদের পশম, ওদের লোম, ওদের কেশ থেকে তিনি একটি নির্দিষ্ট মেয়াদের জন্যে তোমাদের অনেক ব্যবহার (উপযোগী) সাম্গ্রী বানাবার ব্যবস্থাও করে দিয়েছেন।

٨٠ وَ اللَّهُ جَعَلَ لَكُر مِّن اللَّهُ عَلَ لَكُر مَّن اللَّهُ عَلَا لَكُر مَّنَا وَّجَعَلَ لَكُس مِّن جُلُود الْإَنْعَام بُيُوتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُرْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُرْ ٧ وَمِن أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَّمَتَاعًا إلى حيْن

৮১. আল্লাহ তায়ালা যা কিছু সৃষ্টি করেছেন তা থেকে তিনি তোমাদের জন্যে ছায়ার ব্যবস্থা করে দিয়েছেন كَرُ مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِ الْجِبَالِ أَكْنَاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِنَ الْجِبَالِ أَكْنَاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِنَ الْجِبَالِ أَكْنَاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِنَ الْجِبَالِ أَكْنَاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِ الْعَلَيْدِينَ الْجَبَالِ أَكْنَاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِنَ الْجَبَالِ الْكَنْاذًا وَجَعَلَ لَكُرُ مِنْ الْعَلَيْنِ الْعَلِيْنِ الْعَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهُ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنَا لِلللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنَا لِيلَّالِ الْعَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنَا لِللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنَا لِلْعَلِيلِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنَالِيلِيلِ اللَّهِ عَلَيْنِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى الْعَلْمِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى الْعَلَيْنِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى الْعَلَيْنِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى الْعَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى الْعَلَيْنِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى الْعَلَقِيلِ عَلَيْنِ عَلَيْنِ عَلَيْنِ اللَّهِ عَلَى ال করেছেন, তিনি (আরো) ব্যবস্থা করেছেন তোমাদের জন্যে পরিধেয় বস্ত্রের, যা তোমাদের (প্রচন্ড) তাপ থেকে রক্ষা করে, (আরো) ব্যবস্তা করেছেন (এমন) পরিধেয়সমূহের যা তোমাদেরকে তোমাদের সমস্যা সংকট থেকে বাঁচিয়ে রাখে: এভাবেই তিনি তোমাদের ওপর তাঁর নেয়ামতসমূহ পূর্ণ করে দেন, যাতে করে তোমরা তাঁর অনুগত (বান্দা) হতে পারো।

٨١ وَ اللَّهُ جَعَلَ لَكُرْ مَّمًّا خَلَقَ ظَلْلًا وَّجَعَلَ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُرُ الْحَرُّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُرْ بَاْسَكُو ٩ كَانُ لِكَ يُتِيُّ نَعْهَتُمْ عَلَيْكُو ١ كَالَّكُو ٢ تُسْلَهُوْنَ

৮২. যদি তারা (সত্য থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে (তুমি জেনে রেখো, তাদের কাছে) সুস্পষ্ট বক্তব্য পৌছে দেয়াই হচ্ছে তোমার একমাত্র দায়িত্ব।

٨٢ فَانْ تَوَلُّوْا فَانُّهَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ الْهُبِيْنُ .

৮৩. এ (সব) লোকেরা আল্লাহ তায়ালার নেয়ামত ভালো করেই চেনে, অতপর তারা তা অম্বীকার করে, (আসলে) ওদের অধিকাংশ (মানুষ)-ই হচ্ছে অকৃতজ্ঞ।

٨٣ يَعْرِفُونَ نِعْهَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَ ٱكْثَرُهُرُ الْكَفِرُ وْنَ عِ

৮৪. (স্বরণ করো.) যেদিন আমি প্রতিটি সম্প্রদায়ের মধ্য থেকে এক একজন সাক্ষী উঠিয়ে আনবো, অতপর কাফেরদের কোনো রকম (কৈফিয়ত দেয়ার) অনুমতি দেয়া হবে না- না তাদের (সেদিন) আল্লাহর সন্তুষ্টির জন্যে কোনো সুযোগ দেয়া হবে।

٨٣ وَيَوْمَ نَبْعَتُ مِنْ كُلَّ أُمَّةِ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا مُرَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّانِينَ كَفَرُو ﴿ وَلَا هُرْ يُسْتَعْتَبُونَ

৮৫. (সেদিন) যখন যালেমরা আযাব দেখতে পাবে (তখন চীৎকার করে তা থেকে বাঁচার চেষ্টা করবে), কিন্তু (কোনো চীৎকারেই) তাদের ওপর থেকে শাস্তি লঘু করা হবে না, না (এ ব্যাপারে) তাদের কোনোরকম অবকাশ দেয়া হবে।

٨٥ وَإِذَا رَأَ الَّن يْنَ ظَلَهُوا الْعَنَ إِبِّ فَلَا يُحَقُّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظُونَ

৮৬. মোশরেক ব্যক্তিরা যাদের আল্লাহর সাথে শরীক করেছিলো, (সেদিন) যখন তারা সেসব লোকদের দেখবে, তখন বলবে, হে আমাদের মালিক, এরাই তো আমাদের সেসব শরিক লোক– যাদের আমরা তোমার বদলে ডাকতাম, অতপর সে (শরীক কিংবা মোশরেক) ব্যক্তিরা উল্টো তাদের ওপরই অভিযোগ নিক্ষেপ করে বলবে, না, (আসলে) তোমরাই হচ্ছো মিথ্যাবাদী.

٨٦ وَإِذَا رَأَ الَّٰنِيْنَ أَشْرَكُوْا شُرَكَّاءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا مُّؤُكَّاءٍ شُرِكَاُّؤُنَا الَّذِيثِيَ كُنَّا نَنْعُوْا مِيْ

৮৭. তখন এ (মোশরেক) ব্যক্তিরা আল্লাহর কাছে আত্মসমর্পণ করবে, যা কিছু কথা তারা উদ্ভাবন করতো (সেদিন) তা নিষ্ফল হয়ে যাবে।

٨٠ وَ ٱلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِنِ ۗ السَّلَمِ وَضَلَّ عَنْهُرْمًا كَانُوْ إِيَفْتُرُوْنَ

১৬ সুরা আন নাহল

290

মন্যিল ৩

90

৮৮. যারা কৃষ্ণরী করেছে এবং (অন্য মানুষদেরও) আল্লাহর পথ থেকে বাধা দিয়েছে, আমি (সেদিন) ভাদের আযাবের ওপর আযাব বৃদ্ধি করবো, এটা হচ্ছে তাদের (সেই) অশান্তি ও ফাসাদের শান্তি, যা তারা (দুনিয়ায়) করে এসেছে।

٨٨ ٱلَّذِيثَنَ كَفَرُّوْا وَصَنُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ زِدْنُهُمْ عَنَابًا فَوْقَ الْعَنَابِ بِهَا كَانُوْا

৮৯. (সেদিনের কথাও স্মরণ করো.) যেদিন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়ের মধ্যে স্বয়ং তাদেরই মধ্য থেকে তাদের ওপর একজন সাক্ষী উত্থিত করবো এবং এ লোকদের ওপর আমি তোমাকেও সাক্ষীরূপে নিয়ে আসবো: আমি তোমার ওপর কেতাব নাযিল করেছি, মুসলমানদের জন্যে এ কেতাব হচ্ছে (দ্বীন সম্পর্কিত) সব কিছুর ব্যাখ্যা, (আল্লাহর) হেদায়াত ও মুসলমানদের জন্যে (জান্লাতের) সসংবাদস্বরূপ।

٨٩ وَيَوْمَ نَبْعَتُ فِي كُلِّ ٱلَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِر مِّنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْنًا عَلَى هُؤَّ لَاءٍ مَ وَنَوْ لَنَا عَلَيْكَ الْكتْبَ تَبْيَانًا لَّكُلِّ شَيْء وهناًى ورَحْهَةً وأبشرى لِلْهُسْلِيِينَ ع

৯০. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ন্যায়পরায়ণতা, সদাচরণ ও আত্মীয় স্বজনকে দান করার নির্দেশ দেন এবং তিনি অশ্লীলতা, অসৎ কাজকর্ম ও সীমালংঘনজনিত সব কাজ থেকে নিষেধ করেন, তিনি তোমাদের (এগুলো মেনে চলার) উপদেশ দেন, যাতে করে তোমরা এ থেকে শিক্ষা গ্রহণ করতে পারো।

إِنَّ اللَّهُ يَأْمُرُ بِالْعَنْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيْتَايِّ ذِي الْقُرْبِي وَيَنْهِي عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْهُنْكِ وَالْبَغْيِ ۽ يَعِظُكُر لَعَلَّكُر ْ تَعَلَّكُر ْ تَنَكُّونَ

مَا وَأُوفُوا بِعَهْلِ اللَّهِ إِذَا عُمَن تُمْ وَكُل عَالِم اللَّهِ إِذَا عُمَن تُمْ وَكُل عَالَم اللهِ اللَّهِ إِذَا عُمَن تُمْ وَكُل عَالَم اللَّهِ اللَّهِ إِذَا عُمَن تُمْ وَكُل عَالَم اللَّهِ اللَّ কোনো অংগীকার করো, তখন তা পূর্ণ করো এবং (একবার) এ (শপথ)-কে পাকাপোক্ত করে নেয়ার পর তা اللّهُ عَلَيْكُرْ كَفِيلًا ﴿ إِنَّ اللَّهُ يَعْلَرُ مَا صَالِمًا فِي اللَّهُ عَلَيْكُرْ كَفِيلًا ﴿ اللَّهُ يَعْلَرُ مَا صَالِمًا فِي اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ لَا عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَي اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَل আল্লাহকে অভিভাবক বানিয়ে নিয়েছো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা জানেন তোমরা (কখন কোথায়) কি করো।

تَنْقُضُوا الْإَيْهَانَ بَعْنَ تَوْكَيْنِهَا وَقَنْ جَعَلْتُرُ تَفْعَلُوْنَ

৯২. তোমরা কখনো সেই নারীর মতো হয়ো না, যে অনেক পরিশ্রম করে নিজের (জন্যে কিছু) সূতা কাটলো কিন্তু পরে তা (নিজেই) টুকরো টুকরো করে ছিড়ে ফেললো: তোমরা তো তোমাদের পারস্পরিক ব্যাপারে (নিজেদের) শপথগুলো ধোকা প্রবঞ্চনার উদ্দেশে ব্যবহার করো, যাতে করে (তোমাদের) এক দল আরেক দল থেকে অগ্রগামী হয়ে যেতে পারে: (আসলে) আল্লাহ তায়ালা এ বিষয়টি দিয়ে তোমাদের পরীক্ষা নেন মাত্র: (তা ছাডা) তোমরা যেসব বিষয়ে মতবিরোধ করছো কেয়ামতের দিন অবশ্যই তিনি তা (সবার সামনে) প্রকাশ করে দেবেন।

٩٢ وَلا تَكُوْنُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ ا بَعْن قُوَّة أَنْكَاثًا ء تَتَّخْلُوْنَ أَيْهَانَكُو دَغَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةً فِي أَرْبِي مِنْ أُمَّةٍ عَ انَّهَا يَبْلُوْكُمُ اللَّهُ بِهِ ﴿ وَلَيْبَيِّنَيَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقَيْهَة مَا كُنْتُرْ فَيْهُ تَخْتَلَفُونَ

৯৩. আল্লাহ তায়ালা যদি চাইতেন তাহলে তোমাদের সবাইকে এক জাতি বানিয়ে দিতে পারতেন, তিনি যাকে ইচ্ছা তাকে বিভ্রান্ত করেন আবার যাকে ইচ্ছা তাকে সংপথে পরিচালিত করেন: তোমরা কি করতে সে সম্পর্কে তোমাদের অবশ্যই প্রশ্ন করা হবে।

٩٣ وَلَوْ شَاءً اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِنَةً وَّلَٰكِنَ يُضِلُّ مَن يَّشَاءُ وَيَهْرِي مَن يَّشَاءُ ، وَلَتُسْئِلُنَّ عَمًّا كُنْتُر أَعْمَلُونَ

88. তোমরা তোমাদের শপথগুলো পরস্পরকে প্রবঞ্চনা مُنْكُرُ وَهَلًا بَيْنَكُرُ اللَّهِ الْمُعَالَكُمُ وَلَا تَتَّخِلُوا اللَّهَانَكُمُ وَهُمُلًا بَيْنَكُمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّالِي اللَّهُ اللَّا اللَّا اللّا করার উদ্দেশে গ্রহণ করো না. (এমন করলে মানুষের) পা একবার স্থির হওয়ার পর পুনরায় পিছলে পড়ে যাবে এবং আল্লাহর পথ থেকে মানুষদের বাধা দেয়ার কারণে (এ দুনিয়ায়ও) তোমাদের শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করতে হবে, আর (আখেরাতেও) তোমাদের জন্যে থাকবে কঠোর আযাব।

فَتَزِلَّ قَنَ ۗ أَ بَعْنَ ثُبُوْتِهَا وَتَنُوثُوا السُّوءَ بِهَا مَنَ دُتُّر عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ عِ وَلَكُمْ عَنَ ابُّ

১৬ সূরা আন নাহল

298

মন্যিল ও

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৪ রুবামা |
|--|---|
| ৯৫. তোমরা আল্লাহর (নামে) অংগীকারকে (দুনিয়ার) সামান্য স্বার্থের বিনিময়ে বিক্রি করে দিয়ো না; (সততা ও | ٩٥ وَلَا تَشْتُرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَهَنَّا قَلِيْلًا ، |
| বিশ্বস্ততার পুরস্কার) যা আল্লাহর কাছে আছে তা | إِنَّهَا عِنْكَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُرْ إِنْ كُنْتُرْ |
| তোমাদের জন্যে অনেক উত্তম, যদি তোমরা জানতে! | تعلُّمون |
| ৯৬. যা কিছু (সহায় সম্পদ) তোমাদের কাছে আছে তা | |
| (একদিন) নিশেষ হয়ে যাবে, অপরদিকে আল্লাহর কাছে | ٩٦ مَا عِنْدَكُرْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ١ |
| (এর) যা (বিনিময়) আছে তা (হামেশাই) বাকী থাকবে; | وَلَنَجْزِينَّ الَّذِينَ مَبَرُوْاً اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ |
| (সে আশায়) যারা ধৈর্য ধারণ করেছে এবং (ভালো কাজ) করেছে, নিন্চয়ই আল্লাহ তায়ালা তাদের (সেসব) কর্মের | مَا كَانُوْا يَعْمَلُونَ |
| শ্রেষ্ঠ পুরস্কার দেবেন। | ما كانوا يعهدون |
| ৯৭. (তোমাদের) পুরুষ কিংবা নারীর মধ্যে যে ব্যক্তিই | ٩٤ مَنْ عَمِلَ مَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْثَى وَهُوَ |
| কোনো নেক কাজ করবে এমতাবস্থায় যে, সে হবে যথার্থ মোমেন, তাহলে অবশ্যই তাকে আমি দুনিয়ার বুকে | مده ه بید د بیات با از ایک وسود |
| পবিত্র জীবন যাপন করাবো এবং আখেরাতের জীবনেও | مُؤْمِنَّ فَلَنُحْيِيَنَّهُ مَيْوةً طَيِّبَةً ﴿ وَلَنَحْزِيَنَّهُمْ |
| তাদের (দুনিয়ার) জীবনের কার্যক্রমের অবশ্যই উত্তম বিনিময় দান করবো। | اَجْرُهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ |
| ৯৮. অতপর তোমরা যখন কোরআন পড়তে শুরু করবে | ٩٨ فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْأَنَ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ مِنَ |
| তখন বিতাড়িত শয়তানের (ওয়াসওয়াসা) থেকে আল্লাহর কাছে আশ্রয় চাও। | الشَّيْطُنِ الرَّجِيمِ |
| | |
| ৯৯. যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান আনে এবং (যাবতীয় কার্যকলাপে) তাদের মালিকের ওপর ভরসা করে, তাদের | ٩٩ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلُطْنُّ عَلَى الَّذِيْنَ أَمَّنُوا |
| ওপর (শয়তানের) কোনোই আধিপত্য নেই। | وَعَلَى رَبِّهِم يَتُوكَّلُونَ |
| ১০০. তার সব আধিপত্য তো তাদের ওপরই (চলে), | ١٠٠ إِنَّهَا سُلْطُنُهُ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهُ |
| যারা তাকে বন্ধু (ও অভিভাবক) হিসেবে গ্রহণ করেছে, | وَالَّذِينَ مُر بِهِ مُشْرِكُونَ ع |
| (উপরন্থ) যারা তাঁর (আল্লাহর) সাথে শরীক করেছে। | |
| ১০১. (হে নবী,) আমি যখন এক আয়াত পরিবর্তন করে তার জায়গায় আরেক আয়াত নাযিল করি (অপচ) | ١٠١ وَإِذَا بَنَّ لَنَّ أَيْدً مَّكَانَ أَيْدٍ لا وَّاللَّهُ أَعْلَرُ |
| আল্লাহ তায়ালা যা কিছু নাযিল করেন তা তিনি ভালো করেই জানেন- তখন তারা বলে, তুমি তো এগুলো | بِهَا يُنزَّلُ قَالُوْ ٓ إِنَّهَا ٓ أَنْتَ مُفْتَرِ ، بَلَ |
| এমুনিই নিজ থেকে বানিয়ে নিচ্ছো; (আসলে) তাদের | ٱكْثَرُهُمْ ۚ لَا يَعْلَمُونَ |
| অধিকাংশ মানুষই (আল্লাহর সৃন্দ রহস্য) জানে না। | التوعير 1 يستمون |
| ১০২. তুমি তাদের বলো, হাঁ এ (কোরআন)-কে জিবরাঈল (ফেরেশতা) তোমার মালিকের কাছ থেকে | ١٠٢ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ |
| ঠিকভাবেই নাথিল করেছে, যাতে করে যারা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে তাদের তিনি সৃদৃঢ় ভিত্তির ওপর | بِالْعَقِّ لِيُتَبِّسَ الَّذِينَ أَمَنُوْا وَهُدًى |
| প্রতিষ্ঠিত করতে পারেন, (সর্বোপরি) এটা যেন হয় | ا وَّبَشَرْی لِلْمُسْلِعِیْنَ |
| অনুগত বান্দাদের পথনির্দেশ ও (জন্লাতের) সুসংবাদবাহী। | وبسری پهسپویی |
| ১০৩. (হে নবী,) আমি ভালো করেই জ্ঞানি (এরা তোমার | ١٠٣ وَلَقَلْ نَعْلَرُ أَنَّهُرْ يَقُوْلُونَ إِنَّهَا يُعَلِّهُ |
| ব্যাপারে কি বলে), এরা বলে, এ (কোরআন) তো | |
| একজন মানুষ (এসে) এ ব্যক্তিকে পড়িয়ে দিয়ে যায়; (অথচ) যে ব্যক্তিটির দিকে এরা ইংগিত করে তার ভাষা | بَشَرٌّ السَّانُ الَّذِي يُلْحِنُونَ اِلَيْهِ أَعْجَبِيٌّ |
| আরবী নয়, আর এ (কোরখান) হচ্ছে সুস্পষ্ট আরবী ভাষা। | وْهْنَ السَّانَّ عَرَبِيٌّ مَّبِينَ " |
| ১০৪. (আসল কথা হচ্ছে,) যারা আল্লাহর আয়াতসমূহে | ١٠٣ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِأَيْتِ اللَّهِ لا لا |
| বিশ্বাস করে না, আল্লাহ তায়ালাও তাদের সঠিক পথে | |
| ১৬ সূরা আন নাহল | মন্যিল ৩ |

পারা ১৪ রুবামা

পরিচালিত করেন না, আর তাদের জন্যেই মর্মান্তিক আযাব রয়েছে।

يَهْنِيهِرُ اللهُ وَلَهُرْ عَنَابُ أَلِيْرُ

কাজ হতে পারে না. বরং এটা) হচ্ছে তাদের কাজ. যারা এরাই হচ্ছে মিথ্যাবাদী।

١٠٥ إِنَّهَا يَفْتَرِي الْكَنْرِبَ الَّذِيْنَ ﴾ ١٠٥ إِنَّهَا يَفْتَرِي الْكَنْرِبَ الَّذِيْنَ ﴾ ١٠٥ إِنَّهَا يَفْتَرِي الْكَنْرِبَ الَّذِيْنَ الكٰن بُوْنَ

১০৬. যে ব্যক্তি একবার ঈমান আনার পর কৃফরী করে. যদি তাকে (কৃফরী বাক্য উচ্চারণ করতে) বাধ্য করা হয়. অথচ তার অন্তর ঈমানের ওপরই সম্ভুষ্ট থাকে (তাহলে আল্লাহ তায়ালা তা হয়তো মাফ করে দেবেন), কিন্ত যে شَرَحَ بِالْكُفُرِ صَنْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌّ مِّنَ اللّهِ عَ अखतरक क्कतीत करना (त्रमा) छन्। कंतर त्रारथ و بالكُفُو صَنْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌّ مِّنَ اللّهِ ع তাদের ওপর আল্লাহর গ্যব, তাদের জন্যেই রয়েছে মর্মন্তদ শান্তি।

١٠٦ مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ ابَعْلِ إِيْهَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهُ وَقَلْبُهُ مُطْهَئِنٌّ ۚ بِالْإِيْهَانِ وَلٰكِنْ شَنْ وَلَهُمْ عَنَ ابُ عَظِيْرٌ

১০৭. এটা এ জন্যে যে, তারা দুনিয়ার জীবনকে আখেরাতের ওপর প্রাধান্য দিয়েছে, আল্লাহ তায়ালা কখনো কাফের সম্প্রদায়কে হেদায়াত দান করেন না।

١٠٤ ذٰلِكَ بِٱنَّهُرُ اسْتَحَبُّوا الْحَيْوةَ النُّنْيَا عَلَى الْأَخْرَةَ لا وَأَنَّ اللَّهُ لَا يَهْنِي الْقَوْمُ الكفرين

১٥৮. धताँ राष्ट्र त्मनव लाक यात्मत अखत्त, (यात्मत) مُوبِهِر अंगान اللهُ عَلَى قُلُوبِهِر १० أُولِنِكَ النَّهِ عَلَى قُلُوبِهِر ١٠٨ أُولِنِكَ النَّهِ عَلَى عَلَى قُلُوبِهِر ١٠٨ أُولِنِكَ النَّهِ عَلَى عَلَى قُلُوبِهِر اللهُ عَلَى عَلَ কানে ও (যাদের) চেখের ওপর আল্লাহ তায়ালা সিল এঁটে দিয়েছেন, (আসলে) এরা সবাই (ভয়াবহ আযাব সম্পর্কে) গাফেল।

وسَمْعِهِرْ وَ أَبْصَارِهِرْ ع وَ أُولَٰئِكَ هُرُ الْغُفِلُونَ

১০৯, নিন্চয়ই ওরা আখেরাতে (ভীষণ) ক্ষতিগ্রন্ত হবে।

١٠٩ لَاجَرَا ٱللَّهُ فِي الْأَخْرَة مُر الْخُسرُونَ

১১০. (এর বিপরীত) যারা (ঈমানের পথে) নির্যাতিত হওয়ার পর হিজরত করে, অতপর (আল্লাহর পথে) জেহাদ করে এবং (বিপদে) ধৈর্য ধারণ করে (হে নবী), অবশ্যই তোমার মালিক এ (পরীক্ষা)-র পর তাদের প্রতি क्रमानील ও পরম দয়ালু (হবেন)।

١١٠ ثُرَّ إِنَّ رَبُّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوْ ا مِن ا بَعْنِ مَا فُتِنُوْا ثُمرٌ جَهَلُوْا وَصَبَرُوْا لا إِنَّ رَبُّكَ مِنْ ا

১১১. (স্মরণ করো.) যেদিন প্রত্যেক ব্যক্তিই আত্মপক্ষ সমর্থনে যুক্তি প্রদর্শন করতে (এগিয়ে) আসবে, প্রত্যেক ব্যক্তিকেই (কানাকড়ি হিসাব করে) তার কৃতকর্মের প্রতিফল আদায় করে দেয়া হবে এবং তাদের (কারো) ওপর কোনো রকম অবিচার করা হবে না।

الا يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْس تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفِّى كُلُّ نَفْس مًّا عَبِلَتْ وَهُرْ لَا يظلَهُونَ

১১২. আল্লাহ তায়ালা এমন একটি জনপদের উদাহরণ (তোমাদের সামনে) উপস্থাপন করছেন, যা ছিলো নিরাপদ ও নিশ্ভি, (সেখানে) চারদিক থেকে তাদের مُشْمَنِنَةً يَّاتِيهُمَا رِزْقُهَا رَغَنًا مِّن كُلِّ مَكَانِ المَ কাছে প্রচুর পরিমাণ রেযেক আসতো, অতপর (এক পর্যায়ে) তারা আল্লাহর নেয়ামত অস্বীকার করলো, ফলে তারা যে আচরণ করে বেডাতো তার শাস্তি হিসেবে আল্লাহ তায়ালা তাদের ক্ষ্ণা ও ভীতির পোশাক পরিয়ে শাস্তি দিলেন।

١١٢ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتُ أَمِنَةً فَكَفَرَتْ بِٱنْعُر اللَّهِ فَٱذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوْع وَالْخَوْنِ بِهَا كَانُوْ إِيصْنَعُونَ

১৬ সুরা আন নাহল

२१७

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৪ রুবামা

১১৩, অবশ্যই তাদের কাছে তাদেরই মধ্য থেকে একজন রসল এসেছিলো, অতপর তারা তাকে অস্বীকার করলো, (পরিশেষে আল্লাহর) আযাব তাদের যুলুম করা অবস্তায় পাকড়াও করলো!

١١٣ وَلَقَلَ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكُنَّابُوهُ فَأَخَنَهُمُ الْعَنَابُ وَهُمْ ظُلُهُونَ

১১৪. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে যা কিছ পবিত্র ও হালাল রেযেক দিয়েছেন তোমরা তা আহার করো, যদি وَّاشْكُرُوْا نَعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُرُ إِيَّاءٌ وَاشْكُرُوْا نَعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُرُ إِيَّاءٌ জন্যে) আল্লাহ তায়ালার নেয়ামতের কতজ্ঞতা জ্ঞাপন করো ।

١١٣ فَكُلُواْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلْلًا طَيَّبًا س تَعْبُلُونَ

১১৫. তিনি তো তোমাদের ওপর (তথু) মৃত (জ্ঞু), রক্ত এবং ওয়োরের গোশতই হারাম করেছেন, (আরো হারাম করেছেন) এমন জানোয়ার যার ওপর (যবাই করার সময়) আল্লাহ তায়ালা ছাডা অন্য কারো নাম নেয়া হয়েছে, কিন্তু যদি কাউকে (এর কোনো একটার জন্যে) বাধ্য করা হয়- সে যদি বিদ্রোহী কিংবা সীমালংঘনকারী না হয়, তাহলে (সে যেন জেনে রাখে), আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল।

١١٥ إِنَّمَا مَرًّا عَلَيْكُرُ الْمَيْتَةَ وَاللَّا وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَّ أَفِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ع فَهَن اضْطُرُّ غَيْرَ بَاغِ وَّلَا عَادٍ فَانَّ اللَّهَ غَفُوْرًّ

১১৬. তোমাদের জিহ্না আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা آلكَنْبَ الْكَانِبَ الْمُعَالِّمُ الْمُعَالِّمُ الْمُعَالِّمُ الْمُعَالِّمُ الْمُعَالِّمُ الْمُعَالِّمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ আরোপ করে বলেই কখনো একথা বলো না যে, এটা مْنَ ا مَلْلَّ وَّمْنَ ا مَرَامَّ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ शलाल ७ वि राताम, (ब्लटन द्रार्था,) यातार आंब्रारत ওপর মিথ্যা আরোপ করে, তারা কখনোই সাফল্য লাভ করতে পারবে না।

الْكَنْبَ وَانَّ الَّذِينَ يَفْتَدُونَ عَلَى اللَّهُ الْكَنْبَ لَا يُفْلِعُونَ ،

১১৭. (তাদের জন্যে এটা পার্থিব জীবনের) সামান্য কিছু সামগ্রী (মাত্র, পরকালে) তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর আযাব ।

١١٤ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ م ولَّهُمْ عَنَ إِلَّ ٱللَّهُ

১১৮. (হে নবী.) ইহুদীদের ওপর আমি সেসব কিছ হারাম করেছি যা ইতিপূর্বে আমি তোমার কাছে বর্ণনা করেছি, (এগুলো হারাম করে) আমি তাদের ওপর কোনো অবিচার করিনি, বরং তারা (আমার আদেশ না মেনে) নিজেরাই নিজেদের ওপর অবিচার করেছে।

١١٨ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوْ ا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ جِ وَمَا ظَلَهُنَّهُمْ وَلَكِنْ كَانُوْ إ أَنْفُسُهُمْ يَظْلَهُونَ

১১৯. অতপর অবশ্যই তোমার মালিক (তাদের ওপর দয়া করেছেন) যারা অজ্ঞতাবশত কোনো গুনাহের কাজ করলো, অতপর (অন্যায় বুঝতে পেরে) তাওবা করলো এবং (সে অনুযায়ী) নিজেদের সংশোধনও করে নিলো (হে নবী.) তোমার মালিক অবশ্যই এরপর তাদের জন্যে (হবেন) ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١١٩ ثُمرَّ إِنَّ رَبُّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوءَ بِحَهَالَةٍ ثُرَّ تَابُوا مِنْ ابَعْن ذٰلِكَ وَاصْلَحُوا لا إِنَّ رَبِّكَ مِنْ الْبَعْرِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمرٌ ع

১২০. নিশ্চয়ই ইবরাহীম ছিলো একটি উন্মত (-এর সমমর্যাদাবান, সে ছিলো) আল্লাহর একান্ত অনুগত ও একনিষ্ঠ (বান্দা), সে কখনো মোশরেকদের অন্তর্ভুক্ত ছিলো না.

١٢٠ إِنَّ إِبْرُمِيْمِ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّه مَنِيْفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْهُشْرِكِيْنَ لا

১৬ সুরা আন নাহল

₹**२**99

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৪ রুবামা

১২১. (সে ছিলো) আল্লাহ তায়ালার নেয়ামতের প্রতি কৃতজ্ঞ, আল্লাহ তায়ালা তাকে (নবুওতের জন্যে) বাছাই করেছেন এবং তাকে তিনি সরল পথে পরিচালিত করেছেন।

١٢١ شَاكِرًا لِّآنْعُمِهِ ، إِجْتَبْهُ وَهَلْهُ إِلَى صِرَاطٍ مَّسْتَقِيْر

১২২. আমি তাকে দুনিয়াতেও (প্রচুর) কল্যাণ দান করেছি, আর পরকালেও সে নিসন্দেহে নেক মানুষদের অন্তর্ভুক্ত (হবে):

١٢٢ وَ أَتَيْنُهُ فِي النَّنْيَا حَسَنَةً ﴿ وَإِنَّهُ فِي الأُخِرَة لَمِنَ الصَّلِحِيْنَ ،

১২৩. অতপর (হে নবী,) আমি তোমার ওপর ওহী পাঠালাম যে, তুমি একনিষ্ঠভাবে ইবরাহীমের মিল্লাত অনুসরণ করো: আর সে কখনো মোশরেকদের দলভুক্ত ছিলো না।

١٢٣ ثُرَّ أَوْمَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرُهِيْرَ مَنِيْفًا ﴿ وَّمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِيْنَ

১২৪. শনিবার (পালন করা) তো কেবল তাদের জন্যেই (বাধ্যতামূলক) করা হয়েছিলো, যারা এ (বিষয়টি) নিয়ে (অযথা) মতবিরোধ করেছে; অবশ্যই তোমার মালিক কেয়ামতের দিন তাদের মাঝে সে সব বিষয়ে মীমাংসা করে দেবেন, যেসব বিষয়ে সেখানে তারা মতবিরোধ করতো ।

١٢٣ إِنَّهَا جُعِلَ السَّبْسُ عَلَى الَّذِيْنَ اَهْتَلَفُوا فِيْهِ ﴿ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْ ۚ الْقِيهَةِ فِيْهَا كَانُوْ ا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ

১২৫. (হে নবী,) তুমি তোমার মালিকের পথে (মানুষদের) প্রজ্ঞা ও সদুপদেশ দ্বারা আহ্বান করো, وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُر بِالَّتِي هِيَ कर्पता जर्ल (याल राल) प्रि वमन वक भन्निकाल (যুক্তিতর্ক করো যা সবচাইতে উৎকৃষ্ট পন্থা; তোমার মালিক (এটা) ভালো করেই জানেন, কে তাঁর পথ থেকে বিপূথগামী হয়ে গেছে, (আবার) যে ব্যক্তি (হেদায়াতের) পথে রয়েছে তিনি তার সম্পর্কেও সবিশেষ অবহিত আছেন।

١٢٥ أُدْعُ إِلَى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ أَحْسَنُ ١ إِنَّ رَبِّكَ هُوَ أَعْلَرُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِ وَهُوَ آعْلَمُ بِالْهُهْتَالِيْنَ

المَّ وَإِنْ عَاقَبْتُر فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُر عَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُر عَاقِبَا الله ال ততোটুকু শাস্তিই দেবে যতোটুকু (অন্যায়) তোমাদের সাথে করা হয়েছে: অবশ্য যদি তোমরা ধৈর্য ধারণ করো তাহলে (জেনে রেখো,) ধৈর্যশীলদের জন্যে তাই হচ্ছে উত্তম।

بِهِ و وَلَئِنْ صَبَوْتُهُ لَهُو خَيْرٌ لِلصَّبِدِينَ

১২৭. (হে নবী,) তুমি (নির্যাতন নিপীড়নে) ধৈর্য ধারণ করো, তোমার ধৈর্য (সম্ভব হবে) ওধু আল্লাহ তায়ালার সাহায্য দিয়েই, এদের (আচরণের) ওপর দুঃখ করো না, এরা যে সব ষড়যন্ত্র করে চলেছে তাতে তুমি মনোক্ষুণ্ন হয়ো না ।

١٢٤ وَاشْبِرْ وَمَا مَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنُ عَلَيْهِم وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّهَا

١٢٨ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِيشَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيشَ अवगाउँ आबार जासना जासन नास्य तरस्रहम والَّذ যারা (জীবনের সর্বত্র) আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে চলে. (সর্বোপরি) তারা হবে সংকর্মশীল।

সুরা বনী ইসরাঈল

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ১১১, রুক ১২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةُ بَنِي إِسْرَاءِيلَ مَكِيَّةً أَيَاتَ : ١١١ رُكُوعَ ١٣٠ بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ

১. পবিত্র ও মহিমানিত (সেই আল্লাহ তায়ালা), যিনি তাঁর (এক) বান্দাকে রাতের বেলায় মাসজিদে হারাম থেকে মাসজিদে আকসায় নিয়ে গেলেন, যার পারিপার্শ্বিতাকে আমি (আগেই) বরকতপূর্ণ করে রেখেছিলাম, যেন আমি তাকে আমার (দৃশ্য অদৃশ্য) কিছু নির্দশন দেখাতে পারি: (মূলত) সর্বশ্রোতা ও সর্বস্রষ্টা তো স্বয়ং তিনিই।

ا سُبْعَىٰ الَّذِي ٓ أَسْرِى بِعَبْنِ اللَّهِ مِّنَ الْهَسْجِنِ الْحَرَامِ الِّي الْهَسْجِنِ الْإَقْصَا الَّذِي بْرَكْنَا مَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ أَيْتِنَا م إِنَّهُ مُو السِّيعُ الْبَصِيْرُ

২. আমি মূসাকে (-ও) কেতাব দিয়েছি. আমি এ (কেতাব)-কে বনী ইসরাঈলের হেদায়াতের উপকরণ বানিয়েছিলাম (আমি আদেশ দিয়েছিলাম), আমাকে ছাড়া অন্য কাউকে তোমরা (নিজেদের) কর্মবিধায়করূপে গ্রহণ করো না।

٢ وَأَتَيْنَا مُوْسَى الْكِتْبِ وَجَعَلْنَهُ هُنَّى لِّبَنِيُّ اِسْرًا عِيْلَ ٱلَّا تَتَّخِلُوْا مِنْ دُوْنِيْ

৩. (তোমরা হচ্ছো সেসব লোকের বংশধর), যাদের আমি নূহের সাথে (নৌকায়) আরোহণ করিয়েছিলাম. অবশ্যই সে ছিলো (আমার) এক কৃতজ্ঞ বান্দা।

٣ ذُرِّيَّةً مَنْ مَهَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ١ إِنَّهُ كَانَ عَبْلًا

 আমি বনী ইসরাঈশদের প্রতি (তাদের) কেতাবের মধ্যে (এ কথার) ঘোষণা দিয়েছিলাম, অবশ্যই তোমরা पू'वात (आमात) यभीत विभर्यत्र मृष्ठि कत्तत्व এवर التَّفْسِلُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرِّتَيْنِ وَلَتَعْلَى عُلُوا (মানুষের ওপর তখন) বড়ো বেশী বাড়াবাড়ি করবে।

٣ وَقَضَيْنَا ۚ الٰي بَنيْ ٓ اشْرَاءِيْلَ فِي الْكَتٰبِ

৫. অতপর এ দু'য়ের প্রথমটির নির্ধারিত সময় যখন এসে হাযির হলো, তখন (তোমাদের বিপর্যয় বন্ধ করার জ্বন্যে) আমি তোর্মাদের ওপর আমার এমন কিছু বান্দার্কে পাঠিয়েছিলাম, যারা ছিলো বীরত্ত্বে অধিকারী, অতপর তারা (তোমাদের) ঘরে ঘরে প্রবেশ করে সব কিছুই তছনছ করে দিয়ে গেলো; আর (এভাবেই) আমার (শাস্তির) প্রতিশ্রুতি কার্যকর হয়ে থাকে।

٥ فَإِذَا جَاءً وَعْنُ أُولِيهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمِ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسِ شَنِيْنِ فَجَاسُوا عَلْلَ الرِّيار ، وَكَانَ وَعْنًا مَّفْعُوْلًا

৬. অতপর আমি তাদের ওপর (বিজয় দিয়ে) দ্বিতীয় বার তোমাদের (সুদিন ফিরিয়ে দিলাম এবং) ধন সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি দিয়ে তোমাদের আমি সাহায্য করলাম. (সর্বোপরি এ জনপদে) আমি তোমাদের সংখ্যাগরিষ্ঠ করলাম।

لا ثُمرٌّ رَدَدْنَا لَكُيرُ الْكَرُّةَ عَلَيْهِم ۚ وَأَمْنَدُنْكُمْ بِأَمُوَالِ وَّبَنِينَ وَجَعَلْنكُرْ أَكْثَرَ نَفَيُّ ا

৭, যদি তোমরা কোনো ভালো কাজ করে থাকো তা ك إِنْ أَحْسَنْتُر أَحْسَنْتُر لِأَنْفُسِكُر تَ وَإِن (अशंख्वात) (তামাদের নিজেদের জন্যে । (अशंब्वात) وأن أَحْسَنْتُر أَحْسَنْتُ أَحْسَانِهُ وَالْحَاسِيْنِ الْحَسَنْقُ الْعَلَيْكُمْ عَلَى الْعَلَيْكُمْ الْعَلَيْكُمْ الْعَلَيْكُمْ الْعَلَيْكُمْ الْعَلْمُ الْعَلَيْكُمْ الْعَلْمُ الْعَلَيْكُمْ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعَلْمُ الْعَلَيْكُمْ الْعَلْمُ الْعَلَيْكُمْ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعُلِمُ الْعِلْمُ الْعُلِمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُلِمُ ا তোমাদের কেউ যদি কোনো মন্দ কাজ করে থাকো, তার দায়িত্তও একান্ডভাবে তার নিজের ওপর: অতপর যখন আমার দ্বিতীয় প্রতিশ্রুতির সময় হাযির হলো, (তখন আমি আরেক দলকে তোমাদের মোকাবেলার জন্যে পাঠিয়েছিলাম) যেন তারা তোমাদের মুখমন্ডল কালিমাচ্ছনু করে দিতে পারে, যেমন করে প্রথমবার এ ব্যক্তিরা মাসজিদে (আৰুসায়) প্রবেশ করেছে (এবং এর প্রচর ক্ষতি সাধন করেছে, আবারও) যেন তারা মাসজিদে প্রবেশ করতে পারে এবং যে যে জিনিসের ওপর তারা অধিকার জমাতে পারে তা যেন তারা ধ্বংস করে দিতে পারে।

أَسَأْتُمْ فَلَهَا وَ فَاذَا جَاءً وَعْلُ الْأَحْوَةَ لِيَسُوَّءً وُجُوْهَكُمْ وَلِيَنْ عُلُوا الْهَسْجِنَ كَهَا دَعَلُوهُ أُولَ مَرَّةِ وَّلْيَتَبُّووْا مَا عَلَوْا تَتَبِيُّا

১৭ সূরা বনী ইসরাঈল

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ১৫ সোবহানাললাযী ٨ عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يَتْرْحَبَكُمْ ۚ وَإِنْ عُنْ تُتُّمْ ৮, সম্ভবত এর মাধ্যমে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর অনুগ্রহ করবেন, আর তোমরা যদি (আবার বিদ্রোহের দিকে) ফিরে যাও তাহলে আমিও (আমার শান্তির) عُنْنَا مِ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَفِرِيْنَ حَصِيرًا পুনরাবৃত্তি করবো, আর আফি তো কাঁফেরদের জন্যে জাহানামকে তাদের (চির) কারাগারে পরিণত করে রেখেছি।

৯. অবশ্যই এ কোরআন এমন এক পথের দিকে নির্দেশনা দেয় যা অতি (সরল ও) মযবুত এবং যেসব ঈমানদার মানুষ নেক আমল করে, এ (কেতাব) তাদের (এ) সুসংবাদ দেয় যে, তাদের জন্যে (আল্লাহর কাছে) এক মহাপুরস্কার রয়েছে।

٩ إِنَّ هٰنَا الْقُرْأَنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَتُوَّأُ وَيُجَهِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْآنِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصُّلِحُتِ أَنَّ لَهُرْ أَجُرًّا كَبِيْرًا لا

১০. (অপরদিকে) যারা পরকালে বিশ্বাস করে না, আমি তাদের জন্যে (এক) কঠিন আযাব প্রস্তুত করে রেখেছি :

١٠ وَّ أَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ أَعْتَلْنَا لَهُرْ عَنَ ابًا ٱلِيْهًا ع

১১. আর মানুষ (যেভাবে নিজের জন্যে না বুঝে) অকল্যাণ কামনা করে, (তেমনি সে) তার (নিজের) জন্যে (বুঝে সুঝে) কিছু কল্যাণও (কামনা করে আসলে) মানুষ (কাংখিত বস্তুর জন্যে এমনিই) তাড়াহুড়ো করে।

١١ وَيَنْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاَّءَةً بِالْخَيْرِ ، وكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا

১২. আমি রাত ও দিনকে (আমার কুদরতের) দুটো নিদর্শন বানিয়ে রেখেছি, অতপর রাতের নিদর্শন আমি বিলীন করে দিয়েছি এবং দিনের নিদর্শনকে আমি করেছি আলোকময়, যাতে করে (এর আলোতে) তোমরা তোমাদের মালিকের রেযেক সংগ্রহ করতে পারো (সর্বোপরি) তোমরা (এর মাধ্যমে) বছরের গণনা ও (এর) হিসাবও জানতে পারো: আর (এর) সব কয়টি বিষয়ই আমি খুলে খুলে বর্ণনা করেছি।

١٢ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ أَيْتَيْنَ فَهَحَوْنَا أَيَةَ الَّيْلَ وَجَعَلْنَا أَيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُيرُ وَلِتَعْلَهُوْا عَنَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ﴿ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنُهُ

১৩. প্রত্যেক মানুষের ভাগ্যলিপি আমি তার গলায় (হারের মতো করে) ঝুলিয়ে রেখেছি: কেয়ামতের দিন তার জন্যে (আমলনামার) একটি গ্রন্থ আমি (তার সামনে) বের করে দেবো, সে তা (তার সামনে) খোলা অবস্থায় পড়ে থাকতে দেখবে।

١٣ وَكُلُّ إِنْسَانٍ ٱلْزَمْنَاهُ طَيْرَةً فِي عُنُقِهِ ١ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيهَةِ كِتْبًا يَّلْقُهُ مَنْشُورًا

১৪. (আমি তাকে বলবো) পড়ো, (এ হচ্ছে) তোমার আমলনামা; আজ নিজের হিসাবের জন্যে তুমি নিজেই যথেষ্ট:

١٣ اقْرَأْ كَتْبَكَ ء كَفَى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ

১৫. যে ব্যক্তি হেদায়াতের পথে চলবে. সে তো চলবে একাস্তভাবে নিজের (ভালোর) জন্যে, যে ব্যক্তি গোমরাহ হবে তার গোমরাহীর দায়িত্ব অবশ্যই তার ওপর; (আসল কথা হচ্ছে, সেদিন) কেউই অন্য কারো (গুনাহের) ভার বইবে না; আর আমি কখনোই (কোনো জাতিকে) আযাব দেই না, যতোক্ষণ না আমি (সেখানে আযাব থেকে সতর্ককারী) কোনো রসূল না পাঠাই।

١٥ مَن اهْتَرِي فَانَّهَا يَهْتَرِي لِنَفْسِهِ } وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّهَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ﴿ وَلَا تَزِرٌ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُهُرِٰى م وَمَا كُنَّا مُعَنَّ بِيْنَ حَتَّى نَبْعَثَ

১৬. আমি যখন কোনো জনপদকে ধ্বংস করতে চাই তখন তার বিত্তশালী লোকদের (ভালো কাজের) আদেশ করি, কিন্তু (তা না করে) সেখানে তারা গুনাহের কাজ

١٦ وَإِذَا أَرَدْنَا ۗ أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُثْرَا

| 0114-111 1411 -1241 141 11211 -12411 | 1111 24 3 11 17 11 11 11 |
|--|---|
| করতে শুরু করে, অতপর (এ জন্যে) সেখানে আমার আযাবের ফয়সালা প্রতিষ্ঠিত হয়ে যায়, পরিশেষে আমি তা সম্পূর্ণরূপে বিনাশ করে দেই। | فَفَسَقُوْ ا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَلَ سَرَّنْهَا تَنْمِيْرًا |
| ১৭. নৃহের পর আমি (এই একই কারণে) কতো মানবগোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছি; (হে নবী,) তোমার মালিক তাঁর বান্দাদের গুনাহের খবর রাখা ও তা পর্যবেক্ষণ করার জন্যে (একাই) যথেষ্ট। | ا وكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ ابعْلِ نُوحٍ اللهِ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ ابعْلِ نُوحٍ اللهِ وَكَفَى بِرَبِّكَ بِنُ نُوْبِ عِبَادِةٍ خَبِيْرًا المِيْرًا |
| ১৮. কোনো ব্যক্তি দ্রুত (দুনিয়ার সুখ সঞ্জোগ) পেতে চাইলে আমি তাকে এখানে তার জন্যে যতোটুকু দিতে চাই তা সত্ত্বর দিয়ে দেই, (কিন্তু) পরিশেষে তার জন্যে জাহান্নামই নির্ধারণ করে রাখি, যেখানে সে প্রবেশ করবে একান্ত নিন্দিত, অপমানিত ও বিতাড়িত অবস্থায়। | ١٨ مَنْ كَانَ يُرِيْكُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِهِنَ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِهِنَ لَوْ مَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ جَ يَصْلُنهَا مَنْ مُومًا مَّنْ مُورًا |
| ১৯. (অপরদিকে) যারা আখেরাত (ও তার সাফল্য) কামনা করে এবং তা পাওয়ার জন্যে যে পরিমাণ চেষ্টা করা উচিত তেমনভাবেই চেষ্টা করে, (সর্বোপরি) যারা হয় (সত্যিকার) মোমেন, (মূলত) তারাই হচ্ছে এমন লোক যাদের চেষ্টা সাধনা (আল্লায়ে দরবারে) স্বীকৃত হয়। | ا وَمَنْ أَرَادَ الْأَخِرَةَ وَسَعْى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولًا عَلَيْهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولًا |
| ২০. (হে নবী,) আমি এদের (যারা দুনিয়া চায়) এবং ওদের (যারা আখেরাত চায়), সবাইকেই তোমার মালিকের দান থেকে সাহায্য করে যাচ্ছি এবং তোমার মালিকের দান কারো জন্যেই বন্ধ নয়। | ٢٠ كُلَّا نَّهِ لَّ هَـؤُلَاءً وَهَؤُلَاءً مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ١٠ وَمَا كَانَ عَطَاءً رَبِّكَ مَحْظُورًا |
| ২১. (হে নবী,) তুমি দেখো, কিভাবে আমি (পার্থিব সম্পদের বেলায়) তাদের একজনকে আরেকজনের ওপর শ্রেষ্ঠত্ব দান করলাম; অবশ্য মর্যাদার দিক থেকে আখেরাত অনেক বড়ো, জার ফ্যীলতও বহুলাংশে বেশী। | ٢١ ٱنْظُرْ كَيْفَ نَضَّلْنَا بَعْضَمُرْ عَلَى بَعْضٍ ، وَلَلْاٰ خِرَةٌ ٱكْبَرُ دَرَجْتٍ وَّٱكْبَرُ تَقْضِيْلًا |
| ২২. (হে মানুষ,) আল্লাহর সাথে তোমরা অন্য কাউকে মাবুদ বানিয়ো না, নতুবা (পরকালে) তোমরা নিন্দিত অপমানিত ও নিসহায় হয়ে পড়বে। | ٢٢ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللهِ اللهِ الْمَا أَخَرَ فَتَقَعُلَ مَنْمُوْمًا مَّخْلُولًا ع |
| ২৩. তোমার মালিক আদেশ করছেন, তোমরা তাঁকে বাদ দিয়ে অন্য কারো এবাদাত করো না এবং তোমরা (তোমাদের) পিতামাতার সাথে সদ্ব্যবহার করো; তাদের একজন কিংবা উভয়ই যদি তোমার জীবদ্দশায় বার্ধক্যে উপনীত হয়, তাহলে তাদের (সাথে) বিরক্তিসূচক কিছু বলো না এবং কখনো তাদের ধমক দিয়ো না, তাদের সাথে সম্মানজনক ভদ্রজনোচিত কথা বলো। | ٢٣ وَقَضَى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُرُو ۗ الِّ الِّ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اللهُ ال |
| ২৪. অনুকম্পায় তুমি ওদের প্রতি বিনয়াবনত থেকো এবং বলো, হে (আমার) মালিক, ওদের প্রতি (ঠিক সেভাবেই) তুমি দয়া করো, যেমনি করে শৈশবে ওরা আমাকে লালন পালন করেছিলো। | ٢٣ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ النَّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِيْ صَغِيْرًا ﴿ |
| ২৫. (আসলে) তোমাদের মালিক তোমাদের অন্তরসমূহের ভেতরে যা আছে তা ভালো করেই জানেন; তোমরা (সত্যিই) যদি ভালো মানুষ হয়ে যাও তাহলে (আল্লাহ তায়ালা তা মাফ করে দেবেন, কেননা), যারা তাওবা করে তিনি তাদের (গুনাহ) মাফ করে দেন। | ٢٥ رَبُّكُر أَعْلَرُ بِهَا فِي نُفُوسِكُر مَ إِنَّ تَكُونُوا مِلْعِيْنَ فَاللَّهِ كَانَ لِلْكَوَّ ابِيْنَ غَفُورًا |

পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী

মন্যিল ৪

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

1947

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|--|---|
| ২৬. আত্মীয় স্বজনকে তাদের (যথার্থ) পাওনা আদায় করে দেবে, অভাবগ্রস্ত এবং মোসাফেরদেরও (তাদের হক | ٢٦ وَ اٰكِ ذَا الْقُرْبِي مَقَّةً وَ الْمِسْكِيْنَ وَابْنَ |
| আদায় করে দেবে), কখনো অপব্যয় করো না। | السَّبِيْلِ وَلَا تُبَنِّرُ تَبْنِيْرًا |
| ২৭. অবশ্যই অপব্যয়কারীরা হচ্ছে শয়তানের ভাই; আর শয়তান হচ্ছে তার মালিকের বড়োই অকৃতজ্ঞ! | ٢٤ إِنَّ الْمُبَنِّرِيْنَ كَانُوْ آ إِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ا |
| • | وكَانَ الشَّيْطٰيُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا |
| ২৮. যদি তোমাকে কখনো (এ) হকদারদের বিমুখ করতেই হয় (এ কারণে যে), তাকে দেয়ার মতো সম্পদ তোমার কাছে | |
| নেই এবং তুমি তোমার মালিকের কাছ থেকে অনুগ্রহ কামনা করছো, যা পাওয়ার তুমি আশাও রাখো- তাহলে একান্ত ন্মুভাবে তাদের সাথে কথা বলো। | رَبِّكَ تَرْجُوْمَا فَقُلْ لَّهُمْ قُوْلًا مَّيْسُوْرًا |
| ২৯. কখনো নিজের (ব্যয়ের) হাত নিজের গর্দানের সাথে বেঁধে রেঁখো না (যাতে কার্পণ্য প্রকাশ পায়), আবার তা | ٢٩ وَلَا تَجْعَلْ يَلَكَ مَغْلُوْلَةً إِلَى عُنُقِكَ |
| সম্পূর্ণ খুলেও রেখো না, অন্যথায় (বেশী খরচ করার কারণে) তুমি নিন্দিত নিম্ব হয়ে যাবে। | وَ لَا تَبْسُطُهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُنَ مَلُومًا مَّحْسُورًا |
| ৩০. তোমার মালিক যাকে চান তার রেযেক বাড়িয়ে দেন, আবার যাকে চান তাকে কম করে দেন, অবশ্যই তিনি | ٣٠ إِنَّ رَبُّكَ يَبْسُمُ الرِّزْقَ لِمَنْ يُشَاءُ |
| তাঁর বান্দাদের (প্রয়োজন সম্পর্কে) ভালোভাবেই জ্বানেন এবং (তাদের অবস্থাও) তিনি দেখেন। | وَيَقْدِرُ اللَّهُ كَانَ بِعِبَادِةٍ خَبِيْرًا ا بَصِيْرًا ع |
| ৩১. তোমরা তোমাদের সম্ভানদের কখনো দারিদ্রের ভয়ে হত্যা করো না; আমি (যেমন) তাদের রেযেক দান করি | ٣١ وَلَا تَقْتُلُوْا آوْلَادَكُمْ هَشْيَةَ إِمْلَاقٍ اللهِ وَلَا تَقْتُلُوْا آوْلَادَيْ اللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهِ وَاللّهُ |
| (তেমনি) তোমাদেরও কেবল আমিই রেযেক দান করি; (রেযেকের ভয়ে) তাদের হত্যা করা (হবে) অবশ্যই | نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ، إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ |
| (८५८८४५४ ७८५) जारगद्ध २७)। क्या (२८५) अवनाहर এकि महाशाल । | خِطْأً كَبِيْرًا |
| ৩২. তোমরা ব্যভিচারের ধারে কাছেও যেয়ো না, নিসন্দেহে এ হচ্ছে একটি অশ্লীল কাজ এবং নিকৃষ্ট পথ। | ٣٢ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَّى إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً مَ وَّسَاءُ سَبِيْلًا |
| ৩৩. কোনো জীবনকে অন্যায়ভাবে হত্যা করো না, যা আল্লাহ তায়ালা হারাম করেছেন; যে ব্যক্তিকে অন্যায়ভাবে | ٣٣ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي مَرَّا اللَّهُ |
| হত্যা করা হয় আমি তার উত্তরাধিকারীকে (এ) অধিকার দিয়েছি (সে চাইলে রক্তের বিনিময় দাবী করতে পারে), | إلَّا بِالْحَقِّ ، وَمَنْ تُتِلَ مَظْلُومًا فَقَنْ جَعَلْنَا |
| তবে সে যেন হত্যার (প্রতিশোধ নেয়ার) ব্যাপারে বাড়াবাড়ি না করে; কেননা (হত্যার মামলায় যে ব্যক্তি মযলুম) তাকেই সাহায্য করা হবে। | لُولِيِّهُ سُلْطُنَّا فَلَا يُسُرِِّنَ قِي الْقَتْلِ وَالْقَالِ وَالْهَ كَانَ مَنْصُورًا |
| ত্ত্ব প্রত্যা করা হবে। তিঃ. এতীমদের মাল সম্পদের কাছেও যেয়ো না, তবে এমন্য কোনো পস্থায় যা (এতীমের জন্যে) উত্তম (বলে | ٣٣ وَلا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيْمِ إِلَّا بِالَّتِي |
| প্রমাণিত) হয় তা বাদে– যতোক্ষণ পর্যন্ত সে (এতীম) তার বয়োপ্রাপ্তির পর্যায়ে উপনীত হয় এবং তোমরা | هِيَ اَحْسَنُ مَتَّى يَبْلُغَ اَشُدَّةً س وَاَوْفُوا |
| (এদের দেয়া যাবতীয়) প্রতিশ্রুতি মেনে চলো, কেননা (কেয়ামতের দিন এ) প্রতিশ্রুতির ব্যাপারে (তোমাদের) জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। | بِالْعَهْلِ جَ إِنَّ الْعَهْلَ كَانَ مَسْتُولًا |
| ৩৫. কোনো কিছু পরিমাপ করার সময় মাপ কিছু পুরোপুরিই করবে, আর (ওষন করার দ্বিনিস হলে) দাঁড়িপাল্লা | ا به واویرا اسین ادا جسیر وریرا |
| সোজা করে ধরবে; (লেনদেনের ব্যাপারে) এই হচ্ছে উত্তম পন্থা | بِالْقِسْطَاسِ الْهُسْتَقِيْمِ ﴿ ذَلِكَ غَيْرٌ وَّ أَحْسَنَّ |
| এবং পারণামে (-র দিক থেকে) এটাই হচ্ছে উৎকৃষ্ট। | تاوِيلا |
| ১৭ সূরা বনী ইসরাঈল ২৮২ | भनिय _ण 8 |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|---|---|
| ৩৬. যে বিষয়ে তোমার কোনো জ্ঞান নেই, (অযথা) তার পেছনে পড়ো না; কেননা (কেয়ামতের দিন) কান, চোখ | ٣٦ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ |
| ও অন্তর, এ সব কয়টির (ব্যবহার) সম্পর্কে তাকে | السُّهْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ ٱولَّنِكَ كَانَ |
| জিজ্ঞেস করা হবে। | عَنْهُ مَسْنُولًا |
| ৩৭. আল্লাহর যমীনে (কখনোই) দঙ্কভরে চলো না, কেননা (যতোই অহংকার করো না কেন), তুমি কখনো এ | ٣٠ وَلَا تَهْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَمًا } إِنَّكَ لَنْ |
| যমীন বিদীর্ণ করতে পারবে না, আর উচ্চতায়ও তুমি | تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَىْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا |
| কখনো পর্বত সমান হতে পারবে না। | |
| ৩৮. (হে নবী,) এগুলো সবই (খারাপ কাজ,) এর মন্দ দিকগুলো তোমার মালিকের কাছেও একান্ত ঘৃণিত। | ٣٨ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْنَ رَبِّكَ مَكُرُوهُا |
| ৩৯. তোমার মালিক ওহীর মাধ্যমে যে প্রজ্ঞা দান করেছেন এ (সব) হচ্ছে তার অন্তর্ভুক্ত, যা তোমার মালিক ওহীর | ٣٩ ذٰلِكَ مِمَّ أَوْمَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ |
| মাধ্যমে তোমার কাছে পাঠিয়েছেন; তুমি আল্লাহর সাথে অন্য কাউকে মাবুদ বানাবে না, অন্যথায় তুমি নিন্দিত, | الْحِكْمَةِ م وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلْمًا أَغَرَ |
| অপমানিত ও (আল্লাহর অনুগ্রহ থেকে) বঞ্চিত হয়ে জাহান্লামে নিক্ষিপ্ত হবে। | فَتُلْقَى فِي جَهَنَّرَ مَلُومًا مَّنْ مُورًا |
| ৪০. এটা কেমন কথা, তোমাদের মালিক তোমাদের জন্যে | ٣٠ اَفَاصْفُكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَلَ مِنَ |
| নির্ধারিত করেছেন পুত্র সন্তান, আর নিজে ফেরেশতাদের কন্যা হিসেবে গ্রহণ করে নিয়েছেন; তোমরা সত্যিই আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে) একটা জঘন্য কথা বলে বেড়াচ্ছো। | الْمَلَّنِكَةِ إِنَاثًا مَ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيْمًا ع |
| ৪১. আমি এই কোরআনে (এ কথাগুলো) সবিস্তার বর্ণনা করেছি, যাতে করে তারা এর থেকে কিছু শিক্ষা গ্রহণ | ا م وَلَقَن مَرَّفْنَا فِي هٰذَا الْقُرْانِ لِيَنَّكُّووا ا |
| করে।ছ, বাতে করে তারা এর বেকে কছু । মন এই। করতে পারে; কিন্তু এ (বিষয়)-টি তাদের (ঈমানের প্রতি) বিদ্বেষ ছাড়া আর কিছুই বাড়ালো না। | وَمَا يَزِيْنُهُمْ إِلَّا نُقُوْرًا |
| ৪২. (বে নবী, এদের) তুমি বলো, যদি আল্লাহর সাথে আরো মাবুদ থাকতো যেমন করে এ (মোশরেক) | ٣٢ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَدٌّ الْهِمَّةُ كَهَا يَقُوْلُونَ إِذًا |
| লোকেরা বলে, তাহলে অবশ্যই তারা (এডোদিনে) আরশের মালিকের কাছে পৌছার একটা পথ বের করে নিতো। | |
| ৪৩. (মূলত) এরা আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে যা কিছু (অবান্তর কথাবার্তা) বলে, তিনি তার চাইতে অনেক পবিত্র, অনেক মহিমানিত। | ٣٣ سُبْحُنَهُ وَتَعْلَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوا كَبِيرًا |
| 88. সাত আসমান, যমীন এবং এ (দু'য়ের) মাঝখানে যা কিছু (মজুদ) আছে তা সবই আল্লাহ তায়ালার পবিত্রতা ও | ٣٣ تُسَبِّحُ لَهُ السَّاوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ |
| মহিমা ঘোষণা করছে; (সৃষ্টিলোকে) কোনো একটি | وَمَنْ فِيهِنَّ ﴿ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ |
| জিনিসই এমন নেই যা তাঁর প্রংশসা, পবিত্রতা ও মাহাত্ম্য ঘোষণা করে না; কিন্তু তাদের এ পবিত্রতা ও মহিমা | بِحَمْلِةٍ وَلٰكِنَ ۗ لا تَفْقَهُونَ تَسْبِيْحَهُرْ ﴿ إِنَّهُ |
| ঘোষণা তোমরা অনুধাবন করতে পারো না; অবশ্যই তিনি একান্ত সহনশীল ও ক্ষমাপরায়ণ। | كَانَ مَلِيمًا غَفُورًا |
| ৪৫. (হে নবী,) যখন তুমি কোরআন পাঠ করো তখন | ٢٥ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْأِنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ |
| তোমার ও যারা পরকালের ওপর বিশ্বাস করে না তাদের মাঝে আমি একটি প্রচ্ছন্ন পর্দা এঁটে দেই। | الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ مِجَابًا مَّشْتُورًا |
| ৪৬. আমি তাদের অন্তরের ওপর (এক ধরনের) আবরণ রেখে দেই, ওদের কানে (এনে) দেই বধিরতা, যাতে করে ওরা তা উপলব্ধি করতে না পারে, (তাই তুমি | ٣٦ وَّجَعَلْنَا عَلَى قُلُوْبِهِرْ أَكِنَّةً أَنْ يَّغْقَهُوْهُ |
| ১৭ সুরা বনী ইসরাঈল | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|--|--|
| দেখবে); যখন তুমি কোরআনে তোমার মালিককে স্বরণ করতে থাকো, তখন তারা ঘৃণাভরে (তোমার কাছ থেকে) | وَفِي أَذَانِهِم وَقُرًا ﴿ وَإِذَا ذَكُوْ سَ رَبُّكَ فِي |
| সরে পড়ে। | الْقُرْانِ وَحْنَةً وَلَّوْا عَلَى اَدْبَارِهِمْ نُفُورًا |
| ৪৭. আমি ভালো করেই জানি যখন ওরা কান পেতে তোমার কথা শোনে, তখন ওরা কান পেতে (কি কথা) | ٣٤ نَحْنُ آعْلَمُ بِهَا يَسْتَهِعُوْنَ بِهَ إِذْ |
| শোনে (আমি এও জানি), যখন এই যালেমরা নিজেদের মধ্যে সলাপরামর্শ করে বলে, তোমরা তো একজন | يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُرْ نَجُومى إِذْ يَقُولُ |
| যাদুগ্রস্ত লোকেরই অনুসরণ করে চলেছো। | الظَّلِمُوْنَ إِنْ تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا رَجُلاً مَّسُحُوْرًا |
| ৪৮. হে নবী, দেখো, এরা তোমার ব্যাপারে কি ধরনের উপমা তৈরী করেছে, (মূলত এসব কারণেই) অতপর এরা | ٢٨ أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَّبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا |
| গোমরাহ হয়ে গেছে, অতএব এরা সঠিক পথের সন্ধান পাবে না। | فَلَا يَسْتَطِيْعُونَ سَبِيْلًا |
| ৪৯. এ (মূর্খ) লোকেরা বলে, আমরা (মৃত্যুর পর) হাডিডতে পরিণত হয়ে পচে গেলেও কি নতুন সৃষ্টিরূপে | ٢٩ وَقَالُوْ آ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا |
| পুনরায় উথিত হবোঃ | لَمَبْعُوثُونَ عَلْقًا جَرِيْدًا |
| ৫০. তুমি (তাদের) বলো, (মৃত্যুর পর) তোমরা পাথর হয়ে যাও কিংবা লোহায় (পরিণত) হও (সর্বাবস্থায়ই তোমরা পুণরুখিত হবে), | ٥٠ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً أَوْ حَدِيْدًا لا |
| ৫১. কিংবা এমন কিছু সৃষ্টি, তোমাদের ধারণায় যার (বান্তবায়ন) হওয়া খুবই কঠিন, অচিরেই তারা বলবে, | ٥١ أَوْ خَلُقًا مِيًّا يَكْبُرُ فِي صُلُورِكُمْ ، |
| (অবস্থা এমন হলে) কে আমাদের পুনরায় জীবিত করবে; | فَسَيَقُوْلُونَ مَنْ يُعِيْدُنَا ءَ قُلُ الَّذِي فَطَرَكُمْ |
| তুমি বলো (হাঁ), তিনিই করবেন যিনি তোমাদের প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন, অতপর (তুমি দেখবে) তারা | اُوَّلَ مَرَّةٍ عَ فَسَيُنْفِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ |
| তোমার সামনে মাধা নাড়াবে এবং বলবে, (তাহলে) কবে | وَيَقُوْلُونَ مَتَى هُوَ ﴿ قُلْ عَسَّى أَنْ يَكُوْنَ |
| হবে (এ সব কিছু); তুমি বলো, সম্ভবত সেদিন খুব শীঘ্রই (সংঘটিত) হবে। | قَرِيبًا |
| ৫২. যেদিন আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ডাক দেবেন এবং তোমরা সবাই তাঁর প্রশংসা করতে করতে তাঁর ডাকে | ا 97 بما باعوك فتستحييون بحيار |
| সাড়া দেবে, (আর) তোমরা ভাববে, সামান্য কিছু সময়ই তোমরা (কবরে) কাটিয়ে এসেছো! | ونظنون إن لبِتتمر إلا فليلاع |
| ৫৩. (হে নবী,) আমার বান্দাদের বলে দাও, তারা যেন (কথা বলার সময়) এমন সব কথা বলে যা উত্তম; | ٥٣ وَقُلْ لِعِبَادِيْ يَقُولُوا الَّتِي هِيَ |
| (কেননা) শয়তান (খারাপ কথা দ্বারা) তাদের মাঝে বিভেদ সৃষ্টির উশ্কানি দেয়; আর শয়তান তো হচ্ছে | اَحْسَنُ و إِنَّ الشَّيْطِي يَنْزَغُ بَيْنَهُرْ و إِنَّ |
| মানুষের প্রকাশ্য দুশমন। | الشَّيْطُيَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَنُوًّا شَبِيْنًا |
| ৫৪. (হে মানুষ,) তোমাদের মালিক তোমাদের সম্পর্কে ভালো করেই জানেন; তিনি চাইলে তোমাদের ওপর দয়া | ٥٣ رَبُّكُمْ أَعْلَرُ بِكُرْ اللهِ إِنْ يَشَا يَرْمَهُكُمْ أَوْ |
| করবেন, কিংবা তিনি চাইলে তোমাদের শাস্তি দেবেন (হে নবী); আমি তো তোমাকে তাদের ওপর কোনো অভিভাবক করে পাঠাইনি। | إِنْ يَّشَا يُعَنِّ بْكُرْ ، وَمَا آَوْسَلْنَكَ عَلَيْهِرُ وَكِيْلًا |
| ৫৫. তোমার মালিক (তাদের) ভালো করেই জানেন যা আসমানসমূহ ও যমীনের মাঝে (মজুদ) রয়েছে; আমি | ٥٥ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّهٰوٰ سِ |
| একেকজন নবীকে একেকজনের ওপর (স্বতন্ত্র কিছু) | وَالْإَرْضِ ﴿ وَلَقَنْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّيَ عَلَى |
| মর্যাদা দান করেছি, (এমনিভাবেই আমি) দাউদকে যাবুর কেতাব দান (করে মর্যাদাবান) করেছি। | بَغْضٍ وَّاْتَيْنَا دَاوَدَ زَبُّوْرًا |
| ১৭ সূরা বনী ইসরাঈল ২৮৪ | भनियल 8 |

৫৬. (হে নবী, এদের) বলো, তোমরা আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাদের (মাবুদ) মনে করে ডাকো, তাদের ডেকে দেখো, (দেখবে,) তারা তোমাদের কাছ থেকে কষ্ট দূর করার কোনো ক্ষমতাই রাখেনা– না ক্ষমতা রাখে (তাকে) বদলে দেয়ার।

۵٦ قُلِ ادْعُوا الَّانِيْنَ زَعَمْتُرْ مِّنْ دُوْنِهِ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضَّرِّ عَنْكُرْ وَلَا تَحْوِيْلًا

৫৭. ওরা যাদের ডাকে তারা (স্বয়ং) নিজেরাই তো তাদের মালিকের কাছে (পৌছার) উসিলা তালাশ করতে থাকে, (তারা দেখতে চায়) তাদের মধ্যে কে (আল্লাহ তায়ালার) নিকটতর হতে পারে এবং তারা তাঁরই দয়া প্রত্যাশা করে, তাঁর আযাবকে ভয় করে; (মূলত) তোমার মালিকের আযাব এমনই একটি বিষয় যা একান্ত ভীতিপ্রদ।

۵۵ أُولَٰئِكَ الَّنِيْنَ يَنْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ إِلَٰى رَبِّعُوْنَ إِلَٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيَّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُوْنَ عَنَابَهُ ﴿ إِنَّ عَنَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْنُ وُرَا اللهِ مَحْنُ وُرًا

৫৮. এমন কোনো একটি জনপদ নেই যা আমি কেয়ামতের দিন আসার আগেই ধ্বংস করে দেবো না! কিংবা তাদের আমি কঠোর আযাব দেবো না! এসব কথা তো (আমার পাঠানো) কেতাবেই লিপিবদ্ধ আছে।

٥٩ وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ
 يَوْرًا الْقِيْلَةِ أَوْ مُعَنِّبُوْهَا عَنَ أَبًا شَرِيْلًا ﴿ كَانَ لَا اللَّهِ فَي الْكِتْبِ مَسْطُوْرًا

৫৯. আমাকে (আযাবের) নিদর্শনসমূহ পাঠানো থেকে এ ছাড়া অন্য কোনো কিছুই নিবৃত্ত করতে পারেনি যে, তাদের আগের লোকেরা তা অস্বীকার করেছে; আমি সামুদ জাতিকে দৃশ্যমান নিদর্শন (হিসেবে) একটি উষ্ট্রী পাঠিয়েছিলাম, অতপর তারা (আমার) সে (নিদর্শন)টির সাথে যুলুম করেছে; (আসলে) আমি ভয় দেখানোর জন্যেই (তাদের কাছে আযাবের) নিদর্শনসমূহ পাঠাই।

٥٩ وَمَا مَنْعَنَا آنَ تُرْسِلَ بِالْأَيْسِ اِلَّا آنَ الْأَوْلُونَ مَ وَاٰتَيْنَا تَمُوْدَ النَّاقَةَ مُنْصِرةً فَظَلَمُوْا بِهَا م وَمَا تُرْسِلُ بِالْأَيْسِ اِلَّا تَخُويْفًا

৬০. (হে নবী,) যখন আমি তোমাকে বলেছিলাম, তোমার মালিক (তার অপরিমিত জ্ঞানের পরিধি দিয়ে) সব মানুষদের পরিবেষ্টন করে আছেন; যে স্বপু আমি তোমাকে দেখিয়েছিলাম তাকে আমি (আসলে) মানুষদের জন্যে পরীক্ষার (বিষয়) বানিয়ে দিয়েছিলাম এবং কোরআনের (বর্ণিত) অভিশপ্ত গাছটিকেও (পরীক্ষার কারণ বানিয়েছি), (এভাবেই) আমি তাদের ভয় দেখাই, (মূলত) আমার ভয় দেখানো তাদের গোমরাহীই কেবল বাড়িয়ে দিয়েছে!

أَوْ وَاوْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبِّكَ أَحَاماً بِالنَّاسِ اللَّوَمَا جَعَلْنَا الرَّعْيَا الَّتِيَ آرَيْنَكَ إِلَّا فِتْنَةً لِمَا جَعَلْنَا الرَّعْيَا الَّتِيَ آرَيْنَكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْأَنِ اللَّهُ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْأَنِ اللَّهُ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْأَنِ اللَّهُ وَنَحَوِّفُهُمْ لَا فَهَا يَزِيْلُهُمْ إِلَّا طُفْيَانًا كَبِيْرًا عَلَى اللَّهُ اللَّلَّةُ اللَّهُ اللَّالَّةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالَّةُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

৬১. (শ্বরণ করো,) যখন আমি ফেরেশতাদের বললাম, তোমরা আদমকে সাজদা করো, তখন তারা সবাই (আমার আদেশে) সাজদা করলো, ইবলীস ছাড়া; সে বললো, আমি কি তাকে সাজদা করবো যাকে তুমি মাটি থেকে সষ্টি করেছো।

الَّ وَإِذْ قُلْنَا لِلْهَلَّئِكَةِ اسْجُلُوْا لِأَدَا نَسَجَلُوْآ إِلَّ إِبْلِيْسَ مَقَالَ ءَاسْجُلُ لِمَنْ غَلَقْنَ طَيْنًا ع

৬২. সে বললো, তুমি কি সে ব্যক্তিকে দেখেছো যাকে তুমি আমার ওপর মর্যাদা দান করলে! যদি তুমি আমাকে কেয়ামত পর্যন্ত অবকাশ দাও, তাহলে আমি অবশ্যই তার (গোটা) বংশধরদের নিজের আয়ত্তে নিয়ে আসবো, তবে একটি ক্ষুদ্র দল ছাড়া (যারা বেঁচে থাকতে পারবে)।

٦٢ قَالَ أَرَءَيْتَكَ هٰنَ اللَّذِي كُوَّمْتَ عَلَى وَ
 لَئِنْ ٱخْرْتَنِ إِلَى يَوْمِ الْقِيلَةِ لَا هُتَنِكَنَّ وُرِ الْقِيلَةِ لَا هُتَنِكَنَّ وُرَا الْقِيلَةِ لَا هَتَنِكَنَّ وُرَا الْقِيلَةِ لَا قَلِيلًا

৬৩. আল্লাহ তায়ালা বললেন, যাও, (দূর হয়ে যাও এখান থেকে, তাদের মধ্যে) যারা তোমার আনুগত্য করবে, তোমাদের সবার শান্তি হচ্ছে জাহানুাম, আর (জাহানুামের) শান্তিও পুরোপুরি (দেয়া হবে)। ٦٣ قَالَ اذْهَبْ فَهَنْ تَبِعَكَ مِنْهُرْ فَإِنَّ جَهَنَّرَ جَزَاؤُكُرْ جَزَاءً مُوفُورًا

১৭ সূরা বনী ইসরাঈল

२५४

৬৪. এদের মধ্যে যাকেই পারো তুমি তোমার আওয়ায দিয়ে গোমরাহ করে দাও. তোমার যাবতীয় অশ্বারোহী ও পদাতিক বাহিনী নিয়ে তাদের ওপর গিয়ে চড়াও হও. ধনসম্পদ ও সম্ভান সম্ভতিতে তুমি তাদের সাথী হয়ে যাও এবং (যতো পারো) তাদের (মিথ্যা) প্রতিশ্রুতি দিতে থাকো: আর শয়তান তাদের যে প্রতিশ্রুতি দেয় তা প্রতারণা ছাড়া আর কিছই নয় :

৬৫. নিসন্দেহে যারা আমার (খাস) বান্দা তাদের ওপর তোমার কোনো ক্ষমতা চলবে না: (হে নবী.) তোমার মালিক (অবশ্যই তাদের) কর্মবিধায়ক হিসেবে যথেষ্ট।

৬৬. (হে মানুষ,) তোমাদের মালিক তো হচ্ছেন তিনি. যিনি তোমাদের জন্যে সমদে জল্যান পরিচালনা করেন. যাতে করে তোমরা (জলে স্থলে তাঁর প্রদন্ত) রেযেক তালাশ করতে পারো: নিশ্চয়ই তিনি তোমাদের ওপর পরম দ্য়ালু।

৬৭. আর (উত্তাল) সমুদ্রের মধ্যে যখন তোমাদের ওপর কোনো বিপদ মসিবত আপতিত হয় তখন আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে (ইতিপূর্বে) তোমরা যাদের ডাকতে تَنْعُونَ إِلَّا إِيَّاءٌ ءَ فَلَمَّا نَجُّكُرُ إِلَى الْبَرِّ अाता आता आताह (शाव्यात) राह्म शांकात تَنْعُونَ إِلَّا إِيَّاءٌ ءَ فَلَمَّا نَجُّكُرُ إِلَى الْبَرِّ अाता अवाहे (खामातुव मन (बाव) हािबुद्ध याग्न ववर (खाकातु জন্যে) এক আল্লাহই (সেখানে বাকী) থেকে যান; অতপর তিনি যখন তোমাদের স্থলে (এনে বিপদ থেকে) উদ্ধার করেন, তখনই তোমরা তাঁর থেকে মুখ ফিরিয়ে নাও: (আসলে) মানুষ হচ্ছে (নেহায়াত) অকতজ্ঞ ৷

৬৮. তোমরা কি করে নিশ্চিত হয়ে গেছো. তিনি তোমাদের স্থলে এনে (এর কোথাও) তোমাদের গেড়ে দেবেন না, অথবা তোমাদের ওপর (মরণমুখী) কোনো ধূলিঝড় নাযিল করবেন না, (এমন অবস্থা যখন আসবে) তখন তোমরা কোনো অভিভাবকও পাবে না.

৬৯. অথবা তোমরা এ ব্যাপারেও কি নিশ্চিত হয়ে গেছো যে, তিনি পুনরায় তোমাদের সেখানে নিয়ে যাবেন না এবং (স্থলে এসে যে আচরণ তোমরা তাঁর সাথে করছো.) তোমাদের (সেই) অকতজ্ঞতার শাস্তিম্বরূপ তিনি অতপর তোমাদের ওপর প্রচন্ত ঝড় পাঠাবেন না এবং তোমাদের (উত্তাল) সমুদ্রে ডুবিয়ে দেবেন না! (আর এমন অবস্থা দেখা দিলে) তোমাদের জন্যে (সেদিন) আমার মোকাবেলায় কোনো সাহায্যকারী পাবে না।

৭০. আমি অবশ্যই আদম সন্তানদের মর্যাদা দান করেছি. স্থলে ও সমুদ্রে আমি ওদের চলাচলের বাহন দিয়েছি এবং তাদের পবিত্র (জিনিসসমূহ দিয়ে) আমি রেযেক দান করেছি, অতপর আমি অন্য যতো কিছু সৃষ্টি করেছি তার অধিকাংশের ওপরই আমি তাদের শ্রেষ্ঠত দান করেছি।

৭১. যেদিন আমি প্রত্যেক জাতিকে তাদের নেতাদের সাথে ডাকবো, সেদিন যাদের আমূলনামা তাদের ডান হাতে দেয়া হবে, তারা (খুশী হয়ে তা) পড়তে শুরু করবে, তাদের ওপর সেদিন বিন্দুমাত্রও যুলুম করা হবে না ৷

٦٣ وَاشْتَفْزِزْ مَن اسْتَطَعْتَ مِنْهُرْ بِصَوْتِكَ وَ أَجْلِبُ عَلَيْهِرْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكُهُرْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِنْ هُرْ م وَمَا يَعِنُ مُرُ الشَّيْطِيُّ الَّا غُرُورًا

٦٥ إنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِرْ سُلْطَى مَ وَكَفِي بِرَبِّكَ وَكِيْلًا

٢٦ رَبُّكُرُ الَّذِي يُزْجِي لَكُرُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ، إِنَّهُ كَانَ بِكُرْ

٦٤ وَإِذَا مَسَّكُمُ الفُّوُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ أَعْرَضْتُم وكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا

٢٨ أَفَامَنْتُرْ أَنْ يَّخْسفَ بِكُرْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُهْسِلَ عَلَيْكُمْ مَاصِبًا ثُرَّ لَا تَجِلُوْ الكُمْ

٢٩ أَا أَمِنْتُر أَن يُعِيْل كُر فِيْدِ تَارَةً أَخْرى فَيُوْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِهَا كَفَوْتُرُ لا تُرَّ لَا تَجِلُوْا لَكُرْ عَلَيْنَا بِهِ

٠٠ وَلَقَنْ كَرَّمْنَا بَنِيٓ أَدَاً وَحَمَلَنْهُرْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبْسِ وَنَضَّلُناهُمْ عَلَى كَثِيْرِ مِّيَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ع

١٤ يَوْمُ نَنْعُوْا كُلُّ أُنَاسَ بِإِمَامِهِرْ } فَهَنْ ٱوْتَىَ كَتْبَهُ بِيَهِيْنِهِ فَٱولْئِكَ يَقْرَءُوْنَ كَتْبَهُرُ وَ لَا يُظْلَبُونَ فَتيلًا

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|--|---|
| ৭২. যে ব্যক্তি (জেনে বুঝে) এখানে (সত্য থেকে) অন্ধ হয়ে থেকেছে, পরকালেও সে (আল্লাহর নেয়ামত থেকে) অন্ধ থেকে যাবে এবং (হেদায়াত থেকেও) সে হবে পথহারা! | حَمَن كَانَ فِي هٰوَ قَمْ الْهِ آعْلَى فَهُو فِي الْأخِرة آعْلَى وَاضَلُ سَبِيلًا |
| ৭৩. (হে নবী,) আমি তোমার প্রতি যে ওহী পাঠিয়েছি, তার (প্রচার ও প্রতিষ্ঠা) থেকে তোমার পদশ্বলন ঘটাবার ব্যাপারে এরা কোনো প্রকার চেষ্টা থেকেই বিরত থাকেনি, যাতে করে তুমি (ওহীর বদলে) আমার সম্পর্কে কিছু মিথ্যা কথা বানাতে শুরু করো, (যদি তেমন কিছু করতে) তাহলে এরা তোমাকে (গাদের ঘনিষ্ঠ) বন্ধু বানিয়ে নিতো। | ٢٦ وَإِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَيِ الَّذِيَ الَّذِي َ الَّذِي الَّذِي الَّذِي الَّذِي الَّذِي الْأَذِي الْمُثَانِينَ غَيْرَةً يُلُو إِذًا لَا اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللل |
| ৭৪. যদি আমি তোমাকে অবিচল না রাখতাম তাহলে তুমি অবশ্যই তাদের দিকে সামান্য কিছুটা (হলেও) ঝুঁকে পড়তে। | $^{\circ}$ وَلَوْ $^{\circ}$ أَنْ ثَبَّثَنٰكَ لَقَنْ كِنْ يَّ تَرْكَى $^{\circ}$ إِلَيْهِرْ شَيْئًا قَلِيْلًا $^{\circ}$ $^{\circ}$ |
| ৭৫. (আর এমনটি যদি হতো) তাহলে (এ) জীবনে ও মৃত্যু পরবর্তীকালে আমি তোমাকে দ্বিগুণ (শান্তি) আস্বাদন করাতাম, অতপর তুমি আমার বিরুদ্ধে তখন কোনোই সাহায্যকারী পেতে না। | 40 إِذًا لَّاذَقَنْكَ ضِعْفَ الْحَيْوةِ وَضِعْفَ الْمَيْوةِ وَضِعْفَ الْمَهَاتِ مُورَّا |
| ৭৬. (হে নবী,) এরা এ ব্যাপারেও কোনো চেষ্টার ক্রটি করেনি যে, তোমাকে এ ভূখন্ড থেকে উৎখাত করে (এর বাইরে কোথাও ফেলে) দেবে, যদি তেমনটি হতো তাহলে তোমার পরে তারা নিজেরাও (সেখানে) সামান্য কিছুক্ষণই মাত্র টিকে থাকতে পারতো! | ٢ - وَإِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَإِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا |
| ৭৭. তোমার আগে আমি যতো নবী রসূল পাঠিয়েছিলাম তাদের ব্যাপারে এই ছিলো আমার নিয়ম, আর তুমি আমার সে নিয়মের কখনো রদবদল (দেখতে) পাবে না। | 44 سُنَّةَ مَنْ قَلْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِلُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ع |
| ৭৮. (হে নবী,) সূর্য ঢলে যাওয়ার পর থেকে রাতের অন্ধকার পর্যন্ত (সময়ের ভেতর) নামায প্রতিষ্ঠা করবে এবং ফজরের সময় কোরআন তেলাওয়াত (জারি রাখবে); অবশ্য ফজরের কোরআন তেলাওয়াত (সহজেই) পরিলক্ষিত হয়। | 4 أقر الصَّلُوةَ لِل لُوكِ الشَّهْسِ إلى غَسَقِ النَّيْلِ وَقُرْانَ الْفَجْرِ النَّ قُرْانَ الْفَجْرِ لَانَ مَشْهُودًا الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا |
| ৭৯. রাতের কিছু অংশে তাহাজ্জুদ (নামায) প্রতিষ্ঠা করো, এটা তোমার জন্যে (ফরয নামাযের) অতিরিক্ত (একটা নামায), আশা করা যায় তোমার মালিক এর (বরকত) দ্বারা তোমাকে প্রশংসিত মর্যাদায় প্রতিষ্ঠিত করবেন। | 49 وَمِنَ النَّيْلِ فَتَهَجَّنْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ تَٰ عَمَى الْفَلْمَةُ لَكَ تَٰ عَمَى الْفَلْمَةُ الْكَ الْفَلْمَةُ الْكَ الْفَلْمَةُ الْمَا الْمُحْمُودًا عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبِّكَ مَقَامًا مُحْمُودًا |
| ৮০. তুমি বলো, হে আমার মালিক (যেখানেই আমাকে নিয়ে যাও না কেন), তুমি আমাকে সত্যের সাথে নিয়ে যেও এবং (যেখান থেকেই আমাকে বের করো না কেন) সত্যের সাথেই বের করো এবং তোমার কাছ থেকে আমার জন্যে একটি সাহায্যকারী (রাষ্ট্র) শক্তি প্রদান করো। | ٥٠ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِی مُنْخَلَ صِنْقِ وَّا خُوِجُنِی مُخْرَجَ صِنْقٍ وَّاجْعَل لِّی مِنْ لَّن ثلق سُلْطناً نَّصِيْرًا |
| ৮১. তুমি বলো সত্য এসে গেছে এবং মিধ্যা (চিরতরে) বিলুপ্ত হয়ে গেছে; অবশ্যই মিথ্যাকে বিলুপ্ত হতে হবে। | أمَّ مَاء الْحَقَّ وَزَمَق الْبَاطِلُ الْ إِنَّ الْبَاطِلُ الله الله الله الله الله الله الله ال |
| ১৭ সূরা বনী ইসরাঈল ২৮৭ | मनियल 8 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|--|--|
| ৮২. আমি কোরআনে যা কিছু নাযিল করি তা হচ্ছে ঈমানদারদের জন্যে (তাদের রোগের) উপশমকারী ও রহমত, কিন্তু এ সত্ত্বেও তা যালেমদের জন্যে ক্ষতি ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করে না। | ٨٢ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاءً وَّرَحْمَةً لِلْمُوْمِنِيْنَ لا وَلَا يَزِيْنُ الظَّلِمِيْنَ الْلَّ خَسَارًا |
| ৮৩. যখন আমি মানুষদের ওপর কোনোরকম অনুগ্রহ করি তখন (তারা কৃতজ্ঞতার বদলে আমার দিক থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং (নিজেকে) দূরে সরিয়ে নিয়ে যায়, আবার যখন (কোনোরকম) কষ্ট মসিবত তাকে স্পর্শ করে তখন সে (একেবারে) নিরাশ হয়ে পড়ে। | مُ وَإِذَا الْعَهْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِ } وَإِذَا مَسَّدُ الشَّرُّ كَانَ يَـنُوسًا |
| ৮৪. (হে নবী, এদের) তুমি বলো, প্রত্যেক ব্যক্তিই নিজ প্রকৃতির ওপর কাজ করে যাচ্ছে; অতপর তোমাদের মালিক ভালো করেই জানেন কে সঠিক পথের ওপর রয়েছে। | ٨٣ قُلْ كُلُّ يَّعْهَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهِ ١ فَرَبَّكُمْ () أَعْلَى مَاكِلَتِهِ ١ فَرَبَّكُمْ |
| ৮৫. (হে নবী,) এরা তোমার কাছে জানতে চায় 'রহ' কি (জিনিস), তুমি (এদের) বলো, রহ হচ্ছে আমার মালিকের আদেশ সম্পর্কিত একটি বিষয়, (আসলে সৃষ্টি রহস্য সম্পর্কে) তোমাদের যা কিছু জ্ঞান দেয়া হয়েছে তা নিতান্ত কম। | ٨٥ وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرَّوْحِ ﴿ قُلِ الرَّوْحُ ﴿ وَلَا الرَّوْحُ مِنْ الْعِلْمِ الَّا الْوَحُ اللَّهِ اللَّا الْعِلْمِ اللَّا الْعِلْمَ اللَّا الْعِلْمِ اللَّا اللَّهُ الللللْمُولَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللللْمُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُولُ |
| ৮৬. (তারপরও) আমি তোমার প্রতি যে (কতোটুকু) ওহী পাঠিয়েছি, যদি আমি চাইতাম তা অবশ্যই তোমার ওপর থেকে প্রত্যাহার করে নিতে পারতাম, আর (তেম কিছু হল) তুমি আমার মোকাবেলায় কোনেই সাহায্যকারী পেতে না, | إليك نر لا نجن لك إله علينا وريادة |
| ৮৭. কিন্তু (এটা হচ্ছে) তোমার মালিকের একান্ত দয়া; এতে কোনোই সন্দেহ নেই, তোমার ওপর তার অনুগ্রহ অনেক বড়ো। | ٨٤ إلَّا رَحْهَةً مِّنْ رَبِّكَ ، إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا |
| ৮৮. তুমি (তাদের এও) বলো, যদি সব মানুষ ও জ্বিন (এ কাজের জন্যে) একত্রিত হয় যে, তারা এ কোরআনের অনুরূপ (কোনো কিছু) বানিয়ে আনবে, তাতেও তারা এর মতো কিছু (তৈরী করে) আনতে পারবে না, যদিও এ ব্যাপারে তারা একে অপরের সাহায্যকারী হয় (তবুও নয়)। | عَلَى أَنْ يَّاْتُواْ بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُرْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا |
| ৮৯. আমি এ কোরআনের মধ্যে মানুষদের (বুঝানোর) জন্যে সব ধরণের উপমা দ্বারা (হেদায়াতের বাণী) বিশদভাবে বর্ণনা করেছি, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই তা অমান্য না করে ক্ষান্ত হলো না। | ٨٩ وَلَقَنْ مَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْانِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ رَفَاَبَى اَكْثَرُ النَّاسِ إلَّا كُفُورًا |
| ৯০. এরা বলে, কখনোই আমরা তোমার ওপর ঈমান আনবো না, যতোক্ষণ না তুমি আমাদের জন্যে এ যমীন থেকে এক প্রস্রবণ (ধারা) প্রবাহিত না করবে, | ٩٠ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْبُوْعًا لا |
| ৯১. কিংবা তোমার জন্যে খেজুরের অথবা আংগুরের একটি বাগান (তৈরী) হবে এবং তাতে তুমি অসংখ্য নদীনালা বইয়ে দেবে, | ٩١ أَوْ تَكُوْنَ لَكَ مَنَّةً مِّنْ تَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتَفَجِّرَ الْإَنْهُرَ خِلْلَهَا تَفْجِيْرًا لا |
| ৯২. অথবা যেমন করে তুমি (কেয়ামত সম্পর্কে) মনে করো- সে অনুযায়ী আসমানকে টুকরো টুকরো করে আমাদের ওপর ফেলে দেবে অথবা স্বয়ং আল্লাহ তায়ালা ও (তাঁর) ফেরেশতাকে আমাদের সামনে এনে দাঁড় করিয়ে দেবে, | ٩٢ أَوْ تُسْقِطَ السَّهَاءَ كَهَا زَعَهْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِى بِاللَّهِ وَالْمَلَئِكَةِ قَبِيْلًا لا |
| ১৭ সূরা বনী ইসরাঈল | মন্যিল ৪ |

৯৩ কিংবা থাকবে তোমার কোনো স্বর্ণ নির্মিত ঘর অথবা তুমি আরোহণ করবে আসমানে: কিন্তু আমরা তোমার (আকাশে) চডার ঘটনাও বিশ্বাস করবো না, যতোক্ষণ না তুমি (সেখান থেকে) আমাদের জন্যে একটি কিতাব নিয়ে متى تُنزَّل عَلَيْنَا كَتَبًا نَقْرُوهُ * قُل سُبِحَان ﴿ وَهُ * عَلَى اللَّهِ ﴿ (١٩٥٥ ١٩١٥) عَلَيْنَا كُتِبًا نَقَرُوهُ * قُل سُبِحَان ﴿ وَهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا كُتِبًا عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّ (এদের শুধু এটুকু) বলো, মহান পবিত্র (আমার) আল্লাহ তায়ালা, আমি তো কেবল (তাঁর পক্ষ থেকে) একজন মানুষ, (একজন) রসুল বৈ কিছুই নই।

٩٣ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفِ اَوْ تَوْقَى في السَّبَاء م وَلَنْ نَّوْمِنَ لِهُ قَيَّكَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًّا رَّسُولًا ع

৯৪. যখনই মানুষদের কাছে (আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে) হেদায়াত এসেছে তখন তাদের ঈমান আনা থেকে এ ছাড়া অন্য কোনো জ্বিনিসই বিরত রাখেনি যে, তারা বলতো, আল্লাহ তায়ালা (আমাদের মতো) একজন মানুষকেই কি নবী করে পাঠালেন!

٩٣ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُّؤْمِنُوْ ۗ إِذْ جَاءَهُمُ الْهُرِّي اللهُ اللهُ بَشَالُوْ آ اَبَعَتَ اللهُ بَشَا

৯৫. (হে নবী.) তুমি (তাদের) বলো. (যদি এ) যমীনে ফেরেশতারাই (বসবাস করতো এবং তারা এখানে) নিশ্বিভাবে ঘুরে বেড়াতো, তাহলে অবশ্যই আমি তাদের জন্যে আসমান থেকে কোনো ফেরেশতাকেই নবী করে পাঠাতাম ।

٩٥ قُلْ لَّوْ كَانَ في الْإَرْضِ مَلَّئِكَةً يَّهُهُوْنَ مُطْهَنْتِينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِرْ مِّنَ السَّهَاءِ مَلَكًا

৯৬. তুমি বলো, আমার এবং তোমাদের মাঝে আল্লাহ তায়ালাই (আমি মনে করি) সাক্ষী হিসেবে যথেষ্ট. অবশ্যই তিনি তাঁর বান্দাদের সম্পর্কে জানেন, তিনি (তাদের সব আচরণও) দেখেন।

٩٢ قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيْنً إِ' بَيْنِيْ وَبَيْنَكُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِةِ خَبِيْرًا ' بَصِيْرًا

৯৭. যাকে আল্লাহ তায়ালা হেদায়াত দান করেন সে-ই (মূলত) হেদায়াতপ্রাপ্ত হয়, আর যাকে তিনি গোমরাহ করেন তাদের (হেদায়াতদানের) জ্বন্যে (হে নবী.) তুমি আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর অন্য কাউকেই সাহায্যকারী পাবে না: এমন সব গোমরাহ লোকদের আমি কেয়ামতের দিন মুখের ওপর ভর দিয়ে চলা অবস্থায় একত্রিত করবো, এরা তখন হবে অন্ধ, বোবা ও বধির; এদের সবার ঠিকানা হবে জাহান্লাম; যতোবার তা স্তিমিত হয়ে আসবে ততোবার আমি তাকে তাদের জন্যে (প্রজ্ঞলিত করে) আরো বাড়িয়ে দেবো।

٩٤ وَمَنْ يَتَّهُٰ ِ اللَّهُ فَهُوَ الْهُهْتَانِ عَ وَمَنْ يَّضْلِلْ فَلَنْ تَجِنَ لَهُمْ ۚ أَوْلَيَّاءَ مِنْ دُوْنِهِ وَنَحْشُوُهُمْ يَوْمَ الْقِيْهَةِ عَلَى وُجُوْمِهِمْ عُهْيًا وَّبُكُمًّا وَّصُّنَّا ء مَا وَهُرْ جَهَنَّرُ ء كُلَّهَا خَبَ

৯৮. এ হচ্ছে তাদের (যথার্থ) শান্তি, কেননা তারা আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করতো, তারা আরো বলতো, (মৃত্যুর পর) যখন আমরা অস্থিতে পরিণত হয়ে যাবো ও চুর্ণ বিচুর্ণ হয়ে যাবো, তখনও কি আমরা নতুন সৃষ্টিরূপে উখিত হবোঃ

٩٨ ذٰلِكَ جَزَاوُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِأَيْتِنَا وَقَالُوا ءَإِذَا كُنًّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَانًّا لَهَبْعُوْثُونَ غَلْقًا جَٰںِ مُلَا

৯৯. এ (মুর্খ) লোকেরা কি ভেবে দেখেনি, আল্লাহ তায়ালা- যিনি আসমানসমূহ ও যমীন পয়দা করেছেন, السَّهُوْسِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَّخْلُقَ किन ब विষয়ের ওপরও क्रमेजा রাখেন যে, তাদের মতো মানুষদের তিনি সৃষ্টি করতে পারেন (ছিডীয় বার) তাদের পয়দা করার জন্যে একটি ক্ষণ তিনি নির্ধারণ করে রেখেছেন-যাতে কোন রকম সন্দেহের অবকাশ নেই: তথাপি এ যালেম লোকেরা (সদিকে) অস্বীকার করেই যাচ্ছে।

٩٩ أَوَ لَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي عَلَقَ مثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فيه ١ فَابَى الظُّلُهُونَ الَّا كُفُورًا

১০০. (হে নবী,) বলো, আমার মালিকের দয়ার ভান্ডার 🌋 🥌 गि । وَكُلُ لُّو اَنْتُرْ تَهْلِكُونَ خَزَالِي رَحْهَةِ رَبِّي अमि তোমাদের করায়ত্তে থাকতো, তবে তা ব্যয় হয়ে

১০১. আমি মুসাকে নয়টি স্পষ্ট নিদর্শন দিয়েছিলাম. অতএব (হে নবী), তুমি স্বয়ং বনী ইসরাঈলদের কাছেই (কথাটা) জিজ্ঞেস করো, যখন সে তাদের কাছে (নবী হয়ে) এসেছিলো, তখন ফেরাউন তাকে বলেছিলো, হে মুসা, আমি মনে করি তুমি একজন যাদুগস্ত ব্যক্তি।

১০২. (এর জবাবে) সে (মৃসা) বলেছিলো, তুমি একথা ভালো করেই জানো, (নবুওতের প্রমাণ সম্বলিত এসব) অন্তর্দৃষ্টিসম্পন্ন জ্ঞান আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক ছাড়া আর কেউই নাযিল করেননি, হে ফেরাউন, আমি তো মনে করি তুমি সত্যিই একজন ধ্বংসপ্রাপ্ত মানুষ।

১০৩. অতপর সে (ফেরাউন) তাদের (এ) যমীন থেকে উৎখাত করে দিতে চাইলো, কিন্তু আমি তাকে এবং যারা তার সংগী-সাথী ছিলো তাদের সবাইকে (এ না-ফরমানীর জন্যে) সমুদ্রে ডুবিয়ে দিয়েছি।

১০৪. অতপর আমি বনী ইসরাঈলদের বললাম, (এবার) তোমরা এ যমীনে (নির্বিবাদে) বসবাস করো, এরপর যখন আখেরাতের প্রতিশ্রুতি (-র সময়) আসবে তখন আমি তোমাদের সবাইকে সংকৃচিত করে (আমার সামনে) নিয়ে আসবো।

১০৫. এ (কোরআন)-কে আমি সত্য (বাণী) সহকারে নাযিল করেছি, তাই তা সত্য নিয়েই নাযিল হয়েছে; আমি তো তোমাকে কেবল (জানাতের) সুসংবাদদাতা ও (জাহান্লামের) সতর্ককারীরূপেই প্রেরণ করেছি।

১০৬. আমি কোরআনকে (ভাগে ভাগে) বিভক্ত করে দিয়েছি, যাতে করে তুমিও ক্রমে ক্রমে তা মানুষদের সামনে পড়তে পারো, আর (এ কারণেই) আমি তা পর পর নাযিল করেছি।

১০৭. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা এ (কোরআন)-কে মানো কিংবা না মানো (তাতে এর মর্যাদা মোটেই ক্ষুণ্ন হবে না), যাদের এর আগে (আসমানী কেতাবের) জ্ঞান দেয়া হয়েছে (তাদের অবস্থা হচ্ছে), যখনি তাদের সামনে এটি পড়া হয় তারা নিজেদের মুখের ওপর সাজদায় লুটিয়ে পড়ে।

১০৮. তখন তারা বলে, আমাদের মালিক পবিত্র, অবশ্যই আমাদের মালিকের ওয়াদা পরিপূর্ণ হবে।

১০৯. আর তারা কাঁদতে কাঁদতে মুখের ওপর ভূমিতে লুটিয়ে পড়ে, (মূলত) এ (কোরআন) তাদের বিনয়ই বৃদ্ধি করে ।

১১০. তুমি (আরো) বলো, তোমরা (আল্লাহ তায়ালাকে) আল্লাহ (বলে) ডাকো কিংবা রহমান; তোমরা যে নামেই

১৭ সরা বনী ইসরাঈল

١٠١ وَلَقَلُ أَتَيْنَا مُوْسَى تِسْعَ أَيْسٍ بَيِّنْتٍ فَسْئَلُ بَنِي ﴿ إِسْرَآءِيلَ إِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَاَظُنَّكَ يَهُوْسَى مَسْحُوْرًا

١٠٢ قَالَ لَقَنْ عَلَمْتَ مَا أَنْزَلَ هُؤُكُاء الله رَبِّ السَّوْتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ ۽ وَإِنِّي الأَظَنَكَ يِفِرْعُونَ مَثْبُورًا

١٠٣ فَأَرَادَ أَنْ يُسْتَغِزُّهُمْ مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغُرُقُنَهُ وَمَنْ مَّعَهُ جَهِيْعًا لا

١٠٣ وَّقُلْنَا مِنْ المَعْدِةِ لِبَنِي إِسْرَاءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَاذَا جَاءَ وَعْلُ الْأَخِرَةِ جِئْنَا بِكُرْ لَفَيْفًا ء

١٠٥ وَبِالْحَقِّ ٱنْزَلْنَهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ، وَمَا ٱرْسَلْنَكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَانِيْرًا م

١٠٦ وَقُوْ أَنَّا فَرَقْنُهُ لِتَقْرَاَةً عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْمِ وَّنَزَّلْنَهُ تَنْزِيْلًا

١٠٠ قُلُ أُمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ﴿ إِنَّ الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمِ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتُلِّم عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّلًا لا

١٠٨ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحِينَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْلُ رَبُّنَا لَهَفُعُولًا

وَيَخِرُّونَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيْلُهُم

١١٠ قُل ادْعُوا اللَّهَ أو ادْعُوا الرَّحْمٰٰنَ ﴿ أَيَّامًا

২৯০

পারা ১৫ সোবহানাললাযী

তাঁকে ডাকো, তাঁর সবকটি নামই উত্তম, (হে নবী), চীৎকার করে নামায পড়ো না, আবার তা অতিশয় بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتُ بِهَا وَابْتَغ بَيْنَ ذٰلِكَ केंगिलात्वर्थ नग्न, तत्तर (नामाय পड़ात नमग्न) এ मृ'रात মধ্যবর্তী পদ্তা অবলম্বন করো।

تَنْعُوْا فَلَهُ الْإَشْهَاءُ الْحُسْنِي ج وَلَا تَجْهَرُ

১১১. তুমি আরো বলো, সকল প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে, যিনি কখনো কোনো সন্তান গ্রহণ করেননি, তাঁর সার্বভৌমত্বে কখনোই কারো কোনো অংশীদারিত্ব ছিলো না. না তিনি কখনো দুর্দশাগ্রস্ত হন যে, তাঁর কোনো অভিভাবকের প্রয়োজন হয় (তিনি সব কিছুর উর্দ্ধে), ডুমি (তথ্) তাঁরই মাহাত্ম্য ঘোষণা করো- পরমতম মাহাত্ম।

١١١ وَقُلِ الْحَهْلُ لِلَّهِ الَّذِي لَيْ يَتَّخِنْ وَلَنَّا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهُ شَوِيْكً فِي الْهُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ النَّالِّ وَكَبَّرُهُ تَكْبِيرًا عِ

সুরা আল কাহাফ

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ১১০, রুকু ১২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الكَهْف مَكَّيَّةً أَيَاتً : ١١٠ رُكُوعٌ : ١٢ بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ

১. সব তা'রীফ আল্লাহ তায়ালার জন্যে, যিনি তাঁর (একজন বিশেষ) বান্দার প্রতি (এ) গ্রন্থ নাযিল করেছেন এবং তার কোথাও তিনি কোনোরকম বক্রতা রাখেননি:

২. (একে তিনি) প্রতিষ্ঠিত করেছেন (সহজ্ব সরল একটি পথের ওপর), যাতে করে আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে সে (নবী তাদের জাহান্রামের আযাবের ব্যাপারে) সতর্ক করে দিতে পারে এবং যারা ঈমানদার, যারা নেক কাজ করে, তাদের সে (এ মর্মে) সুসংবাদ দিতে পারে (যে), তাদের জন্যে আল্লাহর দরবারে উত্তম পুরস্কার রয়েছে

ا ٱلْحَمْلُ لِلَّهِ الَّذِيُّ ٱنْزَلَ عَلَى عَبْنِهِ الْكِتْبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهُ عَوَجًا حَدَا

٢ قَيِّهًا لِّيُنْهَرَ بَاْسًا شَرِيْهًا مِّن لَّهُنْهُ وَيُبَهِّرَ الْهُوْمنيْنَ الَّذِينَ يَعْمَلُوْنَ الصَّلَّحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ٧

৩. যেখানে তারা চিরকাল থাকবে.

٣ مَّاكِثِينَ فِيدِ أَبَلُّ الا

 এবং সেসব লোকদেরও ভয় দেখাবে যারা (য়র্থের মতো) বলে, আল্লাহ তায়ালা সন্তান গ্রহণ করেছেন।

٣ وَّيُنْهِرَ الَّهٰيْنَ قَالُوا اتَّخَنَ اللَّهُ وَلَيَّا ق

৫. (অথচ এ দাবীর পক্ষে) তাদের কাছে কোনো জ্ঞান (-সমত দলীল প্রমাণ) নেই, তাদের বাপ দাদাদের কাছেও (এ ব্যাপারে কোনো যুক্তি) ছিলো না: এ সত্যিই বড়ো একটি কঠিন কথা, যা তাদের মুখ থেকে বের হচ্ছে: (আসলে) তারা (জঘন্য) মিথ্যা ছাড়া কিছুই বলে না।

٥ مَا لَهُرْ بِهِ مِنْ عِلْرِ وَّلَا لِأَبَائِهِرْ ٠ كَبُرَسْ كُلِهَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ﴿ أِنْ يَّقُوْلُوْنَ إلَّا كَنْبًا

৬. (হে নবী.) যদি এরা এ কথার ওপর ঈমান না আনে তাহলে মনে হয় দুঃখে-কষ্টে তুমি এদের পেছনে নিজেকেই বিনাশ করে দেবে।

لا فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ تَّفْسَكَ عَلَى أَثَارِهِمِ إِنْ لَّرْ يُؤْمِنُوا بِهٰنَ الْحَدِيْتِ اَسَفًا

৭. যা কিছু এ যমীনের বুকে আছে আমি তাকে তার জন্যে শোভা বর্ধনকারী (করে) পয়দা করেছি, যাতে করে তাদের আমি পরীক্ষা করতে পারি যে, তাদের মধ্যে (কাজকর্মের দিক থেকে) কে বেশী উন্তম।

﴾ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لنَبْلُومُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنَ عَهَلًا

৮. (আজ) যা কিছু এর ওপর আছে, (একদিন ধ্বংস করে দিয়ে একে) আমি উদ্ভিদশূন্য মাটিতে পরিণত করে দেবো।

^ وَإِنَّا لَجُعلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعَيْلًا جُرِّزًا ع

১৮ সুরা আল কাহাফ



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|---|--|
| ৯. (হে নবী,) তুমি কি মনে করো যে, গুহা ও পাহাড়ের (উপত্যকার) অধিবাসীরা আমার নিদর্শনসমূহের মধ্যে | 9 أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْرِ لا |
| একটি বিশ্বয়কর নিদর্শন ছিলো? | كَانُوْا مِنْ أَيْتِنَا عَجَبًا |
| ১০. (ঘটনাটি এমন হয়েছিলো,) কতিপয় যুবক যখন গুহায় আশ্রয় নিলো, অতপর তারা (আল্লাহর দরবারে এই | ١٠ إِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّّنَا |

হতে. (বচনাটে এমন হরোছলো,) কাভদর বুবক ববন শুহার আশ্রর নিলো, অভপর তারা (আল্লাহর দরবারে এই বলে) দোয়া করলো, হে আমাদের মালিক, একান্ত ভোমার কাছ থেকে আমাদের ওপর তুমি অনুগ্রহ দান করো, আমাদের কাজকর্ম (আঞ্জাম দেয়ার জন্যে) তুমি আমাদের সঠিক পথ দেখাও।

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبِّنَا الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبِّنَا الْكِهْفِ فَقَالُوْا رَبِّنَا الْتِنَا مِنْ لَّالُونَا رَحْمَةً وَهْمَيِّيْ لَنَا مِنْ اَمْدِنَا رَشَلًا

১১. অতপর আমি গুহার ভেতরে তাদের কানে বহু বছর ধরে (ঘুমের) পর্দা লাগিয়ে রাখলাম।

اا فَضَرَبْنَا عَلَى اٰذَانِهِرْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَنَدًا ٧

১২. তারপর (এক পর্যায়ে) আমি তাদের (ঘুম থেকে) উঠিয়ে দিলাম, যাতে করে আমি একথা জেনে নিতে পারি (তাদের) দু'দলের মধ্যে কোন্ দলটি ঠিক করে বলতে পারে যে, তারা কতোদিন সেখানে অবস্থান করেছিলো।

الله أله المعرفة المعرفة المعرفة المعرفة المعرفة الما المعرفة الما المعرفة الما المعرفة المعرفة

১৩. (হে নবী,) আমিই তোমার কাছে তাদের বৃত্তান্ত সঠিকভাবে বর্ণনা করছি; (মূলত) তারা ছিলো কতিপয় নওজোয়ান ব্যক্তি, যারা তাদের মালিকের ওপর ঈমান এনেছিলো, আমি তাদের হেদায়াতের পথে এণিয়েও দিয়েছিলাম। الْحَنْ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاهُمْ بِالْحَقِّ الْمَوْ بِالْحَقِّ الْمَرْ فِتْيَةً الْمَوْ الْبِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُلَى ناملے

১৪. আমি তাদের অন্তকরণকে (বৈর্য দ্বারা) দৃঢ়তা দান করেছি, যখন তারা (আল্লাহর পথে) দাঁড়িয়ে গেলো এবং ঘোষণা করলো, আমাদের মালিক তো হচ্ছেন তিনি, যিনি আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক, আমরা কখনো আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কাউকে ডাকবো না, যদি (আমরা) এমন (অযৌক্তিক) কথা বলি তাহলে (তা হবে মারাত্মক) দ্বীন বিরোধী কাজ।

ا وَّرَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِر إِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبَّنَا رَبَّ السَّاوٰتِ وَالْإَرْضِ لَن تَّنْعُواْ مِن دُونَةِ اللَّهَ الْقَلْ قُلْنَا الْأَا شَطَطًا

১৫. এরা হচ্ছে আমাদের স্বজাতির (লোক, যারা) তাঁকে বাদ দিয়ে অসংখ্য মাবুদ (-এর গোলামী) গ্রহণ করেছে; (তারা যদি সত্যবাদীই হয় তাহলে) তারা স্পষ্ট দলীল নিয়ে আসে না কেন? তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে, যে আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করে!

10 مَّوْكَاءَ قَوْمُنَا اتَّحَٰنُوْا مِنْ دُوْنِهِ ۖ الْهَةَ * لَوْكَا يَاْتُوْنَ عَلَيْمِرْ بِسُلْطَيٰ بَيِّنٍ * فَمَنْ أَظْلَرُ مِثِّنِ افْتَرِٰى عَلَى اللّهِ كَنِّبًا *

১৬. (অতপর জোরানরা পরশারকে বদলো,) আল্পাহ তারালা ছাড়া অন্যদের যারা মাবুদ বানায় তাদের কাছ থেকে তোমরা যখন বিচ্ছিন্ন হয়ে চলেই গেলে, তখন তোমরা (এখান থেকে বের হয়ে বিশেষ) একটি গুহায় গিয়ে আশ্রয় নাও, (সেখানে) তোমাদের মালিক তোমাদের ওপর তাঁর রহমতের (ছায়া) বিস্তার করে দেবেন এবং তোমাদের বিষয়গুলো তোমাদের জন্যে সহক্ষ করে দেবেন।

١٦ وَإِذِ اعْتَزَلْتُهُوْهُرْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللهَ فَاوَّ إِلَّا اللهَ فَاوَّ إِلَى اللهَ فَاوَّ إِلَى الْكَهْرَ رَبَّكُر رَبَّكُر مِّن أَوْلَكُمْ رَبَّكُم مِّن أَوْرِكُمْ مِّرْفَقًا

১৭. (হে নবী,) তুমি যদি (সে গুহা দেখতে, তাহলে)
দেখতে পেতে, তারা তার (মধ্যবর্তী) এক প্রশন্ত চত্ত্বে
অবস্থান করছে, সূর্য (তার) উদয়কালে তাদের গুহার
দক্ষিণ পাশ দিয়ে হেলে যাক্ষে, (আবার) যখন তা অন্ত
যায় তখন তা গুহার বাম পাশ দিয়ে অতিক্রম করে
(স্থের প্রখরতা কখনো তাদের কটের কারণ হয় না);
আসলে এ সবই হক্ষে আল্লাহ তায়ালার (কুদরতের)

নিদর্শন, (এ সব নিদর্শনের মাধ্যমে) আল্লাহ তায়ালা যাকে হেদায়াত দান করেন সে-ই একমাত্র হেদায়াতপ্রাপ্ত হয়, আর (যাকে) তিনি গোমরাহ করেন সে কখনো কোনো পথ প্রদর্শনকারী ও অভিভাবক পেতে পারে না।

وَمَنْ يَّضْلِلْ فَلَنْ تَجِلَ لَهُ وَلِيًّا مُّوْسًا ع

১৮. (হে নবী, তুমি যদি দেখতে তাহলে) তুমি তাদের ভাবতে, তারা বুঝি জেগেই রয়েছে, অথচ তারা কিন্তু ঘুমন্ত, আমি তাদের (কখনো) ডানে (কখনো) বামে পরিবর্তন করে দিতাম, তাদের কুকুরটি (গুহার) সামনে তার হাত দুটি প্রসারিত করে (পাহারারত অবস্থায় বসে) ছিলো. তুমি যদি তাদের দিকে (সত্যি) উঁকি মেরে দেখতে. তাহলে তমি অবশ্যই তাদের কাছ থেকে পেছনে ফিরে পালিয়ে যেতে এবং তাদের (এ আজব দৃশ্য) দেখে তুমি নিসন্দেহে ভয়ে (তাদের থেকে) আতংকিত হয়ে যেতে।

١٨ وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُودٌ فَوْ لَكِ وَّتُقَالِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَهِيْنِ وَذَاتَ الشِّهَالِ لَهُ وَكَلْبُهُرْ بَاسِطٌّ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْلِ ﴿ لَوِاطَّلَعْتَ عَلَيْهِمِ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَهُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا

১৯. এ ভাবেই তাদের আমি (ঘুম থেকে) উঠিয়ে দিলাম, যাতে করে তারা (তাদের অবস্থান সম্পর্কে) নিজেরা পরস্পরে জিজ্ঞাসাবাদ করে: (কথা প্রসংগে) তাদের মধ্য থেকে এক ব্যক্তি বললো (বলো তো), তোমরা এ গুহায় কতোকাল অবস্থান করেছো: তারা বললো, (বড়ো জ্ঞার) একদিন কিংবা একদিনের কিছু অংশ আমরা (এখানে) অবস্থান করেছি: অতপর (যখন তারা একমত হতে পারলো না তখন) তারা বললো, তোমাদের মালিকই এ কথা জানেন, তোমরা (এ গুহায়) কতো কাল অবস্থান করেছো; এখন (সে বিতর্ক রেখে বরং) তোমরা তোমাদের একজনকে তোমাদের এ মুদ্রাসহ শহরে পাঠাও, সে (বাজারে) গিয়ে দেখুক কোন খাবার উত্তম, অতপর সেখান থেকে কিছু খাবার তোমাদের কাছে নিয়ে আসুক, সে যেন বিচক্ষণতার সাথে কাঞ্চ করে এবং সে যেন কোনো অবস্থায় কাউকে তোমাদের ব্যাপারে কিছ জানতে না দেয়।

١٩ وكَنْ لِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوْ إِبَيْنَهُمْ ، قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُرْ كَرْ لَبِثْتُرْ ﴿ قَالُوْ الْبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْ) ﴿ قَالُواْ رَبُّكُرْ اَعْلَرُ بِهَا لَبِثْتُرْ ﴿ فَابْعَثُواْ اَحَىٰكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰنِ ۗ إِلَى الْمَٰوِيْنَةِ فَلْيَنْظُو ۚ أَيُّهَا ۗ أَزْكُى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُم ۚ بِرِزْقِ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلا يُشْعِرَنَّ بِكُرْ اَحَلًا

২০. তারা হচ্ছে (এমন) সব লোক যদি তাদের কাছে তোমাদের (কথাটি) তারা প্রকাশ করে দেয়, তাহলে তারা তোমাদের প্রস্তরাঘাত (করে হড়া) করবে কিংবা তোমাদের (জোর করে) তারা তাদের দ্বীনে ফিরিয়ে নেবে. (খার একবার) তেমনটি হলে কখনোই তোমরা মুক্তি পাবে না।

٢٠ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُهُوكُمْ أَوْ يُعِيْلُوكُمْ فِي مِلْتِهِمْ وَلَنْ تُفْلَدُوا إِذًا أَبِلًا

২১. আর এভাবেই আমি (একদিন) তাদের ব্যাপার (শহরবাসীদের) জানিয়ে দিলাম, যাতে করে তারা (এ কথা) জানতে পারে, (মৃতকে জীবন দেয়ার ব্যাপারে) আল্লাহ ় টু কিন্দু ক্রিট্র পুরিক তিন্দু কথা তাল কথা আল্লাহ হার ক্রিট্র কথা তাল কথা আল্লাহ হার ক্রিট্র কথা তাল কথা তাল কথা আল্লাহ হার কথা তাল কথা তায়ালার ওয়াদা (খাসলেই) সত্য এবং কেয়ামতের (খাসার) ব্যাপারেও কোনো রকম সন্দেহ নেই, যখন তারা নিজেদের মধ্যে এ নিয়ে বিতর্ক করে যাচ্ছিলো. (তখন) কিছু লোক বললো, (তাদের সমানে) তাদের ওপর একটি (স্বতি-) সৌধ নির্মাণ করে দাও: (আসলে) তোমাদের মালিকই তাদের সম্পর্কে সর্বাধিক খবর রাখেন: (অপর দিকে) যেসব মানুষ তাদের কাজের ওপর বেশী প্রভাবশালী ছিলো তারা বললো (মৃতিসৌধ বানানোর বদলে চলো)-আমরা তাদের ওপর একটি মাসজিদ বানিয়ে দেই।

٢١ وَكَنْ لِكَ ٱعْتُوْنَا عَلَيْهِرْ لِيَعْلَمُوْا أَنَّ وَعْنَ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُرْ أَمْرَهُرْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا مَ رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِرْ مَ قَالَ الَّٰذِيْنَ غَلَبُوْا عَلَّى ٱمْرِهِرْ لَنَتَّخِٰنَنَّ عَلَيْهِم

২২. কিছু লোক বলে, (গুহার অধিবাসীরা ছিলো) তিন জন, ওদের মধ্যে চতুর্থটি (ছিলো) ওদের (পাহারাদার) কুকুর, (আবার) কিছু লোক বলে, (তারা ছিলো) পাঁচ জন. তাদের ষষ্ঠটি (ছিলো) ওদের কুকুর, (আসলে) অজানা অদেখা বিষয়সমূহের প্রতি এরা (খামাখা) অনুমান

٢٢ سَيَقُوْلُونَ ثَلْثَةً رَّابِعُهُرْ كَلْبُهُرْ } وَيَقُوْلُونَ خَبْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْهًا اللَّغَيْبِ ع وَيَقُولُونَ سَبْعَةً وَّتَا مِنْهُمْ كَلْبُهُمْ مَ قُلْ رَّبِّي

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৫ সোবহানালুলাযী

নিক্ষেপ করেই (এ সব কিছু) বলছে, তাদের কেউ বলে (ওরা ছিলো) সাত জন এবং অষ্টমটি ছিলো তাদের কুকুর; (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো (হাঁ), আমার মালিক ভালো করেই জানেন ওদের (আসল) সংখ্যা কতো ছিলো, তাদের সংখ্যা খুব কমসংখ্যক লোকই বলতে পারে। তুমিও এদের ব্যাপারে সাধারণ আলোচনার বাইরে বেশী বিতর্ক করো না এবং তাদের সম্পর্কে (খামাখা অন্য) মান্যদের কাছেও জিজ্ঞাসাবাদ করো না।

اَعْلَمُ بِعِنَّ تِمِيرُمَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيْلٌ فَ فَلَا تُمَارِ فِيْوِمْ إِلَّا مَرَاءً ظَاهِرًا م وَّلَا تَسْتَفْسِ فِيْهِرْ مِّنْهُرْ اَحَلًا ع

২৩. (হে নবী,) কখনো কোনো কাজের ব্যাপারে এ কথা فَرُكَ وَلَا تَقُولُنَّ لِشَائَ وَلَا يَقُولُنَّ لِشَائَ وَ إِنِّى فَاعِلُ ذَٰلِكَ ٢٣ বলো না, (এ কাজটি) আমি আগামীকাল করবো,

২৪. (হাঁা,) বরং (এভাবে বলো,) আল্লাহ তায়ালা যদি চান (তাহলেই আমি আগামীকাল এ কাজটা করতে পারবাে), যদি কখনাে (কোনাে কিছু) ভূলে যাও তাহলে তােমার মালিককে শ্বরণ করাে এবং বলাে, সম্ভবত আমার মালিক এর (কাহিনীর) চাইতে নিকটতর কােনাে কল্যাণ দিয়ে আমাকে পথ দেখাবেন।

٢٢ إِلاَّ أَنْ يَّشَاءَ اللهُ زواذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيْتَ وَاذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْرِيَنِ رَبِّى لِإِقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَلًا

২৫. তারা তাদের (এ) গুহায় কাটিয়েছে মোট তিনশ বছর, তারা (এর সাথে) যোগ করেছে আরো নয় (কর)। ٢٥ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِر ثَلْثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوا تِشْعًا

২৬. (হে নবী,) তুমি বলো, (বস্তুত) একমাত্র আল্লাহ তায়ালাই সঠিক করে বলতে পারেন, ওরা (গুহায়) কতো বছর কাটিয়েছে, আসমানসমূহ ও যমীনের (যাবতীয়) গায়ব বিষয়ের জ্ঞান তো একমাত্র তাঁর (জন্যেই নির্দিষ্ট রয়েছে); কতো সুন্দর দ্রষ্টা তিনি, কতো সুন্দর শ্রোতা তিনি! তিনি ছাড়া তাদের দ্বিতীয় কোনোই অভিভাবক নেই, আল্লাহ তায়ালা নিজের কর্তৃত্ব ও ক্ষমতায় অন্য কাউকে কখনো শরীক করেন না।

٢٦ قُلِ اللَّهُ آعَلَمُ بِهَا لَبِثُواْ عَلَهُ غَيْبُ السَّوْا عَلَهُ غَيْبُ السَّوْاتِ وَالْإَرْضِ ءَ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْسِعْ ءَمَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَلِي وَ وَلَا يُشْرِكُ فِي مُكْمِةٍ أَحَدًا

২৭. (হে নবী,) তোমার ওপর তোমার মালিকের যে কেতাব নাযিল করা হয়েছে তা তুমি তেলাওয়াত করতে থাকো; তাঁর (কেতাবে বর্ণিত) কথাবার্তা রদবদল করার কেউই নেই, তিনি ছাড়া তুমি আর কোনোই আশ্রয়স্থল পাবে না। ٢٠ وَاثْلُ مَا ٱوْهِى إلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ عَ
 لَا مُبَرِّلَ لِكَلِمٰتِهِ ۚ وَلَنْ تَجِنَ مِنْ دُونِهِ
 مُلْتَحَدُّا

২৮. (হে নবী,) তুমি নিজেকে সদা সে সব মানুষদের সাথে রেখে চলবে, যারা সকাল সন্ধ্যায় তাদের মালিককে ডাকে, তারা একমাত্র তাঁরই সম্ভুষ্টি কামনা করে এবং কখনো তাদের কাছ থেকে তোমার (ম্নেহের) দৃষ্টি ফিরিয়ে নিয়ো না, (তোমার অবস্থা দেখে এমন যেন মনে না হয় যে,) তুমি এই পার্থিব জগতের সৌন্দর্য্যই কামনা করো, কখনো এমন কোনো ব্যক্তির কথামতো চলো না, যার অন্তকরণকে আমি আমার শ্বরণ থেকে গাফেল করে দিয়েছি, আর যে ব্যক্তি নিজের প্রবৃত্তির গোলামী করতে শুরু করেছে এবং যার কার্যকলাপ (আল্লাহ তায়ালার) সীমানা লংঘন করেছে।

٢٨ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ النَّذِيْنَ يَنْعُونَ رَبَّهُرْ بِالْفَنُ وَ وَالْعَشِيِّ يُرِيْنُونَ وَجْهَةً وَلَا تَعْنُ عَيْنَكَ عَنْهُرْ ء تُرِيْنُ زِيْنَةَ الْحَيْوةِ النَّانَيَا عَ وَلَا تُطْعُ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَةً عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ مَوْنِهُ رَكَانَ آمُرُةً فُرُطًا

২৯. (হে নবী,) তুমি বলো, এ সত্য (দ্বীন) তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে এসেছে। সুতরাং যার ইচ্ছা সে (এর

٢٩ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ نَهَ فَهَنْ شَاءَ

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|---|---|--|
| | ওপর) ঈমান আনুক আর যার ইচ্ছা সে (তা) অস্বীকার করুক, আমি তো এ (অস্বীকারকারী) যালেমদের জন্যে | فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَاءَ فَلْيَكْفُو لِا إِنَّا آعْتَلْنَا |
| | এমন এক আগুন প্রস্তুত করে রেখেছি, যার বেষ্টনী তাদের পুরোপুরিই পরিবেষ্টন করে রাখবে; যখন তারা (পানির | لِلظُّلِيِيْنَ نَارًا لا أَحَاماً بِهِرْ سُرَادِقُهَا ﴿ وَإِنْ |
| | জন্যে) ফরিয়াদ করতে থাকবে তখন এমন এক গলিত | يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي |
| | ধাতুর মতো পানীয় তাদের দেয়া হবে, যা তাদের সমগ্র মুখমন্ডল জ্বালিয়ে পুড়িয়ে দেবে, কী ভীষণ (হবে সে) পানীয়; আর কী নিকৃষ্ট হবে তাদের আশ্রয়ের স্থানটি! | الْوُجُوهَ ، بِنْسَ الشَّرَابُ ، وَسَاَّعَتْ مُرْتَفَقًا |
| | ৩০. আর যারাই আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে (তাদের কোনো আশংকা নেই), | ٣٠ إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا الصَّلِحُسِ إِنَّا |
| | আমি কখনো তাদের বিনিময় বিনষ্ট করি না যারা নেক কাজ করে, | لَا نُضِيْعٌ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۚ |
| | ৩১. এদের জন্যে রয়েছে এমন এক স্থায়ী জান্নাত, যার পাদদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, তাদের সেখানে | ٢١ أُولَئِكَ لَهُرْ جَنَّتُ عَنْنِ تَجْرِي مِنْ |
| | সোনার কাঁকন ঘারা অলংকৃত করা হবে, তারা পরিধান | تَحْتِهِدُ الْأَنْهُرُ يُحَلُّونَ فِيْهَا مِنْ أَسَّاوِرَ مِنْ |
| | করবে সৃক্ষ ও পুরু রেশমের পোশাক, (উপরস্তু) তারা সমাসীন হবে (এক) সুসজ্জিত আসনে, কতো সুন্দর | ذَهَب ويلْبَسُونَ ثِيَابًا هُضْرًا مِّنْ سُنُكُس |
| 1 | (তাদের এ) বিনিময়; কতো চমৎকার (তাদের) আশ্রয়ের | وَّ إِشْتَبْرَق مُّتَكْنِيْنَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ مَ لَهُ الْأَرَآئِكِ مَ لَهُ الْقُوَابُ وَهَسُنَتُ مُوْتَفَقًا ع |
| | (এ) স্থানটি! | |
| | ৩২. (হে নবী,) তাদের জন্যে তুমি দু'জন লোকের উদাহরণ পেশ করো, যাদের একজনকে আমি দুটো আংগুরের বাগান দান করেছিলাম এবং তাকে দুটো | ٣٢ وَاشْرِبْ لَهُرْ شَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِا حَلَيْنِ جَعَلْنَا لِا حَلِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنُهُمَا لِاَعْرَامِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنُهُمَا |
| | (কতিপয়) খেজুর গাছ দারা পরিবেষ্টিত করে রেখেছিলাম, আবার এ দু'য়ের মধ্যবর্তী স্থানকে (পরিণত) করেছিলাম একটি সুফলা শস্যক্ষেত্রে। | بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿ |
| | ৩৩. উভয় বাগানই (এক পর্যায়ে) যথেষ্ট ফল দান করলো, (ফলদানে) বাগান দুটো কোনোরকম ব্রুটি করেনি, উভয় বাগানে আমি পানির ঝর্ণাধারাও প্রবাহিত | ٢٣ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ أَتَتْ ٱكُلَهَا وَلَرْ تَظْلِرْ |
| | করে রেখেছিলাম। | مِّنْهُ شَيْئًا لا وَّفَجَّرْنَا خِلْلَهُمَا نَهَرًا لا |
| | ৩৪. (এক পর্যায়ে) তার অনেক ফল হয়ে গেলো, অতপর (একদিন) সে তার সাধীকে কথা প্রসংগে বললো, দেখো, | ٣٢ وَّكَانَ لَهُ ثَهُرٌ ۽ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُو |
| | আমি ধর্ন-সম্পদের দিক থেকে ভোমার চাইতে (যেমন) বড়ো, (তেমনি) জনবলেও আমি তোমার চাইতে বেশী শক্তিশালী। | يُحَاوِرُهُۚ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاعَزُّ نَفَرًا |
| | ৩৫. নিজের (শক্তি সামর্থের) ব্যাপারে বাড়াবাড়ি করতে করতে সে নিজের বাগানে গিয়ে প্রবেশ করলো এবং | ٣٥ وَدَغَلَ جَنَّتَدٌ وَهُوَ ظَالِرٌ لِّنَفْسِهِ ۚ قَالَ مَا |
| | বললো, আমি ভাবতেই পাচ্ছি না, এ বাগান (-এর সৌন্দর্য কোনো দিন) নিশেষ হয়ে যাবে! | اَظُنُّ اَنْ تَبِيْلَ هٰٰٰٰنِۥۗ اَبَلًا |
| | ৩৬. আমি (এও) মনে করি না, একদিন (এসব ধ্বংস হয়ে) কেয়ামত প্রতিষ্ঠিত হবে এবং (কেয়ামতের পর) | ٣٦ وَّمَا ۚ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَانِهَةً لا وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ |
| | আমাকে যদি আমার মালিকের সামনে ফিরিয়ে নেয়াও হয়, তাহলে এর চাইতে উৎকৃষ্ট কোনো কিছু আমি | إِلَى رَبِّي كَامِرَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا |
| | (সেখানে) পাবো। | |
| | ৩৭. (তার) সে (গরীব) সাথীটি- যে তার সাথে কথা বলছিলো, বললো, (এ পার্থিব সম্পদ দেখে) তুমি কি | ٣٠ قَالَ لَهُ صَاهِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ ۗ أَكَفَرْتَ |
| ı | | |

মন্যিল ৪

১৮ সূরা আল কাহাফ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|--|---|
| সত্যিই সে মহান সত্তাকে অস্বীকার করছো, যিনি তোমাকে (প্রথমত) মাটি থেকে অতপর শুক্রকণা থেকে পয়দা করেছেন, পরিশেষে তিনি তোমাকে (একটি) মানুষের আকৃতিতে পূর্ণাংগ করেছেন; | بِالنَّذِي مُلَقَافَ مِنْ تُرَابٍ ثُرَّ مِنْ تُطُفَةٍ ثُرَّ مِنْ تُطُفَةٍ ثُرَّ مِنْ تُطُفَةٍ ثُرَّ |
| ৩৮. কিন্তু (আমি তো বিশ্বাস করি,) সেই সৃষ্টিকর্তা আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন আমার মালিক এবং আমার মালিকের (কোনো কাজের) সাথে আমি কাউকে শরীক করি না। | ٣٨ لٰكِنَّا مُوَ اللَّهُ رَبِّى ٛ وَلَا ۗ ٱشْرِكُ بِرَبِّى ٓ اَحَدًّا |
| ৩৯. কতো ভালো হতো তুমি যখন তোমার (ফলবতী) বাগানে প্রবেশ করলে, তখন যদি তুমি (একপাটি) বলতে, আল্লাহ তায়ালা যা চেয়েছেন তাই হয়েছে, আল্লাহ তায়ালা ব্যতিরেকে কারোই (কিছুই ঘটানোর) শক্তি নেই, যদিও তুমি আমাকে ধনে জনে তোমার চাইতে কম দেখলে (কিন্তু আমি আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান রাখি)। | ٣٩ وَلَوْكَ ۚ إِذْ دَخَلْسَ جَنَّتَكَ قُلْسَ مَا شَاءً اللهُ لا كُلُوكَ ۚ إِذْ دَخَلْسَ جَنَّتَكَ قُلْسَ مَا شَاءً اللهُ لا كَا قُولًا إِللهِ عِلْقَ تَرَنِ إِنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَا لا وَوَلَدًا ع |
| 80. সম্ভবত আমার মালিক আমাকে তোমার (এ পার্থিব) বাগানের চাইতে আখেরাতে উৎকৃষ্ট (কোনো বাগান) দান করবেন এবং (অকৃতজ্ঞতার জন্যে) তার ওপর আসমান থেকে এমন কোনো বিপর্যয় নাযিল করবেন, ফলে তা (উদ্ভিদ–) শূন্য (এক বিরান) ভূমিতে পরিণত হয়ে যাবে। | ٣٠ فَعَسَى رَبِّى أَن يُّوْتِينِ خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّهَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْلًا زَلَقًا ٧ |
| ৪১. কিংবা তার পানি তার (যমীনের) নীচেই অন্তর্হিত হয়ে যাবে, (তেমন কিছু হলে) তুমি কখনো তা (আবার) খুঁজে আনতে পারবে না। | ٢١ أَوْ يُصْبِحَ مَا زُمُا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهُ طَلَبًا |
| 8২. (অতপর তাই ঘটলো,) তার (বাগানের) ফলফলাদিকে বিপর্যয় এসে ঘিরে ফেললো, তখন সে ব্যক্তি সেই ব্যয়ের ওপর – যা সে বাগানের (শোভাবর্ধনের পেছনে) করেছিলো, হাতের ওপর হাত রেখে আক্ষেপ করতে লাগলো (বাগানের অবয়্বা এমন হলো যে), তা মুখ থুবড়ে পড়ে থাকলো এবং সে (নিজের ভুল বুঝতে পেরে) বলতে লাগলো, কতো ভালো হতো যদি আমি আমার মালিকের (ক্ষমতার সাথে) অন্য কাউকে শরীক না করতাম! | ٣٢ وَأُحِيْهَا بِثَهَرِهِ فَاصْبَعَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَى مَ اللهِ عَلَى عَرُوشِهَا مَ الْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةً عَلَى عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلْكَتُنِي لَرُ أُشْرِكَ بِرَبِّي آَ اَحَدًا |
| ৪৩. (যারা বাহাদুরী করেছে তাদের) কোনো দলই (আজ) তাকে আল্লাহর (এ প্রতিশোধের) মোকাবেলায় সাহায্য করার জন্যে (অবশিষ্ট) রইলো না− না সে নিজে কোনো রকম প্রতিশোধ নিতে পারলো! | ٣٣ وَلَيْ تَكُنَ لَّهُ فِئَةً يَّنْصُرُوْنَهُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا اللهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا |
| 88. (কেননা) এখানে রক্ষা করার যাবতীয় এখতিয়ার একমাত্র আল্লাহ তায়ালার, যিনি একমাত্র সত্য, পুরস্কারদানে ও পরিণাম নির্ধারণে তিনিই উত্তম। | ٣٣ مُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ مَّ مُوَ غَيْرٌ ثَوَابًا وَّغَيْرٌ عُقْبًا ع |
| ৪৫. (হে নবী,) তুমি এদের কাছে দুনিয়ার জীবনের উদাহরণ পেশ করো (এ জীবনটা হচ্ছে) পানির মতো আমি তাকে আকাশ থেকে বর্ষণ করি, যার কারণে যমীনের ওদ্ভিদ ঘন (সুশোভিত) হয়ে ওঠে, অতপর এক সময় বাতাস তা উড়িয়ে নিয়ে ফিরে; (মৃলত) আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর ওপর প্রচন্ত ক্ষমতাবান। | ٣٥ وَاضْرِبْ لَمُرْ مَّثَلَ الْحَيْوةِ النَّنْيَا كَمَاءً الْكَثْيَا كَمَاءً الْمُزْلُنْهُ مِنَ السَّمَاءِ فَا هُتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَمْبَعَ هَشِيمًا تَنْرُوهُ الرِّيعُ ، وكَانَ الله عَلَى كُلِّ شَيْءً مَّتَدِرًا |
| ৪৬. (আসলে) ধন সম্পদ ও সন্তান সন্ততি হচ্ছে (তোমাদের) পার্থিব জীবনের কতিপয় (অস্থায়ী) সৌন্দর্য মাত্র, চিরস্থায়ী বিষয় হচ্ছে (মানুষের) নেক কাজ, (আর তা হচ্ছে) তোমার মালিকের কাছে পুরন্ধার পাওয়ার জন্যে অনেক ভালো, আর কোনো (কল্যাণময়) কিছু কামনা করতে গেলেও তা হচ্ছে উত্তম। | ٣٦ أَلْهَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيْوةِ النَّنْيَا عَ وَالْبَنُونَ نِيْنَةُ الْحَيْوةِ النَّنْيَا عَ وَالْبَا وَالْبَالِحُتُ غَيْرٌ عِنْنَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّغَيْرٌ أَمَلًا |
| ১৮ সূরা আল কাহাফ | মন্যিল ৪ |

৪৭. যেদিন আমি পাহাড়সমূহকে চলমান করে (সরিয়ে) দেবো এবং তুমি পৃথিবীকে দেখবে, (তা) একটি শূন্য প্রান্তর, (সেদিন) আমি তাদের (মানবকুল)-কে এক জায়গায় জড়ো করবো, তাদের কোনো একজনকেও আমি বাদ দেবো না।

﴿ وَيَوْا مُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ
 بَارِزَةً لا وَّحَشَرُنْهُ وَلَكُمْ نَغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا عَ

৪৮. তাদের (সবাই)-কে তোমার মালিকের সামনে সারিবদ্ধভাবে এনে হাযির করা হবে; (অতপর আমি বলবো, আজ তো) তোমরা সবাই আমার কাছে এসে গেছো– (ঠিক) যেমনি করে আমি তোমাদের প্রথম বার পয়দা করেছিলাম, কিন্তু তোমরা (অনেকেই) মনে করতে, আমি তোমাদের (দ্বিতীয় বার আমার কাছে হাযির করার) জন্যে কোনো সময় (-সূচী) নির্ধারণ করে রাখিনি!

٣٨ وَعُرِضُوا على رَبِّكَ مَقًا ، لَقَنْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقَنْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقَنْكُرْ أَوَّلَ مَرَّةٍ رَ بَلْ زَعَمْتُر ٱلَّنْ تَجْعَلَ لَكُرْ مَّوْعِلًا

৪৯. (অতপর তাদের সামনে) আমলনামা রাখা হবে,
(তখন) নাফরমান ব্যক্তিদের তুমি দেখবে, সে
আমলনামার যা কিছু লিপিবদ্ধ আছে তার কারণে তারা
(খুবই) আতংকগ্রস্ত থাকবে, তারা বলতে থাকবে, হার
দুর্ভাগ্য আমাদের, এ (আবার) কেমন গ্রন্থ! এ তো (দেশ্বি
আমাদের দ্বীবনের) ছোটো কিংবা বড়ো প্রত্যেক বিষরেরই
হিসাব রেখেছে, তারা যা কিছু করেছে তার প্রতিটি বস্তুই
তারা (সে গ্রন্থে) মন্তুদ দেখবে, তোমার মালিক (সেদিন)
কারো ওপর বিন্দুমাত্র যুলুমও করবেন না।

৫০. (ন্বরণ করো), যখন আমি ফেরেশতাদের বলেছিলাম, তোমরা সবাই আদমকে সাজদা করো, তখন তারা সবাই সাজদা করলা, কিন্তু ইবলীস ছাড়া, (সে সাজদা করলো না); সে ছিলো (আসলে) জিনুনদেরই একজন, সে তার মালিকের আদেশের নাফরমানী করলো; (বে এতো বড়ো নাফরমানী করলো) তোমরা কি তাকে এবং তার বংশধরদের আমার বদলে তোমাদের অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করবে, অথচ (প্রথম দিন থেকেই) সে তোমাদের (প্রকাশ্য) দুশমন; (চেয়ে দেখো,) যালেমদের কি নিকৃষ্ট বিনিময় (দেয়া হয়েছে)।

٥٠ وَإِذْ تُلْنَا لِلْمُلَّنِكَةِ اسْجُكُوْ الْإِدَا الْحِكَ فَسَجَكُوْ آ الْآ اِبْلِيْسَ مَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْ رَبِّهِ مَ اَفَتَتَّخِذُوْنَةً وَذُرِّيَّتَةً اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَكُوُّ مَ بِنْسَ لِلظَّلِمِيْنَ بَنَلًا

৫১. আকাশমন্তলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করার সময় আমি তাদের কাউকে ডাকিনি, এমনকি স্বয়ং তাদের নিজেদের বানানোর সময়ও (তো আমি তাদের ডাকিনি, আসলে আমি তো অক্ষম ছিলাম না বে, তাদের পরামর্শ আমার দরকার), অন্যদের যারা গোমরাহ করে আমি তাদের বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করি না।

৫২. যেদিন তিনি (এদের) বলবেন, তোমরা তাদের ডাকো যাদের তোমরা (আমার শরীক) মনে করতে, অতপর ওরা তাদের ডাকবে (কিন্তু) তারা তাদের এ ডাকে কোনোই সাড়া দেবে না, আমি এদের উভয়ের মাঝখানে এক (মরণ) ফাঁদ রেখে দেবো।

4r وَيَوْ) يَقُولُ نَادُوْا شُرَكَاءِى الَّانِينَ زَعَهْتُرْ فَلَعَوْمُرْ فَلَرْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُرْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُرْ سَّوْبِقًا

৫৩. (এ) নাফরমান লোকেরা যখন (জাহান্নামের) আগুন দেখতে পাবে তখন তারা বুঝে যাবে, তারা (এক্ষুণি) সেখানে গিয়ে পতিত হচ্ছে, (আর একবার সেখানে পভিত হলে) ওরা তা থেকে কখনোই মুক্তির পথ পাবে না।

٥٣ وَرَاَ الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنَّوْاً اَنَّهُرُ مُّوَاتِعُوْمَا وَلَمْ يَجِلُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ع

৫৪. আমি মানুষের (বোঝার) জন্যে এই কোরআনে সব ধরনের উপমা (ও উদাহরণ) বিশদভাবে বর্ণনা করেছি, কিন্তু মানুষরা অধিকাংশ বিষয় নিয়েই তর্ক করে। ٥٣ وَلَقَنْ مَرَّفْنَا فِي هٰنَا الْقُرْأَنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ﴿ وَكَانَ الْإِنْسَانُ ٱكْثَرَ هَيْءٍ جَنَّلًا

৫৫. হেদায়াত যখন মানুষের সামনে এসে গেলো তখন ঈমান আনা ও (গুনাহের জন্যে) তাদের মালিকের কাছে

٥٥ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْآ اِذْ جَاءَهُرُ

১৮ সুরা আল কাহাফ

२৯१

ক্ষমা চাওয়া থেকে তাদের কোন জিনিস বিরত রাখছে. তারা (সম্ভবত) পূর্ববর্তী মানুষদের অবস্থা তাদের কাছে এসে পৌছানোর কিংবা (আমার) আযাব তাদের সামনে এসে হাযির হবার অপেক্ষা করছে।

الْهُنَّى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ الْآ أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأُوَّلِيْنَ أَوْ يَأْتِيَهُرُ الْعَنَابُ قُبُلًا

৫৬. আমি তো রসুলদের পাঠাই যে. তারা (মানুষদের জন্যে জানাতের) সুসংবাদবাহী ও (জাহানামের) সতর্ককারী (হবে), কিন্তু যারা কুফরী করেছে তারা (ছোটোখাটো বিষয় নিয়ে) ঝগড়া শুরু করে, যাতে তারা সত্যকে ব্যর্থ করে দিতে পারে. (মূলত) তারা আমার আয়াতসমূহকে এবং যেসব বিষয় দিয়ে তাদের (জাহান্নাম থেকে) সতর্ক করা হয়েছিলো তাকে বিদ্রূপের বিষয়ে পরিণত করে নিয়েছে।

٥٦ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ إِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْنِرِيْنَ ء وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدُمِضُواْ بِهِ الْحَقِّ وَاتَّخَذُواْ ايتي وَمَا ٱنْذِرُوْا هُزُوًا

৫৭. তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে আছে যাকে তার মালিকের আয়াতসমূহ শ্বরণ করিয়ে দেয়া হচ্ছে এবং সে এর থেকে মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছে, (সর্বোপরি) যা কিছু (গুনাহের বোঝা) তার হাত দুটো অর্জন করেছে সে (তা) ভূলে যায়: আমি তাদের অন্তরের ওপর (জাহেলিয়াতের) আবরণ লাগিয়ে দিয়েছি, যেন ভারা (সত্য দ্বীন) বুঝতে না পারে, (এমনিভাবে) তাদের কানেও (এক ধরনের) কঠিন বস্তু ঢেলে দিয়েছি (এ কারণে ভারা সভ্য কথা ভনতে পায় না. অতএব হে নবী); তুমি ওদের যতোই হেদায়াতের পথে ডাকো না কেন, তারা কখনো হেদায়াত পাবে না।

٥٤ وَمَنْ أَظْلَمُ مِنَّ ذُكِّرَ بِالْيِنِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَلَّمَتْ يَلَٰهُ ﴿ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوهُ وَفِي أَذَانِهِم وَقُرًّا ﴿ وَإِنْ تَلْاَعُهُمْ إِلَى الْهُلِّي فَلَنَّ يَّهْتَكُوْا إِذًا أَبَلًا

৫৮. (হে নবী.) তোমার মালিক বড়োই ক্ষমাশীল ও দয়াবান: তিনি যদি তাদের স্বাইকে তাদের কৃতকর্মের জন্যে শান্তি দিতে চাইতেন, তাহলে তিনি (সহজেই) শান্তি ত্বরানিত করতে পারতেন; বরং (এর পরিবর্তে) তাদের জন্যে (শান্তির) একটি প্রতিশ্রুত ক্ষণ (নির্ধারিত) আছে, যা থেকে ওদের কারোই পরিত্রাণ নেই!

٥٨ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْبَةِ مَ لَوْ يُؤَاخِنُهُمْ بِهَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُرُ الْعَنَابَ ، بَلْ لَّهُرْ مُوْعِلُ لَيْ يَحِلُوْ البِي دُوْنِهِ مَوْئِلًا

৫৯. এ জনপদ (ও তাদের অধিবাসীরা) যখন (আল্লাহ তায়ালার) সীমা লংঘন করেছিলো তখন আমি তাদের নির্মূল করে দিয়েছি, তাদের ধ্বংসের জন্যেও আমি একটি দিন ক্ষণ নির্দিষ্ট করে রেখেছি।

٥٩ وَتِلْكَ الْقُرِى اَهْلَكْنَاهُرْ لَيًّا ظَلَهُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكُهِرْ مُوْعِنًا ع

৬০. (হে নবী, তুমি এদের মৃসার ঘটনা শোনাও,) যখন মৃসা তার খাদেমকে বললো, যতোক্ষণ পর্যন্ত আমি দুটো সাগরের মিলনস্থলে না পৌছবো, ততোক্ষণ পর্যন্ত আমি (আমার পরিকল্পনা থেকে) ফিরে আসবো না, কিংবা প্রেয়োজনে এ জন্যে) দীর্ঘ সময় পর্যন্ত আমি চলা অব্যাহত রাখবো!

٢٠ وَإِذْ قَالَ مُوْسَى لِفَتْهُ لَا آبْرَحُ مَتَّى ٱبْلُغَ مَجْهَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ مُقُبًّا

৬১. যখন তারা উভয়ে (সেই প্রত্যাশিত) দুটো সাগরের সংগমস্থলে এসে পৌছলো তখন তারা উভয়েই তাদের (খাবাবের জন্যে রাখা) মাছটির কথা ভূলে গেলো. অতপর সে মাছটি (ছুটে গিয়ে) সুড়ংয়ের মতো (একটি) পথ করে (সহজেই) সাগরে চলে গেলো।

 ألاً بَلَغًا مُحِمَعً بَيْنهما نَسيا حُوْتَهُما فَاتَّخُلَ سَبِيْلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا

৬২. যখন তারা আরো কিছু দূর এগিয়ে গেলো তখন সে তার খাদেমকে বললো, (এবার) আমাদের নাশতা নিয়ে এসো, আমরা আজকের এ সফরে সত্যিই ভারী ক্রান্ত হয়ে পড়েছি।

٦٢ فَلَمًّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتْهُ أَتِنَا غَلَآاءَنَا رَلَقَلْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا مِنَ ا نَصَبًا

৬৩. সে বললো, তুমি কি দেখোনি, আমরা যখন শিলাখন্ডের পাশে বিশ্রাম করছিলাম, সত্যিই আমি মাছের فَانَّى نَسِيْتُ الْحُوْتَ رَوْمَا أَنْسَنِيدُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الْعَالِمِ (अत्रात्) नंत्राह्म المُعَوث وَمَا أَنْسَنِيدُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ

٣٣ قَالَ أَرْءَيْسَ إذْ أَوَيْنَا الَّى الصَّخْرَة

১৮ সূরা আল কাহাফ

২৯৮

भनियंन 8

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৫ সোবহানাল্লাযী |
|--|---|
| ভুলিয়ে দিয়েছে যে, আমি তার কথাটা শ্বরণ রাখবো, আর সে (মাছটি)ও কি আশ্চর্যজনক পদ্ধতিতে নিজের পথ ধরে সাগরের দিকে নেমে গেলো। | الشَّيْطٰىُ أَنْ أَذْكُرَةً ۚ ۚ وَاتَّخَٰنَ سَبِيْلَةً فِي الْبَحْرِ قَلِّ عَجَبًا |
| ৬৪. সে বললো (হাঁ), এই তো হচ্ছে সে (জায়গা,) যার আমরা সন্ধান করছিলাম (মাছটি চলে যাওয়ার জায়গাই হচ্ছে সাগরের সেই মিলনস্থল), অতপর তারা নিজেদের পথের চিহ্ন ধরে ফিরে চললো। | ٦٣ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ تَ ۖ فَارْتَنَّا عَلَى أَثَارِهِمَا تَصَمَّا لا |
| ৬৫. এরপর তারা (সেখানে পৌছলে) আমার বান্দাদের মাঝ থেকে একজন (পুণ্যবান) বান্দাকে (সেখানে) পেলো, যাকে আমি আমার অনুগ্রহ দান করেছি, (উপরস্তু) তাকে আমি আমার কাছ থেকে (বিশেষ) জ্ঞান শিখিয়েছি। | ٦٥ فَوَجَنَا عَبْنًا مِنْ عِبَادِنَا ۚ أَتَيْنُهُ رَحْهَةً مِّنْ عِبَادِنَا ۗ أَتَيْنُهُ رَحْهَةً مِّنْ عِبْدِنَا وَعَلَيْنُهُ وَعَلَّمْنُهُ مِنْ لَّنُنَا عِلْهًا |
| ৬৬. মৃসা তাকে বললো, আমি কি তোমার অনুসরণ করতে পারি, যাতে করে আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে যে জ্ঞান তোমাকে শেখানো হয়েছে তার কিছু অংশ তুমি আমাকে শেখাতে পারো। | ٢٦ قَالَ لَهُ مُوْسَى هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَ مِمَّا عُلِّمْت رُشْلًا |
| ৬৭. সে বললো (হাঁ পারো), তবে আমার সাথে থেকে (তো) তুমি কখনো ধৈর্য ধারণ করতে পারবে না। | ٢٤ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا |
| ৬৮. (অবশ্য এটাও ঠিক), যে বিষয় তুমি (স্কান দিয়ে) আয়ত্ব করতে পারোনি তার ওপর তুমি ধৈর্য ধরবেই বা কি করে? | ۱۱۰ ودیک تقبر علی ما نیز نکی په هبرا |
| ৬৯. সে বললো, আল্লাহ তায়ালা যদি চান তাহলে তুমি আমাকে ধৈর্যশীল (হিসেবেই) পাবে, আমি তোমার কোনো আদেশেরই বরখেলাফ করবো না। | ٢٩ قَالَ سَتَجِرُنِي آن شَآءَ الله صَابِرًا و لا آ أَعْمِي لَكَ آمرًا |
| ৭০. সে বললো, আচ্ছা যদি তুমি আমাকে অনুসরণ করোই তাহলে (মনে রাখবে) কোনো বিষয় নিয়ে) আমাকে কিছু জিজ্ঞেস করবে না, যতোক্ষণ না সে কথা আমি (নিজেই) তোমাকে বলে দেবো! | 4 قَالَ فَانِ النَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْنَلْنِيْ عَنْ شَيْلُنِيْ عَنْ شَيْلُنِيْ عَنْ شَيْلُنِيْ عَنْ شَيْدُ ذِكْرًا ع |
| ৭১. অতপর তারা দু'জন পথ চলতে শুক্ত করলো। (নদীর পাড়ে এসে) উভয়েই একটি নৌকায় আরোহণ করলো, (নৌকায় ওঠেই) সে তাতে ছিদ্র করে দিলো; সে (মৃসা) বললো, তুমি কি এজন্যে তাতে ছিদ্র করে দিলে যেন এর আরোহীদের তুমি ডুবিয়ে দিতে পারো, তুমি সত্যিই এক গুরুতর (অন্যায়) কাজ করেছো। | الْطَلَقَا رَسَ حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا وَ قَالَ اَعْرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ السَّفِينَةِ خَرَقَهَا وَ قَالَ اَعْرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَلْمَا عَلَقَا مِثْنَ شَيْئًا إِمْرًا |
| ৭২. (মৃসার কথা গুনে) সে বললো, আমি কি তোমাকে একথা বলিনি, আমার সাথে থেকে তুমি কখনো ধৈর্য ধারণ করতে পারবে না। | 47 قَالَ ٱلَـرُ ٱقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ مَبْرًا |
| ৭৩. সে বললো, আমি যে ভুল করেছি সে ব্যাপারে তুমি আমাকে পাকড়াও করো না এবং (এ ব্যাপারে) আমার ওপর বেশী কঠোরতাও আরোপ করো না। | 47 قَالَ لَا تُؤَاخِلْنِيْ بِهَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْفِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُشْرًا تُرْفِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُشْرًا |
| ৭৪. আবার তারা পথ চলতে শুরু করলো। (কিছু দূর গিয়ে) তারা উভয়ে একটি (কিশোর) বালক পেলো, (সাথে সাথে) সে তাকে হত্যা করে ফেললো, (এ কাজ্র দেখে) সে বললো, তুমি তো কোনোরকম হত্যার অপরাধ ছাড়াই একটি নিম্পাপ জীবনকে বিনাশ করলে! তুমি (সত্যিই) একটা শুরুতর অন্যায় কাজ্র করে ফেলেছো! | 4° فَانْطَلَقَا رس مَتَّى إِذَا لَقِيا غُلْمًا فَعَتَلَهُ لا قَالَ أَتَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً الِغَيْرِ فَقَتَلَهُ لا قَالَ أَتَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً الِغَيْرِ فَسَى مَنْئًا تُكُرًّا |
| ১৮ সূরা আল কাহাফ | মন্যিল ৪ |

৭৫. সে বললো, আমি কি তোমাকে একথা বলিনি যে, তুমি আমার সাথে (থেকে) কখনো ধৈর্য ধরতে পারবে না।

هَ عَالَ ٱلْرِ ٱقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَىْ تَسْتَطِيعَ

مَعِيَ صَبْرًا

৭৬. সে বললো, যদি এরপর আর একটি কথাও আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করি, তাহলে তুমি আমাকে তোমার সাথে রেখো না, (অবশ্য এখন তো) তুমি আমার পক্ষ থেকে ওযর পেশ করার (প্রান্ত)-সীমায় পৌছে গেছো।

٢٦ قَالَ إِنْ سَالَتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْنَهَا فَلَا
 تُصٰحِبْنِيْ ۽ قَنْ بَلَغْتَ مِنْ لَّرُنِّيْ عُنْرًا

৭৭. আবার তারা চলতে শুরু করলো। (কিছুদূর এগিয়ে)
তারা জনপদের অধিবাসীদের কাছে পৌছলো, (সেখানে
পৌছে) তারা (সেই জনপদের) অধিবাসীদের কাছে কিছু
খাবার চাইলো, কিছু তারা তাদের উভয়ের মেহমানদারী
করতে অপ্বীকার করলো, অতপর সেখানে তারা একটি
পতনোনাখ (পুরনো) প্রাচীর (দেখতে) পেলো, সে
প্রাচীরটা সোজা করে দিলো, সে (মৃসা) বললো, তুমি
চাইলে তো (এদের কাছ থেকে) এর ওপর কিছু
পারিশ্রমিক গ্রহণ করতে পারতে!

٤٤ اَنْطَلَقَا رِنن حَتَّى إِذَا اَتَيَا اَهْلَ قَرْيَةِ اَهْلَ قَرْيَةِ اَشْتَطُعَهَ آهُلَ قَرْيَةِ اَشْتَطْعَهَ آهُلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يَّضَيِّفُوهُهَا فَوَجَلَا فِيهَا جِنَارًا يَّرِيْلُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاقَامَهُ ، قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَنْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا

৭৮. সে বললো (বেশ), এখানেই তোমার আমার মধ্যে বিচ্ছেদ (হয়ে গেলো কিন্তু তার আগে) যেসব কথার ব্যাপারে তুমি আমার সাথে ধৈর্য ধরে থাকতে পারোনি–তার ব্যাখ্যা আমি তোমাকে বলে দিতে চাই।

4 قَالَ هٰذَا فِرَاقٌ بَيْنِي وَبَيْنِكَ عَلَيْهِ مَبْرُا
 سَٱنَبِّنُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَرْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ مَبْرُا

৭৯. প্রথম ঘটনাটি হচ্ছে,) নৌকা সম্পর্কিত, (মূলত) তা ছিলো কয়েকজন গরীব মানুষের (মালিকানাধীন), তারা (এটা দিয়ে) সমুদ্রে (জীবিকা অন্বেষণের) কাজ করতো, কিন্তু আমি (নৌকাটিতে ছিদ্র করে) তাকে ক্রটিযুক্ত করে দিতে চাইলাম, (কারণ) তাদের পেছনেই ছিলো (এমন) এক বাদশাহ, যে (ক্রটিবিহীন) যে নৌকাই পেতো, তা বল প্রয়োগে ছিনিয়ে নিতো।

49 أمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
 في الْبَحْرِ فَارَدْتُ أَنْ اَعْمِيْهَا وَكَانَ
 وَرَاءَهُرْ مَّلِكُ يَّامُنُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا

৮০. (আর হাাঁ, সে) কিশোরটি (-র ঘটনা!) তার পিতামাতা উভয়েই ছিলো মোমেন, আমি আশংকা করলাম, (বড়ো হয়ে) সে এদের দু'জনকেই (আল্লাহর) নাফরমানী ও কুফুর দ্বারা বিভ্রান্ত করে দেবে,

٨٠ وَأَمَّا الْغُلْرُ فَكَانَ أَبُوهُ مُؤْمِنَيْنَ فَخَشِيْنَا أَنْ يُّرْمِقُهُما طُغْيَانًا وَّكُفُرًا ع

৮১. আমি চাইলাম তাদের মালিক তার বদলে তাদের (এমন) একটি সম্ভান দান করবেন, যে দ্বীনদারী ও রক্তের সম্পর্ক রক্ষার ব্যাপারে তার চাইতে অনেক ভালো (প্রমাণিত) হবে।

٨٠ فَاَرَدْنَآ أَنْ يَّبْلِلُهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكُوةً وَّاقَرَبَ رُحْمًا

৮২. (সর্বশেষ ওই যে) প্রাচীরটি (-র ব্যাপার! আসলে) তা ছিলো শহরের দুটি এতীম বালকের, এর নীচেই তাদের জন্যে (রক্ষিত) ছিলো গুপ্ত ধনজান্তার, ওদের পিতা ছিলো একজন নেককার ব্যক্তি, (এ কারণেই) তোমার মালিক চাইলেন ওরা বয়োপ্রাপ্ত হোক এবং তাদের (সে ভাভার থেকে তারা) সম্পদ বের করে আনুক (এ প্রাচীরটাকেই আমি তাদের বড়ো হওয়া পর্যন্ত দাঁড় করিয়ে রাখতে চেয়েছিলাম), এ ছিলো (মূলত) তোমার মালিকের অনুগ্রহ (দ্বারা সম্পাদিত কতিপয় কাজ), এর কোনোটাই (কিন্তু) আমি আমার নিজে থেকে করিনি; আর এ হচ্ছে সেসব কাজের ব্যাখ্যা, যে ব্যাপারে তুমি (আমার সাথে থেকে) ধৈর্য ধারণ করতে পারছিলে না!

مَّ وَأَمَّا الْجِلَارُ فَكَانَ لِغُلْمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فَي الْمَكِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَدُّ كَنْزُ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا سَالِحًا مَ فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَآ أَبُوهُمَا سَالِحًا مَ فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَآ أَلُوهُمَا كُلُ رَهْمَةً مِّنْ أَلُوكُمَا كُلُ رَهْمَةً مِّنْ أَلُوكُمَا كُلُ رَهْمَةً مِنْ أَلُوكُمَا كُلُ رَهْمَةً مِنْ أَرْبِي مَا ذَلِكَ تَأْوِيْلُ وَبِيلًا عَلَيْهِ مَبْرًا عَلَيْ مَثَرًا عَعَلَيْهِ مَبْرًا عَعَلَيْهِ مَبْرًا عَعَلَيْهِ مَبْرًا عَعَلَيْهِ مَبْرًا عَع



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|--|---|
| ৮৩. (হে নবী,) এরা তোমার কাছে যুলকারনায়ন সম্পর্কে জানতে চায়, তুমি (তাদের) বলো, (হাাঁ) আমি (আল্লাহর কেতাবে যা আছে) তা থেকে (সে) বিবরণ তোমাদের কাছে এক্ষুণি (পড়ে) শোনাচ্ছি। | ٨٣ وَيَسْنَلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ، قُلْ سَاتَلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ، |
| ৮৪. (আল্লাহ তায়ালা বলছেন,) আমি যমীনের বুকে তাকে (বিপুল) ক্ষমতা দান করেছিলাম এবং আমি তাকে (এর জন্যে প্রয়োজনীয়) সব উপায় উপকরণও দান করেছিলাম, | شَيْءٍ سَبَبًا |
| ৮৫. (একবার) সে অভিযানে বেরোবার প্রস্তৃতি গ্রহণ করতে লাগলো, | ٨٥ فَٱتْبَعَ سَبَبًا ٥ |
| ৮৬. (চলতে চলতে) এমনিভাবে সে সূর্যের অন্তগমনের জায়গায় গিয়ে পৌছুলো, সেখানে গিয়ে সে সূর্যকে সোগরের) কালো পানিতে ডুবতে দেখলো, তার পাশে সে একটি জাতিকেও (বাস করতে) দেখলো, আমি বললাম, হে যুলকারনায়ন (এরা তোমার অধীনস্থ), তুমি ইচ্ছা করলে (তাদের) শাস্তি দিতে পারো অথবা তাদের সাথে তুমি সদয় ভাবও গ্রহণ করতে পারো। | ٨٦ حَتَّى إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّهْسِ وَجَلَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَيِئَةٍ وَّوَجَلَ عِنْلَهَا تَوْمًا لأ تُلْنَا يِٰلَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَلِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِلَ فِيهِرْ حُشْنًا |
| ৮৭. সে বললো (হাঁা), এদের মাঝে যে (আল্লাহর সাথে) বিদ্রোহ করবে তাকে আমি অবশ্যই শাস্তি দেবো, অতপর তাকে (যখন) তার মালিকের সামনে ফিরিয়ে নেয়া হবে (তখন) তিনি তাকে (আরো) কঠিন শাস্তি দেবেন। | ٨٤ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَرَ فَسَوْنَ نُعَلِّبُهُ ثُرَّ يُرَدُّ إِلَى رَبِّهِ فَيُعَلِّبُهُ عَلَابًا تُكُرًّا |
| ৮৮. (অপরদিকে) যে ব্যক্তি (আল্লাহর ওপর) ঈমান আনবে এবং নেক কাজ করবে, তার জন্যে (আখেরাতে) থাকবে উত্তম পুরস্কার, আর আমিও তার সাথে আমার কাজকর্ম সম্পাদনের সময় একান্ত বিন্মু ব্যবহার করবো; | ٨٨ وَأَمَّا مَنْ أَمَى وَعَبِلَ صَالِحًا فَلَدَ مَزَاءً الْحُسْنَى ع وَسَنَقُولُ لَدَّ مِنْ آمْرِنَا يُشْرًا ، |
| ৮৯. অতপর সে আরেক (অভিযানে) পথে বেরুগো। | ٨٩ ثُرُّ ٱثْبَعَ سَبَبًا |
| ৯০. এমনকি (চলতে চলতে) সে সূর্যোদয়ের স্থানে গিয়ে পৌছুলো, তখন সে সূর্যকে এমন একটি জাতির ওপর (দিয়ে) উদয় হতে দেখলো; যাদের জ্বন্যে তার (প্রশ্বর তাপ) থেকে (আত্মরক্ষার) কোনো অন্তরাল আমি সৃষ্টি করে রাখিনি। | ٩٠ مَتَّى إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّهْ وَجَلَهَا تَطْلُعُ عَلَى قَوْمٍ لَّهِ نَجْعَلْ لَّهُرْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتُرًا ٧ |
| ৯১. (যুলকারনায়নের ঘটনা ছিলো) এ রকমই; আমার কাছে সে সম্পর্কিত পুরোপুরি খবরই (মজুদ) আছে। | ٩١ كَنْ لِكَ م وَقَلْ أَحَطْنَا بِهَا لَنَ يُهِ خُبْرًا |
| ৯২. অতপর সে আরেক (অভিযানে) পথে বেরুলো। | ٩٢ ثُرَّ [َثَبَعَ سَبَبًا |
| ৯৩. এমনকি (পথ চলতে চলতে) সে দুটো প্রাচীরের মধ্যবর্তী স্থানে গিয়ে পৌছলো, দুই পর্বতের মধ্যবর্তী স্থানে (পৌছে) সে এমন এক সম্প্রদায়ের লোকদের পেলো, যারা (যুলকারনায়নের) কোনো কথাই (তেমন) বুঝতে পারছিলো বলে মনে হলো না। | ٩٣ حَتَّى إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّايَّنِ وَجَلَ مِنْ السَّايَّنِ وَجَلَ مِنْ وَكَلِّ مِنْ دُوْنِهِا قَوْمًا لا لا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا |
| ৯৪. তারা (বিভিন্নভাবে তাকে) বললো, হে (বাদশাহ) যুলকারনায়ন, নিসন্দেহে ইয়াজুজ মা'জুজ হচ্ছে (নামক দুটো সম্প্রদায়) এ যমীনে (নানারকম) বিপর্যয় সৃষ্টিকারী, | ٩٣ قَالُوْا يِٰلَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ |
| (এমতাবস্থায় তাদের থেকে বাঁচার জন্যে) আমরা কি ১৮ সূরা আল কাহাফ | مُفْسِلُ وَنَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ اللهُ الله |
| 20 -541 -41-1 -41-(14. | শ্নাপ্তা ৪ |

www.eelm.weebly.com

| ১৮ সূরা আল কাহাফ | মন্যিল ৪ |
|---|---|
| ১০৪. (এরা হচ্ছে) সেসব লোক যাদের সমুদয় প্রচেষ্টা এ দুনিয়ায় বিনষ্ট হয়ে গেছে, অথচ তারা মনে মনে ভাবছে, তারা (বুঝি) ভালো কাজই করে যাচ্ছে। | ١٠٢ أَلَّنِ مِنَ شَلَّ سَعْيُمُر فِي الْحَيٰوةِ النَّنْيَا وَهُر يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ مُنْعًا |
| ১০৩. (হে নবী, এদের) তুমি বলো, আমি কি তোমাদের এমন লোকদের কথা বলবো, যারা আমলের দিক থেকে সম্পূর্ণ ক্ষতিগ্রস্ত (হয়ে পড়েছে); | ١٠٣ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُر بِالْإَحْسَرِيْنَ أَعْهَالًا ١ |
| ১০২. কাফেররা কি এ কথা মনে করে নিয়েছে যে, তারা আমার বদলে আমারই (কতিপয়) গোলামকে অভিভাবক বানিয়ে নেবে; (আর আমি এ ব্যাপারে তাদের কোনো জিজ্ঞাসাবাদই করবো না!) আমি তো জাহান্নামকে কাফেরদের মেহমানদারীর জন্যে সাজিয়ে রেখেছি। | ۱۰۲ اَنَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوْآ اَنْ يَتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيَ اَوْلِيَاءَ ﴿ إِنَّا آعْتَنْنَا مِهَنَّرَ لِلْكُفِرِيْنَ نُزُلًا |
| ১০১. যাদের চোখের মধ্যে আমার স্বরণ থেকে আবরণ পড়েছিলো, তারা (হেদায়াতের কথা) শুনতেই পেতো না। | النَّانِينَ كَانَتُ أَعْيُنُهُ وَ فِي غِطاً عَنَ اللَّهِ مَن عَطاً عَن فَكُونَ شَهْعًا ع فِكْرِي وكَانُوا لا يَسْتَطِيْعُونَ سَهْعًا ع |
| ১০০. (সেদিন) আমি জাহান্নামকে (তার) অবিশ্বাসীদের জন্যে (সামনে) এনে হাযির করবো, | ١٠٠ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّرَ يَوْمَئِنِ لِّلْكُفِرِيْنَ عَرْضًا " ٧ |
| ৯৯. (কেয়ামতের আগে) আমি তাদের দলে দলে ছেড়ে দেবো, তারা (সমুদ্রের) ঢেউয়ের আকারে একদল আরেক দলের মধ্যে প্রবিষ্ট হবে, যখন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে তখন তাদের সবাইকে আমি (হাশরের ময়দানে) একত্রিত করবো. | 99 وَتَرَكْنَا بَعْضَهُرْ يَوْمَئِنِ يَّهُوْجُ فِي بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصَّوْرِ فَجَهَعْنَهُرْ جَهْعًا |
| ৯৮. (যুলকারনায়ন বললো,) এই যা কিছু হয়েছে তা সবই আমার মালিকের অনুহাহে (হয়েছে), কিছু যখন আমার মালিকের ওয়াদা (-মতো কেয়ামত) আসবে, তখন তিনি তা চূর্ণ বিচূর্ণ করে একাকার করে দেবেন, আর আমার মালিকের ওয়াদা হচ্ছে সত্য ওয়াদা; | ٩٨ قَالَ هٰنَا رَهْبَةٌ مِّنْ رَبِّيْ عَ فَاذَا جَاءَ وَعْنُ رَبِّيْ جَعَلَهٌ دَكَّاءً ع وَكَانَ وَعْنُ رَبِّيْ مَقَّا اللهِ |
| ৯৭. (এডাবেই এমন একটি মযবুত প্রাচীর তৈরী হয়ে গেলো যে,) অতপর তারা তার ওপর উঠতে (আর) সক্ষম হলো না– না তারা তা ভেদ করে (বাইরে) আসতে পারলো। | لَهُ نَقْبًا |
| ৯৬. তোমরা আমার কাছে (এ কাজের জন্যে) লোহার পাতসমূহ নিয়ে এসো (অতপর সে অনুযায়ী তা আনা হলো এবং প্রাচীর তৈরীর কাজ শুরু হয়ে গেলো); যখন মধ্যবর্তী ফাঁকা স্থানটি (পূর্ণ হয়ে লৌহ স্কৃপগুলো দুটো পর্বতের) সমান হয়ে গেলো, তখন সে (তাদের) লক্ষ্য করে বললো, তোমরা (হাঁপরে) দম দিতে থাকো; অতপর যখন তা আগুনকে (উগুপ্ত) করলো, (তখন) সে বললো, (এখন) তোমরা আমার কাছে (কিছু) গলানো তামা নিয়ে এসো, আমি তা এর ওপর তেলে দেবো। | ٩٦ أَتُونِى زُبَرَ الْحَوِيْنِ مَتَّى إِذَا سَاوِٰى بَيْنَ الصَّافَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ، مَتَّى إِذَا مَعَلَةً نَارًا لا قَالَ أَتُونِى ٱفْرِخْ عَلَيْهِ قِطْرًا لا |
| ৯৫. সে বললো (কোনো কর নেয়ার প্রয়োজন নেই, কেননা), আমার মালিক আমাকে যা কিছু দিয়ে রেখেছেন তাই (আমার জন্যে) উত্তম, হাাঁ, (শারীরিক) শক্তি দারা তোমরা আমাকে সাহায্য করতে পারো, আমি তোমাদের এবং তাদের মাঝে এক মযবুত প্রাচীর বানিয়ে দেবো। | 90 قَالَ مَا مَكَّنِّى ْ فِيهِ رَبِّى ْ عَيْرٌ فَاَعِيْنُونِى ْ بِقُوَّةٍ ٱجْعَلْ بَيْنَكُرْ وَبَيْنَمُرْ رَدْمًا لا |
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ তোমাকে (এ শর্তে কোনোরকম) একটা 'কর' দেবো যে, তুমি আমাদের এবং তাদের মাঝে একটি প্রাচীর বানিয়ে দেবে। | পারা ১৬ ব্বালা আলাম - خَرْجًا عَلَى أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَنَّا |
| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনবাদ | পারা ১৬ কালা আলাম 🛭 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|--|---|
| ১০৫. এরাই হচ্ছে সেসব লোক, যারা তাদের মালিকের | ١٠٥ أُولَئِكَ الَّنْ ِيْنَ كَفُرُوْا بِايْسِ رَبِّهِمْ |
| আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে এবং (অস্বীকার করে) তাঁর সাথে ওদের সাক্ষাতের বিষয়টিও, ফলে ওদের সব কর্মই | وَلِقَائِمٍ فَحَبِطَتُ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ |
| নিষ্ণল হয়ে যায়, তাই কেয়ামতের দিন আমি তাদের নোজাতের জন্যে) জন্যে ওয়নের কোনো মানদন্তই স্থাপন | يَوْمُ الْقِيلَةِ وَزْنًا |
| করবো না। | |
| ১০৬. এটাই জাহান্নাম! (এটাই হলো) তাদের (যথার্থ) পাওনা, কেননা তারা (স্বয়ং স্রষ্টাকেই) অস্বীকার করেছে, | ١٠٦ ذٰلِكَ جَزَآوُهُمْ جَهَنَّمُ بِهَا كَفَرُوْا |
| (উপরন্তু) তারা আমার আয়াতসমূহ ও (তার বাহক) রসূলদের বিদ্রুপের বিষয় হিসেবে গ্রহণ করেছে। | وَاتَّخَنُوْ آ الْيِي وَرُسُلِي مُزُوًا |
| ১০৭. (অপরদিকে) যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং (সে অনুযায়ী) নেক আমল করেছে, তাদের | ١٠٤ إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ |
| মেহমানদারীর জন্যে 'জান্নাতুল ফেরদাউস' (সাজানো) রয়েছে। | كَانَتْ لَهُرْ جَنّْتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًّا لا |
| ১০৮. সেখানে তারা চিরদিন থাকবে, (সেদিন) তারা সেখান থেকে অন্য কোথাও যেতে চাইবে না। | ١٠٨ خُلِهِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا هِوَلًا |
| ১০৯. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, আমার মালিকের (প্রশংসার) কথাগুলো (লিপিবদ্ধ করা)-এর জন্যে যদি | ١٠٩ قُلْ لُوْ كَانَ الْبَحْرُ مِنَادًا لِكَلِمْتِ رَبِّي |
| সমুদ্র কালি হয়ে যায়, তাহলে আমার মালিকের কথা (লেখা) শেষ হওয়ার আগেই সমুদ্র শুকিয়ে যাবে, এমনকি | لَنَفِنَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَنَ كَلِيٰتُ رَبِّي |
| যদি আমি তার মতো (আরো) সমুদ্রকে (লেখার কালি করে) সাহায্য করার জন্যে নিয়ে আসি (তবুও)। | وَلَوْ حِنْنَا بِعِثْلِهِ مَنَدًا |
| ১১০. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, আমি তো তোমাদের মতোই একজন (রক্ত মাংসের) মানুষ, তবে | ١١٠ قُلُ إِنَّهَا آنَا بَشَرٌّ مِّثْلُكُم يُوْمَى إِلَى اللَّ |
| আমার ওপর ওহী নাযিল হয় (আর সে ওহীর মূল কথা হচ্ছে), তোমাদের মাবুদ হচ্ছেন একজন, অতএব | أَنَّهَا إِلٰهُكُمْ إِلَّهُ وَّاحِدٌ عَنَهَنْ كَانَ يَرْجُوا |
| তোমাদের মাঝে যদি কেউ তার মালিকের সাক্ষাৎ কামনা | لِقَاءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلُ عَمَلًا مَالِحًا و ٧ يُشْرِك |
| করে, সে যেন (হামেশা) নেক আমল করে, সে যেন কখনো তার মালিকের এবাদাতে অন্য কাউকে শরীক না | بِعِبَادَةِ رَبِّهٖ ٓ اَحَلًاع |
| করে। | |
| সুরা মারইয়াম | سُوْرَةُ مُرْيَرُ مَكِيةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৯৮, ৰুকু ৬ | أيَاتُ : ٩٨ - رُكُوعُ : ٦ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْرِ |
| ১. কাফ-হা-ইয়া-আঈন-ছোয়াদ। | ے۔۔۔۔۔ اکھیعص تنع |
| ২. (হে নবী, এ হচ্ছে) তোমার মালিকের অনুগ্রহের (কথাগুলো) স্মরণ (করা), যা তিনি তাঁর এক অনুগত বান্দা যাকারিয়ার ওপর (প্রেরণ) করেছিলেন, | ٢ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْلَةً زَكَرِيًّا |
| ৩. যখন সে একান্ত নীরবে তার মালিককে ডাকছিলো। | ٣ إِذْ نَادَٰى رَبَّهُ نِنَاءً خَفِيًّا صِهِ |
| ৪. সে বলেছিলো, হে আমার মালিক, আমার (শরীরের) | م قَالَ رَبِّ إِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْرُ مِنِّيْ |
| হাড় দুর্বল হয়ে পড়েছে এবং (আমার) মাথা শুদ্রোজ্বল হয়ে গেছে (তুমি আমার দোয়া কবুল করো), হে আমার | وَاشْتَعَلَ الرَّاسُ شَيْبًا وَّلَرْ أَكُن بِهُ عَائِكَ |
| মালিক, আমি তো কখনো তোমাকে ডেকে ব্যর্থ হইনি! | رَبِّ هَقِيًّا |
| ১৯ সূরা মারইয়াম | भनयिन 8 |

الله المُعَلَّمُ مِن الْكِتَّبِ مَرْيَمَ م إِذِ الْتَبَانَ سَ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا لا

১৯ সূরা মারইয়াম

দিকের একটি ঘরে গিয়ে আশ্রয় নিয়েছিলো।

১৫. তার ওপর শান্তি (বর্ষিত হয়েছিলো), যেদিন তাকে

জন্ম দেয়া হয়েছে, (শান্তি বর্ষিত হবে সেদিন)- যেদিন

সে মত্যু বরণ করবে এবং যেদিন পুনরায় সে জীবিত হয়ে

১৬. (হে নবী,) এ কেতাবে মারইয়ামের কথা তুমি স্বরণ

করো। (বিশেষ করে সে সময়ের কথা-) যখন সে তার

পরিবারের লোকজনদের কাছ থেকে আলাদা হয়ে পূর্ব

পুনরুখিত হবে।

يُبْعَرِيُ حَيّاع

١٥ وَسَلَرٌ عَلَيْهِ يَوْ] وُلنَ وَيَوْ] يَبُوْتُ وَيَوْ]

| स्वात आमा मंत्रीक महक महक वाला जन्नाम 99. ज्यलत (लाकप्तत कोছ (शरक (सिक्टर ज्याक्षण करां करां) कर्ण मंत्रिक्टर केर्ट केर | | |
|--|--|--|
| করার জন্যে) সে পর্দা করলো। আমি তার কাছে আমার রহ (জিবরাঈল)-কে পাঠালাম, সে পূর্ব মানুবের আকৃতিতে তার সামনে আপ্রকাশ করলো। ১৮. সে বললো (হে আগত ব্যক্তি), ভূমি যদি আহাহ তারালাকে তম করের, তাহলে অমি তোমা নে বলিই। ১৯. সে বললো, আমি তোমার মালিকের পাঠানো দৃত, (আমি তা এজন্যে এলেছি) যেন তোমানে একটি পরিব্রু স্করান দিয়ে হেতে পারি। ২০. সে বললো (এ কি বলছে। ভূমি)। আমার ছেলে হবে কিতাবে, আমাকে (তো আজ পর্যপ্ত) কোনো পুরুষ স্পর্শত করেনি, আর না আমি করনো অসতী ছিলাম। ২১. সে বললো (হাঁ), এভাবেই (হবে), তোমার মালিক বছনে, তা আমার জনে। পুনর সহজ কাজ এবং আমি তাকে, মানুবদের জন্যে (বুলবতের) একটি নির্দান ওক্তি মানুহে। বানেত চাই, (মূলত) এটা ছিলো (আমার গন্ধ থাকে) আমার কাছ থেকে অব্যহ্ম (-সাদৃশা একটি মানুহ) বানাতে চাই, (মূলত) এটা ছিলো (আমার গন্ধ থাকে) করেনি নারে এলো, সে বললো, হায়। এর আগেই যদি আমি মেরে বেতাম এবং আমি যদি (মানুমবের স্কৃতি বিশ্বত হয়ে যেতাম। ২২. তাবপর তার অবসবেননা তাকে এক বেজুর গাছের সহি দ্বার এলো, সে বললো, হায়। এর আগেই যদি আমি মরে বেতাম এবং আমি যদি (মানুমবের স্কৃতি বিশ্বত হয়ে যেতাম। ২৪. তথন একজন (ফেরেশতা) তাকে তার নিচের দিক থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়াম), ছুমি কোনো কর্ম দুঃখ করো না, তোমার নালিক (তোমার পিলা) কর্মা বুলবে লাকে কারে পানে। পারের) নীতে একটি (পানির) মুর্গা বানিমে দিয়েছেন, ২৫. ছুমি এ খেলুর পাছের কাভ তোমার দিকে লাজ দিকে মানুহে করেছি, (এ বাহের তুমি বাতে কেটি (মানুমবের কাউকে দেবো তাহলে বলবে, আমি আন্তাহে কারে করে বলবা, আমি অন্তাহে করেছি (এ কারবে) আমি আন্তাহে করেছি (এ কারবে) আমি আন্তাহের মানুহে করেছি (এ কারবে) আমি আন্তাহে করেছি (এ কারবে) আমি আন্তাহের করে করেছি বালের (লাকের বালের বালের মানুহের করেছি (এ কারবে) আমি আন্তাহের করেছি (এ কারবে) আমি আন্তাহের করেছি করেছি মানুহেনের করেছিক তারীটি নির্নিটিন করেছিন নির্নেটিন করেছিন করেছিন করেছি মানুহেনের করেছিক মানুহেনের করেছিন করিছিন করেছিন ক | | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
| ১৮. সে বললো (হে আগত ব্যক্তি), তুমি যদি আল্লাহ তার কানেলে। (হে আগত ব্যক্তি), তুমি যদি আল্লাহ তার করেল। (হে আগত ব্যক্তি), তুমি যদি আল্লাহ তার করেলা (হে আগত ব্যক্তি), তুমি যদি আল্লাহ তার করেলা (হে আগত ব্যক্তি), তুমি বালাহ চাই। ১৯. সে বললো, আমি তোমার মালিকের পাঠালো দৃত, (আমি তো এজন্যে এলেছি) যেন তোমারে একটি পরিত্র সন্তান দিয়ে যেতে পারি। ২০. সে বললো (এ কি বলছো তুমি)! আমার ছেলে ববে কিভাবে, আমাকে (তো আজ পর্যন্ত) করেলে। পুরুষ স্পর্ণাত করেলি, আর না আমি করবলা অগত ছিলাম। ২১. সে বললো (এ কি বলছো তুমি)! আমার ছেলে ববে কিভাবে, আমাকে (তো আজ পর্যন্ত) করেলে। পুরুষ স্পর্ণত করেলি, আর না আমি করবলা অগত ছিলাম। ২১. সে বললো (ঠ্যা), এতাবেই (হবে), তোমার মালিক বলছেন, তা আমার কাছে লা কুমি করবলা অবং আমি তাকে মানুষদের জন্যে। (কৃমরতের) একটি নিদর্শন ও আমার কাছে থেকে অনুর্যন্ত (সাদ্যাতা একটি নিদর্শন ও আমার কাছে থেকে অনুর্যন্ত (সাদ্যাতা একটি মানুষ) বানাতে চাই, (খুলত) এটা ছিলো (আমার পন্ধ থেকে) এক ছিলীক্ত ব্যাপার। ২২. অতপর সে তাকে (গত্তেঁ) ধারন করলো এবং তাকে সহ দূরে (কোনো) এক জারগায় চলে গোলা। ২৩. তারপর তার প্রসব বেদনা তাকে এক খেছুর গাছের নীচে নিয়ে এলো, সে বললো, গুমা এর আগেই যদি আমি মরে যেতাম এবং আমি যদি (মানুষদের স্থৃতি থেকে) সপ্র্পুর্ব বিশৃত হয়ে যেতামা। ২৪. তারপর (কেবেশতা) তাকে তার নিতের দিক থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়াম), তুমি কোনো রকম দূরণ করো না, তোমার মালিক (তোমার পিপাসা নিবানদের জন্মে) তোমার (পাহের নান্তে ক্রেমি কুমি কানিয়ে দিয়েছেন, ২৫. তুমি এ খেছুর গাছের করছি (তোমার দিকে লাড়া দাও, (দেখবে) তা তোমার ওপর পাকা ও তাজা খেছুর ক্রেমি তুনি, তুনি, তুনি, তিন্তি, বিলুত, তুনি, তুনি, তিন্তি, বিলুত, তুনি, তুনি, তিন্তি, বিলুত, তুনি, তুনি, তিন্তি, তুনি, তুনি, তুনি, তিন্তি, তিন্তি ক্রেমি ক্রেমিন করেছি, (এ কারণে) আমি আছা তোমালার নামে রোমার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আছা তোমালার নামে রোমার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আছা তোমালার নামে রোমার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আছা তোমালার নামে রোমার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আছা তোমালার কানে ক্রিক, নিমের ক্রিক, তুনী নিম্নি, তিন্তি, তুনীক ক্রিক ক্রিছে, তিনি ক্রেমিন ক্রিমিন, তিন্তে ক্রিমিন ক্রিমেন ক্রিমেন করেছি (তান করেলে) আমি বালের নিমের নামের নিমের করেলের করেলে বাল বান করেলে করেলে করেলে বান নামের নিম | | ١٤ فَاتَّخَٰنَتْ مِنْ دُوْنِهِرْ حِجَابًا ثَّ فَٱرْسَلْنَا |
| (अर्थात महामार जांद्राचालात कांद्र शांचालात कांद्र शांचार कांद्राचार जांद्राचार जांद्र होंचे हेंचे | রহ (জিবরাঈল)-কে পাঠালাম, সে পূর্ণ মানুষের | |
| ১৯. সে বললো, আমি তোমার মালিকের পাঠানো দৃত, (আমি তো এজন্যে এসেছি) যেন তোমাকে একটি পবিত্র সন্তান দিয়ে যেতে পারি। ২০. সে বললো (এ কি বলছো ভূমি)! আমার ছেলে হবে কিভাবে, আমাকে (তো আজ পর্যন্ত) কোনো পুক্ষ স্পর্গত করেনি, আর না আমি কখনো অসতী ছিলাম। ২১. সে বললো (ঠাা), এভাবেই (হবে), তোমার মালিক বলছেন, তা আমার জন্যে পুক্ষ সকল জভ এবং আমার কাছ থেকে অনুগ্রহ (সাদৃশ্য একটি মানুষ) বালাতে চাই, (মূলত) এটা ছিলো (আমার পক্ষ থেকে) আর কছাছ থেকে অনুগ্রহ (সাদৃশ্য একটি মানুষ) বালাতে চাই, (মূলত) এটা ছিলো (আমার পক্ষ থেকে) এক স্থিরীকৃত ব্যাপার। ২৩. তারপর তার প্রসব বেদনা তাকে এক খেজুর গাছের নীচে নিয়ে এলো, সে বললো, হায়! এর আগেই যদি (আন্তান করে বললো (হে মারইয়াম), ভূমি কোনো করম দুরুষ কলো না, তোমার পার কাছ থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়াম), ভূমি কোনো করম দুরুষ কলো না, তোমার পিরে পারা অলিক বিয়ে বিলু ভূমি নাইয়ামা, ভূমি কোনো বানায়ের মানিয়ে দিয়েছেল, ২৫. ভূমি এ খেজুর গাছের কাভ তোমার দিকে লাড়া লাও (পেষবা) তামার ওপর পারা অবিহে (আমার সিকে লাড়া) তাত জারা বিকে লাড়া আলার নানে রোঘার মানুক করেছি, (এ কারণে) আমি আজ কাউকে দেখো ভাহলে বলবে, আমি আন্তাহ ভামান্য তার কালে বিয়ে মানুহদের কাউত দেখো আহ্বান স্থামি বিন্তু বিশ্বত ব্যামি বানায় বালিক লাড়া লাক নামে রোঘার মানুক করেছি, (এ কারণে) আমি আজ কোনো মানুক্ষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা। (তা মারার হিন্ন করে করেছে (এ কারণে) আমি আজ কোনো মানুক্ষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সভান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, ভূমি তো সতিাই এক অন্তত কাভ করে বংসেহো। | তায়ালাকে ভয় করো, তাহলে আমি তোমা (-র অনিষ্ট) | |
| ২০. সে বললো (এ কি বলছো তুমি)! আমার ছেলে হবে কিভাবে, আমাকে (তো আজ পর্যন্ত) কোনো পুরুষ স্পর্গত করেনি, আর না আমি কখনো অসতী ছিলাম! ২১. সে বললো (হাা), এভাবেই (হবে), তোমার মালিক বলছেন, তা আমার জন্যে খুবই সহজ কাজ এবং আমি তাকে মানুষদের জন্যে (কুদরতের) একটি নিদর্শন তাকে মানুষদের জন্যে (কুদরতার) তাটা ছিলো (আমার পন্ধ থেকে) এক ইরীকৃত ব্যাপার। ২২. অতপর সে তাকে (গর্তে) ধারণ করলো এবং তাকে সহ দূরে (কোনো) এক জায়গায় চলে পালো। ২৩. তারপর তার প্রসব বেদনা তাকে এক খেজুর গাছের কারিচে বারে এলো, সে বললো, হায়! এর আগেই যদি আমি মরে যেতাম এবং আমি যদি (মানুষদের স্থৃতি থেকে) সম্পূর্ণ বিস্তৃত হয়ে যেতাম! ২৪. তথন একজন (ফ্রেন্সভা) তাকে তার নিচের দিক থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়ম), তুমি কোনো রকম দৃঃখ করো না, তোমার মালিক (তোমার পিপাসা নিবারদের জন্যে) তোমার (পায়ের) নীচে একটি (পানির) মধা বানিয়ে দিয়েছেন, ২৫. অতপর (এ গাছের) খেজুর তুমি খাও এবং (এ ঝর্ণার) পানীয় পান করো এবং (সন্তানের দিকে তাজিয়ে কিমেণা) তাকে কাছিক দেখো তাকোর বলবে, আমি আরাহ তারাজার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) যথিনি ক্রাম্নার ক্রাম্নার ক্রাহ্ব তার্যালার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) যথিনি ক্রাম্নার ক্রাম্নার করির কাছে (ফ্রে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সভান দেখে) বললো, হে মাবইয়াম, তুমি তো সভিাই এক অন্তুত কাভ করে বসেছো। | ১৯. সে বললো, আমি তোমার মালিকের পাঠানো দৃত, (আমি তো এজন্যে এসেছি) যেন তোমাকে একটি পবিত্র | ١٩ قَالَ إِنَّهَا ٓ أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ تُكَ لِكَ إِلَّهَ لَكِ |
| তাকে মানুষদের জন্যে (কুদরতের) একটি নিদর্শন ও আমার কাছ থেকৈ অনুথহ (-সাদৃশ্য একতি মানুষ) বানাতে চাই, (মূলত) এটা ছিলো (আমার পক্ষ থেকে) এক হিরীকৃত ব্যাপার। ২২. অতপর সে তাকে (গর্ভে) ধারণ করলো এবং তাকে সহ দূরে (কোনো) এক জায়গায় চলে গেলো। ২০. তারপর তার প্রসব বেদনা তাকে এক খেজুর গাছের নীচে নিয়ে এলো, সে বললো, হায়! এর আগেই যদি আমি মরে যেতাম এবং আমি যদি (মানুষদের স্থৃতি থেকে) সম্পূর্ণ বিশৃত হয়ে যেতাম! ২৪. তখন একজন (কেরেশতা) তাকে তার নিচের দিক থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়াম), তুমি কোনো রকম দুঃখ করো না, তোমার মালিক (তোমার পিপাসা নিবারণের জন্যে) তোমার (পারের) নীচে একটি (পানির) মর্থা বানিয়ে দিয়েছেন, তার্মার ওপর পাকা ও তাজা খেজুর ফেলছে, ২৬. অতপর (এ গাছের) বিত্ত পেরা পিকায়ে বিশ্বত ত্তি ক্রিটি নিয়ে থানা করে বললের ক্রিটি বিশ্বত তামার পিলাসা নিবারণের জনে।) তোমার ওপর পাকা ও তাজা খেজুর ফেলছে, ২৬. অতপর (এ গাছের) খেজুর তুমি খাও এবং (এ ঝর্ণার) পানীয় পান করো এবং (সম্ভাবের ক্রিটি ক্রিটিটি নিয়ে বিল্ক তারিক দেখা তাহলে বলবে, আমি আরাহ তারালার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আজ কোনো মানুষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (ভার কোলে সভান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্তুত কাভ করে বসেছো। | কিভাবে, আমাকে (তো আজ পর্যন্ত) কোনো পুরুষ স্পর্শও | ٢٠ قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلْرٌ وَّلَرْ |
| ২২. অতপর সে তাকে (গর্ভে) ধারণ করলো এবং তাকে সহ দূরে (কোনো) এক জায়গায় চলে গেলো। ২৩. তারপর তার প্রসব বেদনা তাকে এক ধেজুর গাছের নীচে নিয়ে এলো, সে বললো, হায়। এর আগেই যদি আমি মরে যেতাম এবং আমি যদি (মানুষদের স্বৃতি থেকে) সম্পূর্ণ বিশ্বত হয়ে যেতাম! ২৪. তখন একজন (ফেরেশতা) তাকে তার নিচের দিক থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়াম), তুমি কোনো রকম দূরখ করো না, তোমার মালিক (তোমার পিপাসা নিবারণের জন্যে) তোমার (পায়ের) নীচে একটি (পানির) মর্থা বানিয়ে দিয়েছেন, ২৫. তুমি এ খেজুর গাছের কাভ তোমার দিকে নাড়া দাও, (দেখবে) তা তোমার ওপর পাকা ও তাজা খেজুর ফ্লেছে, ২৬. অতপর এ গাছের) খেজুর তুমি খাও এবং (এ মর্ণার) পানায় পান করো এবং (সজ্বানের দিকে তাকিয়ে তোমার) চাখ জুড়াও, (ইতিমধ্যে) যখনি তুমি মানুষদের কাউকে দেখো তাহলে বলবে, আমি আরাহ তায়ালার নামে রোয়ার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আজ কোনো মানুষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে বনেলো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে করে বনেলো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে করে বনেলো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে বনেলো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে বনেলো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে করে বনেলো, হে মারইয়াম, তুমি তো সতিাই এক অন্ধুত করে বনেলো। | বলছেন, তা আমার জন্যে খুবই সহজ কাজ এবং আমি তাকে মানুষদের জন্যে (কুদরতের) একটি নিদর্শন ও আমার কাছ থেকে অনুগ্রহ (-সাদৃশ্য একটি মানুষ) বানাতে চাই, (মূলত) এটা ছিলো (আমার পক্ষ থেকে) | وَلِنَجْعَلَهُ أَيْةً لِلَّنَّاسِ وَرَهْبَةً بِّنَّا ع وَكَانَ |
| আমি মরে যেতাম এবং আমি যদি (মানুষদের শৃতি । এটা মানুষদের সভাতর কান্ত বেলাং (হে মারইয়াম), তুমি কোনো বকম দৃঃখ করো না, তোমার মালিক (তোমার দিপাসা নিবারদের জন্যে) তোমার গোরের) নীচে একটি (পানির) ঝণা বানিয়ে দিয়েছেন, ২৫. তুমি এ খেজুর গাছের কাভ তোমার দিকে নাড়া দাও, (দেখবে) তা তোমার ওপর পাকা ও তাজা খেজুর ফেলছে, ২৬. অতপর (এ গাছের) খেজুর তুমি খাও এবং (এ ঝণার) পানীয় পান করো এবং (সন্তানের দিকে তাকিয়ে তোমার) চোখ জুড়াও, (ইতিমধ্যে) যখনি তুমি মানুষদের কাউকে দেখো তাহলে বলবে, আমি আল্লাহ তায়ালার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আজ্ল কোনো মানুষ্বের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সত্যিই এক অন্তুত কাভ করে বসেছো। | ২২. অতপর সে তাকে (গর্ভে) ধারণ করলো এবং তাকে | ٢٢ فَحَهَلَتْهُ فَانْتَبَنَٰ فَ إِيهِ مَكَانًا قَصِيًا |
| ২৪. তখন একজন (ফেরেশতা) তাকে তার নিচের দিক থেকে আহ্বান করে বললো (হে মারইয়াম), তুমি কোনো রকম দৃঃখ করো না, তোমার মালিক (তোমার পিপাসা নিবারণের জন্যে) তোমার (পায়ের) নীচে একটি (পানির) রণা বানিয়ে দিয়েছেন, ২৫. তুমি এ খেজুর গাছের কাভ তোমার দিকে নাড়া দাও, (দেখবে) তা তোমার ওপর পাকা ও তাজা খেজুর ফেলছে, ২৬. অতপর (এ গাছের) খেজুর তুমি খাও এবং (এ রণার) পানীয় পান করো এবং (সন্তানের দিকে তাকিয়ে তোমার) চোখ জুড়াও, (ইতিমধ্যে) যখনি তুমি মানুষদের কাউকে দেখো তাহলে বলবে, আমি আল্লাহ তায়ালার নামে রোযার মান্নত করেছি, (এ কারণে) আমি আল্ল কোনো মানুষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সত্যিই এক অন্ধৃত কাভ করে বসেছো। | নীচে নিয়ে এলো, সে বললো, হায়! এর আগেই যদি আমি মরে যেতাম এবং আমি যদি (মানুষদের স্থৃতি | النَّخْلَةِ ، قَالَتْ يُلَيْتَنِيْ مِنُّ قَبْلَ هٰنَا |
| সোর, (ভাবনে) তা তোমার তার নামা ত তারা বের্র ক্ষেলছে, ২৬. অতপর (এ গাছের) ধেজুর তুমি খাও এবং (এ ঝর্ণার) পানীয় পান করো এবং (সন্তানের দিকে তাকিয়ে তোমার) চোখ জুড়াও, (ইতিমধ্যে) যখনি তুমি মানুষদের কাউকে দেখো তাহলে বলবে, আমি আক্লাহ তায়ালার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আজ কোনো মানুষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সত্যিই এক অদ্ভুত কাভ করে বসেছো। | থেকে আহ্বান করে বললো (র্হে মারইয়াম), তুমি কোনো রকম দুঃখ করো না, তোমার মালিক (তোমার পিপাসা নিবারণের জন্যে) তোমার (পায়ের) নীচে একটি (পানির) | ٢٣ فَنَادُىهَا مِنْ تَحْتِهَا ۖ أَلَّا تَحْزَنِي قَلْ |
| বর্ণার) পানীয় পান করো এবং (সন্তানের দিকে তাকিয়ে তোমার) চোখ জুড়াও, (ইতিমধ্যে) যখনি তুমি মানুষদের কাউকে দেখো তাহলে বলবে, আমি আল্লাহ তায়ালার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আল্জ কোনো মানুষের সাথে কথা বলবো না। ২৭. অতপর সে তাকে নিজের কোলে বহন করে নিজের জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সত্যিই এক অদ্ভুত কান্ড করে বসেছো। | भाव, (क्षापद्य) वा दवामात्र वगत्र भागा व वावा दयबूत्र | ■ a |
| काউक प्रत्था তाशल वनत्व, आि आबार ठाशानात नार्य त्रायात्र मानुष्ठ करति (এ कात्रप) आि आंक हिं । الْمَوْمَ الْمَوْمَةُ الْمُوْمَةُ الْمُوْمَةُ الْمُوْمَةُ الْمُوْمِقَا الْمَوْمَةُ الْمُوْمَةُ الْمُومِّ الْمُومِّ الْمَوْمَةُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ | ঝর্ণার) পানীয় পান করো এবং (সম্ভানের দিকে তাকিয়ে | ~ |
| জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সত্যিই এক অদ্ভুত কান্ড করে বসেছো। | কাউকে দেখো তাহলে বলবে, আমি আল্লাহ তায়ালার নামে রোযার মানুত করেছি, (এ কারণে) আমি আজ | |
| ১৯ সূরা মারইয়াম 💎 ৩০৫ মন্যিল ৪ | জাতির কাছে (ফিরে) এলো; লোকেরা (তার কোলে সন্তান দেখে) বললো, হে মারইয়াম, তুমি তো সত্যিই | , , , , , |
| | ১৯ সূরা মারইয়াম | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|---|---|
| ২৮. হে হারূনের বোন (একি করলে তুমি)? তোমার পিতা তো কোনো অসৎ ব্যক্তি ছিলো না, তোমার মাতাও তো (চারিত্রিক দিক থেকে) কোনো খারাপ (মহিলা) ছিলো না! | ٢٨ يَاكُنْ هُرُونَ مَا كَانَ اَبُوكِ امْرَا سَوْءٍ وَمَا كَانَ اَبُوكِ امْرَا سَوْءٍ وَمَا كَانَ الْبُوكِ الْمَرَا سَوْءٍ |
| ২৯. সে (সবাইকে) তার (কোলের শিশুটির) দিকে ইশারা করলো (এবং বললো ভোমাদের যদি কিছু জিজ্ঞেস করার থাকে তাহলে একেই জিজ্ঞেস করো); তারা বললো, আমরা তার সাথে কিভাবে কথা বলবো, যে (এখনো) দোলনার শিশু! | ۲۹ فَاَهَارَتْ إِلَيْهِ ﴿ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّـرُ مَنْ كَانَ فِي الْهَهْلِ مَبِيًّا |
| ৩০. (এ কথা শুনেই) সে (শিশু) বলে ওঠলো (হাা), আমি হঙ্গি আল্লাহ তায়ালার বান্দা। তিনি আমাকে কেতাব দিয়েছেন এবং আমাকে তিনি নবী বানিয়েছেন, | ٣٠ قَالَ إِنِّى عَبْلُ اللهِ عَالَٰتِي الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا لا |
| ৩১. যেখানেই আমি পাকি না কেন তিনি আমাকে (তাঁর) অনুগ্রহভাজন করবেন, তিনি আমাকে নির্দেশ দিয়েছেন, যতোদিন আমি বেঁচে থাকি ততোদিন যেন আমি নামায প্রতিষ্ঠা করি এবং যাকাত প্রদান করি। | ٣١ وَّجَعَلَنِيْ مُبْرِكًا آيْنَ مَا كُنْتُ مِ وَٱوْمَٰنِيْ ٢ |
| ৩২. আমি যেন মায়ের প্রতি অনুগত থাকি, (আল্লাহর শোকর,) তিনি আমাকে না-ফরমান বানাননি। | ٣٢ وَّبَرُّا ا بِوَالِهَ تِيْ رَوَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا |
| ৩৩. আমার ওপর (আল্লাহ তায়ালার বিশেষ) প্রশান্তি— যেদিন আমি জন্মগ্রহণ করেছি, প্রশান্তি (থাকবে) সেদিন, যেদিন আমি (আবার) মৃত্যুবরণ করবো এবং (মৃত্যুর পরে) যেদিন জীবিত অবস্থায় পুনরুষ্থিত হবো। | ٣٣ وَالسَّلْرُ عَلَى " يَوْمَ وُلِنْتَ وَيَوْمَ أَمُوْتُ وَيَوْمَ أَبْعَثُ مَيَّا |
| ৩৪. এ হচ্ছে মারইয়াম পুত্র ঈসা এবং (এ হচ্ছে তার) আসল ঘটনা, যা নিয়ে তারা অযথাই সন্দেহ করে। | ٣٣ ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَرَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُّوْنَ |
| ৩৫. (তারা বলে, সে আল্লাহ তায়ালার সন্তান, কিছু) সন্তান গ্রহণ করা আল্লাহ তায়ালার কান্ধ নর, তিনি (এ থেকে) অনেক পবিত্র; তিনি যখন কোনো কিছু করতে চান তখন শুধু বলেন 'হও' এবং সাথে সাথেই তা 'হয়ে যায়'; | ٣٥ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِلَ مِنْ وَّلَٰهِ لِ سَبْحُنَهُ اللَّهِ أَنْ يَتَّخِلُ مِنْ وَّلَٰهِ لا سَبْحُنَهُ اللَّهِ اللَّهِ لَكَ كُنْ فَيَكُونَ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّةُ اللَّهُ ال |
| ৩৬. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা আমার মালিক এবং তোমাদেরও মালিক, অতএব তোমরা সবাই তাঁরই গোলামী করো; আর এটাই হচ্ছে (সহজ্ব ও) সরল পথ। | ٣٦ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُرْ فَاعْبُكُولُهُ هَٰذَا صَرَاطًّ مُّسْتَقِيْرً |
| ৩৭. এরপর (তাদের) দশগুলো নিজেদের মাঝে (মারইয়াম পুত্রকে নিয়ে) নানা মতানৈক্য সৃষ্টি করলো, অতপর (যারা আল্লাহ তায়ালার ঘোষণা) অস্বীকার করলো তাদের জন্যে রয়েছে (ক্যোমজ্যে) কঠিন দিনের দুর্জোগ। | ٣٥ فَاغْتَلَفَ الْإَهْزَابُ مِنَ الْمَيْفِرَ ، فَوَيْلُ اللَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَشْهَلِ يَوْ إِعَظِيْمٍ |
| ৩৮. যেদিন এরা আমার সামনে এসে হাযির হবে, সেদিন তারা ভালো করেই গুনবে এবং ভালো করেই দেখতে পাবে, কিন্তু আজ এ যালেমরা (না শোনা ও না দেখার ভান করে) সুম্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত হয়ে আছে। | ٣٨ اَشْبِعْ بِهِرْ وَاَبْصِرْ لا يَوْاَ يَاْتُوْنَنَا لَٰكِنِ الطَّلِمُوْنَ الْيَوْاَ فِى ضَلْلٍ شَّبِيْنٍ |
| ৩৯. (হে নবী,) সেই আক্ষেপের দিনটি সম্পর্কে তুমি এদের সাবধান করে দাও, যেদিন (জান্নাত জাহান্নামের ব্যাপারে চূড়ান্ত) সিন্ধান্ত হয়ে যাবে। (এখন তো) এরা এ ব্যাপারে গাফলতে (ডুবে) রয়েছে, ওরা (আল্পাহর ওপরও) ঈমান আনছে না। | ٣٩ وَ اَنْنِ رَهُمْ يَوْاً الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ مَ وَانْنِ رَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ |

মন্যিল ৪

000

১৯ সূরা মারইয়াম

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|---|---|
| ৪০. নিন্দেহে (এ) পৃথিবীর মালিক আমি এবং তার ওপর যা কিছু রয়েছে সেসবেরও, আর তাদের সবাইকে আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে। | ٢٠ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا |
| | وَ إِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ع |
| ৪১. (হে নবী, এই) কেতাবে তুমি ইবরাহীম (-এর ঘটনা)-কে শ্বরণ করো, অবশ্যই সে ছিলো এক সত্যবাদী নবী। | ٣١ وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ اِبْرُهِيْمَ أَ اللَّهُ كَانَ مِلِّيْقًا تَّبِيًّا |
| 8২. (বিশেষ করে সে সময়ের কথা-) যখন সে তার পিতাকে বললো, হে আমার পিতা, তুমি কেন এমন একটা জিনিসের পূজা করো, যা দেখতে পায় না, ভনতে পায় না, যা তোমার কোনো কাজেও আসে না। | ٣٢ إِذْ قَالَ لِإَبِيْهِ يَابَسِ لِمِ تَعْبُلُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِى عَنْكَ شَيْئًا |
| ৪৩. হে আমার পিতা, আমার কাছে (আল্লাহ তায়ালার সৃষ্টি রহস্য সম্পর্কে) যে জ্ঞান এসেছে তা তোমার কাছে আসেনি, অতএব তুমি আমার কথা শোনো, আমি তোমাকে সোজা পথ দেখাবো। | ٣٣ يَا بَسِ إِنِّى قَلْ جَاءَنِى مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمِرْ مَا لَمِلْمِ مَا لَمِرْ يَا تَبِكُ فَاتَّبِعْنِي ۖ أَهْلِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا |
| 88. হে আমার পিতা (সে জ্ঞানের মৌলিক কথা হচ্ছে), তুমি শয়তানের গোলামী করো না; কেননা শয়তান হচ্ছে পরম দয়ালু আল্লাহ তায়ালার না-ফরমান। | ٣٣ يَّابَتِ لا تَعْبُرِ الشَّيْطٰيَ ، إِنَّ الشَّيْطٰيَ كَانَ لِلرَّمْشِ عَصِيًّا |
| ৪৫. হে আমার পিতা, আমার ভয় হচ্ছে, (না-ফরমান শয়তানের গোলামী করলে) পরম দয়ালু আল্লাহ তায়ালার কোনো আযাব এসে তোমাকে স্পর্শ করবে, আর (এর ফলে জাহান্নামে) তুমি শয়তানেরই সাধী হয়ে যাবে। | ٣٥ يَابَسِ إِنِّيَ اَخَافُ اَنْ يَّهَسُّكَ عَلَابً مِّنَ الرَّحْسِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطِي وَلِيًّا |
| ৪৬. সে বললো, হে ইবরাহীম, তুমি কি (আসলেই) আমার দেব দেবীগুলো থেকে বিমুখ হয়ে যাচ্ছো, (তবে শোনো, এখনো) যদি তুমি এসব কিছু থেকে ফিরে না আসো তাহলে অবশ্যই আমি তোমাকে পাথর মেরে হত্যা করবো, (আর যদি বেঁচে থাকতে চাও তাহলে) তুমি চিরতরে আমার কাছ থেকে আলাদা হয়ে যাও। | ٣٦ قَالَ أَرَاغِبُّ أَنْسَ عَنْ الْهَتِيْ يَابْرُهِيْرُ عَ لَئِنْ لَّرْ تَنْتَهِ لِاَرْجُهَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ هَلِيًّا |
| ৪৭. সে বললো (আচ্ছা), তোমার প্রতি আমার সালাম, (আমি তোমার কাছ থেকে আলাদা হয়ে যাচ্ছি; কিন্তু এ সত্ত্বেও) আমি আমার মালিকের কাছে তোমার জন্যে মাগফেরাত কামনা করতে থাকবো; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা আমার প্রতি অতিশয় মেহেরবান। | ٣٤ قَالَ سَلْرٌ عَلَيْكَ ع سَاسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ، إِنَّهُ كَانَ بِي مَفِيًّا |
| 8৮. আমি তোমাদের কাছ থেকে আলাদা হয়ে যাচ্ছি এবং আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে তোমরা যাদের ডাকো তাদের সবার কাছ থেকেও (আলাদা হয়ে যাছি), আমি তে আমার মালিককেই ডাকতে থাকবো, আশা (করি) আমার মালিককে ডেকে আমি কখনো ব্যর্থকাম হবো না। | ٣٨ وَاَعْتَرِ لُكُمر وَمَا تَنْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَاَدْعُوْا رَبِّي لَ عَسَى اَلَّا اَكُوْنَ بِنُعَاء رَبِّي اللهِ شَقِيًّا |
| ৪৯. অতপর যখন সে সত্যিই তাদের কাছ থেকে পৃথক হয়ে গেলো এবং (পৃথক হয়ে গেলো তাদের থেকেও) যাদের ওরা আল্লাহ তায়ালার বদলে ডাকতো, তখন আমি তাকে ইসহাক ও (ইসহাক পুত্র) ইয়াকুব দান করলাম; এদের সবাইকেই আমি নবী বানিয়েছি। | ٣٩ فَلَمًّا اغْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُكُونَ مِنْ دُونِ اللهِ رَوَفَبْنَا لَهَ إِشْعَٰقَ وَيَعْقُوْبَ ا وَكُلَّا جَعَلْنَا نَبِيًّا |
| ৫০. আমি তাদের ওপর আমার (আরও বহু) অনুগ্রহ দান করেছি এবং তাদের আমি সুউচ্চ নাম যম্ব দান করেছি। | ٥٠ وَوَمَبْنَا لَهُرْ مِّنْ رَّمْيَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُرْ لِللَّهُوْ لِللَّهُوْ لِللَّهُوْ لِللَّهُ |

১৯ সূরা মারইয়াম

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|---|--|
| ৫১. (হে নবী,) তুমি (এ) কেতাবে মূসার (ঘটনা) স্বরণ করো, অবশ্যই সে ছিলো একনিষ্ঠ (বান্দা), সে ছিলো | ٥١ وَاذْكُرْ فِي الْكِتْبِ مُوْسَى رَ إِنَّهُ كَانَ |
| त्रमृल-नवी । | مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُولًا تَّبِيًّا |
| ৫২. (আমার কথা শোনার জন্যে) আমি তাকে 'তৃর' (পাহাড়ের) ডান দিক থেকে ডাক দিলাম এবং তাকে | ٥٢ وَنَادَيْنُهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْأَيْمَنِ |
| আমি গোপন তথ্য (-সমৃদ্ধ কথা) বলার জন্যে আমার নিকটবর্তী করলাম। | وَقُرِّبِنَهُ نَجِياً |
| ৫৩. আমি আমার নিজ অনুগ্রহে তার ভাই হাব্ধনকে নবী বানিয়ে তাকে (তার সাহায্যকারী হিসেবে) দান করলাম। | ٥٣ وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَّحْمَتِنَا آهَاهُ هُرُونَ نَبِيًّا |
| ৫৪. (হে নবী,) এ কেতাবে তুমি ইসমাঈলের (কথাও) স্মরণ করো, নিশ্চয়ই সে ছিলো যথার্থ প্রতিশ্রুণতি পালনকারী, আর সে ছিলো রসূল (ও) নবী, | ۵۳ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمَٰعِيْلَ رَ اِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْنِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا |
| ৫৫. সে তার পরিবার পরিজনদের নামায (প্রতিষ্ঠা করা) ও যাকাত আদায় করার আদেশ দিতো, (উপরস্থু) সে ছিলো তার মালিকের একান্ত পছন্দনীয় ব্যক্তি। | ٥٥ وكَانَ يَاْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلُوةِ وَالزَّكُوةِ سَ وكَانَ عِنْنَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا |
| ৫৬. (হে নবী,) তুমি এ কেতাবে ইদরীসের (কথাও) স্থরণ করো, সেও ছিলো একজন সত্যবাদী নবী। | ۵۲ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ رَ اِنَّهُ كَانَ صِنِّيْقًا نَّبِيًّا قَلا |
| ৫৭. আমি তাকে উচ্চ মর্যাদায় সমাসীন করেছিলাম। | ٥٤ وَّرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا |
| ৫৮. এরা হচ্ছে সে সব (নবী), যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অনুগ্রহ করেছেন, (এরা সবাই ছিলো) আদমের বংশোদ্ভৃত, যাদের তিনি (মহাপ্লাবনের সময়) নুহের সাথে নৌকায় আরোহণ করিয়েছেনু এরা তাদেরই বংশের | ٥٨ أُولَٰنِكَ النَّٰنِيْنَ اَنْعَرَ اللَّهُ عَلَيْهِرْ مِّنَ النَّبِيِّنَ مِن دُرِيَّةِ أُدَا ق وَمِيَّن حَمَلْنَا مَعَ |
| লোক, (এদের কিছু লোক) ইবরাহীম ও ইসরাঈলের বংশোদ্ভ্ত, (উপরন্তু) যাদের তিনি হেদায়াতের আলো দান করেছিলেন এবং যাদের তিনি মনোনীত করেছিলেন (এরা হচ্ছে তাদেরই অন্তর্ভুক্ত); (এদের অবস্থা ছিলো এই,) যখনি এদের সামনে পরম করুণাময় আল্লাহ | نُوْحِ رَوِّمِنْ دُرِّيَّةِ إِبْرُهِيْرَ وَاِشْرَآءِيْلَ رَوَمِّنْ وَمِّنْ وَمِّنْ وَمِنْ وَاشْرَآءِيْلَ رَوَمِّنْ وَمِنْ مَنَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا وَ إِذَا تُتُلَى عَلَيْهِمْ أَيْكُ الْمِنْ الرَّحْنُ عَلَيْهِمْ أَيْكِيًّا الرَّحْنُ عَرُّوْا سُجَّلًا وَبُكِيًّا |
| তায়ালার আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হতো তখন এরা আল্লাহ তায়ালাকে সাজদা করার জন্যে ক্রন্দনরত অবস্থায় যমীনে লুটিয়ে পড়তো। | ا در مورود ۱۳۰۰ ورزیا |
| ৫৯. তাদের পর (তাদের অপদার্থ) বংশধররা এলো, তারা নামায বরবাদ করে দিলো এবং (নানা) পাশবিক লালসার অনুসরণ করলো, অতএব অচিরেই তারা (তাদের এ) | ٩ هَ فَخَلَفَ مِنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّالَّالَّالَّالَّا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّالَّالَّالَّالَّالَّالَّالَّالَّال |
| গোমরাহীর (পরিণাম ফলের) সাক্ষাত পাবে, ৬০. কিন্তু যারা তাওবা করেছে, ঈমান এনেছে এবং নেক | |
| কাজ করেছে (তাদের কথা আলাদা), তারা তো জান্লাতে প্রবেশ করবে, (সেদিন) তাদের ওপর কোনোরকম যুলুম করা হবে না। | أَلِّا مَنْ تَابَ وَأْمَنَ وَعَمِلَ مَالِحًا فَأُولَئِكَ يَلْمُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ أُولِئِكَ يَلْمُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ |
| ৬১. স্থায়ী জান্লাত এমন এক বস্তু যার ওয়াদা দয়াময় | شَينًا ٧ ٢١ جَنْسِ عَنْنِ" الَّتِي وَعَنَ الرَّحْيٰيُ عِبَادَةً |
| আল্লাহ তায়ালা তার বান্দাদের কাছে অদৃশ্য করে রেখে দিয়েছেন; অবশ্যই তাঁর ওয়াদা পূরণ হয়েই থাকবে। | بِالْغَيْبِ وَلَيْ النِّي وَعَلَيْ مَا تَيًّا |
| ৬২. সেখানে তারা কোনো অর্থহীন কথা ওনতে পাবে না, (চারদিকে থাকবে) ওধু শান্তি (আর শান্তি); সেখানে | ٦٢ لَا يَسْمَعُونَ فِيْهَا لَغُوًّا إِلَّا سَلْمًا ، وَلَهُرْ |
| ১৯ সূরা মারইয়াম | মন্যিল ৪ |

| কোরং | মান শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|-----------------------|--|---|
| সকাল | সন্ধ্যা তাদের জন্যে (নিত্য নতুন) রেযেকের থাকবে। | رِزْقَهُمْ فِيهَا بُكُرَةً وَعَشِيًّا |
| ৬৩. | এ হচ্ছে জান্লাত, আমার বান্দাদের মাঝে যারা গোর আমি তধু তাদেরই এর অধিকারী বানাবো। | ٦٣ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُوْرِتُ مِنْ عِبَادِنَا |
| | | مَنْ كَانَ تَقِيًّا |
| তোমা | ফেরেশতারা বললো, হে নবী,) আমরা কখনো র মালিকের আদেশ ছাড়া (যমীনে) অবতরণ ক্রি | ١٣ وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْ رَبِّكَ عَلَمٌ مَا بَيْنَ |
| | ামাদের সামনে পেছনে যা কিছু আছে, যা কিছু এর মধ্যবর্তী স্থানে, তা সবই তো তাঁর জন্যে, | أَيْنِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ |
| |) তোমার মালিক (ক্খনো কাউকে) ভূলে থাকেন না, চনিই আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক এবং (তিনি | رَبُّكَ نَسِياء |
| মালিক |) এদের উভয়ের মাঝে যা কিছু আছে (তারও), ব তোমরা একমাত্র তাঁরই গোলামী করো, তাঁর | ٢٥ رَبُّ السَّمٰوٰسِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُنْ اللَّهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ * هَلْ تَعْلَمُ لَا اللَّهُ |
| গোলা (-গুণ | মীর ওপরই কায়েম থাকো, তুমি তাঁর সম স্পন্ন এমন) কোনো নাম কি জানো (যে, তুমি তার মী করবে!) | فاعبن، واصطبر نِعِبادَنِهُ اهل تعلی ته سَیاع |
| ৬৬. (মৃত্যু | কিছু সংখ্যক মূর্খ) মানুষ বলে, (একবার) আমার হলে আমি কি জীবিত অবস্থায় (মাটির ভেতরে পুনরুখিত হবোঃ | ٢٦ وَيَقُوْلُ الْإِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتَّ لَسَوْنَ ٱخْرَجُ مَيًّا |
| এর অ | এ নির্বোধ) মানুষটি কি (একবারও) চিন্তা করে না, াগে তো আমিই তাকে সৃষ্টি করেছি; অথচ সে তখন ছিলো না। | ٦٤ أَوَلَا يَنْأَكُو الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنُهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكَ شَيْئًا |
| এদের অতপ্র | মতএব তোমার মালিকের শপথ, আমি অবশ্যই একত্রিত করবো, (একত্রিত করবো) শয়তানদেরও, ব এদের (সবাইকে) হাঁটু গাড়া অবস্থায় জাহান্লামের শে এনে জড়ো করাবো। | ٢٨ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّمُر وَالشَّيْطِيْنَ ثُمَرً لَنُحْضِرَتَّمُر مَوْلَ مَمَتَّر مِثِيًّا ج |
| থেকে | চারপর আমি অবশ্যই এদের প্রত্যেক দলের মধ্য দয়াময় আল্লাহ তায়ালার প্রতি যারা সবচাইতে বিদ্রোহী (ছিলো), তাদের (খুঁজে খুঁজে) বার করে আনবো। | ٦٩ ثُرَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ هِيْعَةٍ أَيَّمُرْ أَهَنَّ عَلَى الرَّهْمٰ عِتِيًّا ع |
| ৭০. অধিক জানি ৷ | ওদের মধ্যে যারা (জাহান্নামে) নিক্ষিপ্ত হবার তর যোগ্য, আমি তাদের সবার চাইতে বেশী | 4 ثُرَّ لَنَحْنُ اَعْلَرُ بِالَّذِينَ هُر اَوْلَى بِهَا طِيًّا |
| হবে ন হচ্ছে (| জাহান্নামে তোমাদের মধ্যে) এমন একজ্বন ব্যক্তিও াা, যাকে এর ওপর দিয়ে পার হতে হবে না, এটা তোমার মালিকের অমোঘ সিদ্ধান্ত। | ا ﴾ وَإِنْ مِّنْكُرْ إِلَّا وَارِدُهَا جَكَانَ عَلَى رَبِّكَ حَثْهًا مَّقْضِیًّا ج |
| 0141 | এ পার হওয়ার সময়) আমি শুধু ওসব মানুষদেরই করিয়ে নেবো যারা দুনিয়ার জীবনে (আল্লাহ াাকে) ভয় করেছে, (অবশিষ্ট) যালেমদের আমি নু অবস্থায় সেখানে রেখে দেবো। | ٢٥ ثُرَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَارُ الظَّلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا |
| | তাদের সামনে যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ ওয়াত করা হয়েছে, তখন যারা (ঈমানের বদলে) | ٢٠ وَإِذَا تُتَلَّى عَلَيْهِمْ أَيْتُنَا بَيِّنْتٍ قَالَ |
| কুফরী | করেছে তারা ঈমানদারদের লক্ষ্য করে বলে (বলো আমাদের উভয় দলের মাঝে কোন্ দলটি মর্যাদায় | |
| | র ও কোন্ দলের মাহফিল বেশী শানদার! | الْفَرِيْقَيْنِ غَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَى نَكِيًّا |
| ১৯ স | রা মারইয়াম | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ব্রালা আলাম |
|---|---|
| ৭৪. অথচ ওদের পূর্বে কতো (শানদার মাহফিলের অধিকারী) মানবগোষ্ঠীকে আমি নির্মূল করে দিয়েছি, যারা | ٢٠ وكَر أَهْلَكْنَا قَبْلَهُر مِّنْ قَرْن هُر أَهْسَ |
| (আজকের) এ (কাফেরদের) চাইতে সহায় সম্পদ ও প্রাচুর্যের বাহাদুরীতে ছিলো অনেক শ্রেষ্ঠ! | أَثَاثًا وَّرِنْيًا |
| ৭৫. (হে নবী, এদের) বলো, যে ব্যক্তি গোমরাহীতে (নিমজ্জিত) থাকে, তাকে দয়াময় আল্লাহ তায়ালা অনেক ঢিল দিতে থাকেন∼ যতোক্ষণ না তারা সে (বিষয়)-টি | 40 قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلْلَةِ فَلْيَهْلُدُ لَهُ |
| (স্বচক্ষে) প্রত্যক্ষ করবে, যে বিষয়ে তাদের সতর্ক করা হচ্ছে– হয় তা (হবে) আল্লাহ তায়ালার শান্তি, নতুবা হবে | الرَّهْلَىٰ مَنَّا أَهُ مَتَّى إِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَنُوْنَ إِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَنُوْنَ مَنْ إِنَّا السَّاعَةَ م فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ |
| কেয়ামত, (তেমন সময় উপস্থিত হলে) তারা অচিরেই একথা জানতে পারবে, কোন্ ব্যক্তিটি মর্যাদায় নিকৃষ্ট ছিলো এবং কার জনশক্তি ছিলো দুর্বল! | هُوَ شُرٌّ مَّكَانًا وَّ أَشَعَفُ جُنْلًا |
| ৭৬. (এর বিপরীত) যারা হেদায়াতের পথে চলে, আল্লাহ তায়ালা তাদের হেদায়াতের পরিমাণ বাড়িয়ে দেন; (হে নবী,) তোমার মালিকের কাছে তো স্থায়ী জিনিস হিসেবে | ٢٠ وَيَزِيْنُ اللّهُ الَّذِيْنَ اهْتَنَوْا هُنَّى ا |
| নিন্, তেনার মানিকের কান্তে তেন হারা জানিকা ব্রেকে (মানুষের) নেক আমলই হচ্ছে সর্বোৎকৃষ্ট পুরস্কার- পাবার দিক থেকে থেমন (তা ভালো), প্রতিদান হিসেবেও (তা তেমনি উত্তম)। | وَالْبَقِيْتُ الصَّلِحَٰتُ غَيْرٌ عِنْنَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّغَيْرٌ مُرَدًّا |
| ৭৭. তুমি সে ব্যক্তির অবস্থা লক্ষ্য করেছো কি– যে আমার আয়াতসমূহকে প্রত্যাখ্যান করে এবং (ঔদ্ধত্যের | 44 أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِالْمِتِنَا وَقَالَ |
| সাথে) বলে বেড়ায়, (কেয়ামতের হলে সেদিন) আমাকে অবশ্যই (আমার) মাল ও সস্তান দিয়ে দেয়া হবে। | لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَكًا ؞ |
| ৭৮. সে কি গায়বের) কোনো খবর পেয়েছে? না দয়াময় আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে (এ ব্যাপারে) সে কোনো প্রতিশ্রুতি আদায় করে নিয়েছে! | 4 أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَا اتَّخَلَ عِنْلَ الرَّمْلِي عَهْلًا لا |
| ৭৯. না (এর কোনোটাই নয়), যা কিছু সে বলে আমি তার (প্রতিটি কথাই) লিখে রাখবো এবং সে হিসেবেই (কেয়ামতের দিন) আমি তার শান্তি বাড়াতে থাকবো, | 44 كَلَّاء سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَهُنَّ لَهُ مِنَ الْعَنَابِ مَنَّالًا |
| ৮০. সে (তার শক্তি সমর্থ সম্পর্কে আজ) যা কিছু বলছে আমিই হবো তার অধিকারী, আর সে একান্ত একাকী (অবস্থায়ই) আমার কাছে (ফিরে) আসবে। | ٨٠ وَّنُوِثُهُ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَوْدًا |
| ৮১. এরা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে অন্যদের মাবুদ বানায়, যেন এরা তাদের জন্যে সাহায্যকারী হতে পারে, | ٨١ وَاتَّخَلُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ أَلِهَةً لِيَكُوْنُوْا لَهُرْعِزًّا لا |
| ৮২. কিন্তু না; (কেয়ামতের দিন বরং) এরা তাদের এবাদাতের কথা (সম্পূর্ণত) অস্বীকার করবে, এরা (তখন) তাদের বিপক্ষ হয়ে যাবে। | ٨٢ كَلَّا ، سَيَكْقُرُونَ بِعِبَادَتِهِرْ وَيَكُوْنُونَ عَلَيْهِمْ وَيَكُوْنُونَ عَلَيْهِمْ وَيَكُوْنُونَ عَلَيْهِمْ ضِلَّاع |
| ৮৩. (হে নবী,) তুমি কি (এ বিষয়টির প্রতি) লক্ষ্য করোনি, আমি (কিভাবে) কাফেরদের ওপর শয়তানদের ছেড়ে দিয়ে রেখেছি, তারা (আল্লাহ তায়ালার বিরুদ্ধে) তাদের ক্রমাগত উৎসাহ দান করছে, | ٨٣ أَلَرْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيْطِيْنَ عَلَى الثَّيْطِيْنَ عَلَى الثَّيْطِيْنَ عَلَى الْكُفِرِيْنَ تَوُّزُّمُرْ أَزًّا لا |
| ৮৪. অতএব, তুমি এদের (আযাবের) ব্যাপারে কোনো রকম তাড়াহুড়ো করো না; আমি তো এদের (চূড়ান্ত ধ্বংসের) দিনটিই গণনা করে যান্তি, | ٨٣ فَلَا تَعْجَلُ عَلَيْهِرْ ، إِنَّهَا نَعُنَّ لَهُرْ عَنَّا عَ |
| ৮৫. সেদিন আমি পরহেযগার বান্দাদের সম্মানিত মেহমান হিসেবে দয়াময় আল্লাহ তায়ালার কাছে একত্রিত করবো, | |
| ১৯ সূরা মারইয়াম | মন্যিল ৪ |

660

মন্যিল ৪

করিনি যে, তুমি (এর দ্বারা) কষ্ট পাবে,

২০ সুরা ত্বাহা

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্লো আলাম |
|--|--|
| ৩. এ (কোরআন) তো হচ্ছে বরং (কষ্ট থেকে মুক্তি পাওয়ার) একটি (উপায় ও) নসীহত মাত্র- সে ব্যক্তির জন্যে, যে (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে, | ٣ إِلَّا تَنْكِرَةً لِّهَىْ يَ َّف ْشٰى لا |
| ৪. (এ কেতাব) তাঁর কাছ থেকে অবতীর্ণ, যিনি যমীন ও সমুক্ত আকাশসমূহ সৃষ্টি করেছেন; | ٣ تَنْزِيْلًا مِّشْ غَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّلُوٰتِ الْعُلٰى، وَالسَّلُوٰتِ الْعُلٰى، |
| ৫. দয়াময় আল্লাহ তায়ালা মহান আরশে সমাসীন হলেন। | ٥ اَلرَّمْلٰیُ عَلَی الْعَرْشِ اسْتَوٰی |
| ৬. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে, যা কিছু আছে এ দুয়ের মাঝখানে এবং যমীনের অনস্ত গভীরে, তা (সবই) তাঁর জন্যে। | لَه ما في السَّاوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُما وَمَا تَحْتَ الشَّوٰى |
| (হে মানুষ,) তুমি যদি জোরে কথা বলো তা (যেমন) তিনি শুনতে পান, (তেমনি) গোপন কথা বিরং তার চাইতেও গোপন যা) তাও তিনি জানেন। | وَإِنْ تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ فَالَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى |
| ৮. আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কোনো মাবুদ নেই, যাবতীয় উত্তম নাম তাঁর জন্যেই (নিবেদিত)। | أَللَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا مُوا لَهُ الْإَسْبَاءُ الْحُسْنَى |
| ৯. (হে নবী,) তোমার কাছে কি মৃসার কাহিনী পৌছেছে? | ٩ وَهَلْ أَتْدِيكَ حَرِيْثُ مُوْسَى م |
| ১০. (বিশেষ করে সে ঘটনাটি-) যখন সে (দূরে) আগুন দেখলো এবং তার পরিবারের লোকজনদের বললো, | ١٠ إِذْ رَأْ نَارًا فَقَالَ لِإَهْلِهِ امْكُثُواۤ إِنِّيٓ |
| তোমরা (এখনে অপেক্ষায়) থাকো, আমি সত্যিই কিছু আগুন দেখতে পেয়েছি, সম্ভবত তা থেকে কিছু আগুনের টুকরো | انسَتُ نَارًا لَّعَلِّي أَتِيكُر مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ |
| আমি তোমাদের কাছে নিয়ে আসতে পারবো, কিংবা তা দারা আমি (পথদাট সংক্রান্ত) কোনো নির্দেশ পেয়ে যাবো! | اَجِلُ عَلَى النَّارِ مُلِّي |
| ১১. অতপর সে যখন সে স্থানে পৌছুলো তখন তাকে আহ্বান করে বলা হলো, হে মৃসা; | ا ا فَلَهَا اَتْدِهَا تُودِي يَهُوسَى ا |
| ১২. নিক্রয়ই আমি, আমিই হচ্ছি তোমার মালিক, তুমি তোমার জুতো দুটো খুলো ফেলো, কেননা তুমি এখন পবিত্র 'তুয়া' উপত্যকায় (দাঁড়িয়ে) আছো; | السِّي آنا رَبُّك فَاعْلَعْ نَعْلَيْك ج إِنَّك إِلْهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّلَّالِي اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّ |
| ১৩. আমি তোমাকে (নবুওতের জন্যে) বাছাই করেছি, অতএব যা কিছু তোমাকে এখন ওহীর মাধ্যমে বলা হচ্ছে তা মনোযোগের সাথে শোনো। | ١٣ وَ أَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَهِعْ لِهَا يُوْمَٰى |
| ১৪. আমিই হঙ্গি আল্লাহ তায়ালা, আমি ছাড়া দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই, অতএব তুমি তথু আমারই এবাদাত করো এবং আমার ক্ষরণের জন্যে নামায প্রতিষ্ঠা করো। | ١٣ اِنَّنِيَ ۚ اَنَا اللَّهُ كَ ۚ اِلْهَ اِئِّاۤ اَنَا فَاعْبُدُنِی ٛ لا وَاَقِیرِ الصَّلُوةَ لِلِٰکُرِی |
| ১৫. কেয়ামত অবশ্যই আসবে, আমি (এক সুনির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত) তা গোপন করে রাখতে চাই, যাতে করে প্রতিটি | ١٥ إِنَّ السَّاعَةَ أَتِيَةً أَكَادُ ٱغْفِيْهَا لِتُجْزِي |
| ব্যক্তিকে কেয়ামতের দিন নিজ নিজ কর্ম অনুযায়ী প্রতিদান দেয়া যায়। | كُلُّ نَفْسٍ ا بِهَا تَسْعَى |
| ১৬. যে ব্যক্তি কেয়ামত দিবসের ওপর বিশ্বাস করে না এবং যে নিজ প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, সে যেন তোমাকে ওতে বিশ্বাস স্থাপন থেকে কখনো বাধা দিতে না পারে, | ١٦ فَلَا يَصُلَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ ۗ لَا يُؤْمِنُ بِهَا |
| (এমনটি করলে) অতপর তুমি নিজেই ধ্বংস হয়ে যাবে, | وَ اللَّبَعَ هُولًا فَتَرُدنى |
| ১৭. হে মৃসা (বলো তো), তোমার ডান হাতে ওটা কি? | ١٤ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يُمُوْسَٰى |
| ২০ সূরা ত্বাহা | মন্যিল ৪ |

| ঠেন সকলো, এটি হচ্ছে আমার (হাতের) লাঠি, আমি বিজ্ঞান পরার প্রক্তির নির্মাণ বিজ্ঞান পরার করে করের নির্মাণ বিজ্ঞান পরার করের বিলো আরুর বিজ্ঞান বিজ্ঞান করের করের নির্মাণ বিজ্ঞান করের নির্মাণ নির্মাণ করের নির্মাণ বিজ্ঞান করের নির্মাণ করের নির্মাণ বিজ্ঞান করের নির্মাণ বিজ্ঞান করের নির্মাণ বিজ্ঞান করের নির্মাণ বিজ্ঞান ব | Charles will be seen and a seen and a seen and a seen a se | |
|--|--|---|
| (কথন কথন) এর ওপর জর দিই, আবার কথনো তা দিয়ে আমি আমার মেষের জনে। (জনে) পাতা পাড়ি, তা ছাড়াও এর মধ্যে আমার জনো আরো অনেক কাচ্চ আছে। ১৯. আলাহ ভাষালা বললেন, হে মূসা, ভূমি তা (মাটিতে) নিক্লেপ করে। ২০. অভপর সে তা (মাটিতে) নিক্লেপ করলে।, সাথে সাথের আমার অবলেক কাচ্চ আছে। ২০. আভগর সে তা (মাটিতে) নিক্লেপ করলে।, সাথের সাথের তা সাপ হয়ে (এদিক ওদিক) ছুটাছুটি করতে লাগলো। ২১. আলাহ ভাষালা বললেন (হে মূসা), ভূমি একর ধরে।, ত্বর আরাল্য বললেন (হে মূসা), ভূমি একর ধরে।, ত্বর প্রের আরাল্য বললেন (হে মূসা), ভূমি একর ধরে।, ত্বর প্রের আরাল্য বললের আকৃতিতে ফিরিয়ে আনন্ধি। ২২. (হে মূসা, এবার) ভূমি তোমার হাত তোমার বগলের রাখের অভপর (দেববে) আমি গুলমারক করে করের বিয়ের আসবে, এ হকে (আমার) পরবর্তী নিদর্শন। ২৩. (একলো এ জনে দেয়া হলো বনদা সামি তোমাকে আনার (কুদরতের আরাল্য) বড়া বন্দা করে আরা বছাল বদা করে হেলেহে। ২৪. হোঁ, এবার এগুলো নিয়ে) ভূমি ফেরাউনের কাছে যাও, কেননা সে (নিজেকে মাবুদ দাবী করে মারাজ্যক) সীমালংদেন করে ফেলেহে। ২৫. সে বললো, হে আমার মালিক, ভূমি আমার জনো আমার বন্দকে করে কলেলে; ২১. আমার কাজ আমার জনো সহজ করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার জনো সহজ করে দাও, ২৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (জালো করে) বুঝতে পারি, ১৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. তারন হলে আমার লাই (তাকেই বরং ভূমি আমার সহযোগার্কীর বিনিয়ে দাও), ৩১. তার বারা ভূমি আমার করে করে ভূমি আমার সনকর সহযোগীর বিনিয়ে দাও), ৩১. তারে আমার করের অনির অনিয়ে দাও, ৩১. তানে আমার করের অনের বিজনের সম্যক্ত দুরি ১৫. টেন্টুটি ফিন্টুটি ফিন্টুটি করি করে। ৩৪. তোমাকে বেলী বরবী স্বন্ধ করেকে পারি, ৩৪. তামাকে করেনা বিজনের করেতে পারি; ৩৫. নিন্মই ভূমি আমানের (কর্যক্রমের) সম্যক দুষ্টা। তিও. তিনি বলপেন, হে মূসা, ভূমি যা কিছু চেয়েছে। তা (সরব্দী) এক্টিট ফ্রন্টুটি করে লিক্লিয়ে দাও), ৩১. তিনি বলপেন, হে মূসা, ভূমি যা কিছু চেয়েছে। তা তা করে করিটি করিলে করিটি করিলে তা করের করিটে নিক্রমির করের করের করে করে করে করে করে করের করে করে | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ কুলা আলাম |
| ১৯. আরার ভারালা বললেন, হে মুসা, ভূমি তা (মাটিতে) নিজেপ করেলা, সাথে সাথেই তা সাপ হরে (এদিক ওদিক) ছুটাছুটি করতে লাগালো। ২০. অতপর সে তা (মাটিতে) নিজেপ করেলা, সাথে সাথেই তা সাপ হরে (এদিক ওদিক) ছুটাছুটি করতে লাগালো। ২১. আরাহ তারালা বললেন (হে মুসা), ভূমি একে ধরো, ভ্রম শেরোন লা। (দেখনে) আমি এখনই তাকে তার আগোর আকৃতিতে ফিরিয়ে আনছি। ২২. (হে মুসা, এবার) ভূমি তোমার হাত তোমার বগলে রাখো, অওপর (দেখনে) কানো রকম (অসুখজনিত) দেবিকটি ছাড়াই তা নির্মল উজ্জুল হরে বেরিয়ে আসবে, এ হছে (আমার) পরবর্তী নির্দর্শন। ২০. একলো এ জন্যে দেরা হলো যেন) আমি তোমাকে আমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেরা হলে। যেন) আমি তোমাকে আমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেরা হলে। যেন) আমি হোমাকে আমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেরা হলে। যেন) আমি হোমাকে আমার করে ফেলেছে। ২৫. সে বললে।, হে আমার মালিক, ভূমি আমার জন্যে সামার করে করে কেলেছে। ২৫. আমার জিহবা থেকে জড়তা দূর করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার জন্যে সহল্ক করে দাও, ২৬. আমার জিহবা থেকে জড়তা দূর করে দাও, ২৮. মাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বুঝাতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ০০. হাকন হচ্ছে আমার ভাই (ভাকেই বরং ভূমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা ভূমি আমার ভিতরে মিলে) তোমার অনেক পরিয়ে আমার করের অমারা (উভরে মিলে) তোমার অনেক পরিরা বানিয়ে দাও), ৩১. তাকে আমার জাকরে অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩০. থাকে করে আমার ভিতরে মিলে) তোমার অনেক পরিয়ে তা মহিমা ঘোখণা করতে পারি; ৩০. কিন বললন, হে মুসা, ভূমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকৈ দেয়া টেনিটি হুনি তানিটি হুনি তানিটি হুনি তানিটে দার্লী হুনি তানিটি হুনি তানিটি হুনি তানিটি হুনি তানিটি হুনি তানিটি হুনি তানিটে তানিটি হুনি তানিটে দার্লী তানিটে দার্লী করে করে তারি; ৩০. তিনি বললেন, হে মুসা, ভূমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | (কখনো কখনো) এর ওপর ভর দিই, আবার কখনো তা দিয়ে | |
| | এর মধ্যে আমার জন্যে আরো অনেক কাজ আছে। | |
| जारावर्ष का जान रहा (এদিক ওদিক) कृष्ठाकृष्ठि कराज लागला। ১১. आज्ञार कांग्राला नललान (रर भूजा), कृषि এरक धराता, का পराया ना। (पनधर) आणि अवनरे कांक कांत्र आर्था ना। (पनधर) आणि अवनरे कांक कांत्र आर्था ना। (पनधर) अणि अवनरे कांक कांत्र आर्था ना। (पनधर) कृष्णि अवनरे कांक कांत्र आर्था आकृष्ठिक किंद्रिय आनिक। २২. (रर भूजा, এবার) कृषि कांत्र कांत्र (अञ्चलकांत्र) कर्म क्ष्य कांत्र (पत्र कर्ष अञ्चलकांत्र) कर्म क्ष्य कराय (अञ्चलकांत्र) कर्म क्ष्य कराय (अञ्चलकांत्र) कर्म क्ष्य कराय (अञ्चलकांत्र) कर्म कृष्णे कराय (अञ्चलकांत्र) कर्म कृष्णे कराय (अञ्चलकांत्र) अर्थ कर्म कराय (अञ्चलकांत्र) अर्थ कराय कराय (अञ्चलकांत्र) कराय कराय (अञ्चलकांत्र) कराय कराय कराय कराय कराय कराय कराय कराय | (মাটিতে) নিক্ষেপ করো। | |
| ज्या प्राचान का क्रिका (प्रनिद्ध) आप्ता व्यवन का का क्रिका व्यवन का का क्रिका व्यवन का क्रिका व्यवन का क्रिका व्यवन का क्रिका वार्ति का व्यवन का क्रिका वार्ति का वा | সাথেই তা সাপ হয়ে (এদিক ওদিক) ছুটাছুটি করতে লাগলো। | |
| ज्या प्राचान का क्रिका (प्रनिद्ध) आप्ता व्यवन का का क्रिका व्यवन का का क्रिका व्यवन का क्रिका व्यवन का क्रिका व्यवन का क्रिका वार्ति का व्यवन का क्रिका वार्ति का वा | | ٢١ قَالَ خُنْهُمَا وَكُمْ تَخَفُ بِنن سَنُعَيْنُهُمَا |
| দেষক্রিট ছাড়াই তা নির্মল উজ্জ্বল হয়ে বেরিয়ে আসবে, এ হচ্ছে (আমার) পরবর্তী নিদর্শন। ২৩. (এগুলো এ জন্যে দেয়া হলো যেন) আমি তোমাকে আমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেখাতে পারি। ২৪. (হাঁ, এবার এগুলো নিয়ে) ভূমি ফেরাউনের কাছে যাও, কেননা সে (নিজেকে মাবুদ দাবী করে মারাত্মক) সীমালংঘন করে ফেলেছে। ২৫. সে বললো, হে আমার মালিক, ভূমি আমার জন্যে আমার বহুকে প্রশন্ত করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার করা, সহজ্ঞ করে দাও, ২৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বুঝতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারুন হচ্ছে আমার ভাই (তাকেই বরং ভূমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তারে হারা ভূমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩২. তাকে আমার (উভরে মিলে) তোমার অনেক পবিক্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি; ৩৫. নিন্ডয়ই ভূমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যুক দ্রষ্টা। ৩৬. ভিনি বললেন, হে মুসা, ভূমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | | سِيْرَتَهَا الْأُولٰي |
| २७. (এগুলো এ জন্যে দেয়া হলো যেন) আমি তোমাকে আমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেখাতে পারি। २८. (হাঁ, এবার এগুলো নিয়ে) ভূমি ফেরাউনের কাছে যাও, কেননা সে (নিজেকে মাবুদ দাবী করে মারাত্মক) সীমালংঘন করে ফেলেছে। २৫. সে বললো, হে আমার মালিক, ভূমি আমার জন্যে আমার বক্ষকে প্রশন্ত করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার জন্যে সহক্ষ করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার জন্যে সহক্ষ করে দাও, ২৭. আমার জিহ্বা থেকে জড়তা দূর করে দাও, ২৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বৃঝতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার রাহ্যথাকারী বানাও, ৩০. হারুন হক্ষে আমার ভাই (তাকেই বরং ভূমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা ভূমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ২১. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩১. তারে করে আমার (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেনী বেনী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিক্রই ভূমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রন্তী। ৩৬. তিনি বললেন, হে মূসা, ভূমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | রাখো, অতপর (দেখবে) কোনো রকম (অসুখজনিত) | |
| आমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেখাতে পারি। 28. (হাঁ, এবার এগুলো নিয়ে) তুমি ফেরাউনের কাছে যাও, কেননা সে (নিজেকে মাবুদ দাবী করে মারাত্মক) সীমালংঘন করে ফেলেছে। २৫. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি আমার জন্যে আমার বক্ষকে প্রশস্ত করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার জন্যে সহজ করে দাও, ২৭. আমার জিহ্বা থেকে জড়তা দূর করে দাও, ২৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বুঝতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারূন হচ্ছে আমার ভাই (তাকেই বরং তুমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩১. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩০. থাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিকরই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। ৩৬. তিনি বললেন, হে মুসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | এ হচ্ছে (আমার) পরবর্তী নিদর্শন। | بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرٍ سُوْءٍ أَيَةً ٱخْرَى لا |
| যাও, কেননা সে (নিজেকে মাবুদ দাবী করে মারাত্মক) সীমালংঘন করে ফেলেছে। ২৫. সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি আমার জন্যে আমার বক্ষকে প্রশস্ত করে দাও, ২৬. আমার কাজ আমার জন্যে সহজ্ঞ করে দাও, ২৭. আমার জিহবা থেকে জড়তা দূর করে দাও, ২৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বুঝতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারূন হচ্ছে আমার ভাই (তাকেই বরং তুমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩১. যাতে করে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিকরই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রন্তী। ৩৬. তিনি বললেন, হে মুসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | আমার (কুদরতের আরো) বড়ো বড়ো নিদর্শন দেখাতে পারি। | |
| २७. আমার কাজ আমার জন্যে সহজ করে দাও, २१. আমার জিহ্বা থেকে জড়তা দূর করে দাও, २१. আমার জিহ্বা থেকে জড়তা দূর করে দাও, २४. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বৃঝতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারূন হচ্ছে আমার ভাই (ভাকেই বরং তুমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩৩. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি; ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিক্ষই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রন্তা। ৩৬. তিনি বললেন, হে মূসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | যাও, কেননা সে (নিজেকে মাবুদ দাবী করে মারাত্মক) | ٢٣ إِنْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ع |
| २٩. আমার জিহ্বা থেকে জড়তা দূর করে দাও, ১৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বুঝতে পারে, ১৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারূন হচ্ছে আমার ভাই (তাকেই বরং তুমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার হারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩৩. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিক্রই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রস্তা। ৩৪. তিনি বললেন, হে মুসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | | ٢٥ قَالَ رَبِّ اشْرَحُ لِى ْ مَنْرِى ٛ ٧ |
| २৮. যাতে করে ওরা আমার কথা (ভালো করে) বৃঝতে পারে, ২৯. আমার আপনজনদের মধ্য থেকে (একজনকে) আমার সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারুন হচ্ছে আমার ভাই (ভাকেই বরং তুমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩১. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিক্রই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রন্তা। ৩৬. তিনি বললেন, হে মৃসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | ২৬. আমার কাজ আমার জন্যে সহজ করে দাও, | ٢٦ وَيَسِّر لِيَّ ٱمْرِي لا |
| حه. سامام سام سام سام سام سام سام سام سام س | ২৭. আমার জিহ্বা থেকে জড়তা দূর করে দাও, | ٢٠ وَاهْلُلْ عُقْنَةً مِّنْ لِسَانِي ٧ |
| जामात সাহায্যকারী বানাও, ৩০. হারূন হচ্ছে আমার ভাই (তাকেই বরং তুমি আমার সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার ঘারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩৩. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিশ্চয়ই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। ৩৬. তিনি বললেন, হে মুসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | | ٢٨ يَفْقَهُوا قُولِي ْ س |
| সহযোগী বানিয়ে দাও), ৩১. তার দ্বারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩৩. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিশ্চয়ই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা । ৩৬. তিনি বললেন, হে মূসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | | ٢٩ وَاجْعَلُ لِّي وَزِيْرًا مِّن ٱهْلِي ٧ |
| ত২. তাকে আমার কাজের অংশীদার বানিয়ে দাও, ৩৩. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিশ্চয়ই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। ৩৬. তিনি বললেন, হে মূসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | | |
| ৩৩. যাতে করে আমরা (উভয়ে মিলে) তোমার অনেক পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিশ্চয়ই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। ৩৬. তিনি বললেন, হে মূসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | ৩১. তার দারা তুমি আমার শক্তি বৃদ্ধি করো, | ٣١ اهْنُدْ بِهِ ٱزْرِى ٤ |
| পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, ७৪. তোমাকে বেশী বেশী স্বরণ করতে পারি; ৩৫. নিক্তরই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা । ७৬. তিনি বললেন, হে মূসা, তুমি যা কিছু চেয়েছো তা (সবই) তোমাকে দেয়া হলো । | <u> </u> | ٣٢ وَ اَشْرِكْهُ فِي ٓ اَمْرِیْ ٧ |
| ৩৫. निक्तारे তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। اِنْكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا وَكِيْتَ بِنَا بَصِيْرًا وَكُنْتَ بَالْكَ يُنُوسَى وَفَالَ قَلْ أُوتِيْتَ سُؤْلَكَ يُبُوسَى (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি, | |
| ৩৫. निक्तारे তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। اِنْكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا وَكِيْتَ بِنَا بَصِيْرًا وَكُنْتَ بَالْكَ يُنُوسَى وَفَالَ قَلْ أُوتِيْتَ سُؤْلَكَ يُبُوسَى (সবই) তোমাকে দেয়া হলো। | ৩৪. তোমাকে বেশী বেশী শ্বরণ করতে পারি; | ٣٣ وَّنَنْكُرَكَ كَثِيْرًا ، |
| (সবই) তোমাকে দেয়া হলোঁ। | ৩৫. নিশ্চয়ই তুমি আমাদের (কার্যক্রমের) সম্যক দ্রষ্টা। | |
| ২০ সূরা ত্বাহা ৩১৩ মন্যিল ৪ | | ٣٦ قَالَ قَنْ أُوتِيْتَ سُؤْلَكَ يُبُوسَى |
| | ২০ সূরা ত্বাহা | भनियल 8 |

820

২০ সূরা ত্বাহা

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ কালা আলাম |
|---|--|--|
| | ৪৭. সুতরাং তোমরা উভয়ই তার কাছে যাও এবং বলো, আমরা তোমার মালিকের পাঠানো দুজন রসূল, অতএব (এ নিপীড়িত) বনী ইসরাঈলের লোকদের তুমি আমাদের সাথে যাবার (অনুমতি) দাও, তুমি তাদের (আর) কট | ٣٤ فَأْتِيلُهُ فَقُولًا إِنَّا رَسُولًا رَبِّكَ فَٱرْسِلُ مَعْنَا بَنِيْ إِشْرَآءِيْلَ لا وَلَا تُعَنِّبْهُمْ مَقَلْ |
| | দায়ে বাবার (অনুমাত) দাও, ত্বাম তাদের (আর) কচ দিয়ো না; আমরা তোমার কাছে তোমার মালিকের কাছ থেকে (নবুওতের) নিদর্শন নিয়ে এসেছি; এবং যারা এই হেদায়াতের অনুসরণ করবে তাদের জন্যে (রয়েছে | جِئْنَكَ بِأَيَةٍ مِّنَ رَّبِكَ لَا وَالسَّلْمُ عَلَى مَنِ التَّلْمُ عَلَى مَنِ التَّبْعَ الْهُلْيِ |
| | অনাবিল) শান্তি। | |
| | ৪৮. আমাদের ওপর (এ মর্মে) ওহী নাযিল করা হয়েছে, যে ব্যক্তি (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করবে এবং যে ব্যক্তি (তার আদেশ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেবে, তার ওপর | مُ إِنَّا قَنْ ٱوْحِى إِلَيْنَا آنَّ الْعَنَ ابَ عَلٰى مَنْ كَنَّبَ وَتَوَلَّى |
| ŀ | আল্লাহর আযাব (পড়বে)। ৪৯. (এসব শোনার পর) ফেরাউন বললো, হে মূসা (বলো), কে (আবার) তোমাদের দু'জনের মালিকঃ | . ۲۹ قَالَ فَهَنْ رَبُّكُهَا يُوسِٰى |
| l | ৫০. সে বললো, আমাদের মালিক তিনি, যিনি প্রতিটি জিনিসকে তার (যথাযোগ্য) আকৃতি দান করেছেন, অতপর (সবাইকে তাদের চলার পথ) বাতলে দিয়েছেন, | ٥٠ قَالَ رَبَّنَا الَّذِي ٓ أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ تُرَّ مَنٰى |
| | ৫১. সে বললো, তাহলে আগের লোকদের অবস্থা কি হবেঃ | ٥١ قَالَ فَهَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْأُوْلٰي |
| | ৫২. সে বললো, সে বিষয়ের জ্ঞান আমার মালিকের কাছে (সংরক্ষিত বিশেষ) গ্রন্থে মজুদ আছে, আমার মালিক কখনো ভুল পথে যান না– তিনি (কারো) কোনো কথা ভুলেও যান না। | ۵۲ قَالَ عِلْهُمَا عِنْلَ رَبِّى ٛ فِي كِتْبٍ عَ لَا يَضِلُّ رَبِّى وَيْ كِتْبٍ عَ لَا يَضِلُّ رَبِّى وَلَا يَنْسَى رَ |
| | ৫৩. তিনি এমন (এক সন্তা), যিনি তোমাদের জন্যে যমীনকে বিছানা বানিয়ে দিয়েছেন, ওতে তোমাদের (চলার) জন্যে বহু ধরনের পথঘাটের ব্যবস্থা করে | ٥٣ الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُرُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُرُ لِكُرُ فَيْهَا سُبُلًا وَّانْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً م |
| | দিয়েছেন, তিনিই আকাশ থেকে বৃষ্টির পানি প্রেরণ করেন; অতপর তা দিয়ে আমি (যমীন থেকে) বিভিন্ন ধরনের উদ্ভিদ বের করে আনি। | فَاَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاسٍ شَتَّى |
|) | ৫৪. তোমরা (তা) নিজেরা খাও এবং (তাতে) তোমাদের পভদেরও চরাও;ু অবশ্যই এর (মাঝে) বিবেকসম্পন্ন | ٥٣٠ كُلُوْا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ |
| | মানুষদের জন্যে (শিক্ষার) অনেক নিদর্শন রয়েছে। | كَلْيْتٍ لِّلُولِي النَّهٰي ع |
| I | ৫৫. (এই যে যমীন-) তা থেকেই আমি তোমাদের পয়দা করেছি, তাতেই আমি তোমাদের ফিরিয়ে নিয়ে যাবো এবং পরিশেষে তা থেকেই আমি তোমাদের দ্বিতীয় বার | ۵۵ مِنْهَا خَلْقَنْكُمْ وَفِيْهَا تُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا |
| | विवरं भारतम् विकास | نُخْرِجُكُمْ تَارَةً ٱغْرَى |
| | ৫৬. (ফেরাউনের অবস্থা ছিলো,) আমি তাকে আমার যাবতীয় নিদর্শন দেখিয়েছি, কিন্তু (এ সত্ত্বেও) সে (একে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং অবিশ্বাস করেছে। | ٥٦ وَلَقَنْ اَرَيْنُهُ الْيِتِنَا كُلَّهَا فَكَنَّبَ وَاَبَى |
| | ৫৭. (এক পর্যায়ে ফেরাউন বললো,) হে মৃসা, (তুমি কি নবুওতের দাবী নিয়ে) এ জন্যে আমাদের কাছে এসেছো যে, তুমি তোমার যাদু (ও তেলেসমাতি) দিয়ে | ۵۷ قَالَ آجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ آرْضِنَا بِسِحْرِكَ الْمُؤْسَى بِسِحْرِكَ الْمُؤْسَى |
| | আমাদেরকে আমাদের দেশ থেকে বের করে দেবে। | |
| | ৫৮. (হাঁ,) আমরাও তোমার সামনে অতপর অনুরূপ যাদু এনে হাযির করবো, অতএব এসো তোমার এবং আমাদের মাঝে একটি (মোকাবেলার) ওয়াদা ঠিক করে | ٥٨ فَلَنَٱتِينَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِنًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَآ أَنْتَ |
| | নিই, যার আমরাও খেলাপ করবো না, তুমিও করবে না, | |
| L | ২০ সূরা ত্বাহা | মন্থিল ৪ |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|--|--|
| (এটা হবে) খোলা ময়দানে (যেন সবাই তা দেখতে পায়)। | مَكَانًا سُوًى |
| ৫৯. সে বললো, হাঁ তোমাদের সাথে (প্রতিযোগিতার) ওয়াদা হবে (তোমাদের) মেলা বসার দিন, সেদিন মধ্য | ۵۹ قَالَ مَوْعِلُكُرْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى |
| দিনেই যেন লোকজন এসে জমা হয়ে যায়। ৬০. (অতপর) ফেরাউন উঠলো এবং (কথানুযায়ী) যাদুর (সামানপত্র) জমা করলো, তারপর (মোকাবেলা দেখার জন্যে) সে (ময়দানে) এসে হাযির হলো। | ٦٠ فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَهَعَ كَيْلَةٌ ثُرَّ ٱتَى |
| ৬১. মৃসা তাদের (লক্ষ্য করে) বললো, দুর্জোগ হোক তোমাদের, তোমরা কখনো আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা অভিযোগ আরোপ করো না, তাহলে তিনি তোমাদের আযাব দিয়ে সমূলে ধ্বংস করে দেবেন, (আর) যে ব্যক্তি মিথ্যা বানায় সে ব্যর্থ হয়ে যায়। | الا قَالَ لَهُر مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى الله كَنِبًا نَيسُحِتكُمْ بِعَنَابٍ ع وَقَلْ عَابَ مَنِ افْتَرٰى |
| ৬২. (মূসার কথা ওনে) তারা নিজেদের পরিকল্পনার ব্যাপারে একে অন্যের সাথে মতবিরোধ করলো, কিন্তু তারা গোপন সলাপরামর্শ গোপনই রাখলো। | ٦٢ فَتَنَازَعُوْآ اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجُوٰى |
| ৬৩. (ফেরাউনের) লোকজন বললো, অবশ্যই এ দুজন মানুষ হচ্ছে যাদুকর, তারা যাদুর (খেলা) দিয়ে তোমাদের দেশ থেকে তোমাদের বের করে দিতে এবং তোমাদের এ উৎকৃষ্ট জীবন ব্যবস্থার অস্তিত্ব খতম করে দিতে চায়। | ٣٣ قَالُوْ آ إِنْ هٰنَاسِ لَسْحِرْنِ يُرِيْنُ فِ اَنْ يَّكُو اِنْ هُنَاسِ اَنْ يَّخُوِجُكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْوِهِمَا وَيَلْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلَى |
| ৬৪. অতএব (হে যাদুকররা), তোমরা তোমাদের সব যাদু একত্রিত করো, তারপর সারিবদ্ধ হয়ে (যাদু দেখানোর জন্যে) উপস্থিত হয়ে যাও, আজ যে (এ মোকাবেলায়) জয়ী হবে সে-ই হবে সফলকাম। | ٦٢ فَاَجْمِعُوا كَيْنَكُمْ ثُرَّ اثْتُوا مَفَّا ۽ وَقَنْ اَفْلَحَ الْيَوْاَ مَنِ اسْتَعْلَى |
| ৬৫. তারা বললো, হে মৃসা (বলো, আগে) তুমি (তোমার লাঠি) নিক্ষেপ করবে– না আমরা নিক্ষেপ করবোঃ | ٦٥ قَالُوْا يُبُونَى إِمَّا اَنْ تُلْقِى وَاِمَّا اَنْ تُلْقِى وَاِمَّا اَنْ تُلْقِى وَاِمَّا اَنْ تُلُوْنَ اَوْلَ مَنْ اَلْقٰى |
| ৬৬. সে বললো, তোমরাই বরং (আগে) নিক্ষেপ করো, যাদুর প্রভাবে তার কাছে মনে হলো তাদের (যাদুর) রশি ও লাঠিগুলো বুঝি এদিক সেদিক ছুটাছুটি করছে, | ٢٦ قَالَ بَلْ ٱلْقُوْا ء فَاذَا حِبَالُمُرْ وَعِصِيُّهُرْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِمِرْ ٱنَّهَا تَسْعٰى |
| ৬৭. (এতে) মৃসা তার অন্তরে কিছুটা ভয় (ও শংকা) অনুভব করলো। | ٦٤ فَٱوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى |
| ৬৮. আমি বললাম (হে মৃসা), তুমি ভয় পেয়ো না, (শেষতক) অবশ্যই তুমি বিজয়ী হবে। | ١٨ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْيَ الْإَعْلَى |
| ৬৯. (হে মৃসা,) তোমার ডান হাতে যে (লাঠি) আছে তা (ময়দানে) নিক্ষেপ করো, (দেখবে এ যাবত) যা খেলা ওরা বানিয়েছে এটা সেগুলোকে গ্রাস করে ফেলবে, (মূলত) ওরা যা কিছুই করেছে তা তো (ছিলো) নেহায়াত যাদুকরের কৌশল; আর যাদুকর কখনো কামিয়াব হয় না- যে রাস্তা দিয়েই সে আসুক না কেন! | ٢٩ وَٱلْقِ مَا فِي يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا مَنَعُوْا طَالِمٌ وَلَا يُقْلِحُ السَّاحِرُ طَيْنَ وَلَا يُقْلِحُ السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّي السَّاحِرُ طَيْنَ النَّيْنَ النَّي النَّي النَّي النَّي النَّيْنَ النَّي النَّيْنَ النَّيْنِيْنِ النَّيْنَ النَّيْنَ النَّيْنَ النَّامِ النَّيْنَ النَّيْنِ النَّيْنَ النَّيْنِ النَّامِرُ النَّيْنَ النَّانِ النَّيْنَ النَّامِ النَّامِ النَّيْنَ النَّيْنَ النَّيْنِ النَّيْنَ النَّامِ النَّامِينَ النَّيْنِ النَّيْنِ النَّيْنِ النَّامِ النَّيْنِ النَّامِ النَّيْنِ النَّيْنِ النَّامِ النَّامِ النَّيْنِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّيْنِ النَّامِ النَّامِ |
| ৭০. (মৃসার লাঠি বিশাল অজগর হয়ে যাদুকরদের সাপগুলোকে গিলে ফেললো, এটা দেখে) অতপর যাদুকররা সবাই সাজদাবনত হয়ে গেলো এবং তারা বললো, আমরা হারুন ও মৃসার মালিকের ওপর ঈমান আনলাম। | 4 فَالْقِي السَّحَرَةُ سُجَّلًا قَالُوْ الْمَنَّا بِرَبِّ مُرْوِنَ وَمُوسى مُرُونَ وَمُوسى |
| ২০ সূরা ত্বাহা | <u>মন্যিল</u> 8 |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্রালা আলাম |
|---|--|---|
| | ৭১. সে (ফেরাউন) বললো, আমি তোমাদের (এ ধরনের) কোনো অনুমতি দেয়ার আগেই তোমরা তার ওপর ঈমান আনলে! (আমি দেখতে পাচ্ছি) সে-ই হচ্ছে (আসলে) তোমাদের প্রধান) গুরু, যে তোমাদের যাদু শিক্ষা দিয়েছে (দেখো এবার আমি কি করি), আমি তোমাদের হাত পা উল্টো দিক থেকে কেটে ফেলবো, তদুপরি আমি তোমাদের খেজুর গাছের কান্ডে শূলবিদ্ধ করবো, তোমরা অচিরেই জানতে পারবে আমাদের (উভয়ের) মধ্যে কার শান্তি কঠোরতর ও অধিক স্থায়ী। ৭২. তারা বললো, আমাদের কাছে যে স্পষ্ট নিদর্শন এসেছে এবং যিনি আমাদের (এ দুনিয়ায়) পয়দা করেছেন, তাঁর ওপর আমরা কখনোই তোমাকে প্রাধান্য দেবো না, সুতরাং তুমি যা করতে চাও তাই করো; তুমি (বড়ো জোর) এ পার্থিব জীবন সম্পর্কেই কোনো সিদ্ধান্ত | ا حَ قَالَ أَمَنْتُر لَهُ قَبْلَ أَنْ أَذَنَ لَكُرْ ، إِنَّهُ لَكَبِيْرُكُرُ النَّبِي عَلَّمْكُرُ السِّحْرَ ، فَلَا قَطَّعَنَّ الْكَبِيرُكُرُ وَأَرْجُلُكُرْ مِّنْ خِلَانِ وَلَا مَلْبَنَّكُرْ فِي خِلَانِ وَلَا مَلْبَنَّكُرْ فِي خِلَانِ وَلَا مَلْبَنَّكُر فِي خِلَانِ وَلَا مَلْبَنَّكُر فِي خِلَانِ وَلَا مَلْبَنَّكُر فِي خِلَانِ وَلَا مَلْبَنَّكُمْ أَلْفَالًا وَأَبْقُلُ مَا جَلَّا فَا أَنْ اللَّهُ الْبَيِّنْ وَ النَّوْنُ وَلَا عَلَى مَا جَاءَنَا مِن الْبَيِّنْ وَ النَّوْنُ فَظَرَنَا فَا قَضِ مَا جَاءَنَا مِن النَّبِينْ وَ النَّوْنَ فَطَرَنَا فَا قَضِ مَا جَاءَنَا مِن النَّبِينْ وَ النَّوْنَ فَطَرَنَا فَا قَضِ مَا جَاءَنَا مِن النَّيْنُ وَالْفِي فَطَرَنَا فَا قَضِ مَا جَاءَنَا مِن النَّبِينَ وَ النَّذِي فَطَرَنَا فَا قَضِ مَا جَاءَنَا مِن النَّهِ النَّهِ الْفِي فَطَرَنَا فَا قَضٍ مَا النَّهَ الْفَالَ |
| I | গ্রহণ করতে পারবে; | قَاضٍ ، إِنَّهَا تَقْضِى هٰنِهِ الْحَيْوةَ النُّنْيَا ، |
| | ৭৩. আমরা তো আমাদের মালিকের ওপর ঈমান এনেছি, যাতে করে তিনি আমাদের গুনাহসমূহ-(বিশেষ করে) তুমি যে আমাদের যাদু করতে বাধ্য করেছো তা যেন মাফ করে দেন; (আমরা বুঝতে পেরেছি,) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন শ্রেষ্ঠ, তিনিই হচ্ছেন অধিকতরো স্থায়ী। | إِنَّا أَمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَا الْرَحْتِنَا عَلَيْنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ * وَاللّٰهُ غَيْرٌ وَأَبْقى |
| | ৭৪. যে ব্যক্তি কোনো অপরাধে অপরাধী হয়ে তার মালিকের দরবারে হাযির হবে, তার জন্যে থাকবে জাহানাম (আর জাহানাম এমন এক জায়গা); যেখানে (মানুষ মরতে চাইলেও) মরবে না, (আবার বাঁচার মতো করে) বাঁচবেও না! | ٢٥ إِنَّهُ مَنْ يَّاسِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ الْ يَتُوْسُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى |
| | ৭৫. অপর দিকে যে ব্যক্তিই তার কাছে মোমেন হয়ে কোনো নেক কাজ নিয়ে হাযির হবে- তারাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের জন্যে রয়েছে সমুচ্চ মর্যাদা, | 43 وَمَنْ يَّأْتِهِ مُؤْمِنًا قَنْ عَمِلَ الصَّلِطَّتِ فَأُولِّنِكَ لَهُرُ النَّرَجُتُ الْعُلٰى لا |
| } | ৭৬. এমন এক স্থায়ী জান্নাত, যার পাদদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, সেখানে তারা থাকবে চিরকাল; এ হচ্ছে সে ব্যক্তির পুরশ্লার যে (শ্বীয় জীবনকে) পবিত্র রেখেছে। | لَا عَنْكُ عَنْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ خَلِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ خَلِينَ مَنْ تَرَكَّى عَ خَلِينِينَ فِيْهَا لَمُ وَذَٰلِكَ جَزَّوُ الْمَنْ تَزَكِّى ع |
| | ৭৭. আমি মৃসার কাছে এ মর্মে ওহী পাঠিয়েছি, তুমি আমার বান্দাদের নিয়ে রাতের বেলায়ই এ দেশ ছেড়ে চলে যাও এবং (আমার আদেশে) তুমি ওদের জন্যে সমুদ্রের মধ্যে একটি শুষ্ক সড়ক বানিয়ে নাও, পেছন থেকে কেউ তোমাকে ধাওয়া করবে এআশংকা তুমি কখনোই করো না। | ٤٤ وَلَقَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسِّى لَا أَنْ أَسْرِ |
| | ৭৮. (মৃসা তার জাতিকে নিয়ে সাগর পানে বেরিয়ে গেলো,) অতপর ফেরাউন তার সৈন্য সামস্তসহ তাদের পশ্চাদ্ধাবন করলো, তারপর সাগরের (অথৈ) পানি তাদের ডুবিয়ে দিলো, ঠিক যেমনটি তাদের ডুবিয়ে দেয়া উচিত ছিলো; | 44 فَٱتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِةٍ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَرِّمَا غَشِيَهُمْ مِنَ الْيَرِّمَا غَشِيَهُمْ وَ |
| 1 | ৭৯. (মূলত) ফেরাউন তার জাতিকে গোমরাহ করে দিয়েছে, সে কখনোই তাদের সঠিক পথ দেখায়নি। | ٤٩ وَٱضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَلٰى |
| | ৮০. হে বনী ইসরাঈল (চেয়ে দেখো), আমি (কিভাবে) তোমাদের (প্রধান) শত্রু (ফেরাউন) থেকে তোমাদের মুক্তি দিয়েছি এবং আমি তোমাদের (নবীর) কাছে তৃর | ٨٠ يُبَنِي آ إِشْرَاءِيْلَ قَلْ ٱنْجَيْنْكُي مِّنْ عَدُوّكُمْ وَوْعَنْنْكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْأَيْمَى |
| | (পাহাড়ের) ডান দিকের যে (স্থানে তাওরাত গ্রন্থ দানের) ওয়াদা করেছিলাম (তাও পূরণ করেছি,) তোমাদের জন্যে আমি (আরো) নাযিল করেছি 'মান' এবং 'সালওয়া'(নামের কিছু পবিত্র খাবার-)। | عَلَوْدَمُ وَوَعَلَ نَكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلُوٰى |
| ŀ | 11 - 11 (11 - 11 - 11 - 11 - 11 - 11 - | |

২০ সূরা ত্বাহা

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|---|--|
| ৮১. তোমাদের আমি যা পবিত্র খাবার দান করেছি তা খাও এবং তাতে বাড়াবাড়ি করো না, বাড়াবাড়ি করলে তোমাদের ওপর আমার গযব অবধারিত হয়ে যাবে, আর | ٨١ كُلُوْا مِنْ طَيِّرْتِ مَا رَزَقْنْكُمْ وَلَا تَطْفَوْا فِيهِ فَيَحِلُّ عَلَيْدِ فِيْهِ فَيَحِلُّ عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۚ ع وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ |
| যার ওপর আমার গযব অবধারিত হবে সে তো ধ্বংসই হয়ে যাবে! | غَضَبِيْ فَقَلْ هَوٰى |
| ৮২. আমি অবশ্যই তার প্রতি ক্ষমাশীল যে ব্যক্তি তাওবা করলো, ঈমান আনলো, নেক কাজ করলো, অতপর হেদায়াতের পথে থাকলো। | ۸۲ وَاِنِّى ٛ لَغَقَّارٌ لِّهَى ْ تَابَ وَأُمَى وَعَمِلَ صَالِحًا ثُرَّ اهْتَلُى |
| ৮৩. (মৃসা এখানে আসার পর আমি তাকে বললাম,) হে মৃসা, কোন জিনিস তোমার জাতির লোকদের কাছ থেকে (এখানে আসার জন্যে) তোমাকে তাড়াতাড়ি করালো! | ٨٣ وَمَا أَعْجَلُكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوسٰى |
| ৮৪. (সে বললো, না) তারা তো আমার পেছনেই রয়েছে, আমি তোমার কাছে আসতে তাড়াতাড়ি করলাম যাতে করে হে মালিক, তুমি আমার ওপর সন্তুষ্ট হও, | ۸۳ قَالَ هُر أُولَاءِ عَلَى اَثَرِى وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى |
| ৮৫. তিনি বললেন, তোমার (চলে আসার) পর আমি তোমার জাতিকে (আরেক) পরীক্ষায় ফেলেছি, 'সামেরী' | ٨٥ قَالَ فَإِنَّا قَنْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ ا بَعْرِكَ |
| (নামের এক ব্যক্তি) তাদের গোমরাহ করে দিয়েছিলো r ৮৬. অতপর মূসা অত্যন্ত ক্রুদ্ধ ও ক্ষুব্ধ হয়ে তার জাতির | وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيِّ لاِ مَوْمِهِ غَضْبَانَ اَسِفًا \$ |
| কাছে ফিরে এলো, (এসে তাদের) সে বললো, হে আমার জাতি (এ তোমরা কি করলো), তোমাদের মালিক কি তোমাদের একটি উত্তম প্রতিশ্রুতি দেননি (যে, তোমাদের | قَالَ يُقَوْمِ ٱلَّمْ يَعِنْكُمْ رَبُّكُمْ وَعُنَّا هَ |
| তিনি এ যমীনের কর্তৃত্ব সমর্পণ করবেন), তবে কি আল্লাহ তায়ালার প্রতিশ্রুতি(র 'সময়')টি তোমাদের কাছে খুব দীর্ঘ মনে হয়েছিলো (তোমরা আর অপেক্ষা করতে | اَفَطَالَ عَلَيْكُرُ الْعَهْلُ أَمْ اَرَدْتُّرْ اَنْ يَّحِلُّ عَلَيْكُرْ غَضَبُّ مِّنْ رَبِّكُرْ فَاَ هُلَفْتُرْ مُّوْعِلِي |
| পারলে না), কিংবা তোমরা এটাই চেয়েছো, তোমাদের ওপর তোমাদের মালিকের গযব অবধারিত হয়ে পড়ুক, অতপর তোমরা আমার ওয়াদা ভংগ করে ফেললে! | |
| ৮৭. তারা বললো (হে মৃসা), আমরা তোমার প্রতিশ্রুতি নিজেদের ইচ্ছায় ভংগ করিনি (আসলে যা ঘটেছে তা ছিলো), জাতির (মানুষদের) অলংকারপত্রের বোঝা আমাদের ওপর | ٨٠ قَالُوْ المَّ ٱخْلَفْنَا مَوْعِنَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا |
| চাপানো হয়েছিলো, আমরা তা (বইতে না পেরে আগুনে) নিক্ষেপ করে দেই (এ ছিলো আমাদের অপরাধ), | مُوِّلْنَا اَوْزَارًا مِّنَ زِيْنَةِ الْقَوْرَ فَقَنَفْنَهَا فَكَانُنْهَا فَكَانُلْهَا فَكَانُلْهَا فَكَانُلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ لا |
| এভাবেই সামেরী (আমাদের প্রতারণার জ্বালে) নিক্ষেপ করলো; ৮৮. তারপর সে (অলংকার দিয়ে) তাদের জন্যে একটি বাছুর বের করে আনলো, (মৃলত) তার (ছিলো) একটি (নিম্প্রাণ) | |
| অবয়ব, তাতে গরুর (মতো) শব্দ ছিলো (মাত্র), তারা (এটুকু দেখেই) বলতে লাগলো, এ হচ্ছে তোমাদের মাবুদ, (এটি) মৃসারও মাবুদ, কিন্তু মৃসা (এর কথা) ভূলে (আরেক মাবুদের সন্ধানে 'ভূর' পাহাড়ে চলে) গেছে। | ا فَقَالُوا هٰنَآ اللهُكُمْ وَاللهُ مُوسٰى ٥ فَنَسِيَ ١٠ |
| ৮৯. (ধিক তাদের বুদ্ধির ওপর,) তারা কি দেখেনা, ওটা তাদের কথার কোনো উত্তর দেয় না, না ওটা তাদের | ٨٩ أَفَلَا يَرُونَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِرْ قَوْلًا لَا وَّلَا |
| কোনো রকম ক্ষতি কিংবা উপকার করার ক্ষমতা রাখে! | يَهْلِكُ لَهُرْ ضَوًّا وَّلاَ نَفْعًا ع |
| ৯০. (মৃসা তার জাতির কাছে ফিরে আসার) আগেই হারন তাদের বলেছিলো, হে আমার জাতি, এ | ٩٠ وَلَقَنْ قَالَ لَهُرْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يُقَوْرُ |
| (গো-বাছুর) দ্বারা তোমাদের (ঈমানেরই) পরীক্ষা নেয়া হচ্ছে, তোমাদের মালিক তো হচ্ছেন দয়াময় আল্লাহ তায়ালা, তোমরা আমার অনুসরণ করো এবং আমার | اِنَّهَا فُتِنْتُرْ بِهِ ﴾ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْسُ وَالَّهُونُ وَالْحَمْسُ الرَّحْسُ |
| जामन प्राप्त हाला । | |
| ২০ সূরা ত্বাহা | মুন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|--|--|
| ৯১. ওরা বললো, যতোক্ষণ পর্যন্ত মূসা আমাদের কাছে ফিরে না আসবে আমরা এর (পূজা) থেকে বিরত হবো না। | ٩١ قَالُوْ الَّنَ تَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَكِفِيْنَ مَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوْسَٰى |
| ৯২. (মৃসা এসে এসব না-ফরমানী কাজ দেখলো,) সে বললো, হে হান্ধন, তুমি যখন দেখলে ওরা গোমরাহ হয়ে গেছে, তখন তোমাকে কোন জিনিস বিরত রেখেছিলো | ٩٢ قَالَ يُهْرُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّواۤ لا |
| ৯৩. যে, তুমি আমার কথার অনুসরণ করলে না! তুমি কি আমার আদেশ (তাহলে) অমান্যই করলে? | ٩٣ ألَّا تَتَّبِعَنِ م أَنَعَصَيْتَ أَمْرِي |
| ৯৪. সে বললো, হে আমার মায়ের ছেলে, তুমি আমার দাড়ি ও মাথার (চুল) ধরো না, আমি (এমনি একটি) আশংকা করেছিলাম, তুমি (ফিরে এসে হয়তো) বলবে, 'তুমি বনী ইসরাঈলদের মাঝে বিভেদ সৃষ্টি করেছো এবং তুমি আমার কথা পালনে যত্ন নাওনি।' | ٩٣ قَالَ يَابْنَوُ ۗ لَا تَاْهُنُ بِلِحَيْتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ عَالَ بَابْنَوُ ۗ لَا تَاْهُنُ بِلِحَيْتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ عَالِيْ فَرَّقْتَ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ إِشْرَآءِيْلَ وَلَرْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ |
| ৯৫. সে বললো হে সামেরী (বলো) তোমার ব্যাপারটা কি (হয়েছিলো?) | 9۵ قَالَ فَهَا خَطْبُكَ يُسَامِرِيٌّ |
| ৯৬. সে বললো, আসলে আমি যা দেখেছিলাম তা ওরা দেখেনি (ঘটনাটা ছিলো), আমি আল্লাহর বাণীবাহকের পদচিহ্ন থেকে এক মুঠো (মাটি) নিয়ে নিলাম, অতপর তা ওতে নিক্ষেপ করলাম, আমার মন (কেন জানি) এভাবেই আমাকে ব্যাপারটা বৃঝিয়ে দিয়েছিলো। | ٩٦ قَالَ بَصُرْتُ بِهَا لَم يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَتُ مَبْثَ لَهُ مَنْ لِكَ مَنْ لِكَ مَنْ لِكَ مَنْ لَكَ مَنْ لَكَ مَنْ لَكَ مَنْ لَكَ مَنْ لَكَ مَنْ لِكَ مَوْلِ فَنَبَنْ تُهَا وَكَنْ لِكَ سَوَّلَت لِي نَفْسِي |
| ৯৭. সে বললো, চলে যাও (আমার সমুখ থেকে), তোমার জীবদ্দশায় তোমার জন্যে এ (শান্তিই নির্ধারিত) হলো, তুমি বলতে থাকবে- 'আমাকে কেউ স্পর্শ করো না', এ ছাড়া তোমার জন্যে আরো আছে (পরকালের আযাবের) ওয়াদা, যা কখনো তোমার কাছ থেকে সরে যাবে না, তাকিয়ে দেখো তোমার বানানো মাবুদের প্রতি, যার পূজায় তুমি (এতোদিন) রত ছিলে; আমি ওকে অবশ্যই জ্বালিয়ে দেবো, অতপর তার ছাই বিক্ষিপ্ত করে (সমুদ্রে) নিক্ষেপ করবো। | 94 قَالَ فَاذْهَبْ فَانَّ لَكَ فِي الْحَيْوةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ مِ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِنًا لَّنُ تَقُولَ لَا مِسَاسَ مِ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِنًا لَّنُ تُخْلَفَهُ عَ وَانْظُرْ إِلَى اللهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَا لَنُحَرِّقَتْهُ ثُرَّ لَنَنْسِفَتَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا |
| ৯৮. (হে মানুষ,) তোমাদের মাবুদ তো কেবল আল্লাহ তায়ালাই, যিনি ব্যতীত দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই; তিনি তাঁর জ্ঞান দিয়ে সব কিছু পরিবেষ্টন করে আছেন। | ٩٨ إِنَّهَا ۚ إِلٰهُكُرُ اللَّهُ الَّذِي لَاۤ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۗ وَسَعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْهًا |
| ৯৯. (হে নবী, মৃসার) যেসব ঘটনা তোমার আগে ঘটেছে তার সংবাদ আমি এভাবেই তোমাকে শুনিয়ে যাবো, (তা ছাড়া) আমি তোমাকে আমার কাছ থেকে একটি শ্বরণিকাও দান করেছি। | 99 كَنْ لِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَلْ سَبَقَ عَ وَقَلْ أَتَيْنُكَ مِنْ لَانْنَا ذِكْرًا عَلَمَ |
| ১০০. যে কেউই এ (শ্বরণিকা) থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে, সে কেয়ামতের দিন (নিজ কাঁধে) গুনাহের এক ভারী বোঝা বইবে, | ١٠٠ مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا لا |
| ১০১. তারা চিরদিন সেখানে থাকবে; কেয়ামতের (কঠিন) দিনে তাদের জন্যে এ বোঝা কতো মন্দ (প্রমাণিত) হবে! | ١٠١ عُلِهِ فِي فِيهِ و وَسَاءً لَهُرْ يَوْمَ الْقِيْمَةِ هِمْلًا لا |
| ১০২. যেদিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে সেদিন আমি অপরাধীদের এমন অবস্থায় জমা করবো, (ভয়ে) তাদের চোখ নীল (ও দৃষ্টিহীন) থাকবে, | ١٠٢ يُّومَ يُنْفَعُ فِي الصُّورِ وَنَحَشُرُ الْهُجُرِمِيْنَ يَوْمَئِنِ زُرْقًا علي |
| ১০৩. তারা নিজেদের মধ্যে বলাবলি করতে থাকবে, তোমরা (দুনিয়ায় বড়ো জোর) দশ দিন অবস্থান করে এসেছো | ١٠٣ يَّتَخَافَتُونَ بَيْنَمُرْ إِنْ لَّبِثْتُرْ إِلَّا عَشْرًا |
| ২০ সূরা ত্বাহা | भनयिन 8 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ব্বালা আলাম |
|---|--|
| ১০৪. (আসলে) আমি জানি (সে অবস্থানের সঠিক পরিমাণ নিয়ে) যা কিছু বলছিলো, বিশেষ করে) যখন তাদের মধ্যকার সবচাইতে বিবেকবান ব্যক্তি (যে সংপথে | ١٠٣ نَحْنُ أَعْلَرُ بِمَا يَقُولُوْنَ إِذْ يَقُولُ |
| ছিলো)– বলবে, তোমরা তো (দুনিয়ায়) মাত্র একদিন অবস্থান করে এসেছো! | أَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ع |
| ১০৫. (হে নবী,) তারা তোমার কাছে (কেয়ামতের সময়) পাহাড়গুলোর অবস্থা (কি হবে) জানতে চাইবে, তুমি | ١٠٥ وَيَسْنَلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا |
| তাদের বলো, (সে সময়) আমার মালিক এগুলোকে (টুকরো টুকরো করে) উড়িয়ে দেবেন, | رَبِّي نَسْفًا ٢ |
| ১০৬. অতপর তাকে তিনি মসৃণ ও সমতল ভূমিতে পরিণত করে ছাড়বেন, | ١٠٦ فَيَنَ رُهَا قَاعًا مَفْصَفًا ٧ |
| ১০৭. তুমি এতে কোনো রকম অসমতল ও উঁচু নীচু দেখবে না; | ١٠٤ لا تُرى فِيهَا عِوَجًا ولا آلاً أَمْتًا ، |
| ১০৮. সেদিন সব মানুষ একজন আহ্বানকারীর পেছনে চলতে থাকবে, তার জুন্যে কোনো বাঁকা পথ থাকবে না | ١٠٨ يَوْمَئِنِ يَتَبِعُوْنَ النَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٌ ج |
| (সে চাইলেও অন্য দিকে যেতে পারবে না), সেদিন দয়াময় আল্লাহ তায়ালার (প্রচন্ত ক্ষমতার) সামনে অন্য | وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْشِ فَلَا تَسْبَعُ إلَّا |
| সব শব্দই ক্ষীণ হয়ে যাবে, (এ ভয়ংকর পরিস্থিতিতে ভীতবিহ্বল মানুষের পায়ে চলার) মৃদু আওয়ায ছাড়া আর কিছুই তুমি তনতে পাবে না। | هُيْسُا |
| ১০৯. সেদিন পরাক্রমশালী আল্পাহ তায়ালার সামনে কারো কোনো রকম সুপারিশই কাব্ধে আসবে না, অবশ্য | ١٠٩ يَوْمَئِنِ \ اللَّهُ تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ |
| যাকে করুণাময় আল্লীহ তায়ালা অনুমতি দেবেন এবং যার কথায় তিনি সন্তুষ্ট হবেন, তার কথা আলাদা। | الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٌ قَوْلًا |
| ১১০. তাদের সামনে ও পেছনে যা কিছু আছে তা তিনি সম্যক অবগত আছেন, তারা তা দিয়ে তাঁর বিশাল জ্ঞানকে কোনো দিনই পরিবেষ্টন করতে পারে না। | اا يَعْلَرُ مَا بَيْنَ آيْنِيْهِرْ وَمَا عَلْفَهُرْ وَلَا يُحِيْطُونَ بِهِ عِلْمًا |
| ১১১. (সেদিন) মানুষের চেহারাগুলো (সেই) চিরঞ্জীব ও অনাদি সন্তার সামনে অবনত হয়ে যাবে, ব্যর্থ হবে সে | ااا وَعَنَتِ الْوُجُوْةُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْرِ ، وَقَلْ |
| ব্যক্তি, যে সেদিন ওধু যুলুমের ভারই বহন করবে। | خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْهًا |
| ১১২. (অপরদিকে) যে ব্যক্তি ঈমানের সাথে (দুনিয়ায়) নেক কাজ করেছে, (সেদিন) সে কোনো যুলুমের ভয় করবে না এবং কোনো ক্ষতির ভয়ও না ! | الَّا وَمَنْ يَعْبَلُ مِنَ الصَّلِحُسِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ الصَّلِحُسِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخُفُ مُؤْمِنًا فَلَا يَخُفُ طُلْبًا وَّلَا هَضَيًا |
| ১১৩. এভাবেই আমি কোরআনকে (পরিষ্কার) আরবী | |
| (ভাষায়) নযিল করেছি এবং তাতে (মানুষদের পরিণাম সম্পর্কে) সাবধানতা সংক্রান্ত কথাগুলো সবিস্তার বর্ণনা | اللهِ وَكَنَٰلِكَ أَنْزَلْنُهُ قُرْأَنًا عَرَبِيًّا وَّمَرََّفْنَا فِي اللهِ عَنْ الْوَعِيْلِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْلِيهُ |
| করেছি, যেন তারা (গোমরাহী থেকে) বেঁচে থাকতে পারে, কিংবা (তাদের মনে) তা তাদের জন্যে কোনো | ويه مِن الوغِيلِ لعلهر يتقون أو يعلون الهُرُ ذِكُرًا |
| চিন্তা ভাবনার সৃষ্টি করতে পারে। ১১৪. আল্লাহ তায়ালা অতি মহান, তিনিই (সৃষ্টিরুলের) প্রকৃত | |
| বাদশাহ (ডিনিই কোরখান নাখিল করেছেন, হে নবী), তোমার কাছে তার ওহী নাখিল পূর্ণ হওয়ার আগে কোরআনের ব্যাপারে | اللهُ الْهُ الْهُ الْهُ الْحَقُّ عَ وَلَا اللهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ عَ وَلَا اللهُ الْمُلِكُ الْحَقَّ اللهُ الْمُلِكَ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ ال |
| কখনো তাড়াহুড়ো করো না, (তবে জ্ঞান বাড়াতে চাইলে) বলো, হে আমার মালিক, আমার জ্ঞান (-ভাভার) তুমি বৃদ্ধি করে দাও। | وَهُيهُ رَوْقُلُ رَّبِّ رَدْنِي عِلْمًا |
| ১১৫. আমি এর আগে আদম (সন্তানের) প্রতি নির্দেশ দান করেছিলাম, কিন্তু সে (এসব কথা) ভুলে গেছে, (আসলে) | ١١٥ وَلَقَلْ عَمِلْنَا ۚ إِلَّى أَدَاً مِنْ قَبْلٌ فَنَسِي |
| করেছিলান, কিছু সে (এসব কথা) ভূলে গেছে, (আসলে) আমি (কখনো) সে ব্যাপারে তাকে দৃঢ় সংকল্পবদ্ধ পাইনি। | وَلَمْ نَجِنْ لَدَّ عَزْمًا ع |

২০ সূরা ত্বাহা

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৬ ক্বালা আলাম |
|--|---|
| ১১৬. আমি ফেরেশতাদের (যখন) বলেছিলাম, তোমরা আদমকে সাজদা করো, তখন তারা (সাথে সাথেই) সাজদা করলো, কিন্তু ইবলীস, (সে) অস্বীকার করলো। | الله وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَئِكَةِ السَّجُّلُوْ الْإِدَا فَسَجَدُوْ آ إِلَّا إِلْلِيْسَ ءَ أَبِي |
| ১১৭. আমি আদমকে বললাম, এ (শয়তান) হচ্ছে তোমার ও তোমার (জীবন) সাথীর দুশমন; সুতরাং (দেখো) এমন যেন না হয় যে, সে তোমাদের উভয়কেই জান্নাত থেকে বের করে দেবে এবং (এর ফলে) তুমি দারুণ দুঃখ কষ্টে পড়ে যাবে, | ١١ فَقُلْنَا يَاٰدَا إِن هٰنَ اعْدُو لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُهَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَى |
| ১১৮. (অথচ) এখানে তুমি কখনো ক্ষ্ধার্ত হও না, কখনো পোশাকবিহীনও হও না! | ١١٨ إِنَّ لَكَ ٱلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرُى ٧ |
| ১১৯. তুমি (কখনো) এখানে পিপাসার্ত হও না, কখনো রোদেও কষ্ট পাও না! | ١١٩ وَٱنَّكَ لَا تَظْهَوُّ الْفِيهَا وَلَا تَضْحُى |
| ১২০. (কিন্তু এতো সাবধান করা সন্ত্বেণ্ড) অতপর শয়তান তাকে কুমন্ত্রণা দিলো; সে (তাকে) বললো, হে আদম, আমি কি তোমাকে অনন্ত জীবনদায়িনী একটি গাছের কথা বলবো (যার ফল খেলে তুমি এখানে চিরঞ্জীবন থাকতে পারবে) এবং বলবো এমন | ١٢٠ فَوَسُوسَ إِلَيْهِ الشَّيْطٰيُ قَالَ يَّادَا مَلَ أَدُلَّكَ عَلَى شَجَرَةِ الْخُلْلِ وَمُلْكٍ " يَبْلٰى |
| রাজত্বের কথা, যার কখনো পতন হবে না! ১২১. অতপর তারা উভয়ে ওই (নিষিদ্ধ গাছের) ফল খেলো, সাথে সাথেই তাদের শরীরের লজ্জাস্থানসমূহ তাদের সামনে প্রকাশ হয়ে পড়লো এবং তারা (লজ্জায় তাড়াতাড়ি করে) জান্লাতের (বিভিন্ন গাছের) পাতা দ্বারা নিজেদের লজ্জাস্থান ঢাকতে গুরু করলো, এভাবেই আদম তার মালিকের না-ফরমানী করলো এবং (এ কারণে) সে (সাময়িকভাবে) পথভ্রম্ভ হয়ে গেলো। | ۱۲۱ فَأَكَلاَ مِنْهَا فَبَنَ إِنَّ لَهُهَا سَوْاتُهُهَا وَطَفِقًا يَخْصِفْنِ عَلَيْهِهَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ رَوَعَضَى الْدَا رَبَّة فَعُولى مالية |
| ১২২. কিন্তু (তার ক্ষমা প্রার্থনার পর) তার মালিক তাকে (তার বংশধরদের পথ প্রদর্শনের জন্যে) বাছাই করে নিলেন, তার ওপর ক্ষমাপরবশ হলেন এবং তাকে সঠিক পথনির্দেশ দিলেন। | ١٢٢ ثُرَّ اجْتَبُهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَلَى |
| ১২৩. তিনি বললেন, (শয়তান ও তোমরা এখন) উভয় দলই এখান থেকে নেমে পড়ো, (মনে রাখবে) তোমরা কিন্তু একজন আরেক জনের (জঘন্য) দৃশমন, অতপর (তোমাদের জীবন পরিচালনার জন্যে) আমার কাছ থেকে হেদায়াত (পথনির্দেশ) আসবে, অতপর যে আমার হেদায়াত অনুসরণ করবে সে না কখনো (দুনিয়ায়) বিপথগামী হবে, না (আখেরাতে সে) কোনো কষ্ট পাবে। | الله قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَهِيْعًا البَعْشُكُرُ لِبَعْضٍ عَلَّا اللهُ عَلَى عِلَى عَلَى عَلَ |
| ১২৪. (হাঁ,) যে ব্যক্তি আমার স্বরণ থেকে বিমুখ হবে তার জন্যে (জীবনে) বাঁচার সামগ্রী সংকুচিত হয়ে যাবে, (সর্বোপরি) তাকে আমি কেয়ামতের দিন অন্ধ বানিয়ে হাযির করবো। | ١٢٣ وَمَنْ أَغْرَضَ عَنْ ذِكْرِى ْ فَاِنَّ لَدَّ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحُشُرُةً يَوْمَ الْقِيْمَةِ أَعْلَى |
| ১২৫. সে (নিজেকে এভাবে দেখার পর) বলবে, হে আমার মালিক, তুমি আমাকে কেন (আজ) অন্ধ বানিয়ে উঠালে? (দুনিয়াতে তো) আমি চক্ষুন্মান ব্যক্তিই ছিলাম! | ۱۲۵ قَالَ رَبِّ لِرَ مَشَرْتَنِیَ ٓ اَعْلٰی وَقَلْ کُنْتُ بَصِیْرًا |
| ১২৬. তিনি বলবেন, (আসলে দুনিয়াতেও) তুমি এমনিই (অন্ধ) ছিলে। আমার আয়াতসমূহ তোমার কাছে এসেছিলো, কিন্তু তুমি তা ভুলে ছিলে, এভাবে আজ তোমাকেও ভুলে যাওয়া হবে। | ۱۲۲ قَالَ كَنْ لِكَ ٱتَتْكَ أَيْتُنَا فَنَسِيْتَهَا عَ وَكَنْ لِكَ الْيُوْمَ تُنْسَى |
| ১২৭. (মূলত) আমি এভাবেই তাদের প্রতিফল দেই, যারা (আমার আয়াত নিয়ে) বাড়াবাড়ি করে, সে তার মালিকের | ا ودانگ نجرِی من اسری ولر |
| ২০ সূরা ত্বাহা | মন্যিল ৪ |

www.eelm.weebly.com

٤8

পারা ১৬ কালা আলাম

আয়াতের ওপর কখনো ঈমান আনে ना; (সিত্যিকার وَالْعَنَ ابُ الْأَخِرَةِ اَشَنَّ الْمُحِرَةِ اَشَلَ अर्थ) পরকালের আযাবই হচ্ছে বেশী কঠিন এবং অধিক وَاَبْقَى وَالْمَعَى عَلَيْهِ مَا وَلَعَنَ ابُ الْأَخِرَةِ اَشَلَ اللّهِ عَلَيْهِ مَا مَهُ اللّهَ عَلَيْهُ اللّهَ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّا عَلَيْهُ عَلَّا عَلَيْهُ عَلَّهُ ع

১২৮. এদের আগে আমি কতো কতো জনপদ ধ্বংস করে দিয়েছি, আর এ (ধ্বংসপ্রাপ্ত) জনপদসমূহের ওপর দিয়ে এরা তো (হামেশাই) চলাফেরা করে; অবশ্যই এতে বিবেকবান মানুষদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

۱۲۸ أَفَلَرْ يَهْلِ لَهُرْ كَرْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُرْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَهْشُوْنَ فِي مَسْكِنِهِرْ ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَايْتِ لِلَّولِي النَّهٰي عَ

১২৯. যদি তোমার মালিকের পক্ষ থেকে (এদের অবকাশ দেয়ার এ) ঘোষণা না থাকতো এবং এদের ওপর আযাব আসার সুনির্দিষ্ট কালক্ষণ আগেই ঠিক করা না থাকতো, তাহলে এদের ওপর (কবেই আযাব) অবশ্যম্ভাবী হয়ে পড়তো:

١٢٩ وَلَوْكَا كَلِهَةً سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ أَجَلُّ شَهِى ﴿

১৩০. অতএব (হে নবী), এরা যা কিছুই বলে তুমি তার ওপর ধৈর্য ধারণ করো, তুমি (বরং) তোমার মালিকের প্রশংসা, পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করো সূর্যোদয়ের আগে ও তা অন্ত যাওয়ার আগে, রাতের বেলায় এবং দিনের দুই প্রান্তেও তুমি আল্লাহর পবিত্রতা ঘোষণা করো, সম্ভবত (কেয়ামতের দিন) তুমি সম্ভষ্ট হতে পারবে।

۱۳۰ فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْنِ
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ع وَمِنْ أَنَانِي النَّلْ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْمَٰى

১৩১. (হে নবী,) পার্থিব জীবনের সৌন্দর্যস্বরূপ ভোগ বিলাসের সেসব উপকরণ আমি তাদের অনেককেই দিয়ে রেখেছি, তার দিকে তুমি কখনো তোমার দুচোখ তুলে তাকাবে না, (আসলে আমি এসব কিছু এ কারণেই দিয়েছি) যেন আমি তাদের পরীক্ষা করতে পারি, (মূলত) তোমার মালিকের রেযেকই হচ্ছে উৎকৃষ্ট ও অধিক স্থায়ী।

الله وَلا تُمُنَّنَ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْنَا بِهِ
 أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيْوةِ النَّنْيَا لَا
 لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ اورِزْقُ رَبِّكَ عَيْرٌ وَابَقْى

১৩২. (হে নবী,) তোমার পরিবার পরিজনকে নামাযের আদেশ দাও এবং তুমি (নিজেও) তার ওপর অবিচল থেকো, আমি তো তোমার কাছে কোনোরকম রেযেক (জীবনোপকরণ) চাই না, রেযেক তো তোমাকে আমিই দান করি; আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করার জন্যেই রয়েছে উত্তম পরিণাম।

اللهُ وَأَمُرُ آهَلَكَ بِالصَّلُوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ، لَا تَشْنَلُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلسَّقُوٰى لِلسَّقُوٰى

১৩৩. (এরণরও মূর্য) লোকেরা বলে, এ ব্যক্তি তার মালিকের কাছ থেকে আমাদের কাছে কোনো নিদর্শন নিয়ে আসে না কেন; (তুমি কি মনে করো,) তাদের কাছে সেসব দলীল প্রমাণ নেই– যা আগের কেতাবসমূহে মজুদ রয়েছে!

۱۳۳ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِأَيَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ ، أَوَ لَرْ تَاْتِهِرْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصَّحُفِ الْأُولٰي

১৩৪. আমি যদি এর আগেই তাদের কোনো আযাব দিয়ে ধ্বংস করে দিতাম তাহলে অবশ্যই এরা বলতো, হে আমাদের মালিক, তুমি (আযাব পাঠাবার আগে) আমাদের কাছে একজন রসূল পাঠালে না কেনঃ (রসূল) পাঠালে আমরা এভাবে লাঞ্ছিত ও অপমানিত হওয়ার আগেই তোমার আয়াতসমূহ মেনে চলতাম।

۱۳۳ وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكُنْهُمْ بِعَنَابِ مِّنْ قَبْلِهِ
لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْكَۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُولًا
فَنَتَّبِعَ اٰیٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَّذِكَّ وَنَخُوٰی

১৩৫. (হে নবী, এদের) বলো (হাঁ), প্রত্যেক ব্যক্তিই (তার কাজের প্রতিফল পাবার) অপেক্ষা করছে, অতএব তোমরাও অপেক্ষা করো, অচিরেই তোমরা জানতে পারবে সঠিক পথের অনুসারী কারা, আর কারাই বা সোজা সঠিক পথ পেয়েছে।

١٣٥ قُلْ كُلُّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ع فَسَتَعْلَبُونَ مَنْ أَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَن اهْتَلٰىء

২০ সূরা ত্বাহা

७३३

সুরা আল আম্বিয়া

মকায় অবতীর্ণ- আয়াত ১১২, রুকু ৭ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْإِنْبِيَاءَ مَكَّيَّةً بشر الله الرُّحْسَ الرَّحِيْم

১. মানুষের জন্যে তাদের হিসাব নিকাশের মুহুর্তটি একান্ত কাছে এসে গেছে, অথচ তারা এখনো উদাসীনতার মাঝে (নিমজ্জিত হয়ে সত্য) বিমুখ হয়ে আছে.

) لِلنَّاسِ مِسَابُهُرْ وَهُرْ فِي غَفْلَةِ

২. যখন তাদের কাছে তাদের মালিকের কোনো নতুন উপদেশ আসে তখন (মনে হয়) তারা তা শোনছে, কিন্তু তারা (তখনও) নানারকম খেলা ধুলায় নিমগ্ন থাকে.

তারা গোপনে বলাবলি করে, এ তো তোমাদেরই মতো الَّذِينَ ظَلَهُوا لَيْ مَلُ مَٰنَ اللَّا بَشَرٌّ مِّثْلُكُمْ وَ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَى مَا اللَّهُ اللَّهُ عَل (তারপরও তার) যাদুর ফাঁদে ফেঁসে যাবে? অথচ তোমরা তো (সব কিছুই) দেখতে পাচ্ছো!

७. ওদের মন থাকে সম্পূর্ণ অমনোযোগী; যারা যালেম المُويَدُّ قُلُوبُهُمْ وَ أَسَرُّوا النَّحِورَى فَ الله علامة على الله عل أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنْتُرْ تُبْعِرُونَ

8. সে বললো, আমার মালিক (প্রতিটি) কথা জানেন, তা আসমানে থাকুক কিংবা যমীনে, তিনি (সব) শোনেন, (সব) জানেন !

مُ قُلَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّهَاء وَ الْأَرْضِ زِوَهُوَ السَّبِيْعُ الْعَلِيْرُ

৫. তারা তো বরং (কোরআনের ব্যাপারে) বলে, এগুলো হচ্ছে অলীক স্বপুমাত্র, সে নিজেই এসব উদ্ভাবন করেছে, কিংবা সে হচ্ছে একজন কবি, সে (নবী হয়ে থাকলে আমাদের কাছে) এমন সব নিদর্শন নিয়ে আসুক, যা দিয়ে পূর্ববর্তীদের পাঠানো হয়েছিলো।

٥ بَلْ قَالُوْ ا أَضْغَاتُ أَحْلَا ۚ إِلَى افْتَرْلَهُ بَلْ مُوَ شَاعِرٌ جمد فَلْيَأْتِنَا بِأَيَّةِ كَمَّا ٱرْسِلَ الْأُولُّونَ

৬. এদের আগে এমন সব জনপদ আমি ধ্বংস করেছি. তার অধিবাসীরা (এসব নিদর্শন দেখেও) ঈমান আনেনি। (তুমি কি মনে করো) এরা (এখন) ঈমান আনবে?

٢ مَا أَمَنَتُ قَبْلَهُرُ مِّنْ قَرْيَة أَهْلَكُنْهَا مَ أَفَهُرْ

৭. তোমার পূর্বে আমি মানুষকেই (সব সময় নবী বানিয়ে) তাদের কাছে পাঠিয়েছি, তোমরা যদি না জ্ঞানো তাহলে (আগের) কেতাবওয়ালাদের কাছে জিজ্ঞেস করো।

﴾ وَمَا ۗ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيٓ إِلَيْهِرْ فَسْنَلُوْ آهُلَ النِّكْرِ إِنْ كُنْتُرْ لَا

৮. আমি তাদের এমন সব দেহাবয়ব দিয়ে পয়দা করিনি যে, তারা খেতে পারতো না, (তা ছাড়া মানুষ হওয়ার কারণে) তারা কেউ (এ দুনিয়ায়) চিরস্থায়ীও হয়নি!

^ وَمَا جَعَلْنُهُ م جَسَلًا لا يَأْكُلُونَ الطُّعَا } وَمَا كَانُوْا عَلِهِيْنَ

৯. অতপর আমি (আযাবের) ওয়াদা সত্য প্রমাণিত করে দেখালাম. (আযাব যখন এসে গেলো তখন) আমি যাদের চাইলাম শুধু তাদেরই উদ্ধার করলাম, আর সীমালংঘন কারীদের আমি সমূলে বিনাশ করে দিলাম।

٩ ثُرَّ مَلَ قَنْهُرُ الْوَعْلَ فَٱنْجَيْنَهُرْ وَمَنْ نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْهُسُوفِيْنَ

১০. (হে মানুষ,) আমি তোমাদের কাছে (এমন একটি) কেতাব নাযিল করেছি, যাতে (একে একে) তোমাদের (সবার) কথাই রয়েছে, ভোমরা কি বুঝতে পারো না!

١٠ لَقَلْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُرْ كِتْبًا فِيهِ ذِكْرُكُرْ ، أَفَلَا تَعْقلُوْنَ ع



২১ সূরা আল আম্বিয়া

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইকৃতারাবা লিন্নাস |
|---|--|
| ১১. আমি এর আগে কতো জনপদকে ধ্বংস করে দিয়েছি, যা ছিলো (আসলেই) যালেম, তাদের পরে তাদের জায়গায় আমি অন্য জাতির উত্থান ঘটিয়েছি। | ا وكَمْر قَصَهْنَا مِن قُرْيَة كَانَت ظَالِهَةً و أَنْشَأْنَا بَعْنَهَا قَوْمًا أُعْرِيْنَ |
| ১২. এরা যখন আমার আযাব (একান্ত) সামনে দেখতে পেলো তখন সেখান থেকে পালাতে তক্ত করলো। | الفَلَهَ ۗ أَحَسُّوا بَاْسَنَا ۚ إِذَا هُرْ مِّنْهَا يَرْكُضُونَ م |
| ১৩. (আমি বললাম,) তোমরা (আজ) পালিয়ো না, বরং ফিরে যাও তোমাদের সম্পদের কাছে ও তোমাদের বাড়ি ঘরের দিকে যেখানে তোমরা আরাম করছিলে, সম্ভবত তোমাদের (কিছু) জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। | ا لَا تَرْكُفُوْا وَارْجِعُوْآ اِلٰى مَا ٓ ٱتْرِفْتُرْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُرْ لَعَلَّكُرْ تُسْنَلُوْنَ |
| ১৪. তারা বললো, হায় দুর্ভাগ্য আমাদের, আমরা (সত্যিই) যালেম ছিলাম। | ١٣ قَالُوْ إِيْوَيْلَنَّ إِنَّا كُنَّا ظُلِمِيْنَ |
| ১৫. অতপর তারা এই আহাজারি করতেই থাকলো, যতোক্ষণ না আমি তাদের সমূলে ধ্বংস করে দিয়েছি, আমি তাদের কাটা ফসল ও নির্বাপিত আলোকরশ্মি বানিয়ে দিলাম। | 10 فَهَا زَالَتْ تِلْكَ دَعُوٰلِهُرْ حَتَّى جَعَلْنَهُرْ حَصِيْلًا غَامِلِيْنَ |
| ১৬. আসমান যমীন ও তাদের মধ্যবর্তী সব কিছু (-র কোনোটাই) আমি খেলতামাশার জন্যে পয়দা করিনি। | ١٦ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَّاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لْعِبِيْنَ |
| ১৭. আমি যদি নেহায়াত কোনো খেলতামাশার বিষয়ই বানাতে চাইতাম তাহলে আমি আমার কাছে যা (নিপ্সাণ বস্তু) আছে তা দিয়েই (এসব কিছু) বানিয়ে দিতাম। | الو اردنا ان الله الله الله الله الله الله الله |
| ১৮. বরং আমি সত্যকে মিধ্যার ওপর ছুঁড়ে মারি, অতপর সে (সত্য) এ (মিথ্যা)-র মগয বের করে দেয়, (এর ফলে যা মিথ্যা) তা সাথে সাথেই নিচ্চিহ্ন হয়ে যায়; দুর্ভোগ তোমাদের, তোমরা যা কিছু উদ্ভাবন করছো (তা থেকে আল্লাহ তায়ালা অনেক পবিত্র)। | ١٨ بَلُ نَقْذِنُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَنْمَعُهُ فَاذَا مُو زَامِقً م وَلَكُمرُ الْوَيْلُ مِلًا تَصِفُونَ |
| ১৯. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে সবই তো তাঁর (মালিকানাধীন), তাঁর (একান্ত) সান্নিধ্যে যেসব (ফেরেশতা) আছে তারা কখনো তাঁর এবাদাত করতে অহংকার (বোধ) করে না, তারা কখনো ক্লান্তিও বোধ করে না, | 19 وَلَدَّ مَنْ فِي السَّبْوٰسِ وَالْاَرْضِ مَ وَمَنْ عِثْنَةً إِ لَا يَشْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَشْتَحْسِرُوْنَ عَ |
| ২০. তারা দিবারাত্রি তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা করে, তারা কখনো কোনো অলসতা করে না। | ٢٠ يُسَبِّحُونَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ |
| ২১. এরা কি (আল্লাহ তায়ালার বদলে) যমীনের কোনো কিছুকে মাবুদ বানিয়ে নিচ্ছে৷ (এরা যাদের মাবুদ বানাছে) তারা কি এদের পুনরুখ্যান ঘটাবে৷ | ٢١ أَ إِ اتَّخَلُوْ ۚ أَلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُــُ |
| ২২. যদি আসমান যমীনে আল্লাহ তায়ালা ব্যতীত আরো অনকে মাবৃদ থাকতা, তাহল (কবেই যমীন | ٢٢ لَوْ كَانَ فِيْهِمَا ۚ أَلِهَا ۗ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَنَنَا ع |
| আসমানের) উভয়টাই ধ্বংস হয়ে যেতো, এরা যা কিছু বলে, আরশের মালিক আল্লাহ তায়ালা সে সব কিছু থেকে পবিত্র ও মহান! | فَسُبْعِٰنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ |
| ২৩. তিনি যা কিছু করেন সে ব্যাপারে তাঁকে কোনো প্রশ্ন করা যায় না, বরং তাদেরই (তাদের ক্রিয়াকলাপ সম্পর্কে) প্রশ্ন করা হবে। | ٢٣ لَا يُسْئَلُ عَبًّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُونَ |
| ২৪. এরা কি আল্লাহ তায়ালা ছাড়া (অন্য কাউকে) মাবুদ বানিয়ে রেখেছে? (হে নবী, তুমি) বলো, তোমরা দলীল | ٢٣ آاِ النَّحَٰلُوْ إِن دُوْنِهِ الْهَدَّ، قُلْ هَاتُوْ |
| ২১ সূরা আল আম্বিয়া ত২৪ | মন্যিল ৪ |

| ı | | |
|---|--|--|
| ļ | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
| ١ | প্রমাণ উপস্থিত করো, (এটা) আমার সাধীদের কেতাব এবং (এটা) আমার পূর্ববর্তীদের কেতাব, (পারলে এখান | بُرْهَانَكُرْ م هٰذَا ذِكْرٌ مَن مَّعِي وَذِكْرٌ مَنْ |
| ı | থেকে কোনো প্রমাণ উপস্থাপন করো;) এদের অধিকাংশ | قَبْلِيْ مَ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ لا الْحَقَّ |
| 1 | (মানুষই প্রকৃত সত্য) জানে না, তাই (সত্য থেকে) এরা | |
| I | মুখ ফিরিয়ে নেয়। | ره ۸۵۰ ر فهر معرِضون |
| ١ | ২৫. আমি তোমার আগে এমন কোনো নবী পাঠাইনি যার কাছে ওহী পাঠিয়ে আমি একথা বলিনি যে, আমি ছাড়া | ٢٥ وَمَ ۗ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا |
| ı | অন্য কোনো মাবুদ নেই এবং তোমরা সবাই আমারই | نُوْحِيْ ۚ إِلَيْدِ أَنَّهُ لَا إِلَّهِ إِلَّا إِنَّا فَاعْبُكُونِ |
| 1 | এবাদাত করো। | |
| ı | ২৬. (এ মূর্ব) লোকেরা বলে, দয়াময় আল্লাহ তায়ালা | ٢٦ وَقَالُوا اتَّخَلَ الرَّمْيِي وَلَنَّا سُبْحَنَهُ ، |
| ı | (ফেরেশতাদের নিজের) সম্ভান বানিয়ে নিয়েছেন; তিনি | |
| ı | (এসব কথাবার্তা থেকে) অনেক পবিত্র; বরং তারা হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার সম্মানিত বান্দা, | بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ لا |
| I | ২৭. তারা (কখনো) তাঁর সামনে আগে বেড়ে কথা বলে | |
| ı | না, তারা তো তাঁর আদেশ অনুসারেই কান্ধ করে। | ٢٠ لَا يَسْبِقُوْنَهُ بِالْقَوْلِ وَهُرْ بِاَمْرِهِ يَعْمَلُوْنَ |
| 1 | ing of the section of | , |
| Ì | ২৮. তাদের সামনে পেছনে যা কিছু আছে তা সবই তিনি | ٢٨ يَعْلَرُ مَا بَيْنَ آيْنِيهِرْ وَمَا خَلْفَهُرْ وَلَا |
| ١ | জানেন, তারা আল্লাহ তায়ালার সমীপে সেসব লোক ছাড়া | |
| ı | অন্য কারো জন্যেই সুপারিশ করে না যাদের প্রতি আল্লাহ | يَشْفَعُونَ لا إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِ |
| ı | তায়ালা সম্ভুষ্ট রয়েছেন, তারা (নিজেরাও সব সময়) তাঁর | مُشْفِقُونَ |
| Į | ভয়ে ভীত সন্ত্রস্ত (থাকে)। | |
| I | ২৯. (যারা অহংকারী) তাদের মধ্যে যদি কেউ একথা | ٢٩ وَمَنْ يَّقُلُ مِنْهُرُ إِنِّيْ ٓ إِلَّا مِّنْ دُونِهِ |
| Į | বলে, আল্লাহ তায়ালার বদলে আমিই হচ্ছি মাবুদ, তাহলে | فَنْ لِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّرَ ۗ عَنْ لِكَ نَجْزِي |
| 7 | তাকে আমি এ জন্যে জাহান্নামের (কঠিন) শান্তি দেবো; | |
| | (মূলত) আমি যালেমদের এভাবেই শান্তি দেই। | الظُّلِوِيْنَ ع |
| I | ৩০. এরা কি দেখে না, আসমানসমূহ ও পৃথিবী (এক | |
| ı | সময়) ওতপ্রোতভাবে মিশে ছিলো, অতপর আমিই এদের | ٣٠ أَوَ لَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ أَنَّ السَّاوٰسِ وَالْإِرْضَ كَانَتَا رَثَقًا فَفَتَقْنَهُمَا ، وَجَعَلْنَا مِنَ |
| ١ | উভয়কে আলাদা করে দিয়েছি এবং আমি প্রাণবান সব কিছুকেই পানি থেকে সৃষ্টি করেছি, (এসব জানার পরও) | والأرض كانتا ربعاً فعتفنها الوجعلنا مِن |
| ı | কি তারা ঈমান আনবে নাঃ | الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ﴿ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ |
| | ৩১. আমি যমীনের ওপর সুদৃঢ় পাহাড়সমূহ রেখে দিয়েছি | ٣١ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَبِيْلَ |
| | যেন তা ওদের নিয়ে (এদিক সেদিক) নড়াচড়া করতে না | |
| | পারে, এ ছাড়াও আমি ওতে প্রশন্ত রান্তা তৈরী করে দিয়েছি যাতে করে তারা (তা দিয়ে নিজ্ক নিজ্ক গন্তব্যস্থলে) | بِهِرْ مَ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُرْ |
| ١ | পৌছুতে পারে। | ِ يَ هُ تُكُونَ |
| | ৩২. আমি আকাশকে একটি সুরক্ষিত ছাদ হিসেবে তৈরী | ٢٣ وَجَعَلْنَا السَّاءَ سَقَفًا مَحْفُوظًا مَ وَهُرْعَنَ |
| • | করেছি, কিন্তু এ (নির্বোধ) ব্যক্তিরা তার নিদর্শনা থেকে | |
| | মুখ ফিরিয়ে নেয়। | أيتِهَا مُقْرِضُونَ |
| | ৩৩. আল্লাহ তায়ালাই রাত, দিন, সুরুজ ও চাঁদকে পয়দা | ٣٣ وَمُو الَّذِي خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ |
| | করেছেন; (এদের) প্রত্যেকেই (মহাকাশের) কক্ষপথে | |
| | সাঁতার কেটে যাছে। | وَالشُّهُسَ وَالْقَبَرَ ء كُلَّ فِي فَلَكِ يَسْبَحُونَ |
| | ৩৪. (হে নবী,) আমি তোমার পূর্বেও কোনো মানব | ٣٣ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرِ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْلَ ، |
| | সম্ভানকে অনম্ভ জীবন দান করিনি; সুতরাং আজ তুমি | ١٠ وها جعند ربسر مِن قبيت العبل ، |
| | ২১ সূরা আল আম্বিয়া | মন্যিল ৪ |
| | | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইকৃতারাবা লিন্নাস |
|--|--|
| মরে গেলে (তুমি কি মনে করো) তারা এখানে চিরজীবী হয়ে থাকবেং | أَفَا ئِنْ مِّتَّ فَهُرُ الْخُلِرُونَ |
| ৩৫. প্রতিটি জীবকেই মরণের স্বাদ গ্রহণ করতে হবে; (হে মানুষ,) আমি তোমাদের মন্দ ও ভালো (এ উভয়) অবস্থার মধ্যে ফেলেই পরীক্ষা করি; অতপর (তোমাদের তো) আমার কাছেই ফিরিয়ে আনা হবে। | ٣٥ كُلُّ نَفْسٍ ذَ آئِقَةُ الْمَوْسِ ، وَنَبْلُوكُرُ ٣٥ لِللَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ، وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ |
| ৩৬. কাফেররা যখন তোমাকে দেখে তখন (মনে হয়) তারা তোমাকে কেবল তাদের বিদ্রুপের পাত্রব্ধপেই গ্রহণ করে; তারা (তোমার দিকে ইশারা করে) বলে, এ কি সে ব্যক্তি, যে তোমাদের দেব দেবীদের (মন্দভাবে) শ্বরণ করে, অথচ (এরা নিজেরাই) দরাময় আল্লাহ তারালার শ্বরণকে অস্বীকার করে। | ٣٦ وَإِذَا رَأْكَ الَّانِيْنَ كَفَرُوْآ إِنْ يَّتَخِنُوْنَكَ إِلَّا مُزُوًا ﴿ اَلْمِنَا الَّانِيْ يَنْكُرُ الْمِتَكُمْ عَ وَهُرْ بِنِكْرِ الرَّحْلَٰيِ هُرْ كُفِرُوْنَ الْمِتَكُمْ عَ وَهُرْ بِنِكْرِ الرَّحْلَٰيِ هُرْ كُفِرُوْنَ |
| ৩৭. (আসলে) মানুষকে সৃষ্টিই করা হয়েছে তাড়াহুড়ো (করার প্রকৃতি) দিয়ে, অচিরেই আমি তোমাদের আমার (কুদরতের) নিদর্শনগুলো দেখিয়ে দেবো, সুতরাং তোমরা আমার কাছে তাড়াহুড়ো কামনা করো না। | ٣٤ عُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ، سَأُورِيْكُرْ أَيْتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ |
| ৩৮. তারা বলে, যদি তোমরা সত্যবাদী হও তাহলে বলো কেয়ামতের এই ওয়াদা কবে (পূর্ণ) হবে? | ٣٨ وَيَقُوْلُوْنَ مَتَٰى هٰٰذَا الْوَعْلُ اِنْ كُنْتُرْ صٰرِقِيْنَ |
| ৩৯. কতো ভালো হতো যদি এ কাম্বেররা (সে ক্ষণটির কথা) জানতো! (বিশেষ করে) যখন তারা তাদের সামনে ও তাদের পেছন থেকে আসা আগুন কিছুতেই প্রতিরোধ করতে পারবে না, (সে সময়ে) তাদের (কোনো রকম) সাহায্যও করা হবে না। | ٣٩ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا حِيْنَ لَا يَكُفُّونَ عَنْ وَّجُوْهِمِرُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُمُوْرِهِمْ وَلَا مُمْ يُنْصَرُونَ |
| ৪০. (মূলত কেয়ামত) তাদের ওপর আসবে হঠাৎ করে, এসেই তা তাদের হতবুদ্ধি করে দেবে, তখন তাকে তারা প্রতিরোধ করতে সক্ষম হবে না, আর না তাদের (এ জন্যে) কোনো অবকাশ দেয়া হবে! | ٣٠ بَلْ تَٱتِيْهِر بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُر فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُر يُنْظَرُونَ |
| 8১. (হে নবী,) তোমার আগেও অনেক রস্লকে (এডাবে) ঠাট্টা বিদ্রূপ করা হয়েছিলো, পরে (দেখা গেলো) তারা যা নিয়ে ঠাট্টা বিদ্রূপ করেছিলো তাই তাদের পরিবেষ্টন করে নিয়েছে। | ٣١ وَلَقَلَ اسْتَهْزِئَ بِرُسُلِ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُرُ مَّا كَانُوْا بِهِ يَسْتَهْزِءُوْنَ عَ |
| ৪২. (হে নবী), তুমি এদের জিজ্ঞেস করো, কে তোমাদের দয়ায়য় আল্লাহ তায়ালার আয়াব থেকে রক্ষা করবে- তা রাতের বেলায় আসুক কিংবা দিনের বেলায় আসুক, কিন্তু (সে কথা না ভেবে) এরা নিজেদের মালিকের স্বরণ থেকে মুখ ফিরিয়ে রেখেছে। | ٣٢ قُلْ مَنْ يَّكْلَوُكُو بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّمْنِ مَنْ الْكُورُ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّمْنِ مُونَ |
| ৪৩. তবে কি তাদের আরো কোনো মাবুদ আছে যারা আমার (আযাব) থেকে তাদের বাঁচাতে পারবে; তারা তো নিজেদেরই কোনো সাহায্য করতে পারবে না, না তারা আমার কাছ থেকে সেখানে কোনো সাহায্যকারী পাবে! | ٣٣ أَا لَهُرُ أَلِهَا تَهَنَعُهُرُ مِّنَ دُوْلِنَا اللهَ لَا يَسْتَطِيعُوْنَ نَصْرَ آنْفُسِهِرُ وَلَا هُر مِّنَّا يُضْعَبُونَ نَصْرَ آنْفُسِهِرُ وَلَا هُر مِّنَّا يُضْعَبُونَ |
| 88 (মূলত) আমি এদের এবং এদের পিতৃপুরুষদের যাবতীয় ভোগসম্ভার দান করে যাচ্ছিলাম এবং এভাবে এদের ওপর দিয়ে (সমৃদ্ধির) এক দীর্ঘ সময় অতিবাহিত | ٣٣ بَلْ مَتَّعْنَا هَوُّ لَاءٍ وَاٰبَاءَهُرْ مَتَّى طَالَ عَلَيْهِرُ الْعُبُرُ ، أَنَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَاْتِي الْأَرْضَ |
| ২১ সূরা আল আম্বিয়া | মন্যিল ৪ |

| কোরআন × | ারীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইকৃতারাবা লিন্নাস |
|---|---|---|
| হয়ে গেছে; যমীনকে চা আনছি, তা করে)ঃ | এখন কি তারা দেখতে পাচ্ছে না, আমি রদিক থেকে তাদের ওপর সংকুচিত করে রপরও কি তারা বিজয়ী হবে (বলে আশা | نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ﴿ أَفَهُرُ ۖ الْغُلِبُونَ |
| তোমাদের (ডাক শুনতে | বী,) তুমি বলো, আমি তো শুধু ওহী দিয়ে জাহান্নামের) ভয় দেখাই, কিন্তু এই বধিররা পায়না, (বার বার) তাদের সতর্ক করা হলেও তর্কবাণীর কিছুই শুনতে পায় না)। | ٣٥ قُلْ إِنَّهَا ۗ ٱنْكِرُكُرْ بِالْوَهْيِ ﴿ وَلَا يَسْهَعُ الصَّرُّ النَّهَا ۗ النَّهَا عَلَى الْمَوْنَ |
| অংশও যদি |) তোমার মালিকের আযাবের সামান্য কিছু এদের স্পর্শ করে তখন এরা বলে উঠবে, হায় দের, আমরা সত্যিই যালেম ছিলাম! | ٣٦ وَلَئِنْ مَّسَّنُهُرْ نَفْعَةٌ مِّنْ عَنَّابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يُوَيْلَنَاۤ إِنَّا كُنَّا ظُلِّهِيْنَ |
| মানদন্ত স্থাপ মানব সন্তাত একটি শস্য লুকিয়ে) থাং | তের দিন আমি ন্যায়বিচারের জন্যে একটি পন করবো, অতপর সেদিন কারো (কোনো নর) ওপরই কোনো রকম যুলুম হবে না; যদি দানা পরিমাণ কোনো আমলও (তার কোথাও কে, (হিসাবের পাল্লায়) তা আমি (যথার্থই) করবো, হিসাব নেয়ার জন্যে আমিই যথেষ্ট। | " وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْرِ الْقِيْمَةِ فَلَا تُظْلَرُ نَفْسٌ شَيْئًا ، وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ مَبَّةٍ مِّنْ عَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حُسِبِيْنَ |
| <u>ফয়সালাকার</u> | আমি মৃসা ও হারূনকে (ন্যায় অন্যায়ের) রী একটি গ্রন্থ দিয়েছিলাম, পরহেযগার নন্যে দিয়েছিলাম (আঁধারে চলার) আলো ও র) উপদেশ, | ٢٨ وَلَقَن الْتَيْنَا مُوسَٰى وَهُرُونَ الْغُرْقَانَ وَضِيّاءً وَّذِكْرًا لِلْمُتَّقِيْنَ ٧ |
| দেখেও ভয় থাকে। | তাদের জন্যে) যারা আল্পাহ তায়ালাকে না করে এবং তারা কেয়ামত সম্পর্কে ভীত সন্ত্রস্ত | ٣٩ النّزين يَخْشُون رَبّهُر بِالْغَيْبِ وَهُرْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ |
| | এ হচ্ছে বরকতপূর্ণ উপদেশ, এটি আমিই ছ, তোমরা কি এর অস্বীকারকারী হতে চাও ? | ٥٠ وَهٰنَا ذِكْرٌ مُّبْرَكٌ اَنْزَلْنَهُ ، اَفَاَنْتُر لَهُ مُنْكِرُونَ ع |
| | মাগে ইবরাহীমকে ভালোমন্দ বিচারের জ্ঞান লাম এবং আমি সে সম্পর্কে সম্যক অবগত | ٥١ وَلَقَنَ اٰتَيْنَا ﴿ إِبْرُهِيْمَ رُشَنَةً مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَلَمِيْنَ عَ |
| বললো, এ | সে তার পিতা ও তার জাতির (লোকদের) (নিম্প্রাণ) মূর্তিগুলো আসলে কি– যার) জন্যে তোমরা শব্ধ হয়ে বসে আছো। | ٥٢ إِذْ قَالَ لِاَبِيْدِ وَقَوْمِهِ مَا هَٰلِهِ السَّمَاثِيْلُ الَّتِيَّ آَثْتُر لَهَا عٰكِفُونَ |
| | বললো, আমরা আমাদের পিতৃপুরুষদের বাদাত করতে দেখেছি (এর চাইতে বেশী জানি না)। | ٥٣ قَالُواْ وَجَكْنَا ۚ أَبَاءَنَا لَهَا عُبِدِينَ |
| আজ) সুস্প তোমাদের পূ | লো, (এগুলোর পূজা করে) তোমরা নিজেরা (যেমন ষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত হচ্ছো, (তেমনি) বিপুরুষরাও (গোমরাহীতে নিম্ক্লিত ছিলো)। | مَلُل مُین |
| কোনো সত্য তামাশা কর | | ٥٥ قَالُوْ آَ أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَأَ أَنْتَ مِنَ اللَّعِيثِينَ اللَّعِيثِينَ |
| বরং তোমা | লো (না, এটা কোনো তামাশার বিষয় নয়), দের মালিক যিনি, তিনিই আসমানসমূহ ও | ۵۲ قَالَ بَلُ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ عام اللَّهُ عَالَ اللَّهُ وَالْأَرْضِ عام اللَّهُ عَالَ اللَّهُ وَالْأَرْضِ |
| ২১ সূরা অ | াল আম্বিয়া ৩২৭ | |

| Catality will be supply and about a roots | |
|--|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
| যমীনের মালিক, তিনিই এগুলো সৃষ্টি করেছেন, আর আমি নিজেই হচ্ছি এ ব্যাপারে সাক্ষীদের একজন। | الَّذِي مُ فَطَرَهُنَّ ﴿ وَأَنَا عَلَى ذَٰلِكُمْ مِّنَ الشَّهِدِيْنَ الشَّهِدِيْنَ |
| ৫৭. আল্লাহ তায়ালার শপথ, তোমরা এখান থেকে সরে গেলে আমি তোমাদের মূর্তিগুলোর ব্যাপারে একটা কৌশল অবলম্বন করবো। | ٥٤ وَتَالِلَّهِ لَاكِيْنَ نَّ أَصْنَامَكُيرُ بَعْنَ أَنْ تُوَلُّوا مُنْبِرِيْنَ |
| ৫৮. অতপর (তারা চলে গেলে) ওদের বড়োটি ছাড়া অন্য | ٥٨ فَجَعَلَهُمْ جُنْذًا إِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ |
| মৃর্তিগুলোকে সে চূর্ণ বিচূর্ণ করে দিলো, যাতে করে তারা তার (ঘটনা জানার জন্যে এ বড়োটার) দিকেই ধাবিত হতে পারে। | اِلْيَدِ يَرْجِعُونَ |
| ৫৯. (যখন তারা ফিরে এসে মূর্তিদের এ দুরবস্থা দেখলো,) তখন তারা বললো, আমাদের দেবতাদের | ٥٩ قَالُوْ ا مَنْ فَعَلَ هَٰذَا بِالْهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ |
| সাথে এ আচরণ করলো কে? যে-ই করেছে নিসন্দেহে সে যালেমদেরই একজন। | الظُّلِوِيْنَ |
| ৬০. লোকেরা বললো, আমরা শুনেছি এক যুবক ওদের সমালোচনা করছিলো, (হাাঁ) সে যুবককে বলা হয় | أَلُوْا سَبِعْنَا فَتَى يَّانُكُرُمُر يُقَالُ لَهَ اللهِ أَدُمْ أَنْ اللهِ |
| ইবরাহীম; | اِبرهِيسُ ا |
| ৬১. তারা বললো, (যাও) তাকে সব মানুষের চোখের সামনে এনে হাযির করো, যাতে করে তারা (তার বিরুদ্ধে) সাক্ষ্য দিতে পারে: | الا قَالُوا فَاتُوا بِهِ عَلَى اعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُرْ يَشْهَدُونَ |
| ৬২. (ইবরাহীমকে আনার পর) তারা (তাকে) জিজ্ঞেস করলো, হে ইবরাহীম, তুমিই কি আমাদের মাবুদগুলোর সাথে এ আচরণ করেছো; | ٢٢ قَالُوْ ا عَانَتَ فَعَلْسَ مِنَ اللَّهِ بِالهَمِّينَا يَابُرُمِيْرُ |
| ৬৩. (সে বললো,) বরং ওদের বড়োটিই সম্ভবত (এসব কিছু) ঘটিয়েছে, তোমরা তাদেরকেই জিজ্ঞেস করো না, তারা যদি কথা বলতে পারে (তাহলে তারাই বলবে কে | ٣٣ قَالَ بَلْ فَعَلَدً ﴿ كَبِيْرُهُمْ هٰنَ ا فَسَنَلُوهُمْ |
| তাদের সাথে এ আচরণ করেছে)! | إِنْ كَانُوْ الْ يَنْطِقُوْنَ |
| ৬৪. (ইবরাহীমের এ অভিনব যুক্তি শুনে) তারা (নিজেরা চিন্তা করে) নিজেদের দিকেই ফিরে এলো এবং একে | ٣٢ فَرَجَعُوْ آ إِلَّى ٱنْفُسِمِرْ فَقَالُوْ آ إِنَّكُرْ |
| অপরকে বলতে লাগলো (যালেম তো সে নয়, যে ওটা ভেংগেছে), যালেম তো হচ্ছো তোমরা (ধারা এর পূলা করো), | أَنْتُرُ الظُّلِمُونَ ٧ |
| ৬৫. অতপর (লজ্জায়) ওদের মাথা অবনত হয়ে গেলো, ওরা বললো (হে ইবরাহীম), তুমি তো (ভালো করেই) | ٦٥ ثُرِّ نُكِسُوْا عَلَى رُءُوْسِهِرْ ۽ لَقَنْ عَلِمْتَ |
| জানো, এরা কথা বলতে পারে না। | مَا هَوُ كَاءٍ يَنْطِقُونَ |
| ৬৬. সে বললো, তাহলে তোমরা কেন আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে এমন কিছুর পূজা করো যারা তোমাদের কোনো | ٢٦ قَالَ أَفَتَغْبُكُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا |
| উপকারও করতে পারে না, তোমাদের কোনো অপকারও করতে পারে না। | يَنْفَعُكُم شَيْئًا وَ لاَ يَضُوُّكُم ﴿ |
| ৬৭. ধিক তোমাদের জন্যে এবং আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে তোমরা যাদের পূজা করো তাদের জন্যেও; তোমরা | ١٢ أن لَّكُرُ وَلِهَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ ١ |
| কি (এদের এ অক্ষমতাটুকু) বুঝতে পারছো না। | اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ |
| ৬৮. (এ সময় রাজার) লোকেরা বললো, একে আগুনে পুড়িয়ে দাও, যদি তোমরা কিছু করতেই চাও তাহলে | ٦٨ قَالُوا مَرِّقُونًا وَانْصُرُواۤ الهَتَكُم (ان |
| (আগে গিয়ে) তোমাদের মৃর্তিগুলোর প্রতিশোধ গ্রহণ করো। | كُنْتُر فُعِلِيْنَ |
| ২১ সূরা আল আম্বিয়া | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইকৃতারাবা লিন্নাস |
|---|--|
| ৬৯. (অপরদিকে) আমি (আগুনকে) বললাম, হে আগুন, তুমি ইবরাহীমের জন্যে শীতল ও শান্তিময় হয়ে যাও, | ۲۹ قُلْنَا يُنَارُ كُوْنِي بَرْدًا وَسَلْمًا عَلَى إِبْرُهِيْرَ ٧ |
| ৭০. ওরা তার বিরুদ্ধে একটা ফব্দি আঁটতে চাইলো, আর আমি (উল্টো) তাদের ক্ষতিগ্রস্ত (ও ব্যর্থ) করে দিলাম, | اِبرِهِيمر لا ٤٠وَارَادُوا بِهِ كَيْنًا فَجَعَلْنُهُرُ الْأَغْسَرِيْنَ؟ |
| ৭১. অতপর আমি তাকে এবং (আমার নবী) লৃতকে উদ্ধার করে এমন এক দেশে নিয়ে গেলাম, যেখানে আমি দুনিয়াবাসীর জন্যে অনেক কল্যাণ রেখেছি। | 4 وَنَجَّيْنُهُ وَلُوطًا إِلَى الْإَرْضِ الَّتِيْ بُرِكْنَا فِيْهَا لِلْعُلَمِيْنَ |
| ৭২. অতপর আমি ইবরাহীমকে (তার ছেলে হিসেবে) ইসহাক দান করলাম; তার ওপর অতিরিক্ত দান করলাম (পৌত্র হিসেবে) ইয়াকুব; এদের সবাইকেই আমি ভালো (মানুষ) বানিয়েছিলাম, | 47 وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَٰقَ ، وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ، وَكُلَّا مِعَلْنَا صِلْحِيْنَ |
| ৭৩. আমি তাদের (দুনিয়ার মানুষদের) নেতা বানিয়েছিলাম, তারা আমার নির্দেশ অনুসারে (মানুষকে) সুপথ দেখাতো, নেক কাজ করা, নামায প্রতিষ্ঠা করা ও যাকাত দেয়ার জন্যে আমি তাদের কাছে ওহী পাঠিয়েছি, তারা (সর্বত্রই) আমার আনুগত্য করতো। | ٣٠ وَمَعَلَنْمُر اللَّهِ تَهْدُونَ بِآمُونَا وَاوْمَيْنَا وَاوْمَيْنَا وَالْمَهْرُ اللَّهِ وَإِنَّا اللَّهُورَ فِعْلَ الْحَمْرُتِ وَإِنَّا الصَّلْوةِ وَإِيْنَاءُ الرَّكُوةِ وَكَانُوا لَنَا عُبِرِيْنَ عَلَيْ الزّّكُوةِ وَكَانُوا لَنَا عُبِرِيْنَ عَلَيْ |
| ৭৪. (ইবরাহীমের মতো) আমি লৃতকেও প্রজ্ঞা দান করেছিলাম, তাকেও আমি এমন একটি জনপদ থেকে উদ্ধার করে এনেছি যার অধিবাসীরা অশ্লীল কাজ করতো; সত্যিই তারা ছিলো জঘন্য বদ ও গুনাহগার জ্ঞাতি, | ٣٠ وَلُوْطًا أَتَيْنَا مُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَيْنَا مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبْنِينَ الْمُرْ كَانُوا قَوْمًا سَوْءٍ فسِقِينَ لا |
| ৭৫. আর আমি তাকে আমার (অপরিসীম) অনুগ্রহের ভেতর প্রবেশ করিয়েছি; নিসন্দেহে সে ছিলো একজন সৎকর্মশীল (নবী)। | 40 وَأَدْغَلْنُهُ فِيْ رَهْبَتِنَا ، إِنَّهُ مِنَ السَّلِحِيْنَ ع |
| ৭৬. (হে নবী, তুমি নৃহের কাহিনীও তাদের শোনাও,) নৃহ যখন আমাকে ডেকেছিলো, (ডেকেছিলো ইবরাহীমেরও) আগে, তখন আমি তার ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম এবং তাকে ও তার পরিবার পরিজনদের আমি এক মহাসংকট থেকে উদ্ধার করেছিলাম, | ٤٦ وَتُومًا إِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاشْتَجَبْنَا لَهً فَنَجَّيْنُهُ وَاَهْلَةً مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْرِ ع |
| ৭৭. আমি তাকে এমন এক জ্বাতির মোকাবেলার সাহায্য করেছিলাম যারা আমার আরাতসমূহ অস্বীকার করেছিলো; (আসলেই) তারা ছিলো বড়ো খারাপ জ্বাতের লোক, অতপর আমি তাদের সবাইকে (মহাপ্লাবনে) ডুবিয়ে দিয়েছি। | 44 وَنَصَرْنُهُ مِنَ الْقَوْرِ النَّذِيْنَ كَنَّ الْوُوا بِالْنِيْنَ كَنَّ الْوُوا بِالْنِيْنَ كَنَّ الْوُا تَوْرًا سَوْءٍ فَاغْرَقْنُهُمْ أَجْمَعِيْنَ أَجْمَعِيْنَ |
| ৭৮. দাউদ ও সোলায়মানের ঘটনাও (তাদের শোনাও), যখন তারা একটি ক্ষেতের ফসলের (মোকদ্দমায়) রায় প্রদান করছিলো। (মোকদ্দমাটা ছিলো এমন), রাতের বেলায় (মানুষদের) কিছু মেষ (অন্য মানুষদের ক্ষেতে চুকে) তা তছনছ করে দিলো, এই বিচারপর্বটি আমি নিজেও তাদের সাথে পর্যবেক্ষণ করছিলাম, | 4 وَدَاوْدَ وَسُلَيْمِنَ إِذْ يَحْكُمِنِ فِي الْحَرْمِ إِذْ نَفَشَى فِي الْحَرْمِ إِذْ نَفَشَى فِيهِ غَنَرُ الْقَوْاعِ وَكُنّا لِحُثْمِهِ هُولِيْنَ قَلا |
| ৭৯. অতপর আমি (সঠিক রায় যা-) তা সোলায়মানকে বুঝিয়ে দিয়েছিলাম, (অবশ্য) আমি তাদের (উভয়কেই) প্রজ্ঞা ও জ্ঞান দান করেছিলাম, আমি পাহাড় পর্বত এবং | 49 فَغُهُمْنُهُا سُلَيْنِي عَ وَكُلًّا أَتَيْنَا مُكُبًّا |
| পাখ-পাখালিকেও দাউদের অনুগত করে দিয়েছিলাম যেন ২১ সূরা আল আম্বিয়া | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্বতারাবা লিন্নাস |
|---|---|
| তারাও (তার সাথে) আল্লাহ তায়ালার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারে; আর আমিই (এ সব কিছু) ঘটাচ্ছিলাম। | وَالطَّيْرَ ، وَكُنَّا نُعِلِيْنَ |
| ৮০. আর আমি তাকে তোমাদের (যুদ্ধে ব্যবহারের) জন্যে বর্ম বানানো শিক্ষা দিয়েছি, যাতে তোমরা তোমাদের যুদ্ধের সময় (পরস্পরের আক্রমণ থেকে) নিজেদের বাঁচাতে পারো, তারপরও কি তোমরা (আমার) শোকরগোবার হবে নাঃ | ٥٠ وَعَلَّهْناهُ مَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُر لِتُحْمِنَكُر مَّ وَعَلَّهْناهُ مَنْعَةً لَبُوسٍ لَّكُر لِتُحْمِنَكُر مِّنْ وَمَن الله الله الله الله الله الله الله الل |
| ৮১. আমি প্রবল হাওয়াকে সোলায়মানের জন্যে বশীভৃত করে দিয়েছিলাম, তা তার আদেশে সে দেশের দিকে ধাবিত হতো যেখানে আমি প্রভৃত কল্যাণ রেখে দিয়েছি; (মূলত) আমি প্রতিটি বিষয়ের ব্যাপারেই সম্যক অবগত আছি। | أَولِسُلَيْمٰى الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِى بِامْرِةً إلى الأرْضِ الَّتِى بْرَكْنَا فِيْهَا و وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلْمِيْنَ شَيْءٍ عَلْمِيْنَ |
| ৮২ শয়তানদের মাঝে (তার) কিছু (জ্ব্নি অনুসারী) তার জন্যে (সমূদ্রে) ডুবুরীর কাজ করতো, তার জন্যে এ ছাড়াও এরা বহু কাজ আঞ্জাম দিতো, তাদের রক্ষক তো আমিই ছিলাম, | ٨٢ وَمِنَ الشَّيْطِيْنِ مَنْ يَغُوْمُونَ لَهُ وَيَغْمَلُونَ عَمَلًا دُوْنَ ذَلِكَ عَ وَكُنَّا لَهُرْ حُفِظِيْنَ ٧ |
| ৮৩. (শ্বরণ করো,) যখন আইয়ৃব তার মালিককে ডেকে বলেছিলো (হে আল্লাহ), আমাকে এক কঠিন অসুখে পেয়ে বসেছে, (আমায় তুমি) নিরাময় করো, (কেননা) তুমিই হচ্ছো দয়ালুদের সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু, | ٨٣ وَ اَيُّوْبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ ۚ اَنِّى مَسَّنِى الشَّوِيَ وَاللَّهِ وَ اَلْكُو مَسَّنِى السَّنِي الشَّو وَ اَنْتَ اَرْهَرُ الرَّحِيثَ ٤ صل |
| ৮৪. অতপর আমি তার ডাকে সাড়া দিলাম, তার যে কষ্ট ছিলো তা আমি দূর করে দিলাম, তাকে (যে তথু) তার পরিবার পরিজনই ফিরিয়ে দিলাম (তা নয়); বরং তাদের (সবাইকে) আমার কাছ থেকে বিশেষ দয়া এবং আমার বান্দাদের জন্যে উপদেশ হিসেবে আরো সমপরিমাণ (অনুথহ) দান করলাম। | ٨٣ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرِّ وَالْتَيْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرِّ وَالْتَيْنَا اللهُ وَمِثْلَهُمْ مَّعَمُرْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكُرى لِلْعَبِدِيْنَ |
| ৮৫. (আরো স্বরণ করো,) ইসমাঈল, ইট্রীস ও যুল কিফলের (কথা), এরা সবাই (আমার) ধৈর্যশীল বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত, | ٨٥ وَإِسْمُعِيْلَ وَإِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ مَ كُلُّ مِّنَ الصَّبِرِيْنَ عَمِهِ |
| ৮৬. আমি তাদের আমার রহমতের মধ্যে দাখিল করলাম, কেননা তারা ছিলো নেককার মানুষদের দলভুক্ত। | ٨٦ وَ أَدْعَلْنَهُمْ فِي رَهْبَتِنَا ٤ إِنَّهُمْ مِّنَ السَّلِحِيْنَ اللهِ السَّلِحِيْنَ |
| ৮৭. আর (শ্বরণ করো) 'যুনুন' (-এর কথা), যখন সেরাণ করে নিজের লোকজনদের ছেড়ে বের হয়ে গিয়েছিলো, সে মনে করেছিলো আমি (বৃঝি) তাকে ধরতে পারবো না (অতপর আমি যখন তাকে সত্যি সত্যিই ধরে ফেললাম), তখন সে (মাছের পেটের) অন্ধকারে বসে আমাকে (এই বলে) ডাকলো, হে আল্লাহ তায়ালা, তুমি ব্যতীত কোনো মাবুদ নেই, তুমি পবিত্র, তুমি মহান, অবশ্যই আমি সীমালংঘনকারীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে পড়েছি, | ٨٠ وَذَا النَّوْنِ إِذْ نَّمَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَّى الشَّلَمٰتِ أَنْ الْآلَٰ الْآلَٰ الْآلَٰ الْآلَٰ الْآلَٰ الْآلَٰ الْآلَٰ أَنْتَ سُبْطُنَكَ الْحَ الشَّلْمِينَ كُنْتُ مِنَ الظَّلْمِيْنَ عَلَيْ الطَّلْمِيْنَ عَلَيْ الطَّلْمِيْنَ عَلَيْ |
| ৮৮. অতপর আমি তার ডাকে সাড়া দিশাম এবং তাকে (তার মানসিক) দুক্তিস্তা থেকে আমি উদ্ধার করলাম; আর এভাবেই আমি আমার মোমেন বান্দাদের সব সময় উদ্ধার করি। | ٨٨ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنُهُ مِنَ الْفَرِّ طَ وَكَالِكُ نُنْجِى الْهُؤْمِنِيْنَ وكَالُكِ نُنْجِى الْهُؤْمِنِيْنَ |
| ২১ সূরা আল আম্বিয়া | মनयिन 8 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইকৃতারাবা লিন্নাস |
|---|--|
| ৮৯. আর (শ্বরণ করো,) যাকারিয়া (-র কথা), যখন সে তার মালিককে ডেকে বলেছিলো, হে আমার মালিক, তুমি আমাকে একা (নিসন্তান করে) রেখে দিয়ো না, তুমিই হচ্ছো উৎকৃষ্ট মালিকানার অধিকারী, | ۸۹ وَزَكَرِيَّا ۗ إِذْ نَادٰى رَبَّهُ رَبِّ لَا تَنَرَنِى |
| ৯০. অর্তপর আমি তার জন্যেও সাড়া দিরেছিলাম, তাকে দান করেছিলাম (নেক সন্তান) ইয়াহইয়া এবং তার (মনের আশা প্রণের) জন্যে আমি তার স্ত্রীকে (বদ্ধ্যাত্মুক্ত করে সম্পূর্ণ) সৃস্থ (সন্তান ধারণোপযোগী) করে দিরেছিলাম; (আসলে) এ লোকগুলো (হামেশাই) সৎকাজে (একে অন্যের সাথে) প্রতিযোগিতা করতো, তারা আমাকে আশা ও ভীতির সাথে ডাকতো; তারা স্বাই ছিলো আমার অনুগত (বান্দা)। | ٩٠ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ رَووَهَبْنَا لَهُ يَحْيٰى وَالْمَبْنَا لَهُ يَحْيٰى وَالْمَلَحْنَا لَهُ يَحْيٰى وَالْمَلَحْنَا لَهُ زَوْجَهُ اللّهِ وَاللّهُ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرُاتِ وَيَنْعُونَنَا رَغَبًا وَلَمْبًا الْحَيْرُاتِ وَيَنْعُونَنَا رَغَبًا وَلَمْبًا اللّهُ فَيْ فَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّ |
| ৯১. (শরণ করো সেই পুণ্যবতী নারীকে,) যে নিজ সতীত্ব রক্ষা করেছিলো, অতপর তার মধ্যে আমি আমার পক্ষ থেকে এক (বিশেষ সম্মানী) আত্মা ফুঁকে দিলাম, এভাবে আমি তাকে এবং তার পুত্রকে দুনিয়াবাসীর জন্যে এক নিদর্শন বানিয়ে দিয়েছিলাম। | 91 وَالَّتِيَّ آَمْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَغَخْنَا فِيْهَا مِنْ وَالَّتِيَّ آَمُعَلُنَهَا وَابْنَهَا أَيْةً لِلْفُلَبِيْنَ وَجُعَلْنُهَا وَابْنَهَا أَيْةً لِلْفُلَبِيْنَ |
| ৯২. (যাদের কথা আমি বললাম,) এ হচ্ছে তোমাদেরই স্বজাতি, এরা সবাই একই জাতি, আর আমি (এদের) তোমাদের সবাইর মালিক, অতএব তোমরা আমারই গোলামী করো। | ٩٢ إِنَّ مَٰنَهِ ۗ ٱمَّنَّكُر ٱمَّةً وَّاحِرَةً ۖ أَ وَّانَا رَبَّكُر ْنَاعُبُنُوْنِ |
| ৯৩. (কিন্তু পরবর্তী সময়ে) তারা নিজেদের মধ্যে মতবিরোধ করে নিজেদের (দ্বীনের) বিষয়কে টুকরো টুকরো করে ফেললো (অথচ) সর্বশেষে এদের সবাইকে (এক হয়ে) আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে। | ٩٣ وَتَقَطَّعُوا آَ أَرَهُمُ بَيْنَهُمُ ﴿ كُلُّ إِلَيْنَا رَجِعُونَ عَ |
| ৯৪. কোনো ব্যক্তি যদি মোমেন অবস্থায় কোনো নেক কাজ করে তাহলে তার (সৎপথে চলার এ) প্রচেষ্টাকে কিছুতেই অস্বীকার করা হয় না, অবশ্যই আমি তার জন্যে (তার প্রতিটি কাজকে) লিখে রাখি। | ٩٣ فَهَنْ يَعْهَلْ مِنَ الصَّلِحُتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ 5 وَإِنَّا لَمَّ كَاتِبُوْنَ |
| ৯৫. এটা কখনো সম্ভব নয় যে, যে জাতিকে আমি একবার ধ্বংস করে দিয়েছি তারা আবার (তাদের ধ্বংস পূর্ব অবস্থায়) ফিরে আসবে– | ٩٥ وَمَرْأً عَلَى قَرْيَةٍ ٱهْلَكْنَهَا ٱلنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ |
| ৯৬. এমনকি যখন (কেয়ামতের নির্দশন হিসেবে) ইয়াজুজ ও মা'জুজকে ছেড়ে দেয়া হবে এবং ওরা প্রতিটি উচ্চভূমি থেকে (পতংগের মতো) নীচের দিকে বেরিয়ে আসতে থাকবে। | ٩٦ مَتَّى إِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُرْ مِّنْ كُلِّ مَنَّبٍ يَّنْسِلُونَ |
| ৯৭. এবং (কেয়ামতের ব্যাপারে আমার) অমোঘ প্রতিশ্রুতি আসনু হয়ে আসবে, (তখন) তা আসতে দেখে যারা (এতোদিন) একে অস্বীকার করেছিলো তাদের চক্ষু স্থির হয়ে যাবে; (তারা বলবে) হায়, কতোই না দুর্জোগ আমাদের, আমরা এ (দিনটি) সম্পর্কেই উদাসীন ছিলাম, বরং আমরা সত্যিই ছিলাম (বড়ো) যালেম! | 94 وَاقْتَرَبَ الْوَعْنُ الْحَقُّ فَاِذَا مِي الْحَقُّ فَازَا مِي شَاعِصَةٌ آبُمَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ يُويَلَنَا قَنْ كُنَّا فِي عَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا فَلِمِيْنَ |
| ৯৮. (তখন তাদের বলা হবে,) তোমরা এবং তোমাদের সে সব কিছু, যাদের তোমরা আল্লাহর বদলে মাবুদ বানাতে, সবাই জাহানাুমের ইন্ধন হবে; (আজ্ঞ) তোমাদের সবাইকেই সেখানে পৌছুতে হবে। | ٩٨ إِنْكُرْ وَمَا تَعْبُكُونَ مِنْ دُوْنِ اللّهِ حَصَبُ جَمَنَّرَ الْمُتَرْلَمَا وٰرِدُوْنَ |
| ৯৯. তারা যদি সত্যিই মাবুদ হতো যাদের তোমরা | ٩٩ لَوْ كَانَ مَوْكَاءِ اللَّهَ مَّا وَرَدُوْهَا ١ وَكُلُّ |
| ২১ সূরা আল আম্বিয়া | মনযিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
|---|---|
| গোলামী করতে, তাহলে আজ তারা কিছুতেই (জাহান্নামে) প্রবেশ করতো না; (উপাস্য উপাসক) সবাই তাতে চিরকাল ধরে অবস্থান করবে। | فِيْهَا خُلِلُ وْنَ |
| ১০০. এদের জন্যে সেখানে তথু শাস্তির ভয়াবহ চীৎকারই (তথু অবশিষ্ট) থাকবে, (এ চীৎকার ছাড়া) তারা সেখানে (অন্য) কিছুই ভনতে পাবে না। | ١٠٠ لَمُرْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّمُرْ فِيْهَا لَا يَسْبَعُونَ |
| ১০১. (অপরদিকে) যাদের জন্যে আমার কাছ থেকে (অনন্ত) কল্যাণ নির্ধারিত হয়ে আছে, অবশ্যই তাদের (জাহান্নাম ও) তার (অাষা) থেকে (অনেক) দূরে রাখা হবে, | القَّن النَّن أَن أَن أَن أَن أَن أَن أَن أَن أَن الْحُسْنَى وَ الْمَا الْحُسْنَى وَ الْمَا الْحُسْنَى وَ الْمَا الْحُسْنَى وَ الْمَا أَمْ عَلْ وَن وَ الْمَا الْمُعْلَ وَن وَ اللَّهِ اللَّلْمِلْمِلْ اللَّلَّالَّةِلْمِلْمُلْمِلْ اللَّهِ اللَّهِ اللّ |
| ১০২. তারা (তাদের সুখের ঘরে বসে ভরাবহ চীৎকারের) ক্ষীণতম শব্দও শুনতে পাবে না, তাদের জন্যে তো (বরং সেখানে) তাদের মন যা চায় তাই (হাযির) থাকবে, (তাও থাকবে আবার) চিরকাল ধরে, | ۱۰۲ لَا يَسْهَعُونَ مَسْيَسَهَا ج وَهُرْ فِي مَا اشْتَهَتَ الْفُسُهُرْ خَلِلُونَ ج |
| ১০৩. (জাহান্নামের) বড়ো ভীতি তাদের (সেদিন মনে) কোনো রকম দুশ্চিন্তার সৃষ্টি করতে পারবে না, (সেদিন) ফেরেশতারা তাদের অভিনন্দন জানিয়ে বলবে; তোমাদের সাথে যে ওয়াদা করা হয়েছিলো, এ হচ্ছে তোমাদের সে (ওয়াদা পূরণের) দিন। | ١٠٣ لَا يَحْزُنُهُرُ الْفَزَعُ الْآكْبَرُ وَتَتَلَقَّهُرُ الْمَالِكِكَةُ وَتَتَلَقَّهُرُ الْفِي كُنْتُر تُوعَدُونَ الْمَالِكِكَةُ وَفَا يَوْمُكُرُ الَّذِي كُنْتُر تُوعَدُونَ |
| ১০৪. (এটা এমন একদিন) যেদিন আমি আসমানসমূহকে গুটিয়ে নেবো, ঠিক যেভাবে কেতাবসমূহ গুটিয়ে ফেলা হয়; যেভাবে আমি একদিন এ সৃষ্টির সূচনা করেছিলাম সেভাবেই আমি আবার এর পুনরাবৃত্তি ঘটাবো, এটা (এমন এক) ওয়াদা, (যা) পালন করা আমার ওপর জরুরী; আর এ কাজ তো আমি করবোই। | ١٠٣ يَوْمَ نَطْوِى السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّحِلِّ لِلْكُتُبِ ، كَمَا بَنَ أَنَّ أَوَّلَ خَلْقٍ تُعِيْلُةً ، وَعْلًا عَلَيْنَ ، إِنَّا كُنَّا فعلِيْنَ |
| ১০৫. আমি যবুর কেতাবেও এ উপদেশ উল্লেখের পর (দুনিয়ার কর্তৃত্বের ব্যাপারে পরিষ্কার করে আমার) এ কথা লিখে দিয়েছি, (একমাত্র) আমার যোগ্য বান্দারাই (এ) যমীনের (নেতৃত্ব করার) অধিকারী হবে। | ١٠٥ وَلَقَلْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ اَبَعْنِ النِّكْرِ أَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّلِحُوْنَ |
| ১০৬. এ (ব্পার) মধ্যে (আমার) এবাদাতগোযার বান্দাদের জন্যে সত্যিই এক (মহা) পরগাম (নিহিত) আছে; | ١٠٦ إِنَّ فِي هٰنَ البَلْغًا لِقَوْمٍ عٰبِدِينَ ، |
| ১০৭. (হে নবী,) আমি তো তোমাকে সৃষ্টিকুলের জন্যে রহমত বানিয়েই পাঠিয়েছি। | ١٠٤ وَمَ ۗ ٱرْسَلْنَكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَلَمِيْنَ |
| ১০৮. তুমি (এদের) বলো, আমার ওপর এই মর্মে ওহী পাঠানো হয়েছে যে, তোমাদের মাবুদ একজনই, তোমরা কি (তাঁর) অনুগত বান্দা হবে নাঃ | ١٠٨ قُلْ إِنَّهَا يُوْمَى إِلَى آَنَّهَا إِلَٰهُكُر إِللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّ |
| ১০৯. (হাাঁ,) তারা যদি তোমার কথা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে তুমি বলো, আমি তোমাদের (জানাতের সুখবর দেয়ার পাশাপাশি আযাবের ব্যাপারেও) একই পরিমাণ সতর্ক করছি, আমি (নিজেও) একথা জানি না, যে (আযাবের) ওয়াদা তোমাদের কাছে করা হচ্ছে তা (আসলেই) কি খুব কাছে, নাকি তা (অনেক) দূরেঃ | ۱۰۹ فَانَ تَوَلَّوْا فَقُلْ أَذَنْتُكُمْ عَلَى سَوَّاءٍ ﴿ وَانَ آَدُرِیْ آَقَرِیْبًّ اَمْ بَعِیْلًّ مَّا تُوْعَلُونَ |
| ১১০. একমাত্র তিনিই জানেন যা কিছু উচ্চ স্বরে বলা হয় এবং তিনিই জানেন যা কিছু তোমরা (অন্তরেূ) গোপন করো। | 11 إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ |
| ১১১. আমি জানি না, (অবকাশের) এ (সময়টুকু) হতে পারে তোমাদের জন্যে এক পরীক্ষা (মাত্র, কিংবা হতে | ١١١ وَإِنْ آدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةً لَّكُرْ وَمَتَاعً إِلَى |
| ২১ সূরা আল আম্বিয়া | मनियल 8 |

| | · |
|--|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
| পারে) সুনির্দিষ্ট কিছু সময়ের জ্বন্যে (তোমাদের) কিছু মাল সম্পদ (দান করা)। | م حين |
| ১১২. (সর্বশেষে) সে বললো, হে আমার মালিক, তুমি (এদের ব্যাপারটা) ন্যায়ের সাথে মীমাংসা করে দাও; (হে | ١١٢ قُلَ رَبِّ الْمُكُرْ بِالْحَقِّ ، وَرَبُّنَا الرَّمْلِيُّ |
| মানুষ,) তোমরা (আল্লাহ সম্পর্কে) যা কিছু কথা বানাচ্ছো, সেনুব (কিছুর অনিষ্টের) ব্যাপারে একমাত্র আমাদের | الْهُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُوْنَ ع |
| মালিক দয়াময় আল্লাহ তায়ালার কাছেই আশ্রয় চাওয়া যেতে পারে। | · · |
| সূরা আল হাজ্জ | سُوْرَةُ الْحَجِّ مَنَنِيَّةً |
| মদীনায় অবতীর্ণ– আয়াত ৭৮, রুকু ১০ | أَيَاتٌ : ٨٠ ۗ رُكُوْعٌ :١٠ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْسٰيَ الرَّحِيْرِ |
| হে মানুষ, তোমরা তোমাদের মালিককে ভয় করো, অবশ্যই কেয়ামতের কম্পন হবে একটি ভয়ংকর ঘটনা। | ا يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُرْ } إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ هَيْءً عَظِيْرً |
| ২. সেদিন তোমরা তা নিজেরা দেখতে পাবে, (দেখবে) বুকের দুধ খাওয়াচ্ছে এমন প্রতিটি নারী (ভয়াবহু | ٢ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَلْهَلُ كُلُّ مُوْضِعَةٍ عَمَّا آرْضَعَت |
| আতংকে) তার দুগ্ধপোষ্যকে ভূলে যাবে, প্রতিটি গর্ভবতী (জন্তু) তার (গর্ভস্থিত বস্তুর) বোঝা ফেলে দেবে, মানুষকে যখন তুমি দেখবে তখন (তোমার) মনে হবে | وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ مَهْلٍ مَهْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ |
| তারা বৃঝি কিছু নেশাগ্রস্ত মাতাল, কিন্তু তারা আসলে কেউই নেশাগ্রস্ত নয়; বরং (এটা হচ্ছে এক ধরনের আযাব,) আল্লাহ তায়ালার আযাব কিন্তু অত্যন্ত ভয়াবহ। | ا سُكْرُى وَمَا مُرْ بِسُكْرَى وَلَكِنَّ عَنَابَ اللهِ شَرِيْنَ |
| ৩. মানুষের মধ্যে কিছু (মূর্ষ) লোক আছে, যারা না জেনে (না বুঝে) আল্লাহ তায়ালার (শক্তি ক্ষমতা) সম্পর্কে তর্ক বিতর্ক করে এবং (সে) প্রতিটি বিদ্রোহী শয়তানের আনুগত্য করে, | ٣ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيْتَّبِعُ كُلَّ شَيْطْنِ مِّرِيْنٍ لا |
| ৪. অথচ তার ওপর (আল্লাহ তায়ালার এ) ফয়সালা তো হয়েই আছে য়ে, য়ে কেউই তাকে বয়ৢ হিসেবে গ্রহণ | مُ كُتِبَ عَلَيْهِ إَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلَّهُ |
| করবে সে (নির্ঘাত) গোমরাহ হয়ে যাবে, আর (এ গোমরাহীই) তাকে (জাহান্নামের) প্রজ্বলিত (আগুনের) শান্তির দিকে নিয়ে যাবে। | وَيَهْرِيْهِ إِلَى عَنَابِ السَّعِيْرِ |
| ৫. হে মানুষ, পুনরুখান (দিবস) সম্পর্কে যদি তোমাদের মনে কোনো সন্দেহ থাকে তাহলে (তোমরা আমার সৃষ্টি | ٥ يَأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُرْ فِي رَيْبٍ مِّنَ |
| প্রক্রিয়া ভেবে দেখো-) আমি তোমাদের (প্রথমত) মাটি থেকে, অতপর শুক্র থেকে, অতপর রক্তপিভ থেকে, | الْبَعْمِ فَإِنَّا خَلَقْنُكُمْ مِّنْ تُرَابِ ثُمَّ مِنْ |
| তারপর মাংসপিত থেকে পয়দা করেছি, যা আকৃতি বিশিষ্ট (হয়ে সম্ভানে পরিণত হয়েছে) কিংবা আকৃতি | النَّفْفَةِ ثُرَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُرَّ مِنْ مُّضْفَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَ الْعَبْرُ مَخَلَّقَةٍ لِنَّبَيِّنَ لَكُمْرُ طَ وَنُقِرًّ فِي |
| বিশিষ্ট না হয়ে নষ্ট হয়ে গেছে- যেন আমি তোমাদের কাছে (আমার সৃষ্টি কৌশল) প্রকাশ করে দিতে পারি; | وَهُمُو مُسْتُمُ مِنْهُ إِلَى أَجَلٍ مُسَمَّى ثُرَّ الْأَرْهَارِ مَا نَشَاءُ إِلَى أَجَلٍ مُسَمَّى ثُرَّ |
| (অতপর আরো লক্ষ্য করো,) আমি (শুক্রবিন্দুসমূহের মাঝে) যাকে (পূর্ণ মানুষ বানাতে) চাই তাকে জরায়ুতে | لَخْرِجُكُرْ طِفْلًا ثُرَّ لِتَبْلُغُوْا آ أَشُرَّكُرْ ج |
| একটি সুনির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত অবস্থান করাই, অতপর আমি তোমাদের একটি শিশু হিসেবে (সেখান থেকে) বের করে | وَمِنْكُمْ مِنْ يُتَوَفِّى وَمِنْكُمْ مِنْ يُرِدُ إِلَى |
| আনি, অতপর ভোমরা ভোমাদের পূর্ণ যৌবনে পদার্পণ | أَرْذَلِ الْعُبُرِ لِكَيْلًا يَعْلَمَ مِنْ بَعْلِ عِلْمٍ |

(33)

২২ সূরা আল হাজ্জ

| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইকুতারাবা লিন্নাস |
|--|---|
| করো, তোমাদের মধ্যে কেউ (বয়োপ্রাপ্তির আগেই) মরে যায়, আবার তোমাদের অকর্মণ্য (বৃদ্ধ) বয়স পর্যন্ত পৌছে | شَيْنًا ﴿ وَتَرَى الْإَرْضَ هَامِنَةً فَإِذَا آ اَنْزَلْنَا |
| দিয়া হয়, যেন কিছু জানার পরও (তার অবস্থা এমন | عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَٱثْبَتَتْ مِنْ |
| হয়,) সে কিছুই (বৃঝি এখন আর) জানে না; (সৃষ্টি প্রক্রিয়ার আরেকটি দিক হচ্ছে) ভূমি দেখতে পাছে। ভঙ্ক | |
| ভূমি, অতপর আমি যখন তার ওপর (আসমান থেকে) পানি বর্ষণ করি তখন তা সরস ফলে ফুলে তাজা হয়ে | كُلِّ زَوْعٍ الْمِيْجِ |
| ওঠে, (অতপর) তা সর্বপ্রকার নয়নাভিরাম উদ্ভিদ উদগত | |
| करत । | ٢ ذٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْي |
| ৬. এণ্ডলো এ জন্যেই (ঘটে), আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন অমোঘ সত্য, তিনিই মৃতকে জীবন দান করেন এবং সব | |
| কিছুর ওপর তিনিই একক ক্ষমতাবান, | الْبَوْتٰي وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْدٌ ٧ |
| ৭. অবশ্যই কেয়ামত আসবে, তাতে বিন্দুমাত্রও সন্দেহ | 4 وَّأَنَّ السَّاعَةَ أَتِيَةً لَّا رَيْبَ فِيْهَا لا وَأَنَّ |
| নেই, যারা কবরে (শুয়ে) আছে আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাদের পুনরুখিত করবেন। | اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ |
| ৮. (তারপরও) মানুষদের মধ্যে এমন কিছু আছে যে | ^ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُتَّجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرٍ |
| ব্যক্তি কোনো রকম জ্ঞান, পথনির্দেশ ও দীপ্তিমান কেতাব | - |
| (প্রদত্ত তথ্য) ছাড়াই আল্লাহ তায়ালার ব্যাপারে (ধৃষ্টতাপূর্ণ) বিতন্তা তরু করে, | عِلْمٍ وَّلَا هُلَّى وَّكَا كِتْبٍ مُّنِيْدٍ لا |
| ৯. যাতে মানুষদের সে আল্লাহর পথ থেকে গোমরাহ করে দিতে পারে; যে ব্যক্তি এমন করে তার জ্বন্যে দুনিয়াতে | ٩ ثَانِيَ عِطْفِهِ لِيُضِلُّ عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ ١ لَهُ فِي |
| রয়েছে লাঞ্ছনা ও অপমান, (তথু তাই নয়,) কেয়ামতের | النُّّنْيَا مِزْنَى ۚ وَتُنْرِيْقُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلَابَ |
| দিন আমি তাকে (জাহান্লামের) আগুনের কঠিন শান্তিও | الْعَرِيْق |
| আস্বাদন করাবো। ১০. (আমি তাকে বলবো,) এ হচ্ছে তোমার সেই কর্মফল | ١٠ ذٰلِكَ بِهَا قَنَّمَتْ يَنْكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ |
| যা তোমার হাত দুটো (আগেই এখানে) পাঠিয়ে দিয়েছে, | |
| আর আল্লাহ তায়ালা নিজ বান্দাদের প্রতি কখনো (এতো) বড়ো যালেম নন। | بِطَالًا ۗ لِلْعَبِيْدِ ع |
| ১১. মানুষের মধ্যে এমন কিছু আছে যে ঈমানের (একান্ত) প্রান্তসীমার ওপর (থেকে) আল্লাহ তায়ালার এবাদাত | ١١ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُلُ اللَّهَ عَلَى مَرْفٍ ع |
| করে, যদি (এতে) তার কোনো (পার্থিব) উপকার হয় তাহলে সে (ঈমানের ব্যাপারে) নিচিত হয়ে যায়, কিছু | فَانَ أَمَا بَهُ خَيْرُهِ اطْهَانَ لِهِ ع وَإِنْ أَمَا بَتْهُ |
| যদি কোনো দুঃখ কষ্ট তাকে পেয়ে বসে তাহলে তার মুখ | نِتْنَةُ " اثْقَلَبَ عَلَى وَجْهِم لِي خُسِرَ النَّنْيَا |
| পুনরায় (কুফরীর দিকেই) ফিরে যায়, (এভাবে) সে দুনিয়াও হারায় এবং আখেরাতও হারায়, আর এটা হচ্ছে | ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, |
| আসলেই এক সুস্পষ্ট ক্ষতি। | وَالْأَغِرَةَ وَلِكَ مُوَ الْخُسْرَانُ الْهُبِيْنُ |
| ১২. এ (নির্বোধ) ব্যক্তিরা আল্লাহর বদলে এমন কিছুকে ডাকে, যা তার কোনো অপকারও করতে পারে না, | ١٣ يَنْعُواْ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا |
| উপকারও করতে পারে না; এটা হচ্ছে (এক) চরমতম গোমরাহী, | يَنْفَعُدُ وَ ذَٰلِكَ مُو الضَّالُ الْبَعِيْلُ ع |
| ১৩. ওরা এমন কিছুকে ডাকে, যার ক্ষতি তার উপকারের | ١٣ يَنْعُوا لَهَنْ ضَرَّةٌ أَقْرَبُ مِنْ تَّفْعِمِ ، |
| চেয়ে বেশী নিকটতর; কতো নিকৃষ্ট (এদের) অভিভাবক, কতো নিকৃষ্ট (সে অভিভাবকের) সহচর! | لَبِنْسَ الْمَوْلَى وَلَبِنْسَ الْعَشِيْرُ |
| ১৪. (পক্ষান্তরে) যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান | ١٣ إِنَّ اللَّهَ يُنْعَلُ الَّذِينَ أَمَّنُوا وَعَبِلُوا |
| আনে এবং নেক কাজ করে, আল্লাহ তায়ালা তাদের এমন এক জান্নাতে প্রবেশ করাবেন, যার পাদদেশে (সুপেয়) | المُلَدِّس جُنُّس تَجُرِي مِنْ ثَعْتَهَا |
| ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা যা চান তাই করেন। | الْإِنْهُورُ ، إِنَّ اللَّهُ يَغْعُلُ مَا يُرِيْدُ |
| ২২ সূরা আল হাচ্জ | মন্যিশ ৪ |

| ı | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
|---|---|---|
| | ১৫. যদি কেউ মনে করে, আল্লাহ তায়ালা (যাকে নবুওত দিয়েছেন) তাকে দুনিয়া ও আখেরাতে কোনো সাহায্যই করবেন না, তাহলে (নিজের পরিতৃত্তির জন্যে) সে যেন আসমান পর্যন্ত একটি রশি ঝুলিয়ে নেয়, অতপর (আসমানে গিয়ে) যেন (ওহী আগমনের ধারা) কেটে | ١٥ مَن كَانَ يَظُن أَن أَن لَّن يَّنْصُوهُ اللَّهُ فِي السَّنيا وَالْإِخْرَةِ فَلْيَمْلُدُ بِسَبَبِ إِلَى السَّمَاءِ ثُولًا عُرَةً فَلْيَمْلُدُ مِلْ يُنْمِبَ كَيْلَةً السَّمَاءِ ثُولً لْيَقْطَعُ فَلْيَنْظُوْ مَلْ يُنْمِبَن كَيْلُةً |
| | দিয়ে আসে, তারপর নিজেই যেন দেখে নেয়, যে জিনিসের প্রতি তার এতো আক্রোশ, (তার) এ কৌশল তা দূর করতে পারে কিনা! | مَا يَغِيْظُ |
| | ১৬. এভাবেই সুস্পষ্ট নিদর্শনের মাধ্যমে আমি এ (কোরআন)–টি নাযিল করেছি, আল্লাহ তায়ালা যাকে চান সঠিক পথের হেদায়াত দান করেন। | ١٦ وَكَنْ لِكَ أَنْزَلْنُهُ أَيْسٍ بَيِّنْسٍ لا وَّأَنَّ اللَّهَ يَهْرِي مَنْ يَرِيْلُ |
| | ১৭. যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান এনেছে, যারা ইন্থদী হয়ে গেছে, যারা ছিলো 'সাবেয়ী', (যারা) খৃন্টান ও অগ্নিপূজক, (সর্বোপরি) যারা আল্লাহর সাথে শেরেক করেছে, কেয়ামতের দিন আল্লাহ তায়ালা এদের সবার (জান্নাত ও দোযখের) ফয়সালা করে দেবেন; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা প্রত্যেক বস্তুর ওপর একক পর্যবেক্ষক। | ا إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُواْ وَالَّذِينَ هَادُوْا وَالَّذِينَ هَادُوْا وَالنِّيْنَ وَالنِّيْنَ وَالنَّذِينَ وَالشَّرِٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِينَ اَشْرَكُوْا فَي إِنَّ اللَّهَ يَغْصِلُ بَيْنَمُرْ يَوْاً اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءً شَوِيْلٌ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءً شَوِيْلٌ |
| | ১৮. তুমি কি এ বিষয়টির প্রতি লক্ষ্য করোনি, যতো (সৃষ্টি) আসমানসমূহে আছে, যতো আছে যমীনে—সবকিছুই আল্লাহ তায়ালাকে সাজ্ঞদা করছে, সাজ্ঞদা করছে, তারকারাজি, পর্বতসমূহ, বৃক্ষণতা, যমীনের ওপর বিচরণশীল সব জীবজজ্ব, (সর্বোপরি) মানুষের মধ্যেও অনেকে; এ মানুষদের অনেকের ওপর (না-ফরমানীর কারণে) আল্লাহর আযাব অবধারিত হয়ে আছে; আসলে আল্লাহ তায়ালা যাকে অপমানিত করেন তাকে সন্মান দেয়ার কেউই নেই, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তাই করেন যা তিনি এরাদা করেন। | ١٨ ألَر تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُنُ لَهُ مَنْ فِي السَّبُونِ وَالشَّبْسُ وَالشَّبْسُ وَالْقَبَرُ وَالنَّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّبْسُ وَالْقَبَرُ وَالنَّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجْرُ وَالنَّوْآبُ وَالنَّجْرُ مَقَّ وَالنَّاسِ و وَكَثِيرٌ مَقَّ عَلَيْدِ الْعَذَابُ وَمَنْ يَسِّنِ اللَّهُ فَهَا لَهُ مِنْ مَنْ يَشِي اللَّهُ فَهَا لَهُ مِنْ مَنْ مَنْ مَنْ يَشَاءُ مِنْ مَنْ يَشَاءُ مَنْ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ مَنْ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ مَنْ اللَّهُ يَعْمَا لَمَا يَشَاءُ مَنْ اللَّهُ يَعْمَلُ مَا يَشَاءُ مَا يَسَاءُ مَا يَشَاءُ مَا يَشَاءُ مَا يَشَاءُ مَا يَسُاءُ مَا يَشَاءُ مَا يَسُاءُ مَا يَسُاءُ مَا يَسَاءُ مَا يَسْلَاءُ مَا يَسُاءُ مَا يَسُاءُ مَا يَسُلُهُ مَا يَسُاءُ مَا يَسُلُونُ مِنْ مَا يَسُلُونُ مِنْ مَا يَسُلُونُ مِنْ مَا يَسْلُونُ مِنْ مَا يَسْلُونُ مِنْ مَا يَسُولُ مَا يَعْ مَا يَسْلُونُ مَا يَسُولُ مَا يَعْمُ مَا يَسْلُونُ مِنْ مَا يَسُلُونُ |
| | ১৯. এ হচ্ছে (বিপরীতমুখী) দুটো দল, যারা নিজেদের মালিকের ব্যাপারে (একে অন্যের সাথে) বিতর্ক করলো, অতপর এদের মধ্যে যারা আল্লাহ তায়ালাকে অশ্বীকার করে তাদের (পরিধান করানোর) জন্যে আগুনের পোশাক কেটে রাখা হয়েছে; গুধু তাই নয়, তাদের মাথার ওপর সেদিন প্রচন্ত গরম পানি ঢেলে দেয়া হবে, | ا اهٰلُ فِي خَصْمُ الْمُتَصَبُّوا فِي رَبِّهِم (فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَسْ لَهُم ثِيَابٌ مِّنْ تَّارٍ ا يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِم الْحَيِيم عَ |
| | ২০. তার ফলে যা কিছু তাদের পেটের ভেতর আছে তা সব এবং চামড়াগুলো গলে যাবে; | ٢٠ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِر وَالْجُلُودُ ، |
| | ২১. তাদের (শান্তির) জন্যে সেখানে আরো থাকবে (বড়ো বড়ো) লোহার গদা। | ٢١ وَلَهُرْ مُّقَامِعُ مِنْ حَلِيثِهِ |
| 5 | ২২. যখনই তারা (দোযখের) তীব্র যন্ত্রণায় (অস্থির হয়ে) তা থেকে বেরিয়ে আসতে চাইবে, তখনই তাদের পুনরায় (ধান্না দিয়ে) তাতে ঠেলে দেয়া হবে (বলা হবে), জ্বলনের প্রচন্ড | |
| 1 | যন্ত্রণা আজ্ব ভোমরা আস্বাদন করো (এরা ছিলো বিতর্কের প্রথম দল, যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করেছে)। | اريمور المرارية والوحور الماريم المراري و |
| | ২৩. (বিতর্কের দ্বিতীয় দল) যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাদের এমন এক জান্নাতে প্রবেশ | ٢٣ إِنَّ اللَّهَ يُلْخِلُ الَّذِيْنَ أَمَنُوْا وَعَبِلُوا السَّلِحُسِ جَنَّسِ تَجْرِئُ مِنْ تَحْتِهَا الْإَثْهُرُ |
| | ২২ সূরা আল হাজ্জ ৩৩৫ | <u> भनियल 8</u> |

www.eelm.weebly.com

পারা ১৭ ইকুতারাবা লিন্নাস

করাবেন যার তলদেশে (অমীয়) ঝর্ণাধারা প্রবাহমান থাকবে, সেখানে তাদের সোনার কাঁকন ও মুক্তা (দিয়ে বানানো মালা) দ্বারা অলংকৃত করা হবে: উপরস্তু সেখানে তাদের পোশাক হবে রেশমের

يُحَلُّونَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبِ وَّلُؤُلُّؤًا ٤ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرً

२८. (এসব পুরস্কার তাদের এ কারণেই দেয়া হবে যে, القَوْلِ عَلَيْ الْقَوْلِ عَلَيْ وَهُنُ وَا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ عَلَيْ وَهَالَالُهُ عَلَيْهِ الْعَلَى الْعَلِيْبِ مِنَ الْقَوْلِ عَلَيْهِ وَهِالْعَالَ مِنْ الْعَوْلِ عَلَيْهِ وَهِالْعَالَ مِنْ الْعَوْلِ عَلَيْهِ الْعَلَى الْعَلَيْدِ الْعَلَى الْعَلِيْعِ عَلَى الْعَلَى الْعَلِيْعِ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلِيْعِلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلِيْعِ الْعَلَى الْعَلِيْعِلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلِيْعِ الْعَلَى الْعَلِيْعِلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلِ দুনিয়ায়) তাদের ভালো কথার দিকে হেদায়াত করা হয়েছিলো এবং মহাপ্রশংসিত আল্লাহ তায়ালার পথ তাদের দেখানো হয়েছিলো (এবং তারা যথাযথ তা মেনেও নিয়েছিলো)।

وَهُرُوا إِلَى مِرَاطِ الْحَيِيْنِ

২৫. অবশ্যই যারা (নিজেরা) কৃষ্ণরী করে এবং (অন্যদেরও) আল্লাহর পথে চলতে বাধা দেয়, (বাধা দেয়) মানুষদের মাসজিদুল হারাম (-এর তাওয়াফ ও যেয়ারত) থেকে- যাকে আমি স্থানীয় অস্থানীয় নির্বিশেষে সব মানুষের জন্য একই রকম (মর্যাদার স্থান) বানিয়েছি (এমন লোকদের মনে রাখতে হবে): যারা তাতে (হারাম শরীফে) ইচ্ছাপূর্বক আল্লাহবিরোধী কাজ করবে, আমি তাদের (সবাইকে) কঠিন আযাব আস্বাদন করাবো।

٢٥ إِنَّ الَّذِيثِي كَفَرُوا وَيَصُرُّونَ عَيْ سَبِيلِ اللهِ وَالْمَسْجِنِ الْحَرَا ِ الَّذِي جَعَلْنُهُ لِلنَّاسِ سَوَّاءً " الْعَاكِفُ فِيْهِ وَ الْبَادِ ، وَمَنْ يَرِدُ فِيهِ بِالْحَادِ الطُّلْمِ ثَّانِقُهُ مِنْ عَنَابِ

২৬. (হে নবী, স্মরণ করো,) যখন আমি ইববরাহীমকে এ (কাবা) ঘর নির্মাণের জন্যে স্থান ঠিক করে দিয়েছিলাম (তখন তাকে আদেশ দিয়েছিলাম), আমার সাথে অন্য কিছুকে শরীক করো না, আমার (এ) ঘর তাদের জ্বন্যে পবিত্র রেখো যারা (এর) তাওয়াফ করবে, যারা (এখানে নামাযের জন্যে) দাঁড়াবে, রুকু করবে, সাঞ্চদা করবে।

٢٦ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرُهِيْرَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَّا تُشْرِكُ بِي شَيْئًا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِيْنَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكْعِ السُّجُودِ

২৭. (তাকে আরো আদেশ দিয়েছিলাম,) তুমি মানুষদের মাঝে হজ্জের ঘোষণা (প্রচার করে) দাও, যাতে করে তারা তোমার কাছে পায়ে হেঁটে ও সর্বপ্রকার দুর্বল উটের পিঠে আরোহণ করে ছুটে আসে, (ছুটে আসে) দূরদূরান্তের পথ অতিক্রম করে.

٢٠ وَ أَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَّأْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَعِّ عمِيقِ لا

২৮. যাতে করে তারা তাদের নিজেদেরই ফায়দার জন্যে (সময়মতো) এখানে এসে হাযির হয় এবং নির্দিষ্ট দিনসমূহে (কোরবানী করার) সময় তার ওপর আল্লাহ তায়ালার নাম নেয়, যা তিনি তোমাদের দান করেছেন, بَوِيْهَةِ الْإَنْعَا } ع فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِبُوا (अण्जत (किइ) एंग्येता والمُنْعَا ع فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِبُوا اللهِ (নিজেরা) খাবে, দুস্থ এবং অভাবগ্রন্তদেরও তার কিছ অংশ দিয়ে আহার করাবে,

٢٨ لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُرْ وَيَنْكُرُوا اشْرَ اللَّهِ فِي آيًا] مَعْلُومْتِ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ مِّنَ الْبَايِسَ الْفَقِيْرَ ر

২৯. অতপর তারা যেন এখানে এসে তাদের (যাবতীয়) ময়লা কালিমা দূর করে, নিজেদের মানতসমূহ পুরা করে, (বিশেষ করে) এ প্রাচীন ঘরটির যেন তারা তাওয়াফ করে।

٢٦ ثُمرٌ لْيَغْضُوا تَفَتَهُرْ وَلْيُوفُوا نُنُورُهُمْ وَلْيَطُّونُوا بِالْبَيْسِ الْعَتِيْق

৩০. এ হচ্ছে (কাবা ঘর বানানোর) উদ্দেশ্য, যে কেউই আল্লাহ তায়ালার (নির্ধারিত) পবিত্র অনুষ্ঠানমালার সন্মান করে, এটা তার জন্যে তার মালিকের কাছে (একটি) উত্তম কাজ (বলে বিবেচিত হবে, একথাও মনে রেখো), সেসব জন্তু ছাড়া– সেগুলোর কথা তোমাদের ওপর (কোরআনে) পাঠ করা হয়েছে, অন্য সব চতুষ্পদ জন্তুই তোমাদের জন্যে হালাল করা হয়েছে, অতএব তোমরা (এখন) মূর্তি (পূজা)-র অপবিত্রতা থেকে বেঁচে থেকো এবং বেঁচে থেকো (সব ধরনের) মিথ্যা কথা থেকে.

٣٠ ذٰلِكَ ق وَمَنْ يُعَظِّيرُ عَرِمْتِ اللَّهِ فَهُو خَيْرٍ لَهُ عِنْكَ رَبِّهِ ، وَأَجِلْتُ لَكُرُ الْإِنْعَامُ الَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُرْ فَاجْتَنِبُوا الرَّجْسَ مِنَ الْكَوْتَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ لا

২২ সূরা আল হাজ্জ

224

পারা ১৭ ইকুতারাবা লিননাস

৩১, আল্লাহ তায়ালার প্রতি নিষ্ঠাবান হও, তাঁর সাথে কাউকে শরীক করো না: আর যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালার সাথে (অন্য কাউকে) শরীক করে, তার অবস্থা হচ্ছে, সে যেন আসমান থেকে ছিটকে পডলো, অতপর (মাঝপথেই) কোনো পাখী যেন তাকে ছোঁ মেরে নিয়ে গেলো, কিংবা (আসমান থেকে যমীনে পডার আগেই) বাতাস তাকে উড়িয়ে নিয়ে দূরের কোনো (অজ্ঞাতনামা) স্থানে ফেলে দিলে।

٣١ مُنَفَاءً لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهِ ﴿ وَمَنْ يُشْرِكَ بِاللَّهِ فَكَانَّهَا خَرٌّ مِنَ السَّهَاءِ فَتَخُطُفُهُ الطَّيْهُ أَوْ تَهُوى بِهِ الرِّيْحُ فِي مَكَانٍ سَحِيْق

৩২. এ হলো (মোশরেকদের পরিণাম, অপর দিকে) কেউ আল্লাহ তায়ালার নিদর্শনসমূহকে সম্মান করলে তা তার অন্তরের পরহেযগারীর মধ্যেই (শামিল) হবে।

٣٢ ذَٰلِكَ ق وَمَنْ يُعَظِّرْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَانَّهَا مِنْ تَقُوَى الْقُلُوْب

৩৩. (হে মানুষ,) এসব (পন্ত) থেকে ভোমাদের জন্যে এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত নানাবিধ উপকার গ্রেহণ করার ব্যবস্থা) রয়েছে, অতপর (মনে রেখো,) তাদের (কোরবানীর) স্থান হচ্ছে প্রাচীন ঘরটির সন্ত্রিকটে!

٣٣ لَكُرْ فِيْهَا مَنَافِعُ إِلِّي أَجَلِ شُمِّلِي ثُ مَحِلُّهَ ۗ إِلَى الْبَيْسِ الْعَتِيْقِ ع

৩৪. প্রত্যেক জাতির জন্যে আমি (পণ্ড) কোরবানীর এ নিয়ম করে দিয়েছি, যাতে করে (সেই জাতির) লোকেরা সেসব পশুর ওপর আল্লাহ তায়ালার নাম নিভে পারে, যা তিনি তাদের দান করেছেন; সুতরাং তোমাদের মাবুদ তো عَالَهُكُرُ إِلَّهُ وَّاحِنَّ فَلَدُّ ٱسْلِمُوا ﴿ وَبَشِّر नामता जांतर जामता जांतर जामता وَاحِنَّ فَلَدُّ ٱسْلِمُوا ﴿ وَبَشِّر আনুগত্যের মাথা নত করো: (হে নবী,) তুমি (আমার) বিনীত বান্দাদের (সাফল্যের) সুসংবাদ দাও,

٣٣ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِيَنْكُووا اشْرَ اللهِ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيْهَةِ الْأَنْعَامِ ،

৩৫. (এ বিনীত বান্দা হচ্ছে তারা.) যাদের সামনে আল্লাহ তায়ালার নাম স্বরণ করা হলে (ভয়ে) তাদের অন্তরাত্মা কেঁপে ওঠে, যতো বিপদ (মসিবত তাদের ওপর) আসুক না কেন যারা তার ওপর ধৈর্য ধারণ করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, (সর্বোপরি) আমি তাদের যে রেযেক দান করেছি তা থেকে তারা (আমারই পথে) ব্যয় করে।

٣٥ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتُ قُلُوبُهُرُ وَالصِّبِرِيْنَ عَلَى مَآ أَمَا بَهُرْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلُوةِ لا وَمِمَّا رَزَقْنَهُمْ يُنْفِقُونَ

৩৬. আমি তোমাদের জন্যে (কোরবানীর) উটগুলোকে আল্লাহ তায়ালার (নির্ধারিত) নিদর্শনসমূহের মধ্যে (শামিল) করেছি, এতেই তোমাদের জন্যে মংগল নিহিত রয়েছে, অতএব (কোরবানী করার সময়) তাদের (সারিবদ্ধভাবে) দাঁড় করিয়ে তাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার নাম নাও, অতপর (যবাই শেষে) তা যখন একদিকে পড়ে যায় তখন তোমরা তার (গোশত) থেকে নিজেরা খাও, যারা এমনিই (আল্লাহর রেযেকে) সম্ভুষ্ট আছে তাদের এবং যারা (তোমার কাছে) সাহায্যপ্রার্থী হয়, এদের সবাইকে খাওয়াও: এভাবেই আমি এদের তোমাদের অধীন করে দিয়েছি, যাতে তোমরা (এ জন্যে) আল্লাহ তায়ালার শোকর আদায় করতে পারো।

٣٦ وَالْبُنْنَ جَعَلْنُهَا لَكُرْ مِّنْ شَعَالِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ﴾ فَاذْكُرُوا اشرَ اللهِ عَلَيْهَا مُوَانَّ } فَاذَا وَجَبَتُ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَ أَطْعِبُوا الْقَانِعَ وَالْهُعْتَرَّ ء كَنْ لِكَ سَخَّوْنُهَا لَكُو لَعَلَّكُو تَشْكُونَ

৩৭. আল্লাহ তায়ালার কাছে কখনো (কোরবানীর) গোশত ও রক্ত পৌছায় না। বরং তাঁর কাছে তোমাদের তাকওয়াটকুই পৌছায়: এভাবে আল্লাহ তায়ালা এদের তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন, যাতে যে (দ্বীনের) পথ छिन তোমাদের দেখিয়ে দিয়েছেন তার (সে উপকারের) مَن كُمرُ ، وَبَشِّر اللهُ عَلَى مَا مَن كُمرُ ، وَبَشِّر জন্যে তোমরা তাঁর মাহাত্য্য বর্ণনা করতে পারো: (হে নবী.) নিষ্ঠার সাথে যারা নেক কাজ করে তুমি তাদের (জান্লাতের) সুসংবাদ দাও।

٣٤ لَنْ يَّنَالَ اللَّهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَاَّؤُهَا وَلْكِنْ يَّنَالُهُ التَّقُوٰى مِنْكُرْ ، كَنْ لِكَ سَحَّوْهَا المُحْسِنِيْنَ

২২ সুরা আল হাজ্জ

1009

পারা ১৭ ইকুতারাবা লিন্নাস

৩৮, যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনে আলাহ তায়ালাই তাদের (যালেমদের থেকে) রক্ষা করেন: এতে সন্দেহ নেই, আল্লাহ তায়ালা কখনো বিশ্বাসঘাতক ও না-শোকর বান্দাকে ভালোবাসেন না।

٣٨ إِنَّ اللَّهَ يُرَافِعُ عَنِ الَّذِيثَى أَمَنُوا ، إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ غَوَّانٍ كَفُوْرِ ع

৩৯. যাদের বিরুদ্ধে (কাফেরদের পক্ষ থেকে) যুদ্ধ চালানো হচ্ছিলো, তাদেরও (এখন যুদ্ধ করার) অনুমতি দেয়া গেলো, কেননা তাদের ওপর সত্যিই যুলুম করা হচ্ছিলো: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা এ (মাযলুম)-দের সাহায্য করতে সম্পূর্ণ সক্ষম,

٣٩ أَذِنَ لِلَّانِينَ يُقْتَلُونَ بِٱنَّهُمْ ظُلِمُوا ١ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى نَصْرِهِرْ لَقَدِيْرٌ ٣

৪০. (এরা হচ্ছে কতিপয় মাযলুম মানুষ.) যাদের অন্যায়ভাবে নিজেদের ঘরবাড়ি থেকে বের করে দেয়া হয়েছে- ওধু এ কারণে যে, তারা বলেছিলো, আমাদের মালিক হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা: যদি আল্লাহ তায়ালা মানব জাতির একদলকে আরেক দল দিয়ে শায়েস্তা না করতেন তাহলে দুনিয়ার বুক থেকে (খৃক্টান সন্যাসীদের) উপাসনালয় ও গির্জাসমূহ বিধান্ত হয়ে যেতো, (ধাংস হয়ে যেতো ইহুদীদের) এবাদাতের স্থান ও (মুসলমানদের) মাসজিদসমূহও, যেখানে বেশী বেশী পরিমাণে আল্লাহ তায়ালার নাম নেয়া হয়। আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাকে সাহায্য করেন যে আল্লাহ তায়ালার (মীনের) সাহায্য করে. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা শক্তিমান ও পরাক্রমশালী।

٣٠ الَّذِيْنَ ٱخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ مَقّ إِلَّا أَنْ يَّقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ، وَلَوْ لَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُرْ بِبَعْضِ لَّهُنِّمَتْ مَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلُونٌ وَّمَسْجِلُ يُنْكُرُ فَيْهَا اسْ اللهِ كَثِيرًا ، وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ، إِنَّ اللهُ لَقُوىٌ عَزِيْزٌ

৪১. আমি যদি এ (মুসলমান)-দের (আমার) যমীনে (রাজনৈতিক) প্রতিষ্ঠা দান করি, তাহলে তারা (প্রথমে) নামায প্রতিষ্ঠা করবে, (দ্বিতীয়ত) যাকাত আদায় (-এর ব্যবস্থা) করবে, আর (নাগরিকদের) তারা সংকাজের আদেশ দেবে এবং মন্দ কাজ থেকে বিরত রাখবে তবে সব কাজেরই চূড়ান্ত পরিণতি একান্তভাবে আল্লাহ তায়ালারই এখতিয়ারভক্ত ৷

٣١ ٱلَّذِينَ إِنْ مُكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلُوةَ وَأَتَوُا الزَّكُوةَ وَآمَرُوا بِالْهَعْرُونِ وَنَهَوا عَنِ الْمُنْكَرِ ، وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ

৪২. (হে নবী.) এ লোকেরা যদি তোমাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করে (তাতে তোমার উদ্বেগের কিছুই নেই), এদের আগে নূহের জাতি, আদ ও সামুদের লোকেরাও (তাদের নবীদের) মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিলো.

٣٢ وَإِنْ يُّكَنِّ بُوْكَ فَقَلْ كَنَّابَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وعَادً وْتُهُوْدُ لا

৪৩. ইবরাহীমের জাতি এবং লতের জাতিও (তাই করেছিলো),

٣٣ وَقَوْمُ إِبْرُمِيْمِ وَقَوْمُ لُوطٍ لا

৪৪. (আরো করেছে) মাদইয়ানের অধিবাসীরা, মুসাকেও মিথ্যাবাদী বলা হয়েছে, তারপরও আমি (এ) কাফেরদের فَأَمْلَيْنَ لِلْكَفِرِينَ ثُرٌّ أَخَلَ تُمُر ء فَكَيْف اللهِ (اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله তাদের (ভীষণভাবে) পাকডাও করেছি, কি ভয়ংকর ছিলো আমার (সে) আযাব!

٣٣ وَأَصْعَابُ مَلْ يَنَ عَ وَكُذِّبَ مُوسَى

৪৫. আমি ধ্বংস করেছি (আরো) অনেক জনপদ, যার অধিবাসীরা ছিলো যালেম, অতপর তা (বিধ্বস্ত হয়ে) মুখ থুবড়ে পড়ে থাকলো, (কতো) কৃপ পরিত্যক্ত হয়ে পড়লো, (কতো) শখের সুন্দর প্রাসাদ বিরান হয়ে ধ্বংসস্তপে পরিণত হয়ে গেলো!

٣٥ فَكَأَيِّنْ مِّنْ قَوْيَة أَهْلَكُنْهَا وَهِيَ ظَالَهَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوْشِهَا وَبِنُو مَّعَطَّلَةٍ

৪৬. এরা কি যমীনে ঘুরে ফিরে (এগুলো পর্যবেক্ষণ) করেনিং (পর্যবেক্ষণ করন্তে) এদের অন্তর এমন হবে যা দারা এরা তা বুঝতে পারবে, তাদের কান এমন হবে যা দারা তারা শুনতে পারবে, আসলে (অবোধ নির্বোধের)

٣٦ أَفَلَر يَسِيْرُواْ فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُرْ قُلُوْبِ يَعْقِلُوْنَ بِهَا أَوْ اذَانَ يَسْمَعُوْنَ بِهَا ع فَانَّهَا لَا تَعْمَى الْإَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
|---|---|---|
| | চোখ তো কখনো অন্ধ হয়ে যায় না, অন্ধ হয়ে যায় সে অন্তর, যা মনের ভেতর (লুকিয়ে) থাকে। | الْقُلُوْبُ الَّتِي فِي الصَّدُورِ |
| | ৪৭. (হে নবী,) এরা তোমার কাছে আ্যাবের ব্যাপারে তাড়াহড়ো করে (তুমি বলো), আল্লাহ তায়ালা কখনো | ٣٤ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَنَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ |
| | তাঁর ওয়াদার বরখেলাপ করেন না; তোমার মালিকের কাছে যা একদিন, তা তোমাদের গণনার হাজার বছরের | الله وَعْنَةً ﴿ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْنَ رَبِّكَ كَٱلْفِ سَنَةٍ مِنَّا تَعُنُّونَ |
| ١ | সমান। , | |
| | ৪৮. আরো কতো জনপদ ছিলো, তাদেরও আমি (প্রথম দিকে) ঢিল দিয়ে রেখেছিলাম, অথচ তারা ছিলো যালেম, অতপর (এক সময়) আমি তাদের (কঠিনভাবে) পাকড়াও | ٨٨ وَكَايِّنْ مِّنْ قَوْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ |
| } | করেছিলাম, (পরিশেষে সবাইকে তো) আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে। | ظَالِمَةً ثُمَّ اَخَنْ تُهَا ٤ وَ إِلَى الْهَصِيْرُ ع |
| | ৪৯. (হে নবী,) তুমি বলো, হে মানুষ, আমি (তো) তোমাদের জন্যে (আযাবের) একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী | ٣٩ قُلْ يَآيُّهَا النَّاسُ إِنَّهَا ۖ أَنَا لَكُرْ نَلِيثُو |
| ı | মাত্র, | مبين ع |
| | ৫০. যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান আনে এবং (সে অনুযায়ী) নেক কাজ করে, তাদের জন্যে রয়েছে (আল্লাহ | ٥٠ فَالَّذِينَ أَمَنُوا وَعَيِلُوا الصَّلِحُسِ لَهُرُ |
| | তায়ালার) ক্ষমা ও সন্মানজনক জীবিকা। | مُّفْفِرَةً وّرِزْقً كَرِيْرً |
| | ৫১. (অপরদিকে) যারা আমার আয়াতসমূহ ব্যর্থ করে দেয়ার চেষ্টা করে, তারাই জাহান্লামের অধিবাসী হবে। | ٥١ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِيَّ الْيَّنَا مُعْجِزِيْنَ الْمُعْجِزِيْنَ الْمُحِيْرِ الْمُحِيْرِ الْمُحَيِّرِ |
| ı | ৫২. (হে নবী,) আমি তোমার আগে এমন কোনো নবী | ٥٢ وَمَا آرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ وَّلَا |
| ١ | কিংবা রসূলই পাঠাইনি (যারা এ ঘটনার সমুখীন হয়নি যে), যখন সে (নবী আল্লাহর আয়াতসমূহ পড়ার) আগ্রহ | الله وما ارسلنا مِن قبلِك مِن رسولٍ ولا نَبِيِّ إِلَّا إِذَا تَهَنَّى اَلْقَى الشَّيْطُنُ فِي ﴿ |
| ١ | প্রকাশ করলো তখন শয়তান তার সে আগ্রহের কাজে (কান্ফেরদের মনে) সন্দেহ ঢেলে দেয়নি, অতপর আল্লাহ | اللهُ مَا يُلْقِي السَّمْ اللهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَيُ ثُرَّ |
| | তায়ালা শয়তানের নিক্ষিপ্ত (সন্দেহগুলো) মিটিয়ে দেন এবং আল্লাহ তায়ালা নিজের আয়াতসমূহকে (আরো) মযবুত করে দেন, আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) জ্ঞানেন, তিনি হচ্ছেন বিজ্ঞ কুশলী, | يُحْكِرُ اللَّهُ أَيْتِهِ ، وَاللَّهُ عَلِيْرٌ حَكِيْرٌ ٧ |
| | ৫৩. (এর উদ্দেশ্য হচ্ছে) যেন আল্লাহ তায়ালা (এর মাধ্যমে) শুয়তানের প্রক্রিপ্ত (সন্দেহ)-গুলোকে সেসব | ٥٣ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطِيُّ فِتْنَةً لِلَّانِيْنَ |
| | মানুষের পরীক্ষার বিষয় বানিয়ে দিতে পারেন, যাদের অন্তরে (আগে থেকেই মোনাফেকীর) ব্যাধি আছে, | نِيْ تُلُوْبِهِمْ مَّرَضَّ وَّالْقَاسِيَةِ تُلُوْبُهُمْ ، وَإِنَّ |
| ı | উপরস্থু যারা একান্ত পাষাণ হৃদয়; অবশ্যই (এ) যালেমরা অনেক মতবিরোধ ও সন্দেহে নিমক্ষিত হয়ে আছে, | الطَّلِوِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ البَعِيْدِ لا |
| | ৫৪. (এটা এ কারণে,) যাদের (আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে) জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা যেন জানতে পারে, এটাই | ٥٢ وليَعْلَمَ النَّوْيْنَ ٱوْتُوا الْعِلْمَ انَّهُ |
| | তোমার মালিকের পক্ষ থেকে আসা সত্য, অতপর তারা যেন তাতে (পুরোপুরি) ঈমান আনে এবং তাদের মন যেন | الَّحَقَّ مِنْ رَبِّكَ فَيَوْمِنُوا بِهِ فَتَحْمِي لَهُ قُلُوبُهُرْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ أَمَنُوا ۚ إِلَى |
| | সে দিকে আরো আকৃষ্ট হয়ে পড়ে, অবশ্যই আল্পাহ তায়ালা ঈমানদারদের সঠিক পথে পরিচালিত করেন। | مَوْاطٍ مُّسْتَقِيمُرٍ |
| | ৫৫. যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করে, তারা এ | ٥٥ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْدُ |
| | (কোরআনের) ব্যাপারে সন্দেহ পোষণ করা থেকে কখনো বিরত হবে না, যতোক্ষণ না একদিন আকন্মিকভাবে | ره په په ره ه د ه ره د د د د د |
| | ২২ সূরা আল হাজ্জ | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৭ ইক্তারাবা লিন্নাস |
|--|--|
| তাদের ওপর কেয়ামত এসে পড়বে, অথবা তাদের ওপর একটি অবাঞ্ছিত ও ভয়ংকর দিনের আযাব এসে পড়বে। | عَنَابٌ يَوْمٍ عَقِيمٍ |
| ৫৬. সেদিন চ্ড়ান্ত বাদশাহী হবে একমাত্র আল্লাহ তায়ালার; তিনি তাদের সবার মাঝে ফয়সালা করবেন; | المات الرسوي والمراد المستر المستراد |
| অতপর যারা (তাঁর ওপর) ঈমান এনেছে এবং (সে মোতাবেক) নেক কাজ করেছে, তারা (সেদিন) নেয়ামতে | فَالَّذِيْنَ أُمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُسِ فِي مَنْسِ |
| পরিপূর্ণ জান্নাতে অবস্থান করবে। | النَّعِيمُرِ |
| ৫৭. যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করেছে এবং আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, তাদের | ٥٤ وَالنَّوْيْنَ كَفَرُوْا وَكَنَّابُوْا بِالْيَتِنَا |
| জন্যে অপমানজনক আযাবের ব্যবস্থা থাকবে। | ا فَأُولَئِكَ لَهُرْعَلَابً مُهِينًا ع |
| ৫৮. যারা আল্লাহ তায়ালার পথে (তাঁরই সন্তুষ্টির জন্যে) নিজেদের ভিটেমাটি ছেড়ে গেছে, পরে (আল্লাহর পথে) | ٥٨ وَالَّذِينَ هَاجَرُواْ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ ثُرَّ |
| নিহত হয়েছে, কিংবা (এমনিই) মৃত্যু বরণ করেছে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (কেয়ামতের দিন) তাদের উত্তম | قُتِلُوْا أَوْ مَا تُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ، |
| রেযেক দান করবেন; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন সর্বোত্তম রেযেকদাতা। | وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ غَيْرُ الرِّزقِينَ |
| ৫৯. তিনি অবশ্যই তাদের এমন এক স্থানে প্রবেশ করাবেন যা তারা (খুবই) পছন্দ করবে; নিসন্দেহে আল্লাহ | ٥٩ لَيُنْ عَلَنَّهُرْ مُّنْ غَلَّا يَّرْضُوْنَهُ ، وَإِنَّ اللَّهَ |
| তায়ালা প্রজ্ঞাময় ও একান্ত সহনশীল। | لَعَلِيْر حَلِيْر |
| ৬০. এই (হচ্ছে তাদের প্রকৃত অবস্থা,) অপরদিকে কোনো ব্যক্তি (দুশমনকে) যদি ততোটুকুই কট দেয়, | ١٠ ذٰلِكَ ع وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهِ |
| যতোটুকু কষ্ট তাকে দেয়া হয়েছিলো, (তার) সাথে যদি তার ওপর বাড়াবাড়িও করা হয়, তাহলে আল্লাহ তারালা অবশ্যই এ (মযলুম) ব্যক্তির সাহায্য করবেন; নিসন্দেহে | ثُرِّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللهُ الْ اللهُ لَعَفُو |
| আল্লাহ তায়ালা (মানুষের) পাপ মোচন করেন এবং (তাদের) ক্ষমা করে দেন। | غُفُوْر |
| ৬১. এ হচ্ছে (আল্লাহর নিয়ম,) আল্লাহ তায়ালা রাতকে দিনের মধ্যে আবার দিনকে রাতের মধ্যে ঢুকিয়ে দেন, | ١٦ ذٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ |
| অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছু শোনেন সব কিছুই দেখেন। | وِيُوْلِعُ النَّهَارَ فِي الْيُلِ وَاَنَّ اللَّهَ سَمِيْعً ۖ |
| | بصير |
| ৬২. এটা (হচ্ছে আল্লাহর নিয়ম,) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন (একমাত্র) সত্য, (প্রয়োজন পূরণের জন্যে) যাদের এরা | ١٠٠ ديڪ ٻاڻ اسم هو انڪي واڻ ت |
| আল্লাহ তায়ালার বদলে ডাকে, তা সম্পূর্ণ বাতিল ও মিথ্যা এবং আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সমুক্ত, তিনিই হচ্ছেন | يَنْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ |
| महान । | الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ |
| ৬৩. তুমি কি তাকিয়ে দেখোনি, আল্পাহ তায়ালা (কিভাবে) আসমান থেকে পানি বর্ষণ করেন, অতপর (এ | ٦٣ أكر تَرَ أنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ر |
| পানি পেয়ে কিভাবে) যমীন সবুক্ক শ্যামল হয়ে ওঠে; | فَتُصْبِعُ الْأَرْضُ مُخْضَرًّا ۚ ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ |
| নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা স্নেহপরায়ণ, তিনি (তাদের যাবতীয়) সৃক্ষ বিষয়েরও খবর রাখেন, | ؞ ؘٛؠؽڔۛ |
| | |

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৭ ইকুতারাবা লিন্নাস

৬৫. তুমি কি দেখতে পাও না, আল্লাহ তায়ালা (কিভাবে)
এ যমীনে যা কিছু আছে তাকে এবং সমুদ্রে বিচরণশীল
জলযানকে নিজের আদেশক্রমে তোমাদের অধীন করে
দিয়েছেন; তিনিই আসমানকে ধরে রেখেছেন যাতে করে
তা যমীনের ওপর পড়ে না যায়, কিন্তু তাঁর আদেশ হলে
(সেটা ভিন্ন কথা); অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা মানুষদের
সাথে স্লেহপ্রবণ ও দয়াবান।

٦٥ ألَر تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَحَّرَ لَكُر مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْقُلْكَ تَجْرِى فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِةِ الْاَرْضِ وَالْقُلْكَ تَجْرِى فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِةِ اوَيُهْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اللَّا بِالنَّاسِ لَرَّءُونَ "رَحِيْرٌ بِالنَّاسِ لَرَّءُونَ "رَحِيْرٌ

৬৬. তিনিই তোমাদের জীবন দান করেছেন, অতপর তিনিই তোমাদের মৃত্যু দেবেন, পুনরায় তিনিই তোমাদের জীবন দান করবেন, মানুষ (আসলেই) অতিমাত্রায় অকৃতজ্ঞ (তারা সব ভূলে যায়)।

٢٦ وَهُوَ الَّذِي ٓ اَحْيَاكُمْ ﴿ ثُمَّ يُعِيْتُكُمْ ثُمَّ يُعِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ الْ

৬৭. প্রত্যেক জাতির জন্যেই আমি (এবাদাতের কিছু আচার) অনুষ্ঠান ঠিক করে দিয়েছি যা তারা পালন করে, অতএব এ ব্যাপারে তারা যেন কখনো তোমার সাথে কোনো তর্ক না করে, (মানুষদের) তুমি তোমার মালিকের দিকে ডাকতে থাকো, অবশ্যই তুমি সঠিক পথের ওপর রয়েছো।

الكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُر نَاسِكُوْهٌ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْمَوْدُ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ الْمَالِ وَالْكَ اللَّهُ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ اللَّهَ اللَّكَ لَعَلَى هُدَّى اللَّهُ عَلَى مُشْتَقِيْرٍ
 العَلٰى هُدَّى مُّشْتَقِيْرٍ

৬৮. (তারপরও) তারা যদি তোমার সাথে বাকবিতভা করে তাহলে তুমি বলে দাও, তোমরা (আমার সাথে) যা কিছু করছো আল্লাহ তায়ালা তা ভালো করেই জানেন।

٢٨ وَإِنْ جَادَلُوْكَ فَقُلِ اللَّهُ آعْلَى بِهَا
 تَعْبَلُوْنَ

৬৯. তোমরা যে সব বিষয় নিয়ে (নিজেদের মধ্যে)
মতবিরোধ করছো, (কেয়ামতের দিন) আল্লাহ তায়ালা
তোমাদের মধ্যকার সেসব বিষয়ের চ্ড়ান্ত ফয়সালা করে
দেবেন।

٦٩ اَلله يَحْكُرُ بَيْنَكُر يَوْاً الْقِيْمَةِ فِيْهَا
 كُنْتُر فِيْهِ تَحْتَلِقُونَ

৭০. তুমি কি জানো না, আসমান ও যমীনে যা কিছু আছে আল্লাহ তায়ালা তার সম্পর্কে সম্যক অবগত রয়েছেন, এর সবকিছু একটি কেতাবে (সংরক্ষিত) রয়েছে, এ (সংরক্ষণ প্রক্রিয়া)-টা আল্লাহ তায়ালার কাছে (অত্যস্ত) সহজ্ঞ একটি কাজ।

4 أَلَرْ تَعْلَرْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَرُ مَا فِي السَّلَاءِ
 وَالْاَرْضِ النَّ ذٰلِكَ فِي كِتٰبٍ النَّ ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرُ
 عَلَى اللَّهِ يَسِيْرُ

৭১. (তারপরও) তারা আল্লাহ তারালাকে বাদ দিয়ে এমন সব কিছুর গোলামী করে, যার সমর্থনে আল্লাহ তারালা কোনো দলীল-প্রমাণ নাযিল করেননি এবং যে ব্যাপারে তাদের নিজেদের (কাছেও) কোনো জ্ঞান নেই; বস্তুত সীমালংঘনকারীদের জন্যে (কেরামতের দিন) কোনোই সাহায্যকারী থাকবে না।

ا> وَيَعْبُرُونَ مِنْ دُونِ اللهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلطنًا وَمَا لِلظَّلِمِينَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ اللهِ وَمَا لِلظَّلِمِينَ مِنْ تَصِيْرِ
 مِنْ تَصِيْرِ

৭২. (হে নবী,) যখন এদের সামনে আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হয় তখন তুমি কাফেরদের চেহারায় (তীব্র) অসম্ভোষ দেখতে পাবে; অবস্থা দেখে মনে হয়, য়ারা তাদের সামনে আয়াত তেলাওয়াত করছে এরা বুঝি এখনি তাদের ওপর হামলা করবে; (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, আমি কি তোমাদের এর চাইতে মন্দ কিছুর সংবাদ দেবােঃ (তা হচ্ছে জাহানামের) আগুন; আল্লাহ তায়ালা য়ার ওয়াদা করেছেন— (ওয়াদা করেছেন) তাদের সাথে য়ারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করে, আবাসস্থল হিসেবে তা কতাে নিকৃষ্ট!

آ وَإِذَا تُتَلَى عَلَيْهِر أَيْتَنَا بَيِّنْ تَعْرِفُ فِي وَهُوْ النَّهِ الْمَنْكَرَ ، يَكَادُونَ فِي وَهُوْ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهُ وَا الْهُنْكَرَ ، يَكَادُونَ يَشْعُونَ بِالنِّهِي يَتْلُونَ عَلَيْهِر أَيْتِنَا ، قُلُ أَنْلَابُكُر بِهَرٍّ مِّنْ ذَٰلِكُرْ ، اَلنَّارُ ، وَعَنَّمَا الله النَّهُ النَّهِ مَنَّ كَفُرُوا ، وَبِنْسَ الْهَصِيْرُ عَلَيْهِمْ الْهَمْ الْهَصِيْرُ عَلَيْهِمْ الْهُمْ الْهُمْ الْهُمْ الْهُمْ الْهَالُ اللّهُ النَّالُ اللّهُ النّهَ النّهُ النّهَ النّهُ النّهُ النّهُ النّهُ اللّهُ النّهُ النّهُ النّهُ النّهُ النّهُ النّهُ اللّهُ النّهُ اللّهُ النّهُ النّهُ النّهُ اللّهُ النّهُ اللّهُ النّهُ اللّهُ اللّهُ

পারা ১৭ ইকৃতারাবা লিন্নাস

৭৩. হে মানুষ, (তোমাদের জন্যে এখানে) একটি উদাহরণ পেশ করা হচ্ছে, কান পেতে তা শোনো; আল্লাহ তায়ালা ছাড়া তোমরা যাদের ডাকো, তারা তো কখনো (ক্ষুদ্র) একটি মাছিও তৈরী করে দেখাতে পারবে না, যদি এ (কাজের) জন্যে তারা সবাই একত্রিতও হয়; (এমনকি) যদি সে (মাছি) তাদের কাছ থেকে কোনো কিছু ছিনিয়ে নিয়ে য়য় তবে তারা তার কাছে থেকে তাও ছাড়িয়ে নিতে পারবে না; (য়াদের এতোটুকু ক্ষমতা নেই) কতো দুর্বল (তারা), য়ারা (এদের কাছে সাহায়্য) প্রার্থনা করে; কতো দুর্বল তারা য়াদের কাছে (এ সাহায়্য) চাওয়া হচ্ছে।

٣٠ يَأَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَعِعُوْا لَهُ ﴿ إِنَّ اللَّهِ لَنَ دُونِ اللَّهِ لَنَ يَخْلُقُوْا ذَبَابًا وَّلُوا اجْتَمَعُوْا لَهُ ﴿ وَإِنْ يَشْلُبُهُرُ النَّابَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِنُ وَهُ مِنْهُ ﴿ فَعَفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ عَ

৭৪. এ (মূর্খ) ব্যক্তিরা আল্লাহ তায়ালাকে কোনো মূল্যায়নই করতে পারেনি, ঠিক যেভাবে (তাঁর ক্ষমতার) মূল্যায়ন করা উচিত ছিলো; আল্লাহ তায়ালা নিশ্চয়ই পরাক্রমশালী।

٤٣ مَا قَنَرُوا اللَّهَ مَقَّ قَنْرِةٍ ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَقَوْمِيًّ عَزِيْزً

৭৫. আল্লাহ তায়ালা (তাঁর ওহী বহন করার জন্যে) ফেরেশতাদের মধ্য থেকে বাণীবাহক মনোনীত করেন, মানুষদের ভেতর থেকেও (তিনি এটা করেন); অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সবকিছু শোনেন ও সব কিছু দেখেন।

48 أَللّٰهُ يَصْطَفِى مِنَ الْهَلّٰئِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ
 النَّاسِ اللهُ سَمِيْعً بَصِيْرً عَ

৭৬. তাদের সামনে যা আছে তা (যেমনি) তিনি জানেন, (তেমনি) জানেন তাদের পেছনে যা আছে তাও; (কেননা একদিন) তাঁর কাছেই সবকিছুকে ফিরে যেতে হবে। ٢٦ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ آيْنِيْمِرْ وَمَا عَلْفَهُرْ
 وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

৭৭. হে মানুষ, যারা ঈমান এনেছো, তোমরা আল্লাহ তায়ালার সামনে রুকু করো, সাজদা করো এবং তোমাদের মালিকের যথাযথ এবাদাত করো, নেক কাজ করতে থাকো, আশা করা যায় এতে করে তোমরা মুক্তি পেয়ে যাবে।

- يَا اَيَّمَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا ارْكَعُوْا وَاشْجُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوْا وَاعْبُلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُقْلِحُوْنَ ء

৭৮. আর আল্লাহ তায়ালার পথে তোমরা জেহাদ করো. যেমনি তাঁর জন্যে জেহাদ করা (তোমাদের) উচিত, তিনি (দুনিয়ার নেতৃত্বের জন্যে) তোমাদেরই মনোনী্ত করেছেন এবং (এ) জীবন বিধানের ব্যাপারে তিনি তোমাদের ওপর কোনো সংকীর্ণতা রাখেননি, (তোমরা প্রতিষ্ঠিত থেকো) তোমাদের (আদি) পিতা ইবরাহীমের দ্বীনের ওপর: সে আগেই তোমাদের 'মুসলিম' নাম রেখেছিলো, এর (কোরআনের) মধ্যেও (তোমাদের এ নামই দেয়া হয়েছে), যেন (তোমাদের) রসূল তোমাদের (মুসলিম হবার) ওপর সাক্ষ্য প্রদান করতে পারে, আর তোমরাও (দুনিয়ার গোটা) মানব জাতির ওপর (আল্লাহর দ্বীনের) সাক্ষ্য প্রদান করতে পারো, অতএব নামায প্রতিষ্ঠা করো, যাকাত আদায় করো এবং আল্লাহ তায়ালার রশি শক্তভাবে ধারণ করো ১তিনিই হচ্ছেন তোমাদের একমাত্র অভিভাবক, কতো উত্তম অভিভাবক (তিনি), কতো উত্তম সাহায্যকারী (তিনি)!

٨٠ وَجَاهِنُوْا فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِةِ ، هُوَ الْجَتَبُكُر وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُر فِي اللهِ مَقَ جِهَادِةِ ، هُوَ مَرَحٍ ، مِلَّةَ اَبِيْكُر إِبْرُهِيْرَ ، هُوَ سَهْكُرُ الْمُسْلِهِيْنَ لَا مِنْ قَبْلُ وَفِي هٰذَا لِيكُوْنَ الْمُسْلِهِيْنَ لَا مِنْ قَبْلُ وَفِي هٰذَا لِيكُوْنَ الرَّسُولُ شَهِيْنًا عَلَيْكُر وَتَكُوْنُوا هُمَنَا أَعَ الرَّسُولُ شَهِيْنًا عَلَيْكُر وَتَكُوْنُوا هُمَنَا أَعَ عَلَى النَّاسِ عَلَى فَاقِيْبُوا السَّلُوةَ وَاتُوا الرَّكُوةَ وَاتُوا الرَّكُوةَ وَاعْتُولُ اللهِ ، هُومَوْلُكُر عَ الرَّكُو وَاعْتُومُ وَالِاللهِ ، هُومَوْلُكُر عَ فَنَعْرَ النَّولُى وَنِعْرَ النَّصِيْرُ عَ



| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্রাদ আফ্লাহা |
|------------|--|---|
| পার | The second secon | سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِيَّةً |
| 74 | স্রা আল মোমেনুন | |
| | মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ১১৮, রুকু ৬ | أَيَاتٌ : ١١٨ رُكُوعٌ :٦ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ |
| | ১. নিসন্দেহে (সেসব) ঈমানদার মানুষরা মুক্তি পেয়ে গেছে, | ا قَلْ أَفْلَحَ الْهُؤْمِنُونَ ٧ |
| | ২. যারা নিজেদের নামাযে একাস্ত বিনয়াবনত (হয়), | ٢ الَّذِيْنَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خُشِعُوْنَ ٧ |
| | ৩. যারা অর্থহীন বিষয় থেকে বিমুখ থাকে, | ٣ وَالَّذِيْنَ مُرْعَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ لا |
| | ৪. যারা (রীতিমতো) যাকাত প্রদান করে, | ٣ وَ الَّذِينَ مُر ٛ لِلزَّكُوةِ فَعِلُوْنَ ٧ |
| | ৫. যারা তাদের যৌন অংগসমূহের হেফাযত করে, | ٥ وَ الَّذِيْنَ مُرْ لِفُرُوْجِهِرْ حَٰفِظُوْنَ ٧ |
| | ৬. তবে নিজেদের স্বামী-স্ত্রী কিংবা (পুরুষদের বেলায়) নিজেদের অধিকারভুক্ত (দাসী)-দের ওপর (এ বিধান | |
| | প্রযোজ্য) নয়, (এখানে হেফাযত না করার জন্যে) তারা কিছুতেই তিরস্কৃত হবে না, | فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ع |
| | ৭. অতপর এ (বিধিবদ্ধ উপায়) ছাড়া যদি কেউ অন্য কোনো (পছায় যৌন কামনা চরিতার্থ করতে) চায়, তাহলে তারা সীমালংঘনকারী (বলে বিবেচিত) হবে, | كَ فَهَنِ ابْتَغَى وَرَآءَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُرُ الْعُلُونَ |
| नात्यभ | ৮. যারা তাদের (কাছে রক্ষিত) আমানত ও (অন্যদের দেয়া) প্রতিশ্রুতিসমূহের হেফাযত করে, | ^ وَالَّذِينَ مُرْ لِأَمْنَتِهِرْ وَعَهْدِهِرْ رَعُونَ |
| ওয়াক্ষে ল | ৯. যারা নিজেদের নামাযসমূহের ব্যাপারে (সমধিক) যত্নবান হয়। | ٩ وَ النَّٰهِ مِنْ عَلَى مَلُوٰ تِهِمْ يُحَافِظُونَ م |
| ওয়া | ১০. এ লোকগুলোই হচ্ছে (মূলত যমীনে আমার যথার্থ) উন্তরাধিকারী, | ١٠ اُولَٰئِكَ مُرُ اِلْوٰرِثُونَ ٧ |
| | ১১. জান্নাতৃল ফেরদাউসের উত্তরাধিকারও এরা পাবে; এরা সেখানে চিরকাল থাকবে। | ا النويش يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُرْ فِيْهَا عَلَا اللهِ عَلَا فِيهَا عَلَا فَيْهَا عَلَا اللهِ عَلَى عَلَا اللهِ عَلَى عَلَا اللهِ عَلَا عَلَا اللهِ عَلَا اللهُ عَلَيْهِ عَلَا اللهِ عَلَا عَلَا اللهِ عَلَا ع |
| | ১২. (হে মানুষ, তোমার সৃষ্টি প্রক্রিয়াটা লক্ষ্য করো,) আমি মানুষকে মাটি (-র মৃল উপাদান) থেকে পয়দা করেছি, | ١٢ وَلَقُلْ عَلَقْنَا إلْإِ نْسَانَ مِنْ سُلْلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ عَ |
| | ১৩. অতপর তাকে আমি শুক্রকীট হিসেবে একটি সংরক্ষিত জায়গায় (সুনির্দিষ্ট সময়ের ম্বনে) রেখে দিয়েছি, | ١٣ ثُمرٌّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ س |
| | ১৪. এরপর এ শুক্রবিন্দুকে আমি এক ফোঁটা জমাট রক্তে পরিণত করি, অতপর এ জমাট রক্তকে মাংসপিন্ডে | ١٣ ثُرٌّ عَلَقْنَا النَّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ |
| | পরিণত করি, (কিছুদিন পর) এ পিন্তকে অস্থি পাঁজ্ঞারে পরিণত করি, তারপর (এক সময়) এ অস্থি পাঁজ্ঞারকে | مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ |
| | আমি গোশতের পোশাক পরিয়ে দেই, অতপর (বানানোর প্রক্রিয়া শেষ করে) আমি তাকে (সম্পূর্ণ) ভিন্ন এক সৃষ্টি | لَحْمًا نَ ثُرًّ أَنْشَأَنْهُ غَلْقًا أَغَرَ ﴿ فَتَبْرَكَ اللَّهُ |
| | (তথা পূর্ণাঙ্গ মানুষ)-রূপে পয়দা করি; আল্লাহ তায়ালা কতো উত্তম সৃষ্টিকর্তা (কতো নিপুণ তাঁর সৃষ্টি); | أَحْسَنُ الْخُلِقِيْنَ ا |
| | ১৫. (একটি সুনির্দিষ্ট সময় দুনিয়ায় কাটিয়ে) এরপর আবার তোমরা মৃত হয়ে যাও; | ١٥ ثُرِّ إِنْكُرْ بَعْلَ ذَٰلِكَ لَهَيَّتُوْنَ ١٠ |
| | ১৬. তারপর কেয়ামতের দিন তোমরা (সবাই) পুনরুখিত হবে। | ١٦ ثُرِّ إِنْكُرْ يَوْمًا الْقِيلَةِ تُبْعَثُونَ |
| | ২৩ সূরা আল মোমেনুন ৩৪৩ | মনবিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্বাদ আফ্লাহা |
|---|--|
| ১৭. আমিই তোমাদের ওপর এ সাত আসমান বানিয়েছি এবং আমি আমার সৃষ্টি সম্পর্কে (কিন্তু মোটেই) উদাসীন | ١٤ وَلَقَلْ غَلَقْنَا فَوْقَكُم سَبْعَ طَرَ آلِقَ يَ وَمَا |
| नरे । | كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غُفِلِيْنَ |
| ১৮. আমিই আসমান থেকে পরিমাণমতো পানি বর্ষণ করেছি এবং তাকে যমীনে সংরক্ষণ করে রেখেছি, আবার | ١٨ وَ أَنْزَ لَنَا مِنَ السُّهَاءِ مَاءً ' بِقَلَ رٍ فَاَسْكَنَّهُ |
| (এক সময়ে) তা (উড়িয়ে) নিয়ে যাবার ব্যাপারেও আমি সম্পূর্ণ ক্ষমতাবান। | فِي الْأَرْضِ كُ وَإِنَّا عَلَى ذَمَابٍ بِهِ لَقْنِرُونَ عَ |
| ১৯. তারপর (সংরক্ষিত সেই পানি) দিয়ে তোমাদের | ١٩ فَٱنْشَأْنَا لَكُر بِهِ جَنَّسٍ مِّن تَّخِيلٍ |
| জন্যে খেজুর ও আংগুরের বাগান সৃষ্টি করি [,] তোমাদের জন্যে তাতে প্রচুর ফল পাকড়াও (উৎপাদিত) হয়, আর | وَّاعْنَابٍ مِ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةً وَّمِنْهَا |
| তা থেকে তোমরা (পর্যাধ পরিমাণ) আহারও (গ্রহণ) করো, | تَٱكْلُوْنَ ء |
| ২০. আর (যমীনে সংরক্ষিত পানি থেকে) এক প্রকার গাছ সিনাই পাহাড়ে তেলু (–এর উপাদান) নিয়ে জুনু লাভ | ٢٠ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْر سَيْنَاءَ تَنْبُتُ |
| করে, খাদ্য গ্রহণকারীদের জন্যে তা ব্যঞ্জন (হিসেবেও ব্যবহৃত) হয়। | بِالنَّمْنِ وَمِبْغٍ لِّلْأَكِلِيْنَ |
| ২১. (হে মানুষ,) তোমাদের জন্যে অবশ্যই চতুষ্পদ জল্পুর মাঝে (প্রচুর) শিক্ষণীয় বিষয় রয়েছে; তার পেটের | ٢١ وَإِنَّ لَكُرْ فِي الْإَنْعَارِ لَعِبْرَةً ، نُشْقِيْكُرْ |
| ভেতরে যা কিছু আছে তা থেকে আমি তোমাদের (দুধ) পান করাই, (এ ছাড়াও) তোমাদের জন্যে তাতে আরো | مِيًّا فِي بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةً |
| অনেক উপকারিতা রয়েছে, তার (গোশত) থেকে তোমরা আহারও করো। | وَّمِنْهَا تَأْكُلُونَ ٧ |
| ২২. (আবার কিছু আছে) তার ওপর তোমরা (বাহন হিসেবে) সওয়ার হও, অবশ্য নৌ-যানেও তোমাদের (কখনো কখনো) আরোহণ করানো হয়। | ٢٢ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْغُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ع |
| ২৩. অবশ্যই আমি নৃহকে তার জ্বাতির কাছে (হেদায়াত নিয়ে) পাঠিয়েছিলাম, সে (তার জ্বাতিকে) বলেছিলো, হে | ٣٣ وَلَقَنْ أَرْسَلْنَا نُوْمًا إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ لِي عَوْمِهِ فَقَالَ لِي عَوْمِهِ فَقَالَ لِي فَوْمِهِ فَقَالَ لِيقُورًا الله مَا لَكُمْرُ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُةً ﴿ |
| আমার জাতি, তোমরা এবাদাত করো একমাত্র আল্লাহ | يُقَوْرًا اعْبُنُوا اللَّهُ مَا لَكُرْ مِّنْ إِلَّهِ غَيْرُةً ١ |
| তায়ালার, তিনি ছাড়া তোমাদের অন্য কোনো মাবুদ নেই; তোমরা কি (তাঁকে) ভয় করবে নাঃ | أَفَلَا تَتَّقُونَ |
| ২৪. তখন তার জাতির মোড়লরা, যারা (আগে থেকেই) কুফরী করছিলো− (একথা শুনে অন্যদের) বললো, এ | ٢٣ فَقَالَ الْهَلَوُ اللَّهِينَ كَفَرُوا مِنْ تَوْمِهِ مَا |
| (ব্যক্তি) তো তোমাদের মতোই একজ্ঞন মানুষ, (আসলে) এ ব্যক্তি তোমাদের ওপর নেতৃত্ব করতে চায়; আল্লাহ | هٰ أَ إِلَّا بَشَرٌّ مِّثْلُكُر ٧ يُرِيْكُ أَنْ يَّتَفَضَّلَ |
| তায়ালা যদি (নবী পাঠাতেই) চাইতেন তাহলে ফেরেশতাদেরই (নবী করে) পাঠাতেন, আমরা তো এমন | عَلَيْكُورْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَاَنْزَلَ مَلَّئِكَةً ﴿ مَّا |
| কোনো কথা আমাদের পূর্বপুরুষদের যমানায়ও (ঘটেছে বলে) জনিনি। | سَهِعْنَا بِمِٰنَا فِيَ ۚ أُبَالَٰنِنَا الْأُوَّلِيْنَ ۚ ۚ |
| ২৫. (মূলত) এ (মানুষটি) এমন, যার মধ্যে (মনে হয় কিছু) পাগলামী এসে গেছে, অভএব তোমরা (তার | ٢٥ إِنْ مُوَ إِلَّا رَجُلُّ بِهِ جِنَّةً فَتَرَبُّهُوا بِهِ |
| কোনো কথায়ই কান দিয়ো না), বরং এর ব্যাপারে কয়টা নির্দিষ্ট দিন পর্যন্ত অপেক্ষা করো (হয়তো তার পাগলামী | مَّةً مَتَّى هِيْنِ |
| এমনিই সেরে যাবে)। | |
| ২৬. (এ কথা শুনে) নূহ দোয়া করলো, হে আমার মালিক, এরা যেভাবে আমাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করলো, তুমি (সেজারেই তাদের মোকাবেলায়) আমাকে সাহায্য করো। | ٣٦ قَالَ رَبِّ انْصُوْنِيْ بِهَا كَنَّ آَبُوْنِ |
| ২৭. অতপর আমি তার কাছে ওহী পাঠালাম, তুমি আমার তত্ত্বাবধানে আমারই ওহী অনুযায়ী একটি নৌকা | ٢٠ فَأُوْمَيْنَا ۚ إِلَيْهِ أَنِ امْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا |
| ২৩ সূরা আল মোমেনুন ৩৪৪ | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্বাদ আফ্লাহা |
|---|---|
| প্রস্তুত করো, তারপর যখন আমার (আযাবের) আদেশ আসবে এবং (যমীনের) চুল্লি প্লাবিত হয়ে যাবে, তখন (সব কিছু থেকে) এক এক জোড়া নৌকায় উঠিয়ে নেবে, তোমার পরিবার পরিজনদেরও (ওঠিয়ে নেবে, তবে) তাদের মধ্যে যার ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালার সিদ্ধান্ত এসে গেছে সে ছাড়া, (দেখো,) যারা যুলুম করেছে তাদের ব্যাপারে আমার কাছে কোনো আর্যী পেশ করো না, কেননা (মহাপ্লাবনে আজ) তারা নিমজ্জিত হবেই। ২৮. তারপর যখন তুমি এবং তোমার সাথীরা (নৌকায়) | وَوَحْيِنَا فَاذَا جَاءً اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ لا فَاسُلُكُ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اللَّهِ مَنْ سَبَقَ عَلَيْهً الْقُولُ مِنْهُمْ عَ وَلَا لَيْ مَنْ سَبَقَ عَلَيْهً الْقُولُ مِنْهُمْ عَ وَلَا تُخَاطِبُنِي فِي النَّانِيْنَ ظَلَمُوا عَ إِنَّهُمْ مُنْوَوْنَ مَنْ مُعْكَ عَلَى الْفُلْكِ فَوَنَ مَعْكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلُ الْحَمْلُ لِلّٰهِ النِّي وَمَنْ مَعْكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلُ الْحَمْلُ لِلّٰهِ النِّي نَجَنَا مِنَ الْفُلْكِ فَقُلُ الْحَمْلُ لِلّٰهِ النِّي نَجْنَا مِنَ الْفُلْكِ فَقُلُ الْحَمْلُ لِلّٰهِ النِّي نَجْنَا مِنَ الْفُلْكِ فَقُلُ الْحَمْلُ لِلّٰهِ النِّي نَجَنَا مِنَ |
| আরোহণ করবে তখন (তথু) বলবে, সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে, যিনি আমাদের (একটি) অত্যাচারী জাতি থেকে উদ্ধার করেছেন। | الْقَوْمِ الظُّلِمِيْنَ |
| ২৯. তুমি (নৌকায় ওঠে) বলো, হে আমার মালিক, তুমি আমাকে (যমীনের কোথাও) বরকতের সাথে নামিয়ে দাও, একমাত্র তুমিই আমাকে শান্তির সাথে (কোথাও) নামিয়ে দিতে পারো। | ٢٩ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبْرِكًا وَّاَنْسَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ |
| ৩০. নিসন্দেহে এ (কাহিনীর) মধ্যে আমার (কুদরতের) নিদর্শন রয়েছে, (তা ছাড়া মানুষদের) পরীক্ষা তো আমি (সব সময়ই) নিয়ে থাকি। | ٣٠ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰئِتٍ وَّإِنْ كُنَّا لَهُبْتَلِيْنَ |
| ৩১. এদের পরে আমি আরেক জাতিকে পয়দা করেছিলাম, | ٣١ ثُرَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْلِهِم قَوْنًا أُخْرِيْنَ عَ |
| ৩২. অতপর তাদেরই একজনকে তাদের কাছে নবী করে পাঠিয়েছি (যার দাওয়াত ছিলো, হে আমার জাতি), তোমরা এক আল্লাহ তায়ালারই এবাদাত করো, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোনো মাবুদ নেই; তোমরা (নৃহের জাতির ভয়াবহ আযাব দেখেও) কি সাবধান হবে নাঃ | ٣٢ فَاَرْسُلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُكُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَّهٍ غَيْرُةً ، أَفَلَا تَتَّقُونَ ع |
| ৩৩. (নবীর কথা শুনে) তার জাতির নেতৃস্থানীয় লোকজন, যারা আল্লাহকে অস্বীকার করেছে, মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে পরকালে আল্লাহ তায়ালার সাথে সাক্ষাতের বিষয়টিকে, (সর্বোপরি) যাদের আমি দুনিয়ার জীবনে প্রচুর ভোগ সামগ্রী দিয়ে রেখেছিলাম– তারা (স্বন্যনের) বললো, এ ব্যক্তিটি তোমাদের মতো মানুষ ছাড়া অন্য কিছু নয়, তোমরা যা খাও সেও তা খায়, তোমরা যা কিছু পান করে। সেও তা পান করে, | ٣٣ وَقَالَ الْهَلَا مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا وَكَنَّبُوا بِلِقَاءِ الْأَخِرَةِ وَٱتْرَفَنْهُمْ فِي الْحَيْوةِ النَّنْيَا لا مَا هٰذَآ إلَّا بَشَرًّ مِثْلُكُمْ لا يَأْكُلُ مِنَّا تَشْرَبُونَ لا |
| ৩৪. (এমতাবস্থায়) তোমরা যদি তোমাদেরই মতো একজন মানুষকে (নবী মনে করে তার কথা) মেনে চলো; তাহলে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হবে, | ٣٣ وَلَئِنَ أَطَعْتُرْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَيْحُوْ إِذًا لَيْحُوْ اللَّهُ |
| ৩৫. (এ) ব্যক্তিটি কি তোমাদের সাথে এই ওয়াদা করছে যে, তোমরা যখন মরে যাবে, যখন তোমরা মাটি ও হাডিডতে পরিণত হয়ে যাবে, তখন তোমাদের সবাইকে (কবর থেকে আবার) উঠিয়ে আনা হবেঃ | ٣٥ اَيَعِن كُرْ اَنْكُرْ اِذَا مِتَّرْ وَكُنْتُرْ تُوَابًا وَّعِظَامًا اَنْكُرْ شَّخْرَجُونَ سِلا |
| ৩৬. (আসলে) এ যে বিষয়টি–(যা) দিয়ে তোমাদের সাথে এ ওয়াদা করা হচ্ছে, এটা (মানুষের বৈষয়িক বৃদ্ধি থেকে) অনেক দূরে (এবং ধ্যা ছাঁয়ায়) ও অনেক বাইরে, | ٣٦ مَيْهَاتَ مَيْهَاتَ لِهَا تُوْعَكُونَ سِ |
| ৩৭. (তারা বললো, কিসের আবার পুনরুখানা) দুনিয়ার জীবনই তো হচ্ছে আমাদের একমাত্র জীবন, আমরা (এখানে) মরবো, (এখানেই) বাঁচবো, আমাদের কখনোই পুনরুখিত করা হবে না। | ٣٧ إِنْ مِيَ إِلَّا مَيَاتُنَا النَّلْيَا نَهُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ سِلا |
| ২৩ সূরা আল মোমেনুন | मन् यिन 8 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্বাদ আফ্লাহা |
|---|--|
| ৩৮. (নবুওতের দাবীদার) এ ব্যক্তিটি হচ্ছে (এমন) এক মানুষ, যে (এসব কথা দ্বারা) আল্লাহর ওপর মিধ্যা | ٢٨ إِنْ مُوَ إِلَّا رَجُلُ " افْتَرْى عَلَى اللَّهِ |
| অপবাদ দিচ্ছে, আমরা তার ওপর ঈমান আনবো না। | كَاٰرِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٌ بِمُؤْمِنِيْنَ |
| ৩৯. (এদের মিথ্যাচার দেখে সে নবী আল্লাহ তায়ালার কাছে দোয়া চাইলো এবং) বললো, হে আমার মালিক, তুমি এদের মিথ্যার মোকাবেলায় আমাকে সাহায্য করো। | ٣٩ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِهَا كَنَّ بُوْنِ |
| ৪০. আল্লাহ তায়ালা বললেন, হাঁ (তুমি ভেবো না), অচিরেই এরা (নিজেদের কর্মকান্ডের জন্যে) অনুতপ্ত হবে। | ٣٠ قَالَ مَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نُرِمِيْنَ ع |
| ৪১. অতপর (সত্যি সত্যিই একদিন) আমার এক মহাতান্তব এসে তাদের ওপর (মরণ) আঘাত হানলো | ٣١ فَاَ غَلَ تُهُرُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنُهُر عَلَيْهُ فَعَلَنْهُمْ فَعَلَنْهُمْ فَعَلَنْهُمْ فَعَنَا فَعَلَنْهُمْ فَعَنَا فَعَلَنْهُمْ فَعَنَا فَعَرَا الظَّلِمِيْنَ |
| এবং আমি (মুহূর্তের মধ্যে) তাদের স্বাইকে তরঙ্গতাড়িত আবর্জনার স্কুপ সদৃশ (বস্তুতে) পরিণত করে দিলাম, অতপর (স্বাই বলে ওঠলো, আল্লাহর) গযব নাযিল হোক যালেম সম্প্রদায়ের ওপর। | |
| ৪২. আমি তাদের (ধ্বংসের) পর (আরো) অনেক জাতিকেই সৃষ্টি করেছি; | ٣٢ ثُرِّ أَنْشَأْنَا مِنْ الْعَلِهِرْ قُرُونًا أُخْرِينَ ا |
| ৪৩. কোনো জাতিই তার (দুনিয়ায় বাঁচার) নির্দিষ্ট কাল (যেমন) ত্বান্থিত করতে পারেনি, (তেমনি সময় এসে গেলে) তা কেউ বিলম্বিতও করতে পারেনি; | ٣٣ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ١ |
| ৪৪. অতপর (দুনিয়ার জাতিসমূহের কাছে) আমি একের পর এক রস্ল পাঠিয়েছি, যখনি কোনো জাতির কাছে | ٣٣ ثُرِّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا و كُلَّهَا جَاءَ أُمَّةً |
| তার (গ্রতি গার্ঠানো আমার) রসৃল এসেছে, তখনই তাকে তারা মিথ্যাবাদী বলেছে, অতপর আমিও ধ্বংস করার জ্নো | رَّسُولُهَا كَنَّابُوهُ فَٱتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعْلًا لِقَوْمٍ لِاللهِ وَجَعْلًا لِقَوْمٍ لِا |
| তাদের এক এক জনকে একেক জনের পেছনে (ক্রমিক নম্বর) লাগিয়ে দিয়েছি, (এভাবেই) আমি তাদের (একদিন ইতিহাসের) কাহিনী বানিয়ে দিয়েছি, বিধ্বংস হোক সে জাতি, যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনেনি। | وَجَعَلَنَهُمْ أَجَادِيْتُ * فَبَعْنَ الْقُوْرُ لَا يُعْوَرُ لَا يُؤْمِنُونَ |
| ৪৫. তারপর আমি (এক সময়ে) আমার আয়াতসমূহ ও | ٢٥ ثُر ارسَلْنَا مُوسى وَاعَاهُ هٰرُونَ لا بِالْتِنَا |
| সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ দিয়ে মৃসা এবং তার ভাই হারূনকে পাঠিয়েছি, | وَسُلْطُنِ مُبِينَ لا |
| ৪৬. (তাদের আমি পাঠিয়েছি) ফেরাউন ও তার পারিষদদের কাছে, কিন্তু তারা (তাদের মেনে নেয়ার | ٣٦ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهِ فَاشْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا |
| বদলে) অহংকার করলোঁ, তারা ছিলো (স্পষ্টত) একটি না-ফরমান জাতি, | قَوْمًا عَالِيْنَ ج |
| ৪৭. তারা বলতে লাগলো, আমরা কি আমাদের মতোই দু'জন মানুষের ওপর ঈমান আনবো, (তাছাড়া) তাদের | ٣٤ فَقَالُوْ ۚ أَنُوْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا |
| জাতিও হচ্ছে (বংশানুক্রমে) আমাদের সেবাদাস, | وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَبِلُوْنَ |
| ৪৮. তারা তাদের উভয়কেই মিথ্যাবাদী বললো, ফলে তারা ধ্বংসপ্রাপ্ত মানুষদের দলভুক্ত হয়ে গোলো। | ٣٨ فَكَنَّ البُّومُهَا فَكَانُوا مِنَ الْهُهْلَكِيْنَ |
| ৪৯. (অথচ) আমি মৃসাকে (আমার) কেতাব দান করেছিলাম, যেন লোকেরা (তা থেকে) হেদায়াত লাভ করতে পারে। | ٣٩ وَلَقَلُ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَكُونَ |
| ৫০. (এভাবেই) আমি মারইয়াম পুত্র (ঈসা) ও তার মাকে (আমার কুদরতের) নিদর্শন বানিয়েছি এবং তাদের | ٥٠ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةٌ أَيَةً وَّاوَيْنَهُمَّا |
| ২৩ সূরা আল মোমেনুন ৩৪৬ | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্রাদ আফ্লাহা |
|---|--|
| এক নিরাপদ ও প্রস্রবণবিশিষ্ট উচ্চ ভূমিতে আমি আশ্রয় | |
| ि मिरार्सि । | اِلٰي رَبُوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ع |
| ৫১. হে রস্লরা, তোমরা পাক পবিত্র জিনিসসমূহ খাও, (হামেশা) নেক আমল করো, (কেননা) তোমরা যা কিছু | ٥١ يَأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُواْ مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُواْ |
| করো সে সম্পর্কে আমি সবিশেষ অবহিত আছি। | مَالِحًا ، إِنِّي بِهَا تَعْبَلُونَ عَلِيْرٌ ، |
| ৫২. এই (যে) তোমাদের জ্বাতি- তা (কিন্তু দ্বীনের বন্ধনে) একই জ্বাতি, আর আমি হচ্ছি তোমাদের একমাত্র | ٥٢ وَإِنَّ هٰنِ ۗ ٱمَّتَّكُمْ ٱمَّةً وَّاحِنَةً وَّٱنَا رَبُّكُمْ |
| মালিক, অতএব তোমরা আমাকেই ভয় করো। | فَأَتَّقُون |
| ৫৩. কিন্তু লোকেরা নিজেদের মাঝে (এ মৌলিক) বিষয়টাকে বহুধাবিভক্ত করে দিয়েছে; আর প্রত্যেক | ٥٣ فَتَقَطَّعُوا آَوْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا وَكُلُّ حِزْبٍ |
| দলের কাছে যা কিছু আছে তা নিয়েই তারা পরিতুষ্ট। | بِهَا لَنَيْهِمْ فَرِحُوْنَ |
| ৫৪. অতএব (হে নবী), তুমি তাদের একটা সুনির্দিষ্ট সময়ের জন্যে (নিজ্ঞ নিজ) বিভ্রান্তিতে (পড়ে থাকার জন্যে) ছেড়ে দাও, | ۵۳ فَلَرْهُرْ فِي غَمْرَتِهِرْ حَتَّى حِيْنٍ |
| ৫৫. তারা কি এটা ধরে নিয়েছে, আমি তাদের যে ধন সম্পদ ও সন্তান সন্ততি দিয়ে সাহায্য করছি | ۵۵ أَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهَا نُوِنَّمُرْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ لا |
| ৫৬. এবং আমি সব সময়ই তাদের জ্বন্যে সকল প্রকার | وجِينَ . مَارِعُ لَهُرْ فِي الْخَيْرُتِ الْكَارِّ لَا لَا |
| কল্যাণ ত্বানিত করে যাবোঃ (না, আসলে তা নয়-) | · · |
| কিন্তু এরা (সে সম্পর্কে) কিছুই বোঝে না। | يَشْعُرُونَ |
| ৫৭. যারা নিজেদের মালিকের ভয়ে সদা ভীত সম্রস্ত থাকে, | ٥٤ إِنَّ الَّذِينَ هُرُ مِنْ خَشَيَةٍ رَبِّهِم مُشْفِقُونَ ٧ |
| ৫৮. যারা তাদের মালিকের (নাযিল করা) আয়াতসমূহের ওপর ঈমান আনে, | ٥٨ وَ الَّذِينَ مُرْ بِالْهِ وَبِهِرْ يُؤْمِنُونَ ٧ |
| ৫৯. যারা ভাদের মালিকের (মালিকানার) সাথে অন্য কাউকে শরীক করে না, | ٥٩ وَ اللَّهِ يْنَ مُرْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ لا |
| ৬০. যারা (তাঁর পথে) যা কিছু দিতে পারে (মুক্তহস্তে) দান করে, (তারপরও) তাদের মন জীত কম্পিত থাকে, | ٦٠ وَ الَّذِينَ يُؤْتُونَ مَّ اٰتَوْا وَّقَلُوْبُمُرْ وَجِلَةً اَنَّمُرْ إِلَى رَبِّهِرْ رٰجِعُوْنَ ٧ |
| তাদের একদিন তাদের মালিকের কাছে ফিরে যেতে হবে, | |
| ৬১. (সত্যিকার অর্থে) এরাই হচ্ছে সেসব মানুষ, যারা নেকীর কাজে সদা তৎপর, (উপরস্তু) তারা (সবার চাইতে) অগ্রগামীও। | ١٦ أُولَئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرُسِ وَهُمْ لَهَا سَبِقُونَ سَبِقُونَ |
| ৬২. আমি কারো ওপরই তার সাধ্যাতীত বোঝা চাপাই | ٦٣ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَنَيْنَا |
| না, (প্রত্যেক মানুমের আমল সংক্রাস্ত) একটি গ্রন্থ আমার কাছে (সংরক্ষিত) আছে, যা (তাদের অবস্থার কথা একদিন ঠিক) ঠিক বলে দেবে, তাদের ওপর কোনো যুলুম করা হবে না। | كِتْبُّ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَمُرْكَا يُظْلَبُونَ |
| ৬৩. বরং তাদের অন্তর এ বিষয়ে আঁধারে আচ্ছন্ন হয়ে আছে, এ ছাড়াও তাদের (জীবনে) আরো বহুতরো | ٣٣ بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ |
| (খারাপ) কাজ আছে যা তারা সব সময়ই করে থাকে। | أَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذَٰلِكَ مُرْ لَهَا عَبِلُوْنَ |
| ৬৪. (এরা এসব কাজ থেকে কখনো ফিরে আসে না,) যতোক্ষণ না আমি তাদের ঐশ্বর্যশালী লোকদের শাস্তি | ٦٢ مَتَّى إِذَا آَ هَانَانَا مُتْرَفِيْهِرْ بِالْعَلَاابِ |
| ২৩ সূরা আল মোমেনুন | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্বাদ আফ্লাহা |
|--|---|
| ঘারা আঘাত করি, তখন তারা সাথে সাথেই আর্তনাদ করে ওঠে; | إِذَا هُمْ يَجْنُرُونَ ا |
| ৬৫. (তখন বলা হবে,) আজ আর আর্তনাদ করো না, | ٦٥ لَا تَجْنَرُوا الْيَوْاَ عِن إِنَّكُمْ مِّنَّا لَا |
| আমার পক্ষ থেকে তোমাদের কোনো সাহায্য করা হবে | تُنْصَرُونَ |
| मा। | |
| ৬৬. যখন আমার আয়াতসমূহ তোমাদের সামনে পড়ে পড়ে শোনানো হতো, তখন (তা শোনামাত্রই) তোমরা | ٢٦ قَنْ كَانَتْ أَيْتِي تُتْلَى عَلَيْكُرْ فَكُنْتُرْ |
| উল্টো দিকে সরে পড়তে, | عَلَى ٱعْقَابِكُو تَنْكِصُونَ ٢ |
| ৬৭. (সরে পড়তে) নেহায়াত দম্ভভরে, (পরে নিজেদের মজলিসে গিয়ে) অর্থহীন গল্প গুজব জুড়ে দিতে। | ٢٠ مُسْتَكْبِرِيْنَ فِي بِهِ سٰبِرًا تَهْجُرُونَ |
| ৬৮. এরা কি (কোরআন)-এর কথার ওপর চিন্তা ভাবনা | ٦٨ أَفَلَمْ يَنَّ بَرُوا الْقَوْلَ أَا جَمَاءَهُمْ مَّا لَمْ |
| করে না, কিংবা তাদের কাছে (নতুন কিছু একটা) এসেছে | <u> </u> |
| যা তাদের বাপ দাদাদের কাছে আসেনি, | يَأْسِ أَبَاءَهُمُ الْأَوْلِيْنَ ز |
| ৬৯. অথবা তারা কি তাদের রসূলকে চিনতে পারেনি– যে জন্যে তারা তাকে অস্বীকার করছে? | ٦٩ أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكِرُونَ رَ |
| ৭০. কিংবা তারা কি একথা বলে, তার সাথে (কোনো রকম) পাগলামী রয়েছে; বরং (আসল কথা হচ্ছে,) রসূল | ٠٠ أَمْ يَقُوْلُونَ بِهِ جِنَّةً ، بَلْ جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ |
| তাদের কাছে সত্য নিয়ে হাযির হয়েছে এবং তাদের | وَا كَثَرُهُمْ لِلْحَقِّ لَرِهُونَ |
| অধিকাংশ লোকই এ সত্যকে অপছন্দ করে। ৭১. যদি 'সত্য' তাদের ইচ্ছা আকাংখার অনুগামী হয়ে | |
| যেতো, তাহলে আসমানসমূহ ও যমীন এবং আরো যা | ا ٤ وَلَوِ اتَّبَعَ الْعَقُّ أَهُوَّا وَهُرْ لَفَسَانِ الْعَقُ الْمُوَاءَهُمْ لَفَسَانِ |
| কিছু এ উভয়ের মাঝে আছে, অবশ্যই তা বিপর্যন্ত হয়ে পড়তো: পক্ষান্তরে আমি তাদের কাছে তাদের | السَّبوت وَالْاَرْضُ وَمَن فِيْهِنَّ م بَلْ أَتَيْنَهُرْ |
| (নিজেদের) কাহিনীই নিয়ে এসেছি, কিন্তু (আর্চর্য), তারা (এখন) তাদের নিজেদের কথাবার্তা থেকেই মুখ ফিরিয়ে | بِنِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْدِضُونَ ا |
| নিচ্ছে। ৭২. (হে নবী,) তবে কি (এরা মনে করে) তুমি এদের | 1 80, , w, 9 1, , 50, 0 39,0,0 |
| কাছে (দ্বীন পৌছানোর জন্যে) কোনো রক্ম পারিশ্রমিক | اً اُ اَ تَسْئَلُهُ ﴿ خَرْجًا فَخَرْجُ رَبِّكَ مَيْرٌ فَي |
| দাবী করছো, (অথচ) তোমার মালিকের দেয়া পারিশ্রমিক | وَّهُوَ خَيْرُ الرِّرْقِيْنَ |
| (এদের পার্থিব পারিশ্রমিকের তুলনায়) অনেক উৎকৃষ্ট, আর তিনি তো হচ্ছেন সর্বোত্তম রেযেকদাতা। | و ر- در ارږي |
| ৭৩. তুমি তো তাদের সঠিক পথের দিকেই আহ্বান করছো। | ٤٣ وَإِنَّكَ لَتَنْعُومُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمِ |
| ৭৪. অবশ্য যারা আখেরাতের ওপর ঈমান আনে না তারা | ٢٠ وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ عَنِ |
| (হেদায়াতের) সঠিক পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে যাচ্ছে। | |
| | الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ |
| ৭৫. (আজ) যদি আমি এদের ওপর দয়া করি এবং যে বিপদ মসিবত তাদের ওপর আপতিত হয়েছে তা যদি দুর | 43 وَلَوْ رَحِمْنُهُمْ وَكَشَفْنَا مَابِهِمْ مِّنَ شُوِّ |
| করে দেই, তাহলেও এরা নিজেদের না-ফরমানীতে শক্তভাবে বিভ্রান্ত হয়ে যাবে। | لَّلَجُّوْ ا فِي طُغْيَا نِهِر يَعْمَهُونَ |
| ৭৬. (এক পর্যায়ে) আমি এদের কঠোর আযাব দারা | ٢٧ وَلَقُلُ آخَنُ نُهُرُ بِالْعَلَ إِبِ فَهَا اسْتَكَانُوْا |
| পাকড়াও করলাম, তারপরও এরা নিজেদের মালিকের | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , |
| প্রতি নত হলো না এবং কখনো এরা কাতর প্রার্থনাটুকু পর্যন্ত (আমার কাছে) পেশ করলো না। | لِرَبِّهِمِرُ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ |
| ৭৭. অতপর যখন (সত্যিই) আমি এদের ওপর কঠোর | 44 مَتَّى إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِرْ بَابًا ذَا عَنَابٍ |
| আ্যাবের দুয়ার খুলে দেবো তখন তুমি দেখবে, এরা | 44 متى إذا فتحنا عليهر بابا ذا عناب شيرين إذا هر فيه مبلسون ع |
| (কতো) হতাশ হয়ে পড়ছে। | ا شريل إدا همر فيه مبنسون ع |
| ২৩ সুরা আল মোমেনুন | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্রাদ আফ্লাহা |
|--|--|
| ৭৮. (হে মানুষ,) তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের (শোনার জন্যে) কান. (দেখার জন্যে) চোখ (ও চিন্তা | ٨ وَهُوَ الَّذِي ۗ أَنْشَا لَكُم السَّهُعَ |
| গবেষণার জন্যে) মন দিয়েছেন, কিন্তু তারা খুব অল্পই (এসব দানের) শোকর আদায় করে। | وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْنِيَةَ ﴿ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُونَ |
| ৭৯. তিনি তোমাদের সৃষ্টি করে যমীনে (তোমাদের) বংশ বিস্তার করে (চার্রদিকে ছড়িয়ে) রেখেছেন, (একদিন) তোমাদের | ٤٩ وَهُوَ الَّذِي ذَرَاَ كُمرُ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ |
| সবাইকে (আবার) তাঁর কাছেই একত্রিত করা হবে। | تُحَشِّرُونَ |
| ৮০. তিনিই তোমাদের জীবন দান করেন, তিনিই তোমাদের মৃত্যু ঘটান, রাতদিনের আবর্তনও তাঁর (ইচ্ছায় | ٨٠ وَهُوَ الَّذِي يُعْمَى وَيُونِتُ وَلَهُ اغْتِلَانُ |
| সংঘটিত হয়, এতো সব কিছু,দেখেও) তোমরা কি (সত্য) অনুধাবন করবে নাঃ | الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ﴿ أَفَلَا تَعْقِلُونَ |
| ৮১. (নবীদের সামনে) এরাও কিন্তু সে ধরনের অর্থহীন কথাই বলে, যেমনি করে তাদের আগের লোকেরা বলেছে। | المراض المراض المروس |
| ৮২. তারা বলেছিলো, আমরা যখন মরে যাবো, আমরা যখন মাটি ও হাডিডতে পরিণত হয়ে যাবো, তখনও কি | ٨٢ قَالُواْ ءَإِذَا مِثْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا |
| আমরা পুনরুখিত হবোঃ | ءَاِنَّا لَمَبْعُوثُونَ |
| ৮৩. (তারা বলে, আসলে এভাবেই) আমাদের ও আমাদের পূর্ববর্তী লোকদের (পুনরুখানের) ওয়াদা দিয়ে | ٨٣ لَقَنْ وُعِنْنَا نَحْنُ وَ الْأَوْنَا مِنَا مِنْ قَبْلُ |
| আসা হচ্ছে, (মৃত্যুর পর আবার জীবনদান্তের) এ কথাগুপো অতীত দিনের উপকথা ব্যতীত আর কিছুই নয়। | إِنْ هٰٰذَآ إِلَّا ٱسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ |
| ৮৪. (হে নবী, এদের) জিজ্জেস করো, এ যমীনে এবং এখানে যা (কিছু সৃষ্টি) আছে তা কার (মালিকানাধীন)? | ٨٣ قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهَا إِنْ كُنْتُمْ |
| | تَعْلَبُونَ |
| ৮৫. ওরা বলবে (হাঁ), সব কিছুই আল্লাহর; (তুমি) বলো, এরপরও তোমরা কি চিস্তা ভাবনা করবে নাঃ | ٨٥ سَيَقُولُونَ لِللهِ ﴿ قُلْ أَفَلَا تَنَكَّرُونَ |
| ৮৬. তুমি (এদের আরো) জিজ্ঞেস করো, এ সাত আসমান ও মহান আরশের অধিপতি কে ? | ٨٦ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ |
| | الْعَرْشِ الْعَظِيْرِ |
| ৮৭. ওরা জবাব দেবে, (এসব কিছুই) আল্লাহর; তুমি বলো, তারপরও তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে নাঃ | ٨٥ سَيَقُوْلُوْنَ لِلَّهِ ١٠ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ |
| ৮৮. তুমি (আবারও) জিজ্ঞেস করো, যদি তোমরা (সত্যি সত্যিই) জানো তাহলে বলো, কার হাতে রয়েছে | ٨٨ قُلْ مَنْ البِيَدِ إِلَّا مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وْمُوَ |
| (আসমান যমীন) সবকিছুর একক কর্তৃত্ব্যু (হাঁ,) তিনি (যাকে ইচ্ছা তাকেই) পানাহ দেন, কিন্তু তাঁর ওপর কাউকে পানাহ দেয়া যায়না। | يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُرْ تَعْلَمُوْنَ |
| ৮৯. ওরা (আবারও) সাথে সাথে বলবে, (হাাঁ) মহান আল্লাহ তায়ালার; তুমি বলো, এ সত্ত্বেও তোমরা কেমন করে বিদ্রান্ত হচ্ছোঃ | ٨٩ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ، قُلْ فَا تَى تُشْعَرُونَ |
| ৯০. আমি তো বরং সত্য কথাই এদের কাছে পৌছে দিয়েছিলাম, কিন্তু এরাই মিথ্যাবাদী! | ٩٠ بَلْ ٱتَيْنُهُرْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُرْ لَكُنْ بُونَ |
| ৯১. আল্লাহ তায়ালা (কাউকেই) সন্তান হিসেবে গ্রহণ কুরেননি– না তাঁর সাথে অন্য কোনো মাবুদ রয়েছে, যদি | ٩١ مَا اتَّخَلَ اللَّهُ مِنْ وَّلَمٍ وَّمَا كَانَ مَعَدَّ مِنْ |
| (তাঁর মাথে অন্য কোনো মাবুদ) থাকতো তাহলে প্রত্যেক মাবুদ নিজ নিজ সৃষ্টি নিয়ে চলে যেতো এবং (এ মাবুদরা) একে | اِلْهِ إِذًا لَّانَهَبَ كُلُّ اِلْهِ ۚ بِهَا خَلَقَ وَلَعَلَا |
| অন্যের ওপর প্রাধান্য বিস্তার করতে চাইতো, এরা যা কিছু আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে বলে তিনি তা থেকে অনেক পবিত্র ও মহান। | ا بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ ﴿ سُبْطِي ۚ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ٧ |
| ২৩ সূরা আল মোমেনুন ৩৪৯ | মন্যিল ৪ |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | |
|--|---|
| | পারা ১৮ ক্বাদ আফ্লাহা |
| ৯২. দৃশ্য অদৃশ্য সবকিছুর সম্যক ওয়াকেফহাল তিনি, সুতরাং এরা আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্যদের যেভাবে শরীক করে তিনি তার চাইতে (অনেক) পবিত্র। | ٩٢ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلَى عَبَّا يُشْرِكُونَ ع |
| ৯৩. (হে নবী,) তুমি বলো, হে আমার মালিক, যে (আযাবের) ওয়াদা এ (কাফেরদের) সাথে করা হচ্ছে, তা যদি তুমি আমাকে দেখাতেই চাও, | ٩٣ قُلْ رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَكُوْنَ ٧ |
| ৯৪. (তাহলে) হে আমার মালিক, তুমি আমাকে যালেম সম্প্রদায়ের মধ্যে শামিল (করে এ আযাব প্রতান্ধ) করায়ো না। | ٩٣رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْ ِ الظَّلِمِينَ |
| ৯৫. (হে নবী,) আমি তাদের কাছে যে (আযাবের) ওয়াদা করেছি তা অবশ্যই তোমাকে দেখাতে সক্ষম। | ٩٥ وَإِنَّا عَلْى أَنْ تَّرِيَكَ مَا نَعِنُّهُمْ لَقُورُونَ |
| ৯৬. (হে নবী, তারা তোমার সাথে) কোনো খারাপ ব্যবহার করলে তুমি এমন পদ্বায় তা দ্র করার চেষ্টা করো, যা হবে নিতান্ত উত্তম (পদ্বা); আমি তো ভালো করেই জানি ওরা তোমার ব্যাপারে কি বলে। | ٩٦ إِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَىُ السَّيِّئَةَ ، نَحْنُ أَعْلَرُ بِهَا يَصِفُونَ |
| করেই জানি ওয়া ভোনার ব্যাপারে কি বলে। ৯৭. (হে নবী) তুমি (বরং) বলো, হে আমার মালিক, শয়তানদের যাবতীয় ওয়াসওয়াসা থেকে আমি তোমার পানাহ চাই। | ٩٤ وَقُلْ رَّبِّ أَعُودُ بِكَ مِنْ مَيَزْتِ الشَّيْطِيْنِ لا |
| ৯৮. (ঝারো বলো, হে আমার মালিক,) আমি এ থেকেও ভোমার পানাহ চাই যে, শয়তান আমার (ধারে) কাছে ঘেঁষবে। | ٩٨ وَ ٱعُوْدُ بِكَ رَبِّ آنَ يَحْضُرُون |
| ৯৯. এমনকি (এ অবস্থায় যখন) এদের কারো মৃত্যু এসে হাযির হবে, তখন সে বলবে, হে আমার মালিক, তুমি আমাকে (আরেকবার পৃথিবীতে) ফেরত পাঠাও, | 99 مَثْنَى إِذَا جَاءَ اَحَلَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ لا |
| ১০০. যাতে করে (সেখানে গিয়ে) এমন কিছু নেক কাজ আমি করে আসতে পারি, যা আমি (আগে) ছেড়ে এসেছি (তখন বলা হবে), না, তা আর কখনো হবার নয়; (মূলত) সেটা হচ্ছে এক (অসম্ভব) কথা, যা সে শুধু বলার জন্যেই বলবে, এ (মৃত) ব্যক্তিদের সামনে একটি যবনিকা (তাদের আড়াল করে রাখবে) সে দিন পর্যন্ত, যেদিন তারা (কবর থেকে) পুনরুষ্থিত হবে! | ١٠٠ لَعَلِّيْ آَعْمَلُ صَالِحًا فِيْهَا تَرَكْتُ كَلَّا الله المَا لَكِيْ الله الله المَّا الله المَا الله المَا الله المَا الله المَا الله المَا الله المَا الله الله المَا الله الله الله الله الله الله الله ال |
| ১০১. অতপর যেদিন শিংগায় ফুঁ দেয়া হবে, সেদিন (মানুষ এমনি দিশেহারা হয়ে পড়বে যে,) তাদের মধ্যে আত্মীয়তার বন্ধন (বলতে কিছুই) অবশিষ্ট থাকবে না, না তারা একজন আরেকজনকে কিছু জিজ্ঞেস করতে যাবে! | ان فَاذَا تُفِخ فِي الصَّوْرِ فَلَا آنسابَ بَيْنَهُرْ يَوْمَنِنٍ وَلا يَتَسَاءَلُونَ |
| | ١٠٢ فَهَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهُ فَأُولِيْكَ هُرُ الْهُفْلِحُوْنَ |
| (5 t) 112 t 131 t 150 to 14 o 11 t 1 (1 t 151 t 151 t) | ١٠٣ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنَهُ فَأُولَٰنِكَ الَّذِينَ |
| বিনষ্ট করে দিয়েছে, তারা জাহান্নামে থাকবে চিরকাল। ১০৪. (জাহান্নামের) আগুন তাদের মুখমন্ডল জ্বালিয়ে দেবে, তাতে (গদের) চেহারা (জ্বলে) বীভৎস হয়ে যাবে। | خَسِرُوْا آنْفُسَهُرْ فِي جَهَنَّرَ غَلِكُوْنَ ١٠٣ تَلْفَعُ وُجُوْمُهُرُ النَّارُ وَمُرْفِيْهَا كَالِحُوْنَ |
| ১০৫. (তাদের তখন জিজ্ঞেস করা হবে,) এমন অবস্থা কি হয়নি যে, | ١٠٥ اَلَوْ تَكُنْ أَيْتِيْ تُتْلَى عَلَيْكُوْ فَكُنْتُو بِهَا |
| আমার আয়াতসমূহ তোমাদের সামনে পড়ে শোনানো হয়েছিলো এবং তোমরা তা অস্বীকার করেছিলে! | تُكَنِّ بُوْنَ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্বাদ আফ্লাহা |
|---|---|
| ১০৬. তারা বলবে, হে আমাদের মালিক, আমাদের দুর্ভাগ্য (সেদিন চারদিক থেকে) আমাদের ঘিরে ধরেছিলো এবং নিশ্চয়ই আমরা ছিলাম গোমরাহ সম্প্রদায়। | ١٠٦ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّيْنَ |
| ১০৭. হে আমাদের মালিক, তুমি আজ আমাদের এ (আগুন) থেকে বের করে নাও, আমরা যদি দ্বিতীয় বারও (দুনিয়ায়) ফিরে গিয়ে সীমালংঘন করি, তাহলে অবশ্যই আমরা যালেম হিসেবে পরিগণিত হবো। | ١٠٠ رَبَّنَا آ مُورِهُنَا مِنْهَا فَإِنْ عُنْنَا فَإِنَّا فَإِنَا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنْ عَلَيْكُونَا فَإِنَّا فَإِنَّا فَإِنِّ عَلَيْكُونَا فَإِنَّا فَإِنْ عَلَيْكُونَا فَإِنَّا فَإِنْ عَلَيْكُونَا فَإِنَّا فَإِنِّ عَلَيْكُونَا فَإِنْ عَلَيْكُونَا فَإِنْ عَلَيْكُونَا فَإِنْ عَلَيْكُونَا فَإِنِي عَلَيْكُونَا فَإِنْ فَالْعَلَى مِنْ عَلَيْكُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَلَا فَإِلَى عَلَيْكُونَا فَلَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَلَا فَلَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَلْ فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَلْ فَالْعَلَى فَالْمُنْ فَالْمُنْ فَالْمُونَا فَالْعَلَى عَلَيْكُونَا فَالْمُلِي عَلَيْكُونَا فَلَا فَالْمُنْ فَلَالْمُلْلِقَلَا فَالْمُنْ فَالْمُنْ فَالْمُنْ فَالْمُنْ فَالْمُنْ فَلِي فَالْمُنْ فَالْمُنَا فَالْمُنْ فَالْمُلِلْمُلْمُ فَالْمُنْ فَالْمُلْمُ فَالْمُلْمُونَا فَلَالْمُلْمُ فَلِي فَالْمُلِلْمُ فَالْمُلْمُ فَالْمُلِي فَالْمُنْ فَالْمُلْمُلُلِمُ فَالْمُلْمُ فَلِي فَالْمُلْمُلِلْمُ فَلِي فَالْمُلْمُ فَلِيْ |
| ১০৮. আল্লাহ তায়ালা বলবেন, তোমরা অপমানিত হয়ে সেখানে পড়ে থাকো, (আজ) কোনো কথাই আমাকে বলো না। | ١٠٨ قَالَ الْحُسَنُو الْفِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ |
| ১০৯. অবশ্যই আমার বান্দাদের মধ্যে একদল এমনও আছে, যারা বলতো, হে আমাদের মালিক, আমরা তোমার ওপর ঈমান এনেছি, অতএব তুমি আমাদের (দোষক্রটিসমূহ) মাফ করে দাও, তুমি আমাদের ওপর দরা করো, তুমি হচ্ছো (দরালুদের মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট দরালু। | ١٠٩ إِنَّهُ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِى يَقُولُونَ رَبَّنَا أُمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا وَارْمَهْنَا وَأَنْتَ هَيْرُ الرِّمِيْنَ عَلِي |
| ১১০. অতপর তোমরা তাদের উপহাসের বস্তু বানিয়ে রেখেছিলে, এমনকি তা তোমাদের আমার শ্বরণ পর্যন্ত ভূলিয়ে দিয়েছে, আর তোমরা তো তাদের নিয়ে হাসি তামাশাই করতে। | ۱۱ فَاتَّخَانَ تُبُومُر سِخْرِيًّا حَتَّى أَنْسَوْكُر فَا تَخْرِيًّا حَتَّى أَنْسَوْكُر ذِكْرِى وَكُنْتُر بِّنْهُرْ تَضْحَكُون |
| ১১১. তাদের সে ধৈর্যের কারণেই আজ্ঞ আমি তাদের (এই) প্রতিফল দিলাম, (মূলত) তারাই হচ্ছে (সত্যিকার অর্থে) সফল মানুষ। | الا إِنِّى ْجَزَيْتُكُرُ الْيَوْمَ بِهَا صَبَرُوْآ لا أَنَّهُرُ هُرُ الْفَالْزُوْنَ |
| ১১২. আল্লাহ তায়ালা বলবেন (বলো তো), তোমরা পৃথিবীতে কতো বছর কাটিয়ে এসেছোঃ | ١١٢ قُلَ كَمرُ لَبِثْتُرُ فِي الْإَرْضِ عَلَدَ سِنِيْنَ |
| ১১৩. তারা বলবে, আমরা (সেখানে) অবস্থান করেছিলাম একদিন কিংবা একদিনের কিছু অংশ, তুমি (না হয়) তাদের কাছে জিজ্ঞেস করো যারা হিসাব রেখেছে। | ١١٣ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَادِّيْنَ |
| ১১৪. আল্লাহ তায়ালা বলবেন, (আসলে) তোমরা পৃথিবীতে খুব সামান্য সময়ই কাটিয়ে এসেছো, কতো ভালো হতো যদি তোমরা (এ কথাটা) ভালো করে জানতে। | ۱۱۳ قُلَ إِنْ لَّبِثْتُر إِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ إَنَّكُرْ كُنْتُرْ تَعْلَبُوْنَ |
| ১১৫. তোমরা কি (সত্যি সত্যিই) এটা ধরে নিয়েছো, আমি তোমাদের এমনিই অনর্থক পয়দা করেছি এবং তোমাদের (ক্থনোই) আমার কাছে একত্রিত করা হবে না, | ١١٥ أَفَعَسِبْتُر أَتَّهَا عَلَقْنْكُر عَبَثًا وَٱتَّكُر الله المَّاتُر عَبَثًا وَٱتَّكُر الله المَّر عَبُثًا وَٱتَّكُر الله المَّر عَبُعُون الله المَّر عَبُعُون الله المَّر عَبْد الله الله الله المَّر عَبْد الله الله الله الله الله الله الله الل |
| ১১৬. (না, তা কখনো নয়,) মহিমানিত আল্লাহ তায়ালা, তিনিই সব কিছুর যথার্থ মালিক, তিনি ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই, সম্মানিত আরশের একক অধিপতিও তিনি। | ١١٦ فَتَعْلَى اللهُ الْمَلِكُ الْحَقَّ عَ لَآ اللهُ اللهُ اللهُ الْحَقَّ عَ لَآ اللهُ اللهُ اللهُ الْحَوْمَ الْكَرِيْمِ |
| ১১৭. অতএব, যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে অন্য কোনো মাবুদকে ডাকে, তার কাছে যার (জন্যে) কোনো রকম সনদ নেই, (সে যেন জেনে রাখে), তার হিসাব তার মালিকের কাছে (যথার্থই মজুদ) আছে; সেদিন তারা কোনো অবস্থায়ই সফলকাম হবে না যারা তাঁকে অস্বীকার করেছে। | ال وَمَن يَّنْ عُ مَعَ اللهِ إِلْمًا أَخَرَ لا لَا بُرْمَان لَهُ بِهِ لا فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْنَ رَبِّهِ اللهِ إِلَّهُ عَنْنَ رَبِّهِ اللهِ اللهِ وَأَنْ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ ال |
| ২৩ সূরা আল মোমেনুন | মন্যিল ৪ |

www.eelm.weebly.com

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৮ কাদ আফলাহা

১১৮. (হে নবী,) তুমি বলো, হে আমার মালিক, তুমি مُدَرُ وَارْمَمُ وَ اَنْتَ خَيْر وَ اَرْمَمُ وَ اَنْتَ خَيْر وَ اَرْمَمُ وَ اَنْتَ خَيْر اللهِ الل সর্বোৎকষ্ট । الرَّحِيِينَ ع

সুরা আন নূর মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ৬৪, রুকু ৯ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَنَ نِيَّةً أياس : ٦٣ رُكُوع : ٩ يِشرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ

১. (এটি একটি) সুরা, আমিই নাযিল করেছি এবং আমিই (এতে বর্ণিত বিধানসমূহ) ফর্য করেছি, আমিই এতে (পরিষ্কার করে আমার) আয়াতসমূহ নাযিল করেছি, যাতে করে তোমরা (এর থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করতে পারো।

ا سُوْرَةً ٱنْزَلْنُهَا وَفَرَضْنُهَا وَٱنْزَلْنَا فِيْهَا أَيْسٍا بَيِّنْ لَعَلَّكُم ثَنَكُّونَ

২. (এ বিধানসমূহের একটি হচ্ছে,) ব্যভিচারিণী নারী ও ব্যভিচারী পুরুষ (সংক্রান্ত বিধানটি। এদের ব্যাপারে আদেশ হচ্ছে), তাদের প্রত্যেককে তোমরা একশ'টি করে বেত্রাঘাত করবে, আল্লাহর দ্বীনের (আদেশ প্রয়োগের) ব্যাপারে ওদের প্রতি কোনো রকম দয়া যেন তোমাদের পেয়ে না বসে, যদি তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর ঈমান এনে থাকো, (তাহলে) মোমেনদের একটি দল যেন তাদের এ শান্তি প্রত্যক্ষ করার জন্যে (সেখানে মজুদ) থাকে।

٢ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدِ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْلَةٍ س وَّلَا تَأْخُنُكُمْ بِهِمَا رَأْفَةً فِي دِيْنِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُرْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَخِرِ } وَلْيَشْهَنْ عَنَ ابَهُهَا طَالِغَةٌ مِّنَ البؤمنين

৩. (আল্লাহর হুকুম হচ্ছে,) একজন ব্যভিচারী পুরুষ কোনো ব্যভিচারিণী মহিলা কিংবা কোনো মোশরেক নারী ছাড়া অন্য কোনো ভালো নারীকে বিয়ে করবে না অপরদিকে একজন ব্যভিচারিণী মহিলা কোনো ব্যভিচারী পুরুষ কিংবা কোনো মোশরেক পুরুষ ছাড়া অন্য কোনো ভালো পুরুষকে বিয়ে করবে না, সাধারণ মোমেনদের জন্যে এ (বিয়ে)-কে হারাম করা হয়েছে।

٣ اَلزَّانِي لَا يَنْكِعُ إِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً رَ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكً ، وَمُرّا ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

8. (অপরদিকে) যারা (খামাখা) সতী সাধ্বী নারীদের ওপর (ব্যভিচারের) অপবাদ আরোপ করবে এবং এর সপক্ষে চার জন সাক্ষী হাযির করতে পারবে না, তাদের আশিটি বেত্রাঘাত করবে এবং (ভবিষ্যতে) আর কখনো তাদের সাক্ষ্য গ্রহণ করবে না, কেননা এরা হচ্ছে (নিক্ষ্ট) গুনাহগার.

مُ وَالَّانِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنِّينَ ثُرٌّ لَرْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَة شُهَنَ أَءَ فَاجْلُ وَهُو ثَهٰنِي جَلْنَةً وَّلَّ تَقْبَلُوا لَهُر شَهَادَةً أَبَلًا ع وَأُولَٰتُكَ هُرُ الْفْسِقُوْنَ لا

৫. অবশ্য যেসব ব্যক্তি এ (অন্যায়ের) পর তাওবা করে এবং (নিজেদের) তথরে নেয় (তাদের কথা আলাদা, আল্লাহ তায়ালা তাদের মাফ করে দেবেন), আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই ক্ষমাশীল ও বড়ো দয়াল।

ه إلَّا الَّذِيْنَ تَابُوا مِنْ الْبَعْدِ ذَٰلِكَ وَ اَصْلَحُوا جَ فَانَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ

৬. আর যারা নিজেদের ব্রীদের ওপর (ব্যভিচারের) مُوْنَ أَزُو أَجَهُرُ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ الْمُورِ مَا الْفِينَ يَرْمُونَ أَزُو أَجَهُرُ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ الْمُحَالِمَ المُلاقِعِينَ المُلاقِينَ الْمُعْمَدُ وَلَمْ يَكُنْ لُهُمْ الْمُحَالِمِينَ الْمُعْمِدُ وَلَمْ يَكُنْ لُهُمْ الْمُحَالِمِينَ الْمُعْمِدُ وَلَمْ يَكُنْ لُهُمْ اللَّهِ الْمُعْمِدُ وَلَمْ يَكُنْ لُهُمْ اللَّهِ اللَّهُ اللّ (অপবাদের পক্ষে) অন্য কোনো সাক্ষীও মজুদ থাকে না. সে অবস্তায় এটাই হবে তাদের সাক্ষ্য যে, তারা আল্লাহর নামে চার বার শপথ করে বলবে, অবশ্যই (এ অভিযোগের ব্যাপারে) সে সত্যবাদী।

شُهَلَاءً إِلَّا الْقُسُمُرُ فَشَهَادَةً اَحَلِهِمْ اَرْبَعُ شَهْن إِ اللهِ لا إِنَّهُ لَمِيَ الصَّاتِينَ

ع وَ الْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ عَالِيهِ (وَ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللّه মিথ্যাবাদীর ওপর যেন আল্লাহ তায়ালার লানত (নাযিল) হয়।

منَ الْكُلِّ بِيْنَ لا

২৪ সূরা আন নূর

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্রাদ আফ্লাহা |
|--|--|
| ৮. কোনো ন্ত্রীর ওপর থেকেও (এভাবে আনীত অভিযোগের) শান্তি রহিত করা হবে-যদি সেও চার বার | ^ وَيَدْرَوُا عَنْهَا الْعَلَاابَ أَنْ تَشْهَلَ ٱرْبَعَ |
| আল্লাহর নামে কসম করে বলে যে, এ (পুরুষ) ব্যক্তিটি হচ্ছে আসলেই মিথ্যাবাদী, | شَهْلُ عِيْ بِاللَّهِ لا إِنَّهُ لَئِنَ الْكُنْ بِيْنَ |
| ৯. (অতপর সেও) পঞ্চম বার (শপথ করার সময়) বলবে, সে (অভিযোগকারী ব্যক্তিটি) সত্যবাদী হলে তার (অভিযুক্তের) ওপরও আল্লাহর অভিশাপ নেমে আসুক! | 9 وَ اللَّهِ عَلَيْهَا ۖ إِنَّ كُانَ مِنَ الصَّرِقِيْنَ |
| ১০. (হে মোমেনরা,) যদি তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহ ও তাঁর দয়া না থাকতো (তাহলে | ١٠ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ |
| তোমরা এসব কিছু থেকে মাহরুম থেকে থেতে), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন মহান তাওবা গ্রহণকারী এবং প্রবল প্রজ্ঞাময়! | اللهَ تَوَّابٌ مَكِيْرٌ ع |
| ১১. যারা এ (নবী পরিবার সম্পর্কে) মিথ্যা অপবাদ নিয়ে এসেছে, তারা তো (ছিলো) তোমাদের একটি (ক্ষুদ্র) দল; এ বিষয়টি তোমরা তোমাদের জন্য খারাপ ভেবো না; | اا إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةً مِّنْكُرْ ، |
| বরং (তা হচ্ছে) তোমাদের জন্যে (একান্ত) কল্যাণকর, এদের মধ্যে প্রতিটি ব্যক্তি যে যতোটুকু গুনাহ করেছে | لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُرْ ، بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُرْ ، لَا تُحَسَبُ مِنَ الْإِثْرِ ، لَكُلِّ الْمُوئِ مِّنْهُرْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْرِ ، |
| (সে ততোটুকুই তার ফল পাবে), আর তাদের মধ্যে যে সবচাইতে বেশী (এ কাজে) অংশ গ্রহণ করেছে, তার জন্যে আযাবও রয়েছে অনেক বড়ো। | وَ الَّذِينَ تَوَلَّى كِبْرَةٌ مِنْهُرْ لَهُ عَنَ ابُّ عَظِيْرٌ |
| ১২. যদি এ (মিথ্যা ঘটনা)-টি শোনার পর মোমেন পুরুষ ও মোমেন নারীরা নিজেদের ব্যাপারে একটা ভালো ধারণা পোষণ করতো! কতো ভালো হতো যদি (তারা একথা) বলতো, এটা হচ্ছে এক নির্জ্বলা অপবাদ মাত্র! | ١٢ لَوْكَ إِذْ سَيِعْتُهُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنْتُ بِاَنْفُسِهِرْ خَيْرًا لا وَّقَالُوا مِنْ آ إِفْكَ مَّبِيْنَ |
| ১৩. (যারা অপবাদ রটালো) তারাই বা কেন এ ব্যাপারে চার জন সাক্ষী হাযির করলো না, যেহেতু তারা | ١٣ لَوْلَا جَاءُواْ عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَنَاءً ۚ عَلَادُ لَمَ |
| (প্রয়োজনীয় চার জন) সাক্ষী হাযির করতে পারেনি, তাই আল্লাহ তায়ালার কাছে তারাই হচ্ছে মিথ্যাবাদী। | يَأْتُوا بِالشُّهَنَآءِ فَأُولَٰئِكَ عِنْنَ اللهِ مُرُ الْكِنِ بُونَ اللهِ مُرُ |
| ১৪. (হে মোমেনরা,) যদি দুনিয়া ও আখেরাতে তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার দয়া অনুগ্রহ না | ١٢ وَلَوْكَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْهَتُهُ فِي |
| থাকতো, তাহলে (একজন নবীপত্মীর) যে বিষয়টির তোমরা চর্চা করছিলে, তার জন্যে এক বড়ো ধরনের | النَّنْيَا وَالْأَغِرَةِ لَهَسَّكُرْ فِيْ مَّا اَفَضْتُرْ فِيْدِ |
| আযাব এসে তোমাদের স্পর্শ করতো, | عن اب عظیمر عصلے |
| ১৫. তোমরা এ (মিথ্যা)-কে নিজেদের মুখে মুখে প্রচার করছিলে, নিজেদের মুখ দিয়ে এমন সব কথা বলে | ا اوْ تَلَقَّوْنَهُ بِالْسِنَتِكُرْ وَتَقُوْلُونَ بِافْوَاهِكُرْ اللهِ الْمُكْرِ |
| যাচ্ছিলে যে ব্যাপারে তোমাদের কোনো কিছুই জানা ছিলে না, তোমরা একে একটি তুচ্ছ বিষয় মনে করছিলে, কিন্তু তা ছিলো আল্লাহ তায়ালার কাছে একটি গুরুতর বিষয়। | مَّا لَيْسَ لَكُرْ بِهِ عِلْرٌ وَّتَحْسَبُوْنَهُ مَيِّنًا يُلْوَمُوَ ا عِنْنَ اللهِ عَظِيْرٌ |
| ১৬. তোমরা যখন ব্যাপারটা শুনলে তখন সাথে সাথেই কেন বললে না যে, আমাদের এটা মোটেই সাজে না যে, আমরা এ ব্যাপারে কোনো কথা বলবো, আল্লাহ তায়ালা | |
| অনেক পবিত্র, অনেক মহান। সত্যিই (এ ছিলো) এক গুরুতর অপবাদ! | نَّتَكُلِّرَ بِهٰنَ الْحَ سُبْحُنَكَ مٰنَا بُهْتَانٌ عَظِيْرٌ |
| ১৭. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের উপদেশ দিচ্ছেন, তোমরা যদি (সত্যিই) মোমেন হও তাহলে কখনো এরূপ | ١٤ يَعِظُكُرُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوْا لِمِثْلِهُ أَبَدًّا إِنْ |
| আচরণের প্রবাবন্তি করো না। | مرم ۸۵۸ مر کنتر مؤمنین ج |

মন্যিল ৪

আচরণের পুনরাবৃত্তি করো না।

২৪ সূরা আন নূর

| কোরআন | শরীফ | সহজ | ञतन | ताश्रम | অনবাদ | |
|-----------|----------|------|--------|--------|---------|--|
| 644 9 414 | ירוופו י | -140 | -131-1 | 415-11 | A-141-1 | |

পারা ১৮ কাুদ আফ্লাহা

তামাদের সামনে বিবৃত করেন এবং আল্লাহ তায়ালা وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُرُ الْإِيْسِ وَاللّٰهُ عَلِيْرُ اللّٰهُ عَلِيْرُ (সবকিছু) জানেন, তিনি বিজ্ঞ, কুশলী।

১৯. যারা মোমেনদের মাঝে (মিছে অপবাদ রটনা করে) অশ্রীলতার প্রসার কামনা করে, তাদের জন্যে রয়েছে দুনিয়া ও আখেরাতে মর্মন্তুদ শাস্তি: আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) জানেন, আর তোমরা (কিছুই) জানো না।

19 إِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ أَمَنُوا لَهُمْ عَنَابٌ ٱليْمِ لا في النُّنْيَا وَالْأَخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَرُ وَانْتُرْ لَا تَعْلَمُونَ

২০. (হে মোমেনরা,) যদি তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার দয়া ও অনুগ্রহ না থাকতো (তাহলে একটা বড়ো ধরনের বিপর্যয় ঘটে যেতো), অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা বড়োই দয়ালু ও স্নেহপ্রবণ !

٢٠ وَلَوْكَا فَضْلُ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللهُ رَءُونَ رَحْيَرُ ع

শয়তানের পদাংক অনুসরণ করো ना; তোমাদের মধ্যে عُطُوتِ के के के के के कि के कि कि के कि যে কেউই শয়তানের পদাংক অনুসরণ করে (সে যেন জেনে রাখে), সে (অভিশপ্ত শয়তান) তো তাকে অশ্লীলতা يَاْمُرُ بِالْفَحَشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ﴿ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ अम काराबत रे आराम रनरतः यि राजारात उनत আল্লাহ তায়ালার দয়া ও অনুগ্রহ না থাকতো, তাহলে তোমাদের মধ্যে কেউই কখনো পাক পবিত্র হতে পারতো ना. किन्त जालार जाराना यात्क ठान जात्क भविव करवन والله के होने जात्क प्रांत होने जात्क भविव करवन এবং আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) শোনেন, তিনি (সব কিছু) জানেন।

الشَّيْطُنِ و وَمَنْ يَتَّبِعْ غُطُونِ الشَّيْطِي فَإِنَّهُ عَلَيْكُرْ وَرَحْبَتُهُ مَا زَكَى مِنْكُرْ مِّنْ أَحَلِ سييع علير

২২. তোমাদের মধ্যে যারা (দ্বীনী) মর্যাদা ও (পার্থিব) ঐশ্বর্যের অধিকারী, তারা যেন (কখনো এ মর্মে) শপথ না করে যে, তারা (তাদের গরীব) আত্মীয় স্বন্ধন, অভাবগ্রস্ত এবং যারা আল্লাহ তায়ালার রাস্তায় হিজরত করেছে-তাদের কোনোরকম সাহায্য করবে না, বরং তাদের উচিত তারা যেন তাদের ক্ষমা করে দেয় এবং তাদের দোষক্রটি উপেক্ষা করে: তোমরা কি এটা চাও না যে, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের গুনাহ মাফ করে দিন: আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল।

٢٢ وَ لا يَأْتَل أُولُوا الْفَضْل منْكُيرْ وَالسَّعَة أَنْ يُّوْتُوا أُولِي الْقُرْبِي وَالْهَسِكِيْنَ وَالْهُمْجِرِيْنَ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ مِنْ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُواْ ﴿ أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَّغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيْمٌ

২৩. যারা সতী-সাধ্বী নারীদের প্রতি (ব্যভিচারের) مر الله النوين يَرْمُونَ الْهُحُصَنْيِ الْغُفِلْيِ (व्याष्ठारातत) إِنَّ النَّوِينَ يَرْمُونَ الْهُحُصَنْيِ الْغُفِلْيِ কোনো খবরই রাখে না, (সর্বোপরি) যারা ঈমানদার, (তাদের প্রতি অপবাদ আরোপকারী) এসব মানুষদের জন্যে দুনিয়া ও ﴿ إِلْ خِرَةً ﴿ وَالْ خِرَةِ مِنْ اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَ আখেরাতের উভয় স্থানেই অভিশাপ দেয়া হয়েছে (উপরস্তু) তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর আযাব,

وَلَهُمْ عَلَ أَبُّ عَظَيْرٌ لا

২৪. সেদিন তাদের ওপর (স্বয়ং) তাদের জিহ্বাসমূহ, তাদের হাতগুলো ও তাদের পাওলো তাদের কর্মকীভ সম্পর্কে সাক্ষ্য দেবে।

٢٣ يُوْمُ تَشْهَلُ عَلَيْهِمْ ٱلْسِنَتُهُمْ وَٱيْدِيْهِم وَ أَرْجُلُهُمْ بِهَا كَانُوْ الْمَعْبَلُوْنَ

২৫. সেদিন আল্লাহ তায়ালা তাদের যথার্থ প্রাপ্য পুরোপুরি আদায় করে দেবেন এবং তারা জেনে নেবে যে, আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সুস্পষ্ট সত্য।

٢٥ يَوْمَ إِن يَّوَفِيْهِمُ اللَّهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقَّ الْمُبِيْنُ

২৬. (জেনে রেখো.) নষ্ট নারীরা হচ্ছে নষ্ট পুরুষদের জন্যে, নষ্ট পুরুষরা হচ্ছে নষ্ট নারীদের জন্যে, (আবার) ভালো নারীরা হচ্ছে ভালো পুরুষদের জন্যে, ভালো

২৪ সুরা আন নুর

9068



পুরুষরা হচ্ছে ভালো নারীদের জন্যে, (মোনাফেক) লোকেরা (এদের সম্পর্কে) যা কিছু বলে তারা তা থেকে পাক পবিত্র: (আখেরাতে) এদের জন্যেই রয়েছে ক্ষমা ও সম্মানজনক রেযেক।

لِلطَّيِّبِيعِ ﴾ أوليك مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ، لَهُرُ مُّفْفِرَةً وَّرِزُقٌ كَرِيْمٌ ع

২৭. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা নিজেদের ঘর ছাড়া অন্য কারো ঘরে– সে ঘরের লোকদের অনুমতি না নিয়ে ও তার বাশিন্দাদের প্রতি সালাম না করে কখনো প্রবেশ করো না: (নৈতিকতা ও শালীনতার দিক থেকে) এটা তোমাদের জন্যে উত্তম (পন্থা, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের এসব বলে দিচ্ছেন), যাতে করে তোমরা (কথাগুলো) মনে রাখতে পারো ৷

٢٠ يٰاَيُّهَا الَّٰنِيْنَ أَمَنُوْا لَا تَنْعُلُوْا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلَّى أَهْلَهَا وَ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَنَكَّهُونَ

২৮. (ঘরের দরজায় গিয়ে) যদি তোমরা কাউকে সেখানে না পাও, তাহলে সেখানে প্রবেশ করো না, যতোক্ষণ না তোমাদের (ঘরে ঢোকার) অনুমতি দেয়া হবে, যদি (কোনো অসুবিধার কথা জানিয়ে) তোমাদের বলা হয় তোমরা ফিরে যাও, তাহলে তোমরা অবশ্যই (বিনা দিধায়) ফিরে যাবে, এটা তোমাদের জন্যে উত্তম; তোমরা (যখন) যা কিছু করো, আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে সবিশেষ অবহিত **থাকেন**।

٢٨ فَإِنْ لَّمْ بَجِلُوْا فِيْهَا آَمَلًا فَلَا تَنْهُلُوْهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُرْج وَ إِنْ قِيْلَ لَكُرُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا مُوَ أَزْكَى لَكُمْ ، وَاللَّهُ بِهَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْرٌ

২৯. তবে যেসব ঘরে কেউ বসবাস করে না, যেখানে তোমাদের কোনো মাল সামানা রয়েছে, তেমন কোনো ঘরে প্রবেশে তোমাদের কোনো পাপ নেই: (কেননা) আল্লাহ তায়ালা জানেন যা কিছু তোমরা প্রকাশ করো আবার যা কিছু তোমরা গোপন করো।

٢٩ لَيْسَ عَلَيْكُمْ مُنَاحٌ أَنْ تَنْ مُلُوا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُوْ ﴿ وَ اللَّهُ يَعْلَوُ مَا تُبْلُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ

৩০: (হে নবী,) তুমি মোমেন পুরুষদের বলো, তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে (নিম্নগামী ও) সংযত করে রাখে এবং তাদের লজ্জাস্থানসমূহকে হেফাযত করে: এটাই (হচ্ছে) তাদের জন্যে উত্তম পন্থা; (কেননা) তারা (নিজেদের চোখ ও লজ্জাস্থান দিয়ে) যা করে, আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে পূর্ণাংগভাবে অবহিত রয়েছেন।

٣٠ قُلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ ٱبْصَارِهِمِ وَيَحْفَظُواْ فُرُوْجَهُرْ ﴿ ذَلِكَ أَزْكَى لَهُرْ ﴿ الَّ اللهُ غَبِيْرٌ اللهَ عَنْنَعُوْنَ

৩১. (হে নবী, একইভাবে) তুমি মোমেন নারীদেরও বলো, তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে নিম্নগামী করে রাখে এবং নিজেদের লজ্জাস্থানসমূহের হেফাযত করে, তারা যেন তাদের সৌন্দর্য প্রদর্শন করে না বেডায়, তবে তার (শরীরের) যে অংশ (এমনিই) খোলা থাকে (তার কথা আলাদা), তারা যেন তাদের বক্ষদেশ মাথার কাপড় দ্বারা আবৃত করে রাখে, তারা যেন তাদের স্বামী, তাদের পিতা, তাদের শ্বতর, তাদের ছেলে, তাদের স্বামীর (আগের) و ابَاءِ بُعُولَتِهِي اَوْ ابَائِهِي اَوْ ابَائِهِي اَوْ ابَائِهِي اَوْ ابَائِهِي اَوْ ابْائِهِي الْعَالَمَ بَعُولَتِهِي الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى الْعَلِى الْعَلَى الْعَلْعَ عَلَى الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَ ঘরের) ছেলে, তাদের ভাই, তাদের ভাইর ছেলে, তাদের বোনের ছেলে, তাদের (সচরাচর মেলামেশার) মহিলা, ोर्ट بَنِي ﴿ إِخُوانِهِن ۗ أَوْ بَنِي ۗ أَخُواتِهِن ۗ أَوْ يَعِي أَخُواتِهِن ۗ أَوْ بَنِي ﴿ أَخُواتِهِن أَوْ بَالْمُ الْمُعَامِ اللّهِ الْمُعَامِ اللّهُ الْمُعَامِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الْمُعَامِ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ الْمُعَامِ اللّهُ اللّ (এমন) পুরুষ যাদের (মহিলাদের কাছ থেকে) কোনো কিছুই কামনা করার নেই. কিংবা এমন শিশু যারা এখনো غَيْر أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرَّجَالِ أَو الطِّفُلِ अश्लिाप्तत গোপন অংগ সম্পর্কে किছুই জানে ना- (এসব عُنير أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرَّجَالِ أَو الطِّفُلِ মানুষ ছাড়া তারা যেন) অন্য কারো সামনে নিজেদের সৌন্দর্য প্রকাশ না করে, (চলার সময়) যমীনের ওপর

٣١ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنْتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ مًا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَيَضْرِبْنَ بِخُمَرِهِنَّ جَيُوْبِهِي مَ وَلَا يَبْلِينَ زِيْنَتُهُيَّ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُوْلَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ نِسَاَّنِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْهَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِيْنَ النَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُّوا عَلَى عَوْرُتِ النِّسَاءِ م তারা যেন এমনভাবে নিজেদের পা না রাখে- যে সৌন্দর্য তারা গোপন করে রেখেছিলো তা (পায়ের আওয়াযে) লোকদের কাছে জানাজানি হয়ে যায়; হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, (ক্রটি বিচ্যুতির জন্যে) তোমরা সবাই আল্লাহর দরবারে তাওবা করো, আশা করা যায় তোমরা নাজাত পেয়ে যাবে।

وَلَا يَضْ بِنَ إِلْهُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ م وَتُوْبُوْآ إِلَى اللَّهِ جَمِيْعًا أَيَّهُ الْهُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ ثُقْلِحُونَ

৩২. তোমাদের মধ্যে যাদের স্ত্রী নেই, তোমরা তাদের বিয়ের ব্যবস্থা করো, (একইভাবে) তোমাদের দাস-দাসীদের মধ্যে যারা ভালো মানুষ তাদেরও (বিয়ে শাদীর ব্যবস্থা করো): যদি তারা অভাবী হয়. (তাহলে) আল্লাহ তায়ালা (অচিরেই) তাঁর অনুগ্রহ দিয়ে তাদের অভাবমুক্ত করে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা প্রাচুর্যময় ও সর্বজ্ঞ.

٣٢ وَٱنْكِحُوا الْآيَامٰي مِنْكُرْ وَالصَّلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُرْ وَإِمَّانِكُمْرْ ﴿ إِنْ يَّكُونُواْ فُقَرَاءَ يُغْنِهِرُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ﴿ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيْرٌ

৩৩. যাদের বিয়ে (করে ব্যয়ভার বহন) করার সামর্থ নেই, আল্লাহ তায়ালা তাদের নিজ অনুগ্রহে অভাবমুক্ত না করা পর্যন্ত তারা যেন সংযম অবলম্বন করে: তোমাদের অধিকারভুক্ত দাস দাসীদের ভেতর যারা (মুক্তির কোনো অগ্রিম লিখিত) চুক্তি লিখিয়ে নিতে চায়, তোমরা তাদের তা লিখে দাও, যদি তোমরা তাদের (এ চুক্তির) মধ্যে কোনো ভালো (সম্ভাবনা) বুঝতে পারো, (তাহলে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে সম্পদ দান করেছেন তা থেকে তাদের মুক্তির সময় (মুক্তহস্তে) দান করবে; তোমাদের অধীনস্ত দাসীদের যারা সতী সাধ্বী থাকতে চায়, নিছক পার্থিব ধন সম্পদের আশায় কখনো তাদের ব্যভিচারের জন্যে বাধ্য করো না: যদি তোমাদের কেউ তাদের (এ ব্যাপারে) বাধ্য করে, (তাহলে তারা যেন আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করে, কারণ) তাদের এ বাধ্য করার পরেও (তাওবাকারীদের প্রতি) আল্লাহ তায়ালা (হামেশাই) ক্ষমাশীল ও পরম দ্য়াল।

٣٣ وَلْيَسْتَغْفِفِ الَّّانِيْنَ لَا يَجِدُونَ نِكَامًا مَتَّى يُغْنِيَهُرُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ﴿ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُونَ الْكتٰبَ مِيًّا مَلَكَتْ أَيْهَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ إِنْ عَلَيْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ﴿ وَاتَّوْهُمْ فَتَيْتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيٰوةِ النَّانْيَا ، وَمَنْ يَّكُوهُهَّنَّ فَاِنَّ اللَّهَ مِنْ اللَّهُ مِنْ الْكُواهِمِيُّ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ

৩৪. (হে মোমেনরা,) আমি তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ নাযিল করেছি, আরো উদাহরণ (হিসেবে) পেশ করেছি তোমাদের আগে (দুনিয়া থেকে) চলে গেছে তাদের (ঘটনাগুলো), পরহেযগার লোকদের জন্যে (তা হচ্ছে শিক্ষণীয়) উপদেশ_।

٣٢ وَلَقَنْ ٱنْزَلْنَا إِلَيْكُرْ أَيْسٍ مُّبَيِّنْتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ع

৩৫. আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন আসমানসমূহ ও যমীনের নুর: তাঁর এ নুরের উদাহরণ হচ্ছে- তা যেমন একটি তাকের মতো, তাতে একটি প্রদীপ (রাখা) আছে: প্রদীপটি (আবার) স্থাপন করা হয়েছে (স্বচ্ছ একটি) কাচের আবরণের ভেতর: কাচের আবরণটি হচ্ছে উচ্ছল একটি তারার মতো– তা প্রজুলিত করা হয় পবিত্র যয়তুন গাছ (নিস্ত তেল) দ্বারা, যা (শুধু) পূর্ব দিকের (সূর্যের مُّبْرِكَة زَيْتُوْنَة لا شَرْقِيَّة ولا غَرْبِيَّة لا يَكَادُ प्राला व्येत्करें पालांके थाख) नम्न, निर्किम निर्केत (पूर्रात عَرْبِيَّة لا يَكَادُ كَا زَيْتُوْنَة لا شَرْقِيَّة ولا غَرْبِيَّة لا يَكَادُ আলোকপ্রাপ্তও) নয়: (বরং এটি সব সময়ই প্রজ্বলিত থাকে): আবার এর তেল এতো পরিষ্কার (দেখলে) মনে হয়, তা বুঝি নিজে নিজেই জুলে ওঠবে, যদি আগুন তাকে (ততোক্ষণে) স্পর্শও না করে থাকে: (আর যদি আগুন স্পর্শ করেই ফেলে তাহলে তা হবে) নুরের ওপর (আরো) নুর: আল্লাহ তায়ালা তাঁর এ নুরের দিকে যাকে । الله الأمثال لِلنَّاسِ ، وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ । हान ठारकहें रहनायां मान करतन; आलाह ठायांमा وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْء (এভাবে) মানুষদের (বোঝানোর) জন্যে নানা উপমা পেশ করে থাকেন: আল্লাহ তায়ালা প্রত্যেক বিষয় সম্পর্কেই সম্যক অবগত আছেন.

٢٥ اَللَّهُ نُوْرُ السَّيٰوٰ عِ وَالْأَرْضِ ا مَثَلُ نُوْرِهِ كَيشْكُوةِ فِيْهَا مِصْبَاحٌ * أَلْبِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةِ ا ٱلزُّجَاجَةُ كَٱنَّهَا كَوْكَبُّ دُرِّيٌّ يُّوْقَلُ مِنْ شَجَرَةٍ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَرْ تَهْسَمُهُ نَارٌ ، نُوْرٌ عَلَى نُوْر ، يَهْرِي اللَّهُ لِنُوْرِهِ مَنْ يَشَآءُ ، وَيَضْرِبُ



৩৬. (এসব ব্যক্তিদের পাওয়া যাবে) সে ঘরসমূহে, যার মধ্যে আল্লাহ তায়ালার সন্মান মর্যাদা উন্নীত করা এবং (তাতে) তাঁর নিজের (পবিত্র) নাম স্বরণ করার জন্যে সবাইকে আদেশ দিয়েছেন, সেসব জায়গাসমূহে সকাল সন্ধ্যা (এরা) আল্লাহ তায়ালার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে.

٣٦ فِي بُيُوْسِ أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُنْكَرَ فِيْهَا اسْهُمَّ لا يُسَبِّحُ لَمَّ فِيْهَا بِالْغَلَّوِ وَ الْإَصَالِ لا

৩৭. তারা এমন লোক– ব্যবসা বাণিজ্ঞ্য যাদের কখনো আল্লাহ তায়ালা থেকে গাফেল করে দেয় না- না বেচাকেনা তাদের আল্লাহ তায়ালার স্বরণ, নামায প্রতিষ্ঠা ও যাকাত আদায় করা থেকে গাফেল রাখতে পারে, তারা সেদিনকে ভয় করে যেদিন তদের অন্তর ও দৃষ্টিশক্তি ভীতবিহ্বল হয়ে পডবে।

٣٠ رِجَالٌ ٧ لَّا تُلْهِيْهِرْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَارًا الصَّلُوةِ وَإِيْتَاءِ الزَّكُوةِ لَى يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوبُ

৩৮. যারা নেক কাজ করে আল্লাহ তায়ালা তাদের যথার্থ উত্তম পুরস্কার দেবেন, তিনি তাঁর অনুগ্রহে তাদের যা পাওনা তার চাইতেও বেশী দান করবেন; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে অপরিমিত রেযেক দান করেন।

٣٨ لِيَجْزِيَهُرُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْنَ مَرْ مِنْ فَضَلِهِ ﴿ وَاللَّهَ يَرْزَقُ مَنْ يُشَاءً بِغَيْر حِسَابٍ لا

৩৯. (অপর দিকে) যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে- তাদের (দৈনন্দিন) কার্যকলাপ মরুভূমিতে মরীচিকার মতো (একটি প্রতারণা), পিপাসার্ত মানুষ (দুরে থেকে) তাকে পানি বলে মনে করলো: পরে যখন يَجِنُهُ شَيْئًا وُّوجَنَ اللَّهَ عِنْهَ فَوَقَّدُ مِسَابِدٌ ، कि क्रूरे وَمَجَلَ اللَّهَ عِنْهَ فَوَقَّدُ مِسَابِدً ، कि कारह बाला जर्भन त्रथातन পानित (भएठा) किक्रूरे সে পেলো না (এভাবে প্রতারণা ও মরীচিকার জীবন শেষ হয়ে গেলে) সে তথু আল্লাহ তায়ালাকেই তার পাশে পাবে, অতপর তিনি তার পাওনা পূর্ণমাত্রায় আদায় করে দেবেন, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা তুরিত হিসাব গ্রহণে সক্ষম।

٣٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا آعْهَالُهُم كَسَرَابٍ بِقِيْعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّهٰانُ مَاءً ، مَنَّى اذَا مَاءَةً لَرْ وَاللَّهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ لا

৪০. কিংবা (তাদের কর্মকান্ডের উদাহরণ হচ্ছে) অতল সমুদ্রের অভ্যন্তরস্থ গভীর অন্ধকারের মতো, অতপর তাকে একটি বিশাল আকারের ঢেউ এসে ঢেকে (আরো অন্ধকার করে) দিলো, তার ওপর আরো একটি ঢেউ (এলো), তার ওপর (ছেয়ে গেলো কিছু) ঘন কালো মেঘ; এক অন্ধকারের ওপর (এলো) আরেক অন্ধকার: যদি কেউ (এ অবস্থায়) তার হাত বার করে, (আঁধারের কারণে) তার তা দেখার কোনো সম্ভাবনা থাকবে না: বস্তুত আল্লাহ তায়ালা যার জন্যে কোনো আলো বানাননি তার জন্যে তো (কোথাও থেকে) আলো থাকবে না।

٣٠ أَوْ كَظُلُمْتِ فِي بَحْرِ لُجِّيِّ يَّغْشُهُ مَوْجً مِّنْ فَوْقِمِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِمِ سَحَابٌ ﴿ ظُلُّمْكًا ۖ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ﴿ إِذَا أَخْرَجَ يَنَءٌ لَمِ يَكُلُ يَرِيهَا ، وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلُ اللَّهُ لَهُ نُوْرًا فَهَا لَهُ مِن نُورِع

৪১. (হে মানুষ,) তুমি কি (ভেবে) দেখোনি, যতো (সৃষ্টি) আসমানসমূহ ও পৃথিবীতে আছে, তারা (সবাই) আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, আর পাখীকুল- যারা পাখা বিস্তার করে (আকাশে ওড়ে চলেছে), তারা সবাইও (এ কাজ করে চলেছে,) তিনি তার সৃষ্টির প্রত্যেকের প্রশংসা ও মহিমা ঘোষণার পদ্ধতি জানেন: এরা যে যা করছে আল্লাহ তায়ালা তা সম্যক অবগত রয়েছেন।

٢١ ٱلَمِ تَوَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهٌ مَنْ فِي السَّبُونِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَفَّتِ ، كُلُّ قَنْ عَلِمَ مَلَاتَهُ وَتَشْبِيْحَهُ ، وَاللَّهُ عَلِيْمٌ ا بِهَا يفعلون

৪২. (মূলত) আসমানসমূহ ও যমীনের যাবতীয় সার্বভৌমত্ব একমাত্র আল্লাহরই জন্যে, (সব কিছুকে) তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

٣٢ وَ لِلَّهِ مُلْكُ السَّاوْتِ وَالْا رَضِ } وَإِلَى اللهِ الْهَصِيْرُ

২৪ সুরা আন নুর

পারা ১৮ ক্রাদ আফ্লাহা

৪৩. তুমি কি দেখো না. আল্লাহ তায়ালাই (এ) মেঘমালা সঞ্চালিত করেন, অতপর তিনি তাকে (তার টুক্রোগুলোর) সাথে জুড়ে দেন, তারপর তাকে স্তরে স্তরে সাজিয়ে (পুঞ্জীভূত করে রাখেন), অতপর এক সময় তুমি মেঘের ভেতর থেকে বৃষ্টি (-র ফোটাসমূহ) বেরিয়ে আসতে দেখবে, (আরো দেখবে) আসমানের শিলান্তর থেকে তিনি শিলা বর্ষণ করেন এবং যার ওপর চান তার ওপর তা বর্ষণ করেন, (আবার) যাকে চান তাকে তিনি তার (আঘাত) থেকে অব্যাহতিও দেন: মেঘের বিদ্যুত ঝলক (চোখে ধাঁধা লাগিয়ে দেয়), মনে হয় তা বুঝি দৃষ্টি (-শক্তিকে এক্ষুণি) নিষ্পুভ করে দিয়ে যাবে;

٣٣ ٱلَمْ تَوَ أَنَّ اللَّهَ يُوْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ" يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُرَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخُرُجُ مِنْ خِلْلِهِ } وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ الرَّدِ فَيُصِيْبُ بِهِ مَنْ يَّشَاءً وَيَصْوَفُهُ عَنْ مَّنْ مَّنْ يَشَاءُ م يَكَادُ سَنَا بَوْقهِ يَنْ هَبُ بِالْإَبْصَارِ ،

88. আল্লাহ তায়ালাই রাত ও দিনের পরিবর্তন ঘটান: অবশ্যই অন্তর্দৃষ্টিসম্পনু মানুষদের জন্যে এর মাঝে (আল্লাহ তায়ালার কুদরতের) অনেক শিক্ষা রয়েছে।

٣٣ يُقَلِّبُ اللَّهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً ﴿ لِأُولِي الْأَبْصَارِ

৪৫. আল্লাহ তায়ালা বিচরণশীল প্রতিটি জীবকেই পানি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তাদের মধ্যে কিছু চলে তার বুকের ওপর ভর দিয়ে, কিছু চলে দু'পায়ের ওপর, (আবার) কিছু চলে চার (পা)-এর ওপর (ভর করে); আল্লাহ তায়ালা যখন যা চান তখন তাই পয়দা করেন অবশ্যই তিনি সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান।

٣٥ وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّنْ مَّاءٍ } فَيِنْهُمْ مَّنْ يَبْشِي عَلَى بَطْنِهِ ج وَمِنْهُمْرْ مَّنْ يَبْشِيْ عَلَى رِجْلَيْنِ ۽ وَمِنْهُرْ مِّنْ يَّهْمِيْ عَلَى أَرْبَع ، يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَآءُ ، إِنَّ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر

৪৬. আমি অবশ্যই (হেদায়াতের কথা) সুস্পষ্ট করার আয়াতসমূহ নাথিল করেছি, আর (এর মাধ্যমে) আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে সহজ্ঞ সরল পথে পরিচালিত করেন।

٣٦ لَقَنْ ٱنْزَلْنَا أَيْسٍ مُّبَيِّنْسٍ ، وَاللَّهُ يَهْنِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى مِرَاطٍ مَسْتَقِيْم

৪৭. (যারা মোনাফেক) তারা বলে, আমরা আল্লাহ তায়ালা ও রসূলের ওপর ঈমান এনেছি এবং আমরা তাঁর আনুগত্য করি। (অথচ) এর একটু পরেই তাদের একটি দল আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আদেশ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়: (বস্তুত) ওরা আসলে মোমেন নয়।

٣٠ وَيَقُوْلُوْنَ أَمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَ أَطَعْنَا ثُرٌّ يَتَوَلَّى فَرِيْقٌ مِّنْهُرْ مِّنَ الْعَلِ ذَلِكَ ، وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ

৪৮. যখন ওদের (সত্যি সত্যিই) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর 🗸 वज. पपन उपन (जारा) जाराश) आशार शाशाणा ७ जात مَوْاً إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمُ अज्ञलत नित्क आस्तान कता रहा, याता कतत (आल्लारत لَيُحَكُمُ اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمُ अज्ञलत नित्क आस्तान कता रहा, याता करत (आल्लारत لللهُ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمُ اللهُ عَالَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمُ اللَّهِ وَرَسُولُهِ لِيَحْكُمُ لَا اللَّهِ وَرَسُولُهِ لِيَاللَّهِ وَرَسُولُهِ لِيَحْكُمُ اللَّهِ وَرَسُولُهِ لِيَحْلُمُ اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَرَسُولُهِ لِيَعْلَى اللَّهِ وَرَسُولُهِ اللَّهِ وَرَسُولُهِ لِيَعْلَى اللَّهِ وَرَسُولُهِ اللَّهِ وَرَسُولُهِ اللَّهِ وَرَسُولُهِ اللَّهِ وَرَسُولُهِ اللَّهِ وَرَسُولُهِ اللَّهِ وَرَسُولُهُ اللَّهِ وَمِنْ اللَّهِ وَرَسُولُهُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ اللَّهِ وَاللَّهِ اللَّهِ وَرَسُولُهُ اللَّهِ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا لَهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَالْ রসূলের পক্ষ থেকে) তাদের পারস্পরিক (বিরোধের) মীমাংসা করা যায়, তখন তাদের একটি দল পাশ কেটে সরে পড়ে।

بَيْنَهُرْ إِذَا فَرِيْقٌ مِنْهُرْ مَعْوضُونَ

৪৯. যদি এ (বিচার ফয়সালার) বিষয়টা তাদের সপক্ষে ٣٩ وَإِنْ يَّكُنْ لَّهُرُ الْحَقُّ يَاْتُوْا إِلَيْهِ যায়, তাহলে তারা একান্ত বিনীতভাবে তাঁর কাছে ছটে আসে:

৫০. এদের অস্তরে কি (কুফুরের কোনো) ব্যাধি আছে, না এরা (রসলের নবুওতের ব্যাপারে) সন্দেহ পোষণ করে. يَخَافُونَ أَنْ يَحِيْفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ * अथता এता कि छग्न करत, आझार जाग्नान ७ जांत तत्र्म ওদের প্রতি কোনো রকম অবিচার করবেন? (আসলে তা নয়;) বরং তারা নিজেরাই হচ্ছে যালেম।

٥٠ أَنِي تُلُوْبِمِر مُّرَضٌّ أَرِّ ارْتَابُوا أَرُّ بَلْ أُولَٰئِكَ مُر الطَّلِبُونَ ع

৫১. (অপর দিকে) ঈমানদার লোকদের যখন তাদের ८১. (অপর ।পকে) পমানদার লোকদের যখন তাদের اللهُ وَمُنِيْنَ لِذَا دُعُوا ۖ إِلَى عَالَ اللهُ وَمُنِيْنَ لِذَا دُعُوا ۚ إِلَى عَالَمُ اللهِ اللهِ عَلَى عَالَمُ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ الله

২৪ সুরা আন নুর

OCH মন্যিল ৪

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৮ কাুদ আফ্লাহা

তাঁর রসলের দিকে আহ্বান জানানো হয়, তখন (খুশী মনেই) তারা বলে, হ্যাঁ, আমরা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আদেশ) শোনলাম এবং তা (যথাযথ) মেনেও নিলাম: বস্তুত এরাই হচ্ছে সফলকাম ব্যক্তি।

اللهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَّقُولُواْ سَبِعْنَا وَٱطَعْنَا ﴿ وَٱولَٰئِكَ هُرُ الْمُقْلِحُوْنَ

৫২. যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করে, আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে এবং তাঁর নাফরমানী (করা) থেকে বেঁচে থাকে, তারাই হচ্ছে সফলকাম।

٥٢ وَمَنْ يَّطِعِ اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقُهِ فَأُولَئِكَ مُرِّ الْفَائِزُوْنَ

৫৩. (হে নবী,) এ (মোনাফেক) লোকেরা আল্লাহ তায়ালার নামে শব্দ কসম খেয়ে বলে (আমরা তোমার এতোই অনুগত যে), তুমি যদি আদেশ করো তাহলে আমরা (ঘরবাড়ী ছেড়ে) অবশ্যই তোমার সাথে বেরিয়ে যাবো! (হে নবী.) তুমি বলো. তোমরা (বেশী) শপথ করো না. (তোমাদের) আনুগত্য (আমার তো) জানাই (আছে): তোমরা যা কিছু করো আল্লাহ তায়ালা তা ভালো করেই জানেন।

٥٣ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْلَ أَيْمَانِهِرْ لَئِنَ أَمَرْ تَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ﴿ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا مِ طَاعَةً مَّعُرُوْفَةً ﴿ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ ۗ ابِهَا تَعْمَلُوْنَ

88. (र नवी,) प्रि (बाप्य बाता) वरला, रामता बालार و وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ع क्षि. (र नवी,) प्रि (बाप्य बाता) वरला, रामता बालार و قُلُ أَطِيعُوا اللهِ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ع তায়ালার আনুগত্য করো, আনুগত্য করো আল্লাহর রস্লের (হাা), তোমরা যদি মুখ ফিরিয়ে নাও (তাহলে জেনে রেখৌ), আল্লাহ তায়ালার দ্বীন পৌছানোর যে দায়িত তার ওপর দেয়া হয়েছে তার জন্যে সে দায়ী. (অপরদিকে আনুগত্যের) যে দায়িত তোমাদের ওপর দেয়া হয়েছে তার জন্যে তোমরা দায়ী: যদি তোমরা তার কথামতো চলো তাহলে তোমরা সঠিক পথ পাবে: রসলের কাজ হচ্ছে (আল্লাহ তায়ালার কথাগুলো) ঠিক ঠিক মতো পৌছে দেয়া।

فَإِنْ تَوَلُّواْ فَإِنُّهَا عَلَيْهِ مَا حُهِّلَ وَعَلَيْكُرْمًّا حُوِّلْتُرْ ، وَإِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَلُوْا ، وَمَا عَلَى الرُّسُوْلِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِيْنُ

৫৫. তোমাদের মধ্যে যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনে এবং (সে অনুযায়ী) নেক কাজ করে, তাদের সাথে আল্লাহ তায়ালা ওয়াদা করেছেন, তিনি যমীনে তাদের অবশ্যই খেলাফত দান করবেন–যেমনিভাবে তিনি তাদের আগের লোকদের খেলাফত দান করেছিলেন. (সর্বোপরি) যে জীবন বিধান তিনি তাদের জন্যে পছন্দ كَمُر دِينَهُرُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلَيْبَرِّلْنَهُمْ करत्र हुन करत (अभारक ७ तार्व) المُر دِينَهُرُ الَّذِي الْآفِي الْمَعْلَ وَلَيْبَرِّلْنَهُمْ اللَّهِ करत्र हुन करत দেবেন, তাদের ভীতিজনক অবস্থার পর তিনি তাদের অবস্থাকে (নিরাপত্তা ও) শান্তিতে বদলে দেবেন, (তবে এ জন্যে শর্ত হচ্ছে) তারা ওধু আমারই গোলামী করবে, আমার সাথে কাউকে শরীক করবে না: এরপরও যে (এবং যারা) তাঁর নেয়ামতের নাফরমানী করবে তারাই গুনাহগার (বলে পরিগণিত হবে)।

٥٥ وَعَنَ اللَّهُ الَّذِينَ أَمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُرْ فِي الْأَرْضِ كَهَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِرْ مِ وَلَيُمَكِّنَيَّ ا بَعْنِ خَوْفِهِرْ أَمْنًا مَ يَعْبُنُ وْنَنِي لَا يُشْرِكُوْنَ بِي شَيْئًا ﴿ وَمَنْ كَفَرَ بَعْنَ ذَلِكَ فَأُولِئِكَ مُر الفسقُونَ

৫৬. (হে মুসলমানরা,) তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করো. যাকাত দাও, রসূলের আনুগত্য করো, আশ করা যায় তোমাদের ওপর দয়া (ও অনুগ্রহ) করা হবে।

٥٦ وَ أَقِيْهُوا الصَّلْوةَ وَ أَتُوا الزَّكْوةَ وَ أَطيْعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُوْمَهُونَ

৫৭. কাফেরদের ব্যাপারে কখনো একথা ভেবো না যে. তারা যমীনে (আমাকে) অক্ষম করে দিতে পারবে, তাদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্লাম: (আর) কতো নিকৃষ্ট এ ঠিকানা!

٥٤ ﴾ تَعْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضَ عِ وَمَا وْهُرُ النَّارُ وَلَبِئْسَ الْهَصِيْرُ ع

৫৮. হে (মানুষ,) তোমরা যারা ঈমান এনেছো (মনে রেখো), তোমাদের অধিকারভুক্ত দাস দাসীরা এবং مَلَكَتُ أَيْمَا نُكُر وَ الَّذِينَ لَم يَبُلُغُوا एठा गांपनत भया त्याक्ष वाता वाताक्षाल हमने, जाता ا

٥٨ يَّأَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا لِيَسْتَأْذِنْكُرُ الَّذِيْنَ

মন্যিল ৪



২৪ সূরা আন নূর

বেন তিনটি সময়ে তোমাদের (কাছে আসার জন্যে) অনুমতি চেয়ে নেয় (সে সময়গুলো হচ্ছে); ফজর নামাযের আগে, দুপুরে যখন তোমরা (কিছুটা আরাম করার জন্যে) নিজেদের পরিধেয় বস্ত্র (শিথিল করে) রাখো এবং এশার নামাযের পর। (মূলত) এ তিনটি (সময়) হচ্ছে তোমাদের পর্দা অবলম্বনের (সময়), এগুলো ছাড়া (অন্য সময়ে আসা যাওয়ার ব্যাপারে) তোমাদের ওপর কোনো দোষ নেই, না এতে তাদের জন্যে কোনো রকমের দোষ আছে; (কেননা) তোমরা তো প্রায়ই একে অপরের কাছে সব সময়ই যাতায়াত করে থাকো, আল্লাহ তায়ালা এভাবেই (নিজের) নির্দেশগুলো তোমাদের জন্যে সুস্পইভাবে বর্ণনা করেন; (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা মহাজ্ঞানী, তিনি প্রবল প্রজ্ঞাবান।

الْعُلْرَ مِنْكُرْ ثَلْنَ مَرِّتِ ، مِنْ قَبْلِ مَلُوةِ
الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيابَكُرْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ
وَمِنْ ابَعْلِ مَلُوةِ الْعِشَآءِ ، ثَلْنَ عَوْرُتِ لَّكُرْ ،
وَمِنْ ابَعْلِ مَلُوةِ الْعِشَآءِ ، ثَلْنَ عَوْرُتِ لَّكُرْ ،
لَيْسَ عَلَيْكُرْ وَلَا عَلَيْهِرْ جُنَاحٌ ابَعْنَ مُنْ ،
طُوْنُونَ عَلَيْكُرْ بَعْضُكُرْ عَلَى بَعْضٍ ، كَاللّه عَلِيْرٌ .
يُبَيِّنُ اللّهُ لَكُرُ الْأَيْتِ ، وَاللّه عَلِيْرٌ .
حَكِيْرٌ

৫৯. তোমাদের (নিজেদের) সম্ভানরাও যখন বয়েগ্রাপ্ত হয়ে যায় তখন তারা যেন (তোমাদের কামরায় প্রবেশের আগে) সেভাবেই অনুমতি নেয়, যেভাবে তাদের আগে (বড়োরা) অনুমতি নিতো; আল্লাহ তায়ালা এভাবেই তাঁর আয়াতসমূহকে তোমাদের কাছে খুলে খুলে বর্ণনা করেন; আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) জানেন, তিনি পরম কুশলী বটে।

هُ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُرُ الْحُلُرَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ النَّهِيْنَ مِنْ قَبْلِهِرْ ، كَاللهُ يَبْيِّنَ الله لَكُرْ الْيَهِ ، وَالله عَلِيْرُ عَيْدَرُ .

৬০. বৃদ্ধা নারী, যাদের এখন আর কারো বিয়ের (বৃদ্ধনে আসার) আশা নেই, তাদের ওপর কোনো দোষ নেই, যদি তারা তাদের (শরীর থেকে অতিরিক্ত) কাপড় খুলে রাখে, (তবে শর্ত হচ্ছে) তারা সৌন্দর্য প্রদর্শনকারী হবে না; (অবশ্য) এ (অতিরিক্ত কাপড় খোলা) থেকেও যদি তারা বিরত থাকতে পারে তা (তাদের জন্যে) ভালো; আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) জানেন।

٢٠ وَالْقُوَاعِلُ مِنَ النِّسَاءِ الْتِي لَا يَرْجُونَ نِكَامًا فَلَيْسَ عَلَيْهِي جُنَاحٌ أَن يَّضَعْنَ ثِيكَامًا فَلَيْسَ عَلَيْهِي جُنَاحٌ أَن يَّضَعْنَ ثِيكَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجْتٍ بِإِيْنَةٍ ﴿ وَأَنْ يَشَعُفِغْنَ خَيْرٌ لَهَى ﴿ وَاللَّهُ سَمِيْعٌ عَلِيْرٌ

৬১. যে ব্যক্তি অন্ধ তার ওপর কোনো (বিধি নিষেধের) সংকীর্ণতা নেই, যে পঙ্গু তার ওপর কোনো (বিধি নিষেধের) সংকীর্ণতা নেই, যে ব্যক্তি অসুস্থ তার ওপরও কোনো বাধ্যবাধকতা নেই এবং তোমাদের নিজেদের ওপরও কোনো দোষ নেই- যদি তোমরা তোমাদের নিজেদের ঘর থেকে কিছু খেয়ে নাও, একইভাবে এটাও তোমাদের জন্যে দৃষণীয় হবে না, যদি তোমরা তোমাদের পিতা (পিতামহের) ঘরে, মায়েদের ঘরে, ভাইদের ঘরে, বোনদের ঘরে, চাচাদের ঘরে, ফুফুদের ঘরে, মামাদের ঘরে, খালাদের ঘরে, (আবার) এমন সব ঘরে- যার চাবি তোমাদের অধিকারে রয়েছে, কিংবা তোমাদের বন্ধুদের ঘরে (কিছু খাও): অতপর এতেও কোনো দোষ নেই যে, (এসব জায়গায়) তোমরা সবাই একত্রে খাবে কিংবা আলাদা আলাদা খাবে, তবে যখনি (এসব) ঘরে প্রবেশ করবে তখন একে অপরের প্রতি সালাম করবে, এটা হচ্ছে আল্লাহর কাছ থেকে (তাঁরই নির্ধারিত) কল্যাণময় এক পবিত্র অভিবাদন: এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে তাঁর আয়াতসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করেন. যাতে করে তোমরা বুঝতে পারো।



৬২. (খাঁটি ঈমানদার ব্যক্তি তো হচ্ছে তারা,) যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসলের ওপর ঈমান আনে. কখনো যদি তারা কোনো সমষ্টিগত ব্যাপারে তার সাথে একত্রিত হয় তাহলে যতোক্ষণ তারা তার কাছ থেকে অনুমতি চাইবে না. ততোক্ষণ তারা (সেখান থেকে) কেউ সরে যাবে না: (হে নবী.) যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ওপর বিশ্বাস করে, যদি তারা কখনো তাদের নিজেদের কোনো কাজে (বাইরে যাবার জন্যে) তোমার কাছে অনুমতি চায়, তাহলে তুমি যাকে ইচ্ছা তাকে فَأَذُنَ لَّهِيْ شَنْسَ مِنْهُمِرْ وَ اسْتَغُفُو لَهُمُّ اللَّهُ ، अनुप्रिष्ठ निरंश वरः जालार जाशानात कारह वातन মাফের জন্যে দোয়া করো, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

٦٢ إِنَّهَا الْهُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ أَمَنُوْا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُواْ مَعَدَّ عَلَى أَثْوِ جَامِع لَّرْ يَنْهَبُوْ احَتَّى يَسْتَأْذِنُوْهُ مَ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأَذْنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّٰنِيْنَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُوْلِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِرْ انَّ اللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمِ ۗ

৬৩. (হে মুসলমানরা,) যখন নবী তোমাদের ডাকে, তখন তাঁর ডাককে পারস্পরিক ডাকের মতো মনে করো না: আল্লাহ তায়ালা সেসব লোকদের ভালো করেই জানেন যারা (নিজেদের) আড়াল করে (নবীর) সামনে থেকে يتَسَلَّلُونَ مِنْكُرُ لِوَ اذًا ٤ فَلْيَحْنَرِ الَّذِينَ अत्र यात्र, जूखतार यात्रा قَامَ ضَائِرُ لِوَ اذًا ٤ فَلْيَحْنَرِ الَّذِينَ বিরুদ্ধাচরণ করে তাদের এ ব্যাপারে ভয় করা উচিত, তাদের ওপর (এ বিরুদ্ধাচরণের জন্যে এ দুনিয়ায়) কোন وَ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّاللَّا اللَّهُ বিপর্যয় এসে পড়বে কিংবা (পরকালে) কোনো কঠিন আযাব এসে তাদের গ্রাস করে নেবে।

٦٣ ﴾ تَجْعَلُوا دُعَاءَ السُّول بَيْنَكُر كَنُّعَاء بَعْضَكُمْ بَعْضًا ﴿ قَلْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِيْنَ يُصِيْبَهُ مُعَنَابِ ٱليُر

৬৪. (হে মানুষ, তোমরা) জেনে রেখো, আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা সবই আল্লাহ তায়ালার জন্যে (নিবেদিত), তোমরা যে (অবস্থার) ওপর আছো: আল্লাহ তায়ালা তা ভালো করেই জানেন: যেদিন মানুষ সবাই তাঁর দিকেই প্রত্যবর্তিত হবে, সেদিন তিনি তাদের সবকিছুই জানিয়ে দেবেন, যা কিছু তারা (দুনিয়ায়) করতো। আল্লাহ তায়ালা সব বিষয়েই ওয়াকেফহাল।

٦٣ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّيْوِينِ وَالْإَرْضِ عَ قَنْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ، وَيَوْمَ يُوْجَعُونَ إِلَيْهِ نَيَّنَبِّئُهُمْ بِهَا عَبِلُوْا ء وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْء

সরা আল ফোরকান মঞ্চায় অবতীর্ণ- আয়াত ৭৭, রুক ৬ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةً بِشُر اللَّهِ الرَّحْسِ الرَّحِيْمِ

১. কতো মহান তিনি, যিনি তাঁর বান্দার ওপর (সত্য মিথ্যার মাঝে পার্থক্যকারী এই) 'ফোরকান' নাযিল করেছেন, যাতে করে সে (ব্যক্তি- এর দ্বারা) সৃষ্টিকুলের জন্যে সতর্ককারী হতে পারে.

ا تَبْرَكَ الَّذِي نَوَّلَ الْقُرْقَانَ عَلَى عَبْنِهِ لِيَكُونَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَنِيْرَ الله

২. (তিনিই আল্লাহ তায়ালা-) তাঁর জ্বন্যে রয়েছে আসমানসমূহ ও যমীনের সার্বভৌমত্ব, তিনি কখনো কাউকে (নিজের) সন্তান বলে গ্রহণ করেননি- না (তাঁর এ) সার্বভৌমতে অন্য কারো কোনো শরীকানা আছে, তিনিই প্রতিটি বস্তু পয়দা করেছেন এবং তিনি তাঁর (সৃষ্টির) জন্যে (খালাদা খালাদা) পরিমাপ নির্ধারণ করেছেন।

٢ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّبُوٰتِ وَالْإَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِنْ وَلَنَّا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهُ شَرِيْكٌ فِي الْهُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَلَّرَةً تَقْرِيرًا

৩. (এ সত্ত্বেও) এ (মোশরেক) লোকেরা তাঁকে বাদ দিয়ে এমন কিছুকে মাবুদ বানিয়ে নিয়েছে, যারা কিছুই সৃষ্টি করতে পারে না; বরং তাদেরই সৃষ্টি করা হয়েছে, (সত্য

٣ وَاتَّخَلُواْ مِنْ دُوْنِهِ الْهَدُّ ۗ لَّا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَّهُرْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَهْلِكُونَ ۖ لِأَنْفُسِمِ

২৫ সূরা আল ফোরকান

(06)

8৬

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৮ ক্রাদ আফ্লাহা |
|--|--|
| কথা হচ্ছে), তারা (যেমন) নিজেরা নিজেদের ক্ষতি করতে সক্ষম নয়, তেমনি নিজেরা নিজেদের কোনো উপকারও করতে সক্ষম নয়। তারা কাউকে মৃত্যু দিতে পারে না– কাউকে জীবনও দিতে পারে না, (তেমনি) পারে না (কেউ একবার মরে গেলে তাকে) পুনরায় উঠিয়ে আনতে। | َ فَرَّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَيٰوةً وَّ لَا نُشُورًا |
| ৪. যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অবিশ্বাস করে, তারা (এ কোরআন সম্পর্কে) বলে, এ তো মিথ্যা ছাড়া আর কিছুই নয়, য়া এ ব্যক্তি নিজে থেকে বানিয়ে নিয়েছে এবং অন্য জাতির লোকেরা তার ওপর সাহায়্যের হাত বাড়িয়েছে, (মূলত এসব কথা বলে) এরা (এক জঘন্য) য়ুলুম ও (নির্জ্লা) মিথ্যা নিয়ে হায়ির হয়েছে। | ٣ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ إِنْ هَٰنَآ إِلَّ إِفْلَتَا افْتَرُهُ وَاَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ الْخَرُوْنَ لَا فَقَلْ جَاءُوْا ظُلْمًا وَّزُوْرًا لَا |
| ৫. তারা বলে, এ (কোরআন) হচ্ছে সেকালের উপকথা, যা এ ব্যক্তি লিখিয়ে নিয়েছে এবং সকাল সন্ধ্যায় তার সামনে এগুলো পড়া হয়। | ۵ وَقَالُوْ آ اَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُهْلَى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاصِيْلًا |
| ৬. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, এ (কোরআন) তিনিই নাযিল করেছেন যিনি আকাশসমূহ ও যমীনের সমুদয় রহস্য জানেন; তিনি অত্যস্ত ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু। | آ قُلُ أَنْزَلَهُ النَّهِى يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّاوٰسِ وَالْأَرْضِ اللَّهُ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا |
| ওরা বলে, এ আবার কেমন (ধরনের) রসৃল যে (আমাদের মতো করেই) খাবার খায় এবং (আমাদের মতোই) হাটে বাজ্ঞারে চলাফেরা করে। কেন তার কাছে কোনো ফেরেশতা নাযিল করা হলো না যে তার সাথে (আযাবের) সতর্ককারী হয়ে থাকতো, | وقالُوْا مَالِ هٰنَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ ويَهَشِى فِي الْإَسُوَاقِ الوَّلَّ الْنِزِلَ إليهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَدُّ نَنِيْرًا لا |
| ৮. কিংবা (গায়ব থেকে) তার কাছে কোনো ধনভান্ডার এসে পড়লো না কেন, অথবা (কমপক্ষে) তার কাছে একটি বাগানই না হয় থাকতো, যা থেকে সে (খাবার সংগ্রহ করে) খেতো; এ যালেম লোকেরা (মুসলমানদের আরো) বলে, তোমরা তো (আসলে) একজন যাদুগ্রস্ত ব্যক্তিরই অনুসরণ করছো। | أَوْ يُلْقَى إِلَيْهِ كَنْزَّ أَوْ تَكُوْنُ لَدُ مَنْةً يَّاْكُلُ مِنْهَا ﴿ وَقَالَ الظَّلِمُوْنَ إِنْ تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا رَجُلًا مَّشْحُوْرًا |
| ৯. (হে নবী,) চেয়ে দেখো, ওরা ভোমার সম্পর্কে কি ধরনের কথা বানাচ্ছে, এরা (আসলে) গোমরাহ হয়ে গেছে, কখনো তারা আর সঠিক পধ-পাবে না। | ٩ ٱنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْإَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيْنُونَ سَبِيْلًا ع |
| ১০. (হে নবী, তুমি এদের বলো,) আল্পাহ তায়ালা (এমন) এক মহান সন্তা, যিনি ইচ্ছা করলে তোমাদের (এ একটি বাগান কেন) এর চাইতে উৎকৃষ্ট বাগানসমূহও দান করতে পারেন, যার নিম্নদেশে (অমীয়) ঝর্ণধারা, প্রবাহিত হবে, (এ ছাড়াও) তিনি (তোমাদের) দিতে পারেন (সুরম্য) প্রাসাদসমূহ! | ا تَبْرَكَ النِّي إِنْ شَاءً جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنْتِ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ لاوَيَجْعَلْ لَكَ قُصُوْرًا |
| ১১. বরং এরা কেয়ামতের দিনকে অস্বীকার করে; আর যারাই কেয়ামত অস্বীকার করে তাদের জন্যে আমি (জাহান্নামের) জ্বলম্ভ আগুন প্রস্তুত করে রেখেছি। | ١١ بَلُ كَنَّ بُوا بِالسَّاعَةِ عَ وَاَعْتَهُ نَا لِمَن اللَّاعَةِ سَعِيرًا عَ كَنَّ بِ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا عَ |
| ১২. তারা যখন দূর থেকে তাদের (মতো অন্যান্য জাহান্নামীদের) দেখবে, তখন তারা (স্পষ্টত) তার গর্জন ও চীৎকার শুনতে পাবে। | الَّ إِذَا رَاتُهُرُ مِّنَ مُّكَانٍ البَعِيْدِ سَعِعُوا لَهَا تَغَيَّظًا وَّزَفِيرًا |
| | ١٣ وَإِذَا ٱلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ |
| ২৫ সূরা আল ফোরকান | মন্যিল ৪ |

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ১৮ কাদ আফলাহা তখন সেখানে তারা তথু (মৃত্যুর) ধ্বংসকেই ডাকতে دَعَوْ | مُنَالِكَ تُبُورًا ، থাকবে: ১৪. (তাদের তখন বলা হবে.) আজ তোমরা ধ্বংস ١٢ لَا تَنْعُوا الْيَوْ) ثُبُورًا وَّاحلًا وَّادْعُوْا হওয়াকে একবারই ওধু ডেকো না, বরং বহুবার ধ্বংসকে ثُبُورًا كَثيرًا ডাকো- (কোনো কিছুই আজ তোমাদের কাজে আসবে না)। ১৫. (হে নবী. এদের) তুমি বলো. এটা (জাহান্লামের) এ ١٥ قُلْ أَذٰلِكَ غَيْرً أَثَ جَنَّةُ الْخُلُنِ الَّتِي (কঠোর আযাব) শ্রেয়- না সেই স্থায়ী জানাত, যার وُعِنَ الْمُتَّقُونَ وَكَانَتُ لَهُرْ جَزَّاءً وَّمَصِيرًا ওয়াদা পরহেযগার লোকদের (আগেই) দিয়ে রাখা হয়েছে: এ (জানাতই) হচ্ছে তাদের যথাযথ পুরস্কার ও (চ্ড়ান্ত) প্রত্যাবর্তনের স্থান! ১৬. সেখানে তারা যা কিছু পেতে চাইবে তাই তাদের ١٦ لَهُرْ فَيْهَا مَا يَشَاءُونَ عَلْنِينَ وَكَانَ عَلَى জন্যে (মজুদ) থাকবে, (তাও খাবার) থাকবে স্থায়ীভাবে; এ رَبِّكَ وَعْلَ السَّنُولَا প্রতিশ্রুতির যথায়থ পালন তোমার মালিকেরই দায়িত। ১৭. যেদিন তিনি এ (মোশরেক) ব্যক্তিদের এবং তাদের-١٤ وَيَوْمَ يَحَشُونُهُمْ وَمَا يَعْبُلُونَ مِنْ دُوْنِ ও তাদের (মাবুদদের), যাদের এরা আল্লাহর বদলে الله فَيَقُولُ ءَ أَنْتُر أَضْلَلْتُر عبَادى هُو كَا عَلَا مُعَالِمُ طَالِمُ اللهُ عَلَا عَالَمُ طَاللهُ عَلَا عَالمَ طَاللهُ عَلَا عَالَمُ اللهُ عَلَيْتُولُ ءَ أَنْتُر أَضْلَلْتُر عبَادى هُو كَا عَلَا عَل তিনি (সে মাবুদদের) জিজ্ঞেস করবেন, তোমরাই কি أَمْ هُرْ ضَلُّوا السَّبِيلَ وَ আমার এ বান্দাদের গোমরাহ করেছো, না তারা নিজেরাই (সত্য থেকে) বিচ্যুত হয়ে গেছে; ১৮. ওরা (জবাবে) বলবে (হে আল্লাহ তায়ালা), তুমি اللهُ اللهُ عَالُوا سُبُحُنَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا آنَ ال পবিত্র, তুমি মহান, আমরা (তো ছিলাম তোমারই বান্দা,) لَتَّخِلَ مِنْ دُوْلِكَ مِنْ أَوْلِيآءَ وَلَكِنْ مَّتَّعْتَهُرْ তোমার বদলে অন্যকে অভিভাবকরপে গ্রহণ করা আমাদের শোভনীয় ছিলো না, তুমি তো এদের এবং وَ أَبَاءَهُمْ مَتَّى نَسُوا النِّكْرَجَ وَكَانُوْا قَوْمًا ۗ এদের পিতৃপুরুষদের (যথেষ্ট) ভোগের দিয়েছিলে, (এগুলো পেয়ে) তারা এমনকি তোমার بورا কথাই ভুলে বসেছে এবং (এভাবেই) তারা একটি ধ্বংসপ্রাপ্ত জাতিতে পরিণত হয়ে গেছে। كه. (जाल्लार जाराना वनत्वन,) जारापत এ भावूमता وَهُو يُو يُهُ اللَّهُ اللَّ তো তোমরা যা বলছো তাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো. تَسْتَطِيعُونَ مَرْفًا و لا نَصْرًا ع وَمَن يَظْلِم अारा अवारा अवारा المادة المحادة ا পারবে না, না (তোমরা আজ) কারো সাহায্য পাবে। তোমাদের মধ্যে কেউ যদি (আমার আনুগত্যের) مَّنْكُمْ نُنْقَهُ عَنَ ابًّا كَبِيرًا সীমালংঘন করে তাহলে তাকে আমি কঠোর আযাব

আস্বাদন করাবো।

পাঠিয়েছি, তারা (মানুষের মতোই) আহার করতো, (অন্য । الْهُرْسَلِيْنَ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّ মানুষদের মতোই) তারা হাটে বাজারে যেতো। (আসল কথা হচ্ছে) মানুষদের মধ্য থেকে রসুল পাঠিয়ে আমি তোমাদের একজনকে আরেকজনের জন্যে পরীক্ষা (-র । वैंगेंग्रें प्रेकेंट्रें प्रिकेंट्रें प्रिकेंट्रें प्रेकेंट्रें प्रिकेंट्रें प्रेकेंट्रें प्रेकेंट्रें प्रेकेंट्रें प्रेकेंट्रें प्रिकेंट्रें प्रेकेंट्रें प्रिकेंट्रें উপকরণ) বানিয়েছি: (এ পরীক্ষায়) তোমরা কি ধৈর্য ধারণ করবে নাং তোমার মালিক (কিন্তু তোমাদের) সবকিছুই দেখছেন।

إِنَّهُمْ لَيَاكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَهُمُّوْنَ فِي أَتَصْبُونَ ع وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيُّ اع



www.eelm.weebly.com

করে ফেললো।

২১. যারা আমার সাথে (তাদের) সাক্ষাতের আশা পোষণ করে না, তারা বলে, কতো ভালো হতো যদি আমাদের কাছে আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে কোনো ফেরেশতা নাযিল করা হতো, অথবা আমরা যদি আমাদের মালিককে (নিজেদের চোখে) দেখতে পেতাম! তারা (এ সব বলে) নিজেদের বড়ো (অহংকারী) মনে করলো এবং (আল্লাহ তায়ালার নাফরমানীতেও) তারা মাত্রাতিরিক্ত সীমালংঘন

 $\sqrt{\hat{eta}}$ وَقَالَ الَّذِيْنَ $\sqrt{\hat{eta}}$ يَרْجُوْنَ لِقَاءَنَا لَوْ $\sqrt{\hat{eta}}$ ٱثْرَلَ عَلَيْنَا الْهَلِّنْكَةُ أَوْ نَرْى رَبَّنَا م لَقَل اسْتَكْبَرُوْا فِي أَنْفُسِهِ وَعَتَوْ عُتُوا كَبِيرًا

২২. যেদিন (সত্যি সত্যিই) তারা সে ফেরেশতাদের দেখবে, তখন (কিন্তু) অপরাধীদের জন্যে সেদিন কোনো সুসংবাদ থাকবে না. (বরং) তারা বলবে. (হে আল্লাহ. এই ফেরেশতাদের থেকে) আমরা পানাহ চাই- পানাহ চাই ৷

٢٢ يَوْ)َ يَرَوْنَ الْمَلَّئِكَةَ لَا بُشُرَٰى يَوْمَئِنِ لِّلْمُجُرِمِيْنَ وَيَقُولُوْنَ مِجْرًا مُحَجُورًا

২৩. (এবার) আমি তাদের সে সব কর্মকান্ডের দিকে মনোনিবেশ করবো, যা তারা (দুনিয়ায়) করে এসেছে. তখন আমি তা উড়ন্ত ধূলিকণার মতোই (নিক্ষল) করে দেবো।

٢٣ وَقَلَمْنَا الِّي مَا عَهِلُوْا مِنْ عَهَلِ فَجَعَلْنُهُ هَبَاءً مُنْتُورًا

জায়গা হবে অত্যন্ত মনোরম। ২৫. (হে মানুষ, তোমরা সেদিনকে ভয় করো.) যেদিন

২৪. সেদিন জান্নাতীদের বাসস্থান ও তাদের বিশ্রামের

٢٣ أَصْحُبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِنِ غَيْرٌ مُسْتَقَرًّا

আসমান তার মেঘমালা নিয়ে ফেটে পড়বে, আর (তারই মাঝ দিয়ে) দলে দলে ফেরেশতারা (যমীনে) নেমে আসবে।

٢٥ وَيَوْ)َ تَشَقَّقُ السَّهَاءُ بِالْغَهَا} وَنُزَّلَ الْهَلْئِكَةُ تَنْزِيْلًا

২৬. সেদিন চডান্ত বাদশাহী হবে দয়াময় আল্লাহ তায়ালার জন্যে: যারা অস্বীকার করেছে তাদের ওপর সেদিনটি হবে (বড়োই) কঠিন!

٢٦ ٱلْهُلْكُ يَوْمَئِنِ الْعَقُّ لِلرَّحْيِي ، وكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكُفِرِيْنَ عَسِيْرًا

২৭. সেদিন যালেম ব্যক্তি (ক্ষোভে দুঃখে) নিজের হাত দুটো দংশন করতে করতে বলবে, হায়! আমি যদি দুনিয়ায় রসূলের সাথে (দ্বীনের) পথ অবলম্বন করতাম!

٢٠ وَيَوْاَ يَعَضَّ الظَّالِمُ عَلَى يَرَيْه يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَنْ فَ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا

২৮. দুর্ভাগ্য আমার, আমি যদি অমুককে (নিজের) বন্ধু না ٢٨ يُويْلَتٰي لَيْتَنِي لَيْ اللَّهِ التَّحْلُ فُلَانًا বানাতাম!

২৯. আমার কাছে (দ্বীনের) উপদেশ আসার পর সে তা থেকে আমাকে বিচ্যুত করে দিয়েছিলো: আর শয়তান তো (হামেশাই) মানুষকে (বিপদের সময় একলা) ফেলে কেটে পড়ে ৷

٢٩ لَقَنْ ٱضَلَّنِيْ عَنِ النِّكْرِ بَعْنَ إِذْ جَاءَنِيْ ﴿ وَكَانَ الشَّيْطَى لِلْإِنْسَانِ خَنُوْلًا

৩০. সেদিন রসুল বলবে, হে মালিক, অবশ্যই আমার জাতি কোরআনকে (একটি) পরিত্যাজ্য (বিষয়) মনে করেছিলো।

٣٠ وَقَالَ الرَّسُولُ يُرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَلُوْا مِنَا الْقُرْانَ مَهْجُوْرًا

৩১. (হে নবী.) এভাবেই আমি (প্রত্যেক যুগের) অপরাধীদের প্রত্যেক নবীর দুশমন বানিয়ে থাকি: অতএব (তুমি মনোক্ষুণ্ন হয়ো না), তোমার পথ প্রদর্শন ও সাহায্য করার জন্যে তোমার মালিকই যথেষ্ট!

٣١ وَكُنْ لِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْهُجُومِيْنَ ء وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا

২৫ সুরা আল ফোরকান

948

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|--|
| ৩২. যারা (কোরআন) অস্বীকার করে তারা বলে, (আচ্ছা এই) পুরো কোরআনটা তার ওপর একবারে নাযিল হলো | ٣٢ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لُوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ |
| না কেনঃ (আসলে কোরআন তো) এভাবেই (নাযিল) হওয়া উচিত ছিলো, যাতে করে এ (ওহী) দ্বারা আমি | الْقُرْانُ جُهْلَةً وَّاحِنَةً يَ كَنْ لِكَ يَ لِنُثَبِّتَ بِهِ |
| তোমার অন্তর্রক মযবুত করে দিতে পারি, (এ কারণেই) আমি একে থেমে থেমে নাযিল করেছি। | فُوُ ادَكَ وَرَتَّلْنَهُ تَرْتِيْلًا |
| ৩৩. (তা ছাড়া) ওরা তোমার কাছে যে কোনো ধরনের বিষয় (ও সমস্যা) নিয়েই আসুক না কেন, আমি (সাথে সাথেই) তোমার কাছে (এর একটা) যথার্থ সত্য (সমাধান) এনে হাযির করতে পারি এবং (প্রয়োজনে তার) একটা সুন্দর ব্যাখ্যাও বলে দিতে পারি; | ٣٣ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا مِنْنُكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَىَ تَفْسِيْرًا ا |
| ৩৪. এরা হচ্ছে সে সব লোক যাদের (কেয়ামতের দিন) মুখের ওপর ভর দিয়ে জাহান্নামের সামনে জড়ো করা হবে, ওদের সে স্থানটি হবে অতি নিকৃষ্ট, আর ওরা নিজেরাও হবে অতিশয় পথভ্রষ্ট। | ٣٣ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلَى وُجُوْهِهِرْ اِلَٰى جَهَنَّـرَ ٧ اُولَئِكَ شَرَُّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلاً ع |
| ৩৫. অবশ্যই আমি মৃসাকে (তাওরাত) গ্রন্থ দান করেছিলাম এবং তার ভাই হান্ধনকে তার সাথে তার সাহায্যকারী করেছিলাম, | ٣٥ وَلَقَنَ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَةً اَ اَعَالَهُ هُرُونَ وَزِيْرًا عَلَمَ |
| ৩৬. অতপর আমি তাদের বলেছিলাম, তোমরা উভয়েই (আমার হেদায়াত নিয়ে) এমন এক জাতির কাছে যাও, যারা আমার আয়াতকে অস্বীকার করেছে; অতপর (আমাকে অস্বীকার করায়) আমি তাদের সম্পূর্ণরূপে বিনাশ করে দিয়েছি; | ٣٦ فَقُلْنَا اذْهَبَا ۚ إِلَى الْقَوْ ِ الَّذِيْنَ كَنَّ بُوْا |
| ৩৭. (একইভাবে) যখন নৃহের সম্প্রদায়ও আমার রসূলদের মিথ্যা সাব্যস্ত করলো, তখন আমি তাদের | ٣٠ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّهَا كَنَّابُوا الرُّسُلَ آغُرَقْنُهُـ |
| সবাইকে (প্লাবনের পানিতে) ডুবিয়ে দিয়েছি এবং আমি ওদের (পরবর্তী) মানুষদের জন্যে শিক্ষণীয় বিষয় করে রেখেছি; আমি যালেমদের জন্যে মর্মন্তুদ আযাব ঠিক করে রেখেছি, | وَجَعَلْنُهُر لِلنَّاسِ أَيَةً ﴿ وَاَعْتَنَأَنَا لِلظَّلِهِيْنَ عَنَابًا اللِّلْطِيْنِينَ عَلَى اللَّالِهِيْنَ |
| ৩৮. (একই নিয়মে) আমি ধ্বংস করে দিয়েছি আদ, সামুদ ও 'রাস'-এর অধিবাসীদের এবং তাদের অন্তর্বর্তীকালীন আরো বহু সম্প্রদায়কেও, | ٣٨ وَّعَادًا وَّتُهُوْدَاْ وَ اَصْحَٰبَ الرِّسِ وَتُرُوْنًا ' بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا |
| ৩৯. (তাদের) প্রত্যেকের কাছেই আমি (আগের ধ্বংসপ্রাপ্ত জাতিসমূহের) নিদর্শনসমূহ উপস্থাপন করেছি, (কিন্তু কেউই যখন সতর্কবাণী শোনলো না তখন) আমি তাদের সবাইকে চূড়ান্তভাবে নির্মূল করে দিয়েছি। | ٣٩ وَكُلَّا ضَرَبْنَا لَهُ الْإَمْثَالَ رَوَكُلَّا تَبَّرْنَا تَتْبُونَا تَثْبِرُنَا |
| ৪০. এরা তো সে জনপদ দিয়ে প্রতি নিয়ত আসা যাওয়া করে, যার ওপর আযাবের বৃষ্টি বর্ষণ করা হয়েছিলো; ওরা কি তা দেখছে নাঃ (আসল কথা হচ্ছে,) এরা (পুনরায়) | ٣٠ وَلَقَن اَتَوا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي الَّتِي الْمُطِرَت مَطَر السَّوْءِ م أَفَلَم يكُونُوا يرونَها ع بَل مَطَر السَّوْءِ م أَفَلَم يكُونُوا يرونَها ع بَل اللهِ عليه المَّد اللهِ اللهُ اللهِ الهِ ا |
| জীবিত হওয়ার কোনো আশাই পোষণ করে না। | كَانُوا لا يَرْجُونَ نُشُورًا |
| ৪১. (হে নবী,) এরা যখন তোমাকে দেখে তখন তোমাকে কেবল ঠাট্টা বিদ্রুপের পাত্ররূপেই গণ্য করে (বলে); এ কি সে লোক, যাকে আল্লাহ তায়ালা রস্ল করে পাঠিয়েছেন! | ٣١ وَإِذَا رَاوُكَ إِنْ يَتَّخِنُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ﴿ |
| ২৫ সূরা আল ফোরকান | মন্যিল ৪ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|---|
| ৪২. এ ব্যক্তিই তো আমাদের দেবতাদের (এবাদাত) | Γ إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَتِنَا لَوُلَآ اَن Γ |
| থেকে আমাদের সম্পূর্ণ বিচ্যুতই করে দিতো যদি আমরা | |
| তাদের ওপর দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত না থাকতাম; (হাঁা,) তারা | مَبَرْنَا عَلَيْهَا ﴿ وَسَوْنَ يَعْلَهُونَ حِيْنَ يَرُونَ |
| যখন (আল্লাহ তায়ালার) আযাব (স্বচক্ষে) দেখতে পাবে তখন ভালো করেই জানতে পারবে, কে তোমাদের মাঝে | الْعَنَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيْلًا |
| বেশী পথভ্ৰষ্ট ছিলো ৷ | |
| ৪৩. (হে নবী,) তুমি কি সে ব্যক্তির (অবস্থা) দেখোনি যে | ٢٣ أَرْءَيْتَ مَنِ اتَّخَلَ إِلْهَدَ هُولِهُ * أَفَأَنْتَ |
| তার কামনা বাসনাকে নিজের মাবুদ বানিয়ে নিয়েছে; | تَكُونُ عَلَيْدِ وَكِيْلًا لا |
| তুমি কি তার (মতো ব্যক্তির) ওপর (অভিভাবক হতে পারোঃ | |
| ৪৪. (হে নবী,) তুমি কি সত্যিই মনে করো, তাদের | ٣٣ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَفُرْ يَسْبَعُوْنَ أَوْ |
| অধিকাংশ লোক (তোমার কথা) শুনে কিংবা (এর মর্ম) বুঝে; (আসলে) ওরা হচ্ছে পশুর মতো, বরং (কোনো | يَعْقِلُونَ وَ إِنْ مُرْ إِلَّا كَالْإِنَّعَا ۗ بَلْ مُرْ أَضَلُّ |
| কোনো ক্ষেত্রে) তারা (আরো) বেশী বিভ্রান্ত : | سَبِيْلًاع |
| ৪৫. (হে নবী,) তুমি কি তোমার মালিকের (কুদরতের) | - |
| দিকে তাকিয়ে দেখো নাঃ কি ভাবে তিনি ছায়াকে (সর্বত্র) | ٣٥ أَلَر تُرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَنَّ الظِّلَّ ع |
| বিস্তার করে রেখেছেন, তিনি ইচ্ছা করলে তা তো (একই | وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ۽ ثُرٌّ جَعَلْنَا الشَّهْسَ |
| স্থানে) স্থায়ী করে রাখতে পারতেন, অতপর আমি (কিন্তু) | عَلَيْهِ دَلِيْلًا ٧ |
| সূর্যকে তার ওপর একটি স্থায়ী নির্ঘন্ট বানিয়ে রেখেছি, | |
| ৪৬. পরে আমি ধীরে ধীরে তাকে আমার দিকে গুটিয়ে আনবো। | ٣٦ ثُرٌ قَبَضْنُهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يُسِيْرًا |
| ৪৭. আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের জন্যে রাতকে আবরণ, | ٣٠ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ الَّيْلَ لِبَاسًا |
| ঘুমকে আরাম ও দিনকে জেগে ওঠার সময় করে | |
| দিয়েছেন। | وَّالنَّوْاَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا |
| ৪৮. তিনি তাঁর (বৃষ্টিরূপী) রহমতের আগে সুসংবাদবাহী | ٣٨ وَهُوَ الَّذِيُّ أَرْسَلَ الرِّيْحَ بُشُرًّا ' بَيْنَ |
| বায়ু প্রেরণ করেন, অতপর আসমান থেকে (তার মাধ্যমে) বিভদ্ধ পানি বর্ষণ করেন, | يَنَى (مُهَتِهِ ع وَٱنْزَلْنَا مِنَ السَّهَاءِ مَاءً |
| 11964) 1404 Mil 441 4681, | عُورًا لا |
| | |
| ৪৯. যেন তা দিয়ে তিনি মৃত ভূখন্ডে জীবনের সঞ্চার | ٣٩ لِنُحْيِءَ بِهِ بَلْنَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهُ مِيًّا |
| করতে পারেন এবং তা দিয়ে তাঁর সৃষ্ট অসংখ্য জীবজন্তু ও মানুষের পিপাসা নিবারণ করতে পারেন। | عَلَقْنَا ۖ اَنْعَامًا وَّ اَنَاسِيٌّ كَثِيْرًا |
| ৫০. আমি বার বার এ (ঘটনা)টি তাদের মাঝে সংঘটিত | |
| করি, যাতে করে তারা (এ বিষয়টি থেকে) শিক্ষা গ্রহণ | ٥٠ وَلَقَنْ مَرِّفْنَهُ بَيْنَهُمْ لِيَنَّكُووْ اللهُ فَأَبَى |
| করতে পারে, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই আমার অকৃতজ্ঞতা | أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُوْرًا |
| ছাড়া অন্য কিছু করতে অস্বীকার করলো। ৫১. আমি ইচ্ছা করলে প্রতিটি জনপদে এক একজন | |
| প্রাম হল্পা করণে প্রাভাট জনপদে এক একজন সতর্ককারী (নবী) পাঠাতে পারতাম, | ٥١ وَكُوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَّذِيْرًا رَصَهِ |
| ৫২. অতএব, তুমি কাফেরদের (এ অভিযোগের) পেছনে | ٥٢ فَلَا تُطِعِ الْكُفِرِيْنَ وَجَامِنْ مُرْبِهِ جِهَادًا |
| পড়ো না, তুমি (বরং) এ (কোরআন) দিয়ে তাদের প্রচন্ত | كَنْ ا |
| মোকাবেলা করো। | \frac{1}{2} |
| ৫৩. তিনি (একই জায়গায়) দুটো সাগর এক সাথে প্রবাহিত করে রেখেছেন, একটি হচ্ছে মিষ্ট ও সুপেয়, | ٥٣ وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْيِ هٰذَا عَنْبُ |
| ২৫ সূরা আল ফোরকান | মন্যিল ৪ |
| र्ष गुन्ना जाना स्थानमाना व ७७७ / | 41141 8 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ আরেকটি লোনা ও ক্ষারবিশিষ্ট, উভয়ের মাঝখানে তিনি একটি সীমারেখা বানিয়ে রেখেছেন, (সত্যিই) এটি একটি অনতিক্রম্য ব্যবধান। ক্ষেত্র তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি মানুষকে (এক বিন্দু) পানি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি তাকে (য়ড়্বজ্ব সম্পর্ক য়ারা) পরিবার (বন্ধন) ও (বৈবাহিক বন্ধন য়ারা) জামাইয়ে (শ্বন্তরে) পরিণত করেছেন; তোমার মালিক প্রভূত ক্ষমতাবান, কে ে (এসব কিছু সত্ত্বেও) তারা আল্লাহর বদলে এমন স্বকিছুর এবাদাত করে যা – না তাদের কোনো উপকার |
|--|
| একটি সীমারেখা বানিয়ে রেখেছেন, (সতিয়ই) এটি একটি অনতিক্রম্য ব্যবধান। (৪. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি মানুষকে (এক বিন্দু) পানি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি তাকে (য়ড় সম্পর্ক ঘারা) পরিবার (বদ্ধন) ও (বৈবাহিক বদ্ধন ঘারা) জামাইয়ে (শ্বন্ডরে) পরিণত করেছেন; তোমার মালিক প্রভূত ক্রমতাবান, (৫৫. (এসব কিছু সত্ত্বেও) তারা আল্লাহর বদলে এমন |
| ৫৪. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি মানুষকে (এক বিন্দু) পানি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি তাকে (রক্ত সম্পর্ক হারা) পরিবার (বন্ধন) ও (বৈবাহিক বন্ধন হারা) জামাইয়ে (শ্বভরে) পরিণত করেছেন; তোমার মালিক প্রভূত ক্ষমতাবান, ৫৫. (এসব কিছু সত্ত্বেও) তারা আল্লাহর বদলে এমন ১০০০ করেছেন |
| পানি থেকে পরদা করেছেন, অতপর তিনি তাকে (রক্ত তিনি টাকে রক্ত তিনি তাকে রক্ত তিন তাকে রক্ত তিনি তাকে রক্ত ত |
| প্রভাষার বিভাগে প্রভাগে করেছেন, ভোষার মালিক প্রভূত ক্ষমতাবান, ৫৫. (এসব কিছু সত্ত্বেও) তারা আল্লাহর বদলে এমন ১০০১১ : ১ % ১০১ - ১০০১১ : |
| ৫৫. (এসব কিছু সত্ত্বেও) তারা আল্লাহর বদলে এমন ১০০০ ১০০০ ১০০০ ১০০০ ১০০০ ১০০০ ১০০০ ১০ |
| |
| করতে পারে, না তাদের কোনো ক্ষতি করতে পারে; (আসলে প্রতিটি) কাফের ব্যক্তি নিজের মালিকের يَضُرُّهُمُ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَى رَبِّهِ ظَوْمِرًا للهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الل |
| ৫৬. (হে নবী,) আমি তো তোমাকে কেবল (জানাতের) সুসংবাদদাতা ও (জাহান্নামের) সতর্ককারীরূপেই পাঠিয়েছি। |
| ৫৭. তুমি (এদের) বলো, আমি তো তোমাদের কাছ ﴿ وَالْ مَنْ مَا اَسْئُلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ إِلَّا مَن اللهِ مِن اَجْرٍ إِلَّا مَن اللهِ مِن اَجْرٍ إِلَّا مَن اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ ا |
| পর্যন্ত পৌছার (সঠিক) রাস্তাটি অবলম্বন করে। |
| ৫৮. (হে নবী,) তুমি সেই চিরঞ্জীব সন্তার ওপর নির্ভর يَمُوْتُ كَا يَمُوْتُ الَّذِي لَا يَمُوْتُ هُوَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ ال |
| महिमा पाषणा करता; जिनि जांत वानात्मत छनाहचाजा مُرِّحَ بِحَمْرِةٍ ﴿ وَكَفَى بِهِ بِنُ نُوْبِ عِبَادِةٍ मिर्मा पाषणा करता; जिन जांत वानात्मत छनाहचाजा مُرِّحَ بِحَمْرِةٍ ﴿ وَكَفَى بِهِ بِنُ نُوْبِ عِبَادِةٍ मिर्मा करता; जिनि जांत वानात्मत छनाहचाजा करता; जिनि जांत वानात्मत छनाहचाजा करता; प्रदे कि क्रांक छतात्मत्मत अर्थे कि क्रांक छतात्मत अर्थ |
| ৫৯. তিনিই মহান আল্লাহ তায়ালা, যিনি আকাশমন্তলী, النَّانِي عَلَقَ السَّمُونِي وَالْأَرْضَ وَمَا পৃথিবী ও ওদের মধ্যবর্তী সমস্ত কিছু ছয় দিনে সৃষ্টি |
| করেছেন, অতপর তিনি (তাঁর) আরশৈ সমাসীন হন, এই তেওঁলী কুনী দুলী করেছেন, অতপর তিনি (তাঁর) আরশৈ সমাসীন হন, (তিনি) অতি দয়াবান আল্লাহ, তাঁর (মর্যাদা) সম্পর্কে সে |
| লোককে তুমি জিজ্জেস করো যে (এ সম্পর্কে) অবগত الرَّحْمَٰى فَسْئَلَ بِهِ خَبِيْرًا اللهِ عَالِيَّ اللهِ عَالِيَّ اللهِ عَالِيَّا اللهِ عَالِيَ اللهِ عَالِيَّا اللهِ عَالِيَّا اللهِ عَالِيَّا اللهِ عَالِيَّا اللهُ |
| ७०. यथन अपन तमा रहा, राजामता नहामहा (आल्लार اوَإِذَا قِيْلَ لَهُرُ اسْجُلُوا لِلرَّحْمٰي قَالُوا الْمَرَّ اسْجُلُوا لِلرَّحْمٰي قَالُوا) जहामा)-এর প্রতি সাজদাবনত হও, তথন তারা বলে, |
| मग्रामग्र (আল্লাহ আবার) কেং যাকেই তুমি সাজদা করতে وَ اَدَمُ وَ اَدَمُونَا وَزَادَمُونَا وَزَادَمُونَا وَزَادَمُونَا وَزَادَمُونَا وَزَادَمُونَا وَزَادَمُونَا وَزَادَمُونَا وَأَدَامُونَا وَأَدَامُونَا وَالْعَالَامُ प्राया प्राय प्राया प्र |
| এ আহ্বান) তাদের বিদ্বেষকে বরং আরো বাড়িয়ে দিয়েছে। |
| ৬১. কতো মহান সেই সন্তা, यिनि আসমানে অসংখ্য গষ্ট بُرُوْجًا ﴿ وَجُمَّا مِا السَّمَاءِ بُرُوْجًا مِلْكَ النَّانِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوْجًا مِلْكَا مِلْكَا اللَّهَاءِ بُرُوْجًا اللَّهُ اللَّا اللللَّهُ اللَّا اللَّالِي |
| अभीপ (-नम वकि नूर्य) वर वकि एकाािक्यं हैं। المنتر المناوية अभीপ (-नम वकि नूर्य) वर वकि एका। |
| ৬২. তিনি রাত ও দিনকে (পরস্পরের) অনুগামী وُهُوَ الَّذِي جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً करরছেন- (তাদের জন্যে), যারা এসব কিছু থেকে শিক্ষা |
| গ্রহণ করতে কিংবা (সে জন্যে) আল্লাহর কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন آرَادَ اَنَ يُنْكُرُ اَوْ اَرَادَ شُكُورًا مُعَدِينًا لَكُو করতে চায়। |
| ७७. नग्नाभग्न (आन्नार जाग्नाना)-এর বান্দা তো হচ্ছে তারা, عَبَادُ الرَّحْمَى النَّذِيثَ يَحْشُونَ عَلَى عَلَى عَلَى النَّذِيثَ يَحْشُونَ عَلَى عَلَى النَّذِيثَ يَحْشُونَ عَلَى النَّذِيثَ عَلَى النَّهُ عَلَى |
| ২৫ সূরা আল ফোরকান ৩৬৭ মন্থিল |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|---|
| যখন জাহেল ব্যক্তিরা (অশালীন ভাষায়) তাদের সম্বোধন করে, তখন তারা নেহায়াত প্রশান্তভাবে জবাব দেয়। | الْأَرْضِ مَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَمُرُ الْجُٰمِلُونَ قَالُوْا سَلْهًا |
| ৬৪. যারা তাদের মালিকের উদ্দেশে সাজ্ঞদাবনত হয়ে ও দন্ডায়মান থেকে (তাদের) রাতগুলো কাটিয়ে দেয়। | ٢٣ وَالَّّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّلًا وَقِيَامًا |
| ৬৫. যারা বলে, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের থেকে জাহান্নামের আযাব দৃরে রেখো, কেননা তার আযাব হচ্ছে নিচিত বিনাশ, | ٦٥ وَالَّذِيْنَ يَقُولُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَّا عَنَابَ عَنَابَ عَمَانًا عَنَابَ عَمَانًا عَنَابَ عَمَانًا عَزَامًا |
| ৬৬. (তদুপরি) আশ্রয় ও থাকার জন্যে তা হবে একটি নিকৃষ্ট জায়গা! | ٢٦ إِنَّهَا سَاءَتَ مُسْتَقَرًّا وَمَقَامًا نَ صَدِ |
| ৬৭. তারা যখন ব্যয় করে তখন অপব্যয় (যেমন) করে না, (তেমনি কোনো প্রকার) কার্পণ্যও তারা করে না; বরং তাদের ব্যয় (সব সময় এ দুয়ের) মধ্যবর্তী (একটি ভারসাম্যমূলক) অবস্থায় দাঁড়িয়ে থাকে। | النويش إذا آنفَقُوا لَم يُسُونُوا وَلَم يَشُونُوا وَلَم يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ تَوَامًا |
| ৬৮. যারা আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্য কোনো মাবুদকে ডাকে না, যথার্থ কারণ ব্যতিরেকে যাকে হত্যা করতে আল্লাহ তায়ালা নিষেধ করেছেন তাকে যারা হত্যা করে না, (উপরস্কু) যারা ব্যভিচার করে না, যে ব্যক্তিই এসব (অপরাধ) করবে সে (তার গুনাহের) শান্তি ভোগ করবে, | ٦٨ وَالنَّوْيْنَ لَا يَنْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلْمًا أَخْرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرًّا اللّٰهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَوْتُونَ عَ وَمَن يَّفْعَلُ ذٰلِكَ يَلْقَ الْثَالَا لِا |
| ৬৯. কেয়ামতের দিন তার জ্বন্যে এ শাস্তি আরো বাড়িয়ে দেয়া হবে, সেখানে সে অপমানিত হয়ে চিরকাল পড়ে থাকবে, | 79 يُّضَعَفُ لَهُ الْعَلَابُ يَوْاَ الْقِيْهَةِ وَيَخَلُلُ مَا لَا قِيْهَةِ وَيَخَلُلُ |
| ৭০. কিন্তু যারা (এসব থেকে) তাওবা করেছে, আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে, আল্লাহ তায়ালা এমন সব লোকদের (পেছনের) গুনাহসমূহ তাদের নেক আমল দ্বারা বদলে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু। | إلا مَن تَابَ وَأَمَنَ وَعَمِلَ عَمَلاً صَالِحًا فأولنك يُبَرِّلُ الله سَيِّاتِهِم مَسَنْسٍ مَ وَكَانَ الله عَنُورًا رَّحِيْمًا |
| ৭১. যে ব্যক্তি তাওবা করে এবং নেক আমল করে, সে (এর দ্বারা সম্পূর্ণত) আল্পাহ অভিমুখীই হয়ে পড়ে। | (4) وَمَن ثَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاللَّهُ يَتُوبُ إلى اللهِ مَتَابًا |
| ৭২. (দয়ামর আল্লাহ তায়ালার নেক বান্দা তারাও,) যারা মিথ্যা সাক্ষ্য দেয় না, (ঘটনাচক্রে) যদি কোনো অযথা বিষয়ের তারা সমুখীন হয়ে যায় তাহলে একান্ত ভদ্রতার সাথে তারা (সেখান থেকে) সরে পড়ে। | حُواللَّذِيْنَ لَا يَشْهَلُونَ الزُّوْرَ لا وَإِذَا مَرُّوْا بِاللَّقُو مَرُّوْا كِرَامًا |
| ৭৩. (এরা হচ্ছে এমন কিছু লোক,) তাদের কাছে যখন তাদের মালিকের কোনো আয়াত পড়ে (কোনো কিছু) শ্বরণ করানো হয়, তখন তারা তার ওপর অন্ধ ও বধির হয়ে (দাঁড়িয়ে) থাকে না। | حَالَّذِيْنَ إِذَا ذُكِّرُوا بِالْيْسِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا مُنَّا وَعُبْيَانًا |
| ৭৪. (নেক বান্দা তারাও) যারা বলে, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের (স্বামী) ন্ত্রী ও সন্তান সন্ততিদের থেকে আমাদের জন্যে চোখের শীতলতা দান করো, (উপরস্তু) তুমি আমাদের পরহেযগার লোকদের ইমাম বানিয়ে দাও। | ٢٠ وَالَّانِيْنَ يَقُولُونَ رَبَّنَا مَبُ لَنَا مِنْ أَزْوَا حِنَا وَذَّرِيَّتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّا جَعَلْنَا لِلْهُتَّقِيْنَ إِمَامًا |
| ২৫ সূরা আল ফোরকান | মন্যিল ৪ |

| | ২৬ সুরা আশ শোয়ারা | মন্যিল ৫ |
|---|--|--|
| | ১০. (হে নবী, তুমি তাদের সে সময়কার কাহিনী শোনাও,) যখন তোমার মালিক মৃসাকে ডাকলেন | ١٠ وَإِذْ نَادَى رَبُّكَ مُوْسَى أَنِ انْسِ الْقَوْرَ |
| | ৯. তোমার মালিক অবশ্যই পরাক্রমশালী ও পরম দয়ালু। | ٩ وَإِنَّ رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| | ৮. নিক্রাই এর মাঝে (ছড়িয়ে) আছে (আমার সৃষ্টি কৌশলের নানা) নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশ মানুষ তা বিশ্বাসই করে না। | أِن فِي ذَٰلِكَ لَاٰيةً ، وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ |
| | এরা কি ষমীনের দিকে নয়র করে দেখে না। আমি কতো কতো ধরনের উৎকৃষ্ট জিনিসপত্র তাতে উৎপাদন করাই। | اَولَر يَرَوا إِلَى الْأَرْضِ كَر اَثْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْرٍ |
| | ৬. এরা যেহেতু (আল্লাহর আযাব) অস্বীকার করেছে, (তাই) অচিরেই তাদের কাছে সে (আযাবের) প্রত্যক্ষ বিবরণ এসে হাযির হবে, যা নিয়ে তারা ঠাটা বিদ্ধপ করতো! | ٢ فَقَلْ كَنَّ أَبُوا فَسَيَا تِيْهِر ٱلْبَوُ ا مَا كَانُوا بِهِ يَشْتَهْزِءُونَ |
| | ৫. যখনি দয়ায়য় আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে এদের কাছে কোনো (নতুন) উপদেশ আসে তখনি তারা তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়। | ٥ وَمَا يَأْتِيْهِرُ مِّنَ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّهُمٰنِ مُحْلَىٰ مِهُ إلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ |
| | ৪. (অথচ) আমি চাইলে এদের ওপর আসমান থেকে (এমন) একটি নিদর্শন নাযিল করতে পারি, (যা দেখে) তাদের গর্দান তার দিকে ঝুঁকে পড়বে। | إِنْ نَّشَأَ نُنَزِّلُ عَلَيْهِرْ مِّنَ السَّمَاءِ أَيَةً فَظَلَّنْ أَعْنَاتُهُرْ لَهَا خُضِعِيْنَ |
| | ৩. (হে নবী,) কেন তারা ঈমান আনছে না (সে দুঃখে) মনে হচ্ছে তুমি তোমার জীবনটাই ধ্বংস করে দেবে। | ٣ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوْا مُؤْمِنِيْنَ |
| | এগুলো হচ্ছে সুস্পষ্ট গ্রন্থের (কতিপয়) আয়াত। | ٢ تِلْكَ أَيْتُ الْكِتَٰبِ الْمُبِيْنِ |
| | ১. ज्वा-त्रीमः मीम। | اطسير |
| 7 | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| | সুরা আশ শোয়ারা মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ২২৭, রুকু ১১ | سُوْرَةَ الشَّعَرَّاءِ مَلِّيَةً أياتُ : ٢٢٧ رُكُوعٌ : ١١ |
| | তোমাদের জন্যে কাল হয়ে দেখা দেবে। | |
| 1 | তোমাদেরই কল্যাণ বয়ে আনবে, কিন্তু তোমরা তো (তাঁকে) অস্বীকার করেছো, (তাই) অচিরেই (এটা) | |
| | ৭৭. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, তোমরা যদি (তাঁকে) না ডাকো তবু আমার মালিক তোমাদের মোটেই পরোয়া করবেন না, যদি তোমরা তাঁকে ডাকো তবে তা | 42 قُلْ مَا يَعْبَوُ ا بِكُرْ رَبِّى لَوْلَا دُعَا وُكُرْ عَ فَقَنْ كَنَّابُتُرْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ع |
| | ৭৬. সেখানে তারা চিরকাল থাকবে; কতো উৎকৃষ্ট সে জায়গা আশ্রয় নেয়ার জন্যে, (কতো সৃন্দর সে জায়গা) থাকার জন্যে! | ٤٦ خُلِرِينَ فِيهَا ﴿ حَسُنَتُ مُسْتَقَرّ الْ وَمُقَامًا |
| | (ফেরেশতাদের পক্ষ থেকে) তাদের (সম্মানজনক) অভিবাদন ও সালামসহ অভ্যর্থনা জানানো হবে, | ويُلَقُّونَ فِيهَا تَحِيَّةً وَّسَلَّهًا |
| İ | ৭৫. এরাই হচ্ছে সেসব লোক, তাদের কঠোর ধৈর্যের বিনিময় স্বরূপ যাদের (সুরুম্য) বালাখানা দেয়া হবে, | 40 أُولَٰئِكَ يُجْزُوْنَ الْغُرْنَةَ بِهَا مَبَرُوْا |
| ı | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|---|
| (ইসলামের দাওয়াত নিয়ে) সে যেন যালেম জাতির কাছে যায়- | القُّلْمِيْنَ وَ اللَّهُ اللَّ |
| ১১. ফেরাউনের জাতির কাছে; তারা কি (আমার ক্রোধকে) ভয় করে নাঃ | اا قَوْاً فِرْعَوْنَ مَ أَلَا يَتَّقُونَ |
| ১২. সে বললো, হে আমার মালিক, আমি আশংকা করছি তারা আমাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করবে; | ١٢ قَالَ رَبِّ إِنِّيَ ۖ لَهَانُ أَنْ يُّكَنِّ بُوْنٍ ، |
| ১৩. (তা ছাড়া) আমার হৃদয়ও সংকীর্ণ হয়ে আসছে, আমার জিহ্বাও (ভালো করে) কথা বলতে পারে না, এমতাবস্থায় (আমার সাহায্যের জন্যে) তুমি হারূনের কাছেও নবুওত পাঠাও। | ١٣ وَيَضِيْقُ صَّلَرِى ۚ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي ۗ فَارْسِلْ إِلَى هُرُونَ |
| ১৪. (তা ছাড়া) আমার ওপর তাদের (আগে থেকেই একটা) অপরাধ (ন্ধনিত অভিযোগ) আছে, তাই আমি ভয় করছি, এখন তারা (সে অভিযোগে) আমাকে মেরেই ফেলবে, | ١٣ وَلَهُرْ عَلَى ۚ ذَنُّبُّ فَاَ هَانَ ۗ أَنْ يَّقْتُلُونِ ع |
| ১৫. আল্লাহ তায়ালা বললেন, না, (তা) কখনো হবে না, আমার আয়াত নিয়ে তোমরা উভয়েই (তার কাছে) যাও, আমি তো তোমাদের সাথেই আছি, আমি সবকিছুই শুনতে পাই। | 10 قَالَ كَلَّا ء فَاذْهَبَا بِأَيْتِنَاۤ إِنَّا مَعَكُيرُ مُّسْتَبِعُوْنَ |
| ১৬. তোমরা দু'জন যাও ফেরাউনের কাছে, অতপর তোমরা তাকে বলো, আমরা সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার প্রেরিত রসূল, | اللهُ الله |
| ১৭. তুমি বনী ইসরাঈলদের আমাদের সাথে যেতে দাও! | ١٤ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي ﴿ إِشْرَاءِيلَ ، |
| ১৮. (ফেরাউন এসব শুনে) বললো, হে মূসা, আমরা কি তোমাকে আমাদের তত্ত্বাবধানে রেখে লালন পালন করিনিঃ তুমি কি তোমার জীবনের বেশ কয়টি বছর আমাদের মধ্যে অতিবাহিত করোনিঃ | ١٨ قَالَ ٱلر نُربِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَلَيْدُا وَلَيْثُنَا وَلَيْثُنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ٧ |
| ১৯. (তখন) তোমার যা কিছু করার ছিলো তা তুমি (ঠিকমতোই) করেছো, তুমি তো (দেখছি ভারী) অকৃতজ্ঞ মানুষ! | 19 وَفَعَلْتَ فَعَلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَٱنْتَ مِنَ الْكُغِرِيْنَ |
| ২০. সে বললো (হাাঁ), আমি তখন সে কাজটি একান্ত না জানা অবস্থায় করে ফেলেছি; | ٢٠ قَالَ فَعَلْتُهَا ۚ إِذًا وَّ أَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ١ |
| ২১. অতপর যখন আমি তোমাদের কাছ থেকে (প্রতিশোধের ব্যাপারে) ভয় পেয়ে গেলাম তখন আমি তোমাদের এখান থেকে পালিয়ে গেলাম, তারপর আমার মালিক আমাকে (বিশেষ) জ্ঞান দান করলেন এবং আমাকে রসূলদের দলে শামিল করলেন। | ٢١ فَفَرَرْتُ مِنْكُرْ لَمَّا خِفْتُكُرْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ هُكُرُ اللَّهُ مَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ هُكُمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْهُرْسَلِيْنَ |
| ২২. আর তুমি তোমার (রাজপরিবারের) সে অনুগ্রহ, যা তুমি (আজ) আমার ওপর রাখার প্রয়াস পেলে, (তার মূল কারণ এটাই ছিলো) যে, তুমি বনী ইসরাঈলদের নিজের গোলাম বানিয়ে রেখেছিলে; | ٢٢ وَتِلْكَ نِعْبَةً تَهُنَّهَا عَلَى ۗ أَنْ عَبَّنْ سَ بَنِي ۗ الْمُ عَبِّنْ سَ بَنِي ۗ الْمُرَاءِيلَ اللهِ اللهُ اللهِ الله |
| ২৩. ফেরাউন বললো, সৃষ্টিকুন্সের মালিক (আবার) কেঃ | ٢٣ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعُلَمِيْنَ ١ |
| ২৪. সে বললো, তিনি হচ্ছেন আসমানসমূহ ও যমীনের এবং এ উভয়ের মধ্যবর্তী স্থানে যা কিছু আছে তার সব | ٢٣ قَالَ رَبُّ السَّمَوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা | भनयिन ৫ |

| কে | ারআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--------------|--|---|
| | হুর মালিক; (কতো ভালো হতো) যদি তোমরা (এ টো) বিশ্বাস করতে! | بَيْنَهُهَا م إِنْ كُنْتُرْ مُوقِنِيْنَ |
| | . ফেরাউন তার আশেপাশে যারা (বসা) ছিলো তাদের লো, তোমরা কি শোনছো (মৃসা কি বলছে)? | ٢٥ قَالَ لِبَيْ حَوْلَةٌ أَلَا تَسْتَبِعُوْنَ |
| | . সে বললো, তিনি তোমাদের মালিক এবং তোমাদের পুরুষদেরও মালিক। | ٢٦ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ أَبَّائِكُمُ الْأَوْلِينَ |
| পাঠ | . ফেরাউন (তার দলবলকে) বললো, তোমাদের কাছে চানো তোমাদের এ রসৃল হচ্ছে (আসলেই) এক বন্ধ লি। | ٢٠ قَالَ إِنَّ رَسُّوْلَكُرُ الَّذِيِّ ٱَرْسِلَ إِلَيْكُرُ لَهَجْنُوْنُ |
| আ সে | . সে বললো, তিনি পূর্ব পশ্চিম উভয় দিকের মালিক, রো (মালিক) এদের উভয়ের মাঝখানে যা কিছু আছে সব কিছুরও; (কতো ভালো হতো) যদি তোমরা (তা) ধাবন করতে! | ٢٨ قَالَ رَبُّ الْهَشْرِقِ وَالْهَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُهَا ١ إِنْ كُنْتُرْ تَعْقِلُونَ |
| অন | . সে বললো (হে মৃসা), যদি তুমি আমাকে বাদ দিয়ে ্য কাউকে মাবুদ হিসেবে গ্রহণ করো, তাহলে আমি শ্যই তোমাকে জেলে ভরবো। | ٢٩ قَالَ لَئِنِ اتَّحَٰنْ َ اللَّهَا غَيْرِئَ لَا جُعَلَنَّكَ مِنَ الْهَسْجُونِيْنَ |
| সুক | . সে বললো, আমি যদি তোমার সামনে (নবুওতের) পষ্ট কোনো দলীল প্রমাণ হাযির করি তবুও কি (তুমি নটি করবে)? | ٣٠ قَالَ أَوَ لَوْ هِئْتُكَ بِهَى ۚ إِنَّكِي مِ |
| | . সে বললো, (যাও) নিয়ে এসো সে দলীল প্রমাণ, তুমি (তোমার দাবীতে) সত্যবাদী হও! | ٣١ قَالَ فَأْسِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّرِقِيْنَ |
| | . অতপর সে তার লাঠি (যমীনে) নিক্ষেপ করলো, ক্ষণাৎ তা একটি দৃশ্যমান অজগর হয়ে গেলো। | ٣٢ فَٱلْقَى عَصَاءٌ فَإِذَا مِي ثُعْبَانٍ مَّبِينٍ عمل |
|) হাত | . (দ্বিতীয় নিদর্শন হিসেবে) সে (বগল থেকে) তার চ বের করলো, (সাথে সাথেই) তা দর্শকদের সামনে কাতে লাগলো। | ٣٣ وَّنَزَعَ يَنَةً فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظِرِيْنَ ع . |
| আ | . ফেরাউন তার আশেপাশে উপবিষ্ট দরবারের বড়ো মলাদের বললো, এ তো (দেখছি) আসলেই একজন ক্ষ যাদুকর! | ٣٣ قَالَ لِلْهَلَاِ مَوْلَةً إِنَّ مِٰنَا لَسُحِرٌّ عَلِيْرٌ ٧ |
| তে | ে সে তার যাদু (-র শক্তি) দিয়ে তোমাদের দেশ থেকে মোদেরই বের করে দিতে চায়, বলো, এখন তোমরা মাকে (এ ব্যাপারে) কি পরামর্শ দেবেঃ | ٣٥ يُّرِيْكُ أَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ يَكُ فَهَاذَا تَأْمُرُونَ |
| ভা তুর্গি | তারা বললো, (আমাদের মতে) তুমি তাকে ও তার ইকে (কিছু দিনের) অবকাশ দাও এবং (এ সুযোগে) ম শহরে বন্দরে (যাদুকরদের নিয়ে আসার ফরমান য়) সংগ্রাহকদের পাঠিয়ে দাও। | ٣٦ قَالُوْآ اَرْجِهُ وَاَخَاهُ وَابْغَثُ فِي الْمَكَالَةِ وَابْغَثُ فِي الْمَكَالَةِ وَابْغَثُ فِي الْمَكَالَةِ وَابْغَثُ فِي |
| ৩৭ | র) প্রাক্তির নাতরে পাত। া. (তাদের বলে দাও, তারা) যেন প্রতিটি সুদক্ষ কুকরকে তোমার সামনে এনে হাযির করে। | ٣٠ يَٱتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْرٍ |
| | r. অতপর একটি নির্দিষ্ট দিনে একটি নির্দিষ্ট সময়ে গুস্তিাই দেশ্যে) সব যাদুকরদের একত্রিত করা হলো, | ٣٨ فَجُمِعَ السَّحَرَّةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ٧ |
| | সাধারণ মানুষদের জন্যেও বলা হলো, তারাও যেন দখানে তখন) একত্রিত হয়়, | ٣٩ وَّقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُر مُّجْتَعِعُونَ ٧ |
| 80 | এ আশা (নিয়েই সবাই আসবে) যে, যদি যাদুকররা | ٣٠ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوْا مُرّ |
| 20 | সূরা আশ শোয়ারা | भनियन ए |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| (আজ) বিজয়ী হয় ভাহলে আমরা (মৃসাকে বাদ দিয়ে) তাদের অনুসরণ করতে পারবো। | الغليبين |
| 8১. তারা ফেরাউনের সামনে (এসে) বললো, আমরা যদি (আজ) জয় লাভ করি তাহলে আমাদের জন্যে (পর্যাপ্ত) | ٣١ فَلَهًّا جَاءَ السَّعَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ |
| পুরস্কার থাকবে তো? | لَنَا لَاَجْرًا إِنْ كُنًّا نَحْنُ الْغُلِبِيْنَ |
| ৪২. সে বললো, হাঁ (তা তো অবশ্যই), তেমন অবস্থায় তোমরাই তো (হবে) আমার ঘনিষ্ঠ জ্বন! | ٢٣ قَالَ نَعَرُ وَإِنَّكُرُ إِذًا لَّهِنَ الْهُقَرَّ بِيْنَ |
| ৪৩. (মোকাবেলা শুরু হয়ে গেলে) মূসা তাদের বললো (হাঁ), তোমরাই (আগে) নিক্ষেপ করো যা কিছু তোমাদের (কাছে) নিক্ষেপ করার আছে! | ٣٣ قَالَ لَهُرْ مُّوْسَى ٱلْقُوْا مَا ۖ ٱنْتُرْ مُّلْقُونَ |
| ৪৪. অতপর তারা তাদের রশি ও শাঠি (মাটিতে) | ٣٣ فَٱلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ |
| ফেললো এবং তারা বললো, ফেরাউনের ইযযতের কসম, আজ অবশ্যই আমরা বিজয়ী হবো। | فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغُلِّبُونَ |
| ৪৫. তারপর মৃসা তার (হাতের) লাঠি (যমীনে) নিক্ষেপ | ٣٥ فَٱلْقَى مُوْسَى عَصَاءٌ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا |
| করলো, সহসা তা (এক বিশাল অজগর হয়ে) তাদের (যাদুর) অলীক সৃষ্টিগুলো গ্রাস করতে লাগলো, | يَاْفِكُوْنَ عَمِي |
| ৪৬. অতপর (ঘটনার আকন্মিকতা) যাদুকরদের সাজদাবনত করে দিলো, | ٣٦ فَٱلْقِيَ السَّعَرَةُ سُجِدِيْنَ ٧ |
| ৪৭. তারা বললো, আমরা সৃষ্টিকুলের মালিকের ওপর | ٣٤ قَالُوْ ٓ أَمَنَّا بِرَبِّ الْعُلَوِيْنَ لا |
| ঈমান আনলাম, ৪৮. (ঈমান আনলাম) মূসা ও হারনের মালিকের ওপর। | ۸۸ رَبِّ مُوْسَى وَهُرُونَ ۸۸ رَبِّ مُوْسَى وَهُرُونَ |
| ৪৯. (এতে ক্রোধান্তিত হয়ে) সে (ফেরাউন) বললো, | ٣٩ قَالَ أَمَنْتُرْ لَدُ قَبْلَ أَنْ أَذَنَ لَكُرْعَ إِنَّدُ |
| (একিং) আমি তোমাদের (কোনো রকম) অনুমতি দেরার আগেই তোমরা তার (মালিকের) ওপর ঈমান এনে | - ^ ~ |
| ফেললে! (আমি বুঝতে পারছি, আসলে) এই হচ্ছে তোমাদের সবচাইতে বড়ো (গুরু), এ-ই তোমাদের | تَعْلَمُونَ أَ لَا تُقَطِّعَنَّ آيْدِيكُمْ وَ ٱرْجُلَكُمْ مِّنَ |
| সবাইকে যাদু শিক্ষা দিয়েছে, অতিসত্ত্ব তোমরা (তোমাদের অবস্থা) জানতে পারবে; আমি তোমাদের | |
| হাত ও পা-বিপরীত দিক থেকে কেটে দেবো, অতপর আমি তোমাদের সবাইকে (একে একে) শূলে চড়াবো, | خِلَانٍ وَّلَا وَمُلِّبَنَّكُر ٛ اَجْمَعِيْنَ عَ |
| ৫০. তারা বললো, (এতে) আমাদের কোনোই ক্ষতি নেই, (তুমি যাই করো) আমরা তো একদিন আমাদের মালিকের কাছেই ফিরে যাবো, | ٥٠ قَالُوْ الاَ ضَيْرَ رِ إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ع |
| ৫১. আমরা আশা করবো (সেদিন) আমাদের মালিক আমাদের (যাদু সংক্রান্ত) সব গুনাহ খাতা মাফ করে | ٥١ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطْيِنَا ۖ أَنْ |
| पार्टिन, (पार्ट्स) प्राचीन प्रति पार्टिन, र्वान प्राचीन प्राच | كُنَّآ أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ عَ |
| ৫২. অতপর আমি মৃসার কাছে ওহী পাঠিয়ে বললাম, রাত থাকতে থাকতেই তুমি আমার বান্দাদের নিয়ে (এ | ٥٢ وَ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوْسَى أَنْ أَشْرِ بِعِبَادِي |
| জনপদ থেকে) বেরিয়ে যাও, (সাবধান থেকো, ফেরাউনের পক্ষ | ۵۵ ، ۵۵ مرد انگر متبعون |
| থেকে) তোমাদের অবশ্যই অনুসরণ করা হবে। | |
| ৫৩. ইতিমধ্যে ফেরাউন (সৈন্য জড়ো করার জন্যে) শহরে বন্দরে সংগ্রাহক পাঠিয়ে দিলো, | ٥٣ فَأَرْسُلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَنَّ أَثِنِ حُشِرِيْنَ عَ |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা ৩৭২ | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|--|
| ৫৪. (সে বললো,) এরা তো হচ্ছে একটি ক্ষুদ্র দল মাত্র, | ٥٣ إِنَّ هُوْكُاءِ لَشِرْدُمَةً قَلِيْلُونَ ٧ |
| ৫৫. এরা আমাদের (অনেক) ক্রোধের উদ্রেক ঘটিয়েছে, | ٥٥ وَ إِنَّهُمْ لَنَا لَغَانِظُونَ ٧ |
| ৫৬. (এদের মোকাবেলায়) আমরা হচ্ছি একটি সম্মিলিত সেনাবাহিনী; | ٥٦ وَإِنَّا لَجَهِيْعٌ مَٰلِرُونَ ، |
| ৫৭. আমি (ধীরে ধীরে এবার) তাদের উদ্যানমালা ও ঝর্ণাধারাসমূহ থেকে বের করে আনলাম, | ۵۷ فَأَهْرَ جُنْهُرْ مِّنْ جُنْتٍ وَعَيُونِ لا |
| ৫৮. (বের করে আনলাম) তাদের (সঞ্চিত) ধনভাভারসমূহ ও সুরম্য প্রাসাদ থেকে, | ۵۸ وْكُنُوزِ وْمَقَامٍ كَرِيْمِ ٧ |
| ৫৯. এভাবেই আমি বনী ইসরাঈলদের (ফেরাউন ও তাদের) লোকজনদের (ফেলে আসা) সে সবের মালিক বানিয়ে দিলাম; | ٥٩ كَنْ لِكَ م وَ أَوْرَثْنَهَا بَنِي ﴿ إِشْرَآءِيْلَ م |
| ৬০. তারা সূর্যোদয়ের প্রাক্কালেই তাদের পশ্চাদ্ধাবন করলো। | ٦٠ فَٱتْبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ |
| ৬১. (এক পর্যায়ে) যখন একদল আরেক দলকে দেখে ফেললো, তখন মৃসার সাথীরা বলে ওঠলো, আমরা (বুঝি এখনি) ধরা পড়ে যাবো, | الَّ فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَهْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسَى إِنَّا لَهُرُرَكُونَ عَ |
| ৬২. সে বললো, না কিছুতেই নয়, আমার সাথে অবশ্যই আমার মালিক রয়েছেন, তিনি অবশ্যই আমাকে (এ সংকট থেকে বেরিয়ে যাবার একটা) পথ বাতলে দেবেন। | ٦٢ قَالَ كَلَّا ج إِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْلِيْنِ |
| ৬৩. অতপর আমি (এই বলে) মৃসার কাছে ওহী পাঠালাম, তুমি তোমার লাঠি দ্বারা সমুদ্রে আঘাত হানো, (আঘাতের পর) তা ফেটে (দৃ'ভাগ হয়ে) গেলো এবং এর প্রতিটি ভাগ (এতো বড়ো) ছিলো, যেমন উঁচু উঁচু (একটা) পাহাড়, | ٣٣ فَٱوْمَيْنَا ٓ إِلَى مُوْسَى آنِ اضْرِبْ لِعُصَاكَ الْبَحْرَ ، فَاثْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطُّوْدِ الْعَظِيْرِ ، |
| ৬৪. (এবার) আমি অপর দলটিকে (এ জায়গার) কাছে নিয়ে এলাম, | ٦٣ وَأَزْلَفْنَا ثَرَّ الْأَخْرِيْنَ ع |
| ৬৫. (ঘটনার সমাপ্তি এভাবে হলো,) আমি মৃসা ও তার সকল সাথীকে (ফেরাউন থেকে) উদ্ধার করলাম, | ٦٥ وَ أَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مُعَدُّ أَجْمَعِيْنَ ٤ |
| ৬৬. অতপর আমি অপর দলটিকে (সাগরে) ডুবিয়ে দিলাম; | ٢٦ ثُرَّ أَغْرَقْنَا الْأُغَرِيْنَ ﴿ |
| ৬৭. অবশ্যই এ ঘটনার মাঝে (শিক্ষার) নিদর্শন আছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশ মানুষ তো আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমানই আনে না। | ٦٤ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً ﴿ وَمَا كَانَ ٱكْثَرُهُرُ |
| ৬৮. তোমার মালিক অবশ্যই পরাক্রমশালী ও পরম দয়ালু। | ٦٨ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ৬৯. (হে নবী,) তুমি ওদের কাছে ইবরাহীমের ঘটনাও বর্ণনা করো। | ٦٩ وَاثْلُ عَلَيْهِرْ نَبَا إِبْرُهِيْرَ ر |
| ৭০. যখন সে তার পিতা ও তার জাতির লোকদের (এ মর্মে) জিজ্জেস করেছিলো, তোমরা সবাই কার এবাদাত করো? | 4٠ إِذْ قَالَ لِإَبِيْدِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُلُوْنَ |
| ৭১. তারা বললো, (হাঁ), আমরা মূর্তির এবাদাত করি, নিষ্ঠার সাথেই আমরা তাদের এবাদাতে মগ্ন থাকি। | ا ٤ قَالُو ﴿ نَعْبُلُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِيْنَ |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্লাল্লাযীনা |
|---|--|
| ৭২. সে বললো (বলো তো), তোমরা যখন তাদের ডাকো তারা কি তোমাদের কোনো কথা ভনতে পায়, | ٤٣ قَالَ مَلْ يَسْبَعُونَكُيرُ إِذْ تَنْعُونَ ٧ |
| ৭৩. অথবা তারা কি তোমাদের কোনো উপকার করতে পারে; কিংবা (পারে কি) তোমাদের কোনো ক্ষতি করতে? | ٢٣ أَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ |
| ৭৪. তারা বন্সলো, (না তা পারে না, তবে) আমরা আমাদের বাপদাদাদের এরূপে এদের এবাদাত করতে দেখেছি, | ٤١٠ قالوا بل وجلانا اباءنا كلالِك يفعلون |
| ৭৫. সে বললো, তোমরা কি কখনো তাদের ব্যাপারটা (একটু) চিন্তা ভাবনা করে দেখেছো−যাদের তোমরা এবাদাত করো, | 40 قَالَ أَفَرَءَيْتُرْ مَّا كُنْتُرْ تَعْبُلُوْنَ لا |
| ৭৬. তোমরা নিজেরা (যেমনি করছো) – তোমাদের আগের লোকেরাও (তেমনি করেছে), | ٤٦ أَنْتُر وَ أَبِا وَكُمر الْإَقْلَ مَوْنَ زَمِد |
| ৭৭. (এভাবে যাদের এবাদাত করা হচ্ছে,) তারা সবাই হচ্ছে আমার দুশমন। একমাত্র সৃষ্টিকুলের মালিক ছাড়া (তিনিই আমার বন্ধু), | ٤٤ فَإِنَّهُمْ عَكُوًّ لِّي ٓ إِلَّا رَبَّ الْعُلَمِينَ ٧ |
| ৭৮. তিনি আমাকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনিই আমাকে (অন্ধকারে) চলার পথ দেখিয়েছেন, | ٨٧ الَّذِي ْ عَلَقَنِي ْ فَهُو يَهْدِيْنِ لا |
| ৭৯. তিনিই আমাকে আহার্য দেন, তিনিই (আমার) পানীয় যোগান, | 49 وَ الَّذِي مُو يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ لا |
| ৮০. আর আমি যখন রোগাক্রান্ত হই তখন তিনিই আমাকে রোগমুক্ত করেন, | ٨٠ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ لاس |
| ৮১. তিনিই আমার মৃত্যু ঘটাবেন, তিনিই আমাকে আবার (নতুন) জীবন দেবেন, | ٨١ وَ الَّذِي يُوِيْتُنِي ثُرَّ يُحْيِيْنِ ٢ |
| ৮২. শেষ বিচারের দিন তাঁর কাছ থেকে আমি এ আশা করবো, তিনি আমার গুনাহসমূহ মাফ করে দেবেন; | ٨٢ وَالَّذِينَّ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ غَطِيْنَتِيْ يَوْاً الرِّيْنِ، |
| ৮৩. (অতপর ইবরাহীম দোয়া করলো,) হে আমার মালিক, তুমি আমাকে জ্ঞান দান করো এবং আমাকে নেককার মানুষদের সাথে মিলিয়ে রেখো। | ٨٣ رَبِّ مَبْ لِيْ مُكْمًا وَّٱلْحِقْنِيْ بِالصَّلِحِيْنَ ٧ |
| ৮৪. এবং পরবর্তীদের মাঝে তুমি আমার স্বরণ অব্যাহত রেখো, | ٨٣ وَاجْعَلُ لِّي لِسَانَ مِنْقٍ فِي الْأَخِرِيْنَ لا |
| ৮৫. আমাকে তুমি (তোমার) নেয়ামতে ভরা জান্নাতের অধিকারীদের মধ্যে শামিল করে নিয়ো, | ٨٥ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْرِ ٧ |
| ৮৬. আমার পিতাকে (হেদায়াতের তাওফীক দিয়ে) তুমি মাফ করে দাও, কেননা সে গোমরাহদের একজন, | ٨٦ وَاغْفِرْ لِأَبِي ۚ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ لا |
| ৮৭. আমাকে তুমি সেদিন অপমানিত করো না (যেদিন সব মানুষদের) পুনরায় জীবন দেয়া হবে। | ٨٠ وَلاَ تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ٧ |
| ৮৮. সেদিন তো (কারো) ধন সম্পদ কাজে লাগবে না– না সম্ভান সম্ভতি (কারো কাজে আসবে), | ٨٨ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ لا |
| ৮৯. অবশ্য যে আল্লাহর কাছে একটি বিশুদ্ধ অন্তর নিয়ে হাযির হবে (তার কথা আলাদা); | ٨٩ إلا مَنْ أتَّى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيْرٍ ا |
| ৯০. (সেদিন) জান্নাতকে পরহেযগার লোকদের একান্ত কাছে নিয়ে আসা হবে, | ٩٠ وَ ٱزْلِفَسِ الْجَنَّةُ لِلْهُتَّقِيْنَ ٧ |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা ৩৭৪ | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| ৯১. এবং জাহান্নামকে গুনাহগারদের জন্যে উন্মোচিত করে দেয়া হবে, | ٩١ وَٱبِرِّزَتِ الْجَعِيْرُ لِلْغُوِيْنَ لا |
| ৯২. (তখন) তাদের বলা হবে, (বলো) এখন কোথায় তারা, (দুনিয়ার জীবনে) যাদের তোমরা এবাদাত করতে, | ٩٢ وَقِيْلَ لَهُرْ أَيْنَهَا كُنْتُرْ تَعْبُنُوْنَ ٧ |
| ৯৩. যাদের তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে (এবাদাতের জন্যে) ডাকতে, আজ তারা তোমাদের কোনো রকম সাহায্য করতে পারবে কি? না তারা নিজেদের (আল্লাহর আ্যাব থেকে) বাঁচাতে পারবে? | ٩٣ مِنْ دُوْنِ اللهِ ١ مَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ١ |
| ৯৪. অতপর (যাদের তারা মাবুদ বানাতো-) তারা এবং গোমরাহ মানুষ (যারা তাদের এবাদাত করতো), সবাইকে সেখানে অধোমুখী করে নিক্ষেপ করা হবে, | ٩٢ فَكُبْكِبُواْ فِيْهَا هُرْ وَالْغَاوِٰنَ ٧ |
| ৯৫. (নিক্ষেপ করা হবে) ইবলীসের সমুদয় বাহিনীকেও; | ٩٥ وَجُنُوْدُ إِبْلِيْسَ أَجْمَعُوْنَ ١ |
| ৯৬. সেখানে (গিয়ে) তারা নিজেরা এক (মহা) বিতর্কে লিপ্ত হবে এবং (প্রত্যেকেই নিজ নিজ মাবুদদের) বলবে, | ٩٦ قَالُوْ ا وَهُرْ فِيْهَا يَخْتَصِبُوْنَ ٧ |
| ৯৭. আল্লাহ তায়ালার কসম, আমরা (দুনিয়াতে) সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত ছিলাম, | ُ ٩٤ تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَغِيْ ضَلْلٍ شِّبِيْنٍ ٧ |
| ৯৮. (বিশেষ করে) যখন আমরা সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার সাথে তোমাদেরও (তার) সমকক্ষ মনে করতাম। | ٩٨ إِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعَلَمِيْنَ |
| ৯৯. (আসলে) এ সব বড়ো বড়ো গুনাহগার ব্যক্তিরাই আমাদের পথভ্রষ্ট করে দিয়েছে। | ٩٩ وَمَ ٓ اَصَٰلَّنَآ إِلَّا الْهُجُرِمُونَ |
| ১০০. (হায়! আজ) আমাদের (পক্ষে কথা বলার) জন্যে কেউই রইলো না, | ١٠٠ فَهَا لَنَا مِنْ هَافِعِيْنَ ٧ |
| ১০১. না আছে (এমন) কোনো সুহ্বদ বন্ধু (যে আল্লাহ তায়ালার কাছে সুপারিশ পেশ করতে পারে?) | ١٠١ وَكَا صَلِيثَتِي حَمِيثَرِ |
| ১০২. কতো ভালো হতো যদি আমাদের আরেকবার দুনিয়ায় পাঠিয়ে দেয়া হতো, তাহলে অবশ্যই আমরা ঈমানদার হয়ে যেতাম! | ١٠٢ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ |
| ১০৩. নিসন্দেহে এ (ঘটনার) মাঝেও (শিক্ষার) নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোক তো ঈমানই আনে না। | اللهِ عَنْ ذَٰلِكَ لَاٰيَةً ﴿ وَمَا كَانَ ٱكْثَرُهُرُ |
| ১০৪. নিশ্চয়ই তোমার মালিক পরাক্রমশালী ও পরম দয়ালু। | ١٠٢ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ১০৫. নৃহের জাতির লোকেরাও (আমার) রস্লদের মিধ্যা সাব্যস্ত করেছিলো, | ١٠٥ كَنَّ بَسَ قَوْمُ نُوْكِ الْمُرْسَلِيْنَ عمد |
| ১০৬. যখন তাদেরই ভাই নৃহ (এসে) তাদের বললো (হে আমার জাতি), তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করো নাঃ | ١٠٦ إِذْ قَالَ لَهُرْ أَخُوْهُرْ نُوْحٌ أَلَا تَتَّقُونَ عَ |
| ১০৭. নিসন্দেহে আমি তোমাদের জন্যে একজন বিশ্বস্ত রসূল, | ١٠٠ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِيْنَ لا |
| ১০৮. অতএব, তোমরা একমাত্র আল্লাহ তায়ালাকেই ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো। | ١٠٨ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَٱطِيْعُوْنِ ٤ |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা ৩৭৫ | मनियल ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাক্সাযীনা |
|---|---|
| ১০৯. আমি এ (দাওয়াত পৌছানোর) জন্যে তোমাদের কাছে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করি না, আমার যা পারিশ্রমিক তা তো রাক্তুল আলামীনের কাছেই (মন্তুদ) | ۱۰۹ وَمَا آَشْنُلُکُر عَلَيْهِ مِنْ آَجْرٍ عَ اِنْ آَجْرِيَ اِلَّا عَلَى رَبِّ الْعُلَمِيْنَ عَ |
| त्रसारह, | |
| ১১০. সুতরাং তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো; | ١١٠ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاَطِيْعُونِ ١٠ |
| ১১১. তারা বপলো, আমরা কিভাবে তোমার ওপর ঈমান আনবো–যখন আমরা দেখতে পাচ্ছি কতিপয় নীচু পোক তোমার আনুগত্য স্বীকার করে নিয়েছে; | ١١١ قَالُوْ ۚ أَنُوْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْإَرْدَلُوْنَ ۚ • |
| ১১২. সে বললো, ওরা (কে) কি কান্ধ করে তা আমার জানার (বিষয়) নয়। | ١١٢ قَالَ وَمَا عِلْبِي بِهَا كَانُوْ الْ يَعْمَلُونَ عَ |
| ১১৩. তাদের (কাজের) হিসাব গ্রহণ করা (আমার দায়িত্ব নয়, এটা) তো সম্পূর্ণ আমার মালিকের ব্যাপার, (কতো ভালো হতো এ কথাটা) যদি তোমরাও বুঝতে পারতে, | ١١٣ إِنْ حِسَابُهُرْ إِلَّا عَلَى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُونَ عَ |
| ১১৪. এটা আমার কাব্ধ নয় যে, যারা ঈমান আনবে (নিম্নমানের মানুষ হওয়ার কারণে) আমি তাদের আমার কাছ থেকে তাড়িয়ে দেবো, | ١١٣ وَمَا آنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَ |
| ১১৫. আমি তো একজন সতর্ককারী ছাড়া আর কিছুই নই; | ١١٥ إِنْ أَنَا إِلَّا نَلْإِيْرٌ مَّبِينَ ٤ |
| ১১৬. তারা বললো, হে নূহ, যদি তুমি (এ কাজ থেকে) ফিরে না আসো, তাহলে তোমাকে পাধর মেরে হত্যা করা হবে। | ١١٦ قَالُوْا لَئِنْ لَّـرْ تَنْتَهِ يِنْوَحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ عَ |
| ১১৭. সে বললো, হে আমার মালিক, (ভূমি দেখতে পাছে৷ কিভাবে) আমার জাতি আমাকে মিপ্যাবাদী সাব্যস্ত করলো! | ١١٤ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِيْ كَنَّ بُوْنِ عَلِي |
| ১১৮. তুমি আমার এবং তাদের মাঝে একটা কয়সালা করে দাও, তুমি আমাকে এবং আমার সাথে যেসব ঈমানদার মানুষরা আছে তাদের (সবাইকে) এদের (ফেতনা) থেকে উদ্ধার করো। | ١١٨ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُرْ فَتْحًا وَّتَجِّنِي وَمَنْ أَعْمِي مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ أَعِي مِنَ الْمُؤْمِنِينَ |
| ১১৯. (আমি তার এ দোয়া কবুল করলাম,) তাকে এবং তার সংগী সাধী যারা– ভরা নৌকায় (তার সাধে) আরোহী ছিলো, তাদের (মহাপ্লাবন থেকে) বাঁচিয়ে দিলাম, | 119 فَٱنْجَيْنَهُ وَمَنْ مَّقَدَّ فِي الْقُلْكِ الْمُلْكِ ْمِلْكِلْمِلْكِلْمِلْمُلْكِلِلْمُلْكِلْمِلْكِلْمِلْلْمُلْكِلْمُلْكِلْمِلْلْكِلْلْمُلْكِلْمِلْلْكِلْمِلْلْمُلْلِلْمُلْكِلْمِلْلِلْمُلْلِلْمُلْلْمُلْكِلْمِلْلْمُلْلْمُلْكِلْمِلْلْمُلْلْمُلْكِلْمُلْكِلْمُلْلْمُلْلْمُلْلِلْمُلْلِلْمُلْلِلْمُلْلِمِلْلْمُلْلِمِلْلِلْمُلْلِلْمُلْلْمُلِلْمُلْلِلْمُلْلِلْمُلْلْمُلْلِلْمُلْلِ |
| ১২০. অতপর অবশিষ্ট লোকদের আমি ডুবিয়ে দিলাম; | ١٢٠ ثُرٌ أَغْرَقْنَا بَعْلُ الْبِقِيْنَ ١ |
| ১২১. এ ঘটনার মাঝেও (শিক্ষণীয়) নিদর্শন আছে; কিন্তু এদের মধ্যে অধিকাংশ লোক তো ঈমানই আনে না। | ا اللهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً ، وَمَا كَانَ آكْثَرُهُرُ |
| ১২২. অবশ্যই তোমার মালিক, মহাপরাক্রমশালী এবং পরম দয়ালু। | ١٢٢ وَإِنَّ رَبُّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ১২৩. আ'দ সম্প্রদায়ের লোকেরাও (তাদের) রস্লদের মিধ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো। | ١٢٣ كَنَّ بَعِنْ عَادُ الْهُوْسَلِيْنَ عَلِي |
| ১২৪. যখন তাদেরই এক (-জন শুভাকাংখী) ভাই (এসে) তাদের বললো (হে খামার ন্ধাতির গোকেরা), এ কি হলো তোমাদের, তোমরা কি (খাল্লাহ ডারাগাকে) ভয় করবে নাঃ | ١٢٣ إِذْ قَالَ لَهُرْ ٱخُوهُمْرْ هُوْدٌ آلَا تَتَقُونَ عَ |
| ১২৫. আমি হচ্ছি তোমাদের জন্যে একজন বিশ্বস্ত রস্ল, | ١٢٥ إِنِّيْ لَكُرْ رَسُولٌ أَمِيْنٌ ٧ |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|---|
| ১২৬. অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো, | ١٢٦ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيْعُونِ لا |
| ১২৭. আমি তো এ (কাজের) জন্যে তোমাদের কাছে কোনো প্রতিদান চাই না, আমার প্রতিদান তো রব্বৃন্গ আলামীন আল্লাহ তায়ালার কাছেই (মজুদ) রয়েছে; | ۱۳۷ وَمَا آَ اَشْلُكُرُ عَلَيْهِ مِنْ آَجْرٍ عَ اِنْ آَجْرِى |
| ১২৮. তোমরা প্রতিটি উঁচুস্থানে স্কৃতি (-সৌধ হিসেবে বড়ো বড়ো ঘর) বানিয়ে নিচ্ছো, যা তোমরা (একান্ড) অপচয় (হিসেবেই) করছো, | ١٢٨ أَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ أَيْدًّ تَعْبَثُوْنَ ا |
| ১২৯. এমন (নিপুণ শিল্পকর্ম দিয়ে) প্রাসাদ বানাচ্ছো, (যা দেখে) মনে হয় তোমরা বুঝি এ পৃথিবীতে চিরদিন থাকবে, | ١٢٩ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ء |
| ১৩০. (অপরদিকে) তোমরা যখন কারও ওপর আঘাত হানো, সে আঘাত হানো অত্যপ্ত নিষ্ঠুর স্বেচ্ছাচারী হিসেবে, | ١٣٠ وَإِذَا بَطَشْتُرْ بَطَشْتُرْ جَبَّارِيْنَ ج |
| ১৩১. অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো, | ١٣١ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَٱطِيْعُوْنِ ٤ |
| ১৩২. তোমরা ভয় করো তাঁকে- যিনি তোমাদের এমন সবকিছু দিয়ে সাহায্য করেছেন যা তোমরা ভালো করেই জানো, | ١٣٢ وَالتَّقُوا الَّذِي ٓ أَمَنَّكُم بِهَا تَعْلَبُونَ عَ |
| ১৩৩. তিনি চতুষ্পদ জন্তু জানোয়ার, সম্ভান সম্ভতি দিয়ে তোমাদের সাহায্য করেছেন, | ١٣٣ أَمَلُّكُمْ بِٱنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ٤٢ |
| ১৩৪. (সাহায্য করেছেন সুরম্য) উদ্যানমালা ও ঝর্ণাধারা দিয়ে, | ١٣٢ وَجَنُّت وَعَيُونِ ٤ |
| ১৩৫. সত্যিই আমি (এসব অকৃতজ্ঞ আচরণের কারণে) তোমাদের জন্যে একটি কঠিন দিনের শাস্তির ভয় করছি, | ١٣٥ إِنِّي ٓ أَخَانُ عَلَيْكُرْ عَلَ ابَ يَوْمٍ عَظِيْرٍ ، |
| ১৩৬. তারা বললো (হে নবী), তুমি আমাদের কোনো উপদেশ দাও কিংবা না দাও; উভয়টাই আমাদের জন্যে সমান, | ١٣٦ قَالُوْا سَوَّاءً عَلَيْنَا ۗ أَوَعَظْتَ أَمُ لَمْ تَكُنُ وَّ مِنْ الْوَعِظِيْنَ لا |
| ১৩৭. (তোমার) এ সব কথা আগের লোকদের নিয়ম নীতি ছাড়া আর কিছুই নয়, | ١٣٤ إِنْ هٰٰذَآ إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِيْنَ ٧ |
| ১৩৮. (আসলে) আমরা কখনো আযাব প্রাপ্ত হবো না, | ١٣٨ وَمَا نَحْنُ بِهُعَلَّ بِيْنَ ع |
| ১৩৯. অতপর তারা তাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করলো, আমিও তাদের সম্পূর্ণ ধ্বংস করে দিলাম, (মূলত) এ (ঘটনা)-র মাঝেও রয়েছে (শিক্ষণীয়) নির্দশন, (তা সত্ত্বেও) তাদের অধিকাংশ মানুষ ঈমান আনে না। | ١٣٩ فَكَنَّ الْهُولَةُ فَأَهْلَكُنْهُمْ ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَايَةً ﴿ وَمَا كَانَ آكْتُرُهُمْ أَثُوْمِنِيْنَ |
| ১৪০. নিশ্চয় তোমার মালিক পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু। | ١٣٠ وَإِنَّ رَبُّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ১৪১. (এভাবে) সামুদ জাতিও (তাদের) রস্লদের মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো, | ۱۳۱ كَلَّ بَتُ ثَهُوْدُ الْهُرْسَلِيْنَ عَلِي |
| ১৪২. যখন তাদেরই (এক) ভাই সালেহ তাদের বলেছিলো (তোমাদের এ কি হলো), তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করবে নাঃ | ١٣٢ إِذْ قَالَ لَهُرْ أَخُوْمُرْ سُلِعٌ أَلَا تَتَّقُونَ عَ |
| ১৪৩. নিসন্দেহে আমি তোমাদের জন্যে একজন বিশ্বস্ত রসূল, | ع ١٣٣ إِنِّى لَكُر رَسُولٌ أَمِيْنٌ لا |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা ৩৭৭ | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| ১৪৪. অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো। | ١٣٣ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَأَطِيْمُونِي ا |
| ১৪৫. আমি তো তোমাদের কাছে (এ কাজের জ্বন্যে) কোনো রকম পারিশ্রমিক দাবী করছি না, আমার (যা | ١٣٥ وَمَا آسْنَلُكُم عَلَيْهِ مِنْ آجْرٍ ع إِنْ آجْرِي |
| কিছু) পারিশ্রমিক তা তো সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহর কাছেই (মজুদ) রয়েছে; | إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَلَمِيْنَ ﴿ |
| ১৪৬. তোমরা কি (ধরেই নিয়েছো,) এ (দুনিয়া)-র মাঝে যা কিছু রয়েছে, তার মধ্যে নিরাপদে (বাস করার জন্যে) তোমাদের এমনিই ছেড়ে দেয়া হবে, | ١٣٦ أَتُتُوكُونَ فِي مَا هُهُنَّا أَمِنِيْنَ ٧ |
| ১৪৭. নিরাপদ থাকবে (তোমরা) এ উদ্যনামালা ও এ ঝর্ণাধারার মধ্যে? | ١٣٧ فِي جَنَّتِ وَعَيُونِ لا |
| ১৪৮. শস্যক্ষেত্র, (এ) নাযুক ও ঘন গোছাবিশিষ্ট খেজুর বাগিচার মধ্যেও (কি তোমরা নিরাপদ থাকতে পারবে), | ١٣٨ وِّزُرُوعٍ وَّنَخْلِ طَلْعُهَا مَضِيْرٌ ع |
| ১৪৯. তোমরা যে নিপুণ শিক্স দ্বারা পাহাড় কেটে রংচং করে বাড়ী বানাও (ভাতে কি ভোমরা চিরদিন থাকতে পারবে?) | ١٣٩ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فُرِهِيْنَ عَ |
| ১৫০. (ওর কোনোটাতেই যখন তোমরা নিরাপদ নও তখন) তোমরা আল্লাহ তায়ালাকেই ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো, | ١٥٠ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَٱطِيْعُونِ ۽ |
| ১৫১. (সে সব) সীমালংঘনকারী মানুষদের কথা তনো না, | ١٥١ وَلَا تُطِيْعُوْآ أَمْرَ الْهُسْرِفِيْنَ لا |
| ১৫২. যারা (আল্লাহর) যমীনে শুধু বিপর্যয়ই সৃষ্টি করে এবং কখনো (সমাজের) সংশোধন করে না। | ١٥٢ النَّزِيْنَ يُفْسِرُوْنَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ |
| ১৫৩. (এসব তনে) তারা বললো (হে সালেহ), আসলেই তুমি হচ্ছো একজন যাদুগ্রস্ত ব্যক্তি, | ١٥٣ قَالُوْ ۚ إِنَّهَ ۗ أَنْتَ مِنَ الْهُسَحِّرِيْنَ عَ |
| ১৫৪. তুমি তো আমাদেরই মতো একজন মানুষ, যদি তুমি (তোমার দাবীতে) সত্যবাদী হও তাহলে (ভিনু কোনো) প্রমাণ নিয়ে এসো! | ١٥٣ مَا آنْسَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ﴾ فَأْسِ بِالْيَةِ إِنْ كُنْسَ مِنَ الصَّرِقِيْنَ |
| ১৫৫. সে বললো- এ উদ্রী (হচ্ছে আমার নবুওতের প্রমাণ), এর জন্যে (কুয়ার) পানি পান করার (একটি নির্দিষ্ট) পালা থাকবে, আর একটি নির্দিষ্ট দিনের পালা থাকবে তোমাদের (পশুদের পানি) পান করার জন্যে, | ١٥٥ قَالَ مٰنِ ۚ نَاقَةً لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ع |
| ১৫৬. কখনো একে কোনো রকম দুঃখ ক্লেশ দেয়ার উদ্দেশে স্পর্শও করো না, নতুবা বড়ো (কঠিন) দিনের আযাব তোমাদের পাকড়াও করবে। | ١٥٦ وَلَا تَهَسُّوْهَا بِسُوْءٍ فَيَاْ هُلَاكُرْ عَلَاابُ يَوْمٍ عَظِيْرِ |
| ১৫৭. অতপর (পায়ের নলি কেটে) তারা সেটিকে হত্যা করলো, তখন (কঠিন শান্তি দেখে) তারা ভীষণভাবে অনুতপ্ত হলো, | ١٥٤ فَعَقَرُوْهَا فَآصْبَكُوْ إِنْدِمِيْنَ ٢ |
| ১৫৮. অতপর (আল্লাহ তায়ালার) শান্তি এসে তাদের গ্রাস করলো, এ (ঘটনা)-র মাঝেও রয়েছে (আল্লাহ তায়ালার বিশেষ) নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশ মানুষ তো ঈমানই আনে না। | لَاٰيَةً ، وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ |
| ১৫৯. নিসন্দেহে তোমার মালিক মহাপরাক্রমশালী, পরম দয়ালু। | ١٥٩ وَإِنَّ رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|---|
| ১৬০. (একইভাবে) লৃতের জাতিও (আল্পাহর) রস্লদের অস্বীকার করেছে, | ١٦٠ كَنَّ بَعَثُ قُوْمً لُوْطٍ الْمُرْسَلِيْنَ عَلَى |
| ১৬১. যখন তাদের ভাই লৃত এসে তাদের বললো (এ কি হলো তোমাদের), তোমরা কি (আল্লাহর আযাবকে) ভয় করবে নাঃ | ١٦١ إِذْ قَالَ لَهُرْ أَخُوهُمْ لُوطًا آلَا تَتَقُونَ عَ |
| ১৬২. নিসন্দেহে আমি হচ্ছি তোমাদের জন্যে একজন বিশ্বস্ত রসূল, | ١٦٢ إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ إَمِيْنٌ لا |
| ১৬৩. অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো, | ١٦٣ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَٱطِيْقُونِ ع |
| ১৬৪. আমি তো এ (কাজের) জ্বন্যে তোমাদের কাছে কোনো বিনিময় চাচ্ছি না, আমার বিনিময় তো সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহর দরবারেই (মজুদ) রয়েছে; | ۱۲۳ وَمَا آَسْئَلُكُر عَلَيْهِ مِنْ آَهْدٍ عَ إِنْ آَهْدِى َ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَلَمِيْنَ ا |
| ১৬৫. (এ কি হলো তোমাদের! জৈবিক প্রয়োজন প্রণের জন্যে) তোমরা দুনিয়ার পুরুষগুলোর কাছেই যাও, | ١٦٥ أَتَأْتُونَ النُّكُورَانَ مِنَ الْعُلَمِيْنَ لا |
| ১৬৬. অথচ তোমাদের মালিক তোমাদের (এ প্ররোজনের) জন্যে তোমাদের ব্রী সাথীদের পরদা করে রেখেছেন, তাদের তোমরা পরিহার করে (এ নোংরা কাজে লিপ্ত) থাকো; তোমরা (আসদেই) এক মারাত্মক সীমালংঘনকারী জাতি। | ١٦٦ وَتَنَارُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبَّكُمْ مِّنَ أَزُوا جِكُمْ مِنَ أَنْتُمْ فَوْأً عٰدُونَ أَزْوَا جِكُمْ مِنَ أَنْتُمْ فَوْأً عٰدُونَ |
| ১৬৭. তারা বললো, হে লৃত, যদি তুমি তোমার এসব (ওয়ায নসীহত) থেকে নিবৃত্ত না হও, তাহলে তুমি হবে বহিষ্কৃতদের একজন। | ١٦٤ قَالُوْا لَئِنْ لَّـرُ تَنْتَهِ يِلُوْمُّ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْهُ خ ْرَجِيْنَ |
| ১৬৮. সে বললো (দেখো), আমি তোমাদের এ নোংরা কাজকে অত্যন্ত ঘৃণা করি; | ١٦٨ قَالَ إِنِّي لِعَبَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ١ |
| ১৬৯. (এবার পৃত আল্লাহ তায়ালাকে বলপো,) হে আমার মালিক, তারা যা কিছু করে তুমি আমাকে এবং আমার পরিবার পরিজনকে সে সব (ধৃণিত কান্ধ) থেকে বাঁচাও। | ١٦٩ رَبِّ نَجِّنِيْ وَ اَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُونَ |
| ১৭০. অতপর আমি লৃত ও তার পরিবার পরিজনদের সকলকে উদ্ধার করণাম। | ١٤٠ فَنَجِينَهُ وَٱهْلَهُ ٱجْمِعِينَ ٧ |
| ১৭১. (তার পরিবারের) এক (পাপী) বৃদ্ধাকে বাদ দিয়ে, সে (উদ্ধারের সময়) পেছনেই থেকে গেলো (এবং আযাবে নিমজ্জিত হয়ে গেলো), | ١٤١ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَبِرِيْنَ عَ |
| ১৭২. অতপর অবশিষ্ট সবাইকেই আমি সম্পূর্ণ ধ্বংস করে দিলাম, | ١٤٢ ثُرِّ دَمَّرْنَا الْأَغَرِيْنَ ع |
| ১৭৩. তাদের ওপর আমি (আযাবের) বৃষ্টি বর্ষণ করলাম, (যাদের ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিলো) তাদের জন্যে কতো নিকৃষ্ট ছিলো সেই (আযাবের) বৃষ্টি! | ١٤٣ وَأَمْطَوْنَا عَلَيْهِمْ مُّطَّرًا ۽ فَسَاءَ مَطُرُ الْمُنْظَرِيْنَ |
| ১৭৪. এ (ঘটনা)-র মাঝেও (রয়েছে শিক্ষণীয়) নিদর্শন, কিন্তু তাদের অধিকাংশই ঈমান আনে না। | المَّهُ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً ﴿ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ الْمُثَرُهُمُ الْمُثَرُهُمُ اللَّهُ الْمُثَرُهُمُ |
| ১৭৫. নিসন্দেহে তোমার মালিক মহাপরাক্রমশালী, পরম দয়ালু। | ١٤٥ وَإِنَّ رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ১৭৬. আইকা'র অধিবাসীরাও রস্লদের অস্বীকার করেছিলো, | ١٤٦ كَنَّابَ أَمْحُبُ لَئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ عَلَى |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| ১৭৭. যখন শোয়ায়ব তাদের বলেছিলো (হে আমার জাতি), তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করবে নাঃ | ١٤٤ إِذْ قَالَ لَهُرْ شُعَيْبٌ ۚ أَلَا تَتَّقُونَ عَ |
| ১৭৮. নিসন্দেহে আমি হচ্ছি তোমাদের জন্যে একজন বিশ্বস্ত রসূল, | ١٤٨ إِنِّي لَكُر رَسُولٌ آمِيْنٌ ٧ |
| ১৭৯. সুতরাং তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো, | ١٤٩ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَٱطِيْعُوْكِ ٤ |
| ১৮০. (আমি যে তোমাদের ডাকছি–) এ জন্যে আমি তোমাদের কাছ থেকে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করছি না, (কারণ) আমার পারিশ্রমিক ষা, তা তো সৃষ্টিকুলের | ١٨٠ وَمَا آسْنُلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ آجْرٍ عَ إِنْ آجْرِي |
| মালিক আল্লাহ তায়ালার কাছেই মজুদ রয়েছে; | إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَلَمِيْنَ ، |
| ১৮১. (হে মানুষ, মাপের সময়) তোমরা পুরোপুরি মেপে দেবে, (মাপে কম দিয়ে) তোমরা ক্ষতিগ্রস্ত লোকদের দলভুক্ত হয়ো না। | 141 أَوْنُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوا مِنَ الْهُخْسِرِيْنَ } |
| ১৮২. (ওয়ন করার সময়) পাল্লা ঠিক রেখে ওয়ন করবে, | ١٨٢ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْهُسْتَقِيْرِ ٤ |
| ১৮৩. মানুষদের পাওনা কখনো কম দেবে না এবং দুনিয়ায় (খামাখা) ফেতনা ফাসাদ সৃষ্টি করো না, | ١٨٣ وَلَا تَبْغَسُوا النَّاسَ اَشْيَاءَهُمْ وَلَا |
| | تَعْثَوْا فِي الْإَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ٤ |
| ১৮৪. ভয় করবে তাঁকে যিনি তোমাদের এবং তোমাদের আগে যারা গত হয়ে গেছে তাদের সবাইকে সৃষ্টি করেছেন; | ۱۸۳ وَاتَّقُوا الَّذِي عَلَقَكُرْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ا |
| ১৮৫. তারা বললো (হে শোয়ায়ব), তুমি (তো) দেখছি যাদুশ্রস্ত ব্যক্তিদেরই অন্তর্ভুক্ত, | ١٨٥ قَالُوْ آ إِنَّهَا ۖ أَنْتَ مِنَ الْهُسَعِّرِيْنَ لا |
| ১৮৬. (তুমি কিভাবে নবী হলে?) তুমি তো আমাদেরই মতো মানুষ, আমরা মনে করি তুমি মিধ্যাবাদীদেরই অন্তর্ভুক্ত, | ۱۸٦ وَمَا آنْتَ إِلَّا بَشَرًّ مِّثْلُنَا وَ إِنْ نَّطُنَّكَ لَمِنَ الْكُلْبِيْنَ لا |
| ১৮৭. (হাা,) তুমি যদি সত্যবাদী হও তাহলে যাও, আসমান (ভেংগে) এর একটি টুকরো আমাদের ওপর ফেলে দাও। | ١٨٧ فَٱسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّهَاءِ إِنْ كُنْتَ |
| ১৮৮. সে বললো, যা কিছু (উদ্ভট দাবী) তোমরা করছো– আমার মালিক তা ভালো করেই জানেন, | ١٨٨ قَالَ رَبِّي ٓ أَعْلَرُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ |
| ১৮৯. অতপর তারা তাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করলো, পরিণামে মেঘাচ্ছনু দিনের এক ভীষণ আযাব তাদের পাকড়াও করলো, এ ছিলো সত্যিই এক কঠিন দিনের আযাব। | ١٨٩ فَكَنَّ بُوهٌ فَاَ مَلَهُمْ عَلَابٌ يَوْ إِ الظَّلَّةِ ، إِنَّهُ كَانَ عَلَابَ يَوْ إِ عَظِيْمٍ |
| ১৯০. এ (ঘটনা)-র মাঝেও (শিক্ষার) নিদর্শন আছে; (কিন্তু) তাদের অনেকেই (এর ওপর) ঈমান আনে না। | 190 إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً ، وَمَا كَانَ ٱكْثَرُّهُرْ مُّوْمِنِيْنَ |
| ১৯১. নিসন্দেহে তোমার মালিক মহাপরাক্রমশালী ও পরম দয়ালু। | ا ١٩١ وَإِنَّ رَبُّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْرُ ع |
| ১৯২. (হে নবী,) অবশ্যই এ (কোরআন)-টি রব্বুল আলামীনের নাথিল করা (একটি গ্রন্থ); | ١٩٢ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ ١ |

মন্যিল ৫

২৬ সূরা আশ শোয়ারা

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| ১৯৩. একজন বিশ্বস্ত ফেরেশতা (আমারই আদেশে) এটা নাযিল করেছে, | ١٩٣ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْأَمِيْنُ ٧ |
| ১৯৪. (নাযিল করেছে) তোমারই মনের ওপর যাতে করে তুমিও সতর্ককারী (নবী)-দের একজন হতে পারো, | 197 عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُثْنِرِيْنَ و |
| ১৯৫. (একে নাযিল করা হয়েছে) সুস্পষ্ট আরবী ভাষায়; | ١٩٥ بِلِسَانٍ عَرَبِي مَّبِينٍ ١ |
| ১৯৬. আগের (উত্মতদের কাছে) নাযিল করা কেতাবসমূহে অবশ্যই এটি (উল্লিখিত) আছে। | ١٩٦ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِيْنَ |
| ১৯৭. এটা কি এদের জন্যে দলিল নয় যে, বনী ইসরাঈলের আলেমরাও এর সম্পর্কে পূর্ণ অবগত আছে; | ١٩٤ أَوَ لَمْ يَكُنَّ لَّهُمْ أَيَةً أَنْ يَعْلَهَ عُلَهُ عُلَوُّا |
| | بَنِيْ إِسْرَاءِيْلَ ا |
| ১৯৮. যদি আমি এ (কোরআন)-কে (আরবীর বদলে অন্য) কোনো অনারবের ওপর (তার ভাষায়) নাযিল করতাম, | 19۸ وَلَوْ نَزَّلْنَهُ عَلَى بَعْضِ الْإَعْجَمِيْنَ ٧ |
| ১৯৯. তারপর সে (অনারব) ব্যক্তি তাদের কাছে এসে এটা (কেতাব) পাঠ করতো, অতপর (ভাষার অজুহাত তুলে) এর ওপর তারা (মোটেই) ঈমান আনতো না; | ١٩٩ فَقَرَ أَهٌ عَلَيْهِر مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ١ |
| ২০০. এভাবেই আমি এ বিষয়টি নাব্দরমান অপরাধীদের অস্তরে প্রবেশ করিয়ে দিয়েছি; | ٢٠٠ كَنْ لِكَ سَلَكُنْهُ فِي قُلُوبِ الْهُجُرِمِينَ ١ |
| ২০১. তারা (আসলে) কখনো এর ওপর ঈমান আনবে না, যতোক্ষণ না তারা কোনো কঠিন আযাব (নিজেদের চোখে) দেখতে পাবে, | ۲۰۱ كَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّى يَرَوُا الْعَلَاابَ الْاَلِيْمِرَلا |
| ২০২. আর সে (আযাব কিন্তু) তাদের কাছে আসবে একান্ত আকম্মিকভাবেই, তারা কিছুই টের পাবে না, | ٢٠٢ فَيَأْتِيهُمْ بَفْتَةً وهم لا يَشْعُرُونَ لا |
| ২০৩. তখন তারা বলবে, আমাদের কি (কিছু সময়ের জন্যেও) অবকাশ দেয়া হবে নাঃ | ٢٠٣ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنَ مُنْظَرُونَ ١ |
| ২০৪. (অথচ) সে লোকগুলোই (এক সময়) আযাবকে ত্ব্বান্তিত করতে চেয়েছিলো! | ٢٠٣ أَفَبِعَلَ ابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ |
| ২০৫. তুমি (এ বিষয়টা) চিন্তা করে দেখেছো কি, যদি আমি তাদের অনেক দিন ধরে (পার্থিব) ভোগবিলাস ভোগ করতেও দিই, | ٢٠٥ أَفَرَءَيْتُ إِنْ مَنْعَنَّهُمْ سِنِينَ ٧ |
| ২০৬. তারপর যে (আযাব) সম্পর্কে তাদের ওয়াদা করা হয়েছিলো তা যদি (সত্যিই) তাদের কাছে এসে পড়ে, | ٢٠٦ ثُرِ ۗ جَاءَمُر ما كَانُوا يُوعَكُونَ ٧ |
| ২০৭. তাহলে (এই) যে বৈষয়িক বিলাস তারা ভোগ করছিলো, তা সব কি কোনো কাজে লাগবেঃ | ٢٠٤ مَ أَغْنَى عَنْهُرْمًا كَانُوا يُهَتَّعُونَ ا |
| ২০৮. আমি (কাফেরদের) কোনো জনপদই ধ্বংস করিনি যার জন্যে (কোনো) সতর্ককারী (নবী) ছিলোনা, | ٢٠٨ وَمَا آهُلَكُنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ فَخِيهِ |
| ২০৯. (এ হন্দে মূলত সুস্ট) উপদেশ, আর আমি তো যালেম নই (যে, সতর্ক না করেই তাদের ধ্বংস করে দেবো)। | ۲۰۹ ذِکْرِٰی تَنْ وَمَا كُنَّا ظَلِیِیْنَ |
| ২১০. এ (কোরআন)টি কোনো শয়তান নাযিল করেনি। | ٢١٠ وَمَا تَنَوَّلُتُ بِهِ الشَّيْطِينُ ع |
| ২৬ সূরা আশ শোয়ারা | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|--|--|
| ২১১. ওরা এ কাজের যোগ্যও নয়, না তারা তেমন কোনো ক্ষমতা রাখে; | ٢١١ وَمَا يَثْبَغِي لَهُرْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ١ |
| ২১২. তাদের তো (ওহী) শোনা থেকেও বঞ্চিত রাখা হয়েছে; | ٢١٢ إِنَّهُرْ عَنِ السَّبْعِ لَهَعْزُولُونَ ا |
| ২১৩. অতএব তুমি কখনো আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্য কোনো মাবুদকে ডেকো না, নতুবা তুমিও শান্তিযোগ্য লোকদের দুলভুক্ত হয়ে যাবে। | ٣١٣ فَلَا تَلْعُ مَعَ اللَّهِ إِلْمًا أَخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْهَعَلَّ بِيْنَ ع |
| ২১৪. (হে নবী,) তুমি তোমার নিকটতম আত্মীয় স্বজনদের (আল্লাহ তায়ালার আযাব থেকে) ভয় দেখাও, | ٢١٣ وَ أَنْدِرْ عَشِيْرَتَكَ الْإَقْرَبِيْنَ ٧ |
| ২১৫. যে ব্যক্তি ঈমান নিয়ে তোমার অনুবর্তন করবে তুমি তার প্রতি স্লেহের আচরণ করো, | ٢١٥ وَاخْفِضْ جَنَا مَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْبُوَيِنِ الَّبَعَكَ مِنَ الْبُوْمِنِيْنَ ءَ |
| ২১৬. যদি কেউ তোমার সাথে নাফরমানী করে তাহলে তুমি তাকে বলে দাও, তোমরা (আল্লাহ তায়ালার সাথে) যে আচরণ করছো তার (পরিণামের) জ্বন্যে আমি কিন্তু (মোটেই) দায়ী নই, | ٢١٦ فَانَ عَصَوْكَ فَقُلُ إِنِّيَ بَرِيَّ مِّ مِّا تَعْمَلُوْنَ ج |
| ২১৭. (তাদের অবাধ্য আচরণে তুমি মনোক্ষুণ্ণ হয়ো না, তুমি বরং) সর্বোচ্চ পরাক্রমশালী ও দয়ালু আল্লাহ তায়ালার ওপরই ভরসা করো, | ١١٤ وَتَوَكَّلُ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْرِ لا |
| ২১৮. যিনি তোমাকে দেখতে থাকেন, যখন তুমি (নামাযে) দাঁড়াও, | ٢١٨ الَّذِي يَرْبكَ حِيْنَ تَقُوَّا ٧ |
| ২১৯. এবং সাজদাকারীদের মাঝে তোমার ওঠা বসাও (তিনি প্রত্যক্ষ করেন)। | ٢١٩ وَتَقَلَّبَكَ فِي السَّجِرِينَ |
| ২২০. অবশ্যই তিনি (সব কিছু) শোনেন, (সব কিছুই) জানেন। | ٢٢٠ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْرُ |
| ২২১. (হে নবী,) আমি কি তোমাকে বলে দেবো, শয়তান কার ওপর (বেশী) সওয়ার হয়ঃ | ٢٢١ هَلْ ٱنبِّنكُر عَلَى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيْطِينَ ، |
| ২২২. (শয়তান সওয়ার হয়) প্রতিটি ঘোর মিথ্যাবাদী ও পাপী মানুষের ওপর, | ٢٢٢ تَنَزَّلُ عَلَى كُلِّ ٱفَّاكٍ ٱثِيْرٍ لا |
| ২২৩. ওরা (শয়তানের কথা) শোনার জন্যে কান পেতে থাকে, আর তাদের অধিকাংশই হচ্ছে (নিরেট) মিথ্যাবাদী; | ٢٢٣ يُّلْقُونَ السَّعْ وَاكْثَرُهُمْ كُنِبُونَ ا |
| ২২৪. (আর কবিদের কথা!) কবিরা (তো অধিকাংশই হয় পথভ্রষ্ট,) তাদের অনুসরণ করে (আরো) কতিপয় গোমরাহ ব্যক্তি; | ٢٢٣ وَالشَّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوِنَ . |
| ২২৫. তুমি কি দেখতে পাও না, ওরা (কল্পনার হাওয়ায় চড়ে) প্রতিটি ময়দানে উদ্ধান্তের মতো ঘুরে বেড়ায়, | ٢٢٥ أَكُرْ تَرَ ٱلنَّهُرْ فِي كُلِّ وَادٍ يُعِيْدُونَ ٧ |
| ২২৬. এরা এমন কথা (অন্যদের) বলে যা তারা নিজেরা করে না, | ٢٢٦ وَ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ لا |
| ২২৭. তবে যারা আল্লাহর ওপর ঈমান আনে ও (সে অনুযায়ী) নেক কাজ করে এবং বেশী করে আল্লাহ তায়ালাকে শ্বরণ করে, তাদের কথা আলাদা। তাদের ওপর যুলুম করার পরই কেবল তারা (আত্মরক্ষামূলক) প্রতিশোধ গ্রহণ করে; আর যুলুম যারা করে- তারা অচিরেই জানতে পারবে তাদের (একদিন) কোথায় ফিরে | ٢٢٧ إِلَّا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا وَعَبِلُوا الصَّلِحُتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْ بَعْنِ مَا ظُلُمُوْا وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا آَى مُنْقَلَبٍ |
| याट रत । | يَّنْقَلِبُوْنَ ع |

২৬ সূরা আশ শোয়ারা

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| र्वाययान निवास अरख अवन वार्ला वर्गम | |
| সূরা আন নামল | سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةً |
| মকায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৯৩, ৰুকু ৭ | أَيَاتٌ : ٩٣ رُكُوْعٌ : ٤ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | |
| | بِشرِ اللهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْرِ |
| ত্বা-সীন। এগুলো হুচ্ছে কোরআনেরই আয়াত এবং | ا طْس مَن تِلْكَ أَيْتُ الْقُرْأَنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ لا |
| সৃস্পষ্ট কেতাব (-এর কতিপয় অংশ), | |
| ২. ঈমানদারদের জন্যে (এটা হচ্ছে) হেদায়াত ও সুসংবাদবাহী (গ্রন্থ), | ٢ هُدَّى وَّبَهُرٰى لِلْهُؤْمِنِيْنَ ٧ |
| | |
| ৩. (তাদের জন্যে,) যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, (সর্বোপরি) কেয়ামত দিবসের ওপর যারা | ٣ الَّذِينَ يُقِيْمُونَ الصَّلْوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوةَ |
| বিশ্বাস স্থাপন করে। | وَهُمْ بِالْأَخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُونَ |
| হারা শেষ বিচারের দিনের ওপর ঈমান আনে না, | |
| তাদের জন্যে তাদের যাবতীয় কর্মকান্ড আমি (সুন্দর) | ٣ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُرْ |
| শোভন করে রেখেছি, ফলে তারা উদ্ধান্তের মতো (আপর্ন কর্মকান্ডের চারপাশে) ঘুরে বেড়ায়; | أَعْبَا لَهُمْ فَهُمْ يَعْبَهُونَ طَ |
| | _ |
| ৫. এরাই হচ্ছে সেসব লোক যাদের জন্যে রয়েছে (জাহান্নামের) কঠিন আযাব, আর পরকালেও এ লোকেরা | ٥ اوليك الذين لمرسوء العذاب ومر |
| ভীষণ ক্ষতির সমুখীন হবে। | في الاخبة هم الاخسبون |
| ৬. (হে নবী,) নিশ্চয়ই প্রবল প্রজ্ঞাময় সর্বজ্ঞ আল্লাহ | وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْانَ مِنْ لَّكُنْ حَكِيْمٍ |
| তায়ালার পক্ষ থেকে তোমাকে (এ) কোরআন দেয়া | عَلْمُ الْمُعَالِينَ عَلَى الْمُعَالِقِينَ عَلَى الْمُعَالِينِ عَلَى الْمُعَالِقِينَ عَلَى الْمُعَالِقِينَ الْمُعِلَّذِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعِلَّذِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعِلَّذِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعِلَّذِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّ الْمُعِلِّينِ الْمُعِلِّي الْمُعِلِّي الْمُعِلِّي الْمُعِلِّيِي الْمُعِلِّي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِي |
| रस्य । | |
| ৭. (ম্বরণ করো,) যখন মূসা তার পরিবারের লোকজনদের বলেছিলো, অবশ্যই আমি আগুন (সদৃশ কিছু) দেখতে | ﴾ إِذْ قَالَ مُوسَى لِأَهْلِهِ إِنِّيٓ أَنَسْتُ نَارًا ﴿ |
| পেয়েছি; সেখান থেকে আমি এক্ষুণি তোমাদের কাছে হয় | سَاتِيْكُرْ مِّنْهَا بِخَبَرِ أَوْ اتِيْكُرْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ |
| (পথঘাটের ব্যাপারে) কোনো খোঁজ খবর কিংবা (তোমাদের জন্যে) একটি অংগার নিয়ে আসবো, যাতে | - |
| করে তোমরা (এ ঠান্ডার সময়) আগুন পোহাতে পারো। | الْعَلَّكُمِ ۚ تَصْطَلُونَ |
| ৮. অতপর সে যখন (আগুনের) কাছে পৌছুলো, তখন | ٨ فَلَيًّا جَاءَهَا نُوْدِيَ أَنْ ا بُوْرِكَ مَنْ فِي |
| তাকে (অদৃশ্য থেকে) আওয়ায দেয়া হলো, বরকতময় হোক সে (নূর), যা এ আগুনের ভেতর (আলোকিত হয়ে) | , |
| আছে, বরকতময় হোক সে (মানুষ) যে এর আশেপাশে | النَّارِ وَمَنْ مَوْلَهَا ، وَسُبْعَٰنَ اللَّهِ رَبِّ |
| রয়েছে; সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাই তায়ালা কতো পবিত্র প্রশংসিত। | ا (أَعْلَمِيْنَ |
| ৯. (আওয়ায এলো,) হে মৃসা, আমিই হচ্ছি আল্লাহ | |
| তায়ালা, মহাপরাক্রমশালী ও প্রবল প্রজ্ঞাময়। | ٩ يُمُوْسَى إِنَّهُ آنَا اللَّهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ ٧ |
| ১০. হে মূসা, তুমি তোমার (হাতের) লাঠিটা (যমীনে) | ١٠ وَ ٱلْقِ عَمَاكَ ١٠ فَلَمَّا رَأَهَا تَهْتَزُّ كَٱنَّهَا جَأَنَّ |
| নিক্ষেপ করো; অতপর সে যখন তাকে দেখলো, তা যমীনে (জীবিত) সাপের মতো ছুটাছুটি করছে, তখন সে | |
| (কিছুটা ভীত হয়ে) উল্টো দিকে দৌড়াতে লাগলো, | ولى مُنْ بِرًا ولَمْ يُعَقِّبُ مَا يُمُوْسَى لَا تَخَفُ عَ |
| পিছনের দিকে ফিরেও তাকালো না (তখন আমি বললাম); হে মূসা (ভয় পেয়ো না), আমার সামনে (নবী) | إِنِّيْ لَا يَخَافُ لَكَيُّ الْهُرْسَلُوْنَ قصه |
| রসূলরা কখনো ভয় পায় না, | |
| ১১. হাাঁ, (যদি) কেউ কখনো কোনো অন্যায় করে (তাহলে তা ভিন্ন কথা), অতপর সে যদি অন্যায়ের পর | ا اللَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَلَّ لَ حُسْنًا ' بَعْلَ سُوْءٍ |
| তার বদলে (পুনরায়) নেক আমল করে, তাহলে (সে যেন | 45 A 21 45 A A A A A A |
| জেনে রাখে), আমি অবশ্যই ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু। | فَانِي غَفُور رَحِيمر |
| ২৭ সূরা আন নামল | মন্যিল ৫ |

www.eelm.weebly.com

পারা ১৯ ওয়া কালাল্লাযীনা

১২. (হে মুসা, এবার) তুমি তোমার হাত দুটো তোমার জামার (বুক) পকেটের ভেতর ঢকিয়ে দাও (বের করে আনলে দেখবে) কোনো রকম দোষক্রটি ব্যতিরেকেই তা উজ্জ্বল হয়ে বেরিয়ে এসেছে। (এ মোজেযাগুলো সে) নয়টি নিদর্শনেরই অন্তর্গত, যা ফেরাউন ও তার জাতির জন্যে আমি (মুসার সাথে) পাঠিয়েছিলাম: ওরা অবশ্যই ছিলো একটি গুনাহগার জাতি।

١٢ وَٱدْغِلْ يَنَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرٍ سُومٍ عَ فِي تِسْعِ أَيْسٍ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ١ إِنَّهُمْ كَانُوْ | قَوْمًا فُسقينَ

১৩. অতপর যখন তাদের কাছে আমার উচ্ছুল নিদর্শনসমূহ হাযির হলো তখন তারা বললো, এ তো হচ্ছে স্পষ্ট যাদ.

١٣ فَلَهًا جَأَءَتُهُمْ إِيُّنَا مُبْصِةً قَالُوا هَٰلَا اللَّهِ

১৪. তারা যুলুম ও ঔদ্ধত্যের কারণে তার সবকিছ প্রত্যাখ্যান করলো, যদিও তাদের অন্তর এসব (নিদর্শন) সভ্য বলে গ্রহণ করে নিয়েছিলো; অভপর (হে নবী), তুমি দেখে নাও, (আমার যমীনে) বিপর্যয় সষ্টিকারীদের কি পরিণাম হয়েছিলো!

١٣ وَجَعَلُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتُهَا ۖ ٱنْفُسُهُ ﴿ ظُلْمًا وَّعُلُوا ا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقبَةُ الْهُفْسِينَ ع

১৫. আমি অবশ্যই দাউদ এবং সোলায়মানকে (ছীন দুনিয়ার) জ্ঞান দান করেছিলাম: তারা উভয়েই বললো. যাবতীয় তারীফ আল্লাহ তায়ালার, যিনি তাঁর বহু ঈমানদার বান্দার ওপর আমাদের শ্রেষ্ঠত দান করেছেন।

١٥ وَلَقَنُ أَتَيْنَا دَاوَّدَ وَسُلَيْمِنَ عِلْمًا عَ وَقَالَا الْحَبْلُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيْرٍ مِّنْ عبَادة الْهُوْمنيْنَ

১৬. (দাউদের মৃত্যুর পর) সোলায়মান দাউদের উত্তরাধিকারী হলোঁ (উত্তরাধিকার পেয়ে) সে (তার জনগণকে) বললো, হে মানুষরা, আমাদেরকে (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) পাখীদের বুলি (পর্যস্ত) শেখানো হয়েছে, (এ ছাড়াও) আমাদেরকে (দুনিয়ার) প্রতিটি জিনিসই দেয়া হয়েছে: এ হচ্ছে (আল্লাহ তায়ালার এক) সুস্পষ্ট অনুগ্ৰহ।

١٦ وَوَرِثَ سُلَيْهِ وَاوَدَ وَقَالَ يَأَيُّهَا النَّاسُ عُلِّهُنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ﴿ إِنَّ مَٰنَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ

১৭. সোলায়মানের (সেবার) জন্যে মানুষ, জিন ও পাখীদের মধ্য থেকে এক (বিশাল) বাহিনী সমবেত করা হয়েছিলো, এরা আবার বিভিন্ন ব্যুহে সুবিন্যস্ত ছিলো।

١٤ وَهُشِرَ لِسُلَيْهُانَ جُنُوْدُةً مِنَ الْجِنِّ وَ الْإِنْسِ وَ الطَّيْرِ فَهُرْ يُوْزَعُونَ

১৮. (সোলায়মান একবার অভিযানে বের হলো.) তারা যখন পিপীলিকা (অধ্যুষিত) উপত্যকায় পৌছালো, তখন একটি ন্ত্রী পিপীলিকা (তার স্বন্ধনদের) বললো, হে পিপীলিকার দল, তোমরা (দ্রুত) নিজ নিজ গর্তে ঢুকে পড়ো, (দেখো) এমন যেন না হয়, সোলায়মান ও তার বাহিনী নিজেদের অজান্তে তোমাদের পায়ের নীচে পিষে ফেলবে।

١٨ مَتَّى إِذَآ أَتَوْا عَلَى وَادِ النَّهْلِ لا قَالَتْ نَهْلَةً يَّأَيُّهَا النَّهْلُ ادْغُلُوا مَسْكَنَكُورَ ع لَا يَحْطَهَنَّكُمْ سُلَيْهُنَّ وَجُنُودُهُ لا وَهُمْ لَا

১৯. তার কথা ভনে সোলায়মান একটু মৃদু হাসি হাসলো এবং বললো, হে আমার মালিক, তুমি আমাকে তাওফীক দাও যাতে করে (এ পিপীলিকাটির ব্যাপারেও আমি অমনোযোগী না হই এবং) আমাকে ও আমার পিতামাতাকে তুমি যেসব নেয়ামত দান করেছো, আমি যেন (বিনয়ের সাথে) তার কৃতজ্ঞতা আদায় করতে পারি. আমি যেন এমন সব নেক কাজ করতে পারি যা তুমি পছন্দ করো. (খতপর) তুমি তোমার অনুগ্রহ দিয়ে আমাকে তোমার নেককার মানুষদের অন্তর্ভুক্ত করে নাও।

19 فَتَبَسَّرَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَهْكُرَ نِعْبَتَكَ الَّتِي أَ أَنْعَبْسَ عَلَى وَعَلَى وَالِنَاقُ وَأَنْ أَعْمَلَ مَالِحًا تَرْضٰهُ وَ أَدْعَلْنِي بِرَحْهَتِكَ فِي عِبَادِكَ

 \sim . (अक्रवात) प्रा थात्र नाथा (बारिना) श्रयतक्क्ष्म الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِي \hat{Y} أَرَى श्रुक्तां खर (এक शर्यारा) वनला (कि لَي كُلُّ أَرَى के दला खर (এक शर्यारा) वनला (कि رُقَقُقُّنُ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِي \hat{Y}

২৭ সুরা আন নামল

| ı | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|-----|--|--|
| | ব্যাপার), 'হুদহুদ' (নামক পাখীটা) দেখছি না যে! অথবা সে কি (আজ সত্যিই) অনুপস্থিতঃ | الْهُنْهُنَ أَنَّ كَانَ مِنَ الْغَالِينِينَ |
| ı | ২১. হয় সে (এই অনুপস্থিতির) কোনো পরিষ্কার ও সংঘত কারণ নিয়ে আমার কাছে হাযির হবে, না হয় তাকে আমি | ٢١ لَاُعَلِّبَنَّهُ عَنَ ابًا شَرِيْدًا أَوْ لَاْ ٱذْبَحَنَّهُۗ أَوْ |
| | (অবহেলার জন্যে) কঠিন শান্তি দেবো, অথবা (বিদ্রোহ প্রমাণিত হলে) তাকে আমি হত্যাই করে ফেলবো। | لَيَٱتِينِّيْ بِسُلْطٰي مُبِيْنِ |
| | ২২. (এ খোঁজাখুঁজির পর) বেশী সময় অতিবাহিত হয়নি, সে (পাখীটি ছুটে এসে) বললো (হে বাদশাহ), আমি | ٢٢ فَهَكُنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ أَحَطْتٌ بِهَا لَرْ |
| | এমন এক খবর জেনেছি, যা তুমি এখনো অবগত হওনি, আমি তোমার কাছে 'সাবা' (জাতি)-র একটি নিশ্চিত খবর নিয়ে এসেছি (আমার অনুগঙ্কিতির এ হঙ্গে কারণ)। | تُحِفْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَلٍ ' بِنَبَلٍ يَّقِيْنٍ |
| | ২৩. আমি সেখানে এক রমণীকে দেখেছি, তাদের ওপর সে রাজত্ত্ব করছে (দেখে মনে হলো), তাকে (দুনিয়ার) | ٢٣ إِنِّي وَجَنْ سُ الْوَاقَةَ تَمْلِكُمُ (وَٱوْتِيَتْ |
| | সব কয়টি জিনিসই (বুঝি) দেয়া হয়েছে, (তদুপরি) তার কাছে আছে বিরাট এক সিংহাসন। | مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْرٌ |
| | ২৪. আমি তাকে এবং তার জাতিকে (এমন অবস্থায়) পেলাম যে, তারা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে সূর্যকে | ٢٣ وَجَنْ تُهُا وَقُوْمَهَا يَسْجُنُونَ لِلشَّهْسِ مِنْ |
| | সাজদা করছে, (মূলত) শয়তান তাদের (এসব পার্থিব) কর্মকান্ড তাদের জন্যে শোভন করে রেখেছে এবং সে | دُوْنِ اللهِ وَزَيَّىَ لَهُرُ الشَّيْطِيُ أَعْهَالَهُرْ |
| ı | তাদের (সং) পথ থেকেও নিবৃত্ত করেছে, ফলে ওরা হেদায়াত লাভ করতে পারছে না, | فَصَلَّهُمْ عَنِ السِّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَكُونَ لا |
| ١ | ২৫. (শয়তান তাদের বাধা দিয়েছে,) যেন তারা আল্লাহ তায়ালাকে সাজুদা করতে না পারে, যিনি আসমানসমূহ ও | ٢٥ ألَّا يَسْجُنُوْا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ |
| | যমীনের (উদ্ভিদসহ সব) গোপন জ্বিনিস বের করে আনেন, (তিনি জানেন) তোমরা যা কিছু গোপন করো এবং যা কিছু প্রকাশ করো। | الْخَبُءَ فِي السَّاوَٰ فِي وَالْأَرْضِ وَيَعْلَرُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ |
| | ২৬. আল্লাহ তায়ালা ব্যতীত কোনো মাবুদ নেই, তিনিই হচ্ছেন মহান আরশের অধিপতি। | ٢٦ اَللَّهُ لَآ اِللَّهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْرِ |
| | ২৭. (এটা ভনে) সে বললো, হাাঁ, আমি এক্ষুণি দেখছি, তুমি কি সত্য কথা বলেছো, না তুমি মিথ্যাবাদীদের একজন। | ٢٠ قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَّاقَتُ أَأْ كُنْتَ مِنَ الْكَالِبِيْنَ اللَّهِ الْكَالِبِيْنَ |
| | ২৮. তুমি আমার এ চিঠি নিয়ে যাও, এটা তাদের কাছে ফেলে আসো, তারপর তাদের কাছ থেকে (কিছুক্ষণের | ٢٨ إِذْهَبْ بِكِتْبِيْ مْلَا فَٱلْقِهْ إِلَيْهِرْ ثُرَّ |
| | জন্যে) সরে থেকো, অতপর তুমি দেখো তারা কি উত্তর দেয়ং | تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ |
| | ২৯. (সোলায়মানের চিঠি পেয়ে সাবা জাতির) মহিলা (সম্রাজ্ঞী পারিষদদের ডেকে) বললো, হে আমার | ٢٩ قَالَتْ يَاَيُّهَا الْهَلَوُّا اِنِّيٓ ٱلْقِيَ اِلَيَّ |
| | পারিষদরা, আমার কাছে একটি গুরুত্বপূর্ণ চিঠি পাঠানো হয়েছে, | كِتْبٌ كَرِيْرٌ |
| | ৩০. তা (এসেছে) সোলায়মানের কাছ থেকে এবং তা (লেখা হয়েছে) রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে, | الله من سُلَيْمٰن وَالله بِشرِ اللهِ الرَّهْمٰن الرَّهْمٰن الرَّحِيْمِ لا |
| 7 | ৩১. (চিঠির বক্তব্য হচ্ছে,) তোমরা আমার অবাধ্যতা করো না এবং আনুগত্য স্বীকার করে তোমরা আমার কাছে হাযির হও। | ٢١ أَلَّا تَعْلُوا عَلَى ۗ وَٱتُونِي مُسْلِمِينَ ع |
| | ৩২. (চিঠি পড়ে) সে (রাণী) বললো, হে আমার পারিষদরা, আমার (এ) বিষয়ে তোমরা আমাকে একটা | ٣٢ قَالَتْ يَأَيُّهُا الْمَلَوُّا ٱفْتُونِيْ فِيَ |
| - 1 | the state of the s | • |

২৭ সূরা আন নামল

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা

অভিমত দাও, আমি তো কোনো ব্যাপারেই চডান্ত কোনো আদেশ দেই না. যতোক্ষণ না তোমরা (সে সিদ্ধান্তের পক্ষে) সাক্ষ্য প্রদান না করো।

أَمْرِى مَ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّى تَشْهَلُونِ

৩৩. তারা বললো (এক্খাঠিক), আমরা অনেক শক্তিশালী ও কঠোর যোদ্ধা, কিন্তু (তারপরও সোলায়মানের সাথে هَرِيْنِ لَا وَّ الْأَمْرُ ۚ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا (रूज़ंड) निक्षांख श्रव्यवरात (रूज़ंड) مَاذَا ক্ষমতা তো তোমারই হাতে, অতএব চিন্তা করে দেখো, (এ পরিস্থিতিতে) তুমি আমাদের কি আদেশ দেবে ?

٣٣ قَالُوْا نَحْنُ أُولُوْا قُوَّةٍ وَّأُولُوْا بَاسٍ

७८. त्र (द्रांगी) वलला, द्राका वामनारद्रा यथन काता عَالَتِينَ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَعَلُوا تَرْيَةً ٣٢ জনপদে (বিজয়ীর বেশে) প্রবেশ করে তখন তা তছনছ করে দেয়, সেখানকার মর্যাদাবান ব্যক্তিদের অপদস্থ করে ছাড়ে, আর এরাও (হয়তো) তাই করবে।

أَفْسَلُ وْهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةً أَهْلَهَا أَذَلَّةً ج وكَنْ لِكَ يَفْعَلُوْنَ

৩৫. আমি বরং (সরাসরি হাঁ কিংবা না কোনোটাই না وَإِنِّى مُرْسَلَةٌ إِلَيْهِم بِهَلِيَّةٍ فَنْظِرَةً بِيرَ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى (জবাব) নিয়ে আসে!

এলো তখন সে বললো, তোমরা কি এ ধন সম্পদ وَمَالُ اللَّهِ مَالُ اللَّهِ مَالُ اللَّهِ مَالُ اللَّهِ مَالُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّ (পাঠিয়ে তা) দিয়ে আমাকে সাহায্য করতে চাওং (অপচ) আল্লাহ তায়ালা যা কিছু আমাকে দিয়েছেন তা (তিনি) তোমাদের যা দিয়েছেন তার তুলনায় অনেক উৎকষ্ট, তোমরা তোমাদের এ উপঢৌকন নিয়ে এতোই উৎফুল্পবোধ করছো!

فَهَا الله عَيْدُ مِنا الله عَيْدُ مِنا الديكر ع بَلَ أَنْتُمْ بِهَلِيْتِكُمْ تَفْكُونَ

৩৭. তোমরা (বরং এগুলো নিয়ে) তাদের কাছেই ফিরে যাও (যারা তোমাদের পাঠিয়েছে এবং গিয়ে তাদের বলো), আমি অবশ্যই ওদের মোকাবেলায় এমন এক ^ قبل لَهُرْ بِهَا وَلَنُحْرِ مِنْهُمْ أَوْلَةً وَهُمْ الْمَرْ فِيهَا وَلَنُحْرِ مِنْهُمْ أَوْلَةً وَهُمْ الْمَرية যার প্রতিরোধ করার শক্তি ওদের নেই এবং আমি অবশ্যই তাদের সে জনপদ থেকে লাঞ্ছিতভাবে বের করে দেবো, (পরিণামে) ওরা সবাই অপমানিত হবে।

٣٠ اِرْجِعُ اِلَيْهِرْ فَلَنَاْتِيَنَّهُرْ بِجُنُودٍ ١ صغرون

৩৮. সে (নিজের মন্ত্রণা) পরিষদকে বললো, হে আমার ﴿ يَاْتِينِي الْهَلُوُ الْيَكُمُ يَاْتِينِي الْمَلُوُ الْيَكُمُ يَاْتِينِي পারিষদরা, তারা আমার কাছে আত্মসমর্পণ করতে আসার আগেই তার (গোটা) সিংহাসন আমার কাছে (তুলে) নিয়ে আসতে পারে এমন কে (এখানে) আছে ?

بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ

৩৯. বিশাল (বপুবিশিষ্ট) এক জ্বিন দাঁড়িয়ে বললো. তোমরা বর্তমান স্থান থেকে উঠবার আগেই আমি তা قَبْلَ أَنْ تَقُوْاً مِنْ مَّقَامِكَ ء وَ إِنِّى عَلَيْهِ अप्तां अप्तां, এ विषराय अप्त अप्ति عَلَيْه وَالِّي عَلَيْهِ অবশ্যই বিশ্বস্ত ক্ষমতাবান।

٣٩ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا أُتِيْكَ بِهِ لَقَوِى الْمِيْنَ

৪০. আরেক জিন- যার কাছে আল্লাহ তায়ালার কেতাবের (किছু विरम्भ) छान ছिला, (माँ फिरा) वलला (टर বাদশাহ), তোমার চোখের (পরবর্তি) পলক তোমার দিকে ফেলার আগেই আমি তা তোমার কাছে নিয়ে আসবো: (কথা শেষ না হতেই) সে যখন দেখলো- তা (সিংহাসন সব কিছুসহ) তার সামনেই দাঁড়ানো, তখন সে বললো, এ তো হচ্ছে (আসলেই) আমার মালিকের অনুগ্রহ: এর মাধ্যমে তিনি আমার পরীক্ষা নিতে চান (এর মাধ্যমে তিনি দেখতে চান), আমি কি শোকর আদায় করি, না না-শোকরী করি; (মূলত) যে ব্যক্তি (আল্লাহ তায়ালার) কৃতজ্ঞতা আদায় করে সে (তো) করে তার

٢٠ قَالَ الَّذِي عِنْكَةَ عِلْرٌ مِّنَ الْكِتٰبِ آنَا اْتِيْكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتُنَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ طَ فَلَهَّا رَأَهُ مُسْتَقِرًّا عِنْكَةً قَالَ هٰنَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي عَلَّ لِيَبْلُونِي ءَأَشْكُو أَثْمَ أَكْفُو م وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّهَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ج وَمَنْ كَفَرَ فَانَّ رَبِّي

২৭ সূরা আন নামল

Obe

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|---|
| নিজের কল্যাণের জন্যেই, আর যে ব্যক্তি (তা) প্রত্যাখ্যান করে (সে যেন জেনে রাখে), তোমার মালিক সব ধরনের অভাব থেকে মুক্ত ও একান্ত মহানুতব। | غَنِي گَرِيم |
| 8১. সে বললো, তোমরা (এবার) তার সিংহাসনের আকৃতিটা একটু বদলে দাও, আমরা দেখি সে সত্যিই তা টের পায় কিনা, না সেও তাদের দলে শামিল হয়ে যায়, | ا مَّ قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْهَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيَّ اَأَ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ |
| যারা পথের দিশা পায় না। ৪২. অতপর (যখন) সে (রাণী) এলো (তখন তাকে | ٣٢ فَلَهًا جَاءَتْ قِيْلَ آمْكَنَا عَرْشُكِ ، قَالَتْ |
| জিজ্ঞেস করা হলো), তোমার সিংহাসন কি (দেখতে) এমন ধরনের (ছিলো)। সে বললো হাা, (মনে হয়) এ ধরনেরই (ছিলো, আসলে) এ ঘটনার আগেই আমাদের কাছে সঠিক জ্ঞান এসে গেছে এবং আমরা (সে মর্মে) | كَأَنَّهُ مُوع وَأُوتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِيِيْنَ مُسْلِيِيْنَ |
| আত্মসমর্পণও করেছি। ৪৩. তাকে যে জিনিসটি (ঈমান আনতে এ যাবত) বাধা দিয়ে রেখেছিলো; তা ছিলো আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে অন্যের গোলামী করা; তাই (এতো দিন পর্যস্ত) সে ছিলো কাফের সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত। | ٣٣ وَمَنَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُكُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ، إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قُوْرٍ اللّٰهِ ، |
| 88. (অতপর) তাকে বলা হলো, যাও, এবার প্রাসাদে প্রবেশ করো, সে যখন (প্রাসাদের আয়নাসম বারানা) দেখলো তখন তার মনে হলো, এ যেন (স্বচ্ছ জলাশয়) | ٣٣ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِى الصَّرْحَ عَ فَلَهَّا رَأَتُهُ مَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكْشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ء قَالَ إِلَّهُ |
| এবং (এটা মনে করেই) সে তার উত্তয় হাঁটু পর্যন্ত কাপড় টেনে তুলে ধরলো; (তার এ আচরণ দেখে) সে (সোলায়মান) বললো, এটি হচ্ছে ক্ষটিক নির্মিত প্রাসাদ; সে (মহিলা) বললো, হে আমার মালিক, আমি | مُرْحٌ مُّرَدٌ مِّنَ قَوَارِيْرَ هَ قَالَتُ رَبِّ إِنِّي فَالَتُ رَبِّ إِنِّي فَالَمْنُ رَبِّ إِنِّي فَالَمْنُ لِلَّهِ رَبِّ فَلَكُمْنُ لِلَّهِ رَبِّ |
| (এতোদিন) আমার নিজের ওপর যুলুম করে এসেছি, আজ আমি (আনুগত্যের স্বীকৃতি দিয়ে) সোলায়মানের সাথে আল্লাহ রব্বুল আলামীনের ওপর ঈমান আনলাম। | الْعَلَمِيْنَ ع |
| ৪৫. আমি সামুদ জাতির কাছে তাদের ভাই সালেহকে পাঠিয়েছিলাম (সে বলেছিলো), তোমরা আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করো, (এ আহ্বানের সাথে সাথে) তার (জাতির) লোকেরা (মোমেন ও কাফের এই) দু'দলে বিভক্ত হয়ে পরম্পর বিতর্কে লিপ্ত হয়ে গোলো। | ٣٥ وَلَقَنْ أَرْسَلْنَا ۚ إِلَى ثَبُوْدَ آَهَاهُرْ مُلِحًا أَنِ بِإِعْبُنُوا اللَّهَ فَاِذَا هُرْ فَرِيْقُنِ يَخْتَصِّبُونَ |
| ৪৬. (সে বললো, একি হলো তোমাদের!) তোমরা কেন (ঈমানের) কল্যাণের পরিবর্তে (আ্যাবের) অকল্যাণ ত্রান্তি করতে চাইছো, কেন তোমরা আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করছো না, (এতে করে) তোমাদের ওপর অনুগ্রহ করা হতে পারে। | ٣٦ قَالَ يُقَوْمِ لِي تَسْتَعْطِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ عَبْلَ الْحَسَنَةِ عَ لَوْلَا تُسْتَغْفِرُوْنَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُوْمَوُنَ |
| 8 ৭. তারা বললো, আমরা তোমাকে এবং তোমার সাথে যারা আছে তাদের সবাইকে আমাদের দুর্ভাগ্যের কারণ হিসেবেই (দেখতে) পেয়েছি; (এ কথা শুনে) সে বললো, (আসলে) তোমাদের শুভাশুভ সবই তো আল্লাহ তায়ালার এখতিয়ারে; (মূলত) তোমরা এমন এক দলের লোক যাদের (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) পরীক্ষা ক্ররা হচ্ছে। | ٣٠ قَالُوا اطَّيْرُنَا بِكَ وَبِينَ مُّعَكَ ، قَالَ طَيْرُكُر عِنْنَ اللهِ بَلْ أَنْتُر قُوْمٌ تُفْتَنُونَ |
| ৪৮. সে শহরে ছিলো (নেতা গোছের) এমন নয় জন লোক, যারা আমার যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করে বেড়াতো, সংশোধনমূলক কোনো কাজই তারা করতো না। | ٨ ٣ وكَانَ فِي الْهَرِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهُمْ يَّفْسِ وُنَ |
| ২৭ সূরা আন নামল | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১৯ ওয়া ক্বালাল্লাযীনা |
|---|--|
| ৪৯. (একদিন) তারা (একজন আরেকজনকে) বললো তোমরা আল্লাহর নামে সবাই কসম করো যে, আমরা রাতের বেলায় তাকে ও তার (ঈমানদার) সাথীদের মেরে ফেলবো, অতপর (তদন্ত এলে) আমরা তার উত্তরাধিকারীকে বলবো, তার পরিবার-পরিজনকে হত্যা করার সময় আমরা তো (সেখানে) উপস্থিত ছিলামই না, | ٢٩ قَالُوْا تَقَاسَّهُوْا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهٌ وَاَهْلَهُ ثُرَّ لَا لَكُنَيِّتَنَّهٌ وَاَهْلَهُ ثُرَّ لَنَقُولَى لَا لَهُ لَكُبَيِّتَنَّهٌ وَاَهْلَهُ وَإِنَّا لَنَقُولَى لَولِيِّهِ مَا شَهِلْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَٰرِقُونَ |
| আমরা অবশ্যই সত্য কথা বলছি। ৫০. তারা (যখন সালেহকে মারার জন্যে এ) চক্রান্ত করছিলো, (তখন) আমিও (তাকে রক্ষা করার জন্যে এমন এক) কৌশল (বের) করলাম, যা তারা (বিন্দুমাত্রও) বুঝতে পারেনি। | $\Delta \hat{V}$ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُر \hat{V} يَشْعُرُونَ \hat{V} |
| ৫১. (হে নবী, আজ) তুমি দেখো, তাদের চক্রান্তের কী পরিণাম হয়েছে, আমি তাদের এবং তাদের জাতির সবাইকে ধ্বংস করে দিয়েছি। | ۵۱ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةٌ مَكْرِهِر لا أَنَّا دَرَّاهُر وَقَوْمُهُر آَجْمَعِيْنَ |
| ৫২. (চেয়ে দেখো,) এ হচ্ছে তাদের ঘরবাড়ি, তাদেরই যুলুমের কারণে তা (আজ) মুখ থুবড়ে পড়ে আছে; অবশ্য এ (ঘটনার) মাঝে জ্ঞানবান মানুষদের জন্যে (শিক্ষার অনেক) নিদর্শন রয়েছে। | ٥٢ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُرْ خَاوِيَةً ' بِهَا ظَلَهُوْا ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً لِقَوْمٍ يَّعْلَهُوْنَ |
| ৫৩. যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করেছে, আমি তাদের (আমার আযাব থেকে) মুক্তি দিয়েছি। | ۵۳ وَ ٱنْجَيْنَا الَّّذِينَ أَمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ |
| ৫৪. আর (এক নবী ছিলো) পৃত, যখন সে তার জাতিকে বললো, তোমরা কেন অশ্লীল কাজ নিয়ে আসো, অথচ তোমরা (এর পরিণাম) ভালো করেই দেখতে পাচ্ছো! | ٥٣ وَلُوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ آتَاْتُوْنَ الْغَاهِشَةَ وَآنَتُوْنَ الْغَاهِشَةَ وَآنَتُوْنَ الْغَاهِشَةَ |
| ৫৫. তোমরা কি (তোমাদের) যৌনতৃত্তির জ্বন্যে নারী বাদ দিয়ে পুরুষদের কাছেই আসবে? (মূলত) তোমরা হচ্ছো একটি মূর্খ জাতি। | ٥٥ أَنِنَّكُرْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ، بَلْ اَنْتُرْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ |
| ৫৬. তার জাতির লোকদের কাছে এছাড়া আর কোনো উত্তরই ছিলো না যে, পৃত পরিবারকে তোমাদের এ জনপদ থেকে বের করে দাও, কেননা এরা কয়েকজন (আসলেই) বেশী ভালো মানুষ। | ٥٦ فَهَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖ ۖ اِلَّا أَنْ قَالُوْاۤ اَغْرِجُوۡاۤ اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّمُرُ ٱنَاسٌّ يَّتَطُّهُرُوْنَ |
| ৫৭. (পরিশেষে) আমি তাকে ও তার পরিবার-পরিজনকে (আযাব থেকে) উদ্ধার করলাম, তবে তার স্ত্রীকে নয়, তাকে আমি পেছনে পড়ে থাকা (আযাবে নিমজ্জিত) মানুষদের সাথে শামিল করে দিয়েছিলাম। | ٥٤ فَاَنْجَيْنُهُ وَاَهْلَهُ إِلَّا امْرَاَتَهُ رَ فَلَّارُنْهَا مِنَ الْغُبِرِيْنَ |
| ৫৮. অতপর (যারা পেছনে রয়ে গেছে) তাদের ওপর আমি (গযবের) বৃষ্টি নাযিল করলাম, যাদের ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিলো তাদের জন্য এ বৃষ্টি, (যা সেদিন) ভীত সম্রস্ত এ জাতির (ওপর) পাঠানো হয়েছিলো কতোই না নিকৃষ্ট ছিলো! | ٥٨ وَٱمْطَرْنَا عَلَيْهِرْ مَّطَرًا ع فَسَاءً مَطَرُ الْهُنْنَرِيْنَ |
| ৫৯. (হে নবী,) তুমি বলো, সমস্ত তারীফ একমাত্র আল্লাহ তায়ালার জন্যেই এবং (যাবতীয়) শান্তি তাঁর সেসব নেক বান্দার জন্যে, যাদের তিনি বাছাই করে নিয়েছেন; (আসলে) কে শ্রেষ্ঠ- আল্লাহ তায়ালা। না এরা- (তাঁর সাথে) যাদের শরীক করে। | 49 قُلِ الْحَمْنُ لِلّٰهِ وَسَلْرٌ عَلَى عِبَادِةِ اللّٰذِينَ اصْطَفٰى ﴿ اللّٰهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ |
| ২৭ সূরা আন নামল ৩৮৮ | মন্যিল ৫ |

৬০. অথবা তিনি (শ্রেষ্ঠ) - যিনি আসমানসমূহ ও যমীন পয়দা করেছেন এবং আসমান থেকে তোমাদের জন্যে পানি বর্ষণ করেছেন, (আবার) তা দিয়ে (যমীনে) মনোরম উদ্যান তৈরী করেছেন, অথচ তার (একটি ক্ষুদ্র) বক্ষ পয়দা করারও তোমাদের ক্ষমতা নেই: (বলো, এসব কাজে) আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্য কেউ মাবুদ আছে কিং বরং তারা হচ্ছে এমন এক সম্প্রদায়, যারা অন্যকে আল্লাহ তায়ালার সমকক্ষ সাব্যস্ত করছে!

৬১. কিংবা তিনি (শ্রেষ্ঠ) - যিনি যমীনকে (সষ্টিকলের) বসবাসের উপযোগী করেছেন, (আবার) তার মাঝে মাঝে প্রবাহিত করেছেন অসংখ্য নদীনালা (যমীনকে সদঢ করার জন্যে) তার মধ্যে পর্বতমালা স্থাপন করেছেন, দুই সাগরের মাঝে (মিষ্টি ও লোনা পানির) সীমারেখা সৃষ্টি করে দিয়েছেন; (বলো, এসব কাজে) আল্লাহ তায়ালার সাথে আর কোনো মাবুদ আছে কিং কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোক (এ সত্যটুকুও) জানে না:

৬২. অথবা তিনিই (শ্রেষ্ঠ) - যিনি কোনো বিপদগ্রস্ত ব্যক্তির ডাকে সাড়া দেন, যখন (নিরুপায় হয়ে) সে তাঁকেই ডাঁকতে থাকে, তখন (তার) বিপদ আপদ তিনি দরীভত করে দেন এবং তিনি তোমাদের এ যমীনে তাঁর প্রতিনিধি বানান: (এসব কাজে) আল্লাহ তায়ালার সাথে আর কোনো মাবদ কি আছে? (আসলে) তোমরা কমই উপদেশ গ্রহণ করে থাকো:

৬৩. কিংবা তিনি (শ্রেষ্ঠ) – যিনি তোমাদের জলে স্থলের (গহীন) অন্ধকারে পথ দেখান, যিনি তাঁর অনুগ্রহ (-সম বৃষ্টি) বর্ষণের আগে তার সুসংবাদ বহন করার জন্যে বাতাস প্রেরণ করেন: (এ সব কাজে) আল্লাহর সাথে অন্য কোনো মাবদ কি আছে? আল্লাহ তায়ালা অনেক মহান, ওরা যা কিছু তাঁর সাথে শরীক করে তিনি তার চাইতে অনেক উধ্বে

বার) অন্তিত্বে আনয়ন করে (মৃত্যুর পর) তা আবার সৃষ্টি করবেন, কে তোমাদের আসমান ও যমীন থেকে রেযেক সরবরাহ করছেন? আছে কি কোনো মাবুদ আল্লাহর সাথে (এসব কাজে)? তাদের তুমি বলো (হে নবী), যদি তোমরা (তোমাদের দাবীতে) সত্যবাদী হও তাহলে (তার সপক্ষে) তোমাদের কোনো প্রমাণ নিয়ে এসো।

৬৪. অথবা তিনি (শ্রেষ্ঠ) – যিনি (গোটা) সষ্টিকে প্রেথম

৬৫. (হে নবী,) তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে, এদের কেউই অদৃশ্য জগতের কিছু জানে না; তারা এও জানে না, কবে তাদৈর আবার (কবর থেকে) উঠানো হবে!

৬৬. (মনে হচ্ছে,) আখেরাত সম্পর্কে এদের জ্ঞান নিশেষ হয়ে গেছে। (না, আসলে তা নয়,) বরং তারা (এ ব্যাপারে) সন্দেহে (নিমজ্জিত হয়ে) আছে, কিন্তু তারা সে সম্পর্কে (জেনে বুঝেই) অন্ধ হয়ে আছে।

৬৭. যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে তারা বলে. আমরা ও আমাদের বাপদাদারা (মৃত্যুর পর) যখন মাটি হয়ে যাবো, তখনও কি আবার আমরা (কবর থেকে) উখিত হবো!

٢٠ أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوْتِ وَالْأَرْضَ وَٱلْوَلْ

لَكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً ، فَالْبَتْنَا بِهِ مَلَ آئِقَ ذَاتَ بَهْجَةِ ۽ مَا كَانَ لَكُرْ أَنْ تُثَبِتُوْا شَجَرَهَا مْ ءَالِلَّهُ مَّعَ اللَّهِ مِ بَلْ هُرْ قَوْمٌ يَعْلِ لُوْنَ

٦١ أمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلْلَهَا ٱنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ عَاجِزًا ، ءَالْهُ مَّعَ الله ، بَلْ أَكْثُو هُمْ لَا يَعْلَهُونَ ء

٣٢ أَمَّنْ يُجِيْبُ الْيُضْطَرُّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ غُلَفًاءَ الْأَرْضِ م ءَالِلَّهُ مَّعَ الله ، قَلَيْلًا مَّا تَنَكُّونَ ،

٣٣ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُهٰ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يَتَّرْسِلُ الرِّيْحَ بُشُرًا ' بَيْنَ يَنَىٰ رَحْمَتِهِ ١ ءَ إِلَّهُ مَّعَ اللَّهِ ، تَعلَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرُكُونَ ،

٣٢ أَشْ يَبْنَوُ الْخَلْقَ ثُمَّ" يُعِيْلُهُ وَمَنْ يَّ ﴿ زُقُكُم مِّنَ السَّهَاءِ وَالْإَرْضِ مَ ءَالُهُ مَّعَ اللهِ وَ قُلْ هَاتُوا بُوهَانَكُورُ إِنْ كُنْتُورُ مَل قَيْنَ

٦٥ قُلُ لا يَعْلَرُ مَنْ فِي السَّبُوٰسِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُونَ أَيَّانَ يُبْعُثُونَ

٢٦ بَلُ ادُّرَكَ عِلْهُمُرْ فِي الْأَحْوَةُ تِنْ بَلْ هُرْ فِي شَكِّ مِنْهَا من بَلْ هُرْ مِنْهَا عَهُونَ ع

٢٠ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُواۤ ءَاذَا كُنَّا تُرٰبًا وَ أَبَأَوُنَا لَيْنَا لَهُ خُرَجُونَ

২৭ সুরা আন নামল

Ora

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আমান্ খালাকা |
|---|---|
| ৬৮. এমন (ধরনের) ওয়াদা তো আমাদের সাথে এবং এর আগে আমাদের বাপ-দাদাদের সাথেও করা | ٨٦ لَقَنْ وُعِنْنَا هٰنَا نَحْنُ وَأَبَاؤُنَا مِنْ |
| হয়েছিলো, (আসলে) এগুলো ভিন্তিহীন কথা ছাড়া আর কিছুই নয়! যা পূর্ববর্তীদের থেকে বর্ণিত হয়ে আসছে। | قَبْلُ ٧ إِنْ هٰذَآ إِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ |
| ৬৯. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা (আল্লাহর) যমীনে সফর করো এবং দেখো অপরাধীদের পরিণাম কি | ٦٩ قُلْ سِيْرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ |
| (ভয়াবহ) হয়েছে ? | كَانَ عَاقِبَةُ الْهُجْرِمِيْنَ |
| ৭০. তুমি ওদের (কোনো) কাজের ওপর দুঃখ করো না, যা কিছু ষড়যন্ত্র ওরা তোমার বিরুদ্ধে করুক না কেন (তাতেও) মনোকুণ্ণ হয়ো না! | 4 وَلَا تَحْزَن عَلَيْهِر وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِيًّا يَهْكُرُونَ |
| ৭১. তারা বলে, যদি তোমরা সত্যবাদী হও তাহলে বলো, (আযাবের) ওয়াদা কখন আসবে! | ا> وَيَقُولُونَ مَتَى مَنَ الْوَعْلُ إِنْ كُنْتُرْ مٰرِقِینَ |
| ৭২. (হে নবী,) তুমি বলো, (আযাবের) যে বিষয়টি তোমরা ত্রান্তিত করতে চাচ্ছো তার কিছু অংশ সম্ভবত তোমাদের পেছনে এসে দাঁড়িয়ে আছে! | حَلَّ عَسَى أَنْ يَّكُونَ رَدِنَ لَكُرْ بَعْضُ الَّذِي تَشْتَعْجِلُونَ |
| ৭৩. অবশ্যই তোমার মালিক মানুষদের প্রতি অত্যন্ত দয়াবান, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই (আল্লাহ তায়ালার অনুহাহের) শোকর আদায় করে না। | ٣٠ وَإِنَّ رَبَّكَ لَنُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ ٱكْثَرَمُر ٧ يَشْكُرُونَ |
| ৭৪. যা কিছু তাদের মন গোপন করে, আর যা কিছু তা বাইরে প্রকাশ করে, তোমার মালিক তা ভালো করেই জনেন। | ٤٣ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَرُ مَا تُكِنَّ صُّ وُرُمُر وَمَا يُعْلِنُونَ |
| ৭৫. আসমান ও যমীনে এমন কোনো গোপন রহস্য নেই যা (আমার) সুস্পষ্ট গ্রন্থে (লিপিবদ্ধ) নেই। | 43 وَمَا مِنْ غَالِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ الْآ فِيْ كِتْبٍ مَّبِيْنٍ |
| ৭৬. অবশ্যই এ কোরআন বনী ইসরাঈলদের ওপর তাদের এমন অনেক কথা প্রকাশ করে দেয়, যার ব্যাপারে তারা (একে অপরের সাথে) মতভেদ করে থাকে। | ٢٦ إِنَّ مٰنَا الْقُرْانَ يَقُصُّ عَلَى بَنِيَ إِسْرَاءِيْلَ اكْثَرَ الَّذِي مُرْفِيهِ يَخْتَلِفُونَ |
| ৭৭. নিসন্দেহে এ (কোরআন) হচ্ছে ঈমানদারদের জন্যে (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) হেদায়াত ও রহমত। | إِنْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ وَاللّهُ وَا لِلللّهُ وَاللّهُ |
| ৭৮. (হে নবী,) তোমার মালিক নিজ প্রজ্ঞা অনুযায়ীই এদের মাঝে মীমাংসা করে দেবেন, তিনি পরাক্রমশালী, | ٨٨ إِنَّ رَبُّكَ يَقْضِي بَيْنَهُر بِعُكْمِهِ ع وَهُوَ |
| তিনি সর্বজ্ঞ, | الْعَزِيْزُ الْعَلِيْرُ ٢٦ |
| ৭৯. অতএব (হে নবী, সর্বাবস্থায়ই) তুমি আল্লাহ তায়ালার ওপর নির্ভর করো; নিসন্দেহে তুমি সুস্পষ্ট সত্যের ওপর (প্রতিষ্ঠিত) রয়েছো। | 49 فَتَوَكَّلُ عَلَى اللهِ اللهِ التَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْهَيْرِي الْهُيِيْرِي |
| ৮০. তুমি মৃত লোকদের কখনো (কিছু) শোনাতে পারবে | أَنْكَ لَا تُشْعُ الْبَوْتَى وَلَا تُشْعُ الصَّرِ أَنْكَ لَا تُشْعُ الْبَوْتَى وَلَا تُشْعُ الصَّرِ |
| না, বধিরকেও তোমার আওয়ায শোনাতে পারবে না, (বিশেষ করে) যখন তারা (তোমাকে দেখে) মুখ ফিরিয়ে নেয়'। | النَّعَاءُ إِذَا وَلَوْا مُدْبِرِيْنَ |
| ২৭ সূরা আন নামল | মন্যিল ৫ |

| কে | রিআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আমান্ খালাক্য |
|-------------|--|---|
| থে | . (একইভাবে) তুমি অন্ধদেরও (তাদের) গোমরাহী কে সঠিক পথের ওপর আনতে পারবে না; তুমি তো | ٨١ وَمَا آنْتَ بِهٰرِي الْعُثَى عَنْ ضَلَلَتِهِرْ ا |
| আ | ্তাদেরই (তোমার কথা) শোনাতে পারবে, যারা মার আয়াতসমূহের ওপর ঈমান আনে এবং সে যায়ী (আল্লাহ তায়ালার কাছে) আত্মসমর্পণ করে। | إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يَّوْمِنُ بِأَيْتِنَا فَهُرْ مِنْ الْمِيْدَا فَهُرْ مَسْلِبُونَ مَسْلِبُونَ |
| | বারা (আরাহ ভারাণার কাছে) আর্থসমপন করে। . (গুনে রাখো,) যখন আমার প্রতিশ্রুত সময় তাদের | مسيون ٨٢ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِـ (أَهْرَجْنَا لَهُـ (|
| ওপ | র এসে পড়বে, তখন আমি মাটির ভেতর থেকে | |
| \ | দর জন্যে এক (অদ্বৃত) জীব বের করে আনবো, যা | دَالَّةً مِّنَ الْإَرْضِ تُكَلِّمُهُ لِا أَنَّ النَّاسَ كَانُوا |
| | লৌকিকভাবে) তাদের সাথে কথা বলবে, মানুষরা নেকেই) আমার আয়াতসমূহে বিশ্বাস করে না। | بِاٰیٰتِنَا اَ یُوْقِنُونَ ع |
| থে | . (সেদিনের কথা ভাবো,) যেদিন আমি প্রতিটি উষ্মত ক এক একটি দলকে এনে জড়ো করবো, যারা আমার যাতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, অতপর তাদের | ٨٢ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّسَى |
| | भेत्र महाराज्यात्र व्यावनात्र करत्र एवं, कवनात्र कारमञ्जू भेत्र महाम जेनमहाम जान करत्र हमग्रा शरत । | يُّكَزِّبُ بِالْيٰتِنَا فَهُر يُوزَعُونَ |
| হাৰ্থি | . এমনি করে ওরা যখন (আল্লাহ তায়ালার সামনে) মর হবে, তখন (আল্লাহ তায়ালা তাদের) জিজ্জেস | ٨٣ مَتَّى إِذَا مِّأَءُوْا قَالَ أَكَنَّابُتُرْ بِأَيْتِي |
| কার জ্ঞা | বেন, তোমরা কি আমার আয়াতসমূহকে (শুধু এ মণেই) অস্বীকার করেছিলে এবং তোমাদের (সীমিত) ন দিয়ে তোমরা সে (আয়াতের মর্ম) পর্যন্ত পৌছুতে রানি, (বলো, তার সাথে) তোমরা (আর কি) কি | ولَـرْ تُحِيْطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا ذَا كُنْتُـرْ تَعْمَلُونَ |
| আচ | রণ করতে ? | |
| করে | . যেহেতু এরা (দুনিয়ার জীবনে নানা ধরনের) যুলুম রছে, (তাই আজ) এদের ওপর (আযাবের) প্রতিশ্রুতি রা হয়ে যাবে, অতপর এরা (আর) কোনো রকম | ٨٥ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِهَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا |
| উদ | বাচ্যও করতে পারবে না। | يَنْطِقُونَ |
| ক | . এরা কি দেখেনি, আমি রাতকে এ জন্যেই তৈরী রছি যেন তারা তাতে বিশ্রাম করতে পারে, | ٨٦ أَلَمْ يَرُواْ أَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوا |
| আ | পরদিকে জীবিকার প্রয়োজনে) দিনকে বানিয়েছি লোকোজ্জ্বল; অবশ্যই এর (দিবারাত্রির পার্থক্যের) | فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيْتِ |
| | ঝ তাদের জন্যে অনেক নিদর্শন রয়েছে, যারা আল্লাহ গালার ওপর ঈমান আনে। | لِّقَوْمٍ يُّوْمِنُونَ |
| আ | . যেদিন শিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে, যারা আসমানসমূহে ছ এবং যারা যমীনে আছে, তারা সবাই সেদিন ভীত | ٨٠ وَيُوْمُ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي |
| আগ | ন্ত হয়ে পড়বে, তবে (তাদের কথা) আলাদা যাদের ব্লাহ তায়ালা (এ থেকে বাঁচাতে) চাইবেন; সবাই | السَّهٰوٰ وَمَنْ فِي الْأَرْضَ لِلَّا مَنْ شَاءَ |
| | দিন তাঁর সামনে অবনমিত অবস্থায় হাযির হবে। . (হে মানুষ, আজ) তুমি পাহাড়কে দেখতে পাচ্ছো, | الله ، وكُلُّ أَتَوْهُ دُخِرِينَ |
| তুষি | . (৫২ মানুম, আজ) ত্রাম শাহাড়ফে দেবতে শাতেরা, ম মনে করে নিয়েছো তা অনড় হয়ে দাঁড়িয়ে আছে; ভু কেয়ামতের দিন) এ পাহাড়গুলোই মেঘের মতো | ٨٨ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِنَةً وَّمِيَ |
| উড় | তে থাকবে, এটা আল্লাহ তায়ালারই সৃষ্টির শৈল্লিক ণুণতা, যিনি প্রতিটি জিনিস মযবুত করে বানিয়ে | تُمرُّ مَرُّ السَّحَابِ مَ مُنْعَ اللَّهِ الَّذِي ٓ اَتْقَى |
| রের | ুণভা, বিদি প্রভিচি জিনিপ মব্বুভ করে বানিরে খেছেন; তোমরা যা কিছু করছো অবশ্যই আল্লাহ য়ালা সেসব ব্যাপারে সম্যক অবগত আছেন। | كُلُّ شَيْءٍ ﴿ إِنَّهُ خَبِيْرٌ ۗ أَبِهَا تَفْعَلُونَ |
| | . (সেদিন) যে ব্যক্তি কোনো নেক কাজ নিয়ে (আমার | ٨٩ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٌ خَيْرٌ مِّنْهَا ج وَهُرْ |
| | মনে) হাযির হবে তাকে উৎকৃষ্ট (প্রতিফল) দেয়া হবে, ন ধরনের লোকেরা (সেদিনের) ভীতিকর অবস্থা | مِّنْ فَزَعِ يَوْمَئِنِ أَمِنُونَ |
| | কেও নিরাপদ থাকবে। | ري ري ري در ري |

মন্যিল ৫

থেকেও নিরাপদ থাকবে। ২৭ সূরা আন নামল

পারা ২০ আমান্ খালাকুা

৯০. (অপরদিকে) যে ব্যক্তি কোনোরকম মন্দ কাজ নিয়ে আসবে, তাদের (সেদিন) উন্টো করে আগুনে নিক্ষেপ করা হবে, (জাহান্নামের প্রহরীরা তাদের বলবে); তোমরা যা কিছু করতে তার বিনিময় এ ছাড়া আর কি তোমাদের দেয়া যাবে ?

٩٠ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْمُهُمْ فِي النَّارِ ﴿ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

৯১. (বে নবী, তুমি বলো,) আমাকে তো শুধু এটুকুই আদেশ দেয়া হয়েছে যেন আমি এ (মক্কা) নগরীর (আসল) মালিকের এবাদাত করি, যিনি একে সম্মানিত করেছেন, সব কিছ তার জন্যে (নিবেদিত), আমাকে (এও) হুকুম দেয়া হয়েছে যেন আমি (তাঁরই আদেশের সামনে) আত্মসমর্পণ করি.

إِنَّمَ الْمِرْتُ اَنْ اَعْبُنَ رَبَّ مٰنِ الْبَلْنَةِ
 الَّذِي مَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ز وَّأْمِرْتُ اَنْ
 اكْوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ لا

৯২. আমি যেন কোরআন তেলাওয়াত করি, অতপর যে ব্যক্তি হেদায়াতের পথ অনুসরণ করবে সে তো তা করবে তার নিজের (মুক্তির) জন্যেই, আর যে ব্যক্তি (এরপরও) গোমরাহ থেকে যাবে, (তাকে শুধু) তুমি (এটুকু) বলো, আমি তো কেবল (তোমার জন্যে জাহান্নামের) একজন সতর্ককারী মাত্র!

٩٢ وَآنُ آتْلُوا الْقُرْانَ عَ فَمَنِ اهْتَنَىٰ فَاتَّهَا يَهْتَنَىٰ فَاتَّهَا يَهْتَنِينَ لِنَقْسِهِ عَ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّهَا آنَا مِنَ الْهُنْلِرِيْنَ

৯৩. তুমি আরো বলো, সমস্ত প্রশংসা একমাত্র আল্পাহ তায়ালার জন্যেই, অচিরেই তিনি তোমাদের এমন কিছু নিদর্শন দেখাবেন, যা (দেখলে) তোমরা তা সহজেই চিনে নেবে; তোমরা যা কিছু আচরণ করছো আল্পাহ তায়ালা সে সম্পর্কে মোটেই বেখবর নন।

٩٣ وَقُلِ الْحَمْنُ لِلَّهِ سَيَّرِيْكُمْ الْيَّهِ فَتَعْرِفُونَهَا ﴿ وَمَا رَبَّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ عَ

স্রা আল কাছাছ

মক্কায় অবতীর্ণ – আয়াত ৮৮ ক্লকু ৯ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةً أيَاتٍ : ٨٨ رُكُوْعٌ : 9 بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ

১. ত্ম-সীম-মীম।

ا طسب

২. এ **হচ্ছে সুস্পষ্ট কেতাবের আ**য়াত।

٢ تِلْكَ أَيْتُ الْكِتْبِ الْمُبِيْنِ

৩. (হে নবী, এ আয়াতসমূহের মাধ্যমে) আমি তোমাকে মূসা ও ফেরাউনের কিছু ঘটনা ঠিক ঠিক করে বলে দিতে চাই, (এটা) তাদের জন্যে, যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর সমান আনে।

٣ نَتْلُوا عَلَيْكَ مِنْ تَّبَا مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ
 بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يَّوْمِنُونَ

8. (ঘটনাটা ছিলো এই,) ফেরাউন (আল্লাহর) যমীনে অনেক শক্তিশালী হয়ে উঠেছিলো, সে তার (দেশের) অধিবাসীদের বিভিন্ন শ্রেণীতে বিভক্ত করে রেখেছিলো, সে তাদের একটি দলকে হীনবল করে রেখেছিলো, সে তাদের পুত্রদের হত্যা করতো এবং নারীদের জীবিত রেখে দিতো; অবশ্যই সে ছিলো (যমীনে) বিপর্যয় সৃষ্টিকারী ব্যক্তিদের একজন।

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ آهَلَهَا شِيعًا يَّشْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُرْ يُنَبِّحُ آبْنَآءَمُرْ وَيَسْتَحْمِ آبْنَآءَمُرْ وَيَسْتَحْمِ نِسَآءَمُرْ لَا إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمَفْسِرِيْنَ
 الْمَفْسِرِيْنَ

৫. (ফেরাউনের এসব নিপীড়নের মোকাবেলায়) আমি সে যমীনে যাদের হীনবল করে রাখা হয়েছিল তাদের ওপর (কিছুটা) অনুগ্রহ করতে এবং আমি তাদের (ফেরাউনের সেবাদাস থেকে উঠিয়ে দেশের) নেতা বানিয়ে দিতে এবং তাদেরকে (এ যমীনের) উত্তরাধিকারী বানিয়ে দেয়ার এরাদা করলাম;

٥ وَتُرِيْنُ أَنْ تَّبَيَّ عَلَى الَّنِيْنَ اسْتُضْعِفُوا فِي
 الْاَرْضِ وَنَجْعَلَمُر اللَّهِةُ وَنَجْعَلَمُر الْوٰرِثِيْنَ لا

७. আমি (ইছা करनाम) সে দেশে তাদের ক্ষমতার আসনে وَوُوَى فَرِعَ فَرِعَوْنَ مَاكَرَ فَلَا مَاكَرَ فَي الْأَرْضِ وَنُوِى فَرْعَوْنَ أَعُمْرُ فِي الْأَرْضِ وَنُوِى فَرْعَوْنَ أَعُمْرُ فِي الْأَرْضِ وَنُوِى فَرْعَوْنَ أَعُمْرُ فِي الْمَارِقِينَ الْعُمْرُ فِي الْأَرْضِ وَنُوِى فَرْعَوْنَ أَعْمَدُ اللهِ ال

২৮ সুরা আল কাছাছ

৩৯২

১৫. (একদিন) সে নগরীতে প্রবেশ করলো, যখন (সেখানে) নগরবাসীরা অসতর্ক অবস্থায় (আরাম কর) ছিলো, অতপর সে সেখানে দু'জন মানুষকে মারামারি করতে দেখলো, এদের একজন ছিলো তার নিজ জাতি (বনী ইসরাঈলের) আর দিতীয় ব্যক্তি ছিলো তার শক্র দলের (লোক), যে ব্যক্তি ছিলো তার দলের. সে তখন দ্বিতীয় ব্যক্তির মোকাবেলায় তার সাহায্য চাইলো, যে ছিলো তার শত্রু দলের, তখন মূসা তাকে একটি ঘূষি মারলো, এভাবে সে তাকে হত্যাই করে ফেললো, (সাথে সাথে অনুতপ্ত হয়ে) সে বললো, এ তো একটা শয়তানী কাজ: অবশ্যই সে (হচ্ছে মানুষের) দুশমন এবং প্রকাশ্য বিভ্রান্তকারী।

١٥ وَدَغَلَ الْهَىيْنَةَ عَلَٰى حِيْنِ غَفْلَة مِّيْ أَهْلُهَا فَوَجَلَ فَيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتلَٰى ثَ فُنَ ا مِنْ شِيْعَتِهِ وَهَٰنَ ا مِنْ عَنُوبِ عِ فَاسْتَغَاثُهُ الَّٰنِي مِنْ شِيْعَتِهِ عَلَى الَّذِينَ مِنْ عَدُّوِّهِ لا فَوكَزَةً مُوسى فَقَضى عَلَيْد في قَالَ هٰنَ ا من عَهَل الشيطي ، إنَّهُ عَنُو مُضِلٌّ مُبِينَ

১৬. সে (আরো) বললো, হে আমার মালিক, (অনিচ্ছাকত এ কাজ করে) আমি তো আমার নিজের ওপর (বড়ো) যুলুম করে ফেলেছি (হে আল্লাহ তায়ালা), তুমি আমার্কে ক্ষমা করে দাও, অতপর আল্লাহ তায়ালা তাকে ক্ষমা করে দিলেন কেননা তিনি হচ্ছেন ক্ষমাশীল ও পরম দয়াল।

١٦ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَهْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ مَ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

১৭. সে (আরো) বললো, হে আমার মালিক, তুমি যেভাবে আমার ওপর মেহেরবানী করেছো, (সে অনুযায়ী) আমিও (তোমাকে প্রতিশ্রুতি দিচ্ছি) আমি আর কখনো কোনো অপরাধী ব্যক্তির জন্যে সাহায্যকারী হবো না।

١٤ قَالَ رَبِّ بِهَا ٱلْعَهْتِ عَلَى قَلَى ٱكُونَ ظَهِيْرًا لِلْلُهُجُرِمِيْنَ

১৮. অতপর ভীত শংকিত অবস্থায় সে নগরীতে তার ভোর হলো, হঠাৎ সে দেখতে পেলো, আগের দিন যে ব্যক্তি তার কাছে সাহায্য প্রার্থনা করেছিলো, সে (আবার) তাকে সাহায্যের জন্য চীৎকার করছে; মুসা (এবার) তাকে বললো, তুমি তো দেখছি ভারী ভেজালে লোক !

١٨ فَأَشْبَعَ فِي الْهَلِيْنَةِ غَالَفًا يَّتَرَقَّبُ فَاذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَةً بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ م قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَغُومَ مَّبِينًا

১৯. (তারপরও) যখন সে (ও ফরিয়াদী ব্যক্তিটি) তাদের উভয়ের শক্রর ওপর হাত উঠাতে চাইলো (তখন এ ফরিয়াদী ব্যক্তিটি মনে করলো, মুসা বুঝি তাকে মেরেই ফেলবে), তাই সে বললো, তুমি কি আজ আমাকে সেভাবেই হত্যা করতে চাও, যেভাবে কাল তুমি এক ব্যক্তিকে হত্যা করেছো, তুমি তো যমীনে দারুণ বেচ্ছাচারী হতে চলেছো, তুমি কি মোটেই শাস্তি স্থাপনকারী হতে চাও না!

١٩ فَلَهَّ آَنُ آرَادَ آَنُ يَّبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَنُوًّ لَّهُمَا لا قَالَ يُمُوْسَى أَتُرِيْكُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۚ بِإِلْاَمْسِ لَهِ إِنْ تُرِيْدُ إِلَّا أَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُويْدُ أَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ

২০. (এর কিছুক্ষণ পরই) এক ব্যক্তি নগরীর (আরেক) প্রান্ত থেকে দৌড়ে এসে বললো, হে মুসা (আমি এমাত্র ভনে এলাম), ফেরাউনের দরবারীরা তোমাকে হত্যা করার ব্যাপারে পরামর্শ করছে, অতএব তুমি এক্ষুণি (শহর থেকে) বের হয়ে যাও, আমি হচ্ছি তোমার একজন ভভাকাংখী (বন্ধু)!

٢٠ وَجَاءَ رَجُلٌ مِّن أَقْصَا الْهَلِيْنَة يَسْعَى ز قَالَ يُمُوسَى إِنَّ الْهَلَا يَاْتَهِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجُ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّصِحِيْنَ

২১, অতপর সে ভীত আডংকিত অবস্তায় নগরী থেকে বের হয়ে গেলো এবং (যেতে যেতে) বললো, হে মালিক, তুমি আমাকে যালেম জাতি (-র হাত) থেকে রক্ষা করো।

٢١ فَخَرَجَ مِنْهَا خَالِفًا يَّتَرَقَّبُ زِ قَالَ رَبِ نَجِّني مِنَ الْقَوْ الظُّلبِينَ ع

আমাকে সঠিক পথই দেখাবেন।

أَنْ يَهْدِينِيْ سَوَاءَ السّبِيلِ

২৮ সুরা আল কাছাছ

₹088

২৩. অবশেষে যখন সে মাদইয়ানের (একটি) পানির (কৃপের) কাছে পৌছলো, তখন দেখলো তার পাশে অনেক মানুষ, তারা (পশুদের) পানি পান করাচ্ছে এবং তাদের অদূরে সে দু জন রমণীকে (দেখতে) পেলো, যারা (নিজ নিজ পশুদের) আগলে রাখছে, সে (তাদের) জিজ্ঞেস করলো, তোমাদের কি হলো (তোমরা পশুদের পানি খাওয়াচ্ছো না)? তারা বললো, আমরা (পশুদের) পানি খাওয়াতে পারবো না, যতোক্ষণ না এ রাখালরা (তাদের পশুদের) সরিয়ে না নিয়ে যায় এবং আমাদের পিতা একজন বৃদ্ধ মানুষ বলে আমরা পশুদের পানি খাওয়াতে নিয়ে এসেছি)।

٢٣ وَلَهَّا وَرَدَ مَاءَ مَلْيَنَ وَجَلَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ لَهُ وَوَجَلَ مِنْ دُونِهِمُ النَّاسِ يَسْقُوْنَ لَهُ وَوَجَلَ مِنْ دُونِهِمُ النَّاسِ يَسْقُونَ لَهُ وَوَجَلَ مِنْ خَطْبُكُهَا وَقَالَتَا امْرَاتَيْنِ تَنُودُونَا عَقَالَ مَا خَطْبُكُهَا وَقَالَتَا لَا مَا خَطْبُكُهَا وَقَالَتَا لَا مَا خَطْبُكُهَا وَقَالَتَا لَا مَا خَطْبُكُهَا وَقَالَتَا لَا يَعْمَلُونَ الرِّعَآءُ عِلَى وَابُونَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ

২৪. (একথা শোনার পর) সে এদের (পশুণুলোকে) পানি খাইয়ে দিলো, তারপর (সরে) একটি (গাছের) ছায়ার দিকে গেলো এবং (আল্লাহকে) বললো, হে আমার মালিক, (এ মুহূর্তে) তুমি (নিরাপদ আশ্রয় হিসেবে) যে নেয়ামতই আমার ওপর নাযিল করবে, আমি একাস্কভাবে তারই মুখাপেক্ষী হয়ে থাকবো।

٢٣ فَسَقَى لَهُمَا ثُرَّ تَوَلَّى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّى لِمَا ۖ اَنْزَلْسَ إِلَى ۚ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ

২৫. (আল্লাহ তারালার নেয়ামত আসতে দেরী হলো না, মূসা দেখতে পেলো) সে দূই রমণীর একজন লজ্জা জড়ানো অবস্থায় তার কাছে এলো এবং বললো, আমার পিতা তোমাকে তার কাছে ডেকেছেন, তুমি যে আমাদের (পশুগুলোকে) পানি খাইয়ে দিয়েছিলে তার জন্যে তিনি তোমাকে কিছু পারিশ্রমিক দিতে চান; অতপর সে তার কথামতো তার (পিতার) কাছে এলো এবং (নিজের) কাহিনী তার কাছে বর্ণনা করলো, (সব শুনে) সে (মূসাকে) বললো, তুমি কোনো ভর করো না। (এখন) তুমি যালেমদের কাছ থেকে বেঁচে গেছো।

70 فَجَاءَتُهُ إِحْلُىهُمَا تَهْمِى عَلَى اسْتِحْيَاءٍ وَ
قَالَتُ إِنَّ أَبِى يَلْعُوْكَ لِيَجْزِيكَ أَجْرَ مَا
سَقَيْسَ لَنَا ء فَلَهًا جَاءًةٌ وقَصَّ عَلَيْهِ
الْقَصَصَ لا قَالَ لا تَخَفُ رَتَّةً نَجُوْتَ مِنَ
الْقَوْا الظَّلِيدَى

২৬. সে দু'জন (রমণীর) একজন তার (পিতাকে) বললো, হে (আমার) পিতা, একে বরং তুমি (তোমার) কাজে নিয়োগ করো, কেননা তোমার মঙ্কুর হিসেবে সে (ব্যক্তিই) উত্তম (বলে প্রমাণিত) হবে, যে হবে (শারীরিক দিক থেকে) শক্তিশালী এবং (চ্বিত্রের দিক থেকে) বিশ্বস্তঃ।

٢٦ قَالَتْ إِحْلُنْهُمَا يَّابَتِ اسْتَأْجِرْةُ رَ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجِرْةُ رَ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجِرْتُ الْقَوِيُّ الْأَمِيْنُ

২৭. (এরপর রমণীদের) পিতা (তাকে) বললো, আমি আমার এ দুই মেয়ের একজনকে তোমার সাথে বিয়ে দিতে চাই, (তবে তা হবে) এ কথার ওপর, তুমি আট বছর আমার কাজ করবে, যদি তুমি (আট বছরের জায়গায়) দশ বছর পুরো করতে চাও, তবে তা হবে একান্ত তোমার ব্যাপার, আমি তোমার ওপর কোনো কট (কর শর্ত) আরোপ করতে চাই না; আল্লাহ তায়ালা চাইলে তুমি আমাকে সদাচারী ব্যক্তি হিসেবেই দেখতে পাবে।

٢٧ قَالَ إِنِّيْ أُرِيْدُ أَنْ أُنْكِحَكَ إِحْنَى اَنْ أَنْكِحَكَ إِحْنَى اَبْنَتَى مُّ فَانِي اَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَّنِي اَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَّنِكَ عَوْماً حِجَع عَنَانِ أَتْمَنْ عَشْرًا فَيِنْ عِنْدِكَ عَوْما أَرْدِنْ أَنْ أَشَى الشَّوِدُنِيْ إِنْ شَاءً الله مِنَ الصَّلِحِيْنَ

২৮. সে (এতেই রাথি হলো এবং) বললো (ঠিক আছে), আমার এবং আপনার মাঝে এ চুক্তিই (পাকা হয়ে) থাকলো; আপনার দেয়া দু'টো মেয়াদের যে কোনো একটি যদি আমি প্রণ করি, তাহলে (আপনার পক্ষ থেকে) আমার ওপর কোনো বাড়াবাড়ি করা হবে না (এ নিক্য়তাটুকু আমি চাই); আমাদের এ কথার ওপর আল্লাহ তায়ালাই সাক্ষী (হয়ে থাকলেন)।

٢٨ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِى وَبَيْنَكَ ﴿ اَيَّهَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى الْعَلَمُ عَلَمُ عَلَمْ عَل

২৯. অতপর মৃসা যখন (তার চুক্তিবদ্ধ) মেয়াদ পূর্ণ করে নিলো, তখন সপরিবারে (নিজ দেশের দিকে) রওনা

٢٩ فَلَمًّا قَضَى مُوْسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِٱهْلِهِ

২৮ সুরা আল কাছাছ

360

করলো, যখন সে ত্র পাহাডের পাশে আগুন দেখতে পেলো, তখন সে তার পরিবারের লোকদের বললো, তোমরা (এখানেই) অপেক্ষা করো, আমি আগুন দেখতে পেয়েছি, সম্ভবত আমি সেখান থেকে (রাস্তাঘাট সম্পর্কিত) কোনো খোঁজ খবর নিয়ে আসতে পারবো, আর তা না হলে (কমপক্ষে) জুলম্ভ আগুনের কিছু টুকরো তো নিয়ে আসতেই পারবো যাতে তোমরা আগুন পোহাতে পারবে ।

أُنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۽ قَالَ لِإَهْلِهِ امْكُثُوْ آ إِنِّي أَنسُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرِ أَوْ جَنْ وَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ

উপত্যকার ডান পাশের পবিত্র ভূমিস্থিত একটি গাছ থেকে الْوَ إِدِي مِنْ شَاطِئِ الْوَ إِدِ الْمَاكِةِ وَالْمَاكِةِ و (গায়রী) স্থান্ত ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটি ক্রিটিটি ক্রিটিটিটি ক্রিটিটিটি (शायवी) आख्याय এला, व्हें भूत्रां, आभिरे आलाह- قَرَّةً مِنَ الشَّجَرَة وَمِنَ السَّجَرَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ مِنَ السَّجَرَةِ مِنْ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَرِقِ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَالِيقِ السَّعَلِقِ السَّعَالِيقِ السَّعَلِقِ السَّعَالِيقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَ السَّعَلِقِ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَلِيقِ السَّعَالِيقِ السَّعَلِقِ السَّعِلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّعَالِقِ السَّعَلِقِ السَّعَلَقِ السَّعَلِقِ السَّعَلَقِ السَّعَلِقِ السَّعَلِقِ السَّع সৃষ্টিকুলের একমাত্র মালিক,

اَنْ يَهُوْسَى إِنِّي آَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعُلَمِينَ لا

৩১. (তাকে আরো বলা হলো,) তুমি তোমার হাতের লাঠিটি যমীনে নিক্ষেপ করো: যখন সে তাকে দেখলো, তা (জীবন্ত) সাপের মতোই ছুটাছুটি করছে, তখন সে উল্টো দিকে ছুটতে লাগলো, পেছনের দিকে তাকিয়েও দেখলো না: (তার প্রতি তখন আদেশ করা হলো.) হে মৃসা, তুমি এগিয়ে এসো, ভয় পেয়ো না। তুমি হচ্ছো নিরাপদ মানুষদেরই একজন।

٣١ وَأَنْ ٱلْقِ عَمَاكَ اللَّهِ وَلَهَّا رَأَهَا تَهْتَزُّ كَٱنَّهَا جَانً ولَى مُنْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبُ مَ يَمُوسَى أَقْبِلُ وَلَا تَخَفْ تَ اللَّهُ مِنَ الْإِمنينَ

৩২. তুমি তোমার হাত তোমার (বুক) পকেটের ভেতরে রাখো (দেখবে), কোনো রকম অসুস্থতা ছাড়াই তা উচ্ছুল হয়ে বেরিয়ে আসছে, (মন থেকে) ভয় (দুরীভূত) করার জন্যে তোমার হাতের বাজু তোমার (বুকের) সাথে মিলিয়ে রাখো, এ হচ্ছে ফেরাউন ও তার দলীয় প্রধানদের কাছে তোমার মালিকের পক্ষ থেকে (নব্ওতের) দুটো প্রমাণ: সত্যিই তারা এক গুনাহগার জাতি।

٣٢ أَسْلُكَ يَنَكَ فِي جَيْبِكَ تَخُرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوَّءٍ رَوَّاشُكُمْ إِلَيْكَ جَنَاهَكَ مِنَ الرَّمْبِ فَلْنِكَ بُرْمَاني مِنْ رَّبِّكَ إلى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهِ ﴿ إِلَّهُمْ كَانُوْ ا قَوْمًا فُسِقِينَ

৩৩. সে বললো, হে আমার মালিক, আমি (নিতান্ত ভূলবশত) তাদের একজন মানুষকে হত্যা করেছি, তাই আমার ভয় হচ্ছে তারা (সে হত্যার প্রতিশোধ নিতে গিয়ে) আমাকে মেরে ফেলবে!

٣٣ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُرْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُون

৩৪. আমার ভাই হারুন, সে আমার চাইতে ভালো করে কথা বলতে পারে, অতএব তুমি তাকে সাহায্যকারী হিসেবে আমার সাথে পাঠিয়ে দাও, যাতে করে সে আমাকে সমর্থন করতে পারে, আমার ভয় হচ্ছে, (আমি একা গেলে) তারা আমাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করবে।

٣٣ وَآخِي هُرُونَ هُوَ آفْصَعُ مِنِّي لِسَانًا فَارْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَرِّقَنِيْ رِ إِنِّيْ اَخَافُ اَنْ يُّكُنِّبَونِ

৩৫. আল্লাহ তায়ালা বললেন (তুমি চিন্তা করো না), আমি তোমার ভাইকে দিয়ে তোমার হাত শক্তিশালী করবো এবং আমার আয়াতসমূহ দিয়ে আমি তোমাদের (এমন) শক্তি যোগাবো যে, অতপর তারা (আর) কখনো তোমাদের কাছে পৌছতে পারবে না, (পরিশেষে) তোমরা এবং তোমাদের অনুসারীরাই তাদের ওপর বিজয়ী হবে।

٣٥ قَالَ سَنَشُرٌ عَضُرَكَ بِٱخْيُكَ وَنَجْعَلُ لَكُهَا سُلْطُنَّا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُهَا غَ بِأَيْتِنآ غَ أَنْتُهَا وَمَنِ اتَّبَعَكُهَا الْغُلِبُوْنَ

৩৬. অতপর যখন মৃসা আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ নিয়ে ওদের কাছে হাযির হলো, তখন তারা বললো, এ তো কতিপয় অলীক ইন্দ্রজাল ছাড়া আর কিছুই নয়, আমরা আমাদের বাবা-দাদাদের যমানায়ও তো এমন কিছু (ঘটতে) গুনিনি!

٣٦ فَلَمَّا جَاءَمُر مُوسَى بِالْتِنَا بَيِّنْتِ قَالُوْا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرِّ مُّفْتَرِّى وَّمَا سَبِعْنَا بِهَٰذَا فِي أَبَائِنَا الْإَوَّلِينَ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আমান্ খালাকা |
|--|--|
| ৩৭. মূসা বললো, আমার মালিক ভালো করেই জানেন কে তাঁর কাছ থেকে হেদায়াত নিয়ে এসেছে এবং | ٣٠ وَقَالَ مُوْسَى رَبِّي ٓ أَعْلَيرُ بِمَنْ جَاءَ |
| (সেদিনের মতো আজ) কার পরিণাম কি হবেং (তবে | بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِةٍ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةً |
| একথা ঠিক,) যালেমরা কখনোই সফল হয় না। | النَّارِ ، إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظُّلِمُونَ |
| ৩৮. ফেরাউন বললো, হে আমার পারিষদরা, আমি তো জানি না, আমি ছাড়া তোমাদের আরও কোনো মাবুদ | ٣٨ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَآيُّهَا الْمَلَدُ مَا عَلِمْتُ |
| আছে (অতপর সে হামানকে বললো), হে হামান (যাও), | لَكُرْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرِيْ عِ فَأُوْقِنْ لِيْ يَهَامَٰ عَلَى |
| আমার জন্যে (ইট তৈরীর জন্যে) মাটি আগুনে পোড়াও, অতপর (তা দিয়ে) আমার জন্যে একটি সুউচ্চ প্রাসাদ | الطِّيْنِ فَاجْعَلُ لِّيْ مَرْمًا لَّعَلِّيْ أَطَّلِعُ إِلَى |
| নির্মাণ করো, যেন আমি (তাতে ওঠে) মূসার মাবুদকে | إلهِ مُوسى لا وَإِنِّي لَاظُنَّهُ مِنَ الْكُلِيثِي |
| দেখে নিতে পারি, আমি অবশ্য তাকে মিখ্যাই মনে করি। | |
| ৩৯. সে এবং তার বাহিনীর লোকেরা অন্যায়ভাবেই | ٣٩ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ |
| (আল্লাহা) যমীনে অহংকার করলো, ওরা ধরে নিয়েছিলো, ওদের কখনো আমার কাছে ফিরে আসতে হবে না! | الْحَقِّ وَظَنُّوا ۗ أَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ |
| ৪০. অতপর আমি তাকে এবং তার গোটা বাহিনীকে ধরে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম, অতএব (হে নবী), তুমি দেখো, (বিদ্রোহ করলে) যালেমদের পরিণাম কি ভয়াবহ হয়ে | ٣٠ فَأَغَلَانُهُ وَجُنُودَةً فَنَبَلَانُهُمْ فِي الْيَرِّع |
| থাকে! | فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظُّلِبِيْنَ |
| ৪১. আমি ওদের এমন সব লোকদের নেতা বানিয়েছি যারা (জাহান্নামের) আগুনের দিকেই ডাকবে, (এ | ٣١ وَجَعَلْنُهُمْ أَئِيَّةً يَّلْكُونَ إِلَى النَّارِ ع |
| কারণেই) কেয়ামতের দিন তাদের (কোনো রকম) সাহায্য করা হবে না। | وَيَوْاً الْقِيْمَةِ لَا يُنْصَرُونَ |
| ৪২. দুনিয়ায় (যেমন) আমি তাদের পেছনে আমার লানত | ٣٢ وَٱتْبَعْنُهُمْ فِي هٰنِ ِ اللَّانْيَا لَعْنَةً ع وَيَوْآ |
| লাগিয়ে রেখেছি, (তেমনি) কেয়ামতের দিনও তারা নিতান্ত ঘৃণিত লোকদের মধ্যে শামিল হবে। | الْقِيْمَةِ مُرْمِّنَ ٱلْكَقْبُوْمِيْنَ ع |
| ৪৩. অতীতের বহু মানবগোষ্ঠীকে আমার সাথে বিদ্রোহের আচরণের জন্যে ধ্বংস করার পর আমি মৃসাকে | ٣٣ وَلَقَنْ أَتَيْنَا مُوْسَى الْكِتْبَ مِنْ ابَعْلِ مَا |
| (তাওরাত) কেতাব দান করেছি, এ কেতাব ছিলো মানুষদের জন্যে জ্ঞান ও তত্ত্বকথার সমাহার, (সর্বোপরি) | آهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْأُولَى بَصَالِرَ لِلنَّاسِ |
| এ (কেতাব ছিলো) তাদের জন্যে হেদায়াত ও রহমত, যাতে করে তারা (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করতে পারে। | وَهُنِّي وَّرَهْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَنَكَّرُونَ |
| 88. (হে নবী,) মৃসাকে যখন আমি (এবুওতের) বিধান দিয়েছিলাম, তখন তুমি (তূর পাহাড়ের) পশ্চিম পাশে | ٣٣ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْناً |
| (সে বিশেষ স্থানটিতে উপস্থিত) ছিলে না, না তুমি এ ঘটনার প্রত্যক্ষদর্শীদের দলে শামিল ছিলে, | إِلَى مُوْسَى الْإَمْرَ وَ مَا كُنْتَ مِنَ الشَّهِرِيْنَ لا |
| ৪৫. বরং তারপর আমি আরো অনেক মানবগোষ্ঠীর আবির্ভাব ঘটিয়েছিলাম, অতপর তাদের ওপরও বহু যুগ | ٥٥ وَلٰكِنَّا ۗ أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ |
| অতিবাহিত হয়ে গেছে (তারাও আজ কেউ অবশিষ্ট নেই), আর তুমি মাদইয়ানবাসীদের মাঝেও উপস্থিত ছিলে না | الْعُمْرُ ، وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي ٓ أَهْلِ مَنْيَنَ |
| যে, তুমি তাদের কাছে আমার আয়াতসমূহ পড়ে পড়ে | تَتْلُواْ عَلَيْهِمْ إِيْتِنَا لا وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ |
| গুনিয়েছো, কিন্তু (সে সময়ের খবরাখবর তোমার কাছে) পৌছানোর জন্যে আমিই (সেখানে মজুদ) ছিলাম। | |
| ৪৬. মৃসাকে যখন আমি (প্রথম বার) আওয়ায দিয়েছিলাম, তখনও তুমি তুর পাহাড়ের (কোনো) দিকেই | ٣٦ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ إِذْ نَادَيْنَا |
| মজুদ ছিলে না, কিন্তু এটা হচ্ছে (তোমার প্রতি) তোমার | |
| ২৮ সূরা আল কাছাছ | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আমান্ খালাকুা |
|--|--|
| মালিকের রহমত (যে, তিনি তোমাকে এ সব অবহিত করেছেন), যাতে করে (এর মাধ্যমে) তুমি এমন এক সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পারো, যাদের কাছে তোমার আগে কোনো সতর্ককারী আসেনি যে, তারা উপদেশ গ্রহণ করবে। | وَلَٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا اَتْمُرْ فَرَاءً مَّا اَتْمُرْ مِّنْ نَّذِيدٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّمُرْ يَتَنَكَّرُونَ |
| ৪৭. এমন যেন না হয়, ওদের কৃতকর্মের জন্যে ওদের ওপর কোনো বিপর্যয় এসে পড়বে এবং (তখন) তারা বলবে, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের কাছে কোনো রসূল পাঠালে না কেন? তাহলে আমরা তোমার আয়াতসমূহের অনুবর্তন করতাম এবং আমরা (সবাই) ঈমানদারদের দলে শামিল হয়ে যেতাম : | ٣٤ وَلَوْكَ آن تُصِيْبَهُ ر مُصِيْبَةً ا بِهَا قَدَّمَتُ ا اللهُ وَلَاّمَتُ ا اللهُ ال |
| ৪৮. অতপর যখন আমার কাছ থেকে তাদের কাছে সত্য (দ্বীন) এলো, তখন তারা বলতে লাগলো, এ (নবী)-কে সে ধরনের কিছু (কেতাব) দেয়া হলো না কেন, যা মূসাকে দেয়া হয়েছিলো, (কিছু তুমি বলো,) মূসাকে যা দেয়া হয়েছিলো তা কি ইতিপূর্বে এরা অধীকার করেনি? তারা তো (এও) বলেছে, এ উভয়টিই হচ্ছে যাদু, এর একটি আরেকটির সমর্থক এবং তারা বলেছে, আমরা (এর) কোনোটাই মানি না। | مَ عَلَمًا جَاءَمُرُ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْكَ أُوتِي مُوسَٰى ﴿ اَوْ لَرُ لَوْكَ أُوتِي مُوسَٰى ﴿ اَوْ لَرَ يَكُفُرُوْا بِهَا آوْتِي مُوسَٰى مِنْ قَبْلُ عَقَالُوْا سِحْرَٰ عَظَمُرَا فَقَدُ وَقَالُوْآ إِنَّا بِكُلِّ كَغِرُوْنَ |
| ৪৯. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, যদি (উভয়টাই মিথ্যা হয় এবং) তোমরা (তোমাদের এ দাবীতে) সভ্যবাদী হও, তাহলে আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে অন্য কোনো কেতাব নিয়ে এসো, যা এ দু'টোর তুলনায় ভালো হবে, (তাহলে) আমিও তার অনুসরণ করবো। | ٣٩ قُلْ فَأَتُواْ بِكِتْبِ مِّنَ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ اللَّهِ مُوَ اللَّهِ مُوَ اللَّهِ مُوَ اللَّهِ مُوَ الْمُنْ مِنْهُمَ اللَّهِ مُو اللَّهُ اللَّهِ مُو اللَّهُ اللَّهِ مُو اللَّهِ مُو اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ مُو اللَّهِ اللَّهِ مُو اللَّهُ اللللللَّةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللللللّهُ الللللللّهُ الللللللّهُ الللللللّهُ اللللللّهُ اللللللللّهُ الللللللللّهُ الللللّهُ اللللللللّهُ اللللللللللّهُ اللللللّهُ الللللللللللللللللللللللللللللللللللل |
| ৫০. যদি এরা তোমার এ কথার কোনো জ্ববাব না দেয়, তাহলে জেনে রেখাে, এরা (আসলে) নিজেদের খেয়াল খুলীর অনুসরণ করেই (এসব বলে); তার চাইতে বেশী গোমরাহ ব্যক্তি আর কে আছে যে আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে কোনাে হেদায়াত (পাওয়া) ছাড়াই কেবল নিজের খেয়াল খুলীর অনুসরণ করে; আল্লাহ তায়ালা কখনাে ষালেম জাতিকে পথ দেখান না। | ٥٠ فَإِنْ لَّرْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَرْ أَلَّهَا يَتَّبِعُوْنَ أَهُوَا مُوَّاءُمُرْ ﴿ وَمَنْ أَضَلَّ مِسْ اتَّبَعَ مَوْدِيدٌ بِغَيْرٍ مُلًى مِّنَ اللهِ ﴿ إِنَّ اللهَ لَا يَهُلِى الْقَوْرَ الظَّلِمِيْنَ عَ |
| ৫১. আমি (আমার) বাণী (কোরআনের এ কথাকে) তাদের জন্যে ধীরে ধীরে পাঠিয়েছি, যাতে করে তারা শিক্ষা গ্রহণ করতে পারে। | ٥١ وَلَقَنْ وَمَّلْنَا لَهُرُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُرُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُرُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُرُ |
| ৫২. (কোরআন নাযিলের) আগে আমি যাদের আমার কেতাব দান করেছিলাম (তাদের মধ্যে যারা সত্যানুসন্ধিৎসু ছিলো), তারা এর ওপর ঈমান এনেছে। | ٥٢ ٱلَّذِيْنَ أَتَيْنَاهُرُ الْكِتَٰبَ مِنْ قَبْلِهِ هُرْ بِهِ يُؤْمِنُونَ |
| ৫৩. যখন তাদের সামনে এ কেতাব তেলাওয়াত করা হয় তখন তারা বলে, আমরা এর ওপর ঈমান এনেছি, (কেননা) আমরা জানি, এটাই সত্য, এটা আমাদের মালিকের কাছ থেকেই এসেছে, আমরা আগেও (আল্লাহর কেতাব) মানতাম। | ٥٣ وَإِذَا يُثَلَّى عَلَيْهِرْ قَالُوْآ أَمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحُقَّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِيْنَ |
| ৫৪. এরাই হচ্ছে সেসব লোক যাদের তাদের (দ্বীনের পথে) ধৈর্য ধারণের জন্যে দু'বার পুরস্কৃত করা হবে, তারা তাদের ভালো (আমল) দ্বারা মন্দ (আমল) দৃর করে, আমি তাদের যে রেযেক দান করেছি তারা তা থেকে (আল্লাহর পথে) ব্যয় করে। | ٥٣ أُولَنِكَ يُؤْتَوْنَ آَجْرَهُمْ مُّرْتَيْنَ بِهَا مَبَرُوْا وَيَكْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِهَا رَزْفَنْهُمْ يُنْفِقُوْنَ |
| ২৮ সূরা আল কাছাছ | মন্যিল ৫ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আম্মান্ খালাক্য |
|---|---|--|
| | ৫৫. এরা যখন কোনো বাজে কথা তনে তখন তা পরিহার করে চলে এবং (এদের) বলে, আমাদের কাজের | ٥٥ وَإِذَا سَيِعُوا اللَّّهُو أَعْرَضُواْ عَنْدُ وَقَالُوا |
| I | (দায়িত্ব) আমাদের (ওপর), আর তোমাদের (কাজের) দায়িত্ব তোমাদের (ওপর), তোমাদের জন্যে সালাম, তা | لَنَا آَعْمَالُنَا وَلَكُورُ آَعْمَالُكُورُ وَسَلَّمٌ عَلَيْكُورُ وَلَا |
| l | ছাড়া আমরা জাহেলদের সাথে তর্ক করতে চাই না! | نَبْتَغِي الْجُهِلِيْنَ |
| l | ৫৬. যাকে তৃমি ভালোবাসো (তবে এ ভালোবাসার কারণেই) তৃমি তাকে হেদায়াত দান করতে পারবে না, | ٥٦ إِنَّكَ لَا تَهْرِيْ مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهُ |
| I | তবে হাঁা, আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে অবশ্যই তিনি হেদায়াত দান করেন, তিনি ভালো করেই জানেন কারা এ | يَهْرِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَرُ بِالْهُهَتَرِينَ |
| l | হেদায়াতের অনুসারী (হবে)। | |
| ١ | ৫৭. (হে নবী,) এরা বলে, যদি আমরা তোমার সাথে মিলে হেদায়াতের পথ ধরি তাহলে (অবিলয়ে) আমাদের | ٥٤ وَقَالُوْ آ إِنْ تَتَّبِعِ الْهُلَّى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ﴿ اَوَ لَكُرْ نُمَكِّنِ لَّهُمْ مَرَمًا |
| l | এ যমীন থেকে তাড়িয়ে দেয়া হবে; (তুমি তাদের জিজ্জেস করো,) আমি কি তাদের (বসবাসের) জন্যে শাস্তি ও | |
| ١ | নিরাপন্তার শহরে জারগা করে দেইনিং যেখানে তাদের রেযেকের জন্যে আমার কাছ থেকে সূব ধরনের ফলমূল | أَمِنًا يُّجْبَى إِلَيْهِ ثَمَرْتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ |
| l | আসে, কিন্তু তাদের অধিকাংশ মানুষই (শোকর আদায় করতে) জ্ঞানে না। | لَّهُ نَّا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ ﴿ لَا يَعْلَمُونَ |
| l | ৫৮. আমি এমন অসংখ্য জনপদ নির্মূপ করে দিয়েছি, যার অধিবাসীদের তাদের অর্থনৈতিক সমৃদ্ধি মদমন্ত করে | ٥٨ وكَمْرُ آهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ الطِّرَتْ مَعِيْهَتَهَا ع |
| l | রেখেছিলো, (অথচ) এ হচ্ছে তাদের ঘরবাড়িগুলো (আর এ হচ্ছে তার ধ্বংসাবশেষ), এদের (ধ্বংসের) পর (এসব | فَتِلْكَ مَسْكِنُهُرْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ بَعْدِهِرْ إِلَّا |
| | জারগায়) সামান্যই কোনো মানুষের বসতি ছিলো; (শেষ পর্যন্ত) আমিই (সব কিছুর) মালিক হয়ে থাকলাম। | قَلِيْلًا ﴿ وَكُنَّا نَحْنُ الْوُرِثِيْنَ |
| ١ | ৫৯. (হে নবী,) তোমার মালিক কোনো জনপদকেই ধ্বংস ক্রেন না, যৃতোক্ষণ না সে (জনপদের) কেন্দ্রস্থলে কোনো | ٥٩ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى مَتَّى |
| | নবী না পাঠান, যে তাদের কাছে আমার আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করবে, আমি জনপদসমূহ কখুনো বরবাদ | يَبْعَنَ فِي أُولِهَا رَسُولًا يَّتْلُوا عَلَيْهِمْ الْيَتِنَاع |
| ١ | করি না, যতোক্ষণ না সেখানকার অধিবাসীরা যালেম (হিসেবে পরিগণিত) হয়ে যায়। | وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَّى إِلَّا وَاَهْلُهَا ظُلِمُونَ |
| ١ | ৬০. তোমাদের যা কিছু দেয়া হয়েছে তা হচ্ছে কেবল এ (অস্থায়ী) পার্থিব জীবনের ভোগবিলাস ও তার শোভা | ١٠ وَمَا اوْتِيْتُرْ مِّنْ شَيْءٍ فَهَتَاعُ الْحَيْوة |
| } | সামগ্রী মাত্র, (মনে রাখবে) যা কিছু আল্লাহ তায়ালার কাছে আছে তা (এর চাইতে) অনেক উৎকৃষ্ট এবং স্থায়ী, | النَّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ء وَمَا عِنْنَ اللَّهِ عَيْرٌ |
| ŀ | তোমরা কি বুঝতে পারো নাঃ ৬১. যাকে আমি (জানাতের) উত্তম প্রতিশ্রুতি দিয়ে | وَّ أَبْقَٰى وَ أَفَلَا تَعْقَلُونَ عَ |
| ١ | রেখেছি এবং যে ব্যক্তি (কেয়ামতের দিন) তা পেয়েও যাবে, সে ব্যক্তি কি করে তার মতো হবে যাকে আমি | الآ أَفَهَنَ وَعَلَالُهُ وَعَلَّا مَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهُ كَهَنَ |
| I | পার্থিব জীবনের কিছু ভোগসম্ভার দিয়ে রেখেছি অতপর যে | مَّتَّعْنَهُ مَتَاعَ الْحَيَٰوةِ النَّانَيَا ثُمَّ هُو يَوْمَ الْقَيْمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ |
| | ব্যক্তি তাদের মধ্যে গন্য হবে যাদের কেয়ামতের দিন আমার সম্মুখে তলব করা হবে। | |
| | ৬২. সেদিন আল্লাহ তায়ালা তাদের ডাক দেবেন এবং বলবেন, আজ কোথায় আমার (সেসব) শরীক, যাদের তোমরা (আমার সার্বভৌমত্বে) অংশীদার মনে করতে! | ٦٢ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمِ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنْتُرْ تَزْعُبُونَ |
| | ৬৩. (আযাবের) এ বিধান যাদের ওপর কার্যকর হবে তারা (তখন) বলবে, হে আমাদের মালিক, এরাই হচ্ছে | ٣٢ قَالَ الَّذِينَ مَقَّ عَلَيْهِرُ الْقَوْلُ رَبَّنَا |
| | সেসব ব্যক্তি থাদের আমরা গোমরাহ করেছিলাম, আমরা যেমনি এদের গোমরাহ করেছিলাম, তেমনি আমরা | مَّوُ لَا ۚ الَّذِينَ آغُوَيْنَا ﴾ اَغُوَيْنَا ﴾ اَغُوَيْنَا ﴾ |
| t | ২৮ সূরা আল কাছাছ | মন্যিল ৫ |

| নিজেবাও গোমবাহ হয়ে গিরোছিনাম, (আছ) আমরা তোমার দরবারে দায়িত্বুক্ত হয়ে যাছি, এরা কেবল আমারান গরবারে দায়িত্বুক্ত হয়ে যাছি, এরা কেবল আমারান করবারে দায়িত্বুক্ত হয়ে যাছি, এরা কেবল আমারার করবাতা। ৬৪. অতপর (মোশরেকদের) বলা হবে, ভাকো আছ তোমারেল স্বীবীকদের, তারপর তারা তারের ভাকরে, কিন্তু তারা তানের ভাবরে না, ইভিমধ্যে) মোশরেকরা নিজের চোবেই আয়ার দেবলে প্রের করেলা হতো যদি এরা সঠিক পথের সন্ধান পেবলে তালা হতো যদি এরা সঠিক পথের সন্ধান পেবলে তালা হতো যদি এরা সঠিক পথের সন্ধান পেবলে এবং বলবেন, নবীদের তোমরা কি জবাব দিরে পরের ওবং বলবেন, নবীদের তোমরা কি জবাব দিরে হারের যাবে, তারা একে অপরের কাছে কোনো করা করিছেলে ৬৫. সেদিন তালের মেনের) ওপর (বেকে) সর বিষয়ই হারিয়ে যাবে, তারা একে অপরের কাছে কোনো করা করিছেলেক আমাক করেছে (তার কথা আলাদা), আশা করা যায় পে যুভিআপ্রনের দলে শামিল হবে। ৬৭. তবে যে ব্যক্তি তাওবা করেছে এবং ইমান এনেছে, কে আমাক করেছে (তার কথা আলাদা), আশা করা যায় পে যুভিআপ্রনের দলে শামিল হবে। ৬৮. (বে নবী, ছুমি তানের বলো,) তোমার মালিক যা চান তাই তিনি কালা করেন এবং (তানের জনো) বে বিশান তিনি পছন্দ করেন তাই তিনি জারি করেন, (এ ব্যাগারে) তানের কালা মহান, ওদের পেরেক করেছে তিনি জারি করেন, (এ ব্যাগারে) তানের কালা করেছে করে করেছে তারালা করে। ৭০. তার তিনিই মহান আলাহ তারালা, তিনি) ছাড়া আর কোনিইই (তামানের তার লাকের তার কাছেই কিরে যেতে হবে। ৭১. (বে নবী,) এনের জিজ্ঞেস করে, ডোমনার কি করেনা এক হা কিছে এরা প্রকাশ করে। ৭০. আর তিনিই মহান আলাহ তারালা, তিনি) ছাড়া আর কোনিইই (তামানের তার কাছেই কিরে যেতে হবে। ৭১. (বে নবী,) এনের জিজ্ঞেস করে, ডোমরা কি ককনো তার কালা হাছাল আলা হাছাল করেনা মানুদ করেছে তার কাছেই কিরে যেতে হবে। ৭১. (বে নবী,) এনের জিজ্ঞেস করে, ডোমরা কি ককনো তান করেনা মানুদ আছে তারালা হাছাল তারালা বাজকে তোমানের ওকার করায়াছ তারালা হাছাল হাছাল হাছাল বালা এনে দিনেকও (রোম) বিন্মুন্নী ব | | |
|--|--|---|
| তোমান দরবারে নারিত্বমুক্ত হয়ে যান্তি, এরা কেবল আমানেরই পোলামী করতো না (এরা নিজেদের প্রবৃত্তির পোলামীত করতো লা পেরা প্রকৃত্তির তামের কোনাই জ্বাবা দিবতে পারবে না, (ইতিমধ্যে) মোশরকেরা নিজের চোবেই আমান দেবতে পাবের কাতো ভালো হতো যদি এরা সঠিক পথের সন্ধান পেতো৷ ৩৫. সেদিন (আল্লাহ তামালা পুনরায়) তাদের ভাক দেবেন এবং বলবেন, নরীদের ডোমরা কি জবার দিবেরে। এবং কারেন, নরীদের ডোমরা কি জবার দিবেরে। এবং কারেন এবং অবরেন করিছে এবং ইমান এনেহে, নেক আমল করেহে (তার করছে এবং ইমান এনেহে, নেক আমল করেহে (তার করছে এবং ইমান এনেহে, নেক আমল করেহে (তার করছে এবং ইমান এনেহে, নেক আমল করেহে (তার করা আলাদা), আশা করা মার স্মৃতির্ভ্তান্তনের দলে শামিল হবে। ৩৮. (বে নরী, তুমি তাদের বলাো,) তোমার মাদিক যা চাত হি তিনি কারান করেন, (এ ব্রাপারে) ভাদের করেনাই কোলো কমতা নেই, আলাহ তায়ালা মহান, ওদের পেরেক থেকে তিনি অনেক উর্বে। ৩৯. তোমার মাদিক বারে, তেমের প্রকৃত্ত বার করেছে এবং তিনি আরার করেন। ৭০. আর তিনিই মহান আরাহা তায়ালা, তিনি) হাড়া আর কোনো মাবুদ নেই, সমন্ত তারীক জরৈ জনো দুনিয়াতে (যেমন) এবং আবেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান করিক) করেন নাই করেন করিই করেন মোবুদ নেই, সমন্ত তারীক জরের করিছ করেন দুনিয়াতে প্রকৃত্ত নির্না করি। ৩১. (হে নরী,) এদের জিজ্ঞেস করে, তোমারা কি কখনো তেবে দেখেছে, মানি আলাহা তায়ালা রাতকে তোমানের প্রকর কেরামনেতর বির্না করে। তেমেরা করেল তেবে নাই করিই দুনি বালা এবে করিই করেন নাই করেন নাই করে বির্না করেনা একথা কি তেবে নাই করিবি বির্না করি করেন নার করিবি করেন তায়ালা হাড়া আয়ল করিবাত করেন নাট করিবে বির্না করেন তারালা মান্তন নির্না করেন তারালা হাড়া আরে বেনে নির্না করেনা আরালা বিন্ন নির্না করেনা একতাট্ট করিলান নেবে, তোমরা কি প্রেনা তারালা হাড়া আরালা বির্না নির্না করেনা একতাট্ট করিলান নেবে, তোমরা কি প্রেন নেবান তেমারা করেনে নেবান তারালা হাড়া আর বানে নির্না করেনে নেবান তারালা হাড়া আর নেনে নির্না নির্না করেনা নার করেন নির্না করেনা | | পারা ২০ আমান্ খালাকা |
| किकु जां जारान काराने काराने काराने काराने काराने काराने कारान कराया प्रमुक्त करा जारान कराया प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराया प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराय प्रमुक्त कराया प्रमुक्त | তোমার দরবারে দায়িত্বমুক্ত হয়ে যাচ্ছি, এরা কেবল আমাদেরই গোলামী করতো না (এরা নিজেদের প্রবৃত্তির | |
| भारत, करेंडा डाला शेंटा यमि ध्वा मि ध्वा मि धवा मि धवा मि धवा मि धवा मि धवा मि धवा में धिर्म करेंडा डाला शेंडा है के स्थान विकास करेंडा होंडा होंडा है के स्थान वर वर वर्ग करेंडा होंडा | তোমাদের শরীকদের, তারপর তারা তাদের ডাকবে, | |
| و و و و و و و و و و و و و و و و و و و | (ইতিমধ্যে) মোশরকেরা নিজের চোখেই আযাব দেখতে | |
| जिल्लाहिला? ७৬. সেদিন তাদের (মনের) ওপর (থেকে) সব বিষয়ই হারিয়ে যাবে, তারা একে অপরের কাছে কোনো কথা জিজেন করার সুযোগ পাবে না। ৬৭. তবে যে ব্যক্তি তাওবা করেছে এবং ঈমান এনেছে, নেক আমল করেছে (তার কথা আলালা), আশা করা যায় সে মুজিপ্রাপ্তদের দলে শামিল হবে! ৬৮. (বে নবী, ভূমি তাদের বলো,) তোমার মালিক যা চান তাই ভিনি পারদা করেন এবং (ভাদের জনো) (ব বিধান ভিনি পছদা করেন এবং (ভাদের জনো) (ব বিধান ভিনি পছদা করেন এবং (ভাদের জনো) (ব বিধান ভিনি পছদা করেন তাই ভিনি জারি করেন, (এ ব্যাপারে) তাদের কারোই কোনো কমতা নেই, আল্লাহ তায়ালা মহান, ওদের শেরেক থেকে ভিনি অনেক উর্জে। ৬৯. তোমার মালিক আরো জানেন, যা কিছু এদের অন্তর পাপন করে এবং যা কিছু এরা প্রকাশ করে। ৭০. আর ভিনিই মহান আল্লাহ তায়ালা, ভিনি) ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই; সমন্ত তারীফ তাঁর জন্যে দুনিয়াতে (যেমন) এবং আপ্রান্তেও (তেমনি), আইন ও বিধান ভিরেই, তোমাদের তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে। ৭১. (হে নবী,) এদের জিজেস করেন, তোমরা কি কখনো তেবে দেখেছে।, যদি আল্লাহ তায়ালা রাভকে ভোমাদের একট্বশানি আলো এনে দিতে পারবে; (তারপরও) তোমরার কর্পলাত করেনেনা ৭২. ভূমি (আরো) বলো, তোমরা কর্পনো একথা কি তেবে দেখেছে, আল্লাহ তায়ালা হাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের ভার করে। তামাদের ভার করে বান। বংলি (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের জন্যে) বালে ভারা লি জারা নি নাব্র দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে বোলে তোমরা এতেটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহা তায়ালা হাড়া আর কোন মাবুদ আহে যে তোমাদের ভার তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আহে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে বোমাত্যে) দেখতে পাও নাব | | |
| জিজেন করার সুযোগ পাবে না। ৬৭. তবে যে ব্যক্তি তাওবা করেছে এবং ঈমান এনেছে, নেক আমল করেছে (তার কথা আলাদা), আশা করা যায় সে মুক্তিপ্রাপ্তদের দলে শামিল হবে। ৬৮. (হে নবী, তুমি তাদের বলো,) তোমার মালিক যা চান তাই তিনি পরাদা করেন এবং (তাদের জন্যে) বে বিধান তিনি পহল করেন তাই তিনি জারি করেন, (এ ব্যাপারে) তাদের কারোই কোনো কমতা নেই, আল্লাহ তায়ালা মহান, ওদের পেরেক থেকে তিনি অনেক উর্বেণ্ট এই | দেবেন এবং বলবেন, নবীদের তোমরা কি জবাব | الْهُرْسَلِيْنَ |
| দেক থানদা করেছে (তার কথা বালাদা), বালা করা বার স্মৃতিপ্রাপ্তদের দদেল শামিল হবে! ৬৮. (হে নবী, ভূমি তাদের বলো,) তোমার মালিক যা চান তাই তিনি পরদা করেন এবং (তাদের জন্যে) বে বিধান তিনি পছন্দ করেন তাই তিনি জারি করেন, (এ বাগারে) তাদের করেন তাই তিনি জারি করেন, (এ বাগারে) তাদের করেই কোনো ক্ষমতা নেই, আল্লাহ তায়ালা মহান, ওদের শেরেক থেকে তিনি অনেক উর্মে । ৬৯. তোমার মালিক আরো জানেন, যা কিছু এদের অন্তর প্রাণ্ডান করে এবং যা কিছু এরা প্রকাশ করে। ৭০. আর তিনিই মহান আল্লাহ তায়ালা, তিনি) ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই; সমন্ত তারীফ তাঁর জন্যে দুনিয়াতে (যেমন) এবং আপেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান তারই, তোমাদের তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে। ৭১. (হে নবী,) এদের জিজ্ঞেস করো, তোমরা কি কখনো ভেবে দেখেছো, যদি আল্লাহ তায়ালা রাতকে তোমাদের ওপর কেয়ামতের দিন পর্যন্ত প্রয়াী করে দেন তাহলে আল্লাহ তায়ালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের একট্বানি আলো এনে দিতে পারবে; (তারপরও) তোমরা কর্পণাত করবে নাঃ ৭২. ভূমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি তেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়াত পর্যপ্ত (হায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিয়ে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন নাব্দ আছে যে তোমাদের (হায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিয়ে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন নাব্দ আছে যে তোমাদের (হায়াণ আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন নাব্দ আছে যে তোমাদের (হায়ান) বেলা, তামান ভাড়া অনে কিতে পারবে, যেখানে তেমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেরামত) দেখতে পাও নাং | হারিয়ে যাবে, তারা একে অপরের কাছে কোনো কথা | |
| চান তাই তিনি পয়দা করেন এবং (তাদের জন্যে) বে বিধান তিনি পছন্দ করেন তাই তিনি জারি করেন, (এ ব্যাপারে) তাদের কারোই কোনো কমতা নেই, আল্লাহ তায়ালা মহান, ওদের শেরেক থেকে তিনি জনেক উর্ধে। ৬৯. তোমার মালিক আরো জানেন, যা কিছু এদের জন্তর পাগান করে এবং যা কিছু এরা প্রকাশ করে। ৭০. আর তিনিই মহান আল্লাহ তায়ালা, তিনি) ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই; সমন্ত তারীক তার জন্যে দুনিয়াতে (যেমন) এবং আথেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান তারই, তোমাদের তার কাছেই ফিরে যেতে হবে। ৭১. (হে নবী,) এদের জিজ্ঞেস করো, তোমরা কি কখনো ভেবে দেখেছো, যদি আল্লাহ তায়ালা রাতকে তোমাদের প্রপর কেয়ামতের দিন পর্যন্ত হায়ালা রাতকে তোমাদের অল্লাহ তায়ালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আহে যে তোমাদের একট্বখানি আলো এনে দিতে পারবে; (তারপরও) তোমরা কর্ণপাত করবে নাঃ ৭২. ভুমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি তেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়ামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিরে ক্রামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিরে ক্রামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিরে ক্রামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের তারালা ছাড়া আর কেনা মাবুদ আহে যে তামাদের তারালা হাড়া আরা হ তায়ালা হাড়া আর কেনা মাবুদ আহে যে তামাদের তারালা হাড়া আর কেনা করে, তোমারা করে, তোমারা করে, যেখানে তোমারা এতোটুকু বিশ্রাম নেরে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | নেক আমল করেছে (তার কথা আলাদা), আশা করা যায় | إِنَّا مَنْ تَابَ وَأَمَنَ وَعَمِلَ مَالِحًا مَالِحًا فَعَسَى أَنْ يَّكُونَ مِنَ الْمُقْلِحِيْنَ |
| शांभात्त) তাদের কারোই কোনো ক্ষমতা নেই, আল্লাহ তারালা মহান, ওদের শেরেক থেকে তিনি অনেক উর্ম্বের্ন তিনু নি ত্র্নির্ক্তির্ন তিন্দু নি ত্রালা বাবদ নের প্রবং যা কিছু এরা প্রকাশ করে। ব০. আর তিনিই মহান আল্লাহ তারালা, তিনি) ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই; সমন্ত তারীফ তার জন্যে দুনিয়াতে (যেমন) এবং আঝেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান তারই, তোমাদের তার কাছেই ফিরে যেতে হবে। ব১. (হে নবী,) এদের জিজ্ঞেস করে, তোমরা কি কখনো ভেবে দেখেছা, যদি আল্লাহ তারালা রাতকে তোমাদের প্রপর কেয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করে দেন তাহলে আল্লাহ তারালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের একটুখানি আলো এনে দিতে পারবে; (তারপরও) তোমরা কর্পপাত করবে নাঃ ব২. ছুমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি ভেবে দেখেছা, আল্লাহ তারালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়ামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিয়ে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের জেন্যে) রাড এনে দিতে পার কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের জেন্যে) রাড এনে দিতে পাও নাঃ কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | চান তাই তিনি পয়দা করেন এবং (তাদের জ্বন্যে) যে | ١٨ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُ الْخَيْرَةُ م سُبْحٰي إلله وتَعلى عَبًا |
| وم الله كَا إِلٰهُ كَا إِلٰهُ اللهُ كَا اللهُ عَلَيْهُ وَ اللهُ كَا إِلٰهُ اللهُ كَا إِلٰهُ كَا إِلْهُ كَا لَاهُ كَا إِلْهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلْهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلْهُ كَا لَا لَهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلَهُ كَا إِلَاهُ كَا إِلْهُ كَا لَا لَهُ كَا لَا لَهُ كَا إِلْهُ كَا لَا لَهُ كَا لَهُ كَا لَا لَهُ كَا لَا لَهُ كَا إِلَاهُ كَا لَا لَهُ كَ اللّهُ كَا إِلَاهُ كَا لَا لَهُ كَا لَا لَا لَهُ كَا لَا لَا لَهُ كَا لَا لَا لَهُ كَا لَا لَا لَهُ | ব্যাপারে) তাদের কারোই কোনো ক্ষমতা নেই, আল্লাহ | يُشْرِكُوْن |
| (যেমন) এবং আখেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান তার জন্মে পুনরাতে (যেমন) এবং আখেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান তারই, তোমাদের তার কাছেই ফিরে যেতে হবে। ৭১. (হে নবী,) এদের জিজ্ঞেস করো, তোমরা কি কখনো তেবে দেখেছো, যদি আল্লাহ তারালা রাতকে তোমাদের ওপর কেয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করে দেন তাহলে আল্লাহ তারালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের একটুখানি আলো এনে দিতে পারবে; (তারপরও) তোমরা কর্ণপাত করবে নাঃ ৭২. তুমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি তেবে দেখেছো, আল্লাহ তারালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়ামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিয়ে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তারালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | | |
| ভেবে দেখেছো, যদি আল্লাহ তায়ালা রাতকে তোমাদের ওপর কেয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করে দেন তাহলে আল্লাহ তায়ালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের একটুখানি আলো এনে দিতে পারবে; তোরপরও) তোমরা কর্ণপাত করবে নাঃ বহু কুমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি ভেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়ামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিরে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | কোনো মাবুদ নেই; সমস্ত তারীফ তাঁর জন্যে দুনিয়াতে (যেমন) এবং আখেরাতেও (তেমনি), আইন ও বিধান | الاُوْلَى وَالْأَخِرَةِ زَولَهُ الْحُكْرُ وَالنَّهِ |
| আল্লাহ তায়ালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের একটুখানি আলো এনে দিতে পারবে; (তারপরও) তোমরা কর্ণপাত করবে নাঃ ৭২. তুমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি ভেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়ামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিয়ে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | ভেবে দেখেছো, যদি আল্লাহ তায়ালা রাতকে তোমাদের | - , , , , |
| (তারপরও) তোমরা কর্ণপাত করবে নাঃ ৭২. তুমি (আরো) বলো, তোমরা কখনো একথা কি ভেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) কেয়ামত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিরে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | আল্লাহ তায়ালা ছাড়া এমন কোন মাবুদ আছে যে | |
| ভেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) কয়োমত পর্যন্ত (স্থায়ী করে) তোমাদের ওপর বসিয়ে দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাং | | ياتِيكر بِضِياءٍ ، افلا تسبعون |
| দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন মাবুদ আছে যে তোমাদের (জন্যে) রাত এনে দিতে পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | ভেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি দিনকেও (রোয) | , , , |
| পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা কি (আল্লাহ তায়ালার এ নেয়ামত) দেখতে পাও নাঃ | দেন, তাহলে (বলো) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কোন | |
| · · | পারবে, যেখানে তোমরা এতোটুকু বিশ্রাম নেবে, তোমরা | , |
| | | मनियल ৫ |

পারা ২০ আমানু খালাকা

৭৩. এটা তো তাঁরই রহমত যে, তিনি তোমাদের জন্যে রাত ও দিন বানিয়েছেন। যাতে করে তোমরা (রাতে) আরাম করতে পারো এবং (দিনের বেলায়) তাঁর (জীবিকার) অনুগ্রহ সন্ধান করতে পারো, যেন তোমরা তাঁর শোকর আদায় করতে পারো!

٣ وَمِن رَّحْهَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
 لِتَسْكُنُوا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَصْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ
 تَشْكُرُونَ

৭৪. সেদিন (আবার) আল্লাহ তায়ালা তাদের ডাক দেবেন এবং বলবেন, কোথায় (আজ) আমার সেসব শরীক যাদের তোমরা (আমার সার্বভৌমত্বে) অংশীদার মনে করতে!

٤٣ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِرْ فَيَقُوْلُ آيْنَ شُرَكَاءِى النَّانِيْنَ كُنْتُرْ تَزْعُمُونَ

৭৫. সেদিন আমি প্রত্যেক জাতির মাঝ থেকে এক একজন সাক্ষী বের করে আনবাে, অতপর (তাদের) বলবাে, তােমরা (সবাই তােমাদের পক্ষে) দলীল প্রমাণ হাযির করাে, (সেদিন) ওরা সবাই বুঝতে পারবে, (যাবতীয় সত্য) একমাত্র আল্পাহ তায়ালার জন্যেই নির্ধারিত, তারা (আল্লাহ ডায়ালা মশর্কে) যেসব কথা উদ্ভাবন করতাে তা নিমিষেই তাদের কাছ থেকে হারিয়ে যাবে। 44 وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ ٱلَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُرْ فَعَلِبُوْآ أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُرْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ع

৭৬. নিসন্দেহে কার্ক্রন ছিলো মৃসার জাতির লোক, (কিছু তা সত্ত্বেও) সে তাদের ওপর ভারী যুলুম করেছিলো, (অথচ) আমি তাকে (এতো) বিশাল পরিমাণ ধনভাভার দান করেছিলাম যে, তার (ভাভারের) চাবিগুলো (বহন করা) একদল শক্তিশালী লোকের পক্ষেও ছিলো (একটা) কষ্টসাধ্য ব্যাপার, তার জাতির লোকেরা তাকে বললো, (ধন সম্পদ নিয়ে) দম্ভ করো না, নিসন্দেহে আল্পাহ তায়ালা দাম্ভিকদের পছন্দ করেন না।

47 إِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْاٍ مُوْسَٰى فَبَغْى عَلَيْهِرْ مِ وَأَتَيْنُهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَا ۖ إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتُنُوَّأُ بِالْعُصْبَةِ أُولِى الْقُوَّةِ نِ إِذْ قَالَ لَهٌ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ

৭৭. (এবং এই যে সম্পদ) যা আদ্ধাহ তায়ালা তোমাকে
দিয়েছেন, তা দিয়ে পরকালের কল্যাণ তালাশ করো এবং
দুনিয়া থেকে সম্পদের যে (আসল) অংশ (পরকালে নিয়ে
যেতে হবে) তা ভুলে যেয়ো না এবং আদ্ধাহ তায়ালা
যেতাবে (ধন সম্পদ দিয়ে) তোমার ওপর মেহেরবানী
করেছেন, তুমিও তেমনি (তাঁর পথে তা ব্যয় করে তাঁর
বান্দাদের ওপর) দয়া করো, (সম্পদের বাহাদুরী দিয়ে)
যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করতে যেয়ো না; নিসন্দেহে আদ্ধাহ
তায়ালা ফাসাদী লোকদের ভালোবাসেন না।

44 وَابْتَغِ فِيْهَا الله الله الله الأار الأخِرة وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِن اللَّه الله وَاحْسِن كَهَا احْسَن لَها الشّه الله الله الله وَلا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ، إِنَّ الله لا يُحِبُّ الْهُ فَسِوِيْنَ

৭৮. কারুন (একথা শুনে) বললো, এ (বিশাল) ধন সম্পদ আমার জ্ঞান (ও যোগ্যতা)-বলেই আমাকে দেয়া হয়েছে; কিন্তু এ (মূর্খ) লোকটা কি জানতো না, আল্লাহ তায়ালা তার আগে বহু মানবগোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছেন, যারা শক্তি সামর্থে তার চাইতে ছিলো অনেক প্রবল এবং তাদের জ্বমা মূলধনও (তার তুলনায়) ছিলো অনেক বেশী; অপরাধীদের তাদের অপরাধ (-জনিত অজুহাত) সম্পর্কে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে না।

4 قَالَ إِنَّهَ آوْتِيْتُهُ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِى ،
 أوَ لَرْ يَعْلَرْ أَنَّ الله قَنْ آهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ
 مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ آهَنَّ مِنْهُ قُوتًا وَّآكَثُرُ
 مَهْاً ، وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِرُ الْهُجُرِمُونَ

৭৯. অতপর (একদিন) সে তার লোকদের সামনে (নিজের শান শওকতের প্রদর্শনী করার জন্যে) জাঁকজমকের সাথে বের হলো; (মানুষদের মারেখ) যারা পার্থিব জীবনের (ভোগবিলাস) কামনা করতো তখন তারা বললো, আহা! (কতো ভালো হতো) কার্ন্নকে যা দেয়া হয়েছে তা যদি আমাদেরও থাকতো, আসলেই সে মহাভাগ্যবান ব্যক্তি।

42 نَخْرَجَ عَلَى تَوْمِهُ فِي زِيْنَتِهِ ، قَالَ النَّنِينَ يُرِيْنَتِهِ ، قَالَ النِّنِينَ يُرِيْدُونَ الْحَيْوةَ النَّنْيَا يٰلَيْسَ لَنَا مِثْلَ مَا الْحَيْرِ مِثْلَ مَا الْحَيْرِ مِثْلَ مَا الْحَيْرِ مِثْلًا عَظِيْمٍ

২৮ সূরা আল কাছাছ

803

মন্যিল ৫

65

পারা ২০ আমান্ খালাকুা

৮০. (অপরদিকে) যাদের (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা বললো, ধিক তোমাদের (সম্পদের) ওপর, (বস্তুত) যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনে এবং নেক কাজ করে, তাদের জন্যে তো আল্লাহ তায়ালার দেয়া পুরস্কারই শ্রেষ্ঠ, আর তা তথু ধৈর্যশীলরাই পেতে পারে। أَوْتُوا الْعِلْمَ وَيُلَكُمُ
 أَوْتُوا الْعِلْمَ وَيَلِكُمُ
 أَوَابُ اللهِ مَيْرٌ لِّمَنْ أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا عَ
 وَلَا يُلَقُّهَا إِلَّا الصَّبِرُونَ

৮১. পরিশেষে আমি তাকে এবং তার (ঐশ্বর্যে তরা) প্রাসাদকে যমীনে গেড়ে দিলাম। তখন (যারা তার এ সম্পদের জন্যে একটু আগেই আক্ষেপ করছিলো তাদের) এমন কোনো দলই (সেখানে মজুদ) ছিলো না, যারা আল্লাহ তায়ালার (গযবের) মোকাবেলার তাকে (একটু) সাহায্য করতে পারলো, না সে নিজে নিজেকে (গযব থেকে) রক্ষা করতে পারলো!

١٨ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِنَ ارِةِ الْأَرْضَ عَا فَهَا كَانَ لَدً مِنْ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِنَ الرِّهِ الْأَرْضَ عَا فَهَا كَانَ لَدً مِنْ فَوْنِ اللَّهِ قَ وَمَا كَانَ مِنَ اللَّهِ قَ اللَّهِ قَ وَمَا كَانَ مِنَ الْهُنْتَصِرِيْنَ
 كَانَ مِنَ الْهُنْتَصِرِيْنَ

৮২. মাত্র গতকাল (সন্ধ্যা) পর্যন্ত যারা তার জায়ণায় পৌছার কামনা করছিলো, তারা আজ সকাল বেলায়ই বলতে লাগলো, (আসলে) আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের মাঝে যাকে চান (তার জন্যে) রেযেক বাড়িয়ে দেন, আর যাকে চান (তার জন্যে) তা সংকীর্ণ করে দেন, যদি আল্লাহ তায়ালা আমাদের ওপর তাঁর অনুহহ না করতেন, তবে আমাদেরও তিনি (কাদ্ধনের মতোই আজ) যমীনের ভেতর পুঁতে দিতেন; (আসলেই) কাফেররা কখনোই সফলকাম হয় না।

٨٢ وَاَمْبَحُ النَّهِ النَّهِ تَهَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْإَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَانَ اللَّهَ يَبْسُمُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِن عِبَادِةٍ وَيَقْدِرُ ع لَوْلَا أَن تَّن اللَّهُ عَلَيْنَا لَحَسَفَ بِنَا ، وَيْكَانَّهُ لَا يُغْلِحُ الْكٰفِرُونَ ع

৮৩. এটা হচ্ছে আখেরাতের (চির শান্তির) ঘর, আমি এটা
তাদের জন্যে নির্ধারিত করে রেখেছি যারা দুনিরায়
(কোনো রকম) প্রাধান্য বিস্তার করতে চায় না- না তারা
(যমীনে) কোনো রকম বিপর্যয় সৃষ্টি করতে চায়, শুড পরিণাম তো (এই) পরহেষণার মানুষদের জন্যেই
রয়েছে।

مَّ تِلْكَ النَّارُ الْأَخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّانِيْنَ لَا يُرِيْنُونَ عُلُولًا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ﴿
 وَالْعَاقِبَةُ لِلْهُتَّقِيْنَ

৮৪. যে ব্যক্তিই (কেয়ামতের দিন কোনো) নেকী নিয়ে হাযির হবে, তাকে তার (পাওনার) চাইতে বেশী পুরন্ধার দেয়া হবে, আর যে ব্যক্তি কোনো মন্দ কান্ধ নিয়ে আসবে (সে যেন জেনে রাখে), যারাই মন্দ কান্ধ করেছে তাদের কেবল সেটুকু পরিমাণ শান্তিই দেয়া হবে, যে পরিমাণ (মন্দ তারা নিয়ে এখানে) হাযির হবে।

٨٣ مَنْ جَاءً بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ مَيْرٌ مِّنْهَا ع وَمَنْ جَاءً بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ مَيْرٌ مِّنْهَا ع وَمَن جَاءً بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجُزَى الَّانِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ إِلَّا مَا كَانُواْ يَعْبَلُونَ

৮৫. (হে নবী,) যে আল্লাহ তায়ালা এ কোরআন তোমার ওপর অবশ্য পালনীয় করেছেন, তিনি অবশ্যই তোমাকে তোমার (কাংখিত পুণ্য) ভূমিতে ফিরিয়ে নিয়ে যাবেন; ভূমি (তাদের) বলো, আমার মালিক এটা ভালো করেই জানেন, কে তার কাছ থেকে হেদায়াত নিয়ে এসেছে আর কে সুস্পষ্ট গোমরাহীতে (নিমজ্জিত) রয়েছে।

أن الذي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْانَ
 أَرَّدُكَ إِلَى مَعَادٍ وَقُلْ رَبِّي أَعْلَرُ مَنْ جَاءَ
 بِالْهُلٰى وَمَنْ هُو فِي ضَلْلٍ شَبِينٍ

৮৬. (হে নবী,) তুমি (তো কখনো) এ আশা করোনি, তোমার ওপর কোনো কেতাব নাযিল হবে, (হাঁ, এটা ছিলো) তোমার মালিকের একাস্ত মেহেরবানী (যে, তিনি ডোমাকে কেতাব দান করেছেন), সূতরাং তুমি কখনো (সত্য প্রত্যাখ্যানকারী) যালেমদের পক্ষ নেবে না।

٨٦ وَمَا كُنْسَ تَرْجُوْآ اَنْ يَّلْقَى إِلَيْكَ الْكِتٰبُ إِلَّا رَحْبَةً مِّنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُوْنَى الْكِتٰبُ إِلَّا لَمْخُونَى الْكِتٰبُ إِلَّا لَكُغُونِينَ رَبِّكَ فَلَا تَكُوْنَى الْخَفِيرُ اللَّالُخُونِينَ رَبِي إِلَيْكُ مَا اللَّهُ اللَّلْ اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّالَّا اللّ

৮৭. (দেখো,) এমন যেন কখনো না হয় যে, তোমার ওপর আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ নাযিল হবার পর তারা তোমাকে (এর অনুসরণ থেকে) বিরত রাখবে, (তোমার কাজ হবে) তুমি মানুষদের তোমার মালিকের

٥ وَلا يَصُرُّنَاكَ عَن أيٰسِ اللهِ بَعْنَ إِذْ
 أُنْزِلَس إلَيْكَ وَادْعُ إِلٰى رَبِّكَ وَلا تَكُونَى

২৮ সূরা আল কাছাছ

803

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আমান্ খালাকা |
|----------|---|---|
| | দিকে আহ্বান করবে এবং নিজে ভূমি কখনো | |
| ₽ | মোশরেকদের অন্তর্ভুক্ত হবে না। | مِنَ الْهُشُرِكِيْنَ ع |
| লাযেম | ৮৮. কখনো আল্লাহ তায়ালার সাথে তুমি অন্য কোনো | |
| | মাবুদকে ডেকো না। তিনি ব্যতীত অন্য কোনো মাবুদ | ^^ وَلَا تَنْءُ مُعَ اللَّهِ إِلٰهًا أَخَرَ رَكَّ إِلٰهَ |
| ওয়াক্ষে | নেইও। তাঁর মহান সন্তা ছাড়া প্রতিটি বস্তুই ধ্বংসশীল; | إِلَّا مُوَ سَا كُلُّ شَيْءٍ مَالِكٌ إِلَّا وَجَهَدًا لَهُ |
| | যাবতীয় সার্বভৌমত্ব তাঁর জন্যেই এবং তোমাদের | |
| | সবাইকে তাঁর কাছেই ফিরে <i>যে</i> তে হবে। | الْحُكْمِ وَإِلَيْدِ تُرْجَعُونَ ع |
| W | | سُورَةُ الْعَنْكَبُونِي مَكِيةً |
| | স্রা আল আনকার্ত | |
| | মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৬৯, রুকু ৭ | أَيَاتٌ : ٦٩ رُكُوعٌ : ٤ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | A m . 'A m . 414 A |
| | | بِشرِ اللهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْرِ |
| | ১. जानिक-ना-म-मी-म, | االبرع |
| | | |
| | ২. মানুষরা কি (এটা) মনে করে নিয়েছে, তাদের (ভধু) এটুকু বলার কারণেই ছেড়ে দেয়া হবে যে, আমরা ঈমান | مَ اَحْسِبَ النَّاسُ اَنْ يُتُورَكُوْا اَنْ يَقُولُوْا |
| | এনেছি এবং তাদের (কানে রক্ষ) পরীক্ষা করা হবে না। | أُمَنَّا وَهُرْ لَا يُفْتَنُونَ |
| 1 | ৩. আমি তো সেসব লোকদেরও পরীক্ষা করেছি যারা | |
| | এদের আগে (এভাবেই ঈমানের দাবী করে) ছিলো, অতপর আক্সাহ | ٣ وَلَقَنْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ |
| | তায়ালা নিক্যই তাদের ভালো করে জেনে নেবেন যারা | اللَّهُ الَّذِيْنَ مَنَقُوا وَلَيَعْلَمَىُّ الْكُنِبِيْنَ |
| - 1 | (ঈমানের দাবীতে) সত্যবাদী, (আবার ঈমানের) মিধ্যা দাবীদারদেরও তিনি অবশ্যই জেনে নেবেন। | |
| l | ৪. যারা সব সময় গুনাহের কান্ধ করে বেড়ায় তারা এটা | مُ أَمْ حَسِبَ النَّويْنَ يَعْمَلُونَ السَّيَّاسِ أَنْ |
| | ধরে নিয়েছে, তারা (বৈষয়িক প্রতিযোগিতায়) আমার | |
| | থেকে আগে চলে যাবে, (এটা তাদের) একটা মন্দ সিদ্ধান্ত, যা (আমার সম্পর্কে) তারা করতে পারলো। | إِيْسْبِقُونَا ، سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ |
| | ৫. তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এ আশা করে, সে আল্লাহ | 4 9 . 4 |
| ļ | তায়ালার সামনাসামনি হবে (তবে সে যেন জেনে রাখে), | ٥ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَاءَ اللهِ فَانِ الْجَلَ اللهِ |
| | আল্পাহ তায়ালার নির্ধারিত (এ) সময়টা অবশ্যই আসবে; | كَاْتِ ، وَهُوَ السَّبِيْعُ الْعَلِيْرُ |
| | আল্লাহ তায়ালা সবকিছু শোনেন, সব কিছু জ্ঞানেন। | |
| - 1 | ৬. যে ব্যক্তি (আল্লাহ তায়ালার পথে) সংগ্রাম সাধনা করে, সে তো (আসলে) তা করে তার নিজের | ٢ وَمَنْ جَاهَلَ فَإِنَّهَا يُجَاهِلُ لِنَفْسِهِ ، إِنَّ اللَّهَ |
| | ক্রে, লে ভেল (আল্লেন) তা ক্রের ভার নির্বের (কল্যাণের) জন্যেই, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সৃষ্টিকুল | لَغَنِيٌّ عَنِ الْعُلَمِيْنَ |
| | থেকে প্রয়োজনমুক্ত। | تغني عن الغلوين |
| | ৭. যারা ঈমান আনে এবং নেক কান্ধ করে, আমি নিক্য়ই | ٤ وَالَّذِينَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا الصَّلِحُسِ |
| | তাদের সেসব দোষক্রটিগুলো দূর করে দেবো এবং তারা | |
| | যেসব নেক আমল করে আমি তাদের সেসব কর্মের উন্তম | لَنَكُفُّرُنَّ عَنْهَرُ سَيَّاتِهِرُ وَلَنَجُزِيَنَّهَرُ أَحْسَنَ |
| | कम (मर्स्ता । | الَّذِيْ كَانُّوا يَعْبَلُونَ |
| | ৮. আমি মানুষকে তাদের পিতামাতার সাথে সন্থ্যবহার করার আদেশ দিয়েছি; (কিন্তু) যদি কখনো তারা | ٨ وَوَمَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِنَيْهِ مُسْنًا ١ وَإِن |
| | করার আদেশ ।পরোছ; (কিছু) বাদ কবনো ভারা তোমাকে আমার সাথে কাউকে শরীক করার জন্যে | . |
| | জবরদস্তি করে, (যেহেতু এ) ব্যাপারে তোমার কাছে | جَامَن كَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْر |
| | (কোনো রকম) দলীল প্রমাণ নেই, তাই তুমি তাদের কোনো আনুগত্য করো না; কেননা তোমাদের তো ফিরে | فَلَا تُطِعْهُما م إِلَى مَرْجِعُكُر فَٱنَيِّنُكُر بِهَا |
| | যাবার জায়গা আমার কাছেই, আর তখন আমি অবশ্যই | |
| | তোমাদের সবকিছু বলে দেবো, তোমরা (দুনিয়ার জীবনে | كُنْتُمْ تَعْمُلُونَ |
| | কে কোথায়) কি করতে! | |
| | ২৯ সূরা আল আনকাবুত | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২০ আমান্ খালাকা |
|---|---|
| ৯. যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে, আমি অবশ্যই তাদের নেক বান্দাদের | ٩ وَالَّذِيْنَ أَمَنُواْ وَعَمِلُوا الصَّلِحُسِ |
| অন্তর্ভুক্ত করে নেবো। | لَنُهُمْ لِنَّهُمْ فِي الصَّلِحِيْنَ |
| ১০. মানুষদের মাঝে কিছু এমনও আছে যারা (মুখে) বলে, আমরা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছি, কিছু | ١٠ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ أُمَّنَّا بِاللَّهِ فَاذَا |
| যখন তাদের আল্লাহর পথে (চলার জন্যে) কট্ট দেয়া হয় তখন তারা মানুষের এ পীড়নকে আল্লাহ তায়ালার আযাবের মতোই মনে করে; আবার যখন তোমার | أُوْذِي فِي اللهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَنَ اب |
| মালিকের কোনো সাহায্য আসে তখন তারা (মুসলমানদের) বলতে থাকে, অবশ্যই আমরা তোমাদের | الله ، وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِّنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا |
| সাথে ছিলাম; (এরা মনে করে,) আল্লাহ তায়ালা কি সৃষ্টিকুলের (মানুষদের) অন্তরের গোপন বিষয় সম্পর্কে | كُنَّا مَعَكُمْ ﴿ ا وَ لَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِهَا فِي ٢ |
| মোটেই অবগত ননঃ | صُّ وْرِ الْعٰلَوِيْنَ |
| ১১. আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তাদের ভালো করে জেনে নেবেন যারা ঈমান এনেছে, আবার তিনি মোনাফেকদেরও | ١١ وَلَيَعْلَمَى اللَّهُ الَّذِينَ أَمَنُوْا وَلَيَعْلَمَى |
| ভালো করে জেনে নেবেন। | الْهُنفِقِينَ |
| ১২. কাফেররা ঈমানদারদের বলে, তোমরা আমাদের পথের অনুসরণ করো, আমরা (কেয়ামতের দিন) | ١٢ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ أُمُّنُوا |
| তোমাদের গুনাহসমূহের বোঝা তুলে নেবো; (অথচ) তারা (সেদিন) তাদের নিজেদের গুনাহসমূহের সামান্য | اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ غَطْيْكُمْ ، وَمَا مُرْ |
| পরিমাণ বোঝাও উঠাতে পারবে না; এরা (আসলেই) হচ্ছে মিথ্যাবাদী। | بِحْيِلِيْنَ مِنْ غَطْيُهُرْ مِّنْ شَيْءٍ وَ إِنَّهُرْ لَكُنْ بُونَ |
| ১৩. (কেয়ামতের দিন) এরা অবশ্যই তাদের নিজেদের শুনাহের বোঝা উঠাবে, (তারপর) তাদের এ বোঝার | ١٣ وَلَيَحْمِلُنَّ ٱلْقَالَمُرْ وَٱلْقَالًا مَّعَ ٱلْقَالِمِرْ ز |
| সাথে (থাকবে তোমাদের) বোঝাও, (দুনিয়ার জীবনে) যতো মিথ্যা কথা তারা উদ্ভাবন করেছে, তাদের অবশ্যই সে ব্যাপারে সেদিন প্রশ্ন করা হবে। | وَلَيُسْئِلُنَّ يَوْمَ الْقِيلَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ عَ |
| ১৪. আমি নূহকে অবশ্যই তার জাতির কাছে পাঠিয়েছিলাম, সে ওদের মাঝে অবস্থান করলো পঞ্চাশ | ١٢ وَلَقَلُ أَرْسَلْنَا نُوْمًا إِلَى قَوْمِهِ فَلَبِينَ |
| কম এক হাজার বছর; (তারা তার কথা ওনলো না) অতপর মহাপ্লাবন এসে তাদের পাকড়াও করলো, (মূলত) | فِيْهِرْ أَلْفَ سَنَةِ إِلَّا خَيْسِيْنَ عَامًا وَفَأَخَلَهُمُ |
| তারা ছিলো (বড়োই) যালেম। | الطُّوْفَانُ وَهُر ظُلِبُونَ |
| ১৫. (এ মহাপ্লাবন থেকে) আমি তাকে এবং তার সাঞ্চে নৌকার আরোহীদের রক্ষা করেছি, আর আমি এ (ঘটনা)-কে সৃষ্টিকুলের (মানুষদের) জন্যে একটি নিদর্শন | ١٥ فَٱنْجَيْنَهُ وَٱمْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنَهَا لَا السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنَهَا |
| বানিয়ে রেখেছি। | اية لِلعلومِين |
| ১৬. আর যখন ইবরাহীম তার জাতিকে বললো, তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করো এ বং তাঁকেই ভয় | ١٦ وَ إِبْرُهِيْمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُنُوا اللَّهَ |
| করো; এটাই তোমাদের জন্যে ভালো যদি তোমরা বুঝতে পারো। | وَاتَّقُوهُ م ذٰلِكُمْ غَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ |
| ১৭. তোমরা তো আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে কেবল মূর্তিসমূহের পূজা করো এবং (স্বয়ং আল্লাহ তায়ালা | ١٤ إِنَّهَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ أَوْثَانًا |
| সম্পর্কে) মিথ্যা কথা উদ্ভাবন করো; আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে যেসব মূর্তির তোমরা পূজা করো, তারা | وَّتَخْلُقُونَ إِفْكًا ١ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُنُونَ مِنْ |
| তোমাদের কোনোরকম রেযেকের মালিক নয়, অতএব তোমরা একমাত্র আল্লাহ তায়ালার কাছেই রেযেক চাও, | دُونِ اللهِ ٧ يَهْلِكُونَ لَكُرْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْلَ |
| ভধু তাঁরই এবাদাত করো এবং তাঁর (নেয়ামতের) শোকর আদায় করো; (কেননা) তোমাদের তাঁর কাছেই ফিরিয়ে | |
| নেয়া হবে। | تُرْجَعُونَ |

মন্যিল ৫

নেয়া হবে।

২৯ সূরা আল আনকাবুত

১৮, আর যদি তোমরা (আমার নবীকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করো (তাহলে জেনে রেখো), তোমাদের আগের জাতির লোকেরাও (তাদের যমানার নবীদের) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে; (মূলত) সুস্পইরূপে (মানুষদের কাছে আল্লাহর কথা) পৌছে দেয়াই হচ্ছে রসূলের কাজ।

1⁄ وَإِنْ تُكَنِّبُوْا فَقَلْ كَنَّبَ ٱمَرُّ مِّنْ قَبْلِكُ ﴿ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِيْنُ

১৯. এ লোকেরা কি লক্ষ্য করে না, কিভাবে আল্লাহ তায়ালা প্রথমবার তাঁর সৃষ্টিকে অন্তিত্ব দান করলেন, কিভাবে তাকে আবার (ডার আগের অবস্থায়) ফিরিয়ে আনবেন; এ কাজটা আল্লাহ তায়ালার কাছে নিতান্ত সহজ্ঞ।

19 أَوَ لَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُرَّ يُعِيْدُهُ ۚ ﴿ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرُ

২০. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা আল্লাহর যমীনে পরিভ্রমণ করো এবং (এর সর্বত্র) দেখো; কিভাবে আল্লাহ তায়ালা তাঁর সৃষ্টিকে প্রথম বার অন্তিত্বে আনেন এবং (একবার ধ্বংস হয়ে গেলে) কিভাবে আবার তিনি তা পুনর্বার পয়দা করেন; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা সবকিছুর ওপর প্রবল ক্ষমতাবান।

٢٠ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
 بَدَا الْخَلْقَ ثُرُّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْاةَ
 الْخِرَةَ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ جَ

২১. তিনি যাকে চান তাকে শান্তি দেন আবার যাকে চান তাকে (ক্ষমা করে তার ওপর) অনুগ্রহ করেন; (সর্বাবস্থায়) তোমাদের তাঁর দিকেই ফিরে যেতে হবে। ٢١ يُعَلِّبُ مَنْ يَّشَاءُ وَيَرْهَرُ مَنْ يَشَاءُ وَلَاهَرُ مَنْ يَشَاءُ عَ

২২. তোমরা যমীনে (যেমন) আল্লাহ তায়ালাকে (তাঁর পরিকল্পনায়) অক্ষম করে দিতে পারবে না, (তেমনি পারবে না) আসমানে (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা ছাড়া তোমাদের কোনো অভিভাবক নেই, নেই কোনো সাহায্যকারীও!

٢٢ وَمَا ٓ اَنْتُرْ بِهُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ رَوَمَا لَكُرْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ وَلِي وَّلِا نَصِيْرٍ ع

২৩. যারা আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ ও তাঁর সামনাসামনি হওয়াকে অস্বীকার করে, (মূলত) সেসব লোক আমার অনুগ্রহ থেকে নিরাশ হয়ে গেছে, আর এরাই হচ্ছে সে সব মানুষ, যাদের জন্যে রয়েছে মর্মভুদ শান্তি।

٢٣ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِأَيْسِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِهِ وَلِقَائِكَ لَهُرُ الْمِلْ اللهِ وَلَوْلَئِكَ لَهُرُ عَنَابٌ اَلْمِرْ عَنَابٌ اَلِيْرٌ

২৪. অতপর তাদের (ইবরাহীমের জ্ঞাতির) কাছে এ ছাড়া (আর কোনো) জবাব থাকলো না যে, তারা বলতে লাগলো, একে মেরেই ফেলো কিংবা তাকে আগুনে পুড়িয়ে দাও, অতপর (তারা বর্ধন তাকে আগুন নিক্ষেপ করলো তব্ধন) আল্লাহ তারালা তাকে (জ্বলপ্ত) আগুন থেকে উদ্ধার করলেন; অবশ্যই মোমেনদের জন্যে এ (ঘটনা)-র মাঝে (আল্লাহ তারালার কুদরতের) অনেক নিদর্শন মজ্বদ রয়েছে।

٢٣ فَهَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلاَّ أَنْ قَالُوا الْتَلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَالْجُهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ الْتَلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَانْجُهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ اللهِ فَي ذٰلِكَ لَا يُسِ لِقَوْمٍ يُّوْمِنُونَ

২৫. (ইবরাহীম) বললো, হে আমার জাতির লোকেরা, তোমরা তোমাদের পার্থিব জীবনে একে অপরের প্রতি ভালোবাসা (বৃদ্ধি)-র খাতিরে আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে নিজেদের হাতে গড়া মৃতিগুলোকে (নিজেদের মাবুদ) ধরে নিয়েছো, অথচ কেয়ামতের দিন তোমাদের (এ ভালোবাসার) একজন ব্যক্তি আরেকজনকে (চিনতেও) অস্বীকার করবে, তারা তখন একজন আরেকজনকে অভিশাপ দিতে থাকবে, (পরিশেষে) তোমাদের সবার (চূড়ান্ত) ঠিকানা হবে জাহানাম, আর সেদিন কেউই তোমাদের জন্যে কোনো সাহায্যকারী থাকবে না।

٢٥ وَقَالَ إِنَّهَا التَّخَلْتُكُرْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ أَوْثَانًا لا مُّودَّةً بَيْنِكُرْ فِي الْحَيٰوةِ اللَّاثِياعَ ثُرَّ يَوْا اللَّهِ يَكُونُ بَعْضُكُرْ بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُرْ بَعْضُكُرْ بَعْضًا وَمَا لَكُرْ مِّنْ تَعْضِكُرْ بَعْضًا وَمَا لَكُرْ مِّنْ تَعْرِيْنَ لاق

২৬. অতপর লৃত তার ওপর ঈমান আনলো। (ইবরাহীম) বললো, আমি (এবার) আমার মালিকের (বলে দেয়া স্থানের) দিকে হিজরত করছি; অবশ্যই তিনি মহাপরাক্রমশালী ও বিজ্ঞ কুশলী। ٢٦ فَأَمَىٰ لَهُ لُوْمٌ م وَقَالَ إِنِّى مُهَاجِرٌ إِلَى رَبِّى مُهَاجِرٌ إِلَى رَبِّى مُ النَّهِ وَالْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ

২৯ সূরা আল আনকাবুত

800

২৯ সুরা আল আনকাবুত

আমার জাতি, তোমরা এক আল্লাহ তায়ালার এবাদাত



৪৪. আল্লাহ

২৯ সুরা আল আনকাবৃত

রয়েছে।

809

তায়ালা আসমানসমূহ ও যমীন

যথাযথভাবেই সৃষ্টি করেছেন; (বস্তুত) এতে ঈমানদারদের

জন্যে (আল্লাহ তায়ালার অন্তিত্বের পক্ষে বড়ো) প্রমাণ

মন্যিল ৫

٣٣ غَلَقَ اللَّهُ السَّاوْسِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ،

ان في ذلك كَايَةً لَلْهُؤْمنينَ ع

পারা ২০ আমান খালাকা

৪৫. (হে নবী,) যে কেতাব তোমার ওপর নাযিল করা হয়েছে, তুমি তা তেলাওয়াত করো এবং নামায প্রতিষ্ঠা করো; নিসন্দেহে নামায (মানুষকে) অল্লীলতা ও মন্দ কাজ থেকে বিরত রাখে; পরস্তু আল্লাহ তায়ালাকে (হামেশা)

শ্বরণ করাও একটি মহান কাজ: তোমরা যা কিছু করো

আল্লাহ তায়ালা তা সম্যক অবগত আছেন।

٨٠ أَثُلُ مَا أَرْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِلْبِ وَٱقِم

পারা ২১ উতলু মা উহিয়া

المَّلُوةَ ، إِنَّ الصَّلُوةَ تَنْهُى عَنِ الْفَحَشَّاءِ وَالْهُنْكَرِ ، وَلَنِكُرُ اللَّهِ اَكْبَرُ ، وَاللَّهُ يَعْلَرُ مَا تَصْنَعُونَ

৪৬. (হে মুসলমানরা,) তোমরা কেতাবধারীদের সাথে উত্তম পস্থা ছাড়া কোনোরকম তর্ক-বিতর্ক করো না, আবার তাদের মধ্যে যারা যুলুম করে তাদের কথা আলাদা, আর (তোমরা) বলো, আমরা ঈমান এনেছি (কেতাবের) যা কিছু আমাদের ওপর নাথিল করা হয়েছে (তার ওপর), আরো ঈমান এনেছি যা কিছু তোমাদের ওপর নাথিল করা হয়েছে (তার ওপরও, আসলে) আমাদের মাবৃদ ও তোমাদের মাবৃদ হচ্ছেন একজন এবং আমরা সবাই তাঁর কাছেই আত্মসমর্পণ করি।

٣٦ وَلَا تُجَادِلُوْآ أَهْلَ الْكِتْبِ إِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ أَهْسَنُ كُ إِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَبُوْا مِنْهُرُ وَقُوْلُوْآ أَمَنَّا بِالَّذِيْ ٱنْزِلَ اِلَيْنَا وَٱنْزِلَ إِلَيْكُرْ وَالِهُنَا وَالْهُكُرْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهُ مُشْلِبُوْنَ

৪৭. এভাবে আমি তোমার ওপর (এ) কেতাব নাযিল করেছি, আমি (আগে) যাদের কেতাব দান করেছিলাম (যারা সত্যানুসন্ধিৎসু ছিলো) তারা এর ওপর ঈমান এনেছে, (পরবর্তী) লোকদের মাঝেও (কিছু ভালো মানুষ আছে) যারা এর ওপর ঈমান এনেছে; (আসলে) অস্বীকারকারীরা ছাড়া কেউই আমার আয়াতের প্রতি বিদ্রোহ করে না।

٣٠ وكَنَالِكَ أَنْزَلْنَا إلَيْكَ الْكِتَٰبَ وَ فَالَّذِيْنَ الْكِتَٰبَ وَ فَالَّذِيْنَ الْكَتَٰبُ وَ فَالَّذِيْنَ الْتَيْنَمُرُ الْكِتَٰبَ الْكَوْرُونَ مِنْ أَوْلَا عِلَيْنَا إِلَّا الْكُورُونَ مَنْ يَوْمُونَ لِلْمِتِنَا إِلَّا الْكُورُونَ مَنْ يَوْمُونَ لِلْمِتَا إِلَّا الْكُورُونَ

৪৮. (হে নবী,) তুমি তো (এ কোরখান নাবিদ হওয়ার খাপে) কোনো বই পুস্তক পাঠ করোনি, না তুমি তোমার ডান হাত দিয়ে কোনো কিছু দিখে রেখেছো যে, (তা দেখে) অসত্যের পূজারীরা (আজ্ঞ) সন্দেহে দিও হয়ে পড়ছে!

٣٨ وَمَا كُنْسَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتْبٍ وَّلَا تَخُطُّهُ بِيَهِيْنِكَ إِذًا لَّارْتَابَ الْهُبْطِلُونَ

৪৯. বরং এগুলো হচ্ছে যাদের আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে; তাদের অস্তরে সুস্পষ্ট কিছু নিদর্শন, কতিপয় যালেম ব্যক্তি ছাড়া আমার (এ সুস্পষ্ট) আয়াতের সাথে কেউই গোঁড়ামি করতে পারে না।

٣٩ بَلَ مُوَ أَيْتُ بَيِّنْتُ فِي صُوْرِ الَّذِينَ ٱوْتُوا الْعِلْرَء وَمَا يَجْحَنُ بِأَيْتِنَا إِلَّا الظَّلِمُوْنَ

৫০. তারা (তোমার সম্পর্কে) বলে, এ ব্যক্তির কাছে তার মালিকের পক্ষ থেকে (নবুওতের) কোনো প্রমাণ নাযিল হয় না কেন? (হে নবী,) তুমি বলো, যাবতীয় নিদর্শন তো আল্লাহ তায়ালার হাতেই রয়েছে; আমি তো হচ্ছি (আযাবের) একজন সম্পষ্ট সতর্ককারী মাত্র!

40 وَقَالُوْا لَوْ لَا ٱلْزِلَ عَلَيْهِ أَيْتٌ مِّنَ رَبِّهِ ﴿
قُلْ إِنَّهَا الْأَيْتُ عِنْنَ اللّهِ ﴿ وَ إِنَّهَا ۖ أَنَا نَلْمِيْرُ

৫১. (হে নবী,) এদের জন্যে এটাই কি যথেষ্ট নয় যে, স্বয়ং আমিই তোমার ওপর কেতাব নাযিল করেছি, যা তাদের কাছে তেলাওয়াত করা হচ্ছে; অবশ্যই ঈমানদার সম্প্রদায়ের জন্যে এতে (আল্লাহ তায়ালার) অনুগ্রহ ও নসীহত রয়েছে।

(۵) اَولَر يكفِمِر أَنَّا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ
 يُتْلَى عَلَيْمِر ، إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَرَحْبَةً وَّذِكُوٰى
 لِقَوْمٍ يُّوْمِنُوْنَ عَ

৫২. (হে নবী,) তুমি বলো, আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট, (কেননা) আসমানসমূহ ও যমীনে যা আছে (তার) সবকিছু তিনি জানেন; যারা বাতিলের ওপর ঈমান আনে এবং আল্লাহ তায়ালাকে অপীকার করে, তারাই হচ্ছে মারাত্মক ক্ষতিগ্রস্ত মানুষ।

۵۲ قُلْ كَفَىٰ عِلِقَلْهِ بَيْنِیْ وَبَيْنَكُرْ شَوِيْدًا عَ يَعْلَمُ مُ مَوَيْدًا عَ يَعْلَمُ مُ مَوْدِدًا عَ يَعْلَرُ مَا فِي السَّبُوْتِ وَالْأَرْضِ وَالْأَنْفِ وَالْأَنْفِي وَالْأَنْفِينَ امْنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ لا أُولَٰئِكَ مُرُ الْخُسِرُونَ

২৯ সূরা আল আনকাবুত

806

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|--|--|
| ৫৩. (হে নবী,) এরা তোমার কাছে আযাব ত্বরান্বিত করার কথা বলে; যদি (আল্লাহ তায়ালার কাছে) এদের (শান্তি দেয়ার) জন্যে একটি দিনক্ষণ সুনির্দিষ্ট না থাকতো, তাহলে কবেই না তাদের ওপর আযাব এসে যেতো; অবশ্যই এদের ওপর আকস্মিকভাবে আযাব আসবে এবং তারা জানতেও পারবে না। | ۵۳ وَيَشْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَنَابِ ، وَلَوْكَ آجَلُ أَجَلُ شَسَّى لَّجَآءُمُرُ الْعَنَابُ ، وَلَيَأْتِيَنَّمُرْ بَغْتَةً وَّمُرْكَا يَشْعُرُوْنَ |
| ৫৪. তোমার কাছে এরা আযাব ত্বরান্বিত করার কথা বলে; (অথচ) জাহান্লাম তো কাফেরদের পরিবেষ্টন করেই নেবে। | ۵۳ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَلَابِ ﴿ وَإِنَّ جَهَنَّـرَ لَهُ حَيْطَةً ۖ بِالْكُغِرِيْنَ لا |
| ৫৫. যেদিন আযাব তাদের গ্রাস করবে তাদের ওপর থেকে এবং তাদের পায়ের নীচ থেকে, আল্লাহ তায়ালা (তখন) বলবেন, (দুনিয়ায়) তোমরা যা কিছু করতে (এখন তার) মজা উপভোগ করো। | ۵۵ يَوْمَ يَغْشُهُرُ الْعَلَابُ مِنْ فَوْقِهِرْ وَمِنْ تَعْمَلُونَ تَعْمَلُونَ تَعْمَلُونَ |
| ৫৬. হে আমার বান্দারা, যারা আমার ওপর ঈমান এনেছো, আমার যমীন অনেক প্রশন্ত, সুতরাং তোমরা অতপর একমাত্র আমারই এবাদাত করো। | ٥٦ يُعِبَادِيَ الَّذِينَ الْمَنُوْآ إِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةً فَإِيَّاىَ فَاعْبُدُونِ |
| ৫৭. প্রতিটি জীবকেই মরণের স্বাদ গ্রহণ করতে হবে। এর পর তোমাদের সবাইকে আমার কাছেই ফিরিয়ে আনা হবে। | ٥٤ كُلُّ نَفْسٍ ذَ أَلِقَةُ الْمَوْتِ فَ ثُمَّ اِلْيَنَا تُرْجَعُونَ |
| ৫৮. যারা আমার ওপর ঈমান আনবে এবং নেক কাজ করবে, আমি তাদের জন্যে অবশ্যই জান্নাতে (সুরম্য) কোঠা তৈরী করবো, যার পাদদেশ দিয়ে ঝণাধারা প্রবাহমান থাকবে, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে; কতো উত্তম পুরস্কার এ নেককার মানুষগুলোর জন্যে! | ٥٨ وَالنَّذِيْنَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُسِ لَنَبَوِّنَا مَهُرَى مِنْ تَحْتِهَا لَنَبَوِّنَا مَهُرَى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهُرُ عُلِينَ مَنْ الْجَنَّةِ عُرَفًا تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهُرُ عُلِينَ مَن فَيْهَا * يَعْمَ آجُرُ الْعُبِلِيْنَ مَن من الله الله الله الله الله الله الله الل |
| ৫৯. (নেক্ষার মানুষ হচ্ছে ভারা,) যারা ধৈর্য ধারণ করেছে (এবং সর্বাবস্থায়) নিজেদের মালিকের ওপরই নির্ভর করেছে। | ٥٩ الَّذِينَ مَبَرُوْا وَعَلَى رَبِّمِرْ يَتَوَكَّلُونَ |
| ৬০. কতো (ধরনের) বিচরণশীল জীব (এ দুনিয়ায়) রয়েছে, যারা কেউই নিজেদের রেযেক (নিজেরা কাঁধে) বহন করে বেড়ায় না, আল্লাহ তায়ালাই তাদের এবং তোমাদের (নিত্যদিনের) রেযেক সরবরাহ করেন, তিনি সবকিছু শোনেন এবং সবকিছু জানেন। | ٦٠ وَكَايِّنْ مِّنْ دَابَّةٍ لَا تَحْيِلُ رِزْقَهَا لَىٰ اَللّٰهُ يَرُونُهُما وَاللَّهُ اللّٰهُ عَيْرُلُونُهُما وَإِيَّاكُمْ أَخْ وَهُوَ السِّيفُعُ الْعَلِيْمُ |
| ৬১. (হে নবী,) তুমি যদি তাদের জিজ্জেস করো, আসমানসমূহ ও যমীন কে পয়দা করেছেন, সূর্য ও চন্দ্রকে কে বশিভূত করে রেখেছেন, তারা অবশ্যই বলবে, (একমাত্র) আল্লাহ তায়ালা, (কিন্তু তারপরও) এরা কোধায় কোধায় ঠোকর খাছে ? | اللهِ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُرْ مَّنْ خَلَقَ السَّبُوٰ وَ الْأَرْضَ وَالْقَبَرَ لَيَقُوْلُنَّ وَالْقَبَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللَّهُ وَالْقَبَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللَّهُ عَنَاتُى يُؤْفَكُونَ |
| ৬২. (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের মাঝে যাকে চান তার রেযেক প্রশস্ত করে দেন, (আবার যাকে চান) তার জন্যে তা কমিয়ে দেন; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সবকিছুর ব্যাপারে সম্যক অবগত আছেন। | ٦٢ اَللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ مَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرٌ |
| ৬৩. (হেনবী,) যদি তুমি তাদের জিজ্ঞেস করো, আসমান্থেকে কে পানি বর্ষণ করেছেন, অতপর কে যমীন একবার মরে যাওয়ার পর সে (পানি) দারা তাতে জীবন সঞ্চার করেছেন, অবশ্যই এরা বলবে, একমাত্র আল্লাহ তায়ালাই; তুমি বলো, যাবতীয় তারীফ একমাত্র আল্লাহ তায়ালার জন্যে; কিন্তু ওদের অধিকাংশ মানুষই (তা) | اا ولنِي سالتهر من نزل مِن السَّاءِ مَاءُ فَا مَنْ السَّاءِ مَاءُ فَا مَنْ السَّاءِ مَاءُ فَا مَنْ السَّاءِ مَاءُ فَا مَنْ الْكُرْضُ مِنْ السَّاءِ مَاءُ اللَّهُ مَ قُلِ الْحَمْلُ لِلَّهِ مَ بَلْ اَكْثَرُمُرْ لَا اللَّهِ مَ بَلْ اَكْثَرُمُرْ لَا اللَّهِ مَ بَلْ اَكْثَرُمُرْ لَا اللَّهِ مَا بَلْ اللَّهِ مَا بَلْ اللَّهُ مَا اللّلِهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّالِمُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللّ |
| অনুধাবন করে না। | يَعْقِلُونَ ع |
| ২৯ স্রা আল আনকাবৃত | মন্যিল ৫ |

৬৪ এ পার্থিব জীবন তো অর্থহীন কতিপয় খেল তামাশা ছাড়া (আসলেই) আর কিছু নয়: নিশ্চয় আখেরাতের জীবন হচ্ছে সত্যিকারের জীবন ৷ কতো ভালো হতো যদি তারা (এ বিষয়টা) জানতো!

وَمَا هٰنِهِ الْحَيْوِةُ النَّانْيَا الَّا لَهُوَّ وَّلَعِبُّ ﴿ وَإِنَّ النَّارَ الْأَخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ مِ لَوْ كَانُوْ ا يَعْلَمُوْنَ

७৫. यथन ध्वा जलगात जादार्थ करत (नान विश्वराद्ध प्रमुशीन عَمُو اللَّهُ عَمُو اللَّهُ عَمُ اللَّهُ عَمُ اللَّهُ عَمُ اللَّهُ عَمُ اللَّهُ عَمْلًا لِعَمْلًا لِعْمَالًا لِعَمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلًا لِعَمْلِكُمُلْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِكُمْلِ মা তখন তারা নিষ্ঠার সাথে আল্লাহ তায়ালাকেই ডাকে. জীবন বিধানকে একমাত্র তার জন্যে (নিবেদন করে). কিন্তু আল্লাহ তায়ালা যখন তাদের মুক্তি দিয়ে স্তর্লে নামিয়ে নিরাপদ করে দেন, (তখন) সাথে সাথে আল্লাহ তায়ালার সাথেই এরা শরীক করতে শুরু করে

مُخْلَصِينَ لَهُ الرِّينَ ۚ فَلَهَّا نَجُّهُمْ الَّي الْبَرِّ إِذَا مُرْ يُشْرِكُونَ لا

৬৬. যেন আমি তাদের (ওপর) যা কিছু অনুগ্রহ করেছি তা তারা অস্বীকার করতে পারে এবং (এভাবেই এরা) कराण िमन (मुनियाय) ভোগবিলान करते काणित्य मिर्ज পারে। অচিরেই এরা (আসল ঘটনা) জ্ঞানতে পারবে।

٦٦ لِيَكْفُرُوا بِهَا أَتَيْنُهُمْ } وَلِيَتَهَتَّعُوا رسة فَسَوْنَ يَعْلَهُونَ

৬৭. এরা কি দেখতে পাচ্ছে না. (কিভাবে) আমি (এ মক্কাকে) শান্তি ও নিরাপদ আশ্রয়স্থল বানিয়ে রেখেছি. অথচ তার চারপাশে মানুষদের প্রেতিনিয়ত জ্বোর করে) ছিনিয়ে নেয়া হচ্ছে: এরপরও কি তারা বাতিলের ওপর ঈমান আনবে এবং আল্লাহ তায়ালার নেয়ামত অস্বীকার করবে ?

٢٤ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا أَمِنًا ويَّتَخَطُّفُ النَّاسُ مِنْ مَوْلِهِمْ ، أَفَبِالْبَاطِل يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْهَ اللهِ يَكْفُرُونَ

৬৮, তার চাইতে বডো যালেম আর কে হতে পারে যে (স্বয়ং) আলাহ তায়ালার ওপরই মিথ্যা অপবাদ আরোপ করে, অথবা তার কাছে যখন সত্য এসে যায় তখন তাকেই অস্বীকার করে; (হে নবী,) এমন ধরনের অস্বীকারকারীদের জন্যে জাহানামই কি (একমাত্র) আশ্রয়স্থল (হওয়া উচিত) নয় ?

١٨ وَمَنْ أَظْلَرُ مِمِّنِ افْتَرْى عَلَى اللَّهِ كَنِبًا أَوْ كَنَّابَ بِالْحَقِّ لَمًّا جَاءًةٌ ﴿ أَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثُومي لِللَّكْفِرِيْنَ

৬৯. (অপরদিকে) যারা আমারই পথে জ্বেহাদ করে, আমি অবশ্যই তাদের আমার পথে পরিচালিত করি, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা নেককার বান্দাদের সাথে রয়েছেন।

٦٩ وَالَّالِينَ جَاهَلُوا فِيْنَا لَنَهْلِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ، وَإِنَّ اللَّهَ لَهَعَ الْهُحُسِنِيْنَ ع سُوْرَةً الرُّوْرَ مَكِيدً

সুরা আর রোম মঞ্চায় অবতীর্ণ– আয়াত ৬০ রুকু ৬ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

أَيَاتٌ : ٢٠ رُكُوْعٌ : ٢ ر اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْم

আলিফ লা-ম-মী-ম.

২. রোম (জাতি) পরাজিত হয়ে গেছে,

٢ غُلِبَتِ الرُّوْمُ لا

৩. (পরাজিত হয়েছে) ভূমন্ডলের সবচাইতে নিচু অঞ্চলে, তাদের এ পরাজয়ের পর অচিরেই তারা (আবার) বিজয় লাভ করবে

٣ فِيْ آَدْنَى الْأَرْضِ وَهُرْ بِينَ ۖ بَعْلِ غَلَبِهِرْ

8. (তিন থেকে নয়- এ) বিজোড় বছরের মাঝেই (এ مَنْ قَبْلُ وَمِنْ قَبْلُ وَمِنْ قَبْلُ وَمِنْ قَبْلُ وَمِنْ عَبْلُ وَمِنْ عَالِمْ وَمِنْ عَبْلُ وَمِنْ عَبْلُ مِنْ عَبْلُ مِنْ عَبْلُ مِنْ عَبْلُ مِنْ عَبْلُ عَلْمُ عَلَى عَبْلُ وَمِنْ عَبْلُ مِنْ عَبْلُ مِنْ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَ তায়ালার হাতে এবং (এ ঘটনার) পরেও (সে চাবিকাঠি থাকবে) তাঁরই হাতে; (রোমকদের বিজয়ে) সেদিন ঈমানদার ব্যক্তিরা ভীষণ খুশী হবে.

بَعْنُ ، وَيَوْمَنِنِ يَتَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ٧

৩০ সুরা আর রোম

870

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|---|--|
| ৫. আল্লাহ তায়ালার সাহায্যেই (এটা ঘটবে), তিনি | |
| (যখন) যাকে চান তাকেই (বিজয়ে) সাহায্য দান করেন; | ٥ بِنَصْرِ اللهِ ، يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءً ، وَهُوَ الْعَزِيْزُ |
| তিনি মহাপরাক্রমশালী ও পরম দ্য়ালু, | الرهمِيْرُ |
| | |
| ৬. (এটা হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালারই ওয়াদা; আল্লাহ | ٢ وَعْنَ اللَّهِ ﴿ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْنَهُ وَلَكِنَّ |
| তায়ালা (কখনো) তাঁর ওয়াদার বরখেলাপ করেন না, | |
| কিন্তু অধিকাংশ মানুষই (তা) জানে না। | اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ |
| ৭. তারা তো পার্থিব জীবনের (গুধু) বাইরের দিকটি (সম্পর্কেই) জানে, কিন্তু আখেরাতের জীবন সম্পর্কে তারা | 4 يَعْلَهُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيْوةِ النَّانْيَا عَ |
| | |
| (সম্পূর্ণই) গাফেল। | وَمُرْعَنِ الْأَخِرَةِ مُرْغُفِلُونَ |
| ৮. এ মানুষগুলো কি নিজেদের মনে এ কথা চিন্তা করে | ٨ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي آَ أَنْفُسِهِمْ عَا خَلَقَ |
| না, আল্লাহ তায়ালা (কিভাবে) আসমানসমূহ, যমীন ও | اللهُ السَّاوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ إلَّا |
| অন্য সব কিছু যথাযথভাবে এবং একটি সুনির্দিষ্ট সময় | |
| দিয়ে পয়দা করেছেন; কিন্তু মানুষদের মাঝে অধিকাংশই (এসব কিছুর শেষে) তাদের মালিকের সামনে হাযির | ا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمَّى ﴿ وَاِنَّ كَثِيرًا مِّنَ |
| হওয়াকে অস্বীকার করে। | النَّاسِ بِلِقَانِي رَبِّهِمْ لَكُفِرُونَ |
| ৯. এরা কি (আমার) যমীনে ভ্রমণ করে না এবং তাদের | |
| আগের লোকদের পরিণাম প্রত্যক্ষ করে নাঃ অথচ তারা | ٩ أَوَلَمْ يَسِيْرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ |
| শক্তিতে এদের চাইতে ছিলো অনেক প্রবল, তারা এ | كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِمِرْ ، كَانُوْ ٓ أَشَلَّ |
| যমীনে অনেক চাষবাস করেছে, (আজ্ঞ) এরা যেমন একে আবাদ করছে, তাদের চাইতে (বরং) তারা বেশী | <u> </u> |
| পরিমাণেই একে আবাদ করেছিলো, (অতপর) তাদের | مِنْهُرْ قُوَّةً وَّٱتَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوْهَا ۖ ٱكْثَرَ |
| কাছে তাদের রস্লরা সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে হাযির | مِمًّا عَبَرُوْهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنْتِ وَفَهَا |
| হয়েছিলো (কিন্তু তারা রসূলদের মানতে অস্বীকার করায় আমার গযব আবাদ করা সেই শব্দের যমীন থেকে তাদের | |
| নিচিহ্ন করে দিলো); আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর (গ্যব | كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُرْ وَلَكِنْ كَانُوْآ ٱنْفُسَهُرْ |
| পাঠিয়ে) কোনো যুলুম করেননি, বরং (কুফরী করে) তারা | يَظْلُمُونَ ا |
| নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করেছে। | |
| ১০. অতপর যারা মন্দ কাজ করেছে তাদের পরিণাম মন্দই হয়েছে, কেননা তারা আল্লাহ তায়ালার আয়াতকে | ١٠ ثُرٌّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ اَسَّاءُوا السُّوآي |
| অস্বীকার করেছে, তা নিয়ে তারা ঠাট্টা বিদ্রুপও করেছে! | أَنْ كَنَّابُواْ بِأَيْتِ اللَّهِ وَكَانُواْ بِهَا يَشْتَهْزِءُونَ ع |
| · · | |
| ১১. আল্লাহ তায়ালা (নিজেই তাঁর) সৃষ্টিকে অন্তিত্ব দান | اا اَللَّهُ يَبْنَؤُ الْخَلْقَ ثُرَّ يُعِيْنُهُ ۚ ثُرَّ إِلَيْهِ |
| করেন, আবার তিনিই তাকে তার (মৃলের) দিকে ফিরিয়ে নেন, অতপর তোমাদের তাঁর কাছেই ফিরিয়ে নেয়া হবে। | م رم ۸ ر آد معوان |
| | ترجعون |
| ১২. যেদিন কেয়ামত অনুষ্ঠিত হবে, সেদিন (এর জ্যাবহুতা দেনে) অপরাধী ব্যক্তিরা ভীতবিহ্বল হয়ে পড়বে। | ١٢ وَيَوْاً تَقُوْاً السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْهُجْرِمُوْنَ |
| প্রবর্গ ব্যক্তির ভাতাবহুবল হয়ে শঙ্বে। ১৩. (সেদিন) তাদের শরীকদের কেউই তাদের জ্ঞান্যে | |
| সুপারিশ করার মতো থাকবে না, বরং তারা তাদের এ | ا ٣ وَلَمْ يَكُنَ لَّهُمْ مِّنَ شُرَكَّالِهِمْ شُفَّعُوُّا |
| শরীক করার ঘটনাই (তখন) অস্বীকার করবে। | وَكَانُوْا بِشُرَكَانِهِم كُنوِدِيْنَ |
| ১৪. যেদিন কেয়ামত হবে সেদিন মানুষরা (ঈমান ও | |
| কুফুরের ভিত্তিতে) আলাদা হয়ে পড়বে। | ١٢ وَيُوْا تَقُوْاً السَّاعَةُ يَوْمَنِنِ يَّتَفَرَّقُوْنَ |
| ১৫. যারা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং (সাথে | ١٥ فَأَمًّا الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ |
| সাথে) নেক কাজ করেছে, তারা (জান্নাতের) বাগিচায় | فَهُرْ فِي رَوْضَةً يُحْبَرُونَ |
| থাকবে, তাদের (সেখনে প্রাচ্ র্যপূর্ণ) মেহমান্দারী করা হবে । | |
| ৩০ সূরা আর রোম | मनियल ए |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|--|---|
| ১৬. (অপরদিকে) যারা কৃষ্ণরী করেছে এবং আমার আয়াতকে অস্বীকার করেছে, (অস্বীকার করেছে) শেষ (বিচারের দিনে আমার) সামনাসামনি হওয়ার ঘটনাকে, | ١٦ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَنَّابُوا بِالْيَتِنَا وَلِقَامِ الْعَنَابِ وَلَقَامِ الْعَنَابِ |
| তাদের (ভয়াবহ) আযাবের সম্মুখীন করা হবে। | مُعْضُرُونَ |
| ১৭. অতএব (দিবাশেষে) যখন তোমরা সন্ধ্যা করো তখন আল্লাহ তায়ালার মাহাত্ম্য ঘোষণা করো, (ঘোষণা করো) যখন সকাল (বেলার মাধ্যমে দিনের তরু) করো তখনও। | ١٤ فَسُبُحٰىَ اللهِ حِيْنَ تُهْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبُونَ وَحِيْنَ تُصْبُونَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ |
| ১৮. আসমানসমূহ ও যমীনের যাবতীয় প্রশংসা তো একমাত্র তাঁরই জন্যে, (তাঁর মাহান্ধ্য ঘোষণা করো) যখন তোমরা (দিনের) দ্বিতীয় প্রহর (জ্ঞ) করো, আবার যখন (দিনের) তৃতীয় প্রহর (জ্ঞ) করো (তখনো তার মাহান্ধ্য ঘোষণা করো)। | |
| ১৯. তিনিই মৃত থেকে জীবস্ত কিছুর আবির্ভাব ঘটান, একইভাবে জীবস্ত কিছু থেকে মৃতকে বের করে আনেন, তিনিই (সেই সন্তা, যিনি এ) যমীনকে তার নির্জীব অবস্থার পর পুনরায় জীবন দান করেন; (ঠিক) এভাবেই তোমাদেরও (আবার) পুনরুত্বিত করা হবে। | 19 يُخْرِجُ الْحَى مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْمِ الْأَرْضَ بَعْلَ مُوْتِهَا ، وكَنْ لِكَ تُخْرَجُونَ ع |
| ২০. আল্লাহ তায়ালার (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের মধ্যে (একটি নিদর্শন) এই যে, (শুরুতে) তিনি তোমাদের মাটি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তোমরা মানুষ হিসেবে যমীনে (সর্বত্র) ছড়িয়ে পড়লে। | ٢٠ وَمِنْ أَيْتِهِ أَنْ خَلَقَكُرْ مِّنْ تُرَابٍ ثُرَّ إِذَا الْمُرَّ إِذَا الْمُرَّ الْمَرَّ إِذَا |
| ২১. তাঁর (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের (মাঝে) এও (একটি) যে, তিনি তোমাদের জন্যে তোমাদের মধ্য থেকে (তোমাদের) সংগী সংগিনীদের বানিয়েছেন, যাতে করে তোমরা তাদের কাছে সুখ শান্তি লাভ করতে পারো, (উপরস্তু) তিনি তোমাদের মাঝে ভালোবাসা ও (পারস্পরিক) সৌহার্দ্য সৃষ্টি করে দিয়েছেন, অবশ্যই এর মাঝে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে অনেক নিদর্শন রয়েছে। | ٢١ وَمِنَ أَيْتِهُ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنَ أَنْغُسِكُمْ أَنْ أَنْغُسِكُمْ أَزُواجًا لِّتَسْكُنُوا إلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مُّودَّةً وَرَحْهَةً م إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَايْتِ لِقَوْمٍ يَّتَغَكَّرُونَ وَرَحْهَةً م إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَايْتِ لِقَوْمٍ يَّتَغَكَّرُونَ |
| ২২. আকাশমালা ও যমীনের সৃষ্টি, তোমাদের পারস্পরিক ভাষা ও বর্ণ বৈচিত্র (নিসন্দেহে) তাঁর (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের মাঝে (এক একটি বড়ো নিদর্শন); অবশ্যই জ্ঞানবান মানুষদের জন্যে এতে অনেক নিদর্শন রয়েছে। | ٢٢ وَمِنْ الْمِتِهِ خَلْقُ السَّلُوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَانُ ٱلْسِنَتِكُمْ وَٱلْوَانِكُمْ ﴿ اِنَّ فِيٛ ذٰلِكَ كَاٰيْتٍ لِّلْعَلْمِيْنَ |
| ২৩. তোমাদের রাত ও দিনের ঘুম, তোমাদের তাঁর দেয়া রেযেক তালাশ করাও তাঁর (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের অন্তর্ভুক্ত (একটি); অবশ্য এসব কিছুর মাঝে যে জাতি (আল্লাহর কথা) শোনে তাদের জ্বন্যে অনেক নিদর্শন রয়েছে। | ٢٣ وَمِنْ أَيْتِهِ مَنَامُكُرْ بِالْيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاَّوُّكُرْ مِّنْ فَضْلِهِ ﴿ إِنَّ فِيْ ذَٰلِكَ لَاٰيْتٍ لِقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ |
| ২৪. তাঁর (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের মাঝে এও একটি যে, তিনি তোমাদের বিদ্যুৎ (ও তার আলো) দেখান ভয় এবং আশা সঞ্চারের মাঝ দিয়ে (তা প্রতিভাত হয়), তিনি আসমান থেকে পানি বর্ষণ করেন, অতপর তা দিয়ে যমীন একবার নির্জীব হয়ে যাওয়ার পর তাকে পুনরায় জীবন দান করেন; অবশ্য এতেও বোধশক্তিসম্পন্ন জাতির জন্যে (আল্লাহকে চেনার) অনেক নিদর্শন রয়েছে। | ٣٣ وَمِن أَيْتِهِ يُونِكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَهَعًا وَيَنْزِلُ مِنَ السَّهَاءِ مَاءً فَيُحْى بِهِ الْاَرْضَ بَعْنَ مُوتِهَا ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيْتِ لِقَوْرًا لِيُعْقِلُونَ |
| ২৫. তাঁর নিদর্শনসমূহের মাঝে এও (একটি) যে, তাঁর আদেশেই আসমান যমীন (নিজ নিজ অবস্থানের ওপর) | ٢٥ وَمِنْ أَيْتِهِ أَنْ تَقُوْاً السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ |
| ৩০ সূরা আর রোম | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|--|---|
| দাঁড়িয়ে আছে; (তোমরা এক সময় মাটির ভেতরে চলে যাবে) অতপর যখন তিনি তোমাদের (সে) মাটির (ভেতর) থেকে বেরিয়ে আসার জন্যে ডাক দেবেন, তখন (সে ডাক শোনামাত্রই) তোমরা বেরিয়ে আসবে। | بِآمُوهِ ﴿ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعُوةً ثَا مِّنَ الْأَرْضِ ثَا إِذَا دَعَاكُمْ دَعُوةً ثَا مِّنَ الْأَرْضِ ثَا |
| ২৬. (এ) আকাশমালা ও যমীনে (যেখানে) যা কিছু আছে তা তো (একান্তভাবে) তাঁর জন্যেই; সবকিছু তাঁর (আদেশেরই) অনুগত। | ٢٦ وَلَهُ مَنْ فِي السَّاوِٰتِ وَالْأَرْضِ مَ كُلُّ لَهُ قَنِتُوْنَ |
| ২৭. (তিনিই সেই মহান সন্তা) যিনি (গোটা) সৃষ্টি (জ্ঞগত)-কে প্রথমবার পয়দা করেছেন, অতপর (কেয়ামতের দিন) তাকে আবার আবর্তিত করবেন, সৃষ্টির (প্রক্রিয়ায়) সে (কাজ)-টি তাঁর জন্যে খুবই সহজ; (কেননা) আসমানসমূহ ও যমীনে সর্বোচ্চ মর্বাদা তো তাঁর জন্যেই | ٢٠ وَهُوَ الَّذِي يَبْنَوُا الْخَلْقَ ثُرَّ يُعِيْنُهُ وَهُوَ اَهُونُ عَلَيْهِ ﴿ وَلَهُ الْهَثَلُ الْإَعْلَى فِي السَّاوٰتِ وَالْاَرْضِ } وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ عَ |
| নির্ধারিত এবং তিনি মহাপরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়। ২৮. (হে মানুষরা,) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (বুঝার) জন্যে তোমাদের (নিত্যদিনের ঘটনা) থেকে উদাহরণ | ٢٨ ضَرَبَ لَكُر مُثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُر مَ هَلْ لَكُر |
| পেশ করছেন; (সে উদাহরণটির জিজ্ঞাস্য হচ্ছে,) আমি তোমাদের যে রেযেক দান করেছি তাতে কি তোমাদের অধিকারভূক্ত দাসদাসীরা সমভাবে অংশীদার? (এমন অংশীদার)– যাতে করে তোমরা (এবং তারা) সমান হরে | مِّنْ مَّا مَلَكَتْ آيُهَانُكُرْ مِّنْ شُرِكَاءً فِيْ مَا رَزَقْنُكُرْ فَٱنْتُرْ فِيْهِ سَوَآءً تَحَافُونَهُرْ |
| যেতে পারো— (কাতে পারো), তোমরা কি তাদের (ব্যাপারে) ততোটুকু ভয় করো, যতোটুকু ভয় নিজেদের ব্যাপারে করো; (বস্তুত) এভাবেই আমি বোধশক্তিসম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে (আমার ক্থাঙ্গো) খুলে খুলে বর্ণনা করি। | لِقَوْمٍ يَّعْقِلُونَ |
| ২৯. কিন্তু যারা সীমালংঘনকারী, তারা অজ্ঞানতাবশত নিজেদের খেয়াল খুশীর অনুসরণ করে রেখেছে, সূতরাং আল্লাহ তায়ালা যাকে গোমরাহ করে দিয়েছেন তাকে কে হেদায়াতের পথ দেখাতে পারে? এমন সব লোকদের কোনো সাহায্যকারীও নেই। | ٢٩ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْ آ اَهُوَ اَعُمْرُ بِغَيْرِ عِلْمَ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ |
| ৩০. অতএব (হে নবী), তুমি নিষ্ঠার সাথে নিজেকে (সঠিক) দ্বীনের ওপর কায়েম রাখো; আল্লাহ তায়ালার প্রকৃতির ওপর (নিজেকে দাঁড় করাও), যার ওপর তিনি মানুষকে পয়দা করেছেন (মনে রেখো); আল্লাহর সৃষ্টির মাঝে কোনো রদবদল নেই; এ হচ্ছে সহজ্ঞ (সরল) জীবন বিধান, কিছু অধিকাংশ মানুষই তা জ্ঞানে না, | ٣٠ فَٱقِرْ وَجْهَكَ لِللَّهْنِ حَنِيْفًا ، فِطْرَتَ اللّٰهِ اللّٰتِي وَنَيْفًا ، فِطْرَتَ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ النَّاسَ عَلَيْهَا ، لا تَبْدِيلَ لِحَلْقَ اللّٰهِ ، ذٰلِكَ الرِّيْنُ الْقَيِّرُ لا وَلَٰكِنَّ الْقَيِّرُ لا وَلَٰكِنَّ الْقَيِّرُ لا وَلَٰكِنَّ الْثَاسِ لا يَعْلَمُونَ ق |
| ৩১. তোমরা একনিষ্ঠভাবে তাঁরই অভিমুখী হও এবং তথু তাঁকেই ভয় করো, তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করো এবং কখনো মোশরেকদের দলভুক্ত হয়ো না, | ٣١ مُنِيْبِيْنَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاقِيْمُوا الصَّلُوةَ وَلَا تَكُونُوا الصَّلُوةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ٧ |
| ৩২. (তাদের মাঝে এমনও আছে) যারা তাদের দ্বীনকে টুকরো টুকরো করে দিয়েছে এবং তারা নানা ফের্কায়ও পরিণত হয়ে গেছে; প্রত্যেক দলই নিজ্ঞেদের কাছে যা কিছু রয়েছে তা নিয়ে মন্ত আছে। | ٣٢ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِيْنَهُرُ وَكَانُوا شِيعًا مَ كُلُّ حِزْبٍ بِهَا لَكَيْهِرْ فَرِحُوْنَ |
| ৩৩. মানুষদের যখন কোনো দুঃখ দৈন্য স্পর্শ করে তখন তারা (আল্লাহর) দিকে বিনয়ের সাথে আল্লাহর দিকে ধাবিত হয়ে তাদের মালিককে ডাকতে থাকে, অতপর | ٣٣ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُوُّ دَعَوْا رَبَّهُرُ مُّنِيْبِيْنَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَاۤ أَذَاقَهُمْ بِنَّنُهُ رَحْهَةً إِذَا |
| যখন তিনি তাদের তাঁর দয়া (নেয়ামতের স্বাদ) উপভোগ করান, তখন সাথে সাথে তাদের একদল লোক তাদের মালিকের সাথে (অন্যদের) শরীক করতে শুরু করে, | مَنِينِينَ إِلَيْهِ لَمِ إِذَا ادَافَهِمَ مِنْهُ رَهُمُهُ إِدَا فَرِيقٌ مِنْهُمُر بِرَبِهِمِ يُشْرِكُونَ لا |
| ৩০ সূরা আর রোম | मनियल ৫ |

| ৩৪. উদ্দেশ্য হচ্ছে, যা কিছু (অনুগ্ৰহ) আমি তাদের দান করেছি তার (প্রতি) যেন অকৃতজ্ঞতা (-জনিত আচরন) করেছি তার (প্রতি) যেন অকৃতজ্ঞতা (-জনিত আচরন) করিছ তার (প্রতি) যেন অকৃতজ্ঞতা (-জনিত আচরন) করিছ তার (প্রতি) যেন অকৃতজ্ঞতা (-জনিত আচরন) করিছে তার (তামরা (তামাদের কৃষ্ণরীর ফ্লাফল) জানতে পাররে । ৩৫. কিহবা আমি কি তাদের ওপর অমন কোনো দলীল প্রমাণ পাঠিয়েছি যে, যে শেরেক এরা করে চলেছে তা (জাদের) এমন কথা বলে। ৩৬. আমি যখন মানুখনের অনুগ্রহ (-এর স্বাদ) আস্বাদন করাই, তখন তারা তাতে (জীষণ) খুলী হয়; আবার যখন তালেরই (মন্দ) কালের কারণে তাদের ওপর কোনো মানুখনের অনুগ্রহ (-এর স্বাদ) আস্বাদন করাই, তখন তারা তাতে (জীষণ) খুলী হয়; আবার যখন তালেরই (মন্দ) কালের কারণে তাদের ওপর কোনো মানুখনের কারণে তাদের ওপর কোনো মানুখনের কারণি তাদের ওপর কোনো মানুখনের কারণে তাদের ওপর কোনো মানুখনের কারণে তাদের বলন তারা আরার থাকে চান তাকে কম করে দেন; নিসন্দেহে আরালা যার জন্যে চান তাকে কম করে দেন; নিসন্দেহে আরালা যার জন্যে চান তাকে কম করে দেন; নিসন্দেহে যারা ঈমানদার, এতে (তাদের জন্যে) অনেক নিদান্দির রামেছ । ৩৮. অতাএবে (মেইকালার রাজি), ভূমি আজীর বজনকোর বার্বার কিলেনা করে লাও, অতার্বার্গ্র মোনান্দেরদেরতা বিশ্বরারি নিয়ে তেন কারণা তালের করে লাও কোর্বার্গ্র মানুখনের মানের করে দাও, অতার্বার্গ্র মানুখনের মানের সানের করে দাও, আতার্যার্গ্র মানুখনের মানের সানের করে দাও, আতার তারালার সন্তুটি কামনা করে পাও, অবাই হচ্ছে কেনর কোনের মানের সানের করে দাও, আরাই হচ্ছে কেনর কোনের কার্বার নির্ল্লের করে লায়, আরাহ তারালার দ্বিহিতে তা কিন্তারী বাড়ে না, অপরাদিকে যে যাকাত তোমরা দান করে। ৪০. আল্লাহ তায়ালা (সেই পরাক্রমালালী সন্তা) নিমি তামাদের সানের ভিন্ন কোনা তামানের আলার তামানের আলার তামানির করে কিনি তামাদের সানের ক্রিকার করি জাবার তামানের (আরাহর সাথে) আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর তারালা তানের কেনর নিয়েছে তানের বালির তামালের তামালা তানের করেনেক কিন্তকরের করেনে কানের করেক করির জনের করেনে করিক করেনে করির করেনে করির লানায়, আরাহ তায়ালা তানের করিনি নিরের অতলকর করির লানায় আরাহের সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর সাথে। আরাহর করেনে করির করেনে করেনে করেনের করির নিয়েছে তানের করির কিনের করেনের করির করেনের করিক করেনের তানার করির নিয়ের করিক | | |
|---|---|---|
| করতে পারে, সুতরাং ভোমরা ভোগ করে নাও, অতপর অধির স্তারাং ভোমরা ভোগ করে নাও, অতপর অধির সুতরাং ভোমরা ভোগ করে নাও, অতপর অধির হৈ ভোমরা (তোমাদের কৃষ্ণরীর ফলাফল) জানতে পারেবে। ৩৫. কিংবা আমি কি তাদের ওপর এমন কোনো দলীল প্রমাণ পাঠিরেছি যে, যে শেরেক এরা করে চলেছে তা ভোদের) এমন কথা বলে। ৩৬. আমি যখন মানুষদের অনুগ্রহ (এর স্বাদ) আবাদন করাই, তখন ভারা তাতে (জীষণ) খুলী হয়; আবার যখন ভানেরই (মন্দ) কালের কারণে তাদের ওপর কোনো মানুষদের অনুগ্রহ (এর স্বাদ) আবাদন করাই, তখন ভারা তাতে (জীষণ) খুলী হয়; আবার যখন দিবলৈও পভিত হয় তখন ভারা সাথে সাথেই নিরাশ হয়ে ৩৭. এরা কি এ বিষয়টি নিয়ে ভেবে দেবেনি, আরাহ তারালা যার জন্যে তাল তাকে তমন করে তমন তার তার রেযেক হাসারিত করে লেন, রার্রার্ক্তর কন করে লেন, বিলাল বরে লালা, করাইলিত তালা বরে করে দেবলি, আরাহ তারালার স্বাদানর এতে (তাদের জন্যে) অনেক নিদর্শন বরেছে। ৩১. অতথ্য (হে ইমানার রজি , তুমি আখীয় স্বন্ধনের ভালের করে দেবলি বিলালা বরে লালা, এ বিষয়টি) তাদের জন্যে ভালের নির্দ্ধন লালা, এ বিষয়টি) তাদের জন্য ভালের করে দিবলি পালা বুলির নাও), এ (বিষয়টি) তাদের জন্য ভালের করে দিবলি পালা বুলির নাও), এ (বিষয়টি) তাদের জন্য ভালের করে দিবলি পালা বুলির নাও), এ বিষয়টি তাদের জন্য ভালের করে দিবলি বরের স্বিলি বালা, এ বারি ভালের স্বাহর ভালের করে দিবলি বালার করে দাও, তালার করে লাভ তালার করে দাও, আরাই হাজে হালার দৃষ্টিতে তা ক্রিমিল করে। তা অন্য মানুষদের মালের সাবেত তালের নির্দ্ধন নাও বিলি বিলি বালার করে বিলি বালার করে বিলি বিলি বালার করে বিলি বিলি বিলি বিলি বিলি বিলি বিলি বিল | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
| ভাচরেই তোমরা (তোমাদের কুফরীর ফলাফল) জানতে পারবে। ৩৫. কিংবা আমি কি তাদের ওপর এমন কোনো দলীল প্রমাণ পারিরেছি যে, যে শেরেক এরা করে চলেছে তা (তাদের) এমন কথা বলে। ৩৬. আমি যথন মানুষদের অনুগ্রহ (-এর স্বাদ) আস্থাদন করাই, তখন তারা তাতে (তীঘণ) খুলী হয়; আবার স্বখন তাদেরই (মল) কাজের কারবে তাদের ওপর কোনা মানুষদের অনুগ্রহ (-এর স্বাদ) আস্থাদন করাই, তখন তারা তাতে (তীঘণ) খুলী হয়; আবার স্বখন তাদেরই (মল) কাজের কারবে তাদের ওপর কোনো মানুষদের অনুগ্রহ (মল) কাজের কারবে তাদের ওপর কোনো মানুষদের অনুগ্রহ (মল) কাজের কারবে তাদের ভবর কোনা মানুষদের কিন্তুল তার তাতে (তীঘণ) খুলী হয়; আবার স্বখন তারেক কারবে তাদের ওপর কোনো মানুষদের কিন্তুল তার তারেক কারবে কারবে কারবে কারবে কারবে কারবে কারবে কারবে কারবে কারবিত করে কোন, বারবির কারবির তারবেক রালার করে দাও, তারবির করে কোন, বারবির করে কোন, তারবির করে কোন, বারবির করে কারবির করে কোন, বারবির করে কারবির করে কোন তার রেবেক রালার করে দাও, তারবির করে কারবে তারবেক রালার করে দাও, তারবির করে কারবে তারবেক রালার করে দাও, তারবির করে করে আরার করে দাও, তারবির করে করে করে করে করে করে করে করে করে কর | করেছি তার প্রেতি) যেন অকৃতজ্ঞতা (-জ্ঞনিত আচরণ) | ٣٢ لِيَكْفُرُوا بِهَا ۚ أَتَيْنَهُرْ مَ فَتَهَتَّعُوا رس |
| बिमां भारिताहि (य. (य (मांतक ध्वता करत हलाह छ) (তালের) এমন कवा वरल। ७८ আমি যখন মানুষদের অনুগ্রহ (-এর বাদ) আবাদন করাই, তখন তারা তাতে (জীখণ) খুশী হয়; আবার যখন তাদেরই (মন্দ) কাজের কারণে তাদের ওপর কোনা মসিবত পতিত হয় তখন তারা সাথে সাথেই নিরাশ হয়ে পড়ে। ৩৭. এরা কি এ বিষয়টি নিয়ে ভেবে দেখেনি, আল্লাহ তারারা বার জন্যে চান তার রেফের প্রসারিত করে দেন, আবার (যাকে চান তারে রেফের প্রসারিত করে দেন, বারা সমানদার, এতে (তাদের জনো) অনেক নিদর্শন রয়েছে। ৩৮. অতএব (য়য়য়নার রাঙ্গি), তুমি আজীয় বজনকে তার আবার (একমাত্র) আল্লাহ তারালার সন্তুষ্টি কামনা করে, (আর সভিলের অর্থে) এরাই হজে সফলকাম। ৩৯. যা (কিছু ধন সম্পদ) (তামরা স্দের ওপর দান, (ত্র ভার ভারাই দান, (ত্রাক্র অর্থে) এরাই হজে সফলকাম। ৩৯. যা (কিছু ধন সম্পদ) (তামরা স্দের ওপর দান, (ত্র ভার ভারাই হাজে (পের নার) । বারা (রুফ্রের ভারালার সন্তুষ্টি কামনা করের তা (বেহের্ড করেজনর) আল্লাহ তারালাকে সন্তুষ্ট করার উদ্দেশ্দে দান করে, তাই বরং বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখে, এরাই হজে (সেব লার) যারা (রুফ্রের লার) ৪০. আল্লাহ তারালা (সেই পরাক্রমশালী সন্তা) – যিন ভারাক্র করে নিয়েছে। তাদের কর্তি কিনা তোমাদের ভারতি করে কিনি তোমাদের ভারতি করে নির্মেল করে কেট কি এমন জাহে ভারতির সাথে। যাবের স্বাহ্র বৃদ্ধি আরার তারালাত তারা বির্বের দান করেহেন্দ, তিনিই আবার তোমাদের স্বাহ্র ভারতির সাথে। যাবের পরিক বানায়, আল্লাহ তারালা তারে বরে কোনো একটি কাজক করেতে পারবের (স্বৃক্ত) ভারা ভারতির সাথে। যাবের ক্রক্রকেন কর্তি কি এমন আহেহে ভারতির সাথে। যাবের ক্রক্রকেন কর্তি কি এমন আহেহে ভারতির সাথে। যাবের ক্রক্রকেন কর্তি কি এমন আহেহে ভারতির সাথে। যাবের ক্রক্রকেন করে লিক্র করেনে স্বালা ভারতির সাথে। যাবের ক্রক্রকেন করে লিক্রক্র করেনে স্বালা তারে ভারতির বারিক্র বারা আগে (এবারে হারা আলা তারে বর্বের ক্রকেনেক করেকেন ক্রেন্তির করের লিলের ক্রক্রকরেনিক বির্কির করের। ৪২. (হে নবী,) ভূমি বলা, তোমর ক্রেনের ক্রেনির করের নির্রের ক্রেনের ক্রেনের ক্রেনের ক্রেনের ক্রেনের ক্রেনে | অচিরেই তোমরা (তোমাদের কুফরীর ফলাফল) জানতে | فَسُوْفَ تَعْلَمُوْنَ |
| তঙ্, আমি যখন মানুষদের অনুগ্রহ (-এর বাদ) আবাদন করাই, তখন তারা তাতে (ভীষণ) খুলী হয়; আবার যখন মানুষদের কারণে তাদের পগর কোনো নামিরত পতিত হয় তখন তারা সাথে সাথেই নিরাশ হয়ে পতিত হয় তখন তারা সাথে সাথেই নিরাশ হয়ে পতি। কর্মনীরত পতিত হয় তখন তারা সাথে সাথেই নিরাশ হয়ে পতি। তারালা যার জন্যে চান তার রেযেক প্রসারিত করে দেন, আবার (যাকে চান তারে কার করে পেন, আবার বালি, তুমি আখ্রীয় বজনকে তার রয়েছে। ৩৭. আবার করে দাণ, অতাবয়য় মোসাকেরদেরও নির্মান করে (তার করি দাণ), এ (বিষয়টি) তাদের জন্যে তারে বার ক্রমে দাণ, আবার করে দাণ, অতাবয়য় মোসাকেরদেরও (লিছ নিল পাওনা বুলির দাণ), এ (বিষয়টি) তাদের জন্যে তারে বার করে তার তার করে তার করে করে তার তার করে করে তার তার করে করে তার করে তার করে তার তার করে করে তার তার করে করে তার তার করে তার করে তার করে তার করে তার করে তার তার করে তার তার করে তার তার করে তার করে তার তার করে তার করে তার করে তার তার করে তার করে তার করে তার তার করে তার তার করে তার করে তার তার করে তার তার করে তার তার করে তার করে তার তার করে তার করে তার | | ٣٥ أَ ٱلْزَلْنَا عَلَيْمِرْ سُلْطَنَا نَهُوَ يَتَكَلَّرُ بِهَا كَانُوْلِ مِنْكُلِّرُ بِهَا كَانُوْلِ مِنْ كُورَ |
| ভাগেরই (মন্দ) কাভের কারণে ভাগের ওপর কোনো মার বিশ্ব দিন্ত করিবে ভারার বিশ্ব দিন্ত করিবে ভারার করেণে ভাগের ওপর করেলে নির্মান বিশ্ব দিন্ত ভেবে দেবেনি, আল্লাহ তারালা বার জন্যে চান তার রেবেক প্রসামিত করে দেন, নিসন্দেহে যারা ইমানদার, এতে (ভাদের জন্যে) অনেক নিদর্শন ররেছে। ৩৮. অতএব (রেইমানদার বাঙি), ভূমি আত্মীয় বজনকে তার অধিকার আদায় করে দাও, অভারবার মোসাকেরদেরও নির্মানি তার দাও, অভারবার মোসাকেরদেরও নির্মানি তার দাও, অভারবার মোসাকেরদেরও নির্মানি তার করে দাও, অভারবার মোসাকেরদেরও নির্মানি তার করিব দাও, অভারবার করে করিব দাও, অভারবার সমানাকর বির্মানি তার করিব দাও, অভারবার সমানাকর বির্মানি তার করিব দাও, অভারবার সম্বাচিত তা করিব দাও, আরা তার করে করিব দাও, আরা ভারার সম্বাচিত তা করিব দাও, আরা ভিছ্ম বন সম্পদ্য তারালার সম্বাহিত তা করের করে লাও, আরাহ তারালার করে তা (রেহেরু বন্ধকারার) আল্লাহ তারালার করে করে করে বাবে, অভারব বাররু বার্বার (একমার) আল্লাহ তারালাকে সন্তুষ্ট করার করেরে তা (রেহেরু বন্ধকারার করিব দার করেরেক দান করে, তাই বরহ বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, করেরেক দান করে, তাই বরহ বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, করেরেক দান করেহেলে, তিনিই আরার তোমাদের ব্যবহিত তা করেরেক দান করেহেলে, তিনিই আরার তোমাদের ব্যবহিত তা করেরেক নান করেহেলে, অতার বরহ বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, করেরেক দান করেহেলে, তাই বরহ বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, করেরেক দান করেহেলে, তাই বরহ বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, করেরেক দান করেহেলে, তাই বরহ বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, করেকে দান করেহেলে, তিনিই আরার তোমাদের ব্যবহিত তা করিত তা করিব নানায়, আল্লাহর সাথে) শরীক করে নিয়েহের সাথে বারার তামাদের (আল্লাহর সাথে) করিব দেবেন; তোমরা যাদের আল্লাহর সাথে) করিব দানায়, আল্লাহর সাথে। তারিক বানায়, আল্লাহ তায়ালা তা করে করেকের করেকের করেকের করেকের করেকের করেকের করেকের করিব বানায়, আল্লাহ তায়ালা তানের কতিবার কালকের মারের সাথে। আরের করেরের করেরে | | |
| আবার (যাকে চান তার ওবে ক্রমারত করে দেন; নিসন্দেহে আবার (যাকে চান তারে) কম করে দেন; নিসন্দেহে যারা ঈমানদার, এতে (তাদের জন্যে) অনেক নিদর্শন রয়েছে। ৩৮. অভএব (হে ঈমানদার রাজি), তুমি আত্মীয় স্বজ্জনকে তার অধিকার আদার করে দাও, অভারথন্ত মোসাকেরদেরও (নিছ নিন্ধ পাওনা র্বিরে দাও), এ (বিষয়টি) তাদের জন্যে তালো যারা (একমাএ) আল্লাহ তায়ালার সম্ভুটি কামনা করে, (আর সত্যিকার অর্থে) এরাই হল্ছে সফলকাম। ৩৯. যা (কিছু ধন সম্পদ) তোমরা সুদের ওপর দাও, (অ তা এ জনাই দাও) যেন তা অন্য মানুষদের মালের সাথে ভাগে এ জনাই দাও) যেন তা অন্য মানুষদের মালের সাথে ভাগে এ জনাই দাও) যেন তা অন্য মানুষদের মালের সাথে ভাগে বাংলাই) বাড়ে না, অপরদিকে যে যাকাত তোমরা দান করো তা (রিফ্টে একান্তন্ত) আল্লাহ তায়ালাকে সম্ভুট করার উদ্দেশে দান করে, তাই বরং বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখা, এরাই হচ্ছে (সেব লোক) যারা (রাকাডের মাধ্যমে) আল্লাহ ৪০. আল্লাহ তায়ালা (সেই পরাক্রমানির লিছিয়ে নের । ৪০. আল্লাহ তায়ালা (সেই পরাক্রমানির স্থা) দেবেন, অতপর তিনি ভোমাদের রেবেক দান করেছেন, তিনিই আবার তোমাদের মুত্তা দেবেন, অতপর (ক্রমাযতের দিন) তিনি ভোমাদের রেবেক দান করেহেন, তোমরা যাবের (আল্লাহর সাথে) শরীক করে নিয়েছো তাদের কেউ কি এমন আছে, যে এর কোনো একটি কান্তন্ত করেতে পারবেং (মূলত) তারা (আরার) জীবন দেবেন; তোমরা যাবের (আল্লাহর সাথে) শরীক করে নিয়েছো তাদের কেউ কি এমন আছে, যে এর কোনো একটি কান্তন্ত করেতে পারবেং (মূলত) তারা (আরার ভুড্রের পড়েছে, (মূলত) আল্লাহ তায়ালা তাদের কতিপর কান্তকর্মের জন্যে তাদের শান্তির সাদ আলান করাতে চান,সক্বত তারা (সেবর লান্তির সাদ আলান করাতে চান,সক্বত তারা (সেবর লান্তর করায়) তাদের কি মানুমের ভুড্রের বিং বুং বুর্টী মিনুমির করায় তারালা করা করা বিং বুং বুর্টী নির্মীর করা বিং বুর্টী মিনুমির বিং বুর্টী বিং বুর্টী বিং বিং বুর্টী বিং বুর্টী নির্মীর করা বিং বুর্টী বিং বুর্টী নির্মীর করা বিং বুর্টী বিং বুর্ | করাই, তখন তারা তাতে (ভীষণ) খুশী হয়; আবার যখন তাদেরই (মন্দ) কাজের কারণে তাদের ওপর কোনো মসিবত পতিত হয় তখন তারা সাথে সাথেই নিরাশ হয়ে | ٣٦ وَإِذْ الْمَدْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا الْوَاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا الْوَاسَ وَالْمَا الْمَ وَإِنْ تُصِبْهُرْ سَيِّئَةً الِهَا قَلَّمَتْ أَيْلِيْهِرْ إِذَا هُرْ يَقْنَطُونَ |
| (मिल निल्न भाका पुरिक्ष माठ), व (विषयाि) जाटमत जाटमा करता जाला विषयाि (विष्याि) जाटमत जाटमा जाटमा विषयाि (विष्याि) जाटमत जाटमा जाटमा विषयाि (विषयाि) जाटमत जाटमा जाटमत जाटमा जाटमत जाटमा जाटमत जाटमा जाटमत जाटमा जाटमत जाटमा जाटमत | তারালা যার জন্যে চান তার রেযেক প্রসারিত করে দেন, আবার (যাকে চান তাকে) কম করে দেন; নিসন্দেহে যারা ঈমানদার, এতে (তাদের জন্যে) অনেক নিদর্শন রয়েছে। | يَّشَاءُ وَيَقْلِرُ ، إِنَّ فِي ذُلِكَ كَأَيْسٍ لِقَوْمٍ يُّوْمِنُونَ |
| (णां व हतारे मां) यान जां जानू मानूसपत माराल जां जाने करा विकास करा के कि जां कि जां के कि जां कि जां कि जां कि जां के कि जां कि | অধিকার আদায় করে দাও, অভাবগ্রন্থ মোসাফেরদেরও (নিন্ধ নিন্ধ পাওনা বৃধিয়ে দাও), এ (বিষয়টি) তাদের জন্যে ভালো যারা (একমাত্র) আল্লাহ তায়ালার সন্তুষ্টি কামনা করে, | ٣٨ فَأْسِ ذَا الْقُرْبِي مَقَّةٌ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ، ذٰلِكَ غَيْرً لِلَّانِيْنَ يُرِيْكُوْنَ وَجْهَ اللّهِ ، وَٱولَٰنِكَ مُرُ الْهُفْلِحُوْنَ |
| তোমাদের সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি তোমাদের বিষেধি দান করেছেন, তিনিই আবার তোমাদের মৃত্যু দেবেন, অতপর (কেয়ামতের দিন) তিনি তোমাদের (আবার) জীবন দেবেন; তোমরা যাদের (আবাহর সাথে) শরীক করে নিয়েছো তাদের কেউ কি এমন আছে, যে এর কোনো একটি কাজও করতে পারবেং (মৃলত) তারা (আবাহর সাথে) যাদের শরীক বানায়, আবাহ তায়ালা তা থেকে অনেক পবিত্র, অনেক মহান। 8১. মানুষের কৃতকর্মের দক্ষন জলে স্থলে (সর্বত্র আজ) বিপর্যয় ছড়িয়ে পড়েছে, (মৃলত) আবাহ তায়ালা তাদের কতিপয় কাজকর্মের জন্যে তাদের শান্তির স্বাদ আবাদন করাতে চান,সম্বত তারা (সেব কাছ থেকে) ফিরে আসবে। 8২. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা (আবাহর) যমীনে ভ্রমণ করো এবং যারা আগে (এখানে মজুদ) ছিলো, (আবাহ তায়ালাকে অস্বীকার করায়) তাদের কি | তো এ জনোই দাও) যেন তা অন্য মানুষদের মালের সাথে (শামিল হয়ে) বৃদ্ধি পায়, আল্লাহ তায়ালার দৃষ্টিতে তা (কিছু মোটেই) বাড়ে না, অপরদিকে যে যাকাত তোমরা দান করো তা (যেহেডু একান্ডভাবে) আল্লাহ তায়ালাকে সন্তুষ্ট করার উদ্দেশে দান করো, তাই বরং বৃদ্ধি পায়, জেনে রেখো, এরাই হচ্ছে (সেসব লোক) যারা (যাকাতের মাধ্যমে) আল্লাহর | النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْنَ اللَّهِ عَ وَمَّ الْيَتُرُ |
| শরীক করে নিয়েছো তাদের কেউ কি এমন আছে, যে এর কোনো একটি কাজও করতে পারবেং (মূলত) তারা (আল্লাহর সাথে) যাদের শরীক বানায়, আল্লাহ তায়ালা তা থেকে অনেক পবিত্র, অনেক মহান। ৪১. মানুষের কৃতকর্মের দক্ষন জলে স্থলে (সর্বত্র আজ) বিপর্যয় ছড়িয়ে পড়েছে, (মূলত) আল্লাহ তায়ালা তাদের কতিপয় কাজকর্মের জন্যে তাদের শান্তির স্বাদ আস্বাদন করাতে চান,সম্ভবত তারা (সেমব কাজ থেকে) ফিরে আসবে। ৪২. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা (আল্লাহর) যমীনে ভ্রমণ করো এবং যারা আগে (এখানে মজুদ) ছিলো, (আল্লাহ্ তায়ালাকে অস্বীকার করায়) তাদের কি | তোমাদের সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি তোমাদের রেযেক দান করেছেন, তিনিই আবার তোমাদের মৃত্যু দেবেন, অতপর (কেয়ামতের দিন) তিনি তোমাদের | همانه ما ممسمت ممانه بداا |
| विপर्य प्र एएएए (اِلنَّاسُ لِيُنْ يَقَهُمُ بَعْضُ الَّذِي النَّاسُ لِيُنْ يَقَهُمُ بَعْضُ الَّذِي النَّاسُ لِيَنْ يَقَهُمُ بَعْضُ الَّذِي النَّاسُ لِيَنْ يَقَهُمُ بَعْضُ الَّذِي النَّاسُ اللَّهِ (प्रिन्न कतां कां कां कर्ता कां करां करां करां करां करां करां करां | শরীক করে নিয়েছো তাদের কেউ কি এমন আছে, যে এর কোনো একটি কাজও করতে পারবে? (মূলত) তারা (আল্লাহর সাথে) যাদের শরীক বানায়, আল্লাহ তায়ালা তা থেকে অনেক পবিত্র, অনেক মহান। | عَمَّا يُشْرِكُونَ ع |
| করাতে চান,সম্ভবত তারা (পেসব কাছ থেকে) ফিরে আসবে । 8২. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা (আল্লাহর) यমীনে قَلْ سِيْرُواْ فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُواْ كَيْفُ ٢٢ قَلْ سِيْرُواْ فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُواْ كَيْفُ ٢٢ قَلْ سِيْرُواْ فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُواْ كَيْفُ (الْحَالِيَةِ اللَّهِ الْحَالِيَةِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ | বিপর্যয় ছড়িয়ে পড়েছে, (মূলত) আল্লাহ তায়ালা তাদের | ا مُ طَهَرَ الْفَسَادَ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِهَا كُسَبَتُ الَّذِي النَّاسِ لِيُنِيْقَهُرْ بَعْضَ الَّذِي |
| 8২. (হে नবी,) তুমি বলো, তোমরা (আল্লাহর) यभीत مَلُ سِيْرُواْ فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُواْ كَيْفَ ٢٢ قَلْ سِيْرُواْ فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُواْ كَيْفَ ١٩٥٨ (عالم الله الله الله على الله الله الله الله الله الله الله ال | | عَبِلُوْا لَعَلَّمُرْ يَرْجِعُوْنَ |
| | ৪২. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা (আল্লাহর) যমীনে ভ্রমণ করো এবং যারা আগে (এখানে মজুদ) ছিলো, | ٣٢ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ |
| | | كان عاقِبةُ الرَّيِين مِن قبل • كان ا كثرهر |

মন্যিল ৫

৩০ সূরা আর রোম

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|--|---|
| তাদের অধিকাংশ লোকই ছিলো মোশরেক। | مُّشْرِكِينَ مُشْرِكِينَ |
| ৪৩. অতএব (হে নবী), তুমি তোমার নিজেকে সত্য দ্বীনের ওপর প্রতিষ্ঠিত করে রাখো আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে (ভয়াবহ) দিনটি আসার আগে (পর্যন্ত), যা কেউই ফিরিয়ে রাখতে পারবে না, আর সেদিন যখন আসবে তখন (মোমেন ও কাঞ্চের) সবাই আলাদা হয়ে যাবে। | ٣٣ فَاَقِرْ وَجْهَكَ لِللَّهْنِ الْقَوِّرِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِي يَوْأً لَا مَرَدٌ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِنِ يَصْدُونَ |
| 88. যে ব্যক্তি (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করলো, তার (এ) কুফরী (আযাব হিসেবে) তার ওপরই (এসে পড়বে, অপর দিকে) যে ব্যক্তি নেক আমল করলো, তারা (যেন এর মাধ্যমে) নিজেদের জন্যে (সুখ) শয্যা রচনা করলো, | ٣٣ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفُرُةً ع وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِرْ يَمْهَلُوْنَ لا |
| ৪৫. (মূলত) যারাই (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনবে এবং (সে অনুযায়ী) নেক আমল করবে, আল্লাহ তায়ালা তাঁর অনুগ্রহ দ্বারা তাদের (যথোপযুক্ত) বিনিময় দান করবেন; আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের কখনো পছন্দ করেন না। | ٣٥ لِيَجْزِى الَّذِيْنَ أَمَنُوْا وَعَوِلُوا السِّلِحُسِ مِنْ نَضْلِهِ ﴿ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكُفِرِيْنَ |
| ৪৬. তাঁর (মহান কুদরতের) নিদর্শনসমূহের মাঝে এও (একটি) যে, তিনি (বৃষ্টির) সুসংবাদবাহী বাতাস প্রেরণ করেন, যাতে করে তিনি তোমাদের তাঁর অনুগ্রহের (স্বাদ) আস্বাদন করাতে পারেন, (উপরস্থু) তাঁর আদেশে (সমূদ্রে) জলথানগুলো যেন চলতে পারে এবং তোমরাও (এর মাধ্যমে) তাঁর (কাছ থেকে) রেযেক তালাশ করতে পারো এবং আশা করা যায়, তোমরা (এসব কিছুর জন্যে) তাঁর কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন করবে। | ٢٦ وَمِنْ أَيْتِهَ أَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرْتِ وَلِيَّحْرِيَ الْفَلْكُ وَلِيَّحْرِيَ الْفَلْكُ وَلِيَّحْرِيَ الْفَلْكُ فِي الْمُلْكُ وَلِيَّحْرِيَ الْفَلْكُ فِي الْمُلْكُ وَلَيَحْرِيَ الْفُلْكُ فِي الْمُلْكِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ فَنْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ |
| ৪৭. (হে রসূল,) আমি তোমার আগে আরো রসূল তাদের জাতির কাছে পাঠিয়েছিলাম, তারা (নবুওতের) সুস্পষ্ট নিদর্শনসমূহ নিয়েও এসেছিলো (কিন্তু তারা তা অস্বীকার করেছে), অতপর যারা অপরাধ করেছে আমি তাদের কাছ থেকে (মর্মান্তিক) প্রতিশোধ গ্রহণ করেছি; (কেননা, তাদের মোকাবেলায়) ঈমানদারদের সাহায্য করা ছিলো আমার ওপর কর্তব্য। | ٣٠ وَلَقَن ٱرْسَلْنَا مِن قَبْلِك رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِم فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنْسِ فَالْتَقَهْنَا مِنَ الْنِيْسِ فَالْتَقَهْنَا مِنَ النَّوْمِينَ اَجْرَمُوا ، وكان حَقَّا عَلَيْنَا نَصْرُ النَّوْمِينِيْنَ |
| ৪৮. আল্লাহ তায়ালা (সেই মহান সন্তা, যিনি তোমাদের জন্যে) বায়ু প্রেরণ করেন, অতপর তা (এক সময়) মেঘমালা সঞ্চালিত করে, তারপর তিনি যেভাবে চান তাকে আসমানে ছড়িয়ে দেন, তাকে টুকরো টুকরো করেন, (এক পর্যায়ে) তুমি দেখতে পাও তার ভেতর থেকে বৃষ্টি (কণা) বেরিয়ে আসছে, তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্য থেকে যাকেই চান তার ওপরই তা পৌছে দেন, তখন তারা (এটা দেখে) ভীষণ হর্ষোহকুর হয়ে যায়, | ٣٨ اَللّٰهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيْحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّهَاءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَحْرُجُ مِنْ خِلْلِهِ ع فَإِذَا كَسُفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَحْرُجُ مِنْ خِلْلِهِ ع فَإِذَا مُرْ اَسَابَ بِهِ مَنْ يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُرْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُرْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُرْ يَشَاءُ مِنْ عَبَادِهِ إِذَا هُرْ يَشَاءُ مِنْ عَبَادِهِ إِذَا هُرْ يَشَاءُ مِنْ عَبَادِهِ إِذَا هُرْ |
| ৪৯. অথচ এরাই (একটু আগে) তাদের ওপর (বৃষ্টি) নাযিলের ব্যাপারে সম্পূর্ণ নিরাশ ছিলো। | ٣٩ وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّنَزَّلَ عَلَيْهِرْ مِّنْ قَبْلِهِ لَهُبْلِسِيْنَ |
| ৫০. তাকিয়ে দেখো আল্লাহ তায়ালার (অফুরন্ত) রহমতের প্রভাবের দিকে, কিভাবে তিনি যমীনকে একবার মরে যাওয়ার পর পুনরায় (শ্যামল ও) জীবন্ত করে তোলেন; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (এভাবে কেয়ামতের দিন) সব | ٥٠ فَانْظُرْ إِلَى أَثْرِ رَحْبَتِ اللهِ كَيْفَ يُحْيِ الْإَرْضَ بَعْنَ مَوْتِهَا ، إِنَّ ذٰلِكَ لَيُحْي |
| ৩০ সূরা আর রোম | মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|---|---|
| মৃতকে জীবন দান করবেন, কেননা তিনি সর্ববিষয়ের ওপর একক ক্ষমতাবান। | الْبَوْتَى ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ |
| ৫১. যদি আমি কখনো এমন বায়ু পাঠাতে ওরু করি, (যার ফলে) মানুষ ফসলকে হলুদ রঙের দেখতে পায়, তখন তারা আমার অকৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন করতে ওরু করে। | ٥١ وَلَئِنَ ٱرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِنْ اَبَعْلِهِ يَكْفُرُونَ |
| ৫২. (হে নবী,) মৃতকে তো তুমি তোমার কথা শোনাতে পারবে না, না পারবে বধিরকে তোমার ডাক শোনাতে, (বিশেষ করে) যখন ওরা (তোমাকে দেকেই) মুখ ফিরিয়ে নেয়। | ٥٢ فَانَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَٰى وَلَا تُسْمِعُ الْمَوْتَٰى وَلَا تُسْمِعُ الصَّرِّ النَّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُنْبِرِيْنَ |
| ৫৩. তুমি অন্ধদের তাদের গোমরাইী থেকে (বের করে) সঠিক পথ দেখাতে পারবে না, তুমি তো কেবল এমন লোকদেরই (আমার কথা) শোনাতে পারবে যে আমার আয়াতসমূহের ওপর ঈমান আনে, কেননা এরাই হচ্ছে (নিবেদিত) মুসলমান। | ۵۳ وَمَا ٓ أَنْتَ بِهٰرِى الْعُنْيِ عَنْ صَلَلَتِهِرْ اللهِ مَنْ صَلَلَتِهِرْ اللهِ وَمَا تُسْمِعُ اللهِ مَنْ يَّوْمِنُ بِالْيَتِنَا فَهُرْ مَنْ يَّوْمِنُ بِالْيَتِنَا فَهُرْ مَنْ يَّوْمِنُ بِالْيَتِنَا فَهُرْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَن |
| ৫৪. আল্লাহ তায়ালাই (হচ্ছেন সেই মহান সত্তা) নি বিনি তোমাদের দুর্বল করে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি (এ) দুর্বলতার পর (দেহে) শক্তি সৃষ্টি করেছেন, আবার (তিনি এ) শক্তির পর (পুনরায়) দুর্বলতা ও বার্ধক্য সৃষ্টি করেছেন; (বস্তুত) তিনি যা ইচ্ছা তাই সৃষ্টি করেন এবং তিনিই সর্বোচ্চ ক্ষমতাবান ও সর্বজ্ঞ। | ۵۳ الله الذي مَلَقَكُر مِّنَ شُعْف ثُرِّ مَعَلَ مَلَقَكُر مِّنَ شُعْف ثُرِّ مَعَلَ مِنَ الله الذي تُواقِ مِنَ المَعْلِ مَوْق الْعَلِيمُ مُعَفًا وَهَيْبَةً ، يُحْلُق مَا يَشَاءُ ع وَمُو الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْعَدِيرُ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْعَدِيمُ الْقَدِيرُ الْعَلِيمُ الْعَدِيمُ الْعَدَادُ الْعَلَيْمُ الْعَدَادُ الْعَدَادُ الْعَدَادُ الْعَدَادُ الْعَدَادُ اللهُ |
| ৫৫. যেদিন কেয়ামত কায়েম হবে সেদিন অপরাধী ব্যক্তিরা কসম খেয়ে বলবে, তারা তো (কয়ে) মুহূর্তকালের বেশী অবস্থান করেনি; (আসলে) এরা এভাবেই সত্যবিমুখ থেকেছে (এবং দ্বারে দ্বারে ঠোকর খেয়েছে)। | ٥٥ وَيَوْاً تَقُواً السَّاعَةُ يُقْسِرُ الْهُجْرِمُوْنَ أَلَّا مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ مَ كَنْ لِكَ كَانُوْا يُوْفَكُوْنَ |
| দেও. কিন্তু সেসব লোক, যাদের যথার্থ জ্ঞান ও ঈমান দেয়া হয়েছে, তারা বলবে (না), তোমরা তো আল্লাহ তায়ালার হিসাবমতো (কবরে) পুনরুত্থান দিবস পর্যন্তই অবস্থান করে এসেছো, আর আজকের দিনই হচ্ছে (সেই প্রতিশ্রুত) পুনরুত্থান দিবস, কিন্তু তোমরা (এ দিনটাকে সঠিক বলে) জানতে না। | ٥٦ وَقَالَ الَّهِيْنَ ٱوْتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيْمَانَ لَقَنْ لَبِثْتُرْ فِي كِتْبِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْمِ و فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْمِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنْتُرْ لَا تَعْلَبُوْنَ |
| ৫৭. সেদিন যালেমদের ওযর আপত্তি তাদের কোনোই উপকারে আসবে না, না তাদের আল্লাহ তায়ালার সস্তুষ্টি লাভের সুযোগ দেয়া হবে। | ٥٤ فَيَوْمَنِنِ لا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْنِرَتُهُمْ وَكَا هُرُا مَعْنِرَتُهُمْ وَكَا هُر |
| ৫৮. (হে নবী,) আমি মানুষদের (বোঝানোর) জন্যে এ কোরআনে সব ধরনের উদাহরণই পেশ করেছি; (তারপরও) যদি তুমি এদের কাছে কোনো আয়াত নিয়ে হাযির হও, তবুও এ কাফেররা বলবে, তোমরা (তো কতিপয়) বাতিলপন্থী ব্যক্তি ছাড়া আর কিছুই নও। | ٥٨ وَلَقَنَ مَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي مَٰنَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلِ وَلَئِنْ جِنْتُمْر بِاٰيَةٍ لَّيَقُولَى الَّذِيْنَ كَفَرُوا آلِ مُبْطِلُونَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا آلِ اَنْتُر إلَّا مُبْطِلُونَ |
| ৫৯. এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তাদের অন্তরে মোহর মেরে দেন, যারা (সত্য সম্পর্কে কিছুই) জ্ঞানে না। | ٥٩ كَنْ لِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ |
| ৬০. অতএব (হে নবী), তুমি ধৈর্য ধারণ করো, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার ওয়াদা সত্য, যাদের (শেষ বিচার দিনের ওপর) আস্থা নেই, তারা যেন তোমাকে কখনোই (সত্য দ্বীন থেকে) বিচলিত করতে না পারে। | ٢٠ فَاصْبِر إِنَّ وَعْنَ اللَّهِ مَقَّ وَلَا يَشْتَخِفَّنَكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْنِنُوْنَ ع |

৩০ সূরা আর রোম

| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|--|---|
| , | مُورَةُ لَقَهَى مَكِيةً |
| স্রা লোকমান | أَيَاتُ : ٣٣ رُكُوعٌ : ٣ |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৩৪ রুকু ৪ | ~ 1 |
| রহমান রহীম আল্লাহ্ তায়ালার নামে– | يِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. আলিফ-লা-ম-মী-ম, | االبرء |
| ২. এগুলো হচ্ছে একটি জ্ঞানগর্ভ কেতাবের আয়াত, | ٢ تِلْكَ أَيْسُ الْكِتْبِ الْحَكِيْرِ ٧ |
| ৩. নেককার মানুষদের জন্যে (এ হচ্ছে) হেদায়াত ও রহমত, | ٣ هُلًى وَّرَهْهَ لِلْهُ حُسِنِيْنَ ٧ |
| যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, সর্বোপরি) যারা শেষ বিচার দিনের ওপর নিশ্চিত বিশ্বাস রাখে; | ٣ الَّذِينَ يُقِيْمُونَ الصَّلُوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكُوةَ وَهُوْ تُوْنَ الزَّكُوةَ وَهُرْ بِالْأَخِرَةِ هُرْ يُوْقِنُونَ ١ |
| ৫. এ লোকগুলোই তাদের মালিকের পক্ষ থেকে (যথার্থ) হেদায়াতের ওপর রয়েছে, (মৃলত) এরাই হচ্ছে সফলকাম। | ۵ ٱولَّنْكَ عَلَى مُنَّى بِنَ رَبِّهِمِ وَٱولَٰنِكَ مُرَّ الْهُفَالِحُونَ مُرَّ الْهُفَالِحُونَ |
| ৬. মানুষদের মাঝে এমন ব্যক্তিও আছে যে অর্থহীন ও বেছদা গল্প কাহিনী খরিদ করে, যাতে করে সে (মানুষদের নিতান্ত) অজ্ঞতার ভিত্তিতে আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে দ্রে সরিয়ে রাখতে পারে, সে একে হাসি, বিদ্রোপ, তামালা হিসেবেই গ্রহণ করে; তাদের জ্বন্যে অপমানকর শান্তির ব্যবস্থা রয়েছে। | ٢ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَهْتَرِى لَهُوَ الْحَدِيمِي لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ بِغَيْرِ عِلْمِ يُ وَيَتَّخِلَهَا مُزُواً اللهِ اللهُ اللهِ الله |
| ৭. যখন তার সামনে আমার আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হয় তখন সে দছভরে মুখ ফিরিয়ে নেয়, যেন সে আদৌ তা শুনতেই পায়নি, তার কান দুটি যেন বধির, তাকে তুমি কঠোর আযাবের সুসংবাদ দাও! | وَإِذَا تُتُلَى عَلَيْهِ إِيْتُنَا وَلَى مُسْتَكْبِرًا كَانَ لَّرْ يَسْمَعْهَا كَانَ فِي الْدُنَيْهِ وَقُرًا ٤ فَبَشِّرَةً بِعَنَابٍ الْمِرْ |
| ৮. নিসন্দেহে যারা আল্লাহ তারালার ওপর ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে, তাদের জ্বন্যে রয়েছে নেয়ামতের (সমাহার) জান্লাতসমূহ। | أِنَّ النِّيْنَ أَمَنُوا وَعَيِلُوا الشَّلِحُسِ لَمَّرُ مَنْتُ النَّعِيْمِ ٧ |
| ৯. সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে; আল্লাহ তায়ালার প্রতিশ্রুতি অতীব সত্য; তিনি মহাপরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়। | ٩ عٰلِن يْنَ فِيْهَا ، وَعْنَ اللَّهِ مَقًّا ، وَمُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ |
| ১০. তিনি আসমানসমূহকে কোনো স্তম্ভ ছাড়াই পয়দা করেছেন, তোমরা তো তা দেখতেই পাচ্ছো তিনি যমীনে পাহাড়সমূহ স্থাপন করে রেখেছেন যাতে করে তা তোমাদের নিয়ে কখনো (একদিকে) ঢলে না পড়ে, (আবার) তাতে প্রত্যেক প্রকারের বিচরণশীল জ্বন্থ তিনি ছড়িয়ে দিয়েছেন; (হাঁ,) আমিই আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেছি, অতপর (সে পানি দিয়ে) সেখানে আমি সুন্দর সুন্দর জিনিসপত্র উৎপাদন করিয়েছি। | ا خَلَقَ السَّهٰوْ يِفَيْرٍ عَهَٰ لِ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقَى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَعِيْلَ بِكُرْ وَاسِيَ اَنْ تَعِيْلَ بِكُرْ وَاسِيَ اَنْ تَعِيْلَ بِكُرْ وَاسِيَ اَنْ تَعِيْلَ بِكُرْ وَاسْ فَيْهَا مِنْ كُلِّ ذَابَةٍ وَ وَٱلْزَلْنَا مِنَ السَّهَا عِلْمَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمِ |
| ১১. এ হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার সৃষ্টি, অতপর তোমরা আমাকে দেখাও তো, আল্লাহকে বাদ দিয়ে (যাদের তারা উপাসনা করে) তারা কি সৃষ্টি করেছে? (আসলেই) যালেমরা সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত রয়েছে। | اا مِنْ اَ عَلْقُ اللّهِ فَأَرُونِيْ مَاذَا عَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُونِهِ ﴿ بَلِ الظُّلِمُونَ فِيْ ضَلَلٍ مَّبِيْنِ عِ |

৩১ সূরা লোকমান

ا وَلَقَنْ اتَيْنَا لَقَىٰ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ (अञ्चाह जायानात (त्यामराजत) मांकत जामाय करता: وَلَقَنْ اتَيْنَا لَقَىٰ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ ১২. আমি লোকমানকে জ্ঞান দান করেছিলাম যে, তুমি (কেননা) যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালার শোকর আদায় করে সে তো তা করে তার নিজের (ভালোর) জন্যেই, (আর) যদি কেউ অকতজ্ঞতা (-জনক আচরণ) করে (তার জানা উচিত), আল্লাহ তায়ালা নিসন্দেহে কারোই মুখাপেক্ষী নন, তিনি যাবতীয় প্রশংসার অধিকারী।

لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّهَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ع وَمَنْ كَفَو فَانَّ اللَّهُ غَني مَهِيْلٌ

১৩. (হে নবী, স্মরণ করো,) যখন লোকমান তার ছেলেকে নসীহত করতে গিয়ে বললো, হে বৎস, আল্লাহ তায়ালার সাথে শেরেক করো না: (অবশাই) শেরেক হচ্ছে সবচাইতে বড়ো যুলুম।

١٣ وَإِذْ قَالَ لُقُيٰنُ لِإِبْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يِبُنَىَّ لَا تُشْرِكَ بِاللَّهِ ٣ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْرٌ عَظِيْرٌ

১৪. আমি মানুষকে (তাদের) পিতা-মাতার ব্যাপারে निर्द्भम फिराइडि (यन जावा जार्फाव नार्ष्य जार्मा वावशव करत. रकनना). তার মা কষ্টের পর কষ্ট সহ্য করে তাকে গর্ভে ধারণ করেছে এবং দুই বছর পরই সে (সম্ভান) বুকের দুধ খাওয়া ছেড়েছে, তুমি (তোমার নিজের সৃষ্টির জন্যে) আমার শোকর আদায় করো এবং তোমার (দাদন পাদনের জন্যে) পিতা-মাতারও কৃতজ্ঞতা আদায় করো: (অবশ্য তোমাদের সবাইকে) আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে।

١٣ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِنَيْهِ عَ مَهَلَتْهُ أُمُّهُ وَهُنَّا عَلَى وَهُنِ وَّفِطُهُ فِي عَامَيْنِ أَنِ اشْكُوْلِيْ وَلُوَ الْرَيْكَ وَالْوَالْمِيْكِ وَالْمَالِيُّ الْمُصِيُّ

১৫. যদি তারা উভয়ে তোমাকে এ বিষয়ের ওপর পীড়াপীড়ি করে যে, তুমি আমার সাথে শেরেক করবে, যে ব্যাপারে তোমার কোনো জ্ঞানই নেই, তাহলে তুমি তাদের দু'জনের (কারোই) বর্ণা মানবে না, ভবে দুনিয়ার জীবনে তুমি অবশ্যই তাদের সাথে ভালো ব্যবহার করবে. তুমি কথা তো শুধু তারই শোনবে যে ব্যক্তি আমার অভিমুখী হয়ে আছে, অতপর তোমাদের আমার দিকেই 🔾 ফিরে আসতে হবে, তখন আমি তোমাদের বলে দেবো তোমরা (দুনিয়ার জীবনে) কি কি কাজ করতে।

١٥ وَإِنْ جَامَلُكَ عَلَى أَنْ تُشْكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عَلْرٌ لِا فَلَا تُطْفُهُما وَصَاحِبُهُما فِي النَّانْيَا مَعْرُوْفًا رَوَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ أَنَابَ إِلَى ۚ عَ ثُر اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِهَا كُنْتُر ۚ تَعْمَلُونَ

১৬. (লোকমান আরো বললো,) হে বৎস, যদি (তোমার) কোনো আমল সরিষার দানা পরিমাণ (ছোটোও) হয় এবং তা যদি কোনো শিলাখন্ডের ভেতর কিংবা আসমানসমূহেও (লুকিয়ে) থাকে, অথবা (যদি তা থাকে) যমীনের ভেতরে, তাও আল্লাহ তায়ালা (সেদিন সামনে) এনে হাযির করবেন: আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সন্মদর্শী এবং সকল বিষয়ে সম্যক অবগত।

١٦ يُبُنَى ۗ إِنَّهَا ۚ إِنْ تَكَ مِثْقَالَ مَبَّةٍ مِّن غَرْدَلِ فَتَكُنْ فِيْ صَحْرَةٍ أَوْ فِي السَّاوِٰكِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْسِ بِهَا اللَّهُ ، إِنَّ اللَّهُ

১৭. (লোকমান আরো বললো.) হে বৎস, তুমি নামায প্রতিষ্ঠা করো, মানুষদের ভালো কাজের আদেশ দাও, মন্দ কাজ থেকে বিরত রাখো, তোমার ওপর কোনো বিপদ মসিবত এসে পড়লে তার ওপর ধৈর্য ধারণ করো: (বিপদে ধৈর্য ধারণ করার) এ কাজটি নিসন্দেহে একটি বড়ো সাহসিকতাপূর্ণ কাজ,

١٤ يُبُنَى ۚ أَقِيرِ الصَّلُوةَ وَأَمُرْ بِالْهَعُرُونِ وَانْهُ عَنِ الْهُنْكُرِ وَاشْبِرْ عَلَى مَا آَصَابَكَ ، إِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْرًا الْأُمُورِع

১৮. (হে বৎস.) কখনো অহংকারবশে তুমি মানুষদের জন্যে তোমার গাল ফুলিয়ে রেখে তাদের অবজ্ঞা করো না खर्रला ट्राबाइ गान सूनिराइ एतरप नात्म अपन्ना भरता ना وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلُ अवर (आब्राह्त) यभीत कथता छेक्काअूर्रजात विठत्न لَا رَضِ مَرَحًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلُ श्रीत कथता छेक्काअूर्रजात विठत्न الْأَرْضِ مَرَحًا وَاللَّهُ اللَّهُ الل করো না: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা প্রত্যেক উদ্ধত অহংকারীকেই অপছন্দ করেন।

١٨ وَلَا تُصَعِّرُ عَلَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَهْشِ فِي مُخْتَالِ فَخُوْرٍ ج

১৯. (হে বৎস, যমীনে চলার সময়) তুমি মধ্যম পদ্ম অবলম্বন করো, তোমার কণ্ঠস্বর নীচু করো, কেননা আওয়াযসমূহের মধ্যে সবচাইতে অপ্রীতিকর আওয়ায হচ্ছে গাধার আওয়ায।

19 وَ اقْصِلْ فَيْ مَشْيِكَ وَ اغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ا انَّ أَنْكُو الْإَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْدِعِ

৩১ সুরা লোকমান

874

২০, তোমরা কি (একথা কখনো) চিন্তা করে দেখোনি, যা কিছু আসমানসমূহে রয়েছে, যা কিছু রয়েছে যমীনের মধ্যে, আল্লাহ তায়ালা তা তোমাদের অধীন করে রেখেছেন এবং তোমাদের ওপর তিনি তাঁর দেখা অদেখা যাবতীয় নেয়ামত পূর্ণ করে দিয়েছেন; (কিন্তু এ সত্ত্বেও) মানুষের মাঝে কিছু এমন আছে যারা আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে (অর্থহীন) তর্ক করে. (তাদের কাছে) না আছে (তর্ক করার মতো) কোনো জ্ঞান, না আছে কোনো দীপ্তিমান গ্রন্থ!

٢٠ ألَر تُووا أنَّ اللهُ سَخَّو لَكُو مَّا في السَّوْت وَمَا في الْأَرْضِ وَٱسْبَغَ عَلَيْكُمْ نعَهَهُ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ، وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْرِ وَّلَا مُنِّي وَّلَا

২১. আর যখন তাদের বলা হয়, (আল্লাহ তায়ালা) যা কিছ নাযিল করেছেন তোমরা তার অনুসরণ করো. (তখন) তারা বলে, আমরা কেবল সে বস্তুরই অনুসরণ করবো যার ওপর আমরা আমাদের বাপদাদাদের পেয়েছি: ोوَ لَوْ كَانَ الشَّيْطَى يَنْ عُومُمْ إِلَى عَنَ ابِ किंकु) भग्नजान यिन जारनत (वाननामारमत) जाराज्ञारमत আযাবের দিকে ডাকতে থাকে (তাহলেও কি এরা তাদের অনুসরণ করবে)ঃ

٢١ وَإِذَا قِيلَ لَهُرُ اللَّهِ عُوا مَا آنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَنْنَا عَلَيْدِ أَبَّاءَنَا ،

২২. যদি কোনো ব্যক্তি সংকর্মশীল হয়ে আল্লাহ তায়ালার কাছে নিজেকে (সম্পূর্ণ) সঁপে দেয়, (তাহলে) সে (যেন মনে করে এর দ্বারা) একটা মযবুত হাতল ধরেছে: (কেননা) যাবতীয় কাজকর্মের চডান্ত পরিণাম আন্তাহ তায়ালার কাছে।

٢٢ وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَةً إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنًّ فَقَنِ اسْتَهْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى ، وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُوْرِ

২৩. যদি কেউ কফরী করে তবে তার কফরী যেন (হে নবী.) তোমাকে দুক্তিভাগ্রন্ত না করে: (কারণ) তাদের তো আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে, অতপর আমি তাদের বলে দেবো, (দুনিয়ায়) তারা কি আমল করে এসেছে: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা মানুষের অন্তরে যা কিছু লুকায়িত আছে সে ব্যাপারে সম্যক অবগত রয়েছেন।

٢٣ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرَةً ، إلَيْنَا مَ ﴿ جِعُمُ ر فَنُنَبِّئُمُ ر بِهَا عَبِلُوا و إِنَّ اللَّهُ عَلَيْرًا ا بِنَ اسِ الصُّهُوْر

২৪. আমি তাদের স্বল্প সময়ের জন্যে কিছু জীবনোপকরণ দিয়ে রাখবো, অতপর আমি তাদের কঠিন আযাবের দিকে টেনে নিয়ে যাবো।

٢٣ نُهَتَّعُهُرْ قَلْيُلًا ثُرَّ نَضْطَوُّهُمْ إِلَى عَنَابِ

২৫. তমি যদি তাদের জিজ্ঞেস করো, আসমানসমূহ ও যমীন কে পয়দা করেছেনঃ তারা অবশ্যই বলবে (হাঁ) আল্লাহ তায়ালাই (সৃষ্টি করেছেন); তুমি বলো, সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে: কিন্তু তাদের অধিকাংশ মানুষই বুঝে না।

٢٥ وَلَئِنْ سَالْتَهُمْرُ مَّنْ خَلَقً السَّاوٰكِ وَ الْإَرْضَ لَيَقُوْلُيُّ اللَّهُ ء قُلِ الْحَبْلُ لِلَّه ء بَلُ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

২৬. আকাশমালা ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা (সবই) আল্লাহ তায়ালার জন্যে: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা (সব ধরনের) অভাবমুক্ত এবং তিনি সমস্ত প্রশংসার মালিক।

٢٦ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوٰتِ وَالْأَرْضِ ﴿ إِنَّ اللَّهُ مُوَ الْغَنِيُّ الْحَبِيْلُ

٢٤ وَلَوْ أَنَّ مَا فِي أَكْرُض مِنْ شَجَوَة १٤ अवर عَرض مِن شَجَوك الله علام علام ١٤ على الكراض مِن মহাসমুদ্রগুলোর সাথে যদি আরো সাত সমুদ্র যুক্ত হয়ে তা কালি হয়, তবুও আল্লাহ তায়ালার গুণাবলী সম্পর্কিত কথাগুলো লিখে শেষ করা যাবে না: নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা পরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়।

ٱقْلَامًا وَّالْبَحْرُ يَهُنَّهُ مِنْ ۖ بَعْلِ ۗ سَبْعَةُ ٱبْحُرِ مًّا نَفِنَ سَ كُلِّمْ سُ اللَّهِ مَ إِنَّ اللَّهُ عَزِيزٌ

মন্যিল ৫

৩১ সূরা লোকমান

সবাইকে পুনরুখিত করা (মূলত আল্লাহ তায়ালার কাছে) كَنَفْسِ كَالْكُكُرُ وَكَلَ بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسِ كَالْمَالِيَةِ كَالْمَالُونِ كَالْمُعْلَمُ وَكَالِمُ الْمُعْلَمُ وَكُلُونُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِ একজন মানুষের সৃষ্টি ও তার পুনরুখানের মতোই: निসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা (সব কিছু) শোনেন এবং দেখেন।

وَّاحِلَةِ ﴿ إِنَّ اللَّهُ سَهِيْعً ۚ بَصِيرًا

২৯. তুমি কি চিন্তা করে দেখোনি, আল্লাহ তায়ালা (কিভাবে) রাতকে দিনের ভেতর প্রবেশ করান, আবার দিনকে রাতের ভেতর প্রবেশ করান, (কিভাবে) তিনি সূর্য ও চন্দ্রকে (তাঁর হুকুমের) অধীন করে রাখেন, প্রত্যেক وَالْقَمَرِرِ كُلَّ يَجْرِى إِلَى أَجَلِ سَّسَمَّى وَأَنَّ अर्थरेरे जानने कर्क्नाए। এक जूनिर्मिष्ठ अग्रग्न शर्ष আবর্তন করতে থাকবে, নিক্য়ই তোমরা যা কিছু করো আলাহ তায়ালা সে সম্পর্কে সম্যক অবগত রয়েছেন :

٢٦ اَلَمْ تَوَ اَنَّ اللَّهَ يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّهْسَ اللهُ بِهَا تَعْمَلُونَ غَبِيْرٌ

৩০. এটাই (ह्ज़िड), यरर्ज़ जाब्रार जाब्राना रत्वन अठा, أَلِكَ بِأَنَّ اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا ٢٠٠ (তাই) তাঁকে ছাড়া এরা অন্য যা কিছুকেই ডাকুক না কেন يَنْ عُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ لا وَأَنَّ اللَّهُ هُو वाजिन (वर्ल गंग) इरत), प्रश्न जाबाह जाबाना, जिन সুউচ্চ ও অতি মহান।

الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ع

৩১, তুমি কি (এটা) লক্ষ্য করোনি, (উন্তাল) সাগরে (একমাত্র) আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহেই জল্যান ভেসে চলেছে, যাতে করে তিনি (এর মাধ্যমে) তোমাদের তাঁর (সৃষ্টি বৈচিত্রের) নিদর্শনসমূহ দেখাতে পারেন; অবশ্যই প্রতিটি ধৈর্যশীল ও কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জ্বন্যে এতে অনেক নিদর্শন রয়েছে।

٣١ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْقُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْهَتِ اللّهِ لِيُرِيكُمُ مِّنَ أَيْتِهِ مَ إِنَّ فِي ذٰلِكَ كَايِّتِ لِكُلِّ سَبَّارِ شَكُوْر

৩২. যখন (সমুদ্রের) তরঙ্গমালা চাঁদোয়ার মতো হয়ে তাদের আচ্চাদিত করে ফেলে, তখন তারা আন্তাহ তায়ালাকে ডাকে- দ্বীন একনিষ্ঠভাবে তাঁর জন্যেই নিবেদন করে, অতপর যখন আমি তাদের ভূখন্ডে এনে উদ্ধার করি তখন তাদের কিছু লোক বিশ্বাস অবিশ্বাসের মাঝামাঝি অবস্থান করে; অবশ্য যখন স্থলভাগে পৌছে দেই (মূলত) বিশ্বাসঘাতক ও অকৃতজ্ঞ ছাড়া কেউই আমার নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করে না

٣٢ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مُّوحٌ كَالظُّلُلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الرِّيْنَ ۚ ۚ فَلَمَّا نَجُّهُرُ إِلَى الْبَرِّ فَهِنْمُرْ مَّقْتَصِلَّ ﴿ وَمَا يَجْعَلُ بِأَيْتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارِ كَفُوْرِ

৩৩. হে মানুষ, তোমরা তোমাদের মালিককে ভয় করো এবং এমন একটি দিনকে ভয় করো, যেদিন কোনো পিতা তার সম্ভানের পক্ষ থেকে বিনিময় আদায় করবে না. না কোনো সন্তান তার পিতার পক্ষ থেকে বিনিময় আদায় করতে পারবে: অবশ্যই আল্পাহ তায়ালার ওয়াদা সত্য, সুতরাং (হে মানুষ), এ পার্থিব জীবন যেন তোমাদের কোনোরকম প্রতারিত করতে না পারে এবং প্রতারক (শয়তানও) যেন কখনো তোমাদের আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে কোনো ধোকা দিতে না পারে।

٣٣ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشُوْا يَوْمًا لَّا يَجْزَىٰ وَالِنَّا عَنْ وَّلَكِ ۚ رِ وَلَامَوْلُوْدٌ مُّوَ جَازِ عَنْ وَّالِهِ شَيْئًا ، إِنَّ وَعْنَ اللَّهِ مَقَّ فَلَا تَغُوَّلَّكُمُ الْحَيْوةُ النَّانْيَا رَبَنَ وَلَا يَغُوَّنَّكُر بِاللَّهِ الْغُرُورُ

৩৪. অবশ্যই আপ্লাহ তায়ালার কাছে কেয়ামতের (সময়) জ্ঞান আছে, তিনি বৃষ্টি বর্ষণ করেন, (সম্ভানের) শুক্রকীটের মাঝে (তার বুদ্ধি, জ্ঞান, মেধা ও জীবনের ভাগ্যলিপি সক্রাস্ত) যা কিছু (মজুদ) রয়েছে তা তিনি জানেন, কোনো মানুষই বলতে পারে না আগামীকাল সে কি অর্জন করবে: না কেউ এ কথা বলতে পারে যে, কোন نَفُسُ بِأَى ۗ أَرْضِ تَبُوْتُ وَ إِنَّ اللَّهُ عَلِيمِ अभीत्न त्म मृजुरवत्न कत्त्वः; निमत्मरह (এ তথ্যতলো একমাত্র) আল্লাহ তায়ালাই জানেন (তিনি) সর্বজ্ঞ সর্ববিষয়ে অবহিত।

٣٣ إِنَّ اللَّهُ عِنْنَ \$ عِلْمُ السَّاعَةِ ع وَيُنَزَّلُ الْغَيْثُ عَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْهَا إِ وَمَا تَنْ رِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكُسِبُ غَنَّا ، وَمَا تَنْ رِيْ غبير ع

৩১ সুরা লোকমান

830

সুরা আস সাজদা

মক্কায় অবতীৰ্ণ- আয়াত ৩০ ৰুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةُ السَّجِلَةِ مَكِّيَّةً ایات : ۳۰ رکوع : ۳ بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرُّحِيْرِ

আলিফ-লা-ম-মী-ম.

االرَج

- ٢ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْدِ مِنْ رَّبِّ ২. সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই (এ) কেতাবের অবতরণ, এতে বিন্দুমাত্র সন্দেহ নেই: الْعلَيْنَ ،
- (व्यक्ति) त्रुक्त करत निराहर (ना)- वतर व राष्ट्र राज्यात من الْعَقَ مِن الْعَرَادُ عَ بَلَ هُوَ الْحَقَ مِن الْعَلَى الْعَالِمَةِ الْعَلَى الْعَالِمُ الْعَلَى الْعَالِمُ الْعَلَى الْعَلِيقِ الْعَلَى الْعَلِيلِ الْعَلَى الْعَلِي الْعَلَى ال মালিকের কাছ থেকে (নাযিল করা) একটি সত্য (কেতাব আমি এটা এজন্যে নাথিল করেছি), যাতে করে এর ছারা তুমি এমন এক জাতিকে (জাহানাম থেকে) সাবধান করে দিতে পারো, যাদের কাছে (নিকট অতীতে) তোমার আগে কোনো সতর্ককারী আসেনি, সম্ভবত তারা হেদায়াত লাভ করতে পারে।

ربِّكَ لِتُنْنِرَ قَوْمًا مَّا ٱللهُرْ مِّن نُنْيُدٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَكُونَ

- মাঝে অবস্থিত (সবকিছু) ছয় দিনে সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি আরশে সমাসীন হন: (তিনি ছাড়া) তোমাদের কোনো অভিভাবক কিংবা সুপারিশকারী নেই: এর পরও কি তোমরা বুঝতে পাচ্ছো না!
- 8. जाल्लार जायाना- यिनि जाकानमाना, यभीन ও উভয়ের اللهُ الَّذِي عَلَقَ السَّهُونِ وَالْأَرْضَ وَمَا ﴿ كَاللَّهُ الَّذِي عَلَقَ السَّهُونِ وَالْأَرْضَ وَمَا ﴿ كَاللَّهُ اللَّهُ الَّذِي عَلَقَ السَّهُونِ وَالْأَرْضَ وَمَا ﴿ كَانِهُ اللَّهُ اللَّ بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّا إِ ثُرَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ مَ مَا لَكُمْرُ مِّنْ دُوْنِهِ مِنْ وَّلِيِّ وَّلاَ شَفِيْعِ ، أَفَلَا تَتَنَكَّرُونَ
- ۵ يُں يَّرُ الْأَرْنِ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُرِّ अत्रमान त्थरक यभीन পर्यख সবকিছু তिनिই পরিচালন। يُنْ يَبُّ الْأَرْضِ وَلَيْ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُرِيِّ الْمَاسِمَةِ عَلَيْهِ السَّمَاءِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللّ করেন, তারপর (সবকিছুকে) তিনি ওপরের দিকে নিয়ে يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْ إِ كَانَ مِقْنَ أُرَةً ٱلْفَ سَنَةِ عَالَمَا اللهِ اللهِ فِي يَوْ إِكَانَ مِقْنَ أُرَةً ٱلْفَ سَنَةِ अारवन (এमन) अक निरन, यात अतिभाग रामा سَنَةِ عَالَمُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ ع গণনায় হাজার বছর।
- مِّهَا تَعُنُّوْنَ
- ৬. তিনিই দৃশ্যমান ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতা, পরাক্রমশালী ও পরম দয়াল,
- ٢ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ
- ٩. यिनि या किছू সৃष्টि कर्त्वर्ष्ट्न সुन्मत्र (ও निर्चुण) करत्र قُلْقَدُ وَبَلَ أَ خُلْقَ وَبَلَ أَ خُلُق مَنَ عُلُقَدُ وَبَلَ أَخُلُق مَا الَّذِي آَ أَحْسَى كُلُّ شَيْءٍ خُلَقَدُ وَبَلَ أَخُلُق مَا اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلْمَا اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلْمُ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَي সৃষ্টি করেছেন এবং তিনি মানুষ সৃষ্টির সূচনা করেছেন মাটি থেকে,
 - الْإنْسَان مِنْ طِيْن ع
- ৮. অতপর তিনি তার বংশধরদের তুচ্ছ তরল একটি পদার্থের নির্যাস থেকে বানিয়েছেন.
- ٨ ثُرَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلْلَةٍ مِنْ مَّاءً مَهِيْن ج
- ه. পরে তিনি তাকে ঠিকঠাক করলেন এবং তার মধ্য كُورُ مَا وَجَعَلَ لَكُورُ هَمْ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوْحِهِ وَجَعَلَ لَكُورُ عَالِمَ তিনি তাঁর নিজের কাছ থেকে 'রূহ' ফুঁকে দিলেন এবং السُّمْ وَالْإَبْصَارُ وَالْإَفْنُنَةَ مَ قُلْيَلًا مًّا प्राचारत काना (जारा) कान (जारा काना السُّمُ وَالْإَبْصَارُ وَالْإَفْنُنَةَ مَ قُلْيلًا مًّا করলেন; তোমাদের খুব কম লোকই (এ জন্যে আল্লাহ তায়ালার) শোকর কৃতজ্ঞতা আদায় করে।
 - تَۿٛكُرُوْنَ

১০. (আল্লাহ তায়ালাকে যারা অস্বীকার করে) তারা বলে.

আমরা (মৃত্যুর পর) যখন মাটিতে মিশে যাবো তারপরও আমাদের আবার নতুন করে পয়দা করা হবে? (মূলত)

পারা ২১ উতলু মা উহিয়া

١٠ وَقَالُواْ ءَاذَا ضَلَلْنَا فِي الْإِرْضِ ءَانَّا لَفِي ۗ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২১ উতলু মা উহিয়া |
|---|--|
| ২০. যারা আল্লাহ তায়ালার নাফরমানী করবে তাদের বাসস্থান হবে (জাহান্নামের) আগুন; যখনি তারা সেখান | ٢٠ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَاٛوْنِهُرُ النَّارُ ﴿ |
| থেকে বেরিয়ে আসতে চেষ্টা করবে, তখনি তাদের (ধারু | كُلَّما آرَادُوْ آآنَ يَخْرُجُوْا مِنْهَ آعِيْنُوْ افِيها |
| দিয়ে) তার ভেতরে ঠেলে দেয়া হবে এবং তাদের বলা হবে, যাও, আগুনের সে আযাব ভোগ করে নাও, যাকে | وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوا عَنَابَ النَّارِ الَّذِي |
| তোমরা মিধ্যা প্রতিপন্ন করতে! | كُنْتُر بِهِ تُكَلِّبُونَ |
| ২১. (জাহান্নামের) বড়ো আযাবের আগে আমি অবশ্যই তাদের (দুনিয়ার) ছোটোখাটো আযাবও আস্বাদন করাবো | ٢١ وَلَنُوٰيْقَنَّهُرْمِّنَ الْعَنَابِ الْإَدْنَى دُوْنَ |
| (এ আশায়), হয়তো বা এতে করে তারা আমার দিকে ফিরে আসবে। | الْعَنَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ |
| ২২. তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে হতে পারে যে ব্যক্তিকে তার মালিকের আয়াতসমূহ দ্বারা নসীহত করা | ٢٢ وَمَنْ أَظْلَمُ مِنَّ ذُكِّرَ بِأَيْتِ رَبِّم تُمَّ |
| ব্যক্তিকে তার মালিকের আরাত্সমূহ ধারা নসাহত করা হয়, অতপর সে তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়; অবশ্যই আমি নাফরমানদের কাছ থেকে প্রতিশোধ নেবো। | أَعْرَضَ عَنْهَا مَ إِنَّا مِنَ الْهُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِّمُونَ ع |
| ২৩. (হে নবী, তোমার আগে) আমি মৃসাকেও কেতাব দিয়েছিলাম, অতএব তুমি তার (আল্লাহর) সাথে | ٢٣ وَلَقَنْ أَتَيْنَا مُوْسَى الْكِتْبَ فَلَا تَكُنْ فِي |
| সাক্ষাতের বিষয়টিতে কোনোরকম সন্দেহ করো না, (আমি যে কেতাব তাকে দিয়েছি) তা আমি বনী | مِرْيَةٍ مِّنْ لِقَالِهِ وَجَعَلْنَهُ مُدِّى لِبَنِي ٓ |
| ইসরাঈলদের জন্যে পথপ্রদর্শক বানিয়ে দিয়েছিলাম, | إِسْرَ أَعِيْلَ ءَ |
| ২৪. আমি তাদের মধ্য থেকে কিছু লোককে নেতা বানিয়েছিলাম, তারা আমারই আদেশে মানুষদের | ٢٣ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَنِيَّةً يَّهُدُونَ بِآمُوِنَا لَيًّا |
| হেদায়াত করতো, যখন তারা (অত্যাচারের সামনে কঠোর) ধৈর্য ধারণ করেছে, (সর্বোপরি) তারা ছিলো | مَبَرُوا ف وكَانُوا بِالْتِنَا يُوْتِنُونَ |
| আমার আয়াতের ওপর একান্ত বিশ্বাসী। | |
| ২৫. অবশ্যই (হে নবী), তোমার মালিক কেয়ামতের দিন | ٢٥ إِنَّ رَبَّكَ هُو يَفْصُ بَيْنَهُمْ يَوْاً الْقِيهَةِ فِيهَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِغُونَ |
| সেসব কিছুর ফয়সালা করে দেবেন যে সব বিষয়ে তারা দুনিয়ায় মতবিরোধ করে বেড়াতো। | فِيْهَا كَانُوْا فِيْدِ يَخْتَلِفُوْنَ |
| ২৬. (হে নবী,) তোমার জাতির লোকদের কি এ থেকেও হেদায়াত আসেনি যে, আমি তাদের আগে কতো জাতিকে | ٢٦ أَوَلَمْ يَهُنِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ |
| ধ্বংস করে দিয়েছি, যাদের বাসস্থানসমূহের মাঝ দিয়েই তারা (সব সময়) চলাফেরা করে; অবশ্যই এতে তাদের | مِّنَ الْقُرُوْنِ يَهْمُوْنَ فِي مَسْكِنِهِمِرْ م إِنَّ فِي |
| (আল্লাহ তায়ালাকে জ্ঞানা ও চেনার) জন্যে অনেকগুলো নিদর্শন রয়েছে; এরপরও কি এরা শোনবে না! | ذُلِكَ كَالِيْسِ م أَفَلَا يَشْهَعُونَ |
| ২৭. ওরা কি লক্ষ্য করে দেখে না, আমি (কিভাবে) উর্বর ভূমির ওপর পানি প্রবাহিত করি এবং (পরে) তারই | ٢٠ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوْقُ الْمَاءَ إِلَى |
| সাহায্যে আমি সে ভূমি থেকে ফসল বের করে আনি, যা থেকে তাদের গৃহপালিত জম্মুগুলো যেমনি খাবার গ্রহণ | الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنَخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْدُ |
| করে, তেমনি খায় তারা নিজেরাও, এ সত্ত্বেও কি এরা (আল্লাহ তায়ালার অসীম কুদরতের চিহ্ন) দেখতে পায় না? | آنْعَامُهُرْ وَآنْفُسُهُرْ الْفَلَايُبْصِرُونَ |
| ২৮. তারা বলে, যদি তোমরা (তোমাদের দাবীতে) সত্যবাদী হও তাহলে সে বিজয়ের ক্ষণটি কখন আসবে | ٢٨ وَيَقُوْلُونَ مَتَى هٰذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ |
| (যার কথা বলে তোমরা আমাদের ভয় দেখাচ্ছো)। | صٰلِقِینَ |
| ২৯. (হে নবী,) তুমি বলো, যারা কুফরী করেছে, বিচারের দিন তাদের ঈমান কোনোই কাজে আসবে না, না তাদের | ٢٩ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ |
| কোনো রকম অবকাশ দেয়া হবে! | إِيْمَا نُمُرْ وَلَا هُرْ يُنْظُرُونَ |
| ৩০. অতএব (হে নবী,) তুমি এদের (এসব কথাবার্তা) থেকে বিমুখ থাকো এবং তুমি (শেষ দিনের) অপেক্ষা | ٣٠ فَاعْدِضْ عَنْهُرْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُرْ مَّنْتَظِرُونَ ع |
| করো, নিসন্দেহে তারাও (সেদিনের) অপেক্ষা করছে। | <u> </u> |
| ० अन्य लाभ माळल | সুনুষ্টাল ৫ |



৩২ সূরা আস সাজদা

820

সরা আল আহ্যাব

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ৭৩ রুকু ৯ রহমান রহীম আলাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْإَحْزَابِ مَنَانَيَّةً ايات : ٤٣ ، كُوع : ٩ بشر الله الرَّمْين الرَّحِيْر

১. হে নবী, আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, কাফের ও মোনাফেকদের আনুগত্য করো না: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছ জানেন, তিনি বিজ্ঞ কুললী,

ا يَانُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكُفِرِيْنَ وَ الْهُنفِقِيْنَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْهًا حَكَيْهًا لا

- ২ তোমার মালিকের কাছ থেকে তোমার প্রতি যা কিছ ওহী নাযিল হয় তুমি ওধু তারই অনুসরণ করো: তোমরা যা কিছু করো আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সে সম্পর্কে সম্যক ওয়াকেফহাল রয়েছেন.
- ٢ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحَى الْيُكَ مِنْ رَّبِّكَ مِ الْ اللَّهُ كَانَ بِهَا تَعْمَلُونَ خَبِيْرٌ لا
- ৩. তমি (ভুধ) আল্লাহ তায়ালার ওপরুই নির্ভর করো: চড়ান্ত কর্মবিধায়ক হিসেবে আল্লাহ তায়ালাই (তোমার क्रांता) याथहै।
- ٣ وَّتَوَكَّلْ عَلَى الله ، وَكَفِّي بِالله وَ كَيْلًا
- 8. (হে মানুষ,) আল্লাহ তায়ালা কোনো মানুষের জন্যে তার বুকে দুটো অন্তর পয়দা করেননি, না তিনি তোমাদের স্ত্রীদের, যাদের সাথে তোমরা (তোমাদের মায়েদের তুলনা করে) 'যেহার' করো, তাদের সত্যি সত্যি তোমাদের মা বানিয়েছেন, (একইভাবে) তিনি তোমাদের পালক পুত্রকেও তোমাদের পুত্র বানাননি; (আসলে) এগুলো হচ্ছে (নিছক) তোমাদের মুখেরই কথা; সত্য কথা তো আল্লাহ তায়ালাই বলেন এবং তিনিই তোমাদের পথ প্রদর্শন করেন।
- مُ مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْن فِي جَوْفِهِ ۽ وَمَا جَعَلَ أَزْوَ اجَكُرُ الَّئِي تُظْهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهٰتكُمْ ج وَمَا جَعَلَ أَدْعيَاءَكُمْ ٱبْنَاءَكُمْ ۚ وَلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِٱفْوَاهِكُمْ ، وَاللَّهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ
- ৫. (হে ঈমানদাররা,) তোমরা (যাদের পালক পুত্র হিসেবে গ্রহণ করেছো) তাদের পিতার পরিচয়েই ডাকৌ. এটাই আল্লাহ তায়ালার দৃষ্টিতে অধিক ন্যায়সংগত, যদি তোমরা তাদের পিতা কারী সে পরিচয় না জ্বানো, তাহলে (মনে করবে) তারা তোমাদেরই দ্বীনী ভাই ও তোমাদেরই দ্বীনী বন্ধু: এ ব্যাপারে (আগে) যদি তোমাদের কোনো ভল হয়ে থাকে তাহলে তাতে তোমাদের জন্যে কোনো গুনাহ নেই, তবে যদি তোমাদের মন ইচ্ছা করে এমন কিছু করে (তাহলে তোমরা গুনাহগার হবে): নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা পরম ক্ষমালীল ও দয়ালু।
- 4 أُدْعُوْمُر لا بالله عنى الله عنى الله ع فَانَ لَّرْ تَعْلَبُوا أَبَاءَهُرْ فَاخُوَانُكُرْ في الرِّينَ وَمَوَالِيكُمْ ، وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ ، جُنَاحً فَيْهَا أَغْطَأْتُو بِهِ لا وَلَكِنْ مَّا تَعَبَّّلُ سَ قُلُوْبُكُورُ ، وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيُّمًا

৬. আল্লাহর নবী মোমেনদের কাছে তাদের নিজেদের চাইতেও বেশী প্রিয় এবং নবীর স্ত্রীরা হচ্ছে তাদের মা (সমান, কিন্ত): আল্লাহর কেতাব অনুযায়ী (যারা) আত্মীয় স্বজন (তারা) সব মোমেন মোহাজের ব্যক্তির চাইতে একজন আরেকজনের বেশী নিকটতর, অবশ্য তোমরা যদি তোমাদের বন্ধু বান্ধবদের সাথে কিছু সদাচরণ করতে চাও: এ সব কথা আল্লাহ তায়ালার কেতাবে লিপিবদ্ধ রয়েছে।

٢ أَلَنَّبِيُّ أَوْلَى بِالْهُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجَهُ أَمَّهُتُهُرْ ﴿ وَأُولُوا الْأَزْحَا ﴾ بَعْضُهُرْ أَوْلَى بِبَعْضِ فَيْ كِتْبِ اللَّهِ مِنَ الْهُؤْمِنِيْنَ وَ الْبُهٰجِرِيْنَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوْا إِلَى أَوْلَيْنِكُمْ مُّعُووْفًا و كَانَ ذلكَ فِي الْكِتبِ مَسْطُورًا

৭. (হে নবী, স্মরণ করো,) যখন আমি নবী রসূলদের কাছ থেকে (আমার বিধান পৌছে দেয়ার) প্রতিশ্রুতি নিয়েছিলাম, (প্রতিশ্রুতি নিয়েছিলাম) তোমার কাছ থেকে, নৃহ, ইবরাহীম, মৃসা এবং মারইয়াম পুত্র ঈসার কাছ থেকেও, এদের কাছ থেকে আমি (দ্বীন পৌছানোর) পাকাপোক্ত ওয়াদা নিয়েছিলাম.

٤ وَإِذْ أَغَاثَنَا مِنَ النَّبِيِّنَ مِيْثَاقَهُمْ ومِنْكَ وَمِن نُوحٍ وَإِبرهِير وموسى وعِيسي ابن مُرْيَمُ مَ وَأَغَنَّانَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا

b. यां क्रां (जां मिक क्यां क्रां प्राप्त मिक क्यां क्रां তাদের সত্যবাদিতা সম্পর্কে জির্জ্জেস করতে পারেন, মন্যিল ৫

পারা ২১ উতলু মা উহিয়া

আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের জন্যে পীডাদায়ক আযাব প্রস্তুত করে রেখেছেন

لِلْكُفِرِينَ عَنَ ابًا ٱلِيْهًا ع

৯. হে (মানুষ), তোমরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা নিজেদের ওপর আল্লাহ তায়ালার (সে) অনুগ্রহের কথা স্মরণ করো, যখন শত্রু সৈন্য তোমাদের ওপর ঝাঁপিয়ে পড়ছিলো, অতপর আমি তাদের ওপর এক প্রচন্ড বায় ريكًا وَّجُنُودًا لَّرْ تَرَوْهَا ء وكَانَ اللَّهُ بِهَا ﴿ وَكَانَ اللَّهُ بِهَا ﴿ وَكَانَ اللَّهُ بِهَا وَكُانَ اللَّهُ بَهُ إِنَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللّ যাদের তোমরা কখনো দেখতে পাওনি: তোমরা তখন যা কিছু করছিলে আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই তা দেখছিলেন.

٩ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْهَ َ اللَّهِ عَلَيْكُورُ إِذْ جَاءَتُكُورُ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِرْ تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ج

১০. যখন তারা তোমাদের ওপর থেকে, তোমাদের নীচ থেকে তোমাদের ওপর (হামলা করার জন্যে) আসছিলো. যখন (ভয়ে) তোমাদের চক্ষ বিক্ষারিত হয়ে পড়েছিলো. প্রাণ হয়ে পড়েছিলো কণ্ঠাগত এবং (আল্লাহর সাহায্যে বিলম্ব দেখে) তোমরা আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে নানা রকমের ধারণা করতে লাগলে!

١٠ إِذْ جَاءُوكُرْ بِينَ فَوْتِكُرْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْإَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَقُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا

১১. সে (বিশেষ) সময়ে ঈমানদাররা চরমভাবে পরীক্ষিত এবং তারা মারাত্মকভাবে কম্পিত হয়ে পডেছিলো।

١١ مُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا

১২. সে সময় মোনাফেক এবং যাদের মনে (সন্দেহের) ব্যাধি ছিলো তারা বলতে লাগলো, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসল আমাদের সাথে যে ওয়াদা করেছেন তা (মূলত) প্রতারণা বৈ কিছুই ছিলো না।

١٢ وَإِذْ يَقُولُ الْهُنفِقُونَ وَ الَّذِيْنَ فِي قُلُوبِهِرْ مَّرَضَّ مَّا وَعَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا عُرُورًا

১৩. (বিশেষ করে.) যখন তাদের একটি দল (এসে) বললো, হে ইয়াসরেবের অধিবাসীরা, (আজ শত্রু বাহিনীর সামনে) তোমাদের দাঁডাবার মতো কোনো مُقَاءً لَكُر فَارْجِعُوا ء وَيَسْتَأَذِن فَرِيقٌ مِنْهُمُ ﴿ अंग्लाश वर्षा (العِمَامُ العَالَمُ مَا أَجُعُوا ء وَيَسْتَأَذِن فَرِيقٌ مِنْهُمُ ﴿ अंग्लाश वर्षा वर् তাদের একাংশ (তোমার কাছে এই বলে) অনুমতিও النَّبِيُّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عُورَةً ﴿ وَمَا هِي अनुमाण्य ﴿ وَمَا هِي اللَّهِ اللَّهُ اللّلَّا اللَّهُ اللَّا اللَّلَّا اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّا الللَّا اللَّاللَّ اللَّهُ اللَّهُ الل রয়েছে (তাই আমরা ফিরে যেতে চাই), অথচ (আল্লাহ তায়ালা জানেন) তা অরক্ষিত ছিলো না: (আসলে ময়দান থেকে) এরা শুধু পালাতে চেয়েছিলো।

ا وَإِذْ قَالَتْ طَّآنِفَةً مِّنْهُرْ يَآمُلُ يَثُوِبَ لَا يَثُوِبَ لَا يَثُوِبَ لَا بِعَوْرَةٍ \$ إِنْ يَبِيْدُونَ إِلَّا نِرَارًا

১৪. যদি শত্রু দল নগরীর চারপাশ থেকে ওদের ভেতর প্রবেশ করতো এবং (যারা মোনাফেক) তাদের যদি (বিদ্রোহের) ফেতনা খাড়া করার জন্যে বলতো, তবে তারা নির্দ্ধিধায় তাও মেনে নিতো, এ ব্যাপারে তারা মোটেই বিলম্ব করতো না।

١٢ وَلَوْ دُخلَتُ عَلَيْهِم ۚ مِّن ۚ أَقْطَارِهَا ثُمِّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا

১৫. অথচ এ লোকেরাই ইতিপূর্বে আল্লাহ তায়ালার সাথে ওয়াদা করেছিলো, তারা (কখনো ময়দান থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে না (তাদের জানা উচিত), আল্লাহ তায়ালার (সাথে সম্পাদন করা) ওয়াদা সম্পর্কে অবশ্যই তাদের জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

10 وَلَقَنْ كَانُوْ اعَامَلُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ \tilde{V} يُوَلُّونَ الْإَدْبَارَ ﴿ وَكَانَ عَهْنُ اللَّهِ مَسْنُولًا

১৬. (হে নবী, এদের) তুমি বলো, যদি তোমরা মৃত্যু থেকে পালাতে চাও অথবা (কেউ তোমাদের) হত্যা (ব্রুবে এ কারণে পালাতে চাও), তাহলে এই পালানো তোমাদের কোনোই উপকার দেবে না. (আর যদি কোনোরকম পালিয়ে যেতে সক্ষমও হও) তাহলেও তো সামান্য কয়দিনের উপকারই ভোগ করতে দেয়া হবে মাত্র।

١٦ قُلُ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْسِ أوالْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا

৩৩ সুরা আল আহ্যাব

820

মন্যিল ৫

æ

পারা ২১ উতল মা উহিয়া

১৭. (হে নবী.) যদি আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কোনো অমংগল করতে চান অথবা চান তোমাদের কোনো মংগল করতে, তাহলে (এ উভয় অবস্থায়) তুমি বলো, এমন কে আছে যে তোমাদের আল্লাহ তায়ালা (-র সিদ্ধান্ত) থেকে বাঁচাতে পারবে, আল্লাহ তায়ালা ব্যতিরেকে এরা (সেদিন) না পাবে কোনো অভিভাবক, না পাবে কোনো সাহায্যকারী:

١٤ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِهُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ اَرَادَ بِكُمْ شُوَّءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ﴿ وَلَا يَجِنُونَ لَهُمْ مِّنَ دُوْنِ اللَّهِ وَلِيًّا وَّلَا

১৮. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মধ্যকার সেসব (মোনাফেক) লোকদের চেনেন, যারা (অন্যদের যুদ্ধে বন্ধুদের বলে, তোমরা আমাদের কাছে এসে যাও, (আসলে) ওদের অল্প সংখ্যক লোকই যুদ্ধে অংশ গ্রহণ করে!

١٨ قَلْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْهُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اللهِ قَلْيُلُا لا

১৯. (যে কয়জন এসেছে তারাও) তোমাদের (বিজয়ের) ওপর কৃষ্ঠিত থাকে, অতপর যখন (তোমাদের ওপর) কোনো বিপদ আসে, তখন তুমি তাদের দেখবে তারা চক্ষ উল্টিয়ে তোমার দিকে এমনভাবে তাকাচ্ছে যেন কোনো ব্যক্তির ওপর মত্য চাপিয়ে দেয়া হয়েছে, কিন্তু (যখন ذَهَبَ الْحَوْنُ سَلَقُوكُمْ بِٱلْسِنَةِ حِنَ إِن (११ करता) उपन अवारे (११ केरता) إِن سَلَقُوكُمْ بِٱلْسِنَةِ حِنَ إِن الْمِنَةِ عِن الْحَوْثِ الْمَعْرُ فَي الْمُعَالِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَالِقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعَلِينِ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّ الْمُعْلِقِينَ الْمُعِلِّقِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعَلِّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلَّقِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينَا الْمُعَلِّينَ الْمُعِلِّيِنِينَ الْمُعِلِّينَ الْمُعِلِ সম্পদের ওপর লোভী হয়ে তোমাদের সাথে বাকচাত্রী শুরু করে: (আসলে) এ লোকগুলো কিন্তু কখনো ঈমান আনেনি, আল্লাহ তায়ালা (তাই) ওদের সব কাজই বিনষ্ট করে দিয়েছেন: আর এ কাজটা তো আল্লাহ তায়ালার জন্যে অত্যন্ত সহজ।

١٩ أَشَحَّةً عَلَيْكُمْ عَلَمْ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْنُ رَأَيْتَهُرْ يَنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ تَكُوْرُ أَغْيُنُهُمْ كَالَّانِي يُغْشَى عَلَيْه مِنَ الْهَوْسِ عِ فَاذَا آشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ، أُولَنِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَأَهْبُطُ اللَّهُ أَعْهَالُهُر م وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى الله يَسيرًا

২০. (অবরোধ প্রত্যাহার সত্ত্বেও) এরা মনে করে (এখনো) শত্রু বাহিনী চলে যায়নি এবং শত্রুপক্ষ যদি (আবার) এসে চড়াও হয়, তখন এরা মনে করবে, কতো ভালো হতো যদি তারা (মরুভূমির) বেদুঈনদের সাথে (ওখানেই) থেকে যেতে পারতো এবং (সেখানে বসেই ফিরে আসা নিরাপদ কিনা) তোমাদের এ খবর নিতে পারতো, যদিও এরা (এখনও) তোমাদের মাঝে আছে. (কিন্তু) এরা খুব কম লোকই যুদ্ধে অংশ গ্রহণ করবে।

٢٠ يَحْسَبُوْنَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَنْهَبُوْا ءَ وَإِنْ يَّأْتِ الْأَهْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَشْأَلُونَ عَنْ أَثْبَائِكُرْ وَلَوْ كَانُوْ ا فَيْكُرْ مَّا قُتَلُوْ آ الَّا قَلْيُلًا ع

২১. (হে মুসলমানরা,) তোমাদের জন্যে অবশ্যই আল্লাহর রসূলের (জীবনের) মাঝে (অনুকরণযোগ্য) উত্তম আদর্শ রয়েছে, (আদর্শ রয়েছে) এমন প্রতিটি ব্যক্তির জন্যে, যে আল্লাহ তায়ালার সাক্ষাৎ পেতে আগ্রহী এবং যে পরকালের (মুক্তির) আশা করে, (সর্বোপরি) সে বেশী পরিমাণে আল্লাহ তায়ালাকে স্বরণ করে:

٢١ لَقَلْ كَانَ لَكُيرٌ فِي رَسُوْلِ اللَّهِ ٱسْوَةً مَسَنَةً لِّهَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْاَ الْأَخِرَ وَذَكَ اللَّهُ كَثِيرًا ،

২২. (খাটি) ঈমানদাররা যখন (শক্র) বাহিনীকে দেখলো. তখন তারা বলে উঠলো, এ তো হচ্ছে তাই, যার ওয়াদা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূল আমাদের কাছে আগেই করেছিলেন, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসল অবশ্যই সত্য কথা বলেছেন, (এ ঘটনার ফলে) তাদের ঈমান ও আনুগত্যের পরিমাণ আরো বৃদ্ধি পেলো:

٢٢ وَلَمًّا رَا الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ لا قَالُوا هٰنَ ا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَنَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ رَوَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيْهَانًا وَّتَسْلِيْهًا م

৩৩ সুরা আল আহ্যাব

836

পারা ২১ উতলু মা উহিয়া

২৩. ঈমানদারদের মাঝে কিছু লোক তো এমন রয়েছে যারা আল্লাহ তায়ালার সাথে (জীবনবাজির) যে ওয়াদা করেছিলো তা সত্য প্রমাণ করলো, তাদের কিছু সংখ্যক (মানুষ) তো নিজের কোরবানী পূর্ণ (করে শাহাদাত লাভ) করলো, আর কেউ এখনো (শাহাদাতের) অপেক্ষা করছে, তারা তাদের (আসল) লক্ষ্য কখনো পরিবর্তন করেনি,

٢٣ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌّ مَنَقُوْا مَا عَاهَلُوا اللهُ عَلَيْهِ عَاهَدُوا اللهُ عَلَيْهِ عَ فَمِنْهُرْ مَنْ قَضَى نَحْبَهٌ وَمِنْهُرْ مَنْ قَضَى نَحْبَهٌ وَمِنْهُرْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُرْ مَنْ يَتْكِيلُولِا مَنْ لَكُونِيْلُولِا

২৪. (যুদ্ধ তো এ জন্যেই যে,) এতে করে সত্যবাদীদের আল্লাহ তায়ালা তাদের সত্যবাদিতার পুরস্কার দেবেন, আর মোনাফেকদের তিনি চাইলে শাস্তি দেবেন কিংবা তিনি তাদের ওপর ক্ষমাপরবশ হবেন, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু,

٣٣ لِّيَجْزِىَ اللَّهُ الصَّرِقِيْنَ بِصِرْقِهِرْ وَيُعَنِّبَ الْمُنْفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِرْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيْمًا ۚ ۚ

২৫. আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের তাদের (যাবতীয়)
ক্রোধসহ (এমনিই মদীনা থেকে) ফিরিয়ে দিলেন, (এ
অভিযানে) তারা কোনো কল্যাণই লাভ করতে পারেনি;
আল্লাহ তায়ালাই (এ) যুদ্ধে মোমেনদের জ্বন্যে যথেষ্ট
প্রমাণিত হলেন; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা প্রবল শক্তিমান
ও পরাক্রমশালী.

٢٥ وَرَدَّ اللَّهُ الَّانِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِرْ لَرْ يَنَالُوْا خَيْرًا ، وكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ، وكَانَ اللَّهُ تَوِيًّا عَزِيْزًا ،

২৬. আহলে কেতাবদের মধ্যে যারা (এ যুদ্ধে) তাদের সাহায্য করেছে, আল্লাহ তায়ালা তাদেরও দৃর্গ থেকে অবতরণ করালেন এবং তাদের অস্তরে (মুসলমানদের সম্পর্কে এমন) ভীতির সঞ্চার করালেন যে, (আজ) তোমরা (তাদের) এক দলকে হত্যা করছো, আরেক দলকে বন্দী করছো,

٢٦ وَ أَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَامَرُ وْهُرْ مِّنْ آهْلِ
الْكِتٰبِ مِنْ مَيَاصِيْهِرْ وَقَلَانَ فِيْ قُلُوبِهِرُ
الْكِتٰبِ مِنْ مَيَاصِيْهِرْ وَقَلَانَ فِيْ قُلُوبِهِرُ
الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيْقًا ج

২৭. তিনি তোমাদের তাদের যমীন, বাড়ীঘর ও সহায় সম্পত্তির উত্তরাধিকারী বানিয়ে দিলেন, (আল্লাহ তায়ালা এর ফলে তোমাদের) এমন সব ভূখন্ডেরও (অধিকারী বানিয়ে দিলেন) যেখানে তোমরা এখনো কোনো (সামরিক) অভিযান পরিচালনাই করোনি; (সত্যিই) আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ের ওপর (একক) ক্ষমতাবান।

٢٠ وَ اَوْرَثَكُمْ اَرْضَمُرْ وَدِيَارَهُرْ وَ اَمْوَ الْمُرْ وَ اَمُوَ الْمُرْ وَ اَمُوَ الْمُرْ وَ اَمُوالَمُرْ وَ اَمْوَ اللهُ عَلَى كُلِّ مَارُضًا لَّهُ عَلَى كُلِّ مَيْءٍ تَدِيْرًا ع

২৮. হে নবী, তুমি তোমার দ্রীদের বলো, তোমরা যদি পার্থিব জীবন ও তার ভোগবিলাস কামনা করো তাহলে এসো, আমি তোমাদের (তার কিছু অংশ) দিয়ে দেই এবং সৌজনোর সাথে তোমাদের বিদায় করে দেই।

٢٨ يَايَّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِإَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيْوةَ النُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أَمَنِّعْكُنَّ وَاسَّرْعَكُنَّ سَرَاحًا جَوِيْلًا

২৯. আর যদি তোমরা আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রস্ল ও পরকাল কামনা করো তাহলে (জেনে রেখো), তোমাদের মধ্যে যারা সংকর্মশীল, আল্লাহ তায়ালা তাদের জন্যে মহা পুরস্কার প্রস্তুত করে রেখেছেন।

٢٩ وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ وَالنَّارَ الْأَخِرَةَ فَانَّ اللَّهَ اَعَنَّ لِلْهُحُسِنْتِ مِنْكُنَّ اَجُرًّا عَظِيْهًا

৩০. হে নবীপত্নীরা, তোমাদের মধ্যে যারা খোলাখুলি কোনো অশ্লীল কাজ করবে, তার শাস্তি বিশুণ করে দেয়া হবে; আর এ কাজ আল্লাহ তায়ালার জন্যে অত্যস্ত সহজ।

٣٠ يٰنِسَاءُ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْسِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَلَابُ شِعْفَيْنِ ، وكَانَّ ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرًا

৩৩ সূরা আল আহ্যাব

829

৩১. তোমাদের মধ্যে যারা আল্লাহ তারালা ও তাঁর রস্লের আনুগত্য করবে, এর সাথে সে নেক কাজও করবে, আমি তাকে দু'বার তার কাজের পুরস্কার দান করবো, আমি (পরকালে) তার জন্যে সম্মানজনক রেযেক প্রস্তুত করে রেখেছি।

٣١ وَمَنْ يَقْنَتُ مِنْكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ

مَالِحًا نُّوْتِهَا ۗ أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ لا وَأَعْتَلْنَا لَهَا وَأَعْتَلْنَا لَهَا وَأَعْتَلْنَا لَهَا وَأَ

৩২. হে নবীপত্মীরা, তোমরা অন্যান্য নারীদের মতো (সাধারণ নারী) নও, যদি তোমরা (সত্যিই) আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, তাহলে (অন্য পুরুষদের সাথে) কথা বলার সময় কোমলতা অবলম্বন করো না, (যদি এমন করো) তাহলে যার অন্তরে কোনো ব্যাধি আছে সে তোমার ব্যাপারে প্রলুদ্ধ হয়ে পড়বে, (তবে) তোমরা (সর্বদাই) নিয়মমাফিক কথাবার্তা বলবে.

٣٢ ينساءَ النّبِيّ لَسْتُنّ كَامَرٍ مِّنَ النِّسَاءِ إِن النَّسَاءِ إِن النَّفَوْلِ فَيَطْهَعَ إِن الْقُوْلِ فَيَطْهَعَ النِّن فَيْ فَي النَّفَوْلِ فَيَطْهَعَ النّبِي فِي قَلْهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا اللّهِ عَرْضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا اللّهِ عَرضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا اللّهِ عَرضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا اللّهِ عَرضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا اللّهَ اللّهِ عَرضٌ وَقُلْنَ عَوْلًا اللّهَ عَلَيْهِ عَرضٌ اللّهَ اللّهِ عَلَى اللّهَ اللّهِ عَلَى اللّهَ اللّهُ ال

৩৩. তোমরা ঘরে অবস্থান করবে, পূর্বেকার জাহেলিয়াতের যমানার (নারীদের) মতো নিজেদের প্রদর্শনী করে বেড়াবে না, তোমরা নামায কায়েম করবে, যাকাত আদায় করবে, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করবে; আল্লাহ তায়ালা (মূলত) এসব কিছুর মাধ্যমে নবী পরিবার (তথা) তোমাদের মাঝ থেকে (সব ধরনের) অপবিত্রতা দূর করে (তোমাদের) পাক সাফ করে দিতে চান,

٣٣ وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجْ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولٰى وَاقِنْ الصَّلُوةَ وَاتِيْنَ الزَّكُوةَ وَاطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهٌ مَ إِنَّمَا يُرِيْنُ اللَّهُ لِيُنْهِبَ عَنْكُرُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا عَ

৩৪. তোমাদের ঘরে আল্লাহ তায়ালার কেতাবের আয়াত ও তাঁর জ্ঞানতত্ত্বের যেসব কথা তেলাওয়াত করা হয় তা শ্বরণ রেখো; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা সৃদ্ধদলী এবং তিনি সম্যক অবগত।

٣٣ وَاذْكُرْنَ مَا يُثلَى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ أَيُسِ الْسِيطِ اللهِ وَالْحِكْمَةِ مَا إِنَّ اللهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ع

৩৫. মুসলমান পুরুষ মুসলমান নারী, মোমেন পুরুষ মোমেন নারী, ফরমাবর্দার পুরুষ ফরমাবর্দার নারী, সত্যবাদী পুরুষ সত্যবাদী নারী, ধৈর্যশীল পুরুষ বিনীত নারী, দানশীল পুরুষ দানশীল নারী, রোযাদার পুরুষ রোযাদার নারী, যৌন অংগসমূহের হেফাযতকারী পুরুষ (এ অংগসমূহের) হেফাযতকারী নারী, (সর্বোপরি) আল্লাহ তায়ালাকে অধিক পরিমাণে ম্বরণকারী পুরুষ ম্বরণকারী নারী— (নিসন্দেহে) এদের জন্যে আল্লাহ তায়ালা ক্ষমা ও মহাপুরস্কার ঠিক করে রেখেছেন।

70 إِنَّ الْمُسْلِوِيْنَ وَالْمُسْلِمِٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُخِيْنِ وَالْحُمْمِيْنَ وَالْمُتَمَرِّقُتِي وَالْمُتَمَرِّقُتِي وَالْمُتَمَرِّقُتِي وَالْمُتَمَرِّقُتِي وَالْمُتَمَرِّقُتِي وَالْمُتَمَرِّقُتِي وَالْمُتَمَرِقُتُي وَالْمُخْفِيْنَ فَرُوْمَهُمْ وَالْمُغِظِينَ فَرُومَهُمْ وَالْمُغِظِينَ فَرُومَهُمْ وَالْمُغِظِينَ فَرُومَهُمْ وَالْمُغِظِينَ اللّهَ كَثِيرًا وَالنَّكِرِينِ الله كَثِيرًا وَالنَّكِرِينِ الله كَثِيرًا وَالنَّكِرِينِ الله كَثِيرًا وَالنَّكِرِينِ اللهَ كَثِيرًا وَالنَّكِرِينِ اللهِ اللهُ ا

৩৬. আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূল যখন কোনো ব্যাপারে কোনো সিদ্ধান্ত ঘোষণা করেন তখন কোনো মোমেন পুরুষ ও কোনো মোমেন নারীর তাদের সে ব্যাপারে নিজেদের কোনো রকম এখতিয়ার থাকবে না– (যে তারা তাতে কোনো রদবদল করবে); যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের নাফরমানী করবে, সে নিসন্দেহে সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত হয়ে যাবে;

٣٦ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنِ وَ لَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللهُ وَرَسُولُهُ آمُرًا أَنْ يَكُونَ لَمُرُ الْخِيرَةُ مِنْ آمُرُ اللهُ وَرَسُولُهُ فَقَنْ مِنْ آمُرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللهَ وَرَسُولُهُ فَقَنْ غَلَ مُلَّا ضَلَاً لَّهُ مَنْ اللهِ عَلَى اللهُ وَرَسُولُهُ فَقَنْ غَلَ مَلَا شَلْلًا لَّبَيْنًا اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ ُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى ا

৩৭. (হে নবী, তুমি স্মরণ করো), যখন তুমি সে ব্যক্তিকে লক্ষ্য করে বলছিলে– যার ওপর আল্লাহ তায়ালা বিরাট অনুগ্রহ করেছেন এবং তুমিও (নিজের পুত্র বানিয়ে) যার ওপর অনুগ্রহ করেছো (তুমি তাকে বলেছিলে)– তুমি

٣٤ وَإِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْ آَنْعَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَٱنْعَمْتَ عَلَيْهِ ٱمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّق

৩৩ সূরা আল আহ্যাব

824

তোমার স্ত্রীকে (বিয়ের বন্ধনে) রেখে দাও এবং আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, (কিন্তু এ পর্যায়ে) তোমার মনের ভেতরে যে কথা তুমি লুকিয়ে রেখেছিলে আল্লাহ তায়ালা পরে তা প্রকাশ করে দিলেন, (আসলে তোমার পালক পুত্রের তালাকপ্রাপ্তা স্ত্রীকে বিয়ে করার ব্যাপারে) তুমি মানুষদের (কথাকেই) ভয় করছিলে, অথচ (তুমি জানো) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন ভয় পাওয়ার বেশী হকদার: অতপর (এক সময়) যখন যায়দ তার (ক্সীর) কাছ থেকে নিজের প্রয়োজন শেষ করে (তাকে তালাক দিয়ে) দিলো. তখন আমি তোমার সাথে তার বিয়ে সম্পন্ন করে দিলাম. যাতে করে (ভবিষ্যতে) মোমেনদের ওপর তাদের পালক পুত্রদের স্ত্রীদের বিয়ের মাঝে (আর) কোনো সংকীর্ণতা (অবশিষ্ট) না থাকে, (বিশেষ করে) তারা যখন তাদের ন্ত্রীদের কাছ থেকে নিজেদের প্রয়োজন শেষ করে (তাদের তালাক দিয়ে) দেয়, (আর সর্বশেষে) আল্লাহ তায়ালার আদেশই কার্যকর হবে i

اللَّهُ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْرِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ع وَاللَّهُ أَمَقُّ أَنْ تَخْشُهُ ع فَلَهَّا قَضَى زَيْنٌ مِّنْهَا وَطَرًّا زَوَّجْنُكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ مَرَجٌ فِي ٱزْوَاحِ أَدْعِيَا لِهِمْ إِذَا قَضَوا مِنْهُنَّ وَطَرًّا وَكَانَ أَمْرُ الله مَفْعُوْلًا

৩৮. আল্লাহ তায়ালা নবীর জন্যে যে ফয়সালা করে দিয়েছেন, সে (ব্যাপারে) নবীর ওপর কোনো বিধি নিষেধ त्नरें; আগের (नवीरिनत) क्लाविश व हिरना आन्नार إَنْ فِي النَّادُ لَهُ م سُنَّةَ اللَّهِ فِي النَّانِ فَي غَلُوا अश्रात (नवीरिनत) তায়ালার বিধান: আর আল্লাহ তায়ালার বিধান তো (আগে থেকেই) নির্ধারিত হয়ে আছে.

٣٨ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ مَرَجٍ فِيْهَا مِنْ قَبْلُ م وَكَانَ آمْرُ اللَّهِ قَنَرًا مَّقْدُورَ ٢٠ ٢٠

৩৯. যারা (মানুষদের কাছে) আল্লাহ তায়ালার বাণী পৌছে দিতো, তারা আল্লাহ তায়ালাকেই ভয় করতো, وَلَا يَخْشُوْنَ أَحَلًا إِلَّا اللَّهُ ، وكَفَى بِاللَّهِ जाता जालार जाताना राष्ट्रा जात काউत्कर ७ श कत्रत्जा না: (কেননা মানুষের) হিসাব নেয়ার ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট।

٣٩ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُونَ رسلن اللهِ وَيَخْشُونَهُ

৪০. হে মানুষ (তোমরা জেলে রেখো), মোহাম্মদ مُنَ رَّجَالِكُر وَّالِكُر وَّالِكُر وَ وَالْكُر وَ وَالْكُرُونِ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِي اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّ তোমাদের কোনো পুরুষের পিতা নয়, বরং সে তো হচ্ছে وَلَكِنْ رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَرَ النَّبِيِّنَ ﴿ وَكَانَ अाल्लार जाग्रानात त्रम्न वरः नवीरमत जिनस्मारत وَلَكِنْ رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَرَ النَّبِيِّنَ ﴿ وَكَانَ وَكَانَ مَا اللَّهِ عَالِمَ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلْمَا عَلَى اللَّهِ عَلَى ال (শেষনবী), আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ে অবগত রয়েছেন।

اللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْهًا ع

৪১. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে বেশী বেশী শ্বরণ করো.

٣ يَاَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا

৪২. এবং সকাল সন্ধ্যায় তোমরা তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা করো ।

٣٢ وْسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وْٱصِيْلًا

৪৩. তিনিই (মহান আল্লাহ তায়ালা, যিনি) তোমাদের ওপর অনুগ্রহ (বর্ষণ) করেন, তাঁর ফেরেশতারাও (তোমাদের জন্যে আল্লাহ তায়ালার ক্ষমা চেয়ে তোমাদের ওপর অনুগ্রহ করেন), যাতে করে (আল্লাহ) তোমাদের অন্ধকার থেকে (ইসলামের) আলোর দিকে বের করে আনতে পারেন: (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন মোমেনদের জন্যে পরম দয়াল।

٣٣ هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَّئِكُتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُهٰ إِلَى النُّورِ ، وَكَانَ بِالْهُؤْمِنِينَ رَحِيْهًا

88. যেদিন তারা আল্লাহ তায়ালার সাথে সাক্ষাৎ করবে, সেদিন মহান আল্লাহর দরবারে তাদের সালাম দ্বারা অভিবাদন করা হবে, তিনি তাদের জন্যে (এক) সম্মানজনক পুরস্কার নির্দিষ্ট করে রেখেছেন।

٣٣ تَحيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَرُ عَ وَإَعَلَّ لَهُمْ

৩৩ সুরা আল আহ্যাব

838

পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত

৪৫. হে নবী. আমি তোমাকে (হেদায়াতের) সাক্ষী (বানিয়ে) পাঠিয়েছি, (তোমাকে) বানিয়েছি (জান্লাতের) সুসংবাদদাতা ও (জাহান্লামের) সতর্ককারী.

٢٥ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ انَّا أَرْسَلُنْكَ شَاهِلًا ومبشرًا وننيرًا لا

৪৬. আল্লাহ তায়ালার অনুমতিক্রমে তুমি হচ্ছো আল্লাহর দিকে আহ্বানকারী ও (হেদায়াতের) এক সুস্পষ্ট প্রদীপ।

٣٦ وَّدَاعِيًّا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا

89. (অতএব) তুমি মোমেনদের সুসংবাদ দাও যে, وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِأَنَّ لَهُرْ مِّنَ اللّٰهِ ٢٧ তাদের জন্যে আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে এক মহাঅনুগ্রহ রয়েছে।

فَصْلًا كَبِيْرًا

৪৮. কখনো কাফের ও মোনাফেকদের কথা শোনো না. তাদের যাবতীয় নির্যাতন উপেক্ষা করে চলো, আল্লাহ তায়ালার ওপর ভরসা করো: (কেননা) কর্মবিধায়ক হিসেবে আল্লাহ তায়ালাই তোমার জন্যে যথেষ্ট।

٣٨ وَلَا تُطِعِ الْكُفِرِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَدَعَ أَذْمُرْ وَتَوَكَّلْ عَلَى الله و كَفْي بالله وكيلًا

৪৯. হে মোমেনরা, যখন তোমরা মোমেন রমণীদের বিয়ে করো, অতপর (কোনো রকম) স্পর্শ করার আগেই তাদের তালাক দাও, তাহলে (এমতাবস্থায়) তাদের ওপর কোনো ইন্ত (বাধ্যতামূলক) নয় যে, তোমরা তা ওনতে তরু করবে, তবু তোমরা তাদের কিছু দিয়ে দেবে এবং (সৌজন্যের সাথেই) তাদের বিদায় করে দেবে।

٣٩ يَّاَيُّهَا الَّٰذِيْنَ أَمَنُوْآ إِذَا نَكَحْتُرُ الْهُوْمِنْتِ ثُرَّ طَلَّقْتُهُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَهَسُّوهُنَّ فَهَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِنَّةٍ تَعْتَنُّوْنَهَا جَ فَهَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَبِيْلاً

৫০. হে নবী. আমি তোমার জন্যে সেসব স্ত্রীদের হালাল করেছি, যাদের তুমি (যথার্থ) মোহর আদায় করে দিয়েছো (সেসব মহিলাও তোমার জন্যে আমি হালাল করেছি). যারা তোমার অধিকারভুক্ত, যাদের আল্লাহ তায়ালা তোমাকে দান করেছেন- এবং তোমার চাচাতো বোন. ফুফাতো বোন, মামাতো বোন, খালাতো বোন, যারা তোমার সাথে হিজরত করেছে, (তা ছাড়া রয়েছে) সে মোমেন নারী, যে (কোনো কিছু ছাড়াই) নিজেকে নবীর জন্যে নিবেদন করবে এবং নবী চাইলে তাকে বিয়ে করবে, এ বিশেষ (অনুমতি ওধু) তোমার জন্যে, অন্য মোমেনদের জন্যে নয়: (সাধারণ) মোমেনদের স্ত্রী ও অধিকারভক্ত দাসীদের ব্যাপারে আমি তাদের ওপর যে বিধি বিধান নির্ধারণ করেছি, তা অবশ্য আমি (ভালো করেই) জানি, (তোমার ব্যাপারে এ সুবিধা আমি এ জন্যেই দিয়েছি) যেন তোমার ওপর কোনো ধরনের সংকীৰ্ণতা না থাকে: আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও প্রম দয়ালু।

٥٠ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا آَهُلَلْنَا لَكَ ٱزْوَاجَكَ الَّتِي ۚ أَتَيْتَ ٱجُوْرَفُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَهِيْنُكَ مِيًّا ۚ أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنْتِ عَيِّكَ وَبَنْتِ عَيَّتِكَ وَبَنْتِ غَالِكَ وَبَنْتِ غَلْتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ رِ وَامْرَأَةً مُّوْمِنَةً إِنْ وَهَبَت نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ن خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَلَ عَلِهُنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِرْ فِي أَزْوَ اجهِرْ وَمَا مَلَكُسْ أَيْهَانُهُرْ لَكَيْلًا يَكُونَ عَلَيْكَ مَرَجٌ ، وكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا

৫১. (তোমার জন্যে আরেকটি অতিরিক্ত সুবিধা হচ্ছে,) তুমি ইচ্ছা করলে তাদের মধ্য থেকে কাউকে (নিজের কাছ থেকে) দূরে রাখতে পারো, আবার যাকে ইচ্ছা তাকে নিজের কাছেও রাখতে পারো; যাকে তুমি দূরে রেখেছো তাকে যদি (পুনরায়) তুমি (নিজের কাছে) রাখতে চাও. তাতেও তোমার ওপর কোনো গুনাহ নেই: এ (বিশেষ সুযোগ তোমাকে) এ জন্যেই দেয়া হয়েছে যেন এতে করে ওদের চক্ষু শীতল থাকে, তারা (অযথা) দুঃখ না পায় এবং তুমি ওদের যা দেবে তাতেই যেন ওরা সবাই

٥١ تُرْجِيْ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَ تُؤْوِيْ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءً ﴿ وَمَنِ ابْتَغَيْثَ مِينَ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ، ذٰلِكَ أَدْنَى أَنْ تَقَرُّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنُ وَيَرْضَيْنَ بِهَا أَتَيْتُهُنَّ كُلُّهُنَّ ا وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوْبِكُمْ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ

পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত

সন্তুষ্ট থাকতে পারে: তোমাদের মনে যা কিছ আছে আল্লাহ তায়ালা তা (ভালো করেই) জানেন, আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ ও পরম সহনশীল।

৫২. (হে নবী. এর বাইরে) তোমার জন্যে বৈধ নয় যে. তুমি তোমার (বর্তমান) দ্রীদের বদলে (অন্য নারীদের ন্ত্রীরূপে) নেবে, যদিও সেসব নারীর সৌন্দর্য তোমাকে আকষ্ট করে, অবশ্য তোমার অধিকারভুক্ত দাসীরা (এ বিধি নিষেধের) ব্যতিক্রম, স্মরণ রাখবে, আল্লাহ তায়ালা সবকিছুর ওপর তীক্ষ দৃষ্টি রাখেন।

۵٢ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْلُ وَلَّا أَنْ تَبَنَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَّلُوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلًّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ، وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ رَّ قِيْبًا ع



৫৩. হে মানুষ, তোমরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা নবীর ঘরে প্রবেশ করো না, অবশ্য যখন তোমাদের খাওয়ার জন্যে (আসার) অনুমতি দেয়া হয় (তাহলে) সে অবস্থায় এমন সময় পর্যন্ত অপেক্ষা করে প্রবেশ করো. যাতে তোমাদের (খাওয়ার জন্যে) অপেক্ষা করতে না হয়. কিন্তু কখনো যদি তোমাদের ডাকা হয় তাহলে (সময়মতোই) প্রবেশ করো, অতপর যখন খাবার (গ্রহণ) শেষ করে ফেলবে তখন সাথে সাথে (সেখান থেকে) চলে যেয়ো এবং (সেখানে কোনো অর্থহীন) কথাবার্তায় নিমগ্র হয়ো না: তোমাদের এ বিষয়টি নবীকে কষ্ট দেয়, সে তোমাদের (এ কথা বলতে) লজ্জাবোধ করে, কিন্তু আল্লাহ سَاَلْتُوهُ هُنَّ مَتَاعًا فَسُئَلُوهُ وَنَّ مِن وَرَاء اللَّهِ عَلَى مَن عَامًا فَسُئَلُوهُ وَنَّ مِن وَرَاء ا তোমাদের যদি নবীপত্মীদের কাছ থেকে কোনো জিনিসপত্র চাইতে হয় তাহলে পর্দার আডাল থেকে চেয়ে নিয়ো, এটা তোমাদের ও তাদের অন্তরকে পাক সাফ রাখার জন্যে অধিকতর উপযোগী: তোমাদের কারো জন্যেই এটা বৈধ নয় যে, তোমরা আল্লাহর রস্পকে কষ্ট দেবে (না এটা তোমাদের জন্যে বৈধ যে), তোমরা তাঁর পরে কখনো তাঁর স্ত্রীদের বিয়ে করবে, এটা আল্লাহ তায়ালার কাছে একটি বড়ো (অপরাধের) বিষয়।

٥٣ يَّايُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا لَا تَلْمُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَا ۗ غَيْرَ نْظِرِيْنَ إِنْهُ لا وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيْتُرْ فَادْهُلُواْ فَإِذَا طَعِبْتُم فَانْتَهُووا وَلا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثِي ا إِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيُّ فَيَشْتَه مِنْكُرُ زِ وَاللَّهُ لَا يَسْتَدْى مِنَ الْحَقِّ ، وَإِذَا حِجَابِ وَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ عَ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوْاً أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْنِ ۗ أَبَنَّا مِ إِنَّ ذَٰلِكُر كَانَ عِنْلَ اللَّهُ عَظَيْمًا

৫৪. তোমরা কোনো জিনিস প্রকাশ করো কিংবা তা গোপন করো- আল্লাহ তায়ালা (তা) সবই জানেন, তিনি অবশ্যই সর্বজ্ঞ।

٥٣ إِنْ تُبْرُوْا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوْهُ فَانَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْهًا

৫৫. (যারা নবীপত্মী), তাদের ওপর তাদের পিতা, ছেলে, ভাইদের ছেলে, বোনদের ছেলে, (সব সময়ে আসা যাওয়া করা) মহিলারা এবং নিজেদের অধিকারভুক্ত দাসীদের (সামনে আসা ও তাদের কাছ থেকে পর্দা না করার) ব্যাপারে কোনো অপরাধ নেই, (হে নবীপত্মীরা), তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছু প্রত্যক্ষ করেন।

٥٥ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي ۚ أَبَالِهِنَّ وَلَآ ٱبْنَآئِهِنَّ وَلَا اغْوَانِهِنَّ وَلَا ٱبْنَاءَ اغْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخُوْتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتُ أَيْهَانُهُنَّ ء وَأَتَّقِيْنَ اللَّهَ ، إنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْلًا

৫৬. নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর ফেরেশতারা নবীর ওপর দর্মদ পাঠান: (অতএব) হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরাও নবীর ওপর দর্মদ পাঠাতে থাকো এবং (তাঁকে) উত্তম অভিবাদন (পেশ) করো।

٥٦ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَّئِكَتَهَ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيَّ ا يْأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُواْ صَلُّواْ عَلَيْهِ وَسَلِّهُواْ تَسْلَيْهًا

৩৩ সুরা আল আহ্যাব

| CALANTE WITH TAKE THE PART TO THE | elizi e con elizione |
|---|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ ৫৭. যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলকে কষ্ট দেয় | পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত |
| তাদের ওপর দুনিয়া আখেরাত (উভয় জায়গায়ই) আল্লাহ | ۵4 إِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللَّهَ وَرَسُولُهُ لَعَنَهُرُ |
| তায়ালা অভিশাপ বর্ষণ করেন, (কেয়ামতের দিন) তিনি তাদের জন্যে অপমানজনক আযাব ঠিক করে রেখেছেন। | اللهُ فِي النَّنْيَا وَالْأَخِرَةِ وَاَعَنَّ لَهُرْ عَنَابًا تُهِيْنًا |
| ৫৮. যারা মোমেন পুরুষ ও মোমেন নারীদের কষ্ট দেয় তেমন ধরনের কিছু (দোষ) তারা না করা সত্ত্বেও, (যারা | مُ وَالَّذِيْنَ يُؤْدُونَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰسِ بِغَيْرٍ مَا اكْتَسَبُوا فَقَلِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَ إِثْمًا |
| এমনটি করে) তারা তো (মূলত) মিথ্যা ও স্পষ্ট অপবাদের বোঝাই বহন করে চলে। | بِغَيْرِ مَااكْتَسَبُّوْا فَقَلِ احْتَمَلُّوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا وَّاِثْمًا وَّاِثْمًا وَّاِثْمًا وَّالِثُمَّا |
| ৫৯. হে নবী, তুমি তোমার স্ত্রী, মেয়ে ও সাধারণ মোমেন | ٥٩ يٰآيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّإِزْوَاجِكَ وَبَنْتِكَ |
| নারীদের বলো, তারা যেন তাদের চাদর (থেকে কিয়দংশ) নিজেদের ওপর টেনে দেয়, এতে করে তাদের | وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُكْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ |
| চেনা (অনেকটা) সহজ হবে এবং তাদের কোনোরকম উত্ত্যক্ত করা হবে না, (জেনে রেখো), আল্লাহ তায়ালা | جَلَابِيْبِهِنَّ ، ذٰلِكَ أَدْنَى أَنْ يَعْرَفَنَ فَلَا |
| ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু। | يُوْذَيْنَ ﴿ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيْهًا |
| ৬০. মোনাফেক দল, (তাদের সাথে) যাদের অন্তরে কুফরীর ব্যাধি রয়েছে ও যারা মদীনায় (তোমার বিক্লজে) | ٦٠ لَئِن لَر يَنْتَهِ الْهُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي |
| গুজব রটনা করে বেড়ায়, তারা যদি (তাদের নোংরা কার্যকলাপ থেকে) বিরত না হয়, তাহলে (হে নবী), আমি | قُلُوْبِهِرْ مَّرَضَّ وَّالْهُرْجِفُوْنَ فِي الْهَرِينَةِ |
| নিক্য়ই তোমাকে তাদের ওপর প্রবল করে (বসিয়ে) | لَنُغْرِيَنَّكَ بِمِرْ ثُرٌّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيْمَآ إِلَّا |
| দেবো, অতপর এরা সেখানে তোমার প্রতিবেশী হিসেবে সামান্য কিছু দিনই থাকতে পারবে, | قَلِيْلًا عِنْدِ |
| ৬১. (এরপরও এখানে যারা থেকে যাবে তারা) থাকবে অভিশপ্ত হয়ে, অতপর তাদের যেখানেই পাওয়া যাবে | ١١ مَّلْعُوْ نِيْنَ يَ أَيْنَهَا ثُقِفُوۤ ٱخِنُوْا وَقُتِّلُوْا |
| পাকড়াও করা হবে এবং (বিশ্বাসঘাতকতার জ্বন্যে) তাদের মৃতু দন্ডে দন্ডিত করা হবে। | تَقْتِيٛلُا |
| ৬২. (তোমার) আগে (বিদ্রোহী হিসেবে) যারা অতিবাহিত হয়ে গেছে তাদের ব্যাপারেও এ ছিলো আল্লাহ তায়ালার | ٦٢ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِيثَيَّ غَلَوْا مِنْ قَبْلُ ع |
| বরে গেছে ভাগের ব্যাসায়েও আ ছেলো আল্লাহ ভারালার নীতি, আল্লাহ তায়ালার এ নিয়মে তুমি কখনো কোনো ব্যতিক্রম দেখবে না। | وَلَىْ تَحِنَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْرِيْلًا |
| ৬৩. মানুষরা তোমাকে কেয়ামত সম্পর্কে জিজ্ঞেস করবে, তুমি (তাদের) বলো, তার জ্ঞান তো একমাত্র আল্লাহ | ٣٣ يَسْئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ، قُلُ إِنَّهَا |
| তায়ালার কাছেই রয়েছে; (হে নবী,) তুমি এ বিষয়টি কি করে জানবে? সম্ভবত কেয়ামত খুব নিকটেই (এসে | عِلْهُمَا عِنْلَ اللَّهِ ، وَمَا يُدُرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ |
| शिष्ट्)! | تَكُوْنُ قَرِيْبًا |
| ৬৪. তবে (কেয়ামত যখনই আসুক) আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই কাফেরদের ওপর (আগেই) অভিশাপ দিয়েছেন | ٣٢ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفِرِيْنَ وَاعَدُّ لَهُر |
| এবং তাদের শান্তির জন্যে প্রজ্বপিত আগুনের শিখাও প্রস্তুত করে রেখেছেন, | سَعِيْرًا لا |
| ৬৫. সেখানে তারা চিরদিন থাকবে, (সেখান থেকে বেরিয়ে আসার ব্যাপারে) তারা কোনো রকম অভিভাবক | ٦٥ عُلِهِيْنَ فِيْهَا ٓ أَبَدُّا عَ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا |
| ও সাহায্যকারী পাবে না, | وَّلَا نَصِيْرًا ع |
| ৩৩ সূরা আল আহ্যাব | মনযিশ ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াক্বনুত |
|--|---|
| ৬৬. সেদিন তাদের (চেহারাসমূহ) ওলট পালট করে (প্রজ্বলিত) আগুনে রাখা হবে, সেদিন তারা বলবে, হার, (কতো ভালো হতো) যদি আমরা আল্লাহ তারালা ও রস্লের আনুগত্য করে আসতাম। | ٢٦ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ لِلَيَّارِ يَقُوْلُوْنَ لِللَّهُ وَاَطَعْنَا الرَّسُولَا |
| ৬৭. তারা (সেদিন আরো) বলবে, হে আমাদের মালিক, (দুনিয়ার জীবনে) আমরা আমাদের নেতা ও বড়োদের কথাই মেনে চলেছি, তারাই আমাদের তোমার পথ থেকে গোমরাহ করেছে। | ٢٠ وَقَالُوْا رَبَّنَاۤ إِنَّاۤ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَّاءَنَا فَكُبَرَاءَنَا فَكُبَرَاءَنَا |
| ৬৮. হে আমাদের মালিক, ওদের তুমি (আজ) দ্বিগুণ পরিমাণ শান্তি দাও এবং তাদের ওপর বড়ো রকমের অভিশাপ পাঠাও। | ٢٨ رَبَّنَا التِهِر شِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُر لَعْنًا كَبِيْرًا ع |
| | |

৬৯. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা তাদের মতো হয়ো না যারা (অর্থহীন অপবাদ দিয়ে) মৃসাকে কষ্ট দিয়েছে, আল্লাহ তায়ালা তাকে সেসব কিছু থেকে নির্দোষ প্রমাণিত করলেন, যা তারা (তার বিরুদ্ধে) রটনা করেছে, সে ছিলো আল্লাহ তায়ালার দৃষ্টিতে বড়ো মর্যাদাবান ব্যক্তি;

٢٩ يَّايَّهَا الَّذِيثَ امَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيثَ أُذَوْا مُوْسَى فَبَرَّاهُ اللَّهُ مِيًّا قَالُوْا ﴿ وَكَانَ عِنْلَ اللَّهِ وَجِيْهًا ١

৭০. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো এবং (সর্বদা) সত্য কথা বলো,

٠٠ يَاَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَٰٰٰلِيْدُاً لا

৭১. (তাহলে) তিনি তোমাদের জীবনের কর্মকান্ড শুধরে দেবেন এবং তোমাদের গুনাহখাতা মাফ করে দেবেন; যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করবে, সে অবশ্যই এক মহাসাফল্য লাভ করবে।

١٠ يُّصْلِحُ لَكُرْ أَعْهَالَكُرْ وَيَغْفِرْ لَكُرْ ذُنُوْبَكُرْ م وَمَنْ يُطْعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَلْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا

৭২. অবশ্যই আমি (কোরআনের এ) আমানত (এক সময়) আসমানসমূহ, পৃথিবী ও পর্বতমালার সামনে পেশ করেছিলাম, তারা একে বহন করতে অস্বীকৃতি জ্ঞাপন করলো, সবাই এতে ভীত হয়ে গেলো, অবশেষে মানুষই তা বহন করে নিলো: নিসন্দেহে সে (মানুষ) একান্ত যালেম ও (এ আমানত বহন করার পরিণাম সম্পর্কে) একান্তই অজ্ঞ।

٤٢ إِنَّا عَرَضْنَا الْإَمَانَةَ عَلَى السَّهُونِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَآبَيْنَ أَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلُهَا الْإِنْسَانُ ﴿ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا لا

৭৩, আল্লাহ তায়ালা মোনাফেক পুরুষ, মোনাফেক নারী, মোশরেক পুরুষ, মোশরেক নারীদের (এ আমানতের দায়িত্বে অবহেলার জন্যে) কঠোর শান্তি দেবেন এবং মোমেন পুরুষ মোমেন নারীদের ওপর (আমানতের দায়িত্ব পালনে ভুল ক্রেটির জন্যে) ক্ষমাপরবশ হবেন: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা একান্ত ক্ষমাশীল ও পরম **দ**য়ान् ।

٢٢ لِّيُعَنِّبَ اللهُ الْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُنْفِقْسِ وَالْمَشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكْتِ وَيَتُوْبَ اللَّهُ عَلَى الْمَوْمِنِيْنَ وَالْمَوْمِنْتِ ، وَكَانَ اللَّهُ غَفُوْرًا رَحِيها ع

সুরা সাবা

মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৫৪ ৰুকু ৬ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

أَيَاتٌ : ٣٨ رَكُوْعَ : ٢ بِشْرِ اللهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْرِ

 সমন্ত প্रশংসা আল্লাহ তায়ালার জনো, (এ) اَلْحَيْلُ لِلَّهِ النَّذِي لَهُ مَا فِي السَّاوٰتِ وَمَا আকাশমন্তলী ও যমীনে (যেখানে) যা কিছু আছে সবই তাঁর একক মালিকানাধীন এবং পরকালেও সমস্ত প্রশংসা

فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْلُ فِي الْأَخِرَةِ ﴿ وَهُوَ

৩৪ সূরা সাবা

800

মন্যিল ৫

CC

হবে একমাত্র তাঁর জন্যে: তিনি সর্ববিষয়ে প্রজ্ঞাময়।

الْحَكِيْرُ الْخَبِيْرُ

২. তিনি জানেন যা কিছু যমীনের ভেতরে প্রবেশ করে, (আবার) যা কিছু তা থেকে উদগত হয়, যা কিছু আসমান থেকে বর্ষিত হয় এবং যা কিছু তাতে উত্থিত হয় (এর প্রতিটি বিষয় সম্পর্কেই তিনি পরিজ্ঞাত আছেন): তিনি পরম দয়ালু, পরম ক্ষমাশীল।

٢ يَعْلَرُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ﴿ وَهُوَ الرَّحِيْرُ الْغَفُوْرُ

৩. যারা (আল্লাহ তায়ালার এসব কুদরত) অস্বীকার করে তারা বলে, আমাদের ওপর কখনোই কেয়ামত আসবে ना; (र् नवी,) ष्र्मि (এरनत) वरना, आमात मानिरकत ह علير الفَيْبِ प علير الفَيْبِ मो; (र् नवी,) ष्र्मि (अरनत) वरना, आमात मानिरकत वर्णा, अमात मानिरकत वर्णा वर्ण কসম, হাা, অবশ্যই তা তোমাদের ওপর আপতিত হবে, (आমার মালিক) অুদৃশ্য (জগত) সম্পর্কে অবহিত, व لا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّوْتِ وَلا كَا يَعْرُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّوْتِ وَلا كَا يَعْرُبُ مِنْقَالً وَاللَّهِ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْقَالًا اللَّهُ عَنْهُ مِثْقَالًا اللَّهُ عَنْهُ مِثْقَالًا اللَّهُ عَنْهُ مِنْقَالًا اللَّهُ عَنْهُ مِنْقَالًا اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ مِنْقَالًا اللَّهُ عَنْهُ مِنْ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْ اللَّهُ عَنْهُ مِنْ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْ اللَّهُ عَنْهُ مِنْ السَّوْتِ وَلا يَعْرَبُ مِنْ اللَّهُ عَنْهُ مِنْ اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ مِنْ اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ عَالِهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَالِمُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى عَلَى عَلَيْهُ عَنْ عَلَى عَنْهُ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى عَنْهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ عَنْ عَنْهُ عَنْهُ عَلَى عَلَى عَنْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّعْمُ عَنْهُ عَلَى عَلْمُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّلْعَالِمُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّ আকাশমন্তলী ও যমীনের অণু পরমাণু – তার চাইতেও فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْفُرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ (अ्डानजीयात) وَفِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْفُرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ অগোচরে নয়. এমন কিছু নেই যা সুস্পষ্ট গ্রন্থে (লিপিবদ্ধ) নেই!

٣ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَأْتِيْنَا السَّاعَةُ . إلا في كتب مبين ولا

৪. যেন (এর ভিত্তিতে) তিনি তাদের পুরস্কার দিতে পারেন যারা ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে: (বস্তুত) তারাই হচ্ছে সে (সৌভাগ্যবান) মানুষ, যাদের জন্য আল্লাহ তায়ালার (প্রশন্ত) ক্ষমা ও সন্মানজনক জীবিকা রয়েছে।

٣ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ أَمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ ٱولَّنِكَ لَهُر مَّغْفِرَةً وَّرْزُقَ كَرِيرً

৫. যারা (এ যমীনে) প্রাধান্য পাবার জন্যে আমার আয়াতকে ব্যর্থ করে দেয়ার চেষ্টা করে, তাদের জ্বন্যে (পরকালে) ভয়ংকর মর্মন্তদ শান্তি রয়েছে।

٥ وَالَّذِيْنَ سَعُوْ فِي أَيْتِنَا مُعْجِزِيْنَ أُولَٰئِكَ لَمُرْعَنَ ابٌ مِنْ رِّجْزٍ ٱلِيُرِّ

৬. (হে নবী.) যাদের জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা জানে. তোমার মালিকের পক্ষ থেকে নাযিল হওয়া এ (কেতাব) একান্ত সত্য, এটি তাদের পরাক্রমশালী প্রশংসিত আল্লাহ তায়ালার (দিকেই) পথনির্দেশ করে।

٦ وَيَرَى الَّذِينَ ٱوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيُّ أَنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ لِا وَيَهْدِيْ إلى مراط العَزيْز الْعَيِيْلِ

৭. যারা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে তারা বলে (হে আমাদের সাথীরা), আমরা কি তোমাদের এমন এক ব্যক্তির সন্ধান দেবো যে তোমাদের কাছে বলবে, তোমরা (মৃত্যুর পর) যখন ছিনু বিচ্ছিনু হয়ে যাবে, তখন (পুনরায়) তোমরা নতুন সৃষ্টিরূপে উত্থিত হবে,

 وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مَلَ نَدُلُّكُمْ عَلَى رَجُلٍ يَّنَبِّنُكُرْ إِذَا مُزَّقْتُرْ كُلَّ مُبَرَّقٍ لا إِنَّكُرْ لَفِي مَلْقِ جَرِيْرٍ ع

৮. (আমরা জানি না) এ ব্যক্তি কি আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা অপবাদ দিচ্ছে, না তার সাথে কোনো উন্যাদনা রয়েছে; না, আসল ব্যাপার হচ্ছে, যারা আখেরাতের ওপর ঈমান আনে না, তারাই (সেখানকার) আযাব ও (দুনিয়ার) ঘোর গোমরাহীতে নিমঞ্জিত আছে।

٨ أَفْتَرُى عَلَى اللَّهِ كَنِبًا أَأْ بِهِ جِنَّةً ، بَل الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْأَخِرَةِ فِي الْعَلَاابِ وَالضَّالِ الْبَعِيْنِ

৯. তারা কি তাদের সামনে পেছনে যে আকাশ ও পথিবী রয়েছে তার দিকে তাকিয়ে (তাদের স্রষ্টাকে খুঁজে) দৈখে না? আমি চাইলে ভূমিকে তাদের সহ ধসিয়ে দিতে পারি. কিংবা পারি তাদের ওপর কোনো আকাশ খন্ডের পতন ঘটাতে: তাতে অবশ্যই এমন প্রতিটি বান্দার জন্যে কিছু নিদর্শন রয়েছে যারা একান্ডভাবে আল্লাহ তায়ালার অভিমুখী।

٩ ٱفَكَرْ يَرَوْا إِلَى مَا بَيْنَ ٱيْدِيْهِرْ وَمَا خَلْفَهُرْ مِّنَ السُّهَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ تَّشَأَ نَخْسَفُ بِهِ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقَطْ عَلَيْهِرْ كِسَفًا مِّنَ السَّهَاء ء إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْنِ مُّنيْبِع

মন্যিল ৫

১০. আমি (নবী) দাউদকে আমার কাছ থেকে (অনেকগুলো) অনুগ্রহ দান করেছিলাম: (এমনকি আমি পাহাড়কেও এই বলে আদেশ দিয়েছিলাম,) হে পর্বতমালা, তোমরাও তার সাথে আমার তাসবীহ পাঠ করো, (একই আদেশ আমি) পাখীকলকেও দিয়েছিলাম, আমি তার জন্যে লোহাকে নরম করে দিয়েছিলাম.

১১. (তাকে আমি বলেছিলাম, সে বিগলিত লোহা দ্বারা) তুমি পূর্ণ মাপের বর্ম তৈরী করো এবং সেগুলোর কড়াসমূহ যথাযথভাবে সংযুক্ত করো, (কিন্তু এ শিল্পগত

কলাকৌশলের পাশাপাশি) তোমরা তোমাদের নেক কাজও অব্যাহত রাখো; তোমরা যা কিছুই করো না কেন.

আমি তার সবকিছুই পর্যবেক্ষণ করি। ১২. এমনিভাবে আমি সোলায়মানের জন্যে বাতাসকে (তার) অনুগত বানিয়ে দিয়েছিলাম, তার প্রাতকালীন ভ্রমণ ছিলো এক মাসের পথ, আবার সান্ধ্যকালীন ভ্রমণও ছিলো এক মাসের পথ, আমি তার জ্বন্যে (গলিত) তামার একটি ঝর্ণা প্রবাহিত করেছিলাম: তার মালিকের অনুমতিক্রমে জিনদের কিছুসংখ্যক (কর্মী) তার সামনে

থেকে (তার জন্যে) কাজ করতো (আমি বলেছিলাম). তাদের মধ্য থেকে কেউ যদি আমার (ও আমার নবীর) আদেশ অমান্য করে, তাহলে তাকে আমি জুলন্ত আগুনের শান্তি আস্বাদন করাবো।

১৩. সে (সোলায়মান) যা কিছু চাইতো তারা (জ্বিনরা) তার জন্যে তাই তৈরী করে দিতো, (যেমন সুরম্য) প্রাসাদ, (নানা ধরনের) ছবি, (বড়ো বড়ো) পুরুরের ন্যায় থালা ও চুলার ওপর স্থাপন করার (জন্তু-জানোয়ারসহ সবার আতিথেয়তার উপযোগী) বৃহদাকারের ডেগ; আমি বলেছি. হে দাউদ পরিবারের লোকৈরা, তোমরা (আমার) শোকরস্বরূপ নেক কাজ করো; (আসলে) আমার বান্দাদের মাঝে খুব অল্প সংখ্যক মানুষই (তাদের

মালিকের) শোকর আদায় করে।

১৪. যখন আমি তার ওপর মৃত্যুর আদেশ জারি করলাম, তখন তাদের (জ্বিন ও মানুষ কর্মীবাহিনীর) কেউই বাইরের লোকদের তার মৃত্যুর খবর দেখায়নি, (দেখিয়েছে) কেবল একটি (ক্ষুদ্র) মাটির পোকা, যা (তখনো) তার লাঠিটি খেয়ে যাচ্ছিলো, (সোলায়মানের লাঠি পোকায়) খাওয়ায় যখন সে (মাটিতে) পড়ে গেলো, তখন (মাত্র) জ্বিনেরা বুঝতে পারলো (সোলায়মান আগেই মারা গেছে), তারা যদি (তখন) গায়বের বিষয় জানতো, তাহলে তাদের

(এতোকাল) লাঞ্ছনাদায়ক শান্তিতে থাকতে হতো না:

১৫. 'সাবা' (নগরের) অধিবাসীদের জ্বন্যে তাদের (স্বীয়) বাসভূমিতে আল্লাহর একটি কুদরতের নিদর্শন (মজুদ) ছিলো- দুই (সারি) উদ্যান, একটি ডান দিকে আরেকটি বাঁ দিকে, (আমি তাদের বলেছিলাম, এ থেকে পাওয়া) তোমাদের মালিকের দেয়া রেযেক খাও এবং (এ জন্যে) তোমরা তাঁর শোকর আদায় করো; (কতো) সুন্দর নগরী এটা! কতো ক্ষমাশীল (এ নগরীর) মালিক আল্লাহ তায়ালা।

১৬. (কিন্তু) পরে ওরা (আমার আদেশ) অমান্য করলো, ফলে আমি তাদের ওপর এক বাঁধভাংগা বন্যা প্রবাহিত

١١ أَنِ اعْمَلُ سُبِغْتِ وَقَدِيرٌ فِي السَّرْدِ وَاعْهَلُواْ صَالِحًا ء اتَّىْ بِهَا تَعْهَلُوْنَ بَصِيْرٌ

١٠ وَلَقَلَ إِنَّيْنَا دَاوَّدَ مِنَّا فَضُلًّا ، يُحِبَالُ

أَوِّبِيْ مَعَهُ وَالطَّيْرَ ء وَالنَّا لَهُ الْحَرِيْنَ لِا

١٢ وَلِسُلَيْهُمْ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاهُهَا شَهْرٌ ع وَاسَلْنَا لَهٌ عَيْنَ الْقِطْرِ ، وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَنَيْدٍ بِإِذْنِ رَبِّهِ ﴿ وَمَنْ يَّرْغَ مِنْهُرْعَنْ أَمْرِنَا نُنِقْهُ مِنْ عَلَابِ السَّعِيْر

١٣. يَعْمَلُوْنَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مُحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانِ كَالْجَوَابِ وَقُنُّوْر رِّسِيْتِ ﴿ إِعْمَلُواْ أَلَ دَاوَدَ شُكْرًا ﴿ وَقَلِيلٌ مِّنْ عبَادي الشُّكُورُ

١٣ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْهَوْسَ مَا دَلَّهُرْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَاتَهُ عَ فَلَهًّا غَرٌّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لُّوْ كَانُوْا يَعْلَهُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُواْ فِي الْعَلَابِ الْمُهِيْنِ ا

١٥ لَقَلْ كَانَ لِسَبَا فِي مَسْكَنِهِر أَيَدُ ج جَنَّتني عَنْ يَّٰهِيْنِ وَّشِهَالٍ لَّه كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَ اشْكُواْ لَهُ مَ بَكْنَةً طَيِّبَةً وَرَبِّ غَفُورً

١٦ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِـ سَيْلَ الْعَرِآ وَبَنَّ لَنُمُرُ بِجَنَّتَيْهِرُ جَنَّتَيْنَ ذَوَ اتَى أَكُلِ करत िनाम, जातनत त्र (त्रुकना) जेम्पान मु'टी। अमन

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াক্নুত |
|--|---|
| দুটো উদ্যান দ্বারা বদলে দিলাম, যাতে থেকে গেলো বিস্থাদ ফল, ঝাউগাছ এবং কিছু কুল (বৃক্ষ)। | خَبْطٍ وَ أَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّنْ سِنْ إِ قَلِيْلٍ |
| ১৭. এভাবে আমি তাদের শাস্তি দিয়েছিলাম, কেননা তারা (আমার নেয়ামূত) অস্বীকার ক্রেছে; আর আমি অকৃতজ্ঞ | المرتب جريتهر بها طروا ، وس تجرِي |
| বান্দা ছাড়া কাউকেই শাস্তি দেই না। | اِلَّا الْكَفُّورَ |
| ১৮. আমি তাদের (সাবা নগরীর অধিবাসীদের) সাথে সেসব জনপদের ওপরও বরকত দান করেছিলাম, উভয়ের মাঝে আরো কিছু দৃশ্যমান জনবসতি আমি স্থাপন করেছিলাম এবং তাতে আমি (সফরের) মনথিলও নির্ধারণ | ا الله المنطلقا بينهر وبين العرى التي |
| করে দিয়েছিলাম (তাদের আমি বলেছিলাম), তোমরা সেখানে (এবার) দিনে কিংবা রাতে নিরাপদে ভ্রমণ করো। | سِيْرُوْ الْفِيهَا لَيَالِي وَأَيَّامًا أُمِنِيْنَ |
| ১৯. কিন্তু তারা বললো, হে আমাদের মালিক, আমাদের সফরের মনযিলসমূহ তুমি দূরে দূরে স্থাপন করো, তারা | ١٩ نَقَالُوْا رَبَّنَا بِعِنْ بَيْنَ ٱسْفَارِنَا وَظَلَمُوْآ |
| নিজেদের ওপর যুলুম করলো, ফলে আমিও তাদের (শান্তি দিয়ে মানুষদের জন্যে) একটি কাহিনীর বিষয়ে | |
| পরিণত করে দিলাম, ওদের আমি ছিন্ন বিচ্ছিন্ন করে (তছনছ করে) দিলাম, এতে প্রত্যেকটি ধৈর্যশীল কৃতজ্ঞ বান্দার জন্যেই (শিক্ষণীয়) নিদর্শন রয়েছে। | مُمَزَّقٍ ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ مَبَّارٍ هَكُوْرٍ |
| ২০. ইবলীস তাদের (মোমেনদের) ব্যাপারে নিজ্ঞের ধারণা সত্য পেয়েছে, কেননা তারা তাঁরই আনুগত্য | ٢٠ وَلَقَنْ مَنَّ قَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيْسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوْهُ إِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْبُؤْمِنِيْنَ |
| করেছে, অবশ্য ঈমানদারদের একটি দল ছাড়া। | إِلَّا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ |
| ২১. (অথচ) তাদের ওপর শয়তানের তো কোনো রকম আধিপত্য ছিলো না (আসলে ঘটনাটি ছিলো), আমি জানতে চেয়েছিলাম তোমাদের মাঝে কে আখেরাতের ওপর ঈমান আনে, আর কে সে ব্যাপারে সন্দিহান; তোমার মালিক তো সবকিছুর ওপরই নেগাহবান! | ٢٦ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِرْ مِّنْ سُلْطٰي إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّوْمِن بِالْإِخِرَةِ مِثْن هُوَ مِنْهَا فِي شَكَةٍ مَ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مَفِيْةً ع |
| ২২. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা যাদের আল্লাহর বদলে শরীক মনে করো তাদের ডাকো, তারা (আসমানসমূহ ও যমীনের) এক অণু পরিমাণ কিছুরও | ٢٢ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُرْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ عَلَا يَهُلُونِ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّاوٰنِ |
| মালিক নয়, এ দুটো বানানোর ব্যাপারেও তাদের কোনো অংশ নেই, না তাঁর কোনো সাহায্যকারী রয়েছে। | وَكَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُرْ فِيُهِمَا مِنْ شِرَْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُرْ مِّنْ ظَهِيْرٍ |
| ২৩. (কেয়ামতের দিন) তাঁর সামনে কারো সুপারিশ কাজে আসবে না, অবশ্য তিনি যাকে অনুমতি দেবেন সে ব্যক্তি বাদে, এমনকি যখন তাদের অন্তর থেকে ভয় | ٣٣ وَلاَ تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْلَهَۚ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ﴿ حَتَّى إِذَا فُرِّعَ عَنْ قُلُوبِهِرْ قَالُوا مَاذَا لا |
| দ্রীভূত করে দেয়া হবে, তখন ফেরেশতারা (একে অপরকে) বলবে, কি ব্যাপার, সে বলবে, তোমাদের মালিক হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা। তারা বলবে (হাঁ তাই) সত্য, তিনি সমুক্ত, তিনি মহান। | ارر دگاو ۸ رو رو دور بهر گا |
| ২৪. (হে নবী,) তুমি জিজ্ঞেস করো, (তোমরাই) বলো, কে আছে তোমাদের আসমানসমূহ ও যমীন থেকে | ٢٣ قُلْ مَنْ يَرِزْقُكُمْ مِّنَ السَّبُوٰسِ وَالْأَرْضِ ا |
| রেযেক সরবরাহ করে; তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালা; (এখানে) আমরা কিংবা তোমরা, হয় আমরা উভয়ে | قُلِ اللهُ لا وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَٰى هُدَّى أَوْ |
| হেদায়াতের উপর আছি না হয় উভয়ে সুস্পষ্ট গোমরাহীর (মধ্যে) আছি ৷ | فِیْ مَلَٰلٍ مُّیِیْنِ |
| ৩৪ সূরা সাবা 💮 ৪৩৬ | মন্যিল ৫ |

| কোরআন | শরীফ | সহজ | সরল | বাংলা | অনুবাদ | |
|-------|------|-----|-----|-------|--------|--|
| | | | | | | |

পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত

২৫. তুমি (এদের আরো) বলো, আমরা যে অপরাধ করেছি সে সম্পর্কে তোমাদের কিছুই জিঞ্জেস করা হবে না, আবার তোমরা যা করে বেডাচ্ছো সে ব্যাপারেও আমাদের কোনো জবাবদিহি করতে হবে না।

٢٥ قُلُ ﴾ تُسْئَلُوْنَ عَمَّا آَجُرَمْنَا وَلَا نُسْئَلُ عَيًّا تَعْبَلُوْنَ

২৬. (এদের আরো) বলো, (কেয়ামতের দিন) আমাদের মালিক আমাদের (ও তোমাদের) সবাইকে (এক জায়গায়) জড়ো করবেন, অতপর তিনি আমাদের মধ্যে (হেদায়াত ও গোমরাহীর) যথার্থ ফয়সালা করে দেবেন: কেননা তিনিই হচ্ছেন শ্রেষ্ঠ বিচারক, প্রবল প্রজ্ঞাময়।

٢٦ قُلْ يَجْهَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُرَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ، وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْرُ

২৭. (হে নবী,) তুমি (আরো) বলো, তোমরা আমাকে সেসব কিছু দেখাও, যাদের তোমরা (আল্লাহ তায়ালার সাথে) শরীক বানিয়ে তাঁর সাথে মিলিয়ে রেখেছো, জেনে রেখো: তাঁর কোনো শরীক নেই, তিনি পরাক্রমশালী, তিনি কুশলী।

٢٠ قُلْ ٱرُوْنِيَ الَّذِيْنَ ٱلْحَقْتُمْ بِهِ شُوَكَّاءً كَلَّاء بَلْ مُوَ اللَّهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ

২৮. (হে নবী.) আমি তোমাকে সমগ্র মানব জাতির জন্যে (জানাতের) সুসংবাদদাতা ও (জাহান্লামের) সতর্ককারীরূপে পাঠিয়েছি, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই (তা) জানে না।

٢٨ وَمَا ۗ ٱرْسَلْنَكَ إِلَّا كَانَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرً وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِيَّ ٱ كُثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

٢٩ وَيَقُوْلُوْنَ مَتَى هَٰنَا الْوَعْلُ إِنْ كُنْتُرْ

২৯. তারা বলে (হে মুসলমানরা), যদি তোমরা সত্যবাদী হও তাহলে বলো, তোমাদের এ ওয়াদা কবে (বাস্তবায়িত) হবে।

٣٠ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْم لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ع

৩০. (হে নবী.) তুমি (এদের) বলো. তোমাদের জন্যে যে দিনের ওয়াদা করা হয়েছে তোমরা তার থেকে এক মুহূর্ত (যেমনি) পিছিয়ে থাকতে পারবে না, (তেমনি) তোমরা এক মুহূর্ত এগিয়েও আসতে পারবে না।

> ٣١ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تَّوْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْأُنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَنَيْدِ ، وَلَوْ تَرْي إِذِ الظُّلِمُّوْنَ مُوْقُوْفُوْنَ عِنْنَ رَبِهِم ﴿ يَحَالُهُ عَنْنَ مُ الْمِعْ الْحَالَةُ عَلَيْهِم بَعْضُهُرْ إِلَى بَعْضِ ۗ الْقَوْلَ ءِ يَقُوْلُ الَّذِيثَىَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُّوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ

৩১. কাফেররা বলে, আমরা কোনোদিনই এ কোরআনের ওপর ঈমান আনবো না এবং আগের কেতাবগুলোর ওপরও (ঈমান আনবো না, হে নবী, সেই ভয়াবহ দৃশ্য) যদি তুমি দেখতে পেতে, যখন যালেমদের তাদের মালিকের সামনে দাঁড় করানো হবে, তখন তারা একজন আরেকজনের ওপর (কথা) চাপাতে থাকবে, যাদের পদানত করে রাখা হয়েছিলো তারা (এ) প্রাধান্য বিস্তারকারীদের বলবে, যদি তোমরা (সেদিন) না থাকতে তাহলে অবশাই আমরা মোমেন থাকতাম!

> ٣٢ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَضْعِفُوْا أَنَحْنَ صَلَدُنكُرْ عَنِ الْهُلَى بَعْلَ إِذْ جَاءَكُم بَلْ كُنْتُم مُجْرِمِينَ

৩২. (এ কথার জবাবে) এ অহংকারী লোকেরা– যাদের দাবিয়ে রাখা হয়েছিলো তাদের বলবে, আমরা কি তোমাদের হেদায়াতের পথে না চলার জন্যে বাধ্য করেছিলামঃ (বিশেষ করে) যখন হেদায়াত তোমাদের কাছে পৌছে গিয়েছিলো, (আসলে) তোমরা নিজেরাই ছিলে না-ফরমান।

> ٣٣ وَقَالَ الَّّذِيثَيَ اشْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيثَيَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرٌ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَٱمُرُوْنَنَا ۗ أَنْ تَّكَفَّرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهَّ

৩৩. যাদের পদানত করে রাখা হয়েছিলো, এবার তারা অহংকারী নেতাদের বলবে (জবরদন্তি না হলেও তোমাদের) রাত দিনের চক্রান্ত (নাফরমানী করতে) আমাদের বাধ্য করেছিলো, (বিশেষ করে) যখন তোমরা আমাদের আদেশ দিতে, যেন আমরা আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করি এবং অন্যদের তাঁর সমকক্ষ দাঁড করাই: विजात वाक अन्तरक अियुक कर्ता कर्ता । وَأَسَرُّوا النَّنَامَةَ لَهَا رَأُوا العَلَيْ (এভাবে একে अन्तरक अियुक कर्ता कर्ता विवास कर्ता विवास
৩৪ সরা সাবা

809

মনযিল ৫

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত |
|---|--|
| তারা (তাদের চোখের সামনেই) আযাব দেখতে পাবে; তখন তারা মনে মনে ভীষ্ণ অনুতাপ করতে থাকবে; | الْعَنَابَ ﴿ وَجَعَلْنَا الْإَغْلُلَ فِي ٓ اَعْنَاقِ |
| সেদিন যারা (আমাকে) অস্বীকার করেছে আমি তাদের গলদেশে শেকল পরিয়ে দেবো; (তুমিই বলো,) স্বীয় | الَّذِيْنَ كَفَرُوا ﴿ مَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا |
| কৃতকর্মের জন্যে এদের এর চাইতে ভালো কোনো বিনিময় কি দেয়া যেতোঃ | يُعْبُلُونَ |
| ৩৪. (কথনো এমন হয়নি,) আমি কোনো জ্বনপদে (জ্বাহান্নামের) সতর্ককারী (-রূপে কোনো নবী) পাঠিয়েছি, অথচ তাদের বিত্তশালী লোকেরা একথা বলেনি, তোমাদের যে পয়গাম দিয়ে পাঠানো হয়েছে– আমরা তা অস্বীকার করি। | ٣٣ وَمَا ۗ اَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن ْتَّلِيْدٍ إِلَّا قَالَ مُثْرَ فُوْهَا لَا إِنَّا بِهَا ۗ اُرْسِلْتُرُ بِهِ كُفِرُوْنَ |
| ৩৫. তারা আরো বলেছে, আমরা (এ দুনিরায়) ধনে জনে (তোমাদের চাইতে) সমৃদ্ধশালী এবং (পরকালে) আমাদের কখনোই আযাব দেয়া হবে না। | ٣٥ وَقَالُوْا نَحْنُ اَ كُثَرُ اَمُوَالًا وَّاَوْلَادًا لا وَّمَا نَحْنُ بِهَعَلَّ بِيْنَ |
| ৩৬. (হে নবী,) তুমি বলো, আমার মালিক যাকে ইচ্ছা করেন তার রেযেক প্রশস্ত করে দেন, (যাকে ইচ্ছা) সংকুচিত | ٣٦ قُلُ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ |
| করে দেন, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই (এটা) বুঝে না। | وَيَقْدِرُ وَلَٰكِيَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ع |
| ৩৭. (হে মানুষ,) তোমাদের ধন সম্পদ, তোমাদের সন্তান-সন্ততি এমন (কোনো বিষয়) নয় যে, এওলো | ٣٠ وَمَ آ اَمْوَالُكُر وَكَ آوُكَادُكُر بِالَّتِي |
| তোমাদের আমার নৈকট্য লাভ করতে সহায়ক হবে, তবে যে ব্যক্তি ঈমান এনেছে এবং (সে অনুযায়ী) নেক কাচ্চ করেছে (সেই এ নৈকট্য লাভ করতে পারবে), এ ধরনের | تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَى إِلَّا مَنْ أَمَنَ وَعَمِلَ |
| লোকদের জন্যেই (কেয়ামতে) দ্বিশুণ পুরন্ধারের ব্যবস্থা রয়েছে, তারা জান্নাতের (সুরম্য) বালাখানায় নিরাপদে | صَالِحًا رَفَاُولَيْكَ لَهُرْ مَزَاءُ الضَّفْفِ بِهَا عَمِلُوا وَمُرْنِي الْقُرُفْسِ أَمِنُوْنَ |
| অবস্থান করবে, কেননা তারা নেক আমল করেছে। | |
| ৩৮. যারা আমার আয়াতকে (নানা কৌশলে) ব্যর্থ করে দিতে চেয়েছে, তারা হামেশাই আযাবে পড়ে থাকবে। | ٣٨ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيَ الْيَّنِا مُعْجِزِيْنَ الْعَجِزِيْنَ الْعَلَامِ مُحْفَرُوْنَ الْعَذَابِ مُحْفَرُوْنَ |
| | |
| ৩৯. (হে নবী,) তুমি বলো, আমার মালিক তাঁর বান্দাদের মাঝে যার প্রতি ইচ্ছা করেন তার রেযেক বাড়িয়ে দেন, | ٣٩ قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَبْسُمُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ |
| (আবার যার প্রতি ইচ্ছা) তার জন্যে (তা) সংকুচিত করে দেন; তোমরা যা কিছু (আল্লাহর পথে) খরচ করবে, তিনি (তোমাদের অবশ্যই) তার প্রতিদান দেবেন, (কেননা) | عِبَادِةِ وَيَقْنِرُ لَهُ ﴿ وَمَ ۖ أَنْفَقْتُر مِنْ شَيْءٍ نَهُو |
| তিনিই হচ্ছেন সর্বোন্তম রেযেকদাতা। | يُخْلِفُهُ } وَهُوَ غَيْرُ الرِّزقِيْنَ |
| ৪০. যেদিন তিনি এদের সকলকে (হাশরের ময়দানে) একত্রিত করবেন, অতপর ফেরেশতাদের উদ্দেশ করে | ٣٠ وَيَوْمُ يَحْشُرُهُمْ جَهِيْعًا ثُمَّ يَقُولُ |
| তিনি বলবেন, এ (মানুষ)-রা কি (দুনিয়াতে) ভধু তোমাদেরই এবাদাত করতো? | لِلْمَلْنِكَةِ اَهُولَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ |
| ৪১. ফেরেশতারা বলবে (হে আমাদের মালিক), তুমি মহান, তাদের বদলে তুমিই আমাদের অভিভাবক, ওরা | ا مَا قَالُوا سُبْطُنَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِرْ عَلَيْنَا مِنْ دُونِهِرْ عَ |
| তো বরং জ্ব্নিদের এবাদাত করতো এবং এদের অধিকাংশ তাদের ওপর বিশ্বাসও করতো। | بَلْ كَانُوْا يَعْبُكُونَ الْجِنَّ عَ أَكْثَرُهُمْ يَهِرُ عَلَى الْجَنَّ عَ أَكْثَرُهُمْ يَهِرُ عَلَيْ |
| ৪২. আজ তোমাদের একে অন্যের উপকার কিংবা | ٣٢ فَالْيَوْمُ لَا يَهْلِكُ بَعْضُكُرْ لِبَعْضِ تَّفْعًا |
| অপকার কোনো কিছুই করার ক্ষমতা নেই; যালেমদের আমি (আরো) বলবো, যে আগুনের আযাব তোমরা | وْلَا ضَرًّا ﴿ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا نُوتُوا |
| অস্বীকার করতে, আজ তারই ম জা উপভোগ করো । | عَنَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُرُ بِهَا تُكَنِّبُونَ |

806

মন্যিল ৫

৩৪ সূরা সাবা

| কোরআন স | শসীস | | ਚਕਕ | वाक्या | waats |
|----------|-------|-----|----------|--------|----------|
| ८५१५ जान | 71717 | শহজ | ત્રાસાના | 415011 | ञ्जन्यान |

পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত

৪৩. যখন এদের কাছে আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হয় তখন তারা বলে এ বান্ধি (আমাদের মতো) একজন মানুষ বৈ কিছু নয়, তোমাদের পর্বপরুষরা যাদের এবাদাত করতো, তা থেকে সে তোমাদের ফিরিয়ে রাখতে চায় এবং (কোরআন সম্পর্কে) তারা বলতো, এটা তো মনগড়া মিথ্যা ছাড়া আর কিছই নয়. আর এ কাফেরদের কাছে যখনই কোনো সত্য এসে হাযির হয় তখনই তারা বলে, এ হচ্ছে এক সুস্পষ্ট যাদু।

٣٣ وَإِذَا تُتْلَى عَلَيْهِرْ أَيْتُنَا بَيِّنْتِ قَالُوْا مَا هٰٰذَا إِلَّا رَجُلُّ يُرِيْدُ أَنْ يَصُّكُرُ عَمًّا كَانَ يَعْبُلُ الْأَوْكُورَ عِ وَقَالُواْ مَا هَٰلَ الَّا افْكَ مُّفْتَرِّي ۚ وَقَالَ الَّذِيثَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ لا إِنْ هَٰلَ ۚ إِلَّا سِحْرٌ مَّبِينَ

88. অথচ আমি এদের কখনো কোনো (আসমানী) কেতাব দেইনি যা তারা পড়তে (পড়াতে) পারে, না আমি তোমার আগে এদের কাছে অন্য কোনো সতর্ককারী পাঠিয়েছি:

٣٣ وَمَا ۚ أَتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَّـنَّرُسُوْنَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ تَّنِيْرِ ا

৪৫. এদের আগের লোকেরাও (নবীদের) মিথ্যা প্রতিপন করেছিলো, (অথচ) আমি তাদের যা কিছু দান করেছিলাম তার এক দশমাংশ পর্যন্তও এরা পৌছতে পারেনি, অতপর (যখন) তারা আমার নবীদের অস্বীকার করেছে, (তখন তুমিও দেখেছো) আমার আযাব কতো ভয়ংকর ছিলো!

٣٥ وَكَنَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِ ۚ وَمَا بِلَغُوْا مِعْشَارَ مَا التَيْنَاهُرْ فَكَنَّابُوا رُسُلِي عَا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرٍ ع

৪৬. (হে নবী.) তুমি (এদের) বলো (এসো), আমি তোমাদের শুধু একটি কথাই উপদেশ দিলি তা হলে তোমরা আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (সত্যের ওপর) দাঁড়িয়ে যাও, দু'দুজন করে, (দুজন না হলে) একা একা, অতপর ভালো করে চিন্তা করে দেখো, তোমাদের সাধী (মোহাম্মদ) কোনো বকম পাগল নয়; সে তো হচ্ছে তোমাদের জন্যে আসনু ভয়াবহ আযাবের একজন সতর্ককারী মাত্র।

٣٦ قُلْ النَّهَا أَعظُكُر بِوَامِنَةٍ عَ أَنْ تَقُوْمُواْ لِلَّهِ مَثْنَى وَفُرَادَى ثُرَّ تَتَفَكَّرُوا سَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ﴿ إِنْ هُوَ إِلَّا نَنْ يُرُّ لَّكُمْ ۗ بَيْنَ يَلَى عَنَابٍ شَرِيْلِ

৪৭. (হে নবী.) তুমি বলো, আমি তো তোমাদের কাছে (হেদায়াত পৌছাবার জন্য) কোনো পারিশ্রমিক দাবী नेर्देश وَهُو عَلَى كُلِّ شَيْء وَهُو عَلَى كُلِّ شَيْء कितिन, ततर व कोराजत या किन्गान जारजा राजामतत्त्र وَهُو عَلَى كُلِّ شَيْء জন্য, আমার পাওনা তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই. তিনি (মানুষের) প্রতিটি বিষয়ের ওপর**ই** সাক্ষী।

٣٠ قُلْ مَا سَٱلْتُكُر مِنْ آجْرٍ فَهُوَ لَكُر ، إِنْ

৪৮. তুমি (আরো) বলো, আমার মালিক সত্য দিয়ে বাতিলকে চূর্ণ বিচূর্ণ করেন, যাবতীয় অদৃশ্য বিষয়ে তিনি পবিজ্ঞাত ।

٣٨ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِنُ بِالْحَقِّ ۽ عَلَّامُ الغيوب

৪৯. তুমি বলো, সত্য এসে গেছে (বাতিল নির্মূল হয়ে গেছে), এর না (আর কখনো) সূচনা হবে আর না হবে পুনরাবৃত্তি।

٣٩ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا

৫০. (হে নবী.) এদের বলে দাও. আমি যদি (সত্য পথ থেকে) বিচ্যুত হয়ে যাই, তাহলে আমার এ বিচ্যুতির পরিণাম আমার ওপরই বর্তাবে, আর যদি আমি হেদায়াতের ওপর থাকি তবে তা তথু এ জন্যে যে, আল্লাহ তায়ালা সব কিছ শোনেন এবং (সবার) একান্ত নিকটে অবস্থান করছেন।

٥٠ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَاتَّهَا ۖ أَضِلُّ عَلَى نَفْسَى عَ وَإِنِ اهْتَنَيْثُ فَبِهَا يُوْمِيْ إِلَىَّ رَبِّيْ ﴿ إِنَّهُ

৫১. হে নবী, যদি তুমি (সেদিনটি) দেখতে পেতে, যখন এরা ভীতবিহ্বল হয়ে ঘুরতে থাকবে এবং তাদের জন্যে পার্বানোর পথ থাকবে না এবং একান্ত কাছ থেকেই তাদের পাকডাও করা হবে.

٥١ وَلَوْ تَرَّى إِذْ نَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَٱلْحِنُّوْا مِنْ مُكَانٍ قَرِيْبِ لا

৩৪ সুরা সাবা

808

মন্যিল ৫

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত |
|--|---|
| ৫২. (এ সময়) তারা বলতে থাকবে (হাা), আমরা তাঁর ওপর ঈমান আনলাম, কিন্তু এখন (এতো) দূর থেকে (ঈমানের) নাগাল তারা (কিভাবে) পাবেং | ٥٢ وَّ قَالُوْ آ أَمَنَّا بِهِ } وَأَنَّى لَهُرُ النَّنَاوُشُ |
| (अमाराज) नागान जात्रा (विकास) नास्तर | مِنْ مُكَانٍ بَعِيْدٍ عل |
| ৫৩. অথচ এরাই ইতিপূর্বে তাঁকে অস্বীকার করেছে, দূর থেকে (ভালো করে) না দেখে (অনুমানের ভিত্তিতেই) | ٥٣ وَّقَنْ كَفَرُوْا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۽ وَيَقْنِونُونَ |
| কথা বলছে। | بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ |
| ৫৪. (আজ) তাদের মাঝে ও (জান্নাত সম্পর্কিত) তাদের কামনা-বাসনার মাঝে একটি (অপ্রতিরোধ্য) দেয়াল (দাঁড় | ۵۴ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَهَا |
| করিয়ে) দেয়া হবে, যেমনি করা হয়েছিলো তাদের | فُعِلَ بِاَشْيَاعِمِر مِّنْ قَبْلُ و إِنَّمُر كَانُوا فِي |
| পূর্ববর্তী (মোশরেক) সাধীদের বেলায়, (মূলত) ওরা সবাই বিদ্রান্তিকর সন্দেহে সন্দিহান ছিলো। | هُكَ مُرِيبٍ ع |
| সূরা ফাতের | سُوْرَةٌ فَاطِرٍ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৪৫ ৰুকু ৫ | أَيَاتًا : ٣٥ رُكُوْعً : ٥ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمِ |
| সব তারীফ আল্পাহ তায়ালার জন্যে, যিনি আসমানসমূহ ও যমীনের সৃষ্টিকর্তা, যিনি (স্বীয়) | ا ٱلْعَمْنُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّبُوٰسِ وَالْأَرْضِ |
| বাণীবাহক (ফেরেশতা)-দের সৃষ্টিকর্তা, (যারা) দু'দুই, তিন তিন ও চার চার পাখাবিশিষ্ট (শক্তির প্রতীক); তিনি | جَاعِلِ الْمَلَّائِكَةِ رُسُلًا ٱولِيَّ ٱجْنِحَةٍ مُّقْنَى |
| চাইলে (এ) সৃষ্টির মাঝে (তাদের ক্ষমতা) আরো বাড়িয়ে দিতে পারেন; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব বিষয়ের ওপর | وَثُلْهَ وَرُبْعَ ، يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ، |
| नर्द्य क्रमणांत्र मानिक। | إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ |
| ২. তিনি মানুষের জন্যে কোনো অনুগ্রহের পথ খুলতে চাইলে কেউই তার (সে) পথরোধকারী নেই, (আবার) | مَ يَفْتَعِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْهَةٍ فَلَا |
| তিনি যা কিছু বন্ধ করে রাখেন তারপর তা কেউই তার জন্যে (পুনরায়) পাঠাতে পারে না, তিনি মহাপরাক্রমশালী, | مُهْسِكَ لَهَا عَ وَمَا يُهْسِكَ لا فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنَ |
| প্রবল প্রজ্ঞাময়। | بَعْنِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ |
| ৩. হে মানুষ, তোমরা তোমাদের ওপর আল্লাহ তায়ালার নেয়ামতসমূহের কথা স্বরণ করো; আল্লাহ তায়ালা ছাড়া | ٣ يَاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ، |
| কি তোমাদের আর কোনো স্রষ্টা আছে যে তোমাদের | هَلْ مِنْ عَالِقٍ غَيْرُ اللهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ |
| আসমান ও যমীন থেকে রেযেক সরবরাহ করে; তিনি ছাড়া (তোমাদের) আর কোনোই মাবুদ নেই, তারপরও তোমরা কোথায় কোথায় ঠোকর খাচ্ছো? | وَالْأَرْضِ ۚ لَآ إِلَّهُ إِلَّا هُوَ ﴿ فَٱنَّى تُؤْفَكُونَ |
| (হে নবী,) যদি এরা তোমাকে মিপ্যা প্রতিপন্ন করে (তাহলে উদ্বিপ্ন হয়ো না, কেননা), তোমার আগেও | مُ وَإِنْ يُكُنِّبُوكَ فَقَلْ كُنْيِّبَتُ رُسُلٌّ مِّنْ |
| বিদের (এভাবে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করা হয়েছিলো; আর সব কিছু তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই প্রত্যাবর্তিত হবে। | قَبْلِكَ ، وَإِلَى اللهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ |

নবীদের (এভাবে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করা হয়েছিলো; আর সব কিছু তো আল্লাহ তায়ালার কাছেই প্রত্যাবর্তিত হবে। ৫. दि मान्स, (আখেরাত সম্পর্কিত) আল্লাহ তায়ালার عَنَا النَّاسُ إِنَّ وَعَنَ اللَّهِ مَقَ فَلَا عَلَيْهَا النَّاسُ إِنَّ وَعَنَ اللَّهِ مَقَ فَلَا عَلَيْهَا النَّاسُ إِنَّ وَعَنَ اللَّهِ مَقَ فَلَا عَلَيْهَا النَّاسُ إِنَّ وَعَنَ اللَّهِ مَقَ فَلَا

تَغُرِّنَّكُرُ الْحَيْوةُ النَّائِيَا وبند وَلَا يَغُرِّنَّكُرُ الْحَيْوةُ النَّائِيَا وبند وَلَا يَغُرِّنَّكُرُ الْحَيْوةُ النَّائِيَا وبند ولَا يَغُرِّنَّكُرُ الْحَيْوةُ النَّائِيَا وبند ولا يعتبر المالية المالي কোনো প্রতারক যেন তোমাদের আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে কখনো ধোকায় ফেলতে না পারে (সে বিষয়ে বিশেষ সতর্ক থাকবে)।

بِاللَّهِ الْغَرُوْرُ

৩৫ সূরা ফাতের

মন্যিল ৫

পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত

৬. শয়তান হচ্ছে তোমাদের শক্ত্র, অতএব তোমরা তাকে শক্র হিসেবেই গ্রহণ করো: সে তার দলবলদের এ জন্যেই আহ্বান করে যেন তারা (তার আনুগত্য করে) জাহানামের বাসিন্দা হয়ে যেতে পারে:

ا إِنَّ الشَّيْطِيَّ لَكُرْ عَنُوًّ فَاتَّخِنُوهُ عَنُوا ١ عَنُوا ١ إِنَّهَا يَنْعُوا حِزْبَهَ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحُبِ السعيره

৭. যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করে তাদের জন্যে এক কঠিন শাস্তি রয়েছে, (অপরদিকে) যারা (তাঁর ওপর) وَالَّانِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلَحَ سَ لَهُر अभान जात्न बदर छाला कोक करत, छात्नत करना तराह أُوالَّانِينَ (তোমার মালিকের) ক্ষমা ও মহান প্রতিদান।

٤ ٱلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَنَابٌ شَرِيْنٌ لَا مَّغْفُرَةً وْأَجْرُ كَبِيْرٍ ع

৮. অতপর সে ব্যক্তি– যার খারাপ কর্মকান্ড (তার চোখের সামনে) শোভন করে রাখা হয়েছে, সে অবশ্য তাকে উত্তম (কাজ) হিসেবেই দেখতে পায়: নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা যাকে চান (তাকে) গোমরাহ করেন, আবার যাকে চান (তাকে) তিনি হেদায়াত দান করেন, তাই (হে নবী.) তাদের ওপর আক্ষেপ করতে গিয়ে (দেখো,) তোমার জীবন যেন বিনষ্ট হয়ে না যায় (তুমি ধৈর্য ধারণ করো. কেননা): ওরা যা কিছু করছে আল্লাহ তায়ালা তা ভালো করেই জানেন।

٨ أَفَهَنَ ذِينَ لَهُ سُوءً عَهَلِهِ فَوَ أَهُ حَسَنًا ١ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ﴿ فَلَا تَنْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِر حَسَرُتِ م إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهُ بِهَا يَصْنَعُونَ

৯. আল্লাহ তায়ালাই সেই মহান সন্তা, যিনি (তোমাদের জন্যে) বায়ু প্রেরণ করেন, অতপর তা মেঘমালাকে উড়িয়ে নিয়ে যায়, পরে তা আমি (এক) নির্ম্পাব ভূখন্ডের দিকে নিয়ে যাই, এরপর (এক পর্যায়ে) তা দিয়ে যমীনকে তার নির্জীব হওয়ার পর পুনরায় আমি জীবস্ত করে তুলি: ঠিক এভাবেই (একদিন মানুষেরও) পুনরুখান (হবে)।

٩ وَاللَّهُ الَّذِيُّ آرْسَلَ الرِّيْحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنَهُ إِلَى بَلَكِ مَّيِّتِ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْإَرْضَ بَعْنَ مَوْتِهَا ، كَنْ لِكَ النَّهُوْرُ

১০. (অতএব) যদি কেউ মান মর্যাদা কামনা করে (তার জানা উচিত), যাবতীয় মান মর্যাদা একমাত্র আপ্রাহ তায়ালার জন্যেই: তাঁর দিকে তথু পবিত্র বাক্যই উঠে আসতে পারে, আর নেক কাজই তা (উচ্চাসনে) ওঠায়: যারা (সত্যের বিরুদ্ধে) নানা ধরনের মন্দ কাজের ফন্দি আঁটে, তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর আযাব: তাদের সব চক্রান্ত চূড়ান্তভাবে ব্যর্থ হবে।

١٠ مَنْ كَانَ يُرِيْلُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَهِيْعًا ١٠ إِلَيْهِ يَصْعَلُ الْكَلِيرُ الطَّيِّبُ وَالْعَهَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ، وَالَّذِينَ يَهْكُرُونَ السَّيَّاسِ لَمُرْعَنَابٌ شَرِيْنٌ ، وَمَكْرُ أُولَٰ لِكَ مُو يَبُورُ

১১ আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের মাটি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর একবিন্দু শুক্র থেকে (তিনি জীবনের সূত্রপাত ঘটিয়েছেন), এরপর তোমাদের তিনি (নর নারীর) জোড় বানিয়েছেন: (এখানে) কোনো নারীই গর্ভবতী হয় না এবং সে কোনো সম্ভানও প্রসব করে না. যার জ্ঞান আল্লাহ তায়ালার কাছে (পূর্বাহ্রেই মজুদ) থাকে না; (আবার) কারো বয়স একটু বাড়ানো হয় না এবং একটু কমানোও হয় না, যা কোনো গ্রন্থে (সংরক্ষিত) নেই: নিসন্দেহে এটা আল্লাহ তায়ালার জ্বন্যে নিতান্ত সহজ ব্যাপার।

١١ وَاللَّهُ خَلَقَكُرْ مِّنْ تُوَابٍ ثُرَّ مِنْ تُطْفَةٍ ثُرٌّ جَعَلَكُمْ ۚ أَزْوَاجًا ﴿ وَمَا تَصْمِلُ مِنْ أَنْثُى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ﴿ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّر وَّلَا يَنْقَسُ مِنْ عُمُرِةٍ إِلَّا فِيْ كِتْبِ ، إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرُ

১২. দুটো (পানির) সমুদ্র এক সমান নয়, একটির পানি সুমিষ্ট ও সুপেয়, অন্যটি হচ্ছে লোনা ও বিস্বাদ: তোমরা (এর) প্রত্যেকটি থেকেই (মাছ শিকার করে তার) তাজা গোশত আহার করো এবং (মুক্তার) অলংকার বের করে আনো এবং তোমরা আরও দেখতে পাও কিভাবে সেখানে

١٢ وَمَا يَسْتَوى الْبَحْرِٰنِ لَهُ مَٰنَ ا عَنَابً فُوَاتُ سَأَلِعٌ شَوَابُهُ وَهٰنَا مِلْحٌ أَجَاجٌ ، وَمِنْ كُلِّ تَٱكْلُوْنَ لَحُمًّا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً

৩৫ সুরা ফাতের

883

মন্যিল ৫

৫৬

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত |
|---|---|
| জলযানসমূহ পানি চিরে চলাচল করে, যাতে করে তোমরা আল্লাহ তায়ালার দেয়া রেযেক অনুসন্ধান করতে পারো এবং যাতে করে (তাঁর প্রতি) তোমরা কৃতজ্ঞতা আদায় | تَلْبَسُوْنَهَا ج وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ |
| করতে পারো। ১৩. তিনিই রাতকে দিনের ভেতর এবং দিনকে রাতের | ا يُولِعُ النَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِعُ النَّهَارَ |
| ভেতর প্রবেশ করান, তিনি সূর্য ও চন্দ্রকে নিয়ন্ত্রিত করেন, এরা সবাই এক সুনির্দিষ্টকাল পর্যন্ত আবর্তন করবে; | فِي النَّيْلِ لا وَسَخَّرَ الشَّهْسَ وَالْقَهَرَا لِ كُلُّ |
| আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন তোমাদের সবার মালিক, সার্বভৌমত্ব তাঁর জন্যেই, তাঁকে বাদ দিয়ে তোমরা অন্য | يَجْرِي لِأَجَلِ شُمَى الْذَلِكُرُ اللهُ رَبُّكُمْ لَهُ |
| যেসব (মাবুদ)-কে ডাকো তারা তো তুচ্ছ একটি (খেজুরের) আঁটির বাইরের ঝিল্লিটির মালিকও নয়। | الْمُلْكُ ، وَالَّذِيْنَ تَنْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ مَا يَهْلِكُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ مَا يَهْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ، |
| ১৪. যদি তোমরা তাদের ডাকো−(প্রথমত) তারা তো ভনবেই না, যদি তারা তা শোনেও তবে তারা তোমাদের ডাকের কোনো উত্তর দেবে না; (উপরস্তু) কেয়ামতের | ١٢ إِنْ تَنْعُوْمُرْ لَا يَسْهَعُوْا دُعَاءَكُرْ ج وَلُوْ سَبِعُوْا مَاسْتَجَابُوْا لَكُرْ ء وَيَوْمَ الْقِيْهَةِ |
| দিন তারা (নিজেরাই) তোমাদের এ শেরেক (-এর ঘটনা) অস্বীকার করবে; (এ সম্পর্কে) একমাত্র সুবিজ্ঞ আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কেউই তোমাকে কিছু অবহিত করতে | يَكُفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ﴿ وَلَا يُنَبِّنُكَ عَمْلُ مَثْلُ اللهِ مِثْلُ اللهِ مِثْلُ اللهِ مِثْلُ اللهِ مَثِيرُ ع |
| পারবে না। ১৫. হে মানুষ, তোমরা সবাই আল্লাহ তায়ালার সামনে | اللهِ عَلَيْهُ النَّاسُ أَنْتُرُ الْفُقَرَآءُ إِلَى اللَّهِ عَ |
| অভাবগ্রস্ত, আর আল্লাহ তায়ালা সম্পূর্ণ অভাবমুক্ত, (যাবতীয়) প্রশংসার মালিক। | وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْكُ |
| ১৬. তিনি যদি চান তাহলে (দুনিয়ার বুক থেকে) তোমাদের (ওঠিয়ে) নিয়ে যেতে পারেন এবং তোমাদের জায়গায় নতুন এক সৃষ্টিকেও তিনি নিয়ে আসতে পারেন, | ١٦ إِنْ يَّشَا يُنْهِبْكُرْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَرِيْرٍ ع |
| ১৭. আর এ (কাজ)-টি আল্লাহ তায়ালার জন্যে মোটেই কঠিন নয়। | ١٤ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّهِ بِعَزِيْزٍ |
| ১৮. (কেয়ামতের দিন) কেউ কারো (গুনাহের) বোঝা বইবে না, কোনো ব্যক্তির ওপর (গুনাহের) বোঝা ভারী হলে সে যদি (অন্য কাউকে) তা বইবার জন্যে ডাকে, | ١٨ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةً وِّزْرَ أُخْرِى ، وَإِنْ تَنْعُ مُثَقَلَةً إِلَى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلُ مِنْهُ شَيْءً وَّلُوْ |
| তাহলে তার কাছ থেকে বিন্দুমাত্রও তা সরানো হবে না, (যাকে সে ডাকলো−) সে (তার) নিকটাত্মীয় হলেও নয়; | متقلة إلى حمِلِها لا يحمل مِنه شيء ولو كَانَ ذَا قُرْبِٰي م إِنَّهَا تُنْذِرُ الَّذِيثَ يَخْشُوْنَ |
| (হে নবী,) তুমি তো কেবল সে লোকদেরই (জাহান্নাম থেকে) সাবধান করতে পারো যারা না দেখেই তাদের মালিককে ভয় করে, (উপরম্ভু) যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে; | رَبُّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلُوةَ ، وَمَن تَزَكَّى |
| কেউ নিজের পরিশুদ্ধি সাধন করতে চাইলে সে তা করবে সম্পূর্ণ তার (নিজস্ব কল্যাণের) জন্যে; চূড়ান্ত প্রত্যাবর্তন তো আল্লাহ তায়ালার দিকেই হবে। | فَانَّهَا يَتَزَكَّى لِنَفْسِهِ ﴿ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيْرُ |
| ১৯. একজন চক্ষুম্বান ব্যক্তি ও একজন অন্ধ ব্যক্তি কখনো সমান হতে পারে না– | 19 وَمَا يَسْتَوِى الْأَعْلَى وَالْبَصِيْرُ لا |
| ২০. না (কখনো) আঁধার ও আলো (সমান হতে পারে), | ٢٠ وَلَا الظُّلُهٰ وَلَا النُّورُ لا |
| ২১. ছায়া এবং রোদও (তো সমান) নয়, | ٢١ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ع |
| ২২. (একইভাবে) একজন জীবিত মানুষ এবং একজন মৃত মানুষও সমান নয়; আল্লাহ তায়ালা যাকে ইচ্ছা তাকে | ٢٢ وَمَا يَسْتَوِى الْإَهْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ، |
| ৩৫ সূরা ফাতের | মন্যিল ৫ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত |
|---|--|---|
| | (ভালো কথা) শোনান, তুমি কখনো এমন মানুষদের কিছু শোনাতে পারবে না যারা কবরের অধিবাসী (হওয়ার | إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ } وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ |
| | মতো ভান করে)। | اللهُ مِنْ فِي الْقُبُورِ |
| | ২৩. (আসলে) তুমি তো (জাহান্নামের) একজন সতর্ককারী বৈ আর কিছুই নও। | ٢٣ إِنْ آنْتَ إِلَّا نَلْإِيْرً |
| | ২৪. অবশ্যই আমি তোমাকে সত্য (দ্বীন)-সহ একজন সুসংবাদদাতা ও (ধ্বাহামের) সতর্ককারীরূপেই পাঠিয়েছি; কখনো কোনো উম্মত এমন ছিলো না, যার জন্যে কোনো | ٢٢ إِنَّا ٱرْسَلْنَكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَفِيْرًا ﴿ |
| | (না কোনো একজন) সতর্ককারী অতিবাহিত হয়নি! | وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا هَلَا فِيْهَا نَنْ ِيْرَّ |
| | ২৫. এরা যদি তোমাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করে তবে (এর জন্যে তুমি উৎকষ্ঠিত হয়ো না,) এদের আগের লোকেরাও | ٢٥ وَإِنْ يُكُنِّبُوكَ فَقَنْ كُنَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ |
| | (নবীদের) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো, যদিও তাদের নবীরা তাদের কাছে (নবুওতের) দীপ্তিমান গ্রন্থ নিয়ে | قَبْلِهِرْ عَ جَاءَتُهُرْ رُسُلُهُرْ بِالْبَيِّنْتِ وَبِالزُّبُرِ |
| | এসেছিলো! | وَبِالْكِتَٰبِ الْهُنِيْرِ |
| | ২৬. অতপর যারা (নবীদের) অস্বীকার করেছে, আমি তাদের কঠোরভাবে পাকড়াও করেছি, কতো ভয়ংকর | ٢٦ ثُمرًّ اَغَانْتُ الَّانِيْنَ كَفَرُّوْا فَكَيْفَ كَانَ |
| | ছিলো আমার আযাব! | نگيږع |
| | ২৭. হে (মানুষ,) তুমি কি (এ বিষয়টি কখনো) চিস্তা করো না, আল্লাহ তায়ালা (কিভাবে) আসমান থেকে পানি | ٢٠ ألَر تُو أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ع |
| ١ | বর্ষণ করেন, অতপর এ (পানি) দ্বারা আমি (যমীনের বুকে) রং-বেরংয়ের ফলমূল উদগত করি, (এখানে) | فَأَغْرَجْنَا بِهِ ثَبَرْتٍ مُّخْتَلِفًا ٱلْوَاتُهَا ﴿ وَمِنَ |
| ١ | পাহাড়সমূহও রয়েছে (নানা রংয়ের, কোনোটা) সাদা (আবার কোনোটা) লাল, এর রংও (আবার) বিচিত্র | الْجِبَالِ مُنَدُّ بِيْضٌ وَّمُرُّ مُّخْتَلِفٌ ٱلْوَانُهَا |
| | রকমের, কোনোটা (সাদাও নয়, লালও নয়; বরং) নিক্ষ কালো। | وَغَرَابِيْبُ سُوْدُ |
| | ২৮. একইভাবে মানুষ, (যমীনের ওপর) বিচরণশীল জীবজন্তু এবং পশুসমূহও রয়েছে নানা রংয়ের; আল্লাহ | ٢٨ وَمِنَ النَّاسِ وَالدُّوَابِّ وَالْأَنْعَا؟ |
| | তায়ালাকে তার বান্দাদের মঝে সেসব লোকেরাই বেশী ভয় করে যারা (এ সৃষ্টি নৈপুণ্য সম্পর্কে ভালো করে) | مُخْتَلِفًّ ٱلْوَالَّهُ كَنْ لِكَ ، إِنَّهَا يَخْشَى اللَّهَ |
| | জানে, আল্লাহ তায়ালা মহাপরাক্রমশালী, ক্রমাশীল। | مِنْ عِبَادِةِ الْعُلَمُوُّا ﴿ إِنَّ اللَّهَ عَزِيْزٌ غَفُورٌ |
| | ২৯. যারা আল্লাহ তায়ালার কেতাব পাঠ করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, আমি তাদের যে রেযেক দিয়েছি তা থেকে | ٢٩ إِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتْبَ اللَّهِ وَأَقَامُوا |
| | যারা (আমারই উদ্দেশে) গোপনে কিংবা প্রকাশ্যে দান করে, (মূলত) তারা এমন এক ব্যবসায় (নিয়োজিত) | الصَّلٰوةَ وَٱنْفَقُواْ مِمَّا رَزَقْنُهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً |
| ١ | আছে যা কোনোদিন (তাদের জন্যে) লোকসান বয়ে আনবে না; | يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّىْ تَبُوْرَ لا |
| | ৩০. কেননা, আল্লাহ তায়ালা তাদের কাজের পুরোপুরি বিনিময় দান করবেন, নিজ অনুগ্রহে তিনি তাদের | ٢٠ لِيُوفِيهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيْنَهُمْ مِّنَ فَضَلِهِ |
| | (পাওনা) আরো বাড়িয়ে দেবেন; অবশ্যই তিনি ক্ষমাশীল, গুণ্মাহী। | إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ |
| | ৩১. (হে নবী,) যে কেতাব আমি তোমার ওপর ওহী করে পাঠিয়েছি তাই একমাত্র সত্য, এর আগের যেসব | ٣١ وَالَّذِي ٓ أَوْمَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ مُو |
| | (কেতাব) রয়েছে (এ কেতাব) তার সমর্থনকারী; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের ভালো করেই জানেন | الْحَقُّ مُصَرِّقًا لِّهَا بَيْنَ يَرَيْدٍ ، إِنَّ اللَّهَ |
| | (এবং তাদের ভালো করেই) তিনি দেখেন। | بِعِبَادِهِ لَخَبِيْرٌ بَصِيْرٌ |
| ſ | ৩৫ সূরা ফাতের | মন্যিল ৫ |

৩২. অতপর আমি আমার বান্দাদের মাঝে তাদের সে কেতাবের উত্তরাধিকারী বানিয়েছি, আমি যাদের এ কাজের জন্যে বাছাই করে নিয়েছি, তারপর তাদের কিছু লোক নিজেই নিজের ওপর যালেম হয়ে বসলো, তাদের মধ্যে কিছু মধ্যপন্থীও ছিলো, তাদের মাঝে আবার এমন কিছু লোক (ছিলো) যারা আল্লাহর মেহেরবানীতে নেক কাজে ছিলো অগ্রগামী: (আসলে) এটাই হচ্ছে (আল্লাহর) সবচেয়ে বড়ো অনুগ্রহ।

٣٢ ثُرَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا جَ فَهِنْهُرُ ظَالِرٌ لِّنَفْسِهِ جَ وَمِنْهُرْ مُّقْتَصِلُّ ء وَمِنْهُمْ سَابِقٌّ بِالْخَيْرِ إِن بِاذْنِ الله و ذلك مو الْفَضْلُ الْكَبِيرُ و

৩৩. (সেদিন) তারা এক চিরস্থায়ী জান্লাতে প্রবেশ করবে. যেখানে তাদের সোনায় বাঁধানো ও মুক্তাখচিত কাঁকন পরানো হবে, সেখানে তাদের পোশাক হবে রেশমের।

٣٣ جَنَّتُ عَنْ يَ يَنْ خُلُونَهَا يُحَلُّونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوٍرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤُلُوًّا ٤ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا

৩৪. (সেদিন) তারা বলবে, আল্লাহর শোকর, যিনি আমাদের কাছ থেকে (যাবতীয় দুঃখ) কট্ট দুরীভূত করে দিয়েছেন: অবশ্যই আমাদের মালিক ক্ষমাশীল, গুণগ্রাহী,

٣٣ وَقَالُوا الْحَيْلُ لِلَّهِ الَّذِيُّ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ، إِنَّ رَبُّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ سُكُوْرٌ ٧

৩৫. যিনি তাঁর একান্ত অনুগ্রহ দিয়ে আমাদের (এতো সুন্দর) নিবাসের ব্যবস্থা করে দিয়েছেন, যেখানে আমাদের कार्ता तकम कष्ठ म्मर्न कत्रव ना. म्मर्न कत्रव ना আমাদের কোনো রকম ক্লান্তি (ও অবসাদ)!

٣٥ الَّذِي آَمَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ عَ لَا يَهَسُّنَا فِيْهَا نَصَبُّ وَّلَا يَهَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبُّ

৩৬. (অপরদিকে) যারা (দুনিয়ায়) আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করেছে তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আগুন, (তখন) তারা মরে যাবে তাদের প্রতি এমন আদেশও কার্যকর হবে না, তাছাড়া তাদের আযাবও কোনো রকম লঘু করা হবে না; আমি প্রতিটি অকৃতজ্ঞ ব্যক্তিকে এভাবেই শান্তি দিয়ে থাকি.

٣٦ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارٌ جَهَنَّمَ عَ لَا يُقْضَى عَلَيْهِرْ فَيَهُوْتُواْ وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُرْ مِّنَ عَنَ ابِهَا ﴿ كُنْ لِكَ نَجْزِى كُلَّ كُفُورٍ ۗ

৩৭. (আযাবের কষ্টে) তারা সেখানে আর্তনাদ করে বলবে. হে আমাদের মালিক, তুমি (আজ্ঞ) আমাদের এ (আযাব থেকে) বের করে দাও, আমরা ভালো কাজ করবো. (আগে) যা কিছু করতাম তা আর করবো না: (আল্লাহ তায়ালা বলবেন) আমি কি তোমাদের দুনিয়ায় এক দীর্ঘ জীবন দান করিনিং সাবধান হতে চাইলে কেউ কি সাবধান হতে পারতো নাঃ (তাছাড়া) তোমাদের কাছে তো সতর্ককারী (নবী)-ও এসেছিলো; সুতরাং (এখন) তোমরা আযাবের মজা উপভোগ করো, (মূলত) যালেমদের (সেখানে) কোনোই সাহায্যকারী নেই।

٣٠ وَهُر يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ج رَبَّنَا آخُرِجْنَا نَعْبَلْ مَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْبَلُ ، أَوَلَيْ نُعَيِّرُكُمْ مَّا يَتَنَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَنَكَّرَ وَجَاءُكُمُ النَّانِيْرُ و فَنُوْقُوا فَهَا لِلظَّلِمِيْنَ مِنْ تَّصِيْرِع

৩৮. নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা আসমানসমূহ ও যমীনের (যাবতীয় দেখা) অদেখা বিষয় সম্পর্কে সম্যক অবগত রয়েছেন, (এমনকি মানুষের) মনের ভেতরে যা কিছু লুকিয়ে আছে সে সম্পর্কেও তিনি ভালো করে জানেন।

٣٨ إِنَّ اللَّهَ عَلِي غَيْبِ السَّهٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَ إِنَّهُ عَلِيْرٌ بِنَاسِ الصَّّدُورِ

৩৯. তিনিই (এ) যমীনে তোমাদের (তাঁর) প্রতিনিধি বানিয়েছেন; (এখন) যে কোনো ব্যক্তিই কৃফরী করবে, তার কৃষ্ণরী (ও কৃষ্ণরীর ফলাফ্ল) তার নিজের ওপরই (পড়বে); কাফেরদের জ্বন্যে (এ) কুফরী কেবল (তাদের প্রতি) তাদের মালিকের ক্রোধই বৃদ্ধি করে, (তদুপরি) কাফেরদের এ কুফরী (তাদের নিজেদের) বিনাশ ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করে না।

٣٩ مُوَ الَّذِي جَعَلَكُم خَلَيْفَ فِي الْأَرْضِ ا فَهَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُةً ﴿ وَلَا يَزِيْكُ الْكُفِرِيْنَ كُفْرُهُرْ عِنْكَ رَبِّهِرْ إِلَّا مَقْتًا جَ وَلَا يَزِيْكُ الْكُفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ إِلَّا غَسَارًا

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত

৪০. (হে নবী.) তুমি (এদের) বলো. তোমরা (সেসব) শরীকদের কথা ভেবে দেখেছো কিঃ যাদের তোমরা আল্লাহর বদলে ডাকো, আমাকে দেখাও তো তারা এ যমীনের কিছু সৃষ্টি করেছে কিনা- কিংবা আকাশমন্ডল সষ্টির (পরিকল্পনার) মাঝে তাদের কোনো অংশ আছে কিনা- না আমি তাদের কোনো কেতাব দান করেছি যে. (এ জন্যে) তার থেকে কোনো দলীল প্রমাণের ওপর তারা নির্ভর করতে পারে, বরং এরা হচ্ছে যালেম, এরা একে অপরকে প্রতারণামূলক প্রতিশ্রুতিই দিয়ে থাকে।

٣٠ قُلْ أَرَءَيْتُم شُرَكَاءَكُم النَّهِينَ تَلْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ ﴿ أَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْأَرْضَ أَمُّ لَهُرْ شِرْكٌ فِي السَّاوْتِ عَ أَمْ أَتَيْنُهُمْ كُتِّبًا فَهُمْ عَلَى بَيِّنَتِ مِّنْهُ } بَلْ أَنْ يُّعِنُ الظُّلِيُونَ بَعْضُهُرْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا

৪১. (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালাই আসমানসমূহ ও যমীনকে স্থির করে (ধরে) রেখেছেন, যাতে করে ওরা (স্বীয় تَزُورً لا قَ وَلَئِي زَالَتًا إِنْ أَمْسَكُهُمَا مِنْ أَحَٰلِ وَهِمْ किक्न अथ (थरक) विठ्यान ना शर्फ आता, यिन (किश्वता) खता مِنْ أَحَٰلِ কক্ষচ্যুত হয়েই পড়ে তাহলে (তুমিই বলো), আল্লাহ তায়ালার পর এমন কে আছে যে এদের উভয়কে (পুনঃ) স্থির করতে পারবে, অবশ্যই তিনি মহা সহনশীল, ক্ষমাপরায়ণ।

٣١ إِنَّ اللَّهَ يُبْسِكُ السَّبُونِ وَالْإَرْضَ أَنْ مِّيُّ بَعْنِهِ مَ اللَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا

৪২. এরাই (এক সময়) সুদৃঢ় কসম করে বলতো, যদি তাদের কাছে (আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে) কোনো সতর্ককারী (নবী) আসে, তাহলে তারা অন্য সকল জাতি অপেক্ষা (তার প্রতি) অধিকতর আনুগত্যশীল হবে, অতপর (সত্যিই) যখন তাদের কাছে সতর্ককারী (নবী) এলো, তখন (দেখা গেলো, তার আগমন) এদের (সত্য-) বিমুখতাই শুধু বাড়িয়ে দিলো.

٣٢ وَ ٱقْسَبُوا بِاللَّهِ جَهْنَ ٱيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَنِيْ لَيكُونُنَّ أَهُلَى مِنْ إِحْلَى الْأُمَرِ } فَلَمَّا جَأَءُهُمْ نَنِيْدٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُوْرَ ۗ ٢

৪৩. বৃদ্ধি পেলো (আল্লাহর) যমীনে এদের অহংকার প্রকাশ ও (তাতে) কৃটিল ষড়যন্ত্র, কৃটিল ষড়যন্ত্র (জাল অবশ্য) ষডযন্ত্রকারী ছাড়া অন্য কাউকে স্পর্শ করে না. তবে কি তারা অতীতে (ষড়যন্ত্রকারীদের সাথে) যা কিছু ঘটেছে (এখনও) তেমন ধরনের কিছুর প্রতীক্ষা করছে? (যদি তাই হয়, তবে খনে রাখো,) তুমি (এদের বেলায়ও) আল্লাহর বিধানের কোনো পরিবর্তন দেখবে না. না কখনো তুমি (এ ব্যাপারে) আল্লাহর বিধান নডাচডা অবস্থায় (দেখতে) পাবে।

٣٣ اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّي ا وَلَا يَحِيْقُ الْهَٰكُ السِّيِّيُّ الَّا بِٱهْلِهِ ء فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْإُوَّلِينَ } فَلَنْ تَجِلَ لسُنَّتِ اللَّهِ تَبْنَيْلًا لَهُ وَلَيْ تَجِنَ لسُنَّتِ اللهِ تَحُويْلًا

88. তারা কি যমীনে পরিভ্রমণ করেনি, তারা কি তাদের আগের (বিদ্রোহী) লোকদের পরিণাম দেখেনি, তা কেমন (ভয়াবহ) ছিলো! অথচ তারা এদের তুলনায় ছিলো অনেক বলশালী: (কিন্তু আল্লাহর সিদ্ধান্ত যখন এলো, তখন) আসমানসমূহ ও যমীনের কোনো কিছুই তাঁকে شَيْءٍ فِي السَّمُونِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ء إِنَّهُ , वार्थ करत निर्ण भातत्ना ना; अवगारे जिन नर्बछ সর্বশক্তিমান।

٣٣ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقبَةُ النَّانِينَ مِنْ قَبْلُهِمْ وَكَانُوْا أَهَنَّ مِنْهُرْ قُوَّةً ﴿ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَةً مِنْ كَانَ عَلَيْهًا قَلِيْرًا

৪৫. আল্লাহ তায়ালা মানুষকে তার (বিদ্রোহমূলক) আচরণের জন্যে পাকড়াও করতে চাইলে ভূপষ্ঠের কোনো

٣٥ وَلَوْ يُوْ اَخِلُ اللَّهُ النَّاسَ بِهَا كَسَبُوْا مَا

| | <u> </u> |
|---|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২২ ওয়া মাইয়াকুনুত |
| একটি জীব জন্তুকেও তিনি রেহাই দিতেন না, কিন্তু তিনি তাদের একটি সুনির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত অবকাশ দিয়ে থাকেন, | تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَّلَكِن يُّؤَخِّرُهُمْ |
| অতপর একদিন যখন তাদের (নির্দিষ্ট) সময় আসবে | إِلَّى أَجَلِ مُّسَمَّى ع فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ |
| (তখন তিনি তাদের পাকড়াও করবেন), আল্লাহ তায়ালা | الله كان بِعِبَادِهِ بَصِيْرًا ع |
| অবশ্যই তাঁর বান্দাদের যাবতীয় কার্যকলাপ পর্যবেক্ষণ | الله كان بِعِبادِه بَصِيراع |
| করেন। | |
| · _ | سُورةً يس مُكِيةً |
| স্রা ইয়াসীন | |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৮৩ রুকু ৫ | أَيَاتًا ۚ ٢٣ رُكُوعً : ٥ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِسْرِ اللهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ |
| ১. ইয়াসীন, | ا يس ع |
| ২. (এ) জ্ঞানগর্ভ কোরআনের শপথ, | ٢ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْرِ ٧ |
| ৩. তুমি অবশ্যই রসূলদের একজন, | ٣ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ٢ |
| নিসন্দেহে তুমি সরল পথের ওপর (প্রতিষ্ঠিত) রয়েছো, | ٣ عَلَى مِرَاطٍ مُّسْتَقِيْرٍ ١ |
| ৫. পরাক্রমশালী ও পরম দয়ালু আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই এ (কোরআনের) অবতরণ; | ٥ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْرِ ٧ |
| ৬. যাতে করে (এর মাধ্যমে) তুমি এমন একটি জাতির (লোকদের) সতর্ক করে দিতে পারো, যাদের বাপদাদাদের (ঠিক এভাবে) সতর্ক করা হয়নি, ফলে তারা গাফেল (হয়ে রয়েছে)। | ٢ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا ٱنْذِرَ أَبَاؤُهُرْ فَهُرْ غَفِلُونَ |
| ৭. তাদের অধিকাংশ লোকের ওপরই (আল্লাহ তায়ালার | ٤ لَقَنْ مَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا |
| শান্তি) বিধান অবধারিত হয়ে গেছে, তাই তারা (কখনো) ঈমান আনবে না। | يُومِدُ |
| ৮. আমি ওদের গলদেশসমূহে (মোটা মোটা) বেড়ি পরিয়ে দিয়েছি, যা ওদের চিবুক পর্যন্ত (ঢেকে দিয়েছে), ফলে তারা উর্ধ্বমুখীই হয়ে আছে। | ^ إِنَّا جَعَلْنَا فِيَّ آعُنَاقِمِرْ آغُلْلًا فَمِيَ اِلَى الْإَذْقَانِ فَهُرْ مُّقْهَحُوْنَ |
| ৯. আমি তাদের সামনে পেছনে (জাহেলিয়াতের) প্রাচীর দাঁড় করিয়ে দিয়েছি এবং তাদের (দৃষ্টি) ঢেকে দিয়েছি, ফলে তারা (কিছুই) দেখতে পায় না। | ٩ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ اَيْنِيْهِرْ سَنَّا وَّمِنْ عَلْفِهِرْ سَنَّا فَاغْشَيْنُهُرْ فَهُرْ لَا يُبْمِرُونَ |
| ১০. (এ অবস্থায়) তুমি তাদের (আল্লাহর আযাব সম্পর্কে) সাবধান করো বা না করো, উভয়টাই তাদের জন্যে সমান কথা, তারা (কখনোই) ঈমান আনবে না। | ا وَسَوَاءً عَلَيْهِرْ ءَاَنْنَ رَتَهُرْ اَ مَا لَرْ تُنْنِ رَهُرْ لَا يُؤْمِنُونَ كَانُورُهُرْ لَا يُؤْمِنُونَ |
| ১১. তুমি তো কেবল এমন লোককেই সতর্ক করতে পারো যে (আমার) উপদেশ মেনে চলে এবং (সে অনুযায়ী) | ا إِنَّهَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ |

৩৬ সূরা ইয়াসিন

886

মনযিল ৫

3য়াককে লাঝেম

পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ ২২. আমার জন্যে এমন কি (অজুহাত) থাকতে পারে যে, وَمَا لَى لَا أَعْبَلُ الَّذِي فَطَرَّنِي وَالَّيْهِ যিনি স্বয়ং আমাকে পয়দা করেছেন এবং যাঁর দিকে তোমাদের সবাইকে (একদিন) ফিরে যেতে হবে, আমি তাঁর এবাদাত করবো না! ٢٣ ءَٱتَّخِلُ مِنْ دُوْنِهِ اللَّهَةُ إِنْ يُردُنِ ২৩, আমি কি তাঁকে বাদ দিয়ে অন্য কোনো মাবদ গ্রহণ করতে যাবো? (অথচ) দয়াময় আল্পাহ তায়ালা যদি الرَّحْمَى بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُرْ شَيْئًا ।আমার) কোনো ক্ষতি করতে চান তাহলে ওদের কোনো সুপারিশই তো আমার কোনো কাজে আসবে না, না তারা কেউ আমাকে (ক্ষতি থেকে) উদ্ধার করতে পারবে! ২৪. (এ সন্তেও) যদি আমি এমন কিছু করি তাহলে আমি ٢٣ إِنِّي ٓ إِذًا لَّفِي ضَلَل مَّبِينِ সম্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত হয়ে যাবো। ২৫. আমি তো (এ গোমরাহীর বদলে) তোমাদের ٢٥ إِنِّي أَمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ا মালিকের ওপরই ঈমান এনেছি, অতএব তোমরা আমার কথা শোনো: ٢٦ قِيلَ الْغُلِ الْجَنَّةَ ، قَالَ يُلَيْتَ قَوْمِي ২৬. (এ ব্যক্তি আল্লাহর পথে নিহত হওয়ার পর) তাকে বলা হলো, যাও, তুমি গিয়ে (এবার) জান্নাতে প্রবেশ করো: (সেখানে গিয়ে জানাতের নেয়ামত দেখে) সে বললো, আফসোস, যদি আমার জাতি (এ কথাটা) জানতে পারতো ٢٤ بِهَا غَفُرَلِي ثَرَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ ২৭, আমার মালিক আমাকে মাফ করে দিয়েছেন এবং আমাকে তিনি সম্বানিত (মানুষ)-দের দলে শামিল করে নিয়েছেন। र وَمَا ۖ أَنْزَلْنَا عَلَى قُوْمِهِ مِنْ بَعْلِ إِمْ مِنْ مُثْلِ का प्राप्त कारित अने (الاستام الاستام कार्त्त) आप्ति जात कार्जित अनेत आप्तमान त्थरक त्कारना وَمَا ۖ أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْلِ إِمْ مِنْ مُثْلِ বাহিনী পাঠাইনি, না (এ ক্ষ্দ্র কীটদের শাস্তি দেয়ার مِّنَ السُّهَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ জন্যে) আমার (তেমন) কোনো বাহিনী পাঠানোর প্রয়োজন ছিলো! २৯. (आमि या करतिष्ट) छा ष्टिरना वकिष्ठ مُرَعَةً وَ المِنَةُ فَاذَا فَمُ ٢٩ إِنْ كَانَتُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهَ عَلَيْهُ اللَّهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَا عَلَاكُمُ عَلَيْهِ গৰ্জন, (তাতেই) ওরা সবাই নিথর নিম্বন্ধ হয়ে গেলো! ٣٠ يُحَسُرَةً عَلَى الْعِبَادِ غُ مَا يَٱتِيْهِرُ ৩০. বড়োই আফসোস (এমন সব) বান্দাদের ওপর, তাদের কাছে এমন একজন রস্পত্ত আসেনি, যাদের তারা رُسُولِ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزَءُونَ ঠাট্টা-বিদ্দপ করেনি! ا ۗ ٱلَمْ يَرَوا كَمْ ٱهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ بِّنَ الْقُرُونِ ৩১. তারা কি (এ বিষয়টি) শক্ষ্য করেনি যে, তাদের আগে আমি কতো জাতিকে বিনাশ করে দিয়েছি, যারা أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ م (কোনোদিনই আর) তাদের দিকে ফিরে আসবে না: ৩২. বরং তাদের সবাইকে (একদিন) আমার সামনে এনে ٣٢ وَإِنْ كُلُّ لَّهَا جَبِيْعٌ لَّنَيْنَا مُحْضَرُونَ ع হাযির করা হবে। ৩৩. তাদের (শিক্ষার) জন্যে আমার (কুদরতের) একটি ٣٣ وَأَيَةً لَّهُرُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ﴾ آهَيَنُهَا নিদর্শন হচ্ছে (এই) মৃত যমীন, যাকে আমি (আসমান থেকে পানি বর্ষণ করে) জীবন দান করি এবং তা থেকে وَ أَخُرَجُنَا مِنْهَا حَبًّا فَهِنْهُ يَأْكُلُونَ শস্যদানা বের করে আনি, তা থেকেই তারা (নিজ নিজ অংশ) ভক্ষণ করে। ٣٣ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنَّتِ مِّنْ تَّخِيلِ وَّ أَعْنَابٍ ৩৪. আমি তাতে (আরো) সৃষ্টি করি (নানা প্রকার) খেন্ধুর ও আংগুরের বাগান, উদ্ভাবন করি অসংখ্য (নদীনালার) وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُونِ لا প্রস্রবণ, ৩৬ সুরা ইয়াসিন মন্যিল ৫ 887

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|---|
| ৩৫. যাতে করে তারা এর ফলমূল উপভোগ করতে পারে, | |
| (আসলে) এগুলোর কোনোটাই তো তাদের হাতের সৃষ্টি | ٣٥ لِيَاْكُلُوا مِنْ ثَمَرِةٍ لا وَمَا عَمِلَتْهُ ٱيْدِيْهِم ٩ |
| নয়, (এতদসত্ত্বেও) কি তারা কৃতজ্ঞতা আদায় করবে নাঃ | ٱفَّلَا يَشْكُرُوْنَ |
| | |
| ৩৬. পবিত্র ও মহান সে সন্তা, যিনি সবকিছুকে জোড়ায় | ٣٦ سُبُحٰنَ الَّذِيْ غَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا |
| জোড়ায় পয়দা করেছেন, (চাই তা) যমীনের উৎপন্ন উদ্ভিদ থেকে হোক, কিংবা (হোক) স্বয়ং তাদের নিজেদের | تُنْبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ ٱنْفُسِهِرْ وَمِهَا لَا |
| থেকে, অথবা এমন সব সৃষ্টি থেকে হোক, যাদের | تنبت الأرص ومن القسهر ومما لا |
| (সম্পর্কে) মানুষ (এখনো) আদৌ (কিছু) জানেই না। | يعْلَمُونَ |
| ৩৭. তাদের জন্যে (আমার আরেকটি) নিদর্শন হচ্ছে | راره وه می ۸۵ میل د ۸۰ م ۵۰ می |
| (এই) রাত, আমি তা থেকে দিনকে অপসারিত করি, | ٢٠ وَ إِيَّةً لَّهُرُ الَّيْلُ مِنْ نَسْلَخُ مِنْدُ النَّهَارَ |
| ফলে এরা সবাই (এক সময়) অন্ধকারে আচ্ছনু হয়ে | فَاِذَا هُرْ مُّطْلِمُونَ لا |
| পড়ে, | |
| ৩৮. সূর্য তার জন্যে নির্ধারিত সুনির্দিষ্ট গভির মাঝে | ٣٨ وَالشَّهْسُ تَجْرِيْ لِهُسْتَقَرٍّ لَّهَا ، ذَٰلِكَ |
| আবর্তন করে; এটা হচ্ছে মহাপরাক্রমশালী, সর্বজ্ঞ আল্লাহ তায়ালারই সুনির্ধারিত (নিয়ন্ত্রণ ব্যবস্থা); | تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْرِ ا |
| | |
| ৩৯. (আরো রয়েছে) চাঁদ, তার জন্যে আমি বিভিন্ন কক্ষ নির্ধারণ করেছি, (কক্ষ পরিক্রমণের সময় ছোট হতে হতে | ٣٩ وَالْقَهَرَ قَلَّ (نُهُ مَنَازِلَ مَتَّى عَادَ |
| তা এক সময়) এমন (ক্ষীণ) হয়ে পড়ে, যেন তা পুরনো | كَالْعُرْجُونِ الْقَرِيْمِ |
| খেজুরের একটি (পাতলা) ডাল। | |
| ৪০. সূর্যের এ ক্ষমতা নেই যে, সে চাঁদকে নাগালের মাঝে পাবে– না রাত দিনকে ডিংগিয়ে আগে চলে যেতে | ٣٠ لَا الشَّهْسُ يَنْبَغِيْ لَهَا ۚ أَنْ تُكْرِكَ الْقَهَرَ |
| পারবে; (মূলত চাঁদ সুরুজসহ) এরা প্রত্যেকেই | وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ﴿ وَكُلُّ فِي فَلَكِ |
| শূন্যলোকে সাঁতার কেটে চলেছে। | المُرَّدِ مِنْ مَا مَا يَوْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِن |
| ON THE PARTY (THE PARTY THE PARTY TH | - |
| ৪১. তাদের জন্যে (আরেকটি) নিদর্শন হচ্ছে, আমি তাদের বংশধরদের (এক সময় একটি) ভরা নৌযানে | ٢١ وَ إِيَّةً لَّهُمْ أَنَّا مَهَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ |
| আরোহণ করিয়েছিলাম; | الْهَشْحُونِ لا |
| ৪২. তাদের (নিজেদের) জন্যে সে নৌকার মতো | |
| যানবাহন আমি সৃষ্টি করেছি, যাতে (মাল সম্পদসহ) তারা | ٣٢ وَخَلَقْنَا لَهُرْ مِّنْ مِّثْلِهِ مَا يَوْكَبُوْنَ لا |
| আরোহণ করছে। | |
| ৪৩. অথচ আমি চাইলে (মাল সামানাসহ) এদের সবাইকে ডুবিয়ে দিতে পারি, সে অবস্থায় তাদের ফরিয়াদ | ٣٣ وَإِنْ نَّشَأَ نُغْرِقْهُرْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا |
| শোনার মতো কেউই থাকবে না, না এদের (তখন) উদ্ধার | |
| করা হবে । | هر ينقلون |
| ৪৪. (হাা, একমাত্র) আমার অনুগ্রহই ছিলো, (যা ডাদের নিজ | ٣٣ إِلَّا رَهْهَ َّمِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَى حِيْنِ |
| নিত্ত মনযিলে পৌছে দিয়েছিলো) এবং এটা ছিলো এক সুনির্দিষ্টকাল পর্যন্ত (এ বৈষয়িক) সম্পদ (উপভোগ করার সুযোগ)। | ا را د رسه و اوساد رای براو |
| ৪৫. যখন তাদের বলা হয়, তোমরা তোমাদের সামনে যে | ^^^^ ^ |
| (আযাব) রয়েছে তাকে ভয় করো, (ভয় করো) যা (কিছু) | الله الوادا فيل لهر القواما بين اينيدر |
| পেছনে আছে (তাকেও), আশা করা যায় তোমাদের ওপর | وَمَا خَلْفَكُم ٛ لَعَلَّكُم ْ تُرْمَهُوْنَ |
| দয়া করা হবে। | m A |
| ৪৬. তাদের মালিকের নিদর্শনসমূহ থেকে তাদের কাছে | ٣٦ وَمَا تَأْتِيْهِرْ مِّنَ أَيَةٍ مِّنَ أَيْتِ رَبِّهِرْ إِلَّا |
| এমন কোনো নিদর্শন আসেনি যা থেকে তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়নি! | كَانُوْ ا عَنْهَا مُعْرِضِينَ |
| | |
| ৩৬ সূরা ইয়াসিন 8৪৯ | · মন্যিল ৫ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|---|
| ৪৭. (এমনিভাবে) যখন তাদের বলা হয়, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে জীবনোপকরণ দিয়েছেন তা থেকে (কিছু | ٣٤ وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ أَنْفِقُواْ مِمَّا رَزَقَكُمُ |
| অংশ অন্যদের জন্যে) ব্যয় করো, তখন (এ) কাফেররা ঈমানদারদের বলে, আমরা কেন তাদের খাওয়াতে যাবো | الله لا قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ أَمَنُوْآ |
| যাদের আল্লাহ তায়ালা ইচ্ছা করলে নিজেই খাবার দিতে | أَنُطْعِرُ مَنْ لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَبَهُ فَيْ إِنْ أَنْتُرْ |
| পারতেন, (হে নবী, তুমি বলো), আসলেই তোমরা সুস্পষ্ট গোমরাহীতে (নিমজ্জিত) আছো! | إِلَّا فِيْ ضَلَّلِ مُّبِيْنِ |
| ৪৮. তারা বলে, তোমরা যদি সত্যবাদী হও তাহলে (বলো, কেয়ামতের) এ প্রতিশ্রুতি কবে (পূর্ণ) হবে? | ٨٣ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْنُ إِنْ كُنْتُرْ مٰرِقِيْنَ |
| ৪৯. (এসব প্রশ্নের মাধ্যমে) এরা (আসলে) যে বিষয়টির জন্যে অপেক্ষা করছে, তা তো হবে একটি মহাগর্জন, তা | ٣٩ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا مَيْحَةً وَّاحِنَةً تَاْغُنُهُمْ |
| এদের (হঠাৎ করে) পাকড়াও করবে এবং (তখনো দেখা যাবে) তারা (এ ব্যাপারে) বাকবিতভা করেই চলেছে। | وَهُمْرُ يَحْصِّبُونَ |
| ৫০. (এ সময়) তারা (শেষ) অসিয়তটুকু পর্যন্ত করে | ٥٠ فَلَا يَسْتَطِيْعُونَ تَوْمِيَةً وَّلَّ إِلَّى ٱهْلِهِمْ |
| যেতে সক্ষম হবে না, না তাদের আপন পরিবার পরিজনদের কাছে (আর) কোনোদিন ফিরিয়ে আনা হবে। | يَرْجِعُونَ ع |
| ৫১. যখন (দ্বিতীয় বার) শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে তখন মানুষগুলো সব নিজেদের কবর থেকে বেরিয়ে নিজেদের | ٥١ وَنَفِعَ فِي الصُّورِ فَاذَا مُرْمِّنَ الْأَجْلَاسِ |
| মালিকের দিকে ছুটতে থাকবে। | اِلٰي رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ |
| ৫২. তারা (হতভম্ব হয়ে একে অপরকে) বলবে, হায় (কপাল আমাদের)! কে আমাদের ঘুম থেকে (এমনি | ٥٢ قَالُوْ اللَّهُ يُلَنَّا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَلِنَا عُلِمُ |
| করে) জাগিয়ে তুললো (এ সময় ফেরেশতারা বলবে), এ হচ্ছে তাই (কেয়ামত), দয়াময় আল্পাহ তায়ালা (তোমাদের কাছে) যার ওয়াদা করেছিলেন, নবী রস্লরাও (এ ব্যাপারে) সত্য কথা বলেছিলেন। | هٰنَ أَ مَا وَعَنَ الرَّهُمٰٰنَ وَصَنَقَ الْمُرْسَلُوْنَ |
| ৫৩. (মূলত) এ (কেয়ামত অনুষ্ঠান)-টি (শিংগার) এক মহাগর্জন ছাড়া আর কিছুই নয়, এ গর্জনের পর সাথে | ٥٣ إِنْ كَانَتْ إِلَّا مَيْحَةً وَّاحِرَةً فَاذَا مُرْ |
| সাথে সবাইকে (হাশরের ময়দানে) আমার সামনে এনে হাথির করা হবে। | جَوِيْعٌ لَّنَ يُنَا مُحْضَرُونَ |
| ৫৪. অতপর (ঘোষণা হবে), আজ কারও প্রতি (বিন্দুমাত্রও) যুপুম করা হবে না, (আজ) তোুমাদের ত্বুধু | $\Delta \Gamma$ فَالْيَوْمَ $\Delta \Gamma$ تُظْلَرُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّ |
| সেটুকুই প্রতিদান দেয়া হবে যা তোমরা (দুনিয়ায়) করে এসেছো। | تُجْزُوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُرْ تَعْبَلُوْنَ |
| ৫৫. (সেদিন) অবশ্যই জান্নাতের অধিবাসীরা মহা আনন্দে বিভোর থাকবে, | ٥٥ إِنَّ أَشْعَٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغَلِ فَكِمُوْنَ ع |
| ৫৬. তারা এবং তাদের সংগী-সংগিনীরা (আরশের) সুশীতল ছায়ায় সুসজ্জিত আসনের ওপর হেলান দিয়ে | |
| (বসে) থাকবে। | مُتَّكِئُونَ |

৩৬ সূরা ইয়াসিন

কাংখিত (ও বাঞ্ছিত) সব কিছু,

৫৭. সেখানে তাদের জন্যে (মজুদ) থাকবে (নানা

প্রকারের) ফলমূল, (আরো থাকবে) তাদের জ্বন্যে তাদের

800

٥٤ لَهُر فِيْهَا فَاكِهَةً وَلَهُرْمًا يَدَّعُونَ عَسِه

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|-------------------|--|---|
| 5 | ৫৮. পরম দয়ালু মালিকের পক্ষ থেকে তাদের (স্বাগত জানিয়ে) বলা হবে, (তোমাদের ওপর) সালাম (বর্ষিত হোক)। | ٥٨ سَلْمُ نَنْ قَوْلًا مِنْ رَّبِ رَّحِيْمٍ |
| | ৫৯. (অপরদিকে পাপীদের বলা হবে,) হে অপরাধীরা, তোমরা (আজ আমার ঈমানদার বান্দাদের কাছ থেকে) আলাদা হয়ে যাও। | ٥٩ وَامْتَازُوا الْيَوْاَ أَيُّهَا الْهُجُرِمُوْنَ |
| থান | ৬০. হে বনী আদম, আমি কি তোমাদের (এ মর্মে) নির্দেশ দেইনি যে, তোমরা শয়তানের গোলামী করো না, কেননা সে হচ্ছে তোমাদের প্রকাশ্য দুশমন, | أَلَر أَعْهَل إِلَيْكُم يٰبَنِي أَدْاً أَن لا تَعْبُنُوا الشَّيْطَى عَ إِنَّهُ لَكُم عَنُوًّ مُبِينً لا تَعْبُنُوا الشَّيْطَى عَ إِنَّهُ لَكُم عَنُوًّ مُبِينً لا |
| ওয়াক্ফে গোঞ্চরান | ৬১. (আমি কি তোমাদের একথা বলিনি,) তোমরা ওধু আমারই এ বাদাত করো, (কেননা) এটিই হচ্ছে সহজ সরল পথ। | ٦١ وَ آَنِ اعْبُلُونِي عُ هٰنَا صِرَافًا مُّسْتَقِيْرُ |
| ওয় | ৬২. (আর শয়তান) সে তো (তোমাদের আগেও) আনেক লোককে (এডাবে) পথন্ত্রষ্ট করে দিয়েছিলো; (তা দেখেও) তোমরা কি বুঝতে পারলে নাঃ | ٦٢ وَلَقَنْ أَضَلَّ مِنْكُر ۚ هِبِلَّلَا كَثِيْرًا ﴿ أَفَلَرَ تَكُوْ نُوْا تَعْقِلُونَ |
| | ৬৩. (হাা,) এ (হচ্ছে) সেই জাহান্নাম, যার ওয়াদা তোমাদের সাথে (বার বার) করা হয়েছিলো। | ٣٣ هٰٰٰٰٰرِةٍ جَهَنَّدُ الَّتِي كُنْتُر ٛ تُوْعَكُونَ |
| | ৬৪. আজ (সবাই মিলে) তাতে গিয়ে প্রবেশ করো, যা (দুনিয়ার জীবনে) তোমরা অস্বীকার করছিলে! | ٣٣ إِمْلَوْهَا الْيَوْمَ بِهَا كُنْتُرْ تَكْفُرُونَ |
| | ৬৫. আজ আমি তাদের মুখের ওপর সীলমোহর দেবো, (আজ) তাদের হাতগুলো আমার সাথে কথা বলবে, | ٦٥ اَلْيَوْاَ نَخْتِرُ عَلَى اَفْوَاهِمِرْ وَتُكَلِّمُنَا |
| | তাদের পা-গুলো (আমার কাছে) সাক্ষ্য দেবে, এরা কি কাজ করে এসেছে। | ٱيْدِيْهِرْ وَتَشْهَلُ ٱرْجُلُهُرْ بِهَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ |
| | ৬৬. (অথচ) আমি যদি চাইতাম, (দুনিয়ায়) আমি এদের (চোখ থেকে) দৃষ্টিশক্তি বিলোপই করে দিতাম, তেমনটি করলে (তুমিই বলো) এরা কিভাবে (তখন চলার পথ) | ٢٦ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَهَسْنَا عَلَى آعَيْنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا |
| | দেখে নিতো! | السِّرَاطَ فَٱتَّى يُبْصِرُونَ |
| Â | ৬৭. (তাছাড়া) যদি আমি চাইতাম তাহলে (কুফরীর কারণে) তাদের নিজ নিজ জায়গায়ই তাদের আকৃতি বিনষ্ট করে | ٢٤ وَلَوْ نَشَآءُ لَهُسَخْنُهُرْ عَلَى مَكَانَتِهِر |
| | দিতে পারতাম, সে অবস্থায় এরা সামনের দিকেও যেতে পারতো না, আবার পেছনেও ফিরে আসতে পারতো না! | فَهَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَّلَا يَرْمِعُونَ ع |
| | ৬৮. যাকেই আমি দীর্ঘ জ্ঞীবন দান করি, তাকেই আমি সৃষ্টিগত (দিক থেকে) তার প্রাথমিক অবস্থায় ফিরিয়ে নিয়ে যাই; (এটা দেখেও) কি তারা বুঝতে পারে না (কে | ٢٨ وَمَن نَّعَيِّراً تُنكِيدُ فِي الْخَلْقِ الْفَلْدِ |
| | তাদের দেহে এ পরিবর্তনগুলো ঘটাচ্ছে) | يعقلون |
| | ৬৯. (তোমরা এও জেনে রেখো,) আমি এ (রস্ল)-কে কাব্য (রচনা) শেখাইনি এবং এটা তাঁর (নবী মর্যাদার) | 19 وَمَا عَلَّمْنُهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِيْ لَدَّ اللَّهُ اللَّ |
| | পক্ষে শোভনীয়ও নয়; (আর তাঁর আনীত গ্রন্থ) তা তো হচ্ছে একটি উপদেশ ও সুস্পষ্ট কোরআন, | اِلَّا ذِكْرُ وَقُرُاكُ مَّبِيْنَ لا |
| | ৭০. যাতে করে সে তা দ্বারা যে (অন্তর) জীবিত তাকে (জাহান্নামের ব্যাপারে) সতর্ক করে দিতে পারে এবং (যা | 4 لِيُنْذِرِ مَنْ كَانَ مَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى |
| | ছারা) কাফেরদের প্রদ্ধ শান্তির ঘোষণা সাব্যন্ত হয়ে যায়। | الْكُفِرِيْنَ |
| | ৭১. এরা কি লক্ষ্য করে না, আমার নিজের হাত দিয়ে বানানো জ্ঞিনিসপত্রের মধ্য থেকে আমি তাদের | (٤) أَوَ لَرْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُرْ مِيًّا عَمِلَت |
| | (কল্যাণের) জন্যে পশু পয়দা করেছি, আর (এখন) তারা (নাকি) এগুলোর মালিক হয়ে বসেছে। | أَيْدِيْنَا ۚ أَنْعَامًا فَهُرْ لَهَا مَالِكُوْنَ |
| | ৩৬ সূরা ইয়াসিন 💮 🗣 😵 🖒 | মন্যিল ৫ |

মন্যিল ৫

803

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | |
|---|--|
| रसाम्यान नामार अरख अम्रल वारणा अनुवाम | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
| ু সুরা আছ ছাফফাত | سُورَةُ الصَّفِّي مَكِيَّةً |
| সূর। আছু ছাফফাত মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৮২, রুকু ৫ | أَيَاسٌّ : ١٨٢ رُكُوْعٌ : ٥ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | يِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| শপর্থ (সে ফেরেশতাদের) যারা সারিবদ্ধভাবে দাঁড়িয়ে থাকে। | ١ وَ الصَّفَّتِ صَفًّا ٧ |
| ২. শপথ (সেসব ফেরেশতার) যারা সজোরে ধমক দেয়, | ٢ فَالزُّهِرْتِ زَهْرًا لا |
| শপথ (সেসব ফেরেশতার) যারা (সদা আল্লাহর) যেকের তেলাওয়াত করে, | ٣ فَالتَّلِيٰسِ ذِكْرًا ٧ |
| ৪. অবশ্যই তোমাদের মাবুদ হচ্ছেন একজন; | ٣ إِنَّ إِلْهَكُمْ لَوَاحِلَّ ١ |
| ৫. তিনি আসমান যমীন ও এ দু'য়ের মাঝখানে অবস্থিত সবকিছুরও মালিক, (তিনি আরো) মালিক (সূর্যোদয়ের | ٥ رَبُّ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا |
| স্থান) পূর্বাচলের; | وَرَبُّ الْهَهَارِقِ ا |
| ৬. আমি (তোমাদের) নিকটবর্তী আসমানকে (নয়নাভিরাম) নক্ষত্ররাজি দ্বারা সুসজ্জিত করে রেখেছি; | ٦ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ النُّنْيَا بِزِيْنَةٍ ۗ الْكُوَاكِبِ ٧ |
| ৭. (তাকে) আমি হেফাযত করেছি প্রত্যেক না-ফরমান শয়তান থেকে, | ٤ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنِ مَّارِدٍ ع |
| ৮. ফলে তারা উর্ধান্ধগতের (কথাবার্তার) কিছুই খনতে পায় না, (কিছু খনতে চাইলেই) প্রত্যেক দিক থেকে | ^ لَا يَسْعُونَ إِلَى الْهَلَاِ الْإَعْلَى وَيُقْنَهُونَ |
| তাদের ওপর উন্ধা নিক্ষিপ্ত হয়, | مِنْ كُلِّ جَانِبٍ قصه |
| ৯. এই তাড়িয়ে দেয়াই (শেষ) নয়- তাদের জন্যে অবিরাম শান্তিও রয়েছে, | ٩ دُمُوْرًا وْلَهُرْ عَلَاابٌ وَّاصِبٌ ٧ |
| ১০. (তা সত্ত্বেও) যদি কোনো (শয়তান) গোপনে হঠাৎ করে কিছু শুনে ফেলতে চায়, তখন জ্বলন্ত উদ্ধাপিভ সাথে সাথেই তার পশ্চাদ্ধাবন করে। | ا إِلَّا مَن عَطِفَ الْخَطْفَةَ فَٱتْبَعَدٌ شِهَابٌ ثَاقِبٌ |
| ১১. (হে নবী,) তুমি এদের কাছে জিঞ্জেস করো, তাদের | |
| সৃষ্টি করা বেশী কঠিন- না (আসমান যমীনসহ) অন্য সব | ا ا فَاسْتَفْتُومِ أَهُر أَشَنَّ خَلْقًا أَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ا |
| কিছু- যা আমি পয়দা করেছি (তার সৃষ্টি বেশী কঠিন); এ (মানুষ)-দের তো আমি (সামান্য কতোটুকু) আঠাল মাটি দিয়ে পয়দা করেছি। | إِنَّا حَلَقْنَهُرْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ |
| ১২. (হে নবী,) তুমি (এদের কথায়) বিশ্বয়বোধ করছো, অথচ (তোমার কথা নিয়েই) ওরা ঠাট্টা বিদ্ধুপ করছে, | ١٢ بَلُ عَجِبْتَ وَيَسْخُرُونَ م |
| ১৩. এদের যখন উপদেশ দেয়া হয়, তখন তারা (তা) শ্বরণ করে না, | ١٣ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَلْكُرُونَ س |
| ১৪. (আবার) কোনো নিদর্শন দেখলে (তা নিয়ে) উপহাস করে, | ١٣ وَإِذَا رَاوْا أَيْةً يَّشْتَشْخِرُوْنَ م |
| ১৫. তারা বলে, এটা তো সুস্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়, | ١٥ وَقَالُوْ آ إِنْ هٰنَ آ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنَ قَ مِن |
| ১৬. (তারা প্রশ্ন তোলে, এ আবার কেমন কথা,) আমরা মরে গিয়ে হাড় ও মাটিতে পরিণত হয়ে যাবো, তখনও | ١٦ ءَاإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاإِنَّا |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|---|---|
| কি আমাদের (পুনরায়) জীবিত করা হবে? | لَهَبْعُوثُونَ لا |
| ১৭. আমাদের পিতৃপুরুষদেরও (এভাবে ওঠানো হবে)? | ١٤ أوَ أَبَاؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ا |
| ১৮. (হে নবী, এদের) তুমি বলো, হাাঁ (অবশ্যই, সেদিন) তোমরা লাঞ্ছিত হবে, | ١٨ قُلْ نَعَرْ وَٱنْتُرْ دَاخِرُونَ ٤ |
| ১৯. যখন (কেয়ামত) হবে, (তখন) একটি মাত্র প্রচন্ড গর্জন হবে– সাথে সাথেই এরা (সবকিছু) দেখতে পাবে। | ١٩ فَإِنَّهَا هِيَ زَهْرَةٌ وَّاحِلَةٌ فَإِذَا هُرْ يَنْظُرُونَ |
| ২০. (যারা অস্বীকার করেছিলো) তারা (সেদিন এটা দেখে) বলবে, পোড়া কপাল আমাদের, এটাই তো হচ্ছে (সেই) প্রতিদান পাওয়ার দিন! | ٢٠ وَقَالُوا يُوَيْلَنَا مِٰنَا يَوْاً الرِّيْنِ |
| ২১. (তাদের বলা হবে) হাাঁ, এটাই হচ্ছে চূড়ান্ত ফয়সালার দিন, যাকে তোমরা (নিরন্তর) মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে। | ٢١ مِٰنَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُر بِهِ تُكَنِّبُوْنَ ع |
| ২২. (ফেরেশতাদের আদেশ দেয়া হবে যাও,) তোমরা যালেমদের এবং তাদের সংগী-সংগিনীদের (ধরে ধরে) জমা করো, তাদের (দাসরদের)-ও, যারা তাদের গোলামী করতো (এদের সবাইকে এক জায়গায় একত্র করো), | ٢٢ ٱحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَبُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ٧ |
| ২৩. আল্পাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে (যাদের এরা মাবুদ বানাতো) তাদেরও (এক সাথে) জাহান্নামের রাস্তা দেখিয়ে দাও। | ٢٣ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ فَاهْلُوْهُرْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيْدِ |
| ২৪. হাাঁ, (সেখানে পাঠাবার আগে) তাদের (এখানে) একটুখানি দাঁড় করাও, তারা অবশ্যই (আজ্ঞ) জিজ্ঞাসিত হবে, | ٢٣ وَقِفُوهُم إِنَّهُم مُسْتُولُونَ ٧ |
| ২৫. তোমাদের এ কী হলো, (জ্বাব দেয়ার সময়) তোমরা আজ একে অপরকে সাহায্য করছো না যে! | ٢٥ مَا لَكُرْ لَا تَنَاصَرُونَ |
| ২৬. (না,) আজ তো (দেখছি) এরা সবাই সত্যি সত্যিই আত্মসমর্পণকারী (বনে গেছে)! | ٢٦ بَلْ هُرُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِبُونَ |
| ২৭. (এ সময়) তারা একে অপরের দিকে মুখ করে পরস্পরকে জিজ্ঞাসাবাদ করতে থাকবে। | ٢٤ وَ إَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَّتَسَاءَلُونَ |
| ২৮. (দুর্বল দলটি শক্তিশালী দলকে) বলবে, তোমরাই তো তোমাদের ক্ষমতা নিয়ে আমাদের কাছে আসতে, | ٢٨ قَالُوْ ۗ إِنَّكُرْ كُنْتُرْ تَأْتُوْنَنَا عَنِ الْيَعِيْنِ |
| ২৯. তারা বলবে (আমাদের দোষারোপ করছো কেন), তোমরা তো আদৌ (আল্লাহতে) বিশ্বাসীই ছিলে না, | ٢٩ قَالُوا بَلُ لَّـرُ تَكُونُوا مُؤْمِنِيْنَ ٤ |
| ৩০. তোমাদের ওপর আমাদের কোনো (জবরদন্তিমূলক) কর্তৃত্বও তো ছিলো না, বরং তোমরা নিজেরাই ছিলে মারাত্মক সীমালংঘনকারী। | ٣٠ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنَ سُلُطْنِ ۽ بَلَ كُنْتُرْ قَوْمًا طُغِيْنَ |
| ৩১. (এ সময় তাদের উভয়ের পক্ষ থেকে ঘোষণা হবে,) আজ আমাদের (উভয়ের) ওপর আমাদের মালিকের ঘোষণাই সত্য হয়েছে, (আজ) আমরা (উভয়েই জাহানুামের) শান্তি আস্বাদনকারী। | ٣١ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۚ إِنَّا لَنَ الْفَوْوُنَ |
| ৩২. আমরা (আসলেই) তোমাদের বিদ্রান্ত করেছিলাম, আমরা নিজেরাও ছিলাম বিদ্রান্ত! | ٣٢ فَأَغُويُنكُرُ إِنَّا كُنَّا غُوِينَ |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|---|--|
| ৩৩. সেদিন তারা (সবাই) এই আযাবে সমন্ডাগী হবে। | ٣٣ فَاتَّمَرْ يَوْمَئِنْ فِي الْعَنَ الْبِ مُشْتَرِكُونَ |
| ৩৪. আমি না-ফরমান লোকদের সাথে এ ধরনের আচরণই করে থাকি। | ٣٣ إِنَّا كَنْ لِكَ نَفْعَلُ بِالْهَجْرِمِيْنَ |
| ৩৫. এরা এমন (বিদ্রোহী) ছিলো, যখন এদের বলা হতো, আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কোনো মাবুদ নেই, | ٣٥ إِنَّهُرْ كَانُوْآ إِذَا قِيْلَ لَهُرْ لَا إِلَّهَ إِلَّا |
| তখন তারা অহংকারে ফেটে পড়তো, | الله لا يَسْتَكْبِرُوْنَ لا |
| ৩৬. এরা বলতো, আমরা কি একজন পাগল কবিয়ালের কথায় আমাদের মাবুদদের (আনুগত্য) ছেড়ে দেবো? | ٣٦ وَيَقُوْلُوْنَ أَئِنَّا لَتَارِكُوْآ أَلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ا |
| ৩৭. (অথচ আমার নবী কোনো কাব্য নিয়ে আসেনি,) | |
| বরং সে এসেছে সত্য (দ্বীন) নিয়ে এবং সে (আগের) নবীদের সত্যতাও স্বীকার করছে। | ٣٠ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَلَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ |
| ৩৮. (হে অপরাধীরা,) তোমাদের (আজ্ঞ) অবশ্যই (জাহান্লামের) ভয়াবহ আযাব ভোগ করতে হবে, | ٣٨ إِنَّكُمْ لَكَ الْقُوا الْعَلَابِ الْاَلِيمْرِ ٤ |
| ৩৯. ভোমরা যা কিছু (দুনিয়ায়) করতে (আজ) তোমাদের কেবল তারই প্রতিফল দান করা হবে, | ٣٩ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُرْ تَعْمَلُوْنَ ٧ |
| ৪০. তবে আল্লাহ তায়ালার নিষ্ঠাবান বান্দাদের কথা আলাদা, | ٣٠ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْهُ خُلَصِيْنَ |
| ৪১. তাদের জন্যে (আল্লাহ তায়ালার) সুনির্দিষ্ট (উন্তম)রেযেকের ব্যবস্থা থাকবে, | ٣١ ٱولَّنِكَ لَمُرْ رِزْقٌ مَعْلُوا اللهِ |
| ৪২. থাকবে রকমারি ফলমূল, (তদুপরি) তারা হবে মহাসম্মানে সম্মানিত, | ٣٢ فَوَاكِدُ عَ وَهُرْ مُكْرَمُونَ ٧ |
| ৪৩. নেয়ামতে ভরপুর জান্লাতে (তারা অবস্থান করবে), | ٣٣ فِي جَنَّتِ النَّعِيْمِ لا |
| ৪৪. তারা পরস্পর মুখোমুখি হয়ে (মর্যাদার) আসনে সমাসীন থাকবে। | ٣٣ عَلَى سُرُرٍ ثَّتَقْبِلِيْنَ |
| ৪৫. ঘুরে ঘুরে বিশুদ্ধ সুরা তাদের পরিবেশন করা হবে, | ٣٥ يُطَانُ عَلَيْهِرْ بِكَاْسٍ مِّنْ مُّعِيْنٍ لا |
| ৪৬. শুদ্র ও সমুজ্জ্বল- যা (হবে) পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু, | ٣٦ بَيْضَاءَ لَنَّ إِللَّهِ لِلشَّرِبِيْنَ قصه |
| 8৭. তাতে কোনো রকম মাথা ঘুরানির মতো ক্ষতিকর কিছু থাকবে না এবং তার কারণে তারা মাতাশও হবে না। | ٣٠ لَا فِيْهَا غُوْلٌ وَلَا هُرْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ |
| ৪৮. তাদের সাথে (আরো) থাকবে সলজ্জ, ন্মু ও আয়তলোচনা তরুণীরা, | ٣٨ وَعِنْكَ مُر قَصِرُتُ الطَّرْفِ عِيْنَ لا |
| ৪৯. তারা যেন (সযত্নে) পুকিয়ে রাখা ডিমের মতো উজ্জ্বল গৌর বর্ণ (সুন্দরী)। | ٣٩ كَانْهَى بَيْضَ مُكْنُون |
| ৫০. অতপর এর (জান্নাতের) অধিবাসীরা একজন আরেক জনের দিকে ফিরে (নিজেদের হাল অবস্থা) জিজ্ঞেস করবে। | ٥٠ فَٱقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ |
| ৫১. (এ সময়) তাদের মাঝ থেকে একজন বলে ওঠবে, (হাাঁ, দুনিয়ার জীবনে) আমার একজন সাথী ছিলো, | ۵۱ قَالَ قَالِلٌّ مِّنْهُر إِلِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ y |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|--|
| ৫২ যে (আন্চর্য হয়েই আমাকে) বলতো, তুমিও কি (কেয়ামত) বিশ্বাসীদের একজন? | ۵۲ يَّقُولُ إَنِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَرِّقِيْنَ |
| ৫৩. (তুমিও কি বিশ্বাস করো,) আমরা যখন মরে যাবো এবং যখন হাডিড ও মাটিতে পরিণত হয়ে যাবো, তখন (আমরা পুনরুখিত হবো এবং) আমাদের সবাইকে (আমাদের কাজকর্মের) প্রতিফল দেয়া হবে? | ٥٣ ءَاِذَا مِثْنَا وَكُنَّا تُوَابًا وَعِظَامًا ءَاِنَّا لَهَرِيْنُوْنَ |
| ৫৪. (এ সময় আল্লাহর পক্ষ থেকে ডাক আসবে, আচ্ছা) তোমরা কি একটু উঁকি দিয়ে (তোমাদের সে সাধীকে এক নযর) দেখতে চাওঃ | ۵۳ قَالَ مَلْ ٱنْتُرْ مُطَّلِعُونَ |
| ৫৫. অতপর সে (একটু ঝুঁকে) তাকে দেখতে পাবে, (সে রয়েছে) জাহান্নামের (ঠিক) মাঝখানে। | ٥٥ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِي سَوّاءِ الْجَحِيْرِ |
| ৫৬. (তাকে আযাবে জ্বলতে দেখে) সে বলবে, আল্লাহ তায়ালার কসম, (দুনিয়াতে) তুমি তো আমাকে প্রায় ধ্বংসই করে ফেলেছিলে, | ٥٦ قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كِنْتَ لَتُرْدِيْنِ لا |
| ৫৭. (আমার ওপর) আমার মালিকের অনুগ্রহ না ধাকলে আমিও আন্ধ (তোমার মতো আযাবে) গ্রেফতার করা এ (লোকদের) দলে শামিল থাকতাম। | ٥٤ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّى لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ |
| ৫৮. (হাাঁ, এখন তো) আমাদের আর মৃত্যু হবে না! | ۵۸ أَفَهَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ٧ |
| ৫৯. অবশ্য আমাদের প্রথম মৃত্যুর কথা আলাদা– (এখন তো) আমাদের (ঝার কোনো রক্ম) আযাবও দেয়া হবে না। | ٥٩ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُوْلَى وَمَا نَحْنُ بِمُعَنَّابِيْنَ |
| ·৬০. (সমস্বরে তারা সবাই বলবে,) অবশ্যই এটা হচ্ছে এক বড়ো ধরনের সাফল্য। | ٦٠ إِنَّ مَٰنَا لَمُوَ الْغَوْزُ الْعَظِيْرُ |
| ৬১. এ ধরনের (মহা সাফল্যের) জন্যে কর্ম সম্পাদনকারীদের অবশ্যই কাজ করে যাওয়া উচিত। | ٢١ لِمِثْلِ مِٰنَا مَلْيَعْمَلِ الْعُمِلُونَ |
| ৬২. (বলো তো! আল্লাহর বান্দাদের জন্যে) এ মেহমানদারী ভালো না (আমারে) যাক্কুম বৃক্ষ (ভালো)? | ٦٢ إَذْلِكَ غَيْرٌ نَّزُّكُّ أَمْ شَجَرَةٌ الزَّقُوْرِ |
| ৬৩. যালেমদের জন্যে আমি তা বিপদস্বরূপ বানিয়ে রেখেছি। | ٦٣ إِنَّا جَعَلْنُهَا فِتْنَةً لِّلظَّلِوِيْنَ |
| ৬৪. (মূলত) তা হচ্ছে এমন একটি গাছ, যা জাহান্লামের তলদেশ থেকে উদগত হয়, | ٢٢ إِنَّهَا شَجَرَةً تَخْرُجُ فِي ٓ أَمْلِ الْجَحِيْمِ لِا |
| ৬৫. তার ফলগুলো এমন (বিশ্রী), মনে হবে তা বুঝি (একেকটা) শয়তানের মাথা; | ٦٥ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيْطِيْنِ |
| ৬৬. (যারা জাহান্নামের অধিবাসী) তারা এ থেকেই ভক্ষণ করবে এবং এ দিয়েই তাদের পেট ভর্তি করবে; | ٢٦ فَالِّهُمْ لَأَكِلُوْنَ مِنْهَا فَهَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُوْنَ مِنْهَا الْبُلُوْنَ مِنْهَا الْبُلُوْنَ |
| ৬৭. অতপর তার ওপর ফুটম্ভ পানি (ও পুঁজ) মিলিয়ে তাদের (পান করার জন্যে) দেয়া হবে, | ٦٤ ثُمرَّ إِنَّ لَمُرْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَبِيْرٍ ع |
| ৬৮. তারপর নিসন্দেহে তাদের প্রত্যাবর্তনস্থাল হবে (অতলান্ত) জাহান্লামের দিকে। | ٢٨ ثُرَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَا إِلَى الْجَحِيْرِ |
| ৬৯. নিসন্দেহে তারা তাদের মাতাপিতাকে গোমরাহ হিসেবে পেয়েছে, | ٦٩ إِنَّهُمْ ٱلْفَوْا أَبَاءَهُمْ شَالِّينَ ٧ |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|----------|---|--|
| | ৭০. তারপরেও (নির্বিচারে) তারা তাদের (গোমরাহ পিতা মাতাদের) পদাংক অনুসরণ করে চলেছে। | ٥٠ فَهُر عَلَى الْرِهِر يَهْرَعُونَ |
| | ৭১. তাদের আগে (তাদের) পূর্ববর্তীদের অধিকাংশ লোকও (এভাবে) গোমরাহ হয়ে গিয়েছিলো, | ١ وَلَقَلَ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِيْنَ ٧ |
| | ৭২. তাদের মধ্যেও আমি সতর্ককারী (নবী) পাঠিয়েছিলাম। | ٢٢ وَلَقَلُ ٱرْسَلْنَا فِيْهِرْ كُنْلِ رِيْنَ |
| | ৭৩. অতএব (হে নবী,) তুমি একবার (চেয়ে) দেখো, যাদের (এভাবে) সতর্ক করা হয়েছিলো তাদের কী (ভয়াবহ) পরিণাম হয়েছে, | ٤٣ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُثْنَرِيْنَ لا |
| 7 | ৭৪. অবশ্য আল্লাহ তায়ালার নিষ্ঠাবান বান্দাদের কথা আলাদা (তারা আযাব থেকে একান্ত নিরাপদ)। | ٣٠ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْهُخْلَصِيْنَ ع |
| | ৭৫. (এক সময়) নৃহও (সাহায্য চেয়ে) আমাকে ডেকেছিলো, (তার জন্যে) কতো উত্তম সাড়াদানকারী (ছিলাম) আমি, | 40 وَلَقَلْ نَادُنَا نُوْحٌ فَلَنِعْرَ الْهُجِيْبُوْنَ الْمُعِيبُونَ الْمُعِيبُونَ الْمُعِيبُونَ الم |
| | ৭৬. তাকে এবং তার পরিবার পরিজনদের আমি এক মহাসংকট থেকে উদ্ধার করেছি, | ٢٦ وَنَحَّيْنُهُ وَاهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْرِ رصا |
| | ৭৭. তারই বংশধরদের আমি (দুনিয়ার বুকে) অবশিষ্ট রেখে দিয়েছি, | ٤٤ وَهَعَلْنَا نُرِيَّتَنَا مُر الْبِقِيْنَ رصه |
| | ৭৮. অনাগত মানুষদের মাঝে আমি তার (উত্তম) স্বরণ অব্যাহত রেখেছি, | ٨ و و تَركنا عَلَيْهِ فِي الْأَخِرِيْنَ رَاءِ |
| | ৭৯. সৃষ্টিকুলের মাঝে নৃহের ওপর সা লাম বর্ষিত হোক । | 49 سَلْرٌ عَلَى نُوْحٍ فِي الْعُلَمِيْنَ |
| | ৮০. অবশ্যই আমি এভাবে সৎকর্মপরায়ণদের পুরস্কৃত করি। | ٨٠ إِنَّا كَنْ لِكَ نَجْزِي الْهُ حُسِنِيْنَ |
| | ৮১. নিসন্দেহে সে ছিলো আমার মোমেন বান্দাদের অন্যতম। | ٨١ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ |
| ٤ | ৮২. অতপর (তার জাতির) অবশিষ্ট (কাফের) সকলকে আমি (বন্যার পানিতে) ডুবিয়ে দিয়েছি। | ٨٢ ثُمرًّ ٱغْرَقْنَا الْأَغْرِيْنَ |
| () () | ৮৩. নূহের (পথ অনুসারী) দলের মাঝে ইবরাহীমও ছিলো একজন। | ٨٣ وَإِنَّ مِنْ شِيْعَتِهِ كَإِبْرُهِيْرَ ر |
| 7 180 | ৮৪. যখন সে বিশুদ্ধ মনে তার মা লিকের কাছে হাযির হরেছিলো। | ٨٢ إِذْ جَاءَ رَبَّدٌ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ |
| ١ | ৮৫. যখন সে তার পিতা ও তার জাতিকে জিজ্ঞেস করেছিলো (হায়)! তোমরা (সবাই এসব) কিসের পূজা করছো? | ٨٥ إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُنُوْنَ عَ |
| | ৮৬. তোমরা কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে মনগড়া মাবুদদেরই (পেতে) চাওঃ | ٨٦ أَنِفْكًا أَلِهَةً دُوْنَ اللَّهِ تُرِيْكُوْنَ ا |
| | ৮৭. (বলো,) এ সৃষ্টিকুলের মালিক সম্পর্কে তোমাদের ধারণা কী? | ٨٠ فَهَا ظَنَّكُمْ بِرَبِّ الْعُلَمِيْنَ |
| | ৮৮. অতপর সে একবার (সত্যের সন্ধানে) তারকারাজ্ঞির দিকে তাকালো, | ٨٨ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النَّجُوْ إِ لا |
| | ৮৯. অতপর বললো, সত্যিই আমি <mark>অসুস্থ।</mark> | ٨٩ فَقَالَ إِنِّيْ سَقِيْرٌ |
| | ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মুন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | |
|--|---|
| | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
| ৯০. (অতপর) লোকেরা (তার থেকে নিরাশ হয়ে) সবাই চলে গেলো। | ٩٠ فَتَوَلُّوا عَنْهُ مُنْ بِرِيْنَ |
| ৯১. পরে সে (চুপি চুপি) তাদের দেবতাদের (মন্দিরের) কাছে গেলো এবং (দেবতাদের প্রতি তামাশাচ্ছলে) বললো, কি ব্যাপার (এতো প্রসাদ এখানে পড়ে আছে), তোমরা খাচ্ছো না যে! | ٩١ فَرَاغَ إِلَّى أَلِهَتِهِرْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُوْنَ عَ |
| ৯২. এ কি হলো তোমাদের, তোমরা কি কথাও বলো নাঃ | ٩٢ مَا لَكُرْ لَا تَنْطِقُونَ |
| ৯৩. অতপর সে ওদের ওপর সবলে আঘাত হানলো। | ٩٣ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا ٰ بِالْيَهِيْنِ |
| ৯৪. (লোকেরা যখন এটা শুনলো) তখন তারা দৌড়াতে দৌড়াতে তার দিকে ছুটে এলো। | ٩٣ فَٱقْبَلُوْا إِلَيْهِ يَزِقُّوْنَ |
| ৯৫. (তাকে এ বিষয়ে জিজ্ঞেস করলে) সে বললো, তোমরা কি এমন কিছুর পূজা করো, যাদের তোমরা নিজেরাই (পাথর) খোদাই করে নির্মাণ করো, | ٩٥ قَالَ أَتَعْبُرُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ٧ |
| ৯৬. অথচ আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের সৃষ্টি করেছেন এবং (সৃষ্টিকরেছেন) তোমরা যা কিছু (মানুদ) বানাও তাদেরও। | ٩٦ وَ اللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ |
| ৯৭. (এ কথা শুনে) তারা (একজন আরেকজনকে) বললো, তার জন্যে একটি অগ্নিকুন্ত প্রস্তুত করো (এবং তাতে আশুন জ্বালাও), অতপর (সে) জ্বলন্ত আশুনে তাকে নিক্ষেপ করো। | 94 قَالُوا ابْنُوْا لَهُ بُنْيَانًا فَٱلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْرِ الْجَحِيْرِ |
| ৯৮. তারা (এর মাধ্যমে আসলে) তার বিরুদ্ধে একটা ষড়যন্ত্র আঁটতে চেয়েছিলো, কিন্তু আমি তাদের (চক্রান্ত ব্যর্থ ও) হীন করে দিলাম। | ٩٨ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْنًا فَجَعَلْنُهُمُّ الْأَشْفَلِيْنَ |
| ৯৯. এবার সে বললো, আমি এবার আমার মালিকের (রান্তার) দিকে বেরিয়ে পড়লাম, (আমি বিশ্বাস করি) অবশ্যই তিনি আমাকে সঠিক পথে পরিচালিত করবেন। | ٩٩ وَقَالَ إِنِّي ۚ ذَاهِبُّ إِلَى رَبِّي سَيَهْدِيْنِ |
| ১০০. (অতপর সে আল্পাহ তায়ালার দরবারে দোয়া করলো,) হে আমার মালিক, আমাকে তুমি একজন নেক সন্তান দান করো। | ١٠٠ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصَّلِحِيْنَ |
| ১০১. এরপর আমি তাকে একজন ধৈর্যশীল পুত্রের সুসংবাদ দিলাম। | ١٠١ فَبَشَّوْنُهُ بِغُلْمٍ حَلِيْمٍ |
| ১০২. সে যখন তার (পিতার) সাথে দৌড়াদৌড়ি করার মতো (বয়সের) অবস্থায় উপনীত হলো, তখন সে (ছেলেকে) বললো, হে বংস, আমি স্বপ্নে দেখি, আমি | ١٠٢ فَلَهًا بَلَغَ مَعَدُ السَّعْيَ قَالَ يُبُنَى ۗ إِنِّيَ |
| (যেন) তোমাকে যবাই করছি, (বলো এ ব্যাপারে) তোমার অভিমত কি? (য়ণ্ণের ক্ষান্তন) সে বললো, হে আমার | اَرٰی فِی الْهَنَا اِ اَنِّیْ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی م قَالَ یَآبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ر |
| (স্নেহপরায়ণ) আব্বাজান, আপনাকে যা আদেশ করা হয়েছে আপনি (অবিলম্বে) তা পালন করুন, ইনশাআল্লাহ আপনি আমাকে (এ সময়েও) ধৈর্যশীলদের মাঝে পাবেন। | ترى ، قال يابت افعل ما نؤمر ز سَنَجِرُنِي إِنْ شَاءُ اللهُ مِنَ الصَّبِرِيْنَ |
| ১০৩. অতপর যখন তারা (পিতাপুত্র) দুজনই (আল্লাহ তায়ালার ইচ্ছার সামনে) আত্মসমর্পণ করলো এবং সে তাকে (যবাই করার উদ্দেশে) কাত করে শুইয়ে দিলো, | ١٠٣ فَلَهَّ ٱسْلَهَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِيْنِ ٤ |
| ১০৪. তখন আমি তাকে ডাক দিয়ে বললাম, হে ইবরাহীম, | ١٠٣ وَنَادَيْنُهُ أَنْ يَا بِرُهِيْرُ ٧ |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|--|
| ১০৫. তুমি (আমার দেখানো) স্বপ্ন সত্য প্রমাণ করেছো, (আমি তোমাদের উভয়কেই মর্যাদাবান করবো, মূলত) আমি এভাবেই সংকর্মশীল মানুষদের পুরস্কার দিয়ে থাকি! | ١٠٥ قَنْ صَنَّقْتَ الرَّعْيَاجِ إِنَّا كَنَٰلِكَ نَجْزِي |
| ১০৬. এটা ছিলো (তাদের উভয়ের জন্যে) একটা সুস্পষ্ট পরীক্ষা মাত্র! | ١٠٦ إِنَّ مٰنَا لَهُوَ الْبَلُّؤُ الْمُبِيْنُ |
| ১০৭. (এ কারণেই) আমি তার (ছেলের) পরিবর্তে (আমার নিজের পক্ষ থেকে) একটা বড়ো কোরবানী (-র জন্তু সেখানে) দান করলাম। | ١٠٤ وَفَنَيْنَاهُ بِنِ بُحِ عَظِيْرٍ |
| ১০৮. (অনাগত মানুষদের জন্যে এ বিধান চালু রেখে) তার স্বরণ আমি অব্যাহত রেখে দিলাম। | ١٠٨ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْأَخِرِيْنَ سِه |
| ১০৯. শান্তি বর্ষিত হোক ইবরাহীমের ওপর। | ١٠٩ سَلْرٌ عَلَى إِبْرُهِيْرَ |
| ১১০. এভাবেই আমি (আমার) নেক বান্দাদের পুরস্কার দিয়ে থাকি! | ١١٠ كَلْٰلِكَ نَجُزِى الْهُحُسِنِيْنَ |
| ১১১. অবশ্যই সে ছিলো আমার মোমেন বান্দাদের একজন। | ١١١ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ |
| ১১২. (কিছুদিন পর) আমি তাকে (এ মর্মে) ইসহাকের (জন্মের) সুসংবাদ দান করলাম যে, সে (হবে) নবী ও আমার নেক বান্দাদের একজন। | ١١٢ وَبَشَّرْنُهُ بِإِسْعُقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّلِحِيْنَ |
| ১১৩. আমি তার ওপর (ও তার সম্ভান) ইসহাকের ওপর আমার (অগণিত) বরকত নাযিল করেছি; তাদের উভয়ের বংশধরদের মাঝে কিছু সংকর্মশীল মানুষ (যেমন) আছে, (তেমনি) আছে কিছু না-ফরমান, যারা নিজেদের ওপর নিজেরা যুলুম করে স্পষ্ট অত্যাচারী (হয়ে বসে আছে)! | ال وَبْرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَى اِسْحُقَ ﴿ وَمِنْ السَّحَقَ ﴿ وَمِنْ لَا يَتَهِمَا مُحْسِنً وَظَالِر لِنَفْسِهِ مُبِيْنً ع |
| ১১৪. আমি মৃসা ও হারুনের ওপর (অনেক) অনুগ্রহ করেছি, | ١١٣ وَلَقَنْ مَنَنَّا عَلَى مُوسَى وَهُرُونَ عَ |
| ১১৫. আমি তাদের দুজনকে ও তাদের জাতিকে বড়ো (রকমের এক) সংকট থেকে উদ্ধার করেছি, | ١١٥ وَنَجَّيْنُهُمَا وَقُوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْرِ ع |
| ১১৬. আমি (ফেরাউনের মোকাবেলায়) তাদের (প্রভৃত) সাহায্য করেছি, ফলে (এক গর্মান্ত) তারা বিজয়ীও হয়েছে, | ١١٦ وَنَصَرُنُهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغُلِبِيْنَ ٤ |
| ১১৭. আমি তাদের উভয়কে বিশদ গ্রন্থ (তাওরাত) দান করেছি, | ١١٤ وَاٰتَيْنُهُمَا الْكِتْبَ الْهُسْتَبِيْنَ ع |
| ১১৮. (এর মাধ্যমে) তাদের উভয়কে আমি (দ্বীনের) সহজ পথ বাতলে দিয়েছি, | ١١٨ وَهَنَ يُنْهُمَا الصِّرَاطَ الْهُسْتَقِيْرَ ع |
| ১১৯. আমি অনাগত মানুষদের মাঝে তাদের উত্তম স্বরণ অব্যাহত রেখেছি, | ١١٩ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْأُخِرِيْنَ ٧ |
| ১২০. সালাম বর্ষিত হোক মৃসা ও হারুনের ওপর। ———————————————————————————————————— | ١٢٠ سَلْرٌ عَلَى مُوْسَى وَهُرُونَ |
| ১২১. অবশ্যই আমি নেককার লোকদের এভাবে পুরস্কার দিয়ে থাকি! | ١٢١ إِنَّا كَنْ لِكَ نَجْزِي الْهُحْسِنِيْنَ |
| ১২২. (মূলত) এরা দুজনই ছিলো আমার মোমেন বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত। | ا ١٢٢ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |



| কোর্যান ম্বীফ স্কুচ্ছ স্বল বাংলা জনবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | |
| ১২৩. (আমার বান্দা) ইলিয়াসও ছিলো রস্লদের একজন; | ١٢٣ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ا |
| ১২৪. যখন সে তার জাতিকে (ডেকে) বলেছিলো, তোমরা কি আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করবে নাঃ | ١٢٣ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ۖ أَلَا تَتَّقُونَ |
| ১২৫. তোমরা কি 'বা'ল' দেবতাকেই ডাকতে থাকবে, | ١٢٥ أَتَنْ عُونَ بَعْلًا وَّتَنَرُونَ أَحْسَنَ |
| (আল্লাহ তায়ালা-) যিনি শ্রেষ্ঠ স্রষ্টা, তাঁকে (এভাবেই) | (^nu< î |
| পরিত্যাগ করবে? | الْخَالِقِيْنَ لا |
| ১২৬. আল্লাহ তায়ালা– যিনি তোমাদের মালিক, মালিক তোমাদের পূর্ববর্তী বাপ দাদাদেরও। | ١٢٦ اللهَ رَبَّكُر ورَبَّ أَبَالِكُر الْأَوَّلِينَ |
| ১২৭. কিন্তু তারা তাকে মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করলো, কাজেই অতপর তাদের অবশ্যই (দন্ত ভোগ করার জন্যে) হাযির করা হবে, | ١٣٧ فَكُنْ بُوهُ فَإِنَّهُمْ لَهُ حَضُرُونَ ٧ |
| ১২৮. তবে আল্লাহ তায়ালার নিষ্ঠাবান বান্দাদের কথা আলাদা। | ١٢٨ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْهُخُلَصِيْنَ |
| ১২৯. আমি অনাগত মানুষদের মধ্যে তার উত্তম স্বরণ বাকী রেখে দিয়েছি, | ١٢٩ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْأَخِرِيْنَ لا |
| ১৩০. সালাম বর্ষিত হোক ইলিয়াস (-পন্থী নেক বান্দা)-দের ওপর। | ١٣٠ سَلْرٌ عَلَى إِلْ يَاسِيْنَ |
| ১৩১. (তাদের শ্বরণ অব্যাহত রেখে) আমি এভাবেই | - A A A A = |
| সংকর্মপরায়ণ মানুষদের পুরস্কার দিয়ে থাকি! | ١٣١ إِنَّا كَنْ لِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ |
| ১৩২. অবশ্যই সে ছিলো আমার নেক বান্দাদের মধ্যে | ١٣٢ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ |
| একজন। | |
| ১৩৩. নিসন্দেহে লৃতও ছিলো রসূলদের একজন; | ١٣٣ وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ الْمُرْسَلِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ |
| ১৩৪. যখন আমি তাকে এবং তার সকল পরিবার পরিজনকে (একটি পাপী সম্প্রদায়ের ওপর আগত আযাব থেকে) উদ্ধার করেছি, | ١٣٣ إِذْ نَجِينَهُ وَ أَهْلَهُ ۖ أَجْمَعِينَ لا |
| ১৩৫. একজন বৃদ্ধা মহিলা বাদে, (কেননা) সে ছিলো পেছনে পড়ে থাকা ধাংসপ্রাপ্ত লোকদেরই অন্তর্ভুক্ত। | ١٣٥ إِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغَيِرِيْنَ |
| ১৩৬. অতপর অবশিষ্ট সবাইকে আমি বিনাশ করে দিয়েছি। | ١٣٦ ثُرُّ دَمُّوْنَا الْأَخَرِينَ |
| ১৩৭. তোমরা তো (ভ্রমণের সময়) তাদের সে | |
| (ধাংসাবশেষ)-গুলোর ওপর দিয়েই ভোর বেলায় (পথ) অতিক্রম করে থাকো, | ١٣٧ وَإِنَّكُمْ لَتُمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِعِينَ ٧ |
| ১৩৮. (অভিক্রম করো) প্রতি (সন্ধ্যা ও) রাতের বেলায়; তবুও | ١٣٨ وَبِالَّيْلِ مَ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ع |
| কি তোমরা (এ ঘটনা থেকে) কিছু শিক্ষা গ্রহণ করবে নাঃ | ۱۰ ۱۱ وټانين ۱۰ اندو سښون ع |
| ১৩৯. ইউনুসও ছিলো রস্লদের একজন; | ١٣٩ وَإِنَّ يُونُسَ لَهِنَ الْمُرْسَلِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ الْمُوسَالِيْنَ |
| ১৪০. (এটা সে সময়ের কথা) যখন সে পালিয়ে গিয়ে একটি (মাল)-ভর্তি নৌযানে পৌছুলো, | ١٣٠ إِذْ اَبَقَ إِلَى الْغُلْكِ الْمَشْحُونِ لِا |
| ১৪১. (নৌকাটি অচল হয়ে যাওয়ায়) আরোহীদের মাঝে | ١٣١ فَسَاهَرَ فَكَانَ مِنَ الْهُلْمَضِيْنَ ج |
| এ অলক্ষ্ণে ব্যক্তি কে, (অতপর) লটারির মাধ্যমে তা | ، ، ، مدعور عدق بن ، من _ريق ع |
| পরীক্ষা করা হলো এবং (ফলাফল অনুযায়ী) সে (ইউনুসই অলক্ষুণে) অপরাধী সাব্যস্ত হলো, | |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মनयिन ७ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|---|--|
| ১৪২. অতপর একটি (বড়ো আকারের) মাছ এসে তাকে গিলে ফেললো, এ অবস্থায় সে (মাছের পেটে বসে) নিজেকে ধিক্কার দিতে লাগলো। | ١٣٢ فَالْتَقَهَّهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْرً |
| ১৪৩. যদি সে (তখন) আল্পাহ তায়ালার পবিত্রতা ও মাহাত্ম্য ঘোষণা না করতো, | ١٣٣ فَلَوْكَ ۖ أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْهُسَيِّحِيْنَ لا |
| ১৪৪. তাহলে তাকে তার পেটে কেয়ামত পর্যন্ত কাটাতে হতো! | ١٣٣ لَلَبِيهَ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْ إِ يُبْعَثُونَ عَ |
| ১৪৫. অতপর আমি তাকে (মাছের পেট থেকে বের করে) একটি গাছপালাহীন প্রান্তরে নিক্ষেপ করলাম, (এ সময়) সে অসুস্থ হয়ে পড়েছিলো, | ١٣٥ فَنَبَنْنُهُ بِالْعَرِّاءِ وَهُوَ سَقِيْدٌ ج |
| ১৪৬. (সেখানে) তার ওপর (ছায়া দান করার জন্যে) আমি একটি (লতাবিশিষ্ট) লাউ গাছ উদগত করলাম, | ١٣٦ وَ أَثَبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرةً مِّنْ يَقْطِينٍ ع |
| ১৪৭. অতপর তাকে আমি এক লক্ষ লোকের (জনবসতির) কাছে (নবী বানিয়ে) পাঠালাম; বরং এ সংখ্যা (অন্য হিসেবে ছিলো) আরো বেশী, | ١٣٤ وَأَرْسَلْنَهُ إِلَى مِائَةِ ٱلْفِ أَوْ يَزِيْدُونَ |
| ১৪৮. এরপর তারা (তার ওপর) ঈমান আনলো, ফলে আমিও তাদের একটি (সুনির্দিষ্ট) সময় পর্যস্ত জীবনোপভোগ করতে দিলাম; | ١٣٨ فَأُمَنُوا فَهَتَّعْنَهُمْ إِلَى حِيْنِ |
| ১৪৯. (হে নবী,) এদের তৃমি জিজ্জেস করো, তারা কি মনে করে, তোমাদের মালিকের জন্যে রয়েছে কন্যা সম্ভান আর তাদের জন্য রয়েছে (সব) পুত্র সম্ভান? | ١٣٩ فَاسْتَفْتِهِرْ ٱلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُرُ الْبَنُوْنَ لا |
| ১৫০. আমি কি কেরেশভাদের মহিলা করেই বানিয়েছিলাম এবং (বানাবার সময়) তারা কি সেখানে উপস্থিত ছিলোঃ | ١٥٠ أَمْ مَلَقْنَا الْمَلَّذِكَةَ إِنَاقًا وَّمُرْ هَاهِنُونَ |
| ১৫১. সাবধান, তারা কিন্তু এসব কথা নিজেরা নিজেদের মন থেকেই বানিয়ে বলে, | ١٥١ أَلَآ إِنَّهُرْ مِّنْ إِفْكِهِرْ لَيَقُوْلُونَ ٧ |
| ১৫২. আল্লাহ তায়ালা সন্তান জন্ম দিয়েছেন, (আসলে) ওরা হচ্ছে (সুম্পষ্ট) মিধ্যাবাদী। | ١٥٢ وَلَنَ اللَّهُ لا وَإِنَّكُمْ لَكُنْ بُوْنَ |
| ১৫৩. আল্লাহ তায়ালা কি (ছেলেদের ওপর অগ্রাধিকার দিয়ে নিজের জন্যে) কন্যা সস্তানদের পছন্দ করেছেনঃ | ١٥٣ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ١ |
| ১৫৪. এ কি (হলো) তোমাদের কেমন (অর্থহীন) সিদ্ধান্ত করছো তোমরা | ١٥٣ مَا لَكُرْ سَ كَيْفَ تَحْكُبُونَ |
| ১৫৫. তোমরা কি (কখনোই কোনো) সদুপদেশ গ্রহণ করবে নাঃ | ١٥٥ أَفَلَا تَنَكَّرُونَ ع |
| ১৫৬. অথবা আছে কি (এর পক্ষে) তোমাদের কাছে কোনো সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণঃ | ١٥٦ أَمْ لَكُر سُلْطَى مُبْيِينَ ٧ |
| ১৫৭. (থাকলে) তোমরা তোমাদের (সে) কেতাব নিয়ে এসো, যদি তোমরা সত্যবাদী হও! | ١٥٤ فَٱتُوا بِكِتٰبِكُر إِنْ كُنْتُر صٰ ِقِيْنَ |
| ১৫৮. এ লোকেরা আল্লাহ তায়ালা ও জ্বিন জাতির মধ্যে একটা সম্পর্ক স্থির করে রেখেছে; অথচ জ্বিনেরা জানে, অন্যু বান্দাদের মতোই তারা আল্লাহ তায়ালার আদেশের | ١٥٨ وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا طَ وَلَقَنْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّمُرْ لَهُحْضَرُونَ ٧ |
| অধীন এবং তাদের মধ্যে যারা বদকার তাদের অবশ্যই (শান্তির জন্যে) একদিন উপস্থিত করা হবে। | |
| ১৫৯. এরা (আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে) যেসব (বেহুদা) কথাবার্তা বলে, আল্লাহ তায়ালা তা থেকে পবিত্র ও মহান, | 109 سُبْعِٰنَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٧ |
| ৩৭ সূরা আছ ছাফফাত | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|---|--|
| ১৬০. তবে (হাঁ), যারা আল্লাহ তায়ালার নিষ্ঠাবান বান্দা তারা আলাদা। | ١٦٠ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِيْنَ |
| ১৬১. অতএব (হে কাফেররা), তোমরা এবং তোমরা যাদের গোলামী করো, | ١٦١ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ لا |
| ১৬২. (সবাই মিলেও) তাদের (আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে) বিভ্রান্ত করতে পারবে না, | ١٦٢ مَا ۖ أَنْتُرُ عَلَيْهِ بِغَاتِنِيْنَ ٧ |
| ১৬৩. তোমরা কেবল তাদেরই গোমরাহ করতে পারবে, যারা জাহান্নামের অধিবাসী। | ١٦٣ إِلَّا مَنْ هُوَ مَالِ الْجَحِيْرِ |
| ১৬৪. (ফেরেশতাদের কথা স্বতন্ত্র, কেননা তারা বলেছিলো,) আমাদের মধ্য থেকে প্রত্যেকের জন্যে একটি নির্ধারিত (পবিত্র) স্থান রয়েছে, | ١٦٢ وَمَا مِنَّا إِلَّا لَدَّ مَقَامًا مَّعْلُومًا لِا |
| ১৬৫. আমরা তো (আল্লাহ তায়ালার সামনে) সারিবদ্ধভাবে দভায়মান থাকি, | ١٦٥ وَّإِنَّا لَنَحْنُ الصَّانُّونَ ع |
| ১৬৬. এবং (সদা সর্বদা) আমরা তাঁর পবিত্রতা ও মাহাত্ম্য ঘোষণা করি। | ١٦٦ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْهُسَبِّحُونَ |
| ১৬৭. এসব লোকেরাই (কোরআন নাযিলের আগে) বলতো, | ١٦٤ وَإِنْ كَانُوْا لَيَقُولُوْنَ ٧ |
| ১৬৮. পূর্ববর্তী লোকদের কেতাবের মতো যদি আমাদের (কাছেও কোনো) উপদেশ (গ্রন্থ) থাকতো, | ١٦٨ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّ لِيْنَ لا |
| ১৬৯. তাহলে (তার বদৌলতে) আমরাও আল্লাহ তায়ালার নিষ্ঠাবান বান্দা হয়ে যেতাম। | ١٦٩ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْهُخْلَصِيْنَ |
| ১৭০. অতপর (যখন তাদের কাছে আল্লাহর কেতাব এলো), তখন তারা তা অস্বীকার করলো, অচিরেই তারা (এ আচরণের পরিণাম) জানতে পারবে। | ١٤٠ فَكَفَرُّوا بِهِ فَسَوْنَ يَعْلَمُونَ |
| ১৭১. আমার (খাস) বান্দা রস্লদের ব্যাপারে আমার এ কথা সত্য হয়েছে, | ا ١٤١ وَلَقَلْ سَبَقَتْ كَلِمُتَّنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ عَدِ |
| ১৭২. তারা অবশ্যই সাহায্যপ্রাপ্ত হবে, | ١٤٢ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ مَ |
| ১৭৩. এবং আমার বাহিনীই (সর্বশেষে) বিজয়ী হবে। | ١٤٣ وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُرُ الْغَلِبُونَ |
| ১৭৪. অতএব (হে নবী), কিছু কালের জন্যে তুমি এদের উপেক্ষা করো, | ١٤٣ فَتَوَلَّ عَنْهُر مَتَّى حِيْنٍ لا |
| ১৭৫. তুমি তাদের অবস্থা পর্যবেক্ষণ করতে থাকো, অচিরেই তারা (বিদ্রোহের পরিণাম) দেখতে পাবে। | ١٤٥ و أَبْصِرْهُمْ فَسَوْنَ يُبْصِرُونَ |
| ১৭৬. এরা কি (তাহলে) সত্যিই আমার আযাব ত্রানিত করতে চায়? | ١٤٦ أَفَبِعَلَ ابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ |
| ১৭৭. (এর আগে) যাদের (এভাবে) সতর্ক করা হয়েছিলো তাদের আঙ্গিনায় যখন শাস্তি নেমে এলো, তখন (গযব নাযিলের সে) সকালটা তাদের জন্যে কতো | ١٤٧ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِر فَسَاءً مَبَاحُ الْهُنْنَوِيْنَ ٧ |
| মন্দ ছিলো! ১৭৮. অতএব (হে নবী), কিছুকালের জন্যে তুমি এদের | ۱۷۸ وَتُوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّى حِين |
| উপেক্ষা করো, ১৭৯. তুমি (শুধু) ওদের পর্যবেক্ষণই করে যাও, শীঘ্রই | المر و المر المر المرود |
| ওরা (সভা প্রত্যাখ্যানের) পরিণাম (নিজেরাই) প্রত্যক্ষ করবে। ত৭ সূরা আছ ছাফফাত | |
| च । भूग जार राजकार | মনযিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|---|
| ১৮০. পবিত্র তোমার মালিকের মহান সন্তা, তারা (তাঁর সম্পর্কে) যা কিছু (অর্থহীন) কথাবার্তা বলে, তিনি তা থেকে পবিত্র (অনেক বড়ো, সকল ক্ষমতার একক অধিকারী), | ١٨٠ سُبُحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِغُوْنَ عَ |
| ১৮১. (অনাবিল) শান্তি বর্ষিত হোক রসূলদের ওপর, | ١٨١ وَسَلْمٌ عَلَى الْمُوْسَلِيْنَ ع |
| ১৮২. সমস্ত প্রশংসা (নিবেদিত) সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার জন্যে। | ١٨٢ وَالْحَمْنُ لِلَّهِ رَبِّ الْعُلَمِيْنَ ع |
| সূরা সোয়াদ | سُورَةً صَ مَكِيَّةً |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৮৮, রুকু ৫ | أَيَاتٌ : ٨٨ رُكُوْعٌ : ٥ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ |
| সোয়াদ, উপদেশভরা (এ) কোরআনের শপথ (তুমি অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার একজন রস্ল); | ا ص وَالْقُرَاٰنِ ذِي النِّكْرِ ، |
| ২. কিন্তু কাফেররা (এ ব্যাপারে) ঔদ্ধত্য ও গোঁড়ামিতে (ডুবে) আছে। | ٢ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ |
| ৩. এদের আগে আমি কতো জনপদকে ধ্বংস করে দিয়েছি, (আযাব আসার পর) তারা (সাহায্যের জন্যে) আর্তনাদ করেছে, কিন্তু সে সময় তাদের পালানোর | ٣ كَرْ آهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِرْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادُوْ ا |
| কোনো উপায় ছিলো না। | وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاسِ |
| ৪. এরা এ কথার ওপর আশ্চর্যবোধ করেছে যে, তাদের কাছে তাদেরই মাঝ থেকে একজন সতর্ককারী (নবী) | ٣ وَعَجِبُوْ آ أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَ وَقَالَ |
| এলো, (নবীকে দেখে) কাফেররা বললো, এ হচ্ছে একজন যাদুকর, মিথ্যাবাদী, | الْكُفِرُوْنَ مَنَا سُحِرْ كَنَّابٌ عَلَيْ |
| ৫. সে কি অনেক মাবুদকে একজন মাবুদ বানিয়ে নিয়েছে? এটা তো এক আশ্চর্যজনক ব্যাপার ছাড়া কিছুই নয়। | ٥ أَجَعَلَ الْأَلِهَةَ إِلْمًا وَّاحِدًا ع إِنَّ مٰنَ ا لَشَيْءٌ عُجَابً |
| ৬. তাদের সর্দাররা এই বলে (মজলিস) থেকে সরে পড়লো, যাও, তোমরা তোমাদের দেবতাদের | ٢ وَانْطَلَقَ الْمَلَا مِنْهُمْ أَنِ امْشُواْ وَاصْبِرُواْ |
| (এবাদাতের) ওপরই ধৈর্য ধারণ করো, নিন্চয়ই এর (দাওয়াতের) মধ্যে কোনো অভিসন্ধি (লুকানো) রয়েছে। | عَلَى المِّتِكُمْ اللَّهِ إِنَّ هٰذَا لَشَىٰءٌ يُّرَادُ عِلَى |
| ৭. আমরা তো এসর কথা আগের বিধান (খৃক্টবাদ)-এর মধ্যে শুনিওনি, (আসলে) এ একটি মনগড়া উক্তি ছাড়া আর কিছুই নয়, | 4 مَا سَيِعْنَا بِهٰنَا فِي الْيِلَّةِ الْأَخِرَةِ لَا إِنْ هٰنَآ إلَّا الْمَتِلَاقُ عليه |
| ৮. আমাদের মধ্যে সে-ই কি একমাত্র ব্যক্তি, যার ওপর উপদেশসমূহ নাযিল হলো; (মূলত) ওরা তো আমার (নাযিল করা) উপদেশ (এ কোরআন)-এর ব্যাপারেই সন্দিহান, (আসলে) তারা (তখনও) আমার আযাবের স্বাদ আস্বাদনই করেনি; | أَنْزِلَ عَلَيْهِ النِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ، بَلْ هُرْ فِي شَكِّ مِّنْ ذِكْرِى ۚ بَلْ لَيَّا يَنُ وْقُوا عَنَ اللَّا يَالَ وَقُوا عَنَ اللَّا يَالَ وَقُوا عَنَ اللَّهَ عَنَ اللَّهُ عَنَ اللَّهُ عَنَ اللَّهُ عَنَ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنَ اللَّهُ عَنَ اللَّهُ عَنَ اللَّهُ عَنْ عَلَيْ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَنْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَيْ عَلَى عَلَيْ عَلَى عَلَى عَلَيْ عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَيْ عَلَى اللّهُ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَيْ عَلَى عَلَيْ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَيْ عَلَى عَلَيْكُوا عَلَى عَلَى عَلَيْكُوا عَلَى عَلَى عَلَيْكُوا عَلَى عَلَيْعِلَى عَلَى عَلَيْكُمْ عَلَى عَلَى عَلَيْكُوا عَلَى عَلَيْكُ عَلَيْكُوا عَلَى عَلَيْكُوا عَلَى عَلَى عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَ |
| ৯. (হে নবী,) তাদের কাছে কি তোমার মালিকের অনুর্থহের ভাভার পড়ে আছে, যিনি মহাপরাক্রমশালী ও মহান দাতা, | 9 أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَانِيُّ رَهْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَمَّابِء |
| ১০. আসমানসমূহ ও যমীনের মধ্যবর্তী সমস্ত কিছুর (ওপর) আছে কি তাদের কোনো সার্বভৌমত্বং থাকলে | ١٠ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا |
| তারা সিঁড়ি লাগিয়ে আসমানে আরোহণের ব্যবস্থা করুক। | بَيْنَهُمَا مَا فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْأَسْبَابِ |
| ৩৮ সূরা সোয়াদ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|---|---|
| ১১. অন্য বহু বাহিনীর মতো এ বাহিনীও পরাজিত হবে। | ١١ جُنْلٌ مَّا مُنَالِكَ مَهْزُواً مِّنَ الْأَهْزَابِ |
| ১২. এদের পূর্বেও রস্লদের (এভাবে) মিথ্যাবাদী বলেছিলো নৃহ, আদ ও কীলক বিশিষ্ট ফেরাউনের | ١٢ كَنَّ بَتَ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُوحٍ وَّعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو |
| জাতি, | الْاَوْتَادِ ٧ |
| ১৩. সামৃদ, লৃত সম্প্রদায় এবং বনের অধিবাসীরাও; (তারা তাদের স্ব স্ব নবীকে মিথ্যাবাদী বানিয়েছে, প্রভাব প্রতিপন্তির দিক থেকে বড়ো বড়ো) দল তো ছিলো | ال وَتَهُوْدُ وَقَوْمُ لُوْمٍ وَآمَعُبُ لَئَيْكَةِ مَ الْمَالَةِ مَ الْمَالِكَ الْمَاكِةِ مَا الْمَاكِةِ مَا الْمَاكِةِ الْمُعْلَمِ الْمَاكِةِ الْمُعْلَمِ الْمَاكِةِ الْمُعْلَمِ الْمَاكِةِ الْمُعْلَمِ اللَّهِ الْمُعْلَمِ الْمَاكِةِ الْمُعْلَمِ الْمُعْلَمِ اللَّهِ الْمُعْلَمِ اللَّهِ الْمَاكِةِ الْمُعْلَمِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ ال |
| সেগুলোই। ১৪. ওদের প্রত্যেকেই রসূলদের মিথ্যাবাদী বলেছে, ফলে আমার (আ্যারে) ক্ষ্যালা (ওদের ওপর) প্রযোজ্য হয়ে গোলো। | ١٣ إِنْ كُلُّ إِلَّا كَنَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ع |
| ১৫. এরা অপেক্ষা করছে এক মহা গর্জনের, (আর) তখন কারো কিন্তু কোনো অবকাশ থাকবে না। | اهُ وَمَا يَنْظُرُ مَّؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِنَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ |
| ১৬. এ (নির্বোধ) লোকেরা বলে, হে আমাদের মালিক, হিসাব কেতাবের দিনের আগেই আমাদের পাওনা তুমি মিটিয়ে দাও! | ١٦ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ |
| ১৭. (হে নবী,) এরা যেসব কথাবার্তা বলে, তুমি এর ওপর ধৈর্য ধারণ করো এবং (এ জন্যে) আমার শক্তিমান বান্দা দাউদকে হারণ করো, সে ছিলো আমার প্রতি নিবিষ্ট। | ا اِشْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْنَنَا دَاوَدَ ذَا الْإَيْنِ عَ إِنَّهُ أَوَّابً |
| ১৮. আমি পর্বতমালাকে তার বশীভূত করে দিয়েছিলাম, (তাই) এগুলোও সকাল সন্ধ্যায় তার সাথে (সাথে) আমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতো, | ١٨ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَيِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ لا |
| ১৯. (অনুরূপ) পাখীকুলকেও (তার বলীভূত করে দিয়েছিলাম), তারা (তার পাশে) জড়ো হতো, (এদের) সকলেই (যেকেরে) তার অনুসারী ছিলো। | ا ۱۹ والطير معشورة ۱۰ کل له اواب |
| ২০. আমি তার সাম্রাজ্যকে সুদৃঢ় করেছিলাম এবং (সে সাম্রাজ্য চালাবার জন্যে) তাকে প্রজ্ঞা ও সর্বোত্তম বাগ্মিতার শক্তি দান করেছিলাম। | ٢٠ وَشَنَدْنَا مُلْكَمُ وَأَتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَنَصْلَ الْخِطَابِ |
| ২১. (হে নবী,) তোমার কাছে কি (সে) বিবদমান লোকদের কাহিনী পৌছেছেঃ যখন ওরা (উভয়ই) প্রাচীর টপকে (তার) এবাদাতখানায় প্রবেশ করলো, | ٢١ وَمَلُ أَتْكَ نَبُوًّا الْخَصْرِ مِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْخَصْرِ مِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْخَصْرِ مِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْخِصْرِ مِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ لا |
| ২২. যখন তারা দাউদের সামনে হাযির হলো তখন সে এদের কারণে (একটু) ভীত হয়ে পড়লো, ওরা বললো (হে আল্লাহর নবী), আপনি ভীত হবেন না, আমরা হচ্ছি বিবদমান দুটো দল, আমাদের একজন আরেকজ্ঞনের ওপর যুলুম করেছে, অতএব আপনি আমাদের মাঝে ন্যায়বিচার করে দিন, (কোনো রকম) নাইনসাফী করবেন না, আমাদের সহজ সরল পথ দেখিয়ে দিন। | ٢٢ إِذْ دَعَلُوا عَلَى دَاوِّدَ فَفَرِعَ مِنْهُرْ قَالُوْا |
| ২৩. (আসলে) এ হচ্ছে আমার ভাই। এর কাছে নিরানকাইটি দুম্বা আছে, আর আমার কাছে আছে (মাত্র) একটি। (এ সন্ত্বেও) সে বলে, আমাকে তোমার এ | ٢٣ إِنَّ هٰٰذَاۤ أَخِى بَنَ لَهُ تِشَعُّ وَّتِشَعُونَ لَهُ تِشَعُّ وَّتِشَعُونَ لَعُجَةً وَّامِنَةً عَ فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا |
| (দুম্বা)-টিও দিয়ে দাও, সে কথায় কথায় আমার ওপর বল প্রয়োগ করে। | وَعَزَّٰنِي فِي الْخِطَابِ |
| ৩৮ সুরা সোয়াদ ৪৬৪ | মন্যিল ৬ |

২৪. (বিবাদের বিবরণ শুনে) সে বললো, এ ব্যক্তি তোমার দুম্বাটি তার দুম্বাশুলোর সাথে যুক্ত করার দাবী করে তোমার ওপর যুলুম করেছে; (আসলে) যৌথ (বিষয় আশরের) অংশীদাররা অনেকেই একে অন্যের ওপর (এভাবে) যুলুম করে, (যুলুম) করে না কেবল সে সকল লোকেরা, যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনে এবং নেক কাজ করে, (যদিও) এদের সংখ্যা নিতান্ত কম; দাউদ বুঝতে পারলো, (তাকে পরিশ্বদ্ধ করার জন্যে একাহিনী ঘারা এতোক্ষণ ধরে) আমি তাকে পরীক্ষা করছিলাম, (মূল ঘটনা বুঝতে পেরে) অতপর সে তার মালিকের কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করলো এবং (সে) পরাক্রমশালী আল্লাহ তায়ালার সামনে সাজদায় লুটিয়ে পড়লো এবং সে (আমার দিকে) ফিরে এলো।

٢٣ قَالَ لَقَنْ ظَلَمَكَ بِسُوَالِ نَعْجَتِكَ إِلَى نَعْجَتِكَ إِلَى نَعْجَتِكَ إِلَى نَعْجَتِكَ إِلَى نِعَاجِهِ ، وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلُطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضِ إِلَّا الَّذِيثَى أَمَنُوْا وَعَيْلُوا الصَّلِحُسِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ، وظَنَّ دَاوَدُ أَنَّمَا فَتَنَّدُ فَاشْتَغْفَرَ رَبَّدٌ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ

गांक्सा ১०

২৫. অতপর আমি তাকে ক্ষমা করে দিলাম, অবশ্যই আমার কাছে তার জন্যে উচ্চ মর্যাদা ও সুন্দরতম আবাসস্থল রয়েছে।

٢٥ فَغَفَرْنَا لَمَّ ذٰلِكَ ۚ وَإِنَّ لَمَّ عِنْكَنَا لَزُلْفَى وَحُسْنَ مَاٰبٍ

২৬. (আমি দাউদকে বললাম,) হে দাউদ, আমি তোমাকে (এই) যমীনে (আমার) খলিফা বানালাম, অতএব তুমি মানুষদের মাঝে ন্যায়বিচার করো এবং কখনো নিজের খেয়াল খুশীর অনুসরণ করো না, তেমনটি করলে এ বিষয়টি তোমাকে আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে বিচ্যুত করে দেবে; (আর) যারাই আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে (গোমরাহ হয়ে) যায়, তাদের জন্যে অবশ্যই (জাহানুমের) কঠিন শাস্তি রয়েছে, কেননা তারা মহাবিচারের (এ) দিনটি ভুলে গেছে।

٢٦ يُنَ اوَدُ إِنَّا جَعَلَنْكَ غَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ فَاهْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوْى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ ﴿ إِنَّ الْوَيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ لَمُرْ عَنَابً شَرِيْنً بِهَا نَسُوْا يَوْاً الْحِسَابِ ع

২৭. আমি আসমান যমীন এবং এ উভয়ের মধ্যবর্তী স্থানে
যা কিছু আছে তার কোনো কিছুই অনর্থক সৃষ্টি করিনি;
এটা তো সেসব (মূর্খ) লোকদের ধারণা, যারা
সৃষ্টিকর্তাকেই অস্বীকার করে, আর যারা (এভাবে)
অস্বীকার করেছে তাদের জ্বন্যে জাহান্নামের দুর্ভোগ
রয়েছে:

২৮. যারা ঈমান এনেছে এবং নেক কান্ধ করেছে, আমি কি তাদের সেসব লোকের মতো করে দেবো যারা যমীনে বিপর্যয়কারী (সেজে বসে আছে), অথবা আমি কি পরহেযগার লোকদের গুনাহগারদের মতো (একই দলভুক্ত) করবোঃ

٢٨ أَأَ نَجْعَلُ النَّذِينَ أَمنُوا وَعَمِلُوا السِّلِحٰ وَالْمُؤْمِرِينَ فِي الْأَرْضِ (أَأَ لَحُعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ

২৯. আমি এ মোবারক গ্রন্থটি তোমার ওপর নাযিপ করেছি, যাতে করে মানুষ এর আয়াতসমূহের ব্যাপারে চিন্তা গবেষণা করতে এবং জ্ঞানবান লোকেরা (তা থেকে) উপদেশ গ্রহণ করতে পারে;

٢٩ كِتْبُ ٱنْزَلْنَهُ إِلَيْكَ مُبْرَكً لِيَنَابَّرُوْآ الْمِيْهِ وَلِيَتَنَكَّرُ ٱولُوا الْإَلْبَابِ

৩০. আমি দাউদকে (ছেলে হিসেবে) সোলায়মান দান করেছি; সে ছিলো (আমার) উত্তম একজন বানা; সে অবশ্যই ছিলো (তার মালিকের প্রতি) নিষ্ঠাবান; ٣٠ وَوَمَبْنَا لِنَ اوَّدَ سُلَيْلَٰى ۚ ﴿ نِعْرَ الْعَبْلُ ﴿ الْعَبْلُ ﴿ الْعَبْلُ ﴿ الْعَبْلُ ﴿ الْعَبْلُ ﴿ ا

৩৮ সূরা সোয়াদ

860

মন্যিল ৬

৫৯

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া | |
|---|---|----------------|
| ৩১. এক অপরাহে যখন তার সামনে (দ্রুতগামী ও) উৎকৃষ্ট (কয়েকটি) ঘোড়া পেশ করা হলো, | ٣١ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّفِنْتُ | |
| | الْجِيَادُ ٧ | |
| ৩২. (তখন) সে বললো, আমি তো আমার মালিকের স্মরণ ভুলে (এদের) প্রীতিতে মজে গিয়েছিলাম, (এদিকে) | ٣٢ فَقَالَ إِنِّي ۗ أَهْبَبْتُ مُبِّ الْغَيْرِ عَنْ | |
| দেখতে দেখতে সূর্যও প্রায় ডুবে গেছে। | ذِكْرِ رَبِّيْءَ عَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ وس | |
| ৩৩. (নামাযের কথা চিন্তা না করে সে বললো, কোথায় সে ঘোড়া,) সেগুলো আমার সামনে নিয়ে এসো; (এগুলো | ٣٣ رُدُّوْهَا عَلَى ۚ ﴿ فَطَفِقَ مَسْحًا ۖ بِالسُّوْقِ | |
| আনা হলে) সেগুলোর পা ও গলদেশসমূহে (স্নেহের) হাত বুলিয়ে দিলো (এবং এদের ভালোবাসায় নামায ভূলে যাওয়ার জন্যে দুঃখ প্রকাশ করলো)। | وَالْإَعْنَاقِ | |
| ৩৪. আমি (নানাভাবেই) সোলায়মানকে পরীক্ষা করেছি, (একবার) তার সিংহাসনের ওপর একটি নিস্পাণ দেহও | ٣٣ وَلَقَنْ فَتَنَّا سُلَيْهِي وَٱلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ | |
| আমি রেখে দিয়েছিলাম (যাতে করে সে আমার ক্ষমতা বুঝতে পারে), অতপর সে (আরো বেশী) আমার দিকে ফিরে এলো। | جَسَلًا ثُرَّ أَنَابَ | |
| ৩৫. সে (আরো) বললো, হে আমার মালিক, (যদি আমি কোনো ভুল করি) তুমি আমাকে ক্ষমা করো, তুমি | ٣٥ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لا | |
| আমাকে এমন এক সামাজ্য দান করো, যা আমার পরে আর কেউ কোনোদিন পাবে না, তুমি নিক্য়ই মহাদাতা। | يَثَبَغِيْ لِاَ مَلِ مِّنْ اَ بَعْلِيْ مَ إِنَّكَ أَنْسَ الْوَمَّابُ | |
| ৩৬. (সে অনুযায়ী) তখন আমি বাতাসকেও তার অধীন করে দিলাম, তা তার ইচ্ছানুযায়ী (অবাধে তাকে নিয়ে) সেখানেই নিয়ে যেতো যেখানেই সে যেতে চাইতো, | ٣٦ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِىْ بِآمْرِةٍ رُغَاءً حَيْثُ أَصَابَ ٧ | |
| ৩৭. জ্বিনদেরও (তার অনুগত বানিয়ে দিলাম), যারা ছিলো প্রাসাদ নির্মাণকারী ও (সমুদ্রের) ডুবুরী, | ٣٠ وَالشَّيْطِيْنَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَّغُوَّامٍ لا | |
| ৩৮. শৃংখলিত অন্যান্য (আরো) অনেককেও (আমি তার অধীন করে দিয়েছিলাম)। | ٣٨ وَّ أُخَرِيْنَ مُقَرَّنِينَ فِي الْإَصْفَادِ | |
| ৩৯. (আমি বললাম,) এ সবই হচ্ছে আমার দান, এ থেকে তুমি (অন্যদের) কিছু দাও কিংবা নিজের কাছে | | |
| রাখো-(এর জন্যে তোমাকে) কোনো হিসাব দিতে হবে না। | <u>ح</u> ِسَابِ | |
| ৪০. অবশ্যই তার জন্যে আমার কাছে রয়েছে উঁচু মর্যাদা ও সুন্দর নিবাস। | ٣٠ وَإِنَّ لَدَّعِنْهَ نَا لَزُلْفَى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ع | |
| 8১. (হে নবী,) তুমি আমার বান্দা আইয়ুবের কথা শ্বরণ করো। যখন সে তার মালিককে ডেকে বলেছিলো (হ | ٣١ وَاذْكُرْ عَبْنَنَا ٓ أَيُّوْبَ رِ إِذْ نَادَى رَبَّهُ | नात्यभ |
| আল্লাহ), শরতান তো আমাকে যন্ত্রণা ও কট্টে ফেলে দিয়েছে; | أَنِّي مَسِّنِيَ الشَّيْطِيُّ بِنُصْبٍ وَّعَنَابٍ ، | ওয়াক্ষে লাযেম |
| ৪২. আমি বললাম, তুমি তোমার পা দিয়ে ভূমিতে আঘাত করো (যমীনে আঘাত করার পর যখন পানির | ٣٢ ٱرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۽ مٰنَا مُفْتَسَلُّ ا بَارِدُ | 89 |
| একটি কৃপ বেরিয়ে এলো, তখন আমি আইয়ুবকে বললাম), এ হচ্ছে (তোমার) পরিষ্কার করা ও পান করার (উপযোগী) পানি। | ۅؖ۠ۺۘۯؘٵڹؖ | |
| ৩৮ সূরা সোয়াদ ৪৬৬ | মন্যিল ৬ | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|---|---|
| ৪৩. আমি তার সাথে তার পরিবার পরিজন ও তাদের সাথে একই পরিমাণ অনুগ্রহ দান করলাম, এটা ছিলো আমার পক্ষ থেকে রহমত-এর নিদর্শন ও জ্ঞানবান মানুষদের জন্যে উপদেশ। | ٣٣ وَوَهَبْنَا لَهٌ آهُلَهُ وَمِثْلَهُمْ مُعَهُمْ رَحْمَةً فَيْ وَمِثْلُهُمْ مُعَهُمْ رَحْمَةً فَيْ |
| 88. আমি তাকে বললাম, তুমি তোমার হাতে এক মুঠো তৃণলতা নাও এবং তা দিয়ে (তোমার ন্ত্রীর শরীরে মৃদু) আঘাত করো, তুমি কখনো শপথ ভংগ করো না; নিসন্দেহে আমি তাকে ধৈর্যশীল পেয়েছি; কতো উন্তম বান্দা ছিলো সে; সে ছিলো আমার প্রতি নিবেদিত! | ٣٣ وَهُنْ بِيَهِكَ ضِغْمًا فَاضْرِبُ بِهِ وَلَا تَحْنَفُ وَهُنَا الْعَبْلُ وَ لَا يَعْمَ الْعَبْلُ وَ لَا يَعْمَ الْعَبْلُ وَ الْعَبْلُ وَ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ الللّهِ اللّهِ اللّهِ الللّ |
| ৪৫. (হে নবী,) তুমি আমার বান্দাদের (মধ্যে) ইবরাহীম, ইসহাক ও ইয়াকুবকে শ্বরণ করো, ওরা (সবাই) ছিলো শক্তিশালী ও সৃক্ষদর্শী। | 60 وَاذْكُرْ عِبْلَنَآ إِبْرَهِيْمَ وَاِسْعَٰقَ وَيَعْتُوْبَ أُولِي الْآيْدِيْ وَالْآبْصَارِ |
| ৪৬. আমি একটি বিশেষ ব্যাপার- (এই) পরকাল দিবসের স্মরণ 'গুণের' কারণে তাদের (নেতৃত্ত্বের জন্যে) নির্দিষ্ট করে নিয়েছিলাম, | ٣٦ إِنَّا آغَلَصْنُهُرْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى النَّارِعَ |
| ৪৭. অবশ্যই এরা সবাই ছিলো আমার কাছে মনোনীত উত্তম বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত। | ٢٠ وَإِنَّمُرْعِنْكَ لَهِيَ الْهُصْطَفَيْنَ الْإَهْيَارِ ٥ |
| ৪৮. (হে নবী,) তুমি আরো স্বরণ করো ইসমাঈল, ইয়াসা' ও যুল কিফলের কথা; এরাও সবাই ভালো মানুষের অন্তর্ভুক্ত ছিলো; | مُ وَاذْكُر إِسْمِعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ الْمَكِلْ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ الْمَكِلْ إِلَيْ الْمَكِلْ الْمَكِلْ الْمَكِلْ الْمَكْلِيلِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ الللّهِ اللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ اللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ اللللّهِ الللّهِ الللّهِ الللللل |
| ৪৯. এ (বিবরণ) হচ্ছে একটি (মংং) দৃষ্টান্ত; অবশ্যই পরহেযগার লোকদের জন্যে উত্তম আবাসের ব্যবস্থা রয়েছে, | ٢٩ هٰذَا ذِكْرٌ ، وَإِنَّ لِلْهُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ٧ |
| ৫০. (সে উত্তম আবাস হচ্ছে) চিরস্থায়ী এক জানাত, যার দরজা (হামেশাই) তাদের জন্যে উন্মুক্ত থাকবে, | ٥٠ جَنْكِ عَنْنِ مُّفَتَّحَةً لَّهُرُ الْأَبُوابُ ع |
| ৫১. সেখানে তারা আসীন হবে হেলান দিয়ে, সেখানে তারা পর্যাপ্ত পরিমাণ ফলমূল ও পানীয় সরবরাহের আদেশ দেবে। | ٥١ مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا يَلْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ |
| ৫২. তাদের পাশে (আরো) থাকবে আনতনয়না, সমবয়ক্ষা তরুণীরা। | ٥٢ وَعِنْكَ مُر قَصِرِتُ الطَّرْفِ ٱتْرَابُ |
| ৫৩. (হে ঈমানদাররা,) এ হচ্ছে সেসব (নেয়ামত) যা বিচার দিনের জন্যে তোমাদের প্রতিশ্রুতি দেয়া হচ্ছে। | ٥٣ مَٰنَا مَا تُوْعَكُونَ لِيَوْرٍ الْحِسَابِ |
| ৫৪. এ হচ্ছে আমার দেয়া রেযেক- যা কখনো নিঃশেষ হবে না, | ٥٣ إِنَّ مٰٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٌ مِنْ نَّفَادٍ عمد |
| ৫৫. এ তো হলো (নেককারদের পরিণাম, অপরদিকে) বিদ্রোহী পাপীদের জন্যে থাকবে নিকৃষ্টতম ঠিকানা, | ٥٥ مٰنَا ، وَإِنَّ لِلطُّغِيْنَ لَشَرَّ مَأْبٍ ٧ |
| ৫৬. জাহান্লাম− যেখানে তারা গিয়ে প্রবেশ করবে, কতো নিকৃষ্ট নিবাস এটি! | ٥٦ جَهَنَّرَ ۽ يَصْلُوْنَهَاءِ فَبِئْسَ الْهِهَادُ |
| ৫৭. এ হচ্ছে (তাদের পরিণাম,) অতএব তারা তা আখাদন করুক, (আখাদন করুক) ফুটন্ত পানি ও পুঁজ, | ۵۷ مٰنَ ا ٧ فَلْيَنُ وْتُوهٌ مَوِيْرٌ وَّغَسَّاقً |
| ৫৮. (তাদের জন্যে রয়েছে) এ ধরনের আরো (বীভৎস) শান্তি; | ٥٨ وًّا خَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ، |
| ৫৯. (যখন দলপতিরা) অনুসারীদের জাহান্নামের দিকে আসতে দেখবে (তখন বলবে), এ হচ্ছে (আরেকটি) | ٥٩ مٰنَ ا فَوْحٌ مُّقْتَحِرُ مُّعَكُرُ عَ لَا مَرْعَبًا ا |
| ৩৮ সূরা সোয়াদ 8৬৭ | মন্যিল ৬ |

| কোৰভাৱ শ্বীফ সক্ত সৰু বাংলা কলবান | altat sia vatteri Geri |
|--|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
| বাহিনী, (যারা) তোমাদের সাথে (জাহান্নামে) প্রবেশ করার জন্যে (ধেয়ে) আসছে (আল্লাহ আয়ালার অভিসম্পাত আদের গুপ্ন), তাদের জন্যে কোনো রকম অভিনন্দনের ব্যবস্থা এখানে নেই; এরা জাহান্লামে গিয়ে পতিত হবে। | بِهِرْ ﴿ إِنَّهُرْ مَالُوا النَّارِ |
| ৬০. তারা (দলপতিদের) বলবে, বরং তোমাদের ওপরও (আল্লাহর পক্ষ থেকে অনুরূপ অভিসম্পাত, আজ্ক এখানে) | ٢٠ قَالُوا بَلُ أَنْتُر سَا لا مَرْمَبًا المِكْرُ ، أَنْتُر |
| তোমাদের জন্যেও তো কোনো অভিনন্দন নেই। তোমরাই তো আমাদের এ (মহা-) বিপদের সম্মুখীন করেছো, কতো নিকৃষ্ট (তাদের) এ আবাসস্থল! | قَلَّمْتُهُوْهُ لَنَا جَ فَيِئْسَ الْقَرَارُ |
| ৬১. (ধারা এদের অনুসরণ করেছে) তারা বলবে, হে আমাদের মালিক, যে ব্যক্তি (আজ) আমাদের এ দুর্গতির সম্মুখীন করেছে, জাহান্লামে তুমি তার শাস্তি দিগুণ বাড়িয়ে দাও। | الاَ قَالُواْ رَبَّنَا مَنْ قَلَّا لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ |
| ৬২. তারা (আরো) বলবে, একি হলো আমাদের, (আজ জাহানামে) আমরা সেসব মানুষদের দেখতে পাছি না | ٢٢ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرْى رِجَالًا كُنَّا نَعُلَّهُمْ |
| জাহারাবে) আমরা সেসব মাসুবদের দেবতে সাচ্ছে না কেন- যাদের আমরা দুনিয়ায় খারাপ লোকদের দলে শামিল (মনে) করতাম; | مِّنَ الْأَهْرَادِ ﴿ |
| ৬৩. তবে কি আমরা তাদের অহেতুকই ঠাটা বিদ্রূপের পাত্র মনে করতাম, না (আমাদের) দৃষ্টিশক্তি তাদের | ٦٣ أَتَّخَانَانُهُرْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُرُ |
| কিছুই দেখতে পাচ্ছে না। | الْأَبْصَارُ |
| ৬৪. জাহান্নামীদের (নিজেদের মাঝে) এ বাকবিতন্তা (সেদিন) হবে অবশ্য ভা বী। | ٢٢ إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُرُ أَهْلِ النَّارِع |
| ৬৫. (হে নবী, এদের) বলো, আমি তো (জাহান্নামের) একজন সতর্ককারী মাত্র, আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কোনো মাবুদ নেই, তিনি একক, তিনি মহাপরাক্রমশালী, | ٦٥ قُلْ إِنَّهَا ۚ أَنَا مُنْذِرً ﴾ وَّمَا مِنْ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللّهِ اللهِ الله |
| ৬৬. (তিনি) আসমান ও যমীনের মালিক- (মালিক তিনি) এ দুয়ের মাঝে যা কিছু আছে তারও, তিনি প্রচুর ক্ষমতাশালী ও মহা ক্ষমাশীল। | ٢٦ رَبُّ السَّاوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَقَّارُ |
| ৬৭. (তাদের) তুমি বলো, এ (কেয়ামত) হচ্ছে মূলত একটি বড়ো ধরনের সংবাদ, | ٦٤ قُلْ هُو نَبَوًّا عَظِيْرً ٧ |
| ৬৮. আর তোমরা (क्नि) এ থেকেই মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছো। | ٦٨ ٱنْتُر عَنْهُ مُعْرِضُونَ |
| ৬৯. (হে নবী, তুমি বলো,) আমার তো উর্ধান্তগত ও তার বাসিন্দা (ফেরেশতা)-দের সম্পর্কে কোনো জ্ঞানই | ٦٩ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ إِبِالْهَلَاِ الْإَعْلَى إِذْ |
| ছিলো না, (বিশেষ করে) যখন তারা (মানুষ সৃষ্টির বিষয় নিয়ে আল্লাহ তায়ালার সাথে) বিতর্ক করছিলো। | يَخْتَصِبُونَ |
| ৭০. (এজে) আমাকে ওহী করে (ন্ধনিয়ে) দেয়া হয়েছে, আমি হচ্ছি (তোমাদের জন্যে) একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী। | مع إلى يوهي إلى إلا الما الا توير مبين |
| ৭১. (শ্বরণ করো,) যখন তোমার মালিক ফেরেশতাদের বলেছিলেন, আমি মাটি থেকে মানুষ বানাতে যাচ্ছি। | ا ﴾ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْهَلَّنِكَةِ إِنِّى ْ هَالِقَ ۖ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ |
| ৭২. যখন আমি তাকে বানিয়ে সম্পূর্ণ সুঠাম করে নেবো এবং ওতে আমার (কাছ থেকে) জীবনের সঞ্চার করবো, | ٢٢ فَإِذَا سُولَيْتُهُ وَنَفَحْتُ فِيهِ مِنْ رُوْمِي |
| তখন তোমরা তার প্রতি সাজদাবনত হবে। | فَقَعُوا لَهُ سَجِنِينَ |
| ৭৩. অতপর ফেরেশতারা সবাই (তাকে) সাঞ্চদা করলো, | ٣٧ فَسَجَنَ الْمَلَّئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ ٧ |
| ৩৮ সূরা সোয়াদ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া |
|--|--|
| ৭৪. একমাত্র ইবলীস ছাড়া; সে অহংকার করলো এবং সে কাফেরদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেলো। | ٢٠ إلا ٓ إلْلِيْسَ م إِسْتَكْبَرَ وكَانَ مِنَ الْكُفِرِيْنَ |
| ৭৫. আল্লাহ তায়ালা বললেন, হে ইবলীস, তোমাকে কোন্ জিনিসটি তাকে সাজদা করা থেকে বিরত রাখলো— যাকে আমি স্বয়ং নিজের হাত দিয়ে বানিয়েছি, তুমি কি এমনিই ঔদ্ধত্য প্রকাশ করলে, না তুমি কোনো উচ্চ | 40 قَالَ يَابِلِيْسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُّلَ لِهَا |
| | هَلَقْتُ بِيَنَى ۚ ﴿ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ |
| মর্যাদাসম্পন্ন কেউ? | الْعَالِيْنَ |
| ৭৬. সে বললো (হাঁ), আমি তো তার চাইতে শ্রেষ্ঠ; তুমি আমাকে আগুন থেকে বানিয়েছো আর তাকে বানিয়েছো | ٢ عَالَ إَنَا هَيْرٌ مِّنْهُ م هَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ |
| माणि व्यंदक । | وَّ مَلَقْتَهٌ مِنْ طِيْنِ |
| ৭৭. তখন আল্লাহ তায়ালা বললেন, তুমি এখান থেকে এখনি বের হয়ে যাও, কেননা তুমি হচ্ছো অভিশপ্ত, | 44 قَالَ فَاخْرُجُ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَهِيْرٌ مِيء |
| ৭৮. তোমার ওপর আমার অভিশাপ থাকবে শেষ বিচারের দিন পর্যন্ত। | ٨٠ وَّ إِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيٓ إِلَى يَوْ إِ الرِّيْنِ |
| ৭৯. সে বললো, (হাঁা আমি বেরিয়ে যাচ্ছি, তবে) হে আমার মালিক, তুমি আমাকে সেদিন পর্যন্ত অবকাশ দাও যেদিন সব মানুষদের (ছিতীয় বার) জীবিত করে তোলা হবে। | 49 قَالَ رَبِّ فَٱنْظِرْنِي ۚ إِلَٰى يَوْ إِ يُبْعَثُونَ |
| ৮০. আল্লাহ তায়ালা বললেন (হ্যাঁ, যাও), যাদের অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমিও তাদের অন্তর্ভুক্ত, | ٨٠ قَالَ فَا ِنَّكَ مِنَ الْهُنْظُرِيْنَ ٧ |
| ৮১, অবধারিত সময়টি আসার সে নির্দিষ্ট দিন পর্যন্ত (তুমি থাকবে)। | ٨١ إِلَى يَوْإِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْإِ |
| ৮২. সে বললো (হাা), তোমার ক্ষমতার কসম (করে আমি বলছি), আমি তাদের সবাইকেই বিপথগামী করে ছাড়বো, | ٨٢ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَا غُوِينَّهُرُ أَهْبَعِيْنَ لا |
| ৮৩. তবে তাদের মধ্যে যারা তোমার একনিষ্ঠ বান্দা তাদের ছাড়া। | ٨٣ إلَّا عِبَادَكَ مِنْهُرُ الْهُخْلَصِيْنَ |
| ৮৪. আল্লাহ তায়ালা বললেন, (এ হচ্ছে) চূড়ান্ত সত্য, আর আমি এ সত্য কথাটাই বলছি, | ٨٣ قَالَ فَالْحَقُّ رَوَالْحَقُّ الْوَكُعُ ۖ الْقُولُ ع |
| ৮৫. তোমার ও তোমার অনুসারীদের সবাইকে দিয়ে আমি জাহান্নাম পূর্ণ করবোই। | ٨٥ لَأَمْلَئَنَّ جَهَنَّرَ مِنْكَ وَمِيْنَ تَبِعَكَ مِنْهُرُ اَجْهَعِيْنَ |
| ৮৬. (হে নবী,) তুমি বলো, আমি এ কাজের জ্বন্যে তোমাদের কাছে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করছি না, না | ٨٦ قُلْ مَا آسْنَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَّمَا آنَا |
| যারা লৌকিকতা করে আমি তাদের দলের লোক ! | مِنَ الْهُتَكَلِّفِيْنَ |
| ৮৭. এ (কোরআন) হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মানুষদের) জন্যে একটি উপদেশ মাত্র। | ٨٨ إِنْ مُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعُلَمِيْنَ |
| ৮৮. কিছুকাল পর (কেয়ামত সংঘটিত হলে) তোমরা অবশ্যই তার (সত্যতা) সম্পর্কে জানতে পারবে। | ٨٨ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاً لَا بَعْنَ مِيْنٍ ع |
| , | سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيةً |
| স্রা আঝ ঝুমার | أياتُ : ٤٥ رُكُوعٌ : ٨ |
| মঞ্চায় অবতীর্ণ– আয়াত ৭৫, রুকু ৮ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| এ (মহা-) গ্রন্থ (আল কোরআন) পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময় আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকেই (এর) অবতরণ। | ا تَنْزِيْلُ الْكِتْبِ مِنَ اللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْرِ |
| ৩৯ সূরা আঝ ঝুমার ৪৬৯ | মন্যিল ৬ |

اللهُ مُخْلَصًا لَّهُ الرِّيْنَ ،

করেছি, অতএব निष्ठांतान रात प्रायणात्वर भागन بِالْحَقِّ فَاعْبُلِ करति , অতএব निष्ठांतान रात प्रायणात्वर भागन بالْمَا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتْبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُلِ ২. আমি এ (কেতাব) তোমার কাছে যথার্থভাবেই নাযিল এবাদাত করো:

৩. জেনে রেখো, একনিষ্ঠ এবাদাত আল্লাহ তায়ালার জন্যেই (নিবেদিত হওয়া উচিত); যারা আল্লাহ তায়ালার বদলে অন্যদের অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করে তারা বলে, আমরা তো এদের এবাদাত এ ছাড়া অন্য কোনো কারণে করি না যে, এরা আমাদের আল্লাহ তায়ালার নিকটবর্তী করে দেয়; কিন্তু তারা যে (সব) বিষয় নিয়ে মতভেদ করছে, নিশ্চয়ই আল্লাহ তারালা (কেয়ামতের দিন) সে বিষয়ের ফয়সালা করে দেবেন: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা এমন লোককে হেদায়াত করেন না যে মিথ্যাবাদী ও অকৃতজ্ঞ।

٣ أَلَا لِلَّهِ الرِّيْنُ الْخَالِصُ ، وَالَّذِيْنَ اتَّخَلُوْا مِنْ دُوْنِهِ أَوْلِيَّاءَ مِ مَا نَعْبُكُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَا ۚ إِلَى اللَّهِ زُلْفَى ﴿ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُرُ بَيْنَهُرْ فِيْ مَا هُرْ فِيْهِ يَخْتَلِقُوْنَ مُ إِنَّ اللَّهُ لَا يَهْنِي مَنْ مُو كُنِّ بِ كُفَّارً

8. আল্লাহ তায়ালা যদি সম্ভান গ্রহণ করতেই চাইতেন. তাহলে তিনি তাঁর সৃষ্টির মাঝ থেকে যাকে ইচ্ছা তাকেই বাছাই করতে পারতেন, তাঁর সন্তা অনেক পবিত্র: তিনিই আল্লাহ তায়ালা, তিনি একক ও মহাপরাক্রমশালী।

٣ لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَّتَّخَنَّ وَلَنَّا لَّإِصْطَفِّي ميًّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لا سُبْحُنَهٌ م هُوَ اللَّهُ الْوَاحِلُ الْقَهَّارُ

৫. তিনি আসমান ও যমীন সুপরিকল্পিতভাবেই সৃষ্টি করেছেন, তিনিই রাতকে দিনের ওপর লেপটে দেন আবার দিনকে রাতের ওপর লেপটে দেন, তিনিই সূর্য ও চন্দ্রকে (একটি নিয়মের) অধীন করে রেখেছেন: এগুলো সবই একটি সুনির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত (নিজ নিজ কক্ষপথে) বিচরণ করতে থাকবে: জেনে রেখো, তিনি পরাক্রমশালী ও পরম ক্ষমাশীল ৷

۵ غَلَقَ السَّاوٰسِ وَالْأَرْضَ بِالْعَقِّ ، يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّبْسَ وَالْقَهَرَ ء كُلَّ يَجُرِي لِأَجَلِ شُسمًّى ﴿ أَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ

৬. তিনি তোমাদের সবাইকে (আদমের) একই সন্তা থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি সেই (সন্তা) থেকে তার যুগল বানিয়েছেন এবং তিনি তোমাদের জন্যে আট প্রকার পশু (-এর বিধান) অবতীর্ণ করেছেন: তিনিই তোমাদেরকে তোমাদের মায়েদের পেটে পর্যায়ক্রমে পয়দা করেছেন– তিনটি অন্ধকারে একের পর এক (অবয়ব দিয়ে গেছেন): এ হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা, তিনিই তোমাদের মালিক, তাঁর জ্বন্যেই সার্বভৌমতু, তিনি ছাড়া কোনো মাবুদ নেই, তারপরও (মূল বিষয়) থেকে তোমাদের কোথায় কোথায় ঠোকর খাওয়ানে হচ্ছে

٢ هَلَقَكُرْ مِّنَ تَّفْسِ وَّاهِلَةٍ ثُرَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَٱلْزَلَ لَكُرْ بِّيَ الْإَنْعَا) ثَمْنِيَةَ ٱزْوَاجٍ ﴿ يَخْلُقُكُورُ فِي بُطُونِ أُمَّةً كُورُ غَلْقًا مِّن ا بَعْلِ عَلْقِ فِي ظُلُهٰ يَ ثَلْنِ وَ ذَٰلِكُم اللَّهُ رَبُّكُم (لَهُ الْهُلْكُ وَ لَا اللَّهُ الَّا هُوَ عِ فَأَ نَّى تُصْرُفُونَ

৭. (হে মানুষ,) তোমরা যদি আল্লাহ তায়ালার কুফরী করো তাহলে (জেনে রেখো), আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কারোই মুখাপেক্ষী নন। আল্লাহ তায়ালা তাঁর নিজের বান্দার এ না-শোকরী (আচরণ) কখনো পছন্দ করেন না, তোমরা যদি তাঁর ক্তজ্ঞতা আদায় করো তাহলে তিনি তোমাদের ওপর সম্ভুষ্ট হবেন: (কেয়ামতে) কেউই কারো (গুনাহের) ভার ওঠাবে না: অতপর তোমাদের তাঁর কাছে ফিরে যেতে হবে এবং সেদিন তিনি তোমাদের (বিস্তারিত) বলে দেবেন তোমরা কি করতে: তিনি নিশ্চয়ই জানেন যা কিছু অন্তরের ভেতরে লুকিয়ে থাকে।

4 إِنْ تَكْفُرُواْ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُر عَ وَلَا يَرْضَى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَةِ وَإِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَدُ لَكُرْ ، وَلَا تَزِرُ وَازِرَةً وِزْرَ أَخْرى ، ثُرَّ إِلَى رَبُّكُرْ مُوْجِعُكُرْ فَيُنَبِّكُرْ بِهَا كُنْتُرْ تَعْمَلُونَ وَ إِنَّهُ عَلِيْرٌ بِنَ اسِ الصَّاوُر

৮. (নিয়ম হচ্ছে,) মানুষকে যখন কোনো দুঃখ কষ্ট স্পর্শ করে তখন সে একনিষ্ঠভাবে তার মালিকের দিকে ধাবিত ٨ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبُّهُ مُنِيْبًا

হয়, পরে যখন আল্লাহ তায়ালা তাঁর কাছ থেকে নেয়ামত দিয়ে তার ওপর অনুগ্রহ করেন, তখন সে যে জন্যে আগে আল্লাহ তায়ালাকে ডেকেছিলো তা ভূলে যায়, সে আল্লাহ তায়ালার সমকক্ষ বানায়, যাতে করে সে (অন্যদের) اليَّضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَ قُلْ تَهَتَّعُ بِكُفُوكَ قَلِيلاً وَ اللهُ عَلَيْلاً وَاللهُ عَلَى الله (হে নবী.) তুমি এমন লোকদের বলে দাও, নিজের কুফরীর আরাম আয়েশ (হাতেগোনা) কয়টি দিনের জন্যে ভোগ করে নাও, (পরিণামে) তুমি অবশ্যই জাহান্রামী (হরে)।

إِلَيْهِ ثُرَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْهَةً مِّنْكُ نَسِيَ مَا كَانَ يَنْعُوْا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا إِنَّكَ مِنْ أَسْحُبِ النَّارِ

৯. যে ব্যক্তি রাতের বেলায় বিনয়ের সাথে সাজদাবনত হয় কিংবা দাঁড়িয়ে আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করে এবং পরকালের (আযাবের) ভয় করে (সর্বাবস্থায়) তার মালিকের অনুগ্রহ প্রত্যাশা করে; (হে নবী, এদের) বলো, যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) জানে আর যারা (তাঁকে) জানে না, তারা কি এক সমান? (আসলে একমাত্র) জ্ঞানবান ব্যক্তিরাই (এসব তার্তম্য থেকে) উপদেশ গ্রহণ করতে পারে।

٩ أَمَّنْ هُوَ قَانِتُ أَنَّاءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَائِمًا يَّكُنَرُ الْأَخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَكْمَةَ رَبِّهِ مَ قُلْ هَلْ ـ يَسْتَوى النَّرِيْنَ يَعْلَهُوْنَ وَالنَّرِيْنَ لَا يَعْلَمُونَ وَ إِنَّهَا يَتَنَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ع

১০. (হে নবী, এদের) বলে দাও, হে আমার বান্দারা, যারা ঈমান এনেছো, তোমরা তোমাদের মালিককে ভয় করো. যারা এ দুনিয়ায় কোনো কল্যাণকর কাজ করবে তাদের জন্যে (পরকালেও) মহাকল্যাণ (থাকবে), আল্লাহ তায়ালার যমীন অনেক প্রশন্ত: (উপরস্তু) ধৈর্যশীলদের পরকালে অপরিমিত পুরস্কার দেয়া হবে।

١٠ قُلْ يُعبَاد الَّذينَ أَمنُوا اتَّقُوا رَبُّكُم م لِلَّانِيْنَ آحْسَنُوْا فِي هٰنِهِ الرُّنْيَا حَسَنَةً ﴿ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسعَةً ﴿ انَّهَا يُـوَفَّى الصَّبِرُوْنَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابِ

১১. (হে নবী.) তুমি বলো, আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে একান্ত নিষ্ঠার সাথে আমি যেন আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করি.

اا قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُلَ اللَّهُ مُخْلَمًا لَّهُ

১২. এবং আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে. আমি যেন আল্লাহ তায়ালার সামনে আত্মসমর্পণকারীদের মধ্যে অগ্ৰণী হই ।

١٢ وَأُمِرْتُ لِاَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ

১৩. তুমি বলো, আমি যদি আমার মালিকের না-ফরমানী করি তাহলে আমি আমার ওপর একটি মহা দিনের শান্তির ভয় করি।

١٣ قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَنَ ابَ يَوْ إِ عَظِيْمِ

১৪. তুমি বলো, আমি একান্ত নিষ্ঠাবান হয়েই আল্লাহ তায়ালার এবাদাত করি.

١٣ قُلِ اللَّهَ اَعْبُلُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِيْ لا

১৫. তোমরা তাকে বাদ দিয়ে যারই চাও গোলামী করো: (হে নবী,) তুমি বলো, ভারী ক্ষতিগ্রস্ত হবে তারা, যারা (অন্যের গোলামী করার কারণে) কেয়ামতের দিন নিজেদের এবং নিজেদের পরিবার পরিজনদের ভীষণ ক্ষতি করবে; তোমরা জেনে রেখো, এ (আখেরাতের) ক্ষতিই হচ্ছে সুম্পষ্ট ক্ষতি।

١٥ فَاعْبُلُوْ ا مَا شِئْتُرْ مِّنْ دُوْنِهِ، قُلْ انَّ الْخُسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْا أَنْفُسَهُم وَ أَهْلِيْهِمْ يَوْاً الْقِيْهَةِ ، أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْعُسْرَانُ الْهُبِيْنُ

১৬. তাদের জন্যে তাদের ওপর থেকে (ছায়াদানকারী) আগুনের মেঘমালা থাকবে, তাদের নীচের দিক থেকেও থাকবে আগুনেরই বিছানা: এ হচ্ছে সে (বীভৎস) আযাব. যা দিয়ে আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের ভয় দেখাচ্ছেন: (অতএব) হে আমার বান্দারা, তোমরা আমাকে ভয় করো ।

١٦ لَهُرُ مِّنْ فَوْقِهِرْ ظُلَلٌّ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِرْ ظُلَلُّ ، ذٰلِكَ يُخَوِّنُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَةً ، يعبَاد فَاتَّتُّون

৩৯ সূরা আঝ ঝুমার

পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া

১৭, যারা শয়তানী শক্তির গোলামী করা থেকে কেঁচে থেকেছে এবং (একনিষ্ঠভাবে) আল্লাহ তায়ালার দিকেই ফিরে এসেছে, তাদের জন্যে রয়েছে মহাসুসংবাদ, অতএব (হে নবী), তুমি আমার (এমন সব) বান্দাদের সুসংবাদ দাও.

١٤ وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ أَنْ يَّعْبُلُوْهَا وَأَنَابُوْ إِلَى اللَّهِ لَهُرُ الْبُشُرٰى ع فَبَشِّرْ عِبَادِ لا

১৮. যারা মনোযোগ সহকারে (আমার) কথা শোনে এবং ভালো কথাসমূহের অনুসরুণ করে: এরাই হচ্ছে সেসব أَحْسَنَدُ ءَ أُولَٰئِكَ النَّذِينَ هَلُهُمُ اللَّهُ अाजा प्राया (अने गाँपत पाद्धार जावान प्रत्य النَّذِينَ هَلُهُمُ اللَّهُ পরিচালিত করেন, আর (সত্যিকার অর্থে) এরাই হচ্ছে বোধশক্তিসম্পন্ন মানুষ।

١٨ الَّذِيْنَ يَسْتَبِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ وَأُولَٰئِكَ مُر أُولُوا الْإَلْبَابِ

১৯. (হে নবী,) যে ব্যক্তির ওপর (আল্লাহ তায়ালার) আযাবের হুকুম অবধারিত হয়ে গেছে (তাকে কে বাঁচাবে): তুমি কি (তাকে) বাঁচাতে পারবে যে জাহানামে (চলে গেছে).

19 أَفَهَنْ حَقَّ عَلَيْه كَلَّهَةُ الْعَنَ ابِ ﴿ أَفَانُد تُنْقِنُ مَنْ مِي النَّارِ ع

২০. তবে যারা তাদের মালিককে ভয় করে তাদের জন্যে (বেহেশতে) প্রাসাদের ওপর প্রাসাদ বানানো থাকবে, যার পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত থাকবে: (এটা হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালার ওয়াদা: আর আল্লাহ তায়ালা কখনো তাঁর ওয়াদা বর**খেলাপ করেন না**।

٢٠ لُكن الَّذِينَ اتَّقُوا رَبُّهُمْ لَهُمْ غُونَا مِّنَ فَوْتِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةً لا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ ٥ وَعْنَ اللَّهِ ﴿ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْهِيْعَادَ

২১. (হে মানুষ,) তুমি কি কখনো এটা পর্যবেক্ষণ করোনি যে, আল্লাহ তায়ালা আসমান থেকে পানি বর্ষণ করেন অতপর তিনিই তা যমীনের প্রস্রবণগুলোতে প্রবেশ করান পরে তিনিই (আবার) তা দিয়ে (যমীন থেকে) রং বেরংয়ের ফসল বের করে আনেন্ (কিছুদিন) পরে তা (আবার) শুকিয়েও যায়, ফলে তোমরা তাকে পীতবর্ণের (ফসল হিসেবে) দেখতে পাও, অতপর তিনিই তাকে আবার খড় কুটায় পরিণত করেন: অবশ্যই এতে (এ নিয়মের মধ্যে) জ্ঞানবানদের জ্বন্যে (বড়ো রকমের) উপদেশ রয়েছে।

٢١ ألَوْ تَوَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيْعَ فِي الْأَرْضِ ثُرٌّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مَّخْتَلَفًا ٱلْوَانَّهُ ثُرِّ يَهِيْجُ فَتَرَّهُ مُصْفَرًّا ثُرٌّ يَجْعَلُدُ مُطَامًا ، إنَّ في ذلكَ لَنْكُي لأولى الْأَلْبَابِ ع

২২. অতপর (তুমি বলো, হে নবী,) যার অম্ভরকে আল্লাহ তায়ালা ইসলামের জন্যে উন্মুক্ত করে দিয়েছেন, সে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে (পাওয়া) একটি (হেদায়াতের) নুরের ওপর রয়েছে; দুর্ভোগ হচ্ছে সেসব লোকের জন্যে যাদের অন্তর আল্লাহ তায়ালার স্মরণ থেকে কঠোর হয়ে গেছে; (মূলত) এরাই সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত রয়েছে।

٢٢ أَفَهَنَ شَرَحَ اللَّهُ صَنْ رَةً لِلْاسْلَا] فَهُوَ عَلَى ، نَوْرِ مِّنْ رَّبِّهِ ، فَوَ يُلِّ لِّلْقَسِيَةِ قُلُوْبُهُرْ مِّنْ ذِكْر اللَّهِ ، أُولَٰئِكَ فِي شَلَٰل سَّبِيْن

২৩. আল্লাহ তায়ালা সর্বোৎকৃষ্ট বাণী নাযিল করেছেন, তা এমন (উৎকৃষ্ট) কেতাব যার প্রতিটি বাণী পরস্পরের সাথে সামঞ্জস্যশীল, অভিনু (যেখানে আল্লাহর ওয়াদাগুলো বার বার পেশ করা হয়েছে), যারা তাদের মালিককে ভয় করে, এ (কেতাব শোনার) ফলে তাদের চামড়া (ও শরীর)

٢٣ اَللَّهُ نَوَّلَ اَحْسَىَ الْحَدِيثِي كِتْبًا بِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرًّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِينَ

৩৯ সূরা আঝ ঝুমার

893

পারা ২৩ ওয়ামা লিয়া

إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ ، ذٰلِكَ مُنَى اللَّهِ يَمْدِي بِهِ

مَنْ يَشَاءُ م وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَهَا لَهُ مِنْ هَادِ

٢٠ إنَّكَ مَيْتُ وَ إِنَّهُمُ مُيَّتُونَ رَ

মন্যিল ১

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

কেঁপে ওঠে, অতপর তাদের দেহ ও মন বিগলিত হয়ে

আল্লাহ তায়ালার স্বরণে ঝুঁকে পড়ে: এ (কেতাব) হচ্ছে

আল্লাহ তায়ালার হেদায়াত এর দ্বারা তিনি যাকে চান তাকে সঠিক পথ দেখান: আল্লাহ তায়ালা যাকে গোমরাহ

৩০. অবশ্যই (একদিন) তুমি মারা যাবে– তারাও

নিসন্দেহে একদিন মৃত্যুমুখে পতিত হবে,

সামনে বাকবিতন্তা করতে থাকবে।

৩৯ সুরা আঝ ঝুমার

দায়ী করে) তোমরা কেয়ামতের দিন তোমাদের মালিকের وَيُكُمْ وَيُكُمْ وَيُكُمْ الْقَيْمَةِ عِنْلُ رَبِّكُمْ الْقَالِم সামনে বাক্রিকের

890

৩২. সে ব্যক্তির চাইতে বডো যালেম আর কে হতে পারে যে আলাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করে এবং একবার তার কাছে সত্য (দ্বীন) এসে যাওয়ার পরও যে ব্যক্তি তা মিথ্যা প্রতিপন্ন করে: এমন সব কাম্ফেরদের

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

ঠিকানা কি জাহান্রামে (হওয়া উচিত) নয়ঃ

وكَنَّبَ بِالسِّنْقِ إِذْ جَاءً * اللَّهِ فِي جَهَنَّم مَثُوني لِلْكُغِرِينَ

৩৩. (অপরদিকে) যে ব্যক্তি স্বয়ং এ সভ্য (দ্বীন) নিয়ে এসেছে এবং যে ব্যক্তি এ সত্যকে সত্য বলে মেনে নিয়েছে, ওদের (আযাব থেকে) বাঁচিয়ে দেয়া হবে।

٣٣ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَمَدَّقَ بِهِ أولئك مر البتقون

৩৪. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে সেসব কিছই থাকবে যা তারা (পেতে) চাইবে: (মূলত) এটা হচ্ছে সংকর্মশীল লোকদের পুরস্কার,

٣٢ لَهُرْ مَّا يَشَاءُونَ عِنْلَ رَبِّهِرْ ، ذَلِكَ جَزَاؤُا الْهُ حُسِنِيْنَ عمل

৩৫. কেননা. এরা যা কিছু মন্দ কান্ধ করেছে আল্লাহ তায়ালা তা মিটিয়ে দেবেন এবং তাদের ভালো কাজসমহের জন্যে তিনি তাদের উত্তম পুরস্কার দেবেন।

٣٥ لِيُكَفِّرُ اللَّهُ عَنْهُرْ أَسُواَ الَّذِي عَبِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَى الَّذِي كَانُوْ إِيَعْمَلُوْنَ

৩৬. আন্তাহ তায়ালা কি তাঁর বান্দা (মোহামদের হেফাযত)-এর জন্যে যথেষ্ট ননঃ (হে নৰী.) এরা بِالَّذِينَ مِنْ دُوْنِهِ ﴿ وَمَنْ يُضْلُلُ اللَّهُ فَهَا لَهُ عَهَا لَكَ عَهَا لَكَ عَهَا لَكَ عَال দেখার: আল্লাহ ভায়ালা যাকে বিভ্রান্ত করেন ভার (আসলে) কোনোই পথপ্রদর্শক নেই.

٣٦ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَانِ عَبْنَةً ، وَيُحُوِّفُونَكَ مِنْ هَادِج

৩৭. আবার বাকে আল্লাহ ভায়ালা স্বয়ং পথ প্রদর্শন করেন তাকে কেউই পথভ্ৰষ্ট করতে পারে না. আল্লাহ তায়ালা কি পরাক্রমশালী ও কঠোর প্রতিশোধ গ্রহণকারী (সন্তা) ননঃ

٣٤ وَمَنْ يُهُلِ اللَّهُ فَهَا لَهُ مِنْ مُضلٌّ ١ أَلَيْسِ اللَّهُ بِعَزِيْزِ ذِي اثْتِقَا]

৩৮. (হে নবী.) যদি তুমি এদের কাছে জিজ্ঞেস করো. আকাশমালা ও যমীন কে সৃষ্টি করেছে, সাথে সাথেই ওরা বলবে, আল্লাহ তায়ালাই (এসব সৃষ্টি করেছেন); এবার তাদের তুমি বলো, তোমরা কখনো ভেবে দেখেছো কি, যদি আল্লাহ তায়ালা আমাকে কোনো কট পৌছাতে চান তাহলে তিনি ছাড়া যাদের তোমরা ডাকো তারা কি সে কষ্ট দুর করতে পারবে? কিংবা তিনি যদি আমার ওপর (তাঁর) অনুগ্রহ করতে চান (তাহলে) এরা তাঁর সে অনুগ্রহ কি রোধ করতে পারবে? (হে নবী,) তুমি বলো, আমার জন্যে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট: যারা নির্ভর করতে চায় তাদের তো তাঁর ওপরই নির্ভর করা উচিত।

٣٨ وَلَئِنْ سَالْتَهُرْ مِنْ خَلَقَ السَّاوٰسِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ وَقُلْ أَفَوَءَيْتُر مًّا تَنْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِفُرِ مَلْ مُنْ كُشِفْتُ ضُرَّةٍ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْبَةٍ مَلْ مُنَّ مُهْكِينٌ رَهْيَتِهِ وَ قُلْ عَشْبِيَ اللَّهُ وَ عَلَيْه يَتُوَكِّلُ الْهُتُوكِّلُونَ

৩৯. (হে নবী, এদের) তুমি বলো, হে আমার জ্ঞাতি, তোমরা তোমাদের জায়গায় কাজ করে যাও, আমিও (আমার জায়গায়) কাজ করে যান্দ্রি শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে.

٣٩ قُلْ يُقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ عَ فَسَوْنَ تَعْلَمُونَ لا

৪০. কার ওপর (দুনিয়ায়) অপমানকর আযাব আসবে এবং (আখেরাতেই বা) কার ওপর স্থায়ী আযাব নাযিল হবে!

٣٠ مَنْ يَّاتِيْدِ عَنَابٍ يُخْزِيْدِ وَيَحِلُّ عَلَيْدِ

৩৯ সুরা আঝ ঝুমার

898

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২৪ ফামান আয়লাম

(धीन)-সহ এ কেতাব নাযিল করেছি, অতপর যে কেউ الْكِتْبَ لِلنَّاسِ । ﴿ الْكَانَ الْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتْبَ لِلنَّاسِ হেদায়াত পেতে চাইবে সে তা করবে একান্ত তার নিজের জন্যেই, আর যে ব্যক্তি গোমরাহ হয়ে যায়, তার এ গোমরাহীর ফল তার নিজের ওপরই বর্তাবে, আর তুমি তো তাদের ওপর কোনো তন্তাবধায়ক নও!

بِالْحَقِّ عِ فَهَى اهْتَلُى فَلِنَفْسِهِ عِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّهَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ج وَمَّا أَنْسَ عَلَيْهِر بِوكِيل ع

৪২. আল্লাহ তায়ালা (মানুষদের) মৃত্যুর সময় তার প্রাণবায়ু বের করে নেন, আর যারা ঘুমের সময় মরেনি তিনি (তখন) তাদেরও (ব্রহ) বের করেন, অতপর যার ওপর তিনি মৃত্যু অবধারিত করেন তার প্রাণ তিনি (ছেড়ে না দিয়ে) রেখে দেন এবং বাকী (রহ)-দের একটি সুনির্দিষ্ট সময়ের জ্বন্যে ছেড়ে দেন; এর (গোটা ব্যবস্থাপনার) মধ্যে এমন সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শন রয়েছে যারা (বিষয়টি নিয়ে) চিন্তা ভাবনা করে।

٣٢ ٱللَّهُ يَتَوَفَّى الْإَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَرْ تَهُد فِي مَنَامِهَا ع فَيُهُسِكُ الَّتِي قَضَى عَلَيْهَا الْهَوْسَ وَيُوْسِلُ الْأَغُولِي إِلَّى آجَلِ شَّبَّى ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ كَاٰيْسٍ لِّقُوْ] يَتَفَكَّرُوْنَ

৪৩. তবে কি এরা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে (অন্যদের) সুপারিশকারী (হিসেবে) গ্রহণ করেছে? (হে নৰী,) তুমি (এদের) বলো, যদিও তোমাদের এসব সুপারিশকারী কোনো কিছই করার ক্ষমতা রাখে না, না তাদের কোনো জ্ঞান বৃদ্ধি আছে।

٣٣ أَإِ اللَّهِ شُفَعًاء مَ قُونِ اللَّهِ شُفَعًاء م قُلْ أَوَ لَوْ كَانُوْ اللَّا يَهْلِكُونَ شَيْئًا وَّلَا يَعْقَلُونَ

৪৪. বলো (হে নবী), যাবতীয় সুপারিশ একমাত্র আল্লাহ عُلُ لِلَّهِ الشَّفَاعَدُ جَوِيْعًا ء لَهُ مُلْكَ ا তায়ালার জন্যেই, আসমানসমূহ এবং পৃথিবীর সার্বভৌমতু (একমাত্র) আল্লাহ ভারালার জন্যে: অভপর তোমরা সবাই তাঁর দিকেই ফিরে যাবে।

السَّوْسِ وَالْأَرْضِ ﴿ ثُرِّ إِلَيْهِ تُوْجَعُونَ

৪৫, যখন তাদের কাছে এক অন্বিতীয় আল্লাহ তারালার কথা বলা হয়, তখন যারা আখেরাতের ওপর ঈমান আনে الْرِينَ لَا يَوْمِنُونَ بِالْأَخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ अभव्रितिक وَاذَا ذُكِرَ अभव्रितिक وَاذَا ذُكِرَ যখন আল্লাহ তায়ালার বদলে অন্য (দেবতা)-গুলোর আপোচনা করা হয় তখন তারা আনব্দে উশ্বসিত হয়।

٣٥ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَمْنَ الْمُهَازِّسُ قُلُوبُ النَّذِيْنَ مِنْ دُونِمِ إِذَا مُرْ يَسْتَبْهِرُونَ

৪৬. (হে নবী.) তুমি ৰলো, হে আল্লাহ, (হে) আসমান যমীনের স্রষ্টা, (হে) দৃশ্যমান ও অদৃশ্যমান সব কিছুর পরিজ্ঞাতা, তুমি তোমার বান্দাদের মাঝে সেসব বিষয়ের ফয়সালা করে দাও, বে বাগারে ভারা মভবিরোধ করছে।

٣٦ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّهُونِ وَالْأَرْضِ عُلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوْ إِنْهِ يَحْتَلِفُوْنَ

৪৭, যদি এ যালেমদের কাছে সেসব (সম্পদ) মজুদ থাকে, যা এ পথিবীর মাঝে (ছড়িয়ে) আছে, তার সাথে সমপরিমাণ (সম্পদ) আরো যদি তার কাছে থাকে, কেয়ামতের দিন আবাবের অনিষ্ট থেকে মুক্তি পেতে তারা আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে সে (আযাব) এসে উপস্থিত হবে, যার কল্পনাও তারা করতে পারেনি।

٣٤ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْأَرْضِ جَيِيْعًا وَّبِثْلَهُ مَعَدُ لَافْتَنَوْا بِهِ مِنْ سُوَّء مَا لَرْ يَكُوْلُوْا يَحْتَسِبُوْنَ

৪৮. এরা (যেভাবে) আমল করতে থাকবে, আন্তে আন্তে (সেভাবে) তার মন্দ ফলও প্রকাশ পেতে থাকবে, যে (আযাবের প্রতি) এরা হাসি বিদ্রূপ করতো তা তাদের (আমলের মতোই) তাদের পরিবেষ্টন করে ফেলবে।

٣٨ وَبَنَ المُرْسَوِّاتُ مَا كَسَبُوْا وَمَاقَ بِهِرْ مًّا كَانُوْا بِهِ يَسْتَهْزِءُوْنَ

৩৯ সুরা আঝ ঝুমার

896

অবশ্যই পরহেযগারদের দলে শামিল হয়ে যেতাম.

৩৯ সূরা আঝ ঝুমার

الْمُتَّقِينَ لا

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আযলামু |
|---|--|
| ৫৮. অথবা আযাব সামনে দেখে কেউ বলবে, আহা, যদি আমার (আবার) দুনিয়ায় পাঠিয়ে দেয়া (নসীবে) থাকতো, তাহলে আমি নেক বান্দাদের দলে শামিল হয়ে | ٥٨ أَوْ تَقُولَ حِيْنَ تَرَى الْعَلَابَ لَوْ أَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ |
| যেতাম! | |
| ৫৯. (আল্লাহ তায়ালা বলবেন,) হাাঁ, আমার আয়াতসমূহ অবশ্যই তোমার কাছে এসে পৌছেছিলো, কিছু তুমি | ٥٩ بَلَى قَنْ جَاءَثكَ إِيْتِيْ فَكَنَّابْتِ بِهَا |
| সেগুলোকে মিথ্যা বলেছিলে, তুমি অহংকার করেছিলে, তুমি ছিলে অস্বীকারকারীদেরই একজ্বন। | وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَفِرِيْنَ |
| ৬০. কেয়ামতের দিন তুমি দেখবে, যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর মিধ্যা আরোপ করে তাদের মুখণ্ডলো সব কদাকার | ٦٠ وَيَوْمَ الْقِيْمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَنَبُوا عَلَى |
| (বিশ্রী হয়ে গেছে), তুমি কি মনে করো জাহান্নাম (এ রকম) ঔদ্ধত্য পোষণকারীদের ঠিকানা (হওয়া উচিত) | اللهِ وُجُوْمُهُرْ مُّسُودَةً ﴿ الْيَسَ فِي جَهَنَّرَ |
| নয়ং | مَثْوًى لِّلْهُتَكَبِّرِيْنَ |
| ৬১. (এর বিপরীত) যারা পরহেযগারী করেছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের সাফল্যের সাথে (জাহান্লাম থেকে) উদ্ধার | ٣ وَيُنَجِّى اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقُوا بِمَفَازَتِمِرْ ﴿ لَا |
| করবেন, অকল্যাণ কখনো তাদের স্পর্শ করবে না, না তারা কখনো কোনো ব্যাপারে উদ্বিগু হবে! | يَهُمُّهُ السَّوْءُ وَلَا هُر يَحْزَنُونَ |
| ৬২. আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সব কিছুর (একক) শ্রষ্টা, | سه بریام رو مرس بر ۸ تامر را مرس |
| তিনই হচ্ছেন সব কিছুর ওপর নেগাহবান! | ٦٢ أَللَّهُ عَالِقٌ كُلِّ هَيْءٍ زوَّمُو عَلَى كُلِّ |
| | هَيْءٍ وَكِيْلُ |
| ৬৩. আসমানসমূহ ও যমীনের মূল চাবি (-কাঠি) তো তাঁরই কাছে; যারা (এখন) আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ | ٦٣ لَدَّ مَقَالِيْنُ السَّوْسِ وَالْأَرْضِ ﴿ وَالَّذِينَ |
| অস্বীকার করে চলেছে, (পরিশেষ) তারাই হবে ক্ষতিগ্রন্ত। | كَفَرُوْا بِالنِّهِ اللهِ أُولِّنِكَ مُرُ الْخُسِرُونَ ع |
| ৬৪. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, হে মূর্খ ব্যক্তিরা, তোমরা কি (এরপরও) আমাকে আল্লাহ তায়ালা ছাড়া | ٦٢ قُلُ أَنْغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّيٌّ أَعْبُدُ أَيُّهَا |
| অন্য কারো গোলামী বরণ করে নিতে বলছো? | الْجُولُونَ |
| ৬৫. অথচ (হে নবী,) তোমার কাছে এবং সেসব (নবীদের) কাছেও- যারা তোমার আগে অতিবাহিত হয়ে | ٦٥ وَلَقَلْ أُوْمِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ |
| গেছে, এ (মর্মে) গুহী পাঠানো হয়েছে, যদি তুমি আল্লাহ তায়ালার সাথে (অন্যদের) শরীক করো তাহলে অবশ্যই | قَبْلِكَ ءَ لَئِنْ أَشْرَكُسَ لَيَحْبَطَنَّ عَهَلُكَ |
| তোমার (সব) আমল নিষ্ণল হয়ে যাবে এবং তুমি মারাত্মক ক্ষতিগ্রন্তদের দলে শামিল হবে। | وَلَتَكُوْنَيٌّ مِنَ الْخُسِرِيْنَ |
| ৬৬. অতএব, তুমি একান্তভাবে আক্লাহ তায়ালারই | ٢٦ بَلِ اللَّهَ فَاعْبُنْ وَكُنْ مِّنَ الشَّكِرِيْنَ |
| এবাদাত করো এবং শোকরগোযার বান্দাদের মধ্যে শামিল হয়ে যাও। | |
| ৬৭. (আসলে) এ (মূর্খ) লোকগুলো আল্লাহ তায়ালার সেভাবে মূল্যায়নই করেনি যেভাবে তাঁর মূল্যায়ন করা | ٢٤ وَمَا قَنَرُوا اللَّهَ مَقَّ قَنْرِهِ أَنَّ وَالْأَرْضُ |
| উচিত ছিলো, কেয়ামতের দিন গোটা পৃথিবীই থাকবে | جَبِيْعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيمَةِ وَالسَّاوْسُ |
| তাঁর হাতের মুঠোয় এবং আসমানগুলো (একে একে) ভাঁজ করা অবস্থায় তাঁর ডান হাতে থাকবে; পবিত্র ও | مَوْدِيْنَ بِيَهِينِهِ ﴿ مُدَادًا وَتَعَلَى عَمَّا |
| মহান তিনি, ওরা (তাঁর সাথে) যা কিছু শেরেক করে তা | ۢ يُشْرِكُونَ ُ سُرِكُونَ |
| থেকে তিনি অনেক উধের্ব। | o)) |

৩৯ সূরা আঝ ঝুমার

৬৮. (যখন প্রথমবার) শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, তখন আসমানসমূহ ও যমীনে যা আছে তার (সব কিছুই) বেহুশ হয়ে যাবে, অবশ্য আল্লাহ তায়ালা যা চান (তার কথা আলাদা); অতপর আবার শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, তখন তারা সবাই দভায়মান হয়ে (সে বীভৎস দৃশ্য) দেখতে থাকবে।

وَتُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَن فِي السَّبوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ وَ ثُرَّ نُفِحَ فِيْدِ أُخُرِى فَاذَا هُرْ قِيَامٌ

৬৯. (এ সময়) যমীন তার মালিকের নুরের ঝলকে উদ্ভাসিত হয়ে ওঠবে, মানুষের (কর্মফলের) নথিপত্র (সামনে) ताथा হবে, नवीत्मत ও অन्যाना সाक्षीत्मत्र अतन وَالشُّهَنَ وَالشُّهَنَ وَالشُّهَنَ اللَّهُ الْم হাযির করা হবে, তাদের সবার সাথে ন্যায়বিচার করা হবে. তাদের কারো ওপর বিন্দুমাত্র যুলুম করা হবে না।

٦٩ وَٱشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ وَقَضِىَ بَيْنَهُرْ بِالْحَقِّ وَهُرْ لَا يُظْلَمُوْنَ

৭০. প্রত্যেক মানুষকে সে পরিমাণ প্রতিফলই দেয়া হবে যে পরিমাণ কাজ সে করে এসেছে. (কারণ) আল্লাহ তায়ালা সে বিষয়ে সম্যক অবগত আছেন যা কিছ তারা প্রতিনিয়ত করে বেড়াতো।

٤٠ وَوُفَّيَتِي كُلُّ نَفْسِ مًّا عَهِلَتِيْ وَ هُوَ إَعْلَم بِهَا يَفْعَلُوْنَ ع

৭১. যেসব লোক কৃফরী করেছে তাদের দলে দলে জাহান্নামের দিকে তাড়িয়ে নেয়া হবে; এমনি (তাড়া খেয়ে) যখন তারা জাহানামের কাছে পৌছুবে তখন (সাথে সাথেই) তার (সদর) দরজা খুলে দেয়া হবে এবং তার রক্ষী (ফেরেশতা)-রা ওদের বলবে, তোমাদের কাছে কি তোমাদের মধ্য থেকে কোনো রস্তুল আসেনি, যারা তোমাদের কাছে তোমাদের মালিকের (কেতাবের) আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করতো এবং তোমাদের এমনি একটি দিনের সাক্ষাৎ সম্বন্ধে সতর্ক করে দিতো: ওরা বলবে (হাাঁ), অবশ্যই এসেছিলো, কিন্তু কাফেরদের ব্যাপারে (আল্লাহ তায়ালার সে) আযাব (সম্পর্কিত) ওয়াদাই আ**জ বান্ত**বায়িত হয়ে গেলো।

ا ٤ وَسِيْقَ الَّذِينَ كَفَرُوْآ إِلَى جَهَنَّمَ زُمَرًا ﴿ مَتَّى إِذَا جَاءُوْهَا فُتحَتْ إَبُوَابُهَا وَقَالَ لَهُرْ عَزَنَتُهَا ۚ ٱلرَّ يَاتِكُرْ رُسُلٌ مِّنْكُرْ يَتْكُونَ عَلَيْكُمْ أَيْتِ رَبُّكُمْ وَيُنْفِرُوْنَكُمْ لَقَاءَ يَوْمِكُم مِنَا ، قَالُوْا بَلَى وَلَٰكِنْ مَقَّتْ كَلَمَةُ الْعَلَ ابِ عَلَى الْكَفِرِيْنَ

৭২. ওদের (তখন) বলা হবে, যাও, প্রবেশ করো জাহানামের দরজা দিয়ে, (ভোমরা) সেখানেই চিরদিন থাকবে, ঔদ্ধত্য প্রকাশকারীদের জন্যে কতো নিক্ট হবে এ ঠিকানা!

فِيْهَا } فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ

৭৩. (অপরদিকে) যারা তাদের মালিককে ভয় করেছে তাদের সবাইকে দলে দলে জান্লাতের দিকে নিয়ে যাওয়া হবে: এমনি করে যখন সেখানে তারা (জান্নাতের দোরগোড়ার) এসে হাযির হবে (তখন তারা দেখতে পাবে) তার দরজাসমূহ তাদের অভিবাদনের জন্যে খুলে রাখা হয়েছে, (উষ্ণ অভিনন্দ জানিয়ে) তার রক্ষী (ফেরেশতা)-রা তাদের বলবে, তোমাদের প্রতি সালাম, তোমরা সুখে থাকো, চিরন্তন জীবন কাটানোর জন্যে এখানে দাখিল হয়ে যাও!

٤٣ وَسِيْقَ الَّذِينَ اتَّقُوْا رَبُّهُمْ الِّي الْجَنَّة زُمَرًا ﴿ مَتَّى إِذَا جَاَّءُوْهَا وَفُتِحَتْ ٱبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُرْ غَزَنَتُهَا سَلَّ عَلَيْكُمْ طَيْتُ فَادْخُلُوْهَا خَلِٰدِيْنَ

৭৪. তারা (সেখানে প্রবেশ করে কৃডজ্ঞ চিন্তে) বলবে, সমস্ত তারীফ আল্লাহ তায়ালার, যিনি আমাদের দেয়া তাঁর প্রতিশ্রুণতি পুরণ করেছেন এবং আমাদের এ ভূমির অধিকারী বানিয়ে দিয়েছেন, এখন আমরা (এ) জান্নাতের

4 و قَالُوا الْحَمْلُ لِلَّهِ الَّذِي مَنَ قَنَا وَعْنَهُ وَ أُوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوًّا مِنَ الْجَنَّةِ

৩৯ সুরা আঝ ঝুমার

(8 9b)

| | যেখানে ইচ্ছা সেখানেই বসবাস করবো, (সং) কর্ম সম্পাদনকারীদের (এ) পুরস্কার কভোই না উত্তম! | مَيْثُ نَشَاءُ ﴾ فَنِعْرَ أَجْرُ الْعَيِلِيْنَ |
|----------------|--|---|
| | ৭৫. (হে নবী, সেদিন) তুমি ফেরেশতাদের দেখতে পাবে, ওরা আরশের চারদিকে ঘিরে তাদের মালিকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে চলেছে, (সেদিন) ইনসাফের সাথে সবার বিচার (-কার্য যখন) | 43 وَتَرَى الْمَلَّنِكَةَ حَافِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَبْلِ رَبِّهِرْ } وَقُضِيَ |
| | সম্পন্ন হবে, (চারদিক থেকে) একই ঘোষণা ধ্বনিত হবে- সবটুকু প্রশংসাই সৃষ্টিকুলের মালিক আল্পাহ তায়ালার | بَيْنَهُر بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَهْلُ لِلَّهِ رَبِّ الْعٰلَهِيْنَ ع |
| 5 | अ त्ना । | |
| | স্রা আশ মোমেন | سُوْرَةُ الْكُوْمِنِ مَكِيدً |
| ١ | মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৮৫, ৰুকু ৯ | أَيَاسٌ : ٥٨ رُكُوعٌ : ٩ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| | ১. হা-মীম, | ا مر |
| ١ | ২. এ গ্রন্থ আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই নাযিল হয়েছে, (তিনি) পরাক্রমশালী, সর্বজ্ঞ, | ٢ تَنْزِيْلُ الْكِتْبِ مِنَ اللّهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْرِ ٧ |
| | ৩. (তিনি মানুষের) গুনাহ মাফ করেন, তাওবা কবুদ করেন, (তিনি) শান্তিদানে কঠোর, (তিনি) বিপুদ | ٣ غَافِرِ النَّائَبِ وَتَابِلِ التَّوْبِ هَرِيْدِ |
| ı | প্রভাব-প্রতিপত্তির মালিক; তিনি ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই, (একদিন) তাঁর দিকেই (সবাইকে) ফিরে যেতে | الْعِقَابِ لا ذِي الطَّوْلِ ﴿ لاَ إِلَّهُ إِلَّا مُوَ ﴿ |
| | रत्र। | إلَيْهِ الْهَمِيْرُ |
| | ৪. (হে নবী,) আল্লাহ তায়ালার (নাযিল করা এ) আয়াতসমূহ নিয়ে ওধু তারাই বিতর্কে লিও হয় য়ারা | مُ مَا يُجَادِلُ فِي أَيْسِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ |
| - | কুষ্ণরী করে, অতপর শহরে (বন্দরে) তাদের বিচরণ যেন (কোনোদিনই) তোমাকে প্রতারিত করতে না পারে। | كَفَرُوْ اللَّهِ يَغْرُرُكَ تَقَلُّبُهُرْ فِي الْبِلَادِ |
| | ৫. তাদের আগে নৃহের জাতি (সে যমানার নবীদের) মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিলো, আবার তাদের পর অন্যান্য | ٥ كَنَّ بَسَ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنَ |
| | দলও (নবীদের অস্বীকার করেছে), প্রত্যেক জাতিই তাদের নবীদের পাকড়াও করার জন্যে তাদের বিরুদ্ধে | بَعْدِهِمْ مَ وَهَمَّتُ كُلُّ أَمَّةً بِرَسُولِهِمْ |
| <u>अ</u> अं | অভিসন্ধি এটেছিলো এবং সত্যকে ব্যর্থ করে দেয়ার জন্যে তারা অন্যাভাবে যুক্তি তর্কে লিপ্ত হয়েছিলো, (পরিণামে) | لِيَاْخُنُونَا وَجُنَالُوا بِالْبَاطِلِ لِيُنْحِضُوا بِهِ |
| क्यून्वी | আমিও তাদের পাকড়াও করেছি। (চেয়ে দেখো), কেমন (ভীতিকর) ছিলো আমার আ্যাব! | الْحَقُّ فَاغَنْ تُهُرُ عَ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ |
| ম ওয়াক্যু | ৬. এভাবে কাফেরদের ওপর তোমার মালিকের বাণীই | ٢ وَكَنْ لِكَ مَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيثَ |
| क नात्य | সত্য প্রমাণিত হলো যে, এরা সত্যি সত্যিই জাহান্নামী। | كَفَرُوْآ أَنَّهُمْ أَصْحُبُ النَّارِ صَ |
| ওয়াক্ফে লাযেম | ৭. যেসব (ফেরেশতা আল্লাহ তায়ালার) আরশ বহন করে চলেছে, যারা এর চার্নিকে (কর্তব্যরত) রয়েছে, তারা | ٤ ٱلَّذِيْنَ يَحْبِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ مَوْلَهُ |
| | নিজেদের মালিকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে চলেছে, তারা তাঁর ওপর ঈমান রাখে, তারা ঈমানদারদের | يُسَرِّحُونَ بِعَمْنِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ |
| | মাগফেরাতের জন্যে দোয়া করে (তারা বলে), হে আমাদের মালিক, তুমি তোমার অনুগ্রহ ও জ্ঞানসহ | وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ أَمَنُوا ﴿ رَبُّنَا وَسِعْتَ |
| | ৪০ সুরা আল মোমেন ৪৭৯ | মন্যিল ৬ |
| | | |

পারা ২৪ ফামান আয়লামু

কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

সবকিছুর ওপর ছেয়ে আছো. সুতরাং সেসব লোককে তমি ক্ষমা করে দাও যারা তাওবা করে এবং যারা তোমার (দ্বীনের) পথ অনুসরণ করে, তুমি তাদের জাহান্লামের আযাব থেকে বাঁচাও!

كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِرْ عَنَابَ الْجَحِيْرِ

৮. হে আমাদের মালিক, তুমি তাদের সেই স্থায়ী জানাতে প্রবেশ করাও যার প্রতিশ্রুতি তুমি তাদের দিয়েছো. তাদের পিতামাতা, তাদের স্বামী-স্ত্রী ও তাদের সম্ভান-সম্ভতির মধ্যে যারা নেক কাজ করেছে (তাদেরও জানাতে প্রবেশ করাও), নিক্যুই তুমি পরাক্রমশালী, প্রজাময়

^ رَبُّنَا وَ اَدْعِلْهُرْ جَنَّتِ عَنْنِ ۖ الَّتِي وَعَنْ تُهُر وَمَنْ صَلَحَ مِنْ الْبَانِهِرْ وَأَزْوَ اجِهِرْ وَذُرِّيَّتِهِرْ ، إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ لِا

৯. তুমি (কেয়ামতের দিন) তাদের দুঃখ-কষ্ট থেকে রক্ষা করো, (মূলত) সেদিন তুমি যাকেই দুঃখ কষ্ট থেকে বাঁচিয়ে দেবে, তাকে তুমি (বড়ো বেশী) দয়া করবে, আর এটাই হচ্ছে (সেদিনের) সবচাইতে বড়ো সাফল্য।

٩ وَقِهِرُ السَّيَّاتِ ، وَمَنْ تَقِ السَّيَّاتِ يَوْمَئِنَ فَقَلُ رَحِهْتَهُ م وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظيْرُ ع

১০. নিসন্দেহে যারা কৃষ্ণরী করেছে, (তাদের উদ্দেশে) ঘোষণা দিয়ে বলা হবে, (আজ্ঞ) তোমাদের নিজেদের প্রতি তোমাদের যে রোষ- তার চাইতে আল্লাহ তারালার রোষ আরো বেশী (বিশেষ করে), যখন তোমাদের ঈমানের দিকে ডাকা হচ্ছিলো আর তোমরা তা অস্বীকার করছিলে।

١٠ إِنَّ الَّذِيثَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مُّقْتِكُمِ أَنْفُسَكُمِ إِذْ تُلْعَوْنَ إِلَى الْإِيْهَانِ فَتَكُفُّرُوْنَ

১১. তারা বলবে, হে আমাদের মালিক, তুমি তো দু'বার আমাদের মৃত্যু দিলে, আবার দু'বার জীবনও দিলে, আমরা আমাদের অপরাধ স্বীকারও করেছি, অতএব (এখন আমাদের এখান থেকে) বেরিয়ে যাওয়ার কোনো রাস্তা আছে কিঃ

١١ قَالُوْا رَبَّنَا ٓ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَهْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِنُ نُوْبِنَا فَهَلْ إِلَى هُرُوْجِ مِّنْ سَبِيْل

১২. (তাদের বলা হবে.) তোমাদের (এ শান্তি) তো এ জন্যে, যখন তোমাদের এক আল্লাহর দিকে ডাকা হতো তখন তোমরা তা অস্বীকার করতে, যখন তাঁর সাথে শরীক করা হতো তখন তোমরা তা মেনে নিতে: (আজ) সর্বময় সিদ্ধান্তের মালিক হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা- তিনি সর্বোচ্চ, তিনি মহান।

١٢ ذٰلِكُرْ بِأَنَّدُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَهُنَّا كَفُوْتُرْج وَانْ يَشْوَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا مَ فَالْحُكُمُ لِلَّهِ الْعَلِيّ الْكَبِيْر

১৩. (হে মানুষ্) তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের তাঁর (কুদরতের) নিদর্শনসমূহ দেখান এবং আসমান থেকে তোমাদের জন্যে রেযেক পাঠান, (আসলে এ থেকে) তারাই শিক্ষা গ্রহণ করে যারা (একান্তভাবে) আল্লাহ তায়ালার দিকে নিবিষ্ট হয়।

١٣ مُوَ الَّذِي يُرِيكُم أَيْتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السُّهَاءِ رِزْقًا ، وَمَا يَتَنَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ

১৪. অতএব (হে মুসলমানরা), তোমরা (তোমাদের) জীবন বিধানকে একনিষ্ঠভাবে আল্লাহ তায়ালার জন্যেই নিবেদিত করো, একমাত্র তাঁকেই ডাকো, যদিও কাফেররা (এটা) পছন্দ করে না।

١٣ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الرِّيْنَ وَلَوْ كُولاً الْكُفُرُونَ

১৫. তিনি সুউচ্চ মর্যাদার অধিকারী, আরশের মহান অধিপতি, তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্য থেকে যার ওপর ইচ্ছা الروْحَ مِنْ أَمْرِةٍ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِةٍ जांत आरम करत त्म الروْحَ مِنْ أَمْرِةٍ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِةٍ (ওহীপ্রাপ্ত রসুল আল্লাহর সাথে) সাক্ষাত লাভের (এ) দিনটির ব্যাপারে (বান্দাদের) সাবধান করে দিতে পারে.

14 رَفِيْعُ النَّرَجْسِ ذُوالْعَرْشِ ۽ يُلْقِي لِيُنْكِرَ بَوْاً التَّلَاق لا

৪০ সুরা আল মোমেন

8bro

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আয়লামু |
|---|---|
| ১৬. সেদিন (যখন) মানুষ (হাশরের ময়দানে) বেরিয়ে পড়বে, (তখন) তাদের কোনো কিছুই আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে গোপন থাকবে না; (বলা হবে,) আজ সর্বময় | ١٦ يَوْمَ مُر بُرِزُونَ أَ لَا يَخْفَى عَلَى اللهِ مِنْهُر شَيْءً النِّي الْبُلْكُ الْيَوْمَ اللَّهِ |
| রাজত্ব ও কর্তৃত্ব কার জন্যে? (জবাব আসবে,) প্রবল পরাক্রমশালী এক আল্লাহ তায়ালার জন্যে। | الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ |
| ১৭. আজ প্রত্যেক মানুষকে সে পরিমাণ প্রতিফলই দেয়া হবে যে পরিমাণ সে (দুনিয়ায়) অর্জন করে এসেছে; আজ | ١٤ ٱلْيَوْمُ تُجُزِى كُلُّ نَفْسُ بِهَا كَسَبَتُ ﴿ لَا |
| কারও প্রতি কোনোরকম অবিচার হবে না, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা হিসাব গ্রহণে তৎপর। | ظُلْمَ الْيَوْاً ﴿ إِنَّ اللَّهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ |
| ১৮. (হে নবী,) তুমি তাদের আসন্ন (কেয়ামতের) দিন সম্পর্কে সতর্ক করে দাও, যখন কষ্টে তাদের প্রাণ কণ্ঠাগত | ١٨ وَ اَنْنِرْهُمْ مِيْوا اللَّإِنَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَنَى |
| হবে, (চারদিক থেকে) দম বন্ধ হবার উপক্রম হবে; সেদিন যালেমদের (আসলেই) কোনো বন্ধু থাকবে না, | الْحَنَاجِرِ كُطْوِيْنَ أَهُ مَا لِلطَّلِهِيْنَ مِنْ مَهِيْمٍ وَّلَا شَفِيْع يُطُوعُ مَهِيْمٍ وَّلَا شَفِيْع يُطَاعُ ، |
| থাকবে না এমন কোনো সুপারিশকারী, যা (তখন) গ্রাহ্য করা হবে; | |
| ১৯. তিনি চোখের খেয়ানত সম্পর্কে (যেমন) জানেন, (তেমনি জানেন) যা কিছু (মানুষের) মন গোপন করে রাখে (সে সব কিছুও)। | 19 يَعْلَـرُ خَالِنَةَ الْإَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصَّّاوُرُ |
| ২০. আল্লাহ তায়ালা (তাঁর বান্দাদের মাঝে) ন্যায়বিচার করেন; (কিন্তু) ওরা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে যাদের | ٢٠ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ • وَالَّذِيْنَ يَنْعُونَ |
| ডাকে তারা (অন্যের ন্যায়বিচার তো দূরের কথা, নিজেদের) কোনো বিচার ফয়সালাও করতে সক্ষম নয়; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন সর্বশ্রোতা, সর্বদুষ্টা। | مِنْ دُوْنِهِ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ، إِنَّ اللَّهَ مُوَ السَّيْعُ الْبَصِيْرُ ع |
| ২১. এ লোকগুলো কি (আমার) যমীনে ঘোরাফেরা করে নাঃ (ঘুরলে) অতপর তারা দেখতে পেতো এদের আগের | ٢١ أَوَ لَمْ يَسِيْرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا |
| লোকগুলোর কি পরিণাম হয়েছিলো; অথচ শক্তিমন্তার দিক থেকে (হোক) এবং যেসব কীর্তি তারা (এ) দুনিয়ায় | كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ النَّذِينَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِرْ ا |
| রেখে গেছে (সে দৃষ্টিতে হোক), যমীনে তারা ছিলো (এদের চাইতে) অনেক বেশী প্রবল, (কিন্তু) আল্লাহ | كَانُوْا هُرْ أَشَلَّ مِنْهُرْ قُوَّةً وَّأْثَارًا فِي |
| তায়ালা তাদের অপরাধের জ্বন্যে তাদের পাকড়াও করলেন; আল্লাহ তায়ালার গ্যব থেকে তাদের রক্ষা | الْأَرْضِ فَأَخَلَمُرُ اللهُ بِنُ نُوْبِهِرْ ﴿ وَمَا كَانَ لَهُ بِنُ نُوْبِهِرْ ﴿ وَمَا كَانَ لَهُرْ مِنْ اللهِ مِنْ وَاقِ |
| করার মতো কেউই ছিলো না। ২২. এটা এ কারণে, তাদের কাছে (সুস্পষ্ট) নিদর্শনসহ | |
| আল্লাহ তায়ালার রস্লদের আগমন সত্ত্বেও ওরা তাদের অস্বীকার করেছিলো, অতপর আল্লাহ তায়ালা তাদের | روسا رياده رياده دريان التيمير وسنهر |
| পাকড়াও করলেন, তিনি খুব শক্তিশালী, শান্তিদানেও তিনি কঠোর। | هَرِيْنُ الْعِقَابِ |
| ২৩. আমি আমার আয়াত ও সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণসহ মৃসাকে পাঠিয়েছিলাম, | ٢٣ وَلَقَنْ أَرْسَلْنَا مُوْسَٰى بِالْمِٰتِنَا وَسُلْظَىٰ ٢٣ مُّبِيْنِ ٧ |
| ২৪. (তাকে পাঠিয়েছিলাম) ফেরাউন, হামান ও কারনের কাছে, অতপর ওরা বললো, এ তো হচ্ছে এক চরম মিথ্যাবাদী যাদুকর। | ٢٢ إِلَى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا الْحِرِّ كَنَّ أَبُّ |

৪০ সূরা আল মোমেন

পারা ২৪ ফামান আযলামু

২৫. অতপর যখন সে আমার কাছ থেকে সত্য (দ্বীন) নিয়ে তাদের কাছে এলো, তখন তারা বললো, যারা তার সাথে (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান এনেছে তাদের পুত্র সন্তানদের তোমরা হত্যা করো এবং (তথু) তাদের কন্যাদেরই জীবিত রাখো; (কিন্তু) কাফেরদের ষড়যন্ত্র (তো) ব্যর্থতা ছাড়া আর কিছুই নয়।

٢٥ فَلَمًّا جَآءُمُرْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْا أَبْنَاءَ الَّذِينَ أَمَنُوْا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوْا نِسَاءَهُرْ ، وَمَا كَيْنُ الْكُفِرِيْنَ إِلَّا فِي ضَلْلِ

২৬. (এক পর্যায়ে) ফেরাউন (তার পারিষদদের) বললো. তোমরা আমাকে ছেড়ে দাও- আমি মুসাকে হত্যা করে ফেলি, ডাকুক সে তার রবকে, আমি আশংকা করছি সে তোমাদের গোটা জীবন ব্যবস্থাই পাল্টে দেবে এবং (এ) যমীনেও সে (নানারকমের) বিপর্যয় ঘটাবে।

٢٦ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِي ۚ أَقْتُلْ مُوسَى وَلَيَنْعُ رَبَّدٌ ۚ ۚ إِنِّي ٓ اَعَانُ أَنْ يُّبَرِّلَ دِيْنَكُ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْإَرْضِ الْفَسَادَ

২৭. মুসা বললো, প্রতিটি উদ্ধত ব্যক্তি, যে হিসাব নিকাশের দিনকে বিশ্বাস করে না, আমি তার (অনিষ্ট) থেকে আমার মালিক ও তোমাদের মালিকের কাছে (আগেই) পানাহ চেয়ে নিয়েছি।

٢٠ وَقَالَ مُوْسَى إِنِّي عُنْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّر لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْ ٓ الْحِسَابِعِ

২৮. একজন মোমেন ব্যক্তি- যে ছিলো (স্বয়ং) ফেরাউনের গোত্রেরই লোক (এবং) যে ব্যক্তি নিজের ঈমান (এদ্দিন পর্যন্ত) গোপন করে আসছিলো, (সব তনে) বললো (আচ্ছা), তোমরা কি একজন লোককে (তথু এ জন্যেই) হত্যা করতে চাও, যে ব্যক্তি বলে আমার মালিক হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা, (অথচ) সে তোমাদের মালিকের কাছ থেকে সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণসহই তোমাদের কাছে এসেছে: যদি সে মিথ্যাবাদী হয় তাহলে তার (এ) মিথ্যা তো তার ওপরই (বর্তাবে), আর যদি সে সত্যবাদী হয় তাহলে যে (আযাবের) ব্যাপারে সে তোমাদের কাছে ওয়াদা করছে তার কিছু না কিছু তো এসে তোমাদের পাকডাও করবে: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা এমন লোককে সঠিক পথ দেখান না যে সীমালংঘনকারী, মিথ্যাবাদী।

٢٨ وَقَالَ رَجُلُّ مُّؤْمِنُ لَيْ مِنْ أَلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُرُ إِيْهَانَهُ ٱتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَّقُولَ رَبِّى اللهُ وَقَلْ جَآءُكُرْ بِالْبَيِّنْتِ مِنْ رَّبِّكُرْ ، وَإِنْ يُّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْدِ كَلْ بُدَّ ، وَإِنْ يُّكُ مَادِقًا يُّصبُكُرْ بَعْضُ الَّذِي يَعِنُكُرْ ، إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْرِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَنَّابٌ

২৯. (সে বললো,) হে আমার জাতির লোকেরা, এ যমীনে আজ তোমরা হচ্ছো ক্ষমতাবান, কিন্তু (আগামীকান) আমাদের ওপর (আযাব) এসে গেলে কে আমাদের আল্লাহর (পাঠানো) দুর্যোগ থেকে সাহায্য করবে: جَاءَنَا وَقَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُورِكُورُ إِلَّا مَا أَرِيكُورُ إِلَّا مَا أَرِيكُورُ إِلَّا مَا أَرِيكُورُ اللهِ تَعَالَى فِرْعَوْنُ مَا أُورِيكُورُ إِلَّا مَا أَرِيكُورُ اللهِ تَعَالَى فِرْعَوْنُ مَا أُورِيكُورُ إِلَّا مَا أَرِيكُورُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّ عَلَا عَلَّ عَلَى اللّهُ عَلَى রায়ই দেবো, যেটা আমি (ঠিক হিসেবে) দেখবো, আমি তো তোমাদের সত্য পথ ছাডা অন্য কিছুই দেখাবো না।

٢٩ يٰقُوْ إِ لَكُرُ الْهُلْكُ الْيَوْ اَ ظُهِرِيْنَ فِي الْأَرْضِ زِفَهَيْ يَّنْصُرُنَا مِنْ اللهِ إِنْ وَمَا آهُدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّهَادِ

৩০. (যে ব্যক্তি গোপনে) ঈমান এনেছিলো সে বললো. হে আমার জাতি, আমি তোমাদের জন্যে পূর্ববর্তী সম্প্রদায় সমূহের মতোই (আযাবের) দিনের আশংকা করছি,

٣٠ وَقَالَ الَّذِيُّ أَسَ يُقَوْ ۚ إِنِّيُّ آَغَانُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْ إِ الْأَحْزَابِ لا

৩১. (তোমাদের অবস্থা এমন যেন না হয়-) যেমনটি (হয়েছিলো) নৃহের জাতি, আ'দ, সামৃদ ও তাদের পরে যারা এসেছিলো (তাদের সবার); আল্লাহ তায়ালা কখনো তাঁর বান্দাদের ওপর যুলুম করতে চান না।

٣١ مِثْلَ دَأْبِ قَوْرٍ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَهُوْدَ وَ الَّانِيْنَ مِنْ ۖ بَعْنِهِ ﴿ وَمَا اللَّهُ يُويْنُ ظُلْمًا

৪০ সূরা আল মোমেন

843

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২৪ ফামান আযলামু

৩২. হে আমার জাতি, আমি তোমাদের জন্যে প্রচন্ত হাঁক ডাকের (কেয়ামত) দিবসের (আযাবের) আশংকা করি

৩৩. সেদিন তোমরা পেছন ফিরে পালাবে, কিন্তু আল্লাহ তায়ালার (পাকড়াও) থেকে তোমাদের রক্ষা করার কেউই থাকবে না, (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যাকে পথভ্রষ্ট

করেন তার জন্যে কোনো পথ প্রদর্শনকারীই থাকে না।

٣٢ وَيٰقُوْ إِنِّيْ أَخَانُ عَلَيْكُرْ يَوْ اَلتَّنَادِ ٧ ٣٣ يَوْ اَ تُولُّوْنَ مُنْ بِرِيْنَ عَ مَا لَكُرْ مِّى اللهِ مِنْ عَاصِرِ ع وَمَنْ يَّضْلِلِ اللهُ فَهَا لَهٌ مِنْ هَاد

৩৪. এর আগে তোমাদের কাছে (নবী) ইউসুফ সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিলো, কিন্তু সে যা কিছু বিধান নিয়ে তোমাদের কাছে এসেছে তোমরা তাতে (গুধু) সন্দেহই পোষণ করেছো; এমনকি যখন সে মরে গেলো তখন তোমরা বলতে শুরু করলে, আল্লাহ তায়ালা কখনো আর কোনো রসূল পাঠাবেন না; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা এভাবেই (নানা বিভ্রান্তিতে ফেলে) সীমালংঘনকারী ও সংশয়বাদীদের গোমরাহ করে থাকেন,

٣٢ وَلَقَلْ جَاءَكُرْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنْ فِي مُلَّ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنْ فِي مُلَكَّ مِنَّا جَاءَكُرْ بِالْبَيِّنْ فِي مُلَكَّ مِنَّا جَاءَكُرْ بِهِ مَ حَتَّى إِذَا مَلَكَ قُلْتُرْ لَنْ يَبْعَن اللّهُ مِنْ بَعْلِ اللّهُ مَنْ مُو مِنْ بَعْلِ اللّهُ مَنْ مُو مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ على مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ على

৩৫. যারা তাদের নিজেদের কাছে আসা দলীল প্রমাণ না থাকা সত্ত্বেও আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ নিয়ে বিতন্ডায় লিপ্ত হয়; তারা আল্লাহ তায়ালা ও ঈমানদারদের কাছে খুবই অসন্তোষের কারণ বলে বিবেচিত; আল্লাহ তায়ালা এভাবেই প্রতিটি অহংকারী ও স্বৈরাচারী ব্যক্তির হৃদয়ের ওপর মোহর মেরে দেন।

٣٥ الَّن ِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيَّ أَيْسِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَٰنٍ اَتُهُمْ ، كَبُرَ مَقْتًا عِنْنَ اللَّهِ وَعِنْنَ اللَّهِ وَعِنْنَ اللَّهِ وَعِنْنَ اللَّهِ وَعِنْنَ اللَّهِ عَلَى كُلِّ النِّذِيْنَ أَمَنُوْا ، كَنْ لِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبِ مُتَّارٍ مَبَّارٍ

৩৬. ফেরাউন (একদিন উযীর হামানকে) বললো, হে হামান, আমার জন্যে তুমি একটি সুউচ্চ প্রাসাদ নির্মাণ করো, যাতে করে আমি (আকাশে চড়ার) কিছু একটা অবলম্বন পেতে পারি

٣٦ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يُهَامِٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّیْ آَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ٧

৩৭. (আকাশে চড়ার অবলম্বন এমন হবে) যেন আমি মৃসার মাবুদকে (তা দিয়ে উঁকি মেরে) দেখে আসতে পারি, অবশ্য আমি তো তাকে মিথ্যাবাদীই মনে করি; এভাবেই ফেরাউনের কাছে তার এ নিকৃষ্ট কাজটি শোভনীয় (প্রতীয়মান) করা হলো এবং তাকে (সত্য পথ থেকে) নিবৃত্ত করা হলো; (মৃলত) ফেরাউনের ষড়যন্ত্র (তার নিজের) ধ্বংস ছাড়া আর কিছু নয়।

٣٠ اَسْبَابَ السَّبُوٰسِ فَاَطَّلِعَ إِلَى اِلْهِ مُوْسَٰى وَالِّيْ اِلْهِ مُوْسَٰى وَالِّيْ وَكُنْ لِكَ وَكَنْ لِكَ زُيِّنَ لَا فَرْعَوْنَ سُوَّةً عَبَلِهِ وَصُلَّ عَنِ السَّبِيْلِ ، وَمَا كَيْنُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ع

৩৮. যে ব্যক্তিটি ঈমান এনেছিলো সে বললো, হে আমার জাতি, তোমরা আমার কথা শোনো, আমি তোমাদের (একটা) সঠিক পথের সন্ধান দিচ্ছি,

٣٨ وَقَالَ الَّذِي ۗ أَمَنَ يُقَوْمِ التَّبِعُوْنِ التَّبِعُوْنِ الْمَاكِمُ سَبِيْلَ الرَّهَادِج

৩৯. হে আমার সম্প্রদায়, (তোমাদের) এ দুনিয়ার জীবন (কয়েকটি দিনের) উপভোগের বস্তু মাত্র, স্থায়ী নিবাস তো হচ্ছে আখেরাত!

٣٩ يُقَوْرُ إِنَّمَا مُنِهِ الْحَيْوةُ النَّانَيَا مَتَاعٌ ر وَّانَّ الْأُخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ

৪০. যে ব্যক্তি কোনো মন্দ কাজ করবে তাকে সে পরিমাণের চাইতে বেশী প্রতিফল দেয়া হবে না, পুরুষ হোক কিংবা নারী, যে কেউই নেক কাজ করবে সে-ই মোমেন (হিসেবে গণ্য হবে হাঁ,), এমন ধরনের লোকেরাই জান্নাতে প্রবেশ করবে, সেখানে তাদের অপরিমিত রেযেক দেয়া হবে।

٣٠ مَنْ عَمِلَ سَيِّنَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ج وَمَنْ عَمِلَ مَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ ٱنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَٱولَٰنِكَ يَنْ مُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيْهَا بِغَيْرٍ حِسَابٍ

৪০ সুরা আল মোমেন



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আফলামু |
|--|---|
| ৪১. হে আমার জাতি, এ কি আন্চর্য, আমি তোমাদের (জাহানুাম থেকে) মুক্তির দিকে ডাকছি, আর তোমরা | ٣١ وَيَقَوْمِ مَا لِي ٓ أَدْعُوْكُر ۚ إِلَى النَّجُوةِ |
| আমাকে ডাকছো জাহান্নামের দিকে! | وَتَنْعُوْنَنِيٓ ۚ إِلَى النَّارِ ﴿ |
| ৪২. তোমরা আমাকে একথার দিকে দাওয়াত দিচ্ছো যেন আমি আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করি এবং তাঁর (সাথে) | ٣٢ تَنْعُوْنَنِيْ لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا |
| অন্য কাউকে শরীক করি, যার সমর্থনে আমার কাছে | لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ زِوْآنَا ٱدْعُوْكُمْ إِلَى |
| কোনো জ্ঞান নেই, (পক্ষান্তরে) আমি তোমাদের আহ্বান করছি সেই আল্লাহ তায়ালার দিকে, যিনি পরাক্রমশালী ও ক্ষমাশীল। | الْعَزِيْزِ الْعَقَّارِ |
| ৪৩. যে বিষয়টির প্রতি তোমরা আমাকে ডাকছো, দুনিয়াতে তার দিকে ডাকা (কোনো মানুষের জন্যেই) | ٣٣ لَا جَرَا ٱلِّمَا تَلْعُوْنَنِي ۚ إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ |
| শোভনীয় নয়, (তেমনি) পরকালে তো (মোটেই) নয়, | دَعُوناً فِي اللَّاثَيَا وَلا فِي الْأَخِرةِ وَأَنَّ |
| কেননা আমাদের সবাইকে তো আল্লাহ তায়ালার দিকেই ফিরে যেতে হবে, (সত্যি কথা হচ্ছে), যারা সীমালংঘন | مَرَدَّنَآ ۚ إِلَى اللهِ وَأَنَّ الْهُسْرِفِيْنَ ۗ هُرْ |
| করে তারা অবশ্যই জাহান্নামের অধিবাসী। | أَشْعُبُ النَّارِ |
| 88. (আজ) আমি তোমাদের যা কিছু বলছি, অচিরেই তোমরা তা শ্বরণ করবে, আর আমি তো আমার কাজকুর্ম | ٣٣ فَسَتَنْكُرُونَ مَا آتُولُ لَكُر ، وَٱفَوِّضُ |
| (বিষয় আসয়) আল্লাহ তায়ালার কাছেই সোপর্দ করছি, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের প্রতি সবিশেষ নযর রাখেন। | آمُرِيْ آلِي اللهِ ، إنَّ اللهُ بَصِيْرٌ اللهِ بَالْعِبَادِ |
| ৪৫. অতপর আল্লাহ তায়ালা তাকে ওদের যাবতীয় ষড়যন্ত্রের অনিষ্ট থেকে রক্ষা করলেন (অপর দিকে | ٣٥ فَوَقْلُهُ اللَّهُ سَيِّاتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِال |
| একটা) কঠিন শাস্তি (এসে) ফেরাউন সম্প্রদায়কে গ্রাস করে নিলো, | فِرْعَوْنَ سُوَّءُ الْعَلَ ابِج |
| ৪৬. (জাহান্নামের) আগুন, যার সামনে তাদের সকাল সন্ধ্যায় হাযির করা হবে, আর যেদিন কেয়ামত ঘটবে | ٣٦ ٱلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُرُوا وَّعَشِيًّا ج |
| (সেদিন ফেরেশতাদের বলা হবে), ফেরাউনের দলবলকে | وَيَوْاً تَقُوا السَّاعَةُ بِنِ اَدْعِلُوا اللَّهِ فِرْعَوْنَ |
| কঠিন আযাবে নিক্ষেপ করো। | أَشَلَّ الْعَذَابِ |
| ৪৭. যখন এ লোকেরা জাহান্নামে বসে পরস্পর বিতর্কে লিপ্ত হবে, অতপর (যারা) দুর্বল (ছিলো) তারা এমন সব | ٣٠ وَإِذْ يَتَحَاجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ |
| লোকদের বলবে, যারা ছিলো অহংকারী- আমরা তো (দুনিয়ায়) তোমাদের অনুসারী ছিলাম, (এখন | الضُّعَفُّوُّ اللَّذِيثِيَ اسْتَكْبَرُوْ ۚ إِنَّا كُنَّا لَكُر |
| জাহান্নামের) আগুনের কিছু অংশ কি তোমরা আমাদের কাছ থেকে নিবারণ করতে পারবে? | تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُرْ مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ |
| ৪৮. অহংকারীরা (এর জবাবে) বলবে (কিভাবে তা সম্ভব), আমরা সবাই তো তার ভেতরেই পড়ে আছি, | ٣٨ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْآ إِنَّا كُلٌّ فِيْهَا لا |
| অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের মাঝে (চ্ড়ান্ত) ফয়সালা করে দিয়েছেন। | إِنَّ اللَّهَ قَنْ مَكَرَ بَيْنَ الْعِبَادِ |
| ৪৯. (তারপর) যারা জাহান্নামে পড়ে থাকবে তারা (এখানকার) প্রহরীদের (উদ্দেশ করে) বলবে, তোমরা | ٣٩ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِحُزَنَةِ مَهَنَّـرَ |
| (অন্তত আমাদের জন্যে) তোমাদের মালিকের কাছে দোয়া করো, তিনি যেন (কোনো না) কোনো একটি দিন আমাদের ওপর থেকে আযাব কম করে দেন। | انْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَنَابِ |
| ৫০. তারা বলবে, এমনকি হয়নি যে, তোমাদের কাছে তোমাদের নবীরা সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছে, তারা | ٥٠ قَالُوْ آ أَوَ لَر تَكَ تَأْتِيْكُر رُسُلُكُر |
| ৪০ সূরা আল মোমেন ৪৮৪ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আযলামু | | |
|--|---|--|--|
| বলবে হাা, (এসেছিলো, কিন্তু আমরা তাদের কথা শুনিনি, জাহান্নামের যারা প্রহরী) তারা বলবে, (তাহলে তোমাদের) দোয়া তোমরা নিজেরাই করো, (আর সত্য কথা হচ্ছে), কাফেরদের দোয়া ব্যর্থতা ছাড়া আর কিছুই নয়! | بِالْبَيِّنْسِ ، قَالُوْا بَلَٰى ، قَالُوْا فَادْعُوْا ، وَمَا دُعُواْ ، وَمَا دُعُوُا الْكُفِرِيْنَ إِلَّا فِي ضَلْلٍ ع | | |
| ৫১. নিশ্চয়ই আমি আমার নবীদের ও (তাদের ওপর) যারা ঈমান এনেছে তাদের এ বৈষয়িক দুনিয়ায় (যেমন) সাহায্য করি, (তেমনি সেদিনও সাহায্য করবো) যেদিন (তাদের পক্ষে কথা বলার জন্যে) সাক্ষীরা দাঁড়িয়ে যাবে, | ٥١ إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ أَمَنُوا فِي الْحَيٰوةِ النَّثْيَا وَيَوْاً يَقُوا الْاَشْهَادُ ٧ | | |
| ৫২. সেদিন যালেমদের ওযর আপপ্তি কোনোই উপকারে আসবে না, তাদের জন্যে (শুধু থাকবে) অভিশাপ, তাদের জন্যে আরো থাকবে নিকৃষ্টতম আবাস। | ٥٢ يَوْ)َ لَا يَنْفَعُ الظَّلِمِيْنَ مَعْلِرَتُهُرْ وَلَهُرُ اللَّعْنَةُ وَلَهُرْ سُوَّةُ النَّارِ | | |
| ৫৩. আমি মৃসাকে অবশ্যই পথনির্দেশিকা দান করেছিলাম এবং বনী ইসরাঈলদেরও (আমার) কেতাবের উত্তরাধিকারী বানিয়েছিলাম, | ۵۳ وَلَقَلْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْمُهَاٰى وَاَوْرَثَنَا بَنِيْ ٓ اِسْرَاءِیْلَ الْکِتٰبَ ۷ | | |
| ৫৪. (তা ছিলো) জ্ঞানবান মানুষদের জন্যে হেদায়াত ও (সুস্পষ্ট) উপদেশ। | ۵۳ هُرًى وَّذِكْرِٰى لِاُولِى الْإَلْبَابِ | | |
| ৫৫. অতপর তুমি ধৈর্য ধারণ করো, আল্লাহ তায়ালার প্রতিশ্রুণতি অবশ্যই সত্য, তুমি (বরং) তোমার গুনাহখাতার জন্যে আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করো এবং সকাল সন্ধ্যায় তোমার মালিকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করো। | مَنَ مُورُ إِنَّ وَعُنَ اللَّهِ مَقَّ وَاسْتَغْفِرُ لِنَ ثَبِكَ وَسَبِّحُ بِحَمْلِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ | | |
| ৫৬. নিজেদের কাছে কোনো দলীল প্রমাণ না আসা সত্ত্বেও যারা আল্লাহ তায়ালার নাযিল করা আয়াতসমূহ নিয়ে বিতর্কে লিপ্ত হয়, তাদের অস্তরে কেবল অহংকারই (ছেয়ে) থাকে, তারা কখনো সে (সাফল্যের) জায়গায় পৌছুবার (যোগ্য) নয়, অতএব (হে নবী), তুমি (এদের অনিষ্ট থেকে) আল্লাহ তায়ালার কাছে পানাহ চাও; অবশ্যই তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বদুষ্টা। | ٥٦ إِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُونَ فِيَ أَيْسِ اللَّهِ بِغَيْرٍ سُلْطِي النَّهِ بِغَيْرٍ سُلْطِي النَّهُ مُر لِا إِنْ فِي صُنُورِهِرْ إِلَّا كِبْرُ مَّا هُرْ بِبَالِغِيْهِ } فَاشْتَعِنْ بِاللَّهِ مَ إِنَّهُ هُوَ السَّيْعُ النَّهِ مَ النَّهُ مُو السَّيْعُ النَّهِ مَ النَّهِ مُو السَّيْعُ النَّهِ مَ النَّهِ مُو النَّهُ مُو السَّيْعُ النَّهُ مُو النَّهُ مُو النَّهُ مُو النَّهُ مُو النَّهِ مَ النَّهُ مُو النَّهُ مِنْ النَّهُ مُو النَّهُ مُو النَّهُ مُو النَّهُ النَّهُ النَّهُ مُو النَّهُ اللَّهُ اللَّهُ النَّهُ النِّهُ النَّهُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُؤْمِ النَّهُ الْمُؤْمِ النَّهُ الْمُؤْمِ النَّهُ الْمُؤْمِ النَّهُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ النَّهُ الْمُؤْمِ الْمُؤْم | | |
| ৫৭. নিসন্দেহে আসমান ও যমীন সৃষ্টি করা মানুষকে (দ্বিতীয় বার) সৃষ্টি করা অপেক্ষা বেশী কঠিন, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই জানে না। | ٥٤ لَخَلْقُ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ عَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ | | |
| ৫৮. অন্ধ ও চক্ষুম্মান ব্যক্তি (কখনো) সমান হয় না, (ঠিক তেমনি) যারা ঈমান আনে ও নেক আমল করে, তারা এবং দৃষ্কৃতিপরায়ণ ব্যক্তি (কখনো) সমান নয়; (আসলে) তোমাদের কমসংখ্যক লোকই (আমার হেদায়াত থেকে) উপদেশ গ্রহণ করে। | ٥٨ وَمَا يَسْتَوِى الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ لَهُ وَالَّذِيْنَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا الصَّلِحٰسِ وَلَا الْهُسِيَّءُ عَلِيْلاً مَّا تَتَنَكَّرُونَ | | |
| ৫৯. কেয়ামত অবশ্যম্ভাবী, এতে বিন্দুমাত্রও সন্দেহ নেই, কিন্তু অধিকাংশ লোকই তা বিশ্বাস করে না। | 49 إِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةً ۚ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلَٰكِنَّ آكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ | | |
| ৬০. তোমাদের মালিক বলেন, তোমরা আমাকে ডাকো, আমি তোমাদের ডাকে সাড়া দেবো; যারা অহংকারের কারণে আমার এবাদাত থেকে না-ফরমানী করে, অচিরেই | أَوْقَالَ رَبُّكُرُ ادْعُونِي آَسْتَجِبُ لَكُرْ ، إِنَّ الْنَافِينَ يَسْتَكُيرُ ، إِنَّ الَّذِينَ سَيَنْ عُلُونَ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَنْ عُلُونَ | | |
| ৪০ সূরা আল মোমেন ৪৮৫ | মন্যিল ৬ | | |
| www.eelm.weebly.com | | | |

৬১ আলাহ তায়ালা- যিনি তোমাদের জন্যে রাত বানিয়েছেন যেন তোমরা তাতে বিশ্রাম নিতে পারো এবং فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَنُ وَ فَضَلِ मिनत्क পर्यत्वक्षनकांत्री আलात्काष्ट्वन करत्रष्टन; निक्तसरे আল্লাহ তায়ালা মানুষের প্রতি সবিশেষ অনুগ্রহশীল, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই কতজ্ঞতা আদায় করে না।

١٦ اَللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا عَلَى النَّاسِ وَلٰكِيَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ

৬২, এ হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা, তিনি তোমাদের মালিক, প্রত্যেকটি জিনিসের একক স্রষ্টা। তিনি ব্যতীত অন্য কোনো মাবুদ নেই (বলো), তোমরা (কোথায়) কোথায় ঠোকর খাবে!

 \sqrt{X} ذَٰلِكُرُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ م \sqrt{X} إِلَّهُ اللَّا هُوَ زَّ فَأَنَّى تُوْفَكُوْنَ

৬৩. যারা আল্লাহ তায়ালার আয়াতকে অস্বীকার করেছে তাদেরও এভাবে (ছারে ছারে) ঠোকর খাওয়ানো হয়েছিলো!

١٣ كَنْ لِكَ يُؤْفَكُ النَّن يْنَ كَانُوْ ا بايْت الله يَجْعَلُونَ

৬৪. আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের জন্যে ভূমিকে বাসোপযোগী (স্থান) বানিয়ে দিয়েছেন, আসমানকে বানিয়েছেন ছাদ, তিনি তোমাদের আকৃতি গঠন করেছেন, সূতরাং যে আকতি তিনি গঠন করেছেন তা কতো সুন্দর এবং ভালো ভালো জিনিস থেকে তোমাদের রেযেক দান করেছেন: সে আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন তোমাদের মালিক. কতো মহান বিশ্ব জাহানের প্রতিপালক আন্তাহ তায়ালা!

٣٢ اَللَّهُ الَّذِي مَعَلَ لَكُيرُ الْأَرْضَ قَوَارًا والسَّهَاءُ بِنَاءً وصُورَكُم فَأَحْسَنَ صُورَكُم وَرَزَقَكُم من إلطَّيِّه فَلِكُم اللَّهُ رَبُّكُم مَا فَتَبْرَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعُلَمِينَ

৬৫. তিনি চিরঞ্জীব, তিনি ছাডা আর কোনো মাবুদ নেই, অতএব একান্ত নিষ্ঠাবান হয়ে তোমরা তাঁর এবাদাত करता; সমস্ত তারীফ সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার بَخْلُصِينَ لَهُ الرِّينَ ، ٱلْحَمْلُ لِلَّهِ رَبِّ জনো!

هُوَ الْحَيُّ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ

৬৬. (द नवी,) प्रिम (जामत) वाला, आमात्क निरम् النَّانِي أَعْبُلُ النَّانِي اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللهِ اللَّهُ اللّلْهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللّل করা হয়েছে যেন আমি তাদের এবাদাত না করি, যাদের تَنْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنْتُ । وَاللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنْتُ الْبَيِّنْتُ مِن رَبِّى دَ وَأُمِرْتُ أَنْ ٱسْلِمَ لِرَبِّ कामान नामार काक काह (धरक मुल्लह مُن رَبِّى دَ وَأُمِرْتُ أَنْ ٱسْلِمَ لِرَبِّ আমার কাছে আমার মালিকের কাছ থেকে সুস্পষ্ট যেন আমি আল্লাহ তায়ালার অনগত বান্দা হয়ে যাই।

৬৭. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের মাটি থেকে পয়দা করেছেন, অতপর শুক্রবিন্দু থেকে,তারপর জমাট রক্ত থেকে (বানিয়ে) তোমাদের শিশু হিসেবে বের করে আনেন, তারপর তোমরা যৌবনপ্রাপ্ত হও, (এক সময় আবার) উপনীত হও বার্ধক্যে, তোমাদের কাউকে আগেই সুত্যু দেয়া হবে, (এসব প্রক্রিয়া এ জন্যেই রাখা হয়েছে) যেন তোমরা لَأَمَرُ مَنْ يَتْتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُقُوا أَجَلَّا (সবাই) নির্দিষ্ট সময়ে পৌছুতে পারো এবং আশা করা যায়, (এর ফলে) তোমরা (সঠিক ঘটনা) বুঝতে পারবে।

٢٠ هُوَ الَّذِي غَلَقَكُم ۚ مِّن تُوَابِ ثُرَّ من عَلَقَكُم من أَدُابِ ثُرًّا من أَدَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُرَّ يُخْرِجُكُرْ طِفْلًا ثُرَّ لِتَبْلُغُوْا أَشُنَّكُمْ ثُمِّ لِتَكُونُوْا شُيُوخًا ع مُّسَمَّى وَّلَعَلَّكُم ^ تَعْقَلُوْنَ ـ

৬৮. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি তোমাদের জীবন দান করেন, তিনি তোমাদের মৃত্যুও ঘটান, তিনি যখন কোনো কিছু করা সিদ্ধান্ত করেন তখন তথ্ এটুকুই বলেন 'হও'. অতপর 'তা হয়ে যায়'।

١٨ مُوَ الَّذِي يُحْي وَيُبِيْتُ عَ فَإِذَا قَضَى أَمْرًا فَإِنَّهَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ع

৪০ সুরা আল মোমেন

8brb

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আযলামু |
|---|---|
| ৬৯. (হে নবী,) তুমি কি ওদের (অবস্থার) দিকে তাকিয়ে দেখোনি, যারা আল্লাহ তায়ালার (নাযিল করা) আয়াত সম্পর্কে নানা বিতর্কে লিপ্ত হচ্ছে; (তুমি কি বলতে | 79 أَلَرْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيَ |
| পারো আসলে) ওরা (সত্যকে ফেলে) কোন দিকে ধাবিত হচ্ছেঃ | أيْتِ اللهِ ﴿ أَنَّى يُصْرَفُونَ عَلَيْهِ |
| ৭০. (ওরা) সেসব লোক যারা (এ) কেতাব অস্বীকার করে, (অস্বীকার করে) সেসব কেতাবও, যা আমি | ٤٠ الَّذِيْنَ كَنَّ أَبُوا بِالْكِتٰبِ وَبِهَا ۖ ٱرْسَلْنَا بِهِ |
| (ইতিপূর্বে) নবীদের কাছে পাঠিয়েছিলাম। অতএব অতিশীঘ্রই তারা (নিজেদের পরিণাম) জানতে পারবে; | رُسُلَنَا تِفَ فَسَوْنَ يَعْلَبُونَ بِ |
| ৭১. যেদিন ওদের গলদেশে (আযাবের) বেড়ি ও শেকল (পরিবেষ্টিত) থাকবে, (সেদিন) তাদের টেনে হেঁচড়ে | ا ٤ إِذِ الْإَغْلُلُ فِي آعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ ١ |
| निःद्रा याख्या रूटन, | يسڪبون لا |
| ৭২. ফুটস্ত পানিতে, অতপর তাদের আগুনেও দগ্ধীভূত করা হবে, | ٢ - فِي الْحَيِيْرِ لِهُ ثُرٌّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ عَ |
| ৭৩. তাদের বলা হবে, কোথায় (আজ) তারা– যাদের তোমরা (আল্লাহ তায়ালার সাথে) শরীক করতে? | ٢٢ ثُرِّ قِيْلَ لَهُرْ أَيْنَ مَا كُنْتُرْ تُشْرِكُونَ ٧ |
| ৭৪. আল্লাহ তায়ালার বদলে, (যাদের তোমরা ডাকতে তারাই বা আজ কোথায়?) তারা বলবে, তারা তো (আজ | ٢٢ مِنْ دُوْنِ اللهِ ، قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّهِ |
| স্বাই) আমাদের কাছ থেকে হারিয়ে গেছে, (আসলে) | نَكُنْ تَنْكُواْ مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ، كَنْ لِكَ يُضِلُّ |
| আমরা তো আগে (কখনো) এমন কিছুকে ডাকিনি; আল্লাহ তায়ালা এভাবেই কাফেরদের বিদ্রাপ্ত করেন। | اللَّهُ الْكُفِرِيْنَ |
| ৭৫. (আজ) এ কারণেই তোমাদের (এ পরিণাম) হয়েছে যে, তোমরা দুনিয়াতে অন্যায়ভাবে আনন্দ উল্লাসে মেতে | ٥٥ ذٰلِكُر ۗ بِهَا كُنْتُر ٛ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ |
| থাকতে এবং তোমরা (ক্ষমাহীন) অহংকার করতে, | بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِهَا كُنْتُرْ تَهْرَهُوْنَ ع |
| ৭৬. সুতরাং (এখন) তোমরা জাহান্নামের দরজাসমূহে (ভেতরে) প্রবেশ করো, সেখানে তোমরা চিরকাল | ٢٦ أَدْهُلُوْآ ٱبْوَابَ جَهَنَّرَ خُلِدِيْنَ فِيْهَا ع |
| থাকবে, কতো নিকৃষ্ট অহংকারীদের এ আবাসস্থল! | فَبِئْسَ مَثْوَى الْهُتَكَبِّرِيْنَ |
| ৭৭. (হে নবী,) তুমি ধৈর্য ধারণ করো, তোমার মালিকের ওয়াদা অবশ্যই সত্য, আমি ওদের কাছে যে (শান্তির) | 44 فَاصْبِرْ إِنَّ وَعُنَ اللَّهِ مَقٌّ } فَامًّا نُرِيَّكَ |
| ওয়াদা করেছি (তার) কিছু অংশ যদি তোমাকে দেখিয়ে দেই অথবা (তার আগেই) যদি আমি তোমাকে মৃত্যু | بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُر ۚ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَالِكَيْنَا |
| দেই, (তাতে দুশ্চিন্তার কারণ নেই,) তাদের তো অতপর আমার কাছে ফিরে আসতেই হবে। | يرجعون |
| ৭৮. (হে মোহাম্মদ,) আমি তোমার আগে (অনেক) নবী প্রেরণ করেছি, তাদের কারো কারো ঘটনা আমি তোমাকে | ٨٥ وَلَقَنْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ تَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ |
| শুনিয়েছি, (আবার এমনও আছে) তাদের কথা তোমার কাছে আমি আদৌ বর্ণনাই করিনি; (আসলে) আল্লাহ | قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُرْ مَّنْ لَّرْ نَقْصُصْ |
| তায়ালার অনুমতি ছাড়া কোনো নিদর্শন উপস্থিত করা | عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلِ أَنْ يَّاْتِيَ بِأَيْدٍ |
| কোনো রসূলের কাজ নয়, আর যখন আল্লাহ তায়ালার ফয়সালা এসে যাবে তখন তো সব কিছুর যথাযথ | إلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ عَادَا جَأَءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ |
| মীমাংসা হয়েই যাবে, আর (সে ফয়সালায়) ক্ষতিগ্রস্ত হবে একমাত্র মিথ্যাশ্রয়ীরাই। | بِالْحَقِّ وَغَسِرَ مُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ عَ ——————————————————————————————————— |
| | |

৪০ সূরা আল মোমেন

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আয়লামু |
|--|--|
| ৭৯. আল্লাহ তায়ালাই সেই (মহান) সন্তা যিনি তোমাদের জন্যে চতুষ্পদ জস্তু পয়দা করেছেন, যেন তোমরা তার (কতেক প্রকারের) ওপর আরোহণ করতে পারো, আর | 49 اَللّٰهُ الَّذِي مَعَلَ لَكُرُ الْأَنْعَا } لِتَرْكَبُوْا |
| তার (মধ্যে কতেক প্রকারের) তোমরা গোশত খেতে পারো, | مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ رَ |
| ৮০. তোমাদের জন্যে তাতে আরো বছবিধ কল্যাণ রয়েছে, তোমরা তার ওপর আরোহণ করো, তোমাদের | ٥٠ وَلَكُرْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْ اعْلَيْهَا مَاجَةً |
| নিজেদের মনের (ইচ্ছা) ও প্রয়োজনের স্থানে (ডাদের নিয়ে) উপনীত হতে পারো, (তোমরা) তার ওপর (যেমনি আরোহন করো তেমনি) নৌকার ওপরও তোমরা আরোহণ করো; | فِيْ صُّ وُرِكُبرُ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ، |
| ৮১. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (কুদরতের আরো) নিদর্শন দেখাচ্ছেন, তুমি আল্লাহ তায়ালার কোন্ কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে (বলো)! | ٨١ وَيُرِيْكُمْ الْيَتِهِ لَيْ فَاَى الْيُسِ اللهِ تُنْكِرُوْنَ |
| ৮২. এরা কি যমীনে চলাফেরা করেনি, (করলে) তারা অতপ্র দেখতে পেতো তাদের পূর্ববর্তী লোকদের | ٨٢ أَفَلَر يَسِيْرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا |
| পরিণাম কি হয়েছিলো; তারা সংখ্যায় এদের চাইতে ছিলো অনেক বেশী, শক্তি ক্ষমতা এবং যমীনে রেখে | كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ النَّانِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ﴿ كَانُوْٓ ا |
| যাওয়া কীর্তিতেও তারা (ছিলো) অনেক প্রবল, কিন্তু তারা | اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَلَا قُواتًا وَاثْنَارًا فِي الْأَرْضِ |
| যা কিছু কাজকর্ম করেছে তা তাদের কোনোই কাজে আসেনি। | فَهَا ۚ اَغْنَى عَنْهُرْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ |
| ৮৩. যখন তাদের নবীরা তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণপত্র নিয়ে হাযির হলো, তখন তাদের কাছে জ্ঞানের যা কিছু | ٨٣ فَلَمَّا جَآءَتُهُر رُسُلُهُر بِالْبَيِّنْ فِرِحُوا |
| ছিলো তা নিয়ে তারা গর্ব করলো এবং (দেখতে দেখতে) সে আযাব তাদের এসে ঘিরে ফেললো, যা নিয়ে তারা | بِهَا عِنْكَفُرُ مِّنَ الْعِلْمِ وَهَاقَ بِهِرْ مًّا كَانُوْا |
| ঠাট্টা-বিদ্ধপ করতো। | بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ |
| ৮৪. অতপর তারা যখন (সত্যি সত্যিই) আমার আযাব আসতে দেখলো তখন বলে উঠলো, হাঁ, আমরা এক আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনলাম, যাদের আমরা | ٨٣ فَلَمًّا رَاوْا بَاْسَنَا قَالُوْآ أَمَنًّا بِاللَّهِ |
| আলাহ তারালার ওপর সমান আনলাম, বাদের আমরা আলাহ তারালার সাথে শুরীক করতাম তাদের আমরা প্রত্যাখ্যান করলাম। | وَهْنَةٌ وَكَفَرْنَا بِهَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِيْنَ |
| ৮৫. কিন্তু তারা যখন আমার আযাব দেখলো, তখন তাদের ঈমান তাদের কোনো উপকারেই এলো না; | ٨٥ فَلَرْ يَكُ يَنْفَعُمُرْ إِيْبَانُمُرْ لَبًّا رَاوُا |
| আরাহ তায়ালার এ নীতি (হামেশাই) তাঁর বান্দাদের মাঝে (কার্যকর) হয়ে আসছে, আর এখানে কাফেররা | بَأْسَنَا وَ سُنَّتَ اللَّهِ النَّبَي قَلْ غَلَتْ فِي |
| চরমভাবে ক্ষতিগ্রস্ত হয়। | عِبَادِهِ ج وَغَسِرَ هُنَالِكَ الْكَفِرُونَ ع |
| স্রা হা-মীম আস সাজদা | سُورَةُ مر السَّجْلَةِ مَكِيةً |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৫৪, রুকু ৬ | اْيَاتٍ : ٣٠ رُكُوعٌ : ٢ |
| , রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْشُ الرَّحِيْرِ |
| ১. হা-মীম, | المراء |
| ২. (এ কিতাব) রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে নাথিল করা হয়েছে। | ٢ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْرِ ع |
| ৪১ সূরা হা-মীম আস সাজদা ৪৮৮ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ২৪ | ফামান আযলামু |
|--|---|
| ৩. (এ কোরআন এমন এক) কিতাব, যার আয়াতসমূহ عُرَبِيًّا لِّقُوْم اللهُ اللهُ عُرَبِيًّا لِقَوْم পুলে খুলে বর্ণনা করা হয়েছে, (তদুপরি এ) কোরআন আরবী ভাষায় এমন একটি সম্প্রদায়ের জন্যে (নাযিল হয়েছে) যারা এটা জানে, | يعْلَمُونَ لا |
| ৪. (এ কিতাব হচ্ছে জান্নাতের) সুসংবাদদাতা আর هُرُو فَهُر وَ فَهُمُر وَ فَهُمُ وَ فَهُمُ وَ فَهُمُ وَ فَهُمُ وَ فَهُمُ وَفَهُمُ وَاللَّهُ وَمَنْ فَاللَّهُ وَمُؤْمِنُ وَفَهُمُ وَفَهُمُ وَاللَّهُ وَاللَّا لَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَالَّا وَاللَّهُ وَالَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا لِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّالِ وَاللّ واللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَا | ٣ بَشِيْرًا وَّنَوْيُرً يَسْهَعُوْنَ |
| ৫. তারা বলে, যে বিষয়ের দিকে তুমি আমাদের ডাকছো তার জন্যে আমাদের অন্তরসমূহ আবরণে আচ্ছাদিত হয়ে আছে, আমাদের অন্তরসমূহ আবরণে আচ্ছাদিত হয়ে আছে, আমাদের ও তোমার মধ্যে একটি দেয়াল (দাঁড়িয়ে) আছে, সুতরাং তুমি তোমার কাজ করো আর আমরা আমাদের কাজ করি। | |
| ৬. (হে নবী,) তুমি বলো, আমি তো তোমাদেরই মতো একজন মানুষ, কিন্তু আমার ওপর (এ মর্মে) ওহী নাযিল হয় যে, তোমাদের মাবুদ হচ্ছেন একজন, অতএব (হে মানুষ), তোমরা তাঁর এবাদাতের দিকেই সোজা হয়ে দাঁড়িয়ে যাও এবং তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করো; আর দুর্ভোগতো মোশরেকদের জন্যে নির্ধারিত হয়েই আছে, | اِلْهُكُدُ اِلْدًّ |
| ৭. याता याकाण मित्र ना এবং তারা পরকাশের ওপরও ইন্ট্রি টুর্নি দুর্নি তির্দ্ধী। ক্রিট্রি টুর্নি দুর্নি ক্রিট্রি টুর্নি দুর্নি ক্রিট্রি টুর্নি দুর্নি ক্রিট্রিট্রি দুর্নি কর্মান আনে না। | ٤ الَّذِيْنَ لَا يُؤْ مُرْ لٰفِرُوْنَ |
| ৮. যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান আনে এবং নেক مُنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَتِ لَهُرُ कोজ করে, তাদের জন্যে (আখেরাতের জীবনে) নিরবচ্ছিন্ন পুরস্কারের ব্যবস্থা রয়েছে। | ^ إِنَّ الَّذِيْنَ أَ اَجْرُّ غَيْرُ مَثْنُونٍ |
| هُ. (হে নবী,) তুমি বলো, তোমরা কি তাঁকে অস্বীকার مَلَقَى خَلَقَ مُعَلَقَ مُعَلَقُونَ لِالَّذِي خَلَقَ कরতে চাও যিনি দুদিনে পৃথিবীকে পয়দা করেছেন এবং তোমরা (অন্য কাউকে) কি তাঁরই সমকক্ষ হিসেবে দাঁড় اللهُ أَلْلُ الدَّاءُ مُنَاعَ مَانَاهُ مَانَا مَانَاهُ مَانَالُهُ مَانَاهُ مَانَالُمُ مَانَاهُ مَانَال | |
| ১০. তিনিই এ (যমীনের) মাঝে এর ওপর থেকে وَاسِى مِنْ فَوْقِهَا وَبْرَكَ পাহাড়সমূহ গেড়ে দিয়েছেন ও তাতে বহুমুখী কল্যাণ রেখে দিয়েছেন এবং তাতে (সবার) আহারের পরিমাণ اَقُواْتَهَا فِي اَرْبَعَتِ اَيَّا إِا الْمَا الْمَا فِي الْمَا فَي الْمَا فِي الْمَا فِي الْمَا فِي الْمَا فَي الْمُوافِقَ فَي الْمَا فِي الْمَا فَي الْمَا فَي الْمَا فَي الْمَا فَي الْمَا فَي الْمَالْمِ الْمَا فَي الْمَا فَي الْمَا فِي الْمِنْ الْمَا فِي الْمَا ف | |
| 25. অতপর তিনি আসমানের দিকে মনোনিবেশ করলেন, قَانَ دُهَانَ السَّمَاءِ وَهِي دُهَانَ السَّمَاءِ وَهِي دُهَانَ الْآلِي السَّمَاءِ وَهِي دُهَانَ الْآلِي السَّمَاءِ وَهِي دُهَانَ اللَّهُ اللَّ | |
| | ٠٨٠ ١٠٠٠ |
| ১২. (এই) একই সময়ে তিনি দুদিনের ভেতর এ (ধ্য়কুঞ্জ)-কে رُوَّ اللهِ مُدَوَّ اللهِ مُوَّالِي فِي يُوْمَيْنِ وَأُوْمِي সাত আসমানে পরিণত করলেন এবং প্রতিটি আকাশে তার | ۱۲ فقضهن سبع ، |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৪ ফামান আযলামু |
|--|--|
| (উপযোগী) আদেশনামা পাঠালেন; পরিশেষে আমি নিকটবর্তী আসমানকে তারকারাজি দ্বারা সাজিয়ে দিলাম | فِيْ كُلِّ سَهَاءٍ أَمْرَهَا ، وَزَيْنًا السَّهَاءَ النَّنْيَا |
| এবং (তাকে শয়তান থেকে) সংরক্ষিত করে দিলাম, এসব (পরিকল্পনা) অবশ্যই পরাক্রমশালী ও সর্বজ্ঞ আল্পাহ তায়ালা কর্তৃক (আগে থেকেই) সুবিন্যস্ত করে রাখা হয়েছিলো। | بِهَصَابِيْعَ نَنَّ وَحِفْظًا ﴿ ذَٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْرِ |
| ১৩. (এর পরও) যদি এরা মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে তুমি বলো, আমি তো তোমাদের এক ভয়াবহ আযাব থেকে সতর্ক করলাম মাত্র, ঠিক যেরূপ ভয়াবহ আযাব এসেছিলো আদ ও সামুদের ওপর! | الله فَانَ أَعْرَضُوا فَقُلُ أَنْنَرْتُكُمْ صَعِقَةً مِّثْلَ صَعِقَةً مِّثْلَ صَعِقَةً مِّثْلَ صَعِقةً مِّثْلَ صَعِقَةِ عَادٍ وَّثُمُوْدَ ا |
| ১৪. যখন তাদের কাছে ও তাদের আগের লোকদের কাছে আমার রসূলরা এসে বলেছিলো, তোমরা আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কারো এবাদাত করো না; (জবাবে) তারা বলেছিলো, আমাদের মালিক যদি চাইতেন তাহলে তিনি ফেরেশতাদেরই (নবী করে) পাঠাতেন, তোমাদের যা কিছু দিয়েই পাঠানো হোক না কেন, আমরা তাই প্রত্যাখ্যান করলাম। | ا إِذْ جَاءَتْهُرُ الرُّسُلُ مِنْ ا بَيْنِ اَيْدِيهِرْ وَمِنْ عَلْفِهِرْ الرُّسُلُ مِنْ الله الله الله الله الله الله الله الل |
| ১৫. আ'দ (জাতির ঘটনা ছিলো), তারা (আল্লাহ তায়ালার) যমীনে অন্যায়ভাবে দছভরে ঘুরে বেড়াতো এবং বলতো, আমাদের চাইতে শক্তিশালী আর কে আছে? অথচ ওরা কি চিন্তা করে দেখেনি, যে আল্লাহ তায়ালা তাদের সৃষ্টি করেছেন তিনি শক্তির দিক থেকে তাদের চাইতে অনেক বেশী প্রবল; (আসলে) ওরা আমার আয়াতসমূহকেই অস্বীকার করতো। | الْ فَامَا عَادً فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ اَشَلَّ مِنَا قُوَّةً ﴿ أَوَ لَرَ يَرَوُا أَنَّ اللهِ النِّي النَّامَ مَلَقَمُر هُوَ اَشَلَّ مِنْمُرُ قُوَّةً ﴿ وَكَانُوا بِالنِّنَا يَجْحَدُونَ |
| ১৬. অতপর আমি কতিপয় অশুভ দিনে তাদের ওপর এক প্রচন্ড তুফান প্রেরণ করলাম, যেন আমি তাদের দুনিয়ার জীবনেই লাঞ্ছনাদায়ক একটি শান্তির স্বাদ উপভোগ করিয়ে দিতে পারি, আর আখেরাতের আযাব তো আরো বেশী অপমানকর; (সেদিন) তাদের কোনো রকম সাহায্য করা হবে না। | الله الله الله الله الله الله الله الله |
| ১৭. আর সামুদ (জাতির অবস্থা ছিলো), আমি তাদেরও সরল পথ দেখিয়ে দিয়েছিলাম, কিন্তু তারা হেদায়াতের ওপর অন্ধত্বকেই বেশী পছন্দ করলো, অতপর তাদের (অন্যায়) কাজকর্মের জন্যে আমি তাদের ওপর অপমানজনক শান্তির ক্ষাঘাত হানলাম। | الْمُوْنِ بِهَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ع |
| ১৮. এবং (এ প্রলয়ংকরী) শান্তির (ক্যাঘাত) থেকে আমি তাদেরই শুধু উদ্ধার করলাম, যারা ঈমান এনেছে এবং (অপরাধ থেকে) বেঁচে থেকেছে। | |
| ১৯. (সে দিনটির কথা স্মরণ করো,) যে দিন আল্লাহ তায়ালার দুশমনদের জাহান্নামের দিকে (নিয়ে যাওয়ার জনো) জন্মে করা করে করে (স্ক্রিন) জন্ম ক্রিয় দলে | 19 وَيُوْاً يُحْشُرُ اَعْلَاءً اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهَرَّ |

٢٠ حَتَّى إِذَا مَا جَاَءُوْهَا شَهِنَ عَلَيْهِـرْ سَهْعُهُـرْ وَٱبْصَارُهُـرْ وَجُلُوْدُهُرْ بِهَا كَانُوْا يَعْهَلُوْنَ

৪১ সূরা হা-মীম আস সাজদা

(যাবতীয়) কাজের ওপর সাক্ষ্য দেবে।

(উপদলে) विनाख হবে।

জন্যে) জড়ো করা হবে, (সেদিন) তারা বিভিন্ন দলে

২০. যেতে যেতে তারা যখন তার (বিচারের পাল্লার)

কাছে পৌছুবে, তখন তাদের কান, চোখ ও চামড়া তাদের

880

| কোরআন | শরীফ | সহজ সরল | বাংলা | অনুবাদ |
|-------|------|---------|-------|--------|

পারা ২৪ ফামান আযলামু

২১. (তখন) তারা তাদের চামড়াগুলোকে বলবে, তোমরা (আজ) আমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিলে কেন্? (উত্তরে) তারা বলবে, আল্লাহ তায়ালা- যিনি সব কিছুকে কথা বলার শক্তি দিয়েছেন, তিনি (আজ) আমাদেরও কথা বলার শক্তি দিয়েছেন, তিনিই (যেহেতু) তোমাদের প্রথমবার সৃষ্টি করেছিলেন, তাই তোমাদের তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

٢١ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِرْ لِيرَ شَهِنْتُثْرْ عَلَيْنَا ء قَالُوْا ۚ اَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي ۚ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وُّهُو مَلَقَكُمْ أُوَّلَ مَرَّةً وَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

২২. (আল্লাহ তায়ালা বলবেন.) তোমরা (দুনিয়াতে) কোনো কিছুই (তো এদের কাছ থেকে) গোপন (করার চেষ্টা) করতে না. (এটা ভাবতেও পারোনি) তোমাদের কান, তোমাদের চোখ ও তোমাদের চামড়া (কখনো) তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে, বরং তোমরা তো মনে করতে, তোমরা যা কিছু করছিলে তার অনেক কিছু (স্বয়ং) আল্লাহ তায়ালাও (বুঝি) জানেন না।

٢٢ وَمَا كُنْتُرْ تَسْتَتُووْنَ أَنْ يَّشْهَلَ عَلَيْكُرْ سَهْعُكُمْ وَلَا ٱبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلَكِي ظَنَنْتُرْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَرُ كَثِيًّا مَّمًّا تَعْمَلُونَ

২৩. তোমাদের ধারণা- যা তোমরা তোমাদের মালিক رُبِّكِي غَنَنْتُو بِرَبِّكُي الَّذِي ظَنْكُرُ الَّذِي ظَنَنْتُو بِرَبِّكُي ٢٣ وَذَٰلِكُي ظَنْكُرُ الَّذِي ظَنَنْتُو بِرَبِّكُي ٢٣ وَذَٰلِكُي ظَنْكُرُ الَّذِي عَالَمَهُ مَا اللّهِ اللّهُ الللّهُ الللّهُ ভরাড়বি ঘটিয়েছে, ফলে তোমরা (মারাত্মক) ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে গেছো।

أَرْدُنكُرْ فَأَصْبَحْتُرْ مِّنَ الْخَسِرِينَ

২৪. (আজ) যদি ওরা ধৈর্য ধারণ করে তাতেও (তাদের কোনো উপকার হবে না), জাহান্নামই হবে তাদের ঠিকানা, আল্লাহ তায়ালার কাছে অনুগ্রহ চাইলেও (কোনো লাভ হবে না. কেননা আজ) তারা কোনো অবস্থায়ই অনুগ্ৰহ প্ৰাপ্ত হবে না।

٢٣ فَإِنْ يَصْبِرُوْ إِ فَالنَّارُ مَثُونًى لَّهُرْ عِ وَإِنْ يَسْتَعْتَبُوا فَهَا هُرْ مِنَ الْهُعْتَبِينَ

২৫. আমি (দুনিয়ার জীবনে) তাদের ওপর এমন কিছু সংগী (সাথী) বসিয়ে দিয়েছিলাম, যারা তাদের সামনের ও পেছনের কাজগুলো (তাদের সামনে) শোভনীয় (এবং লোভনীয়) করে রেখেছিলো, পরিশেষে জ্বিন ও মানুষদের সে দলের সাথে– তাদের ব্যাপারেও আল্লাহ তায়ালার সিদ্ধান্ত সত্যে পরিণত হলো, যারা তাদের আগে অতিবাহিত হয়ে গেছে, অবশ্য এরা সবাই ছিলো নিদারুণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত।

٢٥ وَقَيَّضْنَا لَهُرْ قُونَآءَ فَزَيَّنُوْ الَّهُرْمَّا بَيْنَ أَيْنِيْهِرْ وَمَا خَلْفَهُرْ وَمَقَّ عَلَيْهِرُ الْقَوْلُ فِيْ أُمَر قَلْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْإِنْسِ عَ إِنَّاهُمْ كَانُوْا خُسِرِيْنَ عَ

২৬. যারা কুফরী (পস্থা) অবলম্বন করেছে তারা (একজন আরেকজনকে) বলে, তোমরা কখনো এ কোরআন শোনবে না. (তেলাওয়াতের সময়) তার মাঝে শোরগোল করো, হয়তো (এ কৌশল দারা) তোমরা জয়ী হতে পারবে।

٢٦ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْهَعُوْا لِهٰنَا الْقُرْانِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ

২৭, আমি অবশ্যই কাফেরদের কঠিন আযাবের স্বাদ আস্বাদন করাবো এবং নিশ্চয়ই আমি তাদের সে কাজের প্রতিফল দেবো, যে আচরণ তারা (আমার কেতাবের সাথে) করে এসেছে।

٢٠ فَلَنُنِيْقَيَّ الَّانِيْنَ كَفَرُّوا عَنَ ابًا شَرِيْلًا ٧ وَّلَنَجُزِيَنَّهُمْ أَسُواً الَّذِي كَانُوْ إِيعَهُلُونَ

২৮. এ (জাহান্লাম)-ই হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার শক্রদের (যথার্থ) পাওনা, সেখানে তাদের জন্যে চিরস্থায়ী (আযাবের) ঘর থাকবে; তারা যে আমার আয়াতসমূহ অস্বীকার করতো, এটা হচ্ছে তারই প্রতিফল।

٢٨ ذٰلِكَ جَزَآءٌ أَعْنَآءِ اللَّهِ النَّارُ عَ لَهُرْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْنِ ﴿ جَزَّآءً ٰ بِهَا كَانُوْ ا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَلُوْنَ

২৯. কাফেররা (সেদিন) বলবে, হে আমাদের মালিক, যেসব জ্বিন ও মানুষ (দুনিয়ায়) আমাদের গোমরাহ করেছিলো, আজ তুমি তাদের (এক ন্যর) আমাদের দেখিয়ে দাও, আমরা তাদের (উভয়কে) আমাদের পায়ের নীচে রাখবো, যাতে করে তারা (আরোবেশী) লাঞ্জিত হয়।

٢٩ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبُّنَا ۖ أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّنَا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْسَ أَقْلَ امِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْأَسْفَلِيْنَ

৪১ সুরা হা-মীম আস সাজদা



সৃষ্টি) হয়ে যাবে, যেন সে (তোমার) অন্তরংগ বন্ধ।

তারাই হয় যারা সৌভাগেরে অধিকারী :

অবশ্যই তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

হবে একমাত্র করণীয়)।

৪১ সূরা হা-মীম আস সাজদা

৩৫. আর এ (বিষয়)-টি তথু তাদের (ভাগ্যেই লেখা)

থাকে যারা ধৈর্য ধারণ করে এবং এ (সকল) লোক তথু

৩৬. যদি কখনো শয়তানের কুমন্ত্রণা তোমাকে প্ররোচিত

করে তাহলে তুমি আল্লাহ তায়ালার কাছে আশ্রয় চাও:

৩৭. (হে মানুষ.) আল্লাহ তায়ালার নিদর্শনসমূহের মধ্যে

রাত দিন, সূর্য ও চন্দ্র (হচ্ছে কয়েকটি নিদর্শন মাত্র): অতএব তোমরা সূর্যকে সাজদা করো না- চাঁদকেও নয়.

বরং তোমরা সাজদা করো (সেই) আল্লাহ তায়ালাকে.

যিনি এর সব কয়টিকে সৃষ্টি করেছেন, যদি ভোমরা একান্তভাবে তাঁরই এবাদাত করতে চাও (তাহলে এটাই

৩৮. অতপর (হে নবী), এরা যদি অহংকার করে (তাহলে

তুমি ভেবো না), যারা তোমার মালিকের সান্লিধ্যে রয়েছে তারা তো রাত দিন তাঁরই পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা

৩৯. তাঁর (কুদরতের) আরেকটি নিদর্শন হচ্ছে, তুমি

যমীনকে দেখতে পাচ্ছো ওছ (ও অনুর্বর হয়ে পড়ে

করে যাচ্ছে, তারা (বিন্দুমাত্রও এতে) ক্লান্ত হয় না।

সাহ্বদা

মন্যিল ৬

وَبَيْنَهُ عَنَ اوَةً كَانَّهُ وَلِيٌّ حَبِيْرُ

٣٥ وَمَا يُلَقُّهَا الَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ء وَمَا يُلَقُّهَا إِلَّا ذُوْحَظٌّ عَظِيْم

٣٦ وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطُنِ نَزْغُّ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ وَ إِنَّهُ هُوَ السَّهِيْعُ الْعَلِيْرُ

٣٠ وَمِنْ أَيْتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّهْسُ وَالْقَهَٰ ٤ لَا تَسْجُلُوْا لِلشَّيْسِ وَلَا لِلْقَهَ وَاسْجُلُوا لِلَّهِ الَّذِي غَلَقَهُنَّ إِنْ كُنْتُرْ ايَّاهُ تَعْبَلُونَ

٣٨ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْنَ رَبِّكَ يُسَبِّعُونَ لَهُ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُرْ لَا يَسْئَهُونَ

٣٩ وَمِنْ أَيْتِهِ أَنَّكَ تَوَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَاذًا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْهَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ء আছে.) অতপর তার ওপর আমি যখন পানি বর্ষণ করি

তখন সহসাই তা শস্য শ্যামল হয়ে ক্ষীত হয়ে ওঠে অবশ্যই যে (আল্লাহ তায়ালা) এ (মৃত যমীন)-কে জীবন দান করেন তিনি মত (মানুষ)-কেও জীবিত করবেন: নিসন্দেহে তিনি সর্ববিষয়ের ওপর একক শক্তিমান।

إِنَّ الَّذِيَّ آمْيَاهَا لَهُحْيِ الْهَوْتَى مِ إِنَّهُ عَلٰى كُلّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ

৪০. যারা আমার আয়াতসমূহ বিকৃত করে তারা কিন্তু কেউই আমার (দৃষ্টির) অগোচরে নয়; তুমিই বলো, যে ব্যক্তি জাহান্রামে নিক্ষিপ্ত হবে সে ভালো- না যে ব্যক্তি কেয়ামতের দিন শান্তি ও নিরাপন্তার সাথে (আমার সামনে) হাযির হবে সে ভালোঃ (এরপরও চৈতন্যোদয় না হলে তোমরা যা ইচ্ছা তাই করো, তবে মনে রেখো), তোমরা যাই করো আল্লাহ তায়ালা তা অবলোকন করছেন।

٣٠ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي ٓ الْيَنِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ﴿ أَفَهَىٰ يَّلْقَى فِي النَّارِ هَيْرٌ أَا مَّنْ يَّاتِيٓ أَمِنًا يُّوْمَ الْقِيٰمَةِ ، إِعْمَلُوْا مَا شِئْتُرُ لِإِنَّهُ بِهَا تَعْمَلُونَ بَصِيْرٌ

৪১. যারা (কোরআনের মতো একটি) শ্বরণিকা (গ্রন্থ) তাদের কাছে আসার পর তাকে অস্বীকার করে (তারা অচিরেই তাদের পরিণাম টের পাবে), মূলত সেটি হচ্ছে এক সম্মানিত গ্রস্থ,

٣١ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَمُرْ ، وَإِنَّهُ لَكِتبٌ عَزِيْزٌ لا

৪২. এতে বাতিল কিছু (অনুপ্রবেশের আশংকা) নেই-তার সামনের দিক থেকেও নয়, তার পেছনের দিক থেকেও নয়: (কেননা) এটা বিজ্ঞ, কুশলী, প্রশংসিত সন্তার কাছ থেকে নাযিল করা হয়েছে।

٣٢ ﴿ يَاْتِيْدِ الْبَاطِلُ مِنْ ابَيْنِ يَكَيْدِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ، تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْرِ حَمِيْلٍ

৪৩. (হে নবী,) তোমার সম্পর্কে (আজ্ঞ) সেসব কিছই বলা হচ্ছে যা তোমার আগে (অন্যান্য) নবীদের ব্যাপারেও বলা হয়েছিলো: নিসন্দেহে তোমার মালিক (যেমনি) পরম ক্ষমাশীল, (তেমনি) তিনি কঠোর শান্তিদাতা (-ও বটে)।

٣٣ مَا يُقَالُ لَكَ إلَّا مَا قَلْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ تَبْلِكَ ، إِنَّ رَبُّكَ لَنُّوْ مَغْفِرَةٍ وَّدُوْ عِقَابٍ

88. আমি যদি এ কোরআন (আরবী ভাষার বদলে) আজমী (অনারব ভাষায়) বানাতাম, তাহলে এরা বলতো, কেন এর আয়াতগুলো (আমাদের ভাষায়) পরিষ্কার করে বর্ণনা করা এর আরাতগুলো (আমাদের ভাষায়) পারকার করে বণনা করা رَمْ مُورِيًّا وَمُرْكُونَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَ হলো না (তারা বলতো, এ কি আজব বাপার); এটা (নাযিল করা وَعُرْبِي وَ قُلْ هُو اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَل হয়েছে) আজমী (ভাষায়), অথচ এর বাহক হচ্ছে আরবী; ঈমানদারদের জন্যে হেদায়াত (গ্রন্থ) ও (মানুষের যাবতীয় রোগ ব্যাধির) নিরাময়: কিন্তু যারা (এর পের) ঈমান আনে না তাদের কানে (বধিরতার) ছিপি আঁটা আছে. (তাই) কোরআন তাদের ওপর (যেন) একটি অন্ধকার (পর্দা, এ কারণেই সত্য কথা শোনা সন্তেও তারা এর সাথে এমন আচরণ করে): যেন তাদের অনেক দুর থেকে ডাকা হচ্ছে (তাই কিছুই বুঝতে পাচ্ছে না)।

٣٣ وَلَوْ مَعَلَنْهُ قُوْانًا آعَجَيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا يُوْمِنُونَ فِي أَذَانِهِرْ وَقُرُّ وَهُوَ عَلَيْهِرْ عَبِّي أُولَٰئِكَ يُنَادُونَ مِنْ مُّكَانِ الْعَيْلِ ع

৪৫. (হৈ নবী, তোমার আগে) আমি মুসাকেও একটি কেতাব দান করেছিলাম, তাতে (বছ) মতবিরোধ ঘটানো হয়েছিলো; অতপর তোমার মালিকের পক্ষ থেকে (কেয়ামত সংক্রান্ত) ঘোষণা যদি না থাকতো, তাহলে কবেই (আযাব এসে) এদের মাঝে (চূড়ান্ত একটা) ফয়সালা হয়ে যেতো, এরা (আসলে) এ (কোরআন) সম্পর্কে এক বিভ্রান্তিকর সন্দেহে (নিমচ্জিত) আছে।

٣٥ وَلَقَلُ اتَّيْنَا مُوْسَى الْكِتْبَ فَاخْتُلِفَ فِيْدِ ۚ وَلَوْكَا كَلِهَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُرْ اللَّهِ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكِّ مِنْهُ مُرِيبٍ

8৬. যে কোনো ব্যক্তিই নেক কাজ করবে- (মূলত) সে (তা) করবে (একান্ত) তার নিজের (কল্যাণের) জন্যে, আর যে ব্যক্তি কোনো মন্দ কাজ করবে (তার অভভ ফল একান্ত) তার ওপরই গিয়ে পড়বে: তোমার মালিক তাঁর বান্দাদের ব্যাপারে কখনো যালেম নন।

٢٦ مَنْ عَمِلَ مَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ء وَمَا رَبُّكَ بِظُلَّا } لَلْعَبِيْنِ

৪১ সরা হা-মীম আস সাজদা



৪৭. কেয়ামত (সংক্রান্ত) জ্ঞান একমাত্র আল্লাহ তায়ালার দিকেই ধাবিত হয়, কোনো একটি ফলও নিজের খোসা ছেড়ে বাইরে বেরোয় না, কোনো একটি নারীও নিজের গর্ভে সম্ভান ধারণ করে না– না সে সম্ভান প্রসব করে. যার পূর্ণ জ্ঞান আল্লাহ তায়ালার কাছে (মজুদ) থাকে না; যেদিন আল্লাহ তায়ালা ওদের ডেকে বলবেন, কোথায় (আজ) আমার অংশীদাররা, তারা বলবে (হে মালিক), আমরা তোমার কাছে এ নিবেদন করছি. (আজ) আমাদের মাঝে সাক্ষ্য দেয়ার জন্যে কেউই মজুদ নেই.

ثَمَرْتِ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْبِلُ مِنْ أَثْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْهِ ﴿ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ أَيْنَ شُركاءَى لا قَالُوا الْذَنَّكَ لا مَا منَّا مِنْ شَهِيْلِ ع

إِلَيْد يُودُّ عِلْيُّ السَّاعَةِ ﴿ وَمَا تَخُوُّجُ مِنْ

৪৮. এরা আগে যাদের ডাকতো তারা (আজ) হারিয়ে যাবে, এরা বুঝতে পারবে, তাদের জন্যে আর উদ্ধারের কোনো জায়গাই অবশিষ্ট নেই।

٨٨ وَضَلَّ عَنْهُر مًّا كَانُوْ ا يَنْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنَّوْا مَا لَهُرْ مِّنْ مَّحِيْصٍ

৪৯. মানুষ কখনো (বৈষয়িক) কল্যাণ লাভের জন্যে দোয়া (করা) থেকে ক্লান্তি বোধ করে না. অবশ্য যখন কোনো দুঃখ দৈন্য তাকে স্পর্শ করে তখন সে সম্পূর্ণরূপে নিরাশ হয়ে পডে।

٣٩ لَا يَسْنَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ ز وَإِنْ مُسَّهُ الشَّرُّ فَيَنُوسٌ قَنُوطٌ

৫০. যদি দৃঃখ কষ্ট স্পর্শ করার পর আমি তাকে অনুগ্রহের (স্বাদ) আস্বাদন করাই, তখন আবার সে বলে, এ তো আমার (প্রাপ্য) ছিলো, আমি এটাও মনে করি না, (সত্যি সত্যিই) কেয়ামত অনুষ্ঠিত হবে, (তাছাড়া) যদি আমাকে (একদিন) মালিকের কাছে ফেরত পাঠানোই হয়, তাহলে الله ربِّي إِن ربِّي إِن ربِّي اِن اِلْمَ আমার জন্যে তাঁর কাছে ওধু কল্যাণই থাকবে, আমি (সেদিন) কাফেরদের অবশ্যই বলে দেবো, (দুনিয়ার জীবনে) তারা কি কি করতো, অতপর (সে অনুযায়ী) আমি তাদের কঠোর আযাব আস্বাদন করাবো।

٥٠ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَهْهَةً مِّنَّا مِنْ ا بَعْلِ ضَرًّا ٓ عَ مَسَّتُهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰنَ الي ٤ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ عَنْهَ ۚ لَلْحُسْنَى مِ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيثَ كَفَرُوْا بِهَا عَبِلُوْ ا ر وَلَنُنِيْقَنَّهُمْ مِنْ عَنَ ابِ غَلَيْظِ

৫১. আমি যখন মানুষের ওপর কোনো অনুগ্রহ করি তখন সে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং উল্টো দিকে ফিরে যায়, আবার যখন তাকে কোনো অনিষ্ট এসে স্পর্শ করে তখন সে দীর্ঘ দোয়া নিয়ে (আমার সামনে) হাযির হয়।

٥١ وَإِذَا ٱ ثَعَهْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ ٱعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِ } وَإِذَا مَسَّهُ الشُّرُّ فَنُ وْ يُعَاءُ عَرِيْضٍ

৫২. (হে নবী, মানুষদের) বলো, তোমরা কখনো (একথা) مَنْ عِنْلِ اللَّهِ ثُمِ عِنْلِ اللَّهِ ثُمِ عَنْلِ اللَّهِ ثُمِ عَنْلِ اللَّهِ ثُمَ عَنْلِ اللَّهِ ثُمَ عَنْلِ اللَّهِ ثُمَ عَنْلِ اللَّهِ ثُمَ اللَّهِ عُمْ ٢٥ عَلْنَ مِنْ عِنْلِ اللَّهِ ثُمْ ٢٥ عَلْنَ مِنْ عِنْلِ اللَّهِ ثُمْ اللَّهِ عُمْ ٢٠ عَنْلُ اللَّهِ عُمْ اللَّهِ عُلْمُ اللَّهُ عُمْ اللَّهِ عُلْمُ اللَّهِ عُمْ اللَّهِ عُمْ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُمْ اللَّهُ عُمْ اللَّهُ عُمْ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلَا اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلَامُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلِمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلِمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ اللَّهُ عُلْمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلُمُ عُلِمُ عُلْمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِمُ عُلِم তায়ালার কাছ থেকে এসে থাকে (এবং এ সত্তেও) তোমরা একে প্রত্যাখ্যান করো, তাহলে তার/চাইতে বেশী গোমরাহ আর কে হবে- যে ব্যক্তি (এর) মারাত্মক বিরুদ্ধাচরণে লিপ্ত আছে ৷

كَفَرْتُمْرُ بِهِ مَنْ أَضَلَّ مِيَّنْ هُوَ فِي شِقَاق بَعِيْلِ

৫৩. অচিরেই আমি আমার (কুদরতের) নিদর্শনসমূহ দিগন্ত বলয়ে প্রদর্শন করবো এবং তাদের নিজেদের তাদের ওপর এটা পরিষার হয়ে যায় য়ে, এ (কোরআনই وَأَلَّهُ الْحَقَّ ﴿ أَنَّهُ الْحَقَّ ﴾ ﴿ মূলত) সত্য: (হে নবী, তোমার জন্যে) একথা কি যথেষ্ট নয়, তোমার মালিক (তোমার) সবকিছু সম্পর্কে অবহিত।

٥٣ سَنُوِيْهِرْ الْمِيْنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِيْ لَمْ يَكُفِ بِوَ بِلَّكَ ٱلَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءِ شَهِيْلً

সাক্ষাৎকারের ব্যাপারেই সন্দিহান; আরো জেনে রেখো, (এদের) সবকিছই আল্লাহ তায়ালা পরিবেষ্টন করে আছেন।

إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مَّحِيْطً ع

সূরা আশ শুরা

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ৫৩, রুকু ৫ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الشُّوْرِي مَكِيةً أَيَاتٍ أَ ٤٣ رُكُوْعٌ : ٥ بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ

১. হা-মীম.

২ আঈন সী-ন-কা-ফ।

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْرِ

৩. (হে নবী,) এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তোমার ওপর (এ مُنْ لِكَ يُوْحِيَّ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِيثَ مِنْ اللهِ عَلَيْكَ وَإِلَى الَّذِيثَ مِنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْكَ وَاللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ কাছেও (তিনি তা এভাবে নাযিল করেছেন), আল্লাহ তায়ালা পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

قَبْلِكَ لا اللَّهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ 8. आসমানসমূহে या किছू আছে- या किছू আছে यमीतन, ه لَهُ مَا فِي السَّمُوٰتِ وَمَا فِي الْإَرْضِ وَالْعَالِمِينَا ال

সবকিছুই তাঁর: তিনি সমুনুত, (তিনি) মহান। ৫. (আল্লাহ তায়ালার ভয়ে) আসমানসমূহ তাদের উপরিভাগ থেকে ফেটে পড়ার উপক্রম হয়েছিলো. (এ সময়) ফেরেশতারা তাদের মহান মালিকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে থাকে, তারা দুনিয়াবাসীদের

٥ تَكَادُ السَّهٰوٰ يَ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَئِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِعَهْ ِرَبِّهِمْ وَيَهْتَغْفِرُونَ لَمَنْ فِي الْإَرْضِ اللَّهِ اللَّهِ مُوَ الْغَفُورُ জন্যেও (তখন) আল্লাহ তায়ালার কাছে ক্ষমা প্রার্থনা

হচ্ছেন ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু। ৬. (হে নবী.) যারা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে অন্যদের অভিভাবক বানিয়ে নিয়েছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর

ন্যর রাখছেন, তুমি (তো) এদের ওপর তন্তাবধায়ক নও।

করতে ওরু করে: তোমরা জেনে রেখো, আল্লাহ তায়ালা

٢ وَالَّذِينَ اتَّخَلُوْا مِنْ دُوْنِهِ ٱوْلِيَاءَ اللَّهُ مَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ رَا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بوكيل

৭. এভাবেই (হে নবী, এ) আরবী কোরআন আমি তোমার ওপর নাযিল করেছি, যাতে করে তুমি (এর দ্বারা) মক্কাবাসীদের ও তার আশেপাশে যারা বসবাস করে তাদের (জাহান্লামের আযাব সম্পর্কে) সতর্ক করে দিতে পারো, (বিশেষ করে) তাদের তুমি (কেয়ামতের) মহাসমাবেশের দিন সম্পর্কেও হুশিয়ার করতে পারো: যে দিনের (ব্যাপারে) কোনো রকম সন্দেহ শোবা নেই, আর (আল্লাহ তায়ালার বিচারে সেদিন) একদল লোক জানাতে আরেক দল লোক জাহানামে (প্রবেশ করবে)।

٤ وَكَنْ لِكَ أَوْمَيْنَا ۚ إِلَيْكَ قُوْ إِنَّا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرِٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَهْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ، فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ

৮, আল্লাহ তায়ালা চাইলে সমগ্র মানব সন্তানকে একটি (অখন্ড) জাতিতে পরিণত করতে পারতেন, (কিন্তু) তিনি يَّلْ خِلُ مَنْ يَّشَاءُ فِي رَحْبَتهِ وَ الطُّلَّهُونَ مَا كَامِ عَلَمْ عَلَمْ عَلَيْهُ عَلَى الطُّلَّهُونَ مَا যারা যালেম তাদের (ব্যাপারে আল্লাহ তায়ালার সিদ্ধান্ত হচ্ছে), তাদের কোথাও কোনো অভিভাবক থাকবে না. থাকবে না কোনো সাহায্যকারীও।

^ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ ٱمَّةً وَّاحِنَةً وَّلٰكِي لَهُرْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ

৯. এরা কি আল্পাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে (অন্যদের) وَأَرِياءَ عَ فَاللَّهُ مُو وَلِياءً عَ فَاللَّهُ مُو وَالْمِنَ دُونِهِ أُولِياءً ਤ فَاللَّهُ مُو اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مُو اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مُو اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مُو اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ مُو اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّا عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّ عَلَّهُ الْوَلِيُّ وَ مُو يُحْى الْمَوْتَى وَوَهُو عَلَى كُلِّ , क्वन आब्वार जाग्नानार, जिन मृज्त जीविज करतन তিনি সর্ববিষয়ের ওপর প্রবল শক্তিমান।

شَيْءِ قَلِيدٌ ع



১০. (হে মানুষ,) তোমরা যে বিষয়ে মতবিরোধ করো. তার ফয়সালা তো আল্লাহ তায়ালারই হাতে: (বলো হে নবী.) এ হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা, তিনিই আমার মালিক, আমি তাঁর ওপরই নির্ভর করি এবং আমি তাঁর দিকেই রুজ্ব করি।

١٠ وَمَا اغْتَلَقْتُرْ فِيْدِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْبُهُ ۗ إِلَى الله و ذَلكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ قِ وَالَيْهِ

১১. তিনি আসমানসমূহ ও যমীনের সষ্টিকর্তা: তিনি তোমাদের নিজেদের মধ্য থেকে তোমাদের জন্যে যুগল সৃষ্টি করেছেন (তিনি) পশুদের মাঝেও (তাদের) জোড়া সৃষ্টি করেছেন, (এভাবেই) তিনি সেখানে তোমাদের বংশ يَنْ رَوُّكُمْ فِيهُ ﴿ لَيْسَ كَنِثْلِهِ شَيْءً وَهُو अल्म وَهُو विखात करतन; (मृष्टिलारक) कारना किছ्ই ठाँत सम्म নয়, তিনি সর্বশ্রোতা, (তিনি) সর্বদুষ্টা।

اا فَاطِرُ السَّهُونِ وَالْأَرْضِ ، جَعَلَ لَكُمْ مِّن أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَّمِنَ الْإَنْعَامَ أَزْوَاجًا ع السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

ا لَدُ مَقَالِيْلُ السَّمُوٰ وَ الْأَرْضِ عَ يَبْسُطُ أَوْمَ عَالَمَ عَالَمَ عَالَمَ عَالَمَ عَالَمَ عَالَمَ عَالَمَ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهُ عِلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عِلَا عِلْمُ عِلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَالْمُعُ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عِلْهِ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلِيهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَل হাতে, তিনি যার জন্যে ইচ্ছা করেন রেযেক বাড়িয়ে দেন, আবার (যার জন্যে চান) সংকুচিত করেন; নিক্যুই তিনি بُكُلِّ شَيْءُ ويَقْنِرُ ﴿ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ المامِ প্রত্যেক বিষয় সম্পর্কে সম্যক অবগত রয়েছেন।

১৩. (হে মানুষ.) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে সে 'দ্বীনই' নির্ধারিত করেছেন, যার আদেশ তিনি দিয়েছিলেন নুহকে এবং যা আমি তোমার কাছে ওহী করে পাঠিয়েছি. (উপরন্তু) যার আদেশ আমি ইববরাহীম, মৃসা ও ঈসাকে দিয়েছিলাম, (এদের স্বাইকে আমি বলেছিলাম), তোমরা এ জীবন বিধান (সমাজে) প্রতিষ্ঠিত করো এবং (কখনো) এতে অনৈক্য সৃষ্টি করো না: (অবশ্য) তুমি যে (দ্বীনের) দিকে আহ্বান করছো, এটা মোশরেকদের কাছে একান্ত দুর্বিষহ মনে হয়: (মূলত) আল্লাহ তায়ালা যাকেই চান তাকে বাছাই করে নিজের দিকে নিয়ে আসেন এবং যে ব্যক্তি তাঁর অভিমুখী হয় তিনি তাকে (দ্বীনের পথে) পরিচালিত করেন।

١٣ شَرَعَ لَكُيرُ مِّنَ إلدِّينَ مَا وَصَّى بِهِ نُوْحًا وَّالَّذِي ٓ أَوْمَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَمَّيْنَا بِهِ إِبْرِهِيْرَ وَمُوْسَى وَعِيْسَى أَنْ أَقِيْمُوا اللَّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّ قُوْا فِيْهِ ، كَبُّرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَنْعُوهُمْ الَيْهِ ﴿ اللَّهُ يَجْتَبِي الَّيْهِ مَنْ يُشَاءُ وَيَهْرِى إِلَيْهِ مَنْ يَّنِيْبُ

১৪. (হে নবী, ওদের কাছে সঠিক) জ্ঞান আসার পরও ওরা কেবলমাত্র নিজেদের পারস্পরিক বিদ্বেষের কারণেই নিজেদের মধ্যে মতবিরোধ ঘটায়: যদি এদের একটি সুনির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত (অব্যাহতি দিয়ে রাখার) তোমার মালিকের ঘোষণা না থাকতো, তাহলে কবেই (আযাবের মাধ্যমে) ওদের মধ্যে একটা ফয়সালা হয়ে যেতো: (আসলে) যাদের আগের লোকদের পরে কিতাবের উত্তরাধিকারী বানানো হয়েছে, তারা (কোরআনের ব্যাপারে) এক বিভ্রান্তিকর সন্দেহে নিমজ্জিত হয়ে আছে।

١٣ وَمَا تَفَوَّقُوا إلَّا مِنْ بَعْلِ مَا جَاءَهُمُ الْعَلْمُ بَغْيًا ' بَيْنَهُرْ و وَلَوْلَا كَلِهَةً سَبَقَت مِنْ رَبِّكَ إِلَى آجَلِ مُّسَمِّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُرْ ﴿ وَانَّ الَّذِينَيَ ٱوْرِثُوا الْكِتْبَ مِنْ أَبَعْنِ مِرْ لَغِي شَكِّ مِنْدُ مُريب

১৫. অতএব (হে নবী), তুমি (মানুষদের) এ (দ্বীনের) দিকে ডাকতে থাকো, তোমাকে যেভাবে আদেশ দেয়া হয়েছে সেভাবেই তুমি (এর উপর) দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত থেকো, ওদের খেয়াল খুশীর অনুসরণ করো না, তুমি বলে দাও, আল্লাহ তায়ালা কিতাবের যা কিছুই অবতীর্ণ করেন না কেন, আমি তার ওপরই ঈমান আনি, আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে যেন আমি তোমাদের মধ্যে ন্যায়বিচার করি: আল্লাহ তায়ালা আমাদের মালিক এবং তোমাদেরও মালিক: আমাদের কাজ আমাদের জন্যে এবং তোমাদের কাজ তোমাদের জন্যে: আমাদের ও তোমাদের মাঝে কোনো ঝগডাঝাটি

10 فَلِنْ لِكَ فَادْعُ ع وَاسْتَقِيرُ كَمَا أُمِرْكَ عَ وَلَا تَتَّبِعُ اَهُوا اَعُمْرَ ، وَقُلْ أَمَنْتُ بِهَا آنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كُتُبِ عِ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُرْ مِ ٱللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ﴿ لَنَآ اَعْهَالُنَا وَلَكُمْ اَعْهَالُكُرْ · لَا حُجَّّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُرْ · اَللَّهُ

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ_ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|---|
| নেই; আল্লাহ তায়ালা আমাদের সকলকে (এক জায়গায়) জড়ো করবেন, আর (সবাইকে) তার দিকেই ফিরে যেতে হবে; | يَجْهَعُ بَيْنَنَا ۽ وَإِلَيْهِ الْهَصِيْرُ ، |
| ১৬. যারা আল্লাহ তায়ালার (দ্বীন) সম্পর্কে বিতর্ক করে, (বিশেষত আল্লাহ তায়ালা কর্তৃক) তা (দ্বীন) গৃহীত হওয়ার পর এদের বিতর্ক তাদের মালিকের কাছে সম্পূর্ণ অসার, তাদের ওপর (তাঁর) গযব, তাদের জন্যে রয়েছে (তাঁর) কঠিন শাস্তি। | اللهِ مِنْ بَعْلِ مَا اللهِ مِنْ بَعْدِ مِنْ بَعْدِ مَا اللهِ مِنْ بَعْدِ مِنْ اللهِ مِنْ بَعْدِ مِنْ اللهِ مِنْ أَنْ أَلْ أَنْ أَلْ أَلْ أَلْ أَنْ أَلْ أَلْ أَلْ أَلْ مُنْ أَلْ أَلْ أَلْ أَلْ أَلْ أَلْ أَلْ أَل |
| ১৭. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, যিনি সত্য (দ্বীন)-সহ এ কিতাব ও (ইনসাফের) মানদন্ত নাযিল করেছেন; (হে নবী,) তুমি কি জানো, সম্ভবত কেয়ামত একান্ত কাছে (এসে গেছে)! | ا الله النوى انزل الكتب بالحق والميثران ، وما يُدريك لعل الساعة تريب ويثب الساعة المريث الساعة المريب المساعة المريب المر |
| ১৮. যারা সে (কেয়ামতের) বিষয়ে বিশ্বাস করে না, তারা কামনা করে তা ত্বরান্বিত হোক, (অপরদিকে) যারা তা বিশ্বাস করে তারা তার থেকে ভয় করে, (কেননা) তারা জানে সে (দিন)-টি একান্ত সত্য; জেনে রেখো, যারাই কেয়ামত সম্পর্কে বাকবিতন্ডা করে তারা মারাত্মক গোমরাইাতে রয়েছে। | ١٨ يَسْتَعْجِلُ بِهَا النَّإِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا عَ وَالنَّإِيْنَ أَمْنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا لا وَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهَا الْحَقِّ الْمَنُوا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا لا وَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهَا الْحَقِّ الْمَالُونَ فِي الْحَقِّ اللَّهِ أَلَا إِنَّ النَّإِيْنِ لَيْمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَغِيْ ضَلْلٍ بَعِيْدٍ |
| ১৯. আল্লাহ তায়ালা তাঁর বান্দাদের সৃন্ধাতিসৃন্ধ বিষয় সম্পর্কেও অবহিত আছেন, তিনি যাকে রেযেক দিতে চান দেন, তিনি প্রবল পরাক্রমশালী। | 19 اَللّٰهُ لَطِيْفٌ الْعِبَادِةِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ عَ وَهُوَ الْقَوِى الْعَزِيْزُعَ |
| ২০. যে ব্যক্তি পরকালের (কল্যাণের) ফসল কামনা করে আমি তার জন্যে তা বাড়িয়ে দেই, আর যে ব্যক্তি (গুধু) দুনিয়ার জীবনের ফসল কামনা করে আমি তাকে (অবশ্য দুনিয়ায়) তার কিছু অংশ দান করি, কিছু পরকালে তার জন্যে (সে ফসলের) কোনো অংশই বাকী থাকে না। | ٢٠ مَنْ كَانَ يُرِيْكُ مَرْثَ الْأَخِرَةِ نَزِدْ لَدَّ فِي مَرْثِهِ عَ وَمَنْ كَانَ يُرِيْكُ مَرْثَ اللَّاثَيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَدَّ فِي الْأَخِرَةِ مِنْ تَّصِيْبٍ |
| ২১. এদের কি এমন কোনো শরীক আছে, যারা এদের জন্যে এমন কোনো জীবন বিধান প্রণয়ন করে নিয়েছে, যার অনুমতি আল্লাহ তায়ালা দান করেননি; যদি (আযাবের মাধ্যমে) সিদ্ধান্ত নেয়া হতো তাহলে কবেই তাদের মধ্যে একটা ফয়সালা হয়ে যেতো; অবশ্যই যালেমদের জন্যে কঠিন শান্তি রয়েছে। | ا اَ اَ اَ لَهُرْ شُرَكُوا شَرَعُوا لَهُرْ مِّنَ الرِّيْنِ مَا لَكُرْ مِّنَ الرِّيْنِ مَا لَكُرْ يَاْذَنَ بِهِ اللَّهُ ﴿ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُرْ ﴿ وَإِنَّ الظَّلِمِيْنَ لَهُرْ عَنَابَ الْكَلِمِيْنَ لَهُرْ عَنَابَ الْكَلْمِيْنَ لَهُرْ عَنَابَ الْكَلْمِيْنَ لَهُرْ عَنَابَ الْكَلْمِيْنَ لَهُمْ اللّهُ الْمَالِمُونَ اللّهُ الللّهُ اللّهُ ا |
| ২২. (হে নবী, সেদিন) তুমি (এ) যালেমদের দেখতে পাবে তারা নিজেদের কর্মকান্ড (-এর শান্তি) থেকে ভীত সন্ত্রস্ত, কেননা তা তাদের ওপর পতিত হবেই; (কিন্তু) যারা (আল্লাহ তায়ালার ওপর) ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে, (তারা) জান্নাতের মনোরম উদ্যানে (অবস্থান করবে), তারা (সেদিন) যা কিছু চাইবে তাদের মালিকের কাছ থেকে তাদের জন্যে তাই (সেখানে মজুদ) থাকবে; এটা হচ্ছে (আল্লাহ তায়ালার) মহা অনুথাহ। | ۲۲ تَرَى الظَّلْوِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِبًّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاللَّهِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِبًّا كَسَبُوا وَهُو وَالتَّذِيْنَ الْمَنُوا وَعَولُوا الشَّلِحُسِ فِي رَوْضِي الْجَنِّسِ عَ لَهُرْمًّا الشَّلِحُسِ فِي رَوْضِي الْجَنِّسِ عَ لَهُرْمًّا يَشَاءُونَ عِنْنَ رَبِّهِمْ لَا ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ |
| ২৩. আর সেটা হচ্ছে তাই (নেরামত)- আল্লাহ তায়ালা তার সেসব বান্দাদের যার সুসংবাদ দান করেন, যারা | |
| ৪২ সূরা আশ শূরা 💮 🛮 🕏 ৪৯৭ | 🕨 মন্যিল ৬ |

পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদ্দ

(এর ওপর) ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে: (হে নবী,) তুমি বলো, আমি তোমাদের কাছ থেকে এ (দ্বীন প্রচারের) ওপর কোনো পারিশ্রমিক চাই না, তবে (তোমাদের সাথে আমার) আত্মীয়তা (সূত্রে) যে সৌহার্দ ब्रिंग के बें के के बें के के बें के के बें के के बें के के बें के के बें के के बें क কোনো নেক কাজ করে তার জন্যে আমি তার (সে নেক) কাজে অতিরিক্ত কিছু সৌন্দর্য যোগ করে দেই: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও গুণগ্ৰাহী।

أُمُّنُواْ وَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ ، قُلْ 3 أَسْنَلُكُم عَلَيْهِ اَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبِي ﴿ وَمَنْ غَفُورٌ شَكُورٌ

২৪. (হে নবী.) তারা কি বলে এ ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করছে, (অথচ) আল্লাহ তায়ালা চাইলে তোমার দিলের ওপর মোহর মেরে দিতে পারতেন: আল্লাহ তায়ালা বাতিলকে (এমনিই) মিটিয়ে দেন এবং সত্যকে তাঁর বাণী দ্বারা সত্য প্রমাণ করে দেখিয়ে দেন: অবশ্যই (মানুষের) অন্তরে যা কিছু আছে সে সম্পর্কে তিনি সবিশেষ অবহিত রয়েছেন।

٢٣ أَأْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرِى عَلَى الله كَنْبًا ع فَانَ يُّشَا اللَّهُ يَخْتِرْ عَلَى قَلْبِكَ ، وَيَهْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقُّ بِكُلِمِتِهِ ، إِنَّهُ عَلِيْرٌ اللهِ السُّكُورِ

২৫. তিনিই হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা– যিনি তাঁর বান্দাদের তাওবা কবুল করেন এবং তাদের গুনাহ খাতাও তিনি ক্ষমা করে দেন, তোমরা যা কিছু করো সে সম্পর্কেও তিনি জানেন

٢٥ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُواْ عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ لا

২৬. তিনি তাদের ডাকে সাড়া দেন যারা (তাঁর ওপর) ঈমান আনে এবং নেক আমল করে, তিনি তাদের নিজ অনুগ্রহে তাদের (পাওনার চাইতে) বেশী (সওয়াব) দান করেন; (হ্যা,) যারা (তাঁকে) অস্বীকার করে তাদের জন্যে কঠোর শান্তি রয়েছে।

وَيَسْتَجِيْبُ الَّّن يْنَ أُمَنُوْا وَعَهْلُوا الصَّلِحَتِ وَيَرِيْكُمُرْ مِّنْ فَضْلِهِ ﴿ وَالْكَفِرُونَ لَمْرُ عَلَ ابْ شَرِيْن

২৭. যদি আল্লাহ তায়ালা তাঁর (সব) বান্দাদের রেযেকে প্রাচুর্য দিতেন তাহলে তারা নিসন্দেহে যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করতো. (তাই) তিনি পরিমাণমতো যাকে (যতোটুকু) চান তার জন্যে (ততোটুকু রেযেকই) নাযিল করেন: অবশ্য তিনি নিজের বান্দাদের (প্রয়োজন) সম্পর্কে পূর্ণাংগ ওয়াকেফহাল রয়েছেন, তিনি (তাদের প্রয়োজনের দিকেও) নযর রা**খে**ন।

٢٠ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرَّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغُوا فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِنْ يُّنَزَّلُ بِقَنَرَ مَّا يَشَآءُ مَ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ غَبِيرًا بَصِيرً

২৮. তিনিই (আল্লাহ তায়ালা)- তারা যখন (বৃষ্টির ব্যাপারে) নিরাশ হয়ে পড়ে তখন তিনি বৃষ্টি প্রেরণ করেন এবং (এভাবেই) যমীনে তিনি তাঁর রহমত ছড়িয়ে দেন: (মূলত) তিনিই অভিভাবক, (তিনিই) প্রশংসিত।

٢٨ وَهُوَ الَّذِي يُنَزَّلُ الْغَيْسَ مِنْ اَبَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ ۚ وَهُوَ الْوَ لِيُّ الْحَمِيْلُ

২৯. তাঁর (কুদরতের অন্যতম) নিদর্শন হচ্ছে স্বয়ং আসমানসমূহ ও যমীনের সৃষ্টি, এ দুয়ের মাঝখানে যতো প্রাণী আছে তা তিনিই ছড়িয়ে ছিটিয়ে রেখেছেন; তিনি যখন চাইবেন তখন এদের সবাইকে (আবার) জমা করতেও সক্ষম হবেন।

٢٩ وَمِنْ أَيْتِهِ غَلْقُ السَّهٰونِي وَ الْأَرْضِ وَمَا بَتُ فِيْهِهَا مِنْ دَآبَّةِ ، وَهُوَ عَلَى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَلِيْرٌ ع

৩০. (द মানুষ,) যে विপদ আপদই তোমাদের ওপর مُ مَنْ فَبِهَا كَسَبَتْ فَبِهَا كَسَبَتْ فَبِهَا كَسَبَتْ فَبِهَا كَسَبَتْ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصْمِيتَةٍ فَبِهَا كَسَبَتْ المُعْتَالِقِيمَ المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمِ المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمِ المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَالِقِيمَا المُعْتَى المُعْتَالِقِيمَ المُعْتَالِقِيمَ المُعْتَالِقِيمِ المُعْتَالِقِيمِ المُعْتَالِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِيمِ المُعْتَالِقِيمِ المُعْتَلِقِيمَ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُعْتِيمِ المُعْتَلِقِيمِ الْمُعْتَلِقِيمِ المُعْتَلِقِيمِ الْعُلِيمِيمِ المُعْتِيمِ المُعْتَلِقِيمِ المُع আসুক না কেন, তা হচ্ছে তোমাদের নিজেদের হাতের কামাই, (তা সত্তেও) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের অনেক (অপরাধ এমনিই) ক্ষমা করে দেন।

أَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُواْ عَنْ كَثِيْر ،

৪২ সুরা আশ শুরা

884

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|---|--|
| ৩১. তোমরা যমীনে আল্লাহকে ব্যর্থ করে দিতে পারবে না, তিনি ছাড়া তোমাদের কোনো অভিভাবক নেই, নেই | ٣١ وَمَ أَ أَنْتُر بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ مَ ۖ وَمَا |
| কোনো সাহায্যকারীও। | لَكُرْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ مِنْ وَّلِي ۗ وَلَا نَصِيْرٍ |
| ৩২. আল্লাহ তায়ালার (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের মধ্যে সমুদ্রে বাতাসের বেগে বয়ে চলা পাহাড়সম জাহাজগুলো অন্যতম; | ٣٢ وَمِنْ أَيْتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْإَعْلَا إِ |
| ৩৩. তিনি ইচ্ছা করলে বাতাস স্তব্ধ করে দিতে পারেন, | ٣٣ إِنْ يَّشَأَ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِلَ |
| ফলে এসব (নৌযান) সমুদ্রের বুকে নিশ্চল হয়ে পড়ে থাকবে; নিশ্চয়ই এ (প্রক্রিয়ার) মাঝে ধৈর্যশীল ও | عَلَى ظَهْرِ مِ ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيْتٍ لِّكُلِّ صَبًّارٍ |
| কৃতজ্ঞদের জন্যে প্রচুর নিদর্শন রয়েছে, | ٔ شَکُوْرٍ ۷ |
| ৩৪. অথবা তিনি চাইলে (বাতাস তীব্র করে সেগুলো) তাদের কৃতকর্মের কারণে ধ্বংসও করে দিতে পারেন, অনেক কিছু থেকে তিনি তো (আবার) ক্ষমাও করে দেন, | ٣٣ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِهَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ رَ |
| ৩৫. যারা আমার (কুদরতের) নিদর্শনসমূহের ব্যাপারে (খামাখা) বিতর্ক করে তারা যেন জেনে রাখে যে, তাদের কিন্তু পালানোর কোনো জায়গা নেই। | ٣٥ وَّيَعْلَرَ الَّنِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيَّ الْتِنَا ء مَا لَمُرْ مِّنْ مُحِيْضٍ |
| ৩৬. তোমাদের যা কিছুই দেয়া হয়েছে তা দুনিয়ার কতিপয় (অস্থায়ী) ভোগের সামগ্রী মাত্র, কিন্তু (পুরস্কার | ٣٦ فَهَا ۗ أُوْتِيْتُرْ مِّنْ شَيْءٍ فَهَتَاعُ الْحَيْوةِ |
| হিসেবে) যা আল্লাহ তায়ালার কাছে আছে তা উত্তম ও স্থায়ী, আর তা হচ্ছে সেসব লোকের জন্যে যারা আল্লাহ | النُّنْيَاء وَمَا عِنْ اللهِ خَيْرُ وَّا اَبْغَى لِلَّذِينَ |
| তায়ালার ওপর ঈমান আনে এবং সর্বাবস্থায়ই তারা তাদের মালিকের ওপর নির্ভর করে, | اْمَنُوْا وَعَلَى رَبِّهِم ٛ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ ۚ |
| ৩৭. যারা বড়ো বড়ো গুনাহ ও অন্নীল কার্যকলাপ থেকে বেঁচে থাকে, (বিশেষ করে) যখন রাগান্তিত হয় তখন | ٣٠ وَالَّاذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبَيْرَ الْإِثْرِ |
| তারা (অন্যদের ভূল) ক্ষমা করে দেয়, | وَ الْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ؟ |
| ৩৮. যারা তাদের মালিকের ডাকে সাড়া দেয়, নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাদের কাজকর্মগুলো (সম্পাদনের সময়) | ٣٨ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَٱقَامُوا |
| পারস্পরিক পরামর্শই হয় তাদের (কর্ম-) পন্থা, আমি তাদের যে রেযেক দান করেছি তা থেকে তারা (আমারই | الصَّلُوةَ مِ وَآمْرُهُمْ شُوْرِي بَيْنَهُمْ مِ وَمِيًّا |
| পথে) খরচ করে, | رَزَقْنَهُمْ يُنْفِقُونَ ج |
| ৩৯. যারা (এমনি আত্মর্যাদাসম্পন্ন,) যখন তাদের ওপর বাড়াবাড়ি করা হয় তখন তারা প্রতিশোধ গ্রহণ করে। | ٣٩ وَالَّذِيْنَ إِذَآ أَصَابَهُرُ الْبَغْيُ هُرْ يَنْتَصِرُوْنَ |
| ৪০. মন্দের প্রতিফল অনুরূপ মন্দই (হবে), কিন্তু যে ক্ষমা করে দেয় এবং আপস করে, আল্লাহ তায়ালার কাছে | ٣٠ وَجَزَوُ السَيِّنَةِ سَيِّنَةً مِثْلُهَا مَ فَمَنَ عَفَا |
| অবশ্যই তার (জন্যে) যথাযথ পুরস্কার রয়েছে; আল্লাহ | |
| তায়ালা কখনও যালেমদের পছন্দ করেন না। | الظَّالِينَ |
| ৪১. কোনো ব্যক্তি যদি তার সাথে যুলুম (সংঘটিত)হওয়ার পর (সমপরিমাণ) প্রতিশোধ গ্রহণ করে, তাতে | ا " وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْنَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ مَا |
| তাদের ওপর কোনো অভিযোগ নেই; | عَلَيْهِرْ مِّنْ سَبِيْلٍ ا |
| ৪২ সূরা আশ শূরা ৪৯৯ | মন্যিল ৬ |

৪২. অভিযোগ তো হচ্ছে তাদের ওপর, যারা মানুষদের ওপর অত্যাচার করে এবং পৃথিবীর বুকে অন্যায়ভাবে বিদ্রোহের আচরণ করে বেড়ায়; এমন (ধরনের যালেম) লোকদের জন্যেই রয়েছে কঠোর আযাব।

٣٢ إِنَّهَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِهُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقَّ ا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَنَابٌ ٱلْيُمُّ

৪৩. যে ব্যক্তি ধৈর্য ধারণ করে এবং (মানুষদের) ক্ষমা করে দেয় (সে যেন জেনে রাখে), অবশ্যই এটা হচ্ছে সাহসিকতার কাজসমূহের মধ্যে অন্যতম।

٣٣ وَلَهَنْ مَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ

88. (হে নবী.) যে ব্যক্তিকে আল্লাহ তায়ালা গোমরাহ করে দেন, তার জন্যে তিনি ছাড়া আর কোনো দিতীয় অভিভাবক থাকে না: তুমি যালেমদের দেখবে, যখন তারা (আল্লাহ তায়ালার) আযাব পর্যবেক্ষণ করবে তখন বলবে, (আজ এখান থেকে) ফিরে যাওয়ার কোনো পথ আছে কি?

٣٣ وَمَنْ يُشْلِلِ اللَّهُ فَهَا لَهٌ مِنْ وَّلِيّ مِّنْ بَعْدِهِ ﴿ وَتَرَى الظَّلِمِيْنَ لَمًّا رَاوُا الْعَنَّابَ يَقُوْلُوْنَ مَلْ إلى مَرَدٍ مِنْ سَبِيلٍ ع

৪৫. তুমি তাদের দেখতে পাবে (যখন) তাদের জাহানামের কাছে এনে হাযির করা হবে, তখন তারা অপমানে অবনত (হয়ে যাবে), ভয়ে তারা অর্ধ নির্মীলিত চোখে তাকিয়ে থাকবে: (এ অবস্থা দেখে) যারা ঈমান এনেছিলো তারা বলবে, সত্যিকার ক্ষতিগ্রস্ত লোক তো তারা যারা (আজ) কেয়ামতের দিন নিজেদের ও নিজেদের পরিবার পরিজনদের (এভাবে) ক্ষতি সাধন করেছে: (হে নবী,) জেনে রেখো, নিসন্দেহে যালেমরা (সেদিন) স্থায়ী আযাবে থাকবে।

٣٥ وَتَرْبَهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خُشِعِيْنَ مِنَ الذَّلَّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْنِ خَفِيٌّ ﴿ وَقَالَ الَّذِيْنَ أَمُّنُواْ إِنَّ الْحُسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْا ٱنْفُسَهُرْ وَٱهْلِيْهِرْ يَوْاً الْقِيْمَةِ ﴿ أَلَا إِنَّ الظُّلِوِيْنَ فِي عَنَابٍ مُّقِيْمِر

৪৬. (আর সে আযাব এসে গেলে) আল্লাহ তায়ালা ছাডা তাদের এমন কোনো অভিভাবক থাকবে না, যারা (তখন) তাদের কোনো রকম সাহায্য করতে পারবে: (সত্যি কথা হচ্ছে.) আল্লাহ তায়ালা যাকে গোমরাহ করেন তার জন্যে (বাঁচার) কোনোই উপায় নেই:

٣٦ وَمَا كَانَ لَهُرْ مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُوْنَهُرْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مَ وَمَنْ يَتَّضْلِل اللَّهُ فَهَا لَهٌ مِنْ

৪৭. (হে মানুষ.) সে দিনটি আসার আগেই তোমরা তোমাদের মালিকের ডাকে সাড়া দাও, আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে যে দিনটির প্রতিরোধকারী কেউই থাকবে না: সেদিন তোমাদের জন্যে কোনো আশ্রয়স্থলও থাকবে না. আর না তোমাদের পক্ষে সেদিন (অপরাধ) অস্বীকার করা সম্ভব হবে!

٣٠ إِسْتَجِيْبُوا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِي يَوْمٌ لا مَرَدُّ لَهُ مِنَ اللهِ ﴿ مَا لَكُرْ مِّنْ مَّلْجَا يَّوْمَئِنِ وَّمَا لَكُيرُ مِّنَ تَّكِيْر

8৮. অতপর यिन এরা (रमाहा७ (अरक) भूच कितिरा त्ना عُلَيْهِمُ كَالَّهُ عَلَيْهِمُ الْمُعَالِينَ اَعْرَضُوا فَهَا أَرْسَلْنَكَ عَلَيْهِمُ الْمُعَالِينَ الْعَرْضُوا فَهَا أَرْسَلْنَكَ عَلَيْهِمِ তাহলে (তুমি জেনে রেখো), আমি তোমাকে তাদের حَفِيْظًا ، إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْغُ ، وَإِنَّا إِذًا وَدُهُ अপর দারোগা করে পাঠাইনি; তোমার দায়িত্ব তো হচ্ছে ভধু (আরাহ তায়ালার বাণী) পৌছে দেয়া; যখন আমি মানুষদের وَإِنَ وَالْ عَلَمُ مَا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ع وَإِنَ क्यांक जधन সে সে تُصِبْهُرُ سَيِّئَةً أَ بِهَا قَلَّ مَن أَيْلِيْهِرْ فَإِنَّ करना (ভीषণ) উল্পসিত হয়, আবার যদি তাদেরই (কোনো) কর্মকান্ডের কারণে তাদের ওপর কোনো দুঃখ কষ্ট আসে, তখন (সে) মানুষ অকৃতজ্ঞ হয়ে পড়ে।

الْإِنْسَانَ كَفُوْرُ

৪৯. আকাশমন্তলী ও যমীনের (সমুদয়) সার্বভৌমত্ (একমাত্র) আল্লাহ তায়ালার জন্যে; তিনি যা ইচ্ছা তাই সৃষ্টি করেন; যাকে চান তাকে কন্যা সন্তান দান করেন.

، لَهَنْ يَّشَاءُ إِنَاثًا ويَهَر

৪২ সুরা আশ শুরা

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|---|
| আবার যাকে চান তাকে পুত্র সম্ভান দান করেন, | يشاء النُّكُورَ لا |
| ৫০. যাকে চান তাকে পুত্র কন্যা (উভয়টাই) দান করেন, (আবার) যাকে চান তাকে তিনি বন্ধ্যা করে দেন; নিসন্দেহে তিনি বেশী জানেন, ক্ষমতাও তিনি বেশী রাখেন। | ٥٠ أَوْ يُزَوِّجُهُرُ ذُكْرَانًا وَّإِنَاثًا 5 وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيْهًا ١٠ إِنَّهُ عَلِيْرٌ قَنِيْرٌ |
| ৫১. (আসলে) কোনো মানুষের জন্যেই এটা সম্ভব নয় যে, আল্লাহ তায়ালা (সরাসরি) তার সাথে কথা বলবেন, অবশ্য ওহী (দ্বারা) অথবা পর্দার অন্তরাল থেকে কিংবা ওহী নিয়ে তিনি কোনো দৃত (তার কাছে) পাঠাবেন এবং সে (দৃত) তাঁরই অনুমতিক্রমে তিনি (যখন) যেভাবে চাইবেন (বান্দার কাছে) ওহী পৌছে দেবে; নিক্রাই তিনি উচ্চ মর্যাদাশীল, প্রজ্ঞাময় কুশলী। | ۵۱ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَرَاَّى حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوْحِيَ |
| ৫২. এমনিভাবেই (হে নবী,) আমি আমার আদেশে (খীনের এ) 'ক্লহ' তোমার কাছে ওহী করে পাঠিয়েছি; (নতুবা) তুমি তো (আদৌ) জানতেই না (আল্লাহ তায়ালার) কিতাব কি, না (তুমি জানতে) ঈমান কি কিন্তু আমি এ (ক্লহ)-কে একটি 'নুরে' পরিণত করে দিয়েছি, যার দ্বারা আমি আমার বান্দাদের যাকে চাই তাকে (খ্বীনের) পথ দেখাই (এবং আমার আদেশক্রমে) তুমিও (মানুষদের) সঠিক পথ দেখিয়ে যাচ্ছো, | ٥٢ وكَالِكَ أَوْمَيْنَا إِلَيْكَ رُومًا مِنْ أَمْرِنَا الْمَالَّ وَكَا الْإِيْمَانُ مَا كُنْتَ تَكْرِئُ مَا الْكِتْبُ وَلَا الْإِيْمَانُ وَلَا اللّهِ مَنْ اللّهَاءُ مِنْ وَلَا اللّهِ مَنْ اللّهَاءُ مِنْ عِبَادِنَا اللّهِ وَإِنَّكَ لَتَمْدِينَ إِلْى مِرَاطٍ السَّتَقِيْمِ لا |
| ৫৩. (সে পথ) আল্লাহ তায়ালারই পথ, আসমানসমূহে ও যমীনে যা কিছু আছে সব কিছু আল্লাহ তায়ালার জন্যে; শুনে রেখো, (পরিশেষে) সব কিছু আল্লাহ তায়ালার দিকেই ধাবিত হয়। | ٥٣ مِرَاطِ اللهِ النَّذِي لَهُ مَا فِي السَّاوْتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ اللَّهِ اللَّهِ تَصِيْرُ اللَّهِ تَصِيْرُ |
| সুরা আয যো খরুফ মক্কায় অবতীর্গ– আয়াত ৮৯, রুকু ৭ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | سُوْرَةُ الزَّخْرُبِ مَكِّيَّةً أيَاتٌ : ٨٩ رُكُوْعٌ : ٤ بِشرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمِ |
| ১. হা-মীম, | اغراج |
| ২. সুস্পষ্ট কেতাবের শপথ, | ٢ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ٢٠ |
| ৩. আমি একে আরবী (ভাষার) কোরআন বানিয়েছি, যাতে করে ভোমরা (এটা) অনুধাবন করতে পারো, | ٣ إِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءُنَّا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ جَ |
| ৪. এ (মহা) গ্রন্থ (কোরআন) আমার কাছে সমুন্নত ও আসল অবস্থায় মজুদ রুয়েছে; | وَإِنَّهُ فِي آُكِ الْكِتٰبِ لَنَيْنَا لَعَلِيٌّ مَكِيْرٌ ، |
| ৫. (হে নবী তুমি বলো,) আমি কি (সংশোধনের কর্মসূচী থেকে) সম্পর্কহীন হয়ে তোমাদের উপদেশ দেয়ার কাজ (শুধু এ কারণেই) ছেড়ে দেবো যে, তোমরা একটি সীমালংঘনকারী সম্প্রদায়! | ۵ أَفَنَضْرِبُ عَنْكُرُ النِّكْرَ مَفْحًا أَنْ كُنْتُرْ قَوْمًا شَّرْفِيْنَ |
| ৪৩ সূরা আয় যোখরুফ 💮 ৫০১ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|---|
| ৬. আগের লোকদের মাঝে আমি কতো নবীই না পাঠিয়েছি! | ٦ وَكَمْ ٱرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِيْنَ |
| ৭. (তাদের অবস্থা ছিলো,) যে নবীই তাদের কাছে আসতো ওরা তার সাথেই ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো। | ٥ وَمَا يَٱتِيْهِرْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ |
| | يَسْتَهْزِءُونَ |
| ৮. তাদের মধ্যে যারা শক্তি সামর্থে প্রবল ছিলো আমি তাদের সবাইকে ধ্বংস করে দিয়েছি, এ ধরনের অনেক উদাহরণ আগে তো অতিবাহিত হয়ে গেছে। | أَهُلَكُنَا آهَنَّ مِنْهُر بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْأَوَّلِيْنَ |
| ৯. তুমি যদি ওদের জিজ্ঞেস করো, আসমানসমূহ ও যমীন কে সৃষ্টি করেছেন, তবে তারা অবশ্যই বলবে, এগুলো তো সবই পরাক্রমশালী ও সর্বজ্ঞ আল্লাহ তায়ালাই পয়দা করেছেন। | |
| ১০. যিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে বিছানা (সদৃশ) করেছেন, তাতে পথঘাট বানিয়েছেন যাতে করে তোমরা (গন্তব্যস্থলে) পৌছুতে পারো, | الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُرْ فِيْهَا سُبُلاً لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ عَ |
| ১১. তিনি আসমান থেকে পরিমাণমতো পানি বর্ষণ করেছেন এবং (তা দিয়ে) মৃত ভূখন্তকে জীবন দান করেছেন, (একইজাবে) তোমরাও (একদিন) পুনরুপ্থিত হবে। | ا وَالَّذِي نَوْلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَنَرٍ عَ فَا ثَالِمَ نَخْرَمُونَ فَانْشَوْنَا بِهِ بَلْنَةً مَّيْتًا عَ كَنْ لِكَ تُخْرَمُونَ |
| ১২. তিনি সব কিছুই জোড়ায় জোড়ায় পয়দা করেছেন, তিনি তোমাদের জন্যে নৌকা ও চতুম্পদ জজু বানিয়েছেন, যেন তোমরা তার ওপর আরোহণ করো, | اللَّذِي عَلَقَ الْإَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُرْ إِنَّ الْقُلْكِ وَالْإِنْعَارِ مَا تَوْكَبُوْنَ لا |
| ১৩. যাতে করে তোমরা তাদের পিঠে স্থির হয়ে বসতে পারো, সেগুলোর ওপর সৃস্থির হয়ে বসার পর তোমরা তোমাদের মালিকের অনুগ্রহের কথা স্বরণ করো এবং বলো, পবিত্র ও মহান তিনি, যিনি আমাদের জন্যে একে বশীভূত করে দিয়েছেন, অন্যথায় আমরা তো তা বশীভূত করার কাজে সামর্থবান ছিলাম না, | التَسْتَوا عَلَى ظُهُوْرِة ثُرَّ تَنْكُرُوْا نِعْهَة رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْطَى النِّنِي سَخَّرَ لَنَا مِنَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ لا النِي سَخَّرَ لَنَا مِنَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ لا |
| ১৪. আর নিসন্দেহে আমরা আমাদের মালিকের দিকেই ফিরে যাবো। | ١٣ وَ إِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَهُنْقَلِبُوْنَ |
| ১৫. (এ সত্ত্বেও) এরা আল্লাহ তায়ালার বান্দাদের মধ্য থেকে কার জন্যে (নাকি) তার (সার্বভৌমত্বের) কিছু অংশ দান করে, মানুষ স্পষ্টতই বড়ো অকৃতজ্ঞ; | 10 وَجَعَلُوا لَدَّ مِنْ عِبَادِةٍ جُزْءًا م إِنَّ الْأَرْسَانَ لَكَفُورً مُبِينً عَمَ |
| ১৬. আল্লাহ তায়ালা কি তাঁর নিজস্ব সৃষ্টি থেকে কন্যা সন্তানই বাছাই করেছেন, আর তোমাদের জন্যে মনোনীত করেছেন পুত্র সন্তান! | اَ اللَّهَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنْتٍ وَأَصْفُكُر وَأَصْفُكُر وَأَصْفُكُر وَأَسْفُكُر وَاللَّهِ وَأَسْفُكُر وَاللَّهِ وَأَسْفُكُم وَأَسْفُكُم وَاللَّهِ وَأَسْفُكُم وَاللَّهِ وَأَسْفُكُم وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَأَسْفُكُم وَاللَّهِ وَاللَّهُ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهُ وَلَا لَهُ وَأَنْهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ واللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلِهُ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلَهُ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْعُلَّالِي وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِقُلْمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّلَّالُولُ |
| ১৭. (অথচ) যখন এদের কাউকে সে (কন্যা সন্তানের) সুসংবাদ দেয়া হয়, য়ার বর্ণনা ওরা দয়ায়য় আল্লাহ তায়ালার জন্যে দিয়ে রেখেছে- তখন তার (নিজের) চেহারাই কালো হয়ে য়য় এবং সে মন্য়াপঞ্জি হয় পড়ে। | ا وَإِذَا بُشِّرَ أَحَلُّهُمْ بِهَا ضَرَبَ لِلرَّحْسِ لِلرَّحْسِ مَثَلًا ظَلَّ وَجُهَّدٌ مُسُودًا وَهُو كَظِيْرً |
| ১৮. একি (আশ্চর্য, কন্যা সম্ভান)! যারা (সাজ্ঞ) অলংকারে লালিত পালিত হয়, যারা (নিজেদের সমর্থনে) যুক্তি তর্কের বেলায়ও অগ্রণী হতে পারে না– (তাদেরই তারা আল্লাহ তায়ালার জন্যে রাখলোঃ) | ١٨ أَوَ مَنْ يُّنَشَّوُا فِي الْحِلْيَةِ وَمُو فِي الْحِلْيَةِ وَمُو فِي الْحِلْيَةِ وَمُو فِي الْحِصَارِ غَيْرٌ مُبِيْنِ |
| ৪৩ সূরা আয় যোখকুফ ৫০২ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|--|
| ১৯. (তথু তাই নয়,) এরা (আল্লাহ তায়ালার) ফেরেশতাদেরও- যারা দয়াময় আল্লাহ তায়ালার বান্দা | ١٩ وَجَعَلُوا الْمَلَيْكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبْلُ |
| মাত্র, নারী (বলে) স্থির করে নিলো; ফেরেশতাদের সৃষ্টির | الرَّحْشٰي إِنَاثًا ﴿ أَشَوِنُ وْ ا خَلْقَهُرْ ﴿ سَتُكْتَبُ |
| সময় এরা কি সেখানে মজুদ ছিলো (যে, তারা জানে এরা | |
| নর না নারী), তাদের এ দাবীগুলো (ভালো করে) লিখে | شَهَادَتُهُرْ وَيُسْئِلُونَ |
| রাখা হবে এবং (কেয়ামতের দিন) তাদের (এ ব্যাপারে) | |
| জিজেস করা হবে। | |
| ২০. এরা (আরো) বলে, দয়াময় আল্লাহ তায়ালা ইচ্ছা না | ٢٠ وَقَالُوْ الو شَاءَ الرَّهُمٰ مَا عَبَلُ لَهُ مَا |
| করলে আমরা কখনো এ (ফেরেশতা)-দের এবাদাত করতাম না; এদের কাছে (আসলে) এ ব্যাপারে কোনো | , , , , , |
| জ্ঞানই নেই, এরা শুধু অনুমানের ওপরই (জ্ঞ করে) চলে; | لَهُرْ بِنُ لِكَ مِنْ عِلْمٍ ق إِنْ هُرْ إِلَّا يَخُرُمُونَ اللَّهِ مُعْرَاتًا |
| ২১. আমি কি এর আগে তাদের (অন্য) কোনো কিতাব | ٢١ أَمُ أَتَيْنَاهُمْ كِتْبًا مِّنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ |
| দিয়েছিলাম যা ওরা (আজ) আঁকড়ে ধরে আছে! | مستهسکون |
| | |
| ২২. (কোনো কেতাবের বদলে) তারা বরং বলে, আমরা | ٢٢ بَلْ قَالُوْ ۚ إِنَّا وَجَلْنَا ۚ أَبَّاءَنَا عَلَى أُمَّةٍ |
| আমাদের বাপ দাদাদের এ মতাদর্শের অনুসারী (হিসেবে) পেয়েছি এবং আমরা তাদেরই পদাংক অনুসারী মাত্র। | وَّإِنَّا عَلَى الْأُرِهِرُ مُّهْتَكُونَ |
| | و آنا علی الرِهِر مهتلون |
| ২৩. (হে নবী,) আমি তোমার আগে যখনি কোনো | ٢٣ وكَنْ لِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ |
| জনপদে এভাবে সতর্ককারী (নবী) পাঠিয়েছি, তখনি তাদের বিত্তশালীরা বলেছে, আমরা আমাদের | |
| বাপ-দাদাদের এ মতাদর্শের অনুসারী (হিসেবে) পেয়েছি | مِّنَ تَّلْوِيْرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَا لا إِنَّا وَجَلْنَا |
| এবং আমরা তাদেরই পদাংক অনুসারী। | أَبَاءَنَا عَلَّى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلَى أَثْرِهِم مُقْتَدُونَ |
| | |
| ২৪. (হে নবী,) তুমি বলো, যদি আমি তার চাইতে উৎকৃষ্ট পথনির্দেশ তোমাদের কাছে নিয়ে আসি, যার ওপর | ٢٣ قُلَ أَوَ لَوْ جِئْتُكُمْ بِآهُنَى مِمَّا وَجَلْتُكُمْ |
| ভংকৃষ্ট পথানদেশ তোমাদের কাছে নিয়ে আাস, যার ওপর তোমরা তোমাদের বাপ-দাদাদের পেয়েছো– (ডারণরঙ | عَلَيْهِ أَبَاءَ كُرْ ، قَالُوْ آ إِنَّا بِهَا ۖ ٱرْسِلْتُرْ بِهِ |
| ভোমরা তাদের অনুসরণ করবে?) তারা বললো, যে (দ্বীন) দিয়ে | عليه أباء كرم قالوا إنا بِها أرسِلتمر بِهُ |
| তোমরা তাদের অনুসরণ করবে?) তারা বললো, যে (খীন) দিয়ে তোমাকে পাঠানো হয়েছে আমরা তা প্রত্যাখ্যান করছি। | كفروك |
| ২৫. অতএব আমি তাদের কাছ থেকে (বিদ্রোহের) | ٢٥ فَانْتَقَهْنَا مِنْهُرْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ |
| প্রতিশোধ নিয়েছি, তুমি দেখে নাও মিধ্যাবাদীদের কি | الْهُكَنِّ بِيْنَ ع |
| (বীভৎস) পরিণাম হয়েছিলো! | |
| ২৬. যখন ইবরাহীম তার পিতা ও তার জাতিকে বললো, | ٢٦ وَإِذْ قَالَ إِبْرُهِيْمُ لِأَبِيْدِ وَقَوْمِهُ إِنَّنِي |
| আমি অবশ্যই তাদের থেকে সম্পূর্ণ মুক্ত যাদের তোমরা | |
| পূজা করো, | بَرَأُهُ مِمَّا تَعْبَكُونَ لا |
| ২৭. (হাঁ, আমি এবাদাত শুধু তাঁরই করি) যিনি আমাকে | ٢٠ إلَّا الَّذِي ْ فَطَرَدِيْ فَالَّهُ سَيَهْرِيْنِ |
| ী পয়দা করেছেন, নিসন্দেহে তিনি আমাকে সৎপথে পরিচালিত করবেন। | مربي - إلى الربي المربي |
| ২৮. সে এ কথা তার পরবর্তী বংশধরদের কাছে | ^ = |
| (তাওহীদের) একটি স্থায়ী ঘোষণা (হিসেবে) রেখে | ٢٨ وَمَعَلَهَا كَلِهَةً ۚ بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُر |
| গেলো, যাতে করে তারা (তার বংশের লোকেরা এদিকে) | - ^ ^ . يرجعون |
| প্রত্যাবর্তন করতে পারে। | |
| ২৯়. (এ সত্ত্বেও আমি তাদের ধ্বংস করিনি,) বরং আমি | ٢٩ بَلْ مَتَّفْتُ هُؤُلَّاءِ وَ إِبَاءَهُمْ مَتَّى جَاءَهُمُ |
| তাদের ও তাদের বাপ-দাদাদের (পার্থিব) সম্পদ দান | ٠٠ بن منتف سو لاج و ابدسر عنی جامر |
| ৪৩ সূরা আয় যোখরুফ ৫০৩ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|---|
| (করা) অব্যাহত রেখেছি, যতোক্ষণ না তাদের কাছে সত্য (দ্বীন) ও পরিষ্কার ঘোষণা নিয়ে (আরেকজন) নবী এসে হাযির হয়েছে। | الْحَقُّ وَرَسُولُ مُبِينَ |
| ৩০. কিন্তু যখন তাদের কাছে সত্য (দ্বীন) এসে গেলো তখন তারা বলতে লাগলো, এ তো হচ্ছে যাদু, আমরা তো (কিছুতেই) তা মেনে নিতে পারি না। | ٣٠ وَلَهَّا جَاءَهُمُ الْحَقَّ قَالُوْا هٰنَا سِحْرً وَّإِنَّا بِهِ كُفِرُوْنَ |
| ৩১. তারা (এও) বললো, এ কোরআন কেন দুটো জনপদের কোনো প্রভাবশালী ব্যক্তির ওপর নাযিল হলো নাঃ | ٣١ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْانُ عَلَى رَجُّلٍ مِّنَ الْقَرْانُ عَلَى رَجُّلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ |
| ৩২. (হে নবী,) তারা কি তোমার মালিকের রহমত বন্টন করছে, (অপচ) আমিই তাদের দুনিয়ার জীবনে তাদের মধ্যে তাদের জীবিকা বন্টন করেছি, আমি তাদের একজনের ওপর আরেকজনের (বৈষয়িক) মর্বাদা সম্মুত করেছি, যাতে করে তারা একজন অপরজনকে সেবক হিসেবে গ্রহণ করতে পারে; কিন্তু তোমার মালিকের রহমত অনেক উৎকৃষ্ট (তারা যেসব সম্পদ জমা করে তার | ٣٦ أَهُر يَقْسَوُنَ رَحْبَتَ رَبِّكَ مَ نَحْنُ تَكُنُ قَسَمُنَا بَيْنَهُر مَّعِيْهُمَّ مَهُرُ فِي الْحَيْوةِ النَّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُر فَوْقَ بَعْضَ دَرَجْتِ لِيَتَّخِلَ بَعْضُهُر بَعْضًا سُخْرِيًّا مَ وَرَحْبَتُ رَبِّكَ خَيْرً |
| চেয়ে বড়ো)। ৩৩. যদি (এ কথার) আশংকা না থাকতো যে, (দূনিয়ার) সব কয়টি মানুষ একই পথের অনুসারী হয়ে যাবে, তাহলে দয়াময় আল্পাহ তায়ালার অস্বীকারকারী কাফেরদের ঘরের জন্যে আমি রৌপ্য নির্মিত ছাদ ও সিঁড়ি বানিয়ে দিতাম, যার ওপর দিয়ে তারা উঠতো (নামতো), | مِّمَّا يَجْبَعُونَ النَّاسُ ٱلَّةً وَّاحِرَةً لَّهُ وَاحِرَةً لَّهُ وَاحِرَةً لَّهُ وَاحِرَةً لَّهُ وَاحِرَةً لَّهُ وَاحِرَةً لَّهُ وَاحِرَةً لَّهُ وَكُوْنَ النَّاسُ ٱللَّهُ وَاحِرَهُ لَّقُفًا لِجَعَلْنَا لِمِنْ يَكْفُرُ بِالرَّهْلِي لِبُيُوتِهِرْ سُقُفًا مِّنْ وَفَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ لا |
| ৩৪. তাদের ঘরের জন্যে (সাজিয়ে দিতাম) রৌপ্য নির্মিত দরজা ও পালংক, যার ওপর তারা হেলান দিয়ে বসতো, | ٣٣ وَلِبُيُوْتِهِمْ آبُوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِنُوْنَ ٧ |
| ৩৫. (প্রয়োজনে তা) স্বর্ণ নির্মিতও (করে দিতে পারতাম, আসলে), এর সব কয়টি জিনিসই তো হচ্ছে পার্থিব জীবনের ধন-সম্পদ; আর (হে নবী,) আখেরাত (ও তার সম্পদ) তোমার মালিকের কাছে (একান্তভাবে, তাদের জন্যে) যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে। | ٣٥ وَزُخْرُفًا ﴿ وَإِنْ كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْمَاعُ الْمَاعُ الْمَاعُ الْمَاعُ الْمَاعُ وَالْأَخِرَةُ عِنْنَ رَبِّكَ لِلْمَاعُ الْمُتَّقِيْنَ عَنْنَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ عَ |
| ৩৬. যে ব্যক্তি দয়াময় আল্লাহ তায়ালার স্বরণ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়, আমি তার জন্যে একটি শয়তান নিয়োজিত করে দেই, অতপর সে-ই (সর্বন্ধ) তার সাথী হয়ে থাকে। | ٣٦ وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّمْسِ نُقَيِّضُ لَهُ شَيْطْنًا فَهُوَ لَدَّ قَرِيْنً |
| ৩৭. তারাই অতপর তাদের (আল্লাহ তায়ালার) পথ থেকে দূরে সরিয়ে রাখে, অথচ তারা নিজেরা মনে করে তারা বুঝি সঠিক পথের ওপরই রয়েছে। | ٣٧ وَإِنَّهُمْ لَيَصُرُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُونَ اَنَّهُمْ شَهْنَكُونَ |
| ৩৮. (এ) ব্যক্তি যখন (কেয়ামতের দিন) আমার সামনে হাযির হবে, তখন (তার শয়তান সাধীকে দেখে) সে বলবে, হায় (কতো ডালো হতো) যদি (আজ) আমার ও তোমার মাঝে দুই উদয়াচলের ব্যবধান থাকতো, (তুমি) কতো নিকৃষ্ট সাধী (ছিলে আমার)! | ٣٨ مَتَّى إِذَا مِاءَنَا قَالَ يُلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَ الْقَرِيْنُ وَبَيْنَ الْقَرِيْنُ وَبَيْنَ الْقَرِيْنُ |
| ৩৯. (বলা হবে,) যখন তোমরা (শয়তানকে সাথীরূপে গ্রহণ করে নিজেদের ওপর) যুলুম করেছিলে, তখন (আজও) তোমরা (এই) আযাবে একজন আরেকজনের অংশীদার হয়ে থাকো। (হে নবী), তুমি বলো, আজ এগুলো তোমাদের কোনো রকম উপকারই দেবে না। | ٣٩ وَلَنْ يَّنْفَعَكُرُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُرْ ٱلَّكُرْ فِي الْهَالَ الْهَالَ الْهُوْلَ الْهَالَ اللّهُ اللّ |
| ৪৩ সূরা আয় যোখরুফ 💮 🕜 😵 | মন্যিল ৬ |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদ্ |
|---|---|
| ৪০. (হে নবী), তুমি কি বধিরকে (কিছু) শোনাতে পারবে, অথবা পারবে কি পথ দেখাতে সে অন্ধকে যে সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত? | ٢٠ أَفَانْتَ تُشْعُ الصَّرَّ أَوْ تَهْدِى الْعُبْى وَمَنْ كَانَ فِي ضَلْلٍ مَّبِيْنٍ |
| | |
| ৪১. অতপর আমি তোমাকে (দুনিয়া থেকে) উঠিয়ে নিয়ে গেলেও আমি এদের কাছ থেকে অবশ্যই (বিদ্রোহের) প্রতিশোধ নেবো, | ٣١ فَالَّمَا نَنْهَبَنَّ بِكَ فَانَّا مِنْهُرْ مُّنْتَقِّمُوْنَ لا |
| ৪২. অথবা তোমার (জ্বীবদ্দশায়) তোমাকে সে (শান্তির) বিষয় দেখিয়ে দেই যার ওয়াদা আমি তাদের দিয়েছি (তাতেও এই প্রতিশোধ কেউ ঠেকাতে পারবে না), আমি অবশ্যই তাদের ওপর প্রবল ক্ষমতায় ক্ষমতাবান। | ٣٢ أَوْ نُوِيَنَّكَ الَّذِي وَعَنْ نُمُرْ فَاِنَّا عَلَيْهِرْ تُّقْتَرِرُوْنَ |
| ৪৩. অতএব এ গ্রন্থ, যা তোমার ওপর ওহী করে পাঠানো হয়েছে– তা শক্তভাবে আঁকড়ে ধরো, তুমি অবশ্যই সঠিক পথের ওপর রয়েছো। | ٣٣ فَاسْتَهْسِكُ بِالَّذِيُّ ٱوْحِيَ إِلَيْكَ مَ إِلَيْكَ مَ إِلَيْكَ مَ إِلَيْكَ مَ إِلَيْكَ مَ إِلَيْكَ مَ |
| 88. নিসন্দেহে এ (কোরআন)-টা তোমার ও তোমার জাতির জন্যে উপদেশ, অচিরেই তোমাদের (এ উপদেশ সম্পর্কে) জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। | ٣٣ وَإِنَّهُ لَانِكُو ۗ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ عَ وَسَوْنَ تُسْتُلُوْنَ |
| ৪৫. (হে নবী,) তোমার আগে আমি যেসব রসূল পাঠিয়েছিলাম, তুমি তাদের জিজ্ঞেস করে দেখো, আমি কি (কখনো তাদের জন্যে) দয়য়য় আল্লাহ তায়ালা ছাড়া অন্য কোনো মাবুদ ঠিক করে দিয়েছিলাম য়ার (আসলেই) কোনো এবাদাত করা যেতো! | 67 وَشَئَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَا } أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَا أَلَمَ الْمَقَّ يُعْبَلُونَ عَ |
| ৪৬. আমি মৃসাকেও আমার নিদর্শনসমূহ দিয়ে ফেরাউন ও তার পারিষদদের কাছে পাঠিয়েছিলাম, অতপর সে (তাদের কাছে গিয়ে) বললো, আমি হচ্ছি সৃষ্টিকুলের মালিকের রসূল। | ٢٦ وَلَقَنْ اَرْسَلْنَا مُوْسَى بِالْيِتِنَآ اِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَاْئِهِ فَقَالَ إِنِّيْ رَسُوْلٌ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ |
| 8৭. যখন সে (সত্যি সত্যিই) আমার নিদর্শনসমূহ নিয়ে তাদের কাছে এলো, তখন সাথে সাথে তারা তাকে নিয়ে হাসি-ঠাট্টা করতে লাগলো। | ٣٠ فَلَهًا جَآءَمُرْ بِالْيَتِنَآ إِذَا مُرْ مِّنْهَا يَضْحَكُونَ |
| ৪৮. আমি তাদের যে নিদর্শনই দেখাতাম তা হতো আগেরটার চাইতে বড়ো, (সবই যখন ব্যর্থ হলো তখন) আমি তাদের আযাব দিয়ে পাকড়াও করলাম, যাতে করে তারা (আমার দিকে) ফিরে আসে। | مَن اللَّهِ مَن اللَّهِ إِلَّا هِي اَكْبَرُ مِن الْكَثِهِ اللَّهِ اللَّهِ الْكَبَرُ مِن الْحَتِهَا رَوَا خَنْ الْمُر بِالْعَلَ اللَّهِ الْعَلَّمَ لَكُر مِتُونَ |
| ৪৯. (আযাব দেখলেই তারা মৃসাকে বলতো,) হে যাদুকর, তোমার মালিক তোমার সাথে যে ওয়াদা করেছেন তার ভিত্তিতে তার কাছে আমাদের জন্যে দোয়া করো, (নিষ্কৃতি পেলে) আমরা সঠিক পথে চলবো। | ٣٩ وَقَالُواْ يَّاَيَّهُ السَّحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِهَا عَمِنَ عِنْدَكَ عَلَا السَّعِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِهَا عَمِنَ عِنْدَكَ عَ إِنَّنَا لَهُمْتَدُّوْنَ |
| ৫০. অতপর আমি যখন তাদের ওপর থেকে আযাব সরিয়ে নিলাম, তখনই তারা (মৃসাকে দেয়া) অংগীকার ভঙ্গ করে বসলো। | ٥٠ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُرُ الْعَلَابَ إِذَا هُرْ يَنْكُثُونَ |
| ৫১. (একদিন) ফেরাউন তার জাতিকে ডাকলো এবং বললো, হে আমার জাতি (তোমরা কি বলো), মিসরের রাজত্ব কি আমার জন্যে নয়? এ নদীগুলো কি আমার | ۵۱ وَنَادٰی فِرْعَوْنُ فِی قَوْمِهِ قَالَ یٰقَوْمِ اَلَیْسَ لِی مُلْكُ مِصْرَ وَمْلَةِ الْأَنْمُورُ تَجْرِی |
| (প্রাসাদের) নীচে দিয়ে প্রবাহিত হচ্ছে নাঃ তোমরা কি (কিছুই) দেখতে পাচ্ছো নাঃ | مِنْ تَعْتِيْ مَ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ا |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|---|--|
| ৫২. আমি কি সে ব্যক্তি থেকে শ্রেষ্ঠ নই যে (খুব) নীচু (জাতের লোক) এবং সে তো (নিজের) কথাগুলো পর্যন্ত স্পষ্ট করে বলতে পারে না। | |
| ৫৩. (তাছাড়া নবী হলে) তাকে সোনার কংকণ পরানো হলো না কেন, কিংবা তার সাথে দল বেঁধে (আসমানের) ফেরেশতারাই বা কেন এলো নাঃ | ٥٣ فَلُوْلَا ۗ ٱلْقِي عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَمَبٍ اَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَٰذِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَٰذِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ |
| ৫৪. (এসব বলে) সে তার জাতিকে বেকুব বানিয়ে দিলো, (এক পর্যায়ে) তারা তার কথা মেনেও নিলো; নিসন্দেহে ওরা ছিলো এক নাফরমান সম্প্রদায়ের লোক! | ۵۳ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَةٌ فَاَطَاعُوهٌ ﴿ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فُسِقِيْنَ |
| ৫৫. যখন তারা আমাকে দারুণভাবে ক্রোধান্বিত করলো তখন আমিও তাদের কাছ থেকে প্রতিশোধ নিলাম এবং তাদের সবাইকে (পানিতে) ডুবিয়ে দিলাম। | ۵۵ فَلَيَّا أَسَفُونَا اثْتَقَهْنَا مِنْهُرْ فَٱغْرَقْنُهُرْ ٱجْمَعِيْنَ لا |
| ৫৬. আমি পরবর্তী বংশধরদের জ্বন্যে তাদের ইতিহাসের (উল্লেখযোগ্য) ঘটনা ও (শিক্ষীয়) দৃষ্টান্ত করে রাখলাম। | ٥٦ فَجَعَلْنُهُر سَلَقًا وَّمَثَلًا لِّلْأَخِرِينَ ع |
| ৫৭. (হে নবী, তাদের কাছে) যখনই মারইয়াম পুত্রের উদাহরণ পেশ করা হয়, তখন সাথে সাথে তোমার সম্প্রদায়ের লোকেরা সে কারণে (খুশীতে) চীৎকার জ্বড়ে দেয়। | ٥٤ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًّا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِنُّوْنَ |
| ৫৮. তারা বলতে থাকে, আমাদের মাবুদরা ভালো না সে (মারইয়াম পুত্র ঈসা ভালো, আসলে); এরা কেবল বিতর্কের উদ্দেশেই এসব কথা উপস্থাপন করে; বরং এরা তো কলহপরায়ণ জাতিই বটে। | ٥٨ وَقَالُوْ آ ءَ الْهَتَنَا خَيْرٌ آ اللهُ وَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا مِن لَا ء بَلْ هُر قَوْ أً خَصِبُونَ |
| ৫৯. (মূলত) সে ছিলো আমারই একজ্বন বান্দা, যার ওপর আমি অনুগ্রহ করেছিলাম, তাকে বনী ইসরাঈলদের জন্যে আমি (আমার কুদরতের) একটা অনুকরণীয় আদর্শ বানিয়েছিলাম; | ٥٩ إِنْ مُو إِلَّا عَبْنً أَنْعَهْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِبَنِي ﴿ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِبَنِي ﴿ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِبَنِي ۗ وَالرَّائِيلَ ا |
| ৬০. আমি চাইলে তোমাদের বদলে আমি ফেরেশতাদের পাঠাতাম, (সে অবস্থায়) তারাই (দুনিয়ায় আমার) প্রতিনিধিত্ব করতো! | رَكُوْ نَشَاء لَجَعَلْنَا مِنْكُر مَّلْئِكَةً فِي الْإَرْضِ يَخْلُفُون َ |
| ৬১. সে (মারইয়াম পুত্র ঈসা) হবে (মৃলত) কেয়ামতের একটি নিদর্শন (হে নবী, তুমি বলো), তোমরা সে (কেয়ামতের) ব্যাপারে কখনো সন্দেহ পোষণ করো না, তোমরা আমার আনুগত্য করো; (কেননা) এটাই (তোমাদের জন্যে) সহজ সরল পথ। | 71 وَإِنَّهُ لَعِلْمُ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَهْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ الْمَانَ مِرَامًا مَّسْتَقِيْمُ |
| ৬২. শয়তান যেন কোনো অবস্থায়ই (এ পথ থেকে) তোমাদের বিচ্যুত করতে না পারে (সেদিকে খেয়াল রেখো), নিসন্দেহে সে হচ্ছে তোমাদের প্রকাশ্য দুশমন! | ٦٢ وَلَا يَصُلَّنْكُرُ الشَّيْطَى عَ إِنَّهُ لَكُرْ عَلُوَّ شَيْنَ |
| ৬৩. ঈসা যখন স্পষ্ট দলীল প্রমাণ নিয়ে এলো তখন সে (তার লোকদের) বললো, আমি তোমাদের কাছে প্রজ্ঞা নিয়ে এসেছি এবং তোমরা (যে আমার অবস্থান সম্পর্কে) নানা মতবিরোধ করছো তা আমি তোমাদের স্পষ্ট করে বলে দেবো, অতএব তোমরা (আল্লাহ তায়ালার আযাবকে) ভয় করো এবং আমার আনুগত্য করো। | ٣٣ وَلَمَّا جَاءَ عِيْسَى بِالْبَيِّنْسِ قَالَ قَنْ جِنْتُكُر بِالْحِكْمَةِ وَلِابَيِّنَ لَكُر بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُوْنَ نِيْدِ عَ فَاتَّقُوا الله وَاطِيْعُوْنِ |
| ৪৩ সূরা আয় যোখক্লফ ৫০৬ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|---|
| ৬৪. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন আমার মালিক, | |
| তোমাদেরও মালিক, অতএব তোমরা তাঁরই এবাদাত | ٦٢ إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُلُوهُ مَا هُنَا |
| করো; এটাই হচ্ছে সরল পথ। | صِرَاطَّ مُّسْتَقِيم |
| ৬৫. (এ সত্ত্বেও) তাদের বিভিন্ন দল (তাকে নিয়ে) নিজেদের মধ্যে (নানা) মতানৈক্য সৃষ্টি করলো, অতপর | ٦٥ فَاغْتَلَفَ الْأَهْزَابُ مِنْ اَبَيْنِهِرْ ۚ فَوَيْلٌ |
| দুর্ভোগ ও কঠিন দিনের আযাব তাদের জন্যেই যারা (অযথা) বাড়াবাড়ি করলো। | لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَنَابِ يَوْ إِ ٱلِيْرِ |
| ৬৬. তারা কি (এ ফয়সালার জন্যে) কেয়ামত (-এর ক্ষণটি) আসার অপেক্ষা করছে, তা (কিন্তু একদিন) | ٦٦ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ |
| আকস্মিকভাবেই তাদের ওপর এসে পড়বে এবং তারা টেরও পাবে না। | بَغْتَةً وهم ﴿ لَا يَشْعُرُونَ |
| ৬৭. সেদিন (দুনিয়ার) বন্ধুরা সবাই একে অপরের দুশমন হয়ে যাবে, অবশ্য যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করেছে | ٦٤ ٱلْأَحِلَّاءُ يَوْمَئِنِ اللَّهُ مُكُنُّهُ لِبَعْضٍ عَلُوً إِلَّا |
| তাদের কথা আলাদা। | الْهُتَّقِينَ ع |
| ৬৮. (সেদিন আমি পরহেযগার বান্দাদের বলবো,) হে আমার বান্দারা, আজ তোমাদের কোনো ডর-ভয় নেই, না তোমরা আজ দৃশ্চিন্তাগ্রস্ত হবে, | ١٨ يُعبَادِ لَا خَوْنَ عَلَيْكُرُ الْيَوْ) وَلَا آنْتُر تَحْزَنُوْنَ عَ |
| ৬৯. এরা হচ্ছে সেসব লোক, যারা (দুনিয়াতে) আমার আয়াতসমূহের ওপর ঈমান এনেছে, (মূলত) তারা ছিলো (আমার) অনুগত বান্দা। | ٦٩ ٱلَّّنِيْنَ أُمَّنُوا بِالْيِنِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ء |
| ৭০. (আমি আরো বলবো,) তোমরা এবং তোমাদের সংগী সংগিনীরা জান্নাতে প্রবেশ করো, সেখানে তোমাদের (সম্মানজনক) মেহমানদারী করা হবে! | أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُر وَازْوَاجُكُر تُحْبُرُونَ تُحْبَرُونَ |
| ৭১. সেখানে তাদের ওপর সোনার থালা ও পানপাত্রের প্রচুর আনাগোনা চলবে, যা কিছুই (তাদের) মন চাইবে এবং যা কিছুই তাদের (দৃষ্টিতে) ভালো লাগবে তা সবই (সেখানে মজুদ) থাকবে (উপরস্তু তাদের বলা হবে), তোমরা এখানে চিরদিন থাকবে, | الم يُطان عليه عليه بصحاب مِن ذَهَب وَ الْأَنْفُ وَتَلَاّ الله عَلَيْهِ الْأَنْفُ وَتَلَلَّ الْأَعْيُنَ وَتَلَلَّ الْأَعْيُنَ وَتَلَلَّا الْأَعْيُنَ وَوَلَيْهَا خَلِدُونَ عَ |
| ৭২. আর এটা হচ্ছে সেই (চিরস্থায়ী) জান্নাত, যার (আজ) তোমরা উত্তরাধিকারী হলে, এটা হচ্ছে তোমাদের সে (নেক) আমলের বিনিময় যা তোমরা (দুনিয়ার জীবনে) করে এসেছো। | 47 وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي الْوَرِثْتُمُوهَا بِهَا كُنْتُر تَعْمُلُونَ |
| ৭৩. (এখানে) তোমাদের জন্যে প্রচুর পরিমাণ ফল-পাকড়া (মজুদ) থাকবে, যা থেকে তোমরা (প্রাণভরে) খেতে পারবে, | ٤٣ لَكُر فِيْهَا فَاكِهَةً كَثِيرَةً مِّنْهَا تَأْكُلُونَ |
| ৭৪. (অপর দিকে) অপরাধীরা থাকবে নিশ্চিত জাহান্নামে, সেখানে তারা থাকবে চিরদিন, | ٤٣ إِنَّ الْهُجْرِمِيْنَ فِيْ عَنَ ابِ جَهَنَّرَ عَلَابِ جَهَنَّرَ عَلَابِ جَهَنَّرَ عَلَيْ |
| | |
| ৭৫. (মুহূর্তের জন্যেও শাস্তি) তাদের থেকে লঘু করা হবে না এবং (একাঃ) হতাশ হয়েই তারা সেখানে পড়ে থাকবে, | 44 لَا يُفَتَّرُ عَنْهُرْ وَهُرْ فِيهِ مُبْلِسُوْنَ م |
| ৭৬. (এ আযাব দিয়ে কিন্তু) আমি তাদের ওপর মোটেই যুলুম করিনি, বরং তারা (বিদ্রোহ করে) নিজেরাই নিজেদের ওপর যুলুম করেছে। | ٤٦ وَمَا ظَلَهْناهُر وَلَكِن كَانُوْا هُرُ الظّلِمِينَ |
| ৭৭. ওরা (জাহান্নামের প্রহরীকে) ডেকে বলবে, ওহে প্রহরী, (আজ) তোমার প্রতিপালক (যদি মৃত্যুর মাধ্যমে) | ٤٤ وَنَادَوْ اللَّهِ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ، |
| ৪৩ সূরা আয় যোখরুফ | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|---|---|
| আমাদের ব্যাপারটা শেষ করে দিতেন (তাহলেই ভালো হতো); সে (প্রহরী) বলবে, (না, তা কিছুতেই হবার নয়, এভাবেই) তোমাদের (এখনে) চিরকাল পড়ে থাকতে হবে। | قَالَ إِنَّكُمْ مُكِثُونَ |
| ৭৮. (নবী বলবে,) আমি অবশ্যই তোমাদের কাছে সত্য (দ্বীন) নিয়ে এসেছিলাম, কিন্তু তোমাদের অধিকাংশ লোকই (এ থেকে) অনীহা প্রকাশ করেছিলো। | ٨٤ لَقَلْ جِئْنُكُرْ بِالْحَقِّ وَلٰكِیَّ اَكْثَرَكُرْ لِلْحَقِّ كٰرِمُونَ |
| ৭৯. তারা কি (নবীকে কষ্ট দেয়ার) পরিকল্পনা গ্রহণ করেই ফেলেছে (তাহলে তারা শুনুক), আমিও (তাকে ক্ট থেকে বাঁচনোর) আমার পরিকল্পনা চূড়ান্ত করে রেখেছি, | 49 أَأَ ٱبْرَمُوا ۗ أَمْرًا فَاتًّا مُبْرِمُونَ ٤ |
| ৮০. তারা কি ধরে নিয়েছে, আমি তাদের গোপন কথা ও সলাপরামর্শসমূহ শুনতে পাই না; অবশ্যই (আমি তা শুনতে পাই), তাছাড়া আমার পাঠানো (ফেরেশতা)— যারা তাদের (ঘাড়ের) পাশে (বসে) আছে, তারাও (তো) সব লিখে রাখছে। | ٥٠ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْهَعُ سِرْهُرْ وَنَجُوٰهُرْ اللّٰي وَرُسُلْنَا لَنَيْهِرْ يَكْتُبُونَ |
| ৮১. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, যদি দয়াময় আল্লাহ তায়ালার কোনো সন্তান থাকতো, তাহলে আমিই তার প্রথম এবাদাতগোযারদের মধ্যে অগ্রণী হতাম! | ٨١ قُلْ إِنْ كَانَ لِلرِّهْمٰي وَلَنَّ اَ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبِرِيْنَ الْعٰبِرِيْنَ |
| ৮২. আল্লাহ তায়ালা অনেক পবিত্র, তিনি আসমানসমূহ ও যমীনের মালিক, মহান আরশের তিনি অধিপতি, এরা যা কিছু তাঁর সম্পর্কে বলে তিনি তা থেকে পবিত্র। | ٨٢ سُبْعَٰنَ رَبِّ السَّاوٰكِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ |
| ৮৩. অতএব (হে নবী), তুমি এদের (সেদিন পর্যন্ত) অর্থহীন কথাবার্তা ও খেলাধুলায় (মন্ত) থাকতে দাও, যখন তারা সে (কঠিন) দিনটির সমুখীন হবে, যার ওয়াদা (বার বার) তাদের কাছে করা হয়েছে। | ٨٣ فَنَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلْقُوا يَوْمَهُرُ الَّذِي يُوْعَدُونَ |
| ৮৪. তিনি হচ্ছেন আসমানে মাবুদ, যমীনেও মাবুদ; তিনি বিজ্ঞ, কুশলী, সর্বজ্ঞ। | ٨٣ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَّهُ وَّفِي الْآرْضِ إِلَٰهُ وَهُوَ الْحَكِيْرُ الْعَلِيْرُ |
| ৮৫. (প্রভূত) বরকতময় তিনি, আসমানসমূহ, যমীন ও এ উভয়ের মধ্যবর্তী স্থানে (যেখানে) যা কিছু আছে, (এ সব কিছুর একক) সার্বভৌমত্ব তাঁর জন্যেই, কেয়ামতের সঠিক খবর তাঁর কাছেই রয়েছে, পরিশেষে তোমাদের সবাইকে তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে। | ٨٥ وَتَبْرَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰ عِنْ مَلْكُ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عِلْمُ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلْمُ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عِلْمُ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عِلْمُ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلْمُ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلَمْ السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلَى السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلَى السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلَى السَّاعَةِ عَوْلَاً مَا عَلَى السَّاعَةِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّاعَةِ عَلَى السَّاعَةِ عَلَى السَّاعَةِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّعَةِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَلْعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَّعَاقِ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلْعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلَعَةِ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى الْعَلَى السَلَعَ عَلَى السَلْعَ عَلَى السَلَعَ عَلَى السَلْ |
| ৮৬. তাঁকে বাদ দিয়ে এরা অন্য যেসব (মাবুদ)-কে ডাকে, তারা তো (আল্লাহ তায়ালার কাছে) সুপারিশের (কোনো) ক্ষমতাই রাখে না, তবে যারা সত্যের পক্ষে সাক্ষ্য দেবে এবং (সত্যকে) জানবে (তাদের কথা আলাদা)। | ٨٦ وَلَا يَهْلِكُ النَّانِيْنَ يَنْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِلَ بِالْحَقِّ وَمُرْ يَعْلَمُوْنَ |
| ৮৭. (হে নবী, তুমি) যদি তাদের জিজ্ঞেস করো, কে তাদের পয়দা করেছেন, তারা বলবে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা, (তাহলে বলো) তোমরা (তাঁকে বাদ দিয়ে) কোথায় কোথায় ঠোকর খাচ্ছো? | ٨٨ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُرْ مَّنْ خَلَقَهُرْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَا تَّى يُؤْفَكُونَ ٧ |
| ৮৮. (আল্লাহ তায়ালা) তাঁর (রস্লের) এ বক্তব্য (সম্পর্কেও জানেন), হে আমার মালিক, এরা হচ্ছে এমন লোক যারা কখনোই ঈমান আনবে নাঃ | ٨٨ وَقِيلِهِ يُرَبِّ إِنَّ مَّؤُلَاءِ قَوْأً لَا يُوْمِنُونَ رَ |

৪৩ সূরা আয যোখরুফ

अश्रोकत्र

ওয়াকফে লাবেম

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|--|
| ১৫. আমি (যদি) কিছু সময়ের জ্বন্যে আযাব সরিয়েও দেই (তাতে কি লাভঃ) তোমরা তো নিসন্দেহে আবার তাই করবে। | ا إِنَّا كَاهِفُوا الْعَنَابِ قَلِيْلًا إِنَّاكُرُ عَالِيْلًا إِنَّاكُرُ عَالِيْلًا إِنَّاكُرُ عَالِيْلًا إِنَّاكُرُ |
| ১৬. একদিন আমি কঠোরভাবে এদের পাকড়াও করবো (এবং এদের কাছ থেকে) আমি (পুরোপুরি) প্রতিশোধ নেবো। | ١٦ يَوْا َ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرِ ٰ ع إِنَّا مُنْتَقِبُونَ مُنْتَقِبُونَ |
| ১৭. এদের আগে আমি ফেরাউনের জাতির (লোকদেরও) পরীক্ষা করেছি, তাদের কাছেও আমার একজন সম্মানিত রসূল (মূসা) এসেছিলো, | ا وَلَقَنْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيْمٌ لا |
| ১৮. (মৃসা ফেরাউনকে বললো,) আল্লাহ তায়ালার এই বান্দাদের তোমরা আমার কাছে দিয়ে দাও; (কেননা) আমি তোমাদের কাছে একজন বিশ্বস্ত নবী (হয়ে এসেছি), | ١٨ أَن أَدُّوا إِلَى عِبَادَ اللهِ ، إِنِّى لَكُيرُ رَسُولُ أَمِيْنُ ٧ |
| ১৯. (সে বললো,) তোমরা আল্পাহ তায়ালার সাথে বিদ্রোহ করো না, আমি তো (নবুওতের) এক সুস্পষ্ট প্রমাণ তোমাদের কাছে এসেছি; | ا وَ اَنْ لا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۚ إِنِّيٓ الْيَكُرُ بِسُلْطُنِ مُّبِيْنِ ۚ |
| ২০. তোমরা যাতে আমাকে পাথর মেরে হত্যা করতে না পারো, সে জন্যে আমি আমার মালিক ও তোমাদের মালিকের কাছে (আগেই) পানাহ চেয়ে নিয়েছি, | ٢٠ وَاِنِّى عُنْتُ بِرَبِّى وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ر |
| ২১. যদি তোমরা আমার ওপর ঈমান না আনো তাহলে তোমরা আমার কাছ থেকে দূরে থাকো। | ٢١ وَإِنْ لِّرْ تُؤْمِنُوا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ |
| ২২. অতপর সে (এদের নাফরমানী দেখে) তার মালিকের কাছে দোয়া করলো (হে আমার মালিক), এরা হচ্ছে একটি না-ফরমান জাতি (ডুমি আমাকে এদের কাছ থেকে মৃক্তি দাও)। | ٢٢ فَلَكَمَا رَبِّدُ أَن هُوُّ كَاءِ قُومًا مُجْرِمُونَ |
| ২৩. (আমি বললাম,) তুমি আমার বান্দাদের সাথে করে রাতে রাতেই (এ জ্বনপদ থেকে) বেরিয়ে পড়ো, (সাবধান থেকো, ক্যোউনের পক্ষ থেকে কিছু) তোমাদের পশ্চাহ্দাবন করা হবে, | ٢٣ فَأَشْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُونَ ٧ |
| ২৪. সমুদ্রকে শান্ত রেখে তুমি (পার হয়ে) যেও; নিসন্দেহে তারা (সমৃদ্রে) নিমজ্জিত হবে। | ٢٣ وَاثْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ﴿ إِنَّهُمْ جُنْكٌ مَّغْرَقُونَ |
| ২৫. (যাবার সময়) ওরা নিজেদের পেছনে কতো উদ্যান, কতো ঝর্ণা ফেলে গেছে, | ٢٥ كَبِرْ تَرِكُوْ ا مِنْ جَنّْتِ وَعَيُونٍ لا |
| ২৬. (ফেলে গেছে) কতো ক্ষেতের ফসল, কতো সুরম্য প্রাসাদ, | ٢٦ وَّ زُرُوْعٍ وْمَقَامٍ كَرِيْمٍ لا |
| ২৭. কতো (বিলাস) সামগ্রী, যাতে ওরা নিমগ্ন থাকতো, | ٣٤ وَّلَغَهَةٍ كَانُوْ ا فِيْهَا فُكِهِيْنَ ٧ |
| ২৮. এভাবেই আমি আরেক জাতিকে এসব কিছুর উত্তরাধিকারী বানিয়ে দিলাম। | ٢٨ كَنْ لِكَ س وَ أَوْرَثُنْهَا قَوْمًا أُخَرِيْنَ |
| ২৯. (এ ঘটনার ফলে) ওদের ওপর না আসমান কোনো রকম অশ্রুপাত করলো– না যমীন (ওদের এ পরিণামে | ٢٩ فَهَا بَكَتْ عَلَيْهِنِرُ السَّهَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا |
| একটু) কাঁদলো, (আযাব আসার পর) তাদের আর কোনো অবকাশই দেয়া হলো না। | كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ع |



মন্যিল ৬

৪৪ সূরা আদ দোখান

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|--|
| ৩০. আমি অবশ্যই বনী ইসরাঈলদের অপমানজনক শাস্তি থেকে উদ্ধার করেছি– | ٣٠ وَلَقَلْ نَجَّيْنَا بَنِي ﴿ إِشْرَاءِيلُ مِنَ |
| | الْعَنَ ابِ الْهُهِيْنِ لا |
| ৩১. ফেরাউন (ও তার গোলামীর শৃংখল) থেকে (তাদের আমি নাজাত দিয়েছি), অবশ্যই সে ছিলো | ٣١ مِنْ فِرْعَوْنَ ﴿ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًّا مِّنَ |
| সীমালংঘনকারী (না-ফরমান)-দের মধ্যে শীর্ষস্থানীয় ব্যক্তি। | الْهُسْرِفِيْنَ |
| ৩২. আমি তাদের (জাতি বনী ইসরাঈলদের) দুনিয়ার ওপর জ্ঞানে শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি, | ٣٢ وَلَقَالِ الْمُتَرَانَّهُمْ عَلَى عِلْمٍ عَلَى |
| | الْعُلَمِيْنَ ع |
| ৩৩. আমি তাদের (এমন কতিপয়) নিদর্শন দিয়েছি, যাতে (তাদের জন্যে) সুস্পষ্ট পরীক্ষা (নিহিত) ছিলো। | ٣٣ وَأَتَيْنَهُمْ مِنَ الْأَيْسِ مَا فِيهِ بِلَوَّا مَّبِينَ |
| ৩৪. এ (মূর্খ) লোকেরা (মুসলমানদের) বলতো- | ٣٣ إِنَّ مُؤَكِّاءِ لَيَقُولُوْنَ ٧ |
| ৩৫. এটা হচ্ছে আমাদের প্রথম মৃত্যু, আমরা (আর) কখনো পুনরুখিত হবো না। | ٣٥ إِنْ هِيَ إِلًّا مَوْتَتُنَا الْأُوْلَى وَمَا نَحْنُ |
| प्यत्मा यूनप्रनाय ७ २८या मा । | ؠؚۘۘڽؙٛٛٛۺؘڔۣؽؘ |
| ৩৬. তোমরা যদি (কেয়ামত ও পুনরুত্থান সম্পর্কে) সত্যবাদী হও তাহলে আমাদের বাপ-দাদাদের (কবর থেকে) নিয়ে এসো! | ٣٦ فَٱتُوا بِالْبَائِنَا إِنْ كُنْتُر صٰرِقِيْنَ |
| ৩৭. (শক্তি সামর্থের দিক থেকে) কি তারা বড়ো, না 'তুব্বা' জাতি ও তাদের আগে যারা ছিলো তারা (বড়ো); আমি তাদের (মতো শক্তিশালীদেরও) ধ্বংস করে দিয়েছি, | ٣٠ أَهُرْ هَيْرٌ أَا قَوْاً تُبِعٍ لا وَّالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِرْ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِرْ الْفَرْمِيْنَ |
| অবশ্যই তারা ছিলো (জঘন্য) না-ফর্রমান জাতি। | ŕ |
| ৩৮. আমি আসমানসমূহ, যমীন এবং এদের উভয়ের মাঝখানে যা কিছু আছে তার কোনোটাই খেল তামাশার | ٣٨ وَمَا هَلَقْنَا السَّهٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَعِبِيْنَ |
| ছলে পয়দা করিনি। | |
| ৩৯. এগুলো আমি যথাযথ উদ্দেশ্য ছাড়াও সৃষ্টি করিনি, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ (সৃষ্টির এ উদ্দেশ্য সম্পর্কে) কিছুই জানে না। | ٣٩ مَا خَلَقْنُهُمَا ۚ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ ٱكْثَرَفُرْ لَا يَعْلَمُوْنَ |
| ৪০. অতপর এদের (সবার জন্যেই পুনরুত্থান ও) বিচার ফয়সালার দিনক্ষণ নির্ধারিত রয়েছে। | ٣٠ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُر ٱجْمَعِيْنَ ٧ |
| 8১. সেদিন এক বন্ধু আরেক বন্ধুর কোনোই কাজে আসবে না, না তাদের (সেদিন কোনো রকম) সাহায্য | ٢١ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا |
| করা হবে! | مُر يُنْصَرُونَ ٧ |
| ৪২. অবশ্য যার ওপর আল্লাহ তায়ালা দয়া করবেন (তার কথা স্বতন্ত্র); নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা মহাপরাক্রমশালী | ٣٢ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللَّهُ ، إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيْزُ |
| ও দয়ালু। | الرجيمرع |
| ৪৩. অবশ্যই (জাহান্নামে) যাকুম (নামের একটি) গাছ থাকবে, | ٣٣ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْ ِ |
| ৪৪ সূরা আদ দোখান | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|---|---|
| ৪৪. (তা হবে) গুনাহগারদের (জন্যে সেখানকার) খাদ্য, | ٣٣ طَعَامً الْآثِيْرِ عمل |
| ৪৫. গলিত তামার মতো তা পেটের ভেতর ফুটতে থাকবে, | ٣٥ كَالْهُهْلِ ۽ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ لا |
| ৪৬. ফুটন্ত গরম পানির মতো! | ٣٦ كَفَلَى الْحَبِيْرِ |
| ৪৭. (ফেরেশতাদের প্রতি আদেশ হবে,) ধরো একে– অতপর হেঁচড়ে জাহানামের মধ্যস্থলের দিকে নিয়ে যাও, | ٣٠ هُلُوهٌ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيْرِق صل |
| ৪৮. তারপর তার মাথার ওপর ফুটন্ত পানির আযাব <i>ঢেলে</i> দাও; | ٣٨ ثُرَّ صُبُّوا فَوْقَ رَاْسِهِ مِنْ عَلَاابِ الْحَمِيْمِرِ لا |
| ৪৯. (তাকে বলা হবে, আযাবের) স্বাদ আস্বাদন করো, তুমি (না ছিল দুনিয়ার বুকে) একজন শক্তিশালী ও অভিজ্ঞাত মানুষ! | ٣٩ ذُقُ ۚ إِنَّكَ آئَتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْرُ |
| ৫০. (আর) এ শাস্তি সম্পর্কে তোমরা (অভিজ্ঞাত লোকগুলোই) ছিলে (বেশী) সন্দিহান! | ٥٠ إِنَّ مَٰنَ اللَّهُ كُنْتُر بِهِ تَهْتُرُونَ |
| ৫১. (অপরদিকে) পরহেযগার লোকেরা নিরাপদ (ও অনাবিল) শান্তির জায়গায় থাকবে, | ۵۱ إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِي مَقَامٍ أَمِيْنِ y |
| ৫২. (মনোরম) উদ্যানে ও (অমিয়) ঝর্ণাধারায়, | ۵۲ فِي جَنْسٍ وعيونٍ علا |
| ৫৩. মিহি ও পুরু রেশমী বন্ত্র পরিধান করে এরা (একে অপরের) সামনাসামনি হয়ে বসবে, | ۵۳ يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسُ وَّاسْتَبْرَقِ مُّتَقْبِلِيْنَ عَلا |
| ৫৪. এমনই হবে (তাদের পুরস্কার, উপরস্কু) তাদের আমি দেবো আয়তলোচনা (পরমা সুন্দরী) হুর; | ۵۳ كَنْ لِكَ ت وَزَوْجْنُهُرْ بِحُوْرٍ عِيْنِ ا |
| ৫৫. তারা সেখানে প্রশান্ত মনে সব ধরনের ফল ফলাদির অর্ডার দিতে থাকবে, | ۵۵ يَنْعُونَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ أُمِنِيْنَ ٧ |
| ৫৬. প্রথম মৃত্যু ছাড়া (যা দুনিয়াতেই এসে গেছে), সেখানে (তাদের আর) মৃত্যুর স্বাদ ভোগ করতে হবে না, (তাদের | |
| মালিক) তাদের জাহান্নামের আযাব থেকে বাঁচিয়ে দেবেন, ৫৭. (হে নবী, এ হচ্ছে মোমেনদের প্রভি) তোমার মালিকের পক্ষ | الْأُولَى ع وَوَقَهُمْ عَنَابَ الْجَحِيْرِ لا الْكُولُ عَنْ الْجَالِمِيْرِ لا الْمُعْلِيْرُ الْعَظِيْرُ |
| থেকে দয়া ও অনুগ্রহ: (সত্যিকার অর্থে) এটাই হচ্ছে (সেদিনের) মহাসাফল্য। ৫৮. অতএব (হে নবী), আমি এ (কোরআন)-কে তোমারই (মাতৃ)-ভাষায় সহজ্ঞ করে দিয়েছি, যাতে করে তারা (এর থেকে) উপদেশ গ্রহণ করতে পারে। | ٥٨ فَإِنَّهَا يَسَّوْنُهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَنَكَّرُونَ |
| ৫৯. সুতরাং তুমি (এদের পরিণাম দেখার জন্যে) অপেক্ষা করতে থাকো, আর ওরা তো প্রতীক্ষা করেই যাচ্ছে! | ٥٩ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ع |
| স্ রা আন্স জ্ঞান্ডিয়া মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৩৭, রুকু ৪ | سُورَةُ الجَاثِيَةِ مَكِّيةً إِيَاسٍ: ٣٤ رُكُوعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِسْرِ اللهِ الرَّحْسٰ الرَّحِيْرِ |
| ১. হা-মীম, | ا مرع المرع |
| ৪৫ সূরা আল জাছিয়া | মন্যিল ৬ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদ্ |
|---|---|
| পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময় আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই কিতাবের অবতরণ। | ٣ تَنْزِيْلُ الْكِتْبِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْرِ |
| ত. নিসন্দেহে আকাশমালা ও যমীনে ঈমানদারদের জ্বন্যে (আল্লাহ তায়ালাকে জানার অগণিত) নিদর্শন রয়েছে; | ٣ إِنَّ فِي السَّهٰوٰسِ وَالْأَرْضِ كَأَيْسٍ |

8. (নিদর্শন রয়েছে স্বয়ং) তোমাদের সৃষ্টির মাঝে এবং 💌 জীবজন্তুর (বংশ বিস্তারের) মাঝেও, যাদের তিনি যমীনের সর্বত্র ছড়িয়ে রেখেছেন, এর সর্বত্রই (তাঁর কুদরতের অসংখ্য) নিদর্শন (মজুদ) রয়েছে তাদের জন্যে, যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) বিশ্বাস করে।

٣ وَفِي هَلْقِكُر وَمَا يَبُنُّ مِنْ دَابَّةٍ أَيْتُ لِّقُوْمُ يُّوْمِنُونَ لا

৫. (একইভাবে নিদর্শন রয়েছে) রাত দিনের পরিবর্তনের মাঝে, যে রেযেক (বিভিন্নভাবে) আল্লাহ তায়ালা আসমান থেকে পাঠান. যা দিয়ে তিনি যমীনকে তার মৃত্যুর পর পুনরায় জীবিত করে তোলেন (তার মাঝেও! এ) বায়ুর পরিবর্তনেও (তাঁর কুদরতের বহু) নিদর্শন ছড়িয়ে রয়েছে তাদের জন্যে, যারা চিন্তা (গবেষণা) করে।

٥ وَاغْتِلاَفِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا ۖ اَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السُّمَاءِ مِنْ رِّزْقِ فَاكْمَيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْلَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيحِ ايتُ لِّقُوْمٍ يَّعْقِلُونَ

৬. এ হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ, যা আমি যথাযথভাবে তোমার কাছে পড়ে শোনাচ্ছি, অতপর (তুমি কি বলতে পারো) আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর এ নিদর্শনের পর আর কিসের ওপর তারা ঈমান আনবে?

٦ تِلْكَ أَيْتُ اللَّهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ عَ فَباَى حَليْك الله وَأَيْتِهِ يُؤْمِنُونَ

৭. দর্ভোগ প্রতিটি মিথ্যাবাদী পাপাচারীর জন্যে

٤ وَيْلُ لِكُلِّ ٱفَّاكِ ٱثِيْمِ لا

৮. আল্লাহ তায়ালার আয়াত যখন তার ওপর তেলাওয়াত করা হয় তখন সে (তা) শোনে, (কিন্তু) একটু পরেই সে مُسْتَكُبًا كَانَ لَّهُ يَسْهُهُم عَ فَبَشَّرُهُ بِعَنَ إِبِ عَرِيهِ صَدِيهِ عَدِيهِ عَدِيهُ اللهِ ع পায়নি, সুতরাং (যে এমন ধরণের আচরণ করে) তুমি তাকে এক কঠিন আযাবের সুসংবাদ দাও!

٨ يُسْبَعُ إِيْنِ اللهِ تُتْلَى عَلَيْهِ ثُرَّ يُصِرُّ

৯. যখন সে আমার আয়াতসমূহের কোনো বিষয় সম্পর্কে জানতে পারে, তখন সে একে পরিহাসের বিষয় হিসেবে গ্রহণ করে: এমন ধরনের লোকদের জন্যে অপমানজনক আযাব রয়েছে:

9 وَإِذَا عَلِمَ مِنْ أَيْتِنَا شَيْئًا " اتَّخَلَاهَا عُزُواً ﴿ أُولِئِكَ لَهُرْ عَنَابٌ مُّهِينَ ﴿

১০. তাদের সামনে রয়েছে জাহান্লাম এবং সেসব জিনিস যা তারা (দুনিয়া থেকে) কামাই করে এনেছে (আজ তা) তাদের কোনো কাজেই এলো না, না সেসব (মাবুদ তাদের কোনো কাজে এলো) – যাদের তারা আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে (নিজেদের) অভিভাবক বানিয়ে রেখেছিলো, তাদের সবার জন্যে রয়েছে (জাহান্লামের) কঠোর শান্তি:

١٠ مِنْ وَرَآلِهِمْ جَهَنَّرُ ج وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَّ لَا مَا اتَّخَلُوا مِنْ دُوْنِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ وَ لَهُرْ عَنَ ابْ عَظِيرً ا

সর্বেও) यात्रा তাদের মালিকের আয়াতসমূহকে অস্বীকার بِالْيِسِ رَبِّهِمُ अर्त्वुও) यात्रा তাদের মালিকের আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে তাদের জন্যে অতিশয় নিক্ট ও কঠোরতর আযাব রয়েছে।

لَهُرْ عَنَ اب مِن رَجْزِ ٱلِيْرِ ع

৪৫ সুরা আল জাছিয়া

পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদ্

১২. আল্লাহ তায়ালাই সেই মহান সন্তা, যিনি সমদকে তোমাদের অধীন করে রেখেছেন, যাতে করে তোমরা أَلْقُلْكَ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ अंतर वाप्तनकत्म त्नियानमभूत्र ठाए ठनए भारता, الْقُلْكَ এর দ্বারা তোমরা তাঁর অনুগ্রহ (রেযেক) সন্ধান করতে পারো এবং শোকর আদায় করতে পারো

١٢ اَللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُرُ الْبَحْرَ لِتَجْرِي وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُونَ عَ

১৩. (একইভাবে) তাঁর (অনুগ্রহ) থেকে তিনি আকাশমন্তলী ও পথিবীর সব কিছু তোমাদের অধীন করে الْأَرْضِ جَهِيْعًا مِنْدُ وَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَتِ किराहुन, खरभाई वह मार्स किलानीन मन्धुनाराह करना الْأَرْضِ جَهِيْعًا مِنْدُ وَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا يَتِي (অনেক) নিদর্শন রয়েছে।

١٣ وَسَخُّو لَكُمْ مَّا فِي السَّهُونِ وَمَا فِي لِّقَوْمِ يَّتَفَكَّرُوْنَ

১৪. (হে নবী.) ঈমানদারদের তুমি বলো, যারা আল্লাহ তায়ালার (অমোঘ বিচারের) দিনগুলো থেকে কিছু আশা يَرْجُونَ أَيًّا ﴾ الله لِيَجْزِي قَوْمًا بِهَا كَانُوا करत ना, जाता रयन जारनत क्या करत रमस, यांत्र करत أَوْمًا আল্লাহ তায়ালা এ (বিশেষ) দলকে তাদের কৃতকর্মের জন্যে (পরকালে) পুরোপুরি বিনিময় দিতে পারেন।

١٣ قُلُ لِلَّذِيْنَ أَمَّنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِيْنَ لَا

১৫. (তোমাদের মাঝে) যদি কেউ কোনো নেক কাজ করে, তা (কিন্তু) সে তার নিজের ভালোর জন্যেই (করে, আবার) যে কেউই কোনো মন্দ কাজ করে. (তার প্রতিফল) (কিন্তু) অতপর তার ওপরই (পড়বে. পরিশেষে) তোমাদের সবাইকে স্বীয় মালিকের কাছেই ফিরে যেতে হবে।

10 مَنْ عَمِلَ مَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ج وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا زِ ثُمِر اللَّي رَبِّكُمْ تُوجُعُونَ

১৬. আমি বনী ইসরাঈলদের কিতাব, রাষ্ট্র ক্ষমতা ও নবুওত দান করেছিলাম, আমি তাদের উৎকৃষ্ট রেযেক وَالْحُكْرَ وَالنَّبُوَّةَ وَرَزْقُنْهُرْ مِّنَ الطَّيِّبُ فِي الطَّيِّبُ وَالْحُكُرَ وَالنَّبُوَّةَ وَرَزْقُنْهُرْ مِّنَ الطَّيِّبُ فِي السَّالِةِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ তাদের সৃষ্টিকুলের ওপর শ্রেষ্ঠত্বও দান করেছিলাম.

١٦ وَلَقَلُ اٰتَيْنَا بَنِيَّ إِسْرَآلِيْلَ الْكِتْم وَفَضَّلْنُهُمْ عَلَى الْعُلَمِينَ ج

১৭. দ্বীন সংক্রান্ত বিষয়গুলো আমি তাদের কাছে বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি, অতপর যে মতবিরোধ তারা নিজেদের মধ্যে সৃষ্টি করেছে তা (কিন্তু তাদের অজ্ঞতার কারণে নয়: বরং তা) ছিলো তাদের পারস্পরিক জেদের কারণে: (হে নবী.) কেয়ামতের দিন তোমার মালিক তাদের মধ্যে সে সমস্ত (বিষয়ের) ফয়সালা করে দেবেন যে ব্যাপারে তারা (দুনিয়ায়) মতবিরোধ করেছে।

١٤ وَ الْتَيْنَاهُمُ بَيِّنْتِ مِّنَ الْأَمْرِ ع فَهَا اخْتَلَقُوْ اللَّا مِنْ بَعْلِ مَا جَاءَهُرُ الْعِلْرُ لا بَغَيًّا بَيْنَهُمْ ﴿ إِنَّ رَبُّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقيْهَة فيْهَا كَانُوْا فيْه يَخْتَلْفُوْنَ

(বিশেষ) পদ্ধতির ওপর এনে স্থাপন করেছি, অতএব তুমি مُرِيْعَةً مِّنَ الْأَمْرِ الْمَارِيَّةُ مَانُكُ عَلَى شَرِيْعَةً مِّنَ الْأَمْرِ الْمَارِيَّةُ الْمَارِيَّةُ الْمَارِيَّةُ الْمُعَالِّةُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِّقُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِيْنِ اللّهُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِيْنِ اللّهُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلْ তথু তারই অনুসরণ করো, (শরীয়তের ব্যাপারে) সেসব লোকদের ইচ্ছা আকাংখার অনুসরণ করো না যারা (আখেরাত সম্পর্কে) কিছুই জানে না।

فَاتَّبِعْهَا وَ لا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ

১৯. আল্লাহ তায়ালার মোকাবেলায় এরা তোমার কোনোই কাজে আসবে না: যালেমরা অবশ্যই একজন আরেকজনের বন্ধু, আর পরহেযগার লোকদের (আসল) বন্ধু হচ্ছেন আল্লাহ তায়ালা (স্বয়ং) i

١٩ إِنَّهُرْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ١٠ وَإِنَّ الظَّلِمِينَ بَعْضُهُرْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ } وَاللَّهُ وَلِيَّ الْهُتَّقِيْنَ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদ্ ২০. এ (কোরআন) হচ্ছে মানুষের জন্যে সুস্পষ্ট দলীল. ٢٠ هٰنَ ا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُنِّي وَّرَحْهَةٌ لِّقَوْ إِ (সর্বোপরি) বিশ্বাসীদের জন্যে তা হচ্ছে জ্ঞানের কথা, পথনির্দেশ ও অনুগ্রহ। يوقنون ২১. যারা অপকর্ম করে তারা কি মনে করে নিয়েছে. ٢١ أَمْ حَسِبَ الَّذِيثَىَ اجْتَرَحُوا السَّيَّاٰتِ أَنْ আমি তাদের সে লোকদের মতো করে দেবো যারা ঈমান تَجْعَلَهُمْ كَالَّن يْنَ أَمَنُوا وَعَمْلُوا الصَّلَحْتِ لا এনেছে এবং (সে অনুযায়ী) নেক আমল করেছে, তাদের জীবন ও তাদের মরণ কি (ঈমান গ্রহণকারীদের মতো) سَوَاءً مُحْيَاهُمْ وَمَهَاتُهُمْ . سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ع একই ধরনের হবে? কতো নিম্নমানের ধারণা পোষণ করছে এরা (আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে)! ২২. আল্লাহ তায়ালা আসমানসমূহ ও যমীনকে ٢٢ وَغَلَقَ اللَّهُ السَّهٰوٰ عِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ যথাযথভাবেই সৃষ্টি করেছেন, যাতে করে (এ দু'য়ের মাঝে বসবাসরত) প্রতিটি বাসিন্দাদের তার কর্মের ঠিক ঠিক وَلِتُجْزُى كُلُّ نَفْسِ بِهَا كَسَبَتُ وَهُرْ لَا বিনিময় দেয়া যেতে পারে, (কেয়ামতের দিন) তাদের কারো প্রতি বিন্দুমাত্র যুদ্দম করা হবে না। ২৩. (হে নবী,) তুমি কি সে ব্যক্তিটির প্রতি লক্ষ্য ٢٣ أَفَرَءَيْتَ مَن اتَّخَلَ إِلْهَدَّ هُوٰهٌ وَأَضَلَّهُ করেছো- যে ব্যক্তি নিজের খেয়াল খুশীকে নিজের মাবুদ اللَّهُ عَلَى عِلْرِ وَّخَتَرَ عَلَى سَهْعِهِ وَقَلْبِهِ বানিয়ে নিয়েছে এবং (পর্যাপ্ত পরিমাণ) জ্ঞান থাকা সত্ত্বেও আল্লাহ তায়ালা তাকে গোমরাহ করে দিয়েছেন, তার কান وَجَعَلَ عَلَى بَصَرِةٍ غِشُوةً ۚ ﴿ فَمَنَ يَهْلِيهُ مِنَ ও তার অন্তরে তিনি মোহর মেরে দিয়েছেন, তার চোখে তিনি পর্দা এঁটে দিয়েছেন: এমন ব্যক্তিকে আল্লাহ بَعْنِ اللهِ ﴿ أَفَلَا تَنَكُّونَ তায়ালার পর কে পথনির্দেশ দেবেং তারপরও কি তোমরা কোনো উপদেশ গ্রহণ করবে নাঃ ٢٣ وَقَالُوْا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا النُّنْيَا ২৪. এ (মূর্খ) লোকেরা এও বলে, আমাদের এ পার্থিব দুনিয়া ছাড়া আর কোনো জীবনই নেই, আমরা نَهُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا اللَّهُو ء وَمَا (এখানেই) মরি বাঁচি, কালের আবর্তন ছাড়া অন্য কিছু আমাদের ধ্বংশও করেনা। (মূলত) এদের এ ব্যাপারে لَهُرْ بِنَالِكَ مِنْ عِلْمِ } إِنْ هُرْ إِلَّا يَظُنُّونَ কোনোই জ্ঞান নেই, এরা তথু আন্দায অনুমানের ভিত্তিতেই কথা বলে। ٢٥ وَإِذَا تُتُلِّي عَلَيْهِرْ إِيٰتُنَا بَيِّنْتِ مَّا كَانَ ২৫. যখন এদের কাছে আমার (কিতাবের) সুস্পষ্ট আয়াতগুলো পড়া হয়– তখন এদের কাছে এ ছাড়া আর مُجَّّتَهُر إلَّا أَنْ قَالُوا اثْتُوا بِالْبَائِنَا إِنْ কোনো যুক্তিই থাকে না যে, তারা বলে, তোমরা যদি (কেয়ামতের দাবীতে) সত্যবাদী হও তাহলে আমাদের বাপ-দাদাদের (কবর থেকে) নিয়ে এসো। ২৬. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলো, আল্লাহ তায়ালাই ٢٦ قُل اللَّهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُرًّ তোমাদের জীবন দান করেন, তিনিই তোমাদের মৃত্যু দেন, তিনিই (আবার) কেয়ামতের দিন তোমাদের পুনরায় يَجْبُعُكُرُ الِّي يَوْمُ الْقَيْهَةَ لَا رَيْبَ وَ একত্রিত করবেন, এটা (সংঘটিত) হবার ব্যাপারে কোনোই সন্দেহ নেই, কিন্তু (তারপরও) অধিকাংশ মানুষ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَبُونَ ع (এ সম্পর্কে কিছুই) জানে না। ٢٤ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّبُونِ وَالْأَرْضِ ﴿ وَيَوْآَ ২৭. আকাশমভলী ও যমীনের যাবতীয় সার্বভৌমত্ আল্লাহ তায়ালার জন্যেই, যেদিন কেয়ামত সংঘটিত হবে تَقُوْاً السَّاعَةُ يَوْمَئِنِ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ সেদিন এই বাতিলপদ্বীরা ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত হবে। ২৮. (হে নবী, সেদিন) তুমি প্রত্যেক সম্প্রদায়কে দেখবে ٢٨ وَ تَرْى كُلَّ ٱمَّةِ جَاثِيَةً عَا كُلُّ ٱمَّةِ تُنْعَى (মহাবিচারকের সামনে) ভয়ে আতংকে নতজানু হয়ে ৪৫ সুরা আল জাছিয়া 470 মন্যিল ৬

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৫ ইলাইহি ইউরাদু |
|--|---|
| পড়ে থাকবে। প্রত্যেক জাতিকেই তাদের আমলনামার দিকে ডাক দেয়া হবে; (তাদের বলা হবে, দুনিয়ায়) তোমরা যা কিছু করতে আজ তোমাদের তার (যথাযথ) প্রতিফল দেয়া হবে। | الٰی کِتٰبِهَا ۱ اَلْیَوْاَ تُجْزَوْنَ مَا کُنْتُرْ تَعْبَلُوْنَ |
| ২৯. এ হচ্ছে আমার (সংরক্ষিত) নথিপত্র, যা তোমাদের (কর্মকান্ডের) ওপর ঠিক ঠিক বর্ণনাই পেশ করবে; তোমরা যখন যা করতে আমি তা (এখানে সেভাবেই) লিখে রেখেছি। | ٢٩ هٰنَ ا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُرْ بِالْحَقِّ ﴿ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُرْ تَعْبَلُوْنَ |
| ৩০. যারা ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ করেছে, (আজ) তাদের মালিক তাদের তাঁর অনুগ্রহে (জান্নাতে) দাখিল করাবেন; আর এটাই হবে সুস্পষ্ট সাফল্য। | ٣٠ فَاَمًّا الَّذِيْنَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ فَيُلْحُلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْهَتِهِ ﴿ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْهُبِيْنُ |
| ৩১. অপরদিকে যারা কৃষ্ণরী অবলম্বন করেছে (আমি তাদের বলবো), তোমাদের সামনে কি আমার আয়াতসমূহ (বার বার) পড়ে শোনানো হতো নাঃ অতপর (এ সত্ত্বেও) তোমরা ঔদ্ধত্য প্রকাশ করেছিলে, (মূলত) তোমরা ছিলে নাফরমান জাতি! | ٣١ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوْا سَ أَفَلَـرْ تَكُنْ أَيْتِيْ تُتْلَى عَلَيْكُـرْ فَاسْتَكْبَرْتُـرْ وَكُنْتُـرْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ |
| ৩২. যখন (তোমাদের) বলা হতো, আল্লাহ তায়ালার ওয়াদা সত্য এবং কেয়ামত (সংঘটিত) হওয়ার মধ্যে কোনো রকম সন্দেহ নেই, তখন তোমরা (অহংকার করে) বলতে, আমরা জানি না কেয়ামত (আবার) কি, আমরা (এ ব্যাপারে সামান্য) কিছু ধারণাই করতে পারি মাত্র, কিন্তু আমরা তো তাতে বিশ্বাসীও নই! | ٣٢ وَإِذَا قِيْلَ إِنَّ وَعُنَ اللَّهِ مَقَّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُرْ مَّا نَنْ رِيْ مَا السَّاعَةُ لا إِنْ تَظْنُ إِلَّا ظَنَّا وَّمَا نَحْنُ بِهُسْتَيْقِنِيْنَ |
| ৩৩. (সেদিন) তাদের মন্দ কাজগুলো তাদের কাছে স্পষ্ট প্রকাশ হয়ে পড়বে এবং সে বিষয়টিই তাদের পরিবেষ্টন করে নেবে– যে ব্যাপারে তারা হাসি ঠাট্টা করে বেড়াতো। | ٣٣ وَبَنَ اللَّهُرُ سَيًّا لَكُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِرْ مًّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ |
| ৩৪. (ওদের তখন) বলা হবে, আজ আমি তোমাদের (জেনে শুনেই) ভুলে যাবো, ঠিক যেভাবে তোমরা (দুনিয়ায় থাকতে) এ দিনের সাক্ষাতকে ভুলে গিয়েছিলে, (আজ) তোমাদের ঠিকানা হবে (জাহান্নামের) আগুন, (সে আগুন থেকে বাঁচার জন্যে এখানে) তোমরা কোনোই সাহায্যকারী পাবে না। | ٣٣ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسُكُمْ كُمَّ نَسِيْتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰلِكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ تُصِرِيْنَ |
| ৩৫. এটা এ কারণে যে, তোমরা আল্লাহ তায়ালার আয়াতসমূহ নিয়ে হাসি তামাশা করতে এবং (তোমাদের) পার্থিব জীবন দারুণভাবে তোমাদের প্রতারিত করে রেখেছিলো, (সুতরাং) আজ তাদের সেখান থেকে বের করা হবে না− না (আল্লাহ তায়ালার দরবারে) তাদের কোনো রকম অজুহাত পেশ করার সুযোগ দেয়া হবে। | ٣٥ ذٰلِكُرْ بِأَنَّكُمُ اتَّخَنْ تُمْ أَيْتِ اللَّهِ مُزُوًا وَّغَرَّنْكُمُ اللَّحَيْوةُ النَّنْيَاء فَالْيَوْمَ لَا وَخَرَّنُكُمُ الْحَيْوةُ النَّنْيَاء فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَبُونَ مِنْهَا وَلَا مُرْ يُسْتَغْتَبُوْنَ |
| ৩৬. অতএব, সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ তায়ালার জন্যে, যিনি আসমানসমূহের মালিক, তিনি যমীনের মালিক, তিনি মালিক গোটা সৃষ্টিকুলের! | ٣٦ فَلِلَّهِ الْحَهْلُ رَبِّ السَّهٰوٰتِ وَرَبِّ الْكَاوْتِ وَرَبِّ الْعَلَيْمَى |
| ৩৭. আকাশমন্ডলী এবং যমীনের সমস্ত গৌরব ও মাহাত্ম্য তাঁর জন্যেই (নিবেদিত), তিনি মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়। | ٣٤ وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّلُوٰتِ وَالْأَرْضِ سَ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُء |

৪৫ সূরা আল জাছিয়া

সুরা আল আহকাফ মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ৩৫, রুকু ৪ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةً الْإَحْقَانِ مَكِّيَّةً إِيَاتِيُّ : ٣٥ رُكُوْعٌ : ٣ بِسْرِ اللّهِ الرَّحْشٰنِ الرَّحِيْرِ

১. হা-মীম.

र गंधार वाजारात्र कार पाएकर (वा) क्वाव (वान مِنَ اللَّهِ الْعَزِيْرِ الْحَكِيْرِ الْحَلْمَ الْحَلْمَ الْحَلْمُ ا ২. আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই (এ) কেতাব (আল প্রবল প্রজ্ঞাময় ।

৩. আকাশমন্ডলী ও যমীন এবং তাদের উভয়ের মাঝে যা কিছু রয়েছে এগুলোকে আমি যথায়থ (লক্ষ্য) ছাড়া সৃষ্টি করিনি এবং (এগুলো) এক সুনির্দিষ্ট সময়ের জন্যে (পয়দা করেছি), (কিন্তু এ মহাসত্যের) অস্বীকারকারী ব্যক্তিরা-যে যে জিনিস দিয়ে তাদের সতর্ক করা হয়েছিলো তার থেকেই মুখ ফিরিয়ে নেয়।

٣ مَا خَلَقْنَا السَّاوٰتِ وَالْإَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَّا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمَّى ، وَالَّذِينَ كَفَرُوْا عَمًّا ٱنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ

8. (হে নবী.) তুমি (তাদের) বলো, তোমরা কখনো কি (ভেবে) দেখেছো, (আজ) যাদের তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে ডাকছো– আমাকে একটু দেখাও তো. তারা এ যমীনের কোনো অংশও কি নিজেরা বানিয়েছে, অথবা এ আকাশমন্তলী বানানোর কাজে তাদের কি কোনো ভূমিকা আছে? এর আগের কেতাবপত্র কিংবা সে সূত্র ধরে চলে قَبْلِ هٰذَا أَوْ أَثْرَةٍ مِّنْ عِلْمِ إِنْ كُنْتُمْ अात्रा छात्ना अविष्ठे अभाव यित عَلْمِ إِنْ كُنْتُم তোমাদের হাতে মজুদ থাকে, তাহলে তাও এনে আমার কাছে হাযির করো- যদি তোমরা সত্যবাদী হও!

مُ قُلُ أَرَءَيْتُم مَّا تَلْعُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ أَرُوْنِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُرُ شِرْكٌ فِي السَّموتِ ، إِيْتُونِيْ بِكِتبِ مِّنْ أ صُلقيْنَ

৫. তার চাইতে বেশী বিদ্রান্ত ব্যক্তি কে হতে পারে, যে আল্লাহ তায়ালাকে বাদ দিয়ে এমন কাউকে ডাকে. যে কেয়ামত পর্যন্ত (ডাকলেও) তার ডাকে সাড়া দিতে পারবে না, তারা তো তাদের (ভক্তদের) ডাক থেকে সম্পূর্ণ বেখবর।

٥ وَمَنْ أَضَلُّ مِنَّنْ يَّلْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهُ الَّى يَوْمَ الْقَيْهَةِ وَهُرْ عَنَّ دُعَانُهم عُفِلُونَ

৬. যখন গোটা মানব জাতিকে জড়ো করা হবে, তখন এরা তাদের দুশমনে পরিণত হয়ে যাবে এবং এরা তাদের এবাদাতও সম্পূর্ণ অস্বীকার করবে।

٢ وَإِذَا مُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ أَعْلَاًّا وكَانُوْ إِعِبَادَتِهِمْ كُفِرِيْنَ

ع وَ إِذَا تُتَلِّي عَلَيْهِمْ إِيْتُنَا بَيِّنْتِ قَالَ अपन এদের কাছে আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ পড়ে শোনানো হয় তখন কাফেররা সে সত্য সম্পর্কে বলে, যা النَّانِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَيًّا جَاءَمُرُ لا مَنَ السِّحْرُ وَاللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى العلام असे जात्मत जाप्तत आसत वास तारह- वाँग राह्य जूम्लंहे यापू! النَّانِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَيًّا جَاءَمُرُ لا مَنَ السِّحْرُ

مبِین ج`

৮. তারা কি একথা বলতে চায়, সে (রসূল) নিজেই তা বানিয়ে নিয়েছে; তুমি তাদের বলো, (হাঁ) সত্যিই যদি এমন কিছু আমি (আল্লাহর নামে) বানিয়ে পেশ করি, তাহলে আল্লাহর (ক্রোধ) থেকে আমার (বাঁচানোর) জন্যে তোমরা তো কোনো ক্ষমতাই রাখো না: আল্লাহ তায়ালা تُفِيْضُونَ فِيهِ ﴿ كَفَى بِهِ شَهِيْلًا ۖ بَيْنِي اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّاللَّا الللَّاللَّا اللَّالَّا الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّل নিজেরা বানিয়ে বানিয়ে বলছো এবং তোমাদের ও আমার

^ أَا يَقُوْلُونَ افْتَوْلَهُ وَقُلْ إِنِ افْتَوَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا م هُوَ أَعْلَمُ بِهَا

৪৬ সুরা আল আহকাফ

মাঝে (কে কথা বানাচ্ছে; এ কথার) সাক্ষ্য দেয়ার জন্যে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট; আল্লাহ তায়ালা একান্ত ক্ষমাশীল ও প্রম দ্য়াল।

وَبَيْنَكُرْ ﴿ وَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيْرُ

৯. তুমি বলো, রস্লদের মাঝে আমি তো নতুন নই, আমি এও জানি না, আমার সাথে কি (ধরনের আচরণ) করা হবে এবং তোমাদের সাথেই বা কী (ব্যবহার করা) হবে; আমি শুধু সেটুকুরই অনুসরণ করি যেটুকু আমার কাছে ওহী করে পাঠানো হয়, আর আমি তোমাদের জন্যে

সুস্পষ্ট সতর্ককারী বৈ কিছুই নই।

১০. তুমি (আরো) বলো, তোমরা কি কখনো এ কথা ভেবে দেখেছো, এ (মহাগ্রস্থ)-টা যদি আল্লাহর কাছ থেকে (নাথিল) হয়ে থাকে এবং তোমরা তা অস্বীকার করো (তাহলে এর পরিণাম কি হবে)— এবং এর ওপর বনী ইসরাঈলের একজন সাক্ষী যেখানে সাক্ষ্য প্রদান করে তার ওপর ঈমান এনেছে, (তারপরও) তোমরা অহংকার করলে, (জেনে রেখো) আল্লাহ তায়ালা কখনো সীমালংঘনকারীদের সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

ا قُلْ اَرَءَيْتُر إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللهِ وَكَفَرْتُر بِهِ وَشَهِلَ شَاهِلٌّ مِّنْ بَنِيْ إِسْرَاءِيْلَ عَلَى مِثْلِهِ فَامْنَ وَاسْتَكْبَرْتُر اللهِ اللهَ لا يَهْدِي الْقَوْمُ الطَّلِيِيْنَ ع

১১. যারা অস্বীকার করেছে তারা ঈমানদারদের সম্পর্কে বলে, যদি (ঈমান আনার মাঝে) সত্যিই কোনো কল্যাণ থাকতো তাহলে (কতিপয় সাধারণ মানুষ) আমাদের আগে তার দিকে এগিয়ে যেতো না, যেহেতু এরা নিজেরা কখনো পথের কোনো দিশা পায়নি, তাই অচিরেই তারা বলতে শুরু করবে, এ তো হচ্ছে একটি পুরনো (ও মিধ্যা) অপবাদ!

ا وَقَالَ الَّذِيثَ كَفَرُوا لِلَّذِيثَ أَمَنُوا لَوْ
 كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إلَيْهِ مَ وَإِذْ لَرْ يَهْتَكُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هٰنَا إِفْكَ قَرِيْرٌ

১২. এর আগে (মানুষদের) পথপ্রদর্শক ও (আল্লাহর) রহমত হিসেবে মৃসার কেতাব (তাদের কাছে মজুদ) ছিলো; আর এ কেতাব তো পূর্ববর্তী কেতাবের সত্যতা স্বীকার করে, (এটা এসেছে) আরবী ভাষায়, যেন তা সীমালংঘনকারীদের সাবধান করে দিতে এবং ন্যায়পরায়ণ ব্যক্তিদের জন্যে তা হতে পারে সুসংবাদ।

۱۲ وَمِن قَبْلِهِ كِتٰبُ مُوسَى إِمَامًا وَرَحْهَةً ، وَمَٰنَ اللَّهِ عَبْلِهِ كِتٰبُ مُوسَى إِمَامًا وَرَحْهَةً ، وَمَٰنَا كِتُبْ مِنْ اللَّهِ عَرَبِيًّا لِّيُنْفِرَ اللَّهِ عَرَبِيًّا لَّيُنْفِرَ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ وَبُشُرٰى لِلْهُ عَسِنِيْنَ عَلَمُوا لَيْ وَبُشُرٰى لِلْهُ عَسِنِيْنَ عَلَمُوا لَيْ وَبُشُرٰى لِلْهُ عَسِنِيْنَ عَلَمُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَ

১৩. যেসব মানুষ (একথা) বলে, আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন আমাদের একমাত্র মালিক, অতপর তারা (এর ওপর) অবিচল হয়ে দাঁড়িয়ে থাকে, তাদের জন্যে নিসন্দেহে কোনো ভয় শংকা নেই এবং তাদের (কখনো) উদ্বিগ্নও হতে হবে না,

الله عُون النَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا الله ثُر اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْن عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ عَ

১৪. তারাই হবে জান্নাতের অধিকারী, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে, এ হচ্ছে তাদের সেই কাজের পুরস্কার যা তারা (দুনিয়ায়) করে এসেছে। الْوَلْنِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خُلِدِيْنَ فِيْهَا عَجَزَاءً بِهَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ

১৫. আমি মানুষকে আদেশ দিয়েছি সে যেন নিজের পিতামাতার সাথে ভালো ব্যবহার করে; (কেননা) তার মা তাকে অত্যন্ত কষ্ট করে পেটে ধারণ করেছে এবং অতি কষ্টে তাকে প্রসব করেছে এবং (এভাবে) তার গর্ভধারণকালে ও (জন্মের পর) তাকে দুধ পান করানোর (দীর্ঘ) তিরিশটি মাস সময়; অতপর সে তার পূর্ণ শক্তি (অর্জনের বয়েস) পর্যন্ত পৌছুয় এবং (একদিন) সে চল্লিশ বছরে এসে উপনীত হয়, তখন সে বলে, হে আমার

10 وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِنَيْهِ اِحْسَنًا الْمَهَدِّهُ أَمَّدٌ كُرْمًا الْوَضَعَتْهُ كُرْمًا الْوَحَمْلُهُ وَحَمْلُهُ وَفَعْتُهُ كُرْمًا اللهِ وَحَمْلُهُ وَفِصْلُهُ تَلْثُونَ شَهْرًا اللهَ حَتَّى إِذَا بَلَغَ اَشُنَّهُ وَبَلَغَ اَشُنَّهُ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً لا قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِی آنُ

৪৬ সূরা আল আহকাফ

674

মালিক, এবার তুমি আমাকে সামর্থ দাও- তুমি আমার নালক, এবার ডুমি আমাকে সামথ দাও- ডুমি আমার ভপর (শুরু থেকে) যেসব অনুগ্রহ করে এসেছো এবং عَلَى وَعَلَى وَعَلَى وَعَلَى وَعَلَى وَعَلَى وَعَلَى وَعَلَى الْع আমার পিতা মাতার ওপর যে অনুগ্রহ তুমি করেছো, আমি যেন এর কৃতজ্ঞতা আদায় করতে পারি, (সর্বোপরি) আমি যেন (এমন সব) ভালো কাজ করতে পারি যার ফলে তুমি আমার ওপর সম্ভষ্ট হবে, আমার সম্ভান-সম্ভতিদের মাঝেও তুমি সংশোধন এনে দাও: অবশ্যই আমি তোমার দিকে ফিরে আসছি, আমি তো তোমার অনুগত বান্দাদেরই একজন।

وَالِنَى وَأَنْ أَعْهَلَ صَالِحًا تَرْضُهُ وَأَصْلِحُ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْهُسْلِمِينَ

১৬. (মূলত) এরাই হচ্ছে সেসব মানুষ, যারা (দুনিয়ায়) যেসব ভালো কাজ করে তা আমি (যথাযথভাবে) গ্রহণ করি, আর তাদের মন্দ কাজগুলো আমি উপেক্ষা করি, এরাই হবে (সেদিন) জান্নাতবাসীদের অন্তর্ভুক্ত, এদের কাছে প্রদত্ত (আল্লাহর) ওয়াদা, যা সত্য প্রমাণিত হবে।

١٦ أُولَٰئِكَ الَّٰنِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُرْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيًّا تِهِرْ فِي آصُعٰبِ الْجَنَّةِ ، وَعْنَ الصِّنْقِ الَّذِي كَانُوا يُوْعَدُونَ

১৭. (তবে সে ব্যক্তির কথা আলাদা,) যে ব্যক্তি (নিজ) পিতা মাতাকে বলে, তোমাদের ধিক, তোমরা (উভয়ে কি) আমাকে (এই বলে) প্রতিশ্রুতি দিছো যে, আমাকে (কবর থেকে) বের করে আনা হবে, অথচ আমার আগে বহু সম্প্রদায় গত হয়ে গেছে, (যাদের একজনকেও কবর থেকে বের করে আনা হয়নি, এ কথা খনে) পিতা মাতা উভয়েই আল্লাহর সাহায্য প্রার্থনা করে এবং (সন্তানকে) বলে, ওহে, তোমার দুর্ভোগ হোক! (এখনও সময় আছে) আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান আনো, আল্লাহর ওয়াদা অবশ্যই সত্য (প্রমাণিত হবে, তারপরও) সে হতভাগা বলে, (হাঁ, তোমাদের) এসব কথা তো অতীতকালের কিছু উপাখ্যাস ছাড়া আর কিছুই নয়!

١٤ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْدِ أُنِّ لَّكُمَّا أَتَعِنَٰ نِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَلْ خَلَتِ الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِيْ ج وَهُهَا يَسْتَغَيْثُنِ اللَّهَ وَيْلَكَ أَمِنْ أَنَّ إِنَّ وَعُنَ اللَّهِ مَقَّ ﴾ فَيَقُولُ مَا هٰنَا إلَّا أَسَاطِيرُ الْأُولِينَ

১৮. এরাই হচ্ছে সেসব লোক যাদের ওপর মানুষ ও জ্বিনদের পূর্বর্তী দলের মতো আল্লাহর শান্তির বিধান वित्र वित्र क्षेत्र क শামিল হয়ে যাবে, আর এরা হচ্ছে ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত।

1/ أُولَٰئِكَ الَّٰنِيْنَ مَقَّ عَلَيْهِرُ الْقَوْلُ فِيْ وَالْإِنْسِ ﴿ إِنَّهُمْ كَانُوْ الْمُسِرِيْنَ

১৯. (এ উভয় দলের) প্রত্যেকের জন্যেই তাদের নিজ নিজ কর্ম অনুযায়ী (মান ও) মর্যাদা রয়েছে, এভাবেই আল্লাহ তায়ালা তাদের কাজের যথার্থ বিনিময় দেবেন. আর তাদের ওপর (কোনো রক্ম) অবিচার করা হবে না।

١٩ وَلِكُلِّ دَرَجْتٌ مِّيًّا عَبِلُوْا ء وَلِيُوَيِّيَهُرْ أَعْهَا لَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَبُونَ

২০. যেদিন কাফেরদের (জাহান্নামের জ্বলন্ত) আগুনের সামনে এনে দাঁড় করানো হবে (তখন তাদের বলা হবে); তোমরা তো তোমাদের (ভাগের) যাবতীয় নেয়ামত (দুনিয়াতেই) বিনষ্ট করে এসেছো এবং তোমাদের পার্থিব জীবনে তা দিয়ে (প্রচুর পরিমাণ) ফায়দাও তোমরা হাসিল করে নিয়েছো, আজ তোমাদের দেয়া হবে এক চরম الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُرُ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْأَرْضِ प्रभानकत जायात, जात जा राज्य (जाबारत) यभीत الْهُونِ بِمَا كُنْتُرُ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ অন্যায়ভাবে ঔদ্ধত্য প্রকাশ এবং আল্লাহর সাথে তোমাদের বিদ্রোহমূলক কাজের শাস্তি।

٢٠ وَيَوْاَ يُعْرَضُ الَّذِيثِي كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ، أَذْهَبْتُر طَيِّبْتِكُر فِي حَيَاتِكُر اللَّّنْيَا وَاشْتَهْتَغْتُمْ بِهَا ج فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَلَاابَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِهَا كُنْتُرْ تَفْسُقُوْنَ ع

২১. হে নবী. (এদের) তুমি আ'দ সম্প্রদায়ের (এক) ভাই (হুদ নবী)-র কাহিনী শোনাও: যে 'আহকাফ' উপত্যকায় بِالْإَحْقَانِ وَقَلْ خَلَسِ النَّلُورُ مِنْ بَيْنِ छत्र بِالْإَحْقَافِ وَقَلْ خَلَسِ النَّلُورُ مِنْ بَيْنِ

٢١ وَ اذْكُو ۚ أَخَا عَادِ مَا إِذْ أَنْنَ رَ قَوْمَهُ ۗ

৪৬ সুরা আল আহকাফ

দেখাচ্ছিলো, তার আগে পরেও আরো বহু সতর্ককারী (নবী) এসেছিলো, (তাদের মতো) সেও বলেছিলো (হে মানুষ), তোমরা এক আল্লাহ তায়ালা ছাড়া আর কারো বন্দেগী করো না; আমি তোমাদের ওপর একটি ভয়াবহ দিনের আযাবের আশংকা করছি।

২২. (একথা তনে) তারা বললো, আমাদের মাবুদদের বন্দেগী থেকে আমাদের ভিনু পথে চালিত করার জন্যেই কি তুমি আমাদের কাছে এসেছো? যাও, যদি তুমি সত্যবাদী হয়ে থাকো তাহলে সেই আযাব নিয়ে এসো

যার প্রতিশ্রুতি তুমি আমাদের দিচ্ছো।

ঝড়, যার মাঝে রয়েছে ভয়াবহ আযাব।

يَنَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ ٱلَّا تَعْبُدُوۤٱ إِلَّا اللَّهَ ، إِنِّي ٓ اَخَافُ عَلَيْكُرْ عَنَ ابَ يَوْ إِ عَظِيْرٍ

٢٢ قَالُوْ ۗ أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَيْ الْمَتِنَا } فَأْتِنَا بِهَا تَعِنُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّرِقِينَ

٢٣ قَالَ إِنَّهَا الْعِلْمُ عِنْلَ اللَّهِ ﴿ وَٱبَلِّغُكُمْ مَّا

ٱرْسلْتُ بِهِ وَلٰكِنِّي ٓ أَرْبكُر ۚ قَوْمًا تَجْهَلُونَ

২৩. সে বললো. (সে) জ্ঞান তো একান্তভাবে আল্লাহ তায়ালারই রয়েছে, আমি তো ওধু সে কথাটুকুই তোমাদের কাছে পৌছে দিতে চাই- (ঠিক) যেটুকু দিয়ে আমাকে পাঠানো হয়েছে, কিন্তু আমি দেখতে পাচ্ছি, তোমরা দারুণ অজ্ঞানতার মাঝে নিমজ্জিত একটি (গোমরাহ) জাতি।

২৪. অতপর (একদিন) যখন তারা দেখতে পেলো, (বড়ো) একটি মেঘখন্ড তাদের জনপদের দিকে এগিয়ে আসছে, তখন তারা (সমস্বরে) বলে ওঠলো, এ তো এক খন্ড মেঘ মাত্র! (সম্ভবত) আমাদের ওপর তা বৃষ্টি বর্ষণ कत्रत् (इन वनला,) ना, अपि कारना वृष्टित र्भाष नय-এ হচ্ছে সে (আযাবের) বিষয়, যা ভৌমরা তুরানিত করতে চেয়েছিলে, (মূলত) এ হচ্ছে এক (প্রলয়ংকরী)

٢٣ فَلَمَّا رَأُوهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِـ ٧ قَالُوْا هٰنَا عَارِضٌّ شَّهْطِرُنَا مَ بَلَ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ ﴿ رِيْحٌ فِيْهَا عَنَ ابُّ ٱلِيُمُّ لا

২৫. আল্লাহর নির্দেশে এ (ঝড়) সব কিছুই ধ্বংস করে দেবে, তারপর তাদের অবস্থা (সত্যিই) এমন হলো যে, يُرَى إِلَّا مَسْكِنَّهُمْ ﴿ كَنْ لِكَ نَجْزِى الْقَوْ] जात्मत वज्ञववाड़ी (ও তात ध्वश्मनीना) ছाड़ा आत किছ्र দেখা গেলো না; আমি এভাবেই অপরাধী জাতিসমূহকে (তাদের কৃতকর্মের) প্রতিফল দিয়ে থাকি।

٢٥ تُنَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ ۚ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا المُجْرِمِيْنَ

২৬. (এ যমীনে প্রতিষ্ঠা লাভের জন্যে) তাদের যা যা আমি দিয়েছিলাম তা (অনেক কিছুই) তোমাদের দেইনি; (শোনার জন্যে) আমি তাদের কান, (দেখার জন্যে) চোখ ও (অনুধাবনের জন্য) হ্বদয় দিয়ে রেখেছিলাম, কিন্তু তাদের সে কান, চোখ ও হৃদয় তাদের কোনোই কাজে আসেনি, কারণ তারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে অস্বীকার করতেই থাকলো, যে (আযাবের) বিষয় নিয়ে তারা হাসি তামাশা করতো, একদিন সত্যি সত্যিই তা তাদের ওপর এসে পডলো।

٢٦ وَلَقَلُ مَكَّنَّهُمُ فِيْمَا ۚ إِنْ مَّكَّنَّكُمُ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَهْعًا وَّأَبْصَارًا وَّأَفْئِلَةً رَفَّهَا أَغْنَى عَنْهُرْ سَهْعُهُرْ وَلاَّ أَبْصَارُهُرْ وَلاَّ أَفْئِنَ تُهُرْ مِّنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوْ ا يَجْحَلُونَ لا بِأَيْسِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِرْ مَّا كَانُوْا بِهِ يستهزءون ع

২৭. তোমাদের চারপাশের আরো অনেকগুলো জনপদকে আমি (এ একই কারণে) ধ্বংস করে দিয়েছি, আমি (বার বার ওদের কাছে) আমার নিদর্শনসমূহ বর্ণনা করেছি, যেন তারা (আমার দিকে) ফিরে আসে।

٢٠ وَلَقَنْ أَهْلَكُنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُوٰى وَصَوَّفْنَا الْأَيْتِ لَعَلَّهُمْ يَوْجِعُونَ

২৮. তারা কেন (সেদিন) তাদের সাহায্য করতে পারলো না, যাদের তারা আল্লাহকে বাদ দিয়ে নৈকট্য হাসিলের قُون اللَّه قُرْبَانًا الهَةً ، بَلُ ضَلُّوا عَنْهُرَ ع رَهُ اللَّهِ عَرْبَانًا الهَةً ، بَلُ ضَلُّوا عَنْهُرَ و سَرَاعًا و سَرَاعًا الله عَرْبَانًا الهَةً ، بَلُ ضَلُّوا عَنْهُرَ ع তারাও তাদের ছেড়ে উধাও হয়ে গেলো, (মূলত) এ হচ্ছে

٢٨ فَلُوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ

৪৬ সুরা আল আহকাফ

620

তাদের (আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে) মিথ্যা ও যাবতীয় অলীক ধারণা যা তারা পোষণ করতো!

وَذٰلِكَ إِفْكُهُرْ وَمَا كَانُوْ ا يَفْتَرُوْنَ

২৯. (একবার) যখন একদল জ্বিনকে আমি তোমার কাছে পাঠিয়েছিলাম, তারা (তোমার) কোরআন (পাঠ) শোনছিলো, যখন তারা সে স্থানে উপনীত হলো, তখন তারা বলতে লাগলো, সবাই চুপ হয়ে যাও, অতপর যখন (কোরআন পাঠের) কাজ শেষ হয়ে গেলো তখন তারা নিজের সম্প্রদায়ের কাছে (আল্লাহর আযাব থেকে) সতর্ককারী হিসেবেই ফিরে গেলো।

٢٩ وَإِذْ مَرَفْنَا ۚ إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنَّ يَسْتَهِعُونَ الْقُرْانَ ء فَلَمًّا حَضُرُوهُ قَالُوْا أَنْصِتُواْ ء فَلَمًّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَى قَوْمِهِم

৩০. তারা বললো, হে আমাদের জাতি, আজ আমরা এমন এক গ্রন্থ (ও তার তেলাওয়াত) শুনে এসেছি, যা মূসার পরে নাযিল করা হয়েছে, (এ গ্রন্থ) আগের পাঠানো সব গ্রন্থের সত্যতা স্বীকার করে, এ (গ্রন্থ)-টি (সবাইকে) সত্য অবিচল ও সঠিক পথের দিকে পরিচালিত করে।

٣٠ قَالُوْ إِيْقُوْمَنَا ۚ إِنَّا سَهِفْنَا كِتٰبًا ٱنْزِلَ مِنْ ا بَعْنِ مُوسى مُصَلِّقًا لِيَّهَا بَيْنَ يَنَيْهِ يَهْنِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ

৩১. হে আমাদের জাতি, তোমরা সবাই মিলে আল্লাহর পথে আহবানকারীর ডাকে সাডা দাও এবং তাঁর (রসূলের) ওপর ঈমান আনো, (তাহলে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের গুনাহ খাতা ক্ষমা করে দেবেন এবং তোমাদের কঠিন আযাব থেকে মুক্তি দেবেন।

٣١ يٰقَوْمَنَا ۗ ٱجِيْبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَأُمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُمْرْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْرُ وَيُجِرْكُمْرْ مِّنْ عَنَابٍ

৩২. আর তোমাদের মাঝে যদি কেউ আল্লাহর পথের এ আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া না দেয় (তবে তার জ্বানা উচিত), এ যমীনে (আল্লাহকে) ব্যর্থ করে দেয়ার কোনো রকম ক্ষমতাই সে রাখে না. (বরং এ আচরণের জন্যে) সে আল্লাহর কাছে তার কোনোই সাহায্যকারী পাবে না: এ ধরনের লোকেরা তো সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত।

٣٢ وَمَنْ ۗ لَّا يُجِبُ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمَعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَدٌّ مِنْ دُوْلِهِ أَوْلِيَاءً ، أُولِئِكَ فِي مَلَلِ مَبِين

৩৩. এ লোকগুলো কি এটা বুঝতে পারে না, যে মহান আল্লাহ তায়ালা আসমানসমূহ ও যমীন বানিয়েছেন এবং এ সব কিছুর সৃষ্টি যাঁকে সামান্যতম ক্লান্তও করতে পারেনি, তিনি কি একবার মরে গেলে মানুষকে পুনরায় জীবন দান করতে সম্পূর্ণ সক্ষম ননঃ হাঁ, অবশ্যই তিনি সব কিছুর ওপর ক্ষমতাবান!

أَوَ لَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ بُوْتِ وَالْأَرْضَ وَلَرْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقْدِرِ عَلَى أَنْ يَّحْيِےَ الْمَوْتَٰى ﴿ بَلِّي إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ

৩৪. সেসব কাফেরদের যখন (জুলম্ভ) আগুনের সামনে দাঁড় করানো হবে (তখন তাদের বলা হবে); আমার এ প্রতিশ্রুতি কি সত্য (ছিলো?) তারা বলবে, হাঁ আমাদের মালিকের শপথ (এটা অবশ্যই সত্য); অতপর তাদের বলা হবে, এবার (তোমরা) শাস্তি উপভোগ করো, (এবং এ হচ্ছে সে আযাব) যা তোমরা অস্বীকার করতে!

٣٣ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ط ٱلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ، قَالُوْا بَلْي وَرَبِّنَا ، قَالَ فَنُ وْقُوا الْعَنَ ابَ بِهَا كُنْتُرْ تَكُفُرُونَ

৩৫. (হে নবী,) তুমি ধৈর্য ধারণ করো– (ঠিক) যেমন করে ধৈর্য ধারণ করেছিলো আমার (দৃঢ়প্রতিষ্ঠ) সাহসী নবীরা, এ (নির্বোধ) ব্যক্তিদের ব্যাপারে তুমি কখনো তাডাহুডো করো না: যেদিন সত্যিই তারা সেই আযাব (নিজেদের) সামনে দেখতে পাবে– যার ওয়াদা তাদের কাছে يُوعَكُونَ لا لَمْ يَكُبُنُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارِ ﴿ कर्ता रखिला, ज्यन जारमत जवश रख जरें দুনিয়ায় তারা দিনের সামান্য এক মুহূর্ত সময় অতিবাহিত করে এসেছে; (মূলত এটি) একটি ঘোষণামাত্র, (এ ঘোষণা) যারা প্রত্যাখ্যান করেছে তাদের ছাড়া আর কাউকে সেদিন ধ্বংস করা হবে না:।

٣٥ فَاصْبِرْ كَمَّا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْ إِمِنَ الرَّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلُ لَّهُرْ الْكَانَّاهُرْ يَوْمَ يَوْمَ يَرُونَ مَا بَلْغُ مَ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفُسِقُونَ ع

৬৬

মন্যিল ৬



622

সুরা মোহামদ

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ৩৮, রুকু ৪ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةً مُحَمَّدٍ مَنَ نِيَّةً إِيَاتِيَّ : ٣٨ رُكُوعٌ : ٣ بِسْرِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْرِ

(অন্য মানুষদের) আল্লাহর পথ থেকে দূরে সরিয়ে রেখেছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের (সমগ্র) কর্মই বিনষ্ট করে দিয়েছেন।

أَضَلُ أَعْهَالُهُ

২. যারা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, মোহাম্মদ-এর ওপর আল্লাহর তরফ থেকে যা কিছ নাযিল করা হয়েছে তার ওপরও ঈমান এনেছে- যা একান্তভাবে তাদের মালিকের পক্ষ থেকে আসা সত্য. আল্লাহ তায়ালা তাদের জীবনের সব গুনাহ খাতা মাফ করে দেবেন এবং তাদের অবস্থা ওধরে দেবেন।

٢ وَالَّذِيْنَ أُمَّنُوا وَعَهِلُوا الصَّلِحُسِ وَأُمَّنُواْ بِهَا نُزَّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِـرُ لا كَفَّوا عَنْهُر سَيّا تِهِر وَ أَصْلَحَ بَالَهُر

৩. এ (সব কিছু) এ জন্যে হবে, যারা (আল্লাহকে) অম্বীকার করে তারা মূলত মিথ্যারই অনুসরণ করে. (অপর দিকে) যারা ঈমান আনে তারা তাদের মালিকের কাছ থেকে পাওয়া সত্য বিষয়ের অনুসরণ করে: আর এডাবেই আল্লাহ তায়ালা (এদের) জন্যে তাদের দষ্টাম্ভ স্তাপন করেন।

٣ ذٰلكَ بأنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطلَ وَأَنَّ الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ﴿ كَنْ لِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالُهُ رُ

৪. অতএব (যুদ্ধের ময়দানে) যখন তোমরা কাফেরদের সমুখীন হবে, তখন তোমরা তাদের গর্দানে আঘাত করো, তখন (বন্দীদের) তোমরা শব্দ করে বেঁধে রাখো, এরপর বন্দীদের মুক্ত করে দেবে কিংবা তাদের কাছ থেকে মুক্তিপণ আদায় করে ছেড়ে দেবে (এটা একান্তই تَضَعَ الْحَرْبُ ٱوْزَارَهَا ﴿ فَالْكَ لَا وَلُو يَشَاءُ وَلُو يَشَاءُ العَرْبُ اوْزَارَهَا ﴾ (العالم المالية على العالم বোঝা ফেলে না দেবে (ততোক্ষণ পর্যন্ত তোমরাও অস্ত্র ना प्रत्यत्व करता ना), जावा व्यवसाय जाया विष्ठा हाइरल الله كَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِيْ لِيَبْلُوا بَعْضَكُمْ (যুদ্ধ ছাড়াই) তাদের পরাজয়ের শাস্তি দিতে পারতেন. তিনি একদলকে দিয়ে আরেক দলের পরীক্ষা নিতে চাইলেন: যারা আল্লাহর পথে জীবন দিয়েছে আল্লাহ তায়ালা তাদের কর্ম কখনো বিনষ্ট হতে দেবেন না।

مُ فَاذَا لَقَيْتُمُ الَّانِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الْوَثَاقَ فِي فَامًّا مَنَّا ا بَعْنُ وَامًّا فِلَآءً مَتَّى بِبَعْضِ وَ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُضِلُّ أَعْهَالُهُمْ

৫. তিনি (অবশ্যই) তাদের সঠিক পথে পরিচালিত করেন এবং তাদের (সার্বিক) অবস্থাও তিনি শুধরে দেবেন.

۵ سَيَهْلِيْهِرْ وَيُصْلِحُ بَالَهُرْ ج

৬. (এর বিনিময়ে) তিনি তাদের জান্লাতে প্রবেশ করিয়ে দেবেন, যার পরিচয় তিনি তাদের কাছে (আগেই) করিয়ে রেখেছেন।

٢ وَيُلْمُلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ

৭. ওহে (মানুষ), যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান এনেছো, كَ يَأْيُهَا الَّذِينَ أَمَنُوا أَنْ تَنْصُووا اللَّهُ আল্লাহকে সাহায্য كَيَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا أَنْ تَنْصُووا اللَّهُ করো, তাহলে তিনিও তোমাদের (দুনিয়া আখেরাতে) সাহায্য করবেন এবং (মিথ্যার মোকাবেলায় এ যমীনের বুকে) তিনি তোমাদের পা সমূহকে মযবুত রাখবেন।

يَنْصُ كُمْ وَيُثَبِّتُ أَقْلَ امْكُمْ

৮. যারা আল্লাহকে অস্বীকার করেছে, তাদের জন্যে (রয়েছে) নিচিত ধ্বংস, আল্লাহ তায়ালা তাদের যাবতীয় কর্মই বিনষ্ট করে দেবেন।

^ وَ الَّانِيْنَ كَفَرُوْ ا فَتَعْسًا لَّهُرْ وَ أَضَلَّ أَعْهَا لَهُرْ

৪৭ সরা মোহামদ

433

| কোরআন শরীফ | সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | - | | পারা ২৬ | হা-মী |
|----------------|--|------|-------|---------|-------|
| 5 .03 Atac 800 | s interior retailed (retains record) and | a.t. | ~ | | , |

৯. এর কারণ হচ্ছে, আল্লাহ তায়ালা (তাদের জন্যে) যা কিছু পাঠিয়েছেন তারা তা অপছন্দ করেছে, ফলে আল্লাহ তায়ালাও তাদের যাবতীয় কর্ম বিনষ্ট করে দিয়েছেন।

9 ذٰلِكَ بِاَنَّمُرْ كَرِمُوْا مَّا اَنْزَلَ اللَّهُ فَاَحْبَعاَ اَعْهَالَهُرْ

১০. এ লোকগুলো কি আল্লাহর যমীনে পরিভ্রমণ করে দেখতে পারে না, (বিদ্রোহের পরিণামে) তাদের পূর্ববর্তী লোকদের কি অবস্থা হয়েছিলো; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর ধ্বংস (কর আযাব) পাঠিয়েছেন, যারা আল্লাহকে অস্বীকার করেছে তাদের জন্যেও সেই একই ধরনের (আযাব) রয়েছে।

أَفَلَمْ يَسِيْرُوا فِى الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ
 كَانَ عَاقِبَةٌ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ دَمَّرَ اللهُ
 عَلَيْهِمْ وَ وَلِلْكُغْرِيْنَ آَمْثَالُهَا

১১. এর কারণ হচ্ছে, যারা (আল্লাহতে) বিশ্বাস করে— আল্লাহই হন তাদের (একমাত্র) রক্ষক, (প্রকারান্তরে) যারা তাঁকে অবিশ্বাস করে তাদের (কোথাও) কোনো সাহায্যকারী থাকে না।

ال ذٰلِكَ بِاَنَّ اللهَ مَوْلَى الَّذِينَ أَمَنُوا وَاَنَّ
 الْكُفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَمُرْع

১২. যারা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সেসব লোকদের এমন এক (সুরম্য) জানাতে প্রবেশ করাবেন যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হতে থাকবে; কাফেররা জীবনের ভোগবিলাসে মন্ত, জন্তু জানোয়ারদের মতো তারা নিজেদের উদর পূর্তি করে, (এ কারণে) জাহানামই হবে তাদের জন্যে শেষ নিবাস!

۱۲ إِنَّ اللَّهَ يُنْ عِلَ النَّدِينَ أَمَنُوا وَعَهِلُوا السَّلِحْ اللَّهِ يُنْ عِلَوا النَّهُ أَمْنُوا وَعَهِلُوا السَّلِحْ عِبْسَ مَتْسِ مَجْرِئ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهُ وَ وَالنَّذِ عَلَى اللَّهُ وَالنَّارُ مَثُونَ وَيَاْكُلُونَ كَهَا تَاكُلُ الْإَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثُوى لَّهُمْ

১৩. (হে নবী,) তোমার (এই) জনপদ যারা (এক সময়) তোমাকে বের করে দিয়েছিলো, তার চাইতে অনেক শক্তিশালী বহু জনপদ ছিলো, সেগুলোকেও আমি ধ্বংস করে দিয়েছি, (সেদিন) তাদের কোনো সাহায্যকারীই ছিলো না।

ال وكَالِين مِن قَرْيَةٍ هِي آهَنَ قُوةً مِن أَهَن قُوةً مِن قُرْدَ وَكَالِين قُرْدً وَلَا نَاصِر قُرْدَيك الله أَهْر فَلَا نَاصِر لَهُر
 المهر شهر المير المهر المير المهر
১৪. যে ব্যক্তি তার মালিকের কাছ থেকে আসা সুস্পষ্ট সমুজ্জ্বল নিদর্শনের ওপর রয়েছে, তার সাথে এমন ব্যক্তির তুলনা কি ভাবে হবে যার (চোখের সামনে তার) মন্দ কাজগুলো শোভনীয় করে রাখা হয়েছে এবং তারা নিজেদের খেয়াল খুশীর অনুসরণ করে। ۱۳ أَفَهَنْ كَانَ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّهٍ كَهَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوَّءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُواۤ أَهُواً عَمْرُ

১৫. আল্লাহ তায়ালাকে যারা ভয় করে তাদের যে জান্নাতের ওয়াদা করা হয়েছে; সেখানে নির্মল পানির ফোয়ারা রয়েছে, রয়েছে দুধের এমন কিছু ঝর্ণাধারা, যার স্বাদ কখনো পরিবর্তিত হয় না, রয়েছে পানকারীদের জন্যে সুধার (সুপেয়) নহরসমূহ, রয়েছে বিশুদ্ধ মধূর ঝর্ণাধারা, (আরো) রয়েছে সব ধরনের ফলমূল (দিয়ে সাজানো সুরয়া বাগিচা, সর্বোপরি), সেখানে রয়েছে তাদের মালিকের কাছ থেকে (পাওয়া) ক্ষমা; এ ব্যক্তি কি তার মতো– যে ব্যক্তি অনস্তকাল ধরে জ্বলম্ভ আগুনে পুড়তে থাকবে এবং সেখানে তাদের এমন ধরনের ফুটম্ভ পানি পান করানো হবে, যা তাদের পেটের নাড়িভুঁড়ি কেটে (ছিন্ন বিচ্ছিন্ন করে) দেবে।

10 مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعِنَ الْمُتَّقُونَ ، فِيهَا اَنْهُرَّ مِّن لَّاءِ غَيْرِ أَسِ عَ وَانْهُرَّ مِّن لَّبَي لَر الْهُرِّ مِّن لَّبَي لَر يَتَغَيَّرُ طَعْهُمَّ عَ وَانْهُرَّ مِّن خَمْرٍ لَنَّةٍ لِلشَّرِبِينَ كَا وَانْهُرُ فِيهَا مِن كُلِّ وَانْهُرُ فِيهَا مِن كُلِّ الشَّهَرُسِ وَمَغْفِرةً مِّن رَبِّهِم ، فَكَمَن هُوَ خَالِلً فَي النَّارِ وَسُقُوا مَا عُمِيمًا فَقَطَّعَ اَمْعَا عَمُر فِي النَّارِ وَسُقُوا مَا عُمِيمًا فَقَطَّعَ اَمْعَا عَمُر فَي

১৬. তাদের মধ্যে এমন কিছু লোকও আছে যারা তোমার কথা শোনে, কিন্তু যখন তোমার কাছ থেকে বাইরে যায় তখন যাদের আল্লাহর পক্ষ থেকে জ্ঞান দান করা হয়েছে তারা এমন সব লোকদের কাছে এসে বলে– 'এ মাত্র কি

ا وَمِنْهُر مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ عَ مَتَّى إِذَا
 خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ ٱوْتُوا

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৬ হা-মীম |
|--|--|
| (যেন) বললো লোকটিঃ' (মূলত) এরাই হচ্ছে সেসব | |
| লোক, আল্লাহ তায়ালা যাদের অস্তরে মোহর মেরে | الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنِفًا مِن أُولَٰئِكَ الَّذِينَ |
| দিয়েছেন এবং (এ কারণেই) এরা নিজেদের খেয়াল | طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِرْ وَاتَّبَعُوْ ۗ اَهُوَا عُمُرْ |
| খুশীর অনুসরণ করে চলে। | |
| ১৭. যারা সৎপথে চলবে, আল্লাহ তায়ালা তাদের এ | ١٤ وَالَّذِينَ اهْتَكَوْا زَادَهُرْ هُكِّي وَّأَتْنَهُرْ |
| (সংপথে) চলা আরো বাড়িয়ে দেন এবং তাদের (অন্তরে) | |
| তিনি তাঁর ভয় দান করেন। | تَقُوْنِهُرْ |
| ১৮. হঠাৎ করে কেয়ামতের ক্ষণটি তাদের ওপর এসে | ١٨ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَٱتِيَهُرْ |
| পড়ুক তারা কি সে অপেক্ষায় দিন গুনছে? অথচ | بَغْتَةً م فَقَلْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا م فَأَنَّى لَهُرْ إِذَا |
| কেয়ামতের লক্ষণসমূহ তো এসেই পড়েছে, আর একবার যখন কেয়ামত এসেই পড়বে তখন তারা কিভাবে তাদের | - |
| উপদেশ গ্রহণ করবে! | جاءتهم ذِكْرِيهُم |
| ১৯. (হে নবী,) জেনে রেখো, আল্লাহ তায়ালা ছাড়া | ١٩ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَّهُ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ |
| দ্বিতীয় কোনো মাবুদ নেই, অতএব তাঁর কাছেই নিজের | |
| গুনাহ খাতার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করো, (ক্ষমা প্রার্থনা করো তোমার সাধী) মোমেন পুরুষ ও মোমেন নারীদের | لِنَاثَبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنْتِ وَاللَّهُ |
| জন্যে; আল্লাহ তায়ালা (যেমন) তোমাদের গতিবিধির | يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثُوٰلِكُمْ عَ |
| খবর রাখেন, (তেমনি তিনি) তোমাদের নিবাস সম্পর্কেও পূর্ণ ওয়াকেফহাল রয়েছেন! | يعتبر مسبعر وموسرع |
| ্য ওয়াকেকথা মন্মেছেন। ২০. যারা ঈমান এনেছে তারা (অত্যন্ত উৎসাহের সাথে) | ٠ ١ |
| বলে, কতো ভালো হতো যদি (আমাদের প্রতি জেহাদের | ٢٠ وَيَقُولُ الَّذِينَ أَمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةً ع |
| আদেশ সম্বলিত) কোনো সূরা নাথিল করা হতো! অতপর | فَاِذَا ۗ ٱنْزِلَسْ سُوْرَةً مُّحْكَمَةً وَّذُكِرَ فِيْهَا |
| যখন সেই (ঈব্দিত) সূরাটি নাযিল করা হয়েছে, যাতে | الْقِتَالُ لا رَايْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوْبِهِرْ مَّرَضَّ |
| (ডাদের প্রতি) জেহাদের আদেশ দেয়া হলো, তখন যাদের | |
| ্র অন্তরে (মোনফেকীর) ব্যাধি রয়েছে (তারা এটা ভনে) তোমার দিকে মৃত্যুর ভয় ও সম্ভ্রন্ত দৃষ্টিতে তাকাতে থাকলো, | |
| অতপর তাদের জন্যেই রয়েছে শোচনীয় পরিণাম। | الْهَوْسِ ، فَأَوْلَى لَهُرْج |
| ২১. (অথচ আদেশের) আনুগত্য করা এবং সুন্দর কথা | ٢١ طَاعَةً وَّقُولُ مُّعُرُونَ لَهُ فَإِذَا عَزَا الْإَثْرُ ق |
| বলাই ছিলো (তাদের জন্যে) উত্তম। যখন (জেহাদের) | |
| সিদ্ধান্ত হয়েই গৈছে তখন তাদের জ্বন্যে আক্লাহর সাথে সম্পাদিত অংগীকার পূরণ করাই ছিলো ভালো। | فَلَوْ مَنَ قُوا اللَّهَ لَكَانَ غَيْرًا لَّهُرْ ج |
| ২২. অতএব, তোমাদের কাছ থেকে এর চাইতে বেশী কি | ٢٢ فَهَلْ عَسَيْتُر إِنْ تَوَلَّيْتُرْ أَنْ تَفْسِلُوا |
| প্রত্যাশা করা যাবে যে, তোমরা (একবার) যদি এ | ~ |
| যমীনের শাসন ক্ষমতায় বসতে পারো তাহলে আল্লাহর | فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ |
| যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং যাবতীয় আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্ন করে ফেলবে। | |
| ২৩. (মৃলত) এরা হচ্ছে সে সব মানুষ, যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অভিসম্পাত করেন, তিনি তাদের বোবা | ^ an |
| আল্লাহ তায়ালা অভিসম্পাত করেন, তিনি তাদের বোবা করে দিয়েছেন (তাই তারা সত্য কথা বলতে পারে না) | ~ |
| এবং তাদের তিনি অন্ধ করে দিয়েছেন (তাই তারা সত্য | وَأَعْمَى أَبْصَارَهُمْ |
| কি তা দেখতেও পায় না)। | |
| ২৪. তবে কি এরা কোরআন সম্পর্কে (কোনোরকম চিন্তা) | ٢٣ أَفَلَا يَتَنَبَّرُونَ الْقُرْانَ أَمْ عَلَى قُلُوبِ |
| গবেষণা করে না! না কি এদের অন্তরসমূহের ওপর তার | أَتْفَالُهَا |
| তালা ঝুলে আছে। | |
| ২৫. যাদের কাছে হেদায়াতের পথ পরিষ্কার হয়ে যাওয়ার পরও তারা তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়, শয়তান এদের | ٢٥ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَنُّوْا عَلَى اَدْبَارِهِرْ مِّنْ ا |
| ৪৭ সূরা মোহাম্মদ ৫২৪ | |
| 0 1 7 % CAISTAN 4 (58) | <u> </u> |

মন্দ কাজগুলো (ভালো লেবাস দিয়ে) শোভনীয় করে بَعْنِ مَا تَبَيَّنَ لَهُرُ الْهُنَى لِا الشَّيْطُنُّ سَوَّلَ রাখে এবং তাদের জন্যে নানা মিথ্যা প্রলোভন দিয়ে لَهُمْ وَأَمْلَى لَهُمْ রাখে।

২৬. এমনটি এ জন্যেই (হয়েছে), (মানুষের জন্যে) আল্লাহ তায়ালা যা কিছ নাযিল করেছেন তা যারা পছন্দ فَرَّلَ اللَّهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْوِ كُمْ करत ना- এता তाप्नत वरल, आमता (क्रेमानमातरमत मरल عُرَّ فَي থাকলেও) কিছু কিছু ব্যাপারে তোমাদের কথামতোই চলবো, আল্লাহ তায়ালা এদের গোপন অভিসন্ধি সম্পর্কে খবর রাখেন।

٢٦ ذُلِكَ بِٱنَّهُرْ قَالُوْا لِلَّذِيثَى كُوهُوا مَا وَاللَّهُ يَعْلَمُ اشْرَارُهُمْ

২৭. (সেদিন) তাদের (অবস্থা) কেমন হবে- যেদিন আল্লাহর ফেরেশতারা তাদের মুখমন্ডল ও পর্চদেশে (প্রচন্ড) আঘাত করতে করতে তাদের মৃত্যু ঘটাবে।

٢٠ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتُهُرُ الْمَلَّئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وجوهه وآدباره

২৮. এটা এ জন্যে, তারা এমন সব পথের অনুসরণ করেছে যার ওপর আল্লাহ তায়ালা অসম্ভুষ্ট, আল্লাহর সম্ভুষ্টি তারা কখনো পছন্দ করেনি. (এ কারণেই) আল্লাহ তায়ালা এদের যাবতীয় কর্ম নিক্ষল করে দিয়েছেন।

٢٨ ذلكَ بِأَنَّهُمُّ إِنَّبُعُوا مَا آسْخُطَ اللَّهُ وكَرِهُوْا رِضُوَانَهُ فَآهْبَعَا أَعْهَالَهُمْ ع

২৯. যেসব মানুষের মনে (মোনাফেকীর) ব্যাধি রয়েছে তারা কি এ কথা বুঝে নিয়েছে, আল্লাহ তায়ালা তাদের এ বিদ্বেষজ্ঞনিত আচরণ (অন্যদের সামনে) প্রকাশ করে দেবেন না!

٢٩ أَ ۚ حَسِبَ الَّذِينَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مُّرَضَّ أَنْ لَّنْ يَخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُرْ

৩০. আমি তো ইচ্ছা করলে তোমাকে তাদের দেখিয়ে দিতে পারি, অতপর তাদের চেহারা দেখেই তমি তাদের চিনে নিতে পারবে, তুমি তাদের কথাবার্তার ধরন দেখে তাদের অবশ্যই চিনে নিতে পারবে (যে, এরাই হচ্ছে আসল মোনাফেক): নিসন্দেহৈ আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যাবতীয় কার্যের ব্যাপারে সম্যক ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

٣٠ وَلَوْ نَشَاءً لَارَيْنَكُمُرْ فَلَعَرَفْتَمُرْ بِسِيْمُمُرْ وَلَتَعْرِفَنَّاهُرْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْهَالَكُ

৩১ আমি অবশ্যই তোমাদের পরীক্ষা করবো– যতোক্ষণ না আমি একথা জেনে নেবো, কে তোমাদের মাঝে (সত্যিকারভাবে) আল্লাহর পথের মোজাহেদ- আর কে তোমাদের মধ্যে (জেহাদের ময়দানে) ধৈর্য ধারণকারী (অবিচল), যতোক্ষণ পর্যন্ত আমি তোমাদের খোঁজ খবর (ভালো করে) যাচাই বাছাই করে না নেবো (ততোক্ষণ পর্যন্ত আমার এ পরীক্ষা চলতে থাকবে)।

٣١ وَلَنَبْلُوَتَّكُمْ مَتَّى نَعْلَمَ الْمُجْهِرِيْنَ مِنْكُمْ وَالصِّيرِينَ لا وَنَبْلُوا الْعَبَارِكُمْ

৩২. যারা কৃষ্ণরী করে এবং (অন্য মানুষদের) আল্লাহর পথে আসা থেকে বিবত রাখে এবং তাদের কাছে হেদায়াতের পথ পরিষ্কার হয়ে যাওয়ার পরও যারা আল্লাহর রসলের বিরোধিতা করে, তারা কখনো আল্লাহ তায়ালার কিছুমাত্র ক্ষতি সাধন করতে সক্ষম হবে না: (বরং এ কারণে) অচিরেই আল্লাহ তায়ালা তাদের যাবতীয় কর্ম নিষ্ফল করে দেবেন।

٣٢ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوْا وَمَنُّوْا عَنْ سَبِيلٍ اللَّهِ وَهَاتُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْلِ مَا تَبَيَّىَ لَهُمْ الْهُنِّي لا لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ، وَسَيُحْبِطُ أعْبَالُمُ

৩৩. হে (মানুষ), যারা ঈমান এনেছো. তোমরা (সর্বাবস্থায়) আল্লাহর আনুগত্য করো, (শর্তহীন) আনগত্য করো (তাঁর) রস্পের, (বিদ্রোহ করে) কখনো তোমরা নিজেদের কাজকর্ম বিফলে যেতে দিয়ো না।

٣٣ يَآيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْآ اَطِيعُوا اللَّهَ وَ أَطِيْعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا آَعْهَالَكُمْ

৪৭ সুরা মোহাম্মদ

420

৩৪. যারা (নিজেরা) আল্লাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে এবং (অন্য মানুষদেরও) যারা আল্লাহর পথে আসা থেকে ফিরিয়ে রাখে, অতপর এ কাফের অবস্থায়ই তারা মরে যায় আলাহ তায়ালা এসব লোকদের কখনো ক্ষমা করবেন না।

٣٣ إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَنَّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ ثُرَّ مَا تُوْ ا وَهُر كُفًّارٌ فَلَنْ يَتَّفْعَ اللَّهُ لَهُرْ

৩৫. অতএব তোমরা কখনো হতোদ্যম হয়ে পডো না এবং (কাফেরদের) সন্ধির দিকে ডেকো না. (কেননা) বিজয়ী তো হচ্ছো তোমরাই, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের সাথেই রয়েছেন, তিনি কখনো তোমাদের কর্মফল বিনষ্ট কববেন না ।

٣٥ فَلَا تَهِنُوْا وَتَنْعُوْآ إِلَى السَّلْرِيُّ وَٱنْتُرُ الْأَعْلَوْنَ علَى وَاللَّهُ مَعَكُيرٌ وَلَنْ يَّتَوَكِّيرُ اَعْيَالُكُ

৩৬. অবশ্যই এ বৈষয়িক দনিয়ার জীবন হচ্ছে খেলাধুলা ও হাসি তামাশামাত্র, (এতে মন্ত না হয়ে) তোমরা যদি আল্লাহর ওপর ঈমান আনো এবং (সর্বাবস্থায়ই) আল্লাহকে ভয় করে চলো. তাহলে তিনি অবশ্যই তোমাদের এ কাজের (যথার্থ) বিনিময় প্রদান করবেন এবং (এর বদলে) তিনি তোমাদের কাছ থেকে (কোনো) ধন সম্পদ চাইবেন না।

٣٦ إِنَّهَا الْحَيْوةُ اللَّانْيَا لَعِبُّ وَّلَهُو ۗ ، وَإِنْ تُؤْمنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتكُرْ أَجُوْرَكُرْ وَ $ilde{V}$ يَسْئَلُكُم أَمْوَ الْكُمْ

৩৭, যদি (কখনো) তিনি (তোমাদের কল্যাণের জন্যে) তোমাদের ধন-সম্পদ (-এর কিছু অংশ) দাবী করেন. অতপর এর জন্যে তিনি যদি তোমাদের ওপর প্রবর্ণ চাপও প্রদান করেন, তাহলেও তোমরা তা দিতে গিয়ে কার্পণ্য করবে. (ফলে) তোমাদের বিছেষ (-জনিত আচরণ)-গুলো তিনি বের করে দেবেন।

٣٤ انْ يُسْئَلُكُهُوْهَا فَيُحْفَكُمُ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجُ أَضْفَانَكُو

৩৮. হাঁ. এ হচ্ছো তোমরা! তোমাদেরই তো ডাকা হচ্ছে আল্লাহর পথে সম্পদ খরচ করার জন্যে (অতপর) তোমাদের একদল লোক কার্পণ্য করতে শুরু করলো অথচ যারা কার্পণ্য করে তারা (প্রকারান্তরে) নিজেদের সাথেই কার্পণ্য করে: কারণ আল্লাহ তায়ালা তো (এমনিই যাবতীয়) প্রয়োজনমুক্ত এবং তোমরাই হচ্ছো অভাবগ্রন্ত. (তা সত্তেও) যদি তোমরা (আল্লাহর পথে) ফিরে না আসো, তাহলে তিনি তোমাদের জায়গায় অন্য (কোনো) এক জাতির উত্থান ঘটাবেন, অতপর তারা (কখনো) তোমাদের মতো হবে না।

٣٨ مَّٱنْتُرْ مَوُّلَاءِ تُلْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِي سَبِيْلِ اللهِ ج فَهِنْكُيرُ مِّنْ يَّبْغُلُ ج وَمَيْ يَّبْغُلُ فَاإِنَّهَا يَبْغُلُ عَنْ نَّفْسِهِ ، وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَٱنْتُرُ الْفُقَرَآء ع وَإِنْ تَتَوَلُّوا يَسْتَبْلِلْ قَوْمًا غَيْرَكُرْ لِا ثُرَّ لَا يَكُونُوْآ أَمْثَالَكُمْ ع

সুরা আল ফাতাহ

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ২৯, রুকু ৪ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْفَتْعِ مَنَنِيَّةً أَيَا... أَ: ٢٩ رُكُوعٌ : ٣ بِشرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ

 (হে নবী,) নিসন্দেহে আমি তোমাকে এক সুস্পষ্ট বিজয় দান করেছি.

ا إِنَّا فَتَكُنَا لَكَ فَتُكًا مُّبِيْنًا لا

২. যাতে করে (এর দ্বারা) আল্পাহ তায়ালা তোমার আগে পরের যাবতীয় ক্রেটি বিচ্যুতি ক্ষমা করে দিতে পারেন. تَأَخَّرُ وَيُتِرَّ نِعْهَتَدُّ عَلَيْكَ وَيَهْرِيكَ صِ اللَّا صَالَا अन्नानअभ्रु िनि وَيُعْرِيكَ وَيَهْرِيكَ مَا اللهِ পরণ করে দিতে পারেন এবং তোমাকে সবল ও অবিচল পথে পরিচালিত করতে পারেন.

٢ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَلَّا مَنْ ذَنَّبِكَ وَمَا

৪৮ সুরা আল ফাতাহ

७३७

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২৬ হা-মীম

৩. আর (এ ঘটনার মাধ্যমে) আল্লাহ তায়ালা তোমাকে বড়ো রকমের একটা সাহায্যও করবেন।

٣ و يَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيْزًا

8. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি ঈমানদারদের মনে গভীর প্রশান্তি দান করেছেন, যাতে করে তাদের الْمُؤْمِنِينَ لِيَوْدَادُوْ آ إِيْمَانًا مُّعَ إِيْمَانِهِي ﴿ (वाहरतत) क्रेमान छाप्पत (७७०रतत) क्रेमात्नत जार्थ मित्न আরও বৃদ্ধি পায়; (তারা যেন জেনে নিতে পারে,) আসমান যমীনের সমুদয় সৈন্য সামস্ত তো একান্ডভাবে আল্লাহ তায়ালার জন্যেই: আর আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন সর্বজ্ঞ এবং সর্ববিষয়ে ওয়াকেফহাল

مُ مُوَ الَّذِي ۚ أَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِي قُلُوْبِ وَلِلَّهِ مُنُوْدُ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ ، وَكَانَ اللَّهُ عَلَيْهًا حَكَيْهًا لا

৫. (এর মাধ্যমে) তিনি মোমেন পুরুষ ও মোমেন নারীদের এমন এক (স্থায়ী) জান্লাতে প্রবেশ করাবেন, যার تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْإِنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيْهَا السَّاقَةِ अवाधोत्रो र्थाता ومَنْ تَحْتِهَا الْإِنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيهَا হবে চিরম্ভন, তিনি তাদের গুনাহসমূহ মাফ করে দেবেন: وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّا تِهِمْ و كَانَ ذَٰلِكَ عِنْنَ اللهِ आत (अिंग्लात जार्थ) जान्नार जात्रानात कारह (মোমেনদের) এটা হচ্ছে মহাসাফল্য.

٥ لِيُهُخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنْسِ جَنَّت فَوْزًا عَظِيْمًا لا

৬. (এর দ্বারা) তিনি মোনাফেক পুরুষ ও মোনাফেক নারী আল্লাহর সাথে শরীক করে এমন পুরুষ ও নারী এবং আরো যারা আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কে নানাবিধ খারাপ ধারণা পোষণ করে- তাদের সবাইকে শাস্তি প্রদান করবেন: (আসলে) খারাপ পরিণাম তো ওদের চারদিক থেকে ঘিরেই আছে. আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর গযব পাঠিয়েছেন, তাদের তিনি অভিশাপ দিয়েছেন, অতপর তাদের জন্যে তিনি জাইান্রাম তৈরী করে রেখেছেন: আর জাহান্লাম (তো হচ্ছে অত্যন্ত) নিকষ্ট ঠিকানা!

ويعن أ الْهُنفقينَ وَالْهُنفقين وَ الْهُوْرِكِيْنَ وَ الْهُشْرِكْتِ الظَّّاتِّيْنَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ مَ عَلَيْهِم (دَ أَئِرَةُ السَّوْءِ ج وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَ أَعَلَّ لَهُمْ جَهَنَّى الْ وَسَأَعَينَ

৭. আসমানসমূহ ও যমীনের সমুদ্য বাহিনী আল্লাহ তায়ালার জন্যেই এবং তিনিই হচ্ছেন পরাক্রমশালী ও প্রবল প্রজাময় ।

٤ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّهٰوٰ يَ وَالْأَرْضِ م وكَانَ اللهُ عَزِيْزًا حَكِيًّا

৮. (হে নবী.) অবশ্যই আমি তোমাকে (মানুষের কাছে) সত্যের সাক্ষী এবং (জান্লাতের) সুসংবাদ বহনকারী ও (জাহান্রামের) সতর্ককারীরূপে পাঠিয়েছি.

٨ إِنَّا ٱرْسَلْنُكَ شَامِنًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَنِيرًا لا

৯. যাতে করে তোমরা (একমাত্র) আল্লাহর ওপর এবং তার নবীর ওপর (সর্বতোভাবে) ঈমান আনো, (দ্বীন প্রতিষ্ঠার কাজে) তাঁকে সাহায্য করো, (আল্লাহর নবী হিসেবে) তাঁকে সম্মান করো: (সর্বোপরি) সকাল সন্ধ্যা আল্লাহর মাহাত্ম ঘোষণা করো।

٩ لِّتُوْمِنُوْا بِاللَّهِ وَرَسُوْلِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ٠ وتُسْبِحُوهُ بُكُرةً و أَمْيُلًا

১০. নিসন্দেহে আজ যারা তোমার কাছে বায়াত করছে. তারা তো প্রকারান্তরে আল্লাহর কাছেই বায়াত করলো: (কেনা) আল্লাহর হাত ছিলো তাদের হাতের ওপর, তাদের কেউ যদি এ বায়াত ভংগ করে তাহলে এর (ভয়াবহ) يَنْكُمُ عَلَى نَفْسِهِ عَ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَمَلَ अंतिनाम जात निरक्षत अत्रहर बर्प अफ़रव, जात जालार وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَمَلَ الْمُ তায়ালা তার ওপর যে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন তা যে পূর্ণ করে, তিনি অচিরেই তাকে মহাপরস্কার দান করবেন।

١٠ إِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ أِنَّهَا يُبَايِعُوْنَ اللَّهَ ط يَنُ اللَّهِ فَوْقَ آيُدِيْهِرْ ع فَهَنْ نَّكُم فَانَّهَا عَلَيْهُ اللَّهُ فَسَيَّوْ تَيْهِ أَجْرًا عَظَيْهًا ع

১১. (আরব) বেদুইনদের যারা (তোমার সাথে যোগ না দিয়ে) পেছনে পড়ে থেকেছে, তারা অচিরেই তোমার

ا سَيَقُولُ لَكَ الْهُخَلَّقُونَ مِنَ الْإَعْرَابِ

৪৮ সূরা আল ফাতাহ

629

কাছে এসে বলবে (হে নবী), আমাদের মাল সম্পদ ও পরিবার পরিজন আমাদের ব্যস্ত করে রেখেছিলো, অতএব তুমি আমাদের জন্যে আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করো (হে মোহাম্মদ, তুমি এদের কথায় প্রতারিত হয়ো না), এরা মুখে এমন সব কথা বলে যার কিছুই তাদের অস্তরে নেই; বরং তুমি (এদের) বলে দাও, আল্লাহ তায়ালা যদি তোমাদের কোনো ক্ষতি কিংবা কোনো উপকার করতে চান, তাহলে কে তোমাদের ব্যাপারে তাঁর ইচ্ছা থেকে তাঁকে ফিরিয়ে রাখতে পারবে; তোমরা যা যা করছো আল্লাহ তায়ালা কিন্তু সে সম্পর্কে সম্যক ওয়াকেফহাল রয়েছেন।

شَغَلَتْنَا آمُوَالُنَا وَآهُلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا عَ يَقُوْلُونَ بِٱلْسِنَتِهِرْمَّا لَيْسَ فِى قُلُوبِهِرْ، قُلْ فَهَىٰ يَّمْلِكُ لَكُرْمِّى اللهِ هَيْئًا إِنْ اَرَادَ بِكُرْ ضَرَّّا اَوْ اَرَادَ بِكُرْ نَفْعًا ، بَلْ كَانَ اللهُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ غَبِيْرًا

১২. তোমরা সবাই মনে করেছিলে, রসূল ও (তাঁর সাথী) মোমেনরা কোনো দিনই (এ অভিযান থেকে) নিজেদের পরিবার পরিজনের কাছে (জীবিত) ফিরে আসতে পারবে না, আর এ ধারণা তোমাদের কাছে খুবই সুখকর লেগেছিলো এবং তোমরা তাদের সম্পর্কে খুবই খারাপ ধারণা করে রেখেছিলে, (আসলে) তোমরা হচ্ছো একটি নিচিত ধ্বংসোনুখ জাতি!

۱۲ بَلْ ظَنَنْتُرْ أَنْ لَّىٰ يَّنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْبُوْمِنُونَ إِلَى اَمْلِيهِرْ اَبَنًا وَّرْيِّنَ ذٰلِكَ فِي قُلُوبِكُرْ وَظَنَنْتُرْ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَوكُنْتُرْ قَوْمًا 'بُوْرً ا

১৩. আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ওপর যারা কখনো বিশ্বাস করেনি, আমি (সে) অবিশ্বাসীদের জন্যে জ্বলম্ভ আগুন প্রস্তুত করে রেখেছি। ال وَمَن لَّر يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا اَعْتَنْ لَا لِلْكُورِينَ سَعِيْرًا
 اَعْتَنْ نَا لِلْكُورِيْنَ سَعِيْرًا

১৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর (যাবতীয়) সার্বভৌমত্ব তো (এককভাবে) তাঁরই জন্যে (নির্দিষ্ট, অতএব); তিনি যাকে ইচ্ছা তাকে ক্ষমা করেন আবার যাকে ইচ্ছা তাকে শান্তি প্রদান করেন; আল্লাহ তায়ালা একান্ত ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

١٣ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّهُوْتِ وَالْأَرْضِ ، يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَلِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ، وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّمِيْهًا

১৫. (অতপর) যখন তোমরা যুদ্ধশন্ধ সম্পদ হাসিল করতে যাবে তখন পেছনে পড়ে থাকা এ লোকগুলো এসে অবশ্যই তোমাকে বলবে, আমাদেরও তোমাদের সাথে যেতে দাও, (এভাবে) তারা আল্লাহর ফরমানই বদলে দিতে চায়; তুমি বলে দাও, তোমরা কিছুতেই (এখন) আমাদের সাথে চলতে পারবে না, আল্লাহ তায়ালা তো আগেই তোমাদের (ব্যাপারে এমন) ঘোষণা দিয়ে রেখেছেন, (একথা শুনে) তারা সাথে সাথে বলে উঠবে, তোমরা আমাদের প্রতি বিদ্বেষ পোষণ করছো, কিন্তু এ লোকগুলো (আসলে) বুঝেই নিতান্ত কম।

ا سَيَقُوْلُ الْهُخَلَّقُونَ إِذَا انْطَلَقْتُرْ إِلَى مَغَانِرَ لِتَاْعُنُوْمَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُرْ عَيْرِيْدُوْنَ اَنْ يَبْكِرُ إِلَى اَنْ يَبْكِرُ عَيْرِيْدُوْنَ اَنْ يَبْكِرِّلُوْلَ اللهِ ء قُلْ لَّى تَتَّبِعُوْنَا كَنْ لِكُرْ قَالَ اللهُ مِنْ قَبْلُ ع فَسَيَقُولُونَ كَنْ لِكُمْ تَحْسُدُونَ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى الْمُعْمَالُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى الْمُعَلَى الْمُعْمَالُولُونَ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى ا

১৬. পেছনে পড়ে থাকা (আরব) বেদুইনদের তুমি (আরো) বলো, অচিরেই তোমাদের একটি শক্তিশালী জাতির সাথে যুদ্ধ করার জন্যে ডাক দেয়া হবে, তোমরা তাদের সাথে যুদ্ধ করবে অথবা তারা আত্মসমর্পণ করবে, (তোমরা যদি) এ নির্দেশ মেনে চলো তাহলে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের উত্তম পুরস্কার দান করবেন, আর তোমরা যদি তখনও আগের মতো পৃষ্ঠ প্রদর্শন করো (এবং ময়দান থেকে পালিয়ে যাও), তাহলে জেনে রেখো, তিনি তোমাদের কঠোর দণ্ড দেবেন।

١٦ قُلُ لِلْمُحَلِّفِيْنَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُلْعَوْنَ إِلَٰى قَوْإِ الْوَلْمُرْ اَوْ إِلَى قَوْإِ الْوَلْمُرْ اَوْ يُسْلِمُونَ عَ فَإِنْ تُطِيْعُوا يُؤْتِكُرُ الله اَجْرًا يَسْلِمُونَ عَ فَإِنْ تَتُولُوا كَمَا تَولَّيْتُرْ مِّنْ قَبْلُ مَسَنًا عَ وَإِنْ تَتَولُّوا كَمَا تَولَّيْتُرْ مِّنْ قَبْلُ يَعَزِّبْكُرْ عَنَابًا الْإِيمًا

১৭, তবে কোনো অন্ধ ও পংগু কিংবা রুগু ব্যক্তি (জেহাদের ময়দানে না এলে তার) জন্যে কোনো গুনাহ নেই এবং যে কোনো ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করবে. তিনি তাকে এমন এক জান্লাতে প্রবেশ করাবেন যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহমান থাকবে, আবার যে ব্যক্তি আল্লাহর আনুগত্য থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে তিনি তাকে মর্মন্তদ শান্তি দেবেন।

١٤ لَيْسَ عَلَى الْإَعْلَى مَرَجٌ وَّلا عَلَى الْإَعْرَجَ مَرَجٌ وَّلا عَلَى الْهَرِيْضِ مَرَجٌّ ء وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ يُنْعِلْهُ جَنَّتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْإِنْهُرُ عِ وَمَنْ يَّتُوَلَّ يُعَنَّ بُدُ عَنَ إبًا ٱليُّهَا ع

১৮. ঈমানদার ব্যক্তিরা যখন গাছের নীচে বসে তোমার হাতে (আনুগত্যের) বায়াত করছিলো, (তখন) আল্লাহ তায়ালা (তাদের ওপর খবই) সম্ভষ্ট হয়েছেন, তাদের মনের (উদ্বেগজনিত) অবস্থার কথা আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানতেন, তাই তিনি (তা দুর করার জন্যে) তাদের ওপর মানসিক প্রশান্তি নাযিল করলেন এবং আসন বিজয় দিয়ে তাদের তিনি পুরস্কত করলেন.

١٨ لَقَلْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْسَ الشَّجَرَةِ فَعَلِرَ مَا فِي قُلُوْبِهِرْ فَٱنْزَلَ السَّكَيْنَةَ عَلَيْهِرْ وَٱثَابَهُرْ فَتُحًّا قَرِيْبًا ٧

১৯. (তাছাড়া রয়েছে) বিপুল পরিমাণ যুদ্ধলব্ধ সম্পদ. যা তারা লাভ করবে: আল্লাহ তায়ালা অনেক শক্তিশালী ও প্রক্তাময়।

19 وَّمَغَانِي كَثِيرَةً يَّاغُنُونَهَا ء وكَانَ اللَّهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا

২০. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (আরো) প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন, (আগামীতেও) তোমরা বিপুল পরিমাণ যুদ্ধলব্ধ সম্পদের অধিকার করবে: এরপরে আল্লাহ তায়ালা এ (বিজয়)-কে তোমাদের জন্যে তুরান্বিত করেছেন এবং অন্যদের হাত থেকে তোমাদের রক্ষা করেছেন যাতে করে এটা মোমেনদের জন্যে আল্লাহ তায়ালার একটা নিদর্শন হতে পারে এবং এর দ্বারা তিনি তোমাদের সঠিক পথে পরিচালিত করতে পারেন.

٢٠ وَعَلَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْعُلُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُرْ هٰنِهِ وَكَفَّ آيَدِي َ النَّاسِ عَنْكُرْع وَلِتَكُوْنَ أَيَةً لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْلِيَكُمْ مِوَاطًا ه مُسْتَقَيْبًا و

২১. এছাড়াও অনেক (সম্পদ) রয়েছে, যার ওপর এখনও তোমাদের কোনো অধিকার প্রতিষ্ঠিত হয়নি: আসমান যমীনের সমুদয় সম্পদ, তা তো আল্লাহ তায়ালা নিজেই পরিবেষ্টন করে আছেন: আর আল্লাহ তায়ালা সব কিছুর ওপর একক ক্ষমতায় ক্ষমতাবান।

٢١ وَّ ٱخْرَٰى لَرْ تَقْلِرُواْ عَلَيْهَا قَلْ آحَاطَ اللَّهُ بِهَا ء وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْء قَرِيرًا

২২. (সেদিন) যদি কাফেররা তোমাদের সাথে সমুখসমরে এগিয়ে আসতো, তাহলে তারা পষ্ঠ প্রদর্শন করে (ময়দান থেকে) পালিয়ে যেতো, অতপর তারা কোনো সাহায্যকারী ও বন্ধ পেতো না 1

٢٢ وَلَوْ قَتْلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوْ الوَلُّو ا الْأَدْبَارَ ثُرَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا

২৩. (এ হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালার (চিরন্তন) নিয়ম, যা আগে থেকে (একই ধারায়) চলে আসছে, তুমি (কোথাও) আল্লাহ তায়ালার এ নিয়মের কোনো রদবদল (দেখতে) পাবে না।

٢٣ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَلْ غَلَسْ مِنْ قَبْلُ ﴾ وَلَىْ تَجِنَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْرِيْلًا

২৪. (তিনিই মহান আল্লাহ.) যিনি মঞ্চা নগরীর অদুরে তাদের ওপর তোমাদের নিশ্চিত বিজয়দানের পর তাদের হাত তোমাদের থেকে এবং তোমাদের হাত তাদের থেকে নিবৃত্ত করেছেন: আর তোমরা যা করছিলে আল্লাহ তায়ালা তার সব কিছুই দেখছিলেন।

٢٣ وَهُوَ الَّذِي كُفَّ ٱيْلِيَهُمْ عَنْكُرُ وَ أَيْدِيكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةً مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ * وَكَانَ اللَّهُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ بَصِيْرًا

حد. النابِينَ كَفُرُوا وَصَلُّوكُم عَن ٢٥ مَرُ النَّابِينَ كَفُرُوا وَصَلُّوكُم عَن ٢٥ مَر النَّابِينَ كَفُرُوا وَصَلُّوكُم عَن ٢٥ مَر النَّابِينَ كَفُرُوا وَصَلُّوكُم عَن ٢٥٠ তোমাদের আল্লাহর ঘর (তাওয়াফ করা) থেকে বাধা

৪৮ সুরা আল ফাতাহ

(42)

দিয়েছে এবং কোরবানীর (উদ্দেশে আনীত) পশুগুলোকে তাদের নির্ধারিত স্থান পর্যন্ত পৌছুতে বাধা দিয়েছে; যদি (সেদিন মক্কা নগরীতে) এমন সব মোমেন পুরুষ ও নারী অবস্থান না করতো যাদের অনেককেই তোমরা জানতে না, (তাছাড়া যদি এ আশংকাও না থাকতো যে, একান্ত অজান্তে) তোমরা তাদের পদদলিত করে দেবে এবং এ জন্যে তোমরা (পরে হয়তো) অনুতপ্তও হবে (তাহলে এ যুদ্ধ বন্ধ করা হতো না — যুদ্ধ তো এ কারণেই বন্ধ করা হয়েছিলো যে), এর দ্বারা আল্লাহ তায়ালা যাকৈ চান তাকে নিজের রহমতের আওতায় নিয়ে আসেন, যদি (সেদিন) তারা (কাফেরদের থেকে) পৃথক হয়ে যেতো তাহলে (মক্কায় অবশিষ্ট) যারা কাফের ছিলো — আমি কঠিন ও মর্মান্তিক শান্তি দিতাম।

الْهَشْجِدِ الْحَرَا اِ وَالْهَلْى مَعْكُوفًا أَنْ يَّالَّهُ مَحِلَّهُ مَ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُّوْمِنُونَ وَنِسَاءً مُّوْمِنُونَ وَنِسَاءً مُّوْمِنُونَ وَنِسَاءً مُّوْمِنُونَ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَنُّوُهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مُّوْمِنُو مَّ وَيَسَاءً مُّوْمِنُو مَنْ يَعْلَمُ عِلْمٍ عِلْمٍ عِلْمِ عِلْمُ لِيَلْخِلَ اللّهُ فِي مَنْهُمْ مَنْ يَسَاءً عَلَوْ تَزَيَّلُوا لَعَنَّابُنَا اللّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَسَاءً عَلَوْ تَزَيَّلُوا لَعَنَّابُنَا اللّهُ فِي كَفَرُوا مِنْهُمْ عَنَابًا الْإِيمًا كَفَرُوا مِنْهُمْ عَنَابًا الْإِيمًا

২৬. যখন এ কাফেররা নিজেদের মনে জাহেলিয়াতের উদ্ধত্য জমিয়ে নিয়েছিলো, তখন (তাদের মোকাবেলায়) আল্লাহ তায়ালা তাঁর রসূলের ওপর ও (তাঁর সাথী) মোমেনদের ওপর এক মানসিক প্রশান্তি নাযিল করে দিলেন এবং (এ অবস্থায়ও) তিনি তাদের আল্লাহকে ভয় করে চলার (নীতির) ওপর কায়েম রাখলেন, (মূলত) তারাই ছিলো (আল্লাহর পক্ষ থেকে প্রশান্তি পাওয়ার) অধিকতর যোগ্য ও হকদার ব্যক্তি; আল্লাহ তায়ালা সব কিছর ব্যাপারেই যথার্থ জ্ঞান রাখেন।

٢٦ إِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوبِهِرُ الْحَوِيَّةَ مَولَيْةِ فَانْزَلَ اللَّهُ الْحَوِيَّةَ مَولِيَّةِ فَانْزَلَ اللَّهُ سَكِيْنَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْزَمَهُرُ كَلِمَةَ التَّقُوٰى وَكَانُوْآ اَمَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا وَكَانُوا آ اَمَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ع

২৭. অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তাঁর রস্লের স্বপু সত্যে পরিণত করে দেখিয়েছেন, (রস্ল স্বপ্নে দেখেছিলো, একদিন) অবশ্যই তোমরা আল্লাহ তায়ালার ইচ্ছায় নিরাপদে 'মাসজিদল হারামে' প্রবেশ করবে, তোমাদের কেউ (তখন) থাকবে মাথা মুগুন করা অবস্থায় আবার কেউ থাকবে মাথার চুল কাটা অবস্থায়, তোমাদের (মনে) তখন আর কোনোরকম ভয়ভীতি থাকবে না; (স্বপুর) একথা আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানতেন, যার কিছুই তোমাদের জানা ছিলো না, অতপর (পরবর্তি বিজয়ের) ব্যাপারটি আসার আগেই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে এ অশু বিজয় দান করেছেন।

٢٠ لَقَنْ مَنَ قَ اللّهُ رَسُولَهُ الرَّءْيَا بِالْحَقِّ عَ لَتَنْ هُلَّ اللهُ ا

২৮. তিনিই হচ্ছেন সেই মহান সন্তা, যিনি তাঁর রস্লকে (যথার্থ) পথনির্দেশ ও সঠিক জীবন বিধান দিয়ে পাঠিয়েছেন, যাতে করে আল্লাহর রস্ল (দুনিয়ার) অন্য সব বিধানের ওপর একে বিজয়ী করে দিতে পারে, (সত্যের পক্ষে) সাক্ষ্য দেয়ার জন্যে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট।

٢٨ مُوَ الَّذِي آَ اَرْسَلَ رَسُولَةً بِالْهُدٰى وَدِيْنِ
 الْحَقِّ لِيُظْهِرَةً عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ ا وَكَفٰى
 بِاللهِ شَهِيْدًا ا

২৯. মোহাম্মদ আল্লাহ তায়ালার রস্ল; অন্য যেসব লোক তার সাথে আছে তারা (নীতির প্রশ্নে) কাফেরদের প্রতি অত্যন্ত কঠোর, (আবার তারা) নিজেদের মধ্যে একান্ত সহানুভূতিশীল, তুমি (যখনই) তাদের দেখবে, (দেখবে) তারা রুকু ও সাজদাবনত অবস্থায় রয়েছে, আল্লাহর অনুগ্রহ ও তাঁর সন্তুষ্টি কামনা করছে, তাদের (বাহ্যিক) চেহারায়ও (এ আনুগত্য ও) সাজদার চিহ্ন রয়েছে; তাদের উদাহরণ যেমন (বর্ণিত রয়েছে) তাওরাতে,

٢٩ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ ﴿ وَالنَّذِينَ مَعَثَّ آشِدًا ۗ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَّاءُ بَيْنَهُرْ تَرْسَهُرْ رُكَّعًا لَمَّكًا اللهِ وَرِضُوانًا رَسُمَاهُرْ فِي وَجُوهِمِرْ مِّنَ اللهِ وَرِضُوانًا رَسِيمَاهُرْ فِي وَجُوهِمِرْ مِّنَ اللهِ وَرِضُوانًا رَسِيمَاهُرْ فِي وَجُوهِمِرْ مِّنَ اللهِ وَرِسُوانًا ر

৪৮ সূরা আল ফাতাহ্

(00)

(তেমনি) তাদের উদাহরণ রয়েছে ইঞ্জিলেও, (আর তা হচ্ছে) যেমন একটি বীজ– যা থেকে বেরিয়ে আসে একটি (ছোট্র) কিশলয়, অতপর তা শক্ত ও মোটা তাজা হয় এবং (পরে) স্বীয় কান্ডের ওপর তা দৃঢ়ভাবে দাঁড়িয়ে যায়, (চারা গাছটির এ অবস্থা তখন) চাষীর মনকে খুশীতে উৎষ্ণুল্ল করে তোলে. (এভাবে একটি মোমেন সম্প্রদায়ের পরিশীলনের ঘটনা দ্বারা) আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের মনে (হিংসা ও) জ্বালা সৃষ্টি করেন; (আবার) এদের মাঝে যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ওপর) ঈমান আনে এবং নেক আমল করে, আল্লাহ তায়ালা তাদের জন্যে তাঁর ক্ষমা ও মহাপুরস্কারের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন।

ذٰلِكَ مَثَلُهُرْ فِي التَّوْرُدةِ نَظُّوَمَثَلُهُرْ فِي الْإِنْجِيْلِ ﴿ كُزَرْعِ آغْرَجَ شَطْآهً فَأَزَرَهً فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلَى سُوْقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغَيْظَ بِهِي الْكُفَّارَ ، وَعَلَ اللَّهُ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا الصَّلِحُتِ مِنْهُرُ مَّغُفَ ةً وَ أَجْرًا عَظَيْمًا ع



সুরা আল হুজুরাত মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১৮, রুকু ২ রহমান রহীম আলাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْحُجْرِتِ مَلَّنَيَّةً يِشرِ اللَّهِ الرَّحْسَ الرَّحِيْم

১. হে (মানুষ), তোমরা যারা ঈমান এনেছো, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের সামনে (কখনো) অর্থণী হয়ো না اللهِ وَرَسُولِهِ وَ اتَّقُوا اللَّهَ مَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعً अवर (अर्वना) आल्लाहरक ७ श्र करत हरना: आल्लाह छाश्राना নিসন্দেহে (সব কিছু) শোনেন এবং দেখেন।

ا يأيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا تُقَرِّمُوا بَيْنَ يَنَي

২. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, কখনো নিজেদের আওয়ায নবীর আওয়াযের ওপর উঁচু করো না এবং নিজেরা যেভাবে একে অপরের সাথে উঁচু (গলায়) আওয়ায করো– নবীর সামনে কখনো সে ধরনের উঁচু আওয়াযে কথা বলো না. এমন যেন কখনো না হয় যে, তোমাদের সব কাজকর্ম (এ কারণেই) বরবাদ হয়ে যাবে এবং তোমরা তা জানতেও পারবে না।

٢ يَٰايَّهَا الَّٰنِيْنَ أَمَّنُوْا لَا تَوْفَعُوْا اَصُوَاتَكُمْ فَوْقَ مَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهُو بَعْضِكُمْ لِبَعْضِ أَنْ تَحْبَطَ أَعْهَالُكُمْ وَٱنْتُرْ لَا تَشْعُرُونَ

৩. যারা আল্লাহর রস্তলের সামনে নিজেদের গলার আওয়ায নিম্নগামী করে রাখে, তারা হচ্ছে সেসব মানুষ যাদের মন (মগ্য)-কে আল্লাহ তায়ালা তাকওয়ার জন্যে যাচাই বাছাই করে নিয়েছেন: এমন ধরনের লোকদের জন্যেই রয়েছে আল্লাহর ক্ষমা ও অসীম পুরস্কার।

٣ إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْنَ رَسُولَ اللهِ أُولَٰئِكَ الَّٰذِيْنَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوْبَهُ لِلتَّقُوى م لَهُرْ مُّغْفِرَةً وْ أَجْرٌ عَظِيْرٌ

8. (হে নবী.) যারা তোমাকে (সময় অসময়) তোমার কক্ষের বাইরে থেকে ডাকে, তাদের অধিকাংশই নির্বোধ লোক।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْعُجُرِتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

৫. যতোক্ষণ তুমি তাদের কাছে বের হয়ে না আসো, ততোক্ষণ পর্যন্ত তারা যদি ধৈর্য ধরে অপেক্ষা করতো. তাহলে এটা তাদের জন্যে হতো খুবই উত্তম: আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু।

٥ وَلَوْ أَنَّهُرْ صَبَرُوْا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِرْ لَكَانَ غَيْرًا لَّهُمْ ﴿ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيرٌ

৬. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, যদি কোনো দুষ্ট (প্রকৃতির) লোক তোমাদের কাছে কোনো তথ্য নিয়ে আসে, তবে তোমরা (তার সত্যতা) পরখ করে দেখবে (কখনো যেন আবার এমন না হয়), না জেনে তোমরা কোনো একটি

٣ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقًّا بِنَبَا فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيْبُوا قَوْمًا ۚ بِجَهَالَةٍ

৪৯ সুরা আল হুজুরাত

cos

সম্পদায়ের ক্ষতি করে ফেললে এবং অতপর নিজেদের কৃতকর্মের ব্যাপারে তোমাদেরই অনুতপ্ত হতে হলো!

فَتُصْبِحُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ نَامِينَ

৭. তোমরা জেনে রাখো, (সিদ্ধান্ত দেয়ার জন্যে) তোমাদের মাঝে (এখনো) আল্লাহর রসূল মজুদ রয়েছে; (আর) আল্লাহর রসূল যদি অধিকাংশ ব্যাপারে তোমাদের মতেরই অনুসরণ করে চলে, তাহলে তোমরা (এর ফলে) সংকটে পড়ে যাবে: কিন্তু আল্লাহ তায়ালা (তা চাননি বলেই) তোমাদের কাছে তিনি ঈমানকে প্রিয় বস্তু বানিয়ে দিয়েছেন, তোমাদের অন্তরে সে ঈমানকে (আকর্ষণীয় ও) শোভনীয় বিষয় করে রেখে দিয়েছেন, আবার তোমাদের কাছে কৃফরী, সত্যবিমুখতা ও গুনাহের কাজকে অপ্রিয় অনাকাংখিত বিষয় করে দিয়েছেন: এরাই হচ্ছে সঠিক পথের অনুসারী,

٤ وَاعْلَمُوْ آ أَنَّ فِيْكُرْ رَسُوْلَ اللَّهِ ١ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِي كَثِيْرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ الله حَبَّبَ إِلَيْكُرُ الْإِيْمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي تُلُوْبِكُرْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُرُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَ الْعِصْيَانَ وَ أُولَئِكَ مُر الرَّاشِ وَنَ لا

৮. (আসলে এ হচ্ছে) আল্লাহ তায়ালার এক মহা অনুগ্রহ ও নেয়ামত, আল্লাহ তায়ালা সর্বজ্ঞ ও প্রবল প্রজ্ঞাময়।

٨ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنَعْهَةً ، وَاللَّهُ عَلَيْهٍ ۗ مَكَيْمٍ ۗ

৯. মোমেনদের দুটো দল যদি নিজেদের মধ্যে যুদ্ধ বাধিয়ে বসে, তখন তোমরা উভয়ের মধ্যে মীমাংসা করে দেবে, অতপর তাদের এক দল যদি আরেক দলের ওপর যুলুম করে, তাহলে যে দলটি যুলুম করছে তার বিরুদ্ধেই তোমরা লড়াই করো- যতোক্ষণ পর্যন্ত সে দলটি (সম্পূর্ণত) আল্লাহর হুকুমের দিকে ফিরে না আসে, (হাঁ, একবার) যদি সে দলটি (আল্লাহর ছকুমের দিকে) ফিরে আসে তখন তোমরা দুটো দলের মাঝে ন্যায় ও ইনসাফের সাথে মীমাংসা করে দেবে এবং ভোমরা ন্যায়বিচার করবে: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ন্যায়বিচারকদের ভালোবাসেন।

٩ وَإِنْ طَالِفَتْنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَٱصْلَحُوْا بَيْنَهُهَا ج فَانْ ۖ بَغَتْ احْلُلُهُا عَلَى الْأَغْرَى فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي مَتَّى تَفِيٓءَ إِلَى أَمْ اللهِ عَ فَإِنْ فَآءَتُ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَنْلِ وَٱقْسِطُوا ﴿ أَنَّ اللَّهُ يُحِبُّ

১০. মোমেনরা তো (একে অপরের) ভাই বেরাদর. অতএব (বিরোধ দেখা দিলে) তোমাদের ভাইদের মাঝে মীমাংসা করে দাও, আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, আশা করা যায় তোমাদের ওপর দয়া ও অনুগ্রহ করা হবে।

١٠ إِنَّهَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةً فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُوْحَبُونَ ٧

১১. ওহে মানুষ! তোমরা যারা ঈমান এনেছো, তোমাদের কোনো সম্প্রদায় যেন অপর সম্প্রদায়কে (নিয়ে) কোনো উপহাস না করে. (কেননা) এমনও তো হতে পারে. (যাদের আজ উপহাস করা হচ্ছে) তারা উপহাসকারীদের চাইতে উত্তম, আবার নারীরাও যেন অন্য নারীদের উপহাস না করে, কারণ, যাদের উপহাস করা হয়, হতে পারে তারা উপহাসকারিণীদের চাইতে অনেক ভালো। (আরো মনে রাখবে), একজন আরেকজনকৈ (অযথা) দোষারোপ করবে না, আবার একজন আরেকজনক খারাপ নাম ধরেও ডাকবে না, (কারণ) ঈমান আনার পর কাউকে খারাপ নামে ডাকা একটা বড়ো ধরনের অপরাধ যারা এ আচরণ থেকে ফিরে না আসবে তারা হবে (সত্যিকার) যালেম 🛭

ا يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَى أَنْ يَّكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُرْ وَلَا نِسَاءً مِّنْ نِسَاء عَسَى أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ عَ وَلَا تَلْبِزُوْا أَنْفُسَكُرْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ ، بِئْسَ الإشرُ الْقُسُوْقُ بَعْنَ الْإِيْمَانِ ۽ وَمَنْ لَّرْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ مُرُّ الظَّلْبُونَ

১২. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা বেশী বেশী অনুমান করা থেকে বেঁচে থাকো. (কেননা) কিছু কিছু (ক্ষেত্রে) वनुमान (আসলেই) অপরাধ এবং একে অপরের (দোষ الطَّنَّ رِ إِنَّ بَعْضَ الظَّنَّ إِثْرُّ وَّلَا تَجَسَّسُوا খোঁজার জন্যে তার) পেছনে গোয়েন্দাগিরী করো না. একজন আরেকজনের গীবত করো না; তোমাদের কেউ اَيُحِبُ أَحَلُكُمُ وَلاَ يَغْتَبُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ء أَيُحِبُ أَحَلُكُمْ

١٢ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ

৪৯ সুরা আল হুজুরাত

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২৬ হা-মীম

কি তার মত ভাইয়ের গোশত খেতে পছন্দ করবে– আর (অবশ্যই) তোমরা এটা অত্যন্ত ঘৃণা করো; (এসব ব্যাপারে) আল্লাহকে ভয় করো; নিশ্চয়ই আল্লাহ তায়ালা তাওবা কবুল করে এবং তিনি একান্ত দয়ালু।

أَنْ يَّأْكُلَ لَحْرَ أَخِيْدِ مَيْتًا فَكَرِهْتُهُوْهُ ، وَاتَّقُوا اللَّهُ ﴿ إِنَّ اللَّهُ تُوَّابُّ رَّحِيرً

১৩. হে মানব সম্প্রদায়, আমি তোমাদের একটি পুরুষ ও একটি নারী থেকে সৃষ্টি করেছি, তারপর আমি তোমাদের জন্যে জাতি ও গোত্র বানিয়েছি, যাতে করে (এর মাধ্যমে) তোমরা একে অপরের সাথে পরিচিত হতে পারো, কিন্তু আল্লাহর কাছে তোমাদের মাঝে সর্বাধিক মর্যাদাসম্পন্ন ব্যক্তি হচ্ছে সে, যে (আল্লাহ তায়ালাকে) বেশী ভয় করে, অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা সব কিছু জ্ঞানেন এবং সব কিছুর (পুংখানুপুংখ) খবর রাখেন।

١٣ يَايُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنُكُرْ مِّنْ ذَكُر و أَنْثَى وَجَعَلْنَكُم شُعُوبًا و قَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ط إِنَّ أَكْمَكُمْ عَنْلَ اللَّهِ أَتْقُدِكُمْ ﴿ إِنَّ اللَّهُ

১৪. এ (আরব) বেদুইনরা বলে, আমরা তো ঈমান এনেছি: তুমি বলো. না. তোমরা (সঠিক অর্থে এখনও) ঈমান বশ্যতাই স্বীকার করেছি মাত্র, (কারণ, যথার্থ) ঈমান তো এখনো তোমাদের অন্তরে প্রবেশই করেনি: যদি তোমরা সত্যিই আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্থার আনুগত্য করো. يَلِتْكُمْ مِّنَ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا وَ إِنَّ اللَّهُ غَفُورٌ وَاللهُ عَفُورٌ وَاللهُ عَفُورٌ وَاللهُ عَفُورُ পরিমাণও লাঘব করবেন না: আল্লাহ তায়ালা নিসন্দেহে পরম ক্ষমাশীল ও একান্ত দয়ালু।

١٣ قَالَت الْإَعْرَابُ أَمَنَّا ء قُلْ لَّرْ تُؤْمِنُوْا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ﴿ وَإِنْ تُطِيْعُوا اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ لَا

১৫. সত্যিকার ঈমানদার ব্যক্তি হচ্ছে তারা, যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ওপর ঈমান আনে, অতপর (আল্লাহ তায়ালার বিধানে) সামান্যতম সন্দেহও তারা পোষণ করে না এবং জীবন ও সম্পদ দিয়ে আল্লাহর পথে জেহাদ করে: এরাই হচ্ছে সত্যনিষ্ঠ।

10 إِنَّهَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِيثَىَ أُمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمرٌّ لَمرْ يَرْتَابُوْا وَجَاهَلُوْا بِأَمُوَالِهِمرْ وَ ٱنْفُسِهِر فِي سَبِيلِ اللهِ ﴿ أُولَّنِكَ مُرُّ الصَّاعُونَ

১৬. (যারা তোমার কাছে এসেছে তাদের) তুমি বলো. তোমরা কি তোমাদের 'দ্বীন' সম্পর্কে আল্লাহ তায়ালাকে অবহিত করতে চাও: অথচ এই আকাশমন্তলী এবং এ যমীনে যা কিছু আছে তার সব কিছুই আল্লাহ তায়ালা জানেন: আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ে সম্যুক অবগত রয়েছেন।

١٦ قُلْ ٱتُعَلِّمُوْنَ اللَّهَ بِدِيْنِكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مًا فِي السَّاوْتِ وَمَا فِي الْإَرْضِ ﴿ وَاللَّهُ بكُلّ شَيْءِ عَلَيْرٌ

১৭. এরা তোমার কাছে প্রতিদান চায় এ জন্যে, তারা (তোমার) বশ্যতা স্বীকার করেছে; তুমি (তাদের) বলো, তোমাদের এ বশ্যতা স্বীকার করার প্রতিদান চাইতে আমার কাছে এসো না, বরং যদি তোমরা যথার্থ সত্যনিষ্ঠ হয়ে থাকো তাহলে (জেনে রেখো), আল্লাহ তায়ালাই তোমাদের ঈমানের পথে পরিচালিত (করে তোমাদের ধন্য) করেছেন।

١٤ يَهُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَهُوا م قُلْ لا تَهُنُّواْ عَلَى السَّلَامَكُم ع بَلِ اللَّهُ يَهُنَّ عَلَيْكُم أَنْ هَلُ كُورُ لِلْإِيْمَانِ إِنْ كُنْتُورُ صٰلِقِينَ

١٨ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَرُ غَيْبَ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ 6 शृथिवीत • إِنَّ اللَّهَ يَعْلَرُ غَيْبَ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ যাবতীয় অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে অবগত আছেন, এ যমীনে তোমরা যা করে বেড়াও তার সব কিছুই আল্লাহ তায়ালা পর্যবেক্ষণ করেন।

وَ اللَّهُ بَصِيْرٌ اللَّهُ بَصِيْرٌ اللَّهُ الْعَمْلُونَ ع



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৬ হা-মীম |
|--|---|
| সূরা ক্রাফ | سُوْرَةً ق مُكِيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৪৫, ৰুকু ৩ | أيَاتُ : ٣٥ رُكُوعُ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | يِشْرِ اللهِ الرَّحْسٰ، الرَّحِيْمِ |
| ক্বা[*]ফ, মর্যাদাসম্পন্ন কোরআনের শপথ (অবশ্যই আমি তোমাকে রসূল করে পাঠিয়েছি), | ا ق م و الْقُرابِ الْهَجِيْدِ |
| ২. (এ কথা অনুধাবন না করে) বরং তারা বিশ্বয়বোধ করে, তাদের নিজেদের মাঝ থেকে (কি করে) একজন সতর্ককারী (নবী) তাদের কাছে এলো, অতপর অবিশ্বাসীরা (এও) বলে, এ তো (আসলেই) একটা আশ্বর্যজনক ব্যাপার, | ٢ بَلْ عَجِبُواۤ أَنْ جَاءَهُرْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُرْ فَقَالَ الْكَفِرُوْنَ هِنْهُرْ فَقَالَ الْكَفِرُوْنَ هَٰذَا شَيْءً عَجِيْبٌ ج |
| এটা কি এমন যে, আমরা যখন মরে যাবো এবং আমরা যখন মাটি হয়ে যাবো (তখন পুনরায় আমাদের জীবন দান করা হবে), এ তো সত্যিই এক সুদ্রপরাহত ব্যাপার! | ا ءَالِذَا مِثْنَا وَكُنَّا تُوَابًا ۚ ذَٰلِكَ رَجْعً ۖ بَعِيْلً |
| ৪. আমি তো এও জানি, (মৃত্যুর পর) তাদের (দেহ) থেকে কতোটুকু অংশ যমীন বিনষ্ট করে, আর আমার কাছে একটি গ্রন্থ আছে (যেখানে এ সব বিবরণ) সংরক্ষিত রয়েছে। | ٣ قَلْ عَلِهْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُرْ عِ وَعِنْهَا نَا كِتْبُ مَفِيْةً |
| ৫. উপরস্থু এদের কাছে যখনি সত্য এসে হায়ির হয়েছে, তখনি তারা তা প্রত্যাখ্যান করেছে, অতপর তারা সংশয়ে দোদ্ল্যামান (থাকে)। | ٥ بَلْ كَنَّابُو اللَّهَ فِي لَمَّا جَاءَمُر فَمُر فِي ﴿ |
| ৬. এ লোকগুলো কি কখনো তাদের ওপরে (ভাসমান) আকাশের দিকে তাকিয়ে দেখেনি, কিভাবে তা আমি বানিয়ে রেখেছি এবং কি (অপরূপ) সাজে আমি তা সাজিয়ে রেখেছি, কই, এর কোথাও কোনো (ক্ষুদ্রতম) ফাটলও তো নেই! | اَفَلَر يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُر كَيْفَ بَنَيْنُهَا وَزَيَّتُهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ |
| ৭. আমি যমীনকে বিছিয়ে দিয়েছি, (নড়াচড়া থেকে রক্ষা করার জন্যে) আমি তার মধ্যে স্থাপন করেছি ময়বুত (ও | 4 وَالْاَرْضَ مَنَدُنْهَا وَالْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ |
| অনড়) পাহাড়সমূহ, আবার এ যমীনে আমি উদগত করেছি সব ধরনের চোখ জুড়ানো উদ্ভিদ, | وَٱقْبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ البَوِيْجِ لا |
| ৮. (মূলত) প্রতিটি মানুষ- যে আনুগত্যের দিকে ফিরে আসতে চায়, (এর প্রতিটি জ্লিনিসই) তার চোখ খুলে দেবে এবং তাকে (আয়ায় অয়িড়ের) পাঠ মনে করিয়ে দেবে। | ٨ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ |
| ৯. আকাশ থেকে আমি বরকতপূর্ণ পানি অবতীর্ণ করেছি এবং তা দিয়ে উদ্যানমালা ও এমন শস্যরাজি পয়দা করেছি, যা (কেটে কেটে) আহরণ করা হয়; | ٩ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبْرِكًا فَاتَبْتَنَا بِهِ جَنَّسٍ وَّمَبُّ الْحَصِيْنِ ٧ |
| ১০. (আরো পয়দা করেছি) উঁচু উঁচু খেজুর বৃক্ষ, যার গায়ে গুল্থ গুল্থ খেজুর (সাজানো) রয়েছে, | ١٠ وَ النَّحْلَ بُسِفْتِ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْلٌ ٧ |
| ১১. (এগুলো আমি) বান্দাদের জীবিকা (হিসেবে) দান করেছি এবং আমি তা দিয়ে মৃত ভূমিকে জীবন দান করি; এমনিই (মৃত মানুষদের কবর থেকে) বেরিয়ে আসার ঘটনাটি (সংঘটিত হবে)। | الرَّزْقًا لِلْعِبَادِ لا وَالْمَيْيْنَا بِهِ بَلْنَةً مَّيْتًا ، كَنْالِكَ الْخُرُوجُ |
| ১২. এর আগেও নৃহের জাতি, রাস্-এর অধিবাসী ও সামুদ জাতির লোকেরা (তাদের নীদের) অস্বীকার করেছে, | ١٢ كَنَّ بَسْ قَبْلَهُمْ قُواً نُوحٍ وَّاسْعُبُ الرِّسِ وَتُهُودُ ٧ |
| ৫০ সূরা ক্বাফ | মন্যিল ৭ |

| কোর্যান প্রীফ্র সমূহ সরল বাংলা জানবাদ | পারা ২৬ হা-মীম |
|---|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ ১৩. (অস্বীকার করেছে) আ'দ, ফেরাউন ও লৃতের | ١٣ وَعَادُ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ٧ |
| সম্প্রদায়ও, ১৪. বনের অধিবাসী এবং তুব্বা সম্প্রদায়ের লোকেরাও | ١٣ وَّ أَصْحُبُ الْإَيْكَةِ وَقَوْاً تُبَّعٍ م كُلُّ كَنَّبَ |
| (তাই করেছে); এরা সবাই আল্লাহর রস্লদের মিথ্যাবাদী বলেছে, অতপর তাদের ওপর (আমার) প্রতিশ্রুত আযাব | الرَّسُ فَحَقَّ وَعِيْدِ |
| আপতিত হয়েছে। ১৫. আমি কি মানুষদের প্রথমবার সৃষ্টি করতে গিয়ে | ١٥ أَنَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْإَوَّلِ ، بَلْ مُرْ فِيْ |
| (এতোই) ক্লান্ত হয়ে পড়েছি যে, (এরা) আমার নতুন সৃষ্টি করার কাজে সন্দেহ পোষণ করছে! | لَبْسِ مِّنْ هَلْقِ جَرِيْدٍ ع |
| ১৬. নিসন্দেহে আমি মানুষদের সৃষ্টি করেছি, তার মনের | |
| কোণে যে খারাপ চিন্তা উদয় হয় সে সম্পর্কেও আমি জ্ঞাত আছি, (কারণ) আমি তার ঘাড়ের রগ থেকেও তার অনেক কাছে (অবস্থান করি)। | الْ وَلَقَلْ عَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوسُوسُ بِهِ نَفْسُهُ ع وَنَحْنُ اَقْرَبُ اللهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ |
| ১৭. (এই সরাসরি জ্ঞান ছাড়াও) সেখানে আরো দু'জন (ফেরেশতা)– একজন তার ডানে আরেকজন তার বামে বসে (তার প্রতিটি তৎপরতা সংরক্ষণ করার কান্ধে নিয়োজিত) আছে। | ا إِذْ يَتَلَقَّى الْهُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَوِيْنِ وَعَنِ الشِّهَالِ تَعِيْلٌ |
| ১৮. (ক্ষুদ্র) একটি শব্দও সে উচ্চারণ করে না, যা সংরক্ষণ করার জন্যে একজন সদা সতর্ক প্রহরী তার পাশে নিয়োজিত থাকে না! | ١٨ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَنَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْلٌ |
| ১৯. মৃত্যু যন্ত্রণার মুহূর্তটি সত্যিই এসে হাযির হবে (তখন তাকে বলা হবে, ওহে নির্বোধ), এ হচ্ছে সে (মুহূর্ত)-টা, যা থেকে তুমি পালিয়ে বেড়াতে! | 19 وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْسِ بِالْحَقِّ ﴿ ذَٰلِكَ مَا كُنْسَ مِنْهُ تَحِيْلُ |
| ২০. অতপর (সবাইকে একত্রিত করার জন্যে) শিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে (তখন তাদের বলা হবে), এ হচ্ছে সেই শান্তির দিন (যার কথা তোমাদের বলা হয়েছিলো)! | ٢٠ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ﴿ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ |
| ২১. (সেদিন) প্লুতিটি মানুষ (আল্লাহর আদালতে এমনভাবে) হাযির হবে যে, তাকে হাঁকিয়ে নিয়ে যাবার জন্যে সাথে একজন (ফেরেশতা) থাকবে, অপরজন হবে (তার যাবতীয় কর্মকান্ডের প্রত্যক্ষ) সাক্ষী। | ٢١ وَجَاءَٰتُ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَانِقٌ وَّشَهِيْدُ |
| ২২. (একজন বলবে, এ হচ্ছে সে দিন,) যে (দিন) সম্পর্কে তুমি উদাসীন ছিলে, এখন আমরা তোমার (চোধের সামনে) থেকে | ١٠٠ تعل دين في عقدة مِن هن العسف |
| তোমার সে পর্দা সরিয়ে দিয়েছি, অতএব, (আজ) তোমার দৃষ্টিশক্তি হবে অত্যন্ত প্রখর (সব কিছুই এবন তুমি দেখতে পাবে)। | عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْ مَرِيْلٌ |
| ২৩. তার (অপর) সাথী (ফেরেশতা) বলবে (হে মালিক), এ হচ্ছে (তোমার আসামী, আর এ হচ্ছে) আমার কাছে রক্ষিত (তার জীবনের) নথিপত্র; | ٢٣ وَقَالَ قَرِيْنُهُ مِٰنَا مَا لَكَى عَتِيْلٌ ١ |
| ২৪. (অতপর উভয় ফেরেশতাকে বলা হবে,) তোমরা দু'জন মিলে একে এবং (এর সাথে) প্রতিটি ঔদ্ধত্য প্রদর্শনকারী কাফেরকে জাহান্লামে নিক্ষেপ করো, | ٣٣ ٱلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْلٍ لا |
| ২৫. (কেনা) এরা ভালো কাজে বাধা দিডো,(যাত্রতা) সীমালংঘ করতো, (শ্বয়ং আল্লাহর ব্যাপারে) এরা সন্দেহ পোষণ করতো, | ٢٥ مَّنَّاعٍ لِلْحَيْرِ مُفْتَنٍ مِّرِيْبِ ٢٧ |
| ২৬. যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্য কিছুকে মাবুদ বানিয়ে নিতো, তাকেও (আজ) জাহান্নামের কঠিন আযাবে নিক্ষেপ করো। | ٢٦ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ اللَّهِ الْمَّا الْحَرَ فَٱلْقِيدُ فِي الْعَنَابِ الشَّرِيْدِ |
| ২৭. (এ সময়) তার সহচর (শয়তান) বলে উঠবে, হে আমাদের মালিক, আমি (কিন্তু) এ ব্যক্তিটিকে (তোমার) | ٢٠ قَالَ قَرِيْنُهُ رَبَّنَا مَا ٓ أَطْفَيْتُهُ وَلٰكِن كَانَ |
| ৫০ সূরা স্থাফ ৫৩৫ | মন্যিল ৭ |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৬ হা-মীম |
|---|--|
| বিদ্রোহী বানাইনি, (বস্তুত) সে নিজেই (ঘোর) বিভ্রান্তিতে | |
| নিমজ্জিত ছিলো। | فِیْ ضَلٰلٍ ا بَعِیْںِ |
| ২৮. আল্লাহ তায়ালা বলবেন, এখন তোমরা আমার | ٢٨ قَالَ لِا تَخْتَصِبُوْا لَىٰيَّ وَقَلْ قَلَّمْتُ |
| সামনে বাকবিতভা করো না, আমি তো আগেই | الْکُمُرُ بِالْوَعِينِ |
| তোমাদের (আছকের আয়াব সম্পর্কে) সতর্ক করে দিয়েছিলাম। | |
| ২৯. আমার এখানে কোনো কথারই রদবদল হয় না, আমি বান্দাদের ব্যাপারে অবিচারকও নই (যে, সতর্ক না করেই | ٢٩ مَا يُبَنَّالُ الْقَوْلُ لَنَىَّ وَمَا ۖ أَنَا بِظَلَّا إِ |
| তাদের আযাব দেবো)! | لِلْغَبِيْنِ ع |
| ৩০. সেদিন আমি জাহান্লামকে (লক্ষ্য করে বলবো, তুমি | ٣٠ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّى َ مَلِ امْتَكَدْتِ وَتَقُولُ |
| কি সত্যি সত্যিই পূর্ণ হয়ে গেছোঃ জাহান্নাম বলবে, (হে | ا دُرُ مُون دِبهتر تنِ استعرف وعنون |
| মালিক, এখানে আসার মতো) আরো কেউ আছে কিং | هُلَّ مِن مُزِيدٍ |
| ৩১. (অপরদিকে) জান্নাতকে পরহেযগার লোকদের কাছে | ٣١ وَٱزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ |
| নিয়ে আসা হবে, (সেদিন তাদের জ্বন্যে তা) মোটেই দূরে (-র বস্তু) হবে না। | ١٠ وارتعت المجته تِلهموني عير بعِينٍ |
| ৩২. (জান্নাতকে দেখিয়ে বলা হবে,) এ হচ্ছে সেই | |
| জায়গা, যার প্রতিশ্রুতি তোমাদের দেয়া হয়েছিলো, (এ | ٣٢ هٰنَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ آوَّابٍ حَفِيْظٍ ٤ |
| স্থান) সে ধরনের প্রতিটি মানুষের জন্যে (নির্দিষ্ট), যে (আল্লাহর পথে) ফিরে আসে এবং (তা) হেফাযত করে। | ** * * * * * * |
| ৩৩. (এ ব্যবস্থা তার জন্যে,) যে না দেখে পরম দয়ালু | ٣٣ مَنْ خَشِيَ الرَّحْسَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ |
| আল্লাহকে ভয় করেছে এবং বিনয় চিত্তে আল্লাহ তায়ালার | ا من عشى الرحين بالغيب وجاء |
| কাছে হাযির হয়েছে, | ۚ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۗ _٧ |
| ৩৪. (সেদিন তাদের বলা হবে, হাঁ, আজ) তোমরা একান্ত | 14. 1. 4111: 1- 1-15. WW |
| প্রশান্তির সাথে এতে দাখিল হয়ে যাও; এ হচ্ছে (তোমাদের) অনন্ত যাত্রার (প্রথম) দিন। | ٣٣ ادْمُلُوْمَا بِسَلْمٍ ۥ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ |
| ৩৫. সেখানে তারা যা যা পেতে চাইবে তার সব তো | |
| পাবেই, (এর সাথে) আমার কাছে তাদের জন্যে আরো | ٣٥ لَهُرْمًّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَنَيْنَا مَزِيْلً |
| থাকবে (অপ্রত্যাশিত পুরস্কার)। | • |
| ৩৬. আমি তাদের আগেও অনেক মানবগোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছি, যারা ছিলো শক্তি সামর্থে এদের চাইতে | ٣٦ وكَمْرُ ٱهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنِ هُمْ ٱهَنَّ مِنْهُرُ بَطْشًا فَنَقَّبُواْ فِي الْبِلَادِ مَّ هَلُ مِنْ |
| অনেক বেশী বড়ো, (দুনিয়ার) শহর বন্দরগুলো তারা চষে | مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادَ مَ هَلْ مِنْ |
| বেড়িয়েছে; কিন্তু (আল্লাহর আযাব থেকে তাদের) কোনো | (100.504 |
| পলায়নের জায়গা কি ছিলো! | <u></u> |
| ৩৭. এর মাঝে সে ব্যক্তির জন্যে (প্রচুর) শিক্ষণীয় বিষয় রয়েছে, যার (কাছে একটি জীবস্ত) মন রয়েছে, অথবা যে | ٣٤ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَنِكُرِى لِيَنَ كَانَ لَهُ |
| সংগ্ৰহে, বাগ্ন (কাহে প্ৰকাচ জাবত) মন গ্ৰহেছে, অববা বে ব্যক্তি একাণ্ডচিত্তে (সে শিক্ষণীয় বিষয়সমূহ) ভনতে চায়। | تَلْبُّ أَوْ ٱلْقَى السَّبْعَ وَمُوَّ شَهِيْدٌ |
| ৩৮. আমি আকাশমালা, পৃথিবী ও উভয়ের মধ্যবর্তী যা | |
| কিছু আছে তার সব কিছু ছয় দিনে সৃষ্টি করেছি, কোনো | ٢٨ وَلَقَنُ غَلَقْنَا السَّاوِٰ فِ وَالْأَرْضَ وَمَا |
| ধরণের ক্লান্তিই আমাকে স্পর্শ করেনি। | بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ إَيَّا إِن وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوْبٍ |
| ৩৯. অতএব (হে নবী, সৃষ্টি সংক্রান্ত ব্যাপারে) এরা যা বলে তাতে | ٣٩ فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُوْلُونَ وَسَبِّحْ بِحَهْنِ |
| তুমি ধৈর্য ধারণ করৌ, তুমি (যথাযথ) প্রশংসার সাথে তোমার মালিকের পবিত্রতা ও মাহাত্ম্য ঘোষণা করো– | |
| সূর্য উদয়ের আগে এবং সূর্য অন্ত যাবার আগে, | رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّبْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ |
| ৪০. রাতের একাংশেও তাঁর পবিত্রতা (ও মহিমা) ঘোষণা | ٨٥ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ ١ |
| করো এবং সাজ্ঞদা আদায়ের কাজ শেষ করে (পুনরায়) | ٣٠ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحُهُ وَٱدْبَارَ السُّجُوْدِ |
| তাঁর তাসবীহ পাঠ করো। | ^ / Z |
| ৪১. কান পেতে শোনো, (সেদিন দূরে নয়) যেদিন একজন আহ্বানকারী একান্ত কাছে থেকে (সবাইকে) ডাকতে থাকবে, | ٣١ وَاسْتَمِعْ يَوْمُ كُنَادِ الْهُنَادِ مِنْ مُّكَانٍ قَرِيْبٍ لا |
| ৪২. সেদিন তারা কেয়ামতের মহাগর্জন ঠিকমতোই | ٣٢ يُّوْمَ يَسْعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ، ذَلِكَ |
| ৫০ সূরা ক্বাফ ৫৩৬ | |
| 4 (09) | |

| The state of the s | |
|--|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৬ হা-মীম |
| শুনতে পাবে; সে দিনটিই (হবে কবর থেকে) উত্থিত হবার দিন। | يَوْاً الْغُرُوجِ |
| ৪৩. (সত্য কথা হচ্ছে,) আমিই জীবন দান করি, আমিই মৃত্যু ঘটাই এবং (সবাইকে আবার) আমার কাছেই ফিন্তে আসতে হবে। | ا ا ا د د ا د د د د د د د د د د د د د د |
| 88. সেদিন তাদের ওপর থেকে (কবরের) মাটি ফেটে যাবে, যখন তারা (দ্রুত হাশরের মাঠের দিকে) দৌড়াতে থাকবে; (বলা হবে,) এ হচ্ছে হাশরের দিন, (মূলত) আমার জন্যে এটি একটি সহজ কাজ। | الما يوا نسفى الأرض عنهر سراعا الديك |
| ৪৫. (হে নবী,) এরা যা কথাবার্তা বলে তার সব কিছুই আমি জানি, তুমি তো তাদের ওপর জোর জবরদন্তি করার কেউ নও। অতপর এ কোরআন দিয়ে তুমি সে ব্যক্তিবে সদৃপদেশ দাও, যে আমার শান্তিকে ভয় করে। | ا ١٠٠٠ نحن أعلر بِها يعولون وما أنت عليهِم |
| | مدرم با رسمه |
| স্রা আয যারিয়াত | سُوْرَةُ النَّرِيْتِ مَكِيدً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৬০, ৰুকু ৩ | أَيَاتٌ : ٦٠ رُكُوْعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِسْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. (ঝঞ্জাবিক্ষুক্ক) বাতাসের শপথ, যা ধুলাবালি উড়িয়ে নিয়ে যায়, | ١ وَالنَّارِيٰتِ ذَرُوًا ٧ |
| ২. অতপর (মেঘমালার) শপথ যা পানির বোঝা বয়ে চলে, | ٢ فَالْحُولُتِ وِثْرًا لا |
| ৩. (জলযানসমূহের) শপথ যা ধীরে ধীরে এগিয়ে চলে, | ٣ فَالْجُرِيْتِ يُسُرًّا ٧ |
| ৪. অতপর তাদের (ফেরেশতাদের) শপথ, যার | ٣ فَالْهُقَسِّينِ أَمْرًا لا |
| (আল্লাহর) আদেশ মোতাবেক প্রত্যেক বস্তু বন্টন করে, | ١ قالهفسِمتِ أمرًا لا |
| ৫. (কেয়ামতের) যে দিনের ওয়াদা তোমাদের সাথে কর হচ্ছে তা (অবশ্যয়ভাবী) সত্য, | ۵ إِنَّهَا تُوْعَدُونَ لَصَادِقٌ ٧ |
| ৬. বিচার আচারের একটা দিন অবশ্যই আসবে; | ٢ وَّإِنَّ الرِّيْنَ لَوَاقِعٌ ١ |
| ৭. বহু কক্ষ বিশিষ্ট আকাশের শপথ, | ٤ وَالسَّمَاءِ ذَاسِ الْحُبُكِ ٧ |
| ৮. তোমরাও (কেয়ামতের ব্যাপারে) নানা কথাবার্তার মধ্যে (নিমজ্জিত) রয়েছো; | ٨ إِنَّكُرْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ٧ |
| ৯. (মূলত) যে ব্যক্তি সত্যম্রষ্ট সে ব্যক্তিই (কোরআনকে পরিত্যাগ করেছে; | ٩ يَّوْفَكَ عَنْدُ مَنْ أُفِكَ ا |
| ১০. ধ্বংস হোক, যারা শুধু অনুমানের ওপর ভিত্তি করে (কথা বলে), | ١٠ قُتِلَ الْخَرِّ امُوْنَ ٧ |
| ১১. (সর্বোপরি) যারা জাহেলিয়াতে (নিমজ্জিত হয়ে) মূল সত্য থেকে উদাসীন হয়ে পড়েছে, | ١١ الَّذِيْنَ هُرُ فِي غَبْرَةٍ سَاهُوْنَ ٧ |
| ১২. এরা (তামাশার ছলে) জিজ্ঞেস করে, বিচারের দিনটি কবে আসবে? | المستلون ايان يو ۱ الريين ا |
| ১৩. (এদের তুমি বলো,) যেদিন তাদের আগুনে দগ্ধ কর হবে (সেদিন কেয়ামত হবে)। | اليواهر على النارِ يعتبون |
| ১৪. (সেদিন তাদের বলা হবে, এবার) তোমর তোমাদের শান্তি ভোগ করতে থাকো; এ হচ্ছে (সেদিন) | ١٢ ذُوْتُوا فِتْنَتَكُرْ ، هٰذَا الَّذِي كُنْتُر بِهِ |
| ৫১ সূরা আয় যারিয়াত | |
| | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৬ হা-মীম |
|--|---|
| যে জন্যে তোমরা খুব তাড়াহুড়ো করছিলে! | تَسْتَعْجِلُونَ |
| ১৫. যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে, তারা (আল্লাহ তায়ালার) জান্নাতে ও ঝর্ণাধারায় (চির শাস্তিতে) থাকবে, | 10 إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِي جَنَّتِ وَعُيُونٍ لِا |
| ১৬. সেদিন আল্লাহ তায়ালা তাদের যা (যা পুরস্কার) দেবেন, তা সবই তারা (সানন্দ চিন্তে) গ্রহণ করতে থাকবে; নিসন্দেহে এরা আগে সৎকর্মশীল ছিলো; | الخذين مَ الْتُهُر رَبُّهُر النَّهُر كَانُوا مَصْنِين اللَّهُ مُحْسِنِين اللَّهُ اللَّهُ مُحْسِنِين اللَّهُ اللَّ |
| ১৭. তারা রাতের সামান্য অংশ ঘুমিয়ে কাটাতো। | ١٠ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ |
| ১৮. রাতের শেষ প্রহরে তারা আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করতো : | ١٨ وَبِالْإَسْحَارِهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ |
| ১৯. (এরা বিশ্বাস করতো,) তাদের ধন সম্পদে প্রার্থী ও বঞ্চিত লোকদের অধিকার রয়েছে। | ١٩ وَفِي أَمُوالِهِر حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْهَحُرُوْ إ |
| ২০. যারা (নিচিতভাবে) বিশ্বাস করতো, তাদের জন্যে পৃথিবীর মাঝে (আল্লাহকে চেনা জানার) অসংখ নিদর্শন (ছড়িয়ে) রয়েছে। | ٢٠ وَفِي الْأَرْضِ أَيْتٌ لِلْمُوْقِنِيْنَ لا |
| ২১. তোমাদের নিজেদের (এ দেয়ের) মধ্যেও তো (আল্লাহকে চেনার অসংখ্য নিদর্শন) রয়েছে; তোমরা কি দেখতে পাও নাঃ | ا ا وفِي الْفَسِكْرِ الْفَلَا تَبْصِرُونَ |
| ২২. আকাশের মাঝে রয়েছে তোমাদের রেযেক, তোমাদের দেয়া যাবতীয় প্রতিশ্রুতি। | ٢٢ وَفِي السُّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَكُونَ |
| ২৩. অতএব এ আসমান যমীনের মালিকের শপথ, এ (গ্রন্থ)-টা নির্ভুল, ঠিক যেমনি তোমরা (এখন) একে | ٢٣ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهٌ لَحَقٌّ مِّثْلَ |
| অপরের সাথে কথাবার্তা বলছো। | مَا ٱلْكُرْ تَنْطِقُونَ ع |
| ২৪. (হে নবী,) তোমার কাছে ইবরাহীমের সেই সম্মানিত মেহমানদের কাহিনী পৌছেছে কিঃ | ٢٣ مَلُ ٱتنكَ مَنِيْتُ مَيْفِ إِبْرُهِيْمَ |
| विवयमान्यात्र प्रायमा द्रादिद्देश्च प्रमु | الْهُكْرَمِيْنَ ر |
| ২৫. যখন তারা তার ঘরে প্রবেশ করলো, তখন তারা (তাকে) 'সালাম' পেশ করলো; (সেও উত্তরে) বললো | ٢٥ إِذْ دَهَلُوْ عَلَيْهِ فَقَالُوْ اسَلَمًا وَ قَالَ سَلَمٌ عَ |
| সালাম, (কিন্তু তার কাছে এদের একটি) অপরিচিত দল বলে মনে হলো, | قَوْ م ً مُّنْكُرُونَ عَ |
| ২৬. এরপর (চুপে চুপে) সে নিজ ঘরের লোকদের কাছে চলে গেলো, কিছুক্ষণ পর সে একটি (স্থুনা করা) মোটা তাজা বাছুরসহ (ফিরে) এলো, | ٢٦ فَرَاغَ إِلَّى أَهْلِهِ فَجَآءً بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ٧ |
| ২৭. অতপর সে তা তাদের সামনে পেশ করলো এবং বললো, কি ব্যাপার, তোমরা খাচ্ছো না যে, | ٢٠ فَقَرَّبَهُ ۚ إِلَيْهِي ْقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ رَ |
| ২৮. (তাদের খেতে না দেখে) সে মনে মনে তাদের | ٢٨ فَأَوْجَسَ مِنْهُرْ غِيْفَةً ، قَالُوْ الاَ تَخَفْ ، |
| ব্যাপারে ভয় পেলো, (তার ভয় দেখে) তারা বললো, তুমি ভয় করো না; তার সাথে তারা তাকে গুণধর একটি পুত্র সম্ভানের সুসংবাদ দিলো। | وَبَشَّرُوهُ لِغُلْمٍ عَلِيْمٍ |
| ২৯. এটা তনে তার স্ত্রী চীৎকার করতে করতে সামনে | ٢٩ فَٱقْبَلَتِ إِمْرَاتُهُ فِي مَرَّةٍ فَصَدَّتْ وَجَهَهَا |
| এলো এবং (খুশীতে) নিজের মাথায় হাত মারতে মারতে বললো (কি ভাবে তা সম্ভব), আমি তো বৃদ্ধা এবং বদ্ধা। | وَقَالَتْ عَجُوْزً عَقِيْرً |
| ৩০. (তারা বদলো,) হাঁ তোমার ব্যাপারটি এভাবেই হবে, তোমার মালিক বলেছেন; তিনি প্রবল প্রজ্ঞাময়, তিনি সব | ٣٠ قَالُواْ كَنْ لِكِ ٢ قَالَ رَبُّكِ ١ إِنَّهُ مُو |
| কিছু জানেন (এটা তাঁর জন্যে অসম্ভব কিছু নয়)। | الْحَكِيْرُ الْعَلِيْرُ |
| ৫১ সূরা আয যারিয়াত | मनियल १ |

৫১ সূরা আয যারিয়াত

বাঁচাতেও পারলো না.

পডলো এবং তারা চেয়েই থাকলো।

৪৫. (আযাবের সামনে) তারা (একটুখানি) দাঁড়াবার

শক্তিও পেলো না এবং এ আযাব থেকে নিজেদের তারা

(dol)

भनियल १ अनियल १

٣٥ فَهَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَا } وَّمَا كَانُوْا

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ঝ্বালা ফামা |
|---|---|
| ৪৬. এর আগেও (বিদ্রোহের জন্যে আমি) নূহের জাতিকে (ধ্বংস করেছিলাম); নিসন্দেহে তারাও ছিলো একটি পাপী সম্প্রদায়। | ٢٦ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ ، إِنَّهُرْ كَانُوْا قَوْمًا فَسِقِيْنَ ع |
| 8৭. আমি (আমার) হাত দিয়েই আসমান বানিয়েছি, (নিসন্দেহে) আমি মহান ক্ষমতাশালী। | ٣٠ وَالسَّهَاءُ بَنَيْنُهَا بِآيْلٍ وَّإِنَّا لَمُوْسِعُونَ |
| ৪৮. আমি এ যমীনকেও (তোমাদের জন্যে) বিছিয়ে দিয়েছি, (তোমাদের সুবিধার জন্যে) আমি একে কতো সুন্দর করেই না (সমতল) করে রেখেছি! | ٣٨ وَالْأَرْضَ فَرَشَنْهَا فَنِعْمَ الْهَاهِنُّوْنَ |
| ৪৯. (সৃষ্টি জগতের) প্রত্যেকটি বস্তু আমি জোড়ায় জোড়ায় পয়দা করেছি, যাতে করে (এ নিয়ে) তোমরা চিন্তা গবেষণা করতে পারো। | ٣٩ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَنَكَّرُوْنَ |
| ৫০. অতএব তোমরা (এ সবের আসল স্রষ্টা) আল্পাহ তায়ালার দিকেই ধাবিত হও; আমি তো তাঁর পক্ষ থেকে (আগত) তোমাদের জন্যে সুস্পষ্ট সতর্ককারী মাত্র, | ۵۰ فَفِرُّوْاً إِلَى اللهِ لَا إِنِّىْ لَكُرْ مِّنْهُ نَلِيْرُ مُّبِيْنُ عَ |
| ৫১. তোমরা আল্লাহ তায়ালার সাথে অন্য কাউকে মাবুদ বানিয়ে নিয়ো না; আমি তো তোমাদের জন্যে তাঁর (পক্ষ) থেকে একজন সুস্পষ্ট সাবধানকারী মাত্র, | ٥١ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللّهِ اِلْمًا أَخَرَ النِّي لَكُرْ مِّنْهُ نَٰلِيْرٌ مُّبِيْنَ ۚ ج |
| ৫২. (রসূলদের ব্যাপারটি) এমনটিই (হয়ে এসেছে), এর আগের মানুষদের কাছে এমন কোনো রসূল আসেনি, যাদের এরা যাদুকর কিংবা পাগল বলেনি, | ٥٢ كَنَالِكَ مَا اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِرْ مِّنْ رَّرُولِ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ عَ |
| ৫৩. (একি ব্যাপার!) এরা কি একে অপরকে এই একই পরামর্শ দিয়ে এসেছে (যে, বংশানুক্রমে সবাই একই কথা বলছে,) না, (আসলেই) এরা ছিলো সীমালংঘনকারী জাতি, | ٥٣ أَتُواصَوْا بِهِ عَ بَلْ هُرْ قَوْمٌ طَاعُونَ عَ |
| ৫৪. অতএব (হে নবী), তুমি এদের উপেক্ষা করো, অতপর (এন্ধনে) তুমি (কোনোক্রমেই) অভিযুক্ত হবে না, | ۵۴ فَتَوَلَّ عَنْهُرْ فَهَ ٓ أَنْتَ بِهَلُوْ إِ ق |
| ৫৫. তুমি (মানুষদের আল্লাহ তায়ালার পথে) উপদেশ দিতে থাকো, অবশ্যই উপদেশ ঈমানদারদের উপকারে আসে। | ٥٥ وَّذَكِّرْ فَإِنَّ النِّكْرُى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ |
| ৫৬. আমি মানুষ এবং জ্বিন জাতিকে আমার এবাদাত করা ছাড়া অন্য কোনো উদ্দেশে সৃষ্টি করিনি। | ٥٦ وَمَا غَلَقْتُ الْجِيُّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ |
| ৫৭. আমি তো তাদের কাছ থেকে কোনো রকম জীবিকা দাবী করি না, তাদের কাছ থেকে আমি এও চাই না, তারা আমাকে খাবার যোগাবে। | ۵۵ مَا آرِيْكُ مِنْمُرْ مِّنَ رِّزْقٍ وَّمَا آرِيْكُ اَنْ يَّلْمِهُونِ عَلَى الْمَالُونِ وَمَا الْمِنْ الْمَالُونِ وَالْمَا الْمَالُونِ وَالْمَا الْمَالُونِ وَالْمَا الْمَالُونِ وَالْمَا الْمَالُونِ وَالْمَالُونِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِيلُونِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمُ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمُ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمَالِمِي وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمِ وَالْمِلْمُ وَالْمِلْمِي وَالْمِلْمِلْمِلْمِ وَالْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلُونِ وَالْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِلْمِ |
| ৫৮. নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালাই জীবিকা সরবরাহকারী, তিনি মহাপরাক্রমশালী, প্রবল ক্ষমতার অধিকারী। | ٥٨ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرِّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْهَتِيْنُ |
| ৫৯. অতএব যারা সীমালংঘনকারী যালেম তাদের জন্যে প্রাপ্য আযাবের অংশ ততোটুকুই নির্দিষ্ট থাকবে– | ٥٩ فَانَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ |
| যতোটুকু তাদের পূর্ববর্তী (যালেম) লোকেরা ভোগ করেছে, অতপর (আযাবের ব্যাপারে) তারা যেন খুব তাড়াহুড়ো না করে। | أَصْحُبِهِ ﴿ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ |
| ৬০. দুর্জোগ (ও ভোগান্তি) তো তাদের জ্বন্যেই যারা শেষ বিচারের দিনকে অস্বীকার করেছে, যার প্রতিশ্রুতি তাদের | ٦٠ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَّوْمِهِرُ الَّذِينَ |
| (বার বার) দেয়া হয়েছে। ৫১ সূরা আয যারিয়াত | يوغلون ع |
| ৫১ সূরা আয় যারিয়াত | মন্যিল ৭ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফা মা |
|--|--|
| ২০. তারা সারিবদ্ধভাবে পাতা আসনে হেলান দেয়া অবস্থায় সমাসীন হবে, আর আমি সুন্দর সুন্দর চোখবিশিষ্ট | ٢٠ مُتَّكِئِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّهْنَهُرْ |
| সুন্দর হুরের সাথে তাদের মিলন ঘটিয়ে দেবো। | بِحُوْرٍ عِيْنٍ |
| ২১. যে সব মানুষ নিজেরা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং তাদের সম্ভানরাও এ ঈমানের ব্যাপারে তাদের | ٢١ وَالَّذِينَ أَمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ |
| অনুবর্তন করেছে, আমি (সেদিন জান্নাতে) তাদের সন্তান সন্ততিদের তাদের (নিজ নিজ পিতা মাতার) সাথে | بِإِيْهَانٍ ٱلْحَقْنَا بِهِرْ ذُرِّيَّتَهُرْ وَمَّا ٱلْتَنْهُرْ |
| মিলিয়ে দেবো, আর এ জন্যে আমি তাদের (পিতা মাতার) পাওনার কিছুই হ্রাস করবো না, (বস্তুত) প্রত্যেক | مِّنْ عَمَلِهِرْ مِّنْ شَيْءٍ ﴿ كُلُّ امْرِئْ بِهَا كَسَبَ |
| ব্যক্তিই নিজ নিজ কর্মফলের হাতে বন্দী হয়ে আছে। | رمِین |
| ২২. (জান্নাতে) আমি তাদের এমন (সব ধরনের) ফলমূল ও গোশত (দিয়ে জাহার্য) পরিবেশন করবো যা তারা পেতে চাইবে। | ٢٢ وَأَشَدَنْهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ |
| ২৩. সেখানে তারা একে অপরের কাছ থেকে পেয়ালা ভরে ভরে পানীয় নিতে থাকবে, সেখানে কোনো অর্ধহীন | ٢٣ يَتَنَازَمُوْنَ فِيْهَا كَأْسًا لَّا لَغُوَّ فِيْهَا وَلَا |
| কথা (ও কাজকর্ম) থাকবে না এবং কোনো রকম অপরাধও থাকবে না। | تَٱثِيْرً |
| ২৪. তাদের চারপাশে তাদের (সেবার) জ্বন্যে নিয়োজিত থাকবে কিশোর দল, যারা এক একজন হবে যেন লুকিয়ে | ٢٣ وَيَطُونُ عَلَيْهِرْ غِلْمَانٌ لَّهُرْ كَٱنَّهُرْ |
| রাখা মুক্তা। | كُوْلُو مُكْنُونُ |
| ২৫. তারা একজন আরেকজনের দিকে চেয়ে (তাদের দুনিয়ার জীবনের) কথাবার্তা জিজ্ঞেস করতে থাকবে। | ٢٥ وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُ ﴿ عَلَى بَعْضٍ يَّتَسَاءَكُونَ |
| ২৬. তারা (তখন) বলবে (হাঁ), আমরা তো আগে আমাদের পরিবারের মাঝে (সব সময় জাহান্নামের) ভয়ে জীবন কাটাতাম। | ٢٦ قَالُوْ آ إِنَّا كُنَّا قَبْلٌ فِي ٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ |
| ২৭. (আর এ কারণেই আজ) আল্লাহ তায়ালা আমাদের ওপর (এ সব নেয়ামত দিয়ে) অনুহাহ করেছেন, (সর্বোপরি) তিনি আমাদের (জাহান্লামের) গরম আগুনের শাস্তি থেকেও রক্ষা করেছেন। | ٢٤ فَهَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَٰدِنَا عَنَابَ السَّهُوْ |
| ২৮. আমরা আগেও আল্লাহ তায়ালাকে ডাকতাম, (আমরা জানতাম) তিনি অনুগ্রহশীল ও দয়ালু। | ٢٨ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَنْعُونَهُ ﴿ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الْرَحْوَلَهُ ﴿ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ |
| ২৯. অতএব (হে নবী, মানুষদের) তুমি (এ দিনের কথা) স্বরণ করাতে থাকো, আল্লাহ তায়ালার অনুগ্রহে তুমি কোনো গণক নও, আবার তুমি কোনো পাগলও নও (তুমি হচ্ছো তাঁর বাণী বহনকারী একজন রসূল); | ٢٩ فَنَاكِّرْ فَهَا آنْتَ بِنِعْهَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنِ وَلَا |
| ৩০. তারা কি বলতে চায়, 'এ ব্যক্তি একজন কবি এবং | ٢٠ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّسُ بِهِ رَيْبَ |
| সে কোনো দৈব দুর্ঘটনায় পতিত হোক আমরা সে অপেক্ষাই করছি।' | الْهَنُونِ الْهَنُونِ الْعَوْلُونَ الْعَجْرِ تَدُونِهُمْ لِهُ رَيْب |
| ৩১. তুমি (তাদের) বলো, হাঁ, তোমরাও অপেক্ষা করো, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করবো; | ٣١ قُلْ تَرَبُّصُواْ فَإِنِّي مَعَكُرْ مِّنَ الْهُتَربِّصِينَ |
| ৩২. ওদের জ্ঞান বুদ্ধিই কি ওদের এসব বলতে বলে, না (আসলে) ওরা (একটি) সীমালংঘনকারী সম্প্রদায়! | ٣٢ أَمُ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهِٰذَاۤ أَمُ هُر قَوْمٌ |
| ৩৩. (অথবা) এরা কি বলতে চায়, সে (রসূল) নিজেই (কোরআনের) এ কথাগুলো রচনা করে নিয়েছে, (সত্য কথা হচ্ছে) এরা ঈমান আনে না, | ٣٣ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ } بَلَ لا يُؤْمِنُونَ ع |
| ৫২ সূরা আত্ তুর 💮 🕜 ৫৪২ | মন্যিল ৭ |

| কোৰাছান শ্ৰীক সকল সকল বাংলা ছালবাং | otal so stat with |
|---|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ ৩৪. তারা (নিজেদের কথায়) যদি সত্যবাদী হয় তবে | পারা ২৭ কালা ফামা |
| তারাও এ (কোরআনে)-র মতো কিছু একটা (রচনা করে) | ٣٣ فَلْيَأْتُواْ بِحَرِيْسٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوْا |
| নিয়ে আসুক না! | صل قين ا |
| ৩৫. তারা কি কোনো স্রষ্টা ছাড়া এমনি এমনিই সৃষ্টি হয়ে গেছে, না তারা (বলে যে, তারা) নিজেরাই (নিজেদের) | ٣٥ أَأَ غُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَأَ هُرُ |
| ञ्चेष्ठाः | الْخُلِقُونَ ، |
| ৩৬. না তারা নিজেরা এ আকাশমন্তল ও ভূমন্তল সৃষ্টি | ٢٦ أَا مُلَقُوا السَّاوٰكِ وَالْأَرْضَ عَ بَلْ لَّا |
| করেছে? (আসল কথা হচ্ছে,) এরা (আল্লাহ তায়ালার এ সৃষ্টি কৌশলে) বিশ্বাসই করে না; | يُوفِنُونَ ا |
| ৩৭. তাদের কাছে কি তোমার মালিকের (সম্পদের) | ٣٤ أَ أَ عِنْكَهُمْ خَزَ آئِن رَبِّكَ أَ أَ هُمُ |
| ভাভার পড়ে আছে, না তারা নিজেরা (সে সম্পদের) পাহারাদার (সেজে বসেছে); | الْهُصَيْنَطِرُونَ ، |
| ৩৮. অথবা তাদের কাছে (আসমানে উঠার মতো) কোনো | ٣٨ أَمْ أَهُرُ سُلَّرٌ يَّشْتَهِ عُوْنَ فِيهِ عَ فَلْيَأْسِ |
| সিঁড়ি আছে, যাতে আরোহণ করে তারা (আসমানের অধিবাসীদের) কথা ওনে আসে? তাহলে তারা (আসমান | مدر مه د مدا که د مستوعهر بسلطي مبيني ۱۰ |
| থেকে) শোনা বিষয়ের ওপর সুস্পষ্ট কোনো প্রমাণ এনে হাযির করুক; | مستوعهم بِسلطنٍ مبِينٍ ا |
| ৩৯. অথবা (তোমরা কি আসলেই মনে করো যে,) সব কন্যা সম্ভানগুলো আল্লাহ তায়ালার জন্যে আর তোমাদের | ٣٩ أَمْ لَهُ الْبَنْتُ وَلَكُرُ الْبَنُونَ ١٠ |
| ভাগে থাকবে ভধু ছেলেগুলো! | |
| ৪০. কিংবা তুমি কি (খাল্লাহর বিধানসমূহ পৌছানোর বিনিমন্নে) তাদের কাছ থেকে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করছো, যা | ٣٠ أَمْ تَسْئَلُهُمْ أَجْرًا فَهُرْ مِّنْ مُّغْرَ مِّ شَعْرَا مُّثْقَلُونَ ا |
| তাদের কাছে (দুর্বিসহ) জরিমানা বলে মনে হচ্ছে; | -, ,, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| ৪১. অথবা তাদের কাছে রয়েছে অদৃশ্য (জ্ঞানের এমন) কিছু যা তারা লিখে রাখছে; | ٢١ أَ أَعِنْكَ مُر الْغَيْبُ فَهُر يَكْتُبُونَ ١ |
| ৪২. না (এর কোনোটাই নয়), এরা (আসলে) তোমার বিরুদ্ধে কোনো ষড়যন্ত্র করার ফব্দি আঁটতে চায়; (অথচ) | ٣٢ أَمْ يُرِيْدُونَ كَيْدًا ﴿ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوا هُرُ |
| যারা আল্পাহ তায়ালাকে অস্বীকার করে তারাই (পরিণামে) ষড়যন্ত্রের শিকারে পরিণত হয়; | ٵڷڮڮؽۘۘۮۛۏۘٮؘٵ |
| ৪৩. আল্লাহ তায়ালার বদলে এদের কি অন্য কোনো মাবুদ | ٣٣ أَا لَهُمْ إِلَّا غَيْرُ اللَّهِ م سُبْعَى اللَّهِ عَمَّا |
| আছে? আল্লাহ তায়ালা তো এদের (যাবতীয়) শেরেকী কর্মকান্ড থেকে পবিত্র। | يُشْرِكُوْنَ |
| ৪৪. যদি (কখনো) এরা দেখতে পায়, আসমান থেকে | |
| (মেঘের) একটি টুকরো ভেংগে পড়ছে, তাহলে (তাকে এরা আল্লাহর কোনো নিদর্শন মনে না করে) বলবে, এ | ٣٣ وَإِنْ يَرُواْ كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا |
| তো হচ্ছে পুঞ্জীভূত এক খন্ত মেঘ মাত্র! | يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ |
| ৪৫. (হে নবী,) তুমি এদের ছেড়ে দাও এমন সময় | ٣٥ فَنَرَهُمْ مَتَّى يُلْقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيْهِ |
| পর্যস্ত – যখন তারা সে দিনটি স্বচক্ষে দেখে নেবে– যেদিন তারা হুশ জ্ঞান শূন্য হয়ে পড়বে, | يصعقون لا |
| ৪৬. সেই (সর্বনাশা) দিনে তাদের কোনো ষড়যন্ত্র (ও | ٢٦ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْلُهُمْ شَيْئًا وَّلَا |
| ফন্দি)-ই কোনো কাজে লাগবে না এবং সেদিন তাদের | ارم مرمد م المرمد مين مين المركز المياد و الم |
| কোনো রকম সাহায্যও করা হবে না; ৪৭. যারা যুলুম করেছে তাদের জন্যে এ ছাড়াও (পার্থিব | |
| জীবনে) এক ধরনের আযাব রয়েছে, কিন্তু তাদের | ٢٠ وَإِنَّ لِلَّاذِينَ ظَلَمُواْ عَنَابًا دُونَ ذَٰلِكَ |
| ৫২ সূরা আত্ তুর 💮 🥒 ৫৪৩ | <u>মন্যিল ৭</u> |

www.eelm.weebly.com

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ কালা ফামা |
|---|--|
| অধিকাংশই জানে না। | وَلٰكِنَّ ٱكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَبُونَ |
| ৪৮. (হে নবী,) তুমি তোমার মালিকের সিদ্ধান্ত আসা পর্যন্ত ধৈর্য ধারণ করো, তুমি (অবশ্যই) আমার চোখের | ٢٨ وَامْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا |
| সামনে আছো, তুমি যখন (শয্যা ত্যাগ করে) উঠো তখন তুমি প্রশংসার সাথে তোমার মালিকের মাহাত্ম্য ঘোষণা করো, | وَسَبِّحُ بِعَهْرِ رَبِّكَ مِيْنَ تَقُوْاً لا |
| ৪৯. রাতের একাংশেও তুমি তাঁর তাসবীহ পাঠ করো, আবার (রাতের শেষে) তারাগুলো অস্তমিত হবার পরও (তাঁর মাহাত্ম্য ঘোষণা করো)। | ٣٩ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَيِّحُهُ وَإِدْبَارَ النَّجُوْمِ ع |
| সূরা আন নাজম | سُوْرَةُ النَّجْرِ مَكِّيةً |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৬২, রুকু ৩ | إِيَاتُ : ٦٢ رُكُوعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشْرِ اللهِ الرَّحْسُ الرَّحِيْرِ |
| ১. নক্ষত্রের শপথ যখন তা ডুবে যায়, | ا وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ٧ |
| ২. তোমাদের সাথী পথ ভুলে যায়নি, সে পথভ্রষ্টও হয়নি, | ۲ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُر وَمَا غُوى ج |
| ৩. সে কখনো নিজের থেকে কোনো কথা বলে না, | ٣ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ١ |
| ৪. বরং তা হচ্ছে 'ওহী', যা (তার কাছে) পাঠানো হয়, | ٣ إِنْ هُوَ إِلَّا وَهُيٌّ يُوهُم ٧ |
| ৫. তাকে এটা শিখিয়ে দিয়েছে এমন একজন (ফেরেশতা), যে প্রবল শক্তির অধিকারী, | ۵ عَلَّهَ مَرِيْلُ الْقُوٰى ٧ |
| ৬. (সে হচ্ছে) সহজাত বুদ্ধিমন্তার অধিকারী; অতপর সে (একদিন সতি৷ সত্যিই) নিজ আকৃতিতে (তার সামনে এসে) দাঁড়ালো, | ٣ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ٧ |
| ৭. (এমনভাবে দাঁড়ালো যেন) সে উর্ধাকাশের উপরিভাগে (অধিষ্ঠিভ); | ٤ وَمُوَ بِالْأَنُقِ الْآعُلٰى ١ |
| ৮. তারপর সে কাছে এলো, অতপর সে আরো কাছে এলো, | ۸ ثُرِّ دَنَا فَتَنَلَّى ٧ |
| ৯. (এ সময়) তাদের (উভয়ের) মাঝে ব্যবধান থাকলো (মাত্র) দুই ধনুকের (সমান), কিংবা তার চাইতেও কম! | ٩ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَٰى ٤ |
| ১০. অতপর সে তাঁর (আল্লাহর) বান্দার কাছে ওহী পৌছে দিলো, যা তার পৌছানোর (দায়িত্ব) ছিলো; | ١٠ فَأَوْمَى إِلَى عَبْنِ مِ أَ أَوْمَٰى ١٠ |
| ১১. (বাইরের চোখ দিয়ে) যা সে দেখেছে (তার ভেতরের) অন্তর তা মিথ্যা প্রতিপন্ন করেনি। | ١١ مَا كَنَابَ الْغُوَّادُ مَا رَأْي |
| ১২. তোমরা কি সে বিষয়ে বিতর্কে লিপ্ত হতে চাচ্ছো যা সে নিজের চোখে দেখেছে! | ١٢ أَفَتُنْرُوْنَهُ عَلَى مَا يَرِى |
| ১৩. (সে ভুল করেনি, কারণ) সে তাকে আরেকবারও দেখেছিলো, | ١٣ وَلَقَلْ رَأَةٌ نَزْلَةً ٱغْرَى ٧ |
| ১৪. (সে তাকে দেখেছিলো) 'সেদরাতুল মোন্তাহা'র কাছে। | ١٣ عِنْلَ سِلْ رَقِ الْهُنتَهٰي |
| ১৫. যার কাছেই রয়েছে (মামেনদের চিরস্থায়ী) ঠিকানা জান্লাত; | ١٥ عِنْكَهَا جَنَّةُ الْهَاْوِي ١ |
| ১৬. সে 'সেদরাটি' (তখন) এমন এক (জ্যোতি) দিয়ে আচ্ছন্ন ছিলো, যা দ্বারা তার আচ্ছন্ন হওয়া (শোভনীয়) ছিলো, | ١٦ إِذْ يَغْشَى السِّلْرَةَ مَا يَغْشَى ٧ |
| ৫৩ সূরা আন নাজম (৫৪৪) | মनयिन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্লো ফামা |
|--|---|
| ১৭. (তাই এখানে তার) কোনো দৃষ্টি বিভ্রম হয়নি এবং তার দৃষ্টি কোনোরকম সীমালংঘনও করেনি। | ١٤ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغْى |
| ১৮. অবশ্যই সে আল্লাহ তায়ালার বড়ো বড়ো নিদর্শনসমূহ দেখেছে। | ١٨ لَقَنْ رَأَى مِنْ أَيْسِ رَبِّهِ الْكُبْرَى |
| ১৯. তোমরা কি ভেবে দেখেছো 'লাত' ও 'উযযা' সম্পর্কেঃ | 19 أَفَرَءَيْتُرُ اللَّبَ وَالْعُزِّي لا |
| ২০. এবং তৃতীয় আরেকটি (দেবী) 'মানাত' সম্পর্কে! | ٢٠ وَمَنْوةَ الثَّالِثَةَ الْأَكْثَرِٰى |
| ২১. (তোমরা কি মনে করে নিয়েছো,) পুত্র সন্তান সব তোমাদের জন্যে আর কন্যা সম্ভান সব আল্লাহর জন্যে? | ٢١ اَلَكُرُ النَّكُرُ وَلَهُ الْإَنْشَى |
| ২২. (তা হলে তো) এ (বন্টন) হবে নিতান্তই একটা অসংগত বন্টন! | ٢٢ تِلْكَ إِذًا قِسْهَةً ضِيْزٰى |
| ২৩. (মূলত) এগুলো কতিপয় (দেব দেবীর) নাম ছাড়া আর কিছুই নয়, যা তোমরা নিজেরা এবং তোমাদের বাপ | ٢٣ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْهَاءً سَهِيتُهُوْهَا أَنْتُر |
| দাদারা ঠিক করে নিয়েছো, আল্লাহ তায়ালা এ (নামে)-র সমর্থনে কোনো রকম দলীল প্রমাণ নাযিল করেননি; এরা | وَ أَبَا وُكُورُ مَّا آنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطِي ا إِنْ |
| (নিজেদের মনগড়া) আন্দায় অনুমানেরই অনুসরণ করে এবং | |
| (অধিকাংশ ক্ষেত্রেই) এরা নিজেদের প্রবৃত্তির ইচ্ছা আকাংখার ওপর চলে, অথচ তাদের কাছে (ইতিমধ্যেই) তাদের মালিকের পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট হেদায়াত এসে গেছে। | وَلَقَلْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمُ الْهُلَٰى الْمَالِي الْمَالِي الْمَالِي الْمَالِي الْمَالِي الْمَا |
| ২৪. অতপর (তোমরাই বলো, এদের কাছ থেকে) মানুষ যা পেতে চায় তা কি সে কখনো পেতে পারে– | ۲۳ آم لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّى رصه |
| ২৫. দুনিয়া ও আখেরাত তো আল্লাহ তায়ালার জন্যেই। | ٢٥ فَلِلَّهِ الْأَخِرَةُ وَالْكُولَى ع |
| ২৬. কতো ফেরেশতাই তো রয়েছে আসমানে, (কিছু) তাদের কোনো সুপারিশই ফলপ্রসূ হয় না– যতোক্ষণ না আল্লাহ তায়ালা, যাকে ইচ্ছা এবং যাকে 'ভালোবাসেন তাকে অনুমতি না দেন। | ٢٦ وكَمْ مِّنْ مَّلَكَ فِي السَّوْسِ لَا تُغْنِيْ شَغَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْلِ أَنْ يَّاذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى |
| ২৭. যারা পরকালের ওপর বিশ্বাস স্থাপন করে না, তারা ফেরেশতাদের (দেবী তথা) নারীবাচক নামে অভিহিত করে। | ٢٠ إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْأَخِرَةِ لَيُسَنُّوْنَ الْمَلَّنِكَةَ تَشْمِيَةَ الْأَثْنَى |
| ২৮. অথচ এ ব্যাপারে তাদের কাছে কোনো জ্ঞানই নেই; তারা তো কেবল আন্দায অনুমানের ওপরই চলে, আর সত্যের মোকাবেলায় (আন্দায) অনুমান তো কোনো কাজেই আসে না, | ٢٨ وَمَا لَهُرْ بِهِ مِنْ عِلْمِ ، إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ لَا يُغْنِى مِنَ الْحَقِّ الْظَنَّ لَا يُغْنِى مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ع |
| ২৯. অতএব (হে নবী), যে ব্যক্তি আমার (সুস্পষ্ট) স্বরণ থেকে সরে গেছে, তার ব্যাপারে তুমি কোনো পরোয়া করো না, (কারণ) সে তো পার্থিব জীবন ছাড়া আর কিছুই কামনা করে না; | ٢٩ فَاَعْرِضْ عَنْ شَّنْ تَوَلِّى لَا عَنْ ذِكْرِنَا وَلَيْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيٰوةَ النَّنْيَا |
| ৩০. তাদের (মতো হতভাগ্য ব্যক্তিদের) জ্ঞানের সীমারেখা তো ওটুকুই; (এ কথা) একমাত্র তোমার মালিকই ভালো জ্ঞানেন কে তার পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে গেছে এবং তিনিই ভালো করে বলতে পারেন কে সঠিক পথের সন্ধান পেয়েছে। | ٣٠ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُرْ مِّنَ الْعِلْمِ الْ وَالَّ وَالَّ وَالَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ الْعَلْمِ الْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ الْعَلْمُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ الْعَثَىٰ مِ |
| ৫৩ সূরা আন নাজম | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|--|---|
| ৩১. আসমানসমূহ ও যমীনের সব কিছু আল্লাহ তায়ালার | ٣١ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّاوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لا |
| জন্যে, এতে করে যারা খারাপ কাজ করে বেড়ায় তিনি | |
| তাদের (খারাপ) প্রতিফল দান করবেন এবং যারা ভালো | لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَاءُوْا بِهَا عَمِلُوْا وَيَجْزِى |
| কাজ করে তাদের তিনি (এ জন্যে) মহাপুরস্কার প্রদান | الَّذِيْنَ ٱحْسَنُوْا بِالْحُسْنَى ج |
| করবেন; | |
| ৩২. (এটা তাদের জন্যে) যারা বড়ো বড়ো গুনাহ থেকে এবং (বিশেষত) অশ্লীলতা থেকে বেঁচে থাকে, | ٣٢ ٱلَّٰذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَيْرَ الْإِثْرِ |
| ছোটোখাটো গুনাহ (সংঘটিত) হলেও (তারা আল্লাহর | وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّهَرَ ﴿ إِنَّ رَبُّكَ وَاسعُ |
| ক্ষমা থেকে বৃঞ্চিত হবে না, কারণ), তোমার মালিকের | |
| ক্ষমা (-র পরিধি) অনেক বিস্তৃত; তিনি তোমাদের তখন থেকেই ভালো করে জানেন, যখন তিনি তোমাদের (এ) | الْمَغْفِرَةِ وَهُوَ آعْلَمُ بِكُمْ إِذْ آنْشَا كُمْ مِّنَ |
| যমীন থেকে পয়দা করেছেন, (তখনও তিনি তোমাদের | الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُرْ أَجِنَّةً فِي بُطُونِ أَمَّهُ تِكُرْع |
| জানতেন) যখন তোমরা ছিলে তোমাদের মায়ের পেটে | |
| (ক্ষুদ্র একটি) ভ্রুণের আকারে, অতএব কখনো নিজেদের | فَلَا تُزَكُّواۤ اَنْفُسَكُمْ ﴿ هُوَ اَعْلَمُ بِهَى اتَّقٰى ع |
| পবিত্র দাবী করো না; আল্লাহ ভায়ালাই ভালো জানেন | |
| কোন ব্যক্তি (তাঁকে) বেশী ভয় করে। | |
| ৩৩. (হে নবী,) তুমি কি সে ব্যক্তিটিকে দেখোনি, যে (আল্লাহ তায়ালার পথ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিলো, | ٣٣ أَفَرَءَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى لا |
| ৩৪. যে ব্যক্তি সামান্য কিছুই দান করলো, অতপর | |
| তিও যে ব্যক্তি সামান্য । কছুই দান কয়দো, অভ্যন্ত সম্পূর্ণভাবে (নিজের) হাত গুটিয়ে নিলো। | ٣٣ وَٱعْطٰى قَلِيْلًا وَّٱكْلَىٰ |
| ৩৫. তার কাছে কি অদৃশ্য জগতের কোনো জ্ঞান ছিলো | ٣٥ أَعِنْكَةً عِلْرُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرِى |
| যে, তা দিয়ে সে (অন্য কিছু) দেখতে পাঙ্গিলো। | |
| ৩৬. তাকে কি (একথা) জানানো হয়নি যে, মূসার (কাছে | ٣٦ أَمْ لَمْ يُنَالَّا بِهَا فِي صَحُفِ مُوسَٰى ٧ |
| পাঠানো আমার) সহীফাসমূহে কি (কথা লেখা) আছে, | ۱۱۰۰ مريب بِها مِي سنت ِ مُوسي ا |
| ৩৭. (অকে কি) ইবরাহীমের কথা জানানো হয়নি, ইবরাহীম | ٣٠ وَ إِبْرُهِيْمَ الَّذِي وَنَّى لا |
| তো (আল্লাহর) বিধানাবলী পুরোপুরিই পালন করেছে, | _ · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| ৩৮. (তাকে কি এটা বলা হয়নি যে,) কোনো মানুষই | ٣٨ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةً وِّزْرَ ٱخْرِى ٧ |
| অন্যের (পাপের) বোঝা উঠাবে না, | • |
| ৩৯. মানুষ ততোটুকুই পাবে যতোটুকু সে চেষ্টা করবে, | ٣٩ وَ أَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعْى لا |
| | |
| ৪০. আর তার কাজকর্ম (পরীক্ষা-নিরীক্ষা করা হবে এবং অচিরেই তা) দেখা হবে, | ٣٠ وَأَنَّ سَعْيَةً سَوْفَ يُرى س |
| ৪১. অতপর তাকে তার পুরোপুরি বিনিময় দেয়া হবে, | |
| 85. जनमंत्र नात्म नात्र नुद्धानुष्ठ ।यानमद्र दनद्रा स्ट्य, | ٣١ تُرِّ يُجُزِٰنهُ الْجَزَاءَ الْأَوْنٰي لا |
| ৪২. পরিশেষে (সবাইকে একদিন) তোমার মালিকের | ٣٢ وَأَنَّ إِلَى رَبِّكَ الْهُنْتَهٰى لا |
| কাছেই পৌছুতে হবৈ, | الوال إلى ربك الهنتهي لا |
| ৪৩. তিনিই (সবাইকে) হাসান, তিনিই (স্বাইকে) কাঁদান, | ٣٣ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْعَكَ وَأَبْكَى ٧ |
| | |
| ৪৪. তিনিই (মানুষকে) মারেন, তিনিই (তাদের) বাঁচান, | ٣٣ وَأَنَّهُ مُو اَمَاتَ وَاَحْيَا لا |
| ৪৫. তিনিই নর নারীর যুগল পয়দা করেছেন, | ٣٥ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ النَّكَرَ وَالْأَنْثَى لا |
| | |
| ৪৬. (পয়দা করেছেন) এক বিন্দু (ঋলিত) শুক্র থেকে, | ٣٦ مِنْ تَطْفَقَةٍ إِذَا تُهُنِّي سِ |
| ৪৭. নিক্তয়ই পুনরায় এদের জীবন দান করার দায়িত্বও | 1 ^ 2 ^ 2 ^ B . |
| (কিন্তু) তাঁর (একার), | ٣٥ وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشَاةَ الْأُغُرٰى ٧ |
| ৫৩ সূরা আন নাজম (৫৪৬) | |
| पुण सुना नाम नाजन | 47149 4 |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|--|---|
| ৪৮. তিনিই (তাকে) ধনশালী করেন এবং তিনিই পুঁজি | |
| দান করে তা স্থায়ী রাখেন, | ٢٨ وَٱنَّهُ مُو اَغْنٰى وَٱقْنٰى لا |
| ৪৯. তিনি 'শেরা' (নামক) নক্ষত্রেরও মালিক, | ٢٩ وَٱلَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَى لا |
| ৫০. তিনিই প্রাচীন আদ সম্প্রদায়কে ধ্বংস করে দিয়েছেন, | ٥٠ وَ أَنَّدُ آهْلَكَ عَادًا " الْأُولٰى لا |
| ৫১. (তিনি আরো ধ্বংস করেছেন) সামুদ জাতিকে (এমনভাবে), তাদের একজনকেও অবশিষ্ট রাখেননি, | ۵۱ وَثَهُوْدَا ْ فَهَا ٓ أَبْقَى y |
| ৫২. এর আগে (তিনি ধ্বংস করেছেন) নূহের জাতিকে; কেননা তারা ছিলো ভীষণ যালেম ও চরম বিদ্রোহী; | ٥٢ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ﴿ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُرْ أَظْلَمَ وَأَطْغَى ﴿ |
| ৫৩. তিনি একটি জনপদকে ওপরে উঠিয়ে উল্টো করে ফেলে দিয়েছেন। | ٥٣ وَالْهُوْ تَفِكَةَ اَهُوٰى ٧ |
| ৫৪. অতপর সে জনপদের ওপর তিনি ছেয়ে দিলেন এমন এক (ভয়ংকর) আযাব, যা (ডাকে পুরোপুরিজার) ছেয়ে দিলো, | ۵۳ فَغَشَّهَا مَا غَشَّى ع |
| ৫৫. তারপরও (হে নির্বোধ মানুষ,) তুমি তোমার মালিকের কোন্ কোন্ নিদর্শনে সন্দেহ প্রকাশ করো! | ۵۵ فَبِاَيِّ الْآِءِ رَبِّكَ تَتَهَارى |
| ৫৬. (আযাবের) সতর্ককারী (এ নবী তো) আগের (পাঠানো) সতর্ককারীদেরই একজ্বন! | ٥٦ هٰذَا نَٰذِيثُرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولٰي |
| ৫৭. (ত্বরিত আগমনকারী কেয়ামতের) ক্ষণটি (আজ) আসনু হয়ে গেছে, | ٥٤ اَزِفَتِ الْأَزِفَةُ ع |
| ৫৮. আল্লাহ তায়ালা ছাড়া কেউই সে ক্ষণটির (দিন কাল সম্পর্কিত তথ্য) উদঘাটন করতে পারবে না; | ٥٨ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللهِ كَاشِفَةً ، |
| ৫৯. এগুলোই কি (ভাহলে) সেসব বিষয়– যার ৰ্যাপারে তোমরা (আন্ধ রীতিমতো) বিশ্বয়বোধ করছো, | ٥٩ أَفَيِيْ هٰٰذَا الْحَٰلِيْتِ تَعْجَبُوْنَ ٧ |
| ৬০. (এসব বিষয় নিয়ে) তোমরা (আজ্জ) হাসাহাসি করছো, অথচ (পরিদামের কথা জেবে) তোমরা মোটেই কাঁদছো না, | ٠ وتسعبون و ٢ تبيون ١ |
| ৬১. (মনে হচ্ছে) তোমরা (মূল ব্যাপারেই) উদাসীন হয়ে রয়েছো। | ٢١ وَٱنْتُرْ سَامِلُونَ |
| ৬২. অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালার সামনে সাজ্ঞদাবনত হও এবং (কাউকে শরীক করা ব্যতীত) তাঁরই এবাদাত করো। | ٦٢ فَاشْجُكُوا لِلَّهِ وَاعْبُكُوا ع |
| স্রা আল ক্রামার | سُوْرَةُ الْقَبَرِ مَكِيَّةً |
| ম ঞ্চা য় অবতীর্ণ– আয়াত ৫৫, ককু ৩ | أيَاتُ : ٥٥ رَكُوعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْرِ |
| ১. কেয়ামত নিকটবর্তী হয়ে গেছে এবং চাঁদ বিদীর্ণ হয়ে গেছে ! | ا إِقْتَرَبَسِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَبَرُ |
| ২. (এদের অবস্থা হচ্ছে,) এরা কোনো নিদর্শন দেখলে তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং বলে, এটা তো হচ্ছে এক চিরাচরিত যাদুকরী (ব্যাপার)। | ٢ وَإِنْ يَّرَوْا أَيَةً يَّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرً سُّتَيِرً |
| ৩. (তারা সত্য) অস্বীকার করে এবং নিজেদের খেয়াল খুলীর অনুসরণ করে চলে, (অথচ) প্রত্যেক কাজের একটি চূড়ান্ত নিম্পান্তির (সময়) রয়েছে। | ٣ وكَنَّ آبُوا وَاتَّبَعُوا أَهُواءَهُمْ وكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرُ |
| ৫৪ আল ক্মার ৫৪৭ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ কালা ফামা |
|---|--|
| অবশ্যই এ লোকদের কাছে (অতীত জাতিসমূহের ওপর আযাবের) সংবাদসমূহ এসেছে, (এমন সংবাদ) যাতে (বিদ্রোহের শান্তির) হৃশিয়ারী রয়েছে, | ٣ وَلَقَلْ جَاءَمُر مِنَ الْأَثْبَاءِ مَا فِيهِ مُؤْدَجُو ٧ |
| ৫. এগুলো হচ্ছে পুরোপুরি জ্ঞানসমৃদ্ধ ঘটনা, যদিও এসব সতর্কবাণী তাদের কোনোই উপকারে আসে না, | ٥ حِكْهَةً ' بَالِغَةً فَهَا تُغْنِ النَّلُورُ ٧ |
| ৬. (হে নবী) তুমি এদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নাও । যেদিন একজন আহ্বানকারী এদের একটি অপ্রিয় বিষয়ের দিকে আহ্বান করবে । | لَ فَتَوَلَّ عَنْهُر م يَوْا يَدهُ النَّاعِ إلى شَيْءٍ تُكُولٍ لا |
| ৭. (সেদিন) তারা অবনত দৃষ্টি নিয়ে (একে একে) কবর থেকে এমনভাবে বেরিয়ে আসবে, য়েন ইতস্তত বিক্ষিপ্ত পঙ্গপালের দল, | عُشَّعًا أَبْصَارُمُ يَخُرُجُونَ مِنَ الْأَجْلَ الْفِ كَاتَّهُ جُرَادٌ مُّنْتَشِرٌ و |
| ৮. তারা সবাই (তখন সেই) আহ্বানকারীর দিকে দৌড়াতে থাকবে; যারা (এ দিনকে) অস্বীকার করেছিলো, তারা বলবে, এ তো (দেশছি আসলেই) এক ভয়াবহ দিন! | مُهُطعيْنَ إِلَى النَّاعِ ، يَقُولُ الْكُفِرُونَ فَنَا يَوْأً عَسِرٌ |
| ৯. এদের আগে নৃহের জাতিও (এভাবে তাদের নবীকে) অস্বীকার করেছিলো, তারা আমার বান্দা (নৃহ নবী)-কে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে, তারা তাকে পাগল বলে আখ্যায়িত করেছে, তাকে (নানাভাবে) ধমক দেয়া হয়েছিলো। | ٩ كَنَّ بَسَ قَبْلَهُ مَ قَوْمٌ نَوْمٍ فَكَنَّ بُوْا عَبْلَنَا وَقَالُوْا مَجْنُونَ وَازْدُجِرَ |
| ১০. অবশেষে সে তার মালিককে ডাকলো (এবং বললো হে আমার মালিক), অবশ্যই আমি অসহায় (হয়ে পড়েছি), অতএব তুমিই (এদের কাছ থেকে) প্রতিশোধ নাও। | ١٠ فَلَهَا رَبَّهُ ۚ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ |
| ১১. এরপর আমি (ভার ডাকে সাড়া দিশাম এবং) প্রবল বৃষ্টির পানি বর্ষণের জন্যে আসমানের দারসমূহ খুলে দিলাম, | ١١ فَفَتَحُنَّا أَبُوابَ السَّبَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَبِرٍ زمهِ |
| ১২. ভূমির স্তর (বিদীর্ণ করে তাকে পানির) প্রচন্ড প্রস্রবণে পরিণত করলাম, অতপর (আসমান ও যমীনের) পানি এক জায়গায় মিলিত হলো এমন একটি কাজের জন্যে, যা আগে থেকেই ঠিক করে রাখা হয়েছিলো, | الرَّفَةُ وَنَا الْإَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْهَاءُ عَلَى آمْرٍ قَلْ قُدِرَ ع |
| ১৩. তখন আমি তাকে কাঠ ও পেরেক (নির্মিত একটি) যানে উঠিয়ে নিলাম, | ١٣ وَمَهَلَنْهُ عَلَى ذَاتِ ٱلْوَاحِ وَّدُّسُو ٧ |
| ১৪. যা আমার (প্রত্যক্ষ) দৃষ্টির সামনে (ধীরে ধীরে) বয়ে চললো, এটি ছিলো সে ব্যক্তির জন্যে একটি বিনিময়, যাকে (মাত্র কিছুদিন আগেও) অস্বীকার করা হয়েছিলো। | ١٣ تَجْرِيْ بِأَعْيُنِنَا ۽ جَزَاءً لِّينَ كَانَ كُفِرَ |
| ১৫. আমি (জলযান সদৃশ) সে জিনিসটিকে (পরবর্তী মানুষদের জন্যে) একটি নিদর্শন হিসেবে রেখে দিয়েছি, কে আছে (আজ এর থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করারঃ | ١٥ وَلَقَنْ تَّرِكُنْهَا ۚ أَيَةً فَهَلْ مِنْ مُّنَّكِرٍ |
| ১৬. (হাঁ, এমন কেউ থাকলে এসো, দেখে নাও,) কেমন (কঠোর) ছিলো আমার আযাব এবং (কতো সত্য ছিলো) আমার সতর্কবাণী! | ١٦ فَكَيْفَ كَانَ عَلَ ابِيْ وَنُكُرِ |
| ১৭. আমি (অবশ্যই) উপদেশ গ্রহণ করার জন্যে এ কোরআনকে সহজ করে দিয়েছি, কে আছে (তোমাদের মাঝে এর থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? | ١٠ وَلَقَلْ يَسَّرْنَا الْقُرْانَ لِلزِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مَّالْكِر |
| ১৮. আ'দ জাতির লোকেরাও (আমার নবীকে) মিধ্যা প্রতিপন্ন করেছে, (তোমরা দেখে নিতে পারো তাদের প্রতি) আমার আযাব কেমন (কঠোর) ছিলো এবং (কতো সত্য ছিলো) আমার সতর্কবাণী! | ١٨ كَنَّ بَسْ عَادٌّ فَكَيْفَ كَانَ عَنَ ابِيْ وَنُنُرِ |
| ৫৪ আল ক্মার | मनियंग १ |

| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|---|---|
| ১৯. এক স্থায়ী কুলক্ষণের দিনে আমি তাদের ওপর প্রবল বায়ু প্রেরণ করেছিলাম, | ا إِنَّا آرْسَلْنَا عَلَيْهِرْ رِيْحًا صَوْصَرًا فِي يَوْمِ |
| | ا نَحْسٍ مُسْتَمِرٌ لا |
| ২০. যা মানুষদের এমনভাবে ছুঁড়ে মারছিলো, যেন তা খেজুর গাছের এক একটি উৎপাটিত কান্ড! | ٢٠ تَنْزِعُ النَّاسَ لا كَٱنَّهَرْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ |
| ২১. (হাঁ, দেখে নাও,) কেমন (কঠোর) ছিলো আমার আযাব আর (কতো সত্য ছিলো) আমার সতর্কবাণী! | ٢١ فَكَيْفَ كَانَ عَنَ ابِي وَنُكُرِ |
| ২২. অবশ্যই আমি উপদেশ গ্রহণের জন্যে কোরআনকে সহজ করে দিয়েছি, কে আছে (তা থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? | ٢٢ وَلَقَنْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلنِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَ |
| ২৩. সামুদ সম্প্রদায়ও (আযাবের) সতর্ককারী (নবী ও রসূল)-দের মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো। | ٢٣ كَنَّ بَتْ ثَهُوْدُ بِالنَّنُّ رِ |
| ২৪. তারা বলেছিলো, আমরা কি এমন একজন লোকের | ٢٣ فَقَالُوْ آ اَبِشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ لا إِنَّا |
| কথা মেনে চলবো, যে ব্যক্তি একা– আমাদেরই একজন, (এভাবে) তার আনুগত্য করলে সত্যিই তো আমরা বড়ো গোমরাহী ও পাগলামী কাজে নিমজ্জিত হয়ে পড়বো। | إِذًا لَّفِي ْ ضَلْلِ وْسَعْرٍ |
| ২৫. আমাদের মাঝে সে-ই কি একমাত্র ব্যক্তি, যার ওপর | ٢٥ ءَٱلْقِيَ اللِّكْرُ عَلَيْدِ مِنْ، بَيْنِنَا بَلْ هُوَ |
| (আল্লাহর) ওহী নাযিল করা হয়েছে, (আসলে) সে হচ্ছে একজন চরম মিথ্যাবাদী ও অহংকারী ব্যক্তি। | كَنَّابُ آهِرُ |
| ২৬. আগামীকাল (মহাবিচারের দিন) তারা ভালো করেই এটা জানতে পারবে, কে ছিলো তাদের মধ্যে মিধ্যাবাদী ও অহংকারী ব্যক্তি! | ٢٦ سَيَعْلَمُونَ غَنَّا مِّنِ الْكَنَّابُ الْأَشِرُ |
| ২৭. আমি (অচিরেই) তাদের পরীক্ষার জ্বন্যে একটি উষ্ট্রী পাঠাবো, তুমি একান্ত কাছে থেকে তাদের দিকে লক্ষ্য করো এবং (একটুখানি) ধৈর্য ধরো এবং তাদের পরিণামটা দেখো, | ٢٠ إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ |
| ২৮. তাদের বলে দাও, (কুয়ার) পানি অবশ্যই তাদের (ও উন্ত্রীর) মধ্যে ভাগ করে দেয়া হয়েছে এবং তাদের সবাই (পালাক্রমে) কুয়ার পাশে হাযির হবে। | ٢٨ وَنَبِّنْهُرْ أَنَّ الْهَاءَ قِسْهَةً ' بَيْنَهُرْ ۽ كُلُّ شِرْبِ مُحْتَضَرَ ءَ كُلُّ |
| ২৯. পরিশেষে তারা (বিদ্রোহ করার জন্যে) তাদের (এক) বন্ধুকে ডেকে আনলো, সে (উদ্ধীকে ছুরি দিয়ে) আক্রমণ করলো এবং (সেটির পায়ের) নলি কেটে ফেললো। | ٢٩ فَنَادَوْ ا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ |
| ৩০. (হাাঁ, অতপর তোমরাই দেখেছো) কেমন ছিলো আমার আযাব, (কতো সত্য ছিলো) আমার সতর্কবাণী! | ٣٠ فَكَيْفَ كَانَ عَلَ ابِي وَنُكْرِ |
| ৩১. অতপর আমি তাদের ওপর প্রেরণ করপাম মাত্র একটি গর্জন, এতেই তারা শুষ্ক শাখাপল্লব নির্মিত জম্ভু জানোয়ারদের দলিত খোয়াড়ের মতো হয়ে গেলো। | ٣١ إِنَّا آرْسَلْنَا عَلَيْهِرْ صَيْحَةً وَّاحِرَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْرِ الْهُحْتَظِرِ |
| ৩২. বোঝার জন্যে আমি কোরআন সহজ্ঞ করে নাযিল করেছি, (তা থেকে) উপদেশ গ্রহণ করার মতো কেউ আছে কিঃ | ٣٢ وَلَقَنْ يَسَّرْنَا الْقُرْانَ لِلنِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّنَّكِرٍ |
| ৩৩. লৃতের জাতির লোকেরাও সতর্ককারী (নবী)-দের মিথ্যাবাদী বলেছিলো। | ٣٣ كَنَّ بَسْ قَوْمٌ لُوطٍ ۖ بِالنَّذُرِ |
| ৩৪. (ফলে) আমি তাদের ওপর প্রেরণ করলাম পাথর (নিক্ষেপকারী এক ধরনের) বৃষ্টি, লৃতের পরিবার পরিজন | ٣٣ إِنَّا ٱرْسَلْنَا عَلَيْهِرْ هَاصِبًا إِلَّا أَلَ لُوْطٍ ، |
| ৫৪ আল ক্মার | মন্যিল ৭ |

| কারঅনা শরীফ সত্তে সরল বাংলা অনুবাদ ও তার অনুবর্তনারীদৈর বাদে; রাতের শেষ প্রহরেই আমি তাদের উদ্ধান করে নিরোহিলাম, ৩৫. এ (কাজ)-টা হিলো (তাদের প্রতি) আমার একান্ত অনুর্যহ; যে বাজি আমার (অনুযাহের) কৃতজ্ঞতা আদার করে আমি তাদের এভাবেই পুরক্তক করি। ৩৫. সে (পৃত্) আমার করেইল পাকড়াও সম্পর্কের জনা) ৩৫. সে (পৃত্) আমার করিলে। ৩৫. (অত্যরুগ তারা তার করিছেলা। ৩০. (অত্যরুগ তারা তার করিছেলা। ৩০. (অত্যরুগ তারা তার করিছেলা। তানের বৃত্তিরুগ করে দিলা। ৩০. (অত্যরুগ তারা তার করিছেলা। তানের বৃত্তিরুগ করে দিলা। ৩৮. অনুর্যার কেমরা আমার আমার আমার আমার বিশ্বাসা) ৩৮ করুলেই তানের ওপর আমার আমার আমার বিশ্বাসা) ৩৮. অলুরেই তানের ওপর আমার আমার আমার আমার আহানন করারে (পরিলামা)ও একবার) সেবে নাও। ৩৮. অলুরেই তানের ওপর আমার আমার আমার অহানন করার (পরিলামা)ও একবার) সেবে নাও। ৩৮. অলুরেইল করিছিন কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিলা এহল করার: ৪১. কেরুলারেকি নির্দান করারে (করিলামা)ও একবার) সেবেল নাও। ৩৪. আমি বলামা, অতপর তামরা আমার সমুদর নিদর্শন অবীকার করেছে, (করে নাবিশ) করেছি, কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিলা এহল করার: ৪১. কেরুলারা আমার সমুদর নিদর্শন অবীকার করেছে, (আর পরিলামে) আমিও তাদের (শন্ত হাতে) পাকড়াও করলাম– ঠিক যেমনি করে সর্বাভিমান সন্তা। বিদ্যোহিলে, পাকড়াও করে হালেন। ৪০. (তোমরা কি সন্তিই মনে করছো,) তোমানের রেস্বাইলে, পাকড়াও করে হালেন। ৪০. (তোমরা কি সন্তিই মনে করছো,) তোমানের বিস্তাইলে, পাকড়াও করে হালেন। ৪৪. (ক্রেন্ত করিছিক) রয়েছে ৪৪. অবা তারা বলহে, আমরা হিছি (স্তিই) একটি অপরাজ্যে দল। ৪৪. (কিছু এ পালানেই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তানের ব্রাহিলি হিলুল কর করে। বিস্তাইলেন করি করে করেল করামত তো রয়েইই, আর কেনামত হবে তাদের জন্যা বংলুই কঠিন ও বড়েই জিক। ৪৭. আর করামত হবে তাদের ভানের জনো বড়েই ভিক। ৪৭. অবাটির করে বিন্তারী (নিনিকিণ) বিমারিত বিন্তারীর মানে পড়ে আরে। ৪০. বিন্তারীর বিন্তারীর (নিনিকণ) বিনারিত বিন্তারীর মানে পড়ে আরে। ৪০. বিনারবিতার মানে পরে অরার স্বিল্যার করিল বিনারিত বার বিনারবিত বার বিনারবিতার মানে পড়ে আরে। ৪০. বিনারবিতার মানে পরিলিক ভানের ভানের বিনারবিতার করিল বিনারবিতার মানে পরে ভানের ভানের বিনারবিতার মানে পরে ভ | | |
|--|--|---|
| আমি তাদের উদ্ধান করে নিমেছিলাম, ৩৫. এ (কাজ্য)-টা ছিলো (তাদের প্রতি) আমার একাষ্ট কুর্মান্তর (বা ব্যক্তি আমার (অনুযাহর) কৃতজ্ঞতা আদার করে আমি তাকে এভাবেই পুরক্ত করি। ৩৬. সে (পৃত) আমার কঠোর পাকড়াও সম্পর্কের করে নিমেছিলাা, কিছু এ সতর্কীকরণে তারা বার বার বার তার দেখিমেছিলাা, কিছু এ সতর্কীকরণে তারা বার করে দেখিমেছিলা, কিছু এ সতর্কীকরণে তারা বার করে দেখিমেছিলা, কিছু এ সতর্কীকরণে তারা বার করে দেখিমেছিলা, তার করে করে দিলা। ৩৭. (অতপর) তারা তার কাছে এসে (ফুক্তমের জন) তার মেহমানদের (নিয়ে যাবার) দাবী করলো, আমি (তখন) তানের দৃষ্টিলিছিক বিপুরু করে দিলাম। ৩০. (অতপর) তারা তার করে দিলাম। ৩০. (আরার) সতর্কবাণী (খনজার করে দিলাম) ৩৮. প্রত্যুমেই তাদের ওপর আমার এক অমোঘ আযাব ব্রুম্বার করে লোলা, তানের বর্জার করে লোলা, তানের বর্জার করে করে করে করে করে করে করে করে করে কর | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
| করে আমি তাকে এভাবেই পুরস্কৃত করি। ৩৬. সে (পৃত্ত) আমার কঠোর পাকড়াও সম্পর্কে তাদের বার বার ভয় দেবিয়েছিলো, কিন্তু এ সভকীকরণে তারা বার বার ভয় দেবিয়েছিলো, কিন্তু এ সভকীকরণে তারা বারবিতভা তক্ষ করে দিলো। ৩৭. (গ্রতপর) তারা তার কাছে এদের (সম্বন্ধার জারা) তার মহেমানদের (নিয়ে বাবার) দাবী করলো, আমি (তাদের বললাম), এবার তোমরা আমার আঘাব উপভোগ করো এবং (জারা) সতর্কবাবী (গ্রন্ধার রূর প্রান্ধার) -ও দেবে নাও। ৩৮. প্রভুষেই তাদের ওপর আমার এক অমোঘ আযাব প্রচ্ছত আঘাত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব আঘাব ভালত আঘাত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব আঘান করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপলে করার (পরিণামটাও একবার) দেবে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার হলে, সহন্ধার্কির করে করি (এ বেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার ৪১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের পেক হাছে), তোমাদের (করামান সিক যেমনি করে সর্বশিক্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছে), তোমাদের স্বর্কার কাক্ষের তামাদের করে। তাহিকে (শক্তি ও ক্ষমতার দিন থেকে) উৎকৃষ্ট অববা (আমার) কেতাবের কোঝাও কি তোমাদের জন্যে আমার ক্রেক্টে করি করে বাবি বাবে করেছে। ৪৫. কেন্তু করিই এ (অপরাজের) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সন্থুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে প্রতিইটি (মুল্ক কিছু শিপিবদ্ধ) রয়েছে ৪৫. কেন্তু বিরু ও পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (পাত্তিদানের) নির্ধারিত ক্ষণ কেরামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্য বড়াই কঠিন ও বড়েই তিত। ৪৭. কেন্তু বিরু এ পালানোই তো তাদের লেন্তু বড়াই কঠিন ও বড়াই তিত। ৪৭. বেলাই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিন্তািও বিনারীতান করেন্তুটি ভিন্তা। ৪৭. বেলাই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিন্তািও বিনারীতার করেন্তুটি ভিন্তা। ৪৭. বেলাই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিত্তািও বিনারীতার করেন্তুটি কিন্তা স্বর্কারী বিনারী করে করিনের করিনের করিনের করিনের করেন্তুটি করিন বিনারীর করে বিনারীর করে বিনারীর করে বিনারীর বিনারীর করে বিনারীর বিনারীর করে বিনারীর করেন্তুটি করিন বিনারীর বিনারীর করেন্তুটি করিন বিনারীর কর | | نَجينهُر بِسَحَرٍ لا |
| করে আমি তাকে এভাবেই পুরস্কৃত করি। ৩৬. সে (পৃত্ত) আমার কঠোর পাকড়াও সম্পর্কেত জারা বার বার জয় দেবিয়েছিলো, কিন্তু এ সতর্কীকরণে তারাা বারবিতভা তক্ষ করে দিলো। ৩৭. (গতপর) তারা তার কাছে এনেস (সুমঞ্জনের জনা) তার মহমানদের (নিয়ে বাবার) দাবী করবলা, আমি (তানের বলদাম), এবার তোমরা আমার আঘাব উপভোগ করো এবং (জারা) সতর্কবাবী (গুরন্ধ করর দিলামা) ও দেবে নাও। ৩৮. প্রস্তুর্নেই তাদের ওপর আমার এক অমোঘ আযাব প্রচ্ছত আঘাত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এক অমোঘ আযাব প্রচ্ছত আঘাত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব আঘান করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপলেল করার (পরিণামটাও একবার) দেবে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার প্রন্মের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অস্বীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের পেক হাতে) পাকজাত করে বাকেন। ৪১. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছে), তোমাদের সোমারের) এ কান্দেররা তোমাদের করে। ৪৩. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছে), তোমাদের সোমারের) এ কান্দেররা তোমারের ক্রাহিন্র ক্রাহিন্ত ক্রাহিন্র ক্রাহিন্র ক্রাহিন্ত ক্ | ৩৫. এ (কাজ)-টা ছিলো (তাদের প্রতি) আমার একাস্ত | ^ _ ^ |
| করে আমি তাকে এভাবেই পুরস্কৃত করি। ৩৬. সে (পৃত্ত) আমার কঠোর পাকড়াও সম্পর্কেত জারা বার বার জয় দেবিয়েছিলো, কিন্তু এ সতর্কীকরণে তারাা বারবিতভা তক্ষ করে দিলো। ৩৭. (গতপর) তারা তার কাছে এনেস (সুমঞ্জনের জনা) তার মহমানদের (নিয়ে বাবার) দাবী করবলা, আমি (তানের বলদাম), এবার তোমরা আমার আঘাব উপভোগ করো এবং (জারা) সতর্কবাবী (গুরন্ধ করর দিলামা) ও দেবে নাও। ৩৮. প্রস্তুর্নেই তাদের ওপর আমার এক অমোঘ আযাব প্রচ্ছত আঘাত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এক অমোঘ আযাব প্রচ্ছত আঘাত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব আঘান করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপলেল করার (পরিণামটাও একবার) দেবে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার প্রন্মের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অস্বীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের পেক হাতে) পাকজাত করে বাকেন। ৪১. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছে), তোমাদের সোমারের) এ কান্দেররা তোমাদের করে। ৪৩. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছে), তোমাদের সোমারের) এ কান্দেররা তোমারের ক্রাহিন্র ক্রাহিন্ত ক্রাহিন্র ক্রাহিন্র ক্রাহিন্ত ক্ | অনুগ্রহ; যে ব্যক্তি আমার (অনুগ্রহের) কৃতজ্ঞতা আদায় | ه المحمد مِن عِسَوْلُ الْ فَارْتِكُ لَعَجْرِ فَي مِنْ |
| বাকবিতভা তক করে দিলো। ৩৭. (অতপর) তারা তার কাছে এদে (ক্ষেন্সন্থের জন) তার নেহ্মান্দের (নিরে যাবার) দাবী করলো, আমি (তখন) তাদের দৃষ্টিশন্তি বিলুপ্ত করে দিলাম, (আমি তাদের বলাম), এবার তোমরা আমার আমার উপভোগ করে। একং (আমার) সকর্কবাণী (অবন্ধা করার পদিন্দার্মা) -ও দেবে নাও। ৩৮. প্রত্যুহেই তাদের ওপর আমার এক অমোঘ আমাব প্রভাগত হানলো, ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আমাব আখাদন করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপেকা করার (পরিণামটাও একবার) দেবে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা এহণ করার জনো সহজ (করে নাথিল) করেছি, কিন্তু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. কেরাউনের জাতির পোকদের কাছেও আমার পক বেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শক্ত হাতে) পাকড়াও করলাম - ঠিক বেমনি করে সর্বশন্তিমান সন্তা বিদ্যোহীকোর) পাকড়াও করে থাকে। ৪০. (তোমরা কি সন্তিই মনে করছো,) তোমাদের সমাজের) এ কাক্ষেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কাক্ষেরদের চাইতে (শক্তি ও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টং অথবা (আমার) কেতাবের কোখাও দি তোমাদের জন্যে আরাহতি (-মুলক কিছু পিপিকচ) রয়েছে ৪৪. অগরতা তারা বলছে, আমার হিছি (সত্তিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. কিন্তু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শাবিদ্যানের) নির্ধান্ধিত কণ কেয়ামত তা রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্য বড়োই কঠিন ও বড়োই ভিক্ত। ৪৭ অবশাই এসব অপরাধী (নিদারুশ) বিদ্যান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মামের পড়ে আছে। | করে আমি তাকে এভাবেই পুরস্কৃত করি। | شخر |
| মহমানদের (নিয়ে যাবার) দাবী করলো, আমি (তখন) তাদের দৃষ্টিশন্তি বিপুত্ত করে দিলাম, (আমি তাদের বললাম), এবার তোমরা আমার আঘাব উপত্তোগ করে এবং (আমার) সতর্কবাণী (অবজ্ঞা করার পিলামটা) -ও দেবে নাও। ১৮. প্রত্যুবেই তাদের ওপর আমার এক অমোঘ আঘাব প্রচন্ত আঘাত হানলো, ১৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আঘাব আবাদন করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপ্লেফা করার (পরিণামটাও একবার) দেবে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার জনো সহজ (করে নাযিল) করেছি, কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এমেছিলো, ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অস্বীকার করেছে, (আম পরিণামে) আমিও তাদের শেভ হাতে) শাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সভিয়ই মনে করছো,) তোমাদের (সাংজের) এ কাক্ষেররা তোমাদের পর্ববন্তী কাক্ষেরনের সাইতে (শক্তি ও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্ট ও অববা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের কাছেও ও করামত (বিশ্রেই এ (অপরাজের) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্বুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শাক্ষিনানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের ক্ষামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্য বড়োই কঠিন ও বড়োই তিক । ৪৭ অবশাই এসব অপরাধী (নিদারুশ) বিজ্ঞািত ও বড়াই এসব অপরাধী (নিদারুশ) বিজ্ঞাত মুন্তর মানু বিদ্ধের আছে। | বার বার ভয় দেখিয়েছিলো, কিন্তু এ সতর্কীকরণে তারা | ٣٦ وَلَقَنْ ٱنْنَارَمُرْ بَطْشَتَنَا فَتَهَارَوْا بِالنَّذُرِ |
| বললাম), এবার তোমবা আমার আমাব উপভোগ করো এবং (আমার) সতর্কবাণী (অবজ্ঞ কার পরিনাকী) -ও দেবে নাও! ১৮. প্রভূবেই ভাদের ওপর আমার এক অমোঘ আমাব কান্ত ভামবা এবং (আমার) সতর্ককারীদের উল্ভ আমাত হানলো, ১৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব আস্থাদন করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপেন্ধা করার (পরিগামটাও একবার) দেখে নাও! ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা এহণ করার জন্যে সহজ্ঞ (করে নাযিল) করেছি, কিছ্ন কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা এহণ করারঃ ৪১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার কক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এনেছিলো, ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অস্থীকার করেছে, আর পরিগামে) আমিও ভাদের (শক্ত হাতে) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশিভিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সভিাই মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাফেররা ভোমাদের প্রবৃত্তী কাফেরদের চাইতে (শক্তি ও কমতার কিন্ধ থেকে) উৎকৃষ্ট; অবা আমার) কেভাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছে; ৪৪. অথবা ভারা বলছে, আমরা হন্দি (সভিাই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্থুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. কিছু এ পালানোই তো ভাদের শেষ নয়,) বরং ভাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে ভাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই ভিক্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারমন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | মেহমানদের (নিয়ে যাবার) দাবী করলো, আমি (তখন) | ٣٠ وَلَقَنْ رَاوِدُوهٌ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَهَسْنَا ۖ أَعْيُنَهُرْ |
| ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব আরাদন করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপেন্দা করার (পরিণামটাও একবার) দেখে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার জন্যে সহজ (করে নাযিল) করেছি, কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিছু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শন্ত হাতে) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশন্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সিচ্চাই মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাফেররা তোমাদের প্রবর্তী কাফেরদের চাইতে (শন্তি ও কমতার দিল করে পর্ববর্তী কাফেরদের তাইতে (শন্তি ও কমতার করিছাও তোমাদের প্রবৃত্তী কাফেরদের তাইতি (মৃলক কিছু পিপিবছা) রয়েছে? ৪৪. অববা তারা বলছে, আমরা হন্দি (সত্যিই) একটি অপরাজের দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজের) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্মুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেরামত তো রয়েছেই, আর কেরামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিভ। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিনারগ্রতার মাঝে পড়ে আছে। | বললাম), এবার তোমরা আমার আযাব উপভোগ করো | فَنُوْتُوْا عَنَالِبِيْ وَنُنُّرِ |
| আস্বাদন করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপেন্ধা করার (পরিণামটাও একবার) দেখে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার জন্যে সহজ্জ (করে নাযিল) করেছি, কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (জনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিছু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শভ হাতে) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশন্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশন্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করেলাম - তিক থেমনি করে সর্বলতী কান্ধেরদের সমাজের) এ কান্ধেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কান্ধেরদের সহিত্তে (শন্তি ও ক্ষমতার দিক থেকে) উক্কুইং অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবন্ধ) রয়েছেং ৪৪. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সন্থ্রপ্রসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্য বড়োই কঠিন ও বড়োই তিভ। ৪৭. অবশাই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রাত্তি ও বিষারগ্রহার মাঝে পড়ে আছে। | , | ٣٨ وَلَقَنْ مَبَّعَمُرْ بُكْرَةً عَنَابٌ تَسْتَقِرُّ ع |
| আস্বাদন করতে থাকো এবং (আমার) সতর্ককারীদের উপেন্ধা করার (পরিণামটাও একবার) দেখে নাও। ৪০. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার জন্যে সহজ্জ (করে নাযিল) করেছি, কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিছু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শক্ত হাতে) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সভিয়ই মনে করছো,) তোমাদের (সাজরে) এ কান্ধেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কান্ধেরদের সহিত্তি (শক্তি ও ক্ষমতার দিক থেকে) উক্কৃষ্ট অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু পিপিবদ্ধ) রয়েছে ৪৪. আচরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্বুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্য বড়োই তিভ। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিবারগ্রগতার মাঝে পড়ে আছে। | ৩৯. (আমি বললাম,) অতপর তোমরা আমার এ আযাব | م المنات المناف |
| 80. আমি এ কোরআনকে শিক্ষা গ্রহণ করার জন্যে সহজ্জ (করে নাথিল) করেছি, কিছু কেউ আছে কি (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার? 8). ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, 8২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অস্বীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের শেভ হাতে) পাকড়াও করলাম— ঠিক যেমনি করে সর্বশন্তিমান সন্তা (বিদ্রোইদের) পাকড়াও করে থাকেন। 8৩. (তোমরা কি সত্যিই মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাফেররা তোমাদের পূর্ববতী কাফেরদের চাইতে (শন্তি ও ক্ষমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টা অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অবাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছে। 8৪. অধবা তারা বলছে, আমরা হন্দি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সন্থুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিন্তু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেরামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়াই তিভ। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুশ্ব) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | | ۱۰۰ تا وقوا شابی وتار |
| শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. ফেরাউনের জাতির পোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিব্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন পরীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শভ হাতে) পাকড়াও করলাম – ঠিক বেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সন্তিট্র মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাক্ষেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কাক্ষেরদের চাইতে (শন্ধিও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টা অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জরন্য অবাহেতি (-মূলক কিছু লিপিবছা) রয়েছে ৪৪. অথবা তারা বলছে, আমরা হন্মি (সত্তিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্মুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিন্তু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেরামত তো রয়েছেই, আর কেরামত হবে তাদের জন্যে বড়োই তিন্ড। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিশ্রান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | | |
| শিক্ষা গ্রহণ করার? ৪১. ফেরাউনের জাতির পোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিব্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন পরীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শভ হাতে) পাকড়াও করলাম – ঠিক বেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সন্তিট্র মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাক্ষেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কাক্ষেরদের চাইতে (শন্ধিও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টা অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জরন্য অবাহেতি (-মূলক কিছু লিপিবছা) রয়েছে ৪৪. অথবা তারা বলছে, আমরা হন্মি (সত্তিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্মুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিন্তু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেরামত তো রয়েছেই, আর কেরামত হবে তাদের জন্যে বড়োই তিন্ড। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিশ্রান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | | ٣٠ وَلَقَنُ يَسُّونَا الْقُواْنَ لِلذِّكْوِ فَهَلْ مِنْ |
| 8১. ফেরাউনের জাতির লোকদের কাছেও আমার পক্ষ থেকে সতর্ককারী (অনেক নিদর্শন) এসেছিলো, ৪২. কিছু তারা আমার সমুদয় নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শভ হাতে) পাকড়াও করলামন ঠিক যেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সত্যিই মনে করছো,) তোমাদের (সাজের) এ কাফেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কাফেরদের চাইতে (শক্তি ও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টঃ অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছে? ৪৪. অধবা তারা বলছে, আমরা হন্দি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সন্মুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বয়ং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই তিভ। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | _ | ۳ % مارک ء |
| ৪২. কিন্তু তারা আমার সমুদর নিদর্শন অধীকার করেছে, (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শভ হাতে) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করলাম - ঠিক যেমনি করে সর্বশক্তিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সভিট্ট মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাফেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কাফেরদের চাইতে (শক্তি ও ক্ষমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টঃ অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছেঃ ৪৪. অথবা তারা বলছে, আমরা হন্দি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত ক্ষণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিক্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | |
| করলাম- ঠিক যেমনি করে সর্বশন্তিমান সন্তা (বিদ্রোহীদের) পাকড়াও করে থাকেন। ৪৩. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কাফেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কাফেরদের চাইতে (শক্তি ও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টঃ অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু পিপিবদ্ধ) রয়েছেঃ ৪৪. অথবা তারা বলছে, আমরা হিছি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সম্মুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বয়ং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিক্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিজ্ঞান্তি ও বিকারগ্রন্থভার মাঝে পড়ে আছে। | | ٣١ وَلَقَنَ جَاءَ أَلَ فِرْعَوْنَ النُّنُّرُ ج |
| ৪৩. (তোমরা কি সতিয়ই মনে করছো,) তোমাদের (সমাজের) এ কান্ধেররা তোমাদের পূর্ববর্তী কান্ধেরদের চাইতে (শক্তি ও কমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টা অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবন্ধ) রয়েছেঃ ৪৪. অথবা তারা বলছে, আমরা হন্দি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বয়ং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ড। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | (আর পরিণামে) আমিও তাদের (শভ হাতে) পাকড়াও ক্রলামু– ঠিক যেমনি করে সর্বশভিমান সন্তা | ٣٢ كَنَّابُوْ إِلَيْتِنَا كُلِّهَا فَأَخَلْنُهُمْ أَخْلَ عَزِيْزٍ تُقْتَدِرِ |
| চাইতে (শক্তি ও ক্ষমতার দিক থেকে) উৎকৃষ্টঃ অথবা (আমার) কেতাবের কোথাও কি তোমাদের জন্যে অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছেঃ ৪৪. অথবা তারা বলছে, আমরা হন্দি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জ্পন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ড। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রস্তভার মাঝে পড়ে আছে। | ৪৩. (তোমরা কি সত্যিই মনে করছো,) তোমাদের | ٣٣ أَكُفَّارُكُمْ غَيْبٌ مِّنْ أُولِنَكُمْ أَمُّ لَكُمْ |
| অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছে? 88. অথবা তারা বলছে, আমরা হচ্ছি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। 8৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ড। 8৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | 4 |
| অব্যাহতি (-মূলক কিছু লিপিবদ্ধ) রয়েছে! 88. অথবা তারা বলছে, আমরা হল্মি (সত্যিই) একটি অপরাজেয় দল। 8৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হরে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। 8৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ড। 8৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | براءة فِي الزبرِ ع |
| অপরাজেয় দল। ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজেয়) দলটি শোচনীয়ভাবে পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ড। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | |
| ৪৫. অচিরেই এ (অপরাজের) দলটি শোচনীরভাবে পরাজিত হরে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেরামত তো রয়েছেই, আর কেরামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ড। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | ٣٣ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَهِيْعٌ مُنْتَصِرٌ |
| পরাজিত হরে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে পালাতে থাকবে। ৪৬. (কিছু এ পালানাই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জ্ঞানো বড়োই কঠিন ও বড়োই তিক্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | |
| 8৬. (কিন্তু এ পালানোই তো তাদের শেষ নয়,) বরং তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত কণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | পরাজিত হয়ে যাবে এবং (সমুখসমর থেকে) পৃষ্ঠ প্রদর্শন | ٣٥ سيهزا الجبع ويولون الدبر |
| তাদের (শান্তিদানের) নির্ধারিত ক্ষণ কেয়ামত তো রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জ্বন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিক্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রস্তুতার মাঝে পড়ে আছে। | | سامه ادر ایا ۵ رم ۱۸ میا ۵ رم ۱۸ ا |
| রয়েছেই, আর কেয়ামত হবে তাদের জ্বন্যে বড়োই কঠিন ও বড়োই তিন্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | | • |
| ও বড়োই তিক্ত। ৪৭. অবশ্যই এসব অপরাধী (নিদারুণ) বিদ্রান্তি ও বিকারগ্রন্ততার মাঝে পড়ে আছে। | | وأبر |
| বিকারগ্রন্থতার মাঝে পড়ে আছে। | ও বড়োই তিক্ত। | |
| ৫৪ আল ক্মার ৫৫০ মন্যিল ৭ | | ٣٤ إِنَّ الْهُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلْلٍ وَّسُعُو ر |
| | ৫৪ আল ক্মার ৫৫০ | मनियल १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|--|---|
| ৪৮. যেদিন তাদের উপুড় করে (জাহান্নামের) আগুনের দিকে ঠেলে নেয়া হবে (তখন তাদের ঘোর কেটে যাবে, | ٨٨ يَوْمَ يُسْعَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوْمِمِرْ |
| অতপর তাদের বলা হবে); এবার তোমরা জাহান্নামের (আযাবের) স্বাদ উপভোগ করো, | . ذُوْقُواْ مَسَّ سَقَرَ |
| ৪৯. আমি সব কয়টি জিনিসকে অবশ্যই একটি সুনির্দিষ্ট পরিমাণমতো সৃষ্টি করেছি। | ٣٩ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَهُ بِقَنَرٍ |
| ৫০. (আর) আমার হুকুম! সে তো এক নিমেষে চোখের পলকের মতোই (কার্যকর হয়)। | ٥٠ وَمَا ٓ أَمْرُنَاۤ إِلَّا وَاحِنَّةٌ كَلَمْعٍ بِالْبَصَرِ |
| ৫১. তোমাদের (মতো) বহু (বিদ্রোহী) জাতিকে আমি বিনাশ করে দিয়েছি, অতএব আছে কি (তা থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করার মতো কেউ? | ٥١ وَلَقَلْ أَهْلَكُنَا آهْيَاعَكُم مُهَلَ مِنْ مُّلَّكِمٍ |
| ৫২. তারা যা কিছু করছে (তার) সবটুকুই (তাদের আমলনামায়) সংরক্ষিত আছে। | ٥٢ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهٌ فِي الزُّبُرِ |
| ৫৩. (সেখানে যেমনি রয়েছে) প্রতিটি ক্ষুদ্র বিষয়, (তেমনি) লিপিবদ্ধ আছে প্রতিটি বড়ো বিষয়ও। | ٥٣ وكُلُّ مَغِيْرٍ وَكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرُّ |
| ৫৪. (অপরদিকে এ বিদ্রোহের পথ পরিহার করে) যারা (আল্লাহকে) ভয় করেছে, তারা অনাদিকাল (এক সুরম্য) জান্লাতে ও (প্রবাহমান) ঝর্ণাধারায় থাকবে, | ٥٢ إِنَّ الْهُتَّقِيْنَ فِي جَنَّتٍ وَّنَهُو ٧ |
| ৫৫. (তারা অবস্থান করবে) যথাযোগ্য সম্মানজনক জায়গায়, বিশাল ক্ষমতার অধিকারী সার্বভৌম আল্লাহ তায়ালার সানিপ্রে। | ۵۵ فِي مَقْعَلِ صِنْ قِ عِنْلَ مَلِيْكِ مُّقْتَلِورٍ ع |
| সুরা আর রাহ্মান | سُورَةُ الرَّحْيِنُ مَنَنِيَّةً |
| মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ৭৮, রুকু ৩ | إِيَاتٍ : ٨٨ رُكُوعَ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | يِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| ১. পরম করুণাময় (আল্লাহ তায়ালা), | ١ اَلرَّمْنُ ٧ |
| ২. তিনি (তোমাদের) কোরআন শিক্ষা দিয়েছেন; | ا عَلَّمَ الْقُرْأَنَ الْعُرْأَنَ الْعُرْانَ الْعُرْانَ الْعُرْانَ الْعُرْانَ الْعُرْانَ الْعُرْانَ الْعُر |
| ৩. তিনি মানুষ বানিয়েছেন, | ٣ خَلَقَ الْإِنْسَانَ |
| ৪. (ভাব প্রকাশের জন্যে) তিনি তাকে (কথা) বলা শিখিয়েছেন। | مُ عَلَّمُهُ الْبَيَانَ |
| ৫. সূর্য ও চন্দ্র উভয়ই নির্ধারিত হিসাব মোতাবেক (অবিরাম কক্ষপথ ধরে) চলছে, | ٥ أَلَقَّبُسُ وَالْقَهَرُ بِحُسْبَانٍ م |
| ৬. (যমীনে উৎপাদিত যাবতীয়) লতাপাতা ও গাছগাছড়া (সব) তাঁরই সামনে সাজ্ঞদাবনত হয়, | ٢ وَّالنَّجْرُ وَالشَّجَرُ يَسْجُلُنِ |
| প্রাসমান তাকে তিনি সমুনুত করে রেখেছেন এবং (মহাশূন্যে তার ভারসাম্যের জন্যে) তিনি একটি মানদভ স্থাপন করেছেন, | 4 وَالسُّهَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْهِيْزَانَ لا |
| ৮. যাতে করে তোমরা কখনো (আল্লাহ তায়ালার নির্ধারিত এই মানদন্ডের) সীমা অতিক্রম না করো। | ^ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْعِيْزَانِ |
| ৯. ইনসাফ মোতাবেক (তোমরা ওযনের) মানদন্ত প্রতিষ্ঠা করো এবং (ওযনে কম দিয়ে) মানদন্তের ক্ষতি সাধন করো না। | ٩ وَٱقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْعِيْزَانَ الْعِيْزَانَ |
| ৫৫ সূরা আর রাহমান (৫৫১ | भनियन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|--|--|
| ১০. (ভূমন্ডলকে) তিনি সৃষ্টিরাজির জন্যে (বিছিয়ে) রেখেছেন, | ١٠ وَ الْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْلَانَامِ ٢ |
| ১১. তাতে রয়েছে (অসংখ্য) ফলমূল, (আরো রয়েছে) খেজুর, যা (আল্লাহর কুদরতে) খোসার আবরণে (ঢাকা) থাকে, | ١١ فِيْهَا فَاكِهَةً لِى وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْإَكْمَا مِ صِلِ |
| ১২. (আরো রয়েছে) ভৃষিযুক্ত শস্যদানা ও সুগন্ধযুক্ত (ফল), | ١٢ وَالْعَبُّ نُو الْعَصْفِ وَالرَّيْعَانُ ع |
| ১৩. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ١٣ فَبِاَيِّ اٰكَاءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِٰنِ |
| ১৪. তিনি মানুষকে বানিয়েছেন পোড়ামতো শুকনো ঠনঠনে এক টুকরো মাটি থেকে, | ١٣ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ مَلْصَالٍ كَالْفَحَّارِ ٧ |
| ১৫. এবং জ্বিনদের বানিয়েছেন আগুন থেকে, | ١٥ وَهَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ج |
| ১৬. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ١٦ فَبِاَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبُنِ |
| ১৭. (তিনি দৃই মওসুমের) দৃই উদয়াচলের মালিক এবং (আবার দুই মওসুমের) দুই অস্তাচলেরও মালিক। | ١٤ رَبُّ الْهَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْهَغْرِبَيْنِ ع |
| ১৮. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ١٨ فَبِاَيِّ اللَّهِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِن |
| ১৯. তিনি দুটি সমুদ্রকে (বয়ে চদার জনে) ছেড়ে দিয়ে রেখেছেন যেন তা একে অপরের সাথে মিশে যেতে পারে, | 19 مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ لا |
| ২০. (তারপরও) তাদের উভয়ের মাঝে (রয়ে যায় এমন) একটি অন্তরাল– যার সীমা তারা কখনো অতিক্রম করতে পারে না, | ٢٠ بَيْنَهُمَا بَوْزَحُ لا يَبْغِيٰنِ ج |
| ২১. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ٢١ فَبِاَيِّ اٰكَاءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِٰنِ |
| ২২. (এ) উভয় (সমুদ্র) থেকে তিনি (মহামূল্যবান) প্রবাল ও মুক্তা বের করে আনেন, | ٢٢ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللَّوْلُوُّ وَالْمَرْجَانُ ء |
| ২৩. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ٢٣ فَبِاَيِّ أَلَاءٍ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِن |
| ২৪. সমুদ্রে বিচরণশীল পাহাড়সম (বড়ো বড়ো) জাহাজসমূহ তো তাঁরই (ক্ষমতার প্রমাণ), | ٣٣ وَلَهُ الْجَوَارِ الْهُنْشَئْتُ فِي الْبَحْرِ كَالْإَعْلَامِ ع |
| ২৫. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ٢٥ فَبِاَيِّ أَلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِنِ ع ٢٦ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ عصد |
| ২৬. (যমীন ও) তার ওপর যা কিছু আছে তা সবই (একদিন) বিলীন হয়ে যাবে, | ٢٦ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ عمل |
| ২৭. বাকী থাকবে ওধু তোমার মালিকের সন্তা- যিনি পরাক্রমশালী ও মহানুভব, | ٢٠ وَّيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلْلِ وَالْإِكْرَا] ٤ |
| ২৮. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٢٨ فَبِاَيِّ إٰلاَّءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبُنِ |
| ২৯. এই আকাশমন্তলী ও ভূমন্ডলে যতো কিছু আছে সবাই নিজ নিজ প্রয়োজন তাঁর কাছেই চায়; (আর) তিনি | ٢٩ يَسْئَلُهُ مَنْ فِي السَّبُوٰكِ وَالْأَرْضِ وَ كُلُّ |
| প্রতিদিন (প্রতিমুহূর্ত) কোনো না কোনো কাজে তৎপর রয়েছেন, | يَوْ إِ هُوَ فِي شَاْنٍ ج |
| ৫৫ সূরা আর রাহমান | मनियल १ |

| কোরআন শ্রীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্লো ফামা |
|--|---|
| ৩০. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٠ فَبِاَيِّ اٰلاَءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ |
| ৩১. হে মানুষ ও জ্বিন, (এর মাঝেও কিন্তু) আমি তোমাদের (হিসাব নেয়ার) জন্যে অচিরেই সময় বের করে নেবো, | ٣١ سَنَفُرُغُ لَكُر أَيُّكَ الثَّقَلٰيَ ع |
| ৩২. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٢ فَبِاَيِّ اٰكَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبِنِ |
| ৩৩. হে জ্বিন ও মনুষ্য সম্প্রদায়, যদি আকাশমভল ও ভূমভলের এ সীমারেখা অতিক্রম করার তোমাদের সাধ্য থাকে তাহলে (যাও! অতপর) তা অতিক্রম করেই দেখো; (কিন্তু আমার দেয়া বিশেষ) ক্ষমতা ছাড়া তোমরা কিছুতেই (এ সীমা সরহদ) অতিক্রম করতে পারবে না, | ٣٣ يُمَعْشَرَ الْجِيِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُهُ الْ الْ الْمَعْمَدُ الْجِيِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُهُ اَنْ تَنْقُنُوا مِنْ اَقْطَارِ السَّاوٰكِ وَالْأَرْضِ فَانْقُنُوا مِنْ اَتْفُنُونَ إِلَّا بِسُلْطٰيٍ عَ |
| ৩৪. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٣ فَبِاَيِّ الْآءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ |
| ৩৫. সেদিন তোমাদের উভয় সম্প্রদায়ের ওপর আগুনের ক্ষুলিংগ ও ধোঁয়ার কুন্ডলী পাঠানো হবে, তোমরা (কিছুতেই তা) প্রতিরোধ করতে পারবে না, | ٣٥ يُرْسَلُ عَلَيْكُهَا شُوَانًا مِّنَ تَّارٍ فَا وَّنُعَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرُنِ |
| ৩৬. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٦ فَيِاَيِّ الْآءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ |
| ৩৭. যখন আসমান ফেটে যাবে অতপর তখন তা (লাল) চামড়ার মতো রক্তবর্ণ হয়ে পড়বে, | ٣٠ فَاذَا انْشَقَّسِ السَّمَاءُ فَكَانَتُ وَرُدَةً كَالرِّفَانِ ج |
| ৩৮. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٨ فَبِاَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبِٰنِ |
| ৩৯. সেদিন কোনো মানুষ ও জ্বিনের (কাছ থেকে তার) অপরাধ সম্পর্কে (কোনো কৈফিয়ত) জ্বানতে চাওয়া হবে না, | ٣٩ فَيَوْمَئِنِ لا يُسْئَلُ عَنْ ذَنَّبِهِ إِنْسُ وَّلَا جَاللَّهُ وَلَا عَنْ ذَنَّبِهِ إِنْسُ وَّلَا |
| ৪০. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٠ فَبِاَيِّ أُلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبِنِي |
| 8). অপরাধীরা তাদের (অপরাধী) চেহারা দিয়ে (সেদিন এমনিই) চিহ্নিত হয়ে যাবে, (অপরাধের নথি তাদের ললাটেই এঁটে থাকবে) এবং তাদের কপালের চুল ও পা ধরে ধরে (হাঁকিয়ে) নেয়া হবে, | ٣١ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيْمُمُرْ فَيُؤْهَلُ إِلَّا اللَّهُ الْمُحْرِمُونَ بِسِيْمُمُرْ فَيُؤْهَلُ اللَّ |
| ৪২. অতপর (হে মানুষ ও জি্ন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নিদর্শন অস্বীকার করবে! | ٣٢ فَبِاَيِّ إَلَاَءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ |
| ৪৩. (সেদিন তাদের বলা হবে,) এ হচ্ছে সেই জাহান্নাম যাকে (এ) অপরাধী ব্যক্তিরা মিধ্যা বলতো, | ٣٣ هٰٰنِهِ جَهَنَّـرُ الَّتِي يُكَنِّبُ بِهَا الْهُجْرِمُوْنَ ر |
| ৪৪. তারা (সেদিন) তার ফুটস্ত পানি ও জাহান্নামের মাঝে ঘুরতে থাকবে, | ٣٣ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ جَعِيْمٍ أَن عَ |
| ৪৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নিদর্শন অস্বীকার করবে। | ٣٥ فَيِاَيِّ إَلَاَءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ ع |
| | |

अंग्राक्तक नात्यभ

৫৫ সূরা আর রাহমান

40 ٩٥

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ কুলা ফামা |
|---|--|
| ৪৬. যে ব্যক্তি তার নিজের মালিকের সামনে দাঁড়া (সময়কে) ভয় করবে, তার জন্যে থাকবে দুটো (সুর বাগিচা, | বার الله مَنْتُن عَانَ مَقَا اً رَبِّهِ مَنْتُن عَانَ مَقَا اً رَبِّهِ مَنْتُن عَانَ مَقَا اللهِ مَنْتُن عَانَ |
| ৪৭. অতপর (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমার মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, | ४ مَبِاَيِّ اللَّهِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبُن لا |
| ৪৮. সে (বাগিচা) দুটোও (আবার) হবে ঘন শাখা প্রশ বিশিষ্ট, | ٠٠ دوال افعاق |
| ৪৯. অতপর (হে মানুষ ও জি্বন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ١٠ مياي الاغربيدة للربي |
| ৫০. সেখানে দুটো ঝর্ণাধারা প্রবাহমান থাকবে, | ٥٠ فِيْهِهَا عَيْنُنِ تَجْرِيْنِ ج |
| ৫১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | اللَّهُ فَيَامِي الأَوْرَئِيمَا لَكُونِي |
| ৫২. সেখানে প্রতিটি ফল থাকবে (আবার) দু'প্রকারের | ٥٢ فِيْهِهَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجُنِءَ |
| ৫৩. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | اللَّا قَبِّا كِي الْآءِ رَبِّيكَ لَكُلُوبِي |
| ৫৪. (জান্নাতের অধিবাসীরা সেখানে) রেশমের অ দিয়ে মোড়ানো পুরু ফরাশের ওপর হেলান চি (আয়েশে) বসবে, (এ সময়) উভয় উদ্যান (ফল তাদের সামনে) ঝুলন্ত অবস্থায় থাকবে, | المراجع المراج |
| ৫৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ۵۵ فَيِاَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبُنِ |
| ৫৬. সেখানকার (অগণিত নেয়ামতের) মধ্যে থাব আয়তনয়না হুর, যাদের (জান্নাতের) এ (অধিবাসী)- আগে কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন কখনো স্পর্শও করেনি | ris Service of the se |
| ৫৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, | अ४ نَبِاَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَنِّبٰيِء |
| ৫৮. এরা যেন এক একটি প্রবাল ও পদ্মরাগ, | ٥٨ كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُونَ وَالْهَرْجَانُ ؟ |
| ৫৯. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে? | এ৭ فَبِأَىِّ اٰكَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبُنِ |
| ৬০. (তুমিই বলো,) উত্তম (আনুগত্য)–এর বিনিময় উ (পুরস্কার) ছাড়া আর কি হতে পারে? | पुम مَلْ جَزَّاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ج |
| ৬১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ।٢ فَبِاَيِّ اللَّاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ |
| ৬২. (নেয়ামতের) এ দুটো (উদ্যান) ছাড়াও (সেখা রয়েছে দুটো (ভিন্ন ধরনের) উদ্যান, | ۱۱ ومِي دورِهِم جنسَ ع |
| ৬৩. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমা মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে! | ٦٣ فَبِاَيِّ أَلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبُنِ لا |
| ৬৪. সে দুটো (বাগিচা হবে চির) সবুজ ও ঘন, | ٦٢ مُنْ هَامَّتن ع |
| ৫৫ সূরা আর রাহমান | भनियल १ |

| ৬৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৬৬. সেখানে থাকবে দুটো বর্ণাধারা, কোয়ারার মতো সাদা উচ্চল গতিতে তা অবিরাম বইতে থাকবে, ৬৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৬৮. সেখানে (আরো) থাকবে (বং বেরংয়ের) ফল পাকড়া— থেজুর ও আনার, ৬৯. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৭০. সেখানে থাকবে সং স্বভাবের (অনিন্দ্র) সুন্দরী রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৭২. (এ) আয়ভলোচনা হররা (রয়েছে) তার্বতে (অপেক্ষমাণ অবস্থায়), ৭৩. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো জ্বিন এদের আগেক বলান নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো জ্বিন এদের অপিও করেনি, ৭৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. জোল্লাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেপান দিয়ে বসবে, ৭৬. জোল্লাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেপান দিয়ে বসবে, ৭৬. জাল্লাতের অধিকারী) ও ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেপান দিয়ে বসবে, ৭৬. কতাে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৭৬. কার মাক্র চিক্রের নাম, তিনি মাগিকর কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৭৮. করে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকের কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ৭৮. করে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মাগিকর কোন্ নেরামত অধীকার করবে, ১০ ক্রার্ট বিহান তামার মাগিকের নাম, তিনি মাগির ব্রুইটা বিহুইটা বিহান। ১০ ব্রুইইটার বিহান। ১০ ব্রুইইটার বিহান। ১০ ব্রুইটার বিহান। ১০ ব্রুইটার বিহান বিহান বিহান। ১০ ব্রুইটার বিহান বিহান বিলাম বিলাম বিলা) ১০ ব্রুইটার বিহান। ১০ ব্রুইটার বিহান বিহান বিহান বিহান। ১০ ব্রুইটার বিহান বিহান বিহান বিহান। ১০ ব্রুইটার বিহান বিহা | | | |
|--|---------|---|---|
| মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৬৬. সেখানে থাকবে দুটো ঝর্দাথারা, ফোয়ারার মতো সালা উচ্ছল গতিতে তা অবিরাম বইতে থাকবে, ৬৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭০. সেখানে থাকবে সং কভাবের (অনিন্দা) সুন্দরী রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭০. সেখানে থাকবে সং কভাবের (অনিন্দা) সুন্দরী রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭২. (এ) আয়ভলোচনা হররা (রয়েছে) তাবুতে (অপেক্ষমাণ অবস্থায়), ৭০. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আলে অন্য কোনো মানুষ কিবো জ্বিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আলে অন্য কোনো মানুষ কিবো জ্বিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. (জায়াতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সকুক্র চানরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৮. কতো মহান তেমার মালিকের নাম, ১৮. কতা মহান তেমার মালিকের নাম, ১৮. কতো মহান তেমার মালিকের নাম, ১৮. কতা মহান তেমার মালিকের নাম, ১৮. ক্রিন্ট নিক্টি নিক্ট নিক্টি বিল্বান নিক্টি তিন্টি সংঘটিত হবে, ১০. বিল্বান নিক্টি নিক্ | 1 | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ কালা ফামা |
| সদা উচ্ছল গতিতে তা অবিরাম বইতে থাকবে, তব. অতএব (বে মানুষ ও ছিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, তচ. সেখানে (আরো) থাকবে (বং বেরংয়ের) ফল পাকজা— বেছর ও আনার, তচ. আতএব (বে মানুষ ও ছিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, ব০. সেখানে থাকবে সং স্বভাবের (অনিন্দ্য) সৃন্দরী রমগীরা, ব১. অতএব (বে মানুষ ও ছিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, ব২. (এ) আয়তলোচনা হররা (রয়েছে) তাবুতে (অপেক্ষমাণ অবহায়), ব০. অতএব (বে মানুষ ও ছিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, ব৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো ছিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, ব৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো ছিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, ব৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো ছিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, ব৬. (জানাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার মালিকের কোন্ নেয়ামত অবীকার করবে, বছানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, বছানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, বছানা ত সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, বিহানাও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ব৮. কতো মহান ডোমার মালিকের নাম, ডিনি মহাপ্রতাপলালী ও পরম অনুগ্রহশীল। স্বাা আাল ওয়াকের মাহ মন্তায় অবতীর্ণ— আয়াত ৯৬, কক্ ও রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন (কেয়ামতের অবণারারী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ১. (তবন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অবীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভুল্টনকারী, (আর কারো মর্যান্য) সমুনুতকারী, ৪. প্থিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ (ত্বন্) থিনিত্ন) নি হবে (কারো মর্যাদা) ভুল্টনকারী, (আর কারো মর্যান্য) সমুনুতকারী, ৪. প্থিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ (ত্বন্) থিনিত্ন) নি হবে কিবের কম্পনে কম্পনে ক্রিম স্বান্তার ক্রিম তারানি সংঘটিত হবে, ১ এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভুল্টনকারী, (আর কারো মর্যান্য) সমুনুতকারী, ৪. প্থিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ (ত্বন্) থিনিত্ন) নি হবে বিরার ম্বাদা) ভূল্টনকারী, (আর কারো মর্যান্য) সমুনুতকারী, ৪. প্থিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ প্রিমী যথন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ প্রিমী যথন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ প্রমী যথন প্রবল বিরা ম্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্থানি ক্রমির স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্বান্টি স্ব | | মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, | ٦٥ فَبِاَيِّ اٰلاَءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِنِيءَ |
| মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৬৮. সেখানে (আরো) থাকবে (বং বেরংয়ের) ফল পাকড়া- শেল্পর ও আনার, ৬৯. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭০. সেখানে থাকবে সং স্বভাবের (অনিন্দ্য) সুন্দরী রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭২. (এ) আয়তলোচনা হররা (রয়েছে) তাবুতে (অপেক্ষমাণ অবস্থায়), ৭০. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো জিন এদের লগপিও করেনি, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিবো জিন এদের লগপিও করেনি, ৭৪. এতের (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. (জারাতের অধিকারী) এ বাজিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৭. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭১. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। সুরা আল্ল ওয়াকের করবে ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। সুরা আল্ল ওয়াকের অবশ্যজারী) ঘটনাটি সংঘটিত হবরার অধীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভুল্চনকারী, (আর কারো মর্যানা) সমুনুতকারী, ৪. প্থিবী যথন প্রবল কলেনে কলিত হবে, ১ বিহানী ট্রিক্র মুন্ন বিলিকর কলেনে কলিত হবে, ১ বিলিকেন্ন মিনিন্নী। সমুনুতকারী, (আর কারো মর্যানা) সমুনুতকারী, তান কারে মর্যানা সমুনুকর কলেনে কিলেন্ত কলিনে কলিকের কলিকের কলিত হবে, ১ বিল্বীয়া বিল্বীয়া বিল্বীয়া কিলেন্ত কলিকের কলিন কলিকের কল | | | ٢٦ فِيْهِمَا عَيْنِي نَضَّا هَتْنِي ٤ |
| পাকড়া- থেজুর ও আনার, ৬৯. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭০. সেখানে থাকবে সং হভাবের (অনিন্দ্য) সুন্দরী রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭২. (এ) আয়তলোচনা হররা (রয়েছে) তাবুতে (অপেক্ষমাণ অবস্থায়), ৭০. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিংবা জিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিংবা জিন এদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৫. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. (জানাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭১. কতা মহান ভোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুর্যহশীল। স্বা আল ওয়াকেয়াহ মন্তায় অবতীর্ণ – আয়াত ৯৬, রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যামবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হবেয়ার অধীকারকারী আক্রেমের বিলানী-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভুলুন্টনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রা ইনি টুনিট্ নিম্মানী বিনান দিরা বন্ধন কম্পিত হবে, প্রা ইনি টুনিট্ নিম্মানী সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রা ইনি টুনিট্ নিম্মানী সান্ধন ক্রিম ক্রাবল কম্পনে কম্পিত হবে, স্বা হিন্দির নিম্মানী সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, | | | ٢٠ فَبِأَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبِهِ عَ |
| মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭০. সেখানে থাকবে সং স্বভাবের (অনিন্দ্য) সুন্দরী রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭০. আডাব্রুল কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত করিল করের (রয়েছে) তাঁবুতে (অপেন্ধমাণ অবস্থায়), ৭০. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭৪. এদের আণো অন্য কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন এদের স্পর্ণিও করেনি, ৭৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭৬. (জান্নাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার করিল, ও৬. (জান্নাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার করিল, ওক. এক্র করে ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭০. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭০. কত্যে মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুযহশীল। সুরা আলা ওরাকেরমাহ মকায় অবতীবি– আরাত ৯৬, রুত্ব ও রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যজারী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অস্বীকারকারী থাকবে না। ত্ এ (ঘটনা)-টি হবে (করের মর্যাদা) ভূলুক্টনকারী, (আর করের মর্যাদা) সম্মুন্তকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ দুবিরী যখন প্রবল কম্পনে কমিতে হবে, | | | ١٨ فِيْهِمَا فَاكِهَةً وَّنَخُلُّ وَرَمَّانٌ عَ |
| রমণীরা, ৭১. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭২. (এ) আয়তলোচনা হররা (রয়েছে) তাঁবুতে (অপেক্ষমান অবস্থায়), ৭৩. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এনের আগে অবা কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন এদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন এদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. জোন্নাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিছানা ও সরুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭০. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭০. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। সুরা আশল ওয়াক্ষেয়াহ মঞ্জায় অবতীর্ণ– আরাত ৯৬, রুক্ ও রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যজারী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অধীকারকারী বাধিকেন না। ত্য এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূল্কনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রতি ক্রেক্টি বুলি ক্রিটি বুলি ক্রিটি করেন স্বিন ক্রিরা মর্যাদা) সমুন্রতকারী, ১. প্রথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, | | | ٦٩ فَبِاَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبْنِ ع |
| মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭২. (এ) আয়তলোচনা হররা (রয়েছে) তাঁবুতে (অপেক্ষমণ অবস্থায়), ৭৩. অভএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন এদের স্পর্ণও করেনি, ৭৫. অভএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. জান্নাতের আধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সর্বজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৭. অভএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. জান্নাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিহানা ও সর্বজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৭. অভএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। স্বা আল ওয়াকেমাহ মক্রাম অবতীর্ণ– আয়াত ৯৬, রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যজাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অধীকারকারী থাকবে না। ১. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূল্চনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ বিরী বুলন প্রবাক ক্রমনে কলিত হবে, ১ বিরী বুলন প্রবাক ক্রমনে ক্রমন ক্রিম প্রবাল ক্রমনে ক্রমন ক্রিম প্রবাল ক্রমনে ক্রমন ক্রিম প্রবাল ক্রমনে ক্রমন বিলা সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল ক্রমনে ক্রমন ক্রমন বেল ক্রমনে ক্রমনে ক্রমন ক্রমন প্রবল ক্রমনে ক্রমন ক্রমন বাল ক্রমন ক্রমন ক্রমন প্রবাল ক্রমনে ক্রমন ক | | | ٤٠ فِيهِي خَيْرِتُ مِسَانٌ ج |
| (অপেক্ষমাণ অবস্থায়), ৭৩. অতথ্ৰ (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমৱা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন এদের অপর্পও করেনি, ৭৫. অতথ্ৰৰ (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমৱা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭৬. (জান্নাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিছানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৭. অতথ্ৰৰ (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭৭. অতথ্রব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অস্বীকার করবে, ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। সুরা আল ওয়াকেয়াহ মন্তার অবল্যজাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ১. তেখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অস্বীকারকারী থাক্বেন না ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভ্রষ্টনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রতিন্তিনী ন্মী দ্বিনি বিন্তু ক্রিটি ত্রা ক্রিটি ব্যক্তির হবে, প্রতিন্তিনী বুলিন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রতিন্তিনী বুলিন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রতিনী বুলিন প্রবিধ্বন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রত্নির্বিধ্বন ব্যবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রত্নির্বিধ্বন ব্যবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রত্নির্বিধ্বা বুলিন ক্রমেন ক্রমেন ক্রমিল ক্রমেন ক্রমিন ক্রমেন ক্রমিন প্রবল কম্পনেন ক্রমিন ক্রমেন ক্রমিন ক্রমেন ক্রমিন ক্রমেন ক্রমিন ক্রমেন ক্রমিন ক্র | | 1 77 | ١ غَبِاَيِّ الْآءِ رَبِّكُهَا تُكَلِّبَٰنِ |
| মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, 9৪. এদের আগে অন্য কোনো মানুষ কিংবা জ্বিন এদের লপপিও করেনি, 9৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, 9৬. (জানাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিছানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, 9৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের জান্ নেয়ামত অধীকার করবে, 9৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, 9৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। স্বা আল ওয়াকে মাহ মজায় অবতীর্ণ– আয়াত ৯৬, রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যজাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অধীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূলুষ্ঠনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ বিহানী ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ১ প্রথবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ প্রথবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ প্রথবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ বিহানী ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ১ প্রথবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পত হবে, ১ প্রথবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ১ বিহানী ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ১ প্রথবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ১ বিহানী ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ক্রিক্র মুন্নি বিহানী ১ প্রথবী ব্যবল ক্রমনে ক্রিক্র করবে, ১ ক্রমন ক্রম | | | ٢٢ مُورٌ مُقْصُورُتُ فِي الْخِيَارِ ج |
| শ্বর্গণ্ড করেনি, ৭৫. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. (জানাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিছানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ৭৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। স্বা আল ওয়াকেয়াহ মঞ্জায় অবতীর্গ- আয়াত ৯৬, য়য়ৡ ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যজাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অধীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভুলুষ্ঠনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, | | _ ' ' - ' ' ' ' | ٢٣ فَمِاَيِّ اٰكَاءِ رَبِّكُهَا تُكَذِّبِي ع |
| মালিকের কোন নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৬. (জান্নাতের অধিকারী) এ ব্যক্তিরা সুন্দর গালিচার বিছানা ও সবুজ চাদরের ওপর হেলান দিয়ে বসবে, ০৭. অতএব (হে মানুষ ও জিন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। হ ব্রিইট্রিইট্রিইট্রেইট্রেইট্রেইট্রেইট্রেইট্রেইট্রেইট্রে | | -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, -, - | ٢٠ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانَّ عَ |
| বিহুনা ও সবুজ চাসরের ওপর হেলান লিয়ে বসবে, বিহুনা ও সবুজ চাসরের ওপর হেলান লিয়ে বসবে, বিহুনা ভ নি | | | ٥٥ فَبِاَىِّ اٰلَاَءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِٰنِ |
| ৭৭. অতএব (হে মানুষ ও জ্বন), তোমরা তোমাদের মালিকের কোন্ নেয়ামত অধীকার করবে, ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। হল স্বা আশ ওয়াকেয়াহ মঞ্জায় অবতীর্ণ- আয়াত ৯৬, রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- শুন্তি ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যমাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অধীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূল্ঠনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, প্রা ভূল গ্রা ভ্রা ক্রা ভ্রা ভূল গ্রা ভূল গ্র ভূল গ্রা ভূল | | • • • | |
| মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। সুরা আল ওয়াকেয়াহ মঞ্জায় অবতীর্ণ — আয়াত ৯৬, রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যভাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অস্বীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূলুষ্ঠনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমূন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, শূর্তি নুল্লি বিশ্ব বিশ্ব প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, শ্রাইন নুল্লি বিশ্ব বিশ্ব প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, শ্রাইন নুল্লি বিশ্ব বিশ্ব প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, শ্রাইন নুল্লি বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার বিশ্ব বিশ্ | | 1 1 // | ٤٤ فَبِاَيِّ اٰلَاءِ رَبِّكُهَا تُكَنِّبِنِ |
| মক্কায় অবতীর্ণ – আয়াত ৯৬, রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে – بِسْمِ اللَّهِ الرَّمْشِ اللَّهِ الرَّمْشِ اللَّهِ الرَّمْشِ اللَّهِ الرَّمْشِ اللَّهِ الرَّمْشِ اللَّهِ الرَّمْشِ الرَّمِيْرِ اللَّهِ الرَّمْشِ الرَّمِيْرِ اللَّهِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمِيْرِ اللَّهِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمْشِ الرَّمْسُ اللَّهِ اللَّهِ الرَّمْسُ اللَّهِ الرَّمْسُ اللَّهِ الرَّمْسُ اللَّهِ اللَّهِ الرَّمْسُ اللَّهِ الرَّمْسُ اللَّهِ الرَّمْسُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ | | ৭৮. কতো মহান তোমার মালিকের নাম, তিনি মহাপ্রতাপশালী ও পরম অনুগ্রহশীল। | |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— - - - - - - - - - - | | | |
| ১. যখন (কেয়ামতের অবশ্যম্ভাবী) ঘটনাটি সংঘটিত হবে, ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অস্বীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূলুষ্ঠনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, γ ঘটনাত ১ দুল্লিভ ১ | | , | |
| ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অস্বীকারকারী থাকবে না। ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূলুষ্ঠনকারী, (আর কারো মর্যাদা) সমুন্নতকারী, ৪. পৃথিবী যখন প্রবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অস্বীকারকারী ১. (তখন) কিউই তার সংঘটিত হের্মার | | | A |
| ৪. পৃথিবী যখন প্ৰবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ يَا أُرْضُ رَجًّا ١ الْأَرْضُ رَجًّا ١ الْأَرْضُ رَجًّا ١ ا | नात्यभ | ২. (তখন) কেউই তার সংঘটিত হওয়ার অপীকারকারী | A 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
| ৪. পৃথিবী যখন প্ৰবল কম্পনে কম্পিত হবে, ১ يَا أُرْضُ رَجًّا ١ الْأَرْضُ رَجًّا ١ الْأَرْضُ رَجًّا ١ ا | য়াক্ফে | ৩. এ (ঘটনা)-টি হবে (কারো মর্যাদা) ভূপুষ্ঠনকারী, (আর | |
| | שׁ | | ٣ إِذَا رُجِّتِ الْإَرْضُ رَجًّا لا |
| ৫৬ সূরা আল ওয়াকেয়াহ 💮 🕳 কেনে মন্যিল ৭ | | ৫৬ সূরা আল ওয়াকেয়াহ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ কালা ফামা |
|---|---|
| ৫. পর্বতমালা সম্পূর্ণরূপে চ্র্ণ-বিচ্র্ণ করে দেয়া হবে, | ۵ وَّبُسِّ ِ الْجِبَالُ بَسًّا لا |
| ৬. অতপর তা বিক্ষিপ্ত ধুলাবালিতে পরিণত হয়ে যাবে, | آ فَكَانَى مُبَاءً مُثْبَثًا y |
| ৭. আর তোমরা (মানুষরা তখন) তিন ভাগ হয়ে যাবে; | ٤ وكَنْتُر أَزْوَاجًا ثَلْثَةً ١ |
| ৮. (প্রথমত হবে) ডান দিকের দল, জানো এ ডান দিকের লোক কারাঃ | ٨ فَأَصْحُبُ الْمَيْمَنَةِ لَا مَا آَصُحُبُ الْمَيْمَنَةِ ط |
| ৯. (দ্বিতীয়ত হবে) বাম দিকের দল, কারা এ বাম দিকের লোকং | ٩ وَٱصْحَابُ الْهَشْنَهَةِ لَا مَا ٓ ٱصْحَابُ الْهَشْنَهَةِ ١ |
| ১০. (তৃতীয়ত হবে) অগ্রবর্তী (ঈমান আনয়নকারী) দল, এরাই (হলো মূলত প্রধান) অগ্রগামী দল, | ١٠ وَ السَّبِقُوْنَ السَّبِقُوْنَ ٤٢ |
| ১১. এরা হচ্ছে (আল্লাহ তায়ালার) একান্ত ঘনিষ্ঠ বান্দা, | ١١ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ع |
| ১২. (এরা অবস্থান করবে) নেয়ামতে পরিপূর্ণ জান্নাতসমূহে। | ١٢ فِي جَنْسِ النَّعِيْرِ |
| ১৩. (এদের) বড়ো অংশটি (অবশ্য হবে) আগের লোকদের মধ্য থেকে, | ١٣ ثُلَّةً مِّيَ الْأُولِيْنَ ٧ |
| ১৪. আর সামান্য (অংশই) থাকবে পরবর্তী লোকদের মাঝ থেকে; | ١٣ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْأَخِرِيْنَ ١ |
| ১৫. (তারা থাকবে) স্বর্গখচিত আসনের ওপর, | ١٥ عَلَى سُرُرٍ مُوْضُوْنَةٍ ٧ |
| ১৬. তার ওপর তারা (একে অপরের) মুখোমুখি (আসনে) হেলান দিয়ে (বসবে)। | ١٦ مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقْبِلِينَ |
| ১৭. তাদের চারপাশে (তাদের সেবার জ্বন্যে) চির কিশোরদের একটি দল ঘুরতে থাকবে, | ١٠ يَطُونُ عَلَيْهِرْ وِلْهَ أَنَّ مُّخَلِّدُونَ ٧ |
| ১৮. পানপাত্র ও প্রবাহমান সুরা ভর্তি পেয়ালা নিয়ে (এরা প্রস্তুত থাকবে), | ١٨ بِٱكْوَابٍ وَّ ٱبَارِيْقَ لَا وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ لا |
| ১৯. সেই (সুরা পান করার) কারণে তাদের কোনো শিরপীড়া হবে না, তারা (কোনোরক্ম) নেশাও করবে না, | ١٩ " يُصَلَّعُونَ عَنْهَا وَ لَا يُنْزِفُونَ لا |
| ২০. (সেখানে আরো থাকবে) তাদের নিজ নিজ পছক্মতো ফলমূল, | ٢٠ وَفَاكِهَةٍ مِّهًا يَتَخَيَّرُونَ ١٠ |
| ২১. (থাকবে) তাদের মনের চাহিদা মোতাবেক (রকমারি) পাখীর গোশত; | ٢١ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمًا يَشْتَهُونَ |
| ২২. (সেবার জন্যে মজুদ থাকবে) সুন্দরী সুনয়না সাথী তরুণী দল, | ۲۲ و حور عِين لا |
| ২৩. তারা যেন (সযত্নে) এক একটি ঢেকে রাখা মুক্তা, | ٢٣ كَأَمْثَالِ اللَّوْلُوِ الْمَكْنُونِ ؟ |
| ২৪. (এর সব কিছুই হচ্ছে তাদের) সে (কাজের) পুরস্কার যা তারা (দুনিয়ায়) করে এসেছে। | ٣٣ جَزَاءً بِهَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ |
| ২৫. সেখানে তারা কোনো অর্থহীন প্রদাপ (বা কথাবার্তা) শুনতে পাবে না, | ٢٥ ﴾ يَسْهَعُونَ فِيْهَا لَغُوًّا وَّلَا تَٱثْثِيهًا لا |
| ৫৬ সূরা আল ওয়াকেয়াহ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্রালা ফামা |
|---|---|
| ২৬. (সেখানে) বরং বলা হবে (শুধু) শান্তি, নিরবচ্ছিন্ন শান্তি! | ٢٦ إِلَّا قِيْلًا سَلْهًا سَلْهًا |
| ২৭. (অতপর আসবে) ডান পাশের লোক, আর কারা (এ) ডান পাশের লোক; | ٢٠وَ أَصْحُبُ الْيَهِيْنِ لَهُ مَا ۖ أَصْحُبُ الْيَهِيْنِ ا |
| ২৮. (তারা অবস্থান করবে এমন এক উদ্যানে,) যেখানে থাকবে (শুধু) কাঁটাবিহীন বরই গাছ, | ٢٨ فِيْ سِنْ رِ مَّخْضُودٍ ٧ |
| ২৯. (থাকবে) কাঁদি কাঁদি কলা, | ٢٩ وَّطَلْح مَّنْضُودٍ ٧ |
| ৩০. (শান্তিদায়িনী) ছায়া দূর-দূরান্ত পর্যন্ত সম্প্রসারিত হবে, | ٣٠ وَّظِلٍّ مَّٰهُ وَدِ ٧ |
| ৩১. আর থাকবে প্রবাহমান (ঝর্ণাধারার) পানি, | ٣١ وَّمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ٧ |
| ৩২. পর্যাপ্ত (পরিমাণ) ফলমূল, | ٣٢ وْفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ٧ |
| ৩৩. (এমন সব ফল) যার সরবরাহ কখনো শেষ হবে না এবং (যার ব্যবহার কখনো) নিষিদ্ধও করা হবে না, | ٣٣ ﴿ مَقْطُوعَةِ وَ لَا مَهْنُوعَةٍ ٧ |
| ৩৪. আর থাকবে উঁচু উঁচু বিছানা; | ٣٣ وْفُرُشِ مَّرْفُوْعَةٍ ا |
| ৩৫. আমি তাদের (সাধী হুরদের) বানিয়েছি বানানোর মতো (করেই), | ٣٥ إِنَّا ٱنْشَانُهُنَّ إِنْشَاءُ ٢ |
| ৩৬. (তাদের বৈশিষ্ট্য হচ্ছে,) আমি তাদের চির কুমারী করে রেখেছি, | ٣٦ نَجَعَلْنُهُنَّ ٱبْكَارًا ٧ |
| ৩৭. (তাদের আরেকটি বৈশিষ্ট্য হচ্ছে) তারা (হবে) সমবয়সের প্রেম সোহাগিনী, | ٣٠ عُرُبًا ٱتْرَابًا ٧ |
| ৩৮. (এগুলো হচ্ছে প্রথম দলের সব) ডান পাশের লোকদের জন্যে; | ٣٨ لِّاكَمْتُ بِ الْيَوِيْنِ ١٤ |
| ৩৯. (এ ডান পাশের লোকদের) এক বিরাট অংশই হবে আগের লোকদের মাঝ থেকে, | ٢٩ ثُلَّةً مِّيَ الْأُولِيْنَ ٧ |
| ৪০. (আবার) অনেকে হবে পরবর্তী লোকদের মাঝ থেকেও; | ٣٠ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْأَخِرِيْنَ ١٠ |
| ৪১. যারা বাম পাশের লোক, তুমি কি জ্ঞানো এ বাম পাশের লোক কারা; | ا و أَصْحُبُ الشِّمَالِ لَا مَا أَصْحُبُ الشِّمَالِ لا |
| ৪২. (যাদের অবস্থান হবে জাহান্নামের) উত্তপ্ত ও ফুটন্ত পানিতে, | ٣٣ فِي سَهُوْمٍ وهَمِيمُ ٢ |
| ৪৩. এবং (ঘন) কালো রঙের ধোঁয়ার ছায়ায়, | ٣٣ وَّطِلِ مِّنْ يَّحْمُوا ٢ |
| 88. (সে ছায়া যেমন) শীতল নয়, (তেমনি তা কোনো রকম) আরামদায়কও হবে না। | ٣٣ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْرٍ |
| ৪৫. এরা (হচ্ছে সেসব লোক যারা) এর আগে (দুনিয়ায়) অত্যন্ত সুখ সম্পদে কাটাতো, | ٢٥ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ٢٥ |
| ৪৬. এরা বার বার জঘন্য পাপ কাব্জে লিপ্ত হয়ে পড়তো, | ٢ ٣ وَكَانُوْا يُصِرُّونَ عَلَى الْعِنْسِ الْعَظِيْمِ |
| ৫৬ সূরা আল ওয়াকেয়াহ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|--|--|
| ৪৭. এরা বলতো, আমরা যখন মরে যাবো এবং (মরে যাওয়ার পর) আমরা যখন মাটি ও হাড়ের সমষ্টিতে | ٣٠ وَكَانُوا يَقُولُونَ لَا أَنِنَا مِثْنَا وَكُنَّا تُرَابًا |
| পরিণত হয়ে যাবো, তখনও কি আমাদের পুনরায় জীবিত করা হবে? | وَّعِظَامًا ءَإِنَّا لَهَبْعُوثُونَ ٧ |
| ৪৮. (জীবিত করা হবে) কি আমাদের বাপদাদা এবং পূর্বপুরুষদেরও ? | ٣٨ أَوَ أَبَآ وُنَا الْإَوَّلُوْنَ |
| ৪৯. (হে নবী,) তুমি বলো, অবশ্যই আগে পরের সব লোককেই- | ٢٩ قُلْ إِنَّ الْإَوَّلِيْنَ وَالْأَخِرِيْنَ ٧ |
| ৫০. একটি নির্দিষ্ট দিনে (একটা নির্দিষ্ট সময়ে) জড়ো করা হবে ! | ٥٠ لَهَ حُمُوعُونَ لَا إِلَى مِيْقَاسِ يَوْمٍ مَعْلُومٍ |
| ৫১. অতপর (কাফেরদের বলা হবে,) ওহে পথভ্রষ্ট ও (এ দিনের আগমনকে) মিথ্যা প্রতিপন্নকারী ব্যক্তিরা, | ۵۱ ثُرَّ إِنَّكُرْ اَيَّهَا الضَّالُّونَ الْهُكَنِّ بُوْنَ ٧ |
| ৫২. (দুনিয়ায় যা অর্জন করেছো তার বিনিময়ে আজ) তোমরা ভক্ষণ করবে 'যাক্কুম' (নাম্ব একটি) গাছের অংশ, | ٥٢ ٧ كَاكِلُونَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ٧ |
| ৫৩. অতপর তা দিয়েই তোমরা (ঢোমাদের) পেট ভরবে, | ٥٣ فَهَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ع |
| ৫৪. তার ওপর তোমরা পান করবে (জাহান্নামের) ফুটস্ত পানি, | ۵۴ فَهَارِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَبِيْمِ ع |
| ৫৫. তাও আবার পান করতে থাকবে (মরুভূমির) তৃষ্ণার্ত উটের মতো করে; | ٥٥ فَهَارِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ١ |
| ৫৬. এ হবে (কেয়ামতে) তাদের (যথার্থ) মেহমানদারী; | ٥٦ هٰذَا نُزُلُمُرْ يَوْمً الرِّينِي ا |
| ৫৭. আমি (যে) তোমাদের সবাইকে পয়দা করেছি- (এ কথাটা) তোমরা কি বিশ্বাস করছো নাঃ | ٥٤ نَهْنُ مَلَقْنْكُرْ فَلَوْلَا تُصَرِّقُونَ |
| ৫৮. তোমরা যে (সন্তান উৎপাদনের জন্যে এক বিশু) বীর্যপাত করে আসো, সে সম্পর্কে (কখনো) কি ভেবে দেখেছোঃ | ٥٨ أَفَرَءَيْتُر مَّا تُهْنُونَ ا |
| ৫৯. বলো তো, তাকে কি তোমরা (পূর্ণাংগ) মানুষ বানিয়ে দাও না আমি তার স্রষ্টাঃ | ٥٩ ءَ أَنْتُر تَخْلُقُونَهُ آَ أَنْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ |
| ৬০. তোমাদের মাঝে (সবার) মৃত্যু আমিই নির্ধারণ করি এবং আমি এ ব্যাপারে মোটেই অক্ষম নই যে– | ٢٠ نَحْنُ قَلَّرْنَا بَيْنَكُرُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَشْبُوقِيْنَ ४ " |
| ৬১. তোমাদের মতোই আরেক দল মানুষ দিয়ে তোমাদের বদল করে দেবো এবং (প্রয়োজ্ঞনে) তোমাদেরই (আবার) এমনভাবে তৈরী করবো যে, | ١٦ عَلَى أَن تُبَرِّلَ أَمْثَالَكُر وَتُنشِئكُر فِي مَا لَا تَعْلَبُونَ |
| তোমরা কিছুই জানতে পারবে না। ৬২. তোমরা (যখন) তোমাদের প্রথম সৃষ্টির ঘটনাটা সুনিন্চিতভাবে জানতে পেরেছো, (তখন দ্বিতীয় বার সৃষ্টির ভবিষ্যদ্বাণী থেকে) কেন শিক্ষা গ্রহণ করছো নাঃ | $\frac{1}{100}$ وَلَقَنْ عَلِهْتُرُ النَّهْاَةَ الْأُولٰى فَلَوْكَ $\frac{1}{100}$ $\frac{1}{100}$ $\frac{1}{100}$ |
| ৬৩. তোমরা (যমীনে) যে বীজ বপন করে আসো সে সম্পর্কে কি কখনো চিন্তা করেছোঃ | ٦٣ أَفَرَءَيتُم مَّا تَحُرِثُونَ ا |
| ৬৪. (তা থেকে) ফসলের উৎপাদন কি তোমরা করো না আমিই তার উৎপাদকঃ | اً ٢٣ ءَ ٱنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَ ٱ نَحْنُ الزَّارِعُونَ |
| ৬৫. অথচ আমি যদি চাই তাহলে (অংকুরিত সব) বীজ খড়কুটায় পরিণত করে দিতে পারি, আর (তা দেখে) তোমরা হতভম্ব হয়ে পড়বে, | ٦٥ لَوْ نَشَاءً لَجَعَلْنَهُ مُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ |
| ৫৬ সূরা আল ওয়াকেয়াহ | মनयिन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্রালা ফামা |
|---|--|
| ৬৬. (তোমরা বলতে থাকবে, হায়! আজ) তো আমাদের সর্বনাশ হয়ে গেলো, | ٢٦ إِنَّا لَهُغُرِّمُوْنَ ٧ |
| ৬৭. আমরা তো (ফসল থেকে আজ) বঞ্চিতই থেকে গেলাম! | ٦٤ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ |
| ৬৮. কখণো কি তোমরা সেই পানি সম্বন্ধে চিন্তা করে দেখেছো যা তোমরা (সব সময়) পান করো; | ٦٨ أَفَرَءَيْتُرُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ مَ |
| ৬৯. (বলতে পারো?- আকাশের) মেঘমালা থেকে এ পানি কি তোমরা নিজেরা বর্ষণ করো না আমি এর বর্ষণকারী? | 79 ءَ اَنْتُر اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَ اَ نَحْنُ الْمُزْنِ اَ اَ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ |
| ৭০. অথচ আমি চাইলে এ (সুপেয়) পানি লবণাক্ত করে দিতে পারি, (পানির এ সুন্দর ব্যবস্থাপনার জন্যে) তোমরা কেন আমার কৃতজ্ঞতা আদায় করছো নাঃ | ٥٠ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَهُ ٱجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ |
| ৭১. আগুন– যা (প্রতিদিন) তোমরা প্রজ্বলিত করে থাকো– তা সম্পর্কে কি কখনো ভেবে দেখেছো? | ٤١ أَفَرَءَيْتُرُ النَّارَ الَّتِي تُوْرُونَ ١ |
| ৭২. তার (জ্বালানোর) গাছটি কি তোমরা সৃষ্টি করেছো ন আমি এর স্রষ্টা? | 47 ءَ أَنْتُر أَنْشَأْتُر شَجَرَتُهَا أَ أَ نَحْنُ الْبُنْشِئُونَ |
| ৭৩. (মূলত) আমিই একে (সভ্যতার) নিদর্শন করে রেখেছি এবং একে ভ্রমণকারীদের জন্যে প্রয়োজন প্রণের সামান বানিয়ে দিয়েছি। | ٢٧ نَحْنُ جَعَلْنُهَا تَلْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ عَ |
| ৭৪. অতপর (হে নবী, এসব কিছুর জন্যে) তুমি তোমার মহান মালিকের নামের মাহাষ্য্য ঘোষণা করো : | ٤٣ فَسَبِّحُ بِاشْرِ رَبِّكَ الْعَظِيْرِع |
| ৭৫. অতপর আমি শপথ করছি তারকাগুলোর অস্তাচলের, | 40 فَلَاَّ ٱقْسِرُ بِمَوْقِعِ النَّجُوْ إِ |
| ৭৬. সত্যিই (আমার গোটা সৃষ্টি নৈপুণ্যের আলোকে) তা হচ্ছে এক মহা শপথ, যদি তোমরা জানতে; | ٢٦ وَإِنَّهُ لَقَسَرٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيْرٌ ٧ |
| ৭৭. অবশ্যই কোরআন এক মহামর্যাদাবান গ্রন্থ। ্ | ٤٤ إِنَّهُ لَقُرْانٌ كَرِيرٌ ٧ |
| ৭৮. এটি লিপিবদ্ধ রয়েছে একটি (সযত্নে) রক্ষিত গ্রন্থে, | ٨ ٤ فِي كِتْبِ مَكْنُونٍ ٧ |
| ৭৯. পৃত পবিত্র ব্যতিরেকে তা কেউ স্পর্শও করে না; | ٩٤ لا يَهَسُّهُ إِلَّا الْهُطَهُّرُونَ ، |
| ৮০. (কেননা তা) নাযিল করা হয়েছে সৃষ্টিকুলের মালিক আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে। | ٨٠ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ |
| ৮১. তোমরা এ (গ্রন্থের আনীত) বাণীকে কি সাধারণ কথাই মনে করতে থাকবে? | ٨١ أَفَبِهٰنَا الْحَلِيْثِ أَنْتُرْ شَّهْفِتُوْنَ لا |
| ৮২. এবং মিথ্যা প্রতিপন্ন করাটাকেই তোমরা তোমাদের জীবিকা (আহরণের পেশা) বানিয়ে নেবে? | ٨٢ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَنِّبُونَ |
| ৮৩. যখন কোনো (মানুষের) প্রাণ (তার) কর্চনালীতে এসে পৌছে যায়, | ٨٣ فَلَوْكَ ۚ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْاَ لا |
| ৮৪. তখন (কেন) তোমরা (জসহায়ের মজে) তাকিয়ে থাকো, | ٨٣ وَٱنْتُرْ مِيْنَئِلِ تَنْظُرُونَ ٧ |
| ৮৫. (এ সময় তো বরং) তোমাদের চাইতে আমিই সেই (মুমূর্যু) ব্যক্তির বেশী কাছে থাকি, (কিন্তু) তোমরা এর কিছুই দেখতে পাও না। | مُ وَنَعْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَٰكِنَ $\sqrt[q]{l}$ اَتُمْوِرُونَ |
| ৫৬ সূরা আল ওয়াকেয়াহ | মন্যিল ৭ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৭ ক্বালা ফামা |
|--|--|
| ৮৬. তোমরা যদি এমন অক্ষম না-ই হও, | ٨٦ فَلُوْكَ ۚ إِنْ كُنْتُرْ غَيْرَ مَلِيْنِيْنَ ٧ |
| ৮৭. তোমরা যদি (তোমাদের ক্ষমতার দাবীতে) সত্যবাদী হও, তাহলে কেন সেই (বেরিয়ে যাওয়া প্রাণ)-কে (পুনরায় তার দেহে) ফিরিয়ে আনো না। | ٨٤ تَرْجِعُوْنَهَا إِنْ كُنْتُر صُلِقِيْنَ |
| ৮৮. (হাঁ)– যদি সে (মৃত) ব্যক্তিটি আল্লাহর নৈকট্যপ্রাপ্ত (প্রথম দলের) একজন হয়ে থাকে, | ٨٨ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْهُقَرَّلِيْنَ ٧ |
| ৮৯. তাহলে (তার জন্যে) থাকবে আরাম আয়েশ, উন্নত মানের আহার্য ও নেয়ামতে ভরপুর (এক ক্রিন্তন) জান্নাত। | ٨٩ فَرَوْحٌ وَّرِيْحَانٌ ﴾ وَّجَنَّتُ نَعِيْرٍ |
| ৯০. আর যদি সে হয় ডান পাশের (দ্বিতীয় দলের) কেউ, | ٩٠ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحُبِ الْيَمِيْنِ ٧ |
| ৯১. তাহলে (তাকে এই বলে অভিনন্দন জ্ঞানানো হবে,) তোমার জন্যে রয়েছে (আল্লাহর পক্ষ থেকে) শান্তি (জ্ঞার শন্তি, কারণ), তুমি তো (ছিলে) ডান পাশেরই (একজন); | ٩١ فَسَلْرُ لَكَ مِنْ أَصْحُبِ الْيَمِيْنِ ا |
| ৯২. আর যদি সে হয় (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকারকারী মিথ্যাবাদী পথশ্রষ্ট দলের কেউ- | ٩٢ وَ أَمَّا ۚ إِنْ كَانَ مِنَ الْهُكَٰنِّيِيْنَ الضَّالِّيْنَ لِا |
| ৯৩. তাহলে ফুটন্ত পানি দারা (তার) আপ্যায়ন করা হবে, | ٩٣ فَنُوْلُ مِنْ حَبِيْمٍ لا |
| ৯৪. এবং সে জাহান্নামের (কটিন) আগুনে উপনীত হবে। | ٩٢ وَّتَصْلِيَةٌ جَحِيْرٍ |
| ৯৫. নিশ্চয়ই এ হচ্ছে এক অমোঘ সত্য (ঘটনা)। | ٩٥ إِنَّ هٰٰذَا لَهُوَ مَقَّ الْيَقِيْنِ ع |
| ৯৬. অতএব (হে নবী,) তুমি তোমার মহান মালিকের পবিত্র নামের তাসবীহ পাঠ করো। | ٩٦ فَسَيِّحُ بِاشْرِ رَبِّكَ الْعَظِيْرِ ع |
| | سُوْرَةُ الْحَدِيْنِ مَنَنِيَّةً |
| সুরা আল হাদীদ | أياتً : ٢٩ رُكُوعٌ : ٣ |
| মদীনায় অবতী র্ণ− আয়াত ২৯, কুকু ৪ | Q , |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشْرِ اللّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| আকাশমন্তলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তার সব কিছুই আল্লাহ তায়ালার পবিত্রতা এবং মাহাত্ম্য ঘোষণা করে, তিনি মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়। | ا سَبِّعَ لِلَّهِ مَا فِي السَّيْوْتِ وَالْأَرْضِ } وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ |
| ২. আসমানসমূহ ও যমীনের সার্বভৌমত্ব তাঁরই জন্যে, তিনি জীবন দান করেন, তিনিই মৃত্যু ঘটান, তিনি সব | ٢ لَهُ مُلْكُ السَّاوٰتِ وَالْأَرْضِ عَ يُحْي |
| কিছুর ওপর চ্ড়ান্ত ক্ষমতাবান। | وَيُعِيْتُ عَ وَهُوَ عَلَٰي كُلِّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ |
| ৩. তিনি আদি, তিনি অন্ত, তিনি প্রকাশ্য, তিনি অপ্রকাশ্য এবং তিনি সর্ববিষয়ে সম্যক অবহিত। | ا هُوَ الْأُوَّلُ وَالْأَخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِيُّ عَ وَالْبَاطِيُّ عَ وَالْبَاطِيُّ عَ وَمُوَ بِكُلِّ هَيْءٍ عَلِيْرً |
| তিনি হচ্ছেন সেই মহান সত্তা, যিনি ছয় দিনে আসমানসমৃহ ও য়য়ীন সৃয়ি করেছেন, অতপর তিনি তার | ٣ مُوَ الَّذِي مَلَقَ السَّاوٰ وَالْاَرْضَ |
| আরশে সমাসীন হন; তিনি জানেন যা কিছু এ ভূমির | فِيْ سِتَّةِ أَيَّا } ثُرَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَوْشِ ﴿ |
| ভেতরে প্রবেশ করে, (আবার) যা কিছু ভূমি থেকে | |
| বেরিয়ে আসে, আসমান থেকে যা বর্ষিত হয় (তা যেমন তিনি জানেন– অবার) আসমানের দিকে যা কিছু ওঠে তাও | يَعْلَمُ مَا يَلِعُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُحُ مِنْهَا وَمَا يَنْذِلُ مِنَ السَّمَاءَ وَمَا يَعْرُحُ فِيْهَا م وَهُوَ |
| | |
| ৫৭ সূরা আল হাদীদ ৫৬০ | भनिश्न १ |

| <u> </u> | गान्ना २५ खुला कामा |
|--|--|
| (তিনি অবগত আছেন); তোমরা যেখানেই থাকো না কেন তিনি তোমাদের সাথেই আছেন; তোমরা যা কিছু | مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ﴿ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ |
| করছো আল্লাহ তায়ালা তার সব কিছুই দেখছেন। | بَصِير |
| ৫. আসমানসমূহ ও যমীনের সার্বভৌমত্ব তাঁর জন্যে, প্রতিটি বিষয়কে তাঁর দিকেই ফিরিয়ে নেয়া হবে। | ٥ لَهُ مُلْكُ السَّاوٰ إِي وَالْإَرْضِ وَ إِلَى اللَّهِ |
| A STATE OF THE STA | تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ |
| ৬. তিনি রাতকে মিশিয়ে দেন দিনের সাথে, (আবার) দিনকে মিশিয়ে দেন রাতের সাথে; তিনি মনের (কোণে | ٢ يُوْلِجُ النَّمَا فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي |

দিনকে মাশরে দেন রাতের সাথে; তোন মনের (কোণে
লুকিয়ে থাকা) বিষয় সম্পর্কেও সম্যক অবগত রয়েছেন

ব. (হে মানুষ,) তোমরা ঈমান আনো আল্লাহ তায়ালা ও
তাঁর রসূলের ওপর, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে
সম্পদের অধিকারী বানিয়েছেন তা থেকে (তাঁরই পথে)

কোর্যার প্রীক্ত মুক্ত মুবল বাংলা জার্বার

া. (হে বাবুৰ,) তোৰগা গ্ৰাম আমো আলাই তায়ালা ত তাঁর রসূলের ওপর, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যে সম্পদের অধিকারী বানিয়েছেন তা থেকে (তাঁরই পথে) তোমরা ব্যয় করো; অতপর তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনবে এবং (আল্লাহর নির্ধারিত পথে) অর্থ ব্যয় করবে, জেনে রেখো, তাদের জন্যে (রয়েছে) এক মহাপুরস্কার।

৮. তোমাদের এ কি হলো, তোমরা কেন আরাহর ওপর ঈমান আনছো নাঃ (বিশেষ করে) যখন (স্বয়ং আল্লাহর) রসূল তোমাদের ডাক দিয়ে বলছেন, তোমরা তোমাদের মালিকের ওপর ঈমান আনো এবং তিনি তো (এ মর্মে) তোমাদের কাছ থেকে প্রতিশ্রুতিও আদায় করে নিয়েছিলেন, যদি তোমরা সত্যিই ঈমানদার হও (তাহলে সেই প্রতিশ্রুতি পালন করো)।

৯. তিনিই সে মহান সন্তা যিনি তাঁর বান্দার ওপর সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ নাযিল করেছেন, যেন তিনি তোমাদের (এর দারা জাহেলিয়াতের) অন্ধকার থেকে (ঈমানের) আলোর দিকে বের করে নিতে পারেন; আল্লাহ তায়ালা তোমাদের প্রতি পরম দয়ালু ও একান্ত করুণাময়।

১০. তোমাদের এ কি হলো, তোমরা কেন আল্লাহর পথে অর্থ ব্যয় করতে চাও না, অথচ আসমানসমূহ ও যমীনের সব কিছুর মালিকানা তো আল্লাহ তায়ালার জন্যেই; তোমাদের মধ্যে তারা কখনো একই রকম (মর্যাদার অধিকারী) হবে না, যারা বিজয় সাধিত হওয়ার আগে (আল্লাহর পথে) ব্যয় করেছে এবং (ময়দানেও) সংগ্রাম করেছে; তাদের মর্যাদা ওদের তুলনায় অনেক বেশী যারা বিজয় সাধিত হবার পর আল্লাহর পথে অর্থ ব্যয় করেছে এবং জেহাদে অংশ গ্রহণ করেছে; (অবশ্য) আল্লাহ তায়ালা এদের স্বাইকেই উত্তম পুরস্কার প্রদানের ওয়াদা দিয়েছেন; তোমরা যা কিছুই করো আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে পূর্বাংগভাবে জ্ঞাত রয়েছেন।

১১. কে আছে যে ব্যক্তি আল্লাহকে ঋণ দেবে– (এমন) উত্তম ঋণ, (যার বিনিময়) আল্লাহ তায়ালা (পরকালে) তাকে কয়েকগুণ বাড়িয়ে দেবেন এবং তার জন্যে (থাকবে আরো) বড়ো ধরনের পুরস্কার,

১২. যেদিন তুমি ঈমানদার পুরুষ ও ঈমানদার মহিলাদের এগিয়ে যেতে দেখতে পাবে- (দেখবে) তাদের সামনে দিয়ে এবং তাদের ডান পাশ দিয়ে নূরের এক জ্যোতিও

৫৭ সূরা আল হাদীদ

آ يولِج اليل فِي النهارِ ويولِج النهار فِي الَّيْلِ ﴿ وَهُوَ عَلِيْرٌ ۚ بِنَ اسِ الصَّّ وَرِ

أُمِنُوْا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَ اَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ
 مُّشْتَخْلَفِيْنَ فِيهِ مَ فَالَّذِيْنَ أَمَنُوْا مِنْكُمْ
 وَ اَنْفَقُوا لَمُمْ اَجُرُّ كَبِيْرٌ

مُ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ عَ وَالرَّسُولُ
 يَنْ عُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَلْ اَخَلَ مِيْثَاقَكُمْ
 إِنْ كُنْتُرْ مُّؤْمِنِيْنَ

٩ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِةَ أَيْسٍ بَيِّنْسٍ
 لِيَّخْرِجَكُمْ مِّنَ الظَّلُمٰسِ إلَى النَّوْرِ ﴿ وَإِنَّ اللَّهُ بِكُمْ لَرَّوْنَ رَّحِيْرٌ
 الله بِكُمْ لَرَّوْنَ رَّحِيْرٌ

ا وَمَا لَكُر اللهِ وَلِلهِ مِيْرُ اللهِ وَلَا يَسْتَوِى مَنْكُر مَّن اَنْفَقُو وَقَاتَلَ الْفَيْحِ وَقَاتَلَ الْوَلْئِكَ اَعْفَقُوا مِن اللهِ وَقَاتَلُوا وَكُلّا وَعَنَ اللهُ الْحُسْنَى اللهُ الْحُسْنَى وَالله بِهَا تَعْمَلُونَ خَبِيْرٌ ع

ال مَن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا مَسَنًا فَيُضْعِفَهُ لَهُ وَلَهٌ آجُرٌ كَرِيْرٌ ع

۱۲ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنْتِ يَسْعَٰى نُوْرُمُوْمِنْتِ يَسْعَٰى نُوْرُمُرُ بَشِرْ بَشُرْ بكُرُ لُورُمُرُ مِنَانِهِمْ بَشُرْ بكُرُ اللَّهِمْ بَشُرْ بكُرُ اللَّهِمْ بَشُرْ بكُرُ اللَّهِمْ اللَّهِمْ اللَّهِمْ اللَّهِمْ اللَّهُمُ اللَّاللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللّه



এগিয়ে চলেছে, (এ সময় তাদের উদ্দেশে বলা হবে), আজ সুসংবাদ তোমাদের জন্যে (আর সে সুসংবাদটি হচ্ছে) জান্নাতের, যার পাদদেশ দিয়ে (সুপেয়) ঝর্ণাধারা বইতে থাকবে, সেখানে (তোমরা) অবস্থান করবে অনস্তকাল ধরে; আর এটা হচ্ছে চরম সাফল্য,

الْيَوْمَ جَنْتُ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ عَلْمِيهَا الْأَنْهُرُ عَلْمِينَ فَيْهَا ﴿ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمِ وَ عَلَامِهُمْ الْمُؤْدُ الْعَظِيْمِ وَ الْمُؤْدُ الْعَظِيْمِ وَ الْمُؤْدُ الْعَظِيْمِ وَ الْمُؤْدُ

১৩. সেদিন মোনাফেক পুরুষ ও মোনাফেক নারীরা
স্থ্যমানদারদের বলবে, তোমরা আমাদের দিকে একটু
তাকাও, যাতে করে আমরা তোমাদের নূর থেকে কিছুটা
হলেও আলো গ্রহণ করতে পারি, তাদের বলা হবে,
তোমরা (আজ) পেছনে ফিরে যাও এবং (পারলে সেখানে
গিয়ে) আলোর সন্ধান করো; অতপর এদের (উভয়ের)
মাঝখানে একটি প্রাচীর দাঁড় করিয়ে দেয়া হবে, এতে
একটি দরজাও থাকবে; যার ভেতরের দিকে থাকবে
(আল্লাহর) রহমত, আর তার বাইরের দিকে থাকবে
(ভয়াবহ) আযাব;

ا يَوْمَ يَقُولُ الْهُنْفِقُونَ وَالْهُنْفِقْتُ لِلَّانِيْنَ الْمُنْفِقُتُ لِلَّانِيْنَ الْمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ تُّوْرِكُمْ عَ قِيْلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَوسُوا نُورًا مَ فَضُرِبَ بَيْنَمُمْ بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ مَ بَاطِئَةً فِيْدِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرَةً مِنْ قَبِلِهِ الْعَلَابُ مَ

১৪. তখন মোনাফেক দল ঈমানদারদের ডেকে বলবে, আমরা কি (দুনিয়ার জীবনে) তোমাদের সাথী ছিলাম না; তারা বলবে, হাঁ (অবশ্যই ছিলে), তবে তোমরা নিজেরাই নিজেদের (গোমরাহীর বিপদে) বিপদগ্রস্ত করে দিয়েছিলে, তোমরা (সব সময় সুযোগের) অপেক্ষায় থাকতে, (নানা রকমের) সন্দেহ পোষণ করতে, (আসলে দুনিয়ার) মোহ তোমাদের সব সময়ই প্রতারিত করে রাখছিলো, আর এভাবে একদিন (তোমাদের ব্যাপারে) আ্লাহর (পক্ষথেকে মৃত্যুর) ফয়সালা এসে হায়ির হলো এবং সে (প্রতারক শয়তান) তোমাদের আল্লাহ তায়ালা সম্পর্কেও ধোকায় ফেলে রেখেছিলো।

۱۳ يُنَادُوْنَهُرْ اَلَرْ نَكُنْ مَعْكُرْ مَ قَالُوا بَلَى وَلَٰكِنَّكُمْ مَ قَالُوا بَلَى وَلَٰكِنَّكُمْ وَتَرَبَّصْتُرْ وَارْتَبْتُرْ وَالْكِنْكُمْ وَتَرَبَّصْتُرْ وَارْتَبْتُرْ وَالْكِنْكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ أَغَ اَمْرُ اللّهِ وَغَرَّتُكُمْ الْإَمَانِيُّ حَتَّى جَاءَ اَمْرُ اللّهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّهِ الْغَرُورُ

১৫. অতপর আজ (আযাব থেকে বাঁচানোর জন্যে) তোমাদের কাছ থেকে কোনো রকম মুক্তিপণ গ্রহণ করা হবে না, আর না তাদের কাছ থেকে কোনো রকম মুক্তিপণ গ্রহণ করা হবে যারা আল্লাহ তারালাকে অস্বীকার করেছে; (আজ) তোমাদের (উভয়ের) ঠিকানা হবে (জাহান্নামের) আশুন; (আর এ) আশুনই হবে (এখানে) তোমাদের (একমাত্র) সাথী; কতো নিকৃষ্ট তোমাদের (এ) পরিণাম!

اَنَالْیَوْمَ لَا یُؤْخَلُ مِنْکُر فِنْیَةً وَلا مِن النَّارِ فَفِی مَوْلُکُر فَ النَّارُ فَعِی مَوْلُکُر فَ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ

১৬. ঈমানদারদের জন্যে এখনো কি সে ক্ষণটি এসে পৌছুয়নি যে, আল্লাহর (আযাবের) স্বরণে, আল্লাহ তায়ালা যে সঠিক (কেতাব) নাযিল করেছেন তার স্বরণে তাদের অন্তরসমূহ বিগলিত হয়ে যাবে এবং সে (কখনোই) তাদের মতো হবে না, যাদের কাছে এর আগে আল্লাহর কেতাব নাযিল করা হয়েছিলো, অতপর তাদের ওপর এক দীর্ঘকাল অতিবাহিত হয়ে গেলো, যার ফলে তাদের মনও কঠিন হয়ে গেলো; এদের মধ্যে এক বিরাট অংশই না-ফরমান (থেকে গেলো)।

17 ألَر يَاْنِ لِلَّذِيْنَ أَمَنُوْآ أَنْ تَخْشَعَ لَكُوْبُمُر لِنِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِ لا وَلا يَكُوْنُوا كَالَّذِيْنَ ٱوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِرُ الْإَمَلُ فَقَسَدَ قُلُوبُهُرْ ﴿ وَكَثِيْرٌ مِنْ فَقَسَدَ قُلُوبُهُرْ ﴿ وَكَثِيْرٌ مِنْ فَقَسَدَ قُلُوبُهُرْ ﴿ وَكَثِيْرٌ مِنْ فَسِقُونَ وَكَثِيْرٌ مِنْ فَسِقُونَ

১৭. তোমরা জেনে রেখো, আল্লাহ তায়ালাই এ ভূমিকে তার মৃত্যুর পর পুনরায় জীবন দান করেন; অবশ্যই আমি (আমার) যাবতীয় নির্দশন তোমাদের জন্যে খুলে খুলে বর্ণনা করেছি, যাতে তোমরা অনুধাবন করতে পারো।

إِعْلَمُوْآ أَنَّ اللَّهَ يُحْيِ الْإَرْضَ بَعْلَ
 مُوْتِهَا اقَلْ بَيَّنَا لَكُرُ الْإِيْنِ لَعَلَّكُرْ تَعْقِلُونَ

১৮. যেসব পুরুষ ও নারী (অকাতরে আল্লাহর পথে) দান করে এবং আল্লাহকে উত্তম ঋণ প্রদান করে, তাদের (সে ঋণ) আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) বহু গুণ বাড়িয়ে দেয়া হবে, (উপরুষ্) তাদের জন্যে (গাঁকরে আরো) সম্মানজনক পুরস্কার।

إنَّ الْهُصَّرِقِيْنَ وَالْهُصَّرِّقَٰتِ وَاقْرَضُوا
 الله قَرْشًا حَسَنًا يَّشْعَفُ لَهُرْ وَلَهُرْ اَجُرُّ كَرِيْرٌ

৫৭ সূরা আল হাদীদ

((by)

১৯. আর যারা আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে, ঈমান এনেছে তাঁর রসলের ওপর, তার্রাই হচ্ছে যথার্থ সত্যবাদী, যারা তাদের মালিকের সামনে সত্যের পক্ষে সাক্ষ্য দান করবে, তাদের সবার জন্যে (রয়েছে) তাদের (মালিকের পক্ষ থেকে) পুরস্কার এবং তাদের নিজেদের নূর (-ও, যা তাদের সাফল্যের প্রমাণ বহন করবে, অপরদিকে), যারা আমাকে অস্বীকার করেছে এবং আমার নিদর্শনসমূহ মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে তারা হবে জাহান্লামের বাসিন্দা।

19 وَالَّذِينَ أَمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ٱولَّانِكَ مُمَّ الصِّرِّيْقُونَ عَلَى وَالشَّهَٰنَاءُ عِنْنَ رَبِّهِمِ ۚ ﴿ لَهُمِ ۗ أَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَوُوا وَكَنَّابُوا بايتنا أولَيْكَ أَصْعُبُ الْجَعِيْرِ ع

২০. তোমরা জেনে রাখো, এ পার্থিব জীবন খেলাধুলা, (হাসি) তামাশা জাঁকজমক (প্রদর্শন), পরস্পর অহংকার প্রদর্শনের প্রতিযোগিতা, ধন সম্পদ ও সন্তান সন্তুতি বাড়ানোর চেষ্টা সাধনা ছাড়া আর কিছুই নয়: (সমগ্র বিষয়টা) যেন আকাশ থেকে বর্ষিত (এক পশলা) বৃষ্টি, যার (উৎপাদিত) ফসলের সমাহার ক্ষকের মনকে খুশীতে ভরে দেয়, অতপর (একদিন) তা শুকিয়ে যায় এবং আন্তে আন্তে তুমি দেখতে পাও, তা হলুদ রং ধারণ করতে শুরু করেছে, তারপর তা (অর্থহীন) খড়কুটায় পরিণত হয়ে যায়. (কাম্কেরদের জন্যে পার্থিব জীবনের চেষ্টা সাধনা এমনি এক অর্থহীন কাজ ছাড়া আর কিছুই নয়): আর পরকালের জীবনে (তাদের জন্যে থাকবে) কঠোর আযাব এবং (ঈমানদারদের জন্যে থাকবে) আল্লাহর পক্ষ থেকে (তাঁর) ক্ষমা ও সম্ভষ্টি: (সত্যি কথা হচ্ছে.) দুনিয়ার এ জীবন কতিপয় ধোকা প্রতারণার সামগ্রী বৈ কিছুই নয়।

٢٠ إِعْلَهُوْٓا ٱلَّهَا الْحَيٰوةُ النُّنْيَا لَعِبُّ وَّلَهُوُّ وَّزِيْنَةً وَّتَفَاعُرُّ بَيْنَكُر وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ﴿ كَهَثَلِ غَيْثِ إِعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُرَّ يَهِيْجُ فَتَوْلهُ مُصْفَرًّا ثُرَّ يَكُونَ مُطَامًا ، وَفِي الْأَخِرَةِ عَنَابٌ شَرِيْنٌ لا وَّمَغْفِرَةً مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانُّ ، وَمَا الْعَيْوةُ النُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ

২১. (অতএব, এ সব অর্থহীন প্রতিযোগিতা বাদ দিয়ে) তোমরা তোমাদের মালিকের পক্ষ থেকে সেই (প্রতিশ্রুত) ক্ষমা ও চিরন্তন জানাত পাওয়ার জন্যে এগিয়ে যাও (এমন জান্লাত) যার আয়তন আসমান যমীনের সমান প্রশন্ত, তা প্রস্তুত করে রাখা হয়েছে সেসব মানুষদের জন্যে, যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর (পাঠানো) রস্থলর ওপর ঈমান এনেছে: (মূলত) এ হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার এক অনুগ্ৰহ, যাকে তিনি চান তাকেই তিনি এ অনুগ্ৰহ প্রদান করেন: আর আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন মহা অনুগ্ৰহশীল।

٢١ سَابِقُوْ إِلَى مَغْفِرَةِ مِّنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّهَاءِ وَالْإَرْضِ لِا أُعِنَّتْ لِلَّانِيْنَ امَّنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ﴿ ذَٰلِكَ فَضْلُ الله يُؤْتيه مَنْ يَشَاءُ ، وَاللَّهُ ذُو الْفَضْ

২২. (সামগ্রিকভাবে গোটা) দুনিয়ার ওপর কিংবা (ব্যক্তিগতভাবে) তোমাদের ওপর যখনি কোনো বিপর্যয় আসে, তাকে অস্তিত দার করার (বহু) আগেই (তার বিবরণ একটি গ্রন্থে লেখা থাকে, আর আল্লাহ তায়ালার জন্যে এ কাজ অত্যন্ত সহজ

٢٢ مَا آَمَابَ مِنْ مُعْمِيْبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِيْ أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِيْ كِتَٰبٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ تَّبْرَأَهَا وَإِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرٌ عَمِهِ

২৩. (আগেই লিখে রাখার এ ব্যবস্থাটি এ জন্যেই রাখা হয়েছে) যাতে করে তোমাদের কাছ থেকে যা কিছু (সুযোগ সুবিধা) হারিয়ে গেছে তার জ্বন্যে তোমরা আফসোস না করো এবং আল্লাহ তায়ালা তোমাদের যা কিছু দিয়েছেন তাতেও যেন তোমরা বেশী হর্ষোৎফুল্প না হও: আল্লাহ তায়ালা এমন সব লোকদের ভালোবাসেন না যারা ঔদ্ধত্য ও অহংকার প্রদর্শন করে.

٢٣ لِكَيْلَا تَاْسَوْا عَلَى مَا فَاتِّكُرْ وَلَا تَفْرَمُوْا بِهَا النَّكُرُ ، وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُغْتَالِ فَحُورت لا

२८. (बाहार जाताना जाप्तवर जालावाप्तन ना) याता निष्कता कार्लना والنوين يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ कार्यव कार्यकार कार्यक कार्यकार করে, আবার অন্যদেরও কার্পণ্য করার আদেশ দেয়: যে ব্যক্তি (জেনে বুঝে আল্লাহর হুকুম থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয় (তার জানা উচিত), আল্লাহ তায়ালা কারোই মুখাপেক্ষী নন এবং তিনি মহান প্রশংসায় প্রশংসিত।

بِالْبُخْلِ ، وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيَّ

৫৭ সুরা আল হাদীদ

640

২৫. আমি অবশ্যই আমার রস্লদের কতিপয় সুম্পষ্ট নিদর্শনসহ (মানুষদের কাছে) পাঠিয়েছি এবং আমি তাদের সাথে কেতাব পাঠিয়েছি, আরো পাঠিয়েছি (আমার পক্ষ থেকে এক) ন্যায়দন্ড, যাতে করে মানুষ (এর মাধ্যমে) ইনসাফের ওপর কায়েম থাকতে পারে, তাদের জন্যে আমি লোহা নায়িল করেছি, যার মধ্যে (একদিকে যেমন রয়েছে) বিপুল শক্তি, (অন্য দিকে রয়েছে) মানুষের বছবিধ উপকার, এর মাধ্যমে (মূলত) আল্লাহ তায়ালা জেনে নিতে চান কে আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লদের না দেখেও সাহায্য করতে এগিয়ে আসে; আল্লাহ তায়ালা প্রচন্ড শক্তিমান ও মহাপরাক্রমশালী।

٢٥ لَقَنْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنْسِ وَأَنْزَلْنَا مَعْمُدُ الْكَتِّنْ وَأَنْزَلْنَا مَعْمُدُ الْكَتِّنْ وَأَنْزَلْنَا الْعَلِيْنَ لِيَعُوْأَ النَّاسُ بِالْقِشْطِ وَأَنْزَلْنَا الْعَلِيْنَ فِيهِ بَاْسٍ شَلِيْنَ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَّنْصُرُهً وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ وَإِنَّ اللَّهُ قَوِيٍّ عَزِيْزٌ عَ

২৬. আমি নৃহ ও ইবরাহীমকে আমার রসূল হিসেবে প্রেরণ করেছি এবং তাদের উভয়ের বংশধরদের মাঝে আমি নবুওত ও কেতাব (প্রেরণের ব্যবস্থা করে) রেখেছি, অতপর তাদের মাঝে কিছু কিছু লোক সঠিক পথ অবলম্বন করেছে, (অবশ্য) তাদের অধিকাংশ লোকই ছিলো না-ফরমান।

٢٦ وَلَقَلُ أَرْسَلْنَا نُوْمًا وَّ إِبْرُهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِي ثَلِيَا وَلَقِنَا النَّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَيِنْهُرُ مُّهْتَلٍ عَ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُرُ فَهُتَلٍ عَ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُرُ فَسِقُوْنَ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُرُ فَسِقُوْنَ

২৭. তারপর (তাদের বংশে) একের পর এক আমি অনেক রসূলই প্রেরণ করেছি, তাদের পরে (এক পর্যায়ে) আমি মারইয়াম পুত্র ঈসাকে (রসূল বানিয়ে) পাঠিয়েছি এবং তাকে আমি (হেদায়াতের গ্রন্থ) ইঞ্জিল দান করেছি, (এর প্রতিষ্ঠায়) যাুরা তার আনুগত্য করেছে তাদের মনে (তার প্রতি) দয়া ও করুণা দান করেছি; (তার অনুসারীদের অনুস্ত) সন্যাসবাদ! (আসলে) তারা নিজেরাই এর উদ্ভব ঘটিয়েছে, আমি কখনো এটা তাদের জন্যে নির্ধারণ করিনি, (আমি তাদের শুধু বলেছিলাম) আল্লাহর সন্তুষ্টি অর্জন করতে, অতপর তারা এর যথাযথ হক আদায় করেনি, তারপর তাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে তাদের আমি (যথার্থ) পুরস্কার দিয়েছি, কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই ছিলো না-ফরমান।

٢٠ ثُرَّ قَقَّيْنَا عَلَى الْتَارِهِرْ بِرُسُلِنَا وَقَقَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَالْتَيْنَا الْاِنْجِيْلَ لا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَالْتَيْنَاءُ الْاِنْجِيْلَ لا وَمَعَلْنَا فِي قُلُوبِ النَّذِيْنَ النَّبَعُوْلَا رَافَةً وَرَحْمَةً ﴿ وَرَهْبَانِيَّةَ "ابْتَنَعُوْمَا مَا كَتَبْنَهَا عَلَيْهِرْ إِلَّا ابْتِغَاءً رِضُوانِ اللهِ فَهَا رَعَوْهَا عَلَيْهِرْ إِلَّا ابْتِغَاءً رِضُوانِ اللهِ فَهَا رَعَوْهَا مَقَلَ رَعْوَلَا النَّذِيْنَ امْنُوا مِنْهُرْ مَقَوْنَ الْمَنُوا مِنْهُرْ أَمِنْهُ فَسِقُونَ الْمَنُوا مِنْهُرْ أَسِقُونَ الْمَنْوا مِنْهُرْ فَسِقُونَ

২৮. হে ঈমানদার বান্দারা, তোমরা আল্লাহ তারালাকে তয় করো এবং তাঁর প্রেরিত রসূলের ওপর ঈমান আনো, এর ফলে আল্লাহ তারালা তোমাদের দ্বিগুণ অনুগ্রহে ভূষিত করবেন, তিনি তোমাদের জন্যে স্থাপন করবেন সেই আলো, যার সাহায্যে তোমরা পথ চলতে সক্ষম হবে, (উপরত্ম) তিনি তোমাদের (যাবতীয় গুনাহ খাতা) মাফ করে দেবেন; আল্লাহ তারালা ক্ষমাশীল ও পরম দরালু,

২৯. আহলে কেতাবরা যেন একথাটা (ভালো করে) জেনে নিতে পারে, আল্লাহ তায়ালার সামান্যতম অনুগ্রহের ওপরও তাদের কোনো অধিকার নেই, যাবতীয় অনুগ্রহ! সে তো সম্পূর্ণ আল্লাহ তায়ালারই হাতে, তিনি যাকে ইচ্ছা তাকেই এ অনুগ্রহ দান করেন; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা সুমহান অনুগ্রহশীল।

٢٩ لِنَالًا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ
 عَلَى شَىء مِّن نَضْلِ اللهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيدِ
 اللهِ يُوْتِيه مَنْ يَّشَاء طَوَالله نُوالْفَضْلِ
 الْعَظِيْم عَ

সূরা আল মোজাদালাহ
মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ২২, রুকু ৩
রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَنَنِيَّةً أَيَاتُّ: ٢٢ رُكُوْعٌ : ٣ بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّمِيْمِ

১. (হে রসূল,) তার কথা আল্লাহ তায়ালা (যথার্থই) গুনেছেন, যে (মহিলা) তার স্বামীর ব্যাপারে তোমার সাথে বাদানুবাদ করছিলো এবং (নিজের অসুবিধার জন্যে) আল্লাহর কাছেই ফরিয়াদ করে যাচ্ছিলো, (আসলে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের উভয়ের কথাবার্তাই গুনছেন; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা সব কিছু শোনেন এবং সব কিছু দেখেন।

ا قَنْ سَهِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زُوْجِهَا وَتَشْتَكِيْ ۚ إِلَى اللَّهِ قِ وَاللَّهُ يَسْهَعُ تَحَاوُرَكُهَا ﴿ إِنَّ اللَّهَ سَهِيْعً ۖ بَصِيْرٌ

২. তোমাদের মধ্যে যারা (তাদের মায়েদের শরীরের কোনো অংশের সাথে তুলনা করে) নিজ স্ত্রীদের সাথে 'যেহার' করে (তাদের জেনে রাখা উচিত), তাদের স্ত্রীরা কিন্তু কখনো তাদের মা নয়; মা তো হচ্ছে তারা, যারা তাদের জন্ম দিয়েছে; (এ কাজ করে) তারা (মূলত) অন্যায় ও মিথ্যা কথাই বলে; (তারপরও) আল্লাহ তায়ালা হচ্ছেন (মানুষের) গুনাহ মোচনকারী ও পরম ক্ষমাশীল।

٢ اَلَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُرْ مِّنَ يِّسَائِهِرْ مَّا فَيْفَائِهِرْ مَّا فَيْفَائِهِرْ أَلَّا الَّذِي هُنَّ الْمَيْفُرُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُثَوَّ مَنْكُرًا مِّنَ اللَّهُ لَعَفُو عَفُورًا مَوانَّ اللَّهُ لَعَفُو عَفُورً

৩. যারা (এভাবে) তাদের ব্লীদের সাথে 'যেহার' করে, অতপর (অনুতপ্ত হয়ে) যা কিছু বলে ফেলেছে তা থেকে ফিরে আসতে চায় (তাদের জন্যে বিধান হচ্ছে), তাদের একে অপরকে স্পর্শ করার পূর্বে একটি দাসের মুক্তি দান করা; এ (বিধানে)-র মাধ্যমে আল্লাহ তায়ালা তোমাদের করণীয় কি – তা বলে দিচ্ছেন, (কেননা) তোমরা যা করো আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে ভালোভাবেই অবগত রয়েছেন।

8. যে ব্যক্তি (মুক্তিদানের জন্যে কোনো দাস) পাবে না (তার বিধান হচ্ছে), তাদের একে অপরকে স্পর্শ করার আগে একাধারে দু'মাসের রোযা পালন (করা, স্বাস্থ্যগত কারণে) যে ব্যক্তি (রোযা রাখার) সামর্থ রাখবে না (তার বিধান হচ্ছে), ষাট জন মেসকীনকে (পেট ভরে) খাওয়ানো; এ বিধান এ জন্যেই (তোমাদের দেয়া হচ্ছে) যেন তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তার রস্লের ওপর ঈমান আনো; (মনে রাখবে, 'যেহারের' ব্যাপারে) এ হচ্ছে আল্লাহর নির্ধারিত সীমারেখা, যারা (এ সীমা) অস্বীকার করে তাদের জন্যে রয়েছে মর্মন্তুদ শান্তি।

مُ فَهَى لَّرْ يَجِلْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَعَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَعَابِعَيْنَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَسْتَطِعُ فَلَى لَّرُ لَلْهِ يَسْتَطِعُ فَاطْعَامُ سِتِّيْنَ مِشْكِيْنًا وَذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللّهِ وَرَسُولِهِ وَ وَلَلْكَفِرِيْنَ مَسُكِيْنًا وَلَاللّهِ وَ وَلِلْكَفِرِيْنَ وَرَسُولِهِ وَ وَلِلْكَفِرِيْنَ مَسُودُ اللّهِ وَ وَلِلْكَفِرِيْنَ عَلَى اللّهِ وَ وَلِلْكَفِرِيْنَ عَلَى اللّهِ وَ وَلِلْكَفِرِيْنَ عَلَى اللّهِ وَلِلْكَفِرِيْنَ عَلَى اللّهِ وَلَلْكَفِرِيْنَ وَلَلْكَفِرِيْنَ وَلَلْكَافِرِيْنَ وَلَلْكُورِيْنَ وَلَيْنَا وَلَيْنَا وَلِللّهِ وَلِلْكُولِيْنَ وَلَيْنَا وَلِللّهِ وَلَيْنَا وَلَيْنَا وَلِللّهُ وَلِللّهِ وَلِلْلّهِ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِلْكُولِيْنَ وَلَيْنَا وَلِللّهِ وَلِللّهُ وَلِيلَا لِللّهِ وَلِيلَا لِللّهِ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلُهُ وَلِيلّهُ وَلِيلًا لِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلُهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلُهُ وَلَيْنَا وَلَيْنَا وَلِيلّهُ وَلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلُهُ وَلَيْنَا وَلِللّهُ وَلَاللّهُ وَلَيْنَا وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلَيْكُولُونَا لِللّهُ وَلِيلُولُونَا لِللّهِ وَلَلْكُولُولُونَا لِللّهُ وَلَيْنَا وَلِيلّهُ وَلّهُ وَلَيْلُكُولِيْنَا وَلِلْكُولِيْنَ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلَاللّهُ وَلَيْلِكُولُونَا لِيلّهُ وَلَا لِللّهِ وَلَيْلِكُولِيْنَا وَلِيلّهُ وَلَيْلِكُولِيْنَ وَلَا لَلّهُ وَلَا لَكُولُولُونَا لِيلّهُ وَلَا لِلللّهِ وَلَاللّهُ وَلَا لَلْهُ وَلَاللّهُ وَلَا لللّهُ وَلَا لَاللّهُ وَلَالْكُولُونَ وَلِيلّهُ وَلِيلُونَا وَلِلْهُ وَلِيلُونَا وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلَا لِللّهِ وَلَا لَا لِللّهِ وَلَاللّهُ وَلَا لَاللّهُ وَلَا لَا لِللّهُ وَلِيلُونَا وَلِيلُونَ وَلَاللّهُ وَلِيلّهُ وَلِلْلّهُ وَلِيلّهُ وَلِلْلّهُ وَلِيلُونُ وَلِيلّهُ وَلِلْلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِلْلّهُ وَلِيلُونُ وَلِيلُونَا لِللّهِ وَلِيلُونُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلُونُ وَلِلْلّهُ وَلِيلّهُ وَلِيلُونُ وَلِلْلّهُ وَلِيلُونُ وَلِيلّهُ وَلّهُ وَلِيلُونُ وَلِيلُونُ وَلِلْلّهُ وَلِيلُونُ

৫. যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের বিরুদ্ধাচরণ করে তাদের তেমনিভাবে অপদস্থ করা হবে, যেমনি করে তাদের আগে (বিদ্রোহী) লোকদের অপদস্থ করা হয়েছিলো, আমি তো আমার সুস্পষ্ট আয়াত নাযিল করে দিয়েছি; যারা (এসব আয়াত) অস্বীকার করে তাদের জন্যে অবশ্যই অপমানকর শান্তি থাকবে.

٥ إِنَّ الَّذِيْنَ يُحَادُّوْنَ اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ كُبِتُوْا
 كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِرْ وَقَنْ اَنْزَلْنَا
 أيْسٍ ابَيِّنْسٍ م وَلِلْكُفِرِيْنَ عَنَ ابَّ شَهِيْنَ عَ

৬. যেদিন আল্লাহ তারালা এদের সবাইকে পুনরায় জীবন দান করবেন তখন তাদের সবাইকে তিনি বলে দেবেন তারা কি করে এসেছে; আল্লাহ তায়ালা সে কর্মকান্ডের পুংখানুপুংখ হিসাব রেখেছেন, অথচ তারা নিজেরা সেকথা ভুলে গেছে; (সেদিন) আল্লাহ তায়ালা নিজেই তাদের সব কয়টি কাজের সাক্ষ্য প্রদান করবেন।

لَوْا يَبْعَثُهُمْ الله جَوِيْعًا فَيُنَبِّنُهُمْ بِهَا عَيِلْ الله عَلَى عَبِلُوا الله عَلَى عَلَى الله وَنَسُوهُ او الله عَلَى كُلِّ هَيْءٍ هَوِيْلً ع
 كُلِّ هَيْءٍ هَوِيْلً ع

৫৮ সূরা আল মোজাদালাহ

reserv

ा. प्राम । प क्षराना वाधा अनुशावन करता ना त्य, الله يعلَرُ مَا فِي السَّمُونِ على السَّمُونِ على السَّمُونِ السَّمُ السَّمِي السَّمُ السَّمِ السَّمِ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمِ السَّمِ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمِ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمِي السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمِ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السَّمُ السّ সবই জানেন; কখনো এমন হয় না যে, তিন ব্যক্তির মধ্যে কোনো গোপন সলাপরামর্শ হয় এবং (সেখানে) 'চতুর্থ' হিসেবে আল্লাহ তায়ালা উপস্থিত থাকেন না এবং পাঁচ জনের মধ্যে (কোনো গোপন পরামর্শ হয় না, যেখানে) 'ষষ্ঠ' হিসেবে তিনি থাকেন না, (এ সলা পরামর্শকারীদের সংখ্যা) তার চাইতে কম হোক কিংবা বেশী, তারা যেখানেই থাক না কেন, আল্লাহ তায়ালা সব সময়ই তাদের সাথে আছেন, অতপর কেয়ামতের দিন আল্লাহ তায়ালা তাদের (সবাইকে) বলে দেবেন তারা কি কাজ করে এসেছে: আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ে সম্যক অবগত রয়েছেন।

وَمَا فِي الْأَرْضِ ﴿ مَا يَكُوْنُ مِنْ تَجُولِي ثَلْثَةِ اللَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةِ اللَّا هُوَ سَادسُهُرْ وَلَا آذني مِنْ ذَلِكَ وَلَا آكْتُو اللَّهِ هُوَ مَعَهُرُ أَيْنَ مَا كَانُوا جِ ثُرِ يُنَبِّئُهُرُ بِهَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيمَةِ ﴿ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْر

৮. তুমি কি তাদের লক্ষ্য করো না, যাদের (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসুল সম্পর্কে কোনো) গোপন কানাঘুষা করতে নিষেধ করা হয়েছিলো; (কিন্তু) তারা (ঠিক) তারই পুনরাবৃত্তি করলো যা করতে তাদের বারণ করা হয়েছিলো, তারা একে অপরের সাথে সুস্পষ্ট গুনাহের কাজ, মাত্রাতিরিক্ত বাড়াবাড়ি ও রসুলের নাফরমানীর ব্যাপারে কানাঘুষা করতে লাগলো, (অথচ) এরা যখন তোমার সামনে আসে তখন তোমাকে এমনভাবে অভিবাদন জানায়, যা দিয়ে আল্লাহ তায়ালাও তোমাকে অভিবাদন জানান না. (আর এ সব প্রতারণার সময়) ওরা মনে মনে বলে, আমরা যা বলছি তার জ্বন্যে আল্লাহ তায়ালা আমাদের কোনো প্রকার শান্তি দিচ্ছেন না কেন? (তুমি তাদের বলো,) জাহানাম তাদের (শান্তির) জন্যে যথেষ্ট, তার আগুনে (পুড়ে) তারাই দগ্ধ হবে, কতো নিকৃষ্ট (হবে সেই) বাসস্থান।

٨ أَلَرْ تَوَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوْا عَنِ النَّجُوٰى ثُرَّ يَعُوْدُوْنَ لِهَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنْجَوْنَ بِالْإِثْرِ وَ الْعُنْ وَ انِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ زِ وَإِذَا جَاءُوْكَ مَيَّوْكَ بِهَا لَرْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ لا وَيَقُوْلُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِهَا نَقُوْلُ مَ مَشْبُهُرْ جَهَنَّرُ جَ يَصْلُوْنَهَا جَ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

৯. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা যখন একে অপরের সাথে গোপনে কোনো কথা বলো, তখন কখনো কোনো পাপাচার, সীমালংঘন ও রসলের বিরোধিতা সম্পর্কিত কথা বলো না: বরং গোপনে কিছু বলতে হলে (সেখানে) একে অপরকে ভালো কাজ ও (আল্লাহকে) ভয় করার কথাই বলো: (সর্বোপরি) সে সর্বময় ক্ষমতার মালিক আল্লাহকে ভয় করো, যাঁর সামনে (একদিন) তোমাদের (সবাইকে) সমবেত করা হবে।

٩ يَايُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوآ إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْرِ وَالْعُدُوَانِ وَمَعْصِينسِ الرُّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقُوٰى ﴿ وَاتَّقُوا اللهُ الَّذِيُّ إِلَيْهِ تُحْشُرُونَ

১০. (আসলে এদের) গোপন সলাপরামর্শ তো হচ্ছে একটা শয়তানী প্ররোচনা, যার (একমাত্র) উর্দ্দেশ্য হচ্ছে ঈমানদার লোকদের কষ্ট দেয়া (অথচ এরা জানে না). আল্লাহ তায়ালার ইচ্ছা ব্যতিরেকে তারা ঈমানদারদের বিন্দুমাত্রও কোনো ক্ষতি সাধন করতে পারবে না: (তাই) ঈমানদারদের উচিত (হামেশা) আল্লাহর ওপরই নির্ভর করা।

١٠ إِنَّهَا النَّجُوٰى مِنَ الشَّيْطَى لِيَحْزُنَ الَّذِينَ أَمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا باذْن الله ، وعَلَى الله فَلْيَتُوكُّل الْهُوْمُنُونَ

১১. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, যখন মজলিসসমূহে (একটু নড়েচড়ে) জায়গা প্রশস্ত করে দিতে তোমাদের বলা হয় তখন তোমরা জায়গা প্রশস্ত করে দিও, (তাহলে) আল্লাহ তায়ালাও তোমাদের জন্যে (জানাতে) এভাবে জায়গা প্রশস্ত করে দেবেন, (আবার) কখনো যদি (জায়গা ছেড়ে) ওঠে দাঁড়াতে বলা হয়, তাহলে ওঠে দাঁড়িয়ে যেও. তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে এবং যাদের আল্লাহর

١١ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْآ إِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا في الْهَجلس فَافْسَحُوا يَفْسَح اللَّهُ لَكُرْ ، وَإِذَا قِيْلَ انْشُرُوْا فَانْشُرُوْا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ أَمَّنُوا مِنْكُرُ لا وَالَّذِينَ

| ı | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৮ ক্রাদ সামি'আল্লাহ |
|---|---|---|
| | পক্ষ থেকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে, আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই কেয়ামতের দিন তাদের মহামর্যাদা দান করবেন; তোমরা যা কিছু করো আল্লাহ তায়ালা সে ব্যাপারে পূর্ণ খবর রাখেন। | أُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجْتٍ ﴿ وَاللَّهُ بِهَا تَعْمَلُوْنَ عَلَيْكُونَ عَبِيْرً |
| | ১২. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা যদি কখনো রস্লের সাথে একাকী কোনো কথা বলতে চাও, তাহলে (অপ্রয়োজনীয় কথাবার্তা নিয়ন্ত্রনের কৌশল হিসেবে) | ١٢ يَايُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوۤ إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ |
| ١ | ভোমরা কিছু দান (সাদাকা) আদায় করে নেবে; এটা তোমাদের (সবার) জর্ন্যে মংগলজনক ও (রস্লের | فَقَلِّ مُوْا بَيْنَ يَلَى نَجُولِكُم مَنَّقَةً مَ ذُلِكَ |
| ١ | মজলিসের পরিবেশ নিয়ন্ত্রনে রাখার একটি) পবিত্রতম্ | غَيْرٌ لَّكُمْ وَ اَطْهَرُ ﴿ فَإِنْ لَّمْ تَجِدُواْ فَإِنَّ اللَّهَ |
| | পন্থা, অবশ্য সাদাকা আদায় করার মতো তোমরা যদি কিছু না পাও তাহলে (দুন্চিন্তা করো না, কেননা,) আল্লাহ তায়ালা ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু। | غُغُورٌ رَحِيمَرُ |
| l | ১৩. তোমরা কি তোমাদের একাকী কথা বলার আগে সাদাকা আদায় করার আদেশে ভয় পেয়ে গেলেঃ যুদি | ١٣ ءَ أَشْفَقْتُر أَنْ تُقَرِّمُوْا بَيْنَ يَلَى |
| I | তোমরা তা করতে না পারো এবং আল্লাহ তায়ালা স্বীয় করুণা দ্বারা তোমাদের ক্ষমা করে দেন, তবে তোমরা | نَجُوٰنكُرْ صَلَقْتِ ، فَإِذْ لَرْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ |
| ١ | নামায প্রতিষ্ঠা করতে থাকো, যাকাত আদায় করতে | الله عَلَيْكُمْ فَآقِيْهُوا الصَّلْوةَ وَأَتُوا الزَّكُوةَ |
| l | থাকো এবং (সর্বকাজে সর্ববিষয়ে) আল্লাহ ভায়ালা ও তাঁর রস্লের আনুগত্য করতে থাকো; তোমরা যা করছো | وَٱطِيْعُوا اللَّهَ وَرَسُوْلَهُ ﴿ وَاللَّهُ خَبِيْرٌ ۗ بِهَا |
| | আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই সে সম্পর্কে পূর্ণ ওয়াকেফহাল রয়েছেন। | تَعْمَلُوْنَ ع |
| I | ১৪. (হে নবী,) তুমি কি সে সম্প্রদায়ের অবস্থা কখনো লক্ষ্য করোনি, যারা এমন জাতির সাথে বন্ধুত্ব পাতায় | ١٣ ألَم تُرَ إِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ |
| I | যাদের ওপর আল্লাহ তায়ালা অভিশাপ দিয়েছেন; এ (সুযোগসন্ধানী) লোকেরা যেমন তোমাদের আপন নয়, | اللَّهُ عَلَيْهِرْ ﴿ مَا هُرْ مِّنْكُرْ وَلَا مِنْهُرْ لا |
| l | (তেমনি) তারাও ওদের আপন নয়, এরা জ্বেনে শুনে আল্লাহর ওপর মিথ্যা শপথ করে। | وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَلِبِ وَهُرْ يَعْلَبُونَ |
| ١ | ১৫. আল্লাহ তায়ালা তাদের জন্যে (জাহান্লামের) কঠোর | ١٥ اَعَنَّ اللَّهُ لَهُرْعَنَ ابًّا شَرِيْنًا * إِنَّهُرْ سَاءَ |
| ١ | আযাব প্রস্তুত করে রেখেছেন; তারা যে কাজ করছে তা সত্যিই এক (জঘন্য) অপরাধের কাজ । | مَا كَانُوْ إِيَعْمَلُونَ |
| | ১৬. তারা তাদের (মিথ্যা) শপথগুলোকে (নিজেদের স্বার্থ রক্ষায়) ঢাল বানিয়ে নিতো, অতপর তারা মানুষদের | ١٦ إِتَّخَلُو آ أَيْهَانَهُمْ جُنَّةً فَصَلُّوا عَنْ سَبِيلِ |
| | আল্লাহর পথ থেকে ফিরিয়ে রাখতো, অতএব তাদের জন্যে (রয়েছে) এক লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি। | اللهِ فَلَهُرْ عَنَ ابُّ مُّوِيْنٌ |
| | יין אוייטוט אוויטוט ויין אויטוט וויין נויטוט אוויטוטוט אוויטוטור | ١٤ لَنْ تُغْنِي عَنْهُرْ أَمُوالُهُرْ وَكَ أَوْلَادُهُرْ |
| | কোনোটাই কোনো কাজে আসবে না; তারা তো দোযখেরই বাসিন্দা, সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান | مِّنَ اللهِ شَيْئًا ، أُولَئِكَ أَسْعَبُ النَّارِ ، هُرْ |
| | করবে। | فِيْهَا خُلِلُ وْنَ |
| | ১৮. যেদিন আল্লাহ তায়ালা তাদের সবাইকে পুনরুজ্জীবিত করবেন- (আন্চর্য! সেদিনও) তারা তাঁর | ١٨ يَوْ)َ يَبْعَثُهُرُ اللَّهُ جَهِيْعًا فَيَحْلِغُونَ لَهٌ |
| | সামনে (এ মিথ্যা) শপথ (করে দায়িত্মুক্তির চেষ্টা) করবে, যেমনি করে তারা (আজ স্বার্থসিদ্ধির জন্যে) | كَبَا يَحْلُفُونَ لَكُرْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى |
| | তোমাদের সাথে মিথ্যা শপথ করছে, তারা ভাববে, (দুনিয়ার মতো সেখানেও বুঝি এর মাধ্যমে) কিছু উপকার পাওয়া যাবে; (হে রসূল,) তুমি (এদের থেকে) সাবধান থেকো, এরা কিন্তু মিথ্যাচারী। | شَيْءٍ * أَلَا إِنَّهُرْ هُرُ الْكُذِبُونَ |
| | ১৯. (আসলে) শয়তান এদের ওপর পুরোপুরি প্রভাব বিস্তার করে নিয়েছে, শয়তান এদের আল্লাহর স্বরণ | ١٩ إِسْتَحْوَدَ عَلَيْهِي الشَّيْطَى فَٱنْسُمُ دِكُرَ |
| 1 | At and tale culculation | |

মন্যিল ৭

৫৮ সূরা আল মোজাদালাহ

পারা ২৮ ক্রাদ সামি'আল্লাহু

(সম্পূর্ণ) ভূলিয়ে দিয়েছে; এরা হচ্ছে শয়তানের দল: (হে الله ، أولئكَ حِزْبُ الشَّيْطَى ، أَلَا إِنَّ রসূল,) তুমি জেনে রাখো, শয়তানের দলের ধ্বংস অনিবার্য । مِزْبَ الشَّيْطِي هُرُ الْخُسُووْنَ

২০. যারা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের বিরুদ্ধাচরণ وَرُسُولُهُ وَرُسُولُهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ وَرُسُولُهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ وَرُسُولُهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ عَلْمَا عَلَيْهِ عَلَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهِ عَلَيْ أُولٰئِكَ فِي الْإَذَلِّيْنَ হবে ।

২১. আল্লাহ তায়ালা তো (এ) সিদ্ধান্ত (জানিয়েই) ٢١ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ ﴿ إِنَّ দিয়েছেন যে, 'আমি এবং আমার রসূল অবশ্যই জয়ী হবো.' নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা শক্তিমান ও اللهُ قُوىٌّ عَزِيْرٌ ۗ পরাক্রমশালী :

٢٢ لَا تَجِلُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ ২২. (হে রসূল,) আল্লাহ তায়ালা ও পরকালের ওপর ঈমান এনেছে এমন কোনো সম্প্রদায়কে তমি কখনো পাবে না যে, তারা এমন লোকদের ভালোবাসে যারা الْأَخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ مَادٌّ اللَّهَ وَرَسُولَهٌ وَلَوْ আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের বিরুদ্ধাচরণ করে, যদি সে (আল্লাহবিরোধী) লোকেরা তাদের পিতা, ছেলে, ভাই كَانُوْ ۗ الْبَاءَمُرْ أَوْ اَبْنَاءَمُرْ أَوْ اِخْوَانَمُرْ ۖ أَوْ কিংবা নিজেদের জাতি গোত্রের লোকও হয় (তবুও নয়): এ (আপসহীন) ব্যক্তিরাই হচ্ছে সেসব লোক, যাদের عَشِيْ تَهُرْ ﴿ أُولُّنُكَ كَتَبَ فِي قُلُوْبِهِرْ অন্তরে আল্লাহ তায়ালা ঈমান (-এর ফয়সালা) এঁকে الْإِيْهَانَ وَٱيَّانَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ م وَيُنْجِلُهُمْ দিয়েছেন এবং নিজস্ব গায়বী মদদ দিয়ে তিনি (এ দুনিয়ায়) তাদের শক্তি বৃদ্ধি করেছেন; কেয়ামতের দিন তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, তারা সেখানে চিরকাল থাকবে: (সর্বোপরি) আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর প্রসনু হবেন এবং তারাও (সেদিন) তাঁর ওপর সম্ভষ্ট হবে: এরাই হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার নিজম্ব বাহিনী, আর হাঁ, আল্লাহর বাহিনীই (শেষতক) কামিয়াব হয়।

فِيْهَا ﴿ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُرْ وَرَضُوْا عَنْهُ ﴿ أُولُئكَ مِزْبُ الله ﴿ أَلَا إِنَّ مِزْبَ اللهِ مُرُ الْهُفْلِحُونَ ع سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَنَ نِيَّةً

সুরা আল হাশর

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ২৪. রুকু ৩ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

ایات : ۲۳ رُکُوع : ۳

১. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তারা সবাই আল্লাহ তায়ালার (পবিত্রতা ও) মাহাত্ম্য ঘোষণা করছে. আল্লাহ তায়ালা মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়।

ا سَبَّعَ لِلَّهِ مَا فِي السَّاوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ عَ وَمُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ

২. তিনি হচ্ছেন সেই মহান সন্তা, যিনি আহলে কেতাবদের মাঝে যারা আল্লাহকে অস্বীকার করেছে-তাদের প্রথম নির্বাসনের দিনেই তাদের নিজ বাডিঘর থেকে বের করে দিয়েছিলেন: (অথচ) তোমরা তো (কখনো) কল্পনাও করোনি যে, ওরা (কোনোদিন এ শহর থেকে) বেরিয়ে যাবে (তারা নিজেরাও চিন্তা করেনি). তারা (তো বরং) ভেবেছিলো, তাদের দুর্ভেদ্য দুর্গগুলো তাদের আল্লাহ তায়ালা (-র বাহিনী) থেকে বাঁচিয়ে দেবে. কিন্তু এমন এক দিক থেকে আল্লাহর পাকড়াও এসে তাদের ধরে ফেললো, যা ছিলো তাদের কল্পনার বাইরে, আল্লাহর সে পাকড়াও তাদের অন্তরে প্রচন্ড ভীতির সঞ্চার করলো, ফলে-তারা নিজেদের হাত দিয়েই এবং (কিছু

٢ مُوَ الَّذِي ٓ أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن آهُلِ الْكِتْبِ مِنْ دِيَارِهِرْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مُ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخُرُجُواْ وَظَنُّواْ أَنَّهُرْمًّا نِعَتُهُرْ مُوْدُهُمْ مِن اللهِ فَآتُنهُمْ اللهُ مِنْ عَيْثُ لَرْ يَحْتَسُبُوْ ا ق وَقَنَ فَي قُلُوْبِهِرُ الرَّعْبَ يُخُرِبُونَ بُيُوْتَهُر بِآيْدِيْهِر وَآيْدِي

৫৯ সুরা আল হাশর

₹

وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ ق فَاعْتَبِرُوْا يَالُولِى الْأَبْصَار

ত. যদি আল্লাহ তায়ালা ওদের ওপর নির্বাসিত করার সিদ্ধান্ত বসিয়ে না দিতেন, তাহলে (আগের জাতিসমূহের মতো) তিনি তাদের এ দুনিয়ায় (রেখে)-ই কঠোর শান্তি দিতে পারতেন; (অবশ্য) তাদের জন্যে পরকালে জাহানামের আগুন তো (প্রস্তুত) রয়েছেই।

وَلَوْلا آن كَتَبَ اللّهُ عَلَيْهِرُ الْجَلّاءَ
 لَعَنَّ بَهُر فِي النَّنْيَا ﴿ وَلَهُر فِي الْأَخِرَةِ
 عَنَابُ النَّارِ

৪. (ওটা) এজন্যেই (রাখা হয়েছে) যে, তারা আল্লাহ তারালা ও তাঁর রস্লের (সুস্পষ্ট) বিরুদ্ধাচরণ করেছিলো, আর যে কেউই আল্লাহর বিরোধিতা করে (তার জানা উচিত), আল্লাহ তারালা শান্তিদানের ব্যাপারে অত্যন্ত কঠোর।

مُ ذٰلِكَ بِأَنَّمُرُ شَآتُوا اللّهَ وَرَسُولَهُ عَ وَمَنُ وَمَنُ لَكُمْ وَمَنُ وَمَنَ عَلَمُ وَمَنَ اللّهَ مَن يَكُ اللّهَ مَن يُكَا اللهُ مَن يَكُ الْعِقَابِ

৫. (এ সময়) তোমরা যেসব খেজুর গাছ কেটে ফেলেছো এবং যেগুলো (না কেটে) তার মূলের ওপর দাঁড়িয়ে থাকতে দিয়েছো (তা অসংগত ছিলো না, বরং); তা ছিলো সম্পূর্ণ আল্লাহ তায়ালার অনুমতিক্রমেই, (আর আল্লাহ তায়ালা অনুমতি এ কারণেই দিয়েছেন), যেন তিনি এ দারা না-ফরমানদের অপমানিত করতে পারেন।

۵ مَا قَطَعْتُر مِّنْ لِيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُهُوْمَا قَآلِمَةً
 عَلَى أُمُولِمَا فَبِإِذْنِ اللهِ وَلِيُخْزِى
 الْفُسِقِيْنَ

৬. (এ ঘটনার ফলে) আল্লাহ তায়ালা যেসব ধন সম্পদ তাদের কাছ থেকে নিয়ে তাঁর রসূলকে দিয়েছেন (তা ছিলো তাঁরই একান্ত অনুগ্রহ), তোমরা তো এ (গুলো পাওয়া)-র জন্যে কোনো ঘোড়ায় কিংবা উট্রে আরোহণ (করে যুদ্ধ) করোনি, (আসলে) আল্লাহ তায়ালা যার ওপর চান তার ওপরই তাঁর রসূলকে কর্তৃত্ব প্রদান করে থাকেন; আর আল্লাহ তায়ালা সর্ববিষয়ের ওপরই শক্তিমান।

لَا وَمَا اَفَاءَ الله عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُر فَمَا اَوْجَفَتُر عَلَيْهِ مِنْهُر فَمَا اَوْجَفَتُر عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلا رِكَابٍ وَلْكِنَّ الله يُسَلِّعُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءً ، وَالله عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

৭. আল্লাহ তায়ালা (ধন সম্পদের) যা কিছু (সেই) জনপদের মানুষদের কাছ থেকে নিয়ে তাঁর রসূলকে দিয়েছেন, তা হচ্ছে আল্লাহর জন্যে, রসূলের জন্যে, (রসূলের) আত্মীয় স্বজন, এতীম মেসকীন ও পথচারীদের জন্যে, (সম্পদ তোমরা এমনভাবে বন্টন করবে) যেন তা (কেবল) তোমাদের (সমাজের) বিত্তশালী লোকদের মাঝেই আবর্তিত না হয় এবং (আল্লাহর) রসূল তোমাদের যা কিছু (অনুমতি) দেয় তা তোমরা গ্রহণ করো এবং সে যা কিছু নিষেধ করে তা থেকে বিরত থাকো, আল্লাহ তায়ালাকেই ভয় করো; অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা কঠোর শান্তিদাতা।

৮. (এ সম্পদ) সেসব অভাবগন্ত মোহাজেরদের জন্যে, যাদের (আল্লাহর ওপর ঈমানের কারণেই) নিজেদের ভিটেমাটি ও সহায় সম্পদ থেকে উচ্ছেদ করে দেয়া হয়েছে, অথচ এ লোকগুলো আল্লাহর অনুগ্রহ ও তাঁর সম্ভুষ্টিই হাসিল করতে চায়, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লের সাহায্য সহযোগিতায় তৎপর থাকে; (মূলত) এ লোকগুলোই হচ্ছে সত্যাশ্রয়ী,

لِلْقُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّنِيْنَ ٱخْرِجُوْا
 مِنْ دِيَارِهِرْ وَٱمْوَالِهِرْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ
 اللهِ وَرِضُوَانًا وَّيَنْصُرُونَ الله وَرَسُولَهً لَه أُولَئِكَ هُرُ الصَّرِقُونَ عَـ

৯. (এ সম্পদে তাদেরও অংশ রয়েছে) যারা _^ মোহাজেরদের আগমনের আগ থেকেই এ (জনপদ)-কে ^১

٩ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْإِيْمَانَ مِنْ

৫৯ সূরা আল হাশর

(৫৬১)

মন্যিল ৭

92

(নিজেদের) নিবাস বানিয়েছিলো এবং যারা (এদের আসার) আগেই ঈমান এনেছিলো, তারা ওদের অত্যন্ত ভালোবাসে যারা হিজরত করেছে, (রস্লের পক্ষ থেকে) তাদের (মোহাজের সাথীদের) যা কিছু দেয়া হয়েছে সে ব্যাপারে তারা নিজেদের অন্তরে তার কোনো রকমের প্রয়োজন অনুভব করে না, (শুধু তাই নয়), তারা তাদের (মোহাজের সাথীদের) প্রয়োজনকে সর্বদাই নিজেদের (প্রয়োজনের) ওপর অগ্রাধিকার দেয়, যদিও তাদের নিজেদেরও (অনেক) অভাবগ্রন্তা রয়েছে, (আসলে) যাদের মনের কার্পণ্য (ও সংকীর্ণতা) থেকে বাঁচিয়ে রাখা হয়েছে, তারাই হচ্ছে সফলকাম,

قَبْلِهِرْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِرْ وَلَا يَجِلُوْنَ فِي مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِرْ وَلَا يَجِلُوْنَ فِي مُلُورِهِرْ حَاجَةً مِّنَّا اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُونَ عَلَى اَنْفُسِهِرْ وَلَوْ كَانَ بِهِرْ خَصَاصَةً ، وَمَنْ يَّوْقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَالُولِّئِكَ هُرُ الْيُقْلِحُونَ ؟

১০. (সে সম্পদ তাদের জন্যেও,) যারা তাদের (মোহাজের ও আনসারদের) পরে এসেছে, এরা (সব সময়ই) বলে, হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের মাফ করে দাও, আমাদের আগে আমাদের যে ভাইয়েরা ঈমান এনেছে তুমি তাদেরও মাফ করে দাও এবং আমাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে, তাদের ব্যাপারে আমাদের মনে কোনো রকম হিংসা বিছেষ রেখো না, হে আমাদের মালিক, তুমি অনেক মেহেরবান ও পরম দয়ালু।

ا وَالَّذِيْنَ جَاءُوْا مِنْ اَ بَعْرِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا الْغِرْ لَيَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا الْغِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْإِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلُ فِي قُلُوبِنَا غِلَّا لِلَّذِيْنَ أَمْنُوْا رَبَّنَا إِلَّكَ رَءُوْنٌ رَّحِيْمٌ عَ لَلَّاذِيْنَ أَمْنُوْا رَبَّنَا إِلَّكَ رَءُوْنٌ رَّحِيْمٌ عَ

১১. (হে রস্ল,) তুমি কি সেসব মোনাফেকদের (আচরণ) লক্ষ্য করোনি, যারা তাদের কাফের 'আহলে কেতাব' ভাইদের বলে, যদি তোমাদের (কখনো এজনপদ থেকে) বের করে দেয়া হয়, তবে আমরাও তোমাদের সাথে (একাশ্বতা দেখিয়ে এখান থেকে) বেরিয়ে যাবো এবং তোমাদের (স্বার্থের) বেলায় আমরা কখনো অন্য কারো আনুগত্য করবো না, আর তোমাদের সাথে যদি যুদ্ধ বাধিয়ে দেয়া হয় তাহলে আমরা অবশ্যই তোমাদের সাহায্য করবো; কিত্তু আল্লাহ তায়ালা (নিজেই) সাক্ষ্য দিছেন, এরা নিসন্দেহে কপট- মিথ্যাবাদী।

الَمْر تَرَ إِلَى النَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ
 لِإِخْوَانِهِمُ النِّذِينَ كَفَرُوا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
 لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَحْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا تُطِيعُ
 فِيْكُمْر اَحَلًا اَبَلًا لا وَّان قُوْتِلْتُمْر
 لَنَنْصُرَتَّكُمْ وَالله يَشْهَلُ إِنَّهُمْ لَكُوبُونَ

১২. (সত্য কথা হচ্ছে,) যদি তাদের বের করেই দেয়া হয়, তাহলে এরা (কখনো) তাদের সাথে বের হবে না; আবার (যুদ্ধে) আক্রান্ত হলে এরা তাদের (কোনো প্রকার) সাহায্যও করবে না, যদি এরা তাদের সাহায্য করেও, তবুও (নিসন্দেহে) এরা পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে। অতপর এ লোকদের আর (কোনো উপায়েই) কোনো সাহায্য করা হবে না।

١٢ لَئِن ٱخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ عَ
 وَلَئِن قُوْتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ عَ وَلَئِن قَصْرُومُهُمْ عَ وَلَئِن قَصَرُومُمْ لَيُولُنَّ الْأَدْبَارَ عَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ

১৩. (আসলে) এদের অস্তরে আল্লাহর চাইতে তোমাদের ভয় বেশী বড়ো হয়ে বসে আছে; (এর কারণ হচ্ছে,) এরা এমন একটি জাতি. যারা (আদল কথাই) বুঝতে পারে না। الله عَ ذَلِكَ بِأَنَّمَرُ أَشَلَّ رَهْبَةً فِي صُّ وُرِهِرْ مِّنَ اللهِ عَذَٰلِكَ بِأَنَّمَرُ قَوْمً لَّ يَفْقَهُونَ

১৪. এরা কখনো ঐক্যবদ্ধ হয়েও তোমাদের সাথে লড়াই করতে আসবে না, (যদি করেও তা করে) অবশ্য কোনো সুরক্ষিত জনপদের ভেতর বসে, অথবা (নিরাপদ) পাচিলের আড়ালে থেকে; (আসলে) তাদের নিজেদের পারস্পরিক শত্রুতা খুবই মারাত্মক; তুমি তো এদের মনেকরো এরা বৃথি ঐক্যবদ্ধ, কিন্তু (মাটেই তা নয়,) এদের অন্তর হচ্ছে শতধা বিচ্ছিন্ন, কেননা এরা হচ্ছে নির্বোধ সম্প্রদায়,

٣ ٧ يُقَاتِلُونَكُرْ جَهِيْعًا إِلَّا فِي قُرِّى مُّحَسَّنَة اَوْ مِنْ وَرَاءِ جُلُورِ ﴿ بَاْسُهُرْ بَيْنَهُرْ شَرِيْلٌ ۗ تَحْسَبُهُرْ جَهِيْعًا وَّقَلُوبُهُرْ شَتَّى ﴿ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُرْ قَوْاً لَا يَعْقِلُونَ جَ

১৫. এদের অবস্থাও সেই আগের লোকদের মতো; যারা মাত্র কিছু দিন আগে নিজেদের কৃতকর্মের পরিণাম

١٥ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا

৫৯ সূরা আল হাশর

(190

| | , |
|---|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৮ ক্রাদ সামি'আল্লাহু |
| (হিসেবে বিতাড়িত হবার) শাস্তি ভোগ করেছে, (তাছাড়া পরকালেও) এদের জন্যে কঠিন আযাব রয়েছে, | وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَنَابٌ ۚ ٱلِيْمُ ۚ عَ |
| ১৬. এদের (আরেকটি) তুলনা হচ্ছে শয়তানের মতো, শয়তান এসে যখন মানুষদের বলে, (প্রথমে) আল্লাহকে | الله الشه الم الله الم الم الم الم الم الم الم الم الم الم |
| অম্বীকার করো, অতপর (সতি)ই) যখন সে (আল্লাহকে) অম্বীকার করে তখন (মুহূর্তেই) সে (বোল পাল্টে ফেলে এবং) বলে, আমার সাথে তোমার কোনো সম্পর্ক নেই, আমি (নিজে) সৃষ্টিলোকের মালিক আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করি। | اللَّهَ رَبَّ الْعُلَمِينَ |
| ১৭. অতপর (শয়তান ও তার অনুসারী) এ দু'জনের পরিণাম হবে জাহান্নাম, সেখানে তারা চিরদিন থাকবে; আর এটাই হচ্ছে যালেমদের শাস্তি! | ا فَكَانَ عَاقِبَتَهُما ۚ أَنَّهُما فِي النَّارِ خَالِنَيْنِ فِيْهَا ﴿ وَذٰلِكَ جَزَوُّا الظَّلِمِيْنَ عَ |
| ১৮. (হে মানুষ), তোমরা যারা ঈমান এনেছো, আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, (তোমাদের) প্রত্যেকেরই উচিত (একথাটি) লক্ষ্য করা যে, আগামীকাল (আল্লাহর সামনে | ١٨ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ |
| পেশ করার) জন্যে সে কি (আমলনামা) পেশ করতে যাচ্ছে, তোমরা আল্লাহকে ভয় করতে থাকো; অবশ্যই | نَفْسُ مَّا قَنَّمَتْ لِغَلِ ۽ وَاتَّقُوا اللَّهَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ مَا إِنَّ اللَّهُ مَا إِنَّ إِنَّا إِنَّا إِنَّ أَنْ إِنَّ إِنْ إِنْ إِنْ إِنْ إِنْ إِنْ إِنْ إِنْ |
| তোমরা যা কিছু করছো, আল্লাহ তায়ালা তার পূর্ণাংগ খবর রাখেন। | |
| ১৯. তোমরা তাদের মতো হয়ো না যারা (দুনিয়ার ফাঁদে পড়ে) আল্লাহকে ভুলে গেছে এবং এর ফলে আল্লাহ তায়ালাও তাদের (নিজ নিজ অবস্থা) ভুলিয়ে দিয়েছেন; (আসলে) এরা হচ্ছে (আল্লাহর) না-ফরমান। | 19 وَلَا تَكُونُوا كَالَّانِيْنَ نَسُوا اللَّهَ فَانَسُوا اللَّهَ فَانَسْدِهُمْ اَنْفُسِقُونَ فَانَسْدِهُمْ اَنْفُسِقُونَ |
| ২০. জাহান্নামের অধিবাসী ও জান্নাতের অধিবাসীরা কখনো এক হতে পারে না; (কেননা) জান্নাতবাসীরাই সফলকাম। | ٢٠ لَا يَسْتَوِى آَ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ مُرُ الْفَائِزُونَ |
| ২১. আমি যদি এ কোরআনকে কোনো পাহাড়ের ওপর নাযিল করতাম তাহলে তুমি (অবশ্যই) তাকে দেখতে, | ا الو اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلَى جَبَلِ |
| কিভাবে তা বিনীত হয়ে আল্লাহর ভয়ে বিদীর্ণ হয়ে পড়ছে। আমি এসব উদাহরণ মানুষের জন্যে এ কারণেই | لَّرَ أَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَرِّعًا مِّنْ خَهْيَةِ اللَّهِ ﴿ وَتِلْكَ الْإَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ |
| বর্ণনা করছি, যেন তারা (কোরআনের মর্যাদা সম্পর্কে) চিন্তা ভাবনা করতে পারে। | يَتَفَكَّرُونَ |
| ২২. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, তিনি ছাড়া কোনো মাবুদ নেই, দেখা-অদেখা সব কিছুই তাঁর জানা, তিনি দয়াময়, তিনি করুণাময়। | ٢٢ مُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَ عَلِمُ الْعَيْبِ وَالشَّهَادَةِ عَ هُوَ الرَّحْسُ الرَّحِيمُ |
| ২৩. তিনিই আল্লাহ তায়ালা, তিনি ছাড়া কোনো মাবুদ নেই, তিনি রাজাধিরাজ, তিনি পৃত পবিত্র, তিনি শান্তি (দা্তা), তিনি বিধায়ক, তিনি রক্ষক, তিনি পরাক্রমশালী, | |
| তিনি প্রবল, তিনি মাহাত্ম্যের একক অধিকারী; তারা যেসব (ব্যাপারে আল্লাহর সাথে) শেরেক করছে, আল্লাহ তায়ালা সেসব কিছু থেকে অনেক পবিত্র। | الْقُدَّوْسُ السَّلْمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ء سُبْحٰنَ اللَّهِ عَبَّا يُشْرِكُونَ |
| ২৪. তিনি আল্লাহ তায়ালা, তিনি সৃষ্টিকর্তা, তিনি সৃষ্টির উদ্ভাবক, সব কিছুর রূপকার তিনি, তাঁর জন্যেই (নিনেচি) সকল উত্তম নাম; আকাশমন্তলী ও পৃথিবীতে (ফোনে) যা কিছু আছে তার সব কিছু তাঁরই পবিত্রতা ও মহিমা | ٢٣ هُوَ اللّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْهُصَوِّرُ لَهُ الْاَهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْهُ مَا فِي الْاَسْهَاءُ الْحُسْنَى مَ يُسَيِّعُ لَهُ مَا فِي السَّهْوَٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ عَ |
| ঘোষণা করছে, তিনি পরাক্রমশালী, তিনি প্রবল প্রজ্ঞাময়। | مسلوس والارس عوس العريز العريد |

৫৯ সূরা আল হাশর

সুরা আল মোমতাহেনা মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১৩, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে~

سُوْرَةُ الْهَيْتَحِنَةِ مَنَ نِيَّةً ايَاتُ : ١٣ رُكُوْعٌ : ٢ بِشر اللهِ الرَّحْسَ ِ الرَّحِيْ

১. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা (কখনো) আমার ও তোমাদের দুশমনদের নিজেদের বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করো না। (এটা কেমন কথা যে) তোমরা তাদের প্রতি বন্ধুত্ব দেখাচ্ছো. (অথচ) তোমাদের কাছে যে সত্য (দ্বীন) এসেছে তারা তা অস্বীকার করছে, তারা আল্লাহর রসূল এবং তোমাদের- (তোমাদের জন্মভূমি থেকে) বের করে দিচ্ছে- তথু এ কারণে, তোমরা তোমাদের মালিক আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছো: যদি তোমরা (সত্যিই) আমার পথে জেহাদ ও আমার সম্ভন্তি অর্জনের লক্ষ্যে (ঘরবাড়ি থেকে) বেরিয়ে থাকো, তাহলে কিভাবে তোমরা চুপে চুপে তাদের সাথে (আবার) বন্ধুতু পাতাতে পারো! তোমরা যে কাজ গোপনে করো আর যে কাজ প্রকাশ্যে করো আমি তা সম্যক অবগত আছি: তোমাদের মধ্যে যদি কেউ (দুশমনদের সাথে গোপনে বন্ধুত গড়ার) এ কাজটি করে, তাহলে (বুঝতে হবে) সে (দ্বীনের) সরল পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে গেছে।

ا يَايَّهَا الَّذِيثَيَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَلُوّى وَعَلُوَّكُمْ ۚ ٱوْلِيَّاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْهَوْدَةِ وَقَلَ كَفَرُوْا بِهَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ م يُخْرِجُوْنَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُواْ بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ﴿ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِي وَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۚ يُسِرُّونَ إِلَيْهِيرُ بِالْمَوَدَّةِيُّ ۖ وَأَنَا اَعْلَرُ بِهَا اَحْفَيْتُرْ وَمَا اَعْلَنْتُرْ ، وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَلْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيل

২. অথচ এরা যদি তোমাদের কাবু করতে পারে, তাহলে এরা তোমাদের শক্রতে পরিণত হবে (তথু তাই নয়), এরা নিজেদের হাত ও কথা দিয়ে তোমাদের অনিষ্ট সাধন করবে, (আসলে) এরা তো এটাই চায় যে, তোমরাও তাদের মতো কাফের হয়ে যাও:

٢ إِنْ يَّثْقَفُوْكُرْ يَكُوْنُوْ الكُيْرَ أَعْنَاءً وَيَبْسُطُوْ ا إِلَيْكُمْ أَيْنِيَهُمْ وَأَلْسِنَتُهُمْ بِالسَّوْءِ وَوَدُّوْا لُوْ تُكُفُّرُونَ ا

৩. কেয়ামতের দিন তোমাদের আত্মীয় স্বজন ও সন্তান সন্তুতি তোমাদের কোনোই উপকারে আসবে না. সেদিন আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মাঝে বিচার ফয়সালা করে দেবেন: তোমরা যা করো আল্লাহ তায়ালা তার সব কিছই দেখেন।

٣ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ غَيْواۤ الْقَيٰهَة يَ فَصُلُ بَيْنَكُمْ ﴿ وَاللَّهُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ

 তোমাদের জন্যে ইবরাহীম ও তার অনুসারীদের 8. তোমাদের জন্যে ইবরাইাম ও তার অনুসারীদের مَا مُرَا وَاللَّهُ عَسَنَةٌ فِي إِبْرِهِيمَ (ঘটনার) মাঝে রয়েছে (অনুকরণযোগ্য) আদর্শ, যখন مَن كَانَت لَكُمْ أُسُوةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرِهِيمَ ٢٣٠ তারা তাদের জাতিকে বলেছিলো, তোমাদের সাথে এবং তোমরা যাদের আল্লাহর বদলে উপাসনা করো তাদের সাথে আমাদের কোনোই সম্পর্ক নেই, আমরা তোমাদের এ সব দেবতাদের অস্বীকার করি। (একারণে) আমাদের ও তোমাদের মাঝে চিরদিনের জন্যে এক শক্রুতা ও বিদ্বেষ শুরু হয়ে গেলো– যতোদিন তোমরা একমাত্র আল্লাহ তায়ালাকে মাবুদ (বলে) স্বীকার না করবে, কিন্তু (এ ব্যাপারে) ইবরাহীমের পিতার উদ্দেশে বলা এ কথাটি (ব্যতিক্রম, যখন সে বলেছিলো), আমি তোমার জন্যে (আল্লাহর দরবারে) অবশ্যই ক্ষমা প্রার্থনা করবো, অবশ্য আল্লাহর কাছে থেকে (ক্ষমা আদায় করার) আমার কোনোই এখতিয়ার নেই: (ইবরাহীম ও তার অনুসারীরা বললো,) হে আমাদের মালিক, আমরা তো কেবল তোমার ওপর ভরসা করেছি এবং আমরা তোমার দিকেই ফিরে এসেছি এবং (আমাদের) তো তোমার দিকেই ফিরে যেতে হবে।

وَ الَّذِيثِيَ مَعَدَّ ج إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِـرُ إِنَّا بُرَءُوُّا مِنْكُمْ وَمِيًّا تَعْبُكُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ رَكَفُرْنَا بِكُبِرُ وَبَنَ ا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُبِ الْعَنَ اوَةُ وَ الْبَغْضَاءُ ۚ أَبَلًا حَتَّى تُؤْمِنُوْ ۚ بِاللَّهِ وَحُلَّهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرُهِيْمَ لِأَبِيْهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ﴿ رَبُّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَالَيْكَ أَنَبْنَا وَالَيْكَ الْهَصِيُّرُ

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

পারা ২৮ কাদ সামি'আল্লাহু

৫. হে আমাদের মালিক, তুমি আমাদের (জীবনকে) কাফেরদের নিপীডনের নিশানা বানিয়ো না, হে আমাদের وَاغْفَرُ لَنَا رَبَّنَا عِ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْرُ بَا عَ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْرِ وَالْعَامِ اللهِ الله অবশ্যই তমি পরাক্রমশালী ও পরম কশলী।

۵ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوْا

৬. তাদের (জীবন চরিত্রের) মাঝে অবশ্যই তোমাদের জন্যে এবং সে লোকের জন্যে (অনুকরণযোগ্য) আদর্শ রয়েছে, যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালা এবং শেষ বিচারের রারেছে, বে ব্যাক্ত আল্লাহ তায়ালা এবং শেষ বিচারের "يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْأَخِرَ ﴿ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ صَالِحَا لَهُ مَا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْأَخِرَ ﴿ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ صَالِحَةً كَا اللَّهُ وَالْيَوْمَ الْأَخِرَ ﴿ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ كَا إِنْ اللَّهُ وَالْيَوْمَ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْيَوْمَ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْيَوْمَ الْعَلْمَ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْيَوْمَ الْعَلْمَ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْيَوْمَ الْعَلَى اللَّهُ وَالْيَوْمَ اللَّهُ وَالْيَوْمُ الْعَلَى اللَّهُ وَالْيَوْمَ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيُومُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيَوْمُ اللَّهُ مَا اللَّهُ وَالْيُواْ اللَّهُ وَالْيُوا اللَّهُ وَالْمُؤْمِ তায়ালা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় (সে যেন জেনে রাখে), আল্লাহ তায়ালা কারো মুখাপেক্ষী নন এবং তিনি সকল প্রশংসার মালিক।

٢ لَقَلْ كَانَ لَكُرْ فِيهِرْ أُسُوَّةً حَسَنَةً لِّهَنْ كَانَ اللهُ مُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْلُ ع

৭. এটা অসম্ভব কিছু নয়, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের এবং যাদের সাথে আজ তোমাদের শক্রতা সৃষ্টি হয়েছে তাদের মাঝে (একদিন) বন্ধুত্ব সৃষ্টি করে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা তো (সবই) করতে পারেন: আল্লাহ তায়ালা ক্ষমানীল ও পরম দয়ালু।

٤ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُرْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مُودَّةً ، وَاللَّهُ قَنِيرٌ ، وَ اللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيرٌ

৮. যারা দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করেনি এবং কখনো তোমাদের নিজেদের বাডিঘর থেকেও বের করে দেয়নি, তাদের প্রতি দয়া দেখাতে ও তাদের সাথে ন্যায় আচরণ করতে আল্লাহ তায়ালা কখনো নিষেধ করেন না: অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা ন্যায়পরায়ণদের ভালোবাসেন।

٨ لَا يَنْهٰ بكُرُ اللَّهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَرُ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي اللِّيْنَ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنَ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ﴿ إِنَّ اللهُ يُحبُّ الْيُقْسطيْنَ

৯. আল্লাহ তায়ালা কেবল তাদের সাথেই বন্ধুত করতে নিষেধ করেন যারা দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের সাথে যুদ্ধ করেছে এবং (একই কারণে) তোমাদের- তারা ভিটেমাটি থেকে উচ্ছেদ করে দিয়েছে এবং তোমাদের উচ্ছেদ করার ব্যাপারে একে অন্যকে সাহায্য-সহযোগিতা করেছে, (এর পরও) যারা তাদের সাথে বন্ধুতু করবে তারা অবশ্যই যালেম।

٩ إِنَّهَا يَنْهٰ بكُرُ اللَّهُ عَنِ الَّذِيثَىَ قَاتَلُوْكُرْ فِي اللِّيْنِ وَأَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَى إِخْرَاجِكُرْ أَنْ تَوَلُّوهُمْ ع وَمَنْ يَّتُوَلُّهُمْ فَأُولَئِكَ هُرُ الظُّلِهُونَ

১০. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, যখন কোনো ঈমানদার নারী হিজরত করে তোমাদের কাছে আসে, তখন তোমরা তাদের (ঈমানের ব্যাপারটা ভালো করে) পরখ করে নিয়ো: (যদিও) তাদের ঈমানের বিষয়টা আল্লাহ তায়ালাই ভালো জানেন, অতপর একবার যদি তোমরা জানতে পারো তারা (আসলেই) ঈমানদার, তাহলে কোনো অবস্থায়ই তাদের তোমরা কাফেরদের কাছে ফেরত পাঠাবে না; কারণ (যারা ঈমানদার নারী) তারা তাদের (কাফের স্বামীদের) জন্যে (আর কোনো অবস্থায়ই) 'হালাল' নয় এবং (যারা কাফের) তারাও তাদের (ঈমানদার স্ত্রীদের) জন্যে হালাল নয়; (তবে এমন হলে) তোমরা তাদের (আগের স্বামীদের দেয়া) মোহরানার অংশ ফেরত দিয়ে দিয়ো: অতপর তোমরা (কেউ) যদি তাদের বিয়ে করো, তাহলে এতে তোমাদের কোনো গুনাহ হবে না, অবশ্য তোমাদের (এ জন্যে) তাদের মোহর আদায় করে দিতে হবে: (একইভাবে) তোমরাও কাফের নারীদের সাথে (দাম্পত্য) সম্পর্ক বজায় রেখো না, (এ ক্ষেত্রে) তোমরা তাদের যে মোহর দিয়েছো তা তাদের থেকে চেয়ে নাও, একই নিয়মে (যারা কাফের

١٠ يَآيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْآ إِذَا جَآءَكُمُ الْهُؤْمِنْكُ مُوجِ إِن فَامْتَحِنُوْهُنَّ ﴿ ٱللَّهُ أَعْلَيُ بِإِيْهَانِهِنَّ } فَإِنْ عَلِيْتُهُوْهُنَّ مُؤْمِنْتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ، لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُرْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ﴿ وَأَتُوهُرْ مَّا آنْفَقُوا ﴿ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوْمُنَّ إِذَا أَتَيْتُمُوْمُنَّ ٱجُوْرَهُنَّ ﴿ وَلَا تُهْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْئِلُوا مَا الْفَقْتُمْ وَلْيَسْئِلُوا مَا الْفَقُوا م

১২. হে নবী, যখন কোনো ঈমানদার নারী তোমার কাছে আসবে এবং এই বলে তোমার কাছে আনুগত্যের শপথ করবে, তারা আল্লাহর সাথে কাউকে শরীক করবে না. চরি করবে না, ব্যভিচার করবে না, নিজেদের সন্তানদের হত্যা করবে না, নিজ হাত ও নিজ পায়ের মাঝখান সংক্রান্ত (বিষয়– তথা অন্যের ঔরসজাত সন্তানকে وَلَا يَأْتِيْنَ بِبُهْتَانِ يَّفْتَرِيْنَهُ بَيْنَ آيْدِيهِيَّ নিজের স্বামীর বলে দাবী করার) মারাত্মক অভিযোগে অভিযক্ত হয়ে আসবে না এবং কোনো সৎকাজে তোমার না-ফরমানী করবে না. তাহলে তুমি তাদের আনুগত্য গ্রহণ করো এবং তাদের (আগের কার্যকলাপের) জন্যে আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করো: আল্লাহ তায়ালা অবশ্যই ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু ।

১৩, হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, আল্লাহ তায়ালা যে জাতির ওপর গযব দিয়েছেন তাদের সাথে বন্ধুত্ব করো না, তারা তো শেষ বিচারের দিন সম্পর্কে সেভাবেই নিরাশ হয়ে পডেছে. যেমনিভাবে কাফেররা (তাদের) কবরের সাথীদের ব্যাপারে হতাশ হয়ে গেছে।

١٣ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا لَا تَتَوَلُّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِم قَلْ يَئِسُوا مِنَ الْأَخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحُبِ الْقُبُورِ ع

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَنَ نِيَّةً

أَيَاتً : ١٣ رُكُوْعٌ : ٢

بِسْرِ اللَّهِ الرَّحْيٰنِ الرَّحِيْرِ

ا سَبَّعَ لِلَّهِ مَا فِي السَّاوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

مُ يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمَنُوا لِي تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ٢ يَأَيُّهَا الَّذِينَ امْنُوا لِي تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ

وَمُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ

١٣ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنْتُ

يُبَايِعْنَكَ عَلَّى أَنْ لَّا يُشْرِكَى بِاللَّهِ شَيْئًا

وَّلَا يَشْرَقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ

وَٱرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِي مَعْرُونِ

فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ﴿ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۗ

সুরা আসু সাফ

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১৪, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

১. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা সবই আল্লাহর (পবিত্রতা ও) মাহাত্ম্য ঘোষণা করে, তিনি মহাপরাক্রমশালী ও প্রবল প্রজ্ঞাময়।

২. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা এমন সব কথা বলো কেন যা তোমরা (নিজেরা) করো না।

৩. আল্লাহর কাছে এটা অত্যন্ত অপছন্দনীয় কাজ যে, তোমরা এমন সব কথা বলে বেডাবে- যা তোমরা করবে

না! 8. আল্লাহ তায়ালা তাদের (বেশী) পছন্দ করেন যারা তাঁর পথে এমনভাবে সারিবদ্ধ হয়ে লড়াই করে, যেন তারা

এক শিশাঢালা সুদৃঢ় প্রাচীর। ৫. (মৃসার ঘটনা স্মরণ করো,) যখন মৃসা নিজের

৬১ সুরা আসু সাফ

٣ انَّ اللَّهَ يُحبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُوْنَ فِي

٣ كَبُرَ مَقْتًا عِنْلَ اللَّهِ أَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا

 ﴿ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوا لِمَ تُؤْذُونَنِى निर्णत काि एका الماه काि एका प्राप्त काि एका موسى لِقَوْمِه يُقوا لِمَ تُؤْذُونَنِي काि एक वर्णि हिला, एक निर्णा काि एका काि एका काि एका (498) মন্যিল ৭

www.eelm.weebly.com

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

আমাকে কট্ট দিচ্ছো, অথচ তোমরা এ কথা জানো, আমি তোমাদের কাছে আল্লাহর পক্ষ থেকে পাঠানো একজন রসূল; অতপর লোকেরা যখন বাঁকা পথে চলতে আরম্ভ করলো, তখন আল্লাহ তায়ালাও তাদের মন বাঁকা করে দিলেন; আল্লাহ তায়ালা কখনো না-ফরমান লোকদের সঠিক পথের দিশা দেন না।

وَقَنْ تَعْلَمُوْنَ آتِّى ْ رَسُوْلُ اللهِ إِلَيْكُرْ ، فَلَهَّا زَاغُوْاً أَزَاغَ اللهُ قُلُوْبَهُرْ ، وَاللهُ لَا يَهْدِى الْقُوْمَ اللهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ اللهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفُسِقِيْنَ

পারা ২৮ কাদ সামি'আল্লাহ

৬. (শরণ করো,) যখন মারইয়াম পুত্র ঈসা তাদের বললো, হে বনী ইসরাঈলের লোকেরা, আমি তোমাদের কাছে পাঠানো আল্লাহর এক রাসূল, আমার আগের তাওরাত কেতাবে যা কিছু আছে আমি তার সত্যতা স্বীকার করি এবং তোমাদের জন্যে আমি হচ্ছি একজন সুসংবাদাতা, (তার একটি সুসংবাদ হচ্ছে), আমার পর এক রস্লা আসবে, তার নাম আহমদ; অতপর (আজ) যখন সে (আহমদ সত্য সতিট্র) তাদের কাছে স্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে হাযির হলো তখন তারা বললো, এ হচ্ছে এক সুস্পষ্ট যাদু!

آ وَإِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَرَ يُبَنِيَ إِسْرَاءِيلَ إِنِّيْ رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُرْ مُّصَرِّقًا لِمَا بَيْنَ يَنَى مِنَ التَّوْرِيةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَّاتِيْ مِنْ بَعْرِي اشْهُ آَ اَحْمَلُ مَ فَلَمَّا جَاءَهُرُ بِالْبَيِّنْ قِالُواْ هٰنَ اسِحْرٌ مَّبِيْنَ

৭. তার চাইতে বড়ো যালেম আর কে আছে যে আল্লাহর ওপর মিথ্যা অপবাদ আরোপ করে, (অথচ) তাকে ইসলামের দিকেই দাওয়াত দেয়া হচ্ছে; (মূলত) আল্লাহ তায়ালা কখনো সীমালংঘনকারীদের সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

৮. এ লোকেরা মুখের ফুৎকারেই আল্লাহর নূরকে নিভিয়ে দিতে চায়; অথচ তিনি তার এ নূর পরিপূর্ণ করে দিতে চান; তা কাফেরদের কাছে যতোই অপছন্দনীয় হোক না কেন। ^ يُرِيْدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللهِ بِاَفْوَاهِهِرْ وَاللَّهُ مُتِرَّ نُوْرِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَفِرُونَ

৯. তিনি তাঁর রসূলকে একটি স্পষ্ট পথনির্দেশ ও সঠিক জীবন বিধান দিয়ে প্রেরণ করেছেন, যেন সে (রসূল) একে দুনিয়ার (প্রচলিত) সব কয়টি জীবন ব্যবস্থার ওপর বিজয়ী করে দিতে পারে, তা মোশরেকদের কাছে যতোই অপছন্দনীয় হোক না কেন!

٩ هُوَ الَّذِي آَ اَرْسَلَ رَسُولَه بِالْمُعْنِي وَدِيْنِ
 الْحَقِّ لِيُظْهِرَة عَلَى النِّيْنِ كُلِّه وَلَوْ كَرِة الْمُشْرِكُونَ عَ

১০. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, আমি কি তোমাদের এমন একটি (লাভজনক) ব্যবসার সন্ধান দেবো যা তোমাদের (মহাবিচারের দিনে) কঠোর আযাব থেকে বাঁচিয়ে দেবে!

ا يَآيَّهَا الَّانِيْنَ أَمَنُوا هَلْ آدُلُّكُي عَلَى
 تِجَارَةِ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَنَابِ الِيْر

১১. (হাা, সে ব্যবসাটি হচ্ছে,) তোমরা আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলের ওপর ঈমান আনবে এবং আল্লাহর (দ্বীন প্রতিষ্ঠার) পথে তোমাদের জান ও মাল দিয়ে জেহাদ করবে; এটাই তোমাদের জন্যে ভালো, যদি তোমরা (কথাটা) বুঝতে পারতে. ال تُؤْمِنُوْنَ بِاللّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي شَيْلٍ اللهِ بِاَمْوَ اللّهِ بِاَمْوَ اللهِ بِاللهِ بِاَمْوَ اللهِ بِاللهِ بِللهِ اللهِ بِاللهِ اللهِ َّا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِلَّاللهِ اللهِ مِلْ اللهِ ا

১২. (ঠিকমতো একাজগুলো করতে পারলে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের গুনাহসমূহ মাফ করে দেবেন এবং (শেষ বিচারের দিন) তোমাদের তিনি প্রবেশ করাবেন এমন এক (সুরম্য) জান্নাতে, যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত থাকবে, (সর্বোপরি) তিনি তোমাদের আরো প্রবেশ করাবেন জান্নাতের স্থায়ী নিবাসস্থলের সুন্দর ঘরসমূহে; আর এটাই হচ্ছে স্বচাইতে বড়ো সাফল্য,

۱۲ يَغْفِر لَكُير دُنُوْبَكُير وَيُنْ فِلْكُير جَنْتِ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْإَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنْتِ عَنْ مِ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْر ٧

১৩. আরো একটি (বড়ো ধরনের) অনুগ্রহ (রয়েছে) যা হবে তোমাদের একান্ত কাম্য (এবং তা হচ্ছে), আল্লাহর

١٢ وَٱخْرُى تُحِبُّوْنَهَا ﴿ نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ

৬১ সূরা আস্ সাফ

494

কাছ থেকে সাহায্য ও (ময়দানের) আসনু বিজয়: (যাও. তোমরা মোমেন বান্দাদের) এ সুসংবাদ দাও।

قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

১৪. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা সবাই আল্লাহর (দ্বীনের) সাহায্যকারী হয়ে যাও, যেমনি করে মারইয়াম পুত্র ঈসা (তার) সংগী সাথীদের বলেছিলো, কে আছো তোমরা আল্লাহর (দ্বীনের) পথে আমার সাহায্যকারী? তারা বলেছিলো, হাঁ, আমরা আছি আল্লাহর (পথের) সাহায্যকারী, অতপর বনী ইসরাঈলের একটি দল (সাহায্যের প্রতিশ্রুতি দিয়ে তার ওপর) ঈমান আনলো, আরেক দল (তা সম্পূর্ণ) অস্বীকার করলো, অতপর আমি (অম্বীকারকারী) দুশমনদের ওপর ঈমানদারদের সাহায্য করলাম, ফলে (যারা ঈমানদার) তারাই বিজয়ী হলো।

١٣ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ أُمِّنُواْ كُوْنُوْا ۖ اَنْصَارَ اللَّهِ كَهَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمِ لِلْحَوَارِيِّنَ مَنْ أَنْصَارِي ۚ إِلَى اللَّهِ ﴿ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَنَتْ طَّآلِفَةٌ مِّنْ ا بَنِيٓ إِسْ أَءِيلَ وكَفَرَتِ طَّائِفَةً مِ فَأَيَّانَا الَّانِينَ أَمَنُوْا عَلَى عَدُوِّهِرْ فَٱصْبَحُوْا ظُهِرِيْنَ ع

سُورَةُ الْجُهُعَةِ مَنَ نَيَّةً أَيَانِيُّ : ١١ رُكُوعٌ : ٢

সুরা আল জুমুয়াহ

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১১, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

১. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা সবই আল্লাহ তায়ালার মাহাত্ম্য ঘোষণা করছে, তিনি রাজাধিরাজ, তিনি পৃত পবিত্র, তিনি মহাপরাক্রমশালী. তিনি প্রবল প্রজ্ঞাময়।

২. তিনিই সেই মহান সন্তা, যিনি (একটি) সাধারণ জনগোষ্ঠীর (নিরক্ষর লোকদের) মাঝে থেকে তাদেরই একজনকে রসুল করে পাঠিয়েছেন, যে তাদের আল্লাহর আয়াতসমূহ পড়ে শোনাবে, তাদের জীবনকে পবিত্র করবে, তাদের (আসমানী) কেতাবের (কথা ও সে অনুযায়ী দুনিয়ায় চলার) কৌশল শিক্ষা দেবে, অথচ এ লোকগুলোই (রসুল আসার) আগে (পর্যস্ত) এক সুস্পষ্ট গোমরাহীতে নিমজ্জিত ছিলোঁ,

৩. তাদের মধ্যকার সেসব ব্যক্তিও (গোমরাহীতে নিমজ্জিত), যারা এখনো (এসে) এদের সাথে মিলিত হয়নি: তিনি মহাপরাক্রমশালী ও পরম কুশলী।

8. (রসুল পাঠানো-) এটা (মানুষদের ওপর) আল্লাহ তায়ালার বিরাট অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা তাকে তিনি এটা দান করেন; আল্পাহ তায়ালা মহা অনুগ্রহশীল।

৫. যাদের (আল্লাহর কেতাব) তাওরাত বহন করার দায়িত্ব দেয়া হয়েছিলো, কিন্তু তারা কখনো এটা বহন يَحْمِلُوْهَا كَهَثَلِ الْحِهَارِ يَحْبِلُ أَسْفَارًا ، एापत छुनारतन राष्ट्र शाधात्र मूरा بريك والح (কেতাবের) বোঝাই শুধু বহন করলো (এর কিছুই বুঝতে পারলো না): তার চাইতেও নিকষ্ট উদাহরণ সে জাতির. যারা আল্লাহর আয়াতকে অস্বীকার করলো: আল্লাহ তায়ালা (এ ধ্বনের) যালেম জাতিকে হেদায়াত করেন না।

৬. (হে রসূল.) তুমি বলো. হে ইছদীরা, যদি তোমরা মনে করে থাকো, অন্য সব লোক বাদে কেবল তোমরাই হচ্ছো আল্লাহর বন্ধু, তাহলে (আল্লাহর পুরস্কার পাওয়ার জন্যে) তোমরা মৃত্যু কামনা করো- যদি তোমরা সত্যবাদী হও!

بِشُر اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ ا يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّاوْتِ وَمَا فِي الأرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْرِ

٢ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ أَيْتِهِ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتْبَ وَالْحِكْهَةَ نِ وَانْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَٰل مُّبِين لا

٣ وَّا غَرِيْنَ مِنْهُرْ لَيًّا يَلْحَقُوْا بِهِرْ ، وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْرُ

٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَشَاءً ، وَاللَّهُ ذُوالْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

٥ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُيِّلُوا التَّوْرُنةَ ثُمَّ لَرَ بِنْسَ مَثَلُ الْقَوْرِ الَّذِيثِي كَنَّابُوا بِأَيْتِ اللَّهِ عَ وَاللَّهُ لَا يَمْدِى الْقَوْمَ الظُّلِوِيْنَ

٢ قُلْ يَاَيُّهَا الَّذِيثَىٰ هَادُوْا إِنْ زَعَيْتُرْ ٱنَّكُرْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَهَنَّوُ الْهَوْتِ انُ كُنْتُرُ مِنِقِينَ

৬২ সুরা আল জুমুয়াহ

(496)



রাখেন, অতপর তিনি সেদিন তোমাদের সবাইকে বলে দেবেন তোমরা দুনিয়ার জীবনে কি করে এসেছো। ৯. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, জুমুয়ার দিনে যখন তোমাদের

٩ يَٰايَّهَا الَّنْيْنَ أَمَنُوْاً اذَا نُوْدِيَ لِلصَّلُوةِ مِنْ নামাযের জন্যে ডাক দেয়া হবে তখন তোমরা (নামাযের মাধ্যমে) আল্লাহর স্মরণের দিকে দ্রুত গতিতে এগিয়ে يُّوْرًا الْجُمُّعَةِ فَاشْعَوْا اللَّي ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُّوا যাও এবং (সে সময়ের জন্যে) কেনাবেচা ছেড়ে দাও এটাই তোমাদের জন্যে উত্তম, যদি তোমরা তা উপলব্ধি الْبَيْعَ وَ ذَٰلِكُمْ غَيْرٌ ۖ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَبُونَ করো!

১০. অতপর যখন (জুমুয়ার) নামায শেষ হয়ে যাবে তখন তোমরা (কাজেকর্মে) পৃথিবীতে ছড়িয়ে পড়ো এবং আল্লাহর অনুগ্রহ তালাশ করো, আর আল্লাহকে বেশী বেশী স্মরণ করো, আশা করা যায় তোমরা সাফল্য লাভ করতে পারবে।

١٠ فَإِذَا تُضِيَّتِ الصَّلْوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْأَرْضِ وَالْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللهُ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ ثُقُلِحُوْنَ

১১. (আল্লাহ তায়ালার এসব নির্দেশ সত্ত্বেও) এরা যখন কোনো ব্যবসায়িক কাজকর্ম কিংবা ক্রীড়াকৌতুক দেখতে পায়, তখন সেদিকে দ্রুত গতিতে দৌডায় এবং তোমাকে (নামাযে) একা দাঁড়ানো অবস্থায় ফেলে যায়; তুমি বলো, আল্লাহ তায়ালার কাছে যা কিছু রয়েছে তা অবশ্যই খেলাখুলা ও বেচাকেনার চাইতে (বছতণে) উৎকষ্ট. (মূলত) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন (তাঁর সৃষ্টির) সর্বোত্তম রেযেকদাতা ।

١١ وَإِذَا رَأُوا تِجَارَةً أَوْ لَهُوَ ٣ انْفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ، قُلْ مَا عِنْكَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّيَ اللَّهُو وَمِنَ التِّجَارَةِ ﴿ وَاللَّهُ خَيْرُ الرّزقِيْنَ ع

সুরা আল মোনাফেকুন মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১১, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُورَةُ الْمُنفِقُونَ مَنَ نِيَّةً أَيَاسً : ١١ رُكُوْعٌ : ٢ بِسْرِ اللهِ الرَّحْسِ الرِّحِيْر

১. যখন মোনাফেকরা তোমার কাছে আসে, (তখন) তারা বলে (হে মোহাম্মদ), আমরা সাক্ষ্য দিক্ষি, তুমি নিশ্চয়ই আল্লাহর রস্ল। (হাঁ,) আল্লাহ তায়ালা জানেন তুমি নিসন্দেহে তাঁর রসূল; (কিন্তু) আল্লাহ তায়ালা সাক্ষ্য দিচ্ছেন, মোনাফেকরা অবশ্যই মিথ্যাবাদী,

ا إِذَا جَاءَكَ الْمُنْفِقُونَ قَالُوا نَشْهَلُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللهِ م وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ، وَ اللَّهُ يَشْهَلُ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَكُنِ بُوْنَ ع

न्ता नाजान प्राचिक्त (बाप अकारत्र धकणा) णण مَنْ مُنَّةً فَصَلُّوا عَنْ سَنِيلُ वानिराय द्वात्पर वाद वाद जाता (এভাবেই মানুষদের) اِتْخَانُواْ اَيْهَا نَهُرُ مُنَّةً فَصَلُّواْ عَنْ سَنِيلُ ২. এরা তাদের এ শপথকে (স্বার্থ উদ্ধারের একটা) ঢাল আল্লাহর পথ থেকে ফিরিয়ে রাখে; কতো নিকৃষ্ট ধরনের কার্যকলাপ যা এরা করে যাচ্ছে!

الله ، الله مُ الله مُ الله عَمَا كَانُوْ إِيعَهُلُونَ

৩. এটা এ কারণেই, এরা ঈমান আনার পর কুফরী অবলম্বন করেছে, ফলে ওদের মনের ওপর সিল মেরে দেয়া হয়েছে, ওরা (আসলে) কিছুই বুঝতে পারছে না।

٣ ذٰلِكَ بِٱنَّهُرْ أُمَّنُوا ثُرَّ كَفَرُوْا فَطُّبِعَ عَلَى قُلُوْبِهِم فَهُم كَا يَفْقَهُوْنَ

৬৩ সুরা আল মোনাফেকুন

699

মন্যিল ৭

90

www.eelm.weebly.com

পারা ২৮ ক্যাদ সামি'আল্লাহু

8. তুমি যখন তাদের দিকে তাকাবে, তখন তাদের (বাইরের) দেহাবয়ব তোমাকে খুশী করে দেবে; আবার যখন তারা তোমার সাথে কথা বলবে তখন তুমি (আগ্রহভরে) তাদের কথা শোনবেও; কিন্তু (তারা ও তাদের সেই দেহের উদাহরণ হচ্ছে)- যেমন দেয়ালে ঠেকানো কতিপয় (নিষ্প্রাণ) কাঠের টুকরো; (শুধু তাই নয়, তারা এতো ভীত সন্ত্রস্ত থাকে যে,) প্রতিটি (বড়ো) আওয়াযকেই তারা মনে করে তাদের ওপর বুঝি এটা (বড়ো) বিপদ; এরাই হচ্ছে (তোমাদের আসল) দুশমন, এদের থেকে তোমরা হুশিয়ার থেকো; আল্লাহর মার তো তাদের জন্যেই. (বলতে পারো?) কোথায় কোথায় এরা বিভ্রান্ত হয়ে ঘুরছে?

٣ وَاذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ آجْسَامُهُمْ ﴿ وَانْ يَقَوْلُوا تُسْهَعُ لِقَوْلِهِمْ ﴿ كَأَنَّهُمْ خُشُ مَّسَنَّنَةٌ ، يَحْسَبُوْنَ كُلٌّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِرْ الْعَنَّوِّ فَاحْنَ رْهُرْ ﴿ قَاتَلَهُرُ اللَّهُ رَ أَنَّى

৫. এদের যখন বলা হয়, তোমরা আসো (আল্লাহর রসূলের কাছে), তাহলে আল্লাহর রসূল তোমাদের জন্যে (আল্লাহর কাছে) ক্ষমা প্রার্থনা করবেন, তখন এরা (অবজ্ঞাভরে) মাথা ঘুরিয়ে নেয় এবং তুমি (এও) দেখতে পাবে, তারা অহংকারের সাথে তোমাকে এড়িয়ে চলে।

4 وَإِذَا قِيْلَ لَهُرْ تَعَالُوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُم اللهِ لُووا رءوسهر ورايتهر يصاون وه ستكبرون

৬. (আসলে) তুমি এদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করো কিংবা না করো, (এ দুটোই) তাদের জন্যে সমান; (কারণ) تَسْتَغُفُو ۚ لَمُرْ ۚ لَنَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَهُرْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَالِمَة आबार जाराला कथरनारे जारनत कमा कतर्वन ना; आबार أَللَّهُ لَهُر ۚ وإنَّ اللَّهَ তায়ালা কখনো কোনো না-ফরমান জাতিকে হেদায়াত দান করেন না।

٣ سَوَاءً عَلَيْهِر ٱسْتَغْفَرْتَ لَهُر أَمُ لَرْ لَا يَهْرِي الْقَوْمَ الْفُسِقِيْنَ

৭. এরা হচ্ছে সেসব লোক, যারা (আনসারদের) বলে, রসূলের (মোহাজের) সাধীদের জন্যে তোমরা (কোনো রকম) অর্থ ব্যয় করো না. (তাহলে আর্থিক সংকটের কারণে) এরা (রসূলের কাছ থেকে) সরে পড়বে; অথচ (এরা জানে না,) আসমানসমূহ ও যমীনের সমুদয় ধনভাভার তো আল্লাহ তায়ালারই, কিন্তু মোনাফেকরা কিছুই বুঝতে পারে না।

4 مَرَ الَّذِيْنَ يَقُولُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلَى مَنْ عِنْكُ رَسُوْلِ اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُّوْا ء وَلِلَّهِ غزائِي السوتِ والأرض وَلكِيّ الْهُنفِقِ

৮. তারা বলে, আমরা মদীনায় ফিরে গেলে সেখানকার সবল দলটি (মুসলমানদের) দুর্বল দলটিকে সে শহর (اللهُ عَرْجَى الْأَعَرِ مِنْهَا الْإَذَل ، وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ वत करत रमरव; (आजरम) यावजीय मिक وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ সম্মান তো আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রসূল ও তাঁর অনুসারী মোমেনদের জন্যে, কিন্তু মোনাফেকরা এ কথাটা জানে না!

٨ يَقُوْلُوْنَ لَئِنَ رَّجَعْنَا ۚ إِلَى الْهَرِيْنَةِ وَلِرَسُوْلِهِ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَكِنَّ الْمُنفِقِيْنَ يعلبون ع

৯. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমাদের ঐশ্বর্য ও সন্তানাদি যেন কখনো তোমাদের আল্লাহর স্মরণ থেকে উদাসীন না করে দেয়, (কেননা) যারা এ কাজ করবে তারা চরম ক্ষতিগ্ৰস্ত হবে।

٩ يَايَّهَا الَّذِيْنَ امَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمُوَالُكُمْ وَلَا أُوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ } وَمَنْ يَّفْعَلُ ذلِكَ فَأُولَئِكَ مُرُ الْخَسِرُوْنَ

১০. আমি তোমাদের যা কিছু অর্থ সম্পদ দিয়েছি তা থেকে তোমরা (আল্লাহর পথে) ব্যয় করো তোমাদের কারো মৃত্যু আসার আগেই, (কেননা সামনে মৃত্যু এসে मांज़ाल त्म वलत्व), त्र आभात भालिक, जुभि यिन আমাকে আরো কিছু কালের অবকাশ দিতে তাহলে আমি তোমার পথে দান করতাম এবং (এভাবেই) আমি তোমার নেক বান্দাদের দলে শামিল হয়ে যেতাম!

يَّاْتِيَ أَحَلَكُمَّ الْمَوْسَ فَيَقُولَ رَبِّ لُولًا أُخْرْتَنِيْ إِلَى أَجَلٍ قَرِيْبٍ لا فَأَصَّاقَ وَأَكِّنَ مِن الصَلِحِينَ

৬৩ সুরা আল মোনাফেকুন

(69b)

পারা ২৮ কাদ সামি আল্লাহু

১১. কিন্তু কারো আল্লাহ নির্ধারিত 'সময়' যখন এসে যাবে, তখন আল্লাহ তায়ালা আর তাকে (এক মুহূর্তও) অবকাশ দেবেন না: তোমরা (দুনিয়ার জীবনে) যা কিছু করছো, আল্লাহ তায়ালা সে সম্পর্কে পুরোপুরি অবহিত রয়েছেন।

١١ وَلَنْ يَّؤُخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ اَجَلُهَا ١ وَ اللَّهُ خَبِيرٌ لِهَا تَعْمَلُونَ ع

সুরা আত্ তাগাবুন মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১৮, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةٌ التَّغَابُي مَنَنِيَّةٌ ایَات : ۱۸ رُکُوع : ۲ بِسُرِ اللَّهِ الرَّحْسَ ِ الرَّحِيْرِ

১. আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা সবই আল্লাহ তায়ালার পবিত্রতা ঘোষণা করছে, (যাবতীয়) সার্বভৌমত্ব (যেমন) তাঁর জন্যে, (তেমনি যাবতীয়) প্রশংসাও তাঁর জন্যে, তিনি সকল কিছুর ওপর প্রবল

ا يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّيْوَتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ } لَهُ الْهُلْكُ وَلَهُ الْحَهْلُ زِوَهُو عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

২. তিনিই তোমাদের সবাইকে সৃষ্টি করেছেন, (এর পর) তোমাদের কিছু লোক মোমেন ইলো আবার কিছু লোক কাফের থেকে গেলো; (আসলে) তোমরা যা কিছু করো আল্লাহ তায়ালা সব কিছুই দেখেন।

٢ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُرْ فَيِنْكُرْ كَافِرٌ وَّمِنْكُر مُّؤْمِنَ وَاللَّهُ بِهَا تَعْهَلُوْنَ بَصِيرٌ

م خَلَقَ السَّهُوْسِ وَ الْأَرْضَ بِالْحَقِّ करतरहन, जाठभत्र राजार्फत जिनि (भानुरस्त) आकृष्ठि بَعْلَقَ السَّهُوْسِ وَ الْأَرْضَ بِالْحَقِّ करतरहन, जाठभत्र राजार्फत जिनि (भानुरस्त) आकृष्ठि ৩. তিনি আকাশমন্তলী ও পৃথিবীকে সঠিকভাবে সৃষ্টি দিয়েছেন, তাও আবার অতি সুন্দর করে তিনি তোমাদের আকৃতি দিয়েছেন, তাঁর কাছেই (তোমাদের আবার) ফিরে যেতে হবে।

وَمَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ مُورَكُمْ ع وَإِلَيْهِ الْهَصِيْرُ

م يَعْلَرُ مَا فِي السَّهُوبِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَرُ अ्शिवीराख या किছू আছে তা जिन ويَعْلَرُ وَيَعْلَرُ اللهِ ا জানেন, তিনি জানেন তোমরা যা কিছু গোপন করো আর যা কিছু প্রকাশ করো; আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মনের কথাও জানেন।

مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ مَ وَاللَّهُ عَلَيْرٌ ۗ ' بِذَاتِ الصَّدُوْر

৫. তোমাদের কাছে কি সেসব লোকের খোঁজ খবর কিছুই পৌছেনি যারা এর আগে (বিভিন্ন নবীর সময়ে) কৃষ্কী করেছিলো, অতপর তারা (দুনিয়াতেই) নিজেদের কর্মফল ভোগ করে নিয়েছে, (পরকালেও) তাদের জন্যে কঠোর যন্ত্রণাদায়ক আযাব রয়েছে।

4 ٱلَمِرْ يَا اَيْكُمْ نَبَوُّ اللَّانِينَ كَفَرُّوا مِنْ قَبْلُ ر فَنَاقُوا وَبَالَ آمُوهِرُ وَلَهُرْ عَنَابٌ آلِيْرٌ

৬. (এটা) এ কারণে যে, তাদের কাছে সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ নিয়ে যখনি আল্লাহর কোনো রসূল আসতো তখনি তারা বলতো, (কতিপয়) মানুষই কি আমাদের পথের সন্ধান দেবে? অতএব তারা সত্য প্রত্যাখ্যান করলো এবং (ঈমানের পথ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিলো, অবশ্য আল্লাহ তায়ালার (তাদের কাছ থেকে) কিছুই পাওয়ার ছিলো না, আল্লাহ তায়ালা কারোই মুখাপেক্ষী নন, তিনি চির প্রশংসিত !

٢ ذٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتُ تَّأْتِيْهِرْ رُسُلُهُرْ بِالْبَيِّنْسِ فَقَالُوْ ۗ أَبَشَرُّ يَّهْلُوْنَنَا زِ فَكَفَرُوْ ۗ وَتُوَلُّواْ وَّاسْتَغْنَى اللَّهُ ، وَاللَّهُ غَنِيٌّ مَهِيْلٌ

৭. কাফেররা ধারণা করে নিয়েছে, একবার মরে গেলে কখনো তাদের পুনরুখিত করা হবে না; তুমি বলো, না-তা কখনো নয়: আমার মালিকের শপথ, অবশ্যই মৃত্যুর

٤ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْ ۚ أَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا م قُلْ

৬৪ সুরা আত্ তাগাবুন

৫৭৯

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৮ ক্বাদ সামি'আল্লাহ |
|---|---|
| পর তোমাদের সবাইকে আবার (কবর থেকে) ওঠানো হবে এবং তোমাদের (এক এক করে) বলে দেয়া হবে তোমরা কি কাজ করে এসেছো; আর আল্লাহ তায়ালার পক্ষে এটা অত্যন্ত সহজ কাজ। | بَلْي وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُرَّ لَتُنَبَّوُنَّ بِهَا عَمِلْتُرْ ﴿ وَذَٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرُّ |
| ৮. অতএব তোমরা আল্লাহ তায়ালা, তাঁর রস্ল এবং আমি যে আলো তোমাদের দিয়েছি তার (বাহন কোরআনের) ওপর ঈমান আনো; তোমরা যা কিছুই করো আল্লাহ তায়ালা তা ভালো করেই জানেন। | مُ فَاٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي ٓ أَثْرَلْنَا وَاللّٰهُ بِهَا تَعْمَلُونَ غَبِيْرٌ |
| ৯. যেদিন তোমাদের (আগে পরের সমস্ত মানুষ ও জ্বিনকে) একত্র করা হবে, (একত্র করা হবে সে) মহাসমাবেশের দিনটির জন্যে- (যেদিন বলা হবে, হে | ٩ يَوْاً يَجْهَعُكُرْ لِيَوْاِ الْجَهْعِ ذَٰلِكَ يَوْاً |
| মানুষ ও জ্বিন), আজকের দিনটিই হচ্ছে (তোমাদের আসল) লাভ লোকসানের দিন; (লাভের দিন তার জন্যে) যে ব্যক্তি আল্লাহর ওপর ঈমান এনেছে এবং নেক কাজ | التَّغَابُنِ ﴿ وَمَنْ يُّؤْمِنْ ۚ بِاللَّهِ وَيَعْمَلُ مَالِحًا يُّكُوِّرُ عَنْهُ سَيِّاتِهِ وَيُلْخِلْهُ جَنَّسٍ تَجْرِئُ مِنْ |
| করেছে, তিনি (আজ) তার গুনাহ মোচন করে দেবেন এবং তাকে তিনি এমন এক (সুরম্য) জান্নাতে প্রবেশ | تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًّا ءَ ذَٰلِكَ |
| করাবেন, যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে, তারা সেখানে অনস্তকাল অবস্থান করবে; (আর) এটাই হচ্ছে পরম সাফল্য। | الْفَوْزُ الْعَظِيْرُ |
| ১০. (এটা লোকসানের দিন তাদের জন্যে,) যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অস্বীকার করেছে এবং আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে (এদের ব্যাপারে আল্লাহর সিদ্ধান্ত হচ্ছে), এরা সবাই জাহান্নামের অধিবাসী (হবে), সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে; কতো নিকৃষ্ট সে | ا وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا وَكَنَّبُوا بِالْيَتِنَّ ٱولَّئِكَ الْمَصْدِ الْمَصْدِ عَلِي النَّارِ عَلِي يَنَ فِيْهَا مَ وَبِئْسَ الْمَصْدُ عَ |
| আবাসস্থল! ১১. আল্লাহ তায়ালার অনুমতি ব্যতীত (কোনো) বিপদই আসে না; যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালার ওপর বিশ্বাস স্থাপন করে আল্লাহ তায়ালা তার অন্তরকে সুপথে পরিচালিত | الْمَصِيْرُ ع اا مَا اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّهِ ، وَمَنْ يُّوْمِنْ اللهِ يَهْنِ قَلْبَهٌ ، وَاللّهُ بِكُلِّ |
| করেন; আর আল্লাহ তায়ালা সব বিষয়েই সম্যক অবগত রয়েছেন। | وَمَنْ يُومِيْ * بِاللَّهِ يَهُلِ قَلْبُهُ مَا وَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْرً |
| ১২. তোমরা আল্লাহর আনুগত্য করো, আনুগত্য করো (তাঁর) রস্লের, তোমরা যদি (এ থেকে) মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে (জেনে রেখো), আমার রস্লের দায়িত্ব (হচ্ছে আমার কথাগুলো) সুম্পষ্টভাবে পৌছে দেয়া। | ا وَأَطِيْعُوا الله وَأَطِيْعُوا الرَّسُول عَ فَان تَوَلَّيْتُر فَإِنَّا الله وَأَطِيْعُوا البَّلغُ الْمُبِين تَوَلَّيْتُ الْمَلِينَ الْبَلغُ الْمُبِين تَوَلَّيْنَا الْبَلغُ الْمُبِين تَوَلَّيْنَا الْبَلغُ الْمُبِين تَوَلَّيْن الْمَلْعُ الْمُبِين تَوَلَّيْن الْمَلْعُ الْمُبِين تَوْلَىٰ الْمَلْعُ الْمُبِين تَوْل الله الله الله الله الله الله الله ال |
| ১৩. আল্লাহ তায়ালা (মহান সন্তা), তিনি ছাড়া কোনোই মাবুদ নেই, অতএব প্রতিটি ঈমানদার বান্দার উচিত সর্ববিষয়ে তাঁর ওপরই নির্ভর করা। | الله كَ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ا وَعَلَى اللهِ اللهِ فَلْيَ اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْهُوْمِنُوْنَ |
| ১৪. হে ঈমানদার লোকেরা, অবশ্যই তোমাদের স্ত্রী ও সন্তান সন্ততিদের মাঝে তোমাদের (কিছু) দুশমন রয়েছে, অতএব তাদের ব্যাপারে তোমরা সতর্ক থেকো, অবশ্য তোমরা যদি (তাদের) অপরাধ ক্ষমা করে দাও, তাদের দোষক্রটি উপেক্ষা করো এবং তাদের মাফ করার নীতি অবলম্বন করো, তবে আল্লাহ তায়ালা পরম ক্ষমাশীল ও | ا يَايَّهَا الَّذِينَ أَمَنُوْآ إِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُرْ وَاَوْلَادِكُرْ عَدُواا لَّكُرْ فَاحْنَرُوْهُرْ عَ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَاِنَّ اللَّهَ غَفُورً |
| म्यान्। | رُجِيْمُ |

Cho

৬৪ সূরা আত্ তাগাবুন

পারা ২৮ ক্বাদ সামি'আল্লাছ

১৫. তোমাদের ধন সম্পদ ও সন্তান সন্ততি হচ্ছে (তোমাদের জন্যে) পরীক্ষা মাত্র; (আর এ পরীক্ষায় কামিয়াব হতে পারলে) অবশ্যই আল্লাহ তায়ালার কাছে মহাপরস্কার রয়েছে।

إلَّهَ آمُوالُكُر وَاوْلَادُكُر فِتْنَةً م وَاللهُ
 عِنْلَةً اَجْرٌ عَظِيْرٌ

১৬. অতএব তোমরা সাধ্য মোতাবেক আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, তোমরা (রস্লের আদেশ) শোনো এবং (তাঁর) কথামতো চলো, আল্লাহর দেয়া ধন সম্পদ থেকে (তাঁরই উদ্দেশে) খরচ করো, এতে তোমাদের নিজেদের জন্যেই কল্যাণ রয়েছে; যে ব্যক্তিকে তার মনের লোভ লালসা থেকে রেহাই দেয়া হয়েছে (সে এবং তার মতো)

الله على الله على الشَّعَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَالله على الله على الل

১৭. যদি তোমরা আল্লাহ তায়ালাকে ঋণ দাও– উত্তম ঋণ, তাহলে (দুনিয়া ও আখেরাতে) তিনি তা বহুগুণ বাড়িয়ে দেবেন এবং তিনি তোমাদের (গুনাহ খাতা) মাফ করে দেবেন; আল্লাহ তায়ালা বড়োই গুণগ্রাহী ও পরম ধৈর্যশীল

লোকেরাই হচ্ছে সফলকাম।

إن تُقْرِضُوا الله قَرْضًا حَسَنًا يَّضْعِفْهُ لَكُر وَيَغْفِرْ لَكُر عَلِيمٌ الله عَكُورٌ حَلِيمٌ الله عَلَى الله الله عَلَى الله عَلَى الله الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله الله عَلَى الله الله عَلَى
১৮. দেখা-অদেখা (সব কিছুই) তিনি জানেন, তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

١٨ عٰلِرُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْرُ ع

সুরা আত্ তালাক্ত্র মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১২, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَنَ بِيَّةً أيَاتٌ : ١٢ رُكُوعٌ : ٣ بِشِرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ

১. হে নবী (তোমার সাথীদের বলো), যখন তোমরা তোমাদের ব্রীদের তালাক দাও (বা দিতে ইচ্ছা করো), তখন তাদের ইদ্দতের (অপেক্ষার সময়টুকুর) প্রতি (লক্ষ্য রেখে) তালাক দিয়ো, ইন্দতের যথার্থ হিসাব রেখো এবং (এ ব্যাপারে) আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করো, যিনি তোমাদের মালিক প্রভু, ইন্দতের সময় (কোনো অবস্থায়ই) তাদের নিজেদের বসতবাড়ি থেকে বের করে দিয়ো না. (এ সময়) তারা নিজেরাও যেন তাদের ঘর থেকে বের হয়ে না যায়, তবে যদি তারা কোনো জঘন্য অশ্রীলতা (-জাতীয় অপরাদ) নিয়ে আসে (তাহলে তা ভিনু কথা, ইদ্দতের ব্যাপারে) এগুলোই হচ্ছে আল্লাহর সীমারেখা: যে ব্যক্তি আল্লাহর এ সীমারেখা অতিক্রম করে, সে (মূলত এটা দ্বারা) নিজের ওপরই নিজে যুলুম করলো; তুমি তো জানো না এর পর আল্লাহ তায়ালা হয়তো (পুনরায় তোমাদের মাঝে সহ্রদয়তার কোনো) একটা পথ বের করে দেবেন।

ا يَآيَّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُرُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْمُنَّ لِعِنَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِنَّةَ عَ وَاَحْصُوا الْعِنَّةَ عَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُرُ عَ لَا تُخْرِجُوْمُنَّ مِنَ اللَّهَ وَلَا يَخْرُجُنَ اللَّا اَنْ يَآتِيْنَ بِعَاحِشَةٍ مَّبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حُنُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَغَاحِشَةً مَّرُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَنَّ حُنُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَنَّ حُنُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَنَّ حُنُودُ اللَّهِ وَمَنْ لَيَعَنَّ حُنُودُ اللَّهِ وَمَنْ لِيَعَنَّ حُنُودُ اللَّهِ عَنْ وَيَلْكَ مَنْ وَلَكَ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَ

২. অতপর যখন তারা তাদের (ইদ্দতের) সেই নির্ধারিত সময়ে (-র শেষে) উপনীত হয়, তখন তাদের হয় সমানজনক পছায় (বিয়ে বদ্ধনে) রেখে দেবে, না হয় সমানের সাথে তাদের আলাদা করে দেবে এবং (উভয় অবস্থায়ই) তোমাদের মধ্য থেকে দুজন ন্যায়পরায়ণ লোককে তোমরা সাক্ষী বানিয়ে য়াখবে, (সাক্ষীদেরও

مُ فَاذَا بَلَغْنَ آجَلَهُنَّ فَآمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُونِ آوْ فَارِقُومُنَّ بِمَعْرُونِ وَّآشَهِدُوْا ذَوَى عَثْلٍ مِّنْكُمْ وَآقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلْهِ مَ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُّ بِهِ

৬৫ সূরা আত্ তালাক্ব

CAD

পারা ২৮ কাদ সামি'আল্লাহু

বলো), তোমরা শুধু আল্লাহর জন্যেই (এ) সাক্ষ্য দান করবে: যারা আল্লাহ তায়ালা ও শেষ বিচার দিনের ওপর ঈমান আনে, তাদের সবাইকে এর দ্বারা উপদেশ দেয়া হচ্ছে। যে ব্যক্তি আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে, আল্লাহ তায়ালা তার জন্যে (সংকট থেকে বের হয়ে আসার) একটা পথ তৈরী করে দেন

مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْ إِ الْأَخِرِ أَهُ وَمَنْ يُّتَّقِ اللَّهُ يَجْعَلْ لَّهُ مَخْرَجًا لا

৩ এবং তিনি তাকে এমন রেযেক দান করেন যার (উৎস) সম্পর্কে তার কোনো ধারণাই নেই: যে ব্যক্তি আল্লাহর ওপর ভরসা করে, তার জন্যে আল্লাহ তায়ালাই যথেষ্ট: (কেননা) আল্পাহ তায়ালা তাঁর নিজের কাজটি পূর্ণ করেই নেন: আল্লাহ তায়ালা প্রতিটি জিনিসের জন্যেই একটি পরিমাণ ঠিক করে রেখেছেন।

٣ وَّيَرْزُقُهُ مِنْ مَيْتُ لَا يَحْتَسِبُ ١ وَمَنْ يَّتَوَكَّلُ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ ﴿ إِنَّ اللَّهُ بَالِغُ آمْرِةِ مَ قَنْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَنْرًا

 তোমাদের স্ত্রীদের মাঝে যারা ঋতৃবতী হওয়ার ব্যাপারে নিরাশ হয়ে গেছে, তাদের (ইন্দতের) ব্যাপারে তোমাদের কোনো সন্দেহ থাকলে (তোমরা) জেনে রেখো, তাদের ইন্দতের সময় হচ্ছে তিন মাস, (এ তিন মাসের विश्वन) जारनत करनाय, यारनत अथनय अकुकान खत्रहें भी नेर्वेकेंगे विश्वन विश्वन अकुकान खत्रहें হয়নি: গর্ভবতী নারীর জন্যে ইন্দতকাল হচ্ছে তার সন্তান প্রসব হওয়া পর্যন্ত: (বস্তুত) কেউ যদি আল্লাহকেই ভয় করে, তাহলে আল্লাহ তায়ালাও (বিভিন্ন ধরনের সুবিধা দিয়ে) তার জন্যে তার প্রত্যেক ব্যাপার সহজ করে দেন।

م وَ الَّئِي ْ يَئِشَ مِنَ الْهَحِيْضِ مِنْ تِسَائِكُرْ إِنِ ارْتَبْتُرْ فَعِنَّ تُهُنَّ ثَلْثَةُ أَشْهُر لا وَّالَّئِي يُّضَعْنَ مَهْلَهُنَّ ﴿ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلُ لَّهُ مِنْ أَمْرِةٍ يُشرًّا

 अण्णाक उ रणावत व्याणात व राक्ष जानार وَنَا اللّٰهِ ٱنْزَلَدُ إِلَيْكُرُ ﴿ وَمَنْ يَتَقِ जानात जातन में जिन (प्रात हिनात जातन के दें) وَلَكُ ٱمْرُ اللّٰهِ ٱنْزَلَدُ إِلَيْكُرْ ﴿ وَمَنْ يَتَقِ كَا اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ اَنْزَلَدُ إِلَيْكُرْ ﴿ وَمَنْ يَتَقِ اللّٰهِ اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ اَنْزَلَدُ اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الْزَلَدُ اللّٰهِ اللّهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الل ৫. (তালাক ও ইন্দতের ব্যাপারে) এ হচ্ছে আল্লাহ তোমাদের কাছে পাঠিয়েছেন; অতপর যে ব্যক্তি আল্লাহকে ভয় করে চলে, তিনি তার গুনাহখাতাকে (তার হিসাব থেকে) মুছে দেবেন এবং তিনি তার পুরস্কারকেও বড়ো করে দেবেন।

اللَّهَ يُكَفُّ عَنْهُ سَيَّاتِهِ وَيُعْظِرُ لَهُ أَجْرًا

৬. (ইন্দতের এ সময়ে) তোমরা নিজেদের সামর্থ অনুযায়ী তাদের সে ধরনের বাড়িতে থাকতে দিয়ো, যে ধরনের বাড়িতে তোমরা নিজেরা থাকো, কোনো অবস্থায়ই তাদের ওপর সংকট সৃষ্টি করার মতলবে তাদের কট্ট দিয়ো না: আর যদি তারা সম্ভানসম্ভবা হয়, তাহলে (ইন্দতের নিয়ম খোরপোষ দিতে থাকো, (সম্ভান জন্মদানের পর) যদি তারা তোমাদের সন্তানদের (নিজেদের) বুকের দুধ খাওয়ায়, তাহলে তোমরা তাদের পারিশ্রমিক আদায় করে দেবে এবং (এ পারিশ্রমিকের অংক ও সম্ভানের কল্যাণের ব্যাপারটা) ভালোভাবে নিজেদের মধ্যে ন্যায়সংগত পম্বায় সমাধান করে নেবে, যদি তোমরা একে অন্যের সাথে জেদ করো, তাহলে অন্য কোনো মহিলা এ সম্ভানকে দুধ খাওয়াবে:

٦ أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُرْ مِّنْ وُجْلِكُرْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ﴿ وَإِنْ كُنَّ مَهُمُ اللهِ عَانِ أَرْضَعَى لَكُمْ فَأَتُومُ الْمُورُونَ الْمُورُونَ عَ وَ أَتَهِرُوا بَيْنَكُمْ بِهَعْرُونِ ع وَإِنْ تَعاسَرْتُمْ فَسَتُوضِعُ لَدُّ أَخُرى ا

৭. বিত্তশালী ব্যক্তি তার সংগতি অনুযায়ী (ক্রীদের) খোরপোষ দেবে; আবার যে ব্যক্তির অর্থনৈতিক সংগতি সীমিত করে রাখা হয়েছে সে ব্যক্তি ততোটুকু পরিমাণই খোরপোষ দেবে যতোটুকু আল্পাহ তায়ালা তাকে দান করেছেন; আল্লাহ তায়ালা যাকে যে পরিমাণ সামর্থ দান করেছেন তার বাইরে কখনো (কোনো) বোঝা তার ওপর তিনি চাপান না; (আল্লাহর ওপর নির্ভর করলে) আল্লাহ তায়ালা (তাকে) অচিরেই অভাব অনটনের পর সচ্ছলতা দান করবেন।

٤ لِيُنْفِقُ ذُوْ سَعَةِ مِّنْ سَعَتِهِ ، وَمَنْ قُبِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِيًّا أَتَّهُ اللَّهُ ، لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا ۖ أَتُهَا م سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْنَ عُسْرٍ يسراع

পারা ২৮ ক্রাদ সামি'আল্লাহ

৮. কতো জনপদের মানুষরাই তো নিজেদের মালিক ও বিদ্রোহ করেছিলো, তাঁর রস্তার নির্দেশের বিরুদ্ধে হিসাব আদায় করে নিয়েছি এবং আমি ওদের কঠোর শাস্তি দিয়েছি।

 ^ وَكَانِينَ مِّنَ قَرْيَةٍ عَتَنَ عَنَ آمْرِ رَبِّهَا عَنَ إِبًّا نَّكُّ ا

৯. এরপর তারা ভালো করেই তাদের কৃতকর্মের শাস্তি ভোগ করলো, মূলত তাদের কাজের পরিণাম ফল (ছিলো) চরম ক্ষতি।

٩ فَنَ اقَتُ وَبَالَ آمُوهَا وَكَانَ عَاقِبَةً آمُوهَا

১০. আল্লাহ তায়ালা (পরকালে) তাদের জন্যে এক কঠিন আযাব প্রস্তুত করে রেখেছেন, অতএব (হে মানুষ), তোমরা যারা জ্ঞানসম্পন্ন, তোমরা যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছো, তোমরা আল্লাহকে ভয় করো, আল্লাহ তায়ালা তোমাদের কাছে তাঁর উপদেশবাণী নাযিল করেছেন,

١٠ اَعَنَّ اللَّهُ لَهُرْ عَنَاابًا شَهِيْدًا لا مَاتَّقُوا اللَّهَ يَا ولَى الْإِلْبَابِ لَهُ الَّانِينَ أُمَنُّوا لَهُ قَلْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُرْ ذِكْرًا

১১. (তিনি আরো পাঠিয়েছেন) তাঁর রসূল, যে তোমাদের আল্লাহর সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ পড়ে শোনায়, যাতে করে সে (রসুল) তোমাদের সেসব লোকদের- যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তাদের (জাহেলিয়াতের) অন্ধকার থেকে (হেদায়াতের) আলোতে নিয়ে আসতে পারে: তোমাদের যে কেউই আল্লাহর ওপর ঈমান আনে এবং ভালো কাজ করে, আল্লাহ তায়ালা তাকেই জানাতে প্রবেশ করাবেন (এমন এক জান্নাতে), যার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে। সেখানে তারা অনম্ভকাল ধরে অবস্থান করবে: এমন লোকের জন্যে অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা উত্তম রেযেকের ব্যবস্থা করে রেখেছেন।

١١ رَّسُولًا يَّتْلُوا عَلَيْكُمْ أَيْسِ اللَّهِ مُبَيِّنْتٍ لِّيُخْرِجَ النَّرِيْنَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا الصَّلِحُسِ مِنَ الظُّلُمٰ إِلَى النُّوْرِ ، وَمَن يُّؤْمِن إِاللَّهِ وَيَعْمَلُ مَالِحًا يُّلْمِلْهُ جَنَّتٍ تَجْرِئُ مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُ عُلْدِينَ فَيْهَا أَبَلًا ، قَلْ أَحْسَىَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا

১২, আল্লাহ তায়ালা – যিনি এ সাত আসমান ও তাদের অনুরূপ সংখ্যক যমীন সৃষ্টি করেছেন; (আবার) উভয়ের মাঝখানে (যা কিছু আছে তাদের জন্যে) তাঁর নির্দেশ জারি হয়, যাতে করে তোমরা একথা অনুধাবন করতে পারো, (আকাশ পাতালের) সকল কিছুর ওপর তিনিই (একক) ক্ষমতাবান এবং তাঁর জ্ঞান (এ সৃষ্টিলোকের) প্রতিটি বস্তুকেই পরিবেষ্টন করে রেখেছে।

١٢ ٱللهُ النَّانِي عَلَقَ سَبْعَ سَهُوٰتٍ وَّمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ، يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَبُوْآ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلَّ شَيْءٍ قَرِيْرٌ وَّأَنَّ اللَّهُ قَلْ إَحَاطَ بِكُلِّ شَيْء عَلْهًا ع

সুরা আত্ তাহরীম

মদীনায় অবতীর্ণ- আয়াত ১২, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَنَنِيَّةً أَيَاتٍ : ١٢ رُكُوعٌ : ٢ بِسْرِ اللَّهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ

 হে নবী, আল্লাহ তায়ালা তোমার জন্যে যা হালাল করেছেন তা তুমি (কসম করে) নিজের ওপর কেন হারাম করছো, তুমি কি (এর মাধ্যমে) তোমার স্ত্রীদের খুশী কামনা করতে চাও? (তেমন কিছু হলে আল্লাহর কাছেই ক্ষমা প্রার্থনা করো, কারণ) আল্লাহ তায়ালা ক্ষমার আধার ও পরম দয়াল।

ا يَأَيُّهَا النَّبِيُّ لِمِ تُعَرَّأُ مَا آمَلٌ اللَّهُ لَكَ ع تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ﴿ وَاللَّهُ غَفُورٌ

৬৬ সূরা আত্ তাহরীম

appo

পারা ২৮ ক্বাদ সামি'আল্লাহু

 আল্লাহ তায়ালা তো তোমাদের শপথ থেকে রেহাই পাবার জন্যে (কাফফারার) একটা পথ নির্ধারণ করে দিয়েছেন, (মূলত) আল্লাহ তায়ালাই হচ্ছেন তোমাদের একমাত্র সহায়, তিনিই সর্বজ্ঞ, তিনিই প্রজ্ঞাময়।

٢ قَنْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ عَ وَاللَّهُ مَوْلُدِكُمْ وَهُوَ الْعَلِيْرُ الْحَكِيْرُ

৩. যখন (আল্লাহর) নবী তার স্ত্রীদের একজনকে (একান্ড) চুপিসারে কিছু একটা কথা বললো এবং সে (তা অন্যদের কাছে) প্রকাশ করে দিলো, আল্লাহ তায়ালা তার এ বিষয়টা নবীকে (ওহীর মাধ্যমে) জানিয়ে দিলেন, (তখন) রসূল কিছু কথা (গোপনীয়তা প্রকাশকারী স্ত্রীকে) জানিয়ে দিলো, (আবার) কিছু কথা এড়িয়েও গেলো। অতপর নবী যখন তার সে স্ত্রীর কাছ থেকে (সমগ্র বিষয়টা) জানতে চাইলো, তখন সে বললো, আপনাকে এ খবরটা কে জানালো; নবী বললো, আমাকে জানিয়েছেন (সেই মহান আল্লাহ তায়ালা). যিনি সর্বজ্ঞ ও সম্যুক জ্ঞাত।

مَ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ مَنِيْثًا * فَلَمَّا نَبَّآتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّنَ بَعْضَةً وَأَعْرَضَ عَنَ ابَعْضٍ * فَلَمَّا نَبَّاهَا بِهِ قَالَتُ مَنْ أَثْبَاكَ هٰنَا اللَّهُ قَالَ نَبَّانِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ

8. (যে দু'জন স্ত্রী এর সাথে জড়িত, নবী তাদের উভয়কে ডেকে বললো,) তোমরা দু'জন যদি আল্লাহর কাছে তাওবা করে নাও— কেননা তোমাদের উভয়ের মন অন্যায় ও বাঁকা পথের দিকে (কিছুটা) মুঁকে পড়েছিলো (তাহলে অবশ্যই আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ক্ষমা করে দেবেন), আর যদি তোমরা উভয়ে তার বিরুদ্ধে একে অপরের পৃষ্ঠপোষকতা করো (তাহলে জেনে রাখো), আল্লাহ তায়ালাই তাঁর নেবীর) সহায়, তাছাড়াও তাঁর সাথে রয়েছে জিবরাঈল (ফেরেশতা) ও নেককার মুসলমানের দল, এরপরও আল্লাহর সমগ্র ফেরেশতাকুল তার সাহায়্য করতে এগিয়ে আসবে।

م إِنْ تَتُوْبَا إِلَى اللهِ فَقَلْ مَغَتْ قُلُوبُكُهَا عَ اللهِ فَقَلْ مَغَتْ قُلُوبُكُهَا عَ وَإِنْ تَظْهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللهَ هُوَ مَوْلُدهُ وَجِبْرِيْلُ وَمَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ } وَالْمَلْنِكَةُ بَعْنَ ذَلِكَ ظَهِيْرٌ

৫. (আজ) নবী যদি তোমাদের তালাক দিয়ে দেয়, তাহলে তার মালিক তোমাদের বদলে এমন সব স্ত্রী তাকে দিতে পারেন, যারা তোমাদের চাইতে হবে উন্তম, যারা হবে আত্মসমর্পণকারী, বিশ্বস্ত, ফরমাবরদার, অনুশোচনাকারী, অনুগত, রোযাদার, (হতে পারে তারা) কুমারী, (হতে পারে) অকুমারী।

۵ عَسٰى رَبَّهَ ۚ إِنْ طَلَّقَكُىٰ ۗ اَنْ يَّبْدِلَهُ ۗ اَزْوَاجًا غَيْرًا مِّنْكُیْ مُسْلِمٰ مُؤْمِنٰ قُنِتْ قَنِتْ لَئِبْسِ عُبِنْ سِ سَنِحْ سِ ثَیِّبْ وَ اَبْکَارًا

৬. হে ঈমানদার লোকেরা, তোমরা নিজেদের ও নিজেদের পরিবার পরিজনদের (জাহান্নামের সেই কঠিন) আগুন থেকে বাঁচাও, তার জ্বালানি হবে মানুষ আর পাথর, (সে) জাহান্নামের (প্রহরা যাদের) ওপর (অর্পিত), সেসব ফেরেশতা সবাই হচ্ছে নির্মম ও কঠোর, তারা (দভাদেশ জারি করার ব্যাপারে) আল্লাহর কোনো আদেশই অমান্য করবে না, তারা তাই করবে যা তাদের করার জন্যে আদেশ করা হবে।

٢ يَا يَهُمَا الَّانِ مِنَ أَمَنُوا قُوا الْفُسكُمِ وَالْعِجَارَةُ وَالْمِكْمِ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْعِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَٰئِكَةً غِلَاقًا شِنَادٌ لا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا الْمَرَهُرُ وَيَغْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ

(সেদিন অস্বীকারকারীদের তারা বলবে,) হে
কাফেররা, আজ তোমরা (দোষ ছাড়ানোর জ্বন্যে) কোনো
রকম অজুহাত তালাশ করো না; (আজ) তোমাদের সে
বিনিময়ই দেয়া হবে যা তোমরা দুনিয়য় করে এসেছো।

عَالَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لاَ تَعْتَذِرُوا الْيَوْا الْيَالْمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالَّ اللَّهُ اللَّالَّ اللّل

৮. হে ঈমানদার ব্যক্তিরা, তোমরা (নিজেদের গুনাহ খাতার জন্যে) আল্লাহর দরবারে তাওবা করো- একান্ত খাঁটি তাওবা; আশা করা যায় (এর ফলে) তোমাদের

^ يَّاَيَّهَا الَّذِيْنَ أَمَّنُواْ تُوْبُوْاً إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً ۚ

৬৬ সূরা আত্ তাহরীম

648

মালিক (আল্লাহ তায়ালা) তোমাদের শুনাহসমূহ ক্ষমা করে দেবেন এবং এর বিনিময়ে (পরকালে) তিনি তোমাদের প্রবেশ করাবেন এমন (সুরম্য) জান্লাতে, যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হবে (সুপেয়) ঝর্ণাধারা, সেদিন আল্লাহ তায়ালা (তাঁর) নবী এবং তার সাথী ঈমানদারদের অপমানিত করবেন না, (সেদিন) তাদের (ঈমানের) জ্যোতি তাদের সামনে ও তাদের ডান পাশ দিয়ে (বিচ্ছুরিত হয়ে এমনভাবে) ধাবমান হবে (য়য়, সর্বদিক থেকেই তাদের এ আলো পর্যবেক্ষণ করা যাবে), তারা বলবে, হে আমাদের মালিক, আমাদের জ্বন্যে আমাদের (ঈমানের) জ্যোতিকে (জান্লাতের জ্যোতি দিয়ে আজ তুমি) পূর্ণ করে দাও, তুমি আমাদের ক্ষমা করে দাও, অবশ্যই তুমি সব কিছর ওপর একক ক্ষমতাবান।

نَّصُوْمًا ، عَسٰى رَبَّكُمْ أَنْ يَّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّا تِكُمْ وَيُنْخِرَ عَنْكُمْ سَيِّا تِكُمْ وَيُنْخِرَ عَنْكُمْ سَيِّا تِكُمْ وَيُنْخِرَى مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْفُرُ لا يَحْزِى اللَّهُ النَّبِيَّ وَالنِّنِيْنَ أَمَنُوْا مَعَدَّ عَ نُوْرُعُمْ وَبِاَيْهَا نِهِمْ مَعَدَّ عَ نُوْرُعُمْ وَبِاَيْهَا نِهِمْ يَتُنْ اَيْنِيْهِمْ وَبِاَيْهَا نِهِمْ يَتُولُونَ وَاغْفِرْ لَنَا عَ يَتُولُونَا وَاغْفِرْ لَنَا عَ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَلِيْرُ

৯. হে নবী, তৃমি কাফের ও মোনাফেকদের বিরুদ্ধে জেহাদ করো এবং তাদের ব্যাপারে কঠোরতা অবলম্বন করো; (কেননা) তাদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্লাম; আর তা (হচ্ছে) এক নিকৃষ্ট ঠিকানা।

9 يَّآيَّهَا النَّبِيُّ جَاهِلِ الْكُفَّارَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَاغْلُقاْ عَلَيْهِرْ ﴿ وَمَآوِٰلِهُرْ جَهَنَّـرُ ﴿ وَبِئْسَ الْمَهِيْرُ

১০. আল্লাহ তায়ালা কাফেরদের জন্যে নৃহ ও লৃতের ন্ত্রীদের উদাহরণ পেশ করছেন; তারা দুজনই ছিলো আমার দু'জন নেক বান্দার ন্ত্রী, কিন্তু তারা উভয়েই সে দু'জন বান্দার সাথে বিশ্বাসঘাতকতা করেছে, অতএব আল্লাহর (আযাব) থেকে তারা কোনোক্রমেই এদের বাঁচাতে পারলো না, বরং (তাদের ব্যাপারে আল্লাহর) স্কুম (ঘোষিত) হলো, তোমরা (আজ) প্রবেশ করো জাহান্নামের আগুনে, যারা এখানে প্রবেশ করেছে তাদের সবার সাথে।

ا ضَرَبَ اللهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ الْوَرِ امْرَأَتَ لُوْمٍ وَامْرَأَتَ تَحْتَ عَبْنَيْنِ فَوْمٍ وَكَانَتَا تَحْتَ عَبْنَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتُمُهَا فَلَرْ يُغْنِيَا عَنْهُما مِنَ اللهِ شَيْئًا وَقِيْلَ ادْهُلَا النَّارَ مَعَ اللهِ النَّارَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ النَّارَ مَعَ اللهِ النَّارَ مَعَ اللهِ النَّارَ اللهِ الهَالِهُ اللهِ المَا المِلْمُ اللهِ المِلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ المِلْمُ اللهِ اللهِ المِلْمُ المِلْمُ المِلْمُ المَا اللهِ المَا المَا المَا المُلْمُ المَا اللهِ المَ

১১. (একইভাবে) আল্লাহ তায়ালা মোমেনদের জন্যে ফেরাউনের ব্লীকে (অনুকরণযোগ্য) এক উদাহরণ হিসেবে পেশ করেন, (সে প্রার্থনা করেছিলো) হে মালিক, জান্নাতে তোমার পাশে তুমি আমার জন্যে একখানা ঘর বানিয়ে দিয়ো, আর (দুনিয়ার এ ঘরেও) তুমি আমাকে ফেরাউন ও তার (যাবতীয়) কর্মকান্ত থেকে বাঁচিয়ে রেখো, তুমি আমাকে উদ্ধার করো এ যালেম সম্প্রদায় (-এর যাবতীয় অনাচার) থেকে।

ا وَضَرَبَ اللهُ مَثَلًا لِللَّذِينَ أَمَنُوا امْرَاَسَ
 فِرْعَوْنَ مِ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ
 بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ
 وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْرُ الظَّلِمِيْنَ لا

১২. (আল্লাহ তায়ালা মোমেনদের জন্যে আরো দৃষ্টান্ত পেশ করছেন) এমরানের মেয়ে মারইয়ামের, যে (আজীবন) তার সতীত্ব রক্ষা করেছে, অতপর (একদিন) আমি আমার (সৃষ্ট) রহগুলো থেকে একটি (রহ) তার মধ্যে ফুঁকে দিলাম, সে তার মালিকের কথা ও তাঁর (প্রেরিত) কেতাবসমূহের ওপর পুরোপুরিই বিশ্বাস স্থাপন করেছে; (সত্যিই) সে ছিলো আমার একান্ত অনুগত বান্দাদেরই একজন!

١٢ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرُنَ الَّتِيْ آَحْمَنَتْ أَحْمَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَمَنَّقَتْ بِكَلِمْسِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِ وَكَانَتْ مِنَ الْقُنِتِيْنَ عَ



৬৬ সূরা আত্ তাহরীম

٩8

সুরা আল মূলক

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ৩০, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةً الْهُلْك مَكِّيَّةً ایات : ۳۰ رُکُوع : ۲ بِسْرِ اللَّهِ الرَّحْشٰ الرَّحِيْر

- ك. (কতো) মহান সেই পুণ্যময় সন্তা, যাঁর হাতে (রয়েছে تَبُرُكَ الَّذِي بِيَكِةِ الْهُلْكُ رَوَّهُوَ عَلَى كُلِّ আসমান যমীনের যাবতীয়) সার্বভৌমত্ব, (এ সৃষ্টি شَيْءٍ قَلِيْرُ 4 জগতের) সব কিছুর ওপর তিনি একক ক্ষমতাবান,
- ك الَّذِي عَلَقَ الْمَوْسَ وَالْحَيْوةَ لِيَبْلُوكُمْ إِيَالُوكُمْ عَلَقَ الْمَوْسَ وَالْحَيْوةَ لِيَبْلُوكُمْ তিনি তোমাদের যাচাই করে নিতে পারেন, কর্মক্ষেত্রে কে أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ، وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُورُ ٧ (এখানে) তোমাদের মধ্যে বেশী ভালো। তিনি সর্বশক্তিমান, তিনি অসীম ক্ষমাশীল,
- ৩. তিনিই সাত (মযবুত) আসমান বানিয়েছেন, পর্যায়ক্রমে একটার ওপর আরেকটা (স্থাপন করেছেন): অসীম দয়ালু আল্লাহ তায়ালার এ (নিপুণ) সৃষ্টির কোথাও কোনো খুঁত তুমি দেখতে পাবে না: আবার (তাকিয়ে) দেখো তো, কোথাও কি তমি কোনো রকম ফাটল দেখতে পাও १
- ৪. অতপর (তোমার) দৃষ্টি ফেরাও (নভোমন্ডলের প্রতি), দেখো, আরেকবারও তোমার দৃষ্টি ফেরাও (দেখর্বে, তোমার) দৃষ্টি ব্যর্থ ও ক্লান্ত হয়ে তোমার দিকেই ফিরে আসবে ।
- ৫. নিকটবর্তী আকাশটিকে (তুমি দেখো, তাকে কিভাবে) প্রদীপমালা দিয়ে আমি সাজিয়ে রেখেছি, (উর্ধালোকের দিকে গমনকারী) শয়তানদের তাড়িয়ে বেড়ানোর জন্যে এ (প্রদীপতলো)-কে আমি (ক্ষেপণান্ত হিসেবে) সংস্থাপন করে রেখেছি, (চূড়ান্ত বিচারের দিন) এদের জন্যে জুলন্ত অগ্নিক্ডলীর ভয়াবহ শান্তির ব্যবস্থাও আমি (যথাযথভাবে) প্রস্তুত করে রেখেছি।
- ৬. (এতো সব নিদর্শন সত্ত্বেও) যারা তাদের স্রষ্টাকে অস্বীকার করেছে, তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের (কঠোরতম) শান্তি: জাহান্লাম কতোই না নিক্টতম স্থান!
- ৭. এর মধ্যে যখন তাদের ছুঁড়ে ফেলা হবে তখন (নিক্ষিপ্ত হবার আগেই) তারা তনতে পাবে, তা ক্ষিপ্ত হয়ে বিকট গর্জন করছে.
- ৮. (মনে হবে) তা যেন প্রচন্ড ক্রোধের কারণে ফেটে দীর্ণ বিদীর্ণ হয়ে যাচ্ছে; যখনই একদল (নতুন পাপী)-কে সেখানে নিক্ষেপ করা হবে তখনই তার প্রহরীরা তাদের জিজ্ঞেস করবে, (এ জায়গার কথা বলার জন্যে) তোমাদের কাছে কোনো সাবধানকারী কি আসেনিং
- ৯. তারা বলবে, হাঁ, আমাদের কাছে (আল্লাহর) সাবধানকারী (নবী রসুল) এসেছিলো, কিন্তু আমরা وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ﴿ إِنْ آنْتُرْ ﴿ وَاللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ﴿ إِنْ آنْتُر দিন সংক্রাম্ভ) কোনো কিছুই আল্লাহ তায়ালা নাযিল করেননি: বরং তোমরা নিজেরাই চরম বিদ্রান্তিতে ডবে আছো।

٣ الَّذِي عَلَقَ سَبْعَ سَهُوٰتٍ طِبَاقًا مَ مَا تَرْى فِي خَلْقِ الرَّحْمٰيِ مِنْ تَفْوُتٍ م فَارْجِع الْبَصَرَ لا مَلْ تُرى مِنْ فُطُورٍ

- ٣ ثُرَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبُ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيرٌ
- ٥ وَلَقَنُ زَيَّنَّا السَّهَاءَ النُّنْيَا بِهَصَابِيْعَ وَجَعَلْنَهَا رُجُوْمًا لِلشَّيطِيْنِ وَأَعْتَنْنَا لَهُرْ عَنَ ابَ السَّعِيْرِ
- ٢ وَلِلَّانِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِرْ عَنَابُ جَهَنَّرَ ٥ وَبِئْسَ الْهَصِيْرُ
- ٤ إذًا ٱلْقُوْا فِيْهَا سَبِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ
- ٨ تَكَادُ تَهَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ، كُلُّهَا ٱلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَالَهُم مَنَانَتُهَا أَلَم يَأْتَكُم نَن يُو
- 9 قَالُوا بَلَى قَنْ جَاءَنَا نَن يَهُ لا فَكَنَّ بْنَا إِلَّا فِي ضَلَلَ كَبِيْرٍ

৬৭ সূরা আল মূলক

Chry

| Γ | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|-----------------|---|--|
| | ১০. তারা বলবে, কতো ভালো হতো (যদি সেদিন) আমরা (নবী রস্লদের কথা) গুন্তাম এবং (তা) অনুধাবন করতাম, (তাহলে আজ) আমরা জ্বলম্ভ আগুনের বাসিন্দাদের মধ্যে গণ্য হতাম না। | ا وَقَالُواْ لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيَ آَوُ مَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيَ آَوَمُ |
| ł | ১১. অতপর তারা নিজেরাই নিজেদের (যাবতীয়) অপরাধ স্বীকার করে নেবে, ধিক্কার জাহান্লামের অধিবাসীদের ওপর! | اا فَاعْتَرَفُوا بِلَائِيمِر ع فَسُحْقًا لِآمَحُبِ السَّعِيْرِ |
| | ১২. (অপর দিকে) সেসব (সৌভাগ্যবান) মানুষ, যারা নিজেরা (চোখে) না দেখেও তাদের সৃষ্টিকর্তাকে ভয় করেছে, নিসন্দেহে তাদের জন্যে রয়েছে (আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে) ক্ষমা ও মহাপুরস্কার। | الله الله الله الله الله الله الله الله |
| | ১৩. তোমরা তোমাদের কথাবার্তাগুলো লুকিয়ে রাখো কিংবা (তা) প্রকাশ করো (আল্লাহর কাছে এর উভয়টাই সমান); কারণ তিনি মনের ভেতর লুকিয়ে রাখা বিষয় সম্পর্কেও সম্যক ওয়াকেফহাল। | ا وَأَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوْا بِهِ ، إِنَّهُ عَلِيْرٌ ٰ بِذَاتِ الصَّّدُوْرِ |
| } | ১৪. তিনি কী (সৃষ্টি সম্পর্কিত যাবতীয় বিষয়ে) জানবেন না, যিনি (এর সবকিছু) বানিয়েছেন, (বস্তুত) আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত সৃচ্ছাদর্শী এবং সর্ববিষয়ে সম্যক জ্ঞাত। | ١٣ أَلَا يَعْلَرُ مَنْ خَلَقَ ا وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ع |
| | ১৫. তিনিই সেই মহান সস্তা যিনি ভূমিকে তোমাদের অধীন করে বানিয়েছেন, তোমরা (যখন যেভাবে চাও) এর অলিগলির মধ্য দিয়ে চলাচল করো এবং এর থেকে (উদাত) রেযেক তোমরা উপভোগ করো; (মনে রেখো,) একদিন (তোমাদের স্বাইকে) তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে। | ١٥ مُو الَّذِي جَعَلَ لَكُرُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَالْمُوا فِي رَزْقِهِ ﴿ وَإِلَيْهِ فَالْمُوا فِي رَزْقِهِ ﴿ وَإِلَيْهِ النَّشُورُ النَّشُورُ |
| ı | ১৬. তোমরা কি নিজেদের নিরাপদ ভাবছো (মহাশক্তিধর) আকাশের মালিক আল্লাহ তায়ালা কি তোমাদের সহ ভূমন্ডলকে গেড়ে দেবেন নাঃ (এমনি অবস্থা যখন দেখা দেবে) তখন তা (ভীষণভাবে) কম্পমান হবে, | 17 ءَاَمِنْتُر مَّنْ فِي السَّهَاءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُرُ الْأَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَهُورُ لا |
| | ১৭. অথবা তোমরা কি নিশ্চিড, আকাশের (অধিপতি) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর (প্রস্তর নিক্ষেপকারী) এক প্রচন্ড বায়ু প্রবাহিত করবেন নাঃ (এমন দিন আসবে এবং) তোমরা সেদিন অবশ্যই জানতে পারবে, কেমন (ভয়াবহ হতে পারে) আমার সাবধানবাণী (উপেক্ষা করা)! | اَ أَمِنْتُر مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَن يُّرْسِلَ عَلَيْكُر مَاصِبًا ، فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَنِيْدٍ |
| | ১৮. তাদের আগেও যারা (আমার সাবধানবাণী) মিধ্যা প্রতিপন্ন করেছে, দেখো, কেমন (ছিলো তাদের প্রতি) আমার আচরণ! | 10 وَلَقَن كَنَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِر فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرٍ |
| פאולפת פווים או | ১৯. এ সব লোকেরা কি তাদের মাধার ওপর (দিয়ে উড়ে যাওয়া) পাখীগুলোকে দেখে না? (কিভাবে এরা) নিজেদের পাখা মেলে রাখে, (আবার) এক সময় (তা) | وْيَقْبِضَ ثِرْمَا يُمْسِكُهُمَّ إِلَّا الرَّحْمَٰيُ وَإِنَّا |
| よう!!・ ようき ! ちら | গুটিয়েও নেয়। (তখন) পরম দয়ালু আল্লাহ তায়ালাই এদের (মহাশূন্যে) স্থির করে রাখেন (হাঁ একমাত্র আল্লাহ তায়ালাই); তিনি (তাঁর সৃষ্টির ছোটো বড়ো) সব কিছুই দেখেন। | م س ب ۸ ب A پ |
| | ৬৭ সূরা আল মূলক ৫৮৭ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|--|
| ২০. বলো তো, তোমাদের মধ্যে এমন কে আছে যার | ٢٠ أَسَّ هٰذَا الَّذِي مُوَ جُنْلٌ لِّكُرْ يَنْصُرُكُرْ |
| কাছে (এমন) একটি বিশাল সৈন্যবাহিনী আছে, (যা | • |
| দিয়ে) তারা অসীম দয়ালু আল্লাহর বিরুদ্ধে তোমাদের | مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰيِ إِنِ الْكَفِرُوْنَ إِلَّا فِي |
| সাহায্য করবে? (আসলে) এ অস্বীকারকারী ব্যক্তিরা (হামেশাই) বিভ্রান্তিতে নিমজ্জিত থাকে, | مر ، غرور ۶ |
| | |
| ২১. যদি তিনি তোমাদের জীবিকা (-র উপকরণ) | ٢١ أَمَّنْ هٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُر إِنْ أَمْسَكَ |
| সরবরাহ বন্ধ করে দেন, তাহলে (এখানে) এমন (দ্বিতীয়) আর কে আছে যে তোমাদের (পুনরায়) রেযেক সরবরাহ | |
| করতে পারবেঃ এরা তো বরং (মনে হয় খাল্লাহ তায়ালার) বিদ্রোহ | رِرفد ع بن نجوا فِي عنو ونعور |
| এবং গোঁড়ামিতেই (অবিচল হয়ে) রয়েছে। | |
| ২২. যে ব্যক্তি যমীনের (গুপর দিয়ে) উপুড় হয়ে মুখে ভর | ٢٢ أَفَهَنْ يَّهْشِيْ مُكِبًّا عَلَى وَجَهِهِ أَهْلَى |
| দিয়ে চলে– সে ব্যক্তি অধিক পরিমাণে হেদায়াতপ্রাপ্ত, না যে (ব্যক্তি যমীনে স্বাভাবিকভাবে) সঠিক পথ ধরে চলে | |
| সে (বেশী হেদায়াতপ্রাপ্ত)ঃ | أَمْنُ يَهْشِي سُوِيًّا عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْرٍ |
| ২৩. (হে নবী,) তুমি (এদের) বলে দাও (হাঁ), তিনিই তোমাদের পয়দা করেছেন, তিনি তোমাদের (শোনার ও | ٢٣ قُلْ هُوَ الَّذِي ٓ أَنْشَاكُمْ وَجَعَلَ لَكُرُ |
| দেখার জন্যে) কান এবং চোখ দিয়েছেন, আরো দিয়েছেন | السُّهُعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِنَةَ مَ قَلِيلًا مَّا |
| (চিন্তা করার মতো) একটি অন্তর; কিন্তু তোমরা খুব | |
| কমই (এসব দানের) কৃতজ্ঞতা আদায় করো। | تَهْكُرُوْنَ |
| ২৪. (এদের আরো) বলো, তিনিই এ ভূখন্ডে তোমাদের (সর্বত্র) ছড়িয়ে রেখেছেন, আবার (একদিন চারদিক | ٢٣ قُلْ هُوَ الَّذِي ثَرَاكُمْ فِي الْاَرْضِ |
| থেকে) তাঁরই সমুখে তোমাদের সবাইকে জড়ো করা | وَ إِلَيْهِ تُحْشُرُونَ |
| হবে। | |
| ২৫. তারা বলে, তোমরা যদি সভ্যবাদী হয়ে থাকো, | ٢٥ وَيَقُولُونَ مَتَى هٰذَا الْوَعْلُ إِنْ كُنْتُر |
| তাহলে (বলো) কবে এটা (সংঘটিত) হবে? | مُل قِينَ |
| (4) 707 07 07 07 | |
| ২৬. তুমি এদের বলো, (এ) তথ্য তো একমাত্র আল্লাহ তায়ালার কাছেই রয়েছে, আমি তো একজন সুস্পষ্ট | ٢٦ قُلُ إِنَّهَا الْعِلْمُ عِنْكَ اللَّهِ م وَإِنَّهَا أَنَا |
| मार्यानकाती माळ! | نَلِيْد مِبِين |
| | |
| ২৭. যখন (সত্যি সত্যিই) এ (প্রতিশ্রুতি)-টি তারা (সংঘটিত হতে) দেখবে, যারা (দুনিয়ার জীবনে) | ٢٠ فَلَهًا رَاوْهُ زُلْفَةً سِيْئُتُ وَجُوهُ الَّذِينَ |
| অস্বীকার করেছিলো, তখন তাদের সবার মুখমন্ডল বিকৃত | كَفَرُوا وَقِيْلَ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُر بِهِ تَدَّتُهُونَ |
| হয়ে যাবে এবং (তাদের তখন) বলা হবে, এ হচ্ছে সেই | فقروا وقِيل هذا النبي فنتمر بِله سعون |
| (মহাধ্বংস), যাকে তোমরা চ্যালেঞ্জ করতে! | |
| ২৮. তুমি বলো, তোমরা কি এ কথা ভেবে দেখেছো, আল্লাহ তায়ালা যদি আমাকে এবং আমার সংগী সাথীদের | ٢٨ قُلْ أَرَءَيْتُرْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ مَّعِي |
| ধ্বংস করে দেন, কিংবা (ধাংসনাকরে) তিনি যদি আমাদের | اَوْ رَحِمَنَا لا فَمَنْ يُتَجِيْرُ الْكُفِرِيْنَ مِنْ عَلَابٍ |
| ওপর দয়া প্রদর্শন করেন (সবই হবে তাঁর ইচ্ছাধীন), | اور رب |
| কিন্তু (আল্লাহ তায়ালাকে) যারা অস্বীকার করেছে তাদের (কেয়ামতের দিন) এ ভয়াবহ আযাব থেকে কে বাঁচাবে? | ا اليير |
| , | |
| ২৯. তুমি এদের বলো (হাঁ, সেদিন বাঁচাতে পারেন একমাত্র) দয়াময় আল্লাহ তায়ালাই, তাঁর ওপর আমরা | ٢٩ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰيُ أُمَنًّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ج |
| ক্রমান এনেছি এবং আমরা তাঁর ওপরই নির্ভর করেছি | فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي مَلَلٍ مَبِينِ |
| (হাঁ), অচিরেই তোমরা জানতে পারবে (আমাদের মধ্যে) | فستعنبون من هو في صدر مبين |
| কে সুস্পষ্ট গোমরাহীর মাঝে নিমজ্জিত ছিলো? | |
| ৬৭ সূরা আল মূলক | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| ৩০. (হে নবী,) তুমি (এদের) জিজ্ঞেস করো, তোমরা কি ভেবে দেখেছো, তোমাদের (যমীনের বুকে অবস্থিত) পানি | ٣٠ قُلْ أَرَءَيْتُرْ إِنْ أَصْبَحَ مَا وُكُورُ غَوْرًا فَهَنْ |
| যদি কখনো উধাও হয়ে যায়, তাহলে কে তোমাদের | يَّاتِيكُمْ بِهَاءٍ مَّعِيْنِ ع |
| জন্যে এ (পানির) প্রবাহধারা পুনরায় বের করে আনবেঃ | ي ريدر بها ۽ مرين ع |
| <u> </u> | \$WW |
| স্রা আল ঝুলাম | سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ–আয়াত ৫২, ৰুকু ২ | أَيَاتٌ : ٥٣ رُكُوْعٌ : ٢ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسٰ الرَّحِيْرِ |
| ১. নৃ-ন-, শপথ (লেখার মাধ্যম) কলমের, (আরো শপথ এ কলম দিয়ে) তারা যা লিখে রাখছে তার, | ان وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ لا |
| ২. তোমার মালিকের (অসীম) দয়ায় তুমি পাগল নও, | ٢ مَا أَنْتَ بِنِعْهَةِ رَبِّكَ بِهَجْنُونٍ ج |
| তামার জন্যে অবশ্যই এমন এক পুরস্কার রয়েছে যা কোনোদিনই নিশেষ হবে না, | ٣ وَإِنَّ لَكَ لَاَهْرًا غَيْرَ مَنْنُونٍ ٤ |
| নিসন্দেহে তুমি মহান চরিত্রের ওপর (প্রতিষ্ঠিত) রয়েছো। | ٣ وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيْرٍ |
| ৫. (সেদিন খুব দূরে নয় যখন) তুমি ও (তোমাকে যারা পাগল বলে) তারা সবাই দেখতে পাবে যে, | ۵ فَسَتُبْهِرُ وَيُبْهِرُونَ ٧ |
| ৬. তোমাদের মধ্যে (আসলে) কে বিকারগ্রস্ত (পাগল) ছিলো! | ٣ بِٱلِّكُرُ الْهَفْتُونَ |
| তোমার মালিক ভালো করেই জ্ঞানেন (তোমাদের মধ্যে) কোন্ ব্যক্তি পথত্রষ্ট হয়ে গেছে, (আবার) যারা | ٤ إِنَّ رَبُّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِهَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ س |
| সঠিক পথের ওপর রয়েছে আল্লাহ তায়ালা তাদের সম্পর্কেও সম্যক ওয়াকেফহাল রয়েছেন। | وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَارِيْنَ |
| ৮. অতএব তুমি এ মিধ্যা প্রতিপন্নকারীদের অনুসরণ করো না। | ^ فَلَا تُطِعِ الْهُكَلِّ بِيْنَ |
| ৯. তারা (তো তোমার এ নমনীয়তাটুকুই) চায় যে, তুমি (তাদের কিছু) গ্রহণ করো! অতপর তারাও (তোমার কিছু) গ্রহণ করবে। | ٩ وَدُّوْ ا لَوْ تُنْمِنُ فَيُنْمِنُونَ |
| ১০. যারা বেশী বেশী কসম করে (পদে পদে) লাঞ্ছিত হয়, এমন লোকদের তুমি কখনো অনুসরণ করো না, | ١٠ وَلَا تُطِعْ كُلُّ مَلَّانِ مَّوِيْنٍ لا |
| ১১. যে (বেহুদা) গালমন্দ করে, (খামাখা মানুষদের) অভিশাপ দেয় এবং চোগলখোরী করে বেড়ায়, | ١١ مَهَّازِ مُثَّاءً عِنعِيمٍ ٧ |
| ১২. যে ভালো কাজে বাধা সৃষ্টি করে, (অন্যায়ভাবে) সীমালংঘন করে, (সর্বোপরি) যে পাপিষ্ঠ, | ١٢ مَّنَّاعِ لِلْحَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيْرٍ ٧ |
| ১৩. যে কঠোর স্বভাবের অধিকারী, এরপর যে (জন্ম পরিচয়ের দিক থেকেণ্ড) জারজ, | ١٣ عُتُلٍّ بَعْلَ ذٰلِكَ زَنِيْرٍ ٧ |
| ১৪. যেহেতু সে (বিপুন) ধনরাশি ও (অনেকগুলো) সন্তান সন্ততির অধিকারী; | ١٣ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ١٠ |
| ১৫. এ লোককে যখন আমার 'আয়াতসমূহ' পড়ে শোনানো হয় তখন সে বলে, এগুলো তো হচ্ছে আগের দিনের গল্প কাহিনী মাত্র! | 10 إِذَا تُتْلَى عَلَيْهِ أَيْتُنَا قَالَ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ |
| ১৬. (এ অংংকারী ব্যক্তিটিকে ভূমি দ্বানিয়ে রাখো,) অচিরেই আমি তার শুড়ে দাগ দিয়ে (তাকে চিহ্নিত করে) দেবো। | ١٦ سَنَسِّهُ عَلَى الْخُرْطُومِ |
| ৬৮ সূরা আল ঝুলাম | भनियल १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|---|
| ১৭. অবশ্যই আমি এ (জনপদের) মানুষদের পরীক্ষা করেছি, যেমনি (অতীতে) আমি একটি ফলের বাগানের | ١٤ إِنَّا بَلَوْنُهُرْ كَهَا بَلَوْنَاۤ ٱصْحٰبَ الْجَنَّةِ ع |
| কতিপয় মালিককে পরীক্ষা করেছিলাম, (সে পরীক্ষাটা ছিলো, এমন যে, একদিন) তারা সবাই (একযোগে) | إِذْ ٱقْسَهُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ لا |
| শপথ করে বলেছিলো, অবশ্যই তারা সকাল বেলায় গিয়ে | |
| (বাগানের) ফল পাড়বে, ১৮. (এ সময়) তারা (আল্লাহ তায়ালার ইচ্ছা ও অভিপ্রায় সম্বলিত) কিছুই (এর সাথে) যোগ করেনি। | ١٨ وَلَا يَسْتَثَنُونَ |
| ১৯. তখন (ভোর হতে না হতেই) তোমার মালিকের পক্ষ থেকে তার ওপর এক বিপর্যয় এসে পড়লো, (তখনো) তারা ছিলো গভীর ঘুমে (বিভোর)। | 19 فَطَانَ عَلَيْهَا طَّائِفٌ مِّنْ رَبِّكَ وَهُرْ نَائِبُوْنَ |
| ২০. অতপর সকাল বেলায় তা মধ্যরাতের কৃষ্ণ বর্ণের মতো কালো হয়ে গেলো। | ٢٠ فَأَصْبَعَتْ كَالِصِّرِيْرِ لا |
| ২১. (এদিকে) সকাল হতেই তারা (এই বলে) একে অপরকে ডাকাডাকি করতে লাগলো, | ٢١ فَتَنَادُوْا مُصْبِحِيْنَ ٧ |
| ২২. তোমরা যদি (সত্যিই) ফল আহরণ করতে চাও তাহলে সকাল সকাল নিজেদের বাগানের দিকে চলো। | ٢٢ أَنِ اغْدُوْا عَلَى حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَارِمِيْنَ |
| ২৩. (অতপর) তারা সেদিকে রওনা দিলো, (পথের মধ্যে) ফিসফিস করে নিজেদের মধ্যে বলাবলি করতে লাগলো, | ٢٣ فَاثْطَلَقُواْ وَمُرْ يَتَحَافَتُونَ ٧ |
| ২৪. কোনো অবস্থায়ই যেন আজ কোনো (দুস্থ ও) মেসকীন ব্যক্তি ভোমাদের ওপর (টেক্কা) দিয়ে বাগানে এসে প্রবেশ করতে না পারে, | ٢٣ أَنْ لا يَلْغُلُّنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُرْ مِّسْكِيْنَ ٧ |
| ২৫. তারা সকাল বেলায় সংকল্পবন্ধ হয়ে এসে হাযির হলো, (যেন) তারা নিজেরাই (আজ সব ফসল তুলতে) সক্ষম হয়। | ٢٥ وَّغَدَوْ عَلَى حَرْدٍ قَادِرِيْنَ |
| ২৬. অতপর যখন তারা সে (বাগানের) দিকে তাকিয়ে দেখলো, তখন (হতভম্ব হয়ে) বলতে লাগলো (একি! এটা তো আমাদের বাগান নয়), আমরা নিক্তয়ই পথভ্রষ্ট (হয়ে পড়েছি), | ٢٦ فَلَهًا رَأُوْهَا قَالُوْ آ إِنَّا لَضَالُّوْنَ ٧ |
| ২৭. (না, আসলেই) আমরা (আজ) মাহরূম হয়ে গেছি! | ٢٠ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ |
| ২৮. (এ মুহুর্তে) তাদের মধ্যকার একজন ভালো মানুষ (তাদের) বললো, আমি কি তোমাদের বলিনি (সব | ٢٨ قَالَ أَوْسَطُهُرْ أَلَىرْ أَقُلُ لَّكُمْ لَوْلَا |
| কাজের ব্যাপারে আল্লাহর ওপরই ভরসা করবে), কতো ভালো হতো যদি তোমরা (আগেই আল্লাহ তায়ালার মহান নামের) 'তাসবীহ' পড়ে নিতে! | تُسْرِحُونَ |
| ২৯. (এবার নিজেদের ডুল বুঝতে পেরে) তারা বললো, (সত্যিই) আমাদের মালিক আল্লাহ তায়ালা অনেক মহান, অনেক পবিত্র, (তাঁর নাম না নিয়ে) আমরা (আসলেই) যালেম হয়ে পড়েছিলাম। | ٢٩ قَالُوْا سُبْعِٰنَ رَبِّنَا ۚ إِنَّا كُنَّا ظَلِمِيْنَ |
| ৩০. (এভাবে) তারা পরস্পর পরস্পরকে তিরস্কার করে একে অপরের ওপর দোষারোপ করতে লাগলো। | ٣٠ فَٱقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُونَ |
| ৩১. তারা (আরো) বললো, দুর্ভাগ্য আমাদের, (মৃশত) আমরা তো সীমালংঘনকারী (হয়ে পড়েছি)। | ٣١ قَالُوْا يُوَيْلَنَا ۚ إِنَّا كُنَّا طَغِيْنَ |
| ৩২. আশা করা যায় আমাদের মালিক (পার্ধিব দ্বিনিসের) বদলে (আব্দেরাডে) এর চাইতে উৎকৃষ্ট (কিছু আমাদের) দান করবেন, আমরা আমাদের মালিকের দিকেই ফিরে যাচ্ছি। | ٣٣ عَسٰى رَبُّنَآ أَنْ يُّبْدِلَنَا هَيْرًا مِّنْهَآ إِنَّآ إِلَى رَبِّنَا رَاغِبُوْنَ |
| I 454(24) MINA MINICHA MINICAS INCAS INCAS INCAS INCAS | |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---------------------|---|---|
| नात्यभ | ৩৩. আযাব এভাবেই (নাযিল) হয়, আর পরকালের আযাব, তা তো অনেক গুরুতর। কতো ভালো হতো যদি | ٣٣ كَنْ لِكَ الْعَنَ الْ وَلَعَنَ اللَّهِ الْأَخِرَةِ |
| <u> उग्नाक्त्</u> क | তারা তা জানতে পেতো! | أَكْبَرُ مِ لَوْ كَانُوْ إِيعْلَهُونَ ع |
| | ৩৪. (অপরদিকে) যারা আল্লাহ তায়ালাকে ভয় করে চলে তাদের জন্যে অবশ্যই তাদের মালিকের কাছে (অফুরন্ত) নেয়ামতে ভরপুর জান্নাত রয়েছে। | ٣٣ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْكَ رَبِّهِمْ جَنَّتِ النَّعِيْرِ |
| W | ৩৫. যারা আমার আনুগত্য করে তাদের সাথে আমি কি অপরাধীদের মতো (একই ধরনের) আচরণ করবোঃ | ٣٥ أَفَنَجُعَلُ الْهُسْلِمِيْنَ كَالْهُجْرِمِيْنَ ، |
| | ৩৬. এ কি হলো ভোমাদের। (আমার ইনসাফ সম্পর্কে) এ কি সিদ্ধান্ত ভোমরা করছো? | ٣٦ مَا لَكُمْ وَنِنَا كَيْفَ تَحْكُمُونَ عَ |
| | ৩৭. তোমাদের কাছে কি এমন কোনো আসমানী কেতাব আছে যাতে তোমরা (এ কথাটা) পড়েছো যে, | ٣٤ أَمْ لَكُورُ كِتُبُّ فِيهِ تَنْ رُسُونَ ٧ |
| | ৩৮. সেখানে তোমাদের জন্যে সে ধরনের সব কিছুই সরবরাহ করা হবে, যা তোমরা তোমাদের জন্যে পছন্দ করবে, | ٣٨ إِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَهَا تَخَيَّرُونَ عَ |
| | ৩৯. না আমি তোমাদের সাথে কোনো চুক্তিতে স্বাক্ষর করেছি– এমন চুক্তি, যা কেয়ামত পর্যস্ত মানা | ٣٩ أَ ٱلكُرْ آيْهَانُ عَلَيْنَا بَالِغَدُّ إِلَى يَوْإِ |
| | বাধ্যতামূলক হবে, এর মাধ্যমে তোমরা যা কিছু দাবী করো তাই তোমরা পাবে, | الْقِيلَهَةِ لا إِنَّ لَكُرْ لَهَا تَحْكُمُوْنَ ع |
| | ৪০. তুমি এদের জিজ্ঞেস করো, তোমাদের মধ্যে কে এ দায়িত্ব নিতে পারে, | ٢٠ سَلْهُرُ ٱلنَّهُرُ بِنَٰ لِكَ زَعِيْرٌ ۚ ۚ ۚ |
| | ৪১. (নিজেরা না পারলে) তাদের কি (অন্য কোনো)অংশীদার আছে? যদি তারা সত্যবাদী হয় তাহলে তারা | ام أَمُ لَهُمْ شُرَكَاءً ، فَلْيَاتُوا بِشُركَالِهِمْ إِنْ |
| | তাদের অংশীদারদের সবাইকে নিয়ে আসুক! | كَانُوْا صَٰرِقِيْنَ |
| | ৪২. (স্বরণ করো,) যেদিন (যাবতীয়) রহস্য উদঘাটিত হয়ে পড়বে, তখন তাদের সাজদাবনত হওয়ার আহ্বান জানানো হবে, এসব (হতভাগ্য) ব্যক্তি (কিন্তু সেদিন | ٣٢ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُكُوْمُونَ إِلَى |
| | সাজদা করতে) সক্ষম হবে না, | السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيْعُونَ لا |
| | ৪৩. দৃষ্টি তাদের নিম্নগামী হবে, অপমান তাদের ভারাক্রান্ত করে রাখবে; (দুনিয়ায় এমনি করে) ্যখন | ٣٣ غَاشِعَةً ٱبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةً ، وَقَلْ |
| | তাদের আল্লাহর সম্মুখে সাজদা করতে ডাকা হয়েছিলো, (তখন) তারা সুস্থ (ও সক্ষম) ছিলো। | كَانُوْا يُدْعَوْنَ إِلَى السَّجُوْدِ وَهُرْ سَالِمُوْنَ |
| | ৪৪. (হে নবী,) অতপর তুমি আমাকে ছেড়ে দাও, যে আমার এ কেতাব অুস্বীকার করে (তার ধেকে আমি গ্রতিশোধ | ٣٣ فَلَارْنِي وَمَنْ يَّكَلِّبُ بِمِٰنَا الْحَرِيْثِ و |
| | নেরা), আমি ধীরে ধীরে এদের (এমন ধ্বংসের) দিকে ঠেলে নিয়ে যাবো যে, এরা তার কিছুই টের পাবে না, | مستورِ بهر رق حیث ۱ یستون ۱ |
| | ৪৫. আমি এদের অবকাশ দিয়ে রাখি, (অপরাধীদের ধরার) আমার এ কৌশল অত্যন্ত কার্যকর। | ٥٥ وَ أُمْلِي لَهُرْ اللَّهِ كَيْدِي مَتِيْنَ اللَّهِ مَا لِنَّا كَيْدِي مَتِيْنَ اللَّهِ |
| | ৪৬. তুমি কি এদের কাছে কোনো পারিশ্রমিক দাবী করছো যে, এরা তার দভ্ডারে একেবারে অচল হয়ে পড়েছে? | ٢٦ أَأَ تَشْنَلُهُمْ أَجْرًا فَهُرْ مِّنْ مُّفْرٍ إِشْقَلُونَ ع |
| মু | ৪৭. না তাদের কাছে অজানা জগতের কোনো খবর রয়েছে যা তারা লিখে রাখে! | ٢٠ أَمْ عِنْكَهُرُ الْغَيْبُ فَهُرْ يَكْتُبُونَ |
| त्क लात्यम | ৪৮. (হে নবী,) তুমি (বরং) তোমার মালিকের কাছ থেকে সিদ্ধান্ত আসার জ্বন্যে ধৈর্য ধারণ করো এবং (এ ব্যাপারে) মাছের | الما فالنبو لِلعَامِرِ رَبِّتُ وَلاَ لَنَيْ تَعَامِدِ |
| ওয়াক্ফে | ঘটনার সাথী (নবী ইউনুস)-এর মতো হয়ো না। যখন সে দুঃখে ভারাক্রান্ত হয়ে আল্লাহ তায়ালাকে ডেকেছিলো; | الْحُوْن ِ رِإِذْ نَادى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۚ ج |
| | ৬৮ সূরা আল ক্বালাম | भनियम १ |

| CALARTIN WITH THE TIME THE THE THE | व्यय ६६ ज्यासकानानी |
|---|--|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
| ৪৯. তখন যদি তার মালিকের অনুগ্রহ তার ওপর না থাকতো, তাহলে সে উনুক্ত সাগরের তীরে পড়ে থাকতো | ٣٩ لَوْ٧َ آنْ تَنْرَكَهُ نِعْمَةٌ مِّنْ رَبِّهٖ لَنُينَ |
| এবং (এজন্যে) সে নিজেই দায়ী হতো। | بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَنْهُومٌ |
| ৫০. অতপর তার মালিক তাকে বাছাই করলেন এবং তিনি তাকে (তাঁর) নেক বান্দাদের (কাতারে) শামিল করে | ٥٠ فَاجْتَبْهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّلِحِيْنَ |
| নিলেন। | |
| ৫১. কাফেররা যখন আল্লাহর কেতাব শোনে তখন এমনভাবে তাকায় যে, এক্ষুণি বুঝি এরা নিজেদের দৃষ্টি | ٥١ وَإِنْ يَّكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ |
| দিয়ে তোমাকে আছড়ে ঘায়েল করে দেবে, তারা একথাও | بِٱبْصَارِهِيرْ لَمَّا سَبِعُوا النِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ |
| বলে, সে (কেতাবের বাহক) একজন পাগল। | لَهُجُنُونَ م |
| ৫২. অথচ (এরা জানে না,) এ কেতাব তো মানবমন্ডলীর জন্যে একটি উপদেশ বৈ কিছুই নয়! | ٥٢ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَلَمِينَ ع |
| | سُوْرَةُ الْكَآتَّةِ مُكِّلَةً |
| সুরা আল হাকাহ | • |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ–আয়াত ৫২, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে− | ایکات : ۵۲ وکُوع : ۲ |
| ACAD ACIA SIBIL SIGNATURA | بِسْرِ اللهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْمِ |
| ১. একটি অনিবার্য সত্য (ঘটনা)! | ا أَلْحَاقَتُ ع |
| ২. কি সেই অনিবার্য সত্য (ঘটনা)? | ٢ مَا إِلْصَاقَةُ ع |
| ৩. তুমি কি জানো সেই অনিবার্য সত্য ঘটনাটা আসলেই কিঃ | ٣ وَمَا ٱدْرِيكَ مَا الْحَاقَّةُ ، |
| আ'দ ও সামুদ জাতির লোকেরা মহাপ্রলয় (সংক্রান্ত এমনি একটি সত্য ঘটনা)-কে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো। | م كَنَّابَتُ ثَهُوْدُ وَعَادًا بِالْقَارِعَةِ |
| विभाग गर्भ विभाग- दिन विभाग व्यास्थ्य स्था स्था । | |
| ৫. (পরিণামে দায়্বিক) সামুদ গোত্রের লোকদের এক প্রলয়ংকরী বিপর্যয় দারা ধ্বংস করে দেয়া হয়েছে। | ۵ فَأَمًّا ثُمُودٌ فَأَهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ |
| ৬. আর (শক্তিশালী গোত্র) আ'দকে ধ্বংস করা হয়েছে প্রচন্ড এক ঝঞ্জাবায়ুর আঘাতে, | ٢ وَ أَمَّا عَادُّ فَٱهْلِكُوا بِرِيْعِ صَرْصَرِ عَاتِيَةٍ ٧ |
| | ٧ [الْ الْ الْحَدْدُ أَمْ الْ الْحَدْدُ الْحَدُ الْحَدْدُ الْحَدُولُ الْحَدْدُ الْحَدُولُ الْحَدْدُ الْحُدُولُ الْحَدْدُ الْحُدُولُ الْحَدْدُ الْحُدُولُ الْحُدُولُ الْحُدُولُ الْحُدُولُ الْحُدُولُ الْحَدْدُ الْعُدُولُ الْعُدُولُ الْحَدُولُ الْحُدُولُ الْحُدُولُ الْحُدُولُ الْعُلْعُلُولُ الْعُلْ |
| একটানা সাত রাত ও আট দিন ধরে তিনি তাদের ওপর দিয়ে এ প্রচন্ড বায়ু প্রবাহিত করে রেখেছিলেন, (তাকালে) তুমি (সে) জাতিকে দেখতে পেতে, তারা যেন মৃত খেজুর গাছের কতিপয় অন্তসারশূন্য কাভের মতো | ا حُسُومًا لا فَتَدَى الْقَوْرَ فَيْهَا مُرْعَى لا كَانَّهُمْ |
| মৃত খেজুর গাছের কতিপয় অন্তসারশূন্য কাভের মতো উপুড় হয়ে পড়ে আছে! | أعْجَازُ نَحْلٍ غَاوِيَةٍ ع |
| ৮. তুমি কি দেখতে পাচ্ছো– তাদের একজনও কি এ গযব থেকে রক্ষে পেয়েছে! | ٨ فَهَلْ تَرٰى لَهُرْ مِّنْ ا بَاقِيَةٍ |
| ৯. (দাভিক) ফেরাউন, তার আগের কিছু লোক এবং উপড়ে ফেলা জনপদের অধিবাসীরাও (একই) অপরাধ নিয়ে (ধ্বংসের মুখোমুখি) এসেছিলো, | ٩ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَن تَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكْتُ بِالْخَاطِئةِ ع |
| ১০. এরা সবাই (নিজ নিজ যুগে) তাদের মালিকের পক্ষ থেকে যারা রসূল হয়ে এসেছে তাদের অবাধ্যতা করেছে, | ١٠ فَعَصُوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَاَعَلَهُمْ ٱعْلَىَّهُمْ اَعْلَىَّةً |
| ফলে আল্লাহ তাঁয়ালা (এ বিদ্রোহের জন্যে) তাদের | ر ابية المراد و المراد الم المراد المراد المرا |
| কঠোরভাবে পাকড়াও করলেন। ৬৯ সূরা আল হাক্কাহ | |
| ०७ रूमा जान राकार | भनियंद्य १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|---|
| ১১. (নবী নৃহের সময়) যখন পানি (তার নির্দিষ্ট) সীমা অতিক্রম করলো, তখন আমি তোমাদের (বাঁচানোর জন্যে) নৌকায় উঠিয়ে নিয়েছিলাম, | |
| ১২. যেন তোমাদের জন্যে আমি তাকে একটি শিক্ষামূলক ঘটনা বানিয়ে রাখতে পারি, তাছাড়া উৎসাহী কানগুলো যেন এ (বিষয়)-টা (পরবর্তী মানুষদের জন্যে) স্বরণ রাখতে পারে। | ١٢ لِنَجْعَلَهَا لَكُرْ تَلْكِرَةً وَّتَعِيَهَا أَذُنَّ وَّاعِيَةٌ |
| ১৩. অতপর যখন শিংগায় ফুঁ দেয়া হবে− (তা হবে প্রথমবারের) একটি মাত্র ফুঁ, | ١٣ فَاِذَا نُفِحَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَّاحِلَةٌ ٧ |
| ১৪. আর (তখন) ভূমন্ডল ও পাহাড় পর্বত (স্বস্থান থেকে) উঠিয়ে নেয়া হবে, অতপর উভয়টাকে একবারেই (একটা আরেকটার ওপর ফেলে) চূর্ণবিচূর্ণ করে (লভভন্ড করে) দেয়া হবে, | |
| ১৫. (ঠিক) সেদিনই (সে) মহাঘটনাটি সংঘটিত হবে, | 10 فَيَوْمَئِلِ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ 4 |
| ১৬. এবং আকাশ ফেটে পড়বে, অতপর সেদিন তা বিক্ষিপ্ত হয়ে যাবে, | ١٦ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِنٍ وَّاهِيَةً ٧ |
| ১৭. ফেরেশতারা (আল্লাহর আদেশ পালন করার জন্যে) আকাশের প্রান্তে অবস্থান করবে; আর (তাদেরই) আট জন ফেরেশতা তোমার মালিকের 'আরশ' তাদের ওপর | ١٤ وَّالْهَلَكُ عَلَى ٱرْجَالِهَا ﴿ وَيَحْمِلُ عَرْشَ |
| বহন করে রাখবে; | رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَنِنِ ثَهَٰنِيَةً ١ |
| ১৮. সেদিন (খাল্লাহ ডায়ালার সামনে) তোমাদের পেশ করা হবে, তোমাদের কোনো কিছুই (সেদিন) গোপন থাকবে না। | ١٨ يَوْمَئِنٍ تُعْرَضُونَ ﴾ تَخْفَى مِنْكُرْ عَافِيَةٌ |
| ১৯. সেদিন যার আমলনামা তার ডান হাতে দেয়া হবে সে (খুশীতে লোকজনকে ডেকে) বলবে, তোমরা (কে কোথায় আছো এসো) এবং আমার (আমলনামার) পুস্তকটি পড়ে দেখো। | 19 فَاَمَّا مَنْ أُوْتِي كِتٰبَهٌ بِيَهِيْنِهِ لا فَيَقُوْلُ هَاوُّاً الْرَءُوْ كِتٰبِيَهُ ع |
| ২০. হাঁ, আমি জানতাম আমাকে একদিন এমনি হিসাব নিকাশের সামনাসামনি হতে হবে, | ٢٠ إِنِّيْ ظَنَنْتُ ٱنِّيْ مُلْقٍ حِسَابِيَهُ ، |
| ২১. অতপর (বেহেশতের উদ্যানে) সে (চির) সুখের জীবন যাপন করবে, | ٢١ فَمُوَ فِي عِيْهَةٍ رَّاضِيةً لِا |
| ২২. (সে উদ্যান হবে) আলীশান জ্বান্নাতের মধ্যে, | ۲۲ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٧ |
| ২৩. এর ফলমূল (তাদের) নাগালের মধ্যেই ঝুলতে থাকবে। | ٢٣ قُطُوفُهَا دَانِيَةً |
| ২৪. (আল্লাহর পক্ষ থেকে অভিনন্দনপূর্ণ ঘোষণা আসবে,) অতীতে যা তোমরা (কামাই) করে এসেছো তারই পুরস্কার হিসেবে (আজ) তোমরা (প্রাণভরে এগুলো) খাও | |
| এবং তৃপ্তি সহকারে পানীয় গ্রহণ করো। | الْأَيَّا ِ الْخَالِيَةِ |
| ২৫. (আর সে হতভাগ্য ব্যক্তি), যার আমলনামা সেদিন তার বাম হাতে দেয়া হবে, (দুঃখ ও অপমানে) সে বলবে, কতো ভালো হতো যদি (আজ) আমাকে কোনো রকম আমলনামাই না দেয়া হতো, | ٢٥ وَأَمَّا مَنْ ٱوْتِى كِتٰبَهَ بِشِهَالِهِ لَا فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمِرْ ٱوْتَ كِتٰبِيَهُ ج |
| ২৬. আমি যদি আমার হিসাব (-এর গাজটি) না-ই জানতাম্, | ٢٦ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهُ ج |
| ২৭. হায়! (আমার প্রথম) মৃত্যুই যদি আমার জন্যে চ্ড়ান্ত নিম্পত্তিকারী (বিষয়) হয়ে যেতো! | ٢٠ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ع |
| ৬৯ সূরা আল হাকাহ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|--|
| ২৮. আমার ধন সম্পদ ও ঐশ্বর্য (আজ) কোনো কাজেই লাগলো না, | ٢٨ مَا ۖ أَغْنَى عَنِّي مَالِيَهُ ج |
| ২৯. (আজ) আমার সব কর্তৃত্ব (ও ক্ষমতা) নিশেষ হয়ে গেলো, | ٢٩ هَلَكَ عَنِّى سُلْطِنِيَهُ ج |
| ৩০. (এ সময় জাহান্নামের প্রহরীদের প্রতি আদেশ আসবে, যাও) তোমরা তাকে পাকড়াও করো, এরপর তার গলায় শেকল পরিয়ে দাও, | ٣٠ خُلُوهٌ فَغُلُوهُ ٧ |
| ৩১. অতপর তাকে জাহান্নামের (জ্বলম্ভ) আগুনে প্রবেশ করাও | ٣١ ثُرِّ الْجَحِيْرَ مَلُّوْهُ ٧ |
| ৩২. এবং তাকে সন্তর গজ শেকল দিয়ে বেঁধে ফেলো; | ٣٣ ثُرِّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاشْلُكُوْهُ ا |
| ৩৩. কেননা, সে কখনো মহান আল্লাহর ওপর বিশ্বাস স্থাপন করেনি, | ٣٣ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيْرِ لا |
| ৩৪. সে কখনো দুস্থ অসহায় লোকদের খাবার দেয়ার জন্যে (অন্যদের) উৎসাহ দেয়নি; | ٣٣ وَلَا يَحُضُّ عَلَى طَعَامِ الْبِسْكِيْنِ ١ |
| ৩৫. (আর এ কারণেই) আজকের এ দিনে তার প্রেতি দয়া দেখানোর) কোনো বন্ধু নেই, | ٣٥ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُهُنَا حَبِيْرٌ لا |
| ৩৬. (ক্ষতনিসৃত) পুঁজ ছাড়া (আজ তার জন্যে দ্বিতীয়) কোনো খাবারও এখানে থাকবে না, | ٣٦ وَكُو طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِيْنِ لِا |
| ৩৭. একান্ত অপরাধী ব্যক্তিরা ছাড়া অন্য কেউই (আজ) তা খাবে না। | ٣٤ لا يَاْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ع |
| ৩৮. তোমরা যা কিছু দেখতে পাও আমি তার শ্বপথ করছি, | ٣٨ فَلَا ٱتْسِرُ بِهَا تُبْصِرُونَ ٧ |
| ৩৯. (আরো শপথ করছি) সেসব বস্তুর- যা তোমরা দেখতে পাও না, | ٣٩ وَمَا لَا تُبْعِرُوْنَ لا |
| ৪০. নিসন্দেহে এ কেতাব একজন সন্মানিত রস্লের (আনীত) বাণী, | ٣٠ إِنَّا لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ٧ |
| ৪১. এটা কোনো কবির কাব্যকথা নয়; যদিও তোমরা খুব কমই বিশ্বাস করো, | ٣١ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ هَاعِرٍ ﴿ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ٧ |
| ৪২. এটা কোনো গণক কিংবা জ্যোতিষীর কথাও নয়; যদিও তোমরা খুব কমই বিবেক বিবেচনা করে চলো; | ٣٣ وَلَا بِقُولِ كَاهِنٍ ﴿ قَلِيْلًا مَّا تَنَكَّرُونَ ﴿ |
| ৪৩. (মূলত) এ কেতাব বিশ্বজগতের মালিক আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকেই (তাঁর বসূলের ওপর) নাযিল করা হয়েছে। | ٣٣ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعُلَمِيْنَ |
| ৪৪. রসূল যদি এ (গ্রন্থ)-টি নিজে বানিয়ে আমার নামে চালিয়ে দিতো, | ٣٣ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْإَقَاوِيْلِ لِا |
| ৪৫. তবে আমি অবশ্যই শক্তভাবে তার ডান হাত ধরে ফেলতাম, | ٣٥ لَاَ هَاٰنَا مِنْهُ بِالْيَوِيْنِ ٧ |
| ৪৬. অতপর আমি তার কণ্ঠনালী কেটে ফেলে দিতাম, | ٣٦ ثُرُّ لَقَطَعْنَا مِنْدُ الْوَتِيْنَ رَاءِ |
| ৪৭. আর (সে অবস্থায়) তোমাদের কেউই তাকে তাঁর থেকে বাঁচাতে পারতো না! | ٣٠ فَهَا مِنْكُرْ مِّنْ أَحَلٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ |
| ৪৮. (সত্যি কথা হচ্ছে,) আল্লাহ তায়ালাকে যারা ভয় করে, এ কেতাব তাদের জন্যে উপদেশ বৈ কিছু নয়! | ٢٨ وَإِنَّهُ لَتَنْكِرَةً لِّلْمُتَّقِينَ |
| ৬৯ সূরা আল হাক্কাহ ৫৯৪ | মন্যিল ৭ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|--|
| ৪৯. আমি ভালো করেই জানি, তোমাদের একদল লোক হবে এ (কেতাব)-কে মিথ্যা সাব্যস্তকারী। | ٣٩ وَإِنَّا لَنَعْلَرُ أَنَّ مِنْكُرْ مَّكَنِّبِيْنَ |
| ৫০. এটি তাদের জন্যে গভীর অনুতাপ ও হতাশার কারণ হবে, যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) অম্বীকার করে। | ٥٠ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكُغِرِيْنَ |
| ৫১. নিসন্দেহে এ মহাগ্রন্থ এক অমোঘ সত্য। | ٥١ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ |
| ে ৫২. অতএব (হে নবী, এমনি একটি গ্রন্থের জন্যে) তুমি তোমার মহান মালিকের নামের পবিত্রতা বর্ণনা করো। | ۵۲ فَسَبِّحُ بِاشْرِ رَبِّكَ الْعَظِيْرِ ع |
| সুরা আ ল মা' য়ারেজ | سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِيَّةً |
| ম ক্কা য় অবতীর্ণ–আয়াত ৪৪, রুকু ২ | أَيَاتٌ : ٣٣ رُكُوعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ |
| ১. (একজন) প্রশ্নকারী ব্যক্তি (আল্পাহ তায়ালার প্রতিশ্রুত অমোঘ ও) অবধারিত আযাব (দ্রুত) পেতে চাইলো, | ١ سَالَ سَائِلُ المِعَنَابِ وَاقِعٍ ٧ |
| ২. (এ আযাব তো) হচ্ছে কাফেরদের জন্যে, তার প্রতিরোধকারী কিছুই নেই, | ٢ لِلْكُفِرِيْنَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ٧ |
| ৩. (এ আযাব আসবে) সমুন্নত মর্যাদার অধিকারী আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে; | ٣ مِّنَ اللَّهِ نِي الْهَعَارِجِ ، |
| ४. ফেরেশতাকুল ও (তাদের নেতা জিবরাঈল) 'রহ' আল্লাহর দিকে আরোহণ করে এমন একটি দিনে, যার পরিমাণ পঞ্চাশ হাজার বছর, | ٣ تَعْرُجُ الْمَلَئِكَةُ وَالرُّوْحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْنَ ارُةً خَمْسِيْنَ ٱلْفَ سَنَةِ ع |
| ৫. অতএব (হে নবী, কাফেরদের ব্যাপারে) তুমি উত্তম ধর্য ধারণ করো। | ٥ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَعِيلًا |
| ৬. কাম্পেররা (তাদের) এ (অবধারিত আযাব)-কে একটি দূরের (ব্যাপার) হিসেবেই দেখতে পায়, | ٣ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيْدًا ٧ |
| ৭. অথচ আমি তো তা দেখতে পাচ্ছি একেবারে আসন্ন; | ٤ وَّنَرِيهُ قَرِيبًا ١ |
| ৮. যেদিন আসমান গলিত তামার মূতো হরে যাবে, | ^ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّبَاءُ كَالْبُهْلِ y |
| ৯. আর পাহাড়গুলো হবে (রং বেরংয়ের) ধুনা পশমের মতো, | ٩ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ |
| ১০. (সেদিন) এক বন্ধু আরেক বন্ধুর খবর নেবে না, | ١٠ وَلَا يَسْئَلُ مَوِيْرٌ مَوِيْمًا عل |
| ১১. অথচ তারা একজন আরেকজনকে সুস্পষ্টভাবে দেখতে পাবে, (সেদিন) অপরাধী ব্যক্তি আযাব থেকে (নিজেকে) বাঁচাতে মুক্তিপণ হিসেবে তার পুত্র সম্ভানদের দিতে পারলেও তা দিতে চাইবে, | اا يَّبَصُّرُوْنَمُرْ ، يَوَدُّ الْهُجْرِا ۖ لَوْ يَفْتَدِى مِنْ عَنَابِي مِنْ عَنَابِي مِنْ عَنَابِ يَوْمِئِنِ الْمِبَنِيْدِ لا |
| ১২. (দিতে চাইবে) নিজের ন্ত্রী এবং নিজের ভাইকেও | ١٢ وَصَاهِبَتِهِ وَ أَغِيْدِ ٧ |
| ১৩. এবং নিজের পরিবারভুক্ত এমন আপনজনদেরও, যারা তাকে (জীবনভর) আশ্রয় দিয়েছিলো, | ٣٠ وَنَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُنُوِيْهِ ٧ |
| ৭০ সূরা আল মা'য়ারেজ ৫৯৫ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|---|
| ১৪. (সম্ভব হলে) ভূমন্ডলের সবকিছুই (সে দিতে চাইবে), তারপরও (জাহান্নাম থেকে) সে বাঁচতে চাইবে, | ١٣ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا لا تُرَّ يُنْجِيْدِ لا |
| ১৫. না (কোনো কিছুর বিনিময়েই তা থেকে সেদিন বাঁচা যাবে না); সে (জাহান্নাম) হচ্ছে একটি প্রজ্বলিত আগুনের লেলিহান শিখা, | 1۵ كَلَّاء إِنَّهَا لَظٰى ٧ |
| ১৬. যা চামড়া ও তার আভ্যন্তরীণ মাংসগুলোকে খসিয়ে দেবে, | ١٦ نَزَّاعَةً لِّلشُّوٰى عمله |
| ১৭. (সেদিন) সে (আগুন) এমন সব লোকদের (নিজের দিকে) ডাকবে, যারা (দুনিয়ার জীবনে অবহেলা করে তা থেকে) ফিরে গিয়েছিলো এবং পৃষ্ঠ প্রদর্শন করেছিলো, | 14 تَنْعُوْا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى لا |
| ১৮. (যারা দুনিয়ার জীবনে বিপুল) ধনরাশি জমা করে তা একান্তভাবে আগলে রেখেছিলো। | ١٨ وَجَهَعَ فَأَوْعَٰى |
| ১৯. (আসলে) মানুষকে সৃষ্টিই করা হয়েছে খুব (সংকীর্ণ মনের এক) ভীরু জীব হিসেবে, | 19 إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ مَلُوْعًا لا |
| ২০. যখনি তার ওপর কোনো বিপদ আসে তখন সে ঘাবড়ে যায়, | ٢٠ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا لا |
| ২১. (আবার) যখন তার সচ্ছলতা ফিরে আসে তখন সে (আগের কথা ভূলে গিয়ে) কার্পণ্য করতে আরম্ভ করে, | ٢١ وَّإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ٧ |
| ২২. (কিন্তু) সেসব শোকদের কথা আশাদা যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, | ٢٢ إِلَّا الْهُصَلِّينَ ٧ |
| ২৩. যারা নিজেদের নামাযে সার্বক্ষণিকভাবে কায়েম থাকে, | ٢٣ الَّذِينَ مُرْعَلَى صَلَاتِهِرْ دَانِيُوْنَ سِلا |
| ২৪. (যারা বিশ্বাস করে) তাদের সম্পদে সুনির্দিষ্ট অধিকার আছে– | ٢٣ وَالَّذِينَ فِي آَمُوالِهِم مَقٌّ معلُومٌ ملا |
| ২৫. এমন সব লোকদের, যারা (অভাবের তাড়নায় কিছু পেতে) চায় এবং যারা (যাবতীয় সুযোগ সুবিধা থেকে) বঞ্চিত, | ٢٥ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُوْ إِ ١٠٧ |
| ২৬. (তারাও নয়-) যারা বিচার দিনের সত্যতা স্বীকার করে, | ٢٦ وَ الَّذِيْنَ يُصَرِّقُوْنَ بِيَوْ إِ الرِّيْنِ ٢٧ |
| ২৭. (তদুপরি) যারা তাদের মালিকের আযাবকে ভয় করে, | ٢٠ وَ الَّذِينَ مُرْ مِّنْ عَنَابِ رَبِّهِرْ مُّشْفِقُونَ |
| ২৮. নিশ্চয়ই তোমাদের প্রতিপালকের আযাবের বিষয়টি এমন যে, এ থেকে (মোটেই) নিশ্চিন্ত (হয়ে বসে) থাকা যায় না। | ٢٨ إِنَّ مَكْنَ ابَ رَبِّهِم ۚ غَيْرٌ مَاْ مُوْنٍ |
| ২৯. যারা (হারাম কাজ থেকে) নিজেদের যৌন অংগসমূহের হেফাযত করে, | ٢٩ وَ الَّذِينَ هُرُ لِفُرُوهِمِيرُ مَٰفِظُونَ ٧ |
| ৩০. অবশ্য নিজেদের স্ত্রীদের কিংবা এমন সব মহিলাদের বেলায় (এটা প্রযোজ্য) নয়, যারা (আল্লাহ তায়ালার অনুমোদিও পদ্বায়) তাদের মালিকানাধীন রয়েছে, (এদের ব্যাপারে | ٣٠ إلا عَلَى أَزْوَاهِ مِرْ أَوْ مَا مَلَكَتْ |
| সংযম না করা হলে এ জন্য) তারা তিরস্কৃত হবে না, | أَيْهَا نُهُرْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ع |
| ৩১. (আল্লাহ তায়ালার নির্ধারিত এ সীমারেখার) বাইরে যারা (যৌন সম্ভোগের জন্যে) অন্য কিছু পেতে চাইরে, | الله فَهَنِ الْبَتَغَى وَرَآءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُرُ |
| তারা হবে (শরীয়তের সুস্পষ্ট) সীমালংঘনকারী, | َ الْعَدُّونَ عَ |
| ৭০ সূরা আল মা'য়ারেজ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| ৩২. যারা তাদের আমানত ও তাদের প্রতিশ্রুতি রক্ষা করে, | ٣٢ وَالَّذِينَ هُرْ لِأَمنتهِمِرْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ١٠ |
| ৩৩. যারা (সত্যের পক্ষে) সাক্ষ্য প্রদানের ব্যাপারে অটল থাকে, | ٣٣ وَالَّذِينَ مُرْ بِهَمٰن تِهِرْ قَائِهُونَ سِلا |
| ৩৪. (সর্বোপরি) যারা নিজেদের নামাযের হেফাযত করে; | ٣٣ وَ الَّذِينَ مُرْعَلَى مَلَاتِهِرْ يُحَافِظُونَ ١ |
| ৩৫. (পরকালে) এরাই আল্লাহর জান্নাতে মর্যাদা সহকারে প্রবেশ করবে; | ٣٥ أُولَئِكَ فِي جَنَّت مُكْرَمُونَ ١٤ |
| ৩৬. এ কাফেরদের (আজ) কী হলো? এরা কেন এভাবে উর্ধ্বশ্বাসে তোমার সামনে ছুটে আসছে, | ٣٦ فَهَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ٧ |
| ৩৭. (ছুটে আসছে) ডান দিক থেকে, বাম দিক থেকে দলে দলে! | ٣٠ عَنِ الْيَوِيْنِ وَعَنِ الشِّهَالِ عِزِيْنَ |
| ৩৮. তাদের প্রত্যেক ব্যক্তি কি এ (মিথ্যা) আশা পোষণ করে যে, তাকে (আল্পাহর) নেয়ামতভরা জান্নাতে দাখিল করা হবেঃ | ٣٨ اَيَطْهَعُ كُلُّ امْرِئِ مِّنْهُرْ اَنْ يَّنْ عَلَ جَنَّةَ لَا عَيْمِرٍ لا |
| ৩৯. না, তা কখনো সম্ভব নয়, আমি তাদের এমন এক জিনিস দিয়ে বানিয়েছি যা তারা (ভালো করেই) জানে । | ٣٩ كَلًّا ﴿ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِيًّا يَعْلَبُونَ |
| ৪০. আমি উদয়াচল ও অস্তাচলসমূহের মালিকের শপথ করছি, অবশ্যই আমি (বিদ্রোহীদের ধ্বংস সাধনে) সক্ষম, | ٣٠ فَلَا ٱقْسِرُ بِرَبِّ الْهَشْرِقِ وَالْهَفْرِبِ إِنَّا لَقْدِرُونَ لا |
| 8১. (আমি সক্ষম) এদের চাইতে উৎকৃষ্ট কাউকে দিয়ে এদের বদলে দিতে এবং আমি (এতে) কখনো অক্ষম নই। | ٣١ عَلَى أَنْ تَّبَكِّلَ خَيْرًا مِّنْهُرُ لا وَمَا نَحْنُ بِيَ |
| ৪২. (হে নবী,) তুমি বরং এদের ছেড়ে দাও, এরা কিছুদিন খেল তামাশায় নিমগু থাক - ঠিক সেদিনটির | ٣٣ فَلَرْهُمْ يَخُومُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلْقُوا |
| সমুখীন হওয়া পর্যন্ত, যেদিনের (ব্যাপারে বার বার) তাদের ওয়াদা দেয়া হচ্ছে। | يَوْمَهُمُ النَّذِي يُوْعَدُونَ لا |
| ৪৩. সেদিন যখন এরা (নিজ নিজ) কবর থেকে বের হয়ে আসবে, তখন এমন দ্রুতগতিতে এরা দৌড়াতে থাকবে, (দেখে মনে হবে) তারা (সবাই বুঝি) কোনো শিকারের (লক্ষ্যবস্তুর) দিকে ছুটে চলেছে, | ٣٣ يَوْاً يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْأَجْلَاتِ سِرَاعًا كَاَنَّهُرْ إِلَى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ لا |
| 88. তাদের দৃষ্টি থাকবে অবনমিত, অপমান ও লাঞ্ছনায় তাদের সবকিছু থাকবে আচ্ছন্ল; (তখন তাদের বলা হবে) এ হচ্ছে সেই (মুহা) দিবস, তোমাদের কাছে যেদিনের | ٣٣ غَاشِعَةً ٱبْصَارُهُرْ تَرْمَقُهُرْ ذِلَّةً ﴿ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوْعَكُونَ ع |
| ওয়াদা করা হয়েছিলো। | سُورَةً نُوحٍ مَكِّيَةً |
| স্রা নৃহ | |
| ম ক্কা য় অবতীর্ণ– আয়াত ২৮, রু কু ২ | اَیَات: ۲۸ رُکُوع : ۲ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشٰ ِ الرَّحِيْرِ |
| আমি নৃহকে তার জাতির কাছে পাঠিয়েছিলাম (তাকে আমি বলেছিলাম, হে নৃহ), তোমার জাতির ওপর এক | ا إِنَّا ٱرْسَلْنَا تُوْمًا إِلَى تَوْمِهِ آنَ ٱنْذِرْ |
| ৭১ সূরা নূহ ৫৯৭ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ১১ ভোরারাকাল্যানী |
|--|--|
| | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
| ভয়াবহ আযাব আসার আগেই তুমি তাদের সে সম্পর্কে সাবধান করে দাও। | قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيمُمْ عَنَابٌ ٱلِيُمَّ |
| (আমার আদেশ পেয়ে সে তার জাতিকে বললো,) হে আমার সম্প্রদায়ের লোকেরা, আমি তোমাদের জন্যে একজন সুম্পষ্ট সতর্ককারী ব্যক্তি (মাত্র), | ٢ قَالَ يُقَوْرًا إِنِّي لَكُمْ نَلْمِيْوٌ مَّبِيْنٌ لا |
| ৩. তোমরা সবাই আল্লাহর আনুগত্য করো, (সর্বাবস্থায়) তাঁকেই ভয় করো, তোমরা আমার কথা মেনে চলো, | ٣ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهُ وَاتَّقُوهُ وَاطِيْعُونِ ٧ |
| ৪. (এতে করে) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের (আগের) ৬নাহখাতা মাফ করে দেবেন এবং (এ দুনিয়ায়) তিনি | ٣ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَى |
| তোমাদের এক সুনির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত (নিজেদের শুধরে নেয়ার) সুযোগ দেবেন; হাঁ, আল্লাহর সেই নির্দিষ্ট সময় যখন এসে যাবে তখন তাকে কেউই পিছিয়ে দিতে পারবে | اَجَلِ مُسَمَّى اللهِ إِنَّ اَجَلَ اللهِ إِذَا جَاءَ لاَ |
| না। কতো ভালো হতো যদি তোমরা বুঝতে পারতে! | يُؤَخَّرُ مِ لَوْ كُنْتُمِ ۚ تَعْلَمُونَ |
| ৫. (নিরাশ হয়ে আল্লাহকে) সে বললো, হে আমার মালিক, আমি আমার জাতির মানুষগুলোকে দিনে রাতে (সব সময়ই ঈমানের) দাওয়াত দিয়েছি, | ٥ قَالَ رَبِّ إِنِّى ٛ نَعَوْتُ قَوْمِى ْ لَيْلًا وَّْنَهَارًا لا |
| ৬. কিন্তু আমার এ (দিবানিশি) দাওয়াতের ফলে (সত্য থেকে) পালিয়ে বেড়ানো ছাড়া তাদের আর কিছুই বৃদ্ধি হয়নি। | ٢ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَانِي ٓ إِلَّا فِرَارًا |
| ৭. যতোবার আমি তাদের (তোমার পথে) ডেকেছি- (ডেকেছি) যেন তুমি (ডাদের গুণীত কৃতকর্ম) ক্ষমা করে দাও, | |
| তারা (ততোবারই) কানে আংগুল ঢুকিয়ে দিয়েছে এবং নিজেদের (অজ্ঞতার) আবরণ দিয়ে নিজেদের (মুখমন্ডল) | أَصَابِعَهُمْ فِي أَذَانِهِمْ وَاسْتَغْشُوا ثِيَابَهُمْ |
| ঢেকে দিয়েছে (শুর্ধু তাই নয়), তারা (অন্যায়ের ওপর ক্ষমাহীন) জেদ ও অহমিকা প্রদর্শন করেছে, (হেদায়াতকে অবজ্ঞা করার) ঔদ্ধত্য প্রদর্শন করেছে, | وَاَمَرُواْ وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ، |
| ৮. তারপর আমি তাদের কাছে প্রকাশ্যভাবে (ধীনের) দাওয়াত পেশ করেছি, | ^ ثُرِّ إِنِّيْ دَعَوْتُمُرْ جِهَارًا y |
| ৯. তাদের জন্যে আমি (দ্বীনের) প্রকাশ্য ঘোষণা দিয়েছি, আমি চুপে চুপেও তাদের কাছে (দ্বীনের কথা) পেশ করেছি, | ٩ ثُمرٌ إِنِّى آَعُلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْوَرْتُ لَهُمْ الْهُمْ وَاَسْوَرْتُ لَهُمْ إشرَارًا ٧ |
| ১০. পরস্থ (বার বার) আমি তাদের বলেছি, (অহমিকা বাদ দিয়ে) তোমরা তোমাদের মালিকের দুয়ারে (নিজেদের অপরাধের জন্যে) ক্ষমা প্রার্থনা করো; নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা অত্যন্ত ক্ষমাশীল, | ١٠ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اللَّهُ كَانَ غَفَّارًا ٧ |
| ১১. (তদুপরি) আল্লাহ তায়ালা তোমাদের ওপর আকাশ থেকে অঝোর বৃষ্টিধারা বর্ষণ করবেন, | ١١ يُوسِلِ السَّهَاءَ عَلَيْكُمْ مِنْ رَارًا ٧ |
| ১২. এবং (পর্যাপ্ত পরিমাণ) ধনসম্পদ ও সম্ভান সম্ভতি দিয়ে তিনি তোমাদের সাহায্য করবেন, তোমাদের জন্যে | ١٢ وليمُلُودُكُر بِأَمْوَالِ وَّبَنِينَ وَيَجْعَلُ لَّكُر |
| বাগবাগিচা ও উদ্যান স্থাপন করবেন, (বিরান ভূমি আবাদ করার জন্যে) তিনি এখানে নদীনালা প্রবাহিত করবেন; | جَنْسٍ وْيَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهُرًا ا |
| ১৩. এ কি হলো তোমাদের! তোমরা কি আল্লাহ তায়ালার কাছ থেকে মানমর্থাদা পাওয়ার মোটেই আশা পোষণ করো না? | ١٣ مَا لَكُورُ لَا تَوْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ، |
| ১৪. অথচ তিনিই (ক্ষুদ্র একটি শুক্রকীট থেকে) বিভিন্ন পর্যায়ে তোমাদের (মানুষ হিসেবে) সৃষ্টি করেছেন। | ١٣ وَقَلْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا |
| ৭১ সূরা নূহ | মন্যিল ৭ |

| • | | |
|------------|--|---|
| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
| | ১৫. তোমরা কি দেখতে পাও না, কিভাবে আল্লাহ তায়ালা সাত আসমান বানিয়ে স্তরে স্তরে (সাজিয়ে) রেখেছেন, | ألَر تُرَوا كَيْفَ غُلَقَ اللهُ سَبْعَ سَهٰوٰ عَلَى اللهُ سَبْعَ سَهٰوٰ عَيْ طباقًا ٧ |
| | ১৬. কিভাবে এর মাঝে তিনি চাঁদকে আলো (গ্রহণকারী) ও সূর্যকে (আলোদানকারী) প্রদীপ বানিয়েছেন। | ١٦ وَّجَعَلَ الْقَهَرَ فِيهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّهْسَ |
| | | سِرَاجًا |
| | ১৭. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মাটি থেকে (এক বিশেষ পদ্ধতিতে) উদগত করেছেন (ঠিক একটি তৃণ খন্ডের মতো করে), | ١٤ وَ اللَّهُ ٱثْبَتَكُمْ مِّنَ الْإَرْضِ نَبَاتًا لا |
| | ১৮. আবার (জীবনের শেষে) তিনি তোমাদের সেই মাটির কোলেই ফিরিয়ে নেবেন এবং তা থেকেই একদিন তিনি তোমাদের সহসা বের (করে এনে নতুন জীবন দান) করবেন। | ١٨ ثُمر يُعِيْنُ كُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا |
| \Diamond | ১৯. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জ্ঞান্যে (এ) যমীনকে বিছানার মতো (সমতল করে) বানিয়েছেন, | ١٩ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُرُ الْإَرْضَ بِسَاطًا لا |
| | ২০. যাতে করে তোমরা এর উন্মুক্ত (ও প্রশন্ত) পথ ধরে চলাফেরা করতে পারো। | ٢٠ لِّتَسْلَكُوْ ا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ع |
| | ২১. নৃহ বললো, হে আমার মালিক, আমার জ্ঞাতির লোকেরা আমার কথা অমান্য করেছে, (আমার বদলে) | ٢١ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ إِنَّهُرْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا |
| | তারা এমন কিছু লোকের অনুসরণ করেছে যাদের ধন সম্পদ ও সম্ভান সম্ভতি কেবল তাদের বিনাশ ছাড়া অন্য কিছুই বৃদ্ধি করেনি, | مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَكُهُ ۚ إِلَّا خَسَارًا عَ |
| | ২২. তারা (সত্যের বিরুদ্ধে) সাংঘাতিক ধরনের এক ষড়যন্ত্র শুরু করেছে, | ٢٢ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبًّارًا ٤ |
| | ২৩. তারা বলে, তোমরা তোমাদের (সেসব) দেবতাদের কোনো অবস্থায়ই পরিত্যাগ করো না– 'ওয়াদ' 'স্যা' | ٣٣ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ الْمِتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا |
| | (নামক দেবতাদের) উপাসনা কিছুতেই ছেড়ে দিয়ো না, 'ইয়াগুস' 'ইয়াউক' ও 'নাছর' নামের দেব দেবীকেও (ছাড়বে) না, | وَّلَا سُوَاعًا لَهُ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسُرًا |
| | ২৪. (হে মালিক,) এরা বিশাল এক জনগোষ্ঠীকে পথস্রষ্ট করেছে, তুমিও আজ এ যালেমদের জন্যে পথস্রষ্টতা ছাড়া আর কিছুই বাড়িয়ে দিয়ো না। | ٣٠ وَقَنْ آَصَلُّوْآ كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظَّلِمِيْنَ الثَّلِمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الثَّلِمِيْنَ الثَّلِمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنِ الشَّلِمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمُ الْمُثَلِّمُ اللَّذِيْنِ الْمُثَلِيْنِ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِّمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِيْنِ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثْلِمِيْنَ الْمُثْلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنَ الْمُثْلِمِيْنَ الْمُثْلِمِيْنَ الْمِثْلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنِ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنِ الْمُثْلِمِيْنَ الْمُثْلِمِيْنَ الْمُثَلِمِيْنَ الْمُلْمِيْنِ الْمُثَلِمُ |
| | ২৫. (অতপর) তাদের নিজেদের অপরাধের জন্যেই তাদের (মহাপ্লাবনে) ডুবিয়ে দেয়া হয়েছে, (পরকালেও) | ٢٥ مِمَّا عَطِيْنَتِهِمْ ٱغْرِقُوا فَٱدْخِلُوا نَارًا لَا |
| | তাদের জাহান্নামের কঠিন অনলে প্রবেশ করানো হবে, এ (অবস্থায়) তারা আল্লাহ তায়ালা ব্যতীত দ্বিতীয় কাউকেই কখনোই সাহায্যকারী হিসেবে পাবে না। | فَلَمْ يَجِنُوا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ أَنْصَارًا |
| | ২৬. নৃহ (আরও) বললো, হে আমার মালিক, এ যমীনের অধিবাসী (যালেমদের) একজন (গৃহবাসী)-কেও তুমি (আজ শান্তি থেকে) রেহাই দিয়ো না, | ٢٦ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَنَرَ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكُغِرِيْنَ دَيَّارًا |
| | ২৭. (আজ) যদি তুমি এদের (শান্তি থেকে) অব্যাহতি দাও, তাহলে এরা (পুনরায়) তোমার বান্দাদের পথস্রষ্ট | ٢٤ إِنَّكَ إِنْ تَنَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا |
| | পাও, তাহলে এরা (পুনরার) তোমার বান্দাদের পথএর করে দেবে, (গুধু তাই নয়), এরা (ভবিষ্যতেও) দুরাচার পাপী কাফের ছাড়া কাউকেই জন্ম দেবে না। | يَلِنُ وَۚ ۚ إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا |
| | ৭১ সূরা নূহ | মন্যিল ৭ |

| ı | CELEBOTA WITH THE TANK WHATE | Report to the second |
|---|--|--|
| ı | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
| | ১৫. তোমরা কি দেখতে পাও না, কিভাবে আল্লাহ তায়ালা সাত আসমান বানিয়ে স্তরে স্তরে (সাজিয়ে) | ١٥ ألَر تَرَوْا كَيْفَ غُلَقَ اللهُ سَبْعَ سَهٰوْتٍ |
| ı | রেখেছেন, | طِبَاقًا ٧ |
| | ১৬. কিভাবে এর মাঝে তিনি চাঁদকে আলো (গ্রহণকারী) ও সূর্যকে (আলোদানকারী) প্রদীপ বানিয়েছেন। | ١٦ وَّجَعَلَ الْقَهَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّهْسَ |
| ١ | | سِرَ اجًا |
| | ১৭. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের মাটি থেকে (এক বিশেষ পদ্ধতিতে) উদগত করেছেন (ঠিক একটি তৃণ খন্ডের মতো করে), | ١٤ وَ اللَّهُ اَثَبَتَكُرْ مِّنَ الْإَرْضِ نَبَاتًا ٧ |
| | ১৮. আবার (জীবনের শেষে) তিনি তোমাদের সেই মাটির কোলেই ফিরিয়ে নেবেন এবং তা থেকেই একদিন তিনি তোমাদের সহসা বের (করে এনে নতুন জীবন দান) করবেন। | ١٨ ثُرٌّ يُعِيْلُكُرْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُرْ إِخْرَاجًا |
| | ১৯. আল্লাহ তায়ালা তোমাদের জন্যে (এ) যমীনকে বিছানার মতো (সমতল করে) বানিয়েছেন, | 19 وَاللَّهُ مَعَلَ لَكُرُ الْإَرْضَ بِسَاطًا لا |
| 7 | ২০. যাতে করে তোমরা এর উন্মুক্ত (ও প্রশন্ত) পথ ধরে চলাফেরা করতে পারো। | ٢٠ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ع |
| | ২১. নৃহ বললো, হে আমার মালিক, আমার জ্বাতির লোকেরা আমার কথা অমান্য করেছে, (আমার বদলে) | ٢١ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ إِنَّهُرْ عَمَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا |
| ١ | তারা এমন কিছু লোকের অনুসরণ করেছে যাদের ধন সম্পদ ও সন্তান সন্ততি কেবল তাদের বিনাশ ছাড়া অন্য কিছুই বৃদ্ধি করেনি, | مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَكُهُ ۚ إِلَّا خَسَارًا عَ |
| | ২২. তারা (সত্যের বিরুদ্ধে) সাংঘাতিক ধরনের এক ষড়যন্ত্র শুরু করেছে, | ٢٢ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبًّارًا ع |
| | ২৩. তারা বলে, তোমরা তোমাদের (সেসব) দেবতাদের কোনো অবস্থায়ই প্রিত্যাগ করো না- 'ওয়াদু' 'সূয়া' | ٢٣ وَقَالُوا لَا تَنَارُكُ الْهَتَكُمْ وَلَا تَنَارُكُ وَدًّا |
| | (নামক দেবতাদের) উপাসনা কিছুতেই ছেড়ে দিয়ো না, 'ইয়াগুস' 'ইয়াউক' ও 'নাছর' নামের দেব দেবীকেও (ছাড়বে) না, | وَّلَا سُوَاعًا لَهُ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسُرًا |
| | ২৪. (হে মালিক,) এরা বিশাল এক জনগোষ্ঠীকে পথন্রষ্ট করেছে, তুমিও আজ এ যালেমদের জ্বন্যে পথন্রষ্টতা ছাড়া আর কিছুই বাড়িয়ে দিয়ো না। | ٣٣ وَقَنْ اَضَلُّوآ كَثِيْرًا ۚ هُ وَلَا تَزِدِ الظَّلِمِيْنَ الْلِّلِمِيْنَ اللَّلِمِيْنَ اللَّلِمِيْنَ اللَّ |
| | ২৫. (অতপর) তাদের নিজেদের অপরাধের জন্যেই তাদের (মহাপ্লাবনে) ডুবিয়ে দেয়া হয়েছে, (পরকালেও) | ٢٥ مِمَّا خَطِيْنُتِهِر ٱغْرِقُوا فَٱدْخِلُوا فَارًا لَا |
| | তাদের জাহান্নামের কঠিন অনপে প্রবেশ করানো হবে, এ (অবস্থায়) তারা আল্লাহ তায়ালা ব্যতীত দ্বিতীয় কাউকেই কখনোই সাহায্যকারী হিসেবে পাবে না। | فَلَمْ يَجِكُوا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ أَنْصَارًا |
| | ২৬. নূহ (আরও) বললো, হে আমার মালিক, এ যমীনের অধিবাসী (যালেমদের) একজন (গৃহবাসী)-কেও তুমি (আজ্র শান্তি থেকে) রেহাই দিয়ো না, | ٢٦ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَنَّرُ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكُفِرِيْنَ دَيَّارًا |
| | ২৭. (আজ) যদি তুমি এদের (শান্তি থেকে) অব্যাহতি দাও, তাহলে এরা (পুনরায়) তোমার বান্দাদের পথভ্রষ্ট | ٢٠ إِنَّكَ إِنْ تَنَرَفُرْ يُضِلُّواْ عِبَادَكَ وَلَا |
| | করে দেবে, (গুধু তাই নয়), এরা (তবিষ্যতেও) দুরাচার পাপী কান্ফের ছাড়া কাউকেই জন্ম দেবে না। | يَلِهُوْآ إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا |
| | ৭১ সূরা নূহ | মন্যিল ৭ |

পারা ২৯ তাবারাকাল্লায়ী

২৮. হে আমার প্রতিপালক, তুমি আমাকে, আমার পিতামাতাকে– তোমার ওপর ঈমান এনে যারা আমার (সাথে ঈমানের এই) ঘরে আশ্রয় নিয়েছে, এমন সব ব্যক্তিদের এবং সব ঈমানদার পুরুষ ও মহিলাদের ক্ষমা করে দাও, যালেমদের জন্যে চূড়ান্ত ধ্বংস ছাড়া কিছুই তুমি বৃদ্ধি করো না:

٢٨ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَىُّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِي وَ وَلَا تَزِدِ الظُّلِهِيْنَ إِلَّا تَبَارًا ع



সুরা আল জ্বিন

মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ২৮, রুকু ২ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে-

سُوْرَةُ الْجِيِّ مَكِّيَّةً أَيَاتًا: ٢٨ رُكُوعٌ: ٢ بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ

১. (হে নবী,) তুমি বলো, আমার কাছে এ মর্মে ওহী নাযিল করা হয়েছে যে, জ্বিনদের একটি দল (কোরআন) ওনেছে, অতপর তারা (নিজেদের লোকদের কাছে গিয়ে) বলেছে, আমরা এক বিশ্বয়কর কোরআন শুনে এসেছি,

ا قُلْ ٱوْحِيَ إِلَى ۚ ٱلَّهُ اسْتَهَعَ نَفَرٌّ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْ إِنَّا سَهِعْنَا قُوْ أَنَّا عَجَبًا لا

২. যা (তার শ্রোতাকে) সঠিক (ও নির্ভুল) পথ প্রদর্শন ٢ يَهْدِي ﴿ إِلَى الرُّهْدِ فَأَمَنَّا بِهِ م وَلَنْ করে, তাই আমরা তার ওপর ঈমান এনেছি এবং আমরা আর কখনো আমাদের মালিকের সাথে কাউকে শরীক করবো না.

৩. আর (আমরা বিশ্বাস করি.) আমাদের মালিকের

মানমর্যাদা সকল কিছুর উর্ধে, তিনি কাউকে ব্রী কিংবা

تَّشُوكَ بِرَبِّنَا أَحَلُّا لا ٣ وَّأَنَّهُ تَعٰلَى جَنَّ رَبِّنَا مَا اتَّخَلَ صَاحِبَةً

পত্র হিসেবে গ্রহণ করেননি. ৪. (আমরা আরো জানি.) আমাদের (কতিপয়) নির্বোধ আল্লাহ তায়ালার ওপর অসত্য ও বাড়াবাডিমূলক

কথাবার্তা আরোপ করে.

مُو أَنَّدُ كَانَ يَقُولُ سَفيْهُنَا عَلَى اللهِ شَطَطًالا

৫. (অথচ) আমরা মনে করেছিলাম, মানুষ ও জ্বিন (এ দুই জাতি তো) আল্লাহ তায়ালার ওপর মিথ্যা আরোপ করতেই পারে না.

٥ وَّأَنَّا ظَنَنَّا ۚ أَنْ لَّنْ تَقُولَ الْإِنْسُ وَالْحِنَّ عَلَى الله كَنْبًا لا ٢ وَّٱلَّٰذَ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ يَعُوْذُوْنَ

৬. মানুষদের মাঝে কতিপয় (মুর্খ) লোক (বিপদে আপদে) জ্বিনদের কিছু সদস্যের কাছে আশ্রয় চাইতো, (এতে করে) অতপর (যারা মানুষ) তারা তাদের গুনাহ আরো বাডিয়ে দিতো,

بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنَّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا لا ﴾ وَأَنَّهُمْ ظُنُّوا كُهَا ظُنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَبْعُنُ اللَّهُ أَحَنَّا لا

৭. এ জ্বিনরা মনে করতো- যেমনি মনে করতে তোমরা মানুষরা- যে, (মৃত্যুর পর) আল্লাহ তায়ালা কখনো কাউকে পুনকজীবিত করবেন না.

৮. (জ্বিনরা আরো বললো,) আমরা আকাশমন্ডল ভালোভাবে পর্যবেক্ষণ করেছি, আমরা একে কঠোর প্রহরী

 ٥ و أَنَّا لَهَسْنَا السَّهَاءَ فَوَجَلْنَهَا مُلئَتِي حَرَسًا شَرِيْلُ ا وَشُهُبًا لا

ও উদ্ধাপিত দ্বারা তরা পেয়েছি. ৯. আমরা আগে তার বিভিন্ন ঘাটিতে কিছু (একটা) শোনার প্রত্যাশায় বসে থাকতাম: কিন্তু এখন আমাদের কেউ যদি (এসব ঘাটিতে বসে) কিছু শোনার চেষ্টা করে. তাহলে সে প্রতিটি জায়গায় আগে থেকেই তার জন্যে (পেতে রাখা এক) একটি জুলম্ভ উদ্ধাপিত (দেখতে)

9 وَّإِنَّا كُنَّا نَقْعُلُ مِنْهَا مَقَاعِلَ لِلسَّهُعَ ﴿ فَهَنَ ٩ يَّسْتَهِعِ الْإِنَّ يَجِنْ لَدَّ شِهَابًا رَّمَنَّا لا

৭২ সূরা আল জ্বিন

পায়.

1500

মন্যিল ৭

ولا وكالا

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অ | নুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্পাযী |
|--|---|---|
| ১০. আমরা বুঝতে পারছিলাম না, পৃথি কোনো অনিষ্ট সাধনের উদ্দেশেই কি এ | সব (উন্ধাপিভ | ١٠ وَّأَنَّا لَا نَدُرِيْ آَهَرًّ أُورِيْنَ بِمَنْ ٰفِي |
| বসিয়ে রাখা) হয়েছে?- না (এর মাধ্যমে) (মূলত) তাদের সঠিক (কোনো) পথ দেখা | | الْأَرْضِ أَثَا أَرَادَ بِهِرْ رَبُّمُرْ رَشَكًا لا |
| ১১. (মানুষদের মতো) আমাদের মধ্যে সংকর্মশীল আর কিছু আছে এর ব্যতিক্রম; দিক থেকে) আমরা ছিলাম দ্বিধাবিভক্ত, | | ا و الله عنا الصليعة و الله عنه الله ع |
| ১২. আমরা বুঝে নিয়েছি, এ ধরার বু আমরা আল্লাহ তায়ালাকে (কোনো অব করতে পারবো না– না আমরা (কখনো তাঁল পালিয়ে গিয়ে তাঁকে পরাভূত করে দিতে পা | স্থায়ই) অক্ষম র রাজ্য থেকে) | ١٢ وَّأَنَّا ظَنَنَّآ أَنْ لَّنْ تَّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ تَّعْجِزَةً مَرَبًا لا |
| ১৩. আমরা যখন হেদায়াতের বাণী (সম্বিদ্ধি শোনলাম, তখন আমরা তার ওপর ঈফ কেননা যে ব্যক্তি তার মালিকের ওপর ঈফ নিজের পাওনা কম পাওয়ার আশংব | মান আনলাম; গান আনে, তার গা থাকে না, | ا و الله الله الله الله الله الله الله ا |
| (পরকালেও) তাকে লাঞ্ছনা (ও অপমান) গে ১৪. আমাদের মধ্যে কিছু আছে যারা (আ | | ~ ^ @ . ^ ^ ^ ^ ^ @ |
| মুসলিম, আবার কিছু আছে যারা সত্যবি | মুখ (কাফের); | ١٢ وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ الْمَاسِطُونَ الْمَاسِطُونَ الْمَاسِطُونَ ا |
| যারা (আল্লাহর) আনুগত্যের পথ বেছে মুক্তি ও সৎপথই বাছাই করে নিয়েছে। | ানরেছে ভারা ———— | فَهَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰ لِكَ تَحَرُّوا رَشَلًا |
| ১৫. যারা সত্যবিমুখ তারা অবশ্যই জা (হবে), | হান্নামের ইন্ধন | 14 وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّرَ مَطَبًا ٧ |
| ১৬. (আসলে) লোকেরা যদি সত্য (ও ওপর সুদৃঢ় থাকতো, তাহলে আমি তা থেকে) প্রচুর পানি পান করাতাম, | | ١٦ و أَن لواستَقَامُوا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لاَسْقَيْنُهُرْمًا عُنَاقًا لا |
| ১৭. যেন আমি এর দারা তাদের (ঈমানের পারি; যদি কোনো মানুষ তার মালিকের দ আনুগত্য) থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়, তার অবশ্যই কঠোর আযাবে প্রবেশ করাবেন, | র্বণ (ঈমান ও | ١٤ لِّنَفْتِنَهُ رَفِيهِ ، وَمَنْ يَّعْرِضْ عَنْ ذِكْرٍ رَبِّهِ يَشْلَكُهُ عَلَ إِبًا صَعَلً إِلا |
| ১৮. (হে রস্ল, আমার ওপর এ মর্মে হয়েছে যে,) মাসজিদসমূহ (একান্তভ তায়ালার এবাদাতের জন্মে (নির্দিষ্ট), অ | গবে) আল্লাহ তএব তোমরা | 1⁄ وَّأَنَّ الْمَسْجِنَ لِلَّهِ فَلَا تَنْعُوْا مَعَ اللَّهِ اَحَدًّا لا |
| আল্লাহর পাশাপাশি অন্য কাউকে ডেকো ন ১৯. যখন আল্লাহর এক বান্দা তাকে | , | 19 وَّ أَنَّهُ لَهًا قَا مَ عَبْنُ اللّٰهِ يَنْعُوهُ كَادُواْ |
| দাঁড়ালো, তখন (মানুষ কিংবা জ্বিনের) জ তার আশেপাশে ভীড় জমাতে লাগলো; | | يَكُونُونَ عَلَيْدِ لِبَنَّاع |
| ২০. (এদের) তুমি বলো, আমি ওধু আ ডাকি, আর আমি তো (কখনো) তাঁর শরীক করি না। | | ٢٠ قُلُ إِنَّهَا ٓ أَنْكُوْا رَبِّى وَكَ ٓ ٱشْرِكَ بِهِ ٓ اَحَدًّا |
| ২১. তুমি বলো, আমি তোমাদের কোনো যেমন ক্ষমতা রাখি না, তেমনি আমি তো ভালো করার ক্ষমতাও রাখি না। | ক্তিসাধনের মাদের কোনো _. | ٢١ قُلُ إِنِّي ۚ ٧ ٓ أَمْلِكَ لَكُرْ ضَرًّا وَّلَا رَشَلًا |
| ২২. তুমি (তাদের) বলো, (কোনো সংক আমাকে আল্লাহর পাকড়াও থেকে কেউ | | ٢٢ قُلْ إِنِّيْ لَنْ يُجِيْرَنِيْ مِنَ اللَّهِ أَعَلُّ لَا |
| পারকে আল্লাহর সাক্ষ্যান্ত থেকে কেড পারবে নাঃ তিনি ছাড়া আর কোনো আ আমি (বুঁজে) পাবো না, | | وَّلَنَ ٱجِنَ مِنْ دُوْنِهِ مُلْتَحَنَّا لا |
| ৭২ সূরা আল জ্বিন | ७०३ | মনবিশ ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| ২৩. (আমার কাজ) এ ছাড়া আর কি যে, আমি আল্লাহর কাছ থেকে তাঁর বাণী ও হেদায়াত পৌছে দেবো, (পৌছে | ٢٣ إِلَّا بَلْغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسْلْتِهِ ۚ وَمَنْ يَتَّعْصِ |
| দেয়ার পর) তোমাদের মধ্যে যদি কেউ আল্লাহ তায়ালা | اللَّهُ وَرَسُوْلَهٌ فَإِنَّ لَهٌ نَارَ جَهَنَّـرَ خَلِدِينَ |
| এবং তাঁর রসূলকে অমান্য করে, তার জন্যে রয়েছে জাহান্নামের (কঠিন) আগুন, যেখানে তারা চিরকাল | فِيْهَا ٓ اَبَلًا |
| অবস্থান করবে; | 5 (O.1 42) |
| ২৪. এভাবে সত্যি সত্যিই যখন (সে দিনটি চোখের সামনে) দেখতে পাবে যার প্রতিশ্রুতি (তাদের) বার বার দেয়া হচ্ছে, তখন তারা অবশ্যই জানতে পারবে কার | ٢٣ حَتَّى إِذَا رَاوْا مَا يُوْعَنُوْنَ فَسَيَعْلَهُوْنَ |
| সাহায্যকারী কতো দুর্বল এবং কার বাহিনী সংখ্যায় কতো নগণ্য! | مَنْ أَضْفَفُ نَاصِرًا وَّأَقَلُّ عَنَدًا |
| ২৫. তুমি (এদের) বলো, আমি (নিজেই) জানি না, তোমাদের (কেয়ামত দিবসের) যে প্রতিশ্রুতি দেয়া হচ্ছে | ٢٥ قُلْ إِنْ أَدْرِيْ أَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ أَأَ |
| তা কি (আসলেই) সন্নিকটে, না আমার প্রতিপালক তার (আগমনের) জন্যে কোনো (দীর্ঘ) মেয়াদ ঠিক করে রেখেছেন। | يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَنًا |
| ২৬. তিনি (সমগ্র) অদৃশ্য জগতের (জ্ঞানের একক) জ্ঞানী, তাঁর সে অদৃশ্য জগতের কোনো কিছুই তিনি | ٢٦ علِيرُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ |
| কারো কাছে প্রকাশ করেন না, | ا كُمْلًا لا |
| ২৭. অবশ্য তাঁর রস্ল ছাড়া- যাকে তিনি (এ কাজের | ٢٤ إلا مَن ارْتَضَى مِنْ رَّسُولِ فَالَّهُ يَسْلُكُ |
| জন্যে) বাছাই করে নিয়েছেন, কিন্তু তার আগে-পিছেও তিনি (অতন্ত্র) প্রহরী নিযুক্ত করে রেখেছেন, | مِنْ بَيْنِ يَكَيْدِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَمَنًا لا |
| ২৮. এ (প্রহরা) দিয়ে আল্লাহ তায়ালা এ কথাটা জ্বনে নিতে চান, তার নবী রসূলরা (মানুষেরু কাছে) তাদের | ٢٨ لِّيَعْلَمَ أَنْ قَنْ أَبْلَغُوْا رِسْلْتِ رَبِّهِمْ |
| মালিকের পক্ষ থেকে হেদায়াতের বাণী (ঠিক ঠিক) পৌছে দিয়েছে কিনা, অথচ আল্লাহ তায়ালা এমনিই তাদের সব | وَأَمَاهَا بِهَا لَنَيْهِرْ وَأَهْصَٰى كُلُّ شَيْءٍ |
| কিছু পরিবেষ্টন করে রয়েছেন এবং (এ সৃষ্টি জগতের) সবকিছুর গুনতি একমাত্র তিনিই অবগত রয়েছেন। | عَلَ دُ اع |
| | سُورَةُ الْمُزْمِّلِ مَكِيةً |
| সূরা আল মোযযামেল মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ২০, রুকু ২ | اٰيَاتُ : ٢٠ رُكُوعٌ : ٢ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | - : |
| त्ररमान प्रदाय आधार शतामात्र नात्य | بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| ১. হে বন্তু আচ্ছাদনকারী (মোহাম্মদ,) | ا يَأَيُّهَا الْهُزِّسِّ ٢ |
| ২. রাতে (নামাযের জন্যে) ওঠে দাঁড়াও, কিছু অংশ বাদ দিয়ে, | ٣ قُرِ الَّيْلَ إِلَّا قَلِيْلًا ٧ |
| তার অর্ধেক (পরিমাণ) অংশ (নামাথের জন্যে দাঁড়াও), অথবা তার চাইতে আরো কিছু কম, | ٣ نِّصْفَةٌ أوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ٧ |
| কিংবা (চাইলে) তার ওপর (কিছু সময়) তুমি বাড়িয়েও দিতে পারো, খার তুমি কোরখান তেলাওয়াত করো থেমে থেমে; | مُ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَبِّلِ الْقُرْانَ تَرْتِيْلًا ﴿ |
| ৫. (মনে রেখো,) অচিরেই আমি তোমার ওপর একটি ভারী (গুরুত্বপূর্ণ বাণী সদৃশ) কিছু রাখতে যাচ্ছি। | ٥ إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثُقِيلًا |
| ৬. (অবশ্যই) রাতে বিছানা ত্যাগ! তা আত্মসংযমের জন্যে বেশী কার্যকর (পন্থা, তা ছাড়া এ সময়) কোরআন পাঠেরও যথার্থ সুবিধা থাকে বেশী; | ٢ إِن نَاشِئة اليلِ مِي اشْ وَطَا وَ اقْوَا قِيلًا ﴿ |
| ৭৩ সূরা আল মোযযাম্মেল ৬০২ | भनियेन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|---|
| ৭. নিসন্দেহে দিনের বেলায় ভোমার থাকে প্রচুর | إن لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا م |
| কর্মব্যস্ততা; ৮. তুমি তোমার মালিকের নাম স্মরণ করো এবং | ^ وَاذْكُر اسْرَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ط |
| একনিষ্ঠভাবে তাঁর দিকেই মনোনিবেশ করো; ৯. আল্লাহ তায়ালা পূর্ব পশ্চিমের একক মালিক, তিনি | ٩ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا مُوَ |
| ছাড়া আর কোনো মাবুদ নেই, অতএব তাঁকেই তুমি অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করো। | نَاتَّخِنْهُ وَكِيْلًا فَاتَّخِنْهُ وَكِيْلًا |
| ১০. এ (নির্বোধ) লোকেরা (তোমার সম্পর্কে) যেসব কথাবার্তা বলে তাতে (কান না দিয়ে বরং) তুমি ধৈর্য | ١٠ وَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُرْ هَجُرًا |
| ধারণ করো এবং সৌজন্য সহকারে তাদের পরিহার করো। | مَوِيْلًا لا |
| ১১. আর সহায় সম্পদের অধিকারী এ মিথ্যা সাব্যস্তকারীদের (সাথে ফয়সালার) ব্যাপারটা তুমি আমাকে ছেড়ে দাও এবং কিছুদিনের জ্বন্যে তুমি তাদের | اا وَذَرْنِي وَالْهُكَنِّبِيْنَ أُولِي النَّعْمَةِ |
| অবকাশ দিয়ে রাখো। | وَمَقِّلْهُمْ قَلِيْلًا |
| ১২. অবশ্যই আমার কাছে (এ পাপীদের পাকড়াও করার জন্যে) শেকল আছে, আছে (আযাব দেয়ার জন্যে) জাহান্নাম, | ١٢ إِنَّ لَنَيْنَا ۖ ٱنْكَالًا وَّجَعِيْمًا |
| ১৩. (তাদের জন্যে আরো রয়েছে) গলায় আটকে যাবে এমন (ধরনের) খাবার ও যন্ত্রণা দেবে এমন ধরনের আযাব, | ١٣ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَلَ ابًّا ٱلِيْمًا ق |
| ১৪. (এ ঘটনা সেদিন ঘটবে) যেদিন পৃথিবী ও (তার ওপর অবস্থিত) পাহাড়সমূহ সবু প্রকম্পিত হতে থাকবে | ١٣ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَسِ |
| এবং পাহাড়সমূহের অবস্থা হবে বিক্ষিপ্তভাবে ছড়িয়ে থাকা কতিপয় বাঙ্গুকা স্তৃপের ন্যায়। | الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا |
| ১৫. নিশ্যুই আমি তোমাদের কাছে (তোমাদের কাজকুর্মের) সাক্ষ্যদাতা হিসেবে একজনু রসৃদ পাঠিয়েছি, | 10 إِنَّا ٱرْسَلْنَا إِلَيْكُرْ رَسُولًا لا شَاهِنَّا عَلَيْكُرْ |
| যেমনি করে ফেরাউনের কাছেও আমি একজন রসূদ পাঠিয়েছিলাম; | كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فِرْعَوْنَ رَسُولًا ، |
| ১৬. অতপর ফেরাউন (আমার পাঠানো) রসূলকে অমান্য করলো, (এ অমান্য করার শান্তি হিসেবে) আমি তাকে কঠোরভাবে পাকড়াও করলাম। | ا ٢٦ فَعَصٰى فِرْعَوْنَ الرَّسُوْلَ فَاَ غَنْانُهُ اَغْنَّا ا وَّبِيْلًا |
| ১৭. (আজ) যদি তোমরাও সেদিনকে অস্বীকার করো তাহলে আল্লাহর আ্যাব থেকে (বলো) কিভাবে তোমরা | ١٤ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُرْ يَوْمًا يَّجْعَلُ |
| বাঁচতে পারবে, যেদিন (অবস্থার ভয়াবহতা অল্প বয়স্ক) কিশোর বালকদেরও বৃদ্ধ বানিয়ে দেবে; | الْوِلْدَانَ هِيْبَا " قمه |
| ১৮. যেদিন তার সাথে আসমান ফেটে ফেটে পড়বে, (এ) হচ্ছে আল্লাহর প্রতিশ্রুতি, আর তা সংঘটিত হবেই। | ١٨ السَّهَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ١ كَانَ وَعُنَّهُ مَفْعُولًا |
| ১৯. এ (বাণী) হচ্ছে একটি উপদেশমাত্র, কোনো ব্যক্তি চাইলে (এর মাধ্যমে সহজেই) নিজের মালিকের দিকে | 19 إِنَّ مَٰنِ ۚ تَنْكِرَةً ۚ عَ فَهَنْ شَاءً اتَّخَلَ إِلَى |
| যাওয়ার একটা রাম্ভা গ্রহণ করে নিতে পারে। | رَبِّهٖ سَبِيْلًاع |
| ২০. (হে নবী,) তোমার মালিক (একথা) জ্ঞানেন, তুমি এবং তোমার সাথে তোমার সাধীদের এক দল | ٢٠ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَرُ أَنَّكَ تَقُوْاً إَدْنَى مِنْ |
| (এবাদাতের জন্যে কখনো) রাতের দুই তৃতীয়াংশ, (কখনো) অর্ধেক অংশ, আবার (কখনো) এক তৃতীয়াংশ | ثُلُثَى الَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةً مِّنَ |
| ৭৩ সূরা আল মোয্যাম্মেল ৬০০ | मन्यिन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| দাঁড়িয়ে থাকো; (মূলত) রাত দিনের এ হিসাব তো আল্লাহ তায়ালাই ঠিক করে রাখেন; তিনি (এও) জানেন, | النَّذِينَ مَعَكَ ، وَاللَّهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ، |
| তোমরা এর সঠিক হিসাব করতে সক্ষম হবে না, তাই আল্লাহ তায়ালা (এ ব্যাপারে) তোমাদের ওপর | عَلِمَ أَنْ لَّنْ تُحْصُونُهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا |
| ক্ষমাপরায়ণ হয়েছেন, অতএব (এখন থেকে) কোরআনের যে পরিমাণ অংশ তেলাওয়াত করা তোমাদের জন্যে | مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْانِ ﴿ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونَ |
| সহজ, ততোটুকুই তোমরা তেলাওয়াত করো; আল্লাহ তায়ালা তোমাদের অবস্থা জানেন, তোমাদের ভেতর কেউ | مِنْكُمْ مَّرْضَى لا وَالْمَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي |
| অসুস্থ হয়ে পড়তে পারে, আবার পরবর্তী কেউ কেউ আল্লাহর অনুগ্রহ (জীবিকা) সন্ধানের উদ্দেশে সফরে বের | الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللهِ لا وَاخَرُونَ |
| হতে পারে, আবার একদল লোক আল্লাহর পথে যুদ্ধে নিয়োজিত হবে, তাই (এ পরিপ্রেক্ষিতে) তা থেকে যেটুকু | يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى فَاقْرَءُوا مَا |
| অংশ পড়া তোমাদের জন্যে সহজ ততোটুকুই তোমরা পড়ো; তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করো, (মাল সম্পদের) | تَيَسَّرَ مِنْهُ ٧ وَٱقِيْهُوا الصَّلْوةَ وَأَتُوا الزَّكُوةَ |

আল্লাহর কাছে (সংরক্ষিত দেখতে) পাবে, পুরন্ধার ও এর وَاعْظَمَ اَجْرًا وَ اَعْظَمَ اَجْرًا وَ وَاسْتَغْفِرُوا اللهُ وَ إِنْ اللهُ عَلِي اللهُ عَلِي اللهُ عَلِي اللهُ عَلِي اللهُ عَلِي اللهُ عَلَي هِ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَي اللهُ عَلَي اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَي اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَي اللهُ عَلَي اللهُ عَلَي اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّا عَلَّهُ (নিজেদের গুনাহ খাতার জন্যে) আল্লাহর কাছে ক্ষমা

যাকাত আদায় করো এবং (দান করার মাধ্যমে)

وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَرِّمُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَرِّمُوا الله किছু ভালো ও উত্তম কাজ তোমরা আগেভাগেই নিজেদের وَمَنَ عَنْلَ اللَّهِ مُو اللَّهِ عَنْلَ اللَّهِ مُو अला आञ्चारत काट्ट পাঠিয়ে রাখবে, তাই তোমরা اللَّهِ مُو يَعْنَلُ اللَّهُ مُن اللَّهُ مُو يَعْنَلُ اللَّهُ مُنْ إِلَّا لَمُ يَعْنَلُ اللَّهُ مُن إِعْنَا اللَّهُ مُعْنَا اللَّهُ مُو يَعْنَلُ اللَّهُ مُن إِلَّا لَمْ يَعْنَا اللَّهُ مُن إِلَّا لَمُ يَعْنَا اللَّهُ مُن إِلَّا لَعْنَا اللَّهُ مُن إِنْ اللَّهُ مُن إِنْ اللَّهُ مُن إِلَّا لَهُ عَلَيْكُمْ لَا عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمْ لَعْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَى اللَّهُ عَالِمُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَّا عَلَا عَلَّا عَلَا عَلَا عَاللَّهُ عَلَّا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَّا عَلَّا اللهُ غَفُورٌ رَّحِيْرٌ ع

সুরা আল মোদ্দাস্সের

প্রার্থনা করো, নিসন্দেহে আল্লাহ তায়ালা অতীব দয়ালু ও

অধিক ক্ষমাশীল।

৭৪ সূরা আল মোদ্দাস্সের

سُوْرَةُ الْهُنَّتِرِ مَكِّيَةً أَمَا....ً : 23 مُكُوْءً :

| মঞ্চায় অবতীৰ্ণ− আয়াত ৫৬, রুকু ২ | ايات : ٥٦ ركوع : ٢ |
|---|--|
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়াশার নামে- | بِشرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| ১. হে কম্বল আবৃত (মোহাম্মদ), | ا يَايُّهَا الْمُلَّثِّرُ لا |
| ২. (কম্বল ছেড়ে) ওঠো এবং মানুষদের (পরকালের আযাব সম্পর্কে) সাবধান করো, | ٢ تُمرُ هَا ثَلُورُ ٢٠٠٠ |
| ৩. তোমার মালিকের শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা করো, | ٣ وَرَبُّكَ فَكَبِّرْ سِهِ |
| ৪. আর তোমার পোশাক আশাক পবিত্র করো, | ٣ وَثِيَابِكَ نَطَيِّرْ سِلا |
| ৫. এবং (যারতীয়) মলিনতা ও অপবিত্রতা পরিহার করো, | ٥ وَ الرُّجْزَ فَاهْجُرْ س |
| ৬. কখনো বেশী পাওয়ার পোডে কাউকে কিছু দান করো না, | ٦ وَلَا تَمْنُنُ تَسْتَكْثِرُ س |
| ৭. তোমার মালিকের (খুশীর) উদ্দেশে ধৈর্য ধারণ করো; | ٤ وَ لِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ١ |
| ৮. যেদিন (সবকিছু ধ্বংস করে দেয়ার জ্বন্যে) শিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে, | ^ فَإِذَا تُقِرَ فِي النَّاقُورِ لا |
| ৯. সেদিনটি (হবে) সত্যিই বড়ো সাংঘাতিক, | ٩ فَنَالِكَ يَوْمَثِنِ يَوْمُ عَسِيْرٌ ٧ |

মন্যিল ৭

608

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|---|
| ১০. (বিশেষ করে এ দিনকে) যারা অস্বীকার করেছে তাদের জন্যে এ (দিন)-টি মোটেই সহজ্ঞ (বিষয়) হবে না। | ١٠ عَلَى الْكُفِرِيْنَ غَيْرٌ يَسِيْرٍ ٧ |
| ১১. (তার সাথে বুঝাপড়া করার জন্যে) তুমি আমাকেই ছেড়ে দাও, যাকে আমি অনন্য ধরনের (করে) পয়দা করেছি, | ١١ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ٢ |
| ১২. তাকে আমি বিপুল পরিমাণ ধনসম্পদ দান করেছি, | ا ١٢ وَّجَعَلْتُ لَهُ مَا لًا صَّلْ وَدَّا ٧ |
| ১৩. (তাকে দান করেছি) সদা সংগী (এক দল) পুত্র সম্ভান, | ١٣ وَّبَنِينَ شُهُودًا ٧ |
| ১৪. আমি তার জ্বন্যে (যাবতীয় সঙ্গলতার উপকরণ) সুগম করে দিয়েছি, | ١٢ وَمَهَّنْ لَهُ تَمْهِينًا ٧ |
| ১৫. (তারপরও) যে <i>লো</i> ভ করে, তাকে আমি আরো অধিক দিতে থাকবো, | 10 ثُرِّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيْنَ ق |
| ১৬. না, তা কখনো হবে না; কেননা সে আমার আয়াতসমূহের বিরুদ্ধাচরণে বন্ধপরিকর; | ١٦ كَلَّاء إِنَّهُ كَانَ لِإَيْتِنَا عَنِيْلًا ١ |
| ১৭. অচিরেই আমি তাকে (শান্তির) চূড়ায় আরোহণ করাবো; | ١٤ سَأْرُهِ قُدُّ صَعُودً ١ |
| ১৮. সে তো (সত্য গ্রহণের ব্যাপারে কিছুটা) চিস্তা-ভাবনাও করেছিলো, তারপর (আবার নিজের গোঁড়ামিতে নিমজ্জিত থাকার) একটা সিদ্ধান্ত করলো, | ١٨ إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَلَّارَ ٧ |
| ১৯. তার ওপর অভিশাপ, (সত্য চেনার পরও) কেমন করে সে (পুনরায় বিরোধিতার) সিদ্ধান্ত করলো! | ١٩ فَقُتِلَ كَيْفَ قَلَّرَ ٧ |
| ২০. আবারও তার ওপর অভিশাপ (নাযিল হোক), কিভাবে সে এমন সিদ্ধান্ত করতে পারলো, | ٢٠ ثُرِّ قُتِلَ كَيْفَ قَلَّرَ ٧ |
| ২১. সে একবার (উপস্থিত লোকদের প্রতি) চেয়ে দেখলো, | ٢١ ثُرِّ نَظَرَ ٧ |
| ২২. (অহংকার ও দঙ্কভরে) সে তার স্রুক্তঞ্জিত করলো, (অবজ্ঞাভরে নিজের) মুখটা বিকৃত করে ফেললো, | ٢٢ ثُرُّ عَبَسَ وَبَسَرَ ٧ |
| ২৩. অতপর সে (একটু-) পিছিয়ে গেলো এবং সে অহংকার করলো, | ٢٣ ثُرُّ ٱدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ٧ |
| ২৪. সে (আরো) বললো, এ তো (আসলে) আগের লোকদের থেকে প্রাপ্ত যাদু (-বিদ্যার খেল) ছাড়া আর কিছুই নয়, | ٣٣ فَقَالَ إِنْ مِٰنَ ٓ إِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثُرُ ٧ |
| ্২৫. এ তো মানুষের কথা ছাড়া আর কিছুই নয়; | ٢٥ إِنْ هٰنَ آ إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ، |
| ২৬. অচিরেই আমি তাকে জাহান্নামে প্রবেশ করাবো। | ٢٦ سَٱصْلِيْهِ سَقَرَ |
| ২৭. তুমি কি জানো জাহান্লাম (-এর আগুন) কি ধরনের? | ٢٤ وَمَا آُدُرُكَ مَا سَقَرُ ١ |
| ২৮. (এটা এমন ভয়াবহ আযাব) যা (এর অধিবাসীদের জ্বালিয়ে অক্ষত অবস্থায়ও) ফেলে রাখবে না, আবার (শান্তি থেকে) রেহাইও দেবে না, | ۲۸ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَنْارُ ع |
| ২৯. বরং তা মানুষদের গায়ের চামড়া জ্বালিয়ে দেবে, | ٢٩ لَوَّاحَةً لِّلْبَشَرِ ٤٠٠ |
| ৩০. তার ওপর (আছে) উনিশ; | ٣٠ عَلَيْهَا تِشْعَةُ عَشَرَ ، |
| ৭৪ সূরা আল মোদ্দাস্সের | मनयिन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|--|
| ত১. আমি ফেরেশতাদের ছাড়া দোযখের প্রহরী হিসেবে (অন্য কাউকেই) নিযুক্ত করিনি এবং তাদের সংখ্যাকে আমি অবিশ্বাসীদের জন্যে একটি পরীক্ষার মাধ্যম বানিয়ে দিয়েছি, যেন এর মাধ্যমে যাদের ওপর আমার কেতাব নাযিল হয়েছে তারা (আমার কথায়) দৃঢ়ভাবে বিশ্বাস স্থাপন করতে পারে এবং যারা (আগে থেকেই আমার ওপর) ঈমান এনেছে তাদের ঈমানও এতে করে বৃদ্ধি পেতে পারে, (সর্বোপরি) এর ফলে আহলে কেতাব এবং মোমেনরাও যেন কোনোরকম সন্দেহে নিমজ্জিত না হতে পারে, (অবশ্য) যাদের মনে সন্দেহের ব্যাধি রয়েছে এর ফলে তারা এবং সত্য প্রত্যাখ্যানকারী ব্যক্তিরা বলবে, এ (অভিনব) উক্তি দ্বারা আল্লাহ তায়ালা বী বুঝাতে চানঃ (মূলত) এভাবেই আল্লাহ তায়ালা যাকে চান তাকে গোমরাহ করেন, (আবার একইভাবে) তিনি যাকে চান তাকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন; তোমার মালিকের (বিশাল) বাহিনী সম্পর্কে তিনি ছাড়া আর কেউই জানেনা, (আর দোযথের বর্ণনা-) এ তো শুধু মানুষদের উপদেশের জন্যেই। | الله وَمَا جَعَلْنَا آَوَهُ الله الله النّارِ إِلّا مَلْنِكَةً سَ وَمَا جَعَلْنَا عِنْ تُمُر إِلّا فِتْنَةً لِلّاّنِيْنَ كَفُرُوا لا لِيَسْتَيْقِيَ النَّذِيْنَ ٱوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَرْدَادَ النَّوْيْنَ الْمَنْوْنَ لا وَيَعْرُدَادَ النَّوْيْنَ الْمَنْوْنَ لا وَلِيَقُولَ الْكِيْبَ الْمُؤْمِنُونَ لا وَلِيقُولَ الْمَنْوِنَ لا وَلِيقُولَ النَّهُ مِنْ قَالُوبِهِرْ سَّرَفَ وَالْمُؤْمِنُونَ لا وَلِيقُولَ النَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ وَمَا هِيَ اللّهُ وَمَا هِي اللّهُ وَمَا هِيَ اللّهُ وَمَا هُيَ اللّهُ وَمَا هُونَ اللّهُ وَمَا هُيَ اللّهُ وَمَا هُيَ اللّهُ وَمَا هُونَ اللّهُ وَمَا هُونَ اللّهُ وَمَا هُونَ اللّهُ وَلَا مُوالِدَا اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَمَا هُيَ اللّهُ وَمَا هُيَ اللّهُ وَمَا هُونَ الْمُؤْتِدُونَ اللّهُ |
| ৩২. না, তা কখনো নয়, (আমি) চাঁদের শপথ (করে বলছি), | ٣٢ كَلاً وَالْقَهَرِ ٧ |
| ৩৩. (আরো) শপথ (করছি) রাতের, যখন তা অবসান হতে থাকে, | ٣٣ وَالَّيْلِ إِذْ ٱدْبَرَ ٧ |
| ৩৪. শপথ (করছি) প্রভাতকালের যখন তা (দিনের) আলোয় উদ্ভাসিত হয়, | ٣٣ وَالمُّبْعِ إِذَّا أَشْفَرَ ٧ |
| ৩৫. নিসন্দেহে তা হবে (মানুষের জন্যে) কঠিনতম বিপদসমূহের মধ্যে একটি (বিপদ), | ٣٥ إِنَّهَا كَاحِلَى الْكُبَرِ ٧ |
| ৩৬. মানুষের জন্যে (তা হবে) ভয় প্রদর্শনকারী, | ٣٦ نَوْبُرًا لِّلْبَشَرِ ٧ |
| ৩৭. তোমাদের মধ্যকার সে ব্যক্তির জ্বন্যে, যে (কল্যাণের পথে) অগ্রসর হতে চায় এবং (অকল্যাণের পথ থেকে) পিছু হটতে মনস্থ করে; | ٣٠ لِمَنْ شَاءً مِنْكُمْ أَنْ يَّتَقَلَّا اَوْ يَتَاعِّرُه |
| ৩৮. (এখানে) প্রত্যেক মানুষই নিজের কর্মফলের হাতে বন্দী হয়ে আছে, | ٣٨ كُلُّ نَفْسٍ بِهَا كَسَبَتُ وَهِيْنَةً ٧ |
| ৩৯. অবশ্য ডান দিকে অবস্থানকারী (নেক) লোকগুলো ছাড়া; | ٣٩ إِلَّا أَشَعْبَ الْيَعِيْنِ ١٠ |
| ৪০. তারা অবস্থান করবে (চিরস্থায়ী) জান্লাতে। (সেদিন) তারা পরস্পরকে জিজ্ঞেস করবে, | ٣٠ فِي جَنْسٍ عَ يَتَسَاءَلُونَ ٧ |
| ৪১. (জাহান্লামে নিক্ষিণ্ড) পাপিষ্ঠদের সম্পর্কে, | ٣١ عَيْ الْهُجُرِمِيْنَ لا |
| ৪২ (তারা বলবে, হে জাহান্নামের অধিবাসীরা,) তোমাদের আজ্ঞ কিসে এ ভয়াবহ আযাবে উপনীত করেছে? | ٣٢ مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ لا |
| ৪৩. তারা বলবে, আমরা নামাযীদের দলে শামিল ছিলাম না, | ٣٣ قَالُوْ الرَ نَكُ مِنَ الْهُصَلِّيْنَ ٧ |
| 88. (ক্ষুধার্ত ও) অভাবী ব্যক্তিদের আমরা খাবার দিতাম না, | ٣٣ وَلَمْ نَكُ تُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ٧ |
| ৭৪ সূরা আল মোদাস্সের ৬০৬ | भनियन १ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| ৪৫. (সত্যের বিরুদ্ধে) যারা অন্যায় অমূলক আলোচনায় উদ্যত হতো আমরা তাদের সাথে যোগ দিতাম, | ٣٥ وَكُنَّا نَخُوْضَ مَعَ الْخَالِضِينَ لا |
| ৪৬. (সর্বোপরি) আমরা আখেরাতকেও মিথ্যা প্রতিপন্ন করতাম, | ٣٦ وَكُنَّا نُكَنِّبُ بِيَوْمِ الرِّيْشِ لِا |
| ৪৭. এমনকি চূড়ান্ত সত্য মৃত্যু (একদিন) আমাদের কাছে হাযির হয়ে গেলো। | ٣٤ مَتَّى أَتٰننَا الْيَقِيْنُ ۗ |
| ৪৮. তাই (আজ) কোনো সুপারিশকারীর সুপারিশই তাদের কোনো উপকারে আসবে না; | ٢٨ فَهَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّفِعِيْنَ ١ |
| ৪৯. (বলতে পারো) এদের কি হয়েছে, এরা এ (সত্য) বাণী থেকে মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছে কেনঃ | ٣٩ فَهَا لَهُرْعَيِ التَّلْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ لا |
| ৫০. (অবস্থাদৃষ্টে মনে হয়) এরা যেন বনের কতিপয় পলায়নপর (ভীত সম্ভক্ত) গাধা, | ٥٠ كَأَنْهُرُ حَمْرٌ مُسْتَنْفِرَةً ٧ |
| ৫১. যা গর্জনকারী বাঘের আক্রমণ থেকে পালাতেই ব্যস্ত; | ٥١ فَرَّتُ مِنْ قَسُورَةٍ ١ |
| ৫২. কিন্তু তাদের প্রতিটি ব্যক্তিই চায়, (স্বতন্ত্রভাবে) উন্মুক্ত গ্রন্থ তাকে দেয়া হোক, | ٥٢ بَلْ يُرِيْنُ كُلُّ أَمْرِي مِّنْهُمْ أَنْ يُؤْتَى |
| - 44 -141 a tut adi 1,2 | صُحْفًا مُنشَرَةً ٧ |
| ৫৩. এটা কখনো সম্ভব নয়, (আসলে) এ লোকেরা শেষ বিচারের দিনক্ষণকে মোটেই ভয় করে না; | ٥٣ كَلَّاء بَلْ لَّا يَخَافُونَ الْأَخِرَةَ ا |
| ৫৪. না, কখনো তা (অবজ্ঞার বিষয়) নয়, এটি একটি নসীহত মাত্র, | ٥٣ كَلَّا إِنَّهُ تَنْكِرَةً عَ |
| ৫৫. অতএব (এক্ষণে) যার ইচ্ছা সে যেন (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করে; | ۵۵ فَهَنْ شَاءَ ذَكَرَةً ، |
| ৫৬. (সত্যি কথা হচ্ছে,) আল্লাহ তায়ালার ইচ্ছা ব্যতিরেকে তারা কখনো (এ থেকে) শিক্ষা গ্রহণ করবে না; একমাত্র তিনিই ভয় করার যোগ্য এবং একমাত্র | ٥٦ وَمَا يَنْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ، هُوَ |
| তিনিই হচ্ছেন ক্ষমার মালিক। | اَهْلُ التَّقُوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ع |
| স্রা আল কে্য়ামাহ | سُورَةُ الْقِيمَةِ مَكِيَّةً |
| ম ক্কা য় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৪০, ৰুকু ২ | أَيَاتُ : ٣٠ رُكُوعٌ : ٢ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | يِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. আমি শপথ করছি রোজ কেয়ামতের, | ا لَا ٱقْسِرُ بِيَوْ ِ الْقِيْمَةِ لِا |
| ২. আরও আমি শপথ করছি সে নফসের, যে ক্রেটি | ٢ وَكَرْ ٱقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ، |
| বিচ্যুতির জন্যে) নিজেকে ধিক্কার দেয়; | ا ولا افسر بالنفس النوامة ا |
| ৩. মানুষ কি ধরে নিয়েছে, (সে মরে গেলে) আমি তার অস্থিমজ্জাণ্ডলো আর কখনো একত্রিত করতে পারবো না; | ٣ أَيَحُسَبُ الْإِنْسَانُ ٱلَّنْ تَجْبَعَ عِظَامَهُ ، |
| অবশ্যই (আমি তা পারবো), আমি তো বরং তার আংগুলের গিরাগুলোকেও পুনর্বিন্যন্ত করে দিতে পারবো। | ٣ بَلَى قُلِورِيْنَ عَلَى أَنْ تُسَوِّىَ بَنَانَةً |
| ৫. এ সত্ত্বেও মানুষ তার সম্মুখের দিনগুলোতে পাপাচারে লিপ্ত হতে চায়, | ٥ بَلْ يُرِيْدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَةً ع |
| ৭৫ সূরা আল ক্বেয়ামাহ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সর্ল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| ৬. সে জিজ্ঞেস করে, (তোমার প্রতিশ্রুত) কেয়ামত কবে আসবেঃ | ٦ يَسْئَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيْمَةِ م |
| ৭. (তুমি বলো,) যেদিন (সবার) দৃষ্টি ধাঁধাযুক্ত হয়ে যাবে, | ٤ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ٧ |
| ৮. (যেদিন) চাঁদ নিষ্প্রভ হয়ে যাবে, | ٨ وَخَسَفَ الْقَيْرُ ٧ |
| ৯. (যেদিন) চাঁদ ও সুরুজ একাকার হয়ে যাবে, | ٩ وَجُيِعَ الشَّهْسُ وَالْقَبَرُ ٧ |
| ১০. (সেদিন) মানুষগুলো সব বলে উঠবে (সত্যিই তো! কেয়ামত এসে গেলো), কোথায় আজ পালানোর জায়গা (আমাদের)? | ١٠ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِنٍ أَيْنَ الْمَغَرُّ ع |
| ১১. (ঘোষণা আসবে) না, (আজ পালাবার জায়গা নেই,) কোনো আশ্রয়স্থল নেই; | اا كَلَّا لَا وَزَرَ ١ |
| ১২. (আজ) আশ্রয়স্থল ও ঠাঁই আছে (একটাই এবং তা) তথু) তোমার মালিকের কাছে, | ١٢ إِلَى رَبِّكَ يَوْمَنِهِ الْهُسْتَقَرُّ ، |
| ১৩. সেদিন প্রতিটি মানুষকে (খুলে খুলে) জানিয়ে দেয়া হবে, কি (কাজ) নিয়ে সে আজ হাযির হয়েছে, আর কি (কি কাজ) সে পেছনে রেখে এসেছে; | ١٣ يُنَبُّو الإِنْسَانُ يَوْمَنِلٍ بِهَا قَدًّا وَٱخْرَ |
| ১৪. মানুষরা (মূলত) নিজেদের কাজকর্মের ব্যাপারে নিজেরাই সম্যক অবগত, | ١٣ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَى نَفْسِهِ بَصِيْرَةً ٧ |
| ১৫. যদিও সে নিজের (সপক্ষে) বিভিন্ন অজুহাত পেশ করতে চাইবে; | ١٥ وَّلَوْ ٱلْقَٰى مَعَاذِيْرَةً ٩ |
| ১৬. (ওহীর ব্যাপারে হে নবী) তুমি তাতে তাড়াহুড়ো করার উদ্দেশ্যে তার সাথে তোমার জ্বিহ্বা নাড়িয়ো না; | ١٦ لَا تُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ا |
| ১৭. এর একত্র করা ও (ঠিকমতো তোমাকে) পড়িয়ে দেয়ার দায়িত্ব আমার ওপর, | ١٤ إِنَّ عَلَيْنَا جَهُمَّ وَقُوْ الدَّ عله |
| ১৮. অতএব আমি (জ্বিবরাঈলের মাধ্যমে তোমার কাছে) যখন কোরআন পড়তে থাকি, তখন তুমি সে পড়ার (দিকে মনোযোগ দাও এবং এর) অনুসরণ করার চেটা করো, | ١٨ فَافِذَا قَرَأَنْهُ فَاتَّبِعْ قُرْأَنَهُ ع |
| ১৯. অতপর (তোমাকে) এর ব্যাখ্যা বলে দেয়ার দায়িত্বও আমার ওপর; | ١٩ ثُرِّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَدُ ١٠ |
| ২০. কক্ষনো না, ভোমরা পর্থিব জগতকেই বেশী ভালোবাসো | ٢٠ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ٧ |
| ২১. এবং পরকালীন জীবনকে তোমরা উপেক্ষা করো! | ٢١ وَتَنَارُونَ الْأَخِرَةَ |
| ২২. সেদিন কিছু সংখ্যক (মানুষের) চেহারা উচ্ছ্রল আলোয় ভরে উঠবে, | ٢٢ وُجُونًا يُومَنِنِ نَاضِرَةً لا |
| ২৩. এ (ভাগ্যবান) ব্যক্তিরা তাদের মালিকের দিকে তাকিয়ে থাকবে, | ٢٣ إِلَى رَبِّهَا نَاظِرَةً ۚ ۚ |
| ২৪. আবার এদিন কিছু (মানুষের) চেহারা হয়ে যাবে (উদাস ও) বিবর্গ, | ٢٣ وَوُجُولًا يُؤْمَنِنِ اللَّهِ اللَّهِ ٢٣ |
| ২৫. তারা ভাবতে থাকবে, (এক্স্পি বুঝি) তাদের সাথে কোমর বিচ্র্পকারী (আযাবের) আচরণ (শুরু) করা হবে; | ٢٥ تَظُنُّ إَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاتِرَةً ، |
| ২৬. কখনো নয়, মানুষের প্রাণ (যখন) তার কণ্ঠনালী পর্যন্ত এসে যাবে, | ٢٦ كَلَّا إِذَا بَلَغَسِ التَّرَاقِيَ ٧ |
| ৭৫ সূরা আল ক্ব্যোমাহ | মন্যিশ ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|--|---|
| ২৭. তাকে বলা হবে, এ (বিপদের) সময় (যাদুটোনা ও) ঝাড় ফুঁক দেয়ার মতো কেউ কি আছে? | ٢٠ وَقِيْلَ مَنْ ١٠٠ رَاقٍ لا |
| ২৮. সে (তখন ঠিকমতোই) বুঝে নেবে, (পৃথিবী থেকে এখন) তার বিদায় (নেয়ার পালা), | ٢٨ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ لا |
| ২৯. (আর এভাবেই) তার (এ জীবনের শেষ) পা' (পরের জীবনের প্রথম) পা'র সাথে জড়িয়ে যাবে, | ٢٩ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ١ |
| ৩০. আর সে দিনটিই হবে তোমার মালিকের দিকে (তার অনন্ত) যাত্রার (প্রথম) সময়! | ٣٠ إِلَى رَبِّكَ يَوْمَنِنِ الْهَسَاقُ عَ |
| ৩১. (আসলে) এ (জাহান্নামী) ব্যক্তিটি সত্য স্বীকার করেনি এবং (সত্যের দাবী মোতাবেক) সে নামায প্রতিষ্ঠা করেনি, | ٣١ فَلَا صَلَّقَ وَلَا صَلَّى لا |
| ৩২. বরং (তার বদলে) সে (সত্যকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং (সত্য থেকে) সে মুখ ফিরিয়ে নিয়েছে, | ٣٢ وَلٰكِيْ كَنَّبَ وَتَوَلَّى ٧ |
| ৩৩. সে অত্যন্ত দম্ভ ও অহমিকাভরে নিজের পরিবার পরিজনের কাছে ফিরে গেলো, | ٣٣ ثُرَّ ذَهَبَ إِلَى آهَلِهِ يَتَهَطَّى ١ |
| ৩৪. (আল্লাহ তায়ালা বলবেন,) হাঁ, (এ পরিণাম ঠিক) তোমাকেই মানায় এবং এটা তোমারই প্রাপ্য। | ۳۳ اَوْلٰی لَكَ فَاَوْلٰی ٧ |
| ৩৫. অতপর এ আচরণ তোমারই সাজে, (এটা) তোমার জন্যেই মানায়; | ٣٥ ثُرِّ أَوْلَى لَكَ فَأَوْلَى ا |
| ৩৬. মানুষ কি ধরে নিয়েছে যে তাকে এমনি (লাগামহীন অবস্থায়) ছেড়ে দিয়ে রাখা হবে; | ٣٦ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُرًى ا |
| ৩৭. সে কি (এক সময়) এক ফোঁটা ৠলিত শুক্রবিন্দুর অংশ ছিলো না, | ٣٤ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَنِي يَبُهٰ لِي اللهِ |
| ৩৮. তারপর (এক পর্যায়ে) তা হলো রক্তপিন্ড, অতপর আল্লাহ তায়ালা (তাকে দেহ সৃষ্টি করে) সুবিন্যস্ত করলেন, | ٣٨ ثُيرٌّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَخَلَقَ فَسَوْى لا |
| ৩৯. এরপর আল্লাহ তায়ালা সে থেকে নারী পুরুষের জোড়া পয়দা করেছেন। | ٣٩ فَجَعَلَ مِنْهُ الزُّوْجَيْنِ النَّاكَرَ وَالْأَنْثَى ا |
| ৪০. এরপরও তোমরা কি মনে করো, আল্লাহ তায়ালা মৃতদের পুনরুজ্জীবিত করতে সক্ষম হবেন নাঃ | ۳۰ اَلَیْسَ ذٰلِكَ بِقُدِرٍ عَلَى اَنْ یَّحْیِے الْہَوْتٰی ع |
| সূরা আদ্ দাহর | سُوْرَةُ النَّهْرِ مَنَنِيَّةً |
| মদীনায় অবতীর্ণ– আয়াত ৩১, রুকু ২ | أيات : ٣١ رُكُوع : ٢ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْسِ الرَّحِيْرِ |
| ১. কালের (পরিক্রমায়) কোনো একটি সময় মানুষের ওপর দিয়ে এমন অতিবাহিত হয়েছে কি- যখন সে (একং | ا هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِيْنً مِّنَ النَّهْرِ |
| তার অন্তিত্ব) উল্লেখ করার মতো কোনো বিষয়ই ছিলো না! | لَمْ يَكُنْ هَيْئًا مَّنْكُورًا |
| ২. আমি মানুষকে সৃষ্টি করেছি (নারী পুরুষের) মিশ্রিত শুক্র থেকে, যেন আমি তাকে (তার ভালো মন্দের | ا إِنَّا مَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ تَّطْفَةٍ أَمْشَاحٍ ثَ |
| ব্যাপারে) পরীক্ষা করতে পারি, অতপর (এর উপযোগী করে তোলার জন্যে) তাকে আমি শ্রবণ ও দৃষ্টিশক্তিসম্পন্ন করে পয়দা করেছি। | تَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَهُ سَوِيْعًا ۖ بَصِيْرًا |

মন্যিল ৭

৭৬ সূরা আদ্ দাহর

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|---|
| ৩. আমি তাকে (চলার) পথ দেখিয়ে দিয়েছি, সে চাইলে (আল্লাহর) কৃতজ্ঞ হবে, না হয় কাফের হয়ে যাবে। | ٣ إِنَّا هَنَيْنُهُ السَّبِيلَ إِمَّا هَاكِرًا وَّإِمَّا كَغُورًا |
| কাফেরদের (পাকড়াও করার) জন্যে আমি শেকল, বেড়ি ও (শান্তির জন্যে) আগুনের লেলিহান শিখার ব্যবস্থা করে রেখেছি। | مُ إِنَّا آءَتَانَ نَا لِلْكُفِرِيْنَ سَلْسِلَا وَ اَغْلَلًا وَسَعِيْرًا |
| ৫. নিসন্দেহে যারা সংকর্মশীল তারা (জান্নাতে) এমন সুরা পান করবে যার সাথে (সুগন্ধযুক্ত) কর্পূর মেশানো থাকবে, | ٥ إِنَّ الْإَبْرَ ارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ء |
| ৬. এ (কর্পুর মেশানো) পানি হবে প্রবাহমান (এক) ঝর্ণা, যার (প্রবাহ) থেকে আল্লাহর নেক বান্দারা সদা পানীয় গ্রহণ করবে, তারা (যেদিকে যখন ইচ্ছা) এ (ঝর্ণাধারা)-টা প্রবাহিত করে নেবে। | لَّ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا |
| (এরা হচ্ছে সেসব লোক) যারা 'মানত' পূরণ করে এবং এমন এক দিনকে ভয় করে, য়ে দিনের ধ্বংসলীলা হবে (ব্যাপক ও) সুদূরপ্রসারী। | كُونُونَ بِالنَّنْ رِ وَيَخَانُونَ يَوْمًا كَانَ شُرَّةً مُسْتَطِيْرًا |
| ৮. এরা শুধু আল্লাহর ভালোবাসায় (উদুদ্ধ হয়েই ফকীর), মেসকীন, এতীম ও কয়েদীদের খাবার দেয়। | ٨ وَيُطْعِبُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّم مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّأْسِيْرًا |
| ৯. (খাবার দেয়ার সময় এরা বলে,) আমরা তথু আল্লাহ তায়ালার সভুষ্টির জন্যেই তোমাদের খাবার দিছি, (বিনিময়ে) আমরা তোমাদের কাছ থেকে কোনো রকম প্রতিদান চাই না না (চাই) কোনো রকম কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন। | ٩ إِنَّمَا تُطْعِيمُكُمْ لِوَجْهِ اللهِ لَا تُوِيْنُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلا شُكُورًا |
| ১০. আমরা তো সে দিনটির ব্যাপারে আমাদের প্রতিপালককে ভয় করি, যেদিনটি হবে অতীব ভয়ংকর। | ١٠ إِنَّا نَخَانُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطُرِيرًا |
| ১১. (এরা যেহেতু এ দিনটিকে বিশ্বাস করেছে তাই-) আল্লাহ তায়ালা আজ তাদের সে দিনের যাবতীয় অনিষ্ট ও ক্ষতি থেকে রক্ষা করবেন, তিনি তাদের সজীবতা ও আনন্দ দান করবেন, | الْهُ وَفُرهُرُ اللهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْ الْقُهُر نَضْرَةً وَّسُرُورًا عَ |
| ১২. এরা যে কঠোর ধৈর্য (ও সহিষ্ণুতা) প্রদর্শন করেছে (তার পুরস্কার হিসেবে আল্লাহ তায়ালা) তাদের জান্লাত ও রেশমী বন্ধ দান করবেন, | ١٢ وَهَزُهُمْ بِهَا صَبُرُواْ جَنَّةً وَّهَرِيْرًا لا |
| ১৩. (সেই মনোরম জান্নাতে) তারা (সুসচ্জিত) আসনে হেলান দিয়ে বসবে, সেখানে সূর্যের (তাপ) যেমন তারা দেখবে না, তেমনি দেখবে না কোনোরকম শীত (-এর প্রকোপ), | ١٣ مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْأَرَّ الْكِ عَلَا يَرُوْنَ فِيْهَا شَهْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ع |
| ১৪. তাদের ওপর (জান্নাতে) তার গাছের ছায়া ঝুঁকে থাকবে, তার ফলপাকড়াকে তাদের আয়ন্তাধীন করে দেয়া হবে। | ١٣ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلْلُهَا وَذُلِّلَتْ تُطُوْفُهَا تَنْلِيْلًا |
| ৭৬ সূরা আদ্ দাহর ৬১০ | भनियम १ |

| তে, ভাদের (সামনে খাবার) পরিবেশন করা হবে রৌপ্য নির্মিত পারে আর কাচের পেয়ালায় এবং তা হবে ক্ষণিত্বর মতো স্বচ্ছ, ১৬. রূপালী ক্ষণ্টিক পারে, (যার সবটুকুই) পরিবেশনকারীয়া যথাযথভাবে পূর্ব করে রাখবে। ১৭. সেখানে তাদের এমন এক (অপূর্ব) সুরা পান করানো হবে, যার সাথে মেশানো হবে 'যানজাবীল' (নামের এক মূল্যবান সুগন্ধ), ১৮. তাতে রয়েছে (জান্নাতের) এক (অমিয়) ঝর্ণা, যার নাম রাখা হয়েছে সালসাবীল'। ১৯. তাদের চারদিকে ঘারাঘুরি করবে একদল কিশোর বালক, যারা (বয়সের ভারে বুজ হয়ে যাবে না.) চিরকাল কিশোর থাকবে, যথনি তুমি তাদের দিকে তাকাবে মনে হবে এরা বুরি কভিপ্র ছড়ালো হিটানো মুজ্য। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি তাকাবে, দেখবে তখু নেয়ামতেরই সমারোহ, আরও দেখবে (নেয়ামতে উপচে পড়া) এক বিশাল সাম্রাজ্য। ২১. বহেশভবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সুক্ষ স্বন্ধ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের বালো হবে রূপার কংকলে, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের 'শরাবান তহরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বালারা,) এ হছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরন্ধার এবং তোমাদের করে। (আমার পির্বছিটি। আইন্ট্রিটিটি আইন্ট্রিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিটিট |
|--|
| الم |
| পারবেশনকারারা যথাযথভাবে পূর্ণ করে রাখবে। ১৭. সেখানে তাদের এমন এক (অপূর্ব) সূরা পান করানো হবে, যার সাথে মেশানো হবে 'যানজাবীল' (নামের এক মূল্যবান সুগন্ধ), ১৮. তাতে রয়েছে (জান্নাতের) এক (অমিয়) ঝণা, যার নাম রাখা হয়েছে 'সালসাবীল'। ১৯. তাদের চারদিকে ঘোরাঘুরি করবে একদল কিশোর বালক, যারা (বয়সের ভারে বৃদ্ধ হয়ে যাবে না,) চিরকাল কিশোর থাকবে, যখনি ভূমি তাদের দিকে তাকাবে মনে হবে এরা বৃধি কতিপয় ছড়ানো ছিটানো মুজ। ২০. সেখানে যখন যেদিকে ভূমি তাদের দিকে তাকাবে মনে হবে এরা বৃধি কতিপয় ছড়ানো ছিটানো মুজ। ২০. সেখানে যখন যেদিকে ভূমি তাকারে, দেখবে তথ্ ন্যামতেরই সমারোহ, আরও দেখবে (নেয়ামতে উপচে পড়া) এক বিশাল সাম্রাজ্য। ২১. বেহেশতবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সৃষ্ণ সবুজ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের পরানো হবে রূপার কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের 'শরাবান তহরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ হংছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরন্ধার এবং তোমাদের ক্রিনিট্টী টেন্ট্টিট্টা মাইনিট্টা মাইনিট্টা মাইনিট্টা মাইনিট্টা তিটা মাইনার বীকৃতি। ২৩. (হে নবী,) আমি (এ মহাগ্রন্থ) কোরআন ধীরে ধীরে তেমার ওপর নামিল করেছি, ২৪. সুতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) ভূমি ধৈর্যের ক্রিক করিল নাম করিটি করা করিল বিরার তাকরাং বিরার ভির্মিক নিট্টা করিট্টা করিটিটা নিট্টা করিটিটা স্থিন করেছি, ২৪. সুতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) ভূমি ধৈর্যের ক্রিক করিল স্বির করিল বিরা তাকরাং বিরার বিরার ক্রিক করিল বিরা বিরার বিরার ভ্রিকিট্টা করিল বিরার বিরার ক্রিকটা দিল করেছি, ১৪. সুতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) ভূমি ধৈর্যের ক্রিকটা স্থান করিল বিরার বিরার বিরার ক্রিকটা স্থানিক বিরার বিরার বিরার ক্রিকটা স্থানিক বিরার বিরার বিরার করির করিল বিরার বিরার প্রারা তাকরা বিরার বিরার বিরার করিল বিরার বিরার বিরার করিল বিরার বিরার তাকরাং বিরার করের করিল বিরার বিরার বিরার বিরার করিল বিরার বিরার বিরার তাকরা বিরার বিরার বিরার বিরার করিল বিরার |
| हार्यान पूर्णका), که. তাতে রয়েছে (জান্নাতের) এক (জমিয়) ঝর্ণা, যার নাম রাখা হয়েছে 'সালসাবীল'। که. তাদের চারদিকে ঘোরাঘুরি করবে একদল কিশোর বালক, যারা (বয়সের ভারে বৃদ্ধ হয়ে যাবে না.) চিরকাল কিশোর থাকবে, যখনি ভূমি ভাদের দিকে ভাকাবে মনে হবে এরা বৃদ্ধি কভিপয় ছড়ানো ছিটানো মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি ভাকাবে, দেখবে ভধু নেয়ামতেরই সমারোহ, আরও দেখবে (নেয়ামতে উপচে পড়া) এক বিশাল সাম্রাজ্য। ২১. বেহেশতবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সৃষ্ণ সবুজ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের পরানো হবে রূপার কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেনিন ভাদের 'শরাবান তহরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ হছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরন্ধার এবং তোমাদের করে। বিত্তীয় চেষ্টা মাধনার বীকৃতি! ২৩. (হে নবী,) আমি (এ মহাগ্রন্থ) কোরআন ধীরে ধীরে তামার ওপর নাযিল করেছি, ২৪. স্তরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের ক্রিকি ক্রিকি ক্রিকি ক্রিকি বাদির ব্যাকিক ক্রিছে প্রাণ্ড বির্মির ধীরে) তুমি ধৈর্যের ক্রিকি ক্রিকি ক্রিকি বাদির ব্যাকিক ক্রিছে প্রস্তার বাদির করেছি, ১৮ তামার ওপর নাযিল করেছি, ১৮ তামার ওপর নাযিল করেছে ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের ক্রিকিক ক্রিকি ক্রিকি ক্রিকিক ক্রিকিক বাদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে ত্রিকিক ক্রিকিক ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার ক্রির বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার বাদ্ধার বাদ্ধার বাদ্ধার বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার বাদ্ধার বাদ্ধার ক্রিকিক ক্রিকিক ক্রির বাদ্ধার |
| नाम ताथा रहारह 'मानमावीन'। ১৯. তাদের চারদিকে ঘোরাঘুরি করবে একদল কিশোর বালক, যারা (বয়সের ভারে বৃদ্ধ হয়ে যাবে না.) চিরকাল কিশোর থাকবে, যথনি তুমি তাদের দিকে তাকাবে মনে হবে এরা বুঝি কতিপয় ছড়ানো ছিটানো মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি তাকাবে, দেখবে তথু নিয়ামতেরই সমারোহ, আরও দেখবে (নেয়ামতে উপচে পড়া) এক বিশাল সাম্রাজ্য। ২১. বেহেশতবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সৃষ্ণ সবুজ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের পরানো হবে রূপার কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের 'শরাবান তহরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ হচ্ছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরন্ধার এবং তোমাদের করে। (আমার) ত্রীর টাটা সাধনার বীকৃতি! ২৩. (হে নবী,) আমি (এ মহাগ্রন্থ) কোরআন ধীরে ধীরে ওপর নাযিল করেছি, ২৪. স্তরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের করিক করিক করিক করিছে। |
| কিশোর থাকবে, যখনি তৃমি তাদের দিকে তাকাবে মনে হবে এরা বৃঝি কতিপয় ছড়ানো ছিটানো মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তৃমি তাকাবে, দেখবে শুধু তিনীটা তুল বিশাল মাজার বিশাল বাখন যেদিকে তৃমি তাকাবে, দেখবে শুধু তিনীটা তুল বিশাল সাম্রাজ্য। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তৃমি তাকাবে, দেখবে শুধু তিনীটা তুল বিশাল সাম্রাজ্য। ২১. বেহেশতবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সৃক্ষ সবুজ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের পরানো হবে রূপার কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের শরাবান তহরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ হছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরক্ষার এবং তোমাদের বিশ্বতীয়) চেষ্টা সাধনার স্বীকৃতি! ২৩. (হে নবী,) আমি (এ মহাগ্রম্থ) কোরআন ধীরে ধীরে তোমার ওপর নাযিল করেছি, ২৪. সুতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের ক্রিটি তুমি বৈর্থক ক্রিটিটা তুমি বৈর্থক ক্রিটিটা তুমি বৈর্থক ক্রিটিটা তুমি বৈর্থক ক্রিটিটা তুমি ধৈর্যের ক্রিটিটা তুমি বৈর্থক ক্রিটিটা তুমি বির্থক ক্রিটিটা ক্রিট |
| কিশোর থাকবে, যখনি তুমি তাদের দিকে তাকাবে মনে হবে এরা বুঝি কতিপয় ছড়ানো ছিটানো মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি তাকাবে, দেখবে তথু তিনীরী ভূনিটানা মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি তাকাবে, দেখবে তথু তিনীরী ভূনিটানা মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি তাকাবে, দেখবে তথু তিনীরী ভূনিটানা মুক্তা। ২০. সেখানে যখন যেদিকে তুমি তাকাবে, দেখবে তথু তিনীরী ভূনিটানা মুক্তা। ২১. বেহেশতবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সৃষ্ণ সবুজ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের পরানো হবে রূপার কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের শারাবান তহুরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ কিনীয়ী পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ হছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরন্ধার এবং তোমাদের বিত্তীয়) চেষ্টা সাধনার স্বীকৃতি! ২৩. (হে নবী,) আমি (এ মহাগ্রন্থ) কোরআন ধীরে ধীরে তামার ওপর নাযিল করেছি, ২৪. সুতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের কিনী কিনী তিনী তানী কিনী তানি বিত্তীয় তিনী বিব্রি বির্বির তানী কিনীবির তানি করিছি বিন্তি তানী বির্বির বির্বির তানী করিছে তানী তানী বির্বির বির্বির তানী বির্বির বির্বির বির্বির বির্বির তানী বির্বির বির্ |
| নেয়ামতেরহ সমারোহ, আরও দেখবে (নেয়ামতে উপচে পড়া) এক বিশাল সাম্রাজ্য। ২১. বেহেশতবাসীদের পরনের কাপড় হবে অতি সৃক্ষ সরুজ রেশম ও মোটা মখমল, তাদের পরানো হবে রূপার কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের 'শরাবান তহুরা' (মহাপবিত্র উৎকৃষ্ট পানীয়) পান করাবেন। ২২. (তাদের মালিক বলবেন, হে আমার বান্দারা,) এ হিছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরক্ষার এবং তোমাদের (যাবতীয়) চেষ্টা সাধনার স্বীকৃতি! ২৩. (হে নবী,) আমি (এ মহাগ্রন্থ) কোরআন ধীরে ধীরে তামার ওপর নাযিল করেছি, ২৪. সুতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের কিন্দুর কিন্দ |
| কংকণ, (তদুপরি) তাদের মালিক সেদিন তাদের 'শরাবান وَمُلُّواً اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَّنَهُمْ رَبُّهُمْ رَبُّهُمْ وَابًا طَهُورًا اللهُورًا عَمُورًا عَلَى اللهُ الل |
| হচ্ছে তোমাদের জন্যে (আমার) পুরক্কার এবং তোমাদের بالله الله الله الله الله الله الله الل |
| ২৪. সূতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের مُثُمُّ وَهُلَّ لَاهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ الْعَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ |
| २८. সূতরাং (এদের ব্যাপারেও ধীরে ধীরে) তুমি ধৈর্যের مُنْهُرُ يُطِعُ مِنْهُرُ لَعُكُرِ رَبِّكَ وَلَا يَعْمُرُ مِنْهُمُ ٢٣ |
| ब्राह्म अति राज्य वाना कर्या निर्मा वर्षा करा, जात वर्षा करा करा, जात वर्षा करा वर्षा करा करा करा करा करा करा व ब्राह्म करा करा वाना करा करा करा करा करा करा करा करा करा कर |
| २৫. তুমি সকাল সন্ধ্যা ७५ তোমার মালিকের নাম স্বরণ مَرْ رَبِّك بُكُرَةً و آَصِيلًا على ٢٥ مَرْ وَالْكَ بَكُرةً و آَصِيلًا على ٢٥ مَرْ وَالْكَ بَكُرةً و آَصِيلًا على ٢٥ مَرْ وَالْكَ بَكُرةً و آَصِيلًا على ٢٥ مَرْ وَالْكُ بَالْكُ عَلَى اللهُ عَلَى |
| ২৬. রাতের একাংশ তাঁর সামনে সাজদাবনত থাকো এবং آيُلُ وَسَبِّحَدُ لَيْ وَسَبِّحَدُ لَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّ |
| ২৭. এরা বৈষয়িক স্বার্থের এ (সহজলভ্য) পার্থিব رُوْنَ وَيَنْ رُوْنَ الْعَاجِلَةُ وَيَنْ رُونَ الْعَاجِلَةُ وَيْنَ رُونَ الْعَاجِلَةُ وَيُنْ رُونَ الْعَلَامِينَ عَلَيْكُونَ الْعَلَقُ عَلَيْكُونَ الْعَلِيقِ الْعَلِيْكُ الْعَلَيْكُ وَلَيْكُونَ الْعَلِيقِ الْعَلَيْكُ الْعِلْمُ لِيَعْلِيقِ الْعَلَقِيلِ عَلَيْكُونَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمِينَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونُ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمُ عَلْمُ الْعَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ لَوْلِي الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمُ عَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونُ وَلِي الْعَلْمُ عَلَيْكُونَ الْعَلْمُ عَلَيْكُونُ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عُلْمُ لِلْعُلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا لِلْعَلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونِ الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا لِلْعِلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا الْعَلْمُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُو |
| জগতকেই বেশী ভালোবাসে এবং পরে যে তাদের ওপর ত্রিটার কঠিন দিন আসছে তা (এরা) উপেক্ষা করে! |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ পারা ২৯ তাব ২৮. (অথচ) আমিই এদের সৃষ্টি করেছি এবং এদের জোড়াগুলো ও তার বাঁধন আমিই মযবুত করেছি, আবার আমি যখন ইচ্ছা করবো তখন এদের (এ শক্ত বাঁধন শিথিল করে তাদের) আকৃতিই বদলে দেবো। | |
|---|------------------------------------|
| জোড়াগুলো ও তার বাঁধন আমিই মযবুত করেছি, আবার العرفير ع و العربية و القائدة العربية و العربية و العربية و العربية و العربية العربية العربية و الع | 0 A - |
| | |
| ২৯. এটা হচ্ছে অবশ্যই একটি উপদেশ বিশেষ, অতএব عَنَى شَاءَ النَّحَٰنَ إِلَى ইছা সে (একে আঁকড়ে ধরে) নিজের মালিকের | ۲۹ اِنَّ هٰزِ رَبِّهٖ سَبِيْلًا |
| ৩০. আর আল্লাহ তায়ালা যা চেয়েছেন সেটা ছাড়া وَنَ اللّهُ عَ اللّهُ عَلَيْمًا مَكِيمًا وَنَ اللّهُ عَلَيْمًا مَكِيمًا وَنَ اللّهُ عَلَيْمًا مَكِيمًا وَضِعَ काয়ালা সব কিছু জানেন এবং তিনি প্রজ্ঞাময়। | ۳۰ وَمَا تُ |
| ৩১. তিনি যাকে চান তাকে তাঁর অফুরন্ত রহমতের মাঝে مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّلِمِيْنَ প্রবেশ করান; যালেমদের জন্যে আল্লাহ তায়ালা কঠিন শান্তির ব্যবস্থা রেখেছেন। | - |
| سُورَةُ الْبُرْسَلْيِ مَكِّيَةً | |
| সূরা আব্দ মোরসাকাত মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৫০, রুকু ২ ۲ : وُکُوعٌ : ۵۰ زُکُوعٌ | |
| مُرِ اللَّهِ الرَّحْيٰنِ الرَّحِيْرِ مَعْنِ الرَّحِيْرِ اللَّهِ الرَّحْيٰنِ الرَّحْيٰنِ الرَّحِيْرِ | m <u>i</u> |
| ১. মৃদুমন্দ ও ক্রমাগভভাবে পাঠানো (কল্যাণবাহী) مين عُرْفًا و বাতাসের শপথ, | ا وَالْمُرْسَلَ |
| ২. প্রলয়ংকরী ঝঞ্জা বাতাসের শপথ, | ٢ فَالْعَصِفْر |
| ৩. মেঘমালা বিস্তৃতকারী বাতাসের শপথ, ১ কুর্নিত্ত | ٣ والنفر |
| ৪. (আবার এ মেঘমালাকে) যে (বাতাস) টুকরো টুকরো করে আলাদা করে দেয় তার শপথ, | ٣ فَالْفُرِقْ |
| ৫. (মানুষের অন্তরে) ওহী নিয়ে আসে যে (ফেরেশতা) পুর্টির শপথ, | ۵ فَالْهُلْقِيٰـ |
| ৬. (বিশ্বাসীরা এরপর) যেন কোনো ওযর আপন্তি (পেশ) করতে না পারে কিংবা (অবিশ্বাসীরা) যেন এতে সতর্ক হতে পারে, | ٢ عُنْرًا أَوْ |
| ٩. निजल्मत्र (जाभारमत्र (পরকাল দিবসের) যে প্রতিশ্রুতি مَن وَن لَـو اقع الله الله الله الله الله الله الله الل | ٤ إِنَّهَا تُوْ |
| ৮. যখন আকাশের তারাগুলোকে জ্যোতিহীন করে দেয়া থ তিন্দু বিদ্দুলী ব | |
| ৯. যখন আকাশ বিদীর্ণ হয়ে যাবে, | ٩ وَإِذَا ال |
| ১০. যখন পাহাড়গুলোকে (ধুলার মতো) উড়িয়ে দেয়া و يُسِفَى اللهُ كَسِفَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى | |
| ১১. যখন নবী রস্লদের সকলকে নির্ধারিত সময়ে (এক وَسُلُ ٱوۡتِنَتُ وَ الْعَالِيَةِ الْعَالِيَةِ الْعَالِيَةِ الْعَالِيَةِ الْعَالَةِ الْعَلَاقِ الْعَلِيقِ الْعَلَاقِ الْعَلِيَةِ الْعَلَاقِ الْعَلِيَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلِيَّةِ الْعَلَاقِ الْعَلَي | اا وَإِذَا ال |
| | মন্যিল ৭ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|--|
| ১২. কোন্ (বিশেষ) দিনটির জন্যে (এ কাজটি) স্থগিত করে রাখা হয়েছে? | ١٢ لِأَيِّ يَوْمٍ ٱجِّلَتْ ٥ |
| ১৩. (হাঁ) চূড়ান্ত ফয়সালার দিনটির জন্যে, | ١٣ لِيَوْرَ الْفَصْلِ ع |
| ১৪. তুমি কি জানো সে ফয়সালার দিনটি কেমন হবে? | ١٣ وَمَا آدُرْ لِكَ مَا يَوْمٌ الْفَصْلِ ا |
| ১৫. যারা (একে) মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে সেদিন তাদের ধ্বংস (অবধারিত)। | ١٥ وَيْلُّ يَّوْمَنِنٍ لِّلْمُكَنِّبِيْنَ |
| ১৬. আমি কি আগের (অবিশ্বাসী যালেম) লোকদের ধ্বংস করিনিঃ | ١٦ أَلَرْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ا |
| ১৭. অতপর আমি পরবর্তী লোকদেরও (ধ্বংসের পথে) পূর্ববর্তীদের সঙ্গী করে দেবো। | ١٤ ثُرِّ نُتْبِعُمُر الأخِرِينَ |
| ১৮. (সকল যুগে) অপরাধী ব্যক্তিদের সাথে আমি এ (একই) ধরনের ব্যবহারই করে থাকি। | ١٨ كَنْ لِكَ نَفْعَلُ بِالْهُجْرِمِيْنَ |
| ১৯. (যাবতীয়) দুর্ভোগ সেদিন তাদের (জ্বন্যে) যারা (সত্যকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে! | ١٩ وَيْلُّ يُّوْمَئِنٍ لِّلْهُكَنِّ بِيْنَ |
| ২০. আমি কি তোমাদের (এক ফোঁটা) তুচ্ছ পানি থেকে সৃষ্টি করিনি? | ٢٠ أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِيْنٍ ٢ |
| ২১. অতপর সেই (তুচ্ছ পানির) ফোঁটাকে একটি সংরক্ষিত স্থানে আমি (সযজুে) রেখে দিয়েছিঃ | ٢١ فَجَعَلْنَهُ فِي قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ٧ |
| ২২. (রেখে দিয়েছি) একটি সুনির্দিষ্ট মেয়াদ পর্যন্ত, | ٢٢ إِلَى قَنَرٍ مَّعْلُوْمٍ ٧ |
| ২৩. তারপর তাকে পরিমাণমতো সব (কিছু দিয়ে আমি পূর্ণাংগ একটি মানুষ তৈরী) করতে সক্ষম হয়েছি, কতো সক্ষম (ও নিপুণ) স্রষ্টা আমি! | ٢٣ فَقَنَرْنَا فَي فَنِعْمَ الْقُدِرُوْنَ |
| ২৪. (যাবতীয়) দুর্ভোগ সেদিন তাদের জ্বন্যে যারা (সত্যকে) মিধ্যা প্রতিপন্ন করেছে! | ٢٣ وَيْلُ يُّوْمَئِنٍ لِلْهُكَنِّ بِيْنَ |
| ২৫. আমি কি ভূমিকে (প্রয়োজনীয় সামগ্রীসমূহের) ধারণকারী করে বানিয়ে রাখিনি? | ٢٥ أَلَر نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ٧ |
| ২৬. জীবিত ব্যক্তিদের যেমনি (সে ধারণ করে লাছে) তেমনি মৃত ব্যক্তিদেরও (সে নিজের ভেতরে ধরে রেখেছে), | ٢٦ اَحْيَاءً وَّامُواتًا ٧ |
| ২৭. আমি তাতে উঁচু উঁচু পর্বতমালা সৃষ্টি করে রেখেছি এবং তোমাদের আমি সুপেয় পানি পান করিয়েছি। | ٢٠ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِىَ شَيِخُتٍ وَّاَشْقَيْنُكُرْمُّاءَ فَرَاتًا ﴿ |
| ২৮. দুর্ভোগ তাদের জন্যে, যারা (এসব সত্যকে) মিধ্যা প্রতিপন্ন করেছে। | ٢٨ وَيْلُ يَّوْمَعْنِ لِلْهُكَنِّبِيْنَ |
| ২৯. (বিচারের পর বলা হবে,) এবার চলো সেই জিনিসের দিকে যাকে তোমরা দুনিয়ায় মিধ্যা প্রতিপন্ন করতে, | ٢٩ إِنْطَلِقُوْ ۗ إِلَى مَا كُنْتُرْ بِهِ تُكَنِّبُونَ عَ |
| ৩০. চলো সেই ধ্ <u>ম</u> পুঞ্জের ছায়ার দিকে, যার রয়েছে তিনটি (ভয়ংকর) শাখা প্রশাখা, | ٣٠ إِنْطَلِقُوْ ۚ إِلَى ظِلٍّ ذِيْ ثَلْمِ شُعَبٍ ٧ |
| ৩১. এ ছায়া কিন্তু সুনিবিড় কিছু নয়, এটা (তাকে) আগুনের লেলিহান শিখা থেকে বাঁচাতেও পারবে না; | ٣١ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ا |
| ৭৭ সূরা আল মোরসালাত | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ২৯ তাবারাকাল্লাযী |
|---|--|
| ৩২. (বরং) তা বৃহৎ প্রাসাদতুল্য আগুনের ক্ষুলিংগ নিক্ষেপ করতে থাকবে, | ٣٢ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ج |
| ৩৩. (মনে হবে) তা যেন হলুদ বর্ণের (কতিপয়) উটের পাল; | ٣٣ كَانَّهُ جِمِلَتُ مُفُرً |
| ৩৪. দুর্ভোগ তাদের (জন্যে), যারা (একে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে। | ٣٣ وَيْلُ يُوْمَنِنِ لِللَّهُكُنِّ بِيْنَ |
| ৩৫. এ হচ্ছে সেই (মহাবিচারের) দিন, যেদিন কেউ কোনো কথা বলবে না, | ٣٥ مٰنَ ا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ٧ |
| ৩৬. কাউকে সেদিন (গুনাহের পক্ষে) ওযর আপন্তি (কিংবা সাফাই) পেশ করার অনুমতি দেয়া হবে না। | ٣٦ وَلَا يُؤْذَنُ لَمُرْ فَيَعْتَنْوِرُوْنَ |
| ৩৭. (যাবতীয়) দুর্ভোগ সেদিন তাদের (জ্বন্যে) যারা (এসব সত্যকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে। | ٣٧ وَيْلُ يُوْمَنِنِ لِللَّهُكَنِّ بِيْنَ |
| ৩৮. (সেদিন পাপীদের বলা হবে,) আজকের দিন হচ্ছে চূড়ান্ত ফয়সালার দিন, তোমাদের সাথে তোমাদের পূর্ববর্তী সকল মানুষকে আজ আমি (এখানে) একত্রিত করেছি। | ٣٨ هٰنَا يَوْاً الْفَصْلِ مِ مَبَعْنَكُمْ وَالْأَوَّلِيْنَ |
| ৩৯. আজ যদি (আমার বিরুদ্ধে) তোমাদের কোনো অপকৌশন প্রয়োগ করার থাকে তাহলে তা প্রয়োগ করো। | ٣٩ فَانَ كَانَ لَكُر كَيْدٌ فَكِيْدُونِ |
| ৪০. দুর্ভোগ তাদের (জন্যে), যারা (একে) মিথ্যা করেছে। | ٣٠ وَيْلٌ يُّوْمَئِنِ لِلْمُكَنِّبِيْنَ ع |
| ৪১. (আল্লাহকে) যারা ভয় করেছে আজ তারা থাকবে (সুনিবিড়) ছায়াতলে এবং (প্রবাহমান) ঝর্ণাধারার মাঝে, | ٣١ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلْلٍ وَّعَيُونٍ لا |
| ৪২. তাদের জন্যে ফলফলারির ব্যবস্থা থাকবে, যা চাইবে তারা তাই পাবে; | ٣٢ وَّفُوَ اكِهُ مِيًّا يَشْتَهُونَ ١ |
| ৪৩. (তাদের বলা হবে, দুনিয়ায়) তোমরা যা করে এসেছো তার পুরস্কার হিসেবে (আজ্ঞ) তোমরা তৃত্তির সাথে (আমার নেয়ামত) খাও ও পান করো। | ٣٣ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مَنِيْنًا ۖ بِهَا كُنْتُر ٛ تَعْهَلُوْنَ |
| ৪৪. অবশ্যই আমি সংকর্মশীল মানুষদের এমনিভাবে পুরস্কার দিয়ে থাকি। | ٣٣ إنَّا كَنْ لِكَ نَجْزِى الْهُحْسِنِيْنَ |
| ৪৫. সেদিন (যাবতীয়) দুর্ভোগ তাদের জ্বন্যে, যারা (এসব সত্যকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে! | ٣٥ وَيْلُ يَّوْمَئِنِ لِلْمُكَنِّ بِيْنَ |
| ৪৬. (হে অবিশ্বাসীরা,) কিছুদিনের জন্যে তোমরা এখানে খেয়ে নাও এবং কিছু ভোগ আস্বাদনও করে নাও, নিসন্দেহে তোমরা হচ্ছো অপরাধী! | ٣٦ كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُر مُّجُرِمُونَ |
| ৪৭. (যাবতীয়) দুর্ভোগ সেদিন তাদের (জ্বন্যে) যারা (এসব সত্যকে) মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে। | ٣٠ وَيْلُ يَّوْمَنِنٍ لِللهُكَلِّبِيْنَ |
| ৪৮. এ যালেমদের অবস্থা হচ্ছে, এদের যখন বলা হয়, তোমরা আল্লাহর দরবারে নত হও, তখন তারা নত হয় না। | ٣٨ وَإِذَا قِيْلَ لَمُرُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ |
| ৪৯. (যাবতীয়) দুর্ভোগ সেদিন তাদের (জ্বন্যে), যারা (এসব সত্যকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে! | ٣٩ وَيْلُ يُّوْمَئِنِ لِلْمُكَنِّبِيْنَ |
| ৫০. (তুমিই বলো,) এরপর আর এমন কোন্ কথা আছে যার ওপর এরা ঈমান আনবে! | ٥٠ فَبِاَيِّ مَرِيْسٍ بَعْنَةً يُؤْمِنُونَ ع |
| ৭৭ সূরা আল মোরসালাত | भनियम १ |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|
| | |
| সূরা আন নাবা | سُورَةُ النَّبَامَكِيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৪০, ৰুকু ২ | أَيَاتٌ : ٣٠ رُكُوعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِسْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| কোন্ বিষয়় সম্পর্কে তারা একে অপরকে জিজ্ঞেস করছে? | ا عَمَّ يَتَسَاءُلُونَ ج |
| ২. (তারা কি) সেই (গুরুত্বপূর্ণ) মহাসংবাদের ব্যাপারেই | ٢ عَنِ النَّبَا الْعَظِيْرِ ٧ |
| (একে অপরকে জিজ্ঞেস করছে), | م من السبر السبير ا |
| ৩. যে ব্যাপারে তারা নিজেরাও বিভিন্ন মত পোষণ করে: | ٣ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ |
| না, (তা আদৌ ঠিক নয়, সঠিক ঘটনা) এয়া তো অচিয়েই জানতে পায়বে, | ٣ كَلَّا سَيَعْلَهُوْنَ ٧ |
| ৫. আবারও (ভোমরা শুনে রাখো, কেয়ামত আসবেই | ۵ ثُرِّ كَلَّا سَيَعْلَهُوْنَ |
| এবং) অতি সত্ত্বরই তারা (এ সম্পর্কে) জানতে পারবে। | |
| ৬. (তোমরা কি আমার সৃষ্টি কৌশল সম্পর্কে ভেবে দেখোনিঃ) আমি কি এ ভূমিকে বিছানার মতো করে তৈরী করে রাখিনিঃ | ٢ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهٰنَّا ١ |
| (ভূমিকে স্থির রাখার জন্যে) আমি কি পাহাড়সমূহকে (এর গায়ে) পেরেকের মতো গেড়ে রাখিনি? | وَّالْجِبَالَ أَوْتَادًا صلا |
| ৮. (সৃষ্টির ধারা অব্যাহত রাখার জ্বন্যে) আমি তোমাদের জোড়ায় জোড়ায় পয়দা করেছি, | ٨ وَّ هَلَقَنْكُمْ ٱزْوَاجًا ٧ |
| ৯. তোমাদের ঘুমকে আমি শান্তির উপকরণ বানিয়েছি, | 9 وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُرْ سُبَاتًا ٧ |
| ১০. আমি রাতকে (তোমাদের জন্যে) আবরণ করে দিয়েছি, | ١٠ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ٧ |
| ১১. (তার পাশাপাশি) দিনগুলোকে জীবিকা অর্জনের জন্যে (আলোকোজ্জ্বল করে) রেখেছি, | ١١ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا م |
| ১২. আমি তোমাদের ওপর সাতটি মযবুত আসমান বানিয়েছি, | ١٢ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُر سَبْعًا شِرَادًا لا |
| ১৩. (এতে) স্থাপন করেছি একটি প্রোচ্জ্বল বাতি, | ١٣ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا مِهِ |
| ১৪. মেঘমালা থেকে আমি বর্ষণ করেছি অবিরাম বৃষ্টিধারা, | ١٣ وَّ أَنْزَلْنَا مِنَ الْهُعْصِرٰ فِي مَاءً ثَجَّاجًا ٧ |
| ১৫. যেন তা দিয়ে আমি (শ্যামল ভূমিতে) উৎপাদন করতে পারি (নানা রকমের) শস্যদানা ও তরিতরকারি, | ١٥ لِّنُخْرِجَ بِهِ مَبًّا وَّنَبَاتًا ٧ |
| ১৬. এবং সুনিবিড় বাগবাগিচা; | ١٦ وَّجَنُّتِ ٱلْفَافًا مَ |
| ১৭. (সব কিছুর শেষে) এর (সিদ্ধান্তকারী একটি) দিনও সুনির্দিষ্ট (করে রাখা) হয়েছে। | 14 إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا لا |
| ১৮. যেদিন শিংগায় ফুঁ দেয়া হবে, (প্রলয়ংকরী ফুঁর সাথে সাথে) তোমরা দলে দলে আসবে, | ١٨ يُّومَ يُنْفَعُ فِي الصُّورِ فَتَاْتُونَ أَفُوَاهًا لا |
| ১৯. (যখন) আসমান খুলে দেয়া হবে এবং তা অনেকগুলো খোলা দরজায় পরিণত হয়ে যাবে, | 19 وَّفُتِعَسِ السَّهَاءُ فَكَانَتْ ٱبْوَابًا ٧ |
| ২০. পর্বতমালাকে সরিয়ে দেয়া হবে অতপর তা মরীচিকার মতো হয়ে যাবে, | ٢٠ وُّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ١ |
| ৭৮ সূরা আন নাবা | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|--|
| ২১. নিশ্চয়ই জাহান্নাম (পাপীদের জন্যে) এক (গোপন) ফাঁদ্ | ٢١ إِنَّ جَهَنَّرَ كَانَتُ مِرْصَادًا سِلا |
| ২২. বিদ্রোহীদের জন্যে তা হবে (নিকৃষ্টতম) আবাসস্থল, | ٢٢ لِّلطَّغِيْنَ مَاٰبًا ٧ |
| ২৩. সেখানে তারা কালের পর কাল ধরে পড়ে থাকবে, | ٢٣ لَّبِثِيْنَ فِيْهَا ۖ اَحْقَابًا ع |
| ২৪. সেখানে তারা কোনো ঠান্ডা ও পানীয় (জাতের) কিছুর স্বাদ ভোগ করবে না, | ٢٣ لَا يَنُ وْقُونَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا لا |
| ২৫. (সেখানে) ফুটন্ত পানি, পুঁজ, দুর্গন্ধময় রক্ত, ক্ষত ছাড়া (ভিন্ন) কিছুই থাকবে না, | ٢٥ إِلَّا مَوِيْهًا وَّغَسَّاقًا لا |
| ২৬. (এই হচ্ছে তাদের) যথাযথ প্রতিফল; | ٢٦ جَزَاءً وِقَاقًا ١ |
| ২৭. (কারণ) এরা হিসাব-নিকাশের (দিন থেকে কিছুই) আশা করেনি, | ٢٥ إِنَّهُرْ كَانُوْ الْإِ يَرْجُونَ حِسَابًا لا |
| ২৮. (বরং) তারা আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে; | ٢٨ وَّكَنَّ ابُواْ بِأَيْتِنَا كِنَّا ابًا |
| ২৯. আমি তো (তাদের) যাবতীয় কর্মকান্ডের রেকর্ড সংরক্ষণ করে রেখেছি, | ٢٩ وَكُلَّ شَيْءٍ ٱحْصَيْنَهُ كِتْبًا ٧ |
| ৩০ অতএব তোমরা আযাব উপভোগ করতে থাকো, (আজ) আমি ভোমাদের জন্যে শান্তির মাত্রা ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করবো না। | ٣٠ فَنُ وْقُواْ فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ إِلَّا عَنَابًا ع |
| ৩১. (অপরদিকে) পরহেযগার লোকদের জ্বন্যে রয়েছে (পরম) সাফল্য, | ٣١ إِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا لا |
| ৩২. (তা হচ্ছে সুসজ্জিত) বাগবাগিচা, আংগুর (ফলের সমারোহ), | ٣٢ حَلَ الْقَ وَاعْنَابًا لا |
| ৩৩. (আরো রয়েছে) পূর্ণ যৌবনা সমবয়সী সুন্দরী তরুণী, | ٣٣ وَّكُوَاعِبَ ٱتْرَابًا لا |
| ৩৪. এবং উপচে পড়া পানপাত্র; | ٣٣ وَّكَأْسًا دِهَاقًا ١ |
| ৩৫. এখানে তারা কোনো বাজে কথা ও মিথ্যা শুনতে পাবে না, | ٣٥ لَا يَسْبَعُونَ فِيْهَا لَغُوًّا وَّلَا كِنَّابًا ع |
| ৩৬. তোমার মালিকের তরষ্ণ থেকে (এটা হচ্ছে) তাদের জন্যে যথাযথ পুরস্কার, | ٣٦ جَزَاءً مِنْ رَبِكَ عَطَاءً حِسَابًا لا |
| ৩৭. (এ পুরস্কার তাঁর) যিনি আসমানসমূহ, যমীন ও এদের উভয়ের মাঝখানে যা কিছু আছে তার মালিক- | ٣٤ رَّبِّ السَّوٰسِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا |
| দয়াময় আল্লাহ তায়ালা- তাঁর সাথে কেউই বিতর্ক করার ক্ষমতা রাখে না, | الرَّمْنُ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ع |
| ৩৮. সেদিন (পরাক্রমশালী মালিকের সামনে) রহ (জিবরাঈল) ও অন্যান্য ফেরেশতারা সারিবদ্ধভাবে | ٣٨ يَوْاً يَقُوااً الرَّوْحُ وَالْمَلَّذِكَةُ صَفًّا لِا لَّ |
| দাঁড়িয়ে থাকবে, করুণাময় আল্লাহ তায়ালা যাদের অনুমতি দেবেন তারা ছাড়া (সেদিন) অন্য কেউই কথা | يَتَكَلَّمُوْنَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰٰى وَقَالَ |
| বলতে পারবে না এবং সে (অনুমতিপ্রাপ্ত ব্যক্তিও যখন বলবে তখন) সঠিক কথাই বলবে। | مَوَابًا |
| ৩৯. এ দিনটি সত্য, (তাই) কেউ ইচ্ছা করলে (এখনো) নিজের মালিকের কাছে নিজের জন্যে একটা আশ্রয় খুঁজে | ٣٩ ذٰلِكَ الْيَوْا الْعَقَّ عَنَينَ شَاءً اتَّخَلَ |
| নিতে পারে। | إِلَى رَبِّهِ مَاٰبًا |
| ৭৮ সূরা আন নাবা | मनियम १ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|------------------|--|--|
| | ৪০. আমি আসনু আযাব সম্পর্কে তোমাদের সতর্ক করে দিলাম, সেদিন মানুষ দেখতে পাবে তার হাত দুটি এ | ٢٠ إِنَّا ٱنْنَرَنْكُرْ عَلَاابًا قَرِيْبًا ۖ لَمْ يُوْاً يَنْظُرُ |
| (1) | দিনের জন্যে কী কী জিনিস পাঠিয়েছে, (এ দিনকে) | الْمَرْءُ مَا قَلَّمَتْ يَلَاهُ وَيَقُولُ الْكُفِرُ يلَيْتَنِي |
| | অস্বীকারকারী ব্যক্তি তখন বলে উঠবে (ধিক্ এমনি এক জীবনের জন্যে), হায়, কতো ভালো হতো যদি মানুষ (না | رُدْ يُ يُرْبُاع كُنْتُ تُوْبًاع |
| | হয়ে) আমি (আজ) মাটি হতাম! | |
| | সূরা আনু নাযেয়াত | سُوْرَةُ النَّزِعْتِ مَكِّيَّةً |
| | মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৪৬, ৰুকু ২ | أياتًّ : ٣٦ رُكُوعٌ : ٢ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ |
| | শপথ (সেই ফেরেশতাদের), যারা নির্মমভাবে (পাপীদের আত্মা) ছিনিয়ে আনে, | ا وَ النَّزِعْسِ غَرْقًا لا |
| | ২. শপথ (সেই ফেরেশতাদের) যারা সহজভাবে (নেককারদের রূহ) খুলে দেয়, | ٢ وَّ النَّشِطْتِ نَشْطًا ٧ |
| | শপথ (সেই ফেরেশতাদের), যারা (আমার হুকুম তামিল করার জন্যে) সাঁতরে বেড়ায়, | ٣ والسِّيطْتِ سَبْعًا ٧ |
| r. | শপথ (সেই ফেরেশতাদের), যারা (হুকুম পালনে) দ্রুত এগিয়ে চলে, | ٣ فَالسُّبِقْتِ سَبْقًا ٧ |
| त्क मात्यम | ৫. শপথ (সেই ফেরেশতাদের), যারা (সব ক'টি) কাজ সুষ্ঠভাবে পরিচালনা করে। | ٥ فَالْهُنَيِّرْتِ ٱمْرًار |
| ওয়াক্ফে | ৬. (কেয়ামত অবশ্যই আসবে), সেদিন ভূকম্পনের এক প্রচন্ড ঝাঁকুনি হবে, | ٦ يَوْاً تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ٧ |
| | ৭. (কবর থেকে সবাইকে ওঠানোর জন্যে) সাথে সাথে আরেকটি ধাক্কা হবে; | 4 تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ١ |
| <u>দ</u> | ৮. (এ অবস্থা দেখে) সেদিন মানুষের অন্তরসমূহ ভয়ে কম্পমান হবে, | ٨ قُلُوْبٌ يُّوْمَنِنِ وَّاجِفَةً ٧ |
| ফে লাযেম | ৯. তাদের সবার দৃষ্টি হবে সেদিন নিম্নগামী (ও ভীত-সন্তুম্ভ)। | ٩ ٱبْصَارُهَا غَاشِعَةً ر |
| ওয়াক্ফে | ১০. কাম্বেররা বলে, সত্যিই কি আমাদের আগের অবস্থায় ফিরিয়ে নেয়া হবে? | ١٠ يَقُولُونَ ءَاِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ١٠ |
| বেম | ১১. আমরা পচে-গলে হাডিডতে পরিণত হয়ে যাওয়ার পরও? | ١١ ءَ إِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّحْرِةً ٥ |
| उग्नाक्त्य मात्र | ১২. তারা (এও) বলেছে, যদি আমাদের আগের জীবনে ফিরিয়ে নেয়া হয়, তাহলে সেটা তো হবে খুবই লোকসানের বিষয়। | ١٢ قَالُواْ تِلْكَ إِذًا كَرَّةً غَاسِرَةً ر |
| 89 | ১৩. অবশ্যই তা হবে বড়ো ধরনের একটি গর্জন; | ١٣ فَإِنَّهَا هِيَ زَجْرَةً وَّ احِرَةً ٧ |
| দ | ১৪. (এ গর্জন শেষ না হতেই দেখা যাবে,) তারা (কবর থেকে উঠে যমীনের ওপর) সমবেত হয়ে গেছে; | ١٢ فَاِذَا هُرْ بِالسَّاهِرَةِ ١ |
| ७ऱ्राक्टम नात्यभ | ১৫. (হে নবী,) তোমার কাছে কি মৃসার কাহিনী পৌছেছে? | ١٥ مَلْ أَتْعِكَ مَنِيْسَ مُوسَى ر |
| ওয়াক্ | ১৬. তাকে যখন তার মালিক পবিত্র 'তুয়া' উপত্যকায় ডেকে বলেছিলেন, | ١٦ إِذْ نَادُهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْهُقَلُّسِ طُومًى ع |
| | ১৭. যাও ফেরাউনের কাছে, কারণ সে (তার মালিকের) বিদ্রোহ করেছে, | ١٤ إِذْهَبُ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى رَصِهِ |
| | ৭৯ সূরা আন নাযেয়াত | মন্যিল ৭ |
| | | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আন্মা ইয়াতাসাআলুন |
|--|---|
| ১৮. তাকে জিজ্ঞেস করো, তুমি কি (ঈমান এনে) পবিত্র হতে চাওঃ | ١٨ فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلَى أَنْ تَزَكَّى ٧ |
| ১৯. (তাকে এও বলো,) আমি তোমাকে তোমার মালিকের (কাছে পৌঁছার একটা) পথ দেখাতে পারি, এতে তুমি হয়তো তাঁকে ভয় করবে, | ١٩ وَ أَهْرِيكَ وَلِي رَبِّكَ فَتَخْشَى ج |
| ২০. অতপর সে তাকে (আমার পক্ষ থেকে) নবুওতের বড়ো একটি নিদর্শন দেখালো, | ۲۰ فَاَرْدُ الْإِيَةَ الْكُبْرِٰي رَسِهِ |
| ২১. কিন্তু সে (আমার নবীকে) মিধ্যা সাব্যস্ত করলো এবং সে (তার) বিরুদ্ধাচরণ করলো, | ٢١ فَكَنَّ بَ وَعَصٰى رصه |
| ২২. অতপর (ষড়যন্ত্র করার মানসে) সে পেছনে ফিরে গেলো, | ۲۲ ثُر آدبر یسعی رصه |
| ২৩. সে লোকজন জড়ো করলো এবং তাদের ডাক দিলো, | ۲۳ فَحَشَرَ فَنَادٰی رصے |
| ২৪. তারপর বললো, আমিই হচ্ছি তোমাদের সবচেয়ে বড়ো রব', | ۲۳ فَقَالَ إَنَا رَبُّكُم الْإَعْلَى رَسِه |
| ২৫. অবশেষে আল্লাহ তায়ালা তাকে আখেরাত ও দুনিয়ার আযাবে পাকড়াও করলেন; | ٢٥ فَاغَنَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْإِخْرَةِ وَالْأُولَٰى طَ |
| ২৬. অবশ্যই এমন সব লোকের জন্যে এতে শিক্ষার নিদর্শন রয়েছে যারা (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করে, | ٢٦ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّينَ يَخْشَى ١٤ |
| ২৭. (তোমরা বলো,) তোমাদের (দ্বিতীয় বার) সৃষ্টি করা কি বেশী কঠিন, না আকাশ সৃষ্টি করা বেশী কঠিন? আল্লাহ তায়ালা তা বানিয়েছেন। | ٢٤ ءَ أَنْتُر أَهَنَّ هَلْقًا أَرِ السَّهَاءُ ، بَنْهَارِسَ |
| ২৮. আল্লাহ তায়ালা (শৃন্যের মাঝে) তা উঁচু করে রেখেছেন, অতপর তাকে সুবিন্যম্ভ করেছেন, | ٢٨ رَفَعَ سَبْكَهَا فَسَوْنهَا ٧ |
| ২৯. তিনি রাতকে (অন্ধকারের চাদর দিয়ে) ঢেকে রেখেছেন, আবার তা থেকে (আলো দিয়ে) দিনকে বের করে এনেছেন, | ٢٩ وَ أَغْطَشَ لَيْلَهَا وَ أَغْرَجَ ضُعْدِهَا م |
| ৩০. এরপর যমীনকে তিনি (বিছানার মতো করে) বিছিয়ে দিয়েছেন; | ٣٠ وَالْأَرْضَ بَعْنَ ذٰلِكَ دَمْنِهَا م |
| ৩১. তা থেকে তিনি তার পানি ও তার উদ্ভিদরাজি বের করেছেন , | ٣١ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعُدِهَا م |
| ৩২. তিনি পাহাড়সমূহ (যমীনের গায়ে পেরেকের মতো) গেড়ে দিয়েছেন, | ٣٢ وَالْجِبَالَ أَرْسٰعهَ لا |
| ৩৩. তোমাদের জন্যে এবং তোমাদের জস্তু জানোয়ারদের উপকারের জন্যে; | ٣٣ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِإَنْعَامِكُمْ ا |
| ৩৪. তারপর যখন বড়ো বিপর্যয় (তোমাদের সামনে) হাযির হবে, | ٣٣ فَإِذَا جَاءُسِ الطَّامَّةُ الْكُبْرِي رمه |
| ৩৫. সেদিন মানুষ একে একে সব কিছুই স্বরণ করবে যা (সে দুনিয়ায়) করে এসেছে, | ٣٥ يَوْ)َ يَتَنَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعْى ٧ |
| ৩৬. সেদিন সে ব্যক্তি দেখতে পাবে, যার জ্বন্যে জাহান্লাম খুলে ধরা হবে। | ٣٦ وِبُرِّزَتِ الْجَعِيْرُ لِمَنْ يَّرِى لا |
| ৩৭. অতপর যে ব্যক্তি সীমাঙ্গংঘন করেছে, | ٣٤ فَأَمًّا مَنْ طَغَى لا |
| ৩৮. এবং (পরকালের তুলনায়) দুনিয়ার জীবনকেই অগ্রাধিকার দিয়েছে, | ٣٨ وَأَثَرَ الْحَيْوةَ النَّنْيَا لا |
| ৭৯ সূরা আন নাযেয়াত | मनियम १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|--|
| ৩৯. অবশ্যই এই জাহান্নাম হবে তার (একমাত্র) আবাসস্থল; | ٣٩ فَانَّ الْجَحِيْرَ هِيَ الْهَاْوٰي ١ |
| ৪০. (আবার) যে ব্যক্তি তার মালিকের সামনে দাঁড়ানো (-র এ দিন)-কে ভয় করেছে এবং (এ ভয়ে) নিজের | ٣٠ وَأَمًّا مَنْ هَانَ مَقَامً رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ |
| নফসকে কামনা বাসনা থেকে বিরত রেখেছে, | عَنِ الْهَوٰى لا |
| ৪১. অবশ্যই জান্লাত হবে তার ঠিকানা; | ٣١ فَارِنَّ الْجَنَّةَ مِيَ الْهَاْوٰي لا |
| ৪২. তারা তোমার কাছে জানতে চায় কেয়ামত কখন সংঘটিত হবে? | ٣٢ يَسْئَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسُعهَا ١ |
| ৪৩. (ভূমি ভাদের বলে দাও,) সে সময়ের কথা বর্ণনা করার সাথে তোমার কি সম্পর্ক (তা তুমি জানবে কি করে)? | ٣٣ فِيْرَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِيهَا ١ |
| ৪৪. তার (আগমনের) চ্ড়ান্ত (জ্ঞান একমাত্র) তোমার মালিকের কাছেই রয়েছে; | ٣٣ إِلَى رَبِّكَ مُنْتَهٰدِهَا ١ |
| ৪৫. তুমি হচ্ছো সে ব্যক্তির জন্যে সাবধানকারী, যে একে ভয় করে; | ٢٥ إِنَّهَا آنْسَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْطُرُهَا ، |
| ৪৬. যেদিন এরা কেয়ামত দেখতে পাবে, সেদিন (এদের মনে হবে) তারা এক বিকাল অথবা এক সকাল পরিমাণ সময় (দুনিয়ায়) অতিবাহিত করে এসেছে। | ٣٦ كَأَنَّهُمْ يَوْاً يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ شُحْنِهَا ع |
| সুরা আবাসা মক্কায় অবতীর্গ- আয়াত ৪২, রুকু ১ | سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيةً إِيَّابِيَّ : ٢٢ رُكُوْعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | يِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. সে (নবী) ভ্রাকুঞ্চিত করলো এবং (বিরক্ত হয়ে) মুখ ফিরিয়ে নিলো, | ا عَبَسَ وَتَوَلَّى لا |
| ২. কারণ, তার সামনে একজন অন্ধ ব্যক্তি এসেছে; | ٢ أَنْ جَاءَاً الْأَعْلَى ا |
| ৩. তুমি কি জানতে— হয়তো সে (অন্ধ)-ই নিজেকে পরিশুদ্ধ করে নিতো, | ٣ وَمَا يُنْرِيْكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّى ٧ |
| (কিংবা) সে উপদেশ গ্রহণ করতো, তা তার জ্বন্যে হয়তো উপকারীও (প্রমাণিত) হতো; | ٣ أَوْ يَنَّكُّرُ فَتَنْفَعَهُ النِّكْرِي ، |
| ৫. (অপরদিকে) যে (হেদায়াতের প্রতি) বেপরোয়াভাব দেখালো– | ۵ أمًّا مَنِ اسْتَغُنَى ٧ |
| ৬. তুমি তার প্রতিই (বেশী) মনোযোগ প্রদান করঙে; | ٢ فَاَنْتَ لَهُ تَصَلَّى ١ |
| ৭. (অথচ) সে ব্যক্তি যে পরিশুদ্ধ হবে এটা ভোমার দায়িত্ব নয়; | 4 وَمَا عَلَيْكَ ٱلَّا يَزُّكَى ا |
| ৮. (অপর দিকে) যে ব্যক্তি (পরিশুদ্ধির জ্বন্যে) তোমার কাছে দৌড়ে আসে, | ٨ وَأَمَّا مَنْ جَاءُكَ يَسْعٰى ٧ |
| ৯. এবং সে (আল্লাহকে) ভয় করে, | ٩ وَمُو يَخْشَى ٧ |
| ১০. তুমি তার থেকেই বিরক্ত হলে, | ١٠ فَٱنْتِ عَنْهُ تَلَهِّى ج |
| ৮০ সূরা আবাসা | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আন্মা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ১১. কখনোই (এমনটি উচিত) নয়, এ (কোরআন) হচ্ছে একটি উপদেশ, | ١١ كَلَّآ إِنَّهَا تَنْكِرَةً ۚ ٦ |
| ১২. যে চাইবে সে তা শ্বরণ করবে। | ١٢ فَهَنْ شَآءَ ذَكَرَةً م |
| ১৩. যা সম্মানিত স্থান (লওহে মাহফুয)-এ (সংরক্ষিত) আছে, | ١٣ فِي صُحُفٍ مُكرَّمَةٍ ٧ |
| ১৪. উঁচু মর্যাদাসম্পন্ন ও সমধিক পবিত্র, | ١٢ مَرْفُوعَةِ مُطَهَّرَةٍ ١٢ |
| ১৫. এটি সংরক্ষিত থাকে মর্যাদাবান লেখকদের হাতে, | ١٥ بِاَيْدِي سَفَرَةٍ ٧ |
| ১৬. (তারা) মহান ও পৃত চরিত্রসম্পন্ন; | ١٦ كِرَايًا بَرَرَةٍ ١ |
| ১৭. মানুষের প্রতি অভিসম্পাত! কোন জিনিস তাকে অস্বীকার করালো; | ١٤ قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَا ۖ أَكْفَرَةً ، |
| ১৮. আল্লাহ তায়ালা কোন্ বস্তু থেকে তাকে পয়দা করেছেন;(সে কি দেখলো না?) | ١٨ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ١ |
| ১৯. তিনি তাকে এক বিন্দু শুক্র থেকে পয়দা করেছেন, অতপর তিনি তার (দেহে সব কিছুর) পরিমাণ নির্ধারণ করেছেন, | ١٩ مِنْ نَّطْفَةٍ ﴿ خَلَقَهُ فَقَلَّرُهُ ٧ |
| ২০. অতপর তিনি জা চলার পথ আসান করে দিয়েছেন, | ٢٠ ثُرَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَةً ٧ |
| ২১. এরপর তিনি তাকে মৃত্যু দিয়েছেন, অতপর তাকে কবরে রেখেছেন, | ٢١ ثُرِّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ٧ |
| ২২. অতপর তিনি যখন চাইবেন তাকে পুনরায় জীবিত করবেন; | ٢٢ ثُرُّ إِذَا شَاءً أَنْشَرَةً ، |
| ২৩. কোনো সন্দেহ নেই, তাকে যা আদেশ করা হয়েছে তা সে পালন করেনি; | ٣٣ كَلَّا لَيًّا يَقْضِ مَا آمَرَةً ، |
| ২৪. মানুষ তার আহারের দিকেও একবার তাকিয়ে দেখুক (কভোগুলো তুর অভিক্রম করে এই খাবার তার সামনে এসেছে), | ٣٣ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهُ ٧ |
| ২৫. আমি (ডকনে ভূমিডে) প্রচুর পরিমাণ পানি ঢেলেছি, | ٢٥ أَنَّا مَبَبُنَا الْهَاءَ صَبًّا ٧ |
| ২৬. এর পর যমীনকে বিদীর্ণ করেছি, | ٢٦ ثُرِّ شَقَقَنَا الْإَرْضَ شَقًّا ٧ |
| ২৭. (অতপর) তাতে উৎপন্ন করেছি শস্যদানা, | ٢٧ فَٱثْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ٧ |
| ২৮. আংগুরের থোকা ও রকমারি শাকসবজি, | ٢٨ وَّعِنَبًا وَّقَضَبًا لِا |
| ২৯. (আরো উৎপন্ন করেছি) যয়তুন ও খেজুর(-সহ বিভিন্ন ধরনের ফলমূল), | ٢٩ وَّزَيْتُونًا وَّنَحُلًا |
| ৩০ (আরো রয়েছে) শ্যামণ ঘন বাগান, | ٣٠ وَّحَنَ آلِقَ غُلْبًا ٧ |
| ৩১. (তাতে) উৎপন্ন করেছি ফলমূল ও ঘাস, | ٣١ وَّفَاكِهَةً وَّأَبًّا ٧ |
| ৩২. (এ সবই) তোমাদের এবং তোমাদের গৃহপালিত জন্তু-জানোয়ারের উপকার ও উপভোগের জন্যে; | ٣٢ مُّتَاعًا لَّكُر وَلِإَنْعَامِكُم ١ |
| ৮০ সূরা আবাসা | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|
| ৩৩. অতপর যখন বিকট একটি আওয়ায আসবে (তখন | |
| এসব আয়োজন শেষ হয়ে যাবে), | ٣٣ فَاذَا جَاءَنِ الصَّاحَةُ ا |
| ৩৪. সেদিন মানুষ তার নিজ ভাইয়ের কাছ থেকে পালাতে থাকবে, | ٣٣ يَوْاً يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيْدِ ٧ |
| ৩৫. (পালাতে থাকবে) তার নিজের মা থেকে, নিজের বাপ থেকে, | ٣٥ وَأُبِّهِ وَأَبِيْهِ لا |
| ৩৬. সহধর্মিনী থেকে, (এমন কি) তার ছেলেমেয়েদের থেকেও; | ٣٦ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيثِهِ اللهِ |
| ৩৭. সেদিন তাদের প্রত্যেকের জন্যেই পরিস্থিতি এমন (ভয়াবহ) হবে যে, তাই তার (ব্যন্তব্যর) জন্য যথেষ্ট হবে; | ٣٠ لِكُلِ الْمُرِئِ مِّنْهُمْ يَوْمَئِنِ هَاْنَ يُغْنِيهِ ١ |
| ৩৮. কিছু সংখ্যক (মানুষের) চেহারা সেদিন উজ্জ্বল হবে, | ٣٨ وُجُوهُ يُومَئِنِ مُسْفِرةً ٧ |
| ৩৯. তারা সহাস্য ও প্রফুল্ল থাকবে, | ٣٩ ضَاحِكَةً مُّسْتَبْشِرَةً ج |
| ৪০. (অণর দিকে) সেদিন কিছু সংখ্যক চেহারা (কুৎসিত) হবে, তার ওপর (যেন) ধুলাবালি পড়ে থাকবে, | ٣٠ وَوُجُوهٌ يُوْمَنِنِ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ٧ |
| ৪১. মলিনতায় তা (সম্পূর্ণ) ছেয়ে যাবে, | ٣١ تَرْهَقُهَا قَتَرَةً ۗ |
| ৪২. এ লোকগুলোই হচ্ছে (কেতাব) অস্বীকারকারী এবং এরাই হচ্ছে পাপিষ্ঠ। | ٣٢ أُولَئِكَ مُرُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ع |
| | سُوْرَةُ التَّكُويُرِ مَكِّيَّةً |
| সূরা আত তাকওয়ীর | |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ২৯, রুকু ১ | أيَاتٌ : ٢٩ رُكُوْعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আ ল্লা হ ভায়া লার নামে | بِشْرِ اللّهِ الرَّحْسُ الرَّحِيْرِ |
| ১. যখন সূর্যকে শুটিয়ে ফেলা হবে, | ا إِذَا الشَّيْسُ كُوِّرَتْ سِلا |
| ২. যখন তারাগুলো সব খসে পড়বে, | ٢ وَإِذَا النَّجُوْمُ الْكَنَرَسَ ملا |
| ৩. যখন পর্বতমালাকে (আপন স্থান থেকে) সরিয়ে দেয়া হবে, | ٣ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتُ ملا |
| ৪. যখন দশ মাসের গর্ভবতী উটনীকে (নিজের অবস্থার ওপর) ছেড়ে দেয়া হবে, | ٣ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ملا |
| ৫. যখন হিংস্র জন্তুগলোকে এক জায়গায় জড়ো করা হবে, | 4 وَإِذَا الْوُمُوشُ مُشِرَتُ ملا |
| ৬. যখন সাগরসমূহকে (আন্ধারা) প্রজ্বাপিত করা হবে, | ٦ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ٤٧٠ |
| ৭. যখন (কবর ধেকে উন্থিত) প্রাণসমূহকে (তাদের নিজ নিজ) দেহের সাথে জুড়ে দেয়া হবে, | ٤ وَإِذَا النَّفُوسُ زُوِّجَتُ سلا |
| ৮. যখন সদ্যপ্রসূত মেয়েটি জিজ্ঞাসিত হবে– | ^ وَإِذَا الْهُوََّدَةُ سُئِلَتْ سِهِ |
| ৯. কোন অপরাধে তাকে হত্যা করা হয়েছিলো, | ٩ بِاَيِّ ذَئْبٍ قُتِلَتْ ، |
| ১০. যখন আমলের নথিপত্র খোলা হবে, | ١٠ وَإِذَا الصُّعُفُ نُشِرَتْ ١٠ |
| ১১. যখন আসমান খুলে দেয়া হবে, | اا وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ملا |
| ১২. যখন জাহান্নাম প্রজ্বলিত করা হবে, | ١٢ وَإِذَا الْجَعِيْرُ سُعِّرَتْ س٧ |
| ৮১ সূরা আত তাকওয়ীর | মূন্যিল ৭ |



| ১৩. যখন জান্নাতকে (মানুবের) কাছে নিয়ে আসা হবে, ১৪. প্রভোক ব্যক্তিই (তথন) জানতে পারবে সে কি নিয়ে (আরার তারাপার কাছে) হাবির হরেছে; ১৫. লপথ সেসব তারকাপুজের যা (চলতে চলতে) গা ঢাকা দের, ১৬. (আবার) যা (মাবে মাঝে) অদুগ্য হয়ে যায়, ১৬. (আবার) যা (মাবে মাঝে) অদুগ্য হয়ে যায়, ১৮. (লপথ) সকাল বেলার যখন তা নিশেষ হয়ে যায়, ১৮. (লপথ) সকাল বেলার যখন তা (দিনের আলোয়) নির্দাস দেয়, ১৯. এ কোরআন হছে একজন সম্মানিত (৩ মার্মানসম্পন্ন) বাহবের (মায়মে পিছনো) নালী ১০ সে বঙ্যা শক্তিনালী, আরবের মানিক আলাহ তারালার কাছে তার অবস্থান (অনেক মর্যানাপ্রণ), ১১. বেখানে তাকে মানা করা হয়, (অভপর) সে সেখানে পত্তীর আন্তাভাজনও ২২. তোমানের সাধী (কিন্তু) পাগল নয়, ২০. তাকে বছে দিগত্তে দেবেহে, ২৪. অদৃশ্য জনতের বাপারে তিনি কখনো কার্গণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিলঙ্গ শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অত এব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিমে) কান দিকে যাজো। ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপনেশ বৈ কিছুই নয়, ১৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথ্য) তার জন্মেই (উপনেশ); রহমান রহীম আন্নাহ তায়ালার নামেন ১. যখন আনমান ফেটে পড়বে, ১. যখন কারাগলেন করে তালা হবে, ১. যখন করাগলোন করে করে পড়বে, ১. যখন করাগলোন করে তালা হবে, ১. যখন করাগলোন করে করে পড়বে, ১. যখন করাগলোনে উলাভ্য করে তালা হবে, ১. মুল্য আন এনফেতার ১. ম | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|--|
| (আল্লাহ তায়ালার কাছে) হাথির হয়েছে; ১৫. শপথ সেসব তারকাপুজের যা (চলতে চলতে) গা তাকা দেয়, ১৬. (আবার) যা (মাঝে মাঝে) অদৃশ্য হয়ে যায়, ১৬. (আবার) যা (মাঝে মাঝে) অদৃশ্য হয়ে যায়, ১৬. (শপথ) সকাল বেলার যথন তা (দিনের আলায়) ১৮. (শপথ) সকাল বেলার যথন তা (দিনের আলায়) ১৯. এ কোরআন হছে একজন সম্মানিত (ও মর্যাদাসন্দ্র্রা বাহকের (মায়রে পৌছানো) বাণী, ২০ সে বড়ো শক্তিশালী, আরপের মালিক আল্লাহ তালার কাছে তার অবস্থান (অনেক মর্যাদাপূর্ণ), ২১. যেখানে তাকে মান্য করা হয়, (অতপর) সে সেখানে গতীর আন্থাভাজনও; ২২. তোমানের সাথী (কিছু) পাগল নয়, ১৫. এটা কোনো অভিশুঙ্গ শয়তানের কথাও নয়, ২৫. এটা কোনো অভিশুঙ্গ শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কারআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাজোঃ ২৭. এটা কোনো অভিশুঙ্গ সক্ষের্যা এটি তম্বু) তার লনোই (উপদেশ); ২৯. (আসকো) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আন্নাহ তায়ালার নামে স্কুরা আনত এলকেস সক্ষর হয়, আত সক্ষর মালিক। ১০. যখন আসান ছফেট পড়বে, ১০. যখন আসানান ফেটে পড়বে, ১০. যখন সাগরকে উভাল করে তোলা হবে, ১০. যখন নাগরকে উভাল করে তোলা হবে, ১০. যখন করবঙলানেক উত্বাল হবে, ১০. যখন করবঙলানেক উত্বাল হবে, ১০. যখন নাগরকে উভাল করে তোলা হবে, ১০. যখন নাগরকে উভাল করে তোলা হবে, ১০. যখন করবঙলানেক উত্বাল হবে, ১০. যালি বিনির্যানির নিকরে, ১০. ইবি বিনির্যানির নিকরে, ১০. ইবি বিনির | ১৩. যখন জান্নাতকে (মানুষের) কাছে নিয়ে আসা হবে, | ١٣ وَإِذَا الْجَنَّةُ ٱزْلِفَتْ ١٠٠ |
| চাকা দেয়, ১৬. (আবার) যা (মাঝে মাঝে) অদৃশ্য হয়ে যায়, ১৭. শপথ রাতের যখন তা নিশেষ হয়ে যায়, ১৮. শপথ রাতের যখন তা নিশেষ হয়ে যায়, ১৮. শপথ সকাল বেলার যখন তা (দিনের আলোয়) নিশ্বাস নেয়, ১৯. এ কোরআন হছে একজন সম্বানিত (ও মর্থাদাসপান্ন) বাহকের (মাধ্যমে পৌছানো) বাণী, ২০ সে বড়ো শক্তিশালী, আরবের মালিক আল্লাহ তারালার কাহে তার অবস্থান (অনেক মর্থাদাপূর্ণ), ২০ সে বড়ো শক্তিশালী, আরবের মালিক আল্লাহ তারালার কাহে তার অবস্থান (অনেক মর্থাদাপূর্ণ), ২০ মে বড়ো শক্তিশালী, আরবের মালিক আল্লাহ তারালার কাহে তার অবস্থান (অনেক মর্থাদাপূর্ণ), ২০. বে বড়ো শক্তিশালী, আরবের মালিক আল্লাহ তারালার কাহে তার অবস্থান (অনেক মর্থাদাপূর্ণ), ২০. কোনে আল্লাহ মান্য করা হয়, (অতপর) সে সেখানে গভীর আন্থাতাজনও; ২২. তোমাদের সাধী (কিন্তু) পাগল নয়, ২৩. সে তাকে স্বচ্ছ নিগজে দেবছে, ২৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ কিরিয়ে) কোন দিকে যাজ্যে ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথ্য) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা ভাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মল্লায় অবত্যানি— আয়াত ১৯, কন্তু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন আসান ফেটে পড্বে, ২. যখন আগরাকে উন্তাল করে তোলা হবে, ১ যখন নগারকে উত্তাল করে তোলা হবে, ১ যখন করবংনোকে উপড়ে ফেলাহবে, ১ যান করবংনি নিন্তী কিন্তু কিন্তিয়ে কিন্তুন্ত কর্যেন্ত ক্রিটা নিন্তী কিন্তুন্ত ক্রিটা নিন্তী ক্রিটা নিন্তী ক্রিটা নিন্তী ক্রিটা নিন্তী ক্রমেন করবংনাতে তেলাহবে, ১ যখন করবংনোকে উপড়ে ফেলাহবে, ১ যখন করবংনোকের উপড়ে ফেলাহবে, ১ যান করবংনাকের করে পড়ে ডেলাহবে, ১ বনন করবংনোকের উপড়ে ফেলাহবে, ১ বনন করবংনেলাকের উপড়ে ফেলাহবে, ১ বনন করবংনেলাকের করে বিলাহের করে বিলাহের করেন করবংনি তাল করেন করেন তিন্তন করেন করবংন তালে করেন করেন করবংন তালে করেন করেন করেন করবংন তালে করেন করেন করেন করেন করেন করেন করেন করে | ` · · · · | ١٣ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا ٱحْضَرَتْ ا |
| ১১. শপথ রাতের যখন তা নিশেষ হয়ে যায়, ১১. শপথ রাতের যখন তা নিশেষ হয়ে যায়, ১১. এ কোরজান হছে একজন সন্মানিত (ও মর্যাদাসম্পন্ন) বাহকের (মাধ্যমে পৌছালা) বাণী, ২০ সে বড়ো শক্তিশালী, আরশের মাদাক্ আল্লাহ তায়ালার কাহে তার অবস্থান (অনেক মর্যাদাপূর্ণ), ২১. যেখানে তাকে মান্য করা হয়, (অভপর) সে সেখানে গভীর আন্থাভাজনও; ২২. তোমাদের সাধী (কিছু) পাণল নয়, ২৩. সে তাকে স্বন্ধ নিগন্তে দেখছে, ২৪. আশ্লার কাহেতে দেখছে, ২৪. আশ্লার কাহেতে দেখছে, ২৪. আল্লার বিলিক ভারাহে তার আর কুর্টিণ্ড কুর্টিণ্ড নির্দিন্ত নির্দিন নির্দিন্ত নির্ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ١٥ فَلَا ٱقْسِرُ بِالْخُنْسِ لا |
| ১৮. (শপথ) সকাল বেলার যখন তা (দিনের আলোয়) নিশ্বাস নের, ১৯. এ কোরআন হচ্ছে একজন সন্মানিত (ও মর্যাদাসম্পন্ন) বাহকের (মাধ্যমে পৌছালো) বালি ২০ সে বড়ো পভিশালী, আবদের মালিক আন্তাহ তারালার কাছে তার অবস্থান (অনেক মর্যাদাপূর্ণ), ২১. যেখানে তাকে মানা করা হয়, (অতপর) সে সেখানে গভীর আস্থাভাজনও; ২২. তোমাদের সাধী (কিছু) পাগল নয়, ২৩. সে তাকে স্বচ্ছ দিগন্তে দেখছে, ২৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএবে তোমরা (কোরআন থেকে মুখ কিরিয়ে) কোন দিকে যাছোঃ ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথু) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হ্যা চাইতে পারেন একমার আন্তাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্বা আন্তাহ তায়ালার নামে- ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২ যখন কবরণালে স্বন্ধ করে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরণালে উপড়ে ফেলা হবে, ৪. যখন কবরণালে উপড়ে ফেলা হবে, ৪. যালিক বিলৈ কিন্তু প্রত্নি কিন্তু প্রত্নি বিলি কিন্তু বিলি বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি বিলি কিন্তু বিলি কিন্তু বিলি বিলি বিলি বিলি কিন্তু বিলি বিলি বিলি বিলি বিলি বিলি বিলি বিল | ১৬. (আবার) যা (মাঝে মাঝে) অদৃশ্য হয়ে যায়, | ١٦ الْجَوَارِ الْكُنّْسِ ٧ |
| निक्षान तिस्त तिस | ১৭. শপথ রাতের যখন তা নিশেষ হয়ে যায়, | ١٤ وَالَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ لا |
| মর্থাদাসম্পন্ন) বাহকের (মাধ্যমে পৌছানো) বাণী, ২০ সে বড়ো শক্তিশালী, আরশের মালিক আল্লাহ তায়ালার কাছে তার অবস্থান (অনেক মর্থাদাপূর্ণ), ২১. যেখানে তাকে মান্য করা হয়, (অতপর) সে সেখানে গভীর আস্থাভাজনও; ২২. তোমাদের সাথী (কিছু) পাগল নয়, ২০. বে তাকে বন্ধ দিগন্তে দেখেছে, ২৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাছোঃ ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথ্য তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। সুরা আলাহ তায়ালার নামে ১. যখন আরাহ তায়ালার নামে ১. যখন আরাহ তায়ালার নামে ১. যখন আরাহলো সর ঝরে পড়বে, ১. যখন করগুলোকে উপড়ে ফেলাহবে, ১. যখন করগুলোকে উপড়ে ফেলাহবে, ১. যখন করগুলোকে উপড়ে ফেলাহবে, ১. যখন করগুলাকে উপড়ে ফেলাহবে, ১. যখন করগুলাকে উপড়ে ফেলাহবে, ১. যখন করগুলাকে উকলেহ রে, ১. যখন করগুলাকে উপড়ে ফেলাহবে, | | ١٨ وَالصَّبْعِ إِذَا تَنَفَّسَ ٧ |
| তায়ালার কাছে তার অবস্থান (অনেক মর্থাদাপূর্ণ), ২১. যেখানে তাকে মান্য করা হয়, (অতপর) সে সেখানে গতীর আস্থাতাজনও; ২২. তোমাদের সাথী (কিছু) পাগল নয়, ২৩. সে তাকে বচ্ছ দিগন্তে দেখেছে, ২৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাচ্ছো: ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথু) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলো) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মঞ্জায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো কর বরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উন্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কররগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১০ বার্থানি নিইনুট, কিন্দুটন প্রেণ্ড কর্ম বিরাহিনে পারের করিছেলা করে তালা হবে, ১০ বার্থান করবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১০ বার্থান বিনিকুটিন পিরেন্ত করিলা হবে, ১০ বার্থান করবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১০ বার্থান করবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | ১৯. এ কোরআন হচ্ছে একজন সম্মানিত (ও মর্যাদাসম্পন্ন) বাহকের (মাধ্যমে পৌছানো) বাণী, | ١٩ إِنَّهُ لَقُولٌ رَسُولٍ كَرِيْرٍ ٧ |
| গভীর আস্থাভাজনও; ২২. তোমাদের সাধী (কিছু) পাগল নর, ২০. সে তাকে বন্ধ দিগন্তে দেবেছে, ২৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাছো? ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি শুধু) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলো) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাঁ৷ চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্বা আল এনকেতার মালিক। স্বা আল বেনকেতার মালিক। ১ যখন আসমান ফেটে পড়বে, ১ যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উতাল করে তোলা হবে, ১ যখন কররগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১ যালিক। ১ যখন কররগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১ যালিক করবুলনকে উপাড় ফেলা হবে, ১ যালিক করবুলনাকে করবুল করে তালা হবে, ১ যালিক করবুলনাকে করবুল করে তালা হবে, ১ যালিক করবুলনাকে করবুল করে তালা হবে, ১ যালিক করবুলনাকে করবুল করে করে কর্মনাকরে করবুল করে করে করবুল করে করবুল করে করে করে করবুল করে করে করে করবুল করে করে করে করবুল করে করে করবুল করে করে করে করে করে করে করে করবুল করে করে করে করে করে করে করবুল করে | | ٢٠ ذِي تُوَّةٍ عِنْلَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيْنٍ لا |
| ২৩. সে তাকে স্বচ্ছ দিগন্তে দেখেছে, ১৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাজ্যে ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তধু) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলো) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মজার অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে— ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ১. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উপ্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১৮. যে সঠিক পা ধরে চলতে চায় (এটি ভাইটে শির্মিন্ট) স্বা আলা এনকেতার মালিক। ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১০. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১০. যথন করগুতলাকে উপড়ে ফেলা হবে, ১০. যথন তারাভকার করে তোলা হবে, ১০. যথন তারাভকার করে তোলা হবে, ১০. যথন করগুতলাকে উপড়ে ফেলা হবে, | | ٢١ مُّطَاعٍ ثَرُّ اَمِيْنٍ ا |
| ২৪. অদৃশ্য জগতের ব্যাপারে তিনি কখনো কার্পণ্য করেন না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাছো? ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথ্য) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। ত্রুবা আল এলহেকতার মজার অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উন্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১৫. এটা কোনীই টু শুনিই পুনিই দুলিই কিন্তু | ২২. তোমাদের সাধী (কিন্তু) পাগল নয়, | ٢٢ وَمَا صَاحِبُكُرْ بِهَجْنُوْنٍ |
| না, ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাজোঃ ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি শুধু) তার জনোই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্রা আল এনফেতার মন্ধায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১৮. বে সঠিক গুও ধরে কথাও নয় ক্রিনিট্রিট্রিট্রিট্রিট্রিট্রিট্রিট্রিট্রিট্র | | ٢٣ وَلَقَلْ رَأَهُ بِالْأَنْقِ الْمُبِيْنِ الْمُ |
| ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ কিরিয়ে) কোন দিকে যাজ্যে? ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি শুধু) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্বা আল এনকেতার মন্ত্রী পি্টের্রী (বিশ্রুরী রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাভলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উন্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | | ٢٣ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ٤ |
| কান দিকে যাচ্ছো? ২৭. এটা সৃষ্টিকুলের জন্যে এক উপদেশ বৈ কিছুই নয়, ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথ্য) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্বা আল এনফেতার মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, ককু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উন্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১৭ বুলি বিহুলি কিছুই নয়, ১০ বুলি বুলি কিছুই না ১০ বুলি বুলি কিছুই নয় ১০ বুলি কি | ২৫. এটা কোনো অভিশপ্ত শয়তানের কথাও নয়, | ٢٥ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطِي رَّجِيْرٍ لا |
| ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি তথু) তার জন্যেই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাঁ৷ চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্রা আল এনফেতার মঞ্জায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | ২৬. অতএব তোমরা (কোরআন থেকে মুখ ফিরিয়ে) কোন দিকে যাচ্ছো? | ٢٦ فَاكِنَ تَنْهَبُونَ ، |
| জন্যই (উপদেশ); ২৯. (আসলে) তোমরা তো কিছুই চাইতে পারো না, হাা চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তারালা, যিনি সৃষ্টিকুলের মালিক। স্বা আল এনফেতার মক্রায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তারালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | ` | ٢٠ إِنْ مُوَ إِلَّا ذِكُرٌّ لِّلْعُلَوِيْنَ ٧ |
| মালিক। ম্বা আল এনফেতার ম্বা আল এনফেতার ম্বা আল এনফেতার ম্বায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯, করু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | ২৮. যে সঠিক পথ ধরে চলতে চায় (এটি শুধু) তার জন্যেই (উপদেশ); | ٢٨ لِمَنْ شَاءً مِنْكُر أَنْ يَسْتَقِيْرَ ا |
| মক্কায় অবতীর্গ- আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, প টুটো বিহুন্দিন করগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, প টুটো বিহুন্দিন করগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, প টুটো বিহুন্দিন করগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | চাইতে পারেন একমাত্র আল্লাহ তায়ালা, যিনি সৃষ্টিকুলের | |
| মক্কায় অবতীর্গ- আয়াত ১৯, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, প টুটো বিহুন্দিন করগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, প টুটো বিহুন্দিন করগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, প টুটো বিহুন্দিন করগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | | سُورَةً الْإِنْفطَارِ مَكِيَّةً |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, ১. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ৩. যখন সাগরকে উন্তাল করে তোলা হবে, ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | - | |
| ১. यथन আসমান ফেটে পড়বে, ১. यथन আরাগুলো সব ঝরে পড়বে, ১. यथन তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ১. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, ১. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ১. যখন সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, ১. যখন কবরগুলোকে উপান্ধ করিক কবি কিন্তা করিক | | |
| ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, | ১. যখন আসমান ফেটে পড়বে, | |
| ७. यथन সাগরকে উত্তাল করে তোলা হবে, الْبِحَارُ نُجِّرَتُ ٢ عُورُتُ الْبِحَارُ وَالْحَارُ وَالْمَا الْقَبُورُ وَالْحَارِ وَالْحَارِ وَالْحَارِ وَالْحَارِ وَالْمَا الْقَبُورُ وَالْحَارِ وَالْمَارِ وَالْمَاكِ وَالْمَاكِ وَالْحَارِ وَالْمَاكِ وَالْمَالِقُولِ وَالْمَالِحَارِ وَالْمَالِقُولِ وَالْمَالِحَالِقُولِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْنِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمَالِحِيْرِ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْفِي وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمَالِحِيْنِ وَالْمُوالِمِيْنِ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِيْمِ وَالْمِنْفِقِيْلِ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْفِقِ وَالْمِنْفِقِ | ২. যখন তারাগুলো সব ঝরে পড়বে, | |
| | ৩. যখন সাগরকে উন্তাল করে তোলা হবে, | |
| ৮২ সূরা আল এনফেতার ৬২২ মন্যিল ৭ | ৪. যখন কবরগুলোকে উপড়ে ফেলা হবে, | ٣ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَسَ ٧ |
| | ৮২ সূরা আল এনফেতার | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ৫. (তখন) প্রতিটি মানুষই জেনে যাবে, সে (এখানকার জন্যে) কি পাঠিয়েছে এবং কি (এন) কাজ সে রেখে এসেছিলো: (যার পাপ পুণা কেয়ামত পর্যন্ত তার হিসেবে এসে জমা হয়েছে) | ۵ عَلِيَتُ نَفْسٌ مَّا قَلَّ مَنْ وَ أَخْرَتُ ا |
| ৬. হে মানুষ, কোন্ জিনিসটি তোমাকে তোমার মহামহিম মালিকের ব্যাপারে ধোকায় ফেলে রাখলোঃ | ٦ يَأَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْرِ ٧ |
| বিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন, অতপর তিনি তোমাকে সোজা সুঠাম করেছেন এং তোমাকে সুসমঞ্জস করেছেন, | الَّذِي عَلَقَكَ فَسَوَّكَ فَعَلَلَكَ لا |
| ৮. তিনি যেভাবে চেয়েছেন সে আংগিকেই তোমাকে গঠন করেছেন; | ^ فِي ۚ أَيِّ مُوْرَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۚ ﴿ |
| ৯. না- (এ কি!) তোমরা শেষ বিচারের দিনটিকেই অস্বীকার করছো! | ٩ كَلَّا بَلْ تُكَنِّبُونَ بِالرِّيْنِ لِا |
| ১০. (অথচ) তোমাদের ওপর অবশ্যই পাহারাদাররা নিযুক্ত আছে, | ١٠ وَ إِنَّ عَلَيْكُمْ لَحُغِظِيْنَ ٧ |
| ১১. এরা (হচ্ছে) সম্মানিত দেখক, | اا كِرَامًا كَاتِبِيْنَ لا |
| ১২. যারা জানে তোমরা যা কিছু করছো। | ١٢ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ |
| ১৩. নিসন্দেহে নেক লোকেরা (সেদিন আল্লাহর) অসীম নেয়ামতে (পরমানন্দে) থাকবে, | ١٣ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيْمٍ ٢ |
| ১৪. আর অবশ্যই পাপী-তাপীরা থাকবে জাহান্নামে, | ١٣ وَإِنَّ الْفُحَّارَ لَفِي جَحِيْرٍ عَمِ |
| ১৫. শেষ বিচারের দিন তারা (সবাই ঠিকমতো) সেখানে পৌছে যাবে। | ١٥ يَّصْلُوْنَهَا يَوْمَ الرِّيْسِ |
| ১৬. সেখান থেকে তারা আর কোনোদিনই নিষ্কৃতি পাবে না; | ١٦ وَمَا هُرْعَنْهَا بِغَالِبِيْنَ ، |
| ১৭. তুমি (যদি) জানতে শেষ বিচারের দিনটি কিঃ | ١٤ وَمَا آدُرْنِكَ مَا يَوْمُ الرِّيْنِ ٧ |
| ১৮. হ্যাঁ, (সত্যিই) যদি তোমরা সে দিনটির কথা জানতে; | ١٨ ثُر مَا آدُرْنكَ مَا يَوْمُ الرِّيْنِ م |
| ১৯. যেদিন কোনো মানুষই একজন আরেক জনের কাজে আসবে না; আর সেদিন ফয়সালার সব ক্ষমতা থাকবে একমাত্র আল্লাহ তায়ালার হাতে। | 19 يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسُ لِنَفْسٍ شَيْئًا ﴿ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِنِ لِلَّهِ ع |
| সুরা আল মোতাফ্ফেফীন | سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِيةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৩৬, রুকু ১ | أَيَاتُ : ٣٦ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّمْسُ الرَّحِيْرِ |
| ১. দুর্ভোগ তাদের জন্যে যারা মাপে কম দেয়, | ا وَيْلُّ لِّلْهُ طَفِّغِيْنَ ٧ |
| ২. যারা (অন্য) মানুষদের কাছ থেকে যখন মেপে নেয় তখন পুরোপুরি আদায় করে নেয়, | النَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ رَمِي |
| ৩. (আবার) নিজেরা যখন (অন্যের জ্বন্যে) কিছু ওযন কিংবা পরিমাপ করে তখন কম দেয়; | ٣ وَإِذَا كَالُوْمُرُ أَوْ وَّزَّنُوْمُر يُخْسِرُونَ ١ |
| ৪. এরা কি ভাবে না (এই অন্যায়ের বিচারের জন্যে) তাদের (সরাইকে একদিন করর থেকে) তুলে আনা হবেঃ | ٣ أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ٧ |
| ৫. (তুলে আনা হবে) এক কঠিন দিবসের জন্যে, | ٥ لِيَوْمٍ عَظِيْرٍ ٧ |
| ৮৩ সূরা আল মোতাফ্ফেফীন ৬২৩ | मन्यिन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|---|
| ৬. সেদিন (সমগ্র) মানব সমাজ সৃষ্টিকুলের মালিকের সামনে এসে দাঁড়াবে; | ٦ يُّوْاً يَقُواُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَلَمِيْنَ ، |
| ৭. জেনে রেখো, গুনাহগারদের আমলনামা রয়েছে 'সিজ্জীনে'; | ٤ كَلَّا إِنَّ كِتْبَ الْفُجَّارِ لَغِيْ سِجِّيْنٍ ١ |
| ৮. তুমি কি জানো (সে) সিজ্জীনটা কি? | ٨ وَمَا أَدْرُكَ مَا سِجِيْنَ ا |
| ৯. (এটা হচ্ছে) সীল করা (একটা) খাতা; | ٩ كِتُبُّ مَّرُقُومًا |
| ১০. (সেদিন) মিথ্যা সাব্যস্তকারীদের জ্বন্যে চ্ড়ান্ত ধ্বংস অবধারিত, | ١٠ وَيْلٌ يُّوْمَئِنِ لِلْمُكَنِّ بِيْنَ ٧ |
| ১১. যারা শেষ বিচারের (এ) দিনটিকে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে; | ١١ الَّذِيْنَ يُكَنِّرُبُوْنَ بِيَوْمِ الرِّيْنِي ا |
| ১২. (আসলে) সব সীমালংঘনকারী পাপিষ্ঠ ব্যক্তি ছাড়া কেউই (এ বিচার দিনটি)-কে মিথ্যা সাব্যস্ত করে না, | ١٢ وَمَا يُكَلِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَلٍ أَثِيْرٍ ٧ |
| ১৩. যখন তার সামনে আমার আয়াতসমূহ পড়ে শোনানো হয় তখন সে বলে, এগুলো হচ্ছে নিছক আগের কালের গল্পগাথা; | ٣١ إِذَا تُتْلَى عَلَيْهِ أَيْتُنَا قَالَ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ا |
| ১৪. কখনো নয়, এদের কৃতকর্ম এদের মনের ওপর ঝং ধরিয়ে রেখেছে। | ۱۳ كَلَّا بَلْ عِنهِ رَانَ عَلَى قُلُوْبِهِرْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ |
| ১৫. অবশ্যই এসব পাপী ব্যক্তিদের সেদিন (তাদের) মালিক থেকে আড়াল করে রাখা হবে; | 10 كَلَّهُ إِلَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِنٍ لَّهَحُوْبُونَ ا |
| ১৬. অতপর তারা অবশ্যই জাহান্নামের আগুনে প্রবেশ করবে; | ١٦ تُرَّ إِنَّهُرْ لَمَالُوا الْجَحِيْرِ ، |
| ১৭. তারপর (তাদের) বলা হবে, এ হচ্ছে (সেই জাহান্নাম) যাকে তোমরা মিথ্যা সাব্যস্ত করতে; | ١٤ ثُرَّ يُقَالُ مٰنَا الَّذِي كُنْتُرْ بِهِ تُكَنِّبُونَ، |
| ১৮. (হাাঁ,) নেককার লোকদের আমলনামা রক্ষিত আছে ইক্মিয়ীনে; | ١٨ كَلَّا إِنَّ كِتْبَ الْإَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ . |
| ১৯. তুমি কি জানতে এ 'ইল্লিয়্যীন' (-এ রক্ষিত আমলনামা) কিঃ | ١٩ وَمَا ٱدْرِيكَ مَا عِلِيُّونَ ٧ |
| ২০. (এটা হচ্ছে) একটি সীল করা বই, | ٢٠ كِيْتُ مُرْقُومً ٧ |
| ২১. আল্লাহ তায়ালার নিকটতম ফেরেশতারাই তা তদারক করেন; | ٢١ يَشْهَلُهُ الْهُقُرِّ بُوْنَ ١٠ |
| ২২. নিসন্দেহে নেককার লোকেরা মহা নেয়ামতে থাকবে, | ٢٢ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيْرٍ لا |
| ২৩. এরা সুসচ্ছিত আসনে বসে (সা) অবলোকন করবে, | ٢٣ عَلَى الْإَرَ آنِكِ يَنْظُرُونَ ٧ |
| ২৪. এদের চেহারায় নেয়ামতের (তৃপ্তি ও) সঙ্গীবতা তুমি (সহজেই) চিনতে পারবে; | ٢٣ تَعْرِفُ فِي وَجُوْهِمِ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ع |
| ২৫. ছিপি আঁটা (বোতল) থেকে এদের সেদিন বিশুদ্ধতম পানীয় পান করানো হবে, | ٢٥ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحْمِيْقٍ مَّخْتُومٍ لِا |
| ২৬. (পাত্রজাত করার সময়ই) কন্তুরীর সুগন্ধি দিয়ে যার | ٢٦ غِينُهُ مِسْكُ ، وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَس |
| মুখ বন্ধ (করে দেয়া হয়েছে); এতে (বিজ্ঞয়ী হবার জন্যে) প্রতিটি প্রতিযোগীই প্রতিযোগিতা করুক; | الْهُتَنَافِسُوْنَ ، |
| ৮৩ সূরা আল মোতাফ্ফেফীন ৬২৪ | मनियम १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|
| ২৭. (তাতে) তাসনীমের (ফল্পধারার) মিশ্রণ থাকবে, | ٢٧ وَمِزَاجُهُ مِنْ تَشْنِيْرٍ لا |
| ২৮. (তাসনীম) এমন এক ঝর্ণাধারা, আল্লাহ তায়ালার নৈকট্যলাভকারীরাই সেদিন এ (পানীয়) থেকে পান করবে; | ٢٨ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْهُقَرِّ أُوْنَ ، |
| ২৯. অবশ্যই তারা (ভীষণ) অপরাধ করেছে যারা (দুনিয়ায়) ঈমানদারদের সাথে বিদ্রুপ করতো, | ٢٩ إِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ الْمَنُوْا مِنَ الَّذِيْنَ الْمَوْنَ رَصِي |
| ৩০. তারা যখন এদের পাশ দিয়ে আসা যাওয়া করতো, তখন এরা নিজেদের মধ্যে তাদের ব্যাপারে চোখ টেপাটেপি করতো, | ٣٠ وَإِذَا مَرُّوْا بِهِرْ يَتَغَامَزُونَ رَكِ |
| ৩১. যখন এরা নিজেদের লোকদের কাছে ফিরে যেতো, তখন খুব উৎফুল্প হয়েই সেখানে ফিরতো, | ٣١ وَإِذَا انْقَلَبُوْٓا إِلَّى اَهْلِهِرُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ رَصِهِ |
| ৩২. (তারা) যখন এদের দেখতো তখন একে অপরকে বলতো (দেখো), এরা হচ্ছে কতিপয় পথদ্রষ্ট (ব্যক্তি), | ٣٢ وَإِذَا رَأُوْمُرْ قَالُوْآ إِنَّ مَّوُّكَّاءٍ لَضَاَّلُونَ٧ |
| ৩৩. (অথচ) এদেরকে তাদের ওপর তত্ত্বাবধায়ক করে পাঠানো হয়নি; | ٣٣ وَمَا ۗ ٱرْسِلُوا عَلَيْهِر حُفِظِيْنَ ا |
| ৩৪. (বিচারের পর) আজ ঈমানদার ব্যক্তিরাই কাফেরদের ওপর (নেমে আসা আযাব দেখে) হাসবে, | ٣٣ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ أَمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ٧ |
| ৩৫. (উচুঁ) উঁচু আসনে বসে তারা (এসব) দেখতে থাকবে; | ٣٥ عَلَى الْإَرَآنِكِ ٧ يَنْظُرُونَ ١ |
| ৩৬. প্রতিটি কাফেরকে কি তার কর্ম অনুযায়ী বিনিময় দেয়া হবে নাঃ | ٣٦ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْ اللَّهُ عَلُوْنَ ع |
| স্রা আল এনশেক্বাক্ | سُوْرَةٌ الإِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةً |
| ম ক্কা য় অবতীৰ্ণ– আয়াত ২৫, <i>ৰু</i> কু ১ | أَيَاتٍ : ٢٥ رُكُوْعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْنِي الرَّحِيْرِ |
| ১. যখন আসমান ফেটে যাবে, | ا إِذَا السَّبَآءُ انشَقَّى ٧ |
| ২. সে তো তার মালিকের আদেশটুকুই (তখন) পালন করবে এবং এটাই তো তাকে করতে হবে, | ٢ وَ إَذِنَكُ لِرَبِّهَا وَمُقَّتُ ٧ |
| ৩. যখন এ ভূমন্ডলকে সম্প্রসারিত করা হবে, | ٣ وَإِذَا الْأَرْضُ مُنَّتُ ٧ |
| মূহর্তের মধ্যেই) সে তার ভেতরে যা আছে তা ফেলে দিয়ে খালি হয়ে যাবে, | ° وَٱلْقَسْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّسْ ٧ |
| ৫. সেও (তখন) তার সৃষ্টিকর্তার আদেশটুকুই পালন করবে এবং এটাই তো তাকে করতে হবে; | ٥ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَمُقَّتْ ، |
| ৬. হে মানুষ, তুমি (এক) কঠোর পরিশ্রমের মধ্য দিয়ে তোমার সৃষ্টিকর্তার দিকে এগিয়ে যাচ্ছো, অতপর তুমি (সত্যি সত্যিই) তাঁর সামনাসামনি হবে, | لَّ يَايَّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَى رَبِّكَ كَنْمًا فَهُلْقِيْدِج |
| ব. (তোমাদের মধ্যে) যার আমলনামা তার ডান হাতে দেয়া হবে, | ٤ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِي كِتْبَهُ بِيَهِيْنِهِ ١ |
| ৮. তার হিসাব একান্ত সহজ্ঞভাবেই গ্রহণ করা হবে, | ٨ فَسَوْنَ يُعَاسَبُ حِسَابًا يُسِيْرًا لا |
| ৮৪ সূরা আল এনশেক্বক্ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আশা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ৯. সে খুশীতে নিজ পরিবার পরিজনের কাছে ফিরে যাবে: | ٩ وَّيَنْقَلِبُ إِلَّى آهَلِهِ مَسْرُورًا ١ |
| ১০. আর যার আমলনামা তার পেছন দিক থেকে দেয়া হবে, | ١٠ وَأَمًّا مَنْ ٱوْتِي كِتْبَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ٧ |
| ১১. সে তখন মৃত্যুকেই ডাকতে থাকবে, | ١١ فَسَوْفَ يَكَعُوا ثُبُورًا ٧ |
| ১২. আর এভাবেই সে জ্বলম্ভ আশুনে প্রবেশ করবে; | ۱۲ وَّيَصْلَى سَعِيْرًا ١ |
| ১৩. (অথচ দুনিয়ায়) সে নিজ পরিবার পরিজ্ঞানের মাঝে আনন্দে আত্মহারা ছিলো; | ١٣ إِنَّهُ كَانَ فِي ٓ اَهْلِهِ مَسْرُورًا ، |
| ১৪. সে ভেবেছিলো, তাকে কখনো (তার মালিকের কাছে) ফিরতে হবে না, | ١٣ إِنَّهُ ظَيَّ أَنْ لَّىٰ يَحُورَ غَ |
| ১৫. হাাঁ, (আজ) তাই (হলো), তার মালিক (কিন্তু) তার সব কার্যকলাপ (পুংখানুপুংখভাবে) দেখছিলেন; | ١٥ بَلَّى غُ إِنَّ رَبَّدٌ كَانَ بِهِ بَصِيْرًا ، |
| ১৬. শপথ সান্ধ্যকালীন রক্তিম আভার, | ١٦ فَلَا ٱقْسِرٌ بِالشَّفَقِ ٧ |
| ১৭. এবং শপথ রাতের ও এর ভেতর যতো কিছুর সমাবেশ ঘটে তার, | 14 وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ لا |
| ১৮. এবং শপথ (ওই) চাঁদটির, যখন তা (ধীরে ধীরে) পূর্ণাংগ চাঁদে পরিণত হয়ে যায়, | 1/ وَالْقَرِ إِذَا اتَّسَقَ ٧. |
| ১৯. তোমাদের অবশ্যই (দুনিয়ার) একটি স্তর অতিক্রম করে (মৃত্যুর) আরেকটি স্তরের দিকে এগিয়ে যেতে হবে; | ١٩ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ١ |
| ২০. এদের হয়েছে কিঃ এরা কেন (মহান আল্লাহর ওপর) ঈমান আনে না, | ٢٠ فَهَا لَهُرْ لَا يُؤْمِنُونَ ٧ |
| ২১. আর এ কোরআন যখন এদের সামনে পড়া হয়, তখন (কেন মালিকের সামনে) এরা সাজদাবনত হয় না? | ا ٢ وَإِذَا قُرِي عَلَيْهِرُ الْقُرْأُنُ لَا يَسْجُكُونَ |
| ২২. এ অম্বীকারকারী ব্যক্তিরা একে মিণ্যা প্রতিপন্ন করে, | ٢٣ بَلِ الَّذِيثَىٰ كَفَرُوا يُكَنِّبُونَ رَاءِ |
| ২৩. আর আল্লাহ তায়ালা ভালো করেই জানেন এরা (এদের আমলনামায়) কি কি জিনিস জমা করে চলেছে? | ٢٣ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِهَا يُوعُونَ وَمِهِ |
| ২৪. (হে নবী,) তাদের সবাইকে তুমি এক যন্ত্রণাদায়ক আযাবের সুসংবাদ দাও,। | ٢٣ مَبَشِّرْمُرْ بِعَنَابٍ ٱلِيْرِ ٧ |
| ২৫. তবে (হাাঁ,) যারা (আল্লাহর ওপর) ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তাদের জন্যে আল্লাহ তায়ালার | ٢٥ إلَّا الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِعَتِ |
| অফুরন্ত পুরস্কার রয়েছে। | لَهُمْ أَجُرُّ غَيْرُ مَنْتُونِ ع |
| | سُوْرَةُ الْبُرُوْحِ مَكِّيَّةً |
| স্রা আল বুরুজ | أَيَاتٌ : ٢٢ رُكُوعٌ : ١ |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ২২, কুকু ১ | |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. শপথ (বিশালকায়) গম্বুজবিশিষ্ট আকাশের, | ا وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ٧ ٣ وَالْيَوْاِ الْمَوْعُوْدِ ٧ |
| ২. (শপথ) সে দিনের যার আগমনের ওয়াদা করা হয়েছে, | ٣ وَالْيَوْاِ الْمَوْعُودِ ٧ |
| ৮৫ সূরা আল বুরুজ | |
| | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আশ্বা ইয়াতাসাআলুন |
|--|---|
| ৩. শপথ (প্রত্যক্ষদশী) সাক্ষীর, (শপথ সেই ভয়াবহ | |
| দৃশ্যের) এবং যা কিছু (তখন) পরিদৃষ্ট হয়েছে তার; | ٣ وَشَاهِدِ وَّمَشْهُودِ ١ |
| ৪. (মোমেনদের জন্যে খোঁড়া) গর্তের মালিকদের ওপর অভিসম্পাত, | مُ قُتِلَ أَصْحُبُ الْأُخْدُودِ ، |
| ৫. আগুনের কুন্ডলী– যা জ্বালানি দ্বারা পরিপূর্ণ ছিলো, | ۵ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ٧ |
| ৬. (অভিসম্পাত,) যখন তারা তার পাশে বসা ছিলো, | ٦ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ٧ |
| ৭. এ লোকেরা মোমেনদের সাথে যা করছিলো এরা তা প্রত্যক্ষ করছিলো; | ﴾ وهمر على مَا يَفْعَلُونَ بِالْهُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ا |
| ৮. তারা এ (ঈমানদার)-দের কাছ খেকে এ ছাড়া অন্য কোনো কারুণে প্রতিশোধু গ্রহণ করেনি যে, তারা এক | ^ وَمَا نَقَهُوا مِنْهُرُ إِلَّا آنَ يُّؤْمِنُوا بِاللَّهِ |
| পরাক্রমশালী ও প্রশংসিত আল্পাহর ওপর ঈমান এনেছিলো, | الْعَزِيْزِ الْحَيِيْرِ لا |
| ৯. (ঈমান এনেছিলো এমন এক সন্তার ওপর,) যার জন্যে (নিবেদিত) আসমানসমূহ ও যমীনের যাবতীয় | ٩ النَّرِي لَدَّ مُلْكُ السَّهٰوٰ سِ وَالْإَرْضِ ا |
| সার্বভৌমত্ব; আর আল্লাহ তায়ালা (তাদের) সব কয়টি কাজের ওপরই সাক্ষী; | وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ هَمِيْنٌ ١ |
| ১০. যারা মোমেন নর-নারীদের ওপর অভ্যাচার করেছে | ١٠ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ |
| অতপর তারা কখনো তাওবা করেনি, তাদের জন্য | ثُر لَرْ يَتُوْبُوا فَلَهُرْ عَنَابُ جَهَلْرَ وَلَهُرْ |
| রয়েছে জাহান্নামের (কঠোর) আযাব এবং তাদের জন্য | |
| আরো রয়েছে (আগুনে) জ্বলে-পুড়ে যাওয়ার শান্তি; | عَنَابُ الْحَرِيْقِ ١ |
| ১১. (অপরদিকে) নিশ্চয়ই যারা আল্লাহ তায়ালার ওপর ঈমান এনেছে এবং (ঈমানের দাবী অনুযায়ী) ভালো কাঞ্চ | ا إِنَّ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحْسِ لَهُرْ |
| করেছে, তাদের জন্যে রয়েছে এমন জান্নাত যার নীচ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত রয়েছে; সেটাই (সেদিনের) সবচেয়ে বড় সাফল্য; | جَنْتُ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْهُرُ أَ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ لا |
| ১২. নিসন্দেহে তোমার মালিকের পাকড়াও হবে ভীষণ শক্ত; | ١٢ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَوِيثٌ ؞ |
| ১৩. নিশ্চয়ই তিনি (যেমন করে) প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন, (তেমনি করে) তিনি আবারও সৃষ্টি করবেন, | ١٣ إِنَّهُ مُو يُبْلِئُ وَيُعِيْلُ |
| ১৪. তিনি পরম ক্ষমাশীল, (তার সৃষ্টিকে) তিনি অত্যম্ভ ভালোবাসেন, | ١٢ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ٧ |
| ১৫. তিনি সম্মানিত আরশের (একচ্ছত্র) অধিপতি, | ١٥ ذُو الْعَرْشِ الْهَجِيْلُ ٧ |
| ১৬. তিনি যা চান তাই করেন; | ١٦ فَعَّالٌ لِّهَا يُرِيثُ ، |
| ১৭. তোমার কাছে কি কতিপয় (বিদ্রোহী) সেনাদলের কথা পৌছেছেঃ | ١٤ هَلْ أَتَٰلِكَ مَلِيْكُ الْجُنُودِ ٧ |
| ১৮. ফেরাউন ও সামুদ (বাহিনীর কথা)! | ١٨ فِرْعَوْنَ وَتُهُودَ ١ |
| ১৯. এরা কোনোদিনই (সত্য) বিশ্বাস করেনি, বরং (তারা) মিথ্যা সাব্যস্তকরণে লেগেই ছিলো, | ١٩ بَلِ الَّذِيثَىٰ كَفَرُوا فِيْ تَكْذِيبٍ ٧ |
| ২০. (অথচ) আল্লাহ তায়ালা এদের সবদিক থেকে ঘিরে | ٢٠ وَّاللَّهُ مِنْ وَّرَالِهِمْ مُحِيَّةً ع |
| রেখেছেন; | |
| ৮৫ সূরা আল বুরুজ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আম্মা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|
| ২১. কোরআন (উন্নত ও) মহামর্যাদাসম্পন্ন (একটি গ্রন্থ); | ٢١ بَلْ هُوَ قُرْانً مُّحِيْلً لا |
| ২২. এক (মহা) ফলকে (এটা) সংরক্ষিত আছে। | ٢٢ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ع |
| সূরা আত্ তারেক্ | سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ১৭, ৰুকু ১ | أَيَاتٌ : ١٠ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسِ الرَّحِيْرِ |
| শপথ আসমানের, শপথ রাতের বেলায় আত্মপ্রকাশকারী (তারকা)-র, | ا وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ لا |
| ২. তুমি কি জানো সে আত্মপ্রকাশকারী কি? | ٢ وَمَا آدُرُيكَ مَا الطَّارِقُ ٧ |
| ৩. তা হচ্ছে (একটি) উজ্জ্বল তারকা, | ٣ النَّجْرُ الثَّاقِبُ ٧ |
| (য়মীনের) এমন একটি প্রাণীও নেই যার ওপর কোনো তত্ত্বাবধায়ক নিযুক্ত নেই; | ٣ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّهًا عَلَيْهَا مَافِظًّ ، |
| ৫. মানুষ যেন (ভালো করে) দেখে, তাকে কোন্ জিনিস দিয়ে বানানো হয়েছে; | ٥ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِرَّ خُلِقَ ا |
| ৬. বানানো হয়েছে সবেগে ঋলিত (এক ফোঁটা) পানি থেকে, | ٢ عُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ٧ |
| বা বের হয়ে আসে (পুরুষদের) পিঠের মেরুদন্ত ও (নারীর) বুকের (পাঁজরের) মাঝখান থেকে; | ٤ يَخْرُجُ مِنْ اَبَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّوَالْبِ ع |
| ৮. (এভাবে যাকে তিনি বের করে এনেছেন,) তিনি অবশ্যই তাকে পুনরায় জীবিত করার ক্ষমতা রাখেন; | ٨ إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ء |
| ৯. সেদিন (তার) যাবতীয় গোপন বিষয় পরীক্ষা করা হবে, | ٩ يَوْاً تُبْلَى السَّرَآلِرُ ٧ |
| ১০. (যে এ দিনকে অধীকার করেছে সেদিন) তার কোনো শক্তিই থাকবে না, থাকবে না তার কোনো সাহায্যকারীও; | ١٠ فَهَا لَدُّ مِنْ قُوَّةٍ وَلا نَاصِرٍ ، |
| ১১. বৃষ্টি বর্ষণকারী আকাশের শপথ, | ١١ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ٧ |
| ১২. (সেই বৃষ্টিধারায়) ফেটে যাওয়া যমীনের শপথ, | ١٢ وَالْإَرْضِ ذَاتِ الصَّنْعِ لا |
| ১৩. অবশ্যই এ (কোরআন) হচ্ছে (হক বাতিলের) পার্থক্যকারী (চ্ড়ান্ত) কথা, | ١٣ إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ٧ |
| ১৪. তা অর্থহীন (কোনো কথাবার্তা) নয়; | ١٢ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ء |
| ১৫. এরা (আমার বিরুদ্ধে) চক্রান্ত করছে, | 10 إِنَّهُمْ يَكِيْكُونَ كَيْنًا لا |
| ১৬. আমিও (এদের ব্যাপারে) একটি কৌশল অবলম্বন করছি, | ١٦ وَأَكِيْلُ كَيْلًا عَلِيهِ |
| ১৭. অতএব তুমি (আমার সে কৌশল দেখার জন্যে) কিছুদিন কাফেরদের অবকাশ দিয়ে রাখো। | ١٤ نَمَقِّلِ الْكُفِرِيْنَ ٱمْهِلْمُرْرُوَيْدًا ع |
| ৮৬ সূরা আত্ তারেক্ | मनियं १ |
| | |





| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| वसायवात । वाद राह्म पार्वा बहुवाय | |
| সূরা আল আ'লা | سُوْرَةُ الْإَعْلَى مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ১৯, ৰুকু ১ | أِيَابِيُّ : 19 رُكُوْعٌ : 1 |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| | يسمر الله الرهين الرهيم |
| ১. (হে নবী,) তোমার মহান প্রতিপালকের নামের | ١ سَبِّحِ اشْرَ رَبِّكَ الْإَعْلَى ٧ |
| পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করো, | |
| ২. যিনি (সৃষ্টিকুলকে) তৈরী করেছেন, অতপর (তাকে) | ٢ الَّذِي ٛ خَلَقَ فَسَوِّى سلا |
| স্বিন্যস্ত করেছেন, | |
| ত. তিনি (সবকিছুর) পরিমাণ নির্ধারণ করে দিয়েছেন, অতপর তিনি (সবাইকে তাদের) পথ বাতলে দিয়েছেন, | ٣ وَ الَّذِي مَ قَلَّارَ فَهَلَىٰ ٢٠٠٠ |
| | |
| ৪. তিনি (ভূচরের জন্যে) তৃণাদি বের করে এনেছেন, | مُ وَالَّذِيثَ ٱخْرَجَ الْمَرْعٰي صلا |
| ৫. অতপর তিনিই (তাকে এক সময়) খড়কুটায় পরিণত | ر بریری میرجی بر ۱۸ |
| करतरहनः | ۵ فَجَعَلَهٌ غُثَاءً أَهْوى ١ |
| ৬. আমি (যে ওহী পাঠাবো) তা আমিই তোমাকে পড়িয়ে | مرم م ربر به ا |
| (তোমার অন্তরে গেঁখে) দেবো, অতপর তুমি আর (তা) | ٣ سَنُقُوِلُكَ فَلَا تَنْسٰى ٧ |
| ভূলবে না, | |
| ৭. অবশ্য আল্লাহ তায়ালা যদি চান (তা ভিন্ন কথা); তিনি | اللهُ مَا شَاءَ اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ عَلَمُ الْجَهُ وَمَا |
| প্রকাশ্য বিষয় জানেন, (জানেন) গোপন বিষয়ও; | يَخْفَى ا |
| L. INTO CANNE BELL NAME OF GRAVETT STRICK BELL | |
| ৮. আমি তোমার জন্যে সহজ্ঞ পদ্ধতিগুলোর সুযোগ করে দেবো. | ٨ وَنُيَسِّوكَ لِلْيُسُوٰى عمد |
| ৯. কাজেই তুমি (তাদের আলাহ তারালার কথা) স্বরণ করাতে | |
| থাকো, যদি স্থরণ করানো তাদের জন্যে উপকারী হয়; | ٩ فَلَكِّرْ إِنْ تَّفَعَتِ اللِّكُوٰى ١ |
| ১০. যে ব্যক্তি (আল্লাহ তায়ালাকে) ভয় করবে সে | ۱۰ سَيَنْكُو مَنْ يَحْشَى لا |
| (অবশ্যই এর থেকে) উপদেশ গ্রহণ করবে, | |
| ১১. আর যে পাপী ব্যক্তি সে তা এড়িয়ে যাবে, | 11 وَيَتَجَنَّبُهَا الْإَشْقَى لا |
| ১২. অচিরেই যে ব্যক্তি বিশালকায় আগুনে গিয়ে পড়বে, | ١٢ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبُرُى ع |
| ১৩. অতপর সেখানে সে মরবে না, (বাঁচার মতো করে) | |
| उ. अर्थनेत रंगचार्स रंग महत्व मा, (वाठान्न मर्स्था करन्न) रंग वाठतवर्ध मा; | اللهُ الله |
| ১৪. যে ব্যক্তি (হেদায়াতের আলোকে নিজের জীবন) | ١٢ قَلْ إَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ٧ |
| পরিশুদ্ধ করে নিয়েছে, সে অবশ্যই সফলকাম হয়েছে, | القل الملح من توكن لا |
| ১৫. এবং সে নিজের মালিকের নাম স্বরণ করলো অতপর | ١٥ وُذَكَرَ اشْرَ رَبِّهِ فَصَلَّى ١ |
| নামায আদায় করলো; | |
| ১৬. কিন্তু তোমরা তো (হামেশাই) দুনিয়ার জীবনকে আখেরাতের ওপর প্রাধান্য দিয়ে থাকো, | ١٦ بَلْ تُوْثِرُونَ الْحَيْوةَ النَّنْيَا رَمِهِ |
| | |
| ১৭. অথচ আখেরাতের জীবনই হচ্ছে উৎকৃষ্ট ও স্থায়ী; / | ١٤ وَالْأُخِرَةُ مَيْرٌ وَ أَبْقَى ١ |
| ১৮. নিশ্চয়ই এ (কথা) আগের (নবীদের) কেতাবসমূহে | المراج المراج المالية |
| (भक्ष्म) तरहारह, | ١٨ إِنَّ مٰٰذَا لَغِي الصَّحَٰفِ الْأُولٰي لا |
| | |
| ৮৭ সূরা আল আ'লা | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ১৯. (উল্লেখ আছে তা) ইবরাহীম এবং মৃসার কেতাবসমূহেও। | ١٩ صُحُفِ إِبْرَهِيمَ وَمُوسَى ع |
| সুরা আল গাশিয়া | سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ২৬, ৰুকু ১ | أَيَاتُ : ٢٦ رُكُوْعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| তোমার কাছে কি (অপ্রতিরোধ্য ও চতুর্দিক) আচ্ছনুকারী (বিপদের) কথা পৌছেছে? | ا هَلْ ٱلتَّعْكَ حَلِيْتُ الْغَاشِيَةِ ، |
| ২. (সে বিপদে) কিছু লোকের চেহারা হবে নিম্নগামী, | ٢ وَجُوهٌ يُومَئِنِ خَاشِعَةً ٧ |
| ৩. (হবে) ক্লান্ত ও পরিশ্রান্ত, | ٣ عَامِلَةً نَّاصِبَةً ، |
| ৪. তারা (সেদিন) ঝলসে যাওয়া আগুনে প্রবেশ করবে, | ٣ تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ٧ |
| ৫. ফুটন্ত পানির (কুয়া) থেকে এদের পানি পান করানো হবে; | ٥ تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ أَنِيَةٍ ١ |
| ৬. খাবার হিসেবে কাঁটাবিশিষ্ট গাছ ছাড়া কিছুই তাদের জন্যে ধাকবে না, | ٢ لَيْسَ لَهُرْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ٧ |
| ৭. এ (খাবার)-টি (যেমন) তাদের পুষ্ট করবে না, তেমনি (তা দ্বারা) তাদের কুধাও মিটবে না; | ٤ لا يُسْمِنُ وَلَا يُفْنِي مِنْ جُوْعٍ ا |
| ৮. (এর পাশাপাশি আবার) কিছু চেহারা থাকবে আনন্দোজ্জ্বল, | ^ وَجُوهُ يُومِنِنِ نَاعِهَ y |
| ৯. সে (সেদিন) তার চেষ্টা সাধনার জন্যে ভীষণ খুশী হবে, | ٩ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةً ٧ |
| ১০. (সে থাকবে) আলীশান জান্নাতে, | ١٠ فِي ْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٧ |
| ১১. সেখানে সে কোনো বাজে কথা শোনবে না; | ١١ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ١ |
| ১২. তাতে থাকবে প্রবাহমান ঝর্ণাধারা। | ١٢ فِيْهَا عَيْنَّ جَارِيَةً ر |
| ১৩. তাতে থাকবে (সুসজ্জিত) উঁচু উঁচু আসন, | ١٣ فِيهَا سُرُو مُرْفُوعَةً ٧ |
| ১৪. (সাজানো থাকবে) নানান ধরনের পানপাত্র, | ١٣ و أَكُوَ ابُّ مَّوْمُوعَةً ٧ |
| ১৫. (আরাম-আয়েশের জন্যে থাকবে) সারি সারি গালিচা ও রেশমের বালিশ, | ١٥ وَّنْهَارِقُ مَصْفُوْنَةً ٧ |
| ১৬. (আরো থাকবে) উৎকৃষ্ট কার্পেটের বিছানা; | ١٦ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةً ، |
| ১৭. এরা কি উটনীটির দিকে তাকিয়ে দেখে না কিভাবে তাকে সৃষ্টি করা হয়েছে! | ١٤ أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ غُلِقَتْ والله |
| ১৮. আকাশের দিকে (দেখে না), কিভাবে তাকে উঁচু করের রাখা হয়েছে! | ١٨ وَ إِلَى السَّهَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ وسَ |
| ১৯. পাহাড়গুলোর দিকে (দেখে না), কিভাবে (যমীনের বুকে) তাদের দাঁড় করিয়ে রাখা হয়েছে! | 19 وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ وسَ |
| ৮৮ সূরা আল গাশিয়া | মন্যিল ৭ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|--|---|
| | ২০. যমীনের দিকে (দেখে না), কিভাবে তাকে সমতল করে পেতে রাখা হয়েছে! | ٢٠ وَ إِلَى الْإَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتُ وَنَنَا |
| ı | ২১. তুমি তাদের (এ কথাগুলো) শ্বরণ করাতে থাকো। তুমি তো তথু একজন উপদেশদানকারী মাত্র; | ٢١ فَنَ كِّرْ سَ إِنَّهَا ۖ أَنْسَ مُنَكِّرٌ ۗ |
| | ২২. তুমি তো তাদের ওপর বল প্রয়োগকারী (দারোগা) নও. | ٢٢ لَسْتَ عَلَيْهِي بِهُصَيْطِ ٧ |
| | ২৩. সে ব্যক্তির কথা আলাদা যে (এ হেদায়াত থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেবে এবং (যে আল্লাহকে) অস্বীকার করবে, | ٣٣ إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ٧ |
| ١ | ২৪. আল্লাহ তায়ালা তাকে অবশ্যই বড়ো রকমের শাস্তি দেবেন; | ٢٣ فَيُعَلِّبُهُ اللَّهُ الْعَلَابِ الْإَكْبَرَ ، |
| ı | ২৫. অবশ্যই তাদের প্রত্যাবর্তন হবে আমার দিকে, | ٢٥ إِنَّ إِلَيْنَاۤ إِيَابَهُرُ ٧ |
| 7 | ২৬. অতপর তাদের হিসাব নেয়া(-র দায়িত্ব থাকবে সম্পূর্ণত) আমার ওপর। | ٢٦ ثُمرَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُرْع |
| | সুরা আল ফজর | سُوْرَةً †لْفَحِرِ مَكِيَّةً |
| | মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৩০, ৰুকু ১ | أيَاتٌ : ٣٠ رُكُوعٌ : ١ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْسٰ الرَّحِيْرِ |
| | ১. ভোরের শপথ, | ١ وَالْفَجُرِ ٧ |
| | ২. শপথ দশটি (বিশেষ) রাতের, | ٢ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ٧ |
| | ৩. শপথ জোড় (সৃষ্টি)-এর ও বিজোড় (স্রষ্টা)-এর, | ٣ وَّ الشَّفْعِ وَ الْوَتْرِ ٧ |
| ١ | ৪. শপথ রাতের যখন তা সহজে বিদায় নিতে থাকে, | مُ وَالَّيْلِ إِذَا يَشْرِ ع |
| | ৫. এর মধ্যে কি বিবেকবান লোকদের জ্বন্যে কোনো শপথ রাখা হয়েছে? | ٥ مَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَرٌ لِّلْنِي مِجْدٍ ، |
| | ৬. তুমি কি দেখোনি, তোমার মালিক আ'দ (জাতি)-এর লোকদের সাথে কেমন ব্যবহার করেছেন? | ٢ اَلَمْ تَرَكَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ س٧ |
| | ৭. 'এরাম' গোত্র (ছিলো) উঁচু স্তম্ববিশিষ্ট প্রাসাদের অধিকারী, | ٤ إِرَاً ذَاسِ الْعِهَادِ سلا |
| | ৮. (জ্ঞান ও ঐশ্বর্যের দিক থেকে) জ্বনপদে তাদের মতো কাউকেই (এর আগে) সৃষ্টি করা হয়নি, | ٨ الَّتِي لَر يُخْلَق مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ س٧ |
| | ৯. (উন্নত) ছিলো সামুদ, তারা (পাহাড়ের উপত্যকায়)পাথর কেটে (সুরম্য) অয়ৗলিকা বানাতো, | ٩ وَتَهُودَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ س |
| | ১০. (অত্যাচারী) ফেরাউন– যে কীলক গেঁপে (শান্তি) প্রদানকারী (যালেম) ছিলো, | ١٠ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ سلا |
| | ১১. যারা দেশে দেশে (আল্লাহর সাথে) বিদ্রোহ করেছে, | ١١ الَّذِيثَيَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ س٧ |
| | ১২. তারা তাতে বেশী মাত্রায় (বিপর্যয় ও) অশান্তি সৃষ্টি করেছে, | ١٢ فَٱكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ س٧ |
| | ১৩. অবশেষে তোমার প্রতিপালক তাদের ওপর আযাবের কোড়ার কষাঘাত হানলেন, | ١٣ فَصَبٌّ عَلَيْهِمِ (رَبُّكَ سَوْطَ عَلَ أَبٍ ٢٧ |
| | ৮৯ সূরা আল ফজর | মন্যিল ৭ |
| | | 4-11/4-1-1 |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াভাসাআলুন |
|--|--|
| ১৪. অবশ্যই তোমার মালিক (এদের ধরার জন্যে) ওঁৎ পেতে রয়েছেন; | ١٢ إِنَّ رَبُّكَ لَبِالْهِرْمَادِ ا |
| ১৫. মানুষরা এমন যে, যখন তার মালিক তাকে নেয়ামত (অর্থ সম্পদ) ও সম্মান দিয়ে পরীক্ষা করেন তখন সে | ١٥ فَأَمًّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلْمَهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ |
| বলে, হাঁ, আমার মালিক আমাকে সম্মানিত করেছেন; | وَنَعْهَ لَا فَيَقُولُ رَبِّى آكْرَمَنِ |
| ১৬. আবার যখন তিনি (ভিন্নভাবে) তাকে পরীক্ষা করেন (এবং এক পর্যায়ে) তার রেযেক সংকুচিত করে দেন, | ١٦ وَأَمَّ إِذَا مَا ابْتَلْسُهُ فَقَنَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ لا |
| তখন সে (নাখোশ হয়ে) বলে, আমার মালিক আমাকে অপমান করেছেন, | فَيَقُوْلُ رَبِّي ٓ أَهَانَي ع |
| ১৭. কখনো নয় (সত্যি কথা হচ্ছে), তোমরা এতীমদের সম্মান করো না, | ١٤ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْرَ ٧ |
| ১৮. মেসকীনদের খাওয়ানোর জন্যে তোমরা একে অপরকে উৎসাহ দাও না, | ١٨ وَلَا تَحَضُّونَ عَلَى طَعَا مِ الْمِسْكِيْنِ لا |
| ১৯. তোমরা মৃত ব্যক্তির (রেখে যাওয়া) ধন-সম্পদ নিজেরাই সব কৃক্ষিগত করো, | ١٩ وَتَأْكُلُوْنَ التَّرَاءَ اَكْلًا لَيًّا لا |
| ২০. বৈষয়িক ধন-সম্পদকে তোমরা গভীরভাবে ভালোবাসো; | ٢٠ وَّتُحِبُّونَ الْهَالَ حُبًّا جَبًّا ١ |
| ২১. কথনো নয়, তেমনটি কখনোই উচিত নয় (দরণ করো), যেদিন এ (সাল্লানো) পৃথিবীটাকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেয়া হবে, | ٢١ كَلَّا إِذَا دُكِّسِ الْإَرْضُ دَكًّا دَكًّا لاَ |
| ২২. (সেদিন) ভোমার মালিক স্বয়ং আবির্ভৃত হবেন, আর ফেরেশতারা সব সারিবদ্ধাবে দাঁড়িয়ে থাকবে, | ٢٢ وَّجَاءُ رَبُّكَ وَالْهَلَكُ صَفًّا صَفًّا |
| ২৩. সেদিন জাহান্নামকে (সামনে) নিয়ে আসা হবে, যেদিন প্রতিটি মানুষই (তার পরিণাম) বুঝতে পারবে, | ٣٣ وَجِائَءَ يَوْمَئِنٍ الْبِجَهَنَّرَ لَا يَوْمَئِنٍ يَّتَنَ كُّرُ الْإِنْسَانُ وَٱتَّى لَهُ النِّكْرِٰى ، |
| কিন্তু (তখন) এ বোধোদয় তার কী কাজে লাগবে? | |
| ২৪. সেদিন এ (হতভাগ্য) ব্যক্তি বলবে, কতো ভালো হতো যদি (আজকের) এ জীবনের জন্যে (কিছুটা ভালো কাজ) আমি আগে ভাগেই পাঠিয়ে দিতাম, | ٢٣ يَقُولُ يٰلَيْتَنِي قَلَّمْتُ لِحَيَاتِي جَ |
| ২৫. সেদিন আল্লাহ তায়ালা (এ বিদ্রোহীদের) এমন শান্তি দেবেন যা অন্য কেউ দিতে পারবে না, | ٢٥ فَيَوْمَنِنِ لا يُعَلِّبُ عَنَابَهُ أَمَنَ ٧ |
| ২৬. এবং তাঁর বাঁধনের মতো বাঁধনেও কেউ (পাপীদের) বাঁধতে পারবে না; | ٢٦ ولا يُوثِقُ وَثَاقَةً أَحَلًا ا |
| ২৭. (নেককার বান্দাদের বলা হবে,) হে প্রশান্ত আত্মা, | ٢٤ يَأَيُّتُهَا النَّفُسُ الْهُطْهَئِنَّةُ وَمِهِ |
| ২৮. তুমি তোমার মালিকের কাছে ফিরে যাও সস্তুষ্টচিত্তে ও তাঁর প্রিয়ভাজন হয়ে, | ٢٨ ارْجِعِيْ إِلَى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً |
| ২৯. অতপর তুমি আমার প্রিয় বান্দাদের দলে শামিল হয়ে যাও, | ٢٩ فَادْعُلِي فِي عِبْلِي ٤ |
| ৩০. (আর) প্রবেশ করো আমার (অনস্ত) জান্নাতে। | ٣٠ وَاثْمُلِيْ جَنَّتِيْ ع |
| সুরা আল বালাদ | سُوْرَةُ الْبَلَنِ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ২০, ৰুকু ১ | أيَاساً : ٢٠ رُكُوعً : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. আমি শপথ করছি এ (পবিত্র) নগরীর, | ا لا ٱقْسِرُ بِمْنَا الْبَلَهِ لا |
| ৯০ সূরা আল বালাদ | মন্যিল ৭ |

| سُوْرَةُ الشَّهُ مَدِّيَةً إِيَّاتٌ : 10 رُكُوعٌ : 1 بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّمِيْرِ ا وَالشَّهْسِ وَضُعُنهَا سِلا ٢ وَالقَّهْرِ إِذَا تَلْعَهَا سِلا |
|--|
| أَيَاتَ : 10 رُكُوعٌ : 1 بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| أَيَاتَ : 10 رُكُوعٌ : 1 بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| |
| |
| |
| ٢٠ عَلَيْهِمْ نَارً فُوْمَنَةً ع |
| ١٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِالْيَتِنَا مُرْ أَصْعُبُ الْمَشْنَهَةِ |
| ١٨ أُولَٰنِكَ أَمْحُٰبُ الْمَيْمَنَةِ ، |
| الله الله عن الله الله الله الله الله الله الله الل |
| |
| ١٦ أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْزَبَةٍ ١ |
| ١٥ يَّتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ٧ |
| ١٢ أَوْ إِطْعَرْ فِي يَوْ إِذِي مَسْفَبَةٍ ٧ |
| ١٣ فَكُّ رَقَبَةٍ ٧ |
| ١٢ وَمَا آدُرُكَ مَا الْعَقَبَةُ ، |
| اا فَلَا اقْتَحَرَ الْعَقَبَةَ زمهِ |
| ١٠ وَهَنَيْنُهُ النَّجِنَيْنِ ج |
| 9 وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ لا |
| ٨ أَلَرْ نَجْعَلْ لَّهُ عَيْنَيْنِ ٧ |
| اَيَحْسَبُ أَن لَّر يَرَةً أَحَلَ ا |
| ٣ يَقُوْلُ ٱهْلَكْتُ مَالًا لَّبَرَّا ا |
| ٥ أيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْنِرَ عَلَيْدِ أَحَنَّ م |
| ٣ لَقَلْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَرٍ ا |
| ٣ وَوَ الِنِ وَمَا وَلَنَ ٧ |
| ٢ وَٱنْتَ حِلَّ بِهٰنَا الْبَلَىٰ ٧ |
| |
| পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
| |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|--|
| ৩. শপথ দিনের যখন সে তাকে আলোকিত করে ফেলে, | ٣ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلُّهَا سِهِ |
| ৪. শপথ রাতের যখন সে তাকে ঢেকে দেয়, | ٣ وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشُمُا مَالِا |
| ৫. শপথ আকাশের এবং যিনি তা নির্মাণ ক্যান্সে – তাঁর, | 4 وَالسَّهَاءِ وَمَا بَدْيهَا علا |
| ৬. শপথ পৃথিবীর এবং যিনি একে বিছিয়ে দিয়েছেন– তাঁর, | ٦ وَ الْإَرْضِ وَمَا طَحْنِهَا سِلا |
| ৭. শপথ মানব প্রকৃতির এবং যিনি তার যথাযথ বিন্যাস স্থাপন করেছেন– তাঁর, | ٤ وَنَفْسٍ وُّمَا سَوُّنهَا سَلا |
| ৮. অতপর আল্লাহ তায়ালা তাকে তার পাপ (পথে গমন) ও (পাপ থেকে) বেঁচে থাকা–(র জ্ঞান) প্রদান করেছেন, | ٨ فَٱلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقُولهَا ١٧٠ |
| ৯. নিসন্দেহে মানুষের মধ্যে সে-ই সফলকাম যে (পাপ থেকে দূরে থেকে) তাকে পরিতদ্ধ করেছে, | ٩ قَلْ إَفْلَحَ مَنْ زَكُّنهَا س٧ |
| ১০. আর যে (ব্যক্তি পাপে নিমজ্জিত হয়ে) তাকে কলুষিত করেছে সে ব্যর্থ হয়েছে, | ١٠ وَقَلْ غَابَ مَنْ دَسُّلهَا ١٠ |
| ১১. সামুদ জাতি তার অবাধ্যতার কারণে (আল্লাহর নবীকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলো, | ِ ١١ كَنَّ بَيْ ثَهُوْدُ بِطَغُوٰمِهَا ۖ سِ٧ |
| ১২. যখন তাদের বড়ো না-ফরমান ব্যক্তিটি ষড়যন্ত্রে মেতে র্জ্ঞলো, | ١٢ إِذِ اثْبَعَنِيَ ٱشْقَامِهَا سِلا |
| ১৩.তখন আল্লাহর নবী তাদের বললো, এ হচ্ছে আল্লাহর পাঠানো উটনী আর এ হচ্ছে তার পানি পান (করার জায়গা); | ١٣ فَقَالَ لَهُرْ رَسُوْلُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقَيْنِهَا ١٠ |
| ১৪. কিন্তু তারা তাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো অতপর উটনীটিকে তারা হত্যা করে ফেললো, অতপর তাদের এ না-ফরমানীর কারণে তাদের মালিক তাদের ওপর মহা বিপর্যয় নাযিল করলেন, অতপর তিনি তাদের (মাটির সাথে) একাকার করে দিলেন, | ١٢ فَكَنَّ بُوْهٌ فَعَقَرُوْهَا فِي فَلَامْنَ مَّ عَلَيْهِرْ رَبَّهُرْ بِهُرْ بِلَا فِلَامْنَ مَ عَلَيْهِرْ رَبَّهُر |
| ১৫. (আর রাজাধিরাজ আল্লাহ তায়ালা,) তিনি এসব ব্যাপারে (যে পাপিষ্ঠ) তার পরিণতির পরোয়া করেন না। | ١٥ وَلَا يَخَانُ عُقْاهًا ع |
| স্রা আল লায়ল মক্কায় অবতীর্ণ- আয়াত ২১, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةً أيات : ٢١ رُكُوع : ١ بِشرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ |
| ১. রাতের শপথ যখন তা (আঁধারে) ঢেকে যায়, | ا وَ الَّيْلِ إِذَا يَغْشَى لا |
| ২. দিনের শপথ যখন তা (আলোয়) উদ্ভাসিত হয়ে উঠলো, | ٢ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ٧ |
| ৩. পুরুষ ও নারী যা তিনি সৃষ্টি করেছেন (তারও শপথ,) | · ٣ وَمَا خَلَقَ النَّكَرَ وَالْأَنْثَى لا |
| ৪. অবশ্যই তোমাদের চেষ্টা-সাধনা (হবে) নানামুখী; | ٣ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتْي ا |
| ৫. অতএব যে (আল্লাহর পথে) দান করেছে এবং আল্লাহকে ভয় করেছে, | ۵ فَأَمًّا مَنْ أَعْطَى وَ اتَّقَٰى لا |
| ৬. ভালো কথাগুলো যে সত্য বলে মেনে নিয়েছে, | ٦ وَمَنَّقَ بِالْحُسْنٰي لا |
| ৯২ সূরা আল লায়ল | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|
| ৭. অবশ্যই আমি তার আরামের পথে চলা সহজ করে | |
| দেবো; | كَ فَسَنْيَسِّواً لِلْيُسُولِي اللهُ |
| ৮. যে ব্যক্তি কার্পণ্য করেছে এবং বেপরোয়া ভাব | ^ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى y |
| দেখিয়েছে, | |
| ৯. এবং যে ভালো কথা মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, | 9 وَكَنَّبَ بِالْعُسْنَى لا |
| ১০. অতএব আমি তার দুঃখ কষ্টের জ্বন্যে (এ পথে) চলা | ١٠ فَسَنَيْسُوهُ لِلْعُسُولِي الْمُعْدُلِي الْمُعْدُلِي الْمُعْدُلِي الْمُعْدُلِي الْمُعْدُلِي الْمُعْدُلِي |
| সহজ করে দেবো, | |
| ১১. তার (রাশি রাশি) ধনসম্পদ তার কাজে লাগবে না যখন তার পতন হবে, | ا وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالَّهٌ إِذَا تَرَدَّى ا |
| ১২. অবশ্যই (মানুষকে) সঠিক পথ প্রদর্শন করার দায়িত্ব | ۱۲ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُلٰى رَمِي |
| আমার ওপর, | |
| ১৩. দুনিয়া আখেরাতের (নিরংকুশ মালিকানা) আমারই জন্যে। | ١٣ وَإِنَّ لَنَا لَلْاخِرَةَ وَالْأُولٰي |
| ১৪. অতএব আমি তোমাদের জ্বলম্ভ অগ্নিকুন্ডের ব্যাপারে সাবধান করছি, | ۱۳ فَاَنْنَ رَٰتُكُم نَارًا تَلَقَّى لا |
| ১৫. নির্ঘাত পাপী ছাড়া অন্য কেউই সেখানে প্রবেশ করবে না, | ١٥ لَا يَصْلُعُمَّ إِلَّا الْإَهْقَى لا |
| ১৬. যে (পাপী এ দিনকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং (হেদায়াত থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিয়েছে; | ١٦ الَّذِي كَنَّابَ وَتَوَلَّى ا |
| ১৭. যে (আল্লাহকে) বেশী বেশী ভয় করে তাকে আমি | 14 وَسَيُجَنَّبُهَا الْإَتْقَى لِا |
| (এ থেকে) বাঁচিয়ে দেবো, | 16-21 4 |
| ১৮. যে ব্যক্তি নিজেকে পরিশুদ্ধ করার জন্যে (আক্সাহর | ١٨ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهٌ يَتَزَكَّى ج |
| পথে অর্থ সম্পদ) ব্যয় করেছে, | |
| ১৯. (অথচ) তোমাদের কারোই তাঁর কাছে এমন কিছু ছিলো না, (যার জন্যে) তোমাদের কোনো রকম প্রতিদান দেয়া হবে, | 19 وَمَا لِإَمَٰلٍ عِنْكَةً مِنْ نِّعْهَةٍ تُجُزَّى لا |
| ২০. (হাঁ, পাওনা) এটুকুই, সে ওধু তার মহান মালিকের সম্ভুষ্টিই কামনা করেছে, | ٢٠ إلَّا ابْتِغَاءَ وَجُهِ رَبِّهِ الْأَعْلَى } |
| ২১. (এ কারণে) অচিরেই তার মালিক (তার ওপর) সমুষ্ট হবেন। | ٢١ وَلَسَوْنَ يَرْمَنٰي ﴾ |
| | سُوْرَةً لضَّعَى مَكِيةً |
| স্রা আদ দোহা | |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ১১, রুকু ১ | أَيَاتٌ : ١١ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. শপথ আলোকোজ্জ্বল মধ্য দিনের, | ا وَالفُّعٰي لا |
| ২. শপথ রাতের (অন্ধকারের), যখন তা (চারদিকে) ছেয়ে যায়, | ٢ وَالَّيْلِ إِذَا سَجْى لا |
| ৩. তোমার মালিক (ওহীর সাময়িক বিরতিতে) তোমাকে পরিত্যাগ করে চলে যাননি এবং তিনি তোমার ওপর অসন্তুষ্টও হননি; | ٣ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلْي 4 |
| ৪. অবশ্যই তোমার পরবর্তীকাল আগের চেয়ে উত্তম; | ٣ وَلَلْاخِرَةُ مَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولٰي ا |
| ৯৩ সূরা আদ দোহা | मन्यिन १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ৫. অল্পদিনের মধ্যেই তোমার মালিক তোমাকে (এমন কিছু) দেবেন যে, তুমি (এতে) খুশী হয়়ে যাবে; | ۵ وَلَسَوْنَ يُعْطِيلُكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى ا |
| ৬. তিনি কি তোমাকে এতীম অবস্থায় পাননি- অতপর তিনি তোমাকে আশ্রয় দিয়েছেন, | ٢ ألَر يَجِنْكَ يَتِيْمًا فَأُوى س |
| ৭. তিনি কি তোমাকে (এমন অবস্থায়) পাননি যে, তুমি (সঠিক পথের সন্ধানে) বিব্রত ছিলে, অতপর তিনি তোমাকে সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছেন, | 4 وَوَجَلَكَ شَالًا فَهَلَى س |
| ৮. তিনি কি তোমাকে নিঃস্ব অবস্থায় পাননি, অতপর তিনি তোমাকে অমুখাপেক্ষী করে দিয়েছেন; | ٨ وَوَجَلَكَ عَآئِلًا فَاغْنَى ١ |
| ৯. অতএব তুমি কখনো এতীমদের ওপর যুগুম করো না; | ٩ فَأَمًّا الْيَتِيْرَ فَلَا تَقْهَرْ ١ |
| ১০. কোনো প্রার্থীকে কোনো সময় ধমক দিয়ো না; | ١٠ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرُ ١٠ |
| ১১. তুমি তোমার মালিকের জ্মুগ্রসমূহ বর্ণনা করে যাও। |) ١١ وَأَمَّا بِنِعْهَةِ رَبِّكَ فَحَكِّتْ عَ |
| স্রা আব্দ এনশেরাহ মকায় অবতীর্ণ– আয়াত ৮, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | سُوْرَةٌ اَلَمْ نَشُرَحْ مَكِّيَّةً إِيَّاتٌ : ٨ رُكُوْعٌ : ١ بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحْشِ الرَّحِيْمِ |
| ১. (হে মোহাম্মদ,) আমি কি তোমার (জ্ঞান ধারণের) জন্যে তোমার বক্ষ উন্মুক্ত করে দেইনিং | ١ اَلَهُ نَشْرَحُ لَكَ مَنْ رَكَ ٧ |
| ২. (হাঁ, অতপর) আমিই তো তোমার (ওপর) থেকে তোমার বোঝা নামিয়ে দিয়েছি, | ٣ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ٧ |
| ৩. (এমন এক বোঝা) যা তোমার পিঠ নুইয়ে দিচ্ছিলো, | ٣ الَّذِي ۗ ٱنْقَضَ ظَهْرَكَ ٧ |
| ৪. আমিই তোমার স্বরণকে সর্বোচ্চ আসনে প্রতিষ্ঠিত করেছি; | ٣ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ١ |
| ৫. অতপর কষ্টের সাথে অবশ্যই আরাম রয়েছে; | ۵ فَارِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُشْرًا لا |
| ৬. নিক্যুই কষ্টের সাথে আছে আরাম; | ٢ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِيسُوا ١ |
| ৭. অতপর যখনি তুমি অবসর পাবে তখনি তুমি (এবাদাতের) পরিশ্রমে লেগে যাও, | ٤ فَاِذَا فَرَغْسَ فَانْصَبْ ٧ |
| ৮. এবং সম্পূর্ণ নিচ্ছের মালিকের অভিমুখী হও। | ٨ وَ إِلَى رَبِّكَ فَارْغَبْ عَ |
| স্রা আত্ তীন | سورة التين مكية |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৮, রুকু ১ | أيَاتُ : ﴿ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْسَٰنِ الرَّحِيْرِ |
| ১. শপথ 'তীন' ও 'যয়তুনে'র, | ١ وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُونِ ٧ |
| ২. এবং শপথ সিনাই উপত্যকার, | ٢ وَكُورِ سِيْنِيْنَ ٧ |
| ৯৪ সূরা আল এনশেরাহ ৯৫ সূরা আত্ তীন | मनियम १ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|---|
| ৩. (আরো) শপথ এ নিরাপদ (মক্কা) নগরীর, | ٣ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ٧ |
| ৪. অবশ্যই আমি মানুষকে সৃন্দরতম অবয়বে পয়দা করেছি, | مُ لَقَلْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي ٓ أَحْسَى تَقْوِيْمٍ ز |
| ৫. তারপর (তার অকৃতজ্ঞতার কারণেই) আমি তাকে সর্বনিমন্তরে নিক্ষেপ করবো, | ۵ ثُمر وَدَدْنهُ أَسْفَلَ سَعِلِينَ ٧ |
| ৬. তবে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তাদের জন্যে রয়েছে এমন সব পুরক্ষার, যা কোনোদিন | ٦ إلَّا الَّذِينَ أُمُّنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحُتِ |
| শেষ হবে না; | فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَهْنُونٍ ا |
| ৭. (বলতে পারো,) কোন্ জিনিস এরপরও তোমাকে শেষ বিচারের দিনটিকে মিথ্যা প্রতিপাদন করাক্ষে | 4 فَهَا يُكَنِّبُكَ بَعْنُ بِالرِّيْشِ وَالرِّيْشِ |
| ৮. আল্পাহ তায়ালা কি সব বিচারকের (তুলনায়) শ্রেষ্ঠ বিচারক ননঃ | ٨ أَلَيْسَ اللَّهُ بِٱحْكَرِ الْحُكِيِيْنَ ع |
| | سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيةً |
| সুরা আল আলাকু মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ১৯ রুকু ১ | إِيَاتٍ : ١٩ رُكُوعٌ : ٣ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسُ الرَّحِيْرِ |
| ১. (হে মোহাম্মদ), তুমি পড়ো, (পড়ো) তোমার মালিকের নামে, যিনি সৃষ্টি করেছেন, | ا إِقْرَأُ بِاشْرِ رَبِّكَ الَّذِي ْ خَلَقَ عَ |
| ২. যিনি মানুষকে সৃষ্টি করেছেন জমাটবাঁধা রক্ত থেকে, | ٢ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ج |
| ৩. তুমি পড়ো এবং (জেনে রাখো) তোমার মালিক বড়োই মেহেরবান, | ٣ إِقْرَأُ وَرَبُّكَ الْإَكْرَاءُ ٧ |
| ৪. তিনি (মানুষকে) কলম দ্বারাই (জ্ঞান-বিজ্ঞান) শিথিয়েছেন, | ٣ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ لا |
| ৫. তিনি মানুষকে (এমন সবকিছু) শিখিয়েছেন যা (তিনি না শেখালে) সে কখনো জানতে পারতো না; | ۵ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمُ ؞ |
| ৬. (আর) হাঁ, এ মানুষটিই (বড়ো হয়ে) বিদ্রোহে মেতে গঠে; | اللَّهُ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَى لا كُلَّهُ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَى لا |
| ৭. সে দেখতে পায় তার যেন (এখন আর) কোনো অভাব নেই; | ٤ أَنْ وَأَهُ اسْتَغْنَى ا |
| ৮. অথচ (এ নির্বোধ ভেবে দেখে না,) একদিন তার মালিকের দিকেই (তার) প্রত্যাবর্তন হবে; | ٨ إِنَّ إِلَى رَبِّكَ الرَّجْعَٰى ١٠ |
| ৯. তুমি কি সে (দাঞ্চিক) ব্যক্তিটিকে দেখেছো যে তাকে বাধা দিলো– | ٩ أَرَءَيْتَ الَّذِي يَنْهَى ٧ |
| ১০. (বাধা দিলো আল্লাহর) এক বান্দাকে যে নামায পড়ছিলো; | ١٠ عَبْلً إِذَا صَلَّى ، |
| ১১. তুমি কি দেখেছো, সে কি সঠিক পথের ওপর আছে, | اا أَرَعَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُنِّي لِا |
| ১২. কিংবা সে কি (অন্যদের আল্পাহ তায়ালাকে) ভয় করার আদেশ দেয়ঃ | ١٢ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقُوٰى ١٠ |
| ১৩. সে ব্যক্তি সম্পর্কে তুমি কি মনে করো যে (ঋষাংক) মিথ্যা প্রতিপন্ন করে এবং (তাঁর খেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয়; | ١٣ أَرَءَيْنَ إِنْ كَنَّبَ وَتَوَلَّى ا |
| ৯৬ সূরা আল আলাক্ ৬৩৭ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|--|
| ১৪. এ (দান্তিক) লোকটি কি জানে না আল্লাহ তায়ালা (তার সব কিছুই) পর্যবেক্ষণ করছেন; | ١٢ اَلَمْ يَعْلَمُ بِأَنَّ اللَّهَ يَرِٰى ١ |
| ১৫. (কিছুতেই) না, যদি সে (এ থেকে) ফিরে না আসে, তাহলে অবশ্যই তাকে আমি সম্মুখভাগের চুলের গোছা ধরে হেঁচড়াবো, | ١٥ كَلَّا لَئِيْ لَّرْ يَنْتَهِ ه لَنَسْفَعًا 'بِالنَّاصِيَةِ ٧ |
| ১৬. (তুমি কি জানো সে কে যার চুল ধরে আমি হেঁচড়াবোঃ) সে হচ্ছে (আমাকে) মিথ্যা প্রতিপন্নকারী না-ফরমান ব্যক্তিটি, | ١٦ نَاسِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ع |
| ১৭. সে (আজ বাঁচার জন্যে) তার সংগী-সাথীদের ডেকে আনুক, | ١٤ فَلْيَنْءُ نَادِيَهُ ۗ ٧ |
| ১৮. আমিও তার জন্যে (আযাবের) ফেরেশতাদের ডাক দেবো, | ١٨ سَنَدُعُ الزَّبَانِيَةَ ع |
| ১৯. কখনো নয়; তুমি কিছুতেই তার অনুসরণ করো না, তুমি (বরং) তোমার মালিকের সামনে সাজদাবনত হও এবং তার নৈকট্য লাভ করো। | الله الله الله الله الله الله الله الله |
| সুরা আল ক্যাদর | سُوْرَةُ الْقَانِ مَكِّيةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৫, ৰুকু ১ | أيَاتٍ : ٥ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسُ الرِّحِيْرِ |
| ১. আমি এ (গ্রন্থ) -টি নাথিল করেছি এক মর্যাদাপূর্ণ রাতে, | ا إِنَّا اَنْزَلْنُهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ عمد |
| ২. তুমি কি জ্ঞানো সেই (মর্যাদাপূর্ণ) রাতটি কিঃ | ٢ وَمَا آذُرنكَ مَا لَيْلَةُ الْقَارِ ، - وَمَا آذُرنكَ مَا لَيْلَةُ الْقَارِ ، - وَمَا آذُرنكَ مَا لَيْلَةُ الْقَارِ ، |
| ৩. মর্যাদাপূর্ণ এ রাভটি হাজ্ঞার মাসের চেয়ে উন্তম; | اً لَيْلَةُ الْقَدْرِ لَا خَيْرٌ مِّنْ ٱلْفِ هَهْرٍ " |
| এতে (ফেরেশতা ও তাদের সর্দার) 'ক্লহ' তাদের মালিকের সব ধরনের আদেশ নিয়ে (যমীনে) অবতরণ করে, | ٣ تَنَوَّلُ الْمَلَّئِكَةُ وَالرَّوْحُ فِيْهَا بِاِذْسِ رَبِّمِرْ عَ فِيْهَا بِاِذْسِ رَبِّمِرْ عَ فِيْهَا بِاِذْسِ |
| ৫. (সে আদেশ বার্তাটি হচ্ছে চিরন্তন) প্রশান্তি, তা উষার আবির্ভাব পর্যন্ত (অব্যাহত) থাকে। | ٥ سَلْرٌ نَ هِيَ مَثَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِع |
| সুরা আ ল বাইয়্যেনাহ মদীনায় অবতীর্ণ– আয়াত ৮, <i>ক</i> রু ১ | سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَنَنِيَّةً أياب : ^ رُكُوعً : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আমার আয়াত) অস্বীকার করে, তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণপত্র নিয়ে না আসা পর্যন্ত তারা কখনো ফিরে আসতো না, | ا لَمْ يَكُنِ النَّوِيْنَ كَفَرُوا مِنْ آهْلِ الْكِتٰبِ وَالْهُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ مَتْى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ٧ |
| ২. (আর সে প্রমাণ হচ্ছে,) আল্লাহর পক্ষ থেকে রসূল (আসবে), যারা (এদের) আল্লাহর পবিত্র কেতাব পড়ে শোনাবে, | ٢ رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُوا صُحُفًا مُّطَهِّرَةً ٧ |
| ৩. এতে রয়েছে উন্নত (মূল্যবোধ) ও সঠিক বিষয়বস্তু; | ٣ فِيْهَا كُتُبُّ قَيِّهَا لُ |
| ৯৭ সূরা আল ঝাুদর ৯৮ সূরা আল বাইয়্যেনাহ | মন্যিল ৭ |

| कात्रजान मंत्रीक সহজ সরল বাংলা जनुवाम 8. কেতাবধারী লোকেরা তাদের কাছে সুম্পন্ট প্রমাণ এলে 1 এ কার্নাইন্ট্র নির্দ্র বিভেদ এবং অনৈক্যে নিমজ্জিত হয়ে পড়েছে; ৫. (অপচ) এদের এ ছাড়া আর কিছুরই আদেশ দেয়া হয়নি যে, তারা আল্লাহর জন্যেই নিজেদের দ্বীন ও এবাদাত নিবেদিত করে নেবে এবং নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত দান করবে, (কেননা) এটাই হচ্ছে সঠিক জীবন বিধান; ৬. আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লকে) অস্বীকার করেছে, তারা অবশাই জাহান্নামের আগুনে থাকবে, সেখানে তারা থাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিকৃষ্টতম সৃষ্টি ৭. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট; ৮. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরন্ধার রয়েছে (এমন এক) জান্নাত, যার তলদেশে প্রবাহিত থাকবে বর্ণাধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করেরে; আরাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আরাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার মালিককে (যথাযথ) ভয় করেছে। স্ক্রা আযে বেশ্যযা স্বা আয়ে বেশ্যযা পার্রাত বেশ্যযা পার্বাহ বিশ্বরাধী করিছে। স্বা আয়ে বেশ্যযা স্বা ক্রিটিট্র বিশ্বরাধী করিছে করেছে (যথাযথ) ভয় করেছে। পার্বাহত বিশ্বরাধী স্বা আয়ে বেশ্বরাধী স্বা ক্রিটিট্র বিশ্বরাধী স্বা ক্রিটিল্র বিশ্বরাধী স্বা ক্রিটিল্র বিশ্বরাধী স্বাত্ব ক্রেটিট্র বিশ্বরাধী স্বাত্ব ক্রেটিল্র ক্রিটার ক্রেটিল বিশ্বরাধী স্বাত্ব ক্রেটিল্র ক্রিটার ক্রেটিল্র ক্রেটিল্র ক্রিটার ক্রেটিল বিশ্বরাধী স্বাত্ব ক্রিটার ক্রেটিল্র ক্রেটিল্র ক্রিমান বিশ্বরাধী স্বাত্ব ক্রিটার ক্রেটিল্র ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রিটার ক্রিটার ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রিটার ক্রেটিল ক্রিটার ক্রিটার ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রেটিল ক্রে |
|--|
| याउश्रात পরও বিভেদ এবং অনৈক্যে নিমজ্জিত হয়ে পড়েছে; ৫. (অথচ) এদের এ ছাড়া আর কিছুরই আদেশ দেয়া হয়নি যে, তারা আল্লাহর জন্যেই নিজেদের দ্বীন ও এবাদাত নিবেদিত করে নেবে এবং নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত দান করবে, (কেননা) এটাই হচ্ছে সঠিক জীবন বিধান; ৬. আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তার রস্লকে) অধীকার করেছে, তারা অবশাই জাহান্নামের আগুনে থাকরে, সেখানে তারা থাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিকৃষ্টতম সৃষ্টি। ৭. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট; ৮. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরন্ধার রয়েছে (এমন এক) জান্নাত, যার তলদেশ প্রবাহিত থাকবে বর্ণীধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করেরে; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার মালিককে (যথাযথ) ভয় করেছে। স্বরা আব্য ব্যব্দাব্য সালিককে (যথাযথ) ভর করেছে। |
| |
| হয়নি যে, তারা আল্লাহর জন্যেই নিজেদের খীন ও এবাদাত নিবেদিত করে নেবে এবং নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত দান করবে, (কেননা) এটাই হচ্ছে সঠিক জীবন বিধান; ৬. আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আল্লাহ তারালা ও তাঁর রস্লকে) অস্বীকার করেছে, তারা অবশ্যই জাহান্নামের আগুনে থাকবে, সেখানে তারা থাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিক্ষতম সৃষ্টি। ৭. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট; ৮. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরক্ষার রয়েছে (এমন এক) জান্লাত, যার তলদেশে প্রবাহিত থাকবে ঝর্ণাযারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুই হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুই হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার মালিককে (যথাযথ) ভয় করেছে। স্বা আ্য ব্যাহ্ব আ্য ব্যাহ্ব আর্য ব্যাহ্ব আরাহ তার্বাণ করেছে। স্বা আ্য ব্যাহ্ব আ্য ব্যাহ্ব আরা হ করেছে। |
| থবাদাত নিবেদিত করে নেবে এবং নামায প্রতিষ্ঠা করবে, বাকাত দান করবে, (কেননা) এটাই হচ্ছে সঠিক জীবন বিধান; ৬. আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আল্লাহ তারালা ও তাঁর রস্লকে) অধীকার করেছে, তারা অবশ্যই জাহান্নামের আগুনে থাকবে, সেখানে তারা খাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিকৃষ্টতম সৃষ্টি। ৭. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোহকৃষ্ট; ৮. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরন্ধার রয়েছে (এমন এক) জান্নাত, যার তলদেশে প্রবাহিত থাকবে ঝণাধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে; আল্লাহ তারালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার বিদ্ধিত বিদ্ধিত (থ্রমান করেছে) ভ্রমী নিন্দি বিদ্ধিত ওল্প করেছে। স্বরা আহ্য বেশ্বাহা |
| যাকাত দান করবে, (কেননা) এটাই হচ্ছে সঠিক জীবন বিধান; ৬. আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রসূলকে) অস্বীকার করেছে, তারা অবশ্যই জাহান্নামের আগুনে থাকবে, সেখানে তারা থাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিকৃষ্টতম সৃষ্টি। ৭. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট; ৮. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরন্ধার রয়েছে (এমন এক) জান্নাত, যার তলদেশে প্রবাহিত থাকবে ঝণাধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার নিট্টিট্টিট্টিট্টিট্টিট্টিট্টিট্টিট্টিট্ |
| ७. আহলে কেতাব ও মোশরেকদের মাঝে যারা (আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রস্লকে) অধীকার করেছে, তারা অবশ্যই জাহান্নামের আগুনে থাকবে, সেখানে তারা وَالْمُشْرِكِيْنَ فِي نَارِ جَهَنَّر خَلِيْنِيَ فَيْهَا الصّلحب و السّروية السّروية السّروية السّروية السّروية السّروية السّروية السّروية و السّروية و السّروية الس |
| আবশ্যই জাহান্নামের আগুনে থাকবে, সেখানে তারা থাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিকৃষ্টতম সৃষ্টি। ব. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ করেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট; দ. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরস্কার রয়েছে (এমন এক) জান্নাত, যার তলদেশে প্রবাহিত থাকবে ঝর্ণাধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার করিছে (যথাযথ) ভয় করেছে। সুরা আয়ে বেশ্বাহ্ব |
| থাকবে অনন্তকাল, এ লোকগুলোই হচ্ছে নিকৃষ্টতম সৃষ্টি। ৭. অন্যদিকে যারা ঈমান এনেছে এবং ভালো কাজ পরেছে, তারাই হচ্ছে সৃষ্টিকুলের (মধ্যে) সর্বোৎকৃষ্ট; ৮. তাদের জন্যে তাদের মালিকের কাছে পুরস্কার রয়েছে (এমন এক) জান্নাত, যার তলদেশে প্রবাহিত থাকবে ঝলাধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে; আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার দ্বিনী করিকে (যথাযথ) ভয় করেছে। সুরা আয় বেশবাল |
| |
| لا الله عَنْهُ رُوَفُو البَرِيةِ وَ البَرْدِيةِ وَ البَرْدِيةِ وَالبَرْدَةِ وَ البَرْدَةِ وَ البَرْدِيقِ وَ البَرْدَةِ وَالْمِنْ وَ البَرْدَةِ وَ اللْمِنْ وَ اللْمِنْ وَ اللْمِنْ وَ اللْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمَالِيةِ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمِنْ وَالْمَالِيقِ وَالْمِنْ و |
| ব্যাহত থাকবে অক্টা নিট্ট বার তপদেশে প্রবাহত থাকবে করবে; কুর্ন নিট্ট নিট্ট নিট্ট নিট্ট কুর্ন নিট্ট নি |
| ঝর্ণাধারা, এরা সেখানে অনন্তকাল ধরে অবস্থান করবে; مِنْ تَحْتِهَا الْإِنْهُرُ خُلِرِيْنَ فِيهَا اَبَلًا وَضِي आब्राহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আক্রাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার لَلْهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِي اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَلَكَ لِمَنْ خَشِي اللّهُ عَنْهُم وَرَضُوْا عَنْهُ وَلَكَ لِمَنْ خَشِي اللّهُ عَنْهُم وَرَضُوا عَنْهُ وَلَكَ لِمَنْ اللّهُ عَنْهُم وَرَضُوا عَنْهُ وَلَاكَ لِمَنْ فَشِي اللّهُ عَنْهُم وَرَشُوا عَنْهُ وَلَاكَ لِمَنْ وَلَكَ لِمَنْ اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَاكُ وَلَاكُ مِنْ وَلِكُ لِمَنْ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَاكُوا لِمَنْ اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَاكُ لِمَنْ اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَاكُ اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ عَلَى اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَا عَنْهُ وَلَاكُ لِمَنْ اللّهُ عَنْهُ وَلَاكُ وَلَاكُ مِنْ اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَاكُ اللّهُ عَنْهُم وَاللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَا عَنْهُ وَنِي اللّهُ عَنْهُم وَرَسُوا عَنْهُ وَلَا عَنْهُ وَلَاكُوا لِمَنْ اللّهُ عَنْهُ وَلَاللّهُ عَنْهُ وَلَاكُ وَلَاكُ مَنْ وَلَاكُوا مُنْ اللّهُ عَلَيْكُم وَاللّهُ وَلَاللّهُ وَلَالْمُ لَاللّهُ عَنْهُ وَلَا اللّهُ عَنْهُ وَلَا اللّهُ عَنْهُ وَلَا لَا مُنْ اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ وَلَا اللّهُ عَنْهُ وَلِكُ اللّهُ وَلَا اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ وَلَا اللّهُ عَلَيْكُ اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَيْكُوا لِمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْكُم اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَيْكُوا لَا مُنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال |
| আল্লাহ তায়ালা তাদের ওপর সন্তুষ্ট হবেন, তারাও আল্লাহর ওপর সন্তুষ্ট হবে; এটা এ জন্যে যে, সে তার رَبِّدٌ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْدُ الْكَ لَكَ لَكِي خَشِي اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْدُ الْكَ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَفُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَفُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَفُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَفُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمُ وَرَضُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمُ اللّهُ عَنْهُمْ وَرَفُوا عَنْدُ اللّهُ عَنْهُمْ اللّهُ عَنْهُ عَلَيْكُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ عَنْهُ عَلَيْكُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَنْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَنْهُ عَلَيْكُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَنْهُ عَلَالْهُ اللّهُ عَنْهُ عَلَاللّهُ اللّهُ اللّ |
| मानिकरक (यथायथ) ज्य करतरह। وَبَّدًى وَ الْإِلْزَالِ مَلَنِيَّةً عَلَيْهِ अभय त्यनयान وَالْمَالِيَّةُ الزِّلْزَالِ مَلَنِيَّةً |
| সুরা আয বেল্যাল تُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَنَنِيَّةً |
| |
| |
| -9 9.4 |
| भे رُكُوعٌ : ١ : أَيَاسًا: ٨ رُكُوعٌ : ١ ايَاسًا: ٨ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তারালার নামে- |
| تا أَدُولَتِ الْأَرْضُ وِلْزَالَهَا وَ अल्लाक क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क् |
| २. এবং পৃথিবী यथन তার (এবং মানুষের কৃতকর্মের) الْأَرْضُ ٱلْقَالَهَا بِهِ الْأَرْضُ ٱلْقَالَهَا بِهِ الْأَرْضُ الْقَالَهَا بِهِ الْعَلَىٰ عَلَىٰ الْعَلَىٰ الْعَلَىٰ الْعَلَىٰ عَلَىٰ الْعَلَىٰ عَلَىٰ عَلَىٰ الْعَلَىٰ الْعَلَىٰ الْعَلَىٰ عَلَىٰ الْعَلَىٰ عَلَىٰ عَلَىٰ الْعَلَىٰ الْعَلَىٰ عَلَىٰ عَلَىٰ عَلَىٰ الْعَلَىٰ عَلَىٰ عَ |
| ৩. তখন মানুষরা (হতভম্ব হয়ে) বলতে থাকবে, তার এ কী হলো (সে সব কিছু উগরে দিছে কেন)؛ |
| 8. সেদিন সে (তার সব কিছু) খুলে খুলে বর্ণনা করবে, الْهُ الْهُمُارُفُ الْهُ الْمُ الْهُ الْهُ الْمُ الْمُلْعُ الْمُلْعُ الْمُلْعُ الْمُلْعُ اللَّهُ الْمُلْعُ اللَّهُ اللّ |
| ৫. কেননা তোমার রবই তাকে এ (কাজে)-র আদেশ দেবেন; |
| ७. সেদিন মানব দলে দলে ভাগ হয়ে যাবে, যাতে করে اعْرَاتُنَا لَا لِيُرَوْا لَا اللَّهُ اللَّاللَّاللَّا اللَّالَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ |
| তাদেরকে তাদের কর্মকান্ড দেখানো যায়; |
| ৭. অতএব যে ব্যক্তি এক অণু পরিমাণ কোনো ভালো ত্রাহ্র করের (ব্রেছিন) তাও যে ক্রেছার পারে: |
| কাজ করবে (সেদিন) তাও সে দেখতে পাবে; |
| ৯৯ সূরা আয় যেলযাল ১৬৬৯ মন্যিল ৭ |

| | , |
|---|---|
| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আশা ইয়াতাসাআলুন |
| ৮. (ঠিক তেমনি) কোনো মানুষ যদি অণু পরিমাণ খারাপ কাজও করে, তাও সে (সেদিন তার চোখের সামনে) দেখতে পাবে। | ^ وَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَةً ع |
| _ | سُوْرَةُ الْعٰرِيٰسِ مَكِّيَةً |
| স্রা আশ আ'দিয়াত | اٰپَاتُ : ١١ رُكُوعٌ : ١ |
| ম ঞ্চা য় অবতীর্ণ– আয়াত ১১, রুকু ১ | ~ · |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ |
| ১. শপথ (সেই) দ্রুতগামী ঘোড়াগুলোর, যারা (উর্ধ্বশ্বাসে) শব্দ করতে করতে দৌড়ায়, | ا وَالْعٰرِيٰتِ ضَبْعًا لا |
| ২. শপথ সেসব সাহসী ঘোড়ার, যাদের খুরে অণ্নিক্ষুলিংগ বের হয়, | ٢ فَالْهُوْرِيْسِ قَلْمًا ٧ |
| শপথ এমন সব ঘোড়ার যারা প্রত্যুবে ধ্বংসলীলা ছড়ায়, | ٣ فَالْهُفِيْرُ سِ مُبْعًا ٧ |
| ৪. অতপর তারা বিপুল পরিমাণ ধুলা উড়ায়, | م فَاَثَرُنَ بِهِ نَقْعًا ٧ |
| ৫. শত্রু শিবিরে পৌছে তারা তা ছিন্নভিন্ন করে দেয়, | ۵ فَوَسَطَى بِهِ جَهْعًا ٧ |
| ৬. মানুষ সত্যিই তার মালিকের ব্যাপারে বড়োই অকৃতজ্ঞ, | ٣ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكُنُودٌ ٧ |
| ৭. সে (তার) এ (অকৃতজ্ঞ আচরণ)-এর ওপর (নিজেই) সাক্ষী হয়ে থাকে, | ﴾ وَإِنَّهُ عَلَى ذَٰلِكَ لَشَهِيْلٌ ع |
| ৮. অবশ্য সে (মানুষটি) ধন-দৌলতের মোহেই বেশী মত্ত; | ^ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْغَيْرِ لَشَرِيْنٌ ع |
| ৯. সে কি (একথা) জ্ঞানে না, কবরের ভেতর যা কিছু আছে তা যখন উখিত হবে। | ٩ أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ١ |
| ১০. (মানুষের) অন্তরে যা (ছিলো তখন) তা প্রকাশ করে দেয়া হবে, | ١٠ وَهُصِّلَ مَا فِي الصُّاوُرِ ٧ |
| ১১. এদের (সবার) সম্পর্কে তাদের মালিকই সবচেয়ে ভালো জ্ঞানবেন। | ١١ إِنَّ رَبُّهُمْ بِهِمْ يَوْمَنِنِ لَّخَبِيْرٌ ٧ |
| | سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِيَّةً |
| স্রা আশু ক্বারিয়াহ | إِيَاتٍ : ١١ رُكُوعُ : ١ |
| ম ৰা য় অবতীৰ্ণ– আয়াত ১১, ৰুকু ১ | 9 |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسٰ ِ الرَّحِيْرِ |
| ১. এক মহা (বিপর্যয় সৃষ্টিকারী) দুর্যোগ! | ١ اَلْقَارِعَةُ ٧ |
| ২. কি সে মহাদুর্যোগঃ | ٢ مَا الْقَارِعَةُ ع |
| ৩. তুমি জানো সে মহাদুর্যোগটা কিঃ | ٣ وَمَا آَدُرِيكَ مَا الْقَارِعَةُ ١ |
| 8. (এ হচ্ছে এমন একদিন,) যেদিন মানুষগুলো পতংগের মতো (ইতস্তত) বিক্ষিপ্ত হয়ে পড়বে, | م يَوْاً يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْمِ لِا |
| ৫. পাহাড়গুলো রঙ বেরঙের ধুনা তুলার মতো হবে; | ۵ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِمْنِ الْمَنْفُوْشِ ، |
| ৬. অতপর যার ওযনের পাল্লা ভারী হবে, | ٢ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلُتْ مَوَازِيْنَهُ ٧ |
| ১০০ সূরা আল আ'দিয়াত ১০১ সূরা আল ক্রিয়াহ 💎 ৬৪০ | মন্যিল ৭ |
| www.eelm.wee | |



| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ৭. সে (অনন্তকাল ধরে) সুখের জীবন লাভ করবে; | ٤ فَهُوَ فِي عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ٥ |
| ৮. আর যার ওয়নের পাল্লা হালকা হবে, | ٨ وَ أَمًّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنَهُ ٧ |
| ৯. হাবিয়া দোযখই হবে তার (আশ্রয়দায়িনী) মা, | 9 فَأُمَّهُ هَاوِيَةً ، |
| ১০. তুমি কি জানো সে (ভয়াল আযাবের গর্ত)টি কিং | ١٠ وَمَا ٱدُرٰكَ مَا هِيَهُ ٠ |
| তা হচ্ছে প্রজ্বলিত আগুনের এক (বিশাল) কুন্ডলী। | ١١ نَارُّ هَامِيَةً ع |
| | سُوْرَةً التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةً |
| স্রা আত্ তাকাসুর | |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৮, ৰুকু ১ | أَيَاتٌ : ٨ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| অধিক (সম্পদ) লাভের প্রতিযোগিতা তোমাদের গাফেল করে রেখেছে, | ا ٱلْهٰكُدُ التَّكَاثُورُ ٧ |
| ২. এমনি করেই (ধীরে ধীরে) তোমরা কবরের কাছে গিয়ে হাযির হবে; | ٢ هَتَّى زُرْتُرُ الْهَابِرَ ١ |
| ৩. এমনটি কখনো নয়, তোমরা অচিরেই জানতে পারবে, | ٣ كَلَّا سَوْنَ تَعْلَهُونَ ٧ |
| কখনো নয়, তোমরা অতি সত্বই (এর পরিণাম) জানতে পারবে; | ٣ ثُر ۗ كَلَّا سَوْنَ تَعْلَبُونَ ا |
| ৫. (কতো ভালো হতো!) যদি তোমরা সঠিক জ্ঞান কি তা জানতে পারতে; | ٥ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ا |
| ৬. অবশ্যই তোমরা (সেদিন) জাহান্নাম দেখবে, | ٣ لَتَرَوُّنَّ الْجَحِيْرَ ٧ |
| অতপর তোমরা অবশ্যই তোমাদের নিজ্ঞ চোখে তা দেখতে পাবে, | ٤ ثُمرٌّ لَتَرَوُّنُّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ لا |
| ৮. অতপর (আল্লাহ তায়ালার অগণিত) নেয়ামত সম্পর্কে তোমাদের সেদিন জিজ্ঞেস করা হবে। | ٨ ثُر التُسْئَلُ اللهِ عَنِ النَّعِيْرِ ع |
| | سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِيَّةً |
| সূরা আ ল আসর মঞ্চায় অবতীর্ণ– আয়াত ৩, রুকু ১ | |
| | إَيَاتُ : ٣ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِسْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. সময়ের শপথ, | ١ وَالْعَصْرِ ٧ |
| ২. মানুষ অবশ্যই ক্ষতির মধ্যে (নিমজ্জিত) আছে, | ٢ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْدٍ ٧ |
| ৩. সে লোকগুলো বাদে, যারা (আল্লাহ তারালার ওপর) | ٣ إِلَّا الَّذِيْنَ أَمَنُوا وَعَبِلُوا الصَّلِحُتِ |
| जमान वातर्श, रनक काल करत्रर्श, वाक जनत्ररक (रनक | |
| কাজের) তাগিদ দিয়েছে এবং একে অপরকে ধৈর্য ধারণ | وَتَوَامَوْا بِالْحَقِّ لَا وَتَوَامَوْا بِالصَّبْرِ ع |
| করার উপদেশ দিয়েছে। | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|---|---|
| | سُورَةً الْهُهَزَة مَكَّيَّةً |
| স্রা আল হুমাযাহ | , |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৯, ৰুকু ১ | اٰيَاتٌ : ٩ رُكُوْعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِسْرِ اللَّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| দুর্ভোগ রয়েছে এমন প্রত্যেক ব্যক্তির জন্যে, যে (সামনে পেছনে মানুষদের) নিলা করে, | ١ وَيْلٌ لِّكُلِّ مُّهَزَةٍ لَّهَزَةٍ لَّهَزَةٍ " |
| ২. যে (কাঁড়ি কাঁড়ি) অর্থ জমা করে এবং (যথাযথভাবে) তা গুনে গুনে রাখে, | ٢ الَّذِي ْ جَبَعَ مَالًا وَّعَلَّدَةً ٧ |
| ৩. সে মনে করে, (তার এ) অর্থ তাকে (এ দুনিয়ায়) স্থায়ী করে রাখবে; | ٣ يَحْسَبُ أَنْ مَا لَهٌ أَغْلَلَهُ ج |
| বরং নির্ঘাত অল্পদিনের মধ্যেই সে চূর্ণবিচূর্ণকারী আগুনে নিক্ষিপ্ত হবে, | ٣ كَلَّا لَيُنْبَنَنَّ فِي الْحُطَهَةِ رصه |
| ৫. তুমি কি জানো, বিচূর্ণকারী আগুন কেমনঃ | ٥ وَمَا ٱدْرِيكَ مَا الْحُطَيَةُ ء |
| ৬. (এ হচ্ছে সম্পদলোভীদের জন্যে) আল্লাহ তায়ালার প্রজ্বলিত এক আগুন, | ٣ نَارُ اللَّهِ الْبُوْتَنَّةُ ٧ |
| থ. যা (এতো মারাত্মক যে তার দহন) মানুষের হৃদয়ের ওপর পর্যন্ত পৌছে যাবে; | 4 الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْإَفْئِنَةِ ا |
| ৮. (গর্ত বন্ধ করে) তাদের ওপর ঢাকনা দিয়ে রাখা হবে, | ٨ إِنَّهَا عَلَيْهِرْ مُّؤْصَلَةٌ ٧ |
| ৯. উঁচু উঁচু থামের মধ্যে (তা গেড়ে) রাখা হবে। | ٩ فِي عَبَلٍ مُّهَادَةً ع |
| স্রা আল ফীল | سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةً |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৫, ৰু কু ১ | أَيَابِيُّ : ٥ رُكُوْعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسُ الرَّحِيْرِ |
| ১. তুমি কি দেখোনি তোমার মালিক (কা'বা ধ্বংসের দ্বন্যে আগত) হাতিওয়ালাদের সাথে কি ব্যবহার করেছেনঃ | ا ٱلر تُوكَيْفَ فَعَلَ وَبُّكَ بِأَصْحُبِ الْفِيلِ الْمِيلِ |
| ২. তিনি কি তাদের যাবতীয় ষড়যন্ত্র নস্যাৎ করে দেননিঃ | ٢ أَلَمْ يَجْعَلُ كَيْنَهُمْ فِي تَضْلِيْلٍ ٧ |
| এবং তিনি তাদের ওপর (ঝাঁকে ঝাঁকে) আবাবীল পাখী পাঠিয়েছেন, | ٣ وَّأَرْسَلَ عَلَيْمِرْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ٧ |
| এ পাখীগুলো তাদের ওপর পাথরের টুকরো নিক্ষেপ করছিলো ? | ٣ تَرْمِيْهِرْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ١٧٠ |
| ৫. (অতৃপর) তিনি তাদের জম্ভু জানোয়ারের চর্বিত (ঘাস পাতা)-এর মতো করে দিলেন। | ۵ فَجَعَلَهُر كَعَصْفٍ مَّاكُولٍ ع |
| | سُورَةُ تُويْشِ مَكِيةً |
| সূরা কোরায়৺ ম ন্ধা য় অবতীৰ্ণ− আয়াত ৪, রুকু ১ | أَيَاتُ : ٣ رُكُوعَ : ١ |
| মঞ্চার অবভাগ– আরাত ৪, রুকু ১ রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. (কা'বার পাহারাদার) কোরায়শ বংশের প্রতিরক্ষার জন্যে, | ا لِإِيْلُفِ قُرَيْشٍ ، |
| | |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| ২. তাদের প্রতিরক্ষা শীত ও গরমকালের সফরের জন্যে, | ٢ الْفِهِرُ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ع |
| ৩. তাদের এ ঘরের মালিকেরই এবাদাত করা উচিত, | ٣ فَلْيَعْبُنُ وَ ا رَبَّ مٰنَ ا الْبَيْسِ ٧ |
| 8. যিনি ক্ষুধায় তাদের খাবার সরবরাহ করেছেন এবং | ٣ الَّذِي ٱطْعَيْمُ مِنْ جُوعَ لَا وَأَمْنَهُمْ مِنْ |
| তিনি তাদের ভয় ভীতি থেকে নিরাপদ করেছেন। | A. |
| | لمُون ع |
| _ | سُوْرَةُ الْهَاعُوْنِ مَكِيَّةً |
| স্রা আল মাউন | |
| মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৭, রুকু ১ | اٰیَاتٌ : ٤ رُکُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| তুমি কি সে ব্যক্তির কথা (কখনো) ভেবে দেখেছো, যে শেষ বিচারের দিনকে অস্বীকার করে, | ا اَرَءَيْتَ الَّذِي يُكَنِّبُ بِالرِّيْنِ ا |
| ২. এ তো হচ্ছে সে ব্যক্তি, যে (নিরীহ) এতীমকে গলাধাক্কা দেয়, | ٣ فَنَٰ لِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيْرَ ٢ |
| ৩. মেসকীনদের খাবার দিতে কখনো সে (অন্যদের) উৎসাহ দেয় না; | ٣ وَلَا يَحُضُّ عَلَى طَعَا ۗ الْمِسْكِيْنِ ، |
| 8. (মর্মান্তিক) দুর্ভোগ রয়েছে সেসব (মোনাফেক) নামাযীর জন্যে, | م فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّيْنَ لا |
| ৫. যারা নিজেদের নামায থেকে উদাসীন থাকে, | ٥ الَّذِينَ مُرْعَنْ صَلَاتِهِرْ سَاهُوْنَ ٧ |
| ৬. তারা কাজকর্মের বেলায় তথু প্রদর্শনী করে, | ٦ الَّذِينَ مُرْ يُرَاءُونَ ٧ |
| ৭. এবং ছোটোখাটো জ্বিনিস পর্যন্ত (যারা অন্যদের) দিতে বারণ করে। | ﴾ وَيَهْنَعُوْنَ الْهَاعُوْنَ ع |
| 1 | سُوْرَةُ ا لَكَوْتُو مَكِيَّةً |
| স্রা আশ কাওসার | |
| মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৩, রুকু ১ | أيات : ٣ رُكُوع : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشرِ اللّهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| (হে নবী,) আমি অবশ্যই তোমাকে (নেয়ামতে পরিপূর্ণ) কাওসার দান করেছি; | ا إِنَّا ٱعْطَيْنٰكَ الْكَوْتُرَ ، |
| ২. অতএব তোমার মালিককে শ্বরণ করার জন্যে তুমি নামায পড়ো এবং (গাঁরই উদেশে) তুমি কোরবানী করো; | ٢ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَ انْحَرْ ، |
| ৩. অবশ্যই (যে) ভোমার নিন্দুক সেই হবে শেকড়-কাটা (অসহায়)। | ٣ إِنَّ شَانِئَكَ مُو الْإَبْتَرُع |
| | سُوْرَةُ الْكَفِرُونَ مَكِيَّةً |
| স্রা আব্দ কাথেক্রন মক্কায় অবতীর্গ– আয়াত ৬, রুকু ১ | أيَاسَ : ٦ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | يِشرِ اللهِ الرَّهْنِ الرَّهْيْرِ |
| ১. (হে নবী,) তুমি বলে দাও, হে কাফেররা, | ا تُلْ يَأَيَّهَا الْكُفِرُونَ ٧ |
| সূরা ১০৭ ১০৮ ১০৯ | মন্যিল ৭ |

| কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আমা ইয়াতাসাআলুন |
|--|--|
| আমি (তাদের) এবাদাত করি না যাদের এবাদাত তোমরা করো, | ٢ ٧ آ أَعْبُكُ مَا تَعْبُكُونَ ٧ |
| ৩. না তোমরা (তাঁর) এবাদাত করো যার এবাদাত আমি করি, | ٣ وَكَآ ٱنْتُر عٰبِدُونَ مَاۤ ٱعْبُدُج |
| এবং আমি (কখনোই তাদের) এবাদাত করবো না যাদের তোমরা এবাদাত করো, | ٣ وَ٧ ۖ أَنَا عَابِلٌ مَّا عَبَلْ تُتَّرُ ٧ |
| ৫. না ভোমরা কখনো (তাঁর) এবাদাত করবে যাঁর এবাদাত আমি করি; | ٥ وَكَ آ ٱلْتُرْعٰبِ كُونَ مَا آعُبُنُ ا |
| ৬. (অতএব) তোমাদের পথ তোমাদের জন্যে আর আমার পথ আমার জন্যে। | ٢ لَكُرْ دِيْنَكُرْ وَلِيَ دِيْنِع |
| | سُوْرَةُ النَّصْرِ مَنَنِيَّةً |
| সূরা আন্নাসর মদীনায় অবতীর্ণ– আয়াত ৩, রুকু ১ | أيَاتٌ : ٣ رُكُوعٌ : ١ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشْرِ اللهِ الرَّحْشِ الرَّحِيْرِ |
| ১. যখন আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে সাহায্য ও বিজয় আসবে, | ا إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ لا |
| ২. তখন মানুষদের তুমি দেখবে, তারা দলে দলে আল্লাহর ধীনে দাখিল হচ্ছে, | |
| অতপর তুমি তোমার মালিকের প্রশংসা করো এবং তাঁর কাছেই (গুনাহ খাতার জন্যে) ক্রমা প্রার্থনা করো; অবশ্যই তিনি তাওবা কবুলকারী (পরম ক্রমাশীল)। | اَفُوَاجًا لا اللهِ عَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَفْفِرْهُ مَ اِللَّهُ كَانَ اللَّهُ كَانَ تَوَّابًا ع |
| সূ রা লাহাব ম ক্কা য় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৫, রুকু ১ | سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَةً إِيَاسِيَّ : ۵ رُكُوْعً : ۱ |
| রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشْرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْرِ |
| (ইসলাম বিরোধিতার কারণে) আবু লাহাবের (দুনিয়া আখেরাতে) দুটো হাতই ধ্বংস হয়ে যাক ধ্বংস হয়ে যাক সে নিজেও; | ا تَبُّّتُ يَكَأَ أَبِي لَهَبٍ وَّتَبُّ |
| ২. তার ধন সম্পদ ও আয় উপার্জন তার কোনো কাজে আসবে না; | ٢ مَا آغَنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ط |
| ৩. বরং (তা জ্বলন্ত অগ্নিকু ন্ডে নিক্ষিপ্ত হবে,) সে অচিরেই আগুনের লেলিহান শিখায় প্রবেশ করবে, | ٣ سَيَصْلَى نَارًا ذَاسَ لَمَبٍ عمد |
| সাথে থাকবে) জ্বালানি কাঠের বোঝা বহনকারী তার জীও; | ٣ وَ امْرَ أَتُهُ ﴿ حَبَّالَةَ الْعَطَبِ ع |
| ৫. (অবস্থা দেখে মনে হবে) তার গলায় যেন খেজুর পাতার পাকানো শক্ত কোনো রশি জড়িয়ে আছে। | ۵ فِي هِيْرِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَرٍ ع |
| ১১০ সূরা আন্ নাসর ১১১ সূরা লাহাব 🗸 ৬৪৪ | भन्यि न १ |

| | কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ | পারা ৩০ আম্মা ইয়াতাসাআলুন |
|-------------|---|--|
| | | |
| | সূরা আল এখলাস | سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ مَكِّيَّةً |
| | মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৪, রুকু ১ | أيَاتُ : ٣ رُكُوعٌ : ١ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে– | بِشرِ اللهِ الرَّحْسِ الرَّحِيْرِ |
| | ১. (হে মোহাম্মদ,) তুমি বলো, তিনিই আল্লাহ, তিনি এক একক, | ا قُلْ هُوَ اللَّهُ أَعَلَّ ع |
| | ২. তিনি কারোই মুখাপেক্ষী নন, | ٢ اَللَّهُ الصَّهَلُ ع |
| \wedge | ৩. তাঁর থেকে কেউ জন্ম নেয়নি, আর তিনিও কারো থেকে জন্ম গ্রহণ করেননি, | ٣ لَمْ يَلِنْ ٥ وَلَمْ يُولَنْ ٧ |
| | আর তাঁর সমতৃল্য ছিতীয় কেউ-ই নেই। | م وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًّا أَحَلُّ ع |
| | সূরা আল ফালাকু | سُوْرَةُ الْغَلَقِ مَكِّيَّةً |
| | মক্কায় অবতীৰ্ণ– আয়াত ৫, ৰুকু ১ | إِيَاتِيَّ : ٥ رُكُوعٌ : ١ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِسْرِ اللهِ الرَّمْسِ الرَّحِيْرِ |
| | ১. (হে নবী,) তুমি বলো, আমি উচ্জ্বল প্রভাতের মালিকের কাছে আশ্রয় চাই, | ا قُلْ أَعُوْدُ بِرَبِّ الْفَلَقِ لا |
| | ২. (আশ্রয় চাই) তাঁর সৃষ্টি করা প্রেতিটি জিনিসের) অনিষ্ট থেকে, | ٢ مِنْ شُرِّ مَا خَلَقَ لا |
| | ৩. আমি আশ্রয় চাই রাতের (অন্ধনারে সংঘটিড) অনিষ্ট থেকে, (বিশেষ করে) যখন রাত তার অন্ধকার বিছিয়ে দেয়, | ٣ وَمِنْ هُرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ٧ |
| | ৪. (আমি আশ্রয় চাই) গিরায় ড়ৢँক দিয়ে যাদুটোনাকারিণীদের অনিষ্ট খেকে, | م وَمِنْ شَرِّ النَّقْتُ فِي الْعُقَلِ لا |
| | ৫. হিংসুক ব্যক্তির (সব ধরনের হিংসার) অনিষ্ট খেকেও (আমি তোমার আশ্রয় চাই) যখন সে হিংসা করে। | ٥ وَمِنْ شَرِّ حَاسِ إِذَا حَسَنَ ع |
| | সূরা আন্ নাস | سُورَةُ النَّاسِ مَكِيلًا |
| | মক্কায় অবতীর্ণ– আয়াত ৬, ক্লকু ১ | أَيانَ : ٦ رُكُوعُ : ١ |
| | রহমান রহীম আল্লাহ তায়ালার নামে- | بِشرِ اللهِ الرَّحْسُ الرَّحِيْرِ |
| | (হে নবী,) তৃমি বলো, আমি আশ্রয় চাই মানুষের মালিকের কাছে, | ا قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ لا |
| | ২. (আমি আন্রয় চাই) মানুষের (আসল) বাদশাহের কাছে, | ٢ مَلِكِ النَّاسِ ٧ |
| | ৩. (আমি আশ্র চাই) মানুষের (একমাত্র) মাবুদের কাছে, | ٣ اِلْهِ النَّاسِ ٧ |
| | ৪. (আমি আশ্রয় চাই) কুময়্বণাদানকারীর অনিষ্ট থেকে, যে (প্ররোচনা দিয়ে) গা ঢাকা দেয়, | ٣ مِنْ شُرِّ الْوَسُواسِ لَا الْخَنَّاسِ علا |
| \triangle | ৫. যে মানুষের অন্তরে কুমন্ত্রণা দেয়, | ۵ النَّذِي يُوسُوسُ فِي مُدُورِ النَّاسِ ٧ |
| | ৬. জ্বিনদের মধ্য থেকে (হোক বা) মানুষদের মধ্য থেকে হোক (তাদের অনিষ্ট থেকে আমি আল্লাহ তারালার কাছে আশ্রয় চাই)। | ٦ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ع |
| | স্রা ১১২ ১১৩ ১১৪ | মন্যিল ৭ |

বিসমিল্লাহির রাহমানির রাহীম

اللهر وَحْشَتِی فِی انس وَحْشَتِی فِی قَبْرِی ، اللهر وَحْشَتِی فِی قَبْرِی ، اللهر الهر ارْحَهْنِی بِالْقُرْانِ الْعَظِیرِ وَاجْعَلْهُ لِی آمامًا وَّنُورًا وَّهُلًی وَرَحْهَةً ، اللهر وَکْرنِی مِنْهُ مَا نَسِیت وَعَلِّهْنِی مِنْهُ مَا جَهِلْت وَارْزُقْنِی وَعَلِّهْنِی مِنْهُ مَا جَهِلْت وَارْزُقْنِی تِلَاوِتَهُ اناء الیل وَاناء النّهارِ وَاجْعَلْهُ لِی حُجَّةً یّا رَبِ وَاجْعَلْهُ لِی حُجَّةً یّا رَبِ الْعُلَمِینَ ،

হে আল্লাহ! আমার কবরে আমার একাকিত্বের ভয়াবহতার সময় তুমি আমাকে (কোরআনের আলো দিয়ে) প্রশান্তি দান করো। হে আল্লাহ, কোরআন দিয়ে তুমি আমার ওপর দয়া করো, কোরআনকে তুমি আমার জন্যে ইমাম, নূর, পথ প্রদর্শক ও রহমত বানিয়ে দিয়ো। হে আল্লাহ! আমি এর যা কিছু ভূলে গেছি তা তুমি আমায় মনে করিয়ে দিয়ো, যা কিছু আমি— আমার জ্ঞান থেকে হারিয়ে ফেলেছি তা তুমি আমায় দিয়ো। আমাকে দিবানিশি এর তেলাওতের তাওফীক দিয়ো। হে সৃষ্টিকূলের মালিক! তুমি এই কেতাবকে আমার জন্যে চূড়ান্ত দলিল বানিয়ে দিয়ো। আমীন!

কোরআন শরীফ সহজ সরল বাংলা অনুবাদ

সূরা 'আল ক্বামার' মক্কায় অবতীর্ণ কোরআনের একটি গুরুত্বপূর্ণ সূরা। আল্লাহ তায়ালা এই সূরায় একটি বিশেষ আয়াত চার বার উল্লেখ করেছেন। সে বিশেষ আয়াতটির অর্থ হচ্ছে, 'অবশ্যই আমি শিক্ষা গ্রহণ করার জন্যে কোরআনকে সহজ করে দিয়েছি, অতএব আছে কি তোমাদের মাঝে কেউ এর থেকে শিক্ষা গ্রহণ করার?'

বিশ্বব্যাপী লক্ষ লক্ষ কোরআন পাঠকের মতো আমার মনকেও এক সময় এই আয়াতটি দারুণভাবে নাড়া দিয়েছে। বিশেষ করে যখন দেখি আল্লাহ তায়ালার নাযিল করা আলোর এই একমাত্র উৎসটির ভাষান্তর করতে গিয়ে মানুষরা একে সহজ্ঞ করার বদলে দিন দিন কঠিন ও দুর্বোধ্য করে ফেলছে। যে 'আলো' একজন পথিককে আঁধারে পথ দেখাবে তা যদি নিজেই স্বচ্ছ না হয় তাহলে 'আলো' সামনে থাকা সত্ত্বেও পথিক তো আঁধারেই হোঁচট খেতে থাকবে।

কোরআন লওহে মাহফুযের অধিপতি আল্লাহ তায়ালার কালাম, এর ভাষাশৈলী, এর শিল্প সৌন্দর্য সবই আল্লাহ তায়ালার একান্ত নিজস্ব। এ কারণেই বিশ্বের সব কোরআন গবেষকই মনে করেন, এই মহান গ্রন্থের যথার্থ ভাষান্তর কিংবা এর পূর্ণাংগ অনুবাদ কোনোটাই মানব সন্তানের পক্ষে সম্ভব নয়। যাঁর কাছে এই বিশ্বয়কর গ্রন্থটি নাযিল করা হয়েছিলো তাঁকে আল্লাহ তায়ালা স্বয়ং এর অন্তর্নিহিত বক্তব্য বুঝিয়ে দিয়েছিলেন বলেই তাঁর পক্ষে এই কিতাবের মর্মোদ্ধার করা সম্ভবপর হয়েছিলো। এমনকি কোরআন যাদের সর্বপ্রথম সম্বোধন করেছিলো রসূল (স.)-এর সে সাহাবীরাও কোরআনের কোনো বক্তব্য অনুধাবনের ব্যাপারে মতামত দেয়ার আগে রসূল (স.)-কে জিজ্ঞাসা করে নিতেন। যদিও তারা নিজেরা সে ভাষায়ই কথা বলতেন, যে ভাষায় কোরআন নাযিল হয়েছিলো। সম্ভবত এ কারণেই সাহাবায়ে কেরামদের বিদায়ের বহুকাল পরও ভিন্ন ভাষাভাষী কোরআনের আলেমরা কোরআনের অনুবাদ কাজে হাত দিতে সাহস করেননি, কিন্তু দিনে দিনে কোরআনের আলো যখন আরব উপদীপ ছাড়িয়ে অনারব জনপদে ছড়িয়ে পড়লো, তখন কোরআনের প্রয়োজনে তথা ভিন্ন ভাষাভাষীদের সামনে কোরআনের বক্তব্য তুলে ধরার জন্যে স্থানীয় জনগোষ্ঠীর ভাষাকে মাধ্যম হিসেবে ব্যবহার করা ছাড়া তাদের কোনো উপায় থাকলো না। এমনি করেই অসংখ্য আদম সন্তানের অগণিত ভাষায় কোরআন অনুবাদের যে স্রোতধারা ভক্ত হলো, আমাদের মায়ের ভাষা বাংলায়ও একদিন এর প্রভাব পড়লো। কোরআনের পণ্ডিত ব্যক্তিরা একে একে এগিয়ে এলেন নিজেদের স্ব-স্ব জ্ঞান গরিমার নির্যাস দিয়ে এই অনুবাদ শিল্পকে সাজিয়ে দিতে।

একথা স্বীকার করতেই হবে যে, উপমহাদেশের মুসলিম জনগোষ্ঠীর শত শত বছরের সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যের ভাষা হিসেবে আরবীর পরেই ছিলো ফার্সী ও উর্দূর স্থান। স্বাভাবিকভাবেই কোরআন অনুবাদের কাজও তাই এ দুটো ভাষায়ই বেশী হয়েছে। সুলতানী আমলের শুরু থেকে মুসলমান শাসক নবাবরা যখন সংস্কৃত ভাষার সীমিত গণ্ডি থেকে বাংলা ভাষাকে বৃহত্তর জনগোষ্ঠীর পরিমন্ডলে নিয়ে এলেন, তখন থেকেই ধীরে ধীরে এই ভৃখণ্ডে কোরআনের বাংলা অনুবাদের প্রয়োজনও অনুভূত হতে লাগলো।

৪৭ ও ৭১ সালের পরস্পর দুটো পরিবর্তনের ফলে এ ভূখণ্ডের মুসলমানরা নিজেদের ভাষায় কোরআনকে বুঝার একটা ব্যাপক পরিসরে পা রাখার সুযোগ পেলো। অল্প কিছুদিনের মাঝেই কোরআনের বেশ কয়েকটি অনুবাদ বেরিয়ে গেলো। নিতান্ত সীমিত পরিসরে হলেও আমাদের পশ্চিম বাংলার মুসলমানরাও এ সময়ের মধ্যে কোরআনের কয়েকটি অনুবাদ প্রকাশ করেছেন। অবশ্য কোনো কোনো ক্ষেত্রে অনুবাদক ও প্রকাশকরা তাদের অনুবাদকর্মকে 'কোরআনের বাংলা অনুবাদ' না বলে 'বাংলা কোরআন শরীফ' বলে পেশ করার প্রয়াস চালিয়েছেন। আমাদের এই বাংলায়ও কিন্তু ইদানীং কোরআনের বাংলা অনুবাদ প্রস্থের গায়ে 'বাংলা কোরআন শরীফ' লেখার একটা অসুস্থ মানসিকতা লক্ষ্য করা যালেছ। সমাজের দু'একজনের এই অজ্ঞতাপ্রসৃত প্রয়াস সন্থেও

মুসলমানদের বৃহত্তর জনগোষ্ঠীর লোকেরা এগুলোকে কোরআনের বাংলা অনুবাদ বলেই গ্রহণ করেছে। এই বিষয়টিকে বাদ দিলে আমাদের দেশে অনুদিত ও প্রকাশিত কোরআনের প্রতিটি গ্রন্থই নানা বৈশিষ্ট্যে বৈশিষ্ট্যমণ্ডিত। আল্লাহ তায়ালার কিতাবের মর্মকথা মানুষের কাছে পৌছানোর কাজে যে যতোটুকু অবদান রেখেছেন আল্লাহ তায়ালা তাদের স্বাইকে সে পরিমাণ 'জাযায়ে খায়ের' দান করুন।

কোরআন আল্লাহ তায়ালার পক্ষ থেকে তাঁর রসূল (স.)-এর কাছে পাঠানো তাঁর বাণীসমূহের এক অপূর্ব সমাহার। সূদীর্ঘ ২৩ বছর ধরে বিপ্লবের সিপাহসালারকে তাঁর মালিক যে সব দিকনির্দেশনা দিয়েছেন তার অধিকাংশই বলতে গেলে পারিপার্শ্বিকতার বিশ্লেষণ— তথা এক একটি ঐতিহাসিক পটভূমির সাথে জড়িত। এ কারণেই কোরআনের তাফসীরকাররা কোরআন অধ্যয়নের জন্যে সমসাময়িক পরিস্থিতি জানার ওপর এতাে বেশী জাের দেন।

তারপরও কোরআনের মূল অনুবাদ কিন্তু কোরআন পাঠকের কাছে জটিলই থেকে যায়। অনেক সময় মূল কোরআনের আয়াতের হুবহু বাংলা অনুবাদ করলে কোরআনের বক্তব্য মোটেই পরিস্কার হয় না। সে ক্ষেত্রে কোরআনের একজন নিষ্ঠাবান অনুবাদককে অনুবাদের সাথে ভেতরের উহ্য কথাটি জুড়ে দিয়ে বক্তব্যের ধারাবাহিকতা মিলিয়ে দিতে হয়। আরবী ভাষার ব্যাকরণ ও বাক্য গঠন প্রক্রিয়ায় এগুলোর প্রচলন থাকলেও বাংলাভাষায় এ বিষয়গুলো কোরআনের পাঠককে মাঝে মাঝে দ্বিধাগ্রস্ত করে ফেলে। তারা হেদায়াতের এই মহান গ্রন্থে এসব অসংলগ্নতা দেখে বর্ণনাধারার 'মিসিং লিংক' খৌজার জন্যে ব্যস্ত হয়ে পড়েন। এ কারণেই সচেতন অনুবাদকরা এ সব ক্ষেত্রে নিজের কথার জন্যে 'ব্রাকেট' কিংবা ক্ষেত্র বিশেষে ভিন্ন ধরনের টাইপ ব্যবহার করে সেই মিসিং লিংকটাকে মিলিয়ে দেন। আমাদের মধ্যে যারা 'তাফসীরে জালালাইন' পড়েছেন তারা সেখানে এ বিষয়টি বিশেষভাবে লক্ষ্য করে থাকবেন। এই তাফসীরে বিজ্ঞ তাফসীরকাররা তাদের নিজেদের কথাকে 'আন্তার লাইন' করে আল্লাহ তায়ালার কথা থেকে আলাদা করে নিয়েছেন। কোরআনে এ ধরনের বহু আয়াত রয়েছে, এখানে উদাহরণ হিসেবে সূরা 'আল মায়েদা' ৬, সূরা ইউসুফ ১৯, সূরা 'আর রাদ' ৩১. সূরা 'আঝ ঝুমার' ২২. সূরা 'কাফ' ৩ এই আয়াতগুলোর কথা উল্লেখ করা যেতে পারে। এ আয়াতগুলোর অনুবাদের প্রতি তাকালে একজন পাঠক নিজেই এ বিষয়টি বুঝতে পারবেন, কি ধরনের ধারাবাহিকতার কথা আমি এখানে বলতে চেয়েছি। আমাদের এই গ্রন্থে অনুবাদের সে ধারাবাহিকতা বজায় রাখার জন্যে আমরা আল্লাহ তায়ালার কথা থেকে নিজেদের কথা আলাদা করার জন্যে এ ধরনের () 'ব্রাকেট' ব্যবহার করেছি। কোরআনের মালিককে হাযির নাযির জেনে আমরা যেমন চেষ্টা করেছি ব্রাকেটের ভেতর আল্লাহ তায়ালার কথা না ঢুকাতে-তেমনি চেষ্টা করেছি ব্রাকেটের বাইরে অনুবাদকের কথা না ছড়াতে। তারপরও যদি কোথাও তেমন কিছু ভূল ক্রটি থেকে যায় তা আগামীতে শুরু করে নেয়ার কঠিন প্রতিজ্ঞার পাশাপাশি আমার মালিককে বিনীত চিত্তে বলবো, হে আল্লাহ, তুমি আমার ভেতর বাইর সবটার খবরই রাখো, আমার নিষ্ঠার প্রতি দয়া দেখিয়ে তুমি আমার সীমাবদ্ধতা ক্ষমা করে দিয়ো।

এই গ্রন্থে ব্যবহৃত কোরআনের এই নতুন ধারার অনুবাদটি একান্ত আমার নিজস্ব চেষ্টা সাধনার ফল। কিশোর বয়স থেকে যখন আমি কোরআনের সাথে পথচলা শুরু করেছি তখন থেকেই আমি কোরআনের এমনি একটা সহজ অনুবাদের কথা ভাবতাম। আমি প্রায়ই চিন্তা করতাম, আল্লাহ তায়ালা নিজে যেখানে বলেছেন আমি কোরআনকে সহজ করে নাযিল করেছি সেখানে আমরা কেন কোরআনের অনুবাদটা সহজ সরল করার বদলে দিনে দিনে কঠিন থেকে কঠিনতর করে তুলছি। বড়ো বড়ো পণ্ডিতদের অনুবাদ দেখে অনেকের মতো আমিও বহুবার নিরাশ হয়েছি, মনে হয়েছে আরবী কোরআনের চাইতেও বুজি এর বাংলা অনুবাদ বেশী কঠিন। এমনটি বহু ক্ষেত্রেই ঘটেছে যে, অনুদিত অংশটি বার বার পড়েও একজন পাঠক বুঝতে পারেননি যে, আল্লাহ তায়ালা এই আয়াতে আসলেই কী বলতে চেয়েছেন। অথচ আমরা সবাই জানি, আল্লাহ তায়ালা এই কোরআনকে সহজ করে নাযিল করেছেন।

আমার মালিক আল্লাহ তায়ালার হাজার শোকর তিনি আমার মনের কোনে লালিত দীর্ঘদিনের সে স্বপু বাস্তবায়িত করার একটা সুন্দর সুযোগ এনে দিলেন। বিশ্ববরেণ্য তাফসীর 'ফী যিলালিল কোরআন' এর যখন বাংলা অনুবাদ প্রকাশনার কাজ আমি শুরু করলাম, তখন যেন আমি কোরআনকে আমার নিজের করে বুঝবার ও বুঝাবার একটা সুযোগ পেয়ে গেলাম। তাফসীর 'ফী যিলালিল কোরআন'-এ ব্যবহারের জন্যে আমাদের তখন একটি মানসম্পন্ন বাংলা তরজমার প্রয়োজন দেখা দিলো। বহুদিন পর কোরআন যেন নিজেই আমাকে হাতছানি দিয়ে নিজের দিকে ডাক দিলো। আমিও মনে হয় এমনি একটা ডাকের জন্যে দীর্ঘ দিন থেকে অধীর আগ্রহে অপেক্ষা করছিলাম।

সাইয়েদ কুতৃব শহীদের অমর শৃতি, আমাদের কালের শ্রেষ্ঠ তাফসীর 'ফী যিলালিল কোরআন'—এর বাংলা অনুবাদ প্রকল্প আমি যখন হাতে নেই তখন আমি ভাবতেও পারিনি, কোরআনের কথা বলতে গিয়ে যিনি শাহাদাতের মর্যাদা লাভ করেছেন তাঁর মহান তাফসীর গ্রন্থের পাতায় আমার মতো একজন নগণ্য বান্দার এই অনুবাদকর্মটিও চিরদিনের জন্যে স্থান পেয়ে যাবে। মালিকের প্রতি গভীর কৃতজ্ঞতায় আজ আমার দেহমন আপ্রুত হয়ে ওঠে। এটা আমার প্রতি আমার মালিকের একান্ত দয়া যে, তিনি একজন মহান শহীদের মহান তাফসীরের হাজার হাজার পৃষ্ঠার বিশাল পরিমভলে আমার জন্যেও একটু জায়গা করে দিলেন! ১৯৯৫ সালে এই তাফসীরের আমপারা অনুবাদটি যখন প্রথম প্রকাশিত হয়, তখন থেকে এই তাফসীরকে যারা ভালোবেসেছেন তারা এই অধমের কোরআনের অনুবাদকেও তাদের ভালোবাসা দিয়েছেন। আমি একান্ত আগ্রহের সাথেই এই নতুন ধারার অনুবাদটির ব্যাপারে দেশের ওলামায়ে কেরাম ও সুধী বৃদ্ধিজীবীদের প্রতিক্রিয়া লক্ষ্য করছিলাম। আলহামদু লিল্লাহ! শহীদী নযরানা হিসেবে এই তাফসীরকে যেমন এখানকার সর্বস্তরের মুসলমানেরা ভালোবেসেছেন, তেমনি এই তাফসীরে ব্যবহৃত অধমের কোরআনের এই অনুবাদকেও তারা ভালোবাসা দিয়েছেন। অনেকেই বলেছেন, তারা এই প্রথম কোরআনের এমন একটি অনুবাদ হাতে পেয়েছেন যা কোনোরকম ব্যাখ্যা বা টীকার আশ্রয় ছাড়াই তাদের কোরআনের মূল বক্তব্যের কাছাকাছি নিয়ে যায়।

আল্লাহ তায়ালার রহমতে এই বিশাল তাফসীরের প্রকাশনা সমাপ্ত হওয়ার সাথে সাথে আমার কোরআনের অনুবাদের কাজটিও শেষ হয়ে গেছে। দেশে-বিদেশে তাফসীর 'ফী যিলালিল কোরআন'—এর অসংখ্য পাঠক শুভানুধ্যায়ীরা আমাকে অনুরোধ করেছেন আমি যেন কোরআনের এই অনুবাদকে আলাদা প্রকাশ করি। তাদের মতামতের প্রতি শ্রদ্ধা জানাতে গিয়েই আমরা 'কোরআন শরীফ: সহজ সরল বাংলা অনুবাদ' গ্রন্থটি প্রকাশ করেছি। আল্লাহ তায়ালার সীমাহীন করুণায় অল্প কিছুদিনের মধ্যেই গ্রন্থটি দেশে কোরআন অনুবাদ সাহিত্যে বিশেষ মর্যাদার আসন লাভ করেছে। কেউ কেউ আবার কোরআনের শুধু অনুবাদ অংশটিকে আলাদা পুস্তকাকারে প্রকাশেরও অনুরোধ জানিয়েছেন। দেশের শীর্ষস্থানীয় আলেমদের সাথে আমি বিষয়টি নিয়ে কথা বলেছি। আমরা কোরআনের 'মতন' ছাড়া কোনো অনুবাদ গ্রন্থের প্রকাশনার নীতিগত বিরোধী হওয়া সত্ত্বেও আমাদের যুগান্তকারী প্রকাশনা ও বিশ্বের সর্বপ্রথম বিষয়ভিত্তিক রংগীন পরিবেশনা 'আমার শখের কোরআন মাজীদ' এর সাথে দেয়ার জন্যে এমনি একটি শুধু অনুবাদ গ্রন্থের প্রয়োজন অনুভব করছিলাম, তাছাড়া বিগত দু'তিন দশকে দেশে বিদেশে এধরণের অসংখ্য গ্রন্থ প্রকাশিত হওয়ায় অবশেষে আমরাও শুধু অনুবাদ অংশ নিয়ে আলাদা একটি বই প্রকাশ করেছি।

ইতিমধ্যে আমাদের অগণিত পাঠক শুভাকাংখী আমাদের বলেছেন, আমরা যেন সবার হাতের কাছে রাখার মতো এই গ্রন্থের একটি ক্ষুদ্র সংস্করণ প্রকাশ করি। দেশের স্কুল, কলেজ, মাদ্রাসা, বিশ্ববিদ্যালয়ে ছাত্র-ছাত্রী, অফিস আদালত, কল কারখানায় শ্রম ও পেশাজীবী মানুষরা এ থেকে তাদের দীর্ঘ দিনের একটি প্রয়োজন পূরণ করতে পারবেন বলেই আমাদের বিশ্বাস। এতে অনুবাদের পাশাপাশি কোরআনের মূল 'মতন' থাকায় তারা কোরআনের বরকত থেকেও উপকৃত হতে পারবেন।

সাইয়েদ কুতুব শহীদ তাঁর তাফসীরের পটভূমিকার বর্ণনা দিতে গিয়ে এক জায়গায় বলেছেন, কোরআন অধ্যয়ন করার সময় মাঝে মাঝে আমার মনে হয়েছে কোরআন নিজেই বৃঝি এক এক করে আমার সামনে নিজের জটিল গ্রন্থীগুলো খুলে ধরছে। আসলে এ হচ্ছে কোরআনের মালিকের সাথে কোরআনের একজন নিবেদিত প্রেমিকের পারম্পরিক সম্পর্কের ব্যাপার! এ পরিবেশের সাথে শুধু সে ব্যক্তিই পরিচিত হতে পেরেছে যে নিজের জীবনটাকে কোরআনের ছায়াতলে কাটাবার সিদ্ধান্ত নিয়েছে। আমি জানি, শহীদ কুতুবের কোরআনের ছায়াতলে জীবন কাটানো, আর আমার মতো এক গুনাহগার বান্দার সেই কোরআনের ছায়াতলে আশ্রয় নেয়ার সংকল্পের মাঝে আসমান যমীন ফারাক, কিন্তু আমাদের উভয়ের মাঝে এই বিশাল ফারাক সত্ত্বেও জানি না, আমরা উভয়ে একই অনন্ত যাত্রার যাত্রী হবার সুবাদে কিনা কোরআনের অনুবাদ করার সময় আমিও বহুবার এটা অনুভব করেছি, আমি কোনো আয়াতের সামনে তার বক্তব্য অনুধাবনের জন্যে স্থবির হয়ে দাঁড়িয়েছি, নিজের জ্ঞানবৃদ্ধি ও ভাষাজ্ঞান যখন আর আমাকে সাহায্য করতে পারছিলো না, তখনি দেখেছি কে যেন আমাকে বলে দিচ্ছে, ওহে দ্বিধান্তন্ত পথিক, এই নাও তোমার কাংখিত বস্তু।

আলহামদু লিল্লাহ, আজ আমি একান্ত নিবিষ্ট চিন্তে একথাটা বলতে পারছি, কোরআনের এই অনুবাদকর্মটি যেমনি আমার দিবস রজনীর পরিশ্রম, তেমনি তা আল্লাহর গায়বী মদদ নিসৃত নিষ্ঠারই বহিপ্রকাশ। তারপরও আমার অনুবাদে ভূল থাকবে না এমন কথা বলার ঔদ্ধত্য আমি কখনোই দেখাবো না। সে ধরনের ভূলের দিকে আমি যেমন তীক্ষ নযর রাখবো তেমনি সুধী পাঠকদের- বিশেষ করে সম্মানিত ওলামায়ে কেরামদের তাঁদের কর্তব্যের কথাও আমি স্মরণ করিয়ে দেবো। যখনি এধরনের কোনো ভূলক্রটি আমাদের কাছে ধরা পড়বে আমরা ইনশাআল্লাহ সাথে সাথেই তা সংশোধনের চেষ্টা করবো।

আল্লাহর লাখ লাখ শোকর, এই গ্রন্থের পাতায় আমরা পাঠকদের আরেকটি দীর্ঘ দিনের দাবীও পূরণ করতে পেরেছি। সারা বিশ্বের বাংলা ভাষাভাষী কোরআন পাঠকদের সবাই জনপ্রিয় কলকাতা হরফেই কোরআন দেখতে ও পড়তে চান। আল্লাহ তায়ালার অশেষ রহমতে এই উদ্দেশ্য সামনে রেখে আমরা এর পূর্ণাংগ সফটওয়্যারও ডেভেলপ করিয়েছি। এখন থেকে আমাদের প্রকাশিত সব কয়টি কোরআন মাজীদ, কোরআনের অনুবাদ ও তাফসীর গ্রন্থসহ অন্যান্য সব পুস্তকে কোরআনের উদ্ধৃতির জন্যে আমরা এই কলকাতা হরফ ব্যবহার করতে পারবো।

যাদের সান্নিধ্য ও ভালোবাসা আমাকে কোরআনের সাধনা ও কোরআনকেন্দ্রিক জীবন গঠনে দিবানিশি প্রেরণা দিয়েছে, তাঁরা হলেন আমার মহান আব্বা মরহুম মাওলানা মানসূর আহমদ ও জান্নাতবাসিনী মা জামিলা খাতুন। আজ তারা কেউ তাঁদের সন্তানের এ খেদমতটুকু দেখার জন্যে দুনিয়ায় জীবিত নেই, আল্লাহ তায়ালা তাঁর অপার করুণা দিয়ে তাঁদের উভয়কে জান্নাতুল ফেরদাউসে স্থান করে দিন।

আমার স্ত্রী, খ্যাতিমান লেখিকা খাদিজা আখতার রেজায়ী, যে মহীয়সী নারী তার হৃদয়ের সবটুকু ভালোবাসা তথু কোরআনের জন্যে উজাড় করে দিয়েছেন তার কথা বাদ দিয়ে কোরআনের এই অনুবাদ গ্রন্থের ভূমিকা লিখবো কি করে? বলতে দ্বিধা নেই, তিনি পাশে আছেন বলেই আল্লাহর নামে মাঝে মাঝে ছেড়া পালেও আমি সাগর পাড়ি দেয়ার সাহস করি। হে আল্লাহ, আমাদের সাগরে যে অপূর্ণতা রয়েছে তাকে তুমি তোমার দয়া ও মাগফেরাত দিয়ে পূর্ণ করে দিয়ো।

'আল কোরআন একাডেমী লন্ডন' বাংলাদেশ কার্যালয়ের কম্পোজ, ডিজাইন, প্রুফ, প্রেস ও বাইভিং বিভাগে নিয়োজিত আমার সহকর্মীরা দিবারাত্রি পরিশ্রম করে এই পুস্তকের প্রকাশনাকে ত্রানিত করেছেন, আমি তাদের সবার প্রতি কৃতজ্ঞ। এ ছাড়াও অন্যান্য ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান যারা আমাকে এই মহান কাজে বিভিন্নভাবে সাহায্য করেছেন ও প্রেরণা দিয়েছেন, আল্লাহ তায়ালা তাদের সবার সাথে আমাদেরও জানাতের ফুল বাগিচায় একই সামিয়ানার নীচে সমবেত করুন। আমীন!

হাফেজ মুনির উদ্দীন আহমদ

লন্ডন

জিলক্দ ১৪২৫ হিজরী জানুয়ারী ২০০৫ ঈসায়ী

কোরআন শরীফ অনুবাদের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস

অনুবাদ বা ভাষান্তর এমনিই একটি জটাল বিষয়। কোরআনের মতো একটি আসমানী গ্রন্থের ব্যাপারে জটালতার সাথে স্পর্শকাতরতার বিষয়টিও জড়িত। মানুষের তৈরী গ্রন্থের বেলায় বক্তার কথার হুবহু ভাষান্তর না হলে তেমন কি-ই বা আসে যায়। বড়োজোর বলা যায় অনুবাদক মূল লেখকের কথাটার সাথে যথাযথ ইনসাফ করতে পারেননি, কিছু কোরআনের ক্ষেত্রে বিষয়টি এতাই গুরুত্বপূর্ণ যে অনুবাদের একটু হেরফের হলে স্বয়ং আল্লাহ তায়ালার কথাই বিতর্কিত হয়ে পড়ার আশংকা দেখা দেয়। এসব কারণেই মুসলমানদের মাঝে কেউই এক দীর্ঘ সময় পর্যন্ত কোরআনের অনুবাদের ঝুঁকি নিতে চায়নি। এমনকি বিগত শতকের মাঝামাঝি সময় পর্যন্ত মধ্য এশিয়ার আলেমরা ফতোয়ার মাধ্যমে তাতারী ভাষায় কোরআনের যাবতীয় অনুবাদ প্রচেষ্টাকে বন্ধ করে রাখেন। আফ্রিকা মহাদেশে বিশেষ করে নাইজেরিয়া ও নাইজারে হাউসা হচ্ছে আরবীর পর সর্বাধিক সমৃদ্ধ ভাষা। এই ভাষার আলেমরা দীর্ঘদিন পর্যন্ত তাদের ভাষায় কোরআনের অনুবাদকে এই বলে বন্ধ করে রাখেন যে, এতে কোরআনের মর্যাদা ক্ষুণ্ণ হবে। এই মহাদেশের ক্যামেরুন রাজ্যের সুলতান সাঈদ নিজেও আলেমদের প্রবল বিরোধীতার কারণে বামুম ভাষায় কোরআন অনুবাদ কাজ থেকে ফিরে আসেন। মুসলিম দুনিয়ায় শ্রেষ্ঠ বিদ্যাপীট আল আযহার বিশ্ববিদ্যালয়ের ফতোয়া বোর্ড তো এই সেইদিন পর্যন্ত কোরআনের যাবতীয় অনুবাদকর্মের বিরোধীতা করে আসহেন।

১৯২৬ সালে তুরক্ষে ওসমানীর খেলাফতের বিলুপ্তির পর তুর্কী ভাষায় কোরআন অনুবাদের প্রচেষ্টার তারা বিরোধীতা করেন। কোরআনের ইংরেজী অনুবাদক নও মুসলিম মার্মাডিউক পিকথল যখন কোরআনের অনুবাদ করার উদ্যোগ করেন তখন হায়দারাবাদের শাসক নিযাম তাকে সর্বাত্মক সহযোগিতা দিলেও আল আযহার কর্তৃপক্ষ এ উদ্যোগের তীব্র বিরোধীতা করেন। অবশ্য দীর্ঘদিন পর হলেও মক্কাভিত্তিক মুসলিম সংস্থা রাবেতা আল আলামে ইসলামী আয়োজিত বিশ্বের সর্বমতের ওলামারা কোরআন অনুবাদের একটি ঘোষণাপত্রে সই করে এ পথের যাবতীয় বাধা অপসারণ করেন, কিন্তু এটা তো ১৯৮১ সালের কথা মাত্র সেদিনের ঘটনা। অবশ্য এরও বহু আগে ইংরেজ লেখক জর্জ সেল কোরআনের ইংরেজী অনুবাদ প্রকাশ করেছেন। ১৭৩৪ সালে এই অনুবাদ কর্মটির প্রথম খণ্ড প্রকাশিত হয়। ১৭৬৪ সালে তার পূর্ণাংগ অনুবাদ মুদ্রিত হয়।

আমরা যদি আজ কোরআনের ইতিহাস পর্যালোচনা করি তাহলে আমরা দেখতে পাবো যে, কোরআন অনুবাদের এই মোবারক কাজটি স্বয়ং তাঁর হাতেই শুরু হয়েছে যার ওপর এই কোরআন নাযিল হয়েছে। আমরা জানি, আল্লাহর রসূল তাঁর আন্দোলনের এক পর্যায়ে তৎকালীন বিশ্ব নেতৃবৃন্দের কাছে ইসলামের দাওয়াত নিয়ে দৃত পাঠাতেন। তাঁর পাঠানো এসব চিঠিতে অবশাই একাধিক কোরআনের আয়াত লেখা থাকতো। যেসব দেশের রাজা বাদশাহরা আরবী বুঝতেন না রস্লের দৃত তাদের কাছে গোটা চিঠির সাথে সেসব আয়াতের তরজমাও পেশ করতেন। একারণেই সর্বকালের সর্বশ্রেষ্ঠ রাষ্ট্র নায়ক প্রিয় নবী যে দৃতকে যে দেশে পাঠাতেন তাকে আগেই সে দেশের ভাষা শিখতে বলতেন। অধিকাংশ নতুন এলাকায় তিনি পারদর্শী দোভাষীও পাঠাতেন। বিখ্যাত ঐতিহাসিক ইবনে সাদ বলেছেন, আল্লাহর নবী সাধারণত সংশ্রিষ্ট দেশের ভাষায় অভিজ্ঞ লোকদেরই দৃত করে পাঠাতেন। ইবনে সাদ আরো বলেছেন যে, প্রিয়নবী তার ব্যক্তিগত সহকারী ওহী লেখক হযরত যায়েদ বিন সাবেতকে সিরিয়ান ও হিব্রু ভাষা শেখার আদেশ দিয়েছিলেন। তাছাড়া আমির বিন উমাইয়া যে আবিসিনিয়ার সম্রাট নাজ্জাসীর কাছে লেখা রস্লুল্লাহ আরবী চিঠিকে আমহারিক ভাষায় অনুবাদ করেছেন তারও একাধিক প্রমাণ ইতিহাসের গ্রন্থে মজুদ রয়েছে।

কোরআন অনুবাদের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস

রস্লুল্লাহর সময়ের কোরআনের এসব আংশিক অনুবাদ ছিলো অনেকটা মুখে মুখে। কোথায়ও লিখিত আকারে এগুলোকে কোরআনের আয়াতের অনুবাদ হিসেবে কেউ সংরক্ষণ করেনি। পরবর্তি সময়ে যখন কোরআনের বাণী নিয়ে আল্লাহর রসূলের জাঁবায সাথীরা দেশে দেশে ছড়িয়ে পড়লেন তখন এর প্রয়োজনীয়তা তীব্র হয়ে দেখো দিলো। কোরআনের বিষয়বস্তু ও ভাষাশৈলীর স্পর্শকাতরতার কারণে কোরআনের গবেষকরা প্রথম দিকে নানান রকম আপন্তি উত্থাপন করলেও শেষ পর্যন্ত বিভিন্ন ভাষায় কোরআন অনুদিত হতে শুরু করলো। এভাবেই কোরআনের আবেদন মূল আরবী ভাষার পরিমন্ডল ছাড়িয়ে বিভিন্ন ভাষায় ছড়িয়ে পড়লো। বাইরের পরিমন্ডলে এসে সম্ভবত ফার্সী ভাষায়ই সর্বপ্রথম কোরআন অনুদিত হয়েছে। প্রিয় নবীর ইনতিকালের প্রায় ৩৫০ বছর পর ইরানের সাসানী বাদশাহ আবু সালেহ মানসুর বিন নৃহ কোরআনের পূর্ণাংগ ফার্সী অনুবাদ করেন। কোরআনের ফার্সী অনুবাদের এই বিরল কাজের পাশাপাশি তিনি মুসলিম ইতিহাসের প্রথম পূর্ণাংগ তাফসীর গ্রন্থ ইমাম মোহাম্মদ বিন জারীর আত তাবারীর ৪০ খন্ডে সমাপ্ত বিশাল আরবী 'তাফসীর জামেউল বয়ান আত তাওয়ীলুল কোরআন'— এর ফার্সী অনুবাদ করেন। আমাদের এই উপমহাদেশে শাহ ওয়ালী উল্লাহ মোহাদ্দেসে দেহলভী কোরআনের যে ফার্সী অনুবাদ করেছেন তা ছিলো আরো ৮০০ বছর পরের ঘটনা। প্রায় একই সময়ে অর্থাৎ ১৭৭৬ সালে শাহ রিফিউদ্দীন ও ১৭৮০ সালে শাহ আবদুল কাদের কোরআনের উর্দু অনুবাদ করেন।

বাংলা ভাষায় কোরআন অনুবাদের কাজটি আসলেই অনেক দেরীতে শুরু হয়েছে। এর পেছনে কারণও ছিলো অনেক। প্রথমত আমাদের এই ভূখন্ডে যারা কোরআনের এলেমের সাথে সুপরিচিত ছিলেন— সেসব কোরআন সাধকদের অনেকেরই কোরআন শিক্ষার প্রাণকেন্দ্র ছিলো ভারতের উর্দু প্রধান এলাকার ঐতিহ্যবাহী দ্বীনী প্রতিষ্ঠান দেওবন্দ, সাহারানপুর, নদওয়া, জামেয়াতুল এসলাহ, জামেয়াতুল ফালাহসহ উর্দু ভাষাভিত্তিক বিভিন্ন প্রতিষ্ঠান। এর সবকয়টির ভাষাই ছিলো উর্দু কিংবা ফার্সী, তাই স্বাভাবিকভাবেই এসব দ্বীনি প্রতিষ্ঠান খেকে যারা উচ্চতর সনদ নিয়ে বের হন তাদের কোরআন গবেষণার পরিমন্ডলও সে ভাষার বাইরে ছড়াতে পারেনি।

দ্বিতীয়ত পলাশীর ট্রাজেডীর ফলে আমাদের এ অঞ্চলে কোরআন গবেষণার কাজটি নানারকম পংগুত্বের কারণে এমনিই দেউলিয়া হয়ে পড়েছিলো। ফলে বাংলা আসামে কোরআনের আশানুরপ কোনো অনুবাদই হয়নি। তৃতীয় কারণ হিসেবে বাংলা মূদ্রণ যন্ত্রের কথা উল্লেখ করতে হয়। ১৭৭৭ সালে মূদ্রণ যন্ত্র আবিস্কার হলেও এ অঞ্চলের মুসলমানরা ১৮১৫ সালের আগে বাংলা মূদ্রণযন্ত্রের সাথে পরিচিত হবার কোনো সুযোগই পায়নি।

কে প্রথম কোরআনের বাংলা অনুবাদের সৌভাগ্যজনক এ কাজটি শুরু করেন, তা নিয়ে আমাদের মাঝে বিভ্রান্তির অন্ত নাই। কে বা কারা আমাদের সমাজে একথাটা চালু করে দিয়েছে যে, ব্রাহ্মণ ধর্মের নব বিধান মন্ডলীর নিষ্ঠাবান ধর্মপ্রচারক গিরিশ চন্দ্র সেন সর্ব প্রথম কোরআনের বাংলা অনুবাদ করেছেন। আসলে আমাদের সাহিত্য সংস্কৃতিতে দীর্ঘদিন ধরে যাদের সর্বময় আধিপত্য বিরাজমান তারাই যে কথাটা ছড়িয়েছে তাতে সন্দেহ নেই। দুঃখ লাগে যখন দেখি আমাদের এ অঞ্চলের দু'একজন কোরআন মুদ্রাকর ও প্রকাশকও তাদের সাথে সুর মিলিয়ে নিজেদের ব্যবসায়িক স্বার্থে ঐতিহাসিকভাবে অসমর্থিত এমনি একটি কথা অবাধে প্রচার করে চলেছেন। অথচ কোরআনও কোরআনের শিক্ষার প্রতিটি ছাত্রই জানেন যে তার অনুবাদের পাতায় কোরআনের শিক্ষা সৌন্দর্য বাকধারার সাথে ব্রাহ্মবাদের প্রচারনীতিতে কোরআনের প্রতি ক্ষমাহীন বিদ্বেষ ছড়ানো রয়েছে।

গিরিশচন্দ্র সেনের ৬ বছর আগে অর্থাৎ ১৭৭৯ সালে আরেকজন অমুসলিম রাজেন্দ্রলাল মিত্র কোরআনের প্রথম পারার অনুবাদ করেন। কলকাতার আয়ুর্বেদ প্রেস নামক একটি ছাপাখানা থেকে এক ফর্মার (১৬ পৃষ্ঠা) এই অনুবাদটি ৫০০ কপি ছাপাও হয়েছিলো।

১৮৮৫ সালে গিরিশ চন্দ্রসেনের এই অনুবাদের প্রায় ৮০ বছর আগে অথাৎ ১৮০৮ সালে পূর্ব বাংলার রংপুর নিবাসী একজন সাধারণ কোরআন কর্মী মওলানা আমিরুদ্দীন বসনিয়া কোরআনের

কোরআন অনুবাদের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস

প্রথম বাংলা অনুবাদের কাজে হাত দেন। তিনি সে সময় কোরআনের আমপারার অনুবাদ সম্পন্ন করেন। যদিও তার অনুবাদের কপি এখন তেমন আর পাওয়া যায় না তবুও তিনিই যে কোরআনের প্রথম সৌভাগ্যবান বাংলা অনুবাদক এতে সন্দেহ নেই। কোনো অনুদিত কপির সব কয়টি অংশ দুর্লভ ও দুষ্প্রাপ্য হওয়াই একথা বলার জন্যে যথেষ্ঠ নয় যে, এমন কোনো ঘটনাই ঘটেনি। ১৮১৫ সালে বাংলা মূদ্রণ যক্রের ব্যবহারের পরপরই কলকাতার মীর্জাপ্রের পাঠোয়ার বাগানের অধিবাসী আকবর আলী এ কাজে এগিয়ে আসেন। তিনিও মাওলানা আমীরুদ্দীন বসুনিয়ার মতো শুধু আমপারা ও সূরা ফাতেহার বাংলা অনুবাদ সম্পন্ন করতে পেরেছিলেন। তার অনুদিত অংশটি ছিলো পুথির মতো। তার এ অনুবাদটি কোরআনের কোনো মৌলিক অনুবাদও ছিলো না। তিনি যেটা করেছেন তা ছিলো ১৭৮০ সালে অনুদিত শাহ আবদুল কাদেরের উর্দু অনুবাদের বাংলা। সরাসরি কোরআনের অনুবাদ নয় বলে সুধী মহলে এটা তেমন একটা স্বীকৃতি লাভ করেনি। আসলে ব্যক্তি যতো গুরুত্বপূর্ণ হোন না কেন তিনি যদি কোরআনকে কোরআন থেকে অনুবাদ না করেন তাহলে তাকে কখনো কোরআনের অনুবাদ বলে চালিয়ে দেয়া উচিৎ নয়। কোরআনের ব্যাকরণ, বিধি বিশেষ বাকধারা, ভাষা শৈলী, শিল্প সৌন্বর্য্য সর্ব্বেগির কোরআনের ফাছাহাত বালাগাত না জেনে কোরআনের অনুবাদে হাত দেয়া কারোই উচিৎ নয়।

কোরআনের প্রথম অনুবাদক মওলানা আমীরুদ্দীন বসনিয়া কোরআনের পূর্ণাংগ অনুবাদ করে দিতে পারেননি। পরবর্তি সময়ের গিরিশচন্ত্র সেনের পূর্ণাংগ অনুবাদ কর্ম যেটা তখন বাজ্ঞারে প্রচলিত ছিলো তাও ছিলো নানা দোষে দুষ্ট, তাই তার অনুবাদের মাত্র ২ বছরের ভেতরই কোরআনের বিশ্বস্ত ও পূর্ণাঙ্গ অনুবাদ কর্ম নিয়ে হাযির হয়েছেন বিশ্ব্যাত কোরআন গবেষক মাওলানা নায়ীমুদ্দীন।

এর আগে কলকাতার একজন ইংরেজ পাদ্রীও কোরআনের অনুবাদ করেছিলেন। শোনা যায় মাওলানা আমিরুদ্দীন বসুনিয়া থেকে গিরিশচন্ত্র সেন পর্যন্ত অর্থাৎ ১৮০৮ থেকে ১৮৮৫ সালের মধ্যে আরো ৯জন ব্যক্তি কোরআন অনুবাদ করেছেন। আল্লাহ তায়ালার শোকর আল কোরআন একাডেমী লন্ডন চলতি বছরকে বাংলা ভাষায় কোরআন অনুবাদের ২০০ বছর পূর্তি বছর হিসেবে উদযাপন করার সিদ্ধান্ত গ্রহণ করায় এ বিষয়ে আরো অনেক অজানা তথ্য জনসমক্ষে আসতে শুরু করেছে।

কোরআন শরীফ ইতিহাস ও ক্রমবিকাশ

थथम धशै

'পড়ো তোমার মালিকের নামে যিনি সব কিছু পয়দা করেছেন। (সূরা আল আলাক ১-৫) 'সর্বশেষ ওহী' – সে দিনকে ভয় করো যেদিন তোমাদের সবাইকে আল্লাহর কাছে ফিরিয়ে নেয়া হবে।' (সূরা আল বাকারা ২৮১), 'আজ আমি তোমাদের জন্যে তোমাদের দ্বীনকে পূর্ণাংগ করে দিলাম, তোমাদের ওপর আমার নেয়ামত পরিপূর্ণ করে দিলাম, তোমাদের জন্যে জীবন বিধান হিসেবে আমি ইসলামের ওপর সন্তুষ্ট হলাম।' (সূরা আল মায়েদা ৩) কোরআন নাযিলের মোট সময় প্রায় ২২ বছর ৫ মাস।

কোরআন নাযিশের ওক্র

কোরআন নায়িলের ছয় মাস আগে থেকেই আল্লাহ তায়ালা মোহাম্মদ (স.)-কে স্বপ্লের মাধ্যমে এ মহান কাজের জন্যে প্রস্তুত করে নিচ্ছিলেন। ইতিহাসের প্রমাণ অনুযায়ী প্রথম ওহী এসেছিলো রমযান মাসের ২১ তারিখ সোমবার রাতে। মোহাম্মদ (স.)-এর বয়স ছিলো তখন ৪০ বছর ৬ মাস ১২ দিন।

হ্যরত আয়শা (রা.) থেকে বর্ণিত আছে, প্রিয় নবী (স.)-এর ওপর ওহী নাথিলের সূচনা হয়েছিলো স্বপ্লের মাধ্যমে। তিনি যে স্বপ্ল দেখতেন তা দিনের আলোর মত তাঁর জীবনে প্রতিভাত হতো। এক টুকরো দৃশ্যমান নূর তাঁর অন্তরে সদা ভাস্বর হয়ে থাকতো। জিবরাঈল (আ.)-এর মাধ্যমে ওহী প্রাপ্তির আগে আন্তে তিনি নির্জনতাপ্রিয় হয়ে ওঠেন, হেরা গুহায় নিভৃতে আল্লাহ তায়ালার ধ্যানে তিনি মশগুল হয়ে পড়েন এবং বিশাল সৃষ্টি ও তার উদ্দেশ্য সম্পর্কে গভীর চিন্তা ভাবনা করতে থাকেন। এভাবেই হেরা গুহায় তাঁর রাত আর দিন কাটে। খাবার ও পানি শেষ হয়ে গেলে সেসব নেয়ার জন্যেই তিনি তথু বাড়ি ফিরেন। মাঝে মাঝে প্রিয় স্ত্রী খাদিজাও হেরা গুহায় তাঁকে খাবার দিয়ে আসেন। এমনি করে একদিন তাঁর কাছে আল্লাহর ফেরেশ্তা হ্যরত জিবরাঈল (আ.) এসে গঙ্কীর কণ্ঠে তাঁকে বললেন, 'ইক্রা'-পড়ন। মোহাম্মদ বিশ্বয়ে হতবাক হয়ে গেলেন। উদ্বেলিত কণ্ঠে বললেন 'আমি তো পড়তে জানি না'। ফেরেশতা তাঁকে বুকে চেপে ধরে আবার বললেন, পড়ুন। তিনি পুনরায় বললেন, আমি তো পড়তে জানি না। ফেরেশ্তা আবার তাঁকে বুকে জড়িয়ে চেপে ধরলেন এবং বললেন, পড়ুন। তৃতীয় বার যখন ফেরেশতা তাঁকে বুকে আলিংগন করে ছেড়ে দিয়ে বললেন, পড়ুন, এবার মোহাম্মদ (স.) গুহীর প্রথম পাঁচটি আয়াত পড়লেন। অতপর তিনি ঘরে ফিরলেন। প্রিয়তমা স্ত্রীকে বললেন, 'আমাকে চাদর দিয়ে ঢেকে দাও। আমাকে চাদর দিয়ে ঢেকে দাও'। হযরত খাদিজা (রা.) প্রিয় নবীকে চাদর দিয়ে জড়িয়ে দিলেন। এরপর তাঁকে জিজ্ঞেস করলেন, কি হয়েছে আপনারঃ আপনি এমন কাঁপছেন কেন?

রসূল (স.) বললেন, একজন অভিনব ব্যক্তি আমার কাছে এসে আমাকে বললেন, পড়্ন। আমি বললাম, আমি তো পড়তে জানি না। তারপর তিনি তিন তিন বার আমাকে বুকের সাথে জড়িয়ে ধরে চাপ দিলেন, অতপর তার সাথে আমি পড়তে তক্ত করলাম। তার কথা তনে খাদিজা (রা.) বললেন, আপনার ভয় পাওয়ার কোনো কারণ নেই। কেননা আপনি মানুষের উপকার করেন, মানবতার সেবা করেন, এতীমদের আশ্রয় দেন, মহান আল্লাহ আপনার কি কোন ক্ষতি করতে পারেন!

খাদিজা (রা.) প্রিয় নবীকে তাঁর চাচাত ভাই গুরাকা ইবনে নওফেলের কাছে নিয়ে গেলেন। গুরাকা ইবনে নওফেল ছিলেন ঈসায়ী ধর্মের আলেম এবং হিব্রু ভাষার পশুত ব্যক্তি। সে সময় তিনি বয়সের ভারে ক্লান্ত এবং দৃষ্টিহীন হয়ে পড়েছিলেন। হয়রত খাদিজা (রা.) বললেন, ভাইজান, আপনার ভাতিজার কথা শুনুন। রসূল (স.) তাকে হেরা গুহার সব ঘটনার কথা বর্ণনা করলেন। শুনে গুরাকা বললেন, তিনি সে-ই দৃত জিবরাঈল, য়িনি হয়রত মূসা (আ.)-এর কাছে গুহীর বাণী নিয়ে আসতেন। হায়, আমি যদি সে সময় পর্যন্ত বেঁচে থাকতে পারতাম য়খন তোমার কওমের লোকেরা তোমাকে জন্মভূমি থেকে বের করে দেবে। রসূল (স.) অবাক হয়ে বললেন, কেন আমাকে তারা মাতৃভূমি থেকে বের করে দেবে? গুরাকা বললেন, তুমি যে গুহী লাভ করেছো, এ ধরনের গুহী যখনই কোন নবী পেয়েছেন তাঁর সাথে এভাবেই স্বজাতির পক্ষ থেকে শক্রতা করা হয়েছে। যদি আমি সে দিন পর্যন্ত বেঁচে থাকি তাহলে অবশ্যই আমি তোমার সাহায্যে এগিয়ে আসবো।

কোরআন লিপিবদ্ধকরণ

যখন থেকে কোরআন নাযিল শুরু হয়, সেদিন থেকেই আল্লাহর রসূপ তা লিপিবদ্ধ করে রাখার জন্য পারদর্শী সাহাবীদের নিযুক্ত করতে আরম্ভ করেন। হযরত যায়দ বিন সাবেত (রা.) ছ.ড়া আরো ৪২ জন সাহাবী এ কাজে নিযুক্ত ছিলেন। এ সম্পর্কে রসূল (স.) বলেন, তোমরা কোরআন ছাড়া আমার কাছ থেকে অন্য কিছু লেখো না।

কোরআনের বিভিন্ন পরিসংখ্যান

কোরআনে মোট একশ চৌদ্দিটি সূরা রয়েছে, প্রথম খলীফা হয়রত আবু বকর (রা)-এর যুগে হয়রত যায়দ ইবনে সাবেত (রা.) এ সংখ্যা নির্ণয় করেন। কোনো কোনো সূরার আয়াত সম্বলিত তথ্য স্বয়ং রাসূল (স.) থেকেই পাওয়া যায়। যেমন 'সূরা ফাতেহার ৭ আয়াত-এর যে কথা রয়েছে তা রসূল (স.) নিজেই বলেছেন। সূরা মূলক-এ ত্রিশ আয়াতের কথাও হাদীসে বর্ণিত হয়েছে।

কোরআনের ধারাবাহিকতা প্রসংগে একটি বর্ণনা এমন রয়েছে যে, হযরত জিবরাঈল (আ.) রসূল (স.)-কে বলেছেন, অমুক আয়াতটি সূরা বাকারার ২৮০ নং আয়াতের পর লিপিবদ্ধ করুন। অন্য এক রেওয়ায়াতে তিনি রসূল (স.)-কে সূরা কাহকের প্রথম দশটি আয়াত তেলাওয়াত করার মাহাত্ম্য বর্ণনা করেছেন। এ ধরনের আরো কিছু কিছু রেওয়ায়াত পাওয়া যায়, কিছু সামগ্রিকভাবে রসূল (সা.)-এর যুগে কোরআনের সূরা ও আয়াতের সংখ্যা সম্পর্কিত আর তেমন কোনো বর্ণনা পাওয়া যায় না।

কোরআনের ইতিহাস ও ক্রমবিকাশ

হযরত আবু বকর সিন্দীক (রা.)-এর যুগেও কোরআনের আয়াতের গণনা হয়েছে এমন কোন রেওয়ায়াত পাওয়া যায় না। সম্ভবত সর্বপ্রথম হযরত ওমর (রা.)-এর যুগেই আয়াত গণনার কান্ধটি শুরু হয়েছে। হযরত ওমর (রা.) তারাবীর নামাযের প্রতি রাকা'তে তিরিশ আয়াত করে তেলাওয়াত করার একটা নিয়ম জারি করেছিলেন। অন্যান্য সাহাবাদের মধ্যে হযরত ওসমান (রা.), হযরত আলী (রা.), হযরত আবদুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রা.), হযরত আনাস (রা.), হযরত আবুদ্ দারদা (রা.), হযরত আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রা.), হযরত আবদুল্লাহ ইবনে ওমর (রা.) ও হযরত আয়েশা (রা.) প্রমুখ সাহাবী কোরআনের আয়াত সংখ্যা নির্ণয় করেছেন।

আয়াতের সংখ্যার মধ্যে কিছুটা তারতম্য রয়েছে। এর কারণ, কিছু কিছু আয়াতের শেষে রসূল (স.) মাঝে মাঝে ওয়াকফ করেছেন, আবার কখনও ওয়াকফ না করে পরবর্তী আয়াতের সাথে মিলিয়ে তা তেলাওয়াত করেছেন। এমতাবস্থায় কেউ কেউ প্রথম অবস্থার দিকে লক্ষ্য রেখে এক ধরনের গণনা করেছেন। আবার কেউ কেউ পরবর্তী অবস্থার প্রতি শুরুত্ব আরোপ করে আয়াতের সংখ্যা নির্ণয় করেছেন। এতে করে কোরআনের আয়াতের সংখ্যা নিয়ে কিছুটা মতপার্থক্য দেখা দিয়েছে। তবে সাধারণত হ্যরত আয়েশার গণনাকে এ ব্যাপারে বেশী নির্ভরযোগ্য মনে করা হয়।

কোরআনে 'বিসমিল্লাহ' নেই- এমন সূরা হচ্ছে সূরা 'আত তাওবা', দুই বার 'বিসমিল্লাহ' আছে এমন সূরা হচ্ছে সূরা 'আন নামল'। নয়টি মীম অক্ষর সম্বলিত সূরা হচ্ছে সূরা আল কাফের্নন, কোনো মীম নেই যে সূরায় তা হচ্ছে সূরা 'আল কাওসার'।

কোরআনের প্রথম মোফাসসের হচ্ছেন হযরত আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রা.), কোরআনের প্রথম সংকলক হচ্ছেন হযরত ওসমান (রা.)। কোরআনের প্রথম বাংলা অনুবাদক হচ্ছেন মাওলানা আমীর উদ্দীন বসুনিয়া।

কোরআনে উল্লিখিত কোরআনের নাম ৫৫টি, কোরআন প্রথম যাঁর মাধ্যমে এসেছে তিনি হচ্ছেন হযরত জিবরাঈল (আ), কোরআনে যে ভাগ্যবান সাহাবীর নাম আছে তিনি হচ্ছেন হযরত যায়দ (রা.) া

কোরআনে তেলাওয়াতে সাজদার সংখ্যা সর্বসম্মত ১৪ *(মতপার্ধক্যে ১৫)*

কয়েকজন বিশিষ্ট ওহী লেখকের নাম

- ১. হযরত আবু বকর সিদ্দীক (রা.)
 ৯. হযরত হানযালা বিন রাবী (রা.)
 ১৭. হযরত শু

 ২. হযরত গুমর বিন খাস্তাব (রা.)
 ১০. হযরত খালেদ বিন গুয়ালীদ (রা.)
 ১৮. হযরত শে
- ৩. হযরত অসমান বিন আফফান (রা.)
 ১১. হযরত আবদুরাহ বিন রাওয়াহা (রা.)
 ৪. হযরত আলী বিন আবি তালেব (রা.)
 ১২. হযরত মোহাম্মদ বিন মাসলামা (রা.)
 - ১৩. হযরত আবদুক্লাহ বিন সালুল (রা.) ১৪. হযরত মুগীরা বিন শোবা (রা.)
- ৬. হযরত আবদুল্লাহ বিন সা'দ (রা.)
 ৭. হযরত যোবায়ের বিন আওয়াম (রা.)
 ১৫. হযরত মোরাবিয়া বিন আবি মুশ্লিন (রা.)
 ১৮. হযরত আমর ইবনুল আস (রা.)
- ১৭. হযরত জাহম ইবনুস সালত (রা.)
- ১৮. হযরত শোরাহবিশ বিন হাসান (রা.) ১৯. হ্বরত আবদুরাহ বিন আরকাম আব বৃহরী (রা.)
- ২০. হযরত সাবেত বিন কায়স (রা.) ২১. হযরত হোবায়কা বিন আল ইয়ামান (রা.)
- ২২. হযরত আমের বিন ফুহায়রা (রা.) ২৩. হযরত আবদুল্লাহ বিন বোব্যর (রা.)
- ২৪. হযরত আবান বিন সায়ীদ (রা.)

কোরআনের মুদ্রণ ইতিহাস

৫. হযরত যায়দ বিন সাবেত (রা.)

মুদ্রণ যন্ত্রের আবিষ্কারের আগ পর্যন্ত কোরআন শরীফ হাতেই লেখা হতো। প্রত্যেক যুগেই এমন কিছু নিবেদিতপ্রাণ কোরআনের 'কাতেব' মজুদ ছিলেন যাঁদের একমাত্র কাজ ছিলো কোরআন শরীফ লিপিবদ্ধ করা। কোরআনের প্রতিটি অক্ষরকে সুন্দরভাবে লিপিবদ্ধ করার লক্ষ্যে এটি নিসন্দেহে এক নথীরবিহীন ঘটনা।

মুদ্রণ যন্ত্র আবিষ্কারের পর ইউরোপের হামবুর্গ নামক স্থানে হিজরী ১১১৩ সনে সর্বপ্রথম কোরআন শরীষ্ট মুদ্রিত হয়। এরপর বিশ্বের এখানে সেখানে অনেকেই ছাপাখানার মাধ্যমে কোরআন শরীষ্ট মুদ্রণ শুরু করেন, কিন্তু মুসলিম জাহানে নানা কারণে প্রথম দিকে মুদ্রিত কোরআন শরীষ্ট তেমন একটা গ্রহণযোগ্য হয়নি।

মুসলমানদের মধ্যে সর্বপ্রথম মাওলানা ওসমান রাশিয়ার সেন্ট পিটার্সবার্গ শহরে ১৭৮৭ খৃষ্টাব্দে কোরজান মুদ্রণের কাজ করেন। প্রায় একই সময় কাযান শহর থেকেও কোরজানের একটি নোসখা মুদ্রিত হয়।

১৭৮৭ খৃষ্টাব্দে ইরানের তেহরানে লিথো মুদ্রণ যন্ত্রে প্রথম কোরআন শরীফের একটি কপি মুদ্রিত হয়। এরপর থেকে আন্তে আন্তে দুনিয়ার অন্যান্য এলাকাতেও ব্যাপকভাবে ছাপাখানার মাধ্যমে কোরআন মুদ্রণের রেওয়াক্ক চালু হতে থাকে। মুদ্রণ যন্ত্রের আবিষারের আগে কোরআনের আয়াতসমূহ সাধারণত পাথর, শিলা, শুকনা চামড়া, খেব্দুর গাছের শাখা, বাঁশের টুকরা, গাছের পাতা এবং পশুর চামড়ার ওপর লেখা হতো।

কোরআনে নোকতা

আরবদের মধ্যে আগে আরবী বর্ণমালায় নোকতা সংযোজন করার কোনো রীতি প্রচলিত ছিলো না। তারা নোকতাবিহীন অক্ষর লেখতো। এতে কোরআন শরীফ তেলাওয়াতের ব্যাপারে কোনো অসুবিধা হতো না। কেননা কোরআনের তেলাওয়াত কোনদিনই অনুলিশিনির্ভর ছিলো না। হাফেযদের তেলাওয়াত থেকেই লোকেরা তেলাওয়াত শিক্ষা করতো। হযরত ওসমান (রা.) যখন মুসলিম জাহানের বিভিন্ন এলাকায় কোরআনের 'মাসহাফ' প্রেরণ করতেন, তখন তার সাথে তিনি বিশিষ্ট তেলাওয়াতকারী হাফেযদেরও পাঠাতেন। সে যুগে আরবী বর্ণমালায় নোকতা সংযোজন করা দৃষণীয় কাজ মনে করা হতো। এ কারণেই ওসমানী মাসহাফেও প্রথম দিকে কোনো নোকতা ছিলো না। এতে করে প্রচলিত সব কয়টি কেরাতেই কোরআন তেলাওয়াত করা সহজ হতো, কিন্তু পরে অনারব লোকদের প্রয়োজনে আরবী বর্ণমালায় নোকতা সংযোজন একান্ত জরুরী হয়ে পড়ে।

কোরআনের ইতিহাস ও ক্রমবিকাশ

কোরআনুল কারীমের হরফসমূহে কে সর্বপ্রথম নোকতার প্রচলন করেছিলেন এ সম্পর্কে মতভেদ রয়েছে। কোনো কোনো মতে বিখ্যাত ব্যাকরণবিদ তাবেয়ী হযরত আবুল আসাদ দুয়েলী (র) এ কাজটি সর্বপ্রথম আনজাম দেন। অনেকে মনে করেন, আবুল আসাদ দুয়েলী এ কাজটি হযরত আলী (রা.)-এর নির্দেশেই সম্পাদন করেছেন।

কারো মতে কুফার শাসনকর্তা যিয়াদ বিন আবু সুফিয়ান আবুল আসাদের দ্বারা এ কাজটি সম্পন্ন করিয়েছেন। আবার অন্যদের মতে তিনি এ কাজ আব্দুল মালেক ইবনে মারওয়ানের নির্দেশে সম্পাদন করেছেন। অন্য এক বর্ণনা অনুযায়ী হাজ্জাজ বিন ইউসুফ এ কাজটি হ্যরত হাসান বসরী (র), হ্যরত ইয়াসের ইবনে ইয়ামার এবং নসর বিন আছেম লাইসীর দ্বারা সম্পন্ন করিয়েছিলেন।

অনেকে আবার এ অভিমতও প্রকাশ করেছেন যে, যিনি কোরআনের হরফসমূহে নোকতা সংযোজন করেছেন তিনি সর্বপ্রথম আরবী বর্ণমালায়ও নোকতার প্রচলন করেন। প্রখ্যাত বর্ণমালা বিশেষজ্ঞ ও সাহিত্যিক আল্পামা কলশন্দী এ অভিমতের প্রতিবাদ করে বলেছেন, মূলত এর বছ আগেই আরবদের মাঝে নোকতার আবিষ্কার হয়েছে। তাঁর মতে আরবী লিখন পদ্ধতির আবিষ্কারক ছিলেন মোয়ামের ইবনে মুরার, আসলাম ইবনে সোদরাহ এবং আমর ইবনে জানারা নামক এ তিন ব্যক্তি। তাঁদের মধ্যে মোয়ামের হরফের আকৃতি আবিষ্কার করেন। পড়ার মাঝে থামা, শ্বাস নেয়া এবং একত্রে মিলিয়ে পড়ার সাথে সংশ্লিষ্ট বিষয়সমূহও তিনি আবিষ্কার করেন। আরেক বর্ণনায় হযরত আবু সুফিয়ানকে নোকতার আবিষ্কারক বলে আখ্যায়িত করা হয়েছে। তাঁদের মতে তিনি নোকতার এ পদ্ধতি হীরাবাসীদের কাছ থেকে গ্রহণ করেছিলেন, আর এ হীরাবাসীরা তা গ্রহণ করেছিলেন আম্বারবাসীদের কাছ থেকে। এতে বুঝা যায় পরবর্তীকালে যে ব্যক্তির মাধ্যমে কোরআনের নোকতার প্রচলন শুক্ত হয়, প্রকৃতপক্ষে তিনিই এই নোকতার মূল আবিষ্কারক নন; বরং তিনি ছিলেন কোরআনে সর্বপ্রথম নোকতার প্রচলনকারী মাত্র।

কোরআনের হারাকাত

নোকতার মতো প্রথম অবস্থায় কোরআনে কারীমে হরকত বা যের যবর পেশ ইত্যাদিও ছিলো না। সর্বপ্রথম কে হরকতের প্রবর্তন করলেন এ ব্যাপারেও মতপার্থক্য রয়েছে। কারো কারো মতে সর্বপ্রথম হযরত আবুল আসাদ দুয়েলী কোরআনে হরকত প্রবর্তন করেন। আবার অনেকেরই অভিমত হচ্ছে যে, হাজ্জাজ বিন ইউসুফ এ কাজটি ইয়াইইয়া বিন ইয়াসার এবং নসর বিন আসেম লাইসীর দ্বারা সম্পন্ন করিয়েছিলেন। বিশ্বস্ত অভিমত হচ্ছে হযরত আবুল আসাদ দুয়েলীই সর্বপ্রথম কোরআন শরীফের জন্যে হারাকাত আবিকার করেছিলেন। কিন্তু তার আবিকৃত হরকতসমূহ আজকাল প্রচলিত হারাকাতের মতো ছিলো না। তাঁর আবিকৃত হারাকাতে যবর—এর জন্যে হরফের উপরিভাগে একটা নোকতা এবং যের—এর জন্যে নীচে একটা নোকতা বসিয়ে দেয়া হতো। পেশের উচ্চারণ করার জন্য হরফের সামনে এক নোকতা এবং তানওয়ীনের জন্যে দুই নোকতা ব্যাবহার করা হতো। পরে শলীল বিন আহমদ হাম্যা-এর সাথে তাশদীদের চিহ্ন তৈরি করেন।

এরপর বাগদাদের গন্ডর্নর হাজ্জান্ধ বিন ইউসুফ হযরত হাসান বসরী (র.) ইয়াহইয়া বিন ইয়াসার ও নসর বিন আছেম লাইসী প্রমুখকে কোরআন শরীফে নোকতা ও হারাকাত প্রদানের কাজে নিয়োজিত করেন। একে আরো সহজবোধ্য করার জন্যে উপরে, নীচে বা পাশে অতিরিক্ত বিন্দু ব্যবহার করার ব্যাপারে হযরত আবুল আসাদ দুয়েলী প্রবর্তিত পদ্ধতির জায়গায় বর্তমান আকারের হারাকাত প্রবর্তন করা হয়, যাতে করে হরফের নোকতার সংগে হারাকাত নোকতার মিশ্রণজনিত কোনো জটিলতার সৃষ্টি না হয়।

হারাকাত ও নোকতা ইত্যাদির সংখ্যা

যবর ৫৩২২৩, যের ৩৯৫৮৩, পেশ ৮৮০৪, মদ ১৭৭১, তাশদীদ ১২৭৪, নোকতা ১০৫৬৮৪।

বিভিন্ন অক্ষরের সংখ্যা

আলিফ ৪৮৮৭২, বা ১১৪২৮, তা ১১৯৯, ছা, ১২৭৬, জীম ৩২৭৩, হা ৯৭৩, খা, ২৪১৬, দাল ৫৬০২, যাল, ৪৬৭৭, রা, ১১৭৯৩, যা ১৫৯০, সীন ৫৯৯১, শীন ২১১৫, ছোয়াদ ২০১২, দোয়াদ, ১৩০৭, তোয়া ১২৭৭, যোয়া ৮৪২, আঈন ৯২২০, গাঈন ২২০৮, ফা, ৮৪৯৯, ক্বাফ ৬৮১৩, কাফ ৯৫০০, লাম ২৪৩২, মীম ৩৬৫৩৫, নূন ৪০১৯০, ওয়াও ২৫৫৪৬, হা ১৯০৭০, লাম-আলিফ ৩৭৭০, ইয়া ৪৫৯১৯।

সাহাবায়ে কেরামের মধ্যে হযরত আবদুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রা.) -ও কোরআনের অক্ষর গণনা করেছেন বলে অনেকে মনে করেন। তাঁর গণনা মতে কোরআনের অক্ষর হচ্ছে ৩,২২,৬৭১। তাবেয়ীদের মাঝে মোজাহেদ (র.)-এর গণনা অনুযায়ী কোরআনের অক্ষর হচ্ছে ৩,২১,১২১। তবে সাধারণভাবে ৩,২০,২৬৭ সংখ্যাটিই বেশী প্রসিদ্ধি লাভ করেছে।

कांत्रवात्नत्र मंच मश्चा

সাহাবায়ে কেরামরা তাদের যুগে কোরআনের শব্দ সংখ্যাও নির্ণয় করেছেন। অবশ্য এ সম্পর্কে সরাসরি তাদের সাথে সম্পৃক্ত কোন রেওয়ায়াত পাওয়া যায় না। যা কিছু আছে সবই পরবর্তীকালের। শুমায়দা আয়রাজের গণনা অনুযায়ী ৭৬,৪৩০, আবদুল আয়ীয ইবনে আবদুল্লাহর গণনা মোতাবেক ৭০৪৩৯, মোজাহেদের গণনা মোতাবেক ৭৬২৫০, তবে যে সখ্যাটি সাধারণভাবে প্রসিদ্ধি লাভ করেছে তা হচ্ছে ৮৬৪৩০।

কোরআনের আয়াত সংখ্যা

হযরত আরেশা (রা.)-এর মতে ৬৬৬৬, হযরত ওসমান (রা.)-এর মতে ৬২৫০, হযরত আলী (রা.) -এর মতে ৬২৩৬, হযরত ইবনে মাসউদ (রা.) -এর মতে ৬২১৮, মক্কার গণনা মতে ৬২১২, বসরার গণনা মতে ৬২২৬, ইরাকের গণনা মতে ৬২১৪, ঐতিহাসিকদের মতে হযরত আয়েশার গণনাই বেশী প্রসিদ্ধি লাভ করেছে। যদিও আমাদের এখানে প্রচলিত কোরআনের নোসফাসমূহ থেকে আয়াতের সংখ্যা গুনলে এ মতের সমর্থন পাওয়া যায় না।

কোরআনের ইতিহাস ও ক্রমবিকাশ

বিষয়ভিত্তিক আয়াত

জান্নাতের ওয়াদা ১০০০, জাহান্নামের ভয় ১০০০, নিষেধ, ১০০০, আদেশ ১০০০, উদাহরণ ১০০০, কাহিনী ১০০০, হারাম ২৫০, হালাল ২৫০, আল্লাহর পবিত্রতা ১০০, বিবিধ ৬৬।

कक्त्र मश्या

কোরআনের নোসখায় প্রথম দিকের 'আখমাস' এবং 'আশারের' আলামত পরবর্তী যুগে এসে পরিত্যক্ত হয়ে যায় এবং অন্য একটা আলামতের ব্যবহার এতে প্রচলিত হতে থাকে। এ নতুন পদ্ধতির চিহ্নটিকে রুকু বলা হয়। আয়াতে আলোচিত বিষয়বস্কুর প্রতি লক্ষ্য রেখে চিহ্নটি নির্ধারণ করা হয়েছে। প্রসংগ যেখানেই এসে শেষ হয়েছে সেখানেই পৃষ্ঠার পাশে রুকুর চিহ্ন দেয়া হয়েছে।

এ চিহ্নটি কখন কার দ্বারা প্রথম প্রচলিত হয়েছে এ সম্পর্কিত কোনো নির্ভরযোগ্য তথ্য যদিও পাওয়া যায় না, তবে এই চিহ্ন দ্বারা যে আয়াতের মোটামুটি একটা পরিমাণ নির্ধারণ করা উদ্দেশ্য তা বুঝা যায়। যেটুকু সাধারণত নামাথের এক রাকয়াতে পড়া যায় তাকেই এখানে পরিমাণ হিসেবে ধরা হয়েছে। যেহেতু নামাযে এই পরিমাণ তেলাওয়াত করে রুকু করা যায়, সে কারণেই বোধ হয় একে রুকু বলা হয়।

সমগ্র কোরআন মন্ধীদে মোট পাঁচশ চল্লিশটি রুক্ রয়েছে। প্রতি রাকাতে যদি এক রুক্ করে তেলাওয়াত করা হয় তাহলে রমযান মাসের সাতাশের রাতে তারাবীর নামাযে কোরআন তেলাওয়াত শেষ হয়ে যায়।

পারাসমূহ

কোরআন শরীফ সমান ত্রিশটি ভাগে বিভক্ত। এগুলোকে পারা বলা হয়। আরবীতে বলা হয় 'জুয'। পারার এ বিভক্তি কোনো বিষয়বস্কুভিত্তিক ব্যাপার নয়; ওধু তেলাওয়াতের সুবিধার্থ সমান ত্রিশটি ভাগে একে ভাগ করে দেয়া হয়েছে। তিরিশ পারায় এ বিভক্তি কার দ্বারা প্রথম সম্পন্ন হয়েছে সে তথ্য উদ্ধার করা আসলেই কঠিন। অনেকের ধারণা, হয়রত ওসমান (রা.) যখন কোরআন শরীফের অনুলিপি তৈরী করেন, তখন তিনিই এটা করেছেন এবং তা থেকেই তিরিশ পারার প্রচলন হয়েছে, কিন্তু নির্ভরযোগ্য কোন সূত্রে তা প্রমাণিত হয়নি। আল্লামা বদক্রদ্দীন যারকাশীর মতে তিরিশ পারার এ নিয়ম বছ আগে থেকেই চলে আসছে। বিশেষত এ ত্রিরিশ পারার রেওয়াজ কোরআনের ছাত্রদের মাঝেই বেশী প্রচলিত হয়েছে। তিরিশ পারার এ বিভক্তি মনে হয় সাহাবায়ে কেরামের যুগেই চালু হয়েছে। শিক্ষাদান কার্যের সুবিধার জন্যে হয়তো এটা করা হয়েছে।

यन्यिमञग्रह ७ এর विङक्তिकরণ

মনথিল কিভাবে এলো তার আলোচনা প্রসংগে অনেকেই এ ঘটনাটি উল্লেখ করেন। আবু দাউদ, ইবনে মাজাহ ও মোসনাদে আহমদের বর্ণনা অনুষায়ী একদিন বনী সাফাবী গোত্রের এক প্রতিনিধি দল রসূল (স.)-এর খেদমতে হাযির হলে রসূল (স.)-এর তাদের কাছে আসতে কিছু বিলম্ব হয়। এই দেরী হওয়ার কারণ উল্লেখ করে রসূল (স.) বলেন, আমি কোরআন তেলাওয়াতে ছিলাম, আজকের দিনের নির্ধারিত অংশ পুরো করতে একটু দেরী হয়ে গেছে।

প্রথম মন্যিল সূরা আল ফাতেহা থেকে সূরা আন নেসা, দ্বিতীয় মন্যিল সূরা আল মায়েদা থেকে সূরা আত তাওবা, তৃতীয় মন্যিল সূরা ইউনুস থেকে সূরা আন নাহল, চতুর্থ মন্যিল সূরা বনী ইসরাঈল থেকে সূরা আল ফোরকান, পঞ্চম মন্যিল সূরা আশ শোয়ারা থেকে সূরা ইয়াসীন, ষষ্ঠ মন্যিল সূরা আস সাফফাত থেকে সূরা আল হজুরাত, সপ্তম মন্যিল সূরা ক্রাফ থেকে সূরা আন নাস।

কোরআনে বর্ণিত দশ হুন মহিলা

| ক্রামক | नेং कोत्रवार्ति यंखार्ति धरमरह | সূরার নাম |
|------------|---|----------------------------|
| ٥. | আয়েশার বর্ণনা কোরআনে আছে, তবে সরাসরি তার নাম উল্লেখ করা হয়নি | সূরা আন নূর |
| ર. | উম্মে মুসা | সূরা আল কাছাছ |
| ૭. | উখতে মুসা | সূরা আল কাছাছ |
| 8. | ইমরাতে ফেরাউন | সূরা আল কাছাছ |
| œ. | ইমরাতে ইমরান | সূরা আলে ইমরান |
| ৬. | ইমারাতে ইবরাহীম | সূরা হুদ, সূরা আয যারিয়াত |
| ٩. | ইমরাতৃন্থ (আবু লাহাবের স্ত্রী) | সূরা লাহাব |
| b . | ইমরাতাইনে | সূরা আন নামল |
| ð . | ইমরাত | সূরা আন নাম ল |
| ٥٥. | ইমরাতৃল আযীয | স্রা ইউসুফ |

कांत्रजात्न উল্লেখিত ধ্বংসপ্রাপ্ত জ্বাতিসমূহের নাম

১. আ'দ, ২. সামৃদ, ৩. লৃত, ৪. নৃহ, ৫. সাবা, ৬. তুব্বা, ৭. বনী ইসরাঈল. ৮. আসহাবে কাহফের সাথে সংশ্রিষ্ট, ৯. আসহাবুস সাবত, ১০. আসহাবুল কারিয়াহ, ১১. আসহাবুল আইকা, ১২. আসহাবুল উপদৃদ, ১৩. আসহাবুর রাস, ১৪. আসহাবুল ফিল। 🗖

কোরআন শরীফে

উনিশ সংখ্যাটির মোজেযা

মিসরের খ্যাতনামা বিজ্ঞানী ড. রশীদ খলিফা কোরআন নিয়ে এক ব্যাপক গবেষণা চালিয়েছেন। তিনি প্রাথমিকভাবে কোরআনের প্রতিটি অক্ষর যেভাবে কোরআনে সন্নিবেশিত আছে সেভাবেই তাকে কম্পিউটারে বিন্যন্ত করেন। কোরআনে ১১৪টি স্বার অবস্থান এবং ২৯টি স্বার শুরুতে ব্যবহৃত 'হরুফে মোকান্তায়াত' যে নিয়মে বিন্যন্ত আছে সেনয়মের ভিত্তিতে তিনি হিসাব করতে শুরু করেন। এতে করে কোরআনের কিছু অলৌকিক তত্ত্ব তাঁর কম্পিউটার ক্রীনে ভেসে ওঠে। এ আলৌকিক তত্ত্বের একটি হচ্ছে এই যে, সমন্ত কোরআন গণিতের এক রহস্যময় বন্ধনে আবদ্ধ হয়ে আছে। কোরআনের সর্বত্র একটি অভিনব ও বিশ্বয়কর গাণিতিক সংখ্যার জাল বোনা রয়েছে। সমগ্র কোরআন যেন ১৯ সংখ্যাটিরই একটি সুদৃঢ় বন্ধন।

এই সংখ্যাটির মাধ্যমে গ্রন্থটিকে এমন এক গাণিতিক ফর্মূলায় সাজিয়ে রাখা হয়েছে যেন এতে ব্যবহৃত বর্ণমালা, শব্দ ও আয়াতসমূহের কোথাও কোনো রকম পরিবর্তন, পরিবর্ধন, সংযোজন এবং বিয়োজন করা কারো পক্ষে সম্ভব না হয়। এই ফর্মূলাটি তৈরী হয়েছে ১৯ সংখ্যাটির গাণিতিক অবস্থান দিয়ে।

কোরআন শরীফের প্রত্যেক সূরার শুরুতে 'বিসমিল্লাহির রাহমানির রাহীম' আয়াভটি আছে (সূরা 'আত্ তাওবা' ব্যতীত)। সূরা 'আত্ তাওবা'র শুরুতে বিসমিল্লাহ না থাকলেও সূরা 'নমল'-এ যেহেতু এই বাক্যটি দু'বার আছে তাই এর সংখ্যাও সূরা সংখ্যার মতো সর্বমোট ১১৪-ই থেকে গেলো।

এই ক্ষুদ্র আয়াতটি ৪টি শব্দ এবং ১৯টি অক্ষর দ্বারা গঠিত। শব্দ চারটি হচ্ছে, 'ইস্ম', 'আল্লাহ', 'রহমান' এবং 'রহীম'। ইস্ম অর্থ নাম, আল্লাহ হচ্ছে স্রষ্টার মূল নাম, রহমান অর্থ দাতা, রহীম অর্থ করুণাময়।

সমর্থ কোরআনে 'ইস্ম' শব্দটি ব্যবহৃত হয়েছে ১৯ বার, যা ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়। 'আল্লাহ' শব্দটি ব্যবহৃত হয়েছে ১৯৮ বার, তাও ১৯ দ্বারা বিভাজ্য। 'রহমান' শব্দটি ব্যবহৃত হয়েছে ৫৭ বার, একেও ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায় এবং রহীম শব্দটি ব্যবহৃত হয়েছে ১১৪ বার, তাকেও ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়। কোরআনে বর্ণিত আল্লাহ তায়ালার সর্বমোট নামের সংখ্যা (মূল ও গুণবাচক মিলে) ১১৪, তাকেও ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়।

এই চারটি শব্দের গুনিতক সংখ্যার যোগফল হচ্ছে ১৫২, একইভাবে বিসমিল্লাহ শব্দের গুণিতক সংখ্যার যোগফলও ১৫২। এ ব্যাপারে আরেকটি জিনিসও কোরআন পাঠকের মনে দারুল কৌতৃহল সৃষ্টি করবে। 'বিসমিল্লাহির রাহমানির রাহীম' বাক্যটির চারটি শব্দ কোরআনে যতোবার এসেছে, এর অপরিহার্য গুণবাচক শব্দটিও ঠিক ততোবারই এসেছে। যেমন, ইসম শব্দটি এসেছে ১৯ বার এর অপরিহার্য গুণবাচক শব্দ হচ্ছে 'ওয়াহেদ' (একক), এই শব্দটিও এসেছে ১৯ বার। আল্লাহ শব্দটি ২৬৯৮ বার এসেছে, এর স্বাভাবিক গুণবাচক শব্দ হচ্ছে 'যুল ফাদল' (দয়ার আধার) কথাটিও এসেছে ২৬৯৮ বার। 'রহমান' কথাটি এসেছে ৫৭ বার, এর স্বাভাবিক পরবর্তী গুণবাচক শব্দ হছে 'মাজীদ' (পবিত্র) তাও এসেছে ৫৭ বার। রহীম এসেছে ১১৪বার, এর সন্মানসূচক পরবর্তী গুণবাচক শব্দ 'জামেউ' (একত্রকারী), এটাও এসেছে ১৪৪ বার। আমরা জানি, রহমান হচ্ছে আল্লাহ তায়ালার দুনিয়ার নাম, অর্থাৎ এখানে সবার প্রতি তিনি দয়ালু, আখেরাতে তিনি দয়ালু গুধু মোমেনদের জন্যে, সেখানে যেহেতু সব নেক কাজের বিনিময় ছিগুন, তাই তার আখেরাতের দয়ালু 'রহীম' শব্দটি দুনিয়ায় 'রহমান'-এর ছিগুণ অর্থাৎ ১১৪ বার এসেছে।

আরবী ভাষার বর্ণসমূহের নিজস্ব একটা সংখ্যামান আছে। সে হিসেবে 'বিসমিল্লাহ'-এর আয়াতটিতে ব্যবহৃত ১৯ হরফের সংখ্যামানের সমষ্টি হচ্ছে ৭৮৬। 'বিসমিল্লাহ'-এর আয়াতটিতে একই অক্ষরের পুনরাবৃত্তি বাদ দিলে মোট বর্ণ থাকে ১০টি। ১৯ সংখ্যায় ব্যবহৃত অংক দু'টির যোগফল ১+৯=১০। 'বিসমিল্লাহ'তে পুনরাবৃত্ত অক্ষরগুলোর সংখ্যামান হচ্ছে ৪০৬। ৭৮৬ থেকে ৪০৬ বাদ গেলে বাকী থাকে ৩৮০, ভাও ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়।

এই উনিশটি বর্ণমালার ছোট বাক্যটি 'বিসমিল্লাহির রহমানির রাহীম' দিয়ে আল্লাহ তায়ালা গোটা কোরআনকে যেন একটি দুক্ছেদ্য বাঁধনে বেঁধে রেখেছেন।

সূরা আল মোদাসসেরের ৩০ নং আয়াতে সম্ভবত আল্লাহ তায়ালা একথাটাই বুঝাতে চেয়েছেন, সাদামাটা বাংলার অর্থ এই আয়াতের হচ্ছে, 'এবং তার ওপর রয়েছে উনিশ'; কিন্তু প্রশ্ন হচ্ছে 'কার ওপর'! আগের আয়াতে যেহেতু দোযখের বর্ণনা রয়েছে তাই কেউ কেউ বলেছেন, এরা হচ্ছে দোযখের পাহারাদার। কেউ বলেছেন, এটা দিয়ে মানুষের ১৯ প্রকারের ইন্দ্রিয় শক্তির কথা বুঝানো হয়েছে। আসলে আল্লাহর নবী নিজের মুখে একথাটার অর্থ না বলে মনে হয় ভবিষ্যত গবেষণার দ্বার খোলা রাখতে চেয়েছেন। কারণ তার মুখ দিয়ে একবার যদি এর তাৎপর্য বলে দেয়া হতো তাহলে মানবসভ্যতা দিনে দিনে বিজ্ঞান ও প্রযুক্তির দিক থেকে যে হারে অর্থগতির দিকে এগিয়ে চলেছে তার আলোকে এ সব আয়াতের ব্যাখ্যার দরজা চির দিনের জন্যেই বন্ধ হয়ে যেতো।

আলোচ্য সূরার এই আয়াতটির ক্রমিক নম্বর হচ্ছে ৩০, এ পর্যন্ত এসে ওহী নাযিলে একটু বিরতি দিয়ে আল্লাহ তায়ালা এর আগে নাযিল করা সূরা 'আলাক'-এর ১৪টি আয়াত নাযিল করলেন। স্বরণ থাকার কথা, সূরা আলাক-এর প্রথম ৫

কোরআনের উনিশ সংখ্যাটির মোজেযা

আয়াত দ্বারা দুনিয়ার বুকে ওহী নাযিল গুরু হয়। এই ৫ আয়াত সহ সূরা আলাক-এর গোটা সূরার আয়াতের সংখ্যা দাঁড়ালো ১৯। আল্লাহ তায়ালা কোরআনের প্রথম সূরাটিকে এভাবেই ১৯ দিয়ে বেঁধে দিলেন, আবার সেই প্রথম ৫টি আয়াতে রয়েছে ১৯টি শব্দ। গুনলে দেখা যাবে, এই ৫ আয়াতে রয়েছে ৭৬টি অক্ষর। এবার গোটা সূরা 'আলাক'টির প্রতি লক্ষ্য করলে দেখা যাবে, তাতে ২৮৫টি অক্ষর বয়েছে। সূরাটি যদিও নাযিল হয়েছে সবার আগে, কিন্তু কোরআনে তার জন্যে যে ক্রমিক নম্বর দেয়া আছে তা হচ্ছে ৯৬। এবার কোরআনের শেষের দিক থেকে যদি কেউ গুনতে গুরু করে তাহলে ১১৪ থেকে-৯৬ পর্যন্ত গুন আসতে আসতে দেখা যাবে, এই সূরাটির অবস্থান হবে ১৯। এখানে পরিবেশিত প্রতিটি পরিসংখ্যানকেই ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়। তাছাড়া গাণিতিক বিদ্যার ক্ষুত্রতম সংখ্যা ও সর্ববৃহত সংখ্যাটিরও এক অভূতপূর্ব সংযোগ রয়েছে এখানে। এর একটি হচ্ছে ১ ও দ্বিতীয়টি হচ্ছে ৯। লক্ষণীয় বিষয় হচ্ছে কোরআনের অসংখ্য পরিসংখ্যানই ১৯ দিয়ে ভাগ করতে পারলেও এই ১৯ সংখ্যাটি কিন্তু অন্য কোনো সংখ্যা দিয়ে ভাগ করা যায় না। মনে হয় কোরআনের মালিক বিভাজ্য ও বিভাজকের মধ্যে একটা মৌলিক সীমারেখা টানতে চেয়েছেন, যেমন সীমারেখা টেনে রাখা হয়েছে সূষ্টা ও তার সৃষ্টির মাঝে।

প্রথম ওহী সূরা আলাক-এর প্রথম ৫টি আয়াতের শব্দ সংখ্যা ১৯এর মতো কোরআনে বর্ণিত আরো বহু পরিসংখানও ১৯ ঘারা ভাগ করা যায়। যেমন যিনি কোরআন নিয়ে এসেছেন তিনি হলেন 'রসূল', কোরআনে রসূল শব্দটি ৫১৩ বার এসেছে। যার বাণী রসূল বহন করে এনেছেন তিনি হচ্ছেন 'রব', কোরআনে এ শব্দটি এসেছে ১৫২ বার। কোরআনের কেন্দ্রীয় দাওয়াত হচ্ছে 'এবাদাত', কোরআনে এ শব্দটি ১৯ বার এসেছে এই কেন্দ্রীয় দাওয়াতের অপর পরিভাষা হচ্ছে 'আবদ', এটিও এসেছে ১৫২ বার আর যে ব্যক্তি এই 'আবদ'-এর কাজ করবে তাকে বলা হয় 'আবীদ', কোরআনে এটিও এসেছে ১৫২ বার। এ সব কয়টি পরিসংখ্যানই ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়। অবিশ্বাস্য ব্যাপার হচ্ছে কোরআনে 'সংখ্যা' এর যে উল্লেখ আছে তা এসেছে সর্বমোট ২৮৫ বার, আবার এর প্রতিটি সংখ্যা একত্রে যোগ করলে যোগফল দাঁড়ায় ১৭৪৫৯১ এর সব কয়টিকেই ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়।

কোরআনের বিভিন্ন সূরার শুরুতে বিচিত্র কিছু বর্ণমালা ব্যবহাত হয়েছে। এগুলোকে বলা হয় 'হরুফে মোকান্তায়াত' এগুলোর অর্থ আল্লাহ তায়ালা ছাড়া কেউ জানে না, অবশ্য গবেষণার ফলে এগুলোর একটা গাণিতিক রহস্য জানা গেছে। এই মোকান্তায়াত হরফগুলো মোট ২৯টি সূরার শুরুতে ১৪টি বিভিন্ন বর্ণমালায় সাজানো রয়েছে, তাও আবার ১৪টি ভিন্ন ভিন্ন পদ্ধতিতে এগুলোকে এ সব জায়গায় বসানো হয়েছে। এদের সম্মিলিত যোগফল হচ্ছে (২৯+১৪)=৫৭ যা ১৯ ছারা বিভাজ্য।

'আলিফ-লাম-মীম' মোকান্তায়াতটি মোট ৬টি স্রার শুরুতে ব্যবহৃত হয়েছে। এই স্রাণ্ডলোর মধ্যে আলীফ, লাম, মীম বর্ণ তিনটি যতোবার ব্যবহৃত হয়েছে, তার সমষ্টি আবার ১৯ দ্বারা বিভাজ্য। পরিসংখ্যান মিলিয়ে দেখা যাক, স্রা 'বাকারায়' 'আলিফ' এসেছে ৪৫০২ বার, 'লাম' এসেছে ৩২০২ বার, 'মীম' এসেছে ২১৯৫ বার, এ সবগুলোর যোগফল দাঁড়ায় ৯৮৯৯, যাকে ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়।

সূরা 'আলে ইমরান'-এ 'আলিফ' এসেছে ২৫২১ বার, 'লাম' এসেছে ১৮৯২ বার, 'মীম' এসেছে ১২৪৯ বার। এগুলোর যোগফল দাঁড়ায় ৫৬৬২, যা ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়।

সূরা-'আনকাবৃত'-এ 'আলিফ' এসেছে ৭৭৪ বার, 'লাম' এসেছে ৫৫৪ বার, 'মীম' এসেছে ৩৪৪ বার। এগুলোর যোগফল দাঁড়ায় ১৬৭২, যা ১৯ দারা বিভাজ্য।

সূরা 'রোম'-এ 'আলিফ' এসেছে ৫৪৪ বার, 'লাম' এসেছে ৩৯৩ বার, 'মীম' এসেছে ৩১৭ বার, এগুলোর যোগফল দাঁড়ায় ১২৫৪, একেও ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়।

সূরা 'লোকমান'-এ 'আলিফ' এসেছে ৩৪৭ বার, 'লাম' এসেছে ২৯৭ বার, 'মীম' এসেছে ১৭৩ বার, এর যোগফল দাঁড়ায় ৮১৭ যা ১৯ দারা ভাগ করা যায়।

সূরা 'সাজদায়' 'আলিফ' এসেছে ২৫৭ বার, 'লাম' এসেছে ১৫৫ বার, 'মীম' এসেছে ১৫৮ বার, এর যোগফল দাঁড়ায় ৫৭০, যা ১৯ দারা ভাগ করা যায়।

আবার এই সবগুলো সূরার অক্ষরগুলো গুনলে দেখা যাবে এতে 'আলিফ' এসেছে মোট ৮৯৪৫ বার, 'লাম' এসেছে মোট ৬৪৯৩ বার, মীম এসেছে মোট ৪৪৩৬ বার, মোট যোগফল দাঁড়ায় ১৯৮৭৪, একেও ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়। আলিফ লাম মীম-অক্ষর তিনটির আলাদা যোগফলকে যেমন আবার ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়, তেমনি সূরা ছয়টির একত্রিত যোগফল ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়।

সূরা 'মারইয়াম' এর মোকান্তায়াত গঠিত হয়েছে ভিন্ন ধরনের ৫টি বর্ণমালা দিয়ে। ক্বাফ, হা, ইয়া, আইন, সোয়াদ। লক্ষ্য করলে দেখা যাবে, এ সূরায় 'ক্বাফ' এসেছে ১৩৭ বার, 'হা' এসেছে ১৭৫ বার, 'ইয়া' এসেছে ৩৪৩ বার, 'আইন' এসেছে ১১৭ বার, 'সোয়াদ' এসেছে ২৬ বার। অর্থাৎ এ সূরাটিতে এ হরফসমূহ মোট ৭৯৮ বার ব্যবহৃত হয়েছে, একে ১৯ দ্বারা ভাগ করা যায়।

স্রা 'আ'রাফ'- এর মোকান্তায়াত হচ্ছে 'আলিফ', 'লাম', 'মীম', 'সোয়াদ'। এই স্রাটিতে 'আলিফ' এসেছে ২৫২৯ বার, 'লাম' এসেছে ১৫৩০ বার, 'মীম' এসেছে ১১৬৪ বার, 'সোয়াদ' এসেছে ৯৭ বার। এই মোকান্তায়াত ৪টির যোগফলকেও ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়।

কোরআনের উনিশ সংখ্যাটির মোজেযা

সূরা 'ইয়াসীন'-এর মোকান্তায়াত হচ্ছে 'ইয়া' এবং 'সীন'। সূরাটিতে এ দুটো অক্ষর ব্যবহৃত হয়েছে মোট ২৮৫ বার, যাকে ১৯ দারা ভাগ করা যায়।

সূরা 'মোমেন' থেকে সূরা 'আহক্বাফ' পর্যন্ত এই ৭টি সূরার শুরুতে রয়েছে একই 'মোকান্তায়াত'- হা এবং মীম। ধারাবাহিক এ সাতটি সূরায় হা এবং মীম– এ দু'টি অক্ষর মোট ২১৪৭ বার ব্যবহৃত হয়েছে, যা ১৯ দ্বারা বিভাজ্য। হরুক মোকান্তায়াত-এর মধ্যে হা-ভোয়া-সীন এবং ভোয়া, সীন, মীম বর্ণগুলোও আছে। এগুলো রয়েছে সূরা

হরক মোকাভারাত-এর মবে) হা-ড্যোরা-সান এবং ডোরা, সান, মাম বণভলোভ আছে। এভলো রয়েছে সূরা মারইয়াম, ড্যোয়াহা, শোয়ারা, নামল এবং কাছাছে। এ পাঁচটি সূরায় মোকাভায়াতসমূহ মোট ১৭৬৭ বার ব্যবহৃত হয়েছে, যা ১৯ ঘারা ভাগ করা যায়।

সূরা 'ইউনুস' এবং সূরা 'হদ' শুরু হয়েছে আলিফ লাম-রা এই মোকান্তায়াত দিয়ে। সূরা দুটোতে হরফ তিনটি ব্যবহার হয়েছে মোট ২৮৮৯ বার, এটি ১৯ দারা বিভাজ্য।

সূরা ইউস্ফ, সূরা ইবরাহীম এবং সূরা আল হেজরেও একই মোকান্তায়াত রয়েছে অর্থাৎ 'আলিফ', 'লাম', 'রা'। সূরা তিনটিতে এই হরফগুলোর মোট ব্যবহার হচ্ছে এমন ঃ

সূরা ইউসুফ –এ অক্ষরগুলো এসেছে ২৩৭৫ বার, সূরা ইবরাহীম–এ অক্ষরগুলো এসেছে, ১১৯৭ বার, সূরা হেজর–এ এসেছে ৯১২ বার। এর প্রতিটি সংখ্যাই ১৯ দ্বারা বিভাজ্য।

সূরা 'রা'দ' এর মোকান্তায়াত 'আলিফ, লাম, মীম, রা'। এতে আছে ৪টি অক্ষর। এ ৪টি অক্ষর এই স্রাটিতে মোট ১৪৮২ বার এসেছে, যাকে ১৯ দারা ভাগ করা যায়।

মোকান্তারাত সম্বলিত সর্বশেষ সূরা হচ্ছে সূরা 'আল কালাম'। এর গুরুতে মাত্র একটি হরফ বিশিষ্টি মোকান্তারাত ব্যবহৃত হয়েছে। সেটি হচ্ছে 'নুন'। এ সূরায় এই অক্ষরটি এসেছে ১৩৩ বার, এটি নিসন্দেহে ১৯ দ্বারা বিভাজ্য।

তথু 'ক্বাফ' অক্ষর দিয়ে তরু হয়েছে সূরা ক্বাফ। এখানে ক্বাফ অক্ষরটি গণনায় ঠিক রাখার জন্যে আল্লাহ তায়ালা কি ব্যবস্থা নিয়েছেন তা লক্ষণীয়।

আল্লাহ তায়ালা কোরআনে বারোটি জায়গায় লুত সম্প্রদায়ের কথা উল্লেখ করেছেন এবং প্রতিবারেই তিনি তাদের সম্বোধন করেছেন 'কুণ্ডমে লুত' বলে। কিন্তু সূরা কাফ ১৩ নম্বর আয়াতে এসে 'কাণ্ডমে লুত' এর স্থলে 'ইখণ্ডয়ানু লুত' বলা হয়েছে, অর্থের দিক থেকে উভয়টাই সমান। ব্যতিক্রম করার কারণ হচ্ছে এখানে যদি কণ্ডমে লুত শব্দ ব্যবহার করা হতো তাহলে এ সূরায় 'কাফ' এর সংখ্যা হতো ৫৮টি, ১৯ দ্বারা ভাগ করা যেতো না, সে কারণে একই অর্থ বিশিষ্ট 'ইখণ্ডয়ানু লুত' শব্দ ব্যবহার করে 'কাফ' এর সংখ্যা ৫৭ রাখা হয়েছে, যেন তাণ্ড ১৯ দ্বারা বিভাজ্য হয়।

'ছোয়াদ' অক্ষরটি তিনটি স্রার মোকান্তায়াতে ব্যবহৃত হয়েছে। এগুলো হচ্ছে স্রা আ'রাফ, মারইয়াম এবং ছোয়াদ। স্রা আ'রাফ-এ 'ছোয়াদ' এসেছে সর্বমোট ৯৭ বার, স্রা মারইয়াম-এ 'ছোয়াদ' এসেছে মোট ২৬ বার, স্রা ছোয়াদ-এ 'ছোয়াদ' অক্ষরটি এসেছে মোট ২৯ বার। এর সবকয়টির যোগফল সহজেই ১৯ দিয়ে ভাগ করা যায়।

এখানে আল্লাহ তায়ালার গাণিতিক ফর্মৃলা মেলানোর জন্যে কি বিষয়কর ব্যবস্থা নেয়া হয়েছে তা বিশেষভাবে লক্ষণীয়। আরবীতে 'বাছতাতান' শব্দের বানান লেখা হয়- 'বা', 'সীন', 'ছোয়া' ও 'তা'-দিয়ে, সূরা বাকারার ২৪৭ নম্বর আয়াতে এ শব্দটি এই বানানেই এসেছে। কিছু সূরা আ'রাফের ৬৯ নং আয়াতে 'বাছতাতান' শব্দের বানান এসেছে 'বা', 'ছোয়াদ', 'ছোয়া' এবং 'তা' দিয়ে, এর সাথে ছোয়াদ এর ওপর ছোয়্ট করে একটি 'সিন' বসিয়ে দেয়া হয়েছে। এতে করে 'বাছতাতান' শব্দের অর্থের কোন তারতম্য ঘটেনি। এটা না করা হলে এ সূরা তিনটিতে ছোয়াদ— এর সংখ্যা একটা কম হয়ে যেতো এবং তা ১৯ দিয়ে ভাগ করা যেতো না। কি আন্টার্থ কুদরত!

কোরআন শরীফে শব্দ ও আয়াতের পুনরাবৃত্তির রহস্য

কোরআন শরীফের সূরা 'আল ফজর'-এর ৭ নম্বর আয়াতে 'ইরাম' নামক একটি গোত্র কিংবা শহরের কথা বলা হয়েছে। কিন্তু 'ইরাম'-এর নাম কোনো ইতিহাসে পাওয়া যায় না। তাই কোরআন শরীফের তাফসীরকারকরাও সুস্পষ্টভাবে এ শব্দটির অর্থ বলতে সক্ষম হননি।

১৯৭৩ সালে সিরিয়ার 'এরল্স' নামক একটি পুরনো শহরে খনন কার্যের সময় কিছু পুরনো লিখন পাওয়া যায়। এ সমস্ত লিখন পরীক্ষা করে সেখানে চার হাজার বছরের একটি পুরনো সভ্যতার নিদর্শন পাওয়া গেছে। এ লিখনগুলোর মধ্যে দেখা গেছে 'ইরাম' শহরের উল্লেখ আছে। এক সময় এরল্স অঞ্চলের লোকজন 'ইরাম' শহরের লোকজনের সংগে ব্যবসা-বাণিজ্য করতো। এ সভ্যটা আবিষ্কৃত হলো মাত্র সেদিন অর্থাৎ ১৯৭৩ সালে। প্রশ্ন হচ্ছে, দেড় হাজার বছর আগে নাথিল করা কোরআন শরীকে এই শহরের নাম এলো কি করে? আসলে কোরআন শরীক হচ্ছে আল্লাহর বাণী, আর আল্লাহ তায়ালা এখানে 'ইরাম' শহরের উদাহরণ দিয়েছেন।

কোরআন শরীফে হযরত মোহাম্মদ (স.)-এর একজন দুশমনের নাম উল্লেখ করা হয়েছে, সে হচ্ছে আবু লাহাব। ওহী নাযিল হওয়ার পর যদি আবু লাহাব ইসলাম কবুল করতো তাহলে কোরআন শরীফের আয়াতটি মিধ্যা প্রমাণিত হতো, কিন্তু আবু লাহাব ইসলাম কবুল করেনি এবং কোরআন শরীফের বাণী চিরকালের জন্য সত্য হয়েই রয়েছে।

কোরআন শরীফে সূরা 'আর রোম'-এ পারস্য সাম্রাজ্য ধ্বংসের ভবিষ্যদ্বাণী করা হয়েছে এবং যে সময় এই ওহী নাযিল হয় তথন মানুষের পক্ষে বিশ্বাস করা অকল্পনীয় ছিলো যে, রোমকদের যারা পরাজ্ঞিত করলো তারা অচিরেই তাদের হাতে ধ্বংস হতে পারে, কিন্তু কোরআন শরীফ এ বিষয়ে ভবিষদ্বাণী করেছে এবং তা এ আয়াত নাযিল হবার ৭ বছর সময়ের মধ্যে, অর্থাৎ ৬২৭ খ্রীষ্টাব্দে এসে সত্য প্রমাণিত হয়েছে।

এ আয়াতে 'ফী আদনাল আরদ' বলে আল্পাহ ভায়ালা গোটা ভূ-মন্ডলের যে স্থানটিকে 'সর্বনিম্ন অঞ্চল' বলেছেন তা ছিলো সিরিয়া, ফিলিন্তিন ও জর্দানের পতিত 'ডেড সী' এলাকা। এ ভূখন্ডেই ৬২৭ খৃটান্দে রোমানরা ইরানীদের পরাজিত করে। মাত্র কিছুদিন আগে আবিষ্কৃত ভূ-জরিপ অনুযায়ী এটা প্রমাণিত হয়েছে যে, এই এলাকাটা সারা দুনিয়ার মধ্যে আসলেই নিন্মতম ভূমি। 'সী লেবেল' থেকে ৩৯৫ মিটার নীচে। এ জায়গাটা যে গোটা ভূ-খন্ডের সবচেয়ে নীচু জায়গা এটা ১৪শ বছর আগের মানুষরা কি করে জানবে। বিশেষ করে এমন একজন মানুষ, যিনি ভূ-তত্ত্ব প্রাণীতত্ত্ব ইত্যাদি কোনো তত্ত্বেরই ছাত্র ছিলেন না।

কোরআন শরীফের এক জায়গায় সমুদ্রের তরংগ সম্বন্ধে বলা হয়েছে, ঢেউ যখন অগ্রসর হয় তখন দুটি ঢেউয়ের মধ্যবর্তী স্থান অন্ধলার থাকে। আমরা জানি হয়রত মোহাম্মদ (স.) মরুভূমি অঞ্চলের সস্তান ছিলেন, তিনি সমুদ্র কখনো দেখেননি। সূতরাং সমুদ্র তরংগের দুটি ঢেউয়ের মধ্যবর্তী স্থান যে অন্ধলার হয় তা তিনি জানবেন কি করে? এতে প্রমাণিত হয়, হয়রত মোহাম্মদ (স.) নিজে কোরআন রচনা করেননি। আসলেই প্রচন্ড ঝড়ের সময় সমুদ্র যখন বিক্রুক্ক হয় তখন দ্রুতগতিসম্পন্ন তরংগওলোর মধ্যবর্তী অংশ সম্পর্ণ অন্ধলারাচ্ছনু মনে হয়।

কোরআনের আরেকটি বিশ্বয়কর বিষয় হচ্ছে, লোহা ধাড়টির বিবরণ। কোরআনের সূরা 'আল হাদীদ'-এ আল্পাহ তায়ালা বলেছেন, 'আমি লোহা নাযিল করেছি, যাতে রয়েছে প্রচুর শক্তি ও মানুষদের জন্য প্রভুত কল্যাণ।' লোহা নাযিলের বিষয়টি তাফসীরকাররা নানাভাবে ব্যাখ্যা করতে চেয়েছেন; কিন্তু যেখানে আল্পাহ তায়ালার স্পষ্ট 'নাযিল' শব্দটি রয়েছে সেখানে এতো ব্যাখ্যা বিশ্লেষণের দিকে না গিয়ে আমরা যদি কোরআনের আক্ষরিক অর্থের দিকে তাকাই তাহলে দেখতে পাবো, আধুনিক বিজ্ঞানের উদ্ভাবনীও ঠিক একথাটাই বলেছে। পদার্থবিজ্ঞানীরা বলেন, লোহা উৎপাদনের জন্যে যে ১৫ লক্ষ সেলসিয়াস তাপমাত্রা প্রয়াজন তার কোনো উপকরণ আমাদের পৃথিবীতে নেই। এটা একমাত্র সূর্বের তাপমাত্রা ধারাই সম্বন। হাজার হাজার বছর আগে সূর্যদেশে প্রচন্ত বিক্লোরণের ফলে লোহা নামের এ ধাড়ু মহাশুন্যে ছিটকে পড়ে। পৃথিবীর মাধ্যাকর্ষণ শক্তির টানে তা পৃথিবীতে 'নাযিল' হয়। লোহা সম্পর্কে আধুনিক বিজ্ঞানের আবিষ্কৃত তথ্য ঠিক একথাটাই প্রমাণ করেছে। দেড় হাজার বছর আগের আরব বেদুইনরা বিজ্ঞানের এ স্কটিল সূত্র জানবে কি করে?

এই সূরার আরেকটি অংকগত মোজেযাও রয়েছে। ক্রমিক নম্বর অনুযায়ী 'সূরা আল হাদীদ' কোরআনের ৫৭তম সূরা। আরবীতে 'সূরা আল হাদীদ'- এর সংখ্যাগত মান হচ্ছে ৫৭। তধু 'আল হাদীদ' শব্দের অংকগত মান হচ্ছে ২৬, আর লোহার আণবিক সংখ্যা মানও হচ্ছে ২৬।

কোরআনে অনেক জায়গায়ই একের সংগে অন্যের তুলনা উপস্থিত করা হয়েছে। এ তুলনা উপস্থিত করার ব্যাপারে একটি অবিশ্বাস্য মিল অবলম্বন করা হয়েছে এবং তা হচ্ছে, সে দু'টি নাম অথবা বস্তুকে সমান সংখ্যাতেই আল্লাহ তায়ালা তাঁর কেতাবে উল্লেখ করেছেন। যেমন, কোরআন শরীফে সূরা 'আলে ইমরান'-এর ৫৯ নম্বর আয়াতে আল্লাহ তায়ালা বলেছেন, 'আল্লাহ তায়ালার কাছে ঈসার তুলনা হচ্ছে আদমের মতো।'

এটা যে সত্য তা আমরা বুঝতে পারি। কারণ, মানবন্ধনাের স্বাভাবিক প্রক্রিয়ায় এঁদের কারােরই হ্বন হয়নি। আদম (আ.)-এর মাতাও ছিলাে না, পিতাও ছিলাে না এবং ঈসা (আ.)-এরও পিতা ছিলাে না। এখন এই তুলনাটি যে কতাে সত্য তার প্রমাণ পাওয়া যায় যখন আমরা কােরজান শরীফে এ দু'টি নামের মােট সংখ্যা অনুসন্ধান করি। দেখা যাল্ছে,

কোরআনের শব্দ ও আয়াতের পুনরাবৃত্তির রহস্য

কোরআন শরীফে ঈসা (আ.) নামটি যেমন পঁচিশ বার এসেছে, তেমনি আদম (আ.) নামটিও এসেছে পঁচিশ বার। কোরআনের বাণীগুলো যে মানুষের নয় তা বোঝা যায় এ দু'টি নামের সংখ্যার সমতা দেখে। আল্লাহ তায়ালা যেহেতু বলেছেন, এ দুটো একই রকম। তাই সেগুলোর সংখ্যা গণনাও ঠিক একই রকমের রাখা হয়েছে।

এই তুলনার ক্ষেত্রে আরেকটি অলৌকিক বিষয় হলো, যেখানে তুলনাটি অসম সেখানে সংখ্যা দুটিকেও অসম বলা হয়েছে। যেমন, কোরআনে বলা হয়েছে, 'সুদ' এবং 'বাণিজ্ঞা' এক নয়। আমরা দেখতে পাল্ছি, এ শব্দ দু'টির একটি কোরআনে এসেছে ছয় বার এবং অন্যটি এসেছে সাত বার।

বলা হয়েছে, 'জানাতের অধিবাসী ও জাহানামের অধিবাসী সমান নয়'। জানাতের সংখ্যা হচ্ছে আট, আর জাহানামের সংখ্যা হচ্ছে সাত।

সূরা 'আরাফ'-এ এক আয়াতে আছে 'যারা আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে তাদের উদাহরণ হচ্ছে কুকুরের মতো'। বিশ্বয়ে হতবাক হয়ে যেতে হয় যখন আমরা দেখি, 'যারা আমার সুস্পষ্ট আয়াতকে অস্বীকার করে' এই বাক্যটি কোরআনে সর্বমোট পাঁচ বার এসেছে। যেহেতু তাদের উদাহরণ দেয়া হয়েছে কুকুরের সাথে, তাই সমগ্র কোরআনে 'আল কালব' তথা কুকুর শব্দটাও এসেছে পাঁচ বার।

'সাবয়া সামাওয়াত' কথাটার অর্থ হলো 'সাত আসমান'। আক্রর্যের বিষয় হলো, কোরআনে এই 'সাত আসমান' কথাটা ঠিক সাত বারই এসেছে। 'খালকুস সামাওয়াত' আসমানসমূহের সৃষ্টির কথাটাও ৭ বার এসেছে, সম্ভবত আসমান ৭টি তাই। 'সাবয়াতু আইয়াম' মানে ৭ দিন। একথাটাও কোরআনে ৭ বার এসেছে।

অংকগত মোজেযা এখানেই শেষ নয়।

'দুনিয়া ও আখেরাত' এ দু'টো কথাও কোরআনে সমান সংখ্যায় এসেছে, অর্থাৎ সর্বমোট ১১৫ বার করে।

'ঈমান ও কৃষ্ণর' শব্দ দৃ'টোও সমপরিমাণে বলা হয়েছে, অর্থাৎ ২৫ বার করে ।

'গরম' ও 'ঠান্ডা' যেহেতু দুটো বিপরীতমুখী ঋতু, তাই এ শব্দ দুটো সমান সংখ্যক অর্থাৎ কোরআনে ৫ বার করে। এসেছে।

আরবী ভাষায় 'কুল' মানে বলো, তার জ্ববাবে বলা হয় 'কালু' মানে তারা বললো। সমগ্র কোরআনে এ দু'টো শব্দও সমান সংখ্যকবার এসেছে, অর্থাৎ ৩৩২ বার করে।

'মালাকুন' কিংবা 'মালায়েকা' মানে ফেরেশতা কিংবা ফেরেশতারা। কোরআনে এ শব্দটি এসেছে ৮৮ বার- একইভাবে ফেরেশতার চির শব্দ 'শয়তান' কিংবা 'শায়াতীন' এ শব্দটিও এসেছে ৮৮ বার ।

'আল খাবিস' মানে অপবিত্র, 'আত তাইয়েব' মানে পবিত্র। সমগ্র কোরআনে এ দু'টি শব্দ মোট ৭ বার করে, অর্থাৎ একই সংখ্যায় নাথিল হয়েছে।

প্রশু জাগতে পারে দুনিয়ায় ভালোর চাইতে মন্দই তো বেশী, তাহলে এখানে এ দুটো শব্দকে সমান রাখা হলো কিভাবে। এ কথার জবাবের জন্যে কোরআনের সূরা আনফালের ৩৭ নম্বর আয়াতটির দিকে লক্ষ্য করা যাক। এখানে আল্লাহ তায়ালা বলেছেন, 'অপবিত্রকে পবিত্র থেকে আলাদা করার জন্যে তিনি অপবিত্রকে একটার ওপর আরেকটা রেখে পুঞ্জীভূত করেন এবং সেগুলোকে জাহান্নামের আগুনে ফেলে দেন।' এতে বুঝা যায়, যদিও 'পাপ পুণ্য' সমান সংখ্যায় এসেছে, কিন্তু 'পুঞ্জিভূত' করা দিয়ে তার পরিমান যে বেশী তা বুঝিয়ে দেয়া হয়েছে।

ইয়াওমূন' মানে দিন। সমগ্র কোরআনে এ শব্দটি ৩৬৫ বার উল্লেখ করা হয়েছে। বছরে যে ৩৬৫ দিন, এটা কে না জানে। ইয়াওমূন শব্দের বহুবচন 'আইয়াম' মানে দিনসমূহ, এ শব্দটি এসেছে ৩০ বার। আরবী ভাষায় 'চাঁদ' হচ্ছে মাসের সূত্র সূচক, গড়ে বছরের প্রতি মাসে ৩০ দিন, এটাই হচ্ছে চান্দ্রবছরের নিয়ম। হতবাক হতে হয় যখন দেখি, চাঁদের আরবী প্রতিশব্দ 'কামার' শব্দটি কোরআনে মোট ৩০ বারই এসেছে।

'শাহরুন' মানে মাস, কোরআন মন্ত্রীদে এ শব্দটি এসেছে মোট ১২ বার। 'সানাতুন' মানে বছর, কোরআনে এ শব্দটি এসেছে ১৯ বার। কারণ হিসেবে আমরা সম্প্রতি আবিষ্কৃত গ্রীক পণ্ডিত মেতনের 'মেতনীয় বৃত্তের' কথা উল্লেখ করতে পারি। তিনিই প্রথম এ তম্বুটি আবিষ্কার করেন যে, প্রতি ১৯ বছর পর সূর্য ও পৃথিবী একই বৃত্তে অবস্থান করে।

কোরআনে 'ফুজ্জার (পাপী) শব্দটি যতোবার এসেছে, 'আবরার' (পুণ্যবান) শব্দটি তার ছিণ্ডণ এসেছে। অর্থাৎ 'ফুজ্জার' ৩ আর 'আবরার' ৬ বার। এর কারণ হচ্ছে, শান্তির তুলনায় পুরন্ধারের পরিমাণ আল্লাহ তায়ালা সব সময় দ্বিশুণ করে দেবেন বলে ওয়াদা করেছেন। কোরআনের সূরা সাবা'র ৩৭ নম্বর আয়াতে আল্লাহ তায়ালা বলেছেন 'এ ধরনের লোকদের জন্যেই (কেয়ামভে) দ্বিশুণ পুরন্ধারের ব্যবস্থা থাকবে। এটা হচ্ছে বিনিময় সে কাজের যা তারা দুনিয়ায় করে এসেছে'। এ কারণেই দেখা যায়, গোটা কোরআনে 'পাপী' ও 'পুণ্যবান' শব্দের মতো 'আযাব' শব্দটি যতোবার এসেছে, 'সওয়াব' শব্দটি তার ছিণ্ডণ এসেছে। অর্থাৎ আযাব ১১৭ বার, সোয়াব ২৩৪।

কোরআনে একাধিক জারগায় আল্লাহ তায়ালা বলেছেন, আল্লাহর পথে অর্থ ব্যয় করলে তিনি তার বিনিময় বাড়িয়ে দেবেন। সম্ভবত এ কারণেই কোরআনে 'গরীবী' শব্দটি এসেছে ১৩ বার, আবার তার বিপরীতে 'প্রাচুর্য' শব্দটি এসেছে ২৬ বার।

কোরআনের শব্দ ও আয়াতের পুনরাবৃত্তির রহস্য

কোরআনে কারীমের বিভিন্ন জায়গায় এভাবে গাণিতিক সংখ্যার অদ্ধৃত মিল দেখে কোরআনের যে কোনো পাঠকই বিশ্বয়ে হতবাক হয়ে ভাবতে থাকে. এটা নিসন্দেহে কোনো মানুষের কথা নয়।

কোনো একটি কাজ করলে তার যে অবশ্যম্ভাবী ফল দাঁড়াবে তার উভয়টিকে আশ্চর্যজনকভাবে সমান সংখ্যায় বর্ণনা করা হয়েছে। 'গাছের চারা উৎপাদন' করলে 'গাছ' হয়। তাই এ দুটো শব্দই এসেছে ২৬ বার করে। কোনো মানুষ 'হেদায়াত' পেলে তার প্রতি 'রহমত' বর্ষিত হয়, তাই এ দুটো শব্দ কোরআনে এসেছে ৭৯ বার করে। 'হায়াতের' অপরিহার্য পরিণাম হচ্ছে 'মওত' এ শব্দ দুটোও এসেছে ১৬ বার করে। আল্লাহ তায়ালা বলেছেন 'যাকাত' দিলে 'বরকত' আসে, তাই কোরআনে কারীমে 'যাকাত' শব্দ এসেছে ৩২ বার 'বরকত' শব্দও ৩২ বার এসেছে। 'আবদ' মানে গোলামী, আর 'আবীদ' মানে গোলাম। গোলামের কাজ গোলামী করা, তাই কোরআনে এই উভয় শব্দই এসেছে ১৫২ বার করে। 'মানুষ সৃষ্টি' কথাটা এসেছে ১৬ বার, আর মানুষ সৃষ্টির উদ্দেশ্য হচ্ছে 'এবাদাত'; সুতরাং তাও এসেছে ১৬ বার। 'নেশা' করলে 'মাতাল' হয়, তাই এ দুটো শব্দও এসেছে ৬ বার করে।

আর মাত্র দটো মোজেয়া বলে আমরা ভিন্ন আলোচনার দিকে অগ্রসর হবো।

কোরআনে 'ইনসান' শব্দটি এসেছে ৬৫ বার। এবার ইনসান বানাবার উপকরণগুলোকে কোরআনের বিভিন্ন জায়গা থেকে যোগ করে মিলিয়ে দেখা যাক। প্রথম উপাদান 'তোরাব' (মাটি) এটি এসেছে ১৭ বার, দ্বিতীয় উপাদান 'নুতফা' (জীবনকণা) এটি এসেছে ১২ বার, তৃতীয় উপাদান 'আলাক' (রক্তপিন্ত) এটি এসেছে ৬ বার, চতুর্থ উপাদান 'মোদগা' (মাংসপিন্ত) এটি এসেছে ৩ বার। পঞ্চম উপাদান হচ্ছে 'এযাম' (হাড়), এটি এসেছে ১৫ বার। সর্বশেষ উপাদান হচ্ছে 'লাহম' (গোশত), এ শব্দটি এসেছে ১২ বার। কোরআনে উল্লিখিত (সূরা হচ্ছে ৫) এ উপাদানগুলো যোগ করলে যোগফল হবে ঠিক ৬৫। আর এসব উপাদান দিয়ে যে 'ইনসান' বানানো হয়েছে তাও ঠিক ৬৫ বারই উল্লেখ করা হয়েছে।

আল্লাহ তায়ালা কোরআনের সূরা 'আল ক্মার'-এর প্রথম যে আয়াতটিতে চাঁদ বিদীর্ণ হওয়ার সাথে কেয়ামতের আগমন অত্যাসনু কথাটি বলেছেন, আরবী বর্ণমালার আক্ষরিক মান হিসাব করলে তার যোগ ফল হয় ১৩৯০, আর এই ১৩৯০ হিজরী (১৯৬৯ বৃঁটাব্দ) সালেই মানুষ সর্বপ্রথম চাঁদে অবতরণ করে, জানি না এটা কোরআনের কোনো মোজেয়া, না তা এমনিই এক ঘটনাচক্র, কিন্তু আল্লাহ তায়ালার এই মহান সৃষ্টিতে তো ঘটনাচক্র বলতে কিছুই নেই। এ কারণেই হয়তো মানুষের চাঁদে অবতরণের সালের সাথে কোরআনের আলোচ্য আয়াতটির সংখ্যামানের এই বিশ্বয়কর মিল আমরা দেখতে পাজি।

| কোরআনের পাতায় কোরআনের কিছু নাম নাম সূরা আয়াত | | | | |
|---|---|---|----------------|--|
| ۵. | | সূরা আয যোখরুফ | <u> </u> | |
| ે <i>ર.</i> ૨. | नूत | সূরা আন নেসা | 398 | |
| ે. ૭. | ্ব- হেদায়াত | সূরা ইউনুস | <i>(</i> 19 | |
| 8. | রহমাত | সূরা ইউনুস | ¢ 9 | |
| œ. | ফোরকান | সূরা আল ফোরকান | 3 | |
| ષ. હ. | শেফা | সূরা বনী ইসরাঈল | ৮২ | |
| ۹. | মাওয়েযাত | সূরা ইউনুস | ¢9 | |
| ъ. ъ. | যকরুম মোবারাক | সূরা আ ল আম্বিয়া | ¢o . | |
| ৯. | হেকমাত | সূরা আল ক্রামার | | |
| | মোহাইমেন | সূরা আল মায়েদা | <i>የ</i> 8৮ | |
| | হাকীম | সূরা ইউনুস | 3 | |
| | হাবল | সূরা আ লে ইমরান | ५०७ | |
| | কাওল | সূরা আত্ তারেক | ەد | |
| | আহসানুল হাদীস মোতাশাবেহাম মিনাল মাছানী | সূরা আঝ ঝুমার | <i>\$</i> 9 | |
| ১ ৫. | তান্যীল | সূরা আশ শোয়ারা | <i>ን</i> ৯২ | |
| ১৬. | রুত্ | _ু সূরা আশ ভ রা | (સ્ | |
| ١ ٩. | ওয়াহী | সূরা আল আম্বিয়া | 80 | |
| | বাছায়ের | ্ সূরা আ ল জা ছিয়া | ২০ | |
| ኔ ৯. | বায়ান | সূরা আলে ইমরান | 78 ₽ | |
| ২০. | ह ेलम | সূরা আল বাকারা | >8₫ | |
| ২১. | তাযকেরাহ | সূরা আল হাক্কাহ | 8b | |
| ર ર. | ছেদ্ক | সূরা আঝ ঝুমার | <u></u> | |
| | আমর | সূরা আত তালাক | œ | |
| | বুশরা | সূরা আল বাকারা | ৯৭ | |
| | মাজীদ | স্রা আল বুরুজ | ٤٢ | |
| ২৬. | . আযীয | সূরা হা-মীম-আস সাজদা | 82 | |
| ર ૧. | . বালাগ | সূরা ইবরাহীম | ৫২ | |
| ২৮. | . বাশীর | সূরা হা-মীম-আস সাজদা | ৩ | |
| ২৯. | , নাথীর | সূরা হা-মীম-আস সাজদা | • | |
| ৩০ | . डूर्क | সূরা আবাসা | 70 | |
| | | <u>₹</u> | _ | |

কোরআন শরীফ কিছু মৌলিক তাজওয়ীদ

মাখরাজ ঃ মাখরাজ শব্দের অর্থ বের হওয়ার স্থান। আরবী হরফগুলো যে যে স্থান থেকে উচ্চারিত হয় তার প্রতিটি স্থানকে মাখরাজ বলে। যেমন, হামযা হরফটি কণ্ঠনালীর নিম্নভাগ থেকে উচ্চারিত হয়। অতএব, কণ্ঠনালীর নিম্নভাগ হলো হাম্যার মাখরাজ।

মাখরাজ চেনার পদ্ধতি ঃ কোন হরফকে সাকিন দিয়ে তার ডানে হারাকাত বিশিষ্ট কোন হরফ বসিয়ে উচ্চারণ করলে স্বর যে স্থানে থেমে যায় তা-ই হচ্ছে সে হরফের সঠিক মাখরাজ। যেমন, $\hat{\mathbf{j}}(\hat{\mathbf{j}}-\hat{\mathbf{j}})$

মাধরাজের সংখ্যা ঃ আরবী ২৯ টি হরফের ১৭ টি মাখরাজ রয়েছে। মাখরাজগুলোকে পাঁচটি ভাগে ভাগ করা যায়।

(১) জাওফ (মুখ ও কণ্ঠনালীর ভেতরের খালি জায়গা), (২) হাল্ক (কণ্ঠনালীর ভেতরের খালি জায়গা), (৩) লেসান (জিহ্বা), (৪) শাফায়তান (দুই ঠোঁট), (৫) খায়শূম (নাসিকামূল)।

মদ্দের পরিচয় ঃ মদ্দের অর্থ লম্বা করা, অতিরিক্ত করা। মাদ্দের হরফ তিনটি, (১) আলিফ, যখন সাকিন হয় এবং তার ডানে যবর থাকে। যেমন نَانَ (২) ওয়াও, যখন সাকিন হয় এবং তার ডানে পেশ থাকে। যেমন, وَيْلُ (৩) ইয়া, যখন সাকিন হয় এবং তার ডানে যের থাকে। যেমন, وَيْلُ

মদে আসলী ঃ মদের হরফের পূর্বে যদি হাম্যা (ء) না থাকে এবং পরেও হাম্যা বা সুকূন না থাকে, তাহলে এ মদকে 'মদে আসলী' বলে । উদাহরণ ঃ وُقُوْمُوا لِلّٰهِ قَانِيْمُا وَاللّٰهِ عَانِيْمُا وَاللّٰهِ عَانِيْمُا وَاللّٰهُ عَانِيْمُا لَا اللّٰهُ عَانِيْمُا وَاللّٰهُ عَانِيْمُا وَاللّٰهُ عَانِيْمُا وَاللّٰهُ عَانِيْمُا وَاللّٰهُ عَانِيْمُ عَالِمُ اللّٰهُ عَانِيْمُ عَالِمُ اللّٰهُ عَانِيْمُا وَاللّٰهُ عَانِيْمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُمُ وَاللّٰهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ ع

মদে মোন্তাসেল ঃ একই শব্দে মদ্দের হরফের পরে যদি হাম্যা (১) আসে, তাহলে তাকে 'মদ্দে মোন্তাসেল' বলে।

উদাহরণ ৪ ্রি ক্রিক - ট্রিক - ট্রিক ক্রেকে মোন্তাসেলকে দুই বা তিন আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করতে হয়।

মান্দে মোনফাসেল ঃ পাশাপাশি অবস্থিত দু'টো শব্দের প্রথমটির শেষ হরফ মন্দের এবং দ্বিতীয় শব্দের প্রথম হরফটি হামযা (ء) হলে তাকে মন্দে মোনফাসেল বলে। উদাহরণ المُنْهُونَ الْمُونَا الْمُونَا الْمُونَا الْمُعَالِّمُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللل

মদ্দে আরবী ঃ মদ্দের হরফের পরে যদি ওয়াক্ফ করার কারণে সাকিন হয়, তবে তাকে মদ্দে আরবী বলে। উদাহারণ ঃ ﴿ اَلْمُوْمُ ﴿ اللَّهُ اللَّهُ ﴿ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ﴿ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا ال

নূন সাকিনের উদারহরণ ঃ ﴿ اَلْهُمُ ﴿ وَالْمُوا ﴿ الْكُلُوا لَهُ اللَّهُ اللّ

২. এদগাম ঃ এদগাম অর্থ প্রবেশ করানো। নূন সাকিন ও তানওয়ীনের পরে এদগামের কোন হরফ আসলে, ওই নূন সাকিন ও তানওয়ীনকে উচ্চারণ না করে, পরবর্তী হরফের মধ্যে প্রবেশ করিয়ে হরফটিকে তাশদীদ সহকারে পড়তে হয়।

এদগামের হরফ ছয়টি। যথা, ১৮-১-১-১-১ এর মধ্যে চারটি হরফে শুন্না হয়।

এ হরফ চারটি হচ্ছে, والمواقعة والموا

ন্ন সাকিনের উদাহরণ ، مَنْ يَتَوْلُ -مِنْ تَنْهَدَ ৩. কলব ঃ কলব অর্থ পরিবর্তন করা। নূন সাকিন ও তানওয়ীনের পরে مِ বর্ণ আসলে, সে নূন সাকিন ও তানওয়ীনের পরে مِ বর্ণ আসলে, সে নূন সাকিন ও তানওয়ীনকে হরফ দ্বারা পরিবর্তন করে গুন্না সহকারে পড়তে হয়।

سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ - زُوجٍ بَهِيْعٌ - مَشَّاءٍ بِنَعِيْدِ अनिखंशीत्नत डेमार्श्त مَنْ بَخِلَ - مِنْ بَعْلِ क्नार्शिक بَعْدِل عَلْمُ بَعْدِل اللهِ عَلَى المُعْرَقِ اللهِ عَلَى المُعْرَقُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلى اللهُ عَلى اللهُ عَلى اللهُ عَلَى اللهُ عَلى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلى اللهُ عَلى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى ا

8. এখফা ঃ এ খ্ফা অর্থ গোপন করা। নূন সাকিন ও তানওয়ীনের পরে এখ্ফার কোন একটি হরফ আসলে ওই নূন সাকিন ও তানওয়ীনকে শুন্নাহসহকারে উচ্চারণ করতে হয়। ইখফার হরফ পনেরটি, س من من من ط ظني ق ط

مَعِيْنًا طَيِّبًا - كَأَمُّا بِمَاقًا ﴿ তানওয়ীনের উদাহরণঃ كَنْتُرْ - مَنْ مَلْ ﴿ مَا اللَّهِ مَا المَّاهُ مَ

ওয়াজিব ভরা ঃ নূন ও মীমের উপর তাশদীদ হলে অবশ্যই সেখানে ভন্না করতে হবে, একে ওয়াজিব ভন্না বলে। যেমন, ঁু। দুঁ

কোরআন শরীফ কয়েকটি বিরতি চিহ্ন

| यद्श्रयाच ।यश्राञ्च ।वञ् | |
|--|--------------|
| 🗇 ৮ এটা হচ্ছে 'وقف مطلق' কথাটার সংক্ষিপ্ত রূপ, এর অর্থ বাক্য এখানে পূর্ণ হয়ে গেয়ে | ₹, |
| এখানে থামাটাই উত্তম। | |
| ना ह राष्ट्र अथात अरहाजिन राष्ट्र अर्थ क्रिय । এর অর্থ হচ্ছে এখানে প্রয়োজন হলে থামা যে | ত |
| পারে। | |
| 🗇 خود وقف مزوع এর সংক্ষেপ। এর অর্থ এখানে থামা যেতে পারে, তবে না থামাটা ভালো। | |
| 🗇 س হচ্ছে وقف مُرخص এর সংক্ষেপ। এর মানে এখানে কথা শেষ হয়নি, তবে বাক্য দী | र्घ |
| হওয়ার কারণে যদি থামতে হয় তাহলে এখানেই থামা উচিত। | |
| 🗖 হিচ্ছে وقف पूर् । এখানে না থামলে অর্থের মধ্যে মারাত্মক ভুল হওয়ার আশং | কা |
| রয়েছে। সুতরাং এখানে থামতেই হবে। কেউ একে وقف و اجب ও বলেছেন। কিন্তু সেক্ষে | |
| এ কথা মনে রাখতে হবে এ ওয়াজেবের অর্থ এ নয় যে, এখানে না থামলে কোনো বড় রকমে | |
| গুনাহ হয়ে যাবে, বরং উদ্দেশ্য হচ্ছে যতগুলো বিরতি চিহ্ন রয়েছে; তন্মধ্যে এখানে থামাটা | ₹ |
| रुष्ट (वनी श्रुराङ्गन । | _ |
| 🗇 у হচ্ছে تقف শব্দের সংক্ষিপ্ত রূপ। এর অর্থ এখানে থামা যাবে না। তবে থামা একেবারে | |
| যে অনুচিত তাও নয়; বরং এ চিহ্ন বিশিষ্ট এমন কিছু স্থান রয়েছে যেখানে থামা মোটেও অন্যা | |
| নয়। এর পরবর্তী শব্দ থেকে আয়াতের তেলাওয়াত শুরু করা যেতে পারে। এখানে থামে | |
| হলে সামনে অগ্রসর হওয়ার সময় পুনরায় আগের আয়াতের কিছু অংশের সাথে তা মিলি | |
| পড়া উত্তম। এই চিংগুলো সম্পর্কে নিশ্চিত করে বলা যায় না যে, এগুলো আল্লামা সাজাওয়ার্ন | |
| কর্তৃক আরো কয়েকটি চিহ্ন কোরআনের আয়াতের মধ্যে ব্যবহৃত হয় i সেগুলো সম্পনে | Þ |
| নিশ্চিত করে কিছু বলা যায় না, এমন একটি চিহ্ন হচ্ছে এই: | |
| ্রহছে এএ শব্দের সংক্ষেপ। যেখানে দুই ধরনের ব্যাখ্যা হতে পারে, অর্থাৎ এক ব্যাখ | IJ |
| অনুযায়ী এখানে বাক্য শেষ এবং অন্য ব্যাখ্যা অনুযায়ী পরবর্তী চিহ্নে বাক্য শেষ বুঝায় | |
| সুতরাং এর যে কোন এক স্থানে থামা যেতে পারে। তবে এক জায়গায় থামার পর পরবর্ত চিহ্নটিতে থামা ঠিক নয়। এই চিহ্নটির আরেক নাম হচ্ছে عابلت এ চিহ্নটি ইমাম আবু ফয | ग स्न |
| थित्नन करत्रहरून । | - 1 |
| اسكتيد চিহ্নটির নির্দেশ হচ্ছে শ্বাস না ছেড়ে কিছুটা থামা, এখানে একটু না থেমে পরবর্তী অংশে | ব |
| সাথে মিলিয়ে পাঠ করলে অর্থের মাঝে ভুল হওয়ার আশংকা রয়েছে। | - |
| ্র এ চিহ্নটির জায়গায় সাকতার চাইতে একটু বেশি পরিমাণ থামতে হবে, তবে লক্ষ্য রাখ্য | ত |
| इत्व त्यन श्रीत्र कृति ना यात्र । | • |
| ্র কারো কারো মতে এ চিংযুক্ত স্থানে থামা যেতে পারে। | |
| 'ফেক' অর্থ এখানে থামো। চিহ্নটি এমন স্থানে ব্যবহৃত হয় যেখানে পাঠকের মনে ধারণা সৃ | - |
| • | 0 |
| হতে পাবে যে, এখানে মনে হয় থামা যাবে না। | |
| আ مسلے হচ্ছে الوصل اولی বাক্যটির সংক্ষিপ্ত রূপ। এর অর্থ আগের পরের দুটি বাক্য মিলি | .4 |
| পড়া ভালো। | |
| 🗖 مل হচ্ছে قن يوصل বাক্যের সংক্ষেপ রূপ, এখানে থেমে যাওয়া উত্তম। | |
| এ বাক্যটি এমন স্থানে লেখা হয় যেখানে রাস্লুল্লাহ (স | .) |
| তেলাওয়াত করার সময় থামতেন। 🗇 | |
| - W | |

| কোরআনের কতিপয় পরিভাষা | | | | |
|------------------------------------|--|------------------|----------------------------------|--|
| ১. আল্লাহ | | | | |
| ১. আল্লাহ ২. আখেরাত | আল্লাহ প্ৰকাল | ৪১. ওসিলা | মাধ্যম, নৈকট্যের উপায় | |
| ৩. আরাফ | পরকাল কামার ও কামানাল্যর মধ্যরতী সাম | ৪২. ওছিয়ত | ওছিয়ত | |
| ৩. আর্বফ ৪. আহ্দ | জান্নাত ও জাহান্নামের মধ্যবর্তী স্থান অংগীকার করা | ৪৩. ওলিয়্যুন | বন্ধু, সাহায্যকারী | |
| ৫. আবাদান | সর্বদা | 88. ওয়াসওয়াসা | মনে খারাপ কথা সৃষ্টি করা | |
| ৬. আমর নাহি | আদেশ, নিষেধ | ৪৫. ওফাত | মৃত্যু | |
| ৭. আরাফাত | আরাফাত ময়দান | ৪৬. ওহী | ওহী | |
| ৮. আহলুল কেতাব | | ৪৭. কেতাব | লেখা, লিখিত পুস্তক | |
| | नायिन २८: १८ | ৪৮. কেয়ামত | কেয়ামত | |
| ৯. আহলুয যিম্মাহ্ | দায়িতৃশীল | ৪৯. কাবা, কেবলা | | |
| ১০. আনসার | সাহায্যকারী | 1 | জরিমানা | |
| ১১. আদল | ন্যায়বিচার | ৫০. কাফ্ফারা | | |
| ১২. আলেম | ख ानी | ৫১. কেছাছ | বদলা | |
| ১৩. আজমী | অনারব | ৫২. কেফল | অংশ | |
| ১৪. আরশ কুরসী | আরশ কুরসী | ৫৩. কর্য | #IC | |
| ১৫. ইল্লিয়ীন | নেক লোকদের রূহ যেখানে থাকে | ৫৪. কৃফর | অস্বীকার বা অকৃতজ্ঞতা প্রকাশ করা | |
| ১৬. ইলহাম | মনে কোনো কিছু জাগিয়ে দেয়া —— | ৫৫. কেয়ামা | কেয়ামত | |
| ১৭. আজালুন | মৃত্যু মান্ত | ৫৬. কেব্র | অহংকার | |
| ১৮. ইহসান ১৯. ইনাবুন | অনুগ্রহ ফিরে আসা | ৫৭. খাতা | ভূপ | |
| <i>২৯.</i> ২নাবুন ২০. ইসতেকামাত | ান্দরে আসা দৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত হওয়া | ৫৮. খুত' | বিনয় | |
| २०. रगट्यसमाय २১. ইয়াকীন | পৃণ্ডাবে আভাচত হওয়া আস্থা, বিশ্বাস | ৫৯. খুযু' | ন্মতা | |
| ২২. ই নসান | भानुस | ৬০. গায়ব | ্রতা গোপন বিষয় | |
| ২৩. ইছ্ম | গুনাহ | ৬১. গনী | | |
| २८. ঈेंला | ন্ত্রী গমন না করার শপথ | | অভাবমুক্ত | |
| ২৫. ইদ্দত | গণনা, তালাকপ্রাপ্তা মহিলাদের | ৬২. সওয়াব | সওয়াব | |
| | ক্ষেত্রে অপেকার সময় | ৬৩. ছেহ্র | যাদু | |
| | অন্যথায় শোকের কাল | ৬৪. জান্নাত | বেহেশত | |
| ২৬. ঈমান | বিশ্বাস | ৬৫. জাহান্নাম | দোযখ | |
| ২৭. উশ্বাত | আদর্শ ভিত্তিক জাতি | ৬৬. জাযা | পুরস্কার | |
| ২৮. এখলাস | নিষ্ঠা | ৬৭. জ্বিন, ইবলীস | জীন, ইবলীস | |
| ২৯. এহরাম | এহরাম | ৬৮. জান্বুন | পাৰ্শ্বদেশ | |
| ৩০. এখওয়াতুন | ভাই | ৬৯. জানাবাত | অপবিত্রতা | |
| ৩১. এলহাদ | নান্তিক হওয়া | ৭০. জেহাদ | আল্লাহ তায়ালার পথে সংগ্রাম করা | |
| ৩২. একামা | স্থির করা | ৭১. তাওবা | তাওবা | |
| ৩৩. এতায়াত | আনুগত্য | ৭২. তাগুত | সীমা ল ংঘনকারী | |
| ৩৪. এছতেতায়াত | সামৰ্থ | • | | |
| ৩৫. এবাদাত | বন্দেগী, আনুগত্য | ৭৩. তাহারাত | পবিত্রতা | |
| ৩৬. এজতেহাদ | শক্তি বৃদ্ধি ব্যয় করা | ৭৪. তালাক | তালাক | |
| ৩৭. এন্তেবা', | অনুসরণ | ৭৫. তায়াত | নেকী | |
| ৩৮. এস্তেগফার | ক্ষমা প্রার্থনা করা | ৭৬. তাওয়াকুল | ভরসা করা | |
| ৩৯. এসরাফ | অপচয় | ৭৭. তাবেঈন | অনুসরণকারী | |
| 80. এলম | ড া ন | ৭৮. দলীল | मनी न | |
| | | | | |

| | কোরআনের ক | তপয় পরিভাষা | |
|-------------------|---|--------------------------|---|
| ৭৯. দলালাত | গোমরাহী | ১১৮. যান্বুন | <u> </u> |
| ৮০. দ্বীন-মিল্লাত | জীবন ব্যবস্থা, জাতি | ১১৯. যাকাত | যা কা ত |
| ৮১. দায়ন ঋণ | | ১২০. যুলম | অত্যাচার |
| ৮২. দিয়াত | রক্তের দাবী | ১২১. যেক্র | শ্বরণ |
| ৮৩. নফস | প্রাণ, রক্ত, ব্যক্তি মানুষ, মন | ১২২. যালেম | অত্যাচারী |
| ৮৪. নফল | অতিরিক্ত | ১২৩. রসূল | আল্লাহর বাণী বাহক |
| ৮৫. নেকাহ | বিয়ে | ১২৪. রূহ | জীবন, হযরত জিবরাঈল (আ.) |
| ৮৬. নাফাকাত | ভরণ পোষণ | ১২৫. রেয্ক | জীবনোপকরণ |
| ৮৭. নেফাক | দ্বিমূখী চরিত্র | ১২৬. রাযায়াত | দুধ খাওয়ানোর সময়সীমা |
| ৮৮. ফর্য | অবশ্য পালনীয় | ১২৭. রেবা | भृ न |
| ৮৯. ফেদইয়া | বিনিময় | ১২৮. শাফায়াত | সুপারিশ |
| ৯০. ফুসুক | নাফরমানী | ১২৯. শূরা | পরামর্শ |
| ৯১. ফাসেক | নাফরমান | ১৩০. শেরক | অংশীদারিত্ব |
| ৯২. ফাছাদ | ধ্বংস, ক্ষতি | ১৩১. শাহাদাত | আল্লাহর পথে জীবন দান করা |
| ৯৩. ফেক্র | চিন্তা | ১৩২. শহীদ | যিনি শাহাদাত বরণ করেন |
| ৯৪. ফেকহ | উপলব্ধি | ১৩৩. শোকর | কৃতজ্ঞতা প্ৰকাশ |
| ৯৫. ফকীর | বিত্তহীন | ১৩৪. যেদ্দা | ্ বিপরীত করা |
| ৯৬. বার্যাখ | দুনিয়া ও আখেরাতের মধ্যবর্তী স্থান | ১৩৫. সাওম | রোযা |
| ৯৭. মালায়েকা | ফেরেশতারা | ১৩৬, সিজ্জীন | দোযখীদের রূহের কয়েদখানা |
| ৯৮. মীযান | দাঁড়িপাল্লা | ১৩৭. সুন্নাত | পথ, পদ্ধতি |
| ৯৯. মওত | মৃত্যু | ১৩৮. সালাত | নামায |
| ১০০. মূলক-হুক্ম | | ১৩৯. সাদাকা | যাকাত, সাদাকা |
| ১০১. মাহেল্লাহ্ | ঋণ পরিশোধের নির্ধারিত সময় | ১৪০. সেদক | সত্য |
| ১০২. মীকাত | কোন কাব্ধ সম্পাদনের নির্দিষ্ট সময় | ১৪১. হুর | হুরসমূহ, যে সব মেয়ের চোখ |
| ১০৩. মোহর | মোহর | | ও চুল কালো |
| ১০৪. মীরাস | মৃতের মালে উত্তরাধিকার | ১৪২. হাওয়ারী | সাহায্যকারী |
| ১০৫. মোমেন | বিশ্বাসী | ১৪৩. হেদায়াত | হেদায়াত |
| ১০৬. মোশরেক | অংশীবাদী, পৌত্তলিক | ১৪৪. হক বাতিল | |
| ১০৭. মোনাফেক | মোনাফেক, ভন্ড | ১৪৫. হায়াত | জীবন |
| ১০৮. মোরতাদ | ধর্মান্তরিত | ১৪৬. হালাল | হালাল |
| ১০৯. মোখলেস | একনিষ্ঠ ব্যক্তি | ১৪৭. হারাম | নিষিদ্ধ |
| ১১০. মুনীব | আল্লাহ তায়ালার দিকে প্রত্যাবর্তনকারী | ১৪৮. হজ্জ্, ওমরাহ | হজ্জ, ওমরাহ |
| ১১১. মোলহেদ | দ্বীন থেকে সরে যাওয়া নান্তিক ব্যক্তি | ১৪৯. হাদী | দিক নির্দেশনাদানকারী |
| ১১২. মোসতাকিম | সরল পথ | ১৫०. शस्त्रय | হায়েয, মাসিক ঋতুস্রাব |
| ১১৩. মোহাজের | জন্মভূমি ত্যাগ করে যিনি অন্যত্ত্র চলে যান | ১৫১. হিজাব ১৫২. হিজরত | भ र्म |
| ১১৪. মোজাহেদ | যে ব্যক্তি আল্লাহর পথে জেহাদ করে | ১৫২. হেজরত ১৫৩. হেকমা | ত্যাগ করা বুদ্ধিমন্তা, জ্ঞান |
| ১১৫. মাগফেরাত | ক্ষমা করা | ১৫৪. হাছাদ | বুদ্ধিমন্তা, জ্ঞান হিংসা |
| ১১৬. মেসকীন | দরিদ্র, যার কিছু নেই | ১৫৫. হামদ | । २१ न। श्रमश्मा |
| ১১৭. মোত্তাকী | পরহেযগার | ১৫৬. হানীফ | य ^{ार्गा} न्याय श्री □ |
| | | 8 | |

কোরআনের সংক্ষিপ্ত বিষয়সূচী

তাওহীদ

অধ্যায় ১ ঃ আল্লাহ তায়ালা সৃষ্টিক্লের সৃষ্টিকর্তা সূরা আল বাকারা ২৯, আল আনয়াম ১, ৭৩, ১০১, আল আম্বিয়া ৩৩, আল মোমেনূন ১২-১৪, আন নূর ৪৫, আল ফোরকান ২, লোকমান ১০, আর রহমান ১৪-১৫

षधाग्र २ ६ षाङ्मार जाग्नामा সৃष्टिक्रमत वक्षाव मार्वजीय मानिक

সুরা আলে ইমরান ২৬, আন নেসা ৫৩, আল মায়েদা ১৭, ৭৬, আন নাহল ৭৩, বনী ইসরাঈল ১১১,আল মোমেন্ন ৮৮, সাবা ২২, আল ফাতের ১৩, আঝ ঝুমার ৪৩, আয় যোখরুফ ৮৬, আল ফাতহ ১১, ১৪

षधात्र ७ ३ जाला सन नविकडू जान्नारत रेष्ट्रावर नाथिज रहा

সূরা আল মায়েদা ৪১, আল আ'রাফ ১৮৮, ইউনুস ৪৯, ১০৭, আর রা'দ ১৬, বনী ইসরাঈল ৫৬, আল ফোরকান ৩, আল ফাতহ ১১, আল মোমতাংনাহ ৪, আল জ্বিন ২১

অধায় ৪ ঃ রেযেক তথু আল্লাহর ইচ্ছায়ই বাড়ে কমে
সূরা আল বাকারা ২১২, আল মায়েদা ৮৮, হুদ ৬, আর
রা'দ ২৬, আল হাজ্জ ৫৮, আল আনকাব্ত ১৭, ৬০,
আর রোম ৪০, ফাতের ৩, আল মোমেন ১৩, আল শুরা
২৭, আয যারিয়াত ৫৮, আত ত্বালাক ৩, আল মুলক ২১

অধায় ৫ ৫ আল্লাহ তায়ালা হাড়া কোনো মা'বুদ নেই
স্রা আল বাকারা ১৬৩, ২৫৫, আলে ইমরান ৬২, আন
নেসা, ১৭১, আল মায়েদা ৭৩, আল আনয়াম ৪৬, আল
আ'রাফ ৬৫, ইবরাহীম ৫২, আন নাহল ২২, ৫১, বনী
ইসরাঈল, ২২, আল কাহফ ১১০, আল আনিয়া ১০৮,
আল হাজ্জ ৩৪, আল মোমেন্ন ৯১, আন নামল ৬০,
আল কাহাছ ৭১, হোয়াদ ৬৫, হা-মীম আস সাজদাহ ৬,
আয যোবকুফ ৮৪, আত তুর ৪৩

ष्यगात्र ७ : षाञ्चार जात्रामार ७४ भावत्त्र चयत्र स्नातन

স্রা আল বাকারা ৩৩, আল মায়েদা ১০৯, ১১৬, আল আনয়াম ৫৯, ৭৩, আত ভাবে ৭৮, ৯৪, ১০৫, ইউনুস ২০, হুদ ১২৩, আল কাহফ ২৬, আল ফাতের ৩৮, সাবা ৩, আল হুজুরাত ১৮

वशाय ९ ३ प्रमृत (म.) भारत्रव कानकिन ना

সূরা আল আনয়াম ৫০, আল আ'রাফ ১৮৭,১৮৮, আল জ্বিন ২৫

षधाग्र ৮ ३ जान्नार जाग्नामा यात्क यट्ना रेम्स मान क्दन

সূরা আল জ্বিন ২৬-২৭

षशास ৯ : महान मात्नत क्या वक्याव बाह्रार जामान

সূরা আশ শূরা ৪৯-৫০

অধ্যায় ১০ ঃ শেফা দানকারী হন্দেন একমাত্র আদ্রাহ তায়ালা সুরা আশ শুরা আয়াত, ৮০

অধ্যায় ১১ ৪ বিপদের সাধী একমাত্র আল্লাহ তারালা সূরা ইউনুস ১২, আল আম্বিয়া ৮৪, বনী ইসরাঈল ৫৬, আঝ ঝুমার ৩৮

অধ্যায় ১২ ঃ প্রার্থনা করতে হবে সরাসরি আল্লাহর কাছে
স্রা আল আনরাম ৪০-৪১, আল আ'রাফ ২৯, ইউনুস
১০৬, আর রা'দ ১৪, আল ফোরকান ৬৮, আল মোমেন ১৪
অধ্যায় ১৩ ঃ আল্লাহ তায়ালাই বিপদগ্রন্ত ব্যক্তির
দোয়া করুল করেন

স্রা আল বাকারা ১৮৬, আন নামল ৬২, আঝ ঝুমার ৪৯

রেসালাত

অধ্যায় ১ ঃ মোহাক্ষদ (স.) আল্লাহর প্রেরিত রস্ল স্বা আল বাকারা ১১৯, আন নেসা ৭৯, আর রা'দ ৩০, বনী ইসরাঈল ১০৫, আল আঘিয়া ১০৭, আল আহ্যাব ৪৫, সাবা ২৮, ইয়াসীন ৩

चथात्र २ : नवीरमत्रक मानवञ्जनी मानूम मरन कता कुकती

সূরা আল মায়েদা ৭২-৭৪

षशाम ७ ३ निष्मप्तन मित्क नम्र वन्नः **षान्नारम** मान**र**ण्डम मित्कर नवीरमन षार्शन

সূরা আলে ইমরান ৭৯

অধ্যায় ৪ ঃ রসুল (স.) সকল নবীদের মধ্যে উত্তম সুরা আল আহ্যাব ৪০, সাবা ৩৮

অধ্যার ৫ ঃ রসূল (স.)-এর বিশেষ ভণাবলী সূরা আত তাওবা ১২৮, আল আম্বিয়া ১০৭, আল আহ্যাব ৪৫-৪৬, সাবা ২৮

चशात ७ ३ जाङ्मारत त्रज्ञानत मात्रिज्

সূরা আলে ইমরান ২০, আল মায়েদা ৬৭, আল মায়েদা ৯২, আল মায়েদা ৯৯, আর রা'দ ৪০, আশ শ্রা ৮৪ অধ্যার ৭ ঃ রস্ল (স.) হচ্ছেন নামারীদের ইমাম

সূরা আন নেসা ১০২, আত তাওবা ১০৩

खशांत्र ৮ ३ तम्म (म.) श्ल्बन खाङ्माश्त छत्रक (श्रंक निरमांत्रशोध विठातक

সূরা আন নেসা ৬৫, ১০৫

অধ্যার ৯ ঃ রনাকণের সেনাপতি আল্লাহর রস্প (স.) স্রা আলে ইমরান ১২১, আন নেসা ৮৪, আল আনঞ্চল ৫৭, ৬৫

অধ্যার ১০ ঃ তরা কাউলিলের প্রধান মহানবী (স.) সূরা আলে ইমরান ১৫৯

জধ্যার ১১ ঃ রসৃশ হচ্ছেন সর্বোক্তম চরিত্রের নমুনা সুরা আলে ইমরান ১৫৯, আত তাওবা ১২৭, আল কলাম ৪ অধ্যায় ১২ ঃ রস্ল (স.) ছিলেন শত্রুদেরও কল্যাণকামী

সুরা আল কাহফ ৬

षधाय ১७ १ मकन नवीर ठात উत्पर्छत व्याभारत माक्षी

সূরা আন নাহল ৮৪, ৮৯

षशाग्न ১৪ १ উचार्क स्माशाचनी खना मन उचारकत माकी

সুরা আল বাকারা ১৪৩

षधाग्र ১৫ ३ नवीरमत निषय कमणाग्र नम्न; वत्रः षाञ्चादत देखाग्रदे जाता स्मारक्षया प्रचारक भारतम

সূরা আল আনয়াম ১০৯, আর রা'দ ৩৮

তাকদীর

অধ্যায় ১ ঃ ভাগ্যলিখন সম্পর্কিত আলোচনা

স্রা ইউন্স ৫ আল হেজর ২১, ৬০, আল মোমেন্ন ১৮, আল ফোরকান ২, আল আহ্যাব ৩৮, সাবা ১৮, ইয়াসীন ৩৯, হা-মীম আস সাক্ষদা ১০, আশ শ্রা ২৭, আল কামার ১২, ৪৯, আল ওয়াকেয়া ৬০, আল মোযযাম্মেল ২০, আল মোরসালাত ২২, ২৩, আর্মা ১৯, আল আ'লা ৩

আল কোরআন

षधाग्र ১ ३ षान्नार जाग्रामारे कात्रजान षवजीर्ग करत्नरहन

সূরা আল বাকারা ২৩, ৯৭, ১৮৫, আলে ইমরান ৩, ৭, ৪৪, আন নেসা ৮২, আল মায়েদা ৪৮, আল আনয়াম ১৯, ৯২, ১১৪, ১৫৫, আল আ'রাফ ২, ইউনুস ৩৭, ইউনুস ৫৭, ছদ ১৩-১৪, ছদ ৪৯, ইউসুফ ২, ১০২, ইবরাহীম ১, আন নাহল ৮৯, বনী ইসরাঈল ৮২, ৮৮, জোয়া-হা ২, ১১৩, আন নূর ৩৪, আল ফোরকান ১, আশ শোয়ারা ১৯২, আস সাজদা ২, ইয়াসীন ৫, সোয়াদ ২৯, আঝ ঝুমার ২৩, হা-মীম আস সাজদা ২, আশ শুরা ৭, আয় য়োখরুফ ৩, আদ দোখান ৩, ৫৮, আত তুর ৩৩-৪, আল ওয়াকেয়াহ ৮০, আদ দাহর ২৩, আদ কার ১

षशाग्न २ १ कात्रधान मिक्कन नाशित्मन উদ্দেশ্য

সূরা আলে ইমরান ১৩৮, আল মায়েদা ১৫-১৬, ৪৮, আল আনয়াম ৯০, ১৫৭, ইউনুস ৫৭, আন নাহল ৬৪, ৮৯, বনী ইসরাঈল ৯-১০, ৮২

অধ্যায় ৩ ৪ কোরআনের মোজেযা

সূরা আল বাকারা ৫৫-৫৭, ৬০, ৬৩, ৬৫, ৭২-৭৩, ২৪৩, ২৪৮, ২৫৯, ২৬০, আলে ইমরান ১৩, ৩৭, ৩৯-৪১, ৪৫-৪৬, ৪৯, ১২৩-১২৫, আন নেসা ১৫৭, ১৫৭-১৫৮, ১৫৯, আল মায়েদা ৬০, আল আ'রাফ ১০৭-১০৮, ১১৫-১২২, ১৩০-১৩৩, ১৭১, আল আনফাল ৯, আত তাওবা ২৫-২৬, ৪০, হদ ৩৬-৪৪, ৬৪-৬৮, ৬৯-৭৩, ৭৭-৮৩, ৯৩-৯৫, ইউসুফ ২৩-২৭, ৮৩, ৯৩, ৯৪-৯৬, বনী ইসরাঈল ১, আল কাহফ ১০-১২, ১৭-১৮, ২৫, ৬০-৬৩, মারইয়াম ১৬-১৭, ২৪-২৫, ২৯-৩১, ত্বায়া-হা ১৯-২২, ২৫-৩৬, ৬৬-৭০, ৯৭, আল আদ্বিয়া ৬৯, ৭৯, ৮১-৮২, আশ শোয়ারা

৬০-৬৬, আন নামল ৭-১২, ১৬-১৯, ২০-২৮, ৩৭-৪০, ৪৮-৫১, আল কাসাস ৭-১৩, ২৪-৩৫, আল আনকারত ৫১, আল আহ্যাব ৯, সাবা ১০-১৪, আস সাফফাত ১৪০-১৪৬, সোয়াদ ১৭, ৩৬-৩৮, ৪২-৪৩, আল মো'মেন ২৬-২৭, আদ দোখান ২৪, আয যারিয়াত ২৮, আন নাজম ১-১৮, আল কামার ১, ৩৭, আল ফীল ১-৫ অধায় ৪ ৪ কোরআন মোমেনদের অন্যে শেফা ও রহমত

সূরা আল ফাতেহা আয়াত, ১-৭, আত তাওবা আয়াত, ১৪-১৫, সূরা ইউনুষ আয়াত, ৫৭-৫৮, আন নাহল আয়াত, ৬৯, বানী ইসরাঈল আয়াত, ৮২, আল আম্মিয়া আয়াত, ৮৩, আশ শোয়ারা আয়াত,৭৮-৮২, ছোয়দ আয়াত, ৪১, হা-মীম আস সাজদা আয়াত, ৪৪।

ফেরেশতা

অধ্যায় ১ ঃ ফেরেশতাদের দায়িত কর্তব্য

আল বাকারা ৩০-৩৪, ৯৭-৯৮, ১০২, আল আনয়াম ৯৩, আল আ'রাফ ২০৬, আর রা'দ ১১, আন নাহল ৪৯-৫০, মারইয়াম ৬৪, আল আদ্বিয়া ১৯-২০, ২৬-২৯, আল ফোরকান ২৫-২৬, আশ শোয়ারা, ১৯২-১৯৪, সাবা ২২-২৩, ফাতের ১, আস সাফ্ফাত ১৬৪-১৬৬, আল মো'মেন ৭-৯, হা-মীম আস সাজদা ৩৮, আশ শুরা ৫, আয যোখকক ৭৭, ৮০, ক্ফে ১৬-১৮, ১৯-২৬, আন নাজম ২৬, তাহরীম ৬, আল হাকাহ ১৬-১৮, আল মোদ্দাসসের ৩০-৩১, আত তাকওয়ীর ১৯-২১, আল ফ্দেতার ১০-১২, আল ক্ট্রের ১৪

কেয়ামত

অধ্যায় ১ ঃ কেয়ামতের আলামত

(रायन ইয়াজুজ याजुজ, मास्ताजून जातत्मत जातिर्छात এবং পুনরায় হযরত ঈসা (जा)-এর আগমন)

সূরা আল কাহফ ৯৮-৯৯, আল আদ্বিয়া ৯৬, আন নামল ৮২, আয় যোখরুফ ৬১, আদ দোখান ১০-১১, মোহাম্মাদ ১৮, আন নাজম ৫৭-৫৮, আল কামার ১, আল মায়ারেজ ৬-৭

অধার ২ ঃ পুনরুখানের প্রয়োজনীয়তা ও তার প্রমাণ স্রা আল বাকারা ৭২-৭৩, ২৫৯-২৬০, আল আ'রাফ ২৯, ৫৭, আন নাহল ৩৮-৪০, ৭৭, বনী ইসরাঈল ৯৮-৯৯, আল কাহফ ২১, মারইয়াম ৬৬-৬৭, ত্বোয়া-হা ১৫, আল আয়য়া ১০৪, আল হাচ্চ ৫-৭, আন নামল ৮৬, আল আনকাবৃত ১৯-২০, আর রোম ১৯, ২৭, ৫০, সাবা ৩, ফাতের ৯, ইয়াসীন ৩৩, ৭৮-৮২, আস সাফ্ফাত ১১, সোয়াদ, ২৭-২৮, আঝ ঝুমার ৪২, আল মোমেন ৫৭, হা-মীম আস সাজদা ৩৯, আদ দোখান ৩৯-৪০, আল জাসিয়া ২১-২২, আল আহকাফ ৩, ৩৩, ক্ষেড ৬-১১, ১৫, আয় য়ারিয়াত ১-৬, আত তৃর ১-১০, আল ওয়াকেয়াহ ৫৭-৬২, আল কেয়ামাহ ৩-৪, ৩৬-৪০, আল মোরসালাত ১-৭, আন নাবা ৬-১৭, আল

নাযেয়াত ২৭-৩২, আত তারেক ৫-৮, আত তীন ৪-৮

ष्यशास ७ ३ मृज्यस भन्न त्थात्क त्कसामण भर्वत नमस्कामीन व्यक्ष

সূরা আল বাকারা ১৫৪, আলে ইমরান ১৬৯-১৭১, আন নেসা ৯৭, আল আনরাম ৬২, আল আ'রাফ ৪০, আল মোমেনুন ১০০, আস সাজদাহ ১১, আল মোমেন ৪৬, কাফ ৪

व्यथाय ८ ३ भित्राय कुँरकात

সূরা আল আনয়াম ৭৩, আল কাহফ ৯৮-১০১, আন নামল ৮৭-৮৮, সোয়াদ ১৫, আয ঝুমার ৬৮, ঝুফ ২০, ৪১-৪২, আল হা-ক্লাহ ১৩-১৭

অধ্যায় ৫ ३ ময়দানে হাশরের অবস্থা

সূরা আল বাকারা ১১৩, ১৪৮, ১৭৪, ২১০, আলে ইমরান ১০৬-১০৭, আন নেসা ৪১-৪২, আল আনয়াম ৩১, ৩৬, ৩৮, আল আ'রাফ ২৯, ৫৩, আত তাওবাহ ৩৪-৩৫, ইউনুস ৪, ২৬-৩০, ৪৫, হুদ ১৮, ৯৮, ১০৩-১০৮, ইবরাহীম ৪৮-৫১, আল হেজর ২৪-২৫, वनी ইসরাঈল ৫২, ৭১-৭২, ৯৭, ১০৪, আল কাহফ ৪৭, ৫২-৫৩, মারইয়াম ৩৭-৩৯, ৬৮-৭২, ৮৫-৮৬, ৯৩-৯৫, ত্বোয়া-হা, ১০০-১১২, ১২৪-১২৬, আল আম্বিয়া ৪০, ১০৩-১০৪, আল হাজ্জ ৭৮, আল মোমেনুন ১০০-১০১, আল ফোরকান ২২, ৩৪, আশ শোয়ারা ৯০-৯৫, আন নামল ৮৩-৮৫, আল কাসাস ৬৫-৭৫, আর রোম ১৪-১৬, ২২-২৫, ৫৫-৫৭, আস সাজদাহ ৫, ইয়াসীন ৪৮-৫৯, আস সাফফাত ২০-২৬, আঝ ঝুমার ৭৫, আল মোমেন ১৫-১৭, আশ শ্রা ৪৭, আয যোৰক্ষ ৬৬-৬৭, আদ দোখান, ৪০, ক্বাফ ১১, আত তৃর ৭-১২, ৪৫, আল ফ্রামার ৬, আর রহমান ৩৭-৪৪, আল ওয়াকেয়াহ ১-৬, ৪৯-৫০, আল হাদীদ ১২-১৫, আত তাগাবুন ৯, আল কালাম ৪২-৪৩, আল হা-কাহ ১-২, আল মায়ারেজ ১-১০, ৪৩-৪৪, আল মোয্যাম্মেল ১২-১৪, ১৭-১৮, আল মোদাসসের ৮-১০, আল কেয়ামাহ ৭-১২, আল মোরসালাত ৮-১৫, আন নাবা ১৭-২০, ৪০, আন নাযেয়াত ৬-৯, ১৩-১৪, ৩৪-৩৯, আবাসা ৩৩-৪২, আত তাকওয়ীর ১-১৪, আল ইনফেতার ১-৫, ১৫-১৯, আল মোডামকেট্রন ১৫-১৭, আল ইনশেক্বাক ১-২, আল ফাল্কর ২১-৩০, আম যেলযাল ১-৮, আল আদিয়াত ৬-১১, আল ক্বারেয়া ১-৫

ष्यशाग्र ७ ३ क्यामछ निवस्त्रत्न कर्छात्रका क्षरः मानुस्त्र गाक्नवा

স্রা আল মায়েদা ৩৬, আল আনয়াম ৩১, ইবরাহীম ৪২-৪৩, মারইয়াম ৩৯, ৭১, ত্বোয়া-হা ১০৮, আল আদ্বিয়া ৪০, ৯৭, আল হাজ্জ ১-২, আন নূর ৩৭, আল ফোরকান ২৭, সাবা ৩৩, আস সাফফাত ২০, ২২-২৩, আরু ঝুমার ৪৭-৪৮, ৬০, আল মোমেন ১৮, হা-মীম আস সাজদাহ ২৯, আশ শ্রা ২২, ৪৫, আয যোরফ্রফ ৩৭-৩৯, আল জাসিয়া ২৭-২৮, আয যারিয়াত ১৩-১৪, আত ত্র ৪৫-৪৬, আল কামার ৮, ৪৬, আল হাদীদ ১৩-১৫, আল মুলক ২৭, আল কালাম ৪৩, আল হা-ক্লাহ ২৫-২৯, আল মায়ারেক্স ১১-১৪, আল মায়যামেল ১৭, আল মোমাসসের ৯-১০, আল মেরসালাত

৩৭-৩৯, আন নাবা ৪০, আন নাযেয়াত ৮-৯, আবাসা ৩৪-৩৭, আত ত্বারেক ১০, আল গাশিয়াহ ১-৩, আল ফাজর ২৩-২৬, আল লায়ল ১১, আয যেলযাল ৩, আল কারয়াহ ৪-৫

ष्यगात्रः २ ३ ना-क्त्रमानरपतः पृनिग्रात्रः किरतः षात्रातः षाकाश्याः

সূরা ইবরাহীম ৪৪-৪৫, আস সাজদাহ ১২, আশ শূরা ৪৪

অধ্যায় ৮ ঃ অনুসারীদের সাথে পাপিষ্ঠ নেতাদের শত্রুতা ও তাদের অক্ষমতা

সূরা আল বাকারা ১৬৬-১৬৭, আর রোম ১৩

ष्यशाग्र ৯ १ किंग्रामण्डत मिन (क्षे बाता कारक षांमद ना

সূরা আল বাকারা ১৬৫-১৬৭, আল আনয়াম ৭০, ৯৪, ১৬৪, ইউনুস ২৭-৩০, ইবরাহীম ২১-২২, আন নাহল ৮৬-৮৭, আল কাহফ ৫২, মারইয়াম ৮১-৮২, আল মোমেনুন ১০১, আল ফোরকান ১৭-১৯, আশ শোয়ারা ৮৮, আল কাসাস ৬৩-৬৪, আল আনকাবৃত ২৫, আর রোম ১৩, লোকমান ৩৩ সাবা ৩১-৩৩, ৪২, ফাতের ১৪, ১৮, আস সাফফাত ২৫-৩৩, আল মোমেন ১৮, হা-মীম আস সাজদাহ ৪৮, আশ শুরা ৪৬, আয যোধকুফ ৬৭, আদ দোখান ৪১-৪২, আল আহকাফ ৬, ক্লাফ ২৩-২৭, আল মোমতাহেনাহ ৩, আল হাক্কাহ ২৫-৩৫, আল মায়ারেজ্ঞ ১০-১৪, আবাসা ৩৪-৩৬, আল ইনফেতার ১৯

अथाात ५० ३ भोकात्राज त्करण बाङ्घारत बन्द्रविष्ठरै भोधता वात

সূরা আল বাকারা ৪৮, ২৫৪, ২৫৫, ইউনুস ৩, বনী ইসরাঈল ৭৯, মারইয়াম ৮৭, ত্বোয়া-হা ১০৯, আয যোখরফ ৮৬, আন নাজম ২৬

षधाय ১১ ३ क्यांमएज्य पिन मिचा मा वृत, कास्क्य मञ्जूषात्र धवः भूमनमानस्त्र मास्य बाल्लाङ्य कथावार्धा

সূরা আল মায়েদা ১০৯-১১৯, আল আনয়াম-২২-২৩, ৩০, ৯৪, ১২৮-১৩০, আল আ'রাফ ৬-৭, ইবরাহীম ৪৪-৪৫, আন নাহল ২৭-২৯, আল কাহফ ৪৮, ত্বোয়া-হা ১২৫-১২৬, আল মোমেনুন ১০৫-১১৪, আল ফোরকান ১৭-১৯, আন নামল ৮৪, আল কাসাস ৬২-৬৬, আস সাজদাহ ১২-১৪, সাবা ৪০-৪২, ইয়সীন ৬০-৬৪, আস সাফফাত ২৪-২৫, আঝ ঝুমার ৫৯, হা-মীম আস সাজদাহ ৪৭, আল জাসিয়াই ২৮, ক্বাফ ২২-২৯, আল মোরসালাত ৩৮-৩৯

व्यशास ५२ ३ किसामराज्य मित्न हिमान निकाम श्रष्ट्य

স্রা ইবরাহীম ৫১, আন নাহল ৯৩, বনী ইসরাঈল ১৩-১৪, আল কাহক ৪৯, ১০৫, মারইয়াম ৩৯, আল আদিয়া ৪৭, লোকমান ১৬, ইয়াসীন ৬৫, আল মোমেন ৭৮, আয যোশরফ ১৯, ৪৪, আর রাহমান ৩১, আল মোমতাহেনা ৩, আল গাশিয়াহ ২৬, আত তাকাছুর ৮ অধ্যায় ১৩ ঃ কেয়ামতের দিন পাপ প্ল্যের পরিমাপ সুরা আল আ'রাফ ৮-৯

কোরআনের সংক্ষিপ্ত বিষয়সূচী

षधाग्र ১৪ ३ षामन नामात्र निर्धात्रश

স্রা আলে ইমরান ৩০, আল হা-ক্কাহ ১৯-২৯, আত তাকওয়ীর ৮-১০, আল ইনশেকাক

षधाय ५৫ ६ जामन जन्यायी পूत्रकात ७ नान्छि निभ्ठिकतन

সূরা আলে ইমরান ১৮৫, ইউনুস ৪, হুদ ১০৬-১০৮, ১১১, আন নাহল ১১১, আল হাজ্জ ৫৬-৫৭, আল মোমেনুন ১০২-১০৩, আন নূর ২৩-২৫, আন নামল ৮৫, ৯০-৯৩, আল আনকাবুত ১৩, আর রোম ১৪-২৩, ইয়াসীন ৫৩-৫৪, আঝ ঝুমার ১০, ৭০, আল মোমেন ১৭, ৫২, হা-মীম আস সাজদাহ ২৪, আল জাসিয়াহ ৩৪-৩৫, ক্বাফ ২৮-৩১, আত তুর ১৬-১৭, আল ওয়াকেয়াহ ৭-৪৪, ৮৮-৯৪, আত তাগাবুন ৯-১০, আত তাহরীম ৭, আল হা-ক্বাহ ১৮-৩২, আল কেয়ামাহ ২২-২৫, আল মোরসালাত ১১-১৫, ৩৫-৩৯, আন নাযেয়াত ৩৪-৪১, আয যেল্যাল ৪-৮, আল কারিয়া

পবিত্ৰতা

वधाय ১ ॥ धयुत्र मानवाना

সূরা আল মায়েদাহ, আয়াত ৬

অধ্যায় ২ ঃ ভায়াস্থুমের মাসআলা

সূরা আন নেসা, আয়াত ৪৩

অধ্যায় ৩ ঃ গোসলের মাসআলা

সূরা আল মায়েদাহ, আয়াত ৬, আন নেসা, ৪৩

অধ্যায় ৪ ঃ মাসিক ঋতুস্রাবের মাসআলা

সূরা আল বাকারা, আয়াত ২২২

নামায

অধ্যায় ১ ঃ कामार्टित সাথে नामार्यत ह्कूम

সূরা আল বাকারা, আয়াত ৪৩

অধ্যায় ২ ৪ মাকামে ইবরাহীমে নামাযের হকুম

সূরা আল বাকারা, আয়াত ১২৫

অধ্যায় ৩ ঃ নামায হেফাযতের ভরুতু

স্রা আল বাকারা, আয়াত ২৩৮ স্রা আল মোমেনুন,
আয়াত ২

षधाय ४ १ कमत नामाय धवः यूक्कत मयमान नामात्यत १कि७

সূরা আন নেসা, আয়াত ১০১-১০৩

অধ্যায় ৭ ৪ পাঁচ ওয়াক্ত নামাযের প্রমাণ

সূরা বনী ইসরাঈল, আয়াত ৭৮-৭৯

व्यथाग्र ৮ ३ श्रकामा नामार्य मथाम व्याख्यारय स्त्राण भाक्षेत्र हुक्य

বনী ইসরাঈল, আয়াত ১১০

थशाग्र ৯ ३ नामात्यत्र नमग्र

সূরা ত্বোয়া-হা, আয়াত ১৩০

অধ্যায় ১০ ३ नाমायে चूछ चूयू

সূরা আল মোমেনুন, আয়াত ২

षशाग्न ১১ ६ वाखण षाङ्मारक्षमीत्मन्न नामारय वाशा रम्भ ना।

সূরা আন নূর, আয়াত ৩৭

षधात्र ১२ १ नामाय षश्चीम ७ मन्द कांक त्थरक वित्रज त्रात्थ

সূরা আল আনকাবুত, আয়াত ৪৫

অধ্যায় ১৩ ঃ জুমার দিনে মাসজিদে যাওয়ার তাগিদ সূরা আল জুমুয়াহ, আয়াত ৯

षधाः ३८ ३ माक प्रचारना नामारीएमत्र कर्छातः भाविः

সুরা আল মাউন, আয়াত ৪-৬

যাকাত

অধ্যায় ১ ঃ যাকাত, সদকাহ এবং তা ব্যয়ের খাতসমূহ সূরা আল বাকারা ২১৫, ২৬৭, ২৭১, ২৭৩-২৭৪, আল আনরাম ১৪১, আত তাওবাহ ৬০, আন নূর ৫৬, আল ফোরকান ৬৭, আর রোম ৩৯, আদ দাহর ৮-৯

রোযা

অধ্যায় ১ ঃ রোযা, এ'তেকাক এবং লায়লাতুল কাদর সূরা আল বাকারা ১২৫, ১৮৩-১৮৫, ১৮৭, আদ দোখান ৩-৫, আল কাদর ১-৫

2

षशाञ्च ১ ३ कांबाचरत्रत्र श्रक्ति সন্থান श्रमर्भन

সূরা আল বাকারা ১২৫, আলে ইমরান ৯৬-৯৭, আল হাজ্জ ২৬-২৭

अथ्यात्र २ **३ र ज्या**त्र महान मिन

সূরা আল বাকারা ১৯৭-১৯৯

ष्यशाञ्च ७ ३ ७७ ब्रांटक त्यग्नावरण्य वर्गना

সূরা আল হাজ্জ, আয়াত ২৯

चशाव ८ ३ माका এवং माव्र ध्वाव मौज़ानाव

'সূরা আল বাকারা, আয়াত ১৫৮

ष्यशाम् ८ १ धमन्नान वर्गना

সূরা আল বাকারা ১৯৬

व्यथाग्र ७ ३ अमन्नाम् भाषा मुखात्ना व्यथवा हून शाँठा

সূরা আল ফাডাহ, আয়াত ২৭

ष्यशात्र १ ४ এरुद्राम वांधा ष्यवञ्चात्र शिकांत्र कर्ता

সূরা আল মায়েদাহ ১, ৯৫, ৯৬

অধ্যায় ৮ ৪ হচ্ছে তামাত্র

সূরা আল বাকারা, আয়াত ১৯৬

অধ্যায় ৯ ঃ কোরবানীর জন্যে নির্ধারিত পট্টি বাধা পত

সূরা আল মায়েদা ৯৭, আল হাজ্জ ২৮

অধ্যায় ১০ ঃ কোরবানীর পশুর নির্ভুত হওয়া

সূরা আল হাজ্জ, আয়াত ৩০-৩৩, ৩৬-৩৭

जगार ১১ ४ रूक या उद्याद भरत वा धार्य **इ** रूम कित्र

या ७ग्रा

সূরা আল বাকারা, আয়াত ১৯৬

নারী ও পারিবারিক জীবন

व्यशाम 🕽 ३ भर्मात्र विधान

স্রা আন নূর, আয়াত ২৭-৩১, ৫৮-৬০, আল আহ্যাব ৫৩-৫৫, ৫৯

व्यशाम २ ३ विराज हकूम

সুরা আন নেসা, আয়াত ৩

অধ্যায় ৩ ঃ যেসব মহিলাদের বিয়ে করা হারাম

সূরা আল বাকারা ২২১, আন নেসা ২৩-২৪

অধ্যায় ৪ ঃ विरम्नद्र छमी (অভিভাবক)-এর বর্ণনা

সুরা আন নেসা, আয়াত ২৫

ष्यशाय ৫ ३ स्याङ्ख्य विधान

সুরা আল বাকারা ২৩৬-২৩৭, আন নেসা ২৪, আল কাছাছ ২৭-২৮, আল আহ্যাব ৫০

षधाय ७ ३ भूमनमानत्मत्र ष्यविवादिक बाका कॅिंटिश नग्न

সূরা আন নূর, আয়াত ৩২

षधाय १ ३ এकाधिक बीत्र यात्व नाग्य ইनमाक श्रक्ति

সূরা আন নেসা, আয়াত ১২৯

অধ্যায় ৮ ঃ निचन्न माजुनुश्व भान ও তা ছাড়ানোর সময়

সূরা আল বাকারা ২৩৩, আল আহকাফ ১৫

অধ্যায় ৯ ঃ তালাকের বিধান

সূরা আল বাকারা ২২৯, ২৩১, ২৩২

অধ্যায় ১০ ঃ তিন ভালাকের আলোচনা

সূরা আল বাকারা, আয়াত ২৩০

व्यथाय ১১ ३ ब्रीटिक जामात्कव्र व्यथिकाव प्रया

সুরা আল আহ্যাব, আয়াত ২৮-২৯

ष्यशाद्व ১२ ४ य छामाक त्थरक किरत बाना यात्र छात्र बालान्ना

সূরা আল বাকারা, আয়াত ২২৮

অধ্যায় ১৩ ३ बीत्र काष्ट्र ना या ध्यात कनम

সুরা আল বাকারা, আয়াত ২২৬-২২৭

व्यथाम ১৪ ३ स्थामा म विधान

সূরা আল বাকারা, আয়াত ২২৯

व्यथाय ১৫ ३ यहात्त्रव स्कूम

সূরা আল মোজাদালাহ, আয়াত ২-৪

অধ্যায় ১৬ ঃ স্বামী স্ত্রী একে অন্যের প্রতি ব্যক্তিচারের অভিবোগ করলে তা মিমাংশার পদ্ধতি

সূরা আন নূর, আয়াত ৬

व्यथाप्र ১৭ ३ ইम्स्टब्द्र विधान

সুরা আল বাকারা, আয়াত ২২৮

व्यथाप्र ১৮ १ विथवात्र रेक्छ

সূরা আল বাকরা, আয়াত ২৩৪, ২৪০

ष्यशाद्य ১৯ ४ बामीशंमन इसनि धमन महिनापाद बता काला हैसार

সুরা আল আহ্যাব, আয়াত ৪৯

षशाग्र २० ३ षथाच गाम, वृक्षा এवং গর্ভবতীদের ইব্দত

সূরা আত ত্বালাক, আয়াত ৪

অধ্যায় ২১ ঃ তালাকপ্রাপ্তাদের খোরপোষ

সূরা আত তালাক ৬-৭

দভবিধি

षशाग्र ১ ३ रुणात्र भारि

সূরা আল মায়েদা, আয়াত ৪৫

অধ্যায় ২ ঃ চোরের শাস্তি

সূরা আল মায়েদা, আয়াত ৩৮

অধ্যায় ৩ ঃ সম্রাসের শান্তি

সূরা আল মায়েদা, আয়াত ৩৩

অধ্যায় ৪ ঃ ব্যভিচারের অপবাদ আরোপকারীর শাস্তি

সূরা আন নেসা ১৫-১৬, আন নূর ২-৪

অর্থনীতি

সূরা আল বাকারা ১৮০-১৮২, ২৪০, আন নেসা ৭-৮, ১১-১২, ৩৩, ১৭৬ , আল মায়েদা ১০৬-১০৮, আল আনফাল ৭৫

ष्यग्राग्न २ ३ क्रम विक्रस्मन विधि-विधान

সূরা আল বাকারা ১৯৮, ২৭৫, ২৮২-২৮৩, আন নেসা

২৯, আন নূর ৩৭, আল জ্মুয়াহ, ১০, আল মোযযা**লেল** ২০ অধ্যায় ৩ ঃ সুদের বর্ণনা

সূরা আল বাকারা ২৭৫, ২৭৮-২৮০, আন নেসা ১৬১

ভেক্তাদ

রসূল (স.)-এর স্বশরীরে অংশগ্রহণে সংঘটিত যুদ্ধসমূহ

व्यशास ५ १ गयि असारस वमन

সূরা আলে ইমরান ১৩, আল আনফাল ৫-১৮, ৪১-৪৪, ৪৮

षभ्याय २ ३ भाषधग्रादय ७५म

স্রা আলে ইমরান, আয়াত ১২১-১২৭, ১৪০-১৪৩,

১৫২-১৫৫, ১৬৫-১৭১

षश्राम् ७ ३ गायअम्रात्म वनी नयीत

সুরা আল হাশর, আয়াত ২-৬

व्यशाय ८ ३ गाय ध्यारम वनत्त्र रहागना

সুরা আলে ইমরান, আয়াত ১৭২-১৭৫

षधाः । ४ शाय धः ग्राटमः षाञ्चाव

সুরা আল আহ্যাব ৯-২৫

व्यथाप्र ७ ३ भाषअग्रास्त्र वनी कात्राग्रया

সূরা আল আহ্যাব, আয়াত ২৬-২৭

ष्यशाग्न ९ ३ हामाग्नविद्यात्र महि क्वर वार्डेग्राट्ड द्वमञ्ज्ञान

সূরা আল ফাতাহ, আয়াত ১

কোরআনের সংক্ষিপ্ত বিষয়সূচী

ष्यशाग्र ৮ ३ मका विकास

সূরা আন নাছর, আয়াত ১

षधाग्र ৯ ३ भाषग्रास्त्र रहानाग्रन

সূরা আত তাওবা, আয়াত ২৫-২৬

षधाात्र ১० १ गायश्रमात्र जानूक

সূরা আত তাওবা, আয়াত ৪২-৫৯, ৮১-৮৩, ৯০-৯৬

অধ্যায় ১১ ঃ গনীমতের মা**ল** এবং ফাই-এর তৃকুম

সূরা আল বাকারা ১৯০-১৯৪, ২১৭, আন নেসা ৭১, ৭৫-৭৬, ৮৯-৯১, ৯৪, আল আনফাল ১, ১২-১৩,

১৫-১৬, ৩৯, **8১, 8৫-8**৭, ৫৭-৫৮, ৬০-৬১,

৬৭-৬৯, ৭২-৭৩, আত তাওবা ১-৭, ১১-১২, ২৮-২৯,

७৬-७৭, ८১, १७-१८, जान नारल ১২৬, जान राज्ज

৩৯-৪০, আল আহ্যাব ৬০-৬২, মোহাম্মদ ৪, আল

হাশর ৫-১০, আল মোমতাহেনা ১০-১১

षधाः ३२ ३ विश्वामघाङक अनः मृनमनमः मारथं वावदात

সূর আল আনফাল, আয়াত ৫৬-৫৮

वधााग्र ১७ ३ यूरक्त नमग्र भवा शक्तत नक्तिथछार

সূরা আল আনফাল, আয়াত ৬০-৬৩

*षधाग्र ১৪ ६ "गञ्जद সार्थ मनामि*ङ हुकि वा**ख**वाग्रन कवा

সূরা আত তাওবা, আয়াত ১-৪

षथाग्र ५৫ ३ मेक निदाशको ठाउँल छाटक निदाशका एम्स

সুরা আত তাওবা, আয়াত ৬

षधााग्र ১৬ ६ ইमनाम श्रद्श पृत्रमनत्क बाधा ना कन्ना

সুরা আল বাকারা, আয়াত ২৫৬-২৫৭

षधाय ১৭ ४ भक्कत ७ भत्र षठाठात अवः वाजावाजि ना कता

সুরা আল বাকারা ১৯০-১৯৪

বান্দার হক

व्यथाात्र 🕽 ४ भिতाभाजाः भाषा श्रीवितनी धनः वाबीत-स्वतनः रून

সূরা আল বাকারা ১৭৭, আন নেসা ৩৬, আন নাহল ৯০, বনী ইসরাঈল ২৩-২৫, ২৬, ২৮, মারইয়াম ১৪, ৫৫, ডোয়া-হা ১৩২, আন নূর ২২, আল আনকাবুত ৮, আর

রোম ৩৮, লোকমান ১৪-১৫, আল আহ্যাব ৬, আল

হজুরাত ১০, আত তাহরীম ৬, আল বালাদ ১৫

व्यशाग्र २ ३ बामी-बीत एक अवर शत्रान्तिक स्नौदार्मा

সূরা আল বাকারা ১৮৭, ২২৩, ২২৯, ২৩১, ২৩৩, আন

নেসা ৩-৪, ১৯-২১, ৩৪-৩৫, ১২৮-১৩০ , আত ডাগাব্ন ১৪, আত

ত্বালাক ৬-৭

আল মাউন ২-৩

অধ্যায় ৩ ৪ চাকর, এতীম, মেননী এবং ভিকুকদের হক সূরা আল বাকারা, ৮৩, ১৭৭, ২২০, ২৬২-২৬৪, ২৭৩, ২৮০, আন নেসা ২-৬, ৫-৬, ২৫, ৩৬, ১২৭, বনী ইসরাঈল ৩৪, আন নূর ২২, ৩৩, আর রোম ৩৮, আল হাশর ৭, আল ফাজর ১৭-১৮, আল বালাদ ১৩-১৬, আদ দোহা ৯,

অধ্যায় ৪ ঃ মেহমানদের হক

সুরা আল কাহাফ, ৭৭

ष्यभाग्न ७ ४ भव्यन्त्र दक

সুরা আল মায়েদা, আয়াত ৮, ৪১-৪২

षशाग्न ७ ३ षाञ्चारछीि इटन्द मचात्मन मानमङ

স্রা আল বাকারা ৬২, আল আনয়াম ৫২-৫৩, আন নাহল ৯৭, আল কাহফ ২৮, আল হুজুরাত ১৩, আবাসা ১-১২

আদব

षशाग्न ১ ३ बाह्याद्य नाम ऋतत्नत्र बानव

সুরা আল আনফাল, আয়াত ২

অধ্যায় ২ ঃ কোরআনের আদব

সূরা আল আ'রাফ ২০৪, আল ঝনফাল ২, আত তাওবা ১২৪

অধ্যায় ৩ ঃ রসৃল (স.)-এর মজলিসের আদৰ

সূরা আল ছজুরাত, আয়াত ১-৩

षशाग्न ४ ३ मामिक्समन्न जामन

সূরা আন নূর, ৩৬-৩৭

অধ্যায় ৫ ঃ পিডামাতার আদব

সুরা লোকমান, আয়াত ১৪-১৫

षशात्र ७ ३ मूजनमान जमास्क नागतिकरमत्र मान इयराज्य जस्त्रकर्म

সূরা আশ হজুরাত, আয়াত ১০-১২

অধ্যায় ९ ४ সালামের আদৰ

সূরা আন নেসা, আয়াত ৮৬

কোরআনের দোয়াসমূহ

अशात्र ১ ३ जान्नाहत काट्य धार्यना कता

২০১, ২৮৫, ২৮৬, আলে ইমরান ৬, ৮, ২৬-২৭, ৫৩, ১৪৭, ১৯১-১৯৪, আল মায়েদা ১১৪, আল আ'রাফ ৮৯, ১২৬, ১৫১, ১৫৫-১৫৬, আত তাওবা ১২৯, ইউনুস ৮৫-৮৬, ৮৮, হুদ ৪১, ৪৭, ইউসুফ ১০১, ইবরাহীম ৪০-৪১, বনী ইসরাঈল ২৪, ৮০, আল কাহফ ১০, মারইয়াম ৪-৬, জ্বোয়া-হা ২৫-২৬, ১১৪, আল আম্মিয় ৮৩, ৮৭, ৮৯, ১১২, আল মোমেনুন ২৬, ২৯, ৯৩-৯৪, ৯৭-৯৮, ১০৯, ১১৮, আল ফোরকান ৬৫, ৭৪, আল শোয়ারা ৮৩-৮৭, ১১৮, ১৬৯, আন নামল ১৯, ৪৪, ৫৯, আল কাছাছ ১৬-১৭, ২১, ২৪, আল আনকাবৃত ৩০, আস সাফফাত ১০০, সোয়াদ ৩৫, আল

সুরা আল ফাতেহা ৫. আল বাকারা, ১২৬, ১২৭-১২৯,

কোরআনের উপমাসমূহ

षशाय 🕽 ३ षाष्ट्राह्य प्रया विजिन्न ध्रत्राव উपाह्य ।

মোমেন ৭-৯, আল আহকাফ ১৫, আল কামার ১০, আল হাশর ১০, আল মোমতাহানা ৪-৫, আত তাহরীম

৮, ১১, नृर २८, २৮, जान कानाक ১-৫, जान नाम ১-७

সূরা আল বাকারা, ১৭১, ১৭-২০, ২৬১, ২৬৪-২৬৬, আলে ইমরান ৫৯, ১১৭, আল আ'রাফ ১৭৬, ইউনুস ২৪, ছদ ২৪, ইবরাহীম ১৮, ২৪-২৬, আন নাহল ৭৫-৭৬, ১১২, আল কাহফ ৩২-৪৩, ৪৫, আন নূর ৩৫, আল আনকাবৃত ৪১, আর রোম ২৮, আঝ ঝুমার ২৯, আল হাদীদ ২০, আল জুমুয়া ৫, আত তাহরীম ১১-১২

হালাল হারাম

অধায় ১ ৪ কোরআনে বর্ণিত হালাল ও হারাম সমূহ স্রা আল বাকারা, আয়াত ১৬৮, ১৭২, ১৭৩, আল মায়েদা আয়াত, ১, ৩, ৪-৫, ৮৭-৮৮, ৯০-৯২, ৯৬, ১০০, আল আনয়ম আয়াত, ১১৯-১২০, ১২২, ১৪৬, আল আ'রাফ আয়াত,৩২-৩৩, আন নাহল, আয়াত, ১১৪, ১১৫, ১১৬, ১১৭।

মোমেনের গুণাবলী

অধ্যায় ১ ঃ কোরআনে বর্ণিত মোমেনের গুণাবলী

সূরা আল বাকারা, আয়াত ৩-৫, ২০৬, আলে ইমরান আয়াত, ২৮, আল আনফাল আয়াত, আত তাওবা আয়াত, ৭১-৭২, ১১২, ২-৪, আর রা'দ আয়াত, ১৯-২৪, আল হাজ্জ আয়াত, ৩৪-৩৫, আল মোমেন্ন আয়াত ১-১১, ৫৭-৬১, আল ফোরকান আয়াত, ৬৩-৭৬, আল কাছাছ আয়াত, ৫৩-৫৫।

মোনাফেকের পরিচয়

অধ্যায় ১ ঃ কোরআনে বর্ণিত মোনাকেকে চরিত্র বৈশিষ্ট্য স্রা আল বাকারা, আয়াত ৮-১৬, ২০৪-২০৬, আলে ইমরান ২৩, ২৫, ১১৯, ১২০, আন নেসা ৪৪-৪৬, ৫১, ৬০-৬৬, ৭৭-৭৮, ৮১, ৮৮, ৯১, ৯৭, ১৩৮, ১৪৫, আল মায়েদা ৪১, ৫২, ৬১-৬৩, আনকাল ৫, ৬, ৪৯, তাওবা ৪২, ৪৩, ৪৭, ৪৮-৫৯, ৬১, ৬২, ৬৮, ৭৪-৮৯, ৯০, ৯৩, ৯৪-৯৮, ১০১, ১০৭-১১০, ১২৪, ১২৭, ল্র ৪৭-৫৩, আনকাবৃত ২-৪, ১০, ১১, আহ্যাব১২-২০, ২৪, ৬১, ৭৩, মোহাম্মদ ১৬, ২০, ২৯, ৩০, ৩১, ফাতাহ ৬, ১১-১৬, হজুরাত ১৪, ১৬, ১৭, হাদীদ ১৩-১৬, মোজাদালা ৭-১২, ১৪-১৮, ১৯-২০, হালর ১১-১৪, মোনাফেকুন ১-৮, মাউন ৪-৭, ।

আল্লাহর পথে জেহাদে অধ্যায় ১ ঃ কোরআনে বর্ণিত জেহাদের ছকুম সম্বদিত আয়াতসমূহ

সূরা আল বাকারা, আযাত ২১৬, ইল ইমরান ১৯০, ১৯১, ১৯০, ১৫৪, ১৭৭, ২১৭, ২৪৪, ১০, ১২১, ১২৮, ১৫১, ১৫৮, ১৬৫, ১৭২, আন নেসা ৭৪, ৭৬, ৮৪, ৯৫, ৯৬, ১০২, আনফাল ৭-১৯, ৩৯, ৫৭, ৬০, ৬৫, ৬৬, ৬৭, আত তাওবা ৫, ১২-১৬, ২৪-২৬, ২৯, ৩৫, ৩৮-৪২, ৭৩, ১২৩, হাজ্জ ৩৯, ৪১, ৭৮, ফোরকান ৫২, আনকাবৃত ৬৯, আহ্যাব ২৫-২৭, মোহাম্মদ ৪, ২০, ফাতাহ ২৫, হজুরাত ১৫, হাদীদ ১০, ১৯, মোমতাহেনা ১, ৮, ৯, সফ ৪, ১১, তাহরীম ৯, মোয্যাম্মেল ২০।

কোরআনের ঘটনাসমূহ

जशास ५ ६ रुयत्रज जामम ७ राजसा (जा.) वदर रेरमीरमङ चिना

সূরা আল বাকারা ৩০-৩৯, ১০২, ১৬৮-১৬৯, ২৬৮, আলে ইমরান ৩৩, আন নেসা ১২০, আল আ'রাফ ১১-২২, ২৭, ১৮৯, আল আনফাল ৪৮, ইউসুফ ৫, ৪২, আল হেজর ১৭-১৮, ২৮-৪৪ আন নাহল ৬৩, বনী ইসরাঈল ৫৩, ৬১-৬৫, আল কাহফ ৫০-৫১. ত্বোয়া-হা ১১৫-১২৪, আল হাজ্জ ৩-৪, ৫২, আন নূর ২১, আল ফোরকান ২৯, আশ শোয়ারা ২১০-২১২, ২২১, ২২৩, সাবা ২০-২১, ফাতের ৬, আস সাফফাত ৭-১০, সোয়াদ ৭১-৭৪, হা-মীম আস সাজদাহ ২৫, ৩৬, আয যোধরুফ ৩৬-৩৭, মোহাম্মদ ২৫, আল মোজাদালাহ ১৯, আল হাশর ১৬-১৭, আন নাস ৪-৬

অধ্যায় ২ ঃ আদম (আ.)-এর সম্ভানদের ঘটনা সুরা আল মায়েদা, আয়াত ২৭-৩১

অধ্যায় ৩ ঃ হযরত নৃহ (আ.) এবং তার জাতির ঘটনা স্রা আলে ইমরান ৩৩, আল আনয়াম ৮৪-৯০, আল আ'রাফ ৫৯-৬৪, ইউনুস ৭১-৭৩, হুদ ২৫-৪৮, ইবরাহীম ৯-১৭, বনী ইসরাঈল ৩, আল আম্বিয়া ৭৬-৭৭, আল মোমেনুন ২৩-২৯, আল ফোরকান ৩৭, আশ শোয়ারা ১০৫-১২০, আল আনকাবৃত ১৪-১৫, আস সাফফাত ৭৫-৮৩, আয যারিয়াত ৪৬, আন নাজম ৫২, আল কামার ৯-১৪, আল হাদীদ ২৬, আত তাহরীম ১০, আল হা-ক্কাহ ১১, নৃহ ১-২৮

षशाग्न 8 इ इयत्रज इम (जा.) এবং जाम झांजि

আল আ'রাফ ৬৫-৭২, হুদ ৫০, ইবরাহীম ৯-১৭, আল ফোরকান ৩৮-৩৯, আশ শোয়ারা ১২৩-১৩৯, আল আনকাবৃত ৩৮, হা-মীম আস সাজদাহ ১৩-১৬, আল আহকাফ ২১-২৬, আয যারিয়াত ৪১-৪২, আন নাজম ৫০, আল কামার ১৮-২০, আল হাকাহ ৪-৮, আল ফাজর ৬-১৩

অধ্যার ৫ ঃ হ্যরত সালেহ (আ.) এবং সামুদ জাতি
স্রা আল আ'রাফ ৭৩-৭৯, হুদ ৬১-৬৭, ইবরাহীম
৯-১৭, আল হেজর ৮০-৮৪, আল ফোরকান ৩৮-৩৯,
আশ শোয়ারা ১৪১-১৫৮, আন নামল ৪৫-৫৮, আল
আনকাবৃত ৩৮, হামীম আস সাজদাহ ১৩-১৪, ১৭-১৮,
আয যারিয়াত ৪৩-৪৫, আন নাজম ৫১, আল কামার
২৩-৩১, আল হা-ক্কাহ ৪-৫, আল ফাজর ৯-১৩, আশ
শামস ১১-১৫

অধ্যায় ৬ ঃ হযরত ইবরাহীম (আ.)-এর ঘটনা

সূরা আল বাকারা ১২৪-১৩২, ১৩০-১৩৬, ২৫৮, ২৬০, আলে ইমরান ৬৫-৬৭, আন নেসা ১২৫, আল আনয়াম ৭৪-৯০, আত তাওবা ১১৪, হুদ ৬৯-৭৬, ইউসুক ৬, ইবরাহীম ৩৫-৪১, আল হেজর ৫১-৬০, আন নাহল ১২০-১২৩, মারইয়াম ৪১-৪৯, আল আদ্বিয়া ৫১-৫৩, আল হাজ্জ ২৬-২৭, আল শোয়ারা, ৬৯-৮৭, আল আনকাবৃত ১৬-২৭, ৩১-৩২, আস সাক্ষাত ৮৩-১০৬, সোয়াদ ৪৫-৪৭, আয যোবারুক ২৬-২৭, আয যারিয়াত ২৪-৩২, আল হাদীদ ২৬, আল মোমতাহানা ৪

অধ্যায় ৭ ঃ হবরত লুত (আ.)-এর ঘটনা

সূরা আল আনয়াম ৮৬-৯০, আল আ'রাফ ৮০-৮৪, হুদ ৭৪-৮৩, আল হেজর ৫৮-৭৭, আল আম্বিয়া ৭৪-৭৫, আশ শোয়ারা ১৬০-১৭৩, আন নামল ৫৪-৫৮, আল আনকাবৃত ২৮-৩০, ৩৩-৩৫, আস সাফফাত ১৩৩-১৩৮, আয যারিয়াত ৩২-৩৭, আল কামার ৩৩-৩৮, আত তাহরীম ১০

অধ্যায় ৮ 8 হ্যরত ইসমাঈশ (আ.)-এর ঘটনা

সূরা আল বাকারা ১২৫-১২৯, ১৩৩, আল আনয়াম ৮৬-৯০, মারইয়াম ৫৪-৫৫, আল আম্বিয়া ৮৫, আস সাফফাত ১০১-১০৭, সোয়াদ ৪৮

অধ্যায় ৯ 8 হযরত ইসহাক (আ.)-এর ঘটনা

সূরা আল বাকারা ১৩৩, আল আনয়াম ৮৪-৯০, ইউসুফ ৬, আল আম্বিয়া ৭২-৩, আস সাফফাত ১১২-১১৩, সোয়াদ ৪৫-৪৭

षशाग्न ५० ३ हरत्रछ हैग्नाकून वनः हैंछेनुक (बा.)-वज्र घटना

সূরা আল বাকারা ১৩২, আলে ইমরান ৯৩, আল আনয়াম ৮৪-৯০, ইউস্ফ ৪-১০১, আল আরিয়া ৭২-৭৩, সোয়াদ ৪৫-৪৭, আল মোমেন ৩৪

অধ্যায় ১১ ६ হयत्रण भाग्नाग्नय (আ.), আছহাবে আইका এবং মাদইয়ানবাসীর ঘটনা

সুরা আল আ'রাফ ৮৫-৯৩, হুদ ৮৪-৯৫, আল হেজর ৭৮-৭৯, আশ শোয়ারা ১৭৬-১৮৯, আল আনকাবৃত ৩৬-৩৭

षधाग्र ১२ ६ व्यव्रक यूत्रा (षा.), वांक्रन (षा.), वनी वेत्रवात्रेन, रकवणाउन धवर वांयात्मव चंटेना

সুরা আল বাকারা ৪৭-৬১, ৬৩-৭৫, ৮৪-৮৭, ৯২-৯৩, ১০৮, ১৩৬, ২৪৩-২৫১, আন নেসা ১৫৩-১৫৬, ১৬৪, আল মায়েদা ১২-১৩, ২০-২৫, ৩২, ৪৫, ৭০-৭১, ৭৮-৭৯, আল আনয়াম ৮৪-৯০, ১৪৬, ১৫৪, ১৫৯, আল আ'রাফ ১০৩-১৫৭, ১৫৯-১৭১, আল আনফাল ৫৪, ইউনুস ৭৪-৯৩, হৃদ ৯৬-৯৯, ১১০, ইবরাহীম ৫-৬, ৮, जान नाइन ১২৪, वनी ইসরাঈन ২-৭, ১০১-১০৪, আল কাহফ ৬০-৮২, মারইয়াম ৫১-৫৩, ত্যোয়া-হা ৯-৯৮, আল আম্বিয়া ৪৮-৪৯, আল মোমেনুন ৪৫-৪৯, আল ফোরকান ৩৫-৩৬, আশ শোয়ারা ১০-৬৬, আন নামল ৭-১৪, আল কাসাস ৩-৪৮, আল আনকাবুত ৩৯-৪০, আস সাজদা ২৩-২৪, আল আহ্যাব ५৯, जान नाककां ১১৪-১২২, जान মোমেন ২৩-৪৫, আয যোধকক ৪৬-৫৬, আদ দোধান ১৭-৩৩, আল জাসিয়া ১৬-১৭, আয যারিয়াত ৩৮-৪০, আল কামার ৪১-৫৫. আস সাফ ৫. আল জুমুয়া ৫-৬, আত তাহরীম ১১, আল হাক্কাহ ৯-১০, আল মোয্যাম্মেল ১৫-১৬, আন নাযেয়াত ১৫-২৫. আল ফাজর ১০-১৩

অধ্যায় ১৩ ৪ কাব্রুনের ঘটনা

সুরা আল কাছাছ ৭৬-৮২, আল আনকাবুত ৩৯-৪০, আল মোমেন ২৩-২৪

অধ্যায় ১৪ ঃ হ্বরত দাউদ এবং সোলায়মান (বা.)-এর ফীনা সূরা আল বাকারা ১০২, ২৫১, আন নেসা ১৬৩, আল মায়েদা ৭৮, আল আনয়াম ৮৪-৯০, আল আশ্বিয়া ৭৮-৮২, আন নামল ১৫-৪৪, সাবা ১০-১৪, সোয়াদ ১৭-২৬, ৩০-৪০ অধ্যায় ১৫ ৪ হযরত ইউনুস (আ.)-এর ঘটনা আল আনয়াম ৮৬-৯০, ইউনুস ৯৮, আল আম্বিয়া ৮৭-৮৮, আস সাফফাত ১৩৯-১৪৮, আল কালাম ৪৮-৫০

অধ্যায় ১৬ ৪ হযরত ইদরীস (আ.)-এর ঘটনা সূরা আল আনয়াম ৮৫-৯০, মারইয়াম ৫৬-৫৭, আল আহিয়া ৮৫, আস সাফফাত ১২৩-১৩২

অধ্যায় ১৭ ঃ হ্যরত আইয়ুব (আ.)-এর ঘটনা সূরা আল আনয়াম ৮৪-৯০, আল আম্বিয়া ৮৩-৮৪, সোয়াদ ৪১-৪৪

অধ্যায় ১৮ ঃ হবরত বাকারিয়া এবং ইয়াহইরা (লা.)-এর ফান সূরা আলে ইমরান ৩৮-৪১, আল আনয়াম ৮৫-৯০, মারইয়াম ৬-১৫, আল আবিয়া ৮৯-৯০

অধ্যায় ১৯ ৪ হ্যরত আল-ইয়াসা মা (আ.)-এর ঘটনা আল আনয়াম, ৮৬-৯০, সোয়াদ ৪৮ অধ্যায় ২০ ৪ হ্যরত যুল কেফল (আ.)-এর ঘটনা স্রা আল আম্বিয়া ৮৫, সোয়াদ ৪৮ অধ্যায় ২১ ৪ হ্যরত ও্যায়র (আ.)-এর ঘটনা স্রা আল বাকারা ২৫৯, আত তাওবা ৩০

षशाग्न २२ ३ हरत्रक नैना (षा.) এवং मात्रहेग्नाम (षा.)-এत घটना

সুরা আল বাকারা ৮৭, ১৩৬, আলে ইমরান ৩৫-৩৭, ৪২-৫৯, আন নেসা ১৫৬-১৫৯, ১৭১, আল মায়েদা ৪৬, ৭২, ৭৫, ৭৮, ১১০-১১৮, আল আনয়াম ৮৫-৯০, আত তাওবা ৩০, মারইয়াম ১৬-৩১, আল আহিয়া ৯১, আল মোমেনুন ৫০, আয যোধরুফ ৫৯-৬১, আল হাদীদ ২৭, আস সাফ ৬, ১৪, আত তাহরীম ১২

অধ্যায় ২৩ **ঃ হ্যরত লোকমান** (আ.)-এর ঘটনা সুরা লোকমান ১২-১৯

অধ্যায় ২৪ ঃ বুলকারনারনের ঘটনা স্রা আল কাহফ ৮৩-৯৮ অধ্যায় ২৫ ঃ কাধ্যমে সাবার ঘটনা স্রা আন নামল ২০-৪৪, সাবা ১৫-২১ অধ্যায় ২৬ ঃ আসহাবুল উপদূদ-এর ঘটনা

সূরা আল বুরুজ, আয়াত ৪-১১

অধ্যায় ২৭ ঃ আসহাবে কাহাফ এবং রকীম-এর ঘটনা সূরা আল কাহফ ৯-২২, ২৫

অধ্যায় ২৮ ঃ হাক্সত এবং মাক্সতের ঘটনা স্বা আল বাকারা ১০২ অধ্যায় ২৯ ঃ আসহাবুর রাজ্ব-এর ঘটনা

স্রা আল ফোরকান ৩৮-৩৯, ক্ষে ১২-১৪
অধ্যায় ৩০ ঃ আসহাবে কীল-এর ঘটনা
স্রা আল ফীল ১-৫ 🗆

↓ ১২



আল কোরআন একাডেমী লন্ডন